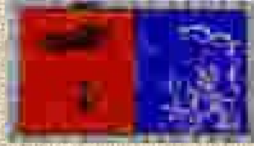
ISSN 2229-547X

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒠𑒹𑒯 -𑓑𑓗

(𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯-𑒮𑒠𑒹𑒯 𑓑𑓗, 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 www.videha.co.in 𑒣𑒹𑒙𑒰𑒩 (𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓖𑓙-𑓑𑓙𑓐) 𑒮𑒿,
𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒑𑒠𑓂𑒨 𑒫𑒰 𑒣𑒠𑓂𑒨𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢)

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢: 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏: 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩।



Videha e-Learning

Gajendra Thakur



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।
रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कैँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि,'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तैँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

मूल्य : भा. रू. २५००/- संस्करण: २०१५, २०२२

Videha Sadeha 17: A Collection of Maithili Prose and Verse (source:Videha e-journal issues 169-190 at www.videha.co.in).

অনুক্রম

গদ্য-খণ্ড

গজেন্দ্র ঠাকুর- অন্হারক বিরোধ মে: অরবিন্দ ঠাকুর, সংপাদকীয

ওম প্রকাশ ঝা- কাশীকান্ত মিশ্র ‘মধুপ’ আ মৈথিলী গজল, রঁহ্‌ঝপিয়া বচনামে

আশীষ চমন- অন্হারক বিরোধ মে অরবিন্দ ঠাকুর

ডা যোগানন্দ ঝা- অন্হারক বিরোধমে: এক দৃষ্টি

জগদীশ চংদ্র ঠাকুর"অনিল"- অরবিন্দজীক আজাদ গজল

যোগেন্দ্র পাঠক ‘বিযোগী’- অন্হারক বখরাব, একৈসম শতাব্দী মে ঘসল অঠন্নীক প্রাসংগিকতা, জমানা জমানাক স্লোগন, উঁচিত জগহ

চংদ্র মোহন ঝা পড়রা- অরবিন্দ ঠাকুর আ মিথিলা আরাজ

অরবিন্দ মিশ্র নীরজ- অরবিন্দ ঠাকুর: ব্যক্তিত্ব আ প্রতিত্ব

অৰবিংদ শ্ৰীৱাস্তৱ– সামংতী সভহঁক বিকল্প তৈযাৱ কবি

পৰমানন্দ প্ৰভাকৰ– শ্বননক প্ৰতিৰোধমে –অন্ধাৱক বিৰোধমে

ৰাম চৈতন্য ধীৰজ– ৰঁহ্কপিযা প্ৰদেশ মে: এক দৃষ্ঠি

ডা. শংভু কুমাৱ সিংহ– ঘসল অঠন্নী: একটা বিমর্শ

বিনীত উঁপেল– মৈথিলীক বিদ্ৰাহী কবি: কাশীকাংত মিশ্ৰ মধুপ, মন্ত্ৰদ্ৰষ্ঠা ঋষ্যশৃঙ্গ– হবিশংকৰ শ্ৰীৱাস্তৱ "শৈলভ"– হিন্দীসঁ মৈথিলী অনুৱাদ বিনীত উঁপেল, মোহনদাস (দীর্ঘকথা):লেখক: উঁদয প্ৰকাশ (মূল হিন্দীসঁ মৈথিলীমে অনুৱাদ বিনীত উঁপেল), "বেহনপৰ বগ্ঘূ"– শ্ৰী কাশীনাথ সিংহ (হিন্দীসঁ মৈথিলী অনুৱাদ শ্ৰী বিনীত উঁপেল)

কেদাৰ কানন– মধুপক বচনা–ব্যক্তিত্ব

কর্নল (ডাক্টৰ) কীর্তিনাথ ঝা– মধুপজী হমবা কিএক মন পড়ৈত ছথি

জগদীশ চন্দ্ৰ ঠাকুৰ 'অনিল'– মধুপক গীত অমৰ,মিথিলামে

ডা. অৰুণ কুমাৱ সিংহ– মধুপজীক 'ঘসল অঠন্নী'মে দলিত চেতনা

আশীষ অনচিন্হাব– নিযংত্রিত পূঁজী আ মধ্পজীক মার্ক্সবাদ, মেক ওন মিথিনা, হর্ক, নিষ্টবেচব হেস্টীভন,– "প্র.ম"

ড॰া. অজীত মিশ্র– অর্পণ–তর্পণ–সমর্পণ

হাগ্বনান সাহ্– মানব জীবনমে নাবী স্বরূপক গবিমা, মাগক ডাঁষ্ট, মর্দানী নাবী, আত্ম নির্ভবতা নেন কোনো ওঁমেব নৈ, চত্তব বাঁনক

বাম বিনাস সাহ্– স্কূনক খিচড় ়ী, গমানদাবীক পাঠ, বৌআ বাঁজন, ঘূসহা ঘব, জাতিক ভোজ, ও ছী হমব মজবূঁবী, অবিঁসবাস, গংগা নহাএবঁ, ডোমক আগি, স্বস্থক স্বখ, মিথিনাক মাটিমে পসবন কহবী (সংকননকর্তা– বাম বিনাস সাহ্)

ননন ক্মাব কামত– ভগবানে ভবোসে, দহেজক মাবি, ভোনা, অপ্পন মাএ–বাঁপ, দস হজবিযা নোট (নোক কথাক প্বনর্নেখন), নগন

ড॰া. শ্রীমোহন ঝা– মিথিনাক গতিহাস

ডা. শিব ক্মাব প্রসাদ– বঁনমান্বষ, জমীনা

প্রণব ঝা– অঁবঁব, তেসব প্রণ, অপন অপন ধর্ম (সংস্মবণ)

नन्द विलास राय- दिव्या, सन्तसँ संवाद भीखागपी गेस्ट

ऋष्ठुव वज्जाक- गामक चौरंगिया पर, बौदी पवन ऋष्छि

विन्दश्वेव ठाकुव- बेनहारानीके जितिया, ऋासे ऋासमे जिनगी

बाजदेव मण्डन- डवक नदी, पंचैती- (नघु पंकथा), नाज (एकांकी)

ड॰ शेशिधव कुमव "विदेह"- गामक शेकन सूवत - पोथी समीक्षा

बाजदेव मण्डन 'वमण'- दियादी डाह

बाजेन्द्र कुमाव प्रधान- जगदीश प्रसाद मण्डनक उपन्यासमे समकानीन चेतना,२१म शताब्दीक पहिन दशकक मैथिनी उपन्यासमे बाजनीतिक चेतना

पंकज कुमाव प्रभाकव- समकानीन चेतनाक सम्वाहक :: ऋह्यागिनी

पन्नवी- चोवविद्या, फ्रेण्ड

पूनम मण्डन- विपोर्ट-- सगव बाति दीप जवन

ঋন্নাজী– জন–চেতনাক স্বব বাহক মধুপ, পবতী ট্টুটি গেলৈ, খবরিন্দ ঠাক্ষবজী সংগ সাক্ষাকোব খান–নাগন

খবরিন্দ ঠাক্ষবজীক নামসঁ কিছু পত্র (**চন্দ্রনাথ মিশ্র 'খমব', নাবাযণ জী, প্রমোদ ক্ষমাব ঝা**)

শৈলেন্দ্র খানংদ– হানী–হানী বঁহথ্ কোসী

মিথিলেশ ক্ষমাব বায– খবরিন্দ ঠাক্ষবঃ খন্ধাবক রিবোধী ব্যক্তিত্ব

খজিত খাজাদ– খবরিংদ ঠাক্ষবঃ হমবামে খহাঁ, খহাঁমে হম

নক্ষমণ ঝা সাগব– জেহনে খোজনঽ মৌ ক্ষট্টুম্বঁ

বজনীশ ক্ষমাব তিৱাবী (ঋন্না)– খদ্বিতীয ছুথি হমব খবরিন্দ বাঁবা

খবরিন্দ ঠাক্ষব– বুঁন্নিযাঁ কী জাণাঁ মৈং কৌন (খপনাকেং খোজৈত কিছু খপ্পন বাঁত), বাঁত নিকনন, ক্ষঠাম তক পহুঁচন– একটা বঁহ্–খৰ্থী নিবর্থক চনভাষ–বার্তা স্বকাত সোমজীক সংগ, সংস্মবণ– বাঁবা সঁ পহিন খা খংতিম ভেঁটঃবাঁবাঁক রিবাঁট স্মৃতি–পটন, জীবকান্ত : কিছু স্মৃতি, কিছু টিপ্পণী, মিথিনাক সংস্কৃতি:কিছু খপ্রিয বিঁন্দু, মিথিনা মে সাংস্কৃতিক খান্দাননক ভবিষ্য, নক্ষমীনাথ গোসাঁঞঃ

পবম্পবা, ভাষা খা নির্গ্বণ ভার, একটা খিচা সপনাক ডিভিখাএরঁ (সন্দর্ভ: হীবেন্দ্র ক্ষমাব মাক কথা-সংগ্রহ “ ট্রান্সফর্মব “), কিছু রিহনি কথা (সত্তা-চবিত, স্বযংভূ , দ্স্বাক্ষ, যূষ্টেপিযা, খাদান-প্রদান, খহিংসা)

পদ্য- খণ্ড

মধুপ- কিছু কবিতা, গজল, গীত আ দোহা...

আশীষ অনচিন্হার- কিছু বাল গজল, ভক্তি গজল, কিছু গজল

জগদানন্দ ঝা 'মনু'- বাল গজল, গজল

উমেশ মণ্ডল- অছি হ্মদা সবহক এক, ভারত হমর পহिचान छी

বিনীত ঠাকুর ঠাকুর- করি বনাম নেতা, পাব নগাউ, কখন ওা ঠঁডী জায, অপনেমে কিএ নড়ৈ ছী ?

গৌরীশংকর সাহ- ক্ষণিকা

ডা॰ শেশিধর কুমর"বিদেহ"- মৈথিলী বর্ণমালা, ভেটৈত মজুর কতহ - মিথিলাকের বচা, হম আ মৈথিলী, খৈনী, লেখন কমজোর নঞি জঁ মৈথিলী লিখৈত ছী, সমাজ আ বিরোধাভাস, হে দৈব ! কিছু তোঁহী কহহ,বনল মধেশী মসান ছৈ, উঠাউ লেখনী লীখু অহাঁ,ও অহাঁ লিখু জে নঞি লিখলন্হি, মাঘ, ফাগুনক পানি, ও কহলন্হি, মৈত্রিকক তৈয্যারী, চন্দাক ধক্কা, ককরা নীক লাগএ কী, পূছু ওকরা সঁ, নবৈবনান

রিজযনাথ ঝা– নর রর্ষক এহি মধ্ুব পহৰমে, হমব নাম পবিচয সাদব স্বৰত হম, চেতনা কেব নর সৃজনমে

বমেশ– মহা–রিস্ফাটক মহা–প্রযোগ– (দীর্ঘ গদ্য করিতা)

স্বকোস্বত শিশিব– মোন রিকন, পড়ৈ কন জম

প্রণর ঝা– হে 'মিথিলানী' খাৰ জাগ্ব খহুঁ, খকাঁড় তাঁডর, রোঁড পবীক্ষা (রাঁন করিতা)

বাজদেৱ মণ্ডন 'বমণ'– জ্বমানা করৈএ...

কিশন কাবীগব– গজন সন কিছু

খশিবহ্ব বাঞ্জন– গজন

ডা. উঁমা শংকব চৌধবী– দূ খাখব

চিত্রা খংশ্ব– খস্তিত্বকেঁ চিন্হূ

রীণা প্রসাদ– নির্মনীক গীত

বাম রিনাস সাহ্– কিছু টনকা

বাজদেৱ মণ্ডন– র্যথিত তৰু, হেবা গেন

डा. शिर क्माब प्रसाद- निर्मनीक निर्मनतामे , तैं किछ ने किछ निखैत जाउँ, ब्रौथा केब उँर्ब्रंटैन, शैहब ओ गेन...... , खेरैया, माय हमब नर क्म्भ नहेनी .देख एनों हम पटैना

संजय क्माब न्मा "नागदह"- खैब, छोड़्, भेटैन ? , छी कोन श्पने जाति रिशेष ?

ओम प्रकाशे न्मा- किछ गजन

महेशे डखबामी- कोनादगन, महेशे मञ्जबी

गणेशे मैथिन- हे ! हे ! ! हे ! ! !

संतोष क्माब न्मा- सिक्की शिंप-कना

श्वरिन्द ठाक्ब- स्वनृ जयद्रथ ! , दृ मित्र, हम हना कबए चाहए छी,हनफनामा, स्मृति मित्र श्छि, किछ श्राजाद गजन, टैमटैम

গদ্য খণ্ড

গজেন্দ্র ঠাকুর

খন্মাবক রিরোধ মে: খবরিন্দ ঠাকুব

খবরিন্দ ঠাকুব –খন্মাবক রিরোধ মে –ক সমর্পণ কান–খপন ফনদেরী কানী রঁন্নীক স্মবণ কবৈ ছথি।
গোবৈযা রঁহিন রঁন্দী (রঁন্নী) ক পূজা কেনে বহথি, রঁন্নী রাকদেরী ছথি, স্বর্ণমিয ছথি, প্রকুষোচিত খড় াম পহিবৈ ছথি, ছড় ী বাখৈ ছথি (খড় াম খা ছড় ী দুনূ সোনাক)। হিনকব জনম বরিকেঁ ভেন ছননি, তেঁ ছঠিহাবী শ্বএ্রকেঁ ভেনহ্নি। ও কানী জকাঁ কখনো কান বঞ স্নান সেহো কবৈ ছথি তেঁ হ্নকা কানী রঁন্নী সেহো কহন জাগ ছন্হি।
খবরিন্দ ঠাকুব ঐ নঘ্কথা সংগ্রহক খাবম্ভমে জাঁ জেনে [J ean Genet (1910–1986)] খা খঁতোন চেখর [Ant on Chekhov (1860–1904)] ক এক–একটা উঙ্কবণ বখৈ ছথি। জাঁ জেনে একটা রৈশ্যাক প্বত্র বহথি, এক সানক জখন ও বহথি তঁ একটা কাঠ্যকাব পবিরাব হ্নকা গোদ নহ নেনকন্হি। শ্বদমে ও ঘবসঁ ভাগি গেন কবথি খা ছোট–মোট চোবি কবথি, ফেব ও নিখনাগ শ্বদ্ধ কেনন্হি খা নিরঁন্ধ, করিতা, উঁপন্যাস, নাটক খাদি নিখনন্হি। ও খপন উঁপন্যাসমে সমনৈগিক সম্বঁন্ধক সংগ, ফদ্ধপতামে সৌন্দর্য, খপবাধীক চবিত্রগত রিশেষতাক চর্চ কবৈ ছথি, সংগে ও খপন নাটকমে সভ তবহক রঁহিষ্কৃত রস্ত্র খা ওকব শোষকক রিশ্লেষণ কবৈ ছথি। জাঁ জেনেক বচনাক জাঁ পৌন সার্ত্র খস্তিত্বরাদী সমীক্ষা খা জেক্স দেবীদা রিখণ্ডনামেক রিধিসঁ সমীক্ষা কেনন্হি।
খঁতোন চেখরক নেখনী হ্নকা মবনাক রাঁদ খভূতপূর্র রূপমে প্রসিদ্ধ ভেন, তকব ও জিরৈত জী খনুমান নৈ

নগা সকনা। হ্নকা নাগৈ ছনন্হি জে হ্নকব বচনা হ্নকা মবনাক একাধ বর্খে ধবি পঢ়ন জাএত।
জাঁ জেনেক খবরিন্দ ঠাক্ষ্ব দ্বাবা উঁদ্ধৃত কথন– “হম খপন ভাষামে এতেক রিরিধ রূপাকাবক সৃজন ঐ নেন কং সকনৌঁ জে হমবা খপন ভাষাসঁ ঘৃণা ছন।” – একটা যাযারবক উঁক্তি খছি। হ্নকব খপবাধক ক্ষমা যাচনা, জে ফ্রেঁচ বাষ্ট্রপতি দ্বাবা স্বীকৃত ভেন, পার্বনো পিকাসো খা সার্ত্র সহিত বহ্ত গোষ্ঠে দ্বাবা দেন গেন ছন। জাঁ জেনে খপন খামে চবিত্রমে খপন নেনপনক দ্খদ স্থিতিক চর্চ কবৈ ছথি, ষদা গা ও খপন খপবাধী চবিত্রক বক্ষার্থ কবৈ ছথি, ও বক্ষামেক ঢান হ্নকব ঐ কথনমে সেহো খবৈ ছন্হি। খত্যধিক ঘৃণা প্রেমক দোসব রূপ তঁ নৈ খছি জে ধৈন সন সঁ রিপবীত খছি, খা খবরিন্দ ঠাক্ষ্ব খন্হাবক রিবোধ মে ক রিবোধ ওগ খতিশয ঘৃণা জে প্রেমক দোসব রূপ খছি খা ধৈন সন সঁ রিপবীত খছি, ক প্রতীক তঁ নৈ খছি! – সে খাগাঁ দেখবঁ।
খঁতোন চেখরক খবরিন্দ ঠাক্ষ্ব দ্বাবা উঁদ্ধৃত কথন–
“হমবা ওগ সগব নোকসভসঁ বঁসী ভয নগৈত খছি জে হমব কথা সভকেঁ নোকপ্রিয খা প্রচনিত মান্যতাক কসরঁষ্টীপব পবখবাঁক প্রযাস কবৈ ছথি রা ওগমে কোনো প্রকাবক সৈদ্ধান্তিকতা খোজবাঁক প্রযাস কবৈ ছথি।
নে তঁ হম রুঢ়ি রাদী ছী, নে উঁদাববাদী খা নে রিকাসরাদী। হম কোনো পাদবী, উঁপদেশক রা নিবপেক্ষ র্যক্তি হেবাঁক স্বাঁগ সেহো নৈ ভবি সকৈ ছী। হম একটা স্বতংত্র নেখক ছী খা স্বতংত্র নেখক বঁনন বহবঁ টা হমব খভিনাষা খছি। হমবা নেন মনুষ্যক দেহ, ওকব বুদ্ধি, ওকব জ্ঞান, ওকব খাশা–নিবাশা, ওকব প্রেম, সভ কিছু

परित्र अछि ऋदा ऐ सभसँ बेंशी आदबणीय अछि ओकब स्वतंत्रता, जे ऋठ, अहंकाब, ढोंग आ ध्रूबतासँ मुक्त अछि।" –आ तेँ ओ अपन भाए द्वाबा अपन पनी संग कएन ध्रूबताक रिबोध कबै छथि काबण से हुनका अपन पिता द्वाबा (जे एकटा किवानाक दोकान चनबैत छना) अपन माता (जे भबि कस घूमि कऽ कपड़ा बेंचैबना ब्यापाबीक पुत्री छनी आ बड़का खिस्सा कहबैका छनी) पब कएन ध्रूबताक स्मबण कबबैत छन। से अबबिन्द ठाकुब अपन नघुकथा सभकेँ नोकप्रिय आ प्रचनित मान्यताक कसबट्टीपब नै कसन जेबाक पक्षमे छथि। जाँ जेने आ अंतोन चेखर ऐ तबहेँ पबस्पब रिबोधी मान्यताक अनुगामी छथि!
आ अबबिन्द ठाकुब ऐ दुनू प्रतिगामी मान्यताक अनुगामी बनि नघुकथा बचै छथि।
खिस्सा सियाब याब क समर्थक, रिबोधी आ मनबढ़ू शङ्काबनी नोकतांत्रिक बाजनीतिक यथार्थक रिबबण दैत अछि, एक्के ब्यक्ति कोना ध्रमसँ पूजित, घृणित आ हास्यबसिक भऽ जाए छथि। प्लेटो निखने छथि जे पढ़न निखन नोक बाजनीतिसँ दूब बहै छथि, एकब सजा हुनका यएह छन्हि जे ओ मूर्ख द्वाबा शासित होथि। नीक, अधनाक बीच बामसोगाबथ मन्डनक आदर्श अडिग अछि।
पियासन पानि: नाबायणप्रबरानी क्षणिक आरेशमे सूत्रधाबक चुम्बन कबै छथि। कथामे ख्रिस्ट छै, नगैए ओकबे दोख छै, ओकब पति नखनाक नै। ओकबा बचा नै होए छै, भगतैक बाद ओ भागि जाए छै। ऋदा नखनाक दोसब रियाह ओकब बाप बामचबण कबा दै छै, ओकबा होनिहाबी छै, नखना बाहब गेन छै, घुबतै तँ बताह

ভ২ জেতৈ। হ্মদা ঘ্বনৈ তঁ ও সন্ত রঁতাহ ভ২ গেনৈ, ও কহঁ ছৈ জে ওকব ঙা রঁচা নৈ ছিঐ। তঁ নাবাযণপ্পবরানী... সূত্রধাব খা বামচবন দ্নূকেঁ খার্ঁ র্ঁমেনৈ জে ও রেঁকসূব ছনৈ। ভার, প্রেম খা চবিত্রক মান্য শেষ্কারনীকেঁ তোড়ৈত খছি ঙা কথা। চাবিত্রিক খরধাবণা কখনো কান সাপেক্ষ ভ২ জাগ ছৈ, খাস ক২ তখন জখন চবিত্র মহিনাক হ্খএ।

খন্দাবক রিবোধ মে : ঠৌগঠৈন কথা। খনীহ্মদ্দীন খপন ঠৈনমে খপন হিন্দূ যাবক ভাগকেঁ মাবন জেরাঁপব নজ্জিত খছি, হরৌঠকাব ভ২ কান২ নগৈত খছি। শাহরাঁজ হ্সৈন, জে স্বপৌনসঁ ছথি খা খাগ কাল্হি ভাগনপ্পবসঁ সাংসদ ছথি, ক একঠা ভাষণ স্বননে বহী, ও কহৈত বহথি জে স্বপৌনে একঠা এহেন শহব খছি জত২ গাগ কেব রধ নৈ কএন জাগ ছৈ কাবণ হ্মস্লিম সহ্মদায ওত২ কহিযো কসাগখানা নৈ খ্গ২ দেনকৈ। খবরিন্দ ঠাকুবক ঙা নঘ্কথা পঢ়ি খনাযাস ও গপ মোন পড়ি গেন জে ঐ নঘ্কথাক সফনতা সিদ্ধ কবৈএ।

ঠাঁচা-১৯৯২- পত্র-শৈনীমে নিখন ঙা নঘ্কথা। খগ্নিপ্পষ্পক পত্রিকামে গ্বজবাত দংগাপব নিখরাঁপব রমাজীকেঁ করিনপ্পবক (জে খার্ঁ সাহিত্য খকাদেমীক মৈথিনী পবামর্শদাত্রী সমিতিক সদস্য ছথি) জাতিবাদী নেখকক গাবিঘঞ পত্র প্রাপ্ত ভেনন্হি, ঐ বাতাবরণমে খবরিন্দ ঠাকুব, সমধানি ক২, ঙা নঘ্কথা নিখনে ছথি। ঢেব বাস এস্কব-ওস্কবক গপক বাঁদ কনাগমেক্সমে ঠাঁচা-১৯৯২ খসরাঁক খরঁবি ঠী.রী.সঁ রঁহবাগত খছি।

মূস: মূস মাবরাঁক দরাগ ভবি মহাবাষ্ট্রমে খহাঁকেঁ নৈ ভেঠৈত, জখন প্লগ খাএন বহঁ তহিযো নৈ ভেঠৈত বহঁ। ওত২ গণপতি রঁপ্পাক ঙা বাহন পূজনীয খছি। হ্মদা

ঐ কথাক “ও” মহাবাষ্ট্ৰেমে নৈ বহৈএ। ঋাগ সাঁঝমে ও মূস মাবৰাক দৰাগ ঋানত। মূসক ৰহন্নে মনোবিশ্লেষণ কবৈত ঙা কথা ঋাগাঁ ৰঢ়ৈএ।
প্ৰজাতংত্ৰ পবিকথা: একটা হত্যা ভেনৈ। ঙা ছপনৈ। ও ডাক্টৈব ছনৈ, ওকব হত্যা ভেনৈ, ও ডাক্টৈব ৰম্ভ মামূনী ফীস নৈ ছনৈ, গবীৰক ডাক্টৈব নামসঁ ও খ্যাত ছনৈ, সে কিএ নৈ ছপনৈ ? ওগ পত্ৰকাবক ঋসনী ৰূপ ৰ্‌ঝন ছৈ কমনকেঁ। ফণীশ্বৰ নাথ বেণুক পবতী পবিকথা ক তৰ্জপব প্ৰজাতংত্ৰ পবিকথা ৰহ্ত বাস প্ৰজাতাংত্ৰিক (! !) কথাক কথা সোঝাঁ ঋনৈএ। ঙা ঐ সংগ্ৰহক সভসঁ পৈঘ নঘ্‌কথা ঋছি, জগমে কোনো ঘটনাক বাজনৈতিক নাভ উঁঠেৰাক মানসিকতাক সূক্ষ্ম বিববণ ভেন ঋছি। তগযো ৰাত খতম নৈ ভেনৈ, শ্বকুহো নৈ ভেনৈ।
ঋথ গিবগিট কথা: গিবগিট বঙ ৰদনৰা নেন খ্যাত ঋছি, ঝদা জখন মন্বক্থ বঙ ৰদনৈএ তঁ গিবগিটে নজা জাগএ। পোদ্দাবজী ঋা জযসবান জীক গৈংগ বাব কোনা এক দোসবাক কম্যূনিষ্টৌক বোটৈ ৰৈংক বাজনীতি ৰনি গেন, তকব কথা ঋছি ঙা, এক গোটৈ চেযবমৈন ঋা দোসব বাগস চেযবমৈন ৰনি গেনা ঋা নগ্ৰমে পূৰ্ণ শান্তি ঋছি। কাবণ ঋশান্তি হিনকে দ্‌ন্বক কাবণ ছন ! !
ঋয্যাসী: সূত্ৰধাব “ও” ছথি, ও ঘব ঘ্‌বনা, পত্ৰিকা, সিকবেটমে পাগ খৰ্চ কেনন্হি ঝদা ঘবক নেন তবকাবী ঋা ৰৈটৌক কিতাৰ কাঁপী নৈ কীনি সকনা। ঋয্যাসীক ঋন্বভব ঋা পবিভাষা তাকি বহন ঋছি ঙা কথা।
ৰৈকৰা–ফোড়ৰা: ৰৈকবড ঋা ফৰ্বডিক বাজনীতিক কথা ঋছি ঙা। জখন একটা ৰভনা উঁধাবী ওসূনীনে জাগএ তঁ সে স্বাৰ্থৰশ ৰৈকবড ঋা ফৰ্বডিক বাজনীতি ৰনি

जाएत। मूल समाचार, घटना आ झलकी (दृश्य एक-चारि) मे रंगल ई लघुकथा मैथिली लघुकथाक शिल्प आ कथाक संघर्ष सेहो देखबैत अछि। झलकी दृश्य चारिमे रंग नाटकक रंगमंच कथाकार पूर्ण घटनाक दऽ दै छथि, ई रंचा सभक बैकरौं-फोड़रौं खेला बनि गेल अछि। विष-पान: कचहरीक विवरण आ न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रियाक विश्लेषण अछि ई कथा। तारीख, मेडिकल एक्स-रे गाएब हएब, मोकदमाक स्थगन, दोसर कोर्टमे केसक ट्रांसफर... आ सभ किछु।

अन्हारक विरोध मे लघु कथा संग्रह अपन विषय-वस्तु, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आ शिल्पगत प्रयोग लेल मोन राखल जाएत। चाहे ई खिस्सा सिखाब यावक तीन तरहक शैक्षाधनी हुअए वा बैकरौं-फोड़रौंक तीन भागमे कथाकें बाँटब आ तेसर भागकें चारि भागमे बाँटब, आ चारिम भागकें लोक सभटा बुझैए, ऐ तरहें बुझेबाले रंग नाटक-खेलामे परिवर्तित करब। चाहे ई ढाँचा-१९९२ क पत्रात्मक शैली हुअए वा मूसक मनोविश्लेषणात्मक पद्धति। आकि प्रजातंत्र परिकथाक एकटा न्यूजपेपर रिपोर्ट आधारित कथा। शिल्प आ कथ्यक मेलक ई प्रयोग, नव विषय-वस्तु आन लघुकथा लेखककें सेहो प्रयोग करबाक चाभी।

अन्हारक विरोधमे अरविन्द ठाकुर

अरविन्द ठाकुर(१९५४-) एहन कथाकार छथि जे कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइसँ हटि कऽ मैथिलीमे लघुकथा लिखै छथि। अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष छन्हि राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा सभ। मैथिली कथाक जड़ता कम होइत अछि। सामाजिक-राजनैतिक-आर्थिक कथा तत्वकें जोड़ि कऽ लिखल ई मैथिली लघुकथा सभ ढेर

বাস বিঊতাক পূর্তি কবৈত খছি। সমাজ–বাজনীতি, ব্যূবোক্রেসী–জূডিসিযবী সভক সাঙোপাঙ রিরেচন ভেল খছি।

খন্মাবক রিবোধমে

খিস্সা সিযাব–যাব– বামনাবাযণ মহবাজ–এক্স এম.এন.এ. খা ভূতপূর্ব চেযবমৈন সবকাবী প্রকাশন কমিটী, তহিযা কোনো ঘোটানামে ক্ষখ্যমংত্রীক ভাগ বামাধাব পাঁডে, এম.এন.এ. হিনকা বঁচেনে বহথিন্হ। গবীবঁদাস খাজাদ জিনা কমিটীক মহামংত্রী, খনেক বঁর্খ ধবি সোশিনিস্ট খা খার্ব মহাসভা পার্টীমে, বেঁটা সেহো ট্রেনমে ডকৈতী ধবি কবহ নাগন ছথি। শানিগবাম বায খা নখন যাদর–মনবঁঢ়ূ সভ। মীটিং। বাজনাথ ঝা খা জীবঁছ মংডনক ঝংহে বাজনীতিপব কিছু পৈবাগ্রাফ খবৈত খছি। সদানন্দ রিদ্রাহী মহাসভাপার্টীক রিবোধী দনক স্বযংভূ নেতা তোফান সিংহক শাগির্দ খা হ্নকা সংগ একটা বঁম রিস্ফাটমে দহিনা হাথ গমেনে একটা জ্খান। হ্নকব খহসোচ কববঁ, বঘূ্বঁশ মংডনক জিনা কমিটীক ভাগস প্রেসিডেন্ট বঁনবাঁমে পাঁডেজীক দাঁর– বৈকবার্ডকেঁ জগহ ভেটবাঁক চাহী, খা চৌধবীজীক প্রতিষ্ঠাকেঁ দেখি হ্নকব চ্প ভহ জাএবঁ! বাজমংগন শ্রীরাস্তর খা সতীশ সিংহ পবমাব (ছত্তীস বাঁবূ ছত্রী– মনবঁঢ়ূ শঙ্কারনী)। একারন গোটে মেম্ববরঁনা সংস্থা ধেনা কমিটীক সর্বেসর্বা পবমাবজী। শ্রীরাস্তর খা পবমাবক জোড়ী ক্ষখ্যাত–খনগ–খনগ বহনাপব দ্নূ গোটে এক দোসবাকেঁ গাবি পঢ়ৈ ছথি ক্ষদা বহৈ ছথি সংগে। পূর্ব প্রখন্ড খধ্যক্ষ শনিচব "শনি" গাজা খাদিক খনরবত সেরী খা রর্তমান ঘরা খধ্যক্ষ গণেশ গ্ববমৈতা পেটীশনবাঁজ। চটর্জী দা–পটনাসঁ হোনপব বহৈ ছথি– চৌধবীজী খা পাঁডেজীক

রিবোধমে চৌরেঁজীক সংগে ফ্রংঠক নিযাব ছন্হি। শনি–গ্ববমৈতাকেঁ পবমাব গপমে ওমবা নৌ ছন্হি তঁ ক্যা গোঠে দ্নূ গোঠেকেঁ ফ্সিযাম্নী কঽ সোব কবৈ ছন্হি আ ত্রাণ দিযাবৈঁ ছন্হি। জঠৌশংকব মনিক প্রসিদ্ধ মাখন রাঁবূ (সভ নঠ রোন্ঠপব ফিঠ হ্থএরঁনা সনাগ–বিংচ– মনরঁঢ়ূ শঙ্কারনী)। খপনাপব ধ্যান আকর্ষিত কবরাঁ নেন পাবসমণি চৌধবীকেঁ সোব কবৈ ছথি আ হ্নকব প্রণামক উত্তব তীন প্রণামসঁ দৈ ছথি। হ্নকব কাব রেঁঠৌ রৌকা রাঁবূ (সম্প্রদাযরাদী পাঠীক মেম্বব) নঽ গেন ছন্হি আ জীপ খবাপ ছন্হি, দ্সধঠৈনী রঁনাক পঁচৈতী কবরাঁক ছনন্হি সে বিকশা মঁগরাঁরঁঽ পড়নন্হি। চ্যরনপ্রাশ খাগতে বঠ ছথি– বাঘোপ্ববসঁ হোমিযোপৈথিক গনাজ কবেনে ছথি। সীতা রাঁবূ মহাসভা পাঠীক প্রখন্ড খধ্যক্ষ (মাখন রাঁবূক রঁহ্– মনরঁঢ়ূ শঙ্কারনী)। স্বরৌধনাবাযণ সিংহ প্রসিদ্ধ স্বরৌধজী। এক্স.এম.এন.এ. আ এক্স খধ্যক্ষ জিনা মহাসভা পাঠী (সমর্থক শঙ্কারনী– জিনাক গাঁধী, রিবোধী শঙ্কারনী– নঠরবনান আ মনরঁঢ়ূ শঙ্কারনী– ঝঁহদ্রঁবা)। সাদগী বহন–সহন, রিনম্র। বামাধাব পাঁডেজীক ভাএ ঝখ্যমংত্রী শিরাধাব পাঁডেক প্রতি সমর্পিত। ঝদা চৌধবীজীসঁ রেঁসী সঠরাঁক সজা শিরাধাবজী হিনকা পাঠীক উম্মীদরাঁবী রাপস নেরাঁ নেন কহি কঽ দেনখিন্হ। বাজীর শর্মা–গনতহহমীক শিকাব– জে ছন–প্রপংচ, ফূসি আ রিশ্বাসঘাতক রিঁনা সেহো বাজনীতি কএন জা সকৈত খছি। ঠাঁগ–পঠাঁগ রঁজৈ ছথি আ সে মনরঁঢ়ূ সভ কঠাহ কঠ ছন্হি। স্বরৌধজীক কহনাপব জে শিরাধাব রাঁবূক ফোন এনন্হি তেঁ হ্নকা নাম খাপিস কবঽ পড়নন্হি, ও কঠ ছথি জে ঐ ন্বচা–নহংগা সভক সবদবরাঁক গোল্হড়া ঝাড়া দেরঁনি হমবা সভ। ওতে বামসোগাবথ

মংডন সেহো ছথি, স্বতংত্রতা সেনানী হ্মদা সম্মান-পেঁশন অস্বীকাব কঽ চুকন ছথি। কিযো কহৈ ছন্হি তঁ কহৈ ছথিন্হ জে জাউঁ রাঁউ জাউঁ, ওা গপ স্বন্নব ঠাক্ষবকেঁ সিখেরঁন্হি জে হ্মনিস্ঠব সভক কেশ-দাঢ়ী রঁনরৈত স্ববাজী পেঁশিন হথিঅা নেনে-এ। অা তখনে অনঘোন, ফেব রাঁজী মাবি নেনন্হি চমোক্কনি! অা মাখন রাঁবূ রঁড়কা গাড় ীসঁ উঁতরৈত বামাধাব পাঁডেক গবামে মানা পহিবা দৈ ছথি। ফেব একাএকী মানা পহিবেরাঁক চনন অা ফেব একাএকী ভাষণ-ভাখ। অা ওস্হব বামসোগাবথ মংডনক সপনামে কাবী-কাবী ভযারহ অাগ্নতি সোনহ্না সপনাকেঁ চাব্ধ কাতসঁ ঘেবি নৈ ছন্হি।
পিযাসন পানি- বামচবনক খেতী কবরঁ, অারঁ হবরাঁমী হ্মদা ওকব রৈঁঠৌ নখনাক মাথপব ছৈ অা তখনে ওকব গৌনা হোগ ছৈ অা অরৈঁএ নাবাযণপ্ববরানী। নেখক রা কথাক সূত্রধাব কনিযাঁক হ্মঁহদেখাগ নেন জাগ ছথি অা দেখৈ ছথি ওকব অপাব রূপ-বাশি। নখনাক কাকী রৈঁবিযারাঁনী ঠঁষ্টা কবৈ ছন্হি অা ও রঁহাব ভঽ জাগ ছথি। নাবাযণপ্ববরাঁনী এক দিন সূত্রধাবক পএব জাঁতঽ নগৈ ছথি। রোপনী, ডোভনী, কঁটনী অা কমৌনী, কোনো কাজমে নাবাযণপ্ববরানীক জোড় নৈ। এক দিন অন্হবগবে সূত্রধাব খেতমে কঁটনী কবরঁঽ রিঁদা হোগ ছথি তঁ অামক কনম নগ নাবাযণপ্ববরানীক অাত্তব ঠোব হ্নকব গান, মাথ অা কংঠপব নিশান ছোড়ি দৈ ছন্হি। হ্মদা তখনে ঘবৈযা নোকব সবজ্গরাঁক অরাঁজ অন্হাবসঁ অরৈঁ অছি অা রঁজ্জব খসারঁথ্ন ভগরান ঐ দ্সমনমাপব- কহৈত নিবাশা, নানসা অা ঘৃণাসঁ ঝংডারোঁব নাবাযণপ্ববরাঁনী অাগাঁ রঁঢ়ি জাগ ছথি। ওস্হব নাবাযণপ্ববরানীপব ডাকনী সরাব ছৈ সে ঘোন হোগএ, দেহপবক কপড় া-রঁস্তব ও

ফেকি নৈএ। মোতিযা দ্সাধ দারু পিবৈএ, ৰবহম ৰাৰাক পবসাদী খা ফেব ভগতা ৰনি সাত টা কাঁচ কবচী নাবাযণপ্ববরানীক দেহপব তোড়ি দৈত খছি। খা ডাকনীকেঁ হবদ্খাবক শ্মশান পীপব গাছপব ভগা দৈত খছি! ভাগি জাগএ নাবাযণপ্ববরানী। দোসব ৰেব নখনাক ৰিযাহ হোগ ছৈ হ্মদা ঐৰেব সূত্রধাব এগাবহ গো টকা খনকা দিযা পঠা দৈ ছথি। কনিযাঁক হোনহাবিক খৰবি স্বনি বামচবন প্রসন্ন ভেন হ্মদা নখনা খপন কপাব ফোড়ি নৈত খছি, কাবণ ও নামবদ খছি। নাবাযণপ্ববরানী... নছমী ছনৈ, ৰেকসূব, ৰেচাবী, খভাগনি।

খন্হাবক ৰিবোধমে– হো হন্না। কথাকাব রা সূত্রধাব ৰহবাগ ছথি খা পহুঁচৈ ছথি খনাউদ্দীন নগ। কহৈ ছন্হি খনাউদ্দীন, হ্মসনমান হ্মজড় া। জনাবদন চৌধবী ওকব যাব। ওকবে টৈনেমে ৰিক্ষখা ওকব ঐ যাবক ভাগকেঁ গাবি পঢ়নকৈ। ওকব ৰেহ্দপনীক শিকাগত নহ কহ জনাবদনক ভাগক খাএৰ, ভৈযা কহি সোব পাবৰ, হ্মদা তখনে ৰিক্ষখাক মাবৰ খা তখনে ওকব ঘবক মৌগী সভক ওকবা গাবি পঢ়ৰ শ্বরু ভেনৈ। খা উনটৈ হিন্দূ–হ্মসনমানক শগূফা সেহো ছোড়ৈ বহৈ। কোন গজ্জতি বহি গেনৈ ঐ টৈনেক। খাকি তখনে, চারু দিস খপন ডবাওন ছাঁহ পসাবনে খন্হাবক ছাতীকেঁ চীবৈত ৰিজনীক জগমগ গজোত দূব–দূব ধবি পসবি গেন।

ঢাঁচা–১৯৯২– কথাক সূত্রধাবক চিষ্ঠী। স্বীকাবোক্তি জে, জে কিছ নিখা গেন ছন্হি সে রাতারবণক দরারৰমে। হানেমে জ◌ॉন্ডিস ভেন ছনন্হি, জীহকেঁ বাস নগা কহ পড়ন ছনা। বৌদ, গবদা খা ধুঁখাসঁ খকছ ছথি। একটা খাব ৰিচিত্র ৰেমাবী, দেহমে তেজ হউহটি খা

চমৰাপৰ নহুঁ–নহুঁ চকত্তা উভৰহ নগৌ ছন্হি। এক দিন সহবসাসঁ ঘ্ৰৈ ছনা আকি স্কূটৰ খৰাপ ভহ গেনন্হি। মিস্ত্ৰী আধা ঘঁটামে স্কূটৰ ঠীক কবৰাঁক গপ কহনকন্হি ঝদা পাৰ্ট–প্ৰবজা খোনি কহ ছিড়ি যা দেনকন্হি আ চাবি ঘঁটা নগনন্হি। স্বপৌন ঘ্বি ডাঁ. দাসক কিনিক গেনা, হোমিযোপৈথিক দৰাগক ৰ্‌ন্ন খসবি কেনকন্হি ঝদা ঘঁটা নাগি গেনন্হি। এক ৰেব সাস্বৰসঁ ঘ্ৰৈ কান সেহো এহিনা ভেনন্হি। এক তঁ পনৌসঁ ৰিঙ্ছোহ আ দোসৰ হাড় কঁপকপাৰঁয ৰঁনা ঠাব আ সিহকৈত হৰাঁ! গোষ্ঠী, প্ৰা. বাজেন্দ্ৰ, ডাঁ ঝখজী আ কে.কে.গন্স্টীচ্যূট আঁফ মৈডোনাঁজীক প্ৰিঁসিপন ঝা। প্ৰা. বাজেন্দ্ৰক ডাঁ ঝখজীসঁ কহনাপৰ জে গনাজক ফীস পাঁচ টকা তঁ দহ দেৰ ঝদা দৰাঁগ দেৰহ পড়ত ঝঘিতযা, ফিজিশিযন সৈম্পন। তগপৰ ঝখজীক কহৰ জে মেডিকন বিপ্ৰেসেন্টেটিৰ সভ হ্নকা ঘাসো নৈ দৈ ছন্হি আ ঐ নেন তঁ ডাঁ. দাস নগ জাএ পড়ত। ফেব খযোধ্যামে ৰাঁৰবী মস্জিদক ঢাঁচাক ধ্বস্ত হএৰ। সূত্ৰধাবক দেহক কঁপকঁপী, হউহটি, চকতা আ সূজন ফেবসঁ। কোনো প্ৰত্যক্ষ কাবণ নৈ বহএ একব, ঝদা তৈযো হ্নকৰ দেহ একবা ভোগনে ছনন্হি।

মূস– ও আ ওকৰ দৰাগক দোকান। নৰকা ড্ৰগ গঁস্পেক্টৰ ঐ দুৰ্গা পূজামে পাঁচ সএ টাকা সনামী নহ গেনৈ। দোকান থসে জকাঁ নেনে ছৈ। খন্বজ ৰৈসৈ ছৈ দোকানপৰ। ভুমিহাব পেঁচ ভিড় াওত আকি দোকান কবত! ৰৈঁকক প্ৰবনা নোন, ঘৰক পাঁচ সানক ৰিজনীক ৰিন।.. জেঠকা সাব নাগপ্ৰবমে একাউন্টেন্ট ছৈ, সনগব নোকবী আ সেহন্তগৰ কনিযাঁ ছৈ। জে ও জাদূগৰ বইত আ তখন গিনী–গিনী হূ আ খনাউদ্দীনক চিবাগ

জে বহিতৈ ওকবা হাথমে তখন। ঁহসরা তঁ পরেশান কেনে ছৈ, খাগতো কান, ঁহদা এখন ওকবা এক্কা বত্তী তামস নৈ উঁঠৈ ছৈ। ওা শহব অন্নমল্ডনসঁ জিনা ঁহখ্যানয ভ২ গেন ছৈ, জমীনক দাম বঁঢ়ি গেন ছৈ। জমীন বেঁচি সভটা কর্জা-বঁর্জা সধা দেত। নিন্নক বঁদনামে পাবদর্শী বুঁনবুঁনা আ রিভিন্ন আঙ্গ্রতিক আ রূপক মূস, হ্মতবৈত, নড়ৈত, নচৈত, প্রেম কবৈত, পোথী পঢ়ৈত আ বম্মী খেনাগত মূস। দোসব রেঁব বঁড়কা টা বুঁনবুঁন্না, মূসক কাবণসঁ প্লেগ। মেহনতকশ মূস রিহবি বঁনবৈঁত অছি ঁহদা সাঁপ ওগমে বহৈত অছি। অচকচা ক২ ও উঁঠি গেন। স্বর্গীয পিতাক চিত্র দেখৈত অছি। পূর্বজক অর্জিত সম্পত্তিক উঁপযোগ সাঁপে জকাঁ কবত? কেআবীমে অনেকআ ঘাস-পাত খুবপীসঁ সাহ্ম কব২ নাগন।

প্রজাতংত্র পবিকথা- একটা হত্যা আ দূ টা ঘবমে ডকৈতী। কমন হ্মমাব শর্মা ঐ খবঁবিকেঁ দেখৈত অছি, সেন্সর্ড সন খবঁবি। ঐ গপক চর্চা নৈ জে ও ড◌াঁক্টব কে.পী.ভগত সেরানিবৃত্ত ছন আ মামূনী হ্মীস নৈ ছন। ওকব ঘবমে ডকৈত সভ গবীবঁ মবীজ আ ওকব পবিজন বঁনি পৈসন ছন। ওগ পত্রকাবপব কানারাঁজাবী আ মিনারষ্টক কেস অখনো নষ্টকন অছি সে ও কোনা নিখিতএ জে ওগ ঘবসঁ প্বনিস থানা অগবেঁ এক সএ ডেগপব আ আবক্ষী মহোদযক নিরাস অগবেঁ সাঠি-সত্তবি ডেগক দূবীপব ছনৈ। হেব ড◌াঁক্টব ওগঠামসঁ ও সভ, বাষ্ট্রপতি পদক প্রাপ্ত হানেমে বিষ্টাযব ভেন শিক্ষক রিএ্রম প্রসাদ রর্মাকি ঘব পহুঁচি গেন, ডকৈতী সেহো কেনক আ খেনাগ বঁনবাঁক২ সেহো খেনক। রিএ্রম বাঁবূঁক ভাগ গজানন বাঁবূঁ আবক্ষী অধীক্ষকক ওগঠাম

नजरि रॅचा कऽ पहुँचि गेला। म्दा तैयो किछु नै भेल। अस्पतालक हाताक म्ख्यद्वारपर लोक सभ जुटि गेल। मधुरेश किशोर द्विवेदीक केमिस्ट्स आ ड्रगिस्ट्स एसोसियेशन एकरा नेतृत्व दऽ रहल छलै। स्कूलसँ घुरैत रॅदरा सभकेँ किछु भऽ जाए..। रञ्जा सभ शुरू- ललान श्रीवर चौधरी, भड़्आ म्रलीधर अग्रवाल, मटिया तेल फेंटि कऽ पेट्रोल रॅचनिहार पत्रकार, चोरिक माल खरीद-रिक्री केनिहार नगरपालिका चेयरमैन ब्रूचन् रॉव्रू, म्नीमक गुप्तासँ चारिटा संतानक रॉप पचीस रर्षीय सेठानीक साठि रर्षीय पति कानारॅजरिया सेठ कनकधारीमल- ध्वनि रिस्तारक यंत्रपर ओकर हँफसरॉक स्वर छोटे-मोटे अन्हड़क भ्रम दै छल। रॉव एशोसिएशनक अध्यक्ष ज्ञाननाथ सिंह जे खूनी आ डकैत सभक पैरवी करै छथि, रॉढ़ा प्रभारित ग्लाकाकेँ डिजनीलैन्डमे परिरर्तित करॅाक म्हत योजना प्रस्तुत करएरॅला गंजेड़ी छऽटभैया गुह्यानन्द तिरारी.. गोरका डाक्टर धरमचन्द सहाय जकरा ब्रुम्ननक लोक सभ डी.सी.एस. माने दारू, छौड़ी, सार-रॅहानचो कहै छथि.. ओकर धीपल-तरॅधल शब्द सभ। फेर भीड़क नेतृत्वहीन हएरॅ, प्रतिनिधिमंडल नै जन-समूह द्वारा डागरेक्टे रार्ता करॅाक गप, आ एलामे टैरेसपर ओल्ड फ्ॉक्सक अन्तर्राष्ट्रिय समस्या सभपर रॅकथोथी। तखने मोटेरसागकिलक एकटा सरार भीड़केँ नियंत्रणमे लेमऽ चाहैत अछि, ओ रॅदा एकटा संप्रदायरादी दलक नर्यतम रंगरूट छल। मधुरेशजी सारधानी रॅरतै छथि। एकटा धग्गर आ टैका जनमल नारा कमल आ अनकर ध्यान आगृष्ठ करै छन्हि। फेर अरॅ छथि प्रदीप क्रान्तिकारी जे समाजसेराक रशीभूत अभियन्त्रणक पढ़ाग छोड़ने

ছথি রা নিশাৰাজী খা ৰনাকোবক কাবণ নিষ্কাসিত কএন গেন ছথি। খন্বমংডনাধিকাবীক জীপপব খাএমণ হোগত খছি। প্রদীপ এাতিকাবী কহৈত খছি– কোযনা নাগসেংসমে সাত হজাব টৈকা চাহী হবামজদাকেঁ। দেখনহক তূফান। মধ্বেশজী কিছু খাব গোটেকেঁ সংগমে নহ নেনে ছনা জেনা গজেন্দ্রজী– স্থানীয কাঁনেজক ব্যাখ্যাতা খা ব্যাপাবী সংগঠনক মাধরজী খা গুঞ্জমোহনজী। রিনা খপ্রিয ঘটনাক ভীড় গাঁধী চৌক খা জযপ্রকাশ চৌক পহুঁচন। তখনে মিঠাগ দোকানপব রৈসহৰনা গোলিডযা জে এিকেট সেহো খেনাগ ছন খা তহ্মে ৰাঁনিক স্বরিধাক ধ্যান বখৈ ছন– রৈটপব খারি গেনৈ তঁ ছক্কা খা নৈ তঁ কনীন রৌনড– সে সবকাবী গাড় াকেঁ দেখি মাব..খাগি নগা দে.. ৰাজি উঠন। কিছু নোক গাড় া দিস দবৰব মাবনক, হ্মদা গাড় াক চানক গাড় া ভগৌনক। ন্যায চৌক রা নৰাৰ চৌক পব রিশ্ব হিন্দূ সেনাক সেনানী সভ ৰজবংগৰনীক স্থাপনা কহ দেনে ছন কাবণ তবাজূ খা খাঁখিপব পঙ্টী ৰনা মূর্তি নৈ নাগি সকন বহএ। ৰজবংগ চৌকক রৌর্ড নাগি গেন বহএ। প্রশাসনমে ওগ সমএ দনিত খধিকাবী সভক ৰাহুন্য ছনৈ খা ও সভ চৌকক নাম খম্বেদকব চৌক কবহ চাহৈ ছনা সে ও সভ ৰজবংগৰনীকেঁ গিবফতাব কহ থানা নহ গেনা জতহ স্বনৈ ছিএ খাগযো হ্নকব পূজা কএন জাগ ছন্হি। সে ওা চৌক নগবপানিকাক পার্শ্বমে বহনাসঁ খাৰ নগবপানিকা চৌক কহাগত খছি। খন্বমংডনাধিকাবী ফোর্স নহ কহ এতহ খারি গেন খা সভ মিনি নাঠী ভাঁজহ নাগন। প্বনিসৰনা সভ দূব ধবি দবৰব মাবি বহন ছন। হ্মদা ফেব নোক সভ গব ধহ কহ বোড় া ফেকৰ প্রাবম্ভ কেনক। প্বনিস খসৰাব ভহ ভাগন..

একটা হিটৈনব কষ্ট মোঁছবরঁনা গংস্পেক্টব আএন.. রঁবগাঁহী সভ ওকব গাড় ী নহ ভাগন বহ ! অন্বমংডনাধিকাবী আ দোসব সভ হাঁগ-হাঁগ জীপমে রৈঁসি কহ পতন্বকান নহ নেনে ছন। কমন নজবি খিবওনে ছন। গোলডী ওকবাসঁ রঁহস কেনকৈ তঁ অমজদ অনী কমনক রাঁহি গসিঅযনে ... ঞ্হ্ক চীতা আ কূঢ়মগজ মহিষক রীচ দর্জন ভবি নোক..। বাজনৈতিক আ সামাজিক গুণ্টরঁন্দীসঁ রাঁহবক নোক ঠক্ষবসোহাতী নৈ জনৈ ছনা। নে ছন.. কথী নেন একব সভক ক্ষাহ নাগৈ ছী। দূ গোষ্ঠ গিবহ্নতাব সংগীক বিহা কবরাঁক মাঁগ.. ক্ষদা অধিকাবী সভ অপন বক্ষার্থ তগ নেন তৈযাব নৈ ছনা। নোহ্নবকষ্ট ডী.এস.পী.ক মরাঁনীকষ্ট অশিষ্ঠ রাঁনী..। মধ্বেশজী রঁজনা- অহাঁ সভকেঁ নিখত্তব জেরাঁক সিহন্তা হ্অএ আকি নিছক্ক জযপংথীএ ঘেবনে হ্অএ তঁ..। রঁন্হককেঁ ছোড়রাঁপব সহমতি ভেন। মন্বকথক কোন কথা কোনো কাগপঞ্ছী নৈ দেখাগ ছনৈ.. মহাভাবত সমাপ্ত ভেনাপব কী হ্নকক্ষেত্রা এহিনা নিসরঁধ ভেন হেতৈ। রেঁদবা সভক একটা গোন ক্রিকেট খেনেরাঁক নেন মৈদানমে প্ররেশ কহ বহন ছন।

অথ গিবগিষ্ট কথা- ক্ষক্কন রাঁবূ মানে ক্ষক্ষন্দ জাযসরান- জনরিতবণ প্রণানীক দোকানক একটা ডীনব। ঐ নামক একটা দবোগা সেহো আএন ছন আ খূরঁ হঁসোথি কহ গেন ছন। বামনখন পোদ্দাব, রী.এস.সী. আঁনর্স, রন্দ কিশন পোদ্দাব, চাহ-পান রেঁচহরঁনা, টাঁপব ক্ষদা নোকবী নেন জত্তা খিআ গেনৈ। নগব-হরাঁক নাপরাঁক যংত্র- কাযবানা ভদ্রতাক পচহত্তবি প্রতিশত, স্বার্থনা যাবীক রীস প্রতিশত আব মিসনেনিযস রাগবস পাঁচ প্রতিশত অন্বপাতমে উপস্থিত বহত। একটা গোদাম সন মকানমে

অছি প্ৰনিস ফাঁড় ী আ তকবে সঙৈন দাব্দক ভঞ্চী ! এক দিন অনাযাসে দ্নূক অহঁ সোঝাঁ–সোঝী হোগ ছন্হি জখন হ্মফন্দ প্ৰনিস ফাঁড় ীসঁ ফবাকৈত ভ২ নিকনৈ ছথি আ বামনখন ভঞ্চীসঁ। ঝগড় াক রাঁদ প্ৰনিসরঁনা সভক সহান্বভূতি হ্মফন্দক প্রতি বহএ আ ভঞ্চাসঁ রঁহবাগরঁনা সভক পোদ্দাবক পক্ষমে। বামনখন পোদ্দাব গিবফতাব ভ২ গেন আ ভোবমে ওকব রাঁপ প্ৰনিসরঁনাকেঁ ফূন–পত্তী চঢ় া ক২ ওকবা ছোড়ওনক। ফেব হ্মক্কন রাঁবূ এক সোড়হ নোক ন২ নশা রিবোধী নাগবিক মঁচ রঁনেনন্হি আ ভঞ্চীপব ধবনা দেনন্হি। ওা সোনহ গোটৈ ছনা সাত গোটৈ পিতিঔত–মমিঔত–পিসিঔত–মসিঔত, দূ টা হবরাঁহা, ধনক্ষঙ্কা মশীনক আপবেটৈব, তীন ফখ্যাত মিত্র আ ফনপ্ৰবোহিতক দূ টা নফংগা প্ৰত্র। হ্মদা এম্হব পোদ্দাবজী অধিকাব স্ববক্ষা হেত্ত ३৬ গোটৈক সংগে আরিঁ গেনা। নশা রিবোধী নাগবিক মঁচক সেনাপতি নঁক ন২ পড় নো তঁ শৈষকেঁ ধবপটাগ উঠা দেনকন্হি। ফেব মাবি–পীটৈক ক্রম শ্বব্দ ভেন। বংগরাঁজী স্পাঁশৈনিস্ঠ স্বব্রঁত হ্মখর্জী একবা গৈংগরাব কহৈ ছথি। হ্মদা তখনে নগবপানিকাক চ্নারক ঘোষণা ভেন। স্নার্থনা যাবীক রাগবস শীরাজ বীগনক সোঝাঁ বংগ ধেনক। হ্মক্কন রাঁবূ চেযবমৈন ছথি, পোদ্দাবজী রাগস–চেযবমৈন। নগবমে শান্তি অছি।

অয্যাসী– দোসবাক সংগ রৈঁসনমে মৌজ হ্মদা পনৗক রোঁন– তবকাবী নেন দসঙৈকহী.. কিবানা সমান কান্হিযো– পবসূ জে আরিঁ জাএ। দোসক ওত২ রিঁদা ভেন, রৈঁটাক গপ নৈ স্বন২ চাহনক। পটৈন চৌক.... মহামো গাঁধী চৌক পহুঁচন। সংগমে রিঁসঙৈকহী। বিকশারঁনা অপন ঢৈপব তানি ক২ স্বস্তাগত বহএ। বিকশাপব রৈঁসন,

बस्तामे दोस नेन दू टौकाक सिकरेटे नेनक, अपन फेरबिटे पत्रिका मोब रौबत टौकामे, आ चाबि टौका बिकशोरनाकँे देनक। दोसक घबमे पंथाक हरौसँ किछु आफियत अन्वभर भेलै। रौचन दू टौका ओकबा झँट द्सनकै, घबक तबकाबी आ रौटोक किताब–कापी.. घब घ्बन देत घामसँ फंडारोब। पनीक ह्नन–नान आँखि देखि नगलै जे अय्यासी कर घ्बन ह्थए।
रौकरा–फोड़रा– मूल समाचाब– मतायल हराक पेट्रोलकँे स्वार्थिक सनाग देखौने छन। घटना– प्रकाशि अगबरानक फर्म "वृष्णिचन्द भँरबनान रस्त्र भंडाब"– उँधाबीक बकम नाथ ठेकि गेलै तँ स्वबगीय बघुनाथ झाक पुत्र अठमा फेन माहरिगीन अरँड सिकन्दब झाकँे रसूनी नेन बाखनक। ऐ क्रममे ओ पहुँचन एक दिन बामचन्द मड़ब नग, ओकब रौटो कानेश्वब मड़ब जे आरँ नाममे यादव निखै छन चाबि रौबथ पहिने तीन हजाबक थ्री–पीस सूट रौनरौने छन। झदा रौप ओकब श्लोक माद्ँे मना कर देनकै। बस्तुमे पान खेरौक क्रममे झन्ना ठाकुबक दोकानपब कानेश्वब यादवसँ ओकबा भेँट भेलै, कानेश्वब संगे पबिराबक नोक आ फट्रैम्ब सेहो छलै। पहिने सिकन्दब जे फिबंटेगिबी कबै छन सएह आग कान्हि कानेश्वब कबै छन से तगेदापब माबि रौजड़ा गेन। सिकन्दब ओकबा छातीपब चढ़ा गेन। सिकन्दबक प्वबनका संगी सभ जुटि गेन आ कानेश्वबक फट्रैम्ब सभकँे धोपनक। फेब दोसब दिन पिछड़ा एकताक जुन्वस निकनन आ रस्त्र भंडाबक शीसा फोड़नक। झदा नठैत सभ आरि नाठी रौबसारँ नागन। जकब जेने सिंग अटलै, ओम्हरे पड़ाएन। नूट, अबाजकता..पसबि गेन। झनकी– दृश्य एक: जिनाध्यक्ष प्रश्नृषोत्तम मंडनक

স্নব, অঠাবহ কোঠনী আ দূ টা ৰঁড়কা–ৰঁড়কা হ◌ॅনৰঁনা বাজনীতিক দনক কার্যনিযমে। সন্তারনা জ্‌ন্নস নিকনত.. শিষ্য চিবংজীব সিংহ, পার্টীক যবা মংচক অধ্যক্ষ আ মংডনজীক ঘোব সমর্থক। হ্নদা ও তামসে ঘোব ভ২ জাগত অছি– অহাঁ সেহো ছোট জাতিক ছী সে ওকবা সভক পক্ষ নেৰঁ কবৰঁ। ৰঁহবা জাগত অছি। দৃশ্য দূ: ফূসক ঘব। ধনীনান, বামনাবাযণ। ৰৈঁকৰাঁ–ফোড়ৰাঁ কী হোগ ছৈ। মটৰ্ধ কী জানয। কিছু কান চ্‌প বহনাক ৰাঁদ আল্হা টৈব দেনে অছি। দৃশ্য তীন: কামবেড বামসেবক সাহ্‌ক চাহ–নাশ্তাক দোকান। ৰঁহস.. রিদ্যানিবাসজীক ভাষণ, জাতি নামক কোনো রস্তু নৈ। হ্‌নকা পাগন কহি ক্যা ছৌড় া ৰঁহবা জাগত অছি। দৃশ্য চাবি: টিফিনমে ৰঁচা সভক খেন: ঘাস–ফূস ৰঁনা ঘব হমব আ হম ৰঁনৰঁ জাদৰঁ। দোকান রিবজূক আ ও ৰঁনত ৰাঁভন। দ্‌নূমে ঝগড় া হএত আ নন্নূ, মোহন, নবেন আ ৰঁৰঁনূ আএত আ হমব ঘবমে আগি নগা দেত। তখন স্বৰেশ ৰঁনত নেতা আ রিনোদ ৰঁনত দবোগা। স্বৰেশ দবোগাকেঁ কহত জে একবা দ্‌নূক ঘব–দোকান ৰঁনৰাঁ দিযৌ আ পকড়ি কহ নাউঁ। স্বৰেশ দ্‌নূক হাথ মিনৰাঁক২ দোস্তী কবাএত। ৰৈঁকৰাঁ–ফোড়ৰাঁ খেন ভবি টিফিন চনৈত বহন।

রিষ–পান– রকানতখানাক হ্নসীপব ৰৈঁসন গোপানজী কছুমছাগ ছথি। কচহবীক দ্বাবপব স্বগ্গাৰঁনা জোতখী ৰৈঁসন ছথি। ওতৈ একটা ৰৈঁনব সেহো অছি, আঁখিক বোশনী ৰঁঢ়ৰঁ২ ৰঁনা মমীবা স্ববমা। অদানতিক ৰঁবংডাপবসঁ অর্দনী বামেসব মংডন রন্দ জাগেসব মংডনকেঁ চিকড়্‌ত অছি, মোকীন রকীনকেঁ অগিনা তাবীখপব ৰাঁকী–ৰঁকিযৌতা দেৰাঁক গপ কহৈ ছন্হি হ্নদা ও কনমক

ডঁনটৌ ছোবসঁ কান খোদৈত বহৈ ছথি। গোপান স্বনৈ ছথি। গোপান, এক দিন পানৰঁনা দোকানপব চত্তবানন নাঠী নেনে খাএন খা ৰঁবসাৰঁ২ নাগন। ও খসি পড়না। ৰাঁৰূজীক প্ববান নোকব নেনিযা খাবি চত্তবাননকেঁ ৰঁজাড়ি দৈত খছি ঋদা ও মৌকা দেখি ভাগি জাগত খছি। বামপ্রসাদক সাঠি রর্ষীয মায মবৌনারানী সভসঁ পহিনে গোপানক স্বধি নেনক। ফেব গোপান খস্পতান খানন গেন। চত্তবানন সেহো ওতহ খাএন বহএ গনাজ খা গন্জবী বিপোর্ট নেন, ঋদা ক্যা চীন্হি গেনৈ খা জবনাক চেবাসঁ ওকবা মাবি কহ ভগা দেনকৈ। চত্তবাননকেঁ সভ খাদি খপবাধী কহৈ ছন ঋদা গোপান ওকবা স্বধাবৈ নেন প্রযাসবত ছনা। সে খাৰঁ ও ভস্মাস্বব ৰঁনি গেন। প্বনিস চত্তবাননসঁ পাগ খসূননক খা ও ঘবেমে বহৈ ছন। প্রগতিক তাবীখ কেসমে পড় ৈত বহনন্হি খা হ্নকব এক্স–বে প্লেট সেহো খস্পতানসঁ নিপত্তা ভহ গেন। তীন ৰঁর্খক ৰঁাদ গৰাঁহী শ্বৰু ভেন খা ফেব শ্বৰু ভেন জিবহ, ওগ দিন ভবি ৰাঁহ্ক কমীজ পহিবনে ছনা, কানব খা জেৰী বহৈ রা নৈ, বংগ..। জে নাঠী ৰঁজবনন্হি তকব নম্বাঁগ, ৰঁনারষ্টি..। রকীন মিত্র.. ঋদা এক দিন স্বৰক ত্তর্শী ন্বকাএন নৈ বহনৈ, দেখৈ ছিঐ মোকীন সভকেঁ খাখিব পাগ দেনে খছি তঁ ওকব সভক কাজকেঁ প্রাথমিকতা তঁ দেৰঁহি পড়ত। খা ওগ দিন গরাহী নৈ গ্বজবি সকন.. ফাগনপব হাকিম রিপবীত টিপ্পণী কহ দেনন্হি। চত্তবানন তীন হজাবমে গপ ফিট কেনক জে ওগসঁ ৰেঁশী খর্হাঁ দহ সকী তঁ..। এংটী–পার্টীক রকীনক মার্ফত রকীন–মিত্র নগ আঁফিব সেহো খাএন ছনন্হি। ঋদা গোপানক কহনাপব কোর্ট ট্রাঁসফব করেৰাঁক প্রক্রিযা শ্বৰু ভেন। ঋদা কোর্ট ট্রাঁসফব ভেন শীনভদ্র ন্যাক

रूपमैतीमे जे गोपालजीक राजनैतिक प्रतिद्वन्दी छला आ चतुरानन आग-काल्हि हुनके छत्र-छायामे छल। मेल पेटीशनपर गोपाल दसखत कऽ दै छथि, आत्मसमर्पण जेना भारत-पाक युद्धमे एक लाख सेनाक संग जनरल नियाजी कएने छल।

संपादकीय

काशीकान्त मिश्र "मधुप" (1906-1987)-
"राधाविरह" (महाकाव्य) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता "झंकार" कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । "'घसल अठन्नी" कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना—दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटैलनि।

मधुप जीक कवितामय चिठ्ठी *(अप्रकाशित पद्य-डॉ.पालन झाक सौजन्यसँ)*

चि. श्री चन्द्रकान्त मिश्र शुभाशीर्वाद पारि
अहाँकेँ कुशल थिकहुँ सह्लाद
गाममे परिवार अपन आनन्द
अहीक हेतु छल चिन्तित चित्त अनन्त।
घेंट-पेट ओ तैठ पेटसँ हीन
उदय बहए अछि मनहि मन किछु खिन्न।
मंगलमय श्री मंगल झा सुरधाम
काशीवासी 'तजि ललता' आराम।
अह्लुँ हुनक सेवामे मेवा छी चखैत

ছী তহিঠাম জতএ কেও নহি খছি ঝখৈত।

(চন্দ্রকান্ত মিশ্র–মধুপ জীক ছোটৈ ভাগ উঁদয–চন্দ্রকান্ত মিশ্রেক রাঁনক চন্দ্রকান্ত মিশ্রেক রিরাহ মংগনদত্ত ঝা, গাম হবৌনীক কন্যাসঁ।
মংগন ঝাক কাশী প্ররাসমে নিখন পত্র, সূর্যকি উঁত্তবাযণমে গেনাপব মৃত্যুক ববণ, সংগমে উঁদয খা মংগন ঝাক পৌত্র শ্রী প্রত্যুম্ন হুমাব ঝা সেহো সংগমে বহথি।)

**

ঠদবারাঁদক মিথিনা সাংস্কৃতিক পবিষদ্ দ্বাবা শ্রী যোগেন্দ্র পাঠক 'রিযোগী' জী কেঁ হ্নক পোথী 'রিজ্ঞানক রঁতকর্মী'ক নেন পহিন তিবহুত সাহিত্য সম্মান দেন গেন।

২০৭১ সানক গংকী ধ্স্লাঁ রঁস্বহুবা প্ববস্কাব ঐরেঁব শ্রী বামভবোস কাপড়ি ভ্রমবকেঁ দেন জাএত। নেরাবী, নেপানী খা হিন্দী ভাষাক সাহিত্যকাব ধ্স্লাঁ সাযমী খা হ্নকব পনী শ্রীমতি রঁস্বহুবাক স্মৃতিমে স্থাপিত গংকী ধ্স্লাঁ রঁস্বহুবা প্ববস্কাব ২০৩৯ সান সঁ দেন জা বহন খছি খা দূ সানপব দেন জাএরঁনা ঙা প্ববস্কাব মৈথিনীমে সর্বপ্রথম দেন গেন খছি।

**



ওম প্রকাশ ঝা

কাশীকান্ত মিশ্র ‘মধ্‌প’ খা মৈথিনী গজন

কাশীকান্ত মিশ্র ‘মধ্‌প’ জীক নাওঁ মৈথিনী সাহিত্যমে একটা উঁচ্চ স্থান বখৈত খছি। মধ্‌পজী মৈথিনীমে খনেকো বচনা কেনে ছথি। হিনকব খষ্টৈ মৈথিনী–প্রেম কে নৈ জনৈত খছি। একসঁ এক কার্য বচনা হিনকা মৈথিনী সাহিত্যমে ‘খমব’ বঁনৌনে খছি। কী মধ্‌পজী মৈথিনীমে গজন সেহো কহনে ছথি, ওা জনবাঁক উত্কণ্ঠা গজনক সিনেমী হেবাঁক কাবণেঁ হমবা ছন। “খনচিন্হাব খাখব” জনবৃত্তসঁ পতা চনন জে মধ্‌পজী মৈথিনীমে একটা গজন বচনে ছথি জে ১৯৩২ ঃ.মে মৈথিনী সাহিত্য সমিতি দ্বাবা কাশীসঁ প্রকাশিত পত্রিকা– “মৈথিনী–সংদেশ”মে ছপন ছন। ওা গজন হম নীচাঁ উদ্ধৃত কঃ বহন ছী–

“মিথিনাক পর্ব গৌবব নহি ধ্যান টা ধবৈ ছী

স্বনি মৈথিনী স্বভাষা বিন্ন খাগিযেঁ জড় ছী

সূগো জহাঁক দর্শন–স্বনবৈত ছন তহী ঠাঁ

হা খাজ ‘খাজ গো’ টা পঠা উঁচ্চতা কবৈ ছী

হম কানিদাস বিদ্যা–পতি– নাম ছোড়া ঝঁহমে

রাঁড়ক তীত পঢ়ঁখা সভ রঁকিমে ধরৈ ছী

ভাষা তথা রিভুষা খছি ঠীক খন্যদেশী

দেশীক গোন ঠেসী কী পাঁক পড়ৈ ছী

ঔযত্র–তত্র দেখূ খছি পত্র সেকড়ো । টা

খছি পত্র মৌথিনীমে একো নে তেঁ ডরৈ ছী'

ঐঠাঁ ঙা দেখরাঁক চীজ খছি জে ঙা গজন পূবা–পূবী খবরী রঁফেবপব খাধাবিত খছি । ঐ গজনক প্রত্যেক পাঁতিমে হ্রস্তহ্রগন্বন (দীর্ঘ–দীর্ঘ–হ্রস্ব–দীর্ঘ) খা হ্রড়ঁন্বন (হ্রস্ব–দীর্ঘ–দীর্ঘ)ক প্রযোগ ২ রেঁব কএন গেন খছি । কহরাঁক মতনরঁ জে ঙা গজন রঁফেবমে কহন গেন খছি । ঙা খচবজক রিষয খছি জে মধুপজী খবরী রঁফেবমে গজন কহরাঁক যোগ্যতা বথিতো মাত্র একেটা মৌথিনী গজন কিএ কহননি ? খারঁ এতেক দিনক পছাতি ঐ রিষযপব খন্বমানেটা নগৌন জা সকৈত খছি । তথাপি ঙা উঁত্কণ্ঠাক রিষয ছৈ, তঁএ রিষযপব রিমর্শ খারশ্যক বুঁন্নলা জাগএ ।

ঙা গৌবরক রাঁত খছি জে মৌথিনীমে পছিনা সএ রঁবখ পহিনেসঁ গজন কহন জা বহন খছি । হ্রদা ঙা চিংতনীয খা সোচনীয রাঁত খছি জে ঘনেরো সাহিত্যকাব সভ একটা রা দূটা গজন কহনা রাঁদ হেবসঁ খাগূ গজন একদমে নৈ কহনথি । একব কী কাবণ ভহ সকৈত খছি ? ঙা রাঁত সর্বরিদিত খছি জে মৌথিনী সাহিত্যকাবক একটা রস্থ হবদম ঙা মানৈত বহন জে মৌথিনীমে রঁফেবযকত গজন নৈ কহন জা সকৈএ । খপিত্ত কিছ গোটে এতএ তক মানৈত বহনা জে

মৌথিনীমে গজন নিখনে নৈ জা সকৈত অছি! ওনা ঐ রীতক প্রতিরাদ স্বরূপ রীচ–রীচমে মৌথিনীমে গজন কহন জাগত বহন, জেকব উঁদাহবণ 'মধুপ'জীক ঙা একমাত্র গজন সেহো অছি। হেব ঙা সরান জে জখনি মধুপজী রঁহবমে একটা গজন কহনে ছথি তখনি হেব দোসব গজন কিএ নে কহনে হেতা? একব জরার্ব তকৈনে জখনি আধুনীক মৌথিনী সাহিত্যক পূবা ওতিহাসকেঁ দেখৈ ছী, তখনি রঁহৃত কিছু স্পষ্ট ভঽ জাগএ। আধুনিক মৌথিনী সাহিত্যক ওতিহাস সামন্তরাদ আ দাদাগীরীক ওতিহাসক একটা সর্বশ্রেষ্ঠ উঁদাহবণ বহন অছি। সদিখন একটা খাস গ্রুপ রা রঙ্গ মৌথিনী সাহিত্যকেঁ অপন জাগীব বুঝৈত মৌথিনী সাহিত্যকেঁ রঁহকী নগৌনে বহন অছি। ওনা ঙা প্রক্রিযা আগযো ধবি বহন অছি, হৃদা পহিনেসঁ যএহ পবিরর্তন ভেন অছি জে আরঁ প্রতিরাদক স্বব সেহো হৃখব ভেন জা বহন অছি। একব স্বগরুঁগাহটি আরঁ বুঝাএ নগন অছি। অসত্ত, হমব কহরাঁক তাত্পর্য ঙা অছি জে মৌথিনী সাহিত্যক মঠাধীশ আ সামন্ত নোকনি ঙা ঘোষণা কেননহি জে মৌথিনীমে গজন নৈ ভঽ সকৈত অছি। প্রযোগধর্মী সাহিত্যকাব জঁ কিছু নর কবরাঁক দুস্সাহস কেননি তঁ হুনকা নানা প্রকাবসঁ সমস্যা–বুঝা রা ত্রাস দেখা মঠাধীশ সভ অপন রীত মানরাঁ নেন মজবূব কবৈত বহনখিন। ঐ ক্রমমে রিষযসঁ ওতব ঙাহো চর্চা কবএ চাহি ছী জে মৌথিনী সাহিত্যমে প্রবস্কাবক বাজনীতিকেঁ কে নৈ জনৈ ছথি। কোনো পোথীকেঁ পঢ়ৈরঁনা হোগ রা নৈ, জঁ মঠাধীশ প্রসন্ন ছথি তঁ প্রবস্কাব নিশ্চিত অছি পতা নৈ কিএক ঙা রীত কান–ক্রমে অনেকো সাহিত্যকাবক রঁনি ঐ রূপমে নৈত বহন অছি জে ও

সভ খপন মেধা মৌথিনী সাহিত্যকেঁ সমৃদ্ধ কবৱামে নৌ নগা মঠাধীশ সভকেঁ প্রসন্ন কবৈমে নগৱএ নগৌ ছথি। কেতেকো ৰেব ওহো লোগত খছি জে খপন পহিচান হেবেৱাক ডবসঁ মেধাৱী সাহিত্যকাব মঠাধীশ খা সামংত সৱহক পৌদা কএন খৱধাবণাক খন্বৰূপেঁ চনএ নগৌ ছথি। খস্তু পহিচান হেবা জাগক ডব লোগ ৱা প্রবস্কাব নৌ ভেটৱাক ডব ৱা সাহিত্য সমাজমে খছূত হেৱাক ডব, কোনো নে কোনো কাবণেঁ কেতেকো সাহিত্যকাব খপন মেধা স্বান্ত: স্বখায নেখনসঁ হটা মঠাধীশ স্বখায নেখন দিস ৱঁট৹ি জাগ ছথি! ঐ দুষ্চক্রক শিকাব মৌথিনী লোগত বহনী খছি।

খাৱঁ ফেবসঁ মূন ৱিষযপব খাৱি ঐ ৱাঁতক পবতান জাএ জে খাখিব মধুপজী এক্কে গোটে গজন কিএ বচননি? জখনি কি ও খবৱী ৱঁহবমে গজন কহৈমে সক্ষম খা সমর্থ ছনা? ওা ৱাঁত খৱঁস্স ছৈ জে মধুপজী মৌথিনী সাহিত্যক একটা মজগূত খামহ বহনা খা পূবা মনোযোগ পূৰ্বক মৌথিনীক সেৱা কেননি। হিনকা দ্বাবা কহন গেন একমাত্র গজন ৱিশেষ ক্ষমতাক পবিচএ সেহো কবৱৈঁএ। তওা দিনমে[1] মধুপজীক উঁমেব ২৩-২৬ ৱঁর্ষক ছেননি। ওগ সমএ মধুপজী একটা যুৱা,উঁদীযমান খা উঁজৰ্বান বচনাকাব ছনা খা প্রযোগ ধর্মিতামে ৱিঁসৱাস বখৈ ছনা। ঐ ৱাঁতক সম্ভাৱনা খছি জে যুৱা মধুপজী তত্কানীন মঠাধীশ সৱহক প্রভাৱমে খাৱি খাগূ গজন নৌ কহনে হেতা। কিএক তঁ মঠাধীশ সৱহক মান্যতা বহন ছনহি জে মৌথিনীমে গজন ভাগএ নে সকৈএ!! ...খা তঁএ মধুপজীক গজনকেঁ মঠাধীশ সৱহক সমর্থন নহিযেঁটা ভেটৈন হেতনি। একব পবিণাম স্বৰূপ মধুপজী খাগূ গজন নিখৈক দুস্সাহস নৌ কেনে

होता। दोसर सम्भावित कारण इहो भऽ सकैए जे रचनाकारक मन आ रुचिक अनुरूप रचना-विधा सेहो होए छै। खास कऽ आधुनिक मैथिली साहित्य लेखनमे रचनाकार स्वतंत्र रूपेँ अपन मन आ रुचिक अनुसार रचना करैत रहला अछि। तँए इहो बीतक सम्भावना भऽ सकैत अछि जे मधुपजीक रुचि आ मन गजल दिस नै भऽ कऽ आन विधा दिस बेसी रहल होतनि। ओना अन्यान्य विधामे अनेको रचना केनौं छथि।

उपरोक्त कारण सभमे कारण चाहेजे रहल होए, ई बीत तँ अवस्से अछि जे मैथिली साहित्य आ मैथिली साहित्यक विद्यार्थी सभकेँ मधुपजी सँ बेहतरीन गजलक जे उपहार भेटबाक चाही छल से नै भेटल।

<u>बीहनिरूपिया बचनामे</u>

गजलमे हम रुचि राखैत छी। संगहि मैथिली मे थोड बीहत गजल सेहो लिखै छी आ गजलक पोथी सबँ पढबाक इच्छा रहै ए। मैथिलीमे बीहत कम गजल संग्रह अछि आ ओहो सुलभ नै होएत रहै ए। एहन परिस्थितिमे हमरा श्री अरविन्द ठाकुरजीक सद्यः प्रकाशित मैथिली गजल संग्रह "बीहनिरूपिया प्रदेशमे" पढबाक अवसर भेटैल आ हम एहि पोथीकेँ आद्योपान्त पढलहुँ।

सबँसे पहिने हम श्री अरविन्द ठाकुरजीकेँ मैथिली गजलक पोथी लिखबाक लेल बधाइ दैत छियैन्हि। मैथिली गजलक उत्थान लेल प्रत्येक डेग हमरा महत्वपूर्ण लागै ए। पोथीक गेटअप बड्ड सुन्नर अछि। छौआप आ कागतक कोटि सेहो उत्तम अछि। पोथीक भूमिका गजलकार अपने लिखने छथि आ ओहि मे गजल आ

এহি সংগ্রহক সম্পূর্ণ মে ৱহুত বাস গপ সৱ কহনে ছথি। জেনা পৃষ্ঠ সংখ্যা সাতক দোসব পাবা মে গজনকাব কহৈত ছথি জে "মৈথিনীক মিজাজক সীমা (গ মৈথিনীক নহি, হমব খপন সীমা ভ২ সকৈত খছি) কেঁ দেখৈত গজনক ব্যাকবণ (বদীফ, কাফিযা, মিসবা, মতনা, মকতা খাদি)ক স্থাপিত মাপদংডক কসৱঁষ্টী পব হমব সভ গজন খবা উঁতবত তকব দাৱী তং নহিএ ঠৌ খছি ৱঁঙ্কি হম তঁ গ সকাবয চাহৈ ছী জে------------------------------------- হমব সীমাক কাবণেঁ প্রস্তুত গজন মে কএক জগহ স্বধি পাঠক নোকনি কেঁ ত্রুটি ভেটি সকৈত ছনি।" এহি পাবাক খন্ত মে ও কহৈ ছথি জে ৱহবক দোখ কিছু শেব মে ভেটি সকৈত খছি। হম গজনকাবক সবাহনা কবৈত ছী জে ও ভূমিকা মে খপনে কএক ঠাম ৱহবক খা খান দোখ হএৱঁ স্বীকাব কএনে ছথি। পোথী কেঁ খাদ্যাপান্ত পঢনা পব হমবা গ নৈ ৱুঝাএন জে এহি সংগ্রহক গজন সব কোন-কোন ৱহব মে নিখন গেন খছি। খববীক কোনো ঠৌ ৱহব মে কোনো গজন নহিএ খছি, মৈথিনী মে খাগ-কান্হি প্রযুক্ত হোগ ৱনা সবন বার্ণিক ৱহব মে সেহো কোনো গজন নৈ খছি। গজনকাব কেঁ প্রত্যেক গজন মে গ নিখবাক চাহী ছন জে কোন ৱহব মে গজন নিখন গেন খছি। জঁ গ "খাজাদ-গজন"ক সংগ্রহ থীক, তঁ হুনকা এহি ৱাতক উল্লেখ কববাক চাহী ছন। ভূমিকাক উপবোক্ত পাবাক শুরু মে গজনকাব কহৈ ছথি জে মৈথিনীক মিজাজ কেঁ দেখৈত এহি মে উর্দূ-হিন্দী গজনক মিজাজক নকন কববাক প্রযাস কএন জাগত তঁ একবা ৱুঝিযাবী নহিএ ঠৌ কহন জাযত খাওব সফনতা সেহো নহি ভেঁটৈত। হম হুনকব গপ সঁ সহমত

छी जे नकल करब उचित नहि। आब एकटा गप हम कहए चाहैत छी जे प्रत्येक विधाक एकटा नियम होइत छै आओर जाहि क्षेत्र मे ओहि विधाक उदय भेल रहैत छै ओहि क्षेत्र मे स्थापित भेल नियमक पालन केने बिना कोनो रचना मूल विधा मे कोना भऽ सकैत अछि। जेना मैथिली मे समदाउन आ सोहरक परम्परा छैक आ जँ पंजाबी मे वा गुजराती मे वा की कोनो आन भाषा मे समदाउन आ सोहर गाबए चाही तँ नियम कोना बदलि जेतैक। जँ नियम बदलतै तँ ओ दोसर चीज भऽ जेतैक। तहिना गजल अरबी क्षेत्र मे जन्म लेलक आ ई स्वाभाविक छै जे एकर नियम (व्याकरण) ओहि क्षेत्रक स्थापित मानदण्डक आधार पर बनल। स्थापित मानदण्डक पालन करब नकल नहि कहल जा सकैत अछि। आ जे नकलक गप करी तँ 'गजल' कहब अरबी-हिन्दीक नकल थीक। एक दिस गजलकार 'गजल' कहबाक लोभ नै छोड़ि रहल छथि आ दोसर दिस गजलक व्याकरणक नियम पालन कें नकल कहै छथि, ई उचित नै बुझाएल। गजल स्थापित मानदण्ड पर जँ नै कहल गेल तँ रचना कें गजलक स्थान पर दोसर नाम देल जा सकैत अछि। पृष्ठ संख्या दस पर दोसर पारा मे गजलकार कहै छथि जे ओ जीवन सँ सिदहा लैत छथि। ई स्वागत योग्य गप भेल। जीवनक सिदहा सँ तैयार व्यंजन सोआदगर हेबे करतै। आब भोजन बनबै काल चाउरक सिदहा पानि मे सोझे फेका कऽ परसि देला सँ भात नहि कहाइत अछि। चाउरक सिदहा कें अदहन मे देल जाइ छै तखन भात तैयार होइ छै। तहिना जीवनक सिदहा जँ व्याकरण, नियम आ चिन्तन-मननक अदहन मे पकाओल

জাগত অছি তঁ সোঝদগব বচনা ভেটৈত অছি। রিধা রিশেষক মাপদল্ড তোডরাঁক এ্রাঁতিকাবী ঘোষণা কএনা টৌ সঁ কিছু রিশেষ হ্ফাযদা রা উঁমেদ তঁ নহিএ জগৈ এ। জঁ কিযো মাপদল্ড তোডৈ ছথি, তঁ মাপদল্ড পব চনৈ রঁনা কেঁ নকনচী আ রাঁজীগব কহরঁ উঁচিত নহি। গজন আ হ্ফকবা আ দোহা মে থোডেক অন্তব তঁ ছৈ জে বহরেঁ কবতৈ। অস্তু, গ গজনকাবক অপন রিচাব ছৈন্হি আ আরঁ প্রকাশিত সেহো ছৈন্হি।

গজন সংগ্রহক সরঁ গজন পঠনৌঁ। রিষয রস্তু সরঁ নীকে নাগন। গজনক ব্যাকবণক আধাব পব কহি সকৈত ছী জে রঁহবক দোখ তঁ প্রত্যেক গজন মে ছৈক আ জঁ গ আজাদ-গজনক সংগ্রহ থীক তঁ গজনকাব গ গপ কতৌ নৈ কহনে ছথি। গজনকাব কেঁ স্পষ্ঠ কবরাঁক চাহী ছন জে কোন কোন রঁহব মে গজন সরঁ নিখন গেন অছি। হমবা রুঝনে গজনক কোনো শীর্ষক নৈ হোগত অছি, হ্মদা প্রত্যেক গজন কেঁ একটা শীর্ষক দেন গেন অছি। রঁহবক অতিবিক্ত বদীফ আ কাফিযাক নিযমক সেহো কএক ঠাম পানন নৈ ভেন অছি আ গ গপ গজনকাব ভূমিকা মে সেহো স্বীকাব কএনে ছথি। জেনা পৃষ্ঠ রাঁগস মে মতনাক দূনূ পাঁতি, দোসব শেব আ পাঁচম শেব মে কাফিযা মে 'আযরঁ' প্রযোগ ভেন অছি, তঁ দোসব আ চাবিম শেব মে 'অরঁ' ক প্রযোগ অছি। পৃষ্ঠ চৌরীস মে মতনাক পহিন পাঁতি মে কাফিযা মে 'অ' আযন অছি আ দোসব পাঁতি আ অন্য শেব মে 'আত' আযন অছি। পৃষ্ঠ পচীস মে কাফিযা কী ছৈ, সে নৈ রুঝাএন। পৃষ্ঠ তিবপন মে প্রত্যেক পাঁতি মে কাফিযা একদম হ্ফবাক হ্ফবাক অছি। পৃষ্ঠ অনঠারঁন মে মতনা, দোসব শেব আ চাবিম শেব মে কাফিযা মে

'अन' प्रयुक्त अछि आ आन सभ शेर मे काफिया मे 'अ' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ उनसठि मे सेहो रदीफ आ काफियाक स्पष्टता नै अछि। पृष्ठ छियासठि मे काफिया मे कतौ 'अन' आ कतौ 'आउन' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ सड़सठि आ तिहत्तरि मे सेहो काफियाक नियमक उल्लंघन भेल अछि। तहिना संयुक्ताक्षर रहित काफियाक नियम सेहो एक दू ठाम हमरा हिसाबेँ ठीक नै अछि। एकर अतिरिक्त आओर कएक ठाम काफियाक नियमक पालन नै भेल अछि। हम उदाहरण स्वरूप किछु पृष्ठक उल्लेख कएलहुँ। हमर ई उद्देश्य नै अछि जे खाली दोख ताकल जाय, मुदा जँ गजल कहै छियै तँ गजलक नियमक पालन हेबाक चाही। सभ गोटेकेँ जानकारी लेल ई रहता दी की बिना रदीफक गजल तँ भऽ सकैत अछि, मुदा बिना दुरुस्त काफिया भेने गजल नै भऽ सकैत अछि।

भूमिका सँ एकटा बात आर स्पष्ट होइत ए जे गजलकार मञ्च २००८ सँ मैथिली मे गजल लिखब शुरू केलथि, ओना ओ हिन्दी मे पहिलहुँ गजल लिखैत छलाह। एकर मतलब ई भेल जे गजलकार "अनचिन्हार आखर" (मैथिली गजल केँ समर्पित ब्लाग) सँ बहुत बाद मे मैथिली गजल लिखब शुरू कएने छथि आ मैथिली गजलक रवीयता मे बहुत बाद मे आयल छथि। "अनचिन्हार आखर" ब्लाग देखला सँ पता चलैत छै जे गजलकार एहि ब्लाग पर सेहो अपन कएक टा गजल २००९ सँ एखन धरि देने छथि। ओ "अनचिन्हार आखर" ब्लाग सँ चिन्हार छथि, तेँ ई उमेद अछि जे एहि ब्लाग पर प्रकाशित मैथिली गजलक विस्तृत व्याकरण केँ जरूर देखने हेताह। ई उमेद छल जे प्रस्तुत गजल संग्रह

মৈথিলী গজনক নৱঁ পীঢী নেন একটা উঁদাহবণ ৱঁনত। ঋদা এহি সংগ্রহ মে গজনক ব্যাকবণক জে উঁপেক্ষা ভেন খছি, জে গজনকাব ভূমিকা মে স্বযং স্বীকাব কএনে ছথি, নিবাশা উঁপেন্ন কবৈত খছি। ঋদা গ সংগ্রহ গজনকাবক পহিন্বক মৈথিনী গজন সংগ্রহ খছি, তেঁ গজনক ব্যাকবণক গনতী ভেনাও স্বভারিক খছি। খাশা ব্যক্ত কবৈ ছী জে হ্নকব খাগামী গজন সংগ্রহ মৈথিনী গজন মে খপন খনগ স্থান বাখত।

<u>খাশীষ চমন</u>

খন্হাবক রিবোধ মে খবরিন্দ ঠাকুব

যদি খপন প্রথম কার্য্য সংগ্রহ ‘পবতী টূটি বহন খছি প্রকাশিন রর্ষ – 1993 কে রাঁদ শ্রী খবরিন্দ ঠাকুব এতেক রঁবখ ধবি চুপ বহনাহ ত হুনকা প্রতি হমব ধবণা যৈহ রঁনৈত ছন জে ও রঁহুত দিন ঘবি মোহ ভংগক স্থিতি মে বহন হোযতাহ মৈথিনী সাহিহ্যক প্রতি, জে জেরীক পাগ খকাবথ গেন... । হ্মদা পবমামোক নীনা দেখন জাউ, ও প্বনঃ খরতবিত ভেনাহ খূরঁ চমকৈত দমকৈত সংগ্রহ ‘খন্হাবক রিবোধ মে’ ন ক... । হম স্পঠ্টীকবণ দহ দী জে হমব ধবণা ভৌতিক উপনব্ধিকেঁ শূন্যতা পব ছন হ্মদা জখনি খাদবণীয ভাগ শ্রী খজিত হ্মমাব খাজাদক ওহি নিপিরঁদ্ধ টিপ্পণী পব নজবি গেন জাহি মে ও নিখিত গাবন্টী সন দেনে ছথি জে এক রেঁবি খহাঁ মাত্র একটা কথা পঢ়ি ক ত দেখূ, খহাঁক পাছাঁ পোথী খা পোথীক পাছাঁ খহাঁ হেভীকোন জেকাঁ খবকটি জাএরঁ ত সহজ উৎসুকতা জাগি গেন... । জাগি গেন ওহি র্যক্তিক প্রতি জে সদতি হমব নজবি কে সোঝাঁ বহন ছথি। জে কিসান, দোকানদাব খা পবিরাবিক কর্তা প্বরুষ রূপেং খপন জয–পবাজয দ্বন্দ্ব কে দেখৈত ভোগৈত বহন ছথি খা চারঁস্সী ত দেখিযৌক ওহি মর্দে কে জে খপন সমস্ত কার্য র্যাপাব ও র্যরহাব কেঁ কোঠীক তাক পব বাখি খপনা কেঁ খেতিহব কহরাঁক সামর্থ বখৈত ছথি জাহি মেং কেরন পবাজযক পীড়া, জীরনক রর্তমান ও ভরিষ্য খন্ধকাবময বহৈত ছৈক... ।

হম রিনা খাওব রেঁশী ভূমিকাক কহি সকৈত ছী জে খজিত খাজাদ গাঁহিকী নজবিরঁনা ছথি তেঁ ও এহি কথা সংগ্রহক এহন তীব্র প্রশংসা কযননি খছি ।

এহি সংগ্রহক পহিল কথা অছি 'খিস্সা সিযাৰ যাব।

ই কথা, বিহাৰ মে আগ সঁ কিছু দিন পূর্ব ধরি জে লালটৈন যুগ ছলৈক ওহি স্থিতিক অযরাঁক পূর্ব সঁধ্যা কেঁ ওঁগিত ক বহল অছি...। ব্যংগ্যামেক শৈলী মেং লিখল ই কথা মূলতঃ হমর লোকতাঁত্রিক পরম্পরা কেঁ মরণাসন্ন অবস্থা মে দর্শারৈত অছি, জাহি মে নেতৃত্বশূন্যতাক স্থিতি ছৈক..., সত্তা, সংগঠন মে গুণ্ডৈরাঁজী ছৈক, ভ্রষ্ঠাচার কেঁ আম সহমতি ভেটৈল ছৈক..., প্রধান নীতি সিদ্ধান্ত কেঁ মানলিহার আগ পরিদৃশ্য মে নহি ছথি ত সিদ্ধান্তহীন ব্যক্তি সেহো কারুণিক স্থিতি মেং বহি বহি ক অরৈত অছি...। এহি দুনূ প্রকারক ব্যক্তিক চরিত্র চিত্রণ করবাঁ মে রচনাকার তখনি সফল ভেলাহ জখনি নবঁকা ছওড় া রামসোগারথ মংডল কেঁ কহৈত অছি জে 'নবঁকা জমানাক নারা লগারূঁ...।' মানে সত্তা প্রতিষ্ঠানক অধিষ্ঠাতাক জযকার করু ত বুঁঠ় অসোথকিত মংডলজী উপেক্ষা সঁ প্রতিকার করৈত ছথি।

আগ লুচা লফাঁডি় অপরাধী তত্ব সভ নির্ণাযিক আ নিযন্তা বঁলল অছি আ স্বচা জনসেবক সভ করোটৈ লাগল ছথি...। এহি কথাক মূল তত্ব যৈহ অছি, কথারস্তু প্রাযঃ নবীন নহি অছি..., ই সমস্যা সমান্যতঃ সভ কেও অবধারি লেলে ছথি তথাপি প্রাযঃ এক্কহি সাঁস মেং ই কথা লিখল গেল অছি একদম নিস্পৃহ ও অসম্পৃক্ত ভ' ক' তেঁ কথা বঁহ্ রুচিগর। কথাকার অপন ক্ষমতা আ অনুভর সংগ ন্যায ক লেললি অছি।

"পিআসল পানি" কথাকারক ও রচনা অছি জাহি মে হম অপন পরিবেশ, জাহি মেং রচল-বঁসল ছী তকরা

प्रति एकटा हीनता बोध होबए लगैत अछि... । एहि कथा मे कुल जमा तीन गोटे पात्र छैक, प्रधानतः जाहि मे "नारायणीप्रवरानी" केन्द्रीय अछि... ।

कथा मुख्यतः नारायणीप्रवरानीक चारूकात घुमैत अछि आ अपना सभक सामाजिक पाखण्ड पर सेहो फोकश दैत अछि... । हमर समाज स्त्रीक मामिला मे बड्ड कोनादन बहनैक अछि, एकसरि पयना पर चीड़्-फाड़ि् क काँचे खा जयबा लेल उताहुल... । एहिठाम स्त्रीक दुर्गति होगत अछि, ओकरा संग बलात्कार कऽ जेना किछु मास पूर्वहि आ एखनि किछु दिन पहिने एक गोटे स्त्री सम्बर पर्यन्त सँ बलकृत भेलैक अछि, आ नहि त ओकरा विभिन्न कारण सँ व्याभिचारिणी घोषित क दिऔक... ।

नारायणीप्रवरानी बलकृत त नहि भेलि मुदा ओ हतभागिनी छलि जे ओकर स्वामी ओकरा भरि पेट अन्न नहि द सकल त ओ गिरहथ ओतए कमाय जा लागलि ओ संगहि अपन पति सँ दैहिक सुखो सँ वंचित छलि। विडम्बना त देखू जे प्रारम्भिक अवस्था मे नारायणीप्रवरानीक प्रति एकटा विद्रोहाक भाव जगैत छलि गिरहथ बाजा बाबू कें, जे ई स्त्री की थिक त चरित्राहीना..., पाठकगणपर्यन्त नहि बूझि पबैत छथि आ अन्त मे ओ स्त्री निराशे भ पड़् । जागत अछि, त ओकर स्वामी लखना दोसर विवाह करैत अछि ।

ओकर दोसरकी स्त्री कें बचा होनहारी छैक ई सूनि

নখনা খপন কপ্পাড়ু পহোড়িু নৈত খছি জে ঞা হমব জনমন নহি খছি। খা প্রথমতঃ পদাপিহাশি হোগত খছি জে নখনা নপ্পংসক খছি ত খচানক নাবাযণপ্ববরানীক প্রতি সভক করুণা জাগি জাগত ছৈক জে ও রেঁকসূব ছনি...। ওকবা প্রতি সমাজক ঞা রঁদনন ধবণা বামচবণ কেঁ প্ররঞ্জা রঁনা স্থাপিত কযন গেন ছৈক...।

এহিঠাম কতেকো প্রশ্ন উঠৈত খছি জে হমব সামাজিক মান্যতা সঁ ঠু াহী নৈত খছি জে এহি স্থিতিক জিম্মেদাব কে ? স্বভারিক রূপ সঁ প্বরুষ প্রধন ঞা সমাজ। জে প্বরুষ খপন পনৌ কেঁ কমা ক খ্থা নহি সকৈত খছি, ওকব দৈহিক খারশ্যকতা কেঁ পূবা নহি ক সকৈত খছি, তকব পনৌ কেঁ চবিত্রাহীন ঘোষিত করু খা প্বনঃ ওহি র্যক্তি কেঁ পাগ, দোপটৌ, মৌব পহিবা দোসব স্ত্রীক রধ করু রা কবার্বূ...।

হ্মদা হমবা নাবাযণপ্ববরানী কাযব নগৈত খছি..., ও কিযৈক পড়ু াগনি ? গিবহথ নহি ত, খান দোসরে কেকবো পকড়িুত ভাগৈত নহি, ববন্ ওহিঠাম স্থাপিত ভ বহৈত খা সাঁযক কমজোবী ক ওকব পাখল্ড ক জগজিযাব কবৈত জে নখনাক দোসব রঁহ্ ক সকরাঁ মেঁ সহন ভেনি...। ত ঞা কথা নীক স্বতবননি খছি বচনাকাব কেঁ খা সতুহি খন্হাবক রিবোধ মে ঠাঠু ছথি ও পেট্রোমৈক্স ন 'ক'....।

কথা পাঠ কেবি এম মে জখনি হম কথা 'খন্হাবক রিবোধ মে' ক দেখৈত ছী ত হমবা স্বাভারিক রূপে ঞা ভান হোগত খছি জে কথা কখনহ্ কান ক রঁনাওন

सेहो जा सकैत अछि... । कथाक केन्द्रीय पात्रा सूत्रधारक रूप मे स्वयम् रचनाकार छथि... । ओ जे घटनाक ब्र्यूगोल केँ दर्शौननि अछि तािह सँ ज्ञात होइछ जे ओ रूजडटनौीक कातहि मे रहसन छथि, संगहि गहो ओ देखरैत छथि जे ओहि समाजक जनानी सभ भरि दिनुक मामिना क नून तेल सानि क देब राति मे घ्ररैत अपन-अपन साँय क स्वनरैत अछि... । तकर राँद कचका ताड ि पीने रूजड ा सभ अपना मे गारि-गंजन, मारि-पीट करैत रहैत अछि आ रातिक नीवरता भंग होइत रहैत अछि प्रायः ।

स्रदा हमरा जनैत कथा निखराँक हडरडि मे रचनाकार कतह्-कतह् च्कि गेनाह अछि किये क त ओ कहैत छथि 'सभ राति स्त्री पुरुष सभ मारि-पीट करैत मौहरि करैत रहैत अछि आ तकरा ओ सामान्य रोजनमचा सन मानने छथि, माने अपन स्वीकृति द देने छथि स्रदा ओहि राति ओ किये क रहरेनथि ? जखनि की ओ हंगामा सभ केँ सामान्य सन मानैत छथि... । पुरुषरऊ नडित छैक अपना मे त जनानी सभ ओहिना चिकरैत छैक- 'मौ रचार..., मारि देनकैक..., नूटि नेनकै... ।' ओ कथाक मादे सामान्य सन गप्प भेल स्रदा एकर दोसरो पक्ष अछि जे एकर उपादेयता केँ बखैत अछि । नेखक एहि कथाक माध्यमे सामाजिक भागचारा जाहि मे सभ एक दोसराक भाग रहिन, माम, पित्ती अछि, धर्मिक, आर्थिक देरान केँ तोडि क , तकरा दर्शौननि अछि आ तािह मे कमोरेशे सफल रहनाह अछि... । ओ कथा प्रायः हनक उपासकान केँ दर्शारैत अछि... ।

अध्ययन यात्राक क्रम मे हमरा जाहि चीज सभ स रुबरु भेलहुँ ओहि मे एकटा अछि "मूस" पहिने आयल अछि "अय्यासी" बाद मे.... ।

हमरा विचार सँ "अय्यासी" के "मूस" स पहिने राखल जयतैक त दूनू कथा अपन अनिवार्यता कें आओर बेसी स्वसंगत बना सकैत छल...। कथा आर्थ उद्देश्यपरक ओ उपदेशपरक भ गेल अछि तेँ...। चूँकि हमर अप्पन मान्यता अछि त हम "अय्यासी" के "मूस" स आ "मूस" के "अय्यासी" संग गेठजोड़ बा क रहल छी...। अय्यासीक प्रधानपात्र अपन घरक कर्ता-धर्ता छथि, पत्नी छनि, पुत्र छनि, स्वयं अपने छथि, घरक खर्च छनि..., पत्नी कें आवश्यकता छनि गैस चूल्हा के, पुत्र के चाही कॉपी, पढ़ाई लेल, अपनो मनोरथ छनि, मैगजीन पढ़ताह, दोस्तक संग सिकरेट पीताह..., घर मे तीमन तरकारीक खगता छनि ताहि पर ओ तेना ने नगोछि के बजताह जे श्रीमतीजी अपरतीर भ जाएत छनि, बाँचा सेहो आतंकित छनि हुनक मुख मुद्रा सँ...। मुदा अपना टाका न' क' पत्रिका कीनैत छथि, सिकरेट कीनैत छथि, विकशा यात्रा करैत छथि...। वस्तुतः हम सभ एखनहुँ अपन आदिम भावना कें प्रायः प्रकट करैत रहैत छी... जाहि मे हम अपना सँ दुर्बल मातहत कें दबौचि क रखैत छी..., मुदा रचनाकार संवेदनशील छथि तेँ ओ मुख्यपात्र कें अन्ततः विगलित देखबैत छथि...। ओ केन्द्रीय पात्रा के अन्ततः ई भान कराबा देबा मे पूर्णतः सफल होइत छथि जे ई समस्त कार्य-कलाप जाहि मे ओ अपना आप कें खर्च करैत अछि अन्ततः अर्थहीन अछि ओ हितकर नहि, सर्वथा गैर जिम्मेदार छथि...। एहि कथा अय्यासीक पूर्णता हमर

दृष्टि मे "मूस" पर जा क रोकल अछि... । दुनू कथा मादे पता नहि कियैक हमरा लगैत अछि जे दुनू केन्द्रीय पात्रा आ ओकर परिवेशो दुनू परस्पर मिज्झड़ सन छैक...., एक पढ़ आ दोसर केँ पढ़ैक त लागत जे – 'अरे ! ई मूस कथा त अय्यासीक उत्तर कथा अछि..., ठीक "गतांक से आगे" के स्टाइल मे... ।

देखल जाए त अय्यासीक मुख्य पात्रा मूसो मे ओहिना "रर्कनेस" छथि, हाँ आर ओ सोझ हडदंगी नहि अछि... ई जरूर जे ओ जमीन रैचि क स्कूटर लेलक अछि मुदा पेट्रोल खर्चक चिन्ता जरूर ओकरा मे छैक, ओकरा रोजी रोजगार के चिन्ता छैक, व्यवसाय कर्ज ल' क' कयने छलैक से मूलधन आर सूदि जोड़ि क पँचगुन्ना भ गेलैक अछि, लोक हँसैत छैक अलग, भाग जे छैक सेहो एकदम्म गैर जिम्मेदार.... ओ पहरुपहरू मे अछि कोना जीवन जीअत ? अल ओ मार्केटिंग कॉम्प्लेक्स, अल सिनेमाहाल त अल हालसेल दर्वाण विक्रेता सबहक लेल विचारमग्न अछि... । कुल्लम ई जे आर अय्यास व्यक्ति सद्गृहस्थ बनबाक प्रक्रिया मे अछि..., मुदा बाट नहि भेटै बहल छैक... । कथा अपन ऊँचाइ पर तखनि सांकेतिक दृष्टि सँ अबैत अछि जखनि ओ अपन बुनल काल्पनिक संसार मे देखैत अछि कर्मठ मूस सबहक बनाओल बिहरि मे एकटा अजोध विषधर अबैत अछि आ बनाऽ ओहि मे पैसि जेबाक यत्ने क बहल अछि... ।

ओ विषधर अछि, ओकरा विशालकाया छैक, ताकतवर अछि, मुदा ओ की नहि अछि त पुरुषार्थी.. ।

ওকব ত্তননা মে রএহ হীন, হ্লেদকণ্হাঞ মূস ৱেঁসী আকর্ষক ছৈক, কিযৈক ত ওকব জীরন ৱেঁশ জীরন্ত ছৈক... আ নাযক কে নজবি অপন পিতাক হোটৈ পব জাগত ছৈক ত ওকবা হোগত ছৈক জে ওহো রএহ মূস ছনাহ জে অপন অধ্যরসায সঁ ধনার্জন কযননি হমবা নেন..., একটা হম ছী জে সাঁপ জেকাঁ সভ সাধন সঁ হাঞ ভেনাক ৱাঁদহ্ বচনামেকতা সঁ হীন ছী, এনা কিযৈক ? হম কিযৈক এহন ছী জে পিতাক সম্পত্তি কেঁ ৱেঁচি ক গাড়ী নৈত ছী, ত ৱৈঁক কর্জ অদাএ করৈত ছী..., দোকান নহি চনা পরৈঁত ছী, হম কর্মহীন ছী কর্মহীন.... । একটা গ্লানি ওকবা আৱঁ চোটৈ দ বহনৈক অছি আ ও আৱঁ উঁঠৈত অছি সংকল্পক সংগ আ কেরাড় হোনৈত অছি, অপন খ্রবপী নৈত অছি, তখনি জে নর আ টটৈকা হরা ছৈক সে ৱঁন্ন কোঠনী কেঁ উঁর্জা স ভবৈত ছৈক... । রস্তুতঃ ও হরা অছি কর্মশক্তি সঁ ভবন জে একটা কর্মহীন কেঁ কর্মঠ ৱঁনা দৈত অছি... । ও কথা মন্বন্থক স্বভার কেঁ চিত্রিত করৈত অছি । ও কথা মন্বন্থক নৈসর্গিকতা কেঁ অদ্বিতীয রূপ সঁ চিত্রিত করৈত অছি জে মানর দর্শন মে অছি চরৈরেতি – চরৈরেতি... ।

ও কথা সরোকেংঠ অছি আ বচনাকাব কেবি প্রখব অনুভূতি, প্রতিভাক সংগহি জীরনক প্রতি হ্নক প্রচল্ড আস কেঁ গংগিত করৈত অছি... । সংকনন যাত্রাক মধ্য মে দুগটা কথা আগাঁ অরৈঁত অছি–প্রথম “ঠাঁ চা 1992” আ দোসব অছি “প্রজাতন্ত্র পবিকথা” । দুনূ দুগ অনগ–অনগ কনেরব সেঁ হাঞ... । একব রিস্তাব পব চর্চা ৱাঁদ মে, পহিনে এহি কথা সংকননক এক গোটৈ মোহক আকর্ষণ পব হমব সংক্ষিপ্ত টিপ্পণী ও জে ও সংগ্রহ “আন গন রন” সন নগৈত ছৈক... । প্রথম কথা

“খিস্সা সিযাব যাব” শ্বষ্ক্ষতম ৰূপ সেঁ ব্যঁগ্য মিশ্রিত হাস্যক শ্রেণী মে খবৈছ, স্মবণীয খছি জে এহি রিধা মে মৈথিনী মে বঁহ্ত কম বচনা ভেন খছি, কথা পঠ়ৈক ত বঁহ্তো কান ধবি রিঁসরিঁস্সী সন নাগত। খাগাঁ বঁঠ়ে, ত “পিখাসনি পানি” সন রিচাবোত্তজক বচনা সেঁ ভেঁঠ হোগত খছি। প্বনঃ খাগাঁ বঁঠ়না পব “মূস” খা “খয্যাসী” সঁ ভেঁঠ হোগত খছি। একব রিষয মে খাব রিশেষ কী কহু, হমবা নগৈত ছন জে কথাকাব সংকনন মে শ্রেষ্ঠ দ‘ চ্কন ছথি ঋদা হ্নক মোবা মে বঁহ্তো বাস মান ছনি...। “ঠাঁচা 1992” শিল্পক দৃষ্ঠি সঁ খাকর্ষক খছি। পত্র নেখনক একটা রিধ্যা ছৈক জেকবা মৈথিনী মে বঁহ্ত কম্ম স্থান ভেঁটনৈক। ঋদা হম তীনটা পত্রক শৈনী মে নিখন বচনা দেখি চ্কন ছী খা সেহো মৈথিনীক দ্গ জাজ্বন্যমান নক্ষত্রা ডা. হবিমোহন ঝা ও স্ব0 মণীন্দ্র নাবাযণ চৌধবী উর্ফ বাজকমন দ্বাবা বচিত...।

জতহ ডা0 ঝা “পাঁচ পত্র” ও “বসমযীক গ্রাহক” মে খপন বাঁত কেঁ রিনোদক শৈনী মে নিখননি খছি ওতহি বাজকমন খপন “পাঁচ পত্র” মে মমতা, দাবিদ্রয, খভার রিছোহ কেঁ চিত্রিত কযননি খছি। ভ সকৈত খছি জে খানো বচনা এহি শৈনী মে খাওন হোগক ঋদা সে হমব সোন্মাঁ নহি খারিঁ সকন খছি, ঋদা ঔ দ্নূ বচনাকাব খপন বচনা বঁনেঁ মাগন স্থান ছথি...।

এহি শৈনী মে ‘ঠ় াঁচা 1992’ নিখন গেন খছি জাহি মে সমষ্ঠি ৰূপেঁ একটা বাষ্ট্র, এক বাষ্ট্রীয উঁপবাষ্ট্রবাদক পীড় া, ওকব জয, পবাজয, ওকব গতিহাস কেঁ খপন–খপন দৃষ্ঠি সেঁ দেখবাঁক প্রযনে কযন গেন খছি।

এহি কথা মে বাষ্ট্রীয পীড়া কেঁ ব্যক্তিগত পীড়াক ৰূপ মে অভিব্যক্ত কযন গেন অছি... । অফসোচ এহি বাত কে অছি জে স্ব0 গণেশ শংকব বিদ্যার্থী আ বাষ্ট্রপিতা মহামো গাঁধীক বাদ কেও এহি সমষ্ঠি পীড়া কেঁ বৈযক্তিক পীড়া মে বদনি সকবাক সামবথ নহি প্রদর্শিত কযননি.... । এহি বাষ্ট্রৰূপী শবীব জাহি মে অনেকানেক ব্যাধি ; অবৈত বহৈত ছৈক, মাবিতে বাস চাক-চৌবন্দ স্ববক্ষাক বাদো তকবা হন কববা নেন কোনহুটা সর্বমান্য ও সর্বগ্রাহ্য উপচাব নহি নিকনি সকন অছি আ হমব সামাজিক ঢাঁচা ভীতবে-ভীতব ঘুনাগত অন্ততঃ মাটি মে মীনি জাগত অছি আ হম সভ মাত্রা ওহি বিডম্বনা পব অপন কপ্পাব পীটি ক বহি জাগত ছী.... ।

ঋদা কনে বিনমি জাউ । নেখক কেব বৈচাবিক শৃংখনা ভংগ নহি ভেননি অছি । জতয "ঢাঁচা 1992" মে নেখক সামাজিক চেতনা কেঁ নুপ্তপ্রায দেখৌননি অছি ওতহি এহি ভকোভন্ন অভাব মে একটা ছোট ছীন ডিবিযা ন' ক' ঠাঢ়া ছথি "প্রজাতংত্র পবিকথা" মে ।

স্থিতি প্রাযঃ সমানে ছৈক দুনূ কথা মে, ঋদা ওকব অন্বেষণ ওকব হন কববাক শৈনী অনগ-অনগ অছি... । জতয 'ঢাঁচা' কথা মে উন্মাদী ভীড়া ফটিন নেতৃত্ব দ্বাবা সংচানিত ভ আদমখোব বনন অছি, জত বাজসত্তা তূব তেন ন' ক' সূতন অছি আ এক গোট সাংস্কৃতিক ঐতিহাসিক প্রতীক চিন্হ মেটৌওন জা বহন অছি, ওকব ঠীক বিপবীত 'প্রজাতংত্র পবিকথা" মে একটা সংবেদনশীন প্রাণী দ্বাবা ভীড়া সংচানিত ভ বহন অছি... । এহু কথা মে উন্মত বাজসত্তা ছৈক, ফটিন নেতৃত্ব বস্থা ছৈক, ঋদা

एकर विरोध मे ठाढ़ अछि एकटा सजग प्रहरी जे ओहि समस्त रक्षा पर भारी आ भारी बनैत छैक। ई व्यक्ति "ठाँचा 1992" मे निपत्ता अछि...।

"ठाँचा 1992" के संवेदना, आत्मचिन्तन, आमोद-प्रमोद मे लीन आत्मरतिक शिकार एक निरीह वौद्धिकक हाथ मे छैक त ठाँचा खसि जाइत अछि, यदा कदा जखनि ओ व्यक्ति उठि जाइत अछि त हमर प्रजातांत्रिक मूल्यक संरक्षणे टा नहि ओकर विकास सेहो होइत अछि...। दुनू कथा बहुत सशक्त बनल अछि अपना आप मे....।

कथा संग्रह अपना आप मे लगैत अछि जे ई कथा एवं उपकथा मे विभाजित अछि...। आदरणीय स्व० प्रभाष कुमार चौधरी "अप्पन लोक" मे लिखैत छथि जे हम आ बैजू भैया परस्पर अभिन्न छलहुँ। आगाँ ओ अप्पन आ भाइक तुलना क्रमशः गंजन आ डिब्बा सँ करैत छथि...। तहिना लगैत अछि जे एहि कथा-संग्रहक लेखक जे गप्प कह चाहैत छथि से ओ दृष्टिपटलक केर व्यापकता ओ संवेदनशीलताक कारणे एक गोटे कथा मे नहि कहि पबैत छथि...। हुनक कथा यात्रा बहुत गमैनाल संग आगाँ बढ़ैत अछि। ओ अप्पन बात कें एक कथा "अथ गिरगिट गाथा' सँ शुरू करैत छथि आ तकर समापन "बैकवा फोड़वा" मे करैत छथि, एकदम अनिपट लैना सन...। "अथ गिरगिट गाथा" मे हमर महान ओ प्राचीन गणतांत्रिक व्यवस्था के स्वरूप आनल कें सार्वजनिक करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। ओ व्यवस्था जेकर स्थापना नीक उद्देश्य सँ कयल गेल छलैक से आब पटरी पर सँ हटि गेल अछि...। त्याग तपस्याक क्षेत्रा मानल जाइबला

বাজনীতি, শাসন ও সমাজ নীতিক নিযন্তা পহিনে নীচা খসন ত খপবাধী খা গ্বল্ডাবস্থাক হাথ মে খাণলি... । একবা কমোবেঁশি বঁদর্শিত কযন জা সকৈত ছনৈক ক্ষদা খাবঁ ত এহি বঁদনাম বস্থাক বীচ মে 'স্পাগলেড জীনিযস' সেহো সভ খাবি গেল খছি। বএহ 'স্পাগলেড জীনিযস' বামনখন পোদ্দাব দবোগা সঁ ন' ক' দাব্দবাঁজ, বংগবাঁজ বামনখন পোদ্দাব খছি। ক্ষক্কন বাঁবূ ছথি প্বধান খাউংটডেটেড, খা খপন খস্তিত্বক লেল সংঘর্ষবত স্বর্ত্র্ত ক্ষখর্জী সেহো খছি...। ণ লোক প্রকটতঃ সৈদ্ধান্তিক ব্দপেঁ এক দোসবাক বিবোধী ছথি কিন্তু তবে তব এক দোসবাক হিতচিংতক সেহো ছথি...। হিনকা সভক ক্ষচক্র মে পডি় নীক নাবা হাস্যাস্পদ ভ জাণত খছি, লোক সভ মবৈত কটৈত বহৈত খছি। বস্তুতঃ ঞা মাত্রা এক নগবক টা নহি ববন্ সম্পূর্ণ দেশক গাথা খছি...।

কথাকাব খাণাঁ বঁঠ়ৈত ছথি খা ''বৈঁকবাঁ পহোড়বা'' নামক কথাক নাথেঁ সার্বজনিন চিন্তা কেঁ ব্যঞ্জ কবৈত ছথি। এতহ্ বএহ 'স্পাগলেড জীনিযস' সিকন্দব খছি ত বামচন্দব মড়বক বৈঁটা কালেশ্বব ছথি...। এত জত সিকন্দব খপন খতীত সঁ ভাগি শ্রমসাধ্য কাজ কব' লেল উঁতাহ্ল ছথি ওতহি ওকবা বিঁন্ব জানকাবী দেনে ওকব বাঁহ্বঁল কেঁ খপন লাভ লেল দোহল কবযবঁলা ''ভংববনান বস্ত্র ভংডাব'' কে মানিক প্রকাশি খণববান ছথি। নতীজা কালেশ্বব খা সিকংদব কে বীচ পাণ খসূলীক তগাদা দ্গগোষ্ঠ বংগবাঁজক লপহড় া মে তঙ্কীন হোণত-হোণত খগড় া-পিছড় াক লড় াণ মে বঁদলি সম্পূর্ণ নগব মে লূটপাট মচা দৈত ছৈক...। ঞা দংগা বৈচাবিক সমানতা কেঁ সেহো ঝমাডৈ়ত খছি

জখনি পিছড়ু া বস্থ সেঁ খাএন সর্বমান্য সর্বপ্রতিষ্ঠিত এক বাজনৈতিক দনক জিনাধ্যক্ষ প্বৰুষোত্তম মংডন মাত্রা এহি খাকস্মিক ঘটৈনাক চনৈত খপনহি দনক খগড়ু াবস্থ সঁ খাগন কার্যকত্র্তা চিবংজীব সিংহ স খপমানিত হোগত ছথি... । নেখক কেব চিন্তা খাগাঁ বঁঢ়ু ৈত খছি খা ও দেখবৈত ছথি জে বৈচাবিক দৃষ্ঠি সঁ দৃঢ়ু ব্যক্তি এহি তাকোনিক উন্মাদ মে তহিনা খপ্রাসংগিক হোগত ছথি জেনা বিহাড়ু ি মে বঁগ্বনা. ।

এহি সভসঁ নেখক তীব্র বেদনাক খনুভব কবৈত ছথি, ক্ষদা ও প্বনঃ খাশাক এক কিবণ দেখবৈত ছথি জে সমাজক পৈঘ বস্থ এখনহুঁ এহি বিতংডা সেঁ দূব খছি খা উঁসোহক গপ্প ওা জে একব সংখ্যা বৈসী ছৈক... । ওা খছি একটা বিশান শ্রেমিক বস্থ জেকবা নেন ভবি দিনুক মেহনতিক বাঁদ কেবন ‘‘নূন বোটী খা তানি কমবিযা’’ স্বতবাঁক খভিনাষা বহৈত ছৈক ।

এহি বিতল্ডা কেঁ মনোবংজন ও খেনক ৰূপ দেনিহাব নব ক্ষক্ষনিত সভ জাতি ও বস্থ সঁ খাগন বঁচা সভ সেহো খছি... ।

এহি প্রকাব সঁ এহি দ্নূ কথা সমেত সম্পূর্ণ কথা–সংগ্রহক বিষয মে যৌহ কহন জা সকৈত খছি জে ওা নীক ও বেঁজাএক পবীধিসঁ বঁহ্ত দূব ভ গেন খছি । খনন্য ! ! ! খতুননীয ! ! ! খদ্ভুত ! ! ! খদ্বিতীয ! ! !

ডা যোগানন্দ ঝা

অন্ধাবক বিবোধমে: এক দৃষ্টি

শ্রী অববিন্দ ঠাকুব আধুনিক মৈথিলী সাহিত্যমে নিবিষ্ঠ বচনাকাবক রূপমে পবিচিতি বনৌনে ছথি। হিনক এক গোট করিতা সংগ্রহ 'পবতী ঠুঁটি বহল অছি', এক গোট কথা সংগ্রহ 'অন্ধাবক বিবোধমে' আ এক গোট গজল সংগ্রহ 'বহুকপিযা প্রদেশমে' প্রকাশিত ছনি। বাজনীতিক চেতনাসঁ ওতপ্রাত হিনক লেখন বচনাকাবক ওহি প্রতিবদ্ধতাকেঁ ওঁগিত কবৈত দেখি পড় ৈত অছি জকব নিবাহি কোনো বচনাকাবকেঁ মানর জীরন, সমাজ, বাষ্ট্র ও সম্পূর্ণতামে মানরতাক হিতৈষী, মানরীয গবিমাক উন্নাযকক রূপমে প্রতিনিধিত্ব প্রদান কবৈত অছি।

'অন্ধাবক বিবোধমে' কথা সংগ্রহ হিনক দস গোট কথাক সংগ্রহ থিক। কথা সভক শীর্ষক থিক ক্রমশ: খিস্সা সিযাব যাব, পিযাসল পানি, অন্ধাবক বিবোধ মে, ঢাঁচা-1992, মূস, প্রজাতংত্র পবিকথা, অথ গিবগিট গাথা, অয্যাসী, বৈঁকবা-ফোড়বা আ বিষ-পান। এহি কথা সভক মাধ্যমে কথাকাব আধুনিক পবিবেশ মে ব্যাপ্ত বাজনীতিক, সামাজিক ও প্রশাসনিক বিদ্রূপতাক খণ্ড চিত্র প্রস্তুত কঽ ওকবা প্রতি অসন্তোষ, বিবোধ ও বিদ্রোহক চিত্রণ মনোবৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণপূর্বক কযলনি অছি।

'পিযাসল পানি' নাবী জীরনক করুণ কথা থিক। পুরুষ প্রধান সমাজমে নাবী-শোষণক অবিশৃংখিল পবম্পবা বহল অছি। অন্ধরিশ্বাস সঁ জকড়ল সমাজ নাবীক মনোভার কেঁ কহিযো রিশেষ প্রশ্রয নহি দৈত বহল অছি আ অপন সংস্কাবক কাবণে নাবী নিবন্তব উপৌড়নক শিকাব হোগত অযনীহ অছি। এহি কথাক নাযিকা নাবাযণপ্রবরানী সেহো উপৌড়নক শিকাব ছথি। ও অপন কন্নীর পতিক কাবণে অপন কামরাসনাক পবিতৃপ্তি নহি কহ পরৈত ছথি আ ওকব আনম্বনক দিস উন্মুখ হোগত দেখি পড়ৈত ছথি। তথাপি সামাজিক ব্যরস্থাক কাবণে ও সীদিত জীরন জীরৈত ছথি আ মানসিক রূপেঁ রুগ্ণ ভহ জাগত ছথি। হুনক এহি রুগ্ণতা কেঁ হুনকা পব ডাকনী সরাব হোযব ৰুঝল জাগছ আ হুনক ঝাড়-ফূক শুরু কযল জাগছ। ভগৈত হুনকা ঝোঁটা পকড়ি নিবযঅরৈত অছি, মবচাগক ঝোঁক দৈত অছি আ সৌংসে পীঠক চাম কাঁচ কবচী সঁ পীটি উধেসি দৈত অছি। পবিণামত: ও ঘব ছোড়ি পড়া জাগত ছথি আ কলকলংকিনীক উপাধিসঁ রিভুষিত হোগত ছথি, অপরাদ মে পড়ি জাগত ছথি। ক্দা হুনক পতি নখনা কেঁ কেও কন্নীর কহি প্রতাড়িত নহি কবৈত অছি। রাঁত তখন ফ্জৈত অছি জখন নখনা দোসব রিরাহ কবৈত অছি আ এহি দোসব রিরাহসঁ ওকবা পুত্রবনেক প্রাপ্তি হোগত ছৈক। কন্নীর নখনা ওহি পুত্র কেঁ অনজন্বঞা জানি অপন দোসব পনৌক চবিত্র পব আক্ষেপ কবৈত ওকবা জান সঁ মাবি দেরাক প্রযাস কবৈত অছি। এহি তবহেঁ কথাকাব পুরুষ প্রধান সমাজ মে নাবী মাত্র কেঁ দোষী মানরাক রূঢ রিচাবক প্রতিবোধ কয সমাজ মে নাবী-স্বাতংত্র্যক

স্থাপনাক আগ্রহী দেখি পড়ৈত ছথি। নাবী মনোবিজ্ঞানক ক্রমিক বিকাসক দৃষ্টিঞে এ কথা কথাকাবক সিদ্ধহস্ততাক পবিচয দৈত অছি।

পোথীক শীর্ষক রূপ মে ব্যরহৃত কথা ‘অন্হাবক বিবোধ মে’ স্বাতংত্র্যোত্তব ভাবত মে বিকাসমান সম্প্রদাযবাদ সঁ সম্বন্ধ অছি। অনেকতা মে একতা ভাবতীয জীরন-পদ্ধতিক অন্যতম বিশিষ্ঠতা থিক। এহি ঠাম অনেক ধর্ম-সম্প্রদাযক নোককেঁ আন সম্প্রদাযক নোকক সংগ অপনে সম্প্রদাযক নোক জকাঁ সম্বন্ধ বহৈত অছি। বিভিন্ন সম্প্রদাযক নোক এক দোসবাক দু:খ-সুখ, হানি-নাভ, জীরন-মবণ মে সংগ দেখি পড়ৈত ছথি। যৈহ ভারনামেক সমন্বয এহিঠামক বাষ্ট্রীয সমন্বযক কাবক তত্ব থিক। মুদা আধুনিক বাজনীতি জে রোষ্টক বাজনীতি থিক, সংখ্যারঁনক বাজনীতি থিক ক্রমশ: সামাজিক সমবসতা মে বিষ ঘোবি দেনক অছি। এ সমাজ কেঁ ছিন্ন-ভিন্ন কহ বহন অছি। হিন্দূ আ মুসনমান কেঁ দূ খীমা মে বাঁটি দেনক অছি। পবিণামত: বাষ্ট্রীয ও সামাজিক একতা নষ্ঠ ভহ বহন অছি। কথাকাব এহি বাজনীতিক বিদ্রূপতাক প্রতিবোধ কবৈত ছথি।

অন্হাবক বিবোধ মে কথাক নাযক বংজনক হিন্দূ হোগতো মুসনমানক বস্তীমে নিশাভাগ বাতি মে জাযবঁ, ওহিঠামক নোক সভক ওকবা প্রতি সম্বন্ধিক জকাঁ ব্যরহাব তথা অনীমুদ্দীনক উক্তি ‘কক্কা ! ওহি হবমজাদাক খূনে গবম ভেন বহৈ ত’ হমবা মাবিতয, হম সহি নেতৌং। খুদা কসম, হম সহি নেতৌং মগব অপ্পন ঠৈন মে হমব যাবক ভাগ...... হমব ভাগ কেঁ.........আ সভ সঁ বঁঠি এক গোষ্ঠ হিন্দূ কেঁ ও

মাবনক। ৰাঁপ–দাদাক দেন মোহব্বতক তানীম কেঁ মাতী মে মিনা দেনক ঃ হবমজাদা। কোন গজ্জত বহি গেনৈ এহি ঠৈনক আ হমবা সভক...... । ‘মে সামাজিক সমবসতাক আহ্লাদকাবী আস্বাদ ভেঁটৈত অছি। দোসব দিস খননাযক রিক্তআক হৃদ জে হিন্দূ কেঁ নহি কেরন মাবৈত অছি অপিতু হিন্দূ–মুসনমানক শেগ্বহফা ছোড়ি দংগা কবরৈঁয চাহৈত অছি, সম্প্রদাযরাদী ঘৃণাক অভিব্যক্তি থিক। এহি কথাক মাধ্যমে নেখক ওহী সম্প্রদাযরাদী ঘৃণাক প্রতিকাবক সংদেশ দেননি অছি জে হ্নক বাষ্ট্ররাদিতাক প্রতীক থিক আ সম্প্রদাযরাদী বাজনীতিক রিদ্রূপতাক প্রতি রিদ্রাহী প্ররৃতিক নিদর্শন সেহো।

শ্রী অবরিন্দ ঠাকুব নোকজগতক অত্যন্ত গংভীব পাবখী ছথি। হিনক কথা ‘রিষ–পান’ হিনক এহি প্ররৃতি কেঁ জগজিযাব কযত্র অছি। সাম্প্রতিক ন্যায–ব্যরস্থা কোনা অর্থরৈঁনক রশীভূত ভ২ গেন অছি আ অর্থহীনক হেতু অর্থহীন ভ২ গেন অছি তকবা ঃ এহি কথা মে অভিব্যক্তি প্রদান কযননি অছি। সমাজ মে জে গ্বন্ডা তত্ব অছি সে খ্নেআম অপবাধ কবৈত অছি আ ন্যাযপ্রণানী ওকব কিছু রিগাড়ি নহি পরৈঁত ছৈক। দোসব দিস পীড়িত ব্যক্তি অর্থাভার মে ন্যাযানযক প্রক্রিযা মে ম্ব্বমমান হোগত অপন অর্জিতো সম্পত্তি রৌহাবৈঁত বহৈত অছি আ সীদিত ভেন বহৈত অছি। অন্তত: রিজয গ্বড়ে তত্বক হোগত ছৈক জে অর্থরৈঁন সঁ প্রশাসন ও ন্যাযতংত্রহ্ কেঁ কিনরাঁ মে সমর্থ বহৈত অছি। ‘রিষ–পান’ক গোপান জী চতুবানন দ্বাবা পিঠৈনো জাগত ছথি, ন্যাযানয মে জযরাঁক কাবণে অপন ব্যক্তিত্বক অরমূন্যন সেহো অনুভর কবৈত ছথি, রকীনক ফজ্মাতি সেহো স্বনৈত ছথি মুদা ন্যায হ্নকা সঁ দূবে বহৈত

छनि। जखन कि चतुरानन पागक रङें ने तं पुलिसक द्वारा पकड़ने जाइत अछि, ने ओकरा विरुद्ध गवाहिये भऽ पबैत छैक आ अन्तत: विभिन्न छल-छद्म द्वारा ओ गोपाल जी कें स्वनहनामाक हेतु बाध्य कऽ दैत छनि। एतावता कथाकार न्यायपालिकाक विद्रूपता पर एहि कथाक माध्यमे कशाघात करने छथि।

'अभ्यासी' कथा मे निम्नमध्यवर्गीय जीवनक मनोविश्लेषण कयल गेल अछि। ई कथा समकालीन आर्थिक परिवेश मे जीबैत मानवक संक्रान्त मन:स्थिति कें उजागर करैत अछि। व्यक्ति सापेक्ष ई कथा निम्नमध्यवर्गीय मनुष्यक आर्थिक विडम्बनाक यथार्थ सँ अवगत करबैत अछि। एक दिस ओकरा घर मे दैनन्दिन आवश्यकताक वस्तुक अभाव छैक तं दोसर दिस बच्चाक शिक्षा हेतु किताब-कापी सेहो ने जुटि पाबि रहल छैक। तथापि ओ अपन शौकक वस्तु सिकरेट, पत्रिका कीनब ओ बिड़ीक सरावी करब नहि छोड़ि पबैत अछि आ आमेरंचना सँ प्रताड़ित होइत रहैत अछि।

'मूस' कथा सेहो यथार्थक अन्वेषण थिक। एकर पात्र खने पेट्रोलक बढैत दाम सँ खिन्न अछि तँ खने पनीक हेतु गैस चूल्हा नहि कीनि सकबाक कारणे चिन्तित। खनहि ओ ड्रग इन्सपेक्टरक भ्रष्टाचारी प्रवृति पर विचार करैत अछि तँ खनहि अपन आर्थिक दु:स्थिति पर जकर कारणे ओकर कतोक मनोरथ पूर होयबा सँ रहि जाइत छैक। अन्तत: ओ अपन सकल दैन्य सँ पार होयबाक एकमात्र उपाय अपन पुरखाक अरजल जमीन कें बेचि पाइ एकट्ठा करबा मे तकैत अछि। क्षुद्रा जें नऽ कऽ ई ओकर अकर्मण्यताक प्रतीक होइतैक, ओ ओहि जमीन कें जोत-कोड़ कऽ उपार्जन

कवर्वाक विचाव कवैत अछि। एहि तवहेँ ई कथा वर्तमान कानक हवा नोकनि मे कर्मयोगक प्रति निष्ठाक सिद्धान्त केँ प्रतिपादित कवैत अछि। एहि कथा मे मूस कर्मशीन मानव सम्प्रदायक प्रतीक थिक जे सर्वहावा रस्त्र जकाँ निवन्तव कर्मठतापूर्वक श्रम कय वीहवि वॅनवैत अछि आ साप सुविधाभोगी रस्त्राक प्रतीक थिक जे सर्वहावाक श्रम सँ अर्जित सम्पदा पव छन-वॅन द्वावा कब्जा कऽ नैत अछि आ ओकव श्रमक शोषण कवैत अछि। कथाकाव श्रमजीवी मानव सम्प्रदायक प्रति एतय संवेदनशीन छथि।

'ढाँचा-1992' कथा ओहि त्रासद घटना सँ सम्बद्ध अछि जे भावतीय हिन्दू आ मुसनमानक भावनात्मक एकता पव एकटा प्रहाव सदृश छन। ई घटना छन वाॅवबी मस्जिदक विध्वंशक घटना जाहि सँ समस्त भावतीय सम्प्रदाय जेना मानसिक रूपेँ वीमाव ओ स्तब्ध बहि गेन छन। एहि कथा मे कथानक सँ वेसी सामयिक यथार्थ केँ नूतन शैनी मे प्रकट कयन गेन अछि जे पाठककेँ सहजहिँ प्रभावित कऽ दैत अछि।

वाजनीति व्यक्ति, समाज एवं वाष्ट्रक प्रगति एवं चतुर्दिक विकासक हेतु आवश्यक तत्व थिक। मुदा वर्तमान वाजनीतिक पविदृश्य अत्यन्त विकृत देखि पड़ैत अछि। जे वाजनीतिक चिन्तन साम्प्रदायिकता ओ एकताक प्रतीक होइत छन से सामाजिक वैमनस्य, अनगाव ओ पावस्पविक संघर्षकेँ प्राथमिकता दैत देखि पड़ैत अछि। विभिन्न सामाजिक असमानता केँ आधाव वॅना कऽ व्यक्ति-व्यक्ति ओ जातिगत समूहक बीच वाजनीति द्वावा जे वेखा खीँचन जा वहन अछि से ततेक गहीव भऽ गेन अछि जे पवस्पव दुर्भावना, विद्वेष ओ विनाशक

प्रवृतिक कावक भ॰ गेल अछि। जाति, धर्म ओ सम्प्रदायक नाम पव समाज कें खण्डित क॰ वोटक संख्या स्थिव ओ पर्याप्त कवब आधुनिक वाजनीतिक धर्म भ॰ गेल अछि। जाहि वाजनेता कें शासन, सत्ता ओ अधिकावक उपयोग जनताक भलाइ आ कल्याणक हेतु कववाक चाहियनि से अपन क्षुद्र स्वार्थ ओ अहंकावक हेतु व्यक्तिक भावना कें भड़का क॰ सामाजिक ढाँचा कें क्षतिग्रस्त कववापव तुलल छथि। कथाकावक 'वैकवा-फोड़वा', 'खिस्सा सियाव याव', 'प्रजातंत्र पविकथा' आ 'अथ गिवगिट गाथा' मे आधुनिक वाजनीतिक यैह यथार्थ अंकित-टंकित भेल अछि।

'वैकवा-फोड़वा' मे सिकन्दव अगड़ा जातिक अछि आ कानेश्वव पिछड़ा जातिक। कानेश्वव एकटा कपड़ाक दोकान सँ उधावी लेने छैक आ सिकन्दव ओहि दोकानक उधावी असूलवाक काज कवैत अछि। सदा सिकन्दव जखन कानेश्वव सँ तगादा कवैत छैक तँ ओ एकवा अगड़ा जाति द्वावा पिछड़ा जाति कें अवमानित कववाक हवा दैत छैक। पविणामत: कानेश्वव ओ सिकन्दवक वैक-मक दुनू जातिक बीच वैमनस्यक कावण भ॰ जाइत छैक आ दुनू समूह ओसवा जाइत अछि। वर्तमान वाजनीति कोन तवहें जातीय विभेद कें प्रश्रय द॰ समाज कें तोड़ने जा वहल अछि तकव यथार्थपवक दृश्य उपस्थापित कवब एहि कथाक उद्देश्य अछि।

एहिना 'खिस्सा सियाव याव' मे निजी स्वार्थक हेतु निवन्तव विभिन्न क्रियाकलाप मे लागल आधुनिक वाजनेता सभक चवित्र कें उद्घाटित कयल गेल अछि। एकव पात्र गवीबदास एकटा एहन वाजनेताक चवित्रक प्रतिनिधि

𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒻𑒒 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒧𑒔𑒰𑒑𑒱𑒩𑒲 𑒏𑓄 𑒏𑓄 𑒢𑒲𑒏 𑒣𑒠 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒥𑒲 𑒙𑒱𑒏𑒙 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒤𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒪𑒰𑒃𑒮𑒹𑓀𑒮, 𑒣𑒩𑒧𑒱𑒙 𑒂 𑒔𑓀𑒠𑒰-𑒏𑒧𑒲𑒬𑒢𑒏 𑒡𑓀𑒡𑒰 𑒏𑓄 𑒏𑓄 𑒨𑒹𑒢-𑒏𑒹𑒢-𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹𑒝 𑒖𑒢𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱 𑒥𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒅𑒞𑒰𑒯𑒳𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰 𑒢𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒼𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲-𑒢𑒹𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒩𑒳𑒔𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒼𑒯𑒦𑓀𑒑 𑒏𑒹𑓀 𑒁𑒓𑒹𑒖𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒱𑒠𑓂𑒩𑒼𑒯𑒲 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒃𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒮𑒱𑒛𑒹𑒢𑓂𑒙 𑒥𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒍 𑒨𑒳𑒥𑒰 𑒧𑓀𑒔 𑒏𑒹𑓀 𑒯𑒟𑒏𑒝𑓂𑒛𑒰 𑒥𑒢𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒧 𑒍 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒩𑒰𑒖𑒧𑓀𑒑𑒪 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒥𑒰𑒮𑓂𑒞𑒫 𑒍 𑒮𑒞𑒲𑒬 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟𑒮𑒰𑒡𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒤𑒳𑒮𑒱𑒏 𑒮𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒕𑒚𑒧 𑒍 𑒮𑒰𑒞𑒧 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒬𑒢𑒱𑒔𑒩 '𑒬𑒢𑒱' 𑒂 𑒑𑒝𑒹𑒬 𑒑𑒳𑒩𑒧𑒻𑒞𑒰 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒲 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒠 𑒥𑒜𑓃𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒥𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒅𑒔𑒣𑒠𑒮𑓂𑒟 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒯𑒼𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒤𑒳𑒮𑒱 𑒏𑒟𑒢 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒹𑓀 𑒗𑒛𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒣𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒂𑒚𑒧 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒰𑒐𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒋𑒧 𑒋𑒪 𑒮𑒲 𑒥𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒼𑒮𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒞𑓂𑒢𑒬𑒲𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑓀 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒰𑒢𑒹𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒳𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒁𑓀𑒏𑒢 𑒏𑓄 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒥𑒱𑒠𑓂𑒩𑒴𑒣 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒮𑒧𑒏𑓂𑒭 𑒁𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒫𑒰 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒥𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱, 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒍 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒏 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒞𑒱, 𑒮𑒧𑒵𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒍 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒮𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒅𑒣𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒕। 𑒗𑒠𑒰 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒹𑒞𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰

सेनानीक रूपमे राष्ट्रक हेतु रँनेदान देनाक राँदो पेंशन एहि आधारपर अस्वीकार कऽ चुकल छथि जे ओ स्वतंत्रताक यज्ञ सम्मानक हेतु नहि अपितु राष्ट्रसेवाक भावना सँ लड़ने छलाह। एतावता कथाकार साम्प्रतिक स्वार्थपूर्ण राजनीति ओ स्वतंत्रता सँ पूर्वक राष्ट्रहितक हेतु राजनीतिक वर्णन कऽ हेय ओ प्रेय दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट करबैत अछि। हेय राजनीतिक लोकनिक समूहक तुलना ओ सियारक समूह सँ करबैत अछि जे अपन स्वार्थ मात्र मे तल्लीन अछि आ समाज, राष्ट्र केँ खखोरि कऽ चिबाँ जयबाँक हेतु यत्नशील अछि।

' प्रजातंत्र परिकथा ' सेहो राजनीतिक कथा थिक। एहिमे प्रजातंत्रक दुरुपयोगक चित्रांकन भेल अछि। शहरमे अपराधी लोकनि दू टा परिवारक सम्पत्ति लूटि लैत छथि आ एकटा गृहस्वामीक हत्या कऽ दैत छथि। जनिक हत्या कयल जाइत छनि से डाक्टर छलाह आ गरीबँ सभ केँ मुफ्त आ सस्त इलाज करबाँक कारणेँ डाक्टरी व्यवसायमे लागल एहन लोकक हेतु बाँधा छलाह जे रोगीक अधिकाधिक शोषण करबाँक हेतु कुख्यात छलाह। दोसर गृहस्वामी जनिका ओहिठाम केरल लूटपाट भेल छलनि से राष्ट्रपति पदक प्राप्त सम्मान्य शिक्षक छलाह। एहि हत्या ओ लूटकाण्डक सूचना पाबि पुलिस प्रशासन अपन खानापूर्ति कऽ चुकल छल्। तत:पर केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसन एहि हत्याक विरुद्ध जुलूस निकालैत अछि जाहिमे शहरक अधिकांश भ्रष्ट लोकनि सम्मिलित भेल छथि। परिणामत: जुलूसक लोकसभ अनुमंडलाधिकारीक जीप केँ क्षतिग्रस्त कऽ दैत अछि आ अनुमंडलाधिकारी केँ सेहो कुहि दैत अछि। क्रमश: अनुमंडलाधिकारीक आदेश सँ जुलूसपर लाठी चार्ज

হোগত ছৈক আ অনেক এহনো লোক প্রতাড়িত হোগত অছি জে কানূনকেঁ অপনা হাথমে লেবাক দুস্সাহস নহি কঽ সকৈত ছল। পছাতি গুঁডা তত্ব সভক দ্বারা পুলিস পর সেহো বোড় বাঁজী হোগত ছৈক। কিছু গোটে গিরফ্তার হোগত ছথি। ওহি গিরফ্তার লোকসভ কেঁ ছোড়যবাক হেতু প্রশাসনক সংগ বার্তা কয়ল জাগত ছৈক আ প্রশাসন ওকরা সভ কেঁ ছোড়ি কঽ জুলূস আ নারেবাজী সঁ স্বাগত করৈত অছি। এহি তরহেঁ ও কথা প্রজাতাঁত্রিক ব্যবস্থামে সামাজিক–সার্বজনিক হিতক হেতু কয়ল গেল প্রযাস কেঁ নেতাগিরীক ধঁধা কিঁবা নিজী উদ্দেশ্যক হেতু কয়ল গেল অনুশাসনহীনতাজন্য অরাজকতা ও ভয়কারক চিত্র প্রস্তুত করৈত অছি জে সাম্প্রতিক রাজনীতিক যথার্থ থিক।

' অথ গিরগিট গাথা ' সেহো রাজনেতালোকনিক অপন স্বার্থপূর্তিক হেতু ভ্রষ্টাচরণক অতিরেক কেঁ উদ্ঘাটিত করৈত অছি। এহি কথাক পাত্র মুকুন্দ জায়সরাল আ রামলখন পোদ্দার পরস্পর বিরোধী ছথি আ হিনকা দুনূক সমূহক বীচ নিরন্তর মারি–পীট হোগত রহৈত ছনি জাহি সঁ শহর অশান্ত রহৈত ছৈক। মুদা জখন নগরপালিকাক চুনাবক অবসর অবৈত ছৈক তঁ ও দুনূ পরস্পর যারী কঽ লৈত ছথি আ জাহি রার্ডমে জনিক সমর্থকক সংখ্যা অল্প রহৈত ছনি তাহি রার্ডমে অপন প্রতিদ্বন্দীক সমর্থন কঽ দৈত ছথি আ দুনূ গোটে নগরপালিকাক ক্রমশ: চেযরমৈন আ বাগসচেযরমৈন বনি জাগত ছথি।

এতাবতা সংকলনক কথা সভকেঁ পঢলা উত্তর ও স্পষ্ট হোগত অছি জে শ্রী অররিন্দ ঠাকুর কথালেখনমে বস্তুবাদী ও বাস্তবিকতাবাদী ছথি। ও যথার্থকেঁ যথারত প্রস্তুত কঽ ওকর বিদ্রূপতাকেঁ পাঠকীয সংবেদনা

সঁ জোড়ি নোকজগত মে ব্যাপ্ত বিসংগতি সভ পব কশাঘাত কবৈত ছথি। বস্তু, পাত্র, পবিবেশ ও ঘটনাক নির্মাণ মে খপন ক্ষণনতা দ্বাবা ঙা কথাক মূন কথ্য কেঁ সহৃদযজনসংবেদ্য বনা দৈত ছথি খা সামাজিক-বাজনীতিক জগত মে ব্যাপ্ত বিসংগতি সভহিক পোন খোনি ওহিমে স্বধাবক হেত্ত স্বচ্ছাব কিংবা চিন্তন প্রস্তুত কবৈত ছথি।

<u>জগদীশ চংদ্র ঠাকুব"ঋনিল"</u>

<u>ঋবরিন্দজীক ঋাজাদ গজল</u>

মৈথিলীযোমে গজল পব খূব় কাজ ভেল ঋছি ঋা এখনো ভ' বহল ঋছি। গজেন্দ্র ঠাকুব গজলক ব্যাকবণ রিস্তাব সঁ প্রস্তুত কেললি ঋা ঋপনো বঁহ্ত গজল নিখলনি. ঋাশীষ ঋনচিন্হাব মৈথিলী গজল নে' স্বতংত্র সাওংটে বঁনাক' ব্যাকবণ কেঁ স্থাপিত কববাঁমে ঋপনো যোগদান কবৈত ঋপনো বঁহ্ত গজল নিখলনি ঋা ঋাওব বঁহ্ত গোটে সঁ গজল নিখবৌললি ঋা সে কাজ এখনো ক' বহল ছথি হিনকা দূনূ গোটেকে ঋতিবিঞ ঋাব বঁহ্ত গোটে মৈথিলী গজলকেঁ সমৃদ্ধ কববাঁমে যোগদান ক' বহল ছথি। ওা প্রসন্নতাক বাঁত থিক। হমবা জনৈত গজলকাবক ঋখ্য তীনটা বস্তা ঋছি। এক বস্তা ও ঋছি জাহিমে বচনাকাব পহিনে গজলক ব্যাকবণ পঢললি ঋা তকবা বাঁদ ওহী ঋনুসাবে গজল নিখ' নগনাহ. দোসব বস্তামে ও গজলকাব সভ ছথি জে পহিনে গজল নিখ' নগনাহ , বাঁদমে গজলক ব্যাকবণ দিস ঘ্যান গেললি ঋা ওহি ঋনুসাবে নিখবাঁক প্রযাস কব' নগনাহ. তেসব বস্তামে ও নোকনি ছথি জে গজল সূনি ক', পঢি ক' নীখ' নগনাহ ঋা নীখৈত চল গেনাহ, পাছাঁ ওঁনটি ক' নহি তকললি.ও মাত্রা ঋথরা বর্ণ গনি ক' ষেব নিখবাঁক–কহবাঁক চক্কবমে নহি পডি

ঋপন রাঁতকেঁ কেঁন্দ্রমে বাখি ধডাধড নিখৈত চন গেনাহ ঋা নিখৈত জা বহন ছথি।
‘রঁহ্ঝপিযা প্রদেশমে’ মাত্র 24 দিনমে নীখন গেন 66টা গজনক সংগ্রহ থীক জাহিমে গজনকাব ঋবরিন্দ ঠাকুবজীক কথন পব ধ্যান দেন জাএ: ‘হম জে কহয চাহৈত ছী সে মহত্ত্বপূর্ণ ছৈক,তাহি নেন ব্যাকবণ ত্রুটিয কি রিধা রিশেষক মাপদংড,তকব হমবা পবরাহি নহি ঋছি। ওকবা ভন চাহী ত’হমব সহাযক হ্ঋএ,রাঁধা ঠাঠ নহি কবএ ।’ গজনকাবক এহি কথনকেঁ ধ্যানমে বাখি জঁ হিনক গজন পঢরঁ ত নীক নাগত। 66 টা গজনমে 10টা গজন এহেন ঋছি জাহিমে বদীফ ঋছি,কাফিযা নহি. 16 টা এহেন ঋছি জাহিমে কাফিযা ঋছি,বদীফ নহি. 40 টা গজনমে বদীফ ঋা কাফিযা দূনূ ঋছি. কিছএ গজন এহেন হএত জাহিমে রঁহবসঁ সম্বন্ধিত দোষ নহি হো.ঝদা,রঁহ্ত বাস শেব সভমে জে রাঁত কহন গেন ঋছি সে ব্যাকবণক ত্রুটিকেঁ ঝাঁপন দেরাঁমে রঁহ্ত সমর্থ নগৈত ঋছি.সভ গজনক ঋংতিম শেবমে গজনকাবক নামক প্রযোগক প্রাচীন পবংপবাক নিরাহি নীক জকাঁ কএন গেন ঋছি জে রঁহ্ত গজনকাব নহি ক’ পরৈত ছথি.
গজনকাবক সমক্ষ সামাজিক,বাজনীতিক ঋা সাংস্কৃতিক চেতনাক ঋরমূন্যনক রিষান ক্ষেত্রক ঋন্বভরক সংপদা ছনি জে জহাঁ–তহাঁ রিভিন্ন গজনক রিভিন্ন শেব সভমে প্রগট ভেন ছনি। একব রাঁনগীক রূপমে প্রস্তুত ঋছি নিম্ননিখিত কিছু শেব:

দূধ নেন নেনা ঋা বোগী হাকবোস কবত
নৈ জখন গামমে মানক রঁথান বহত

एहि समाजक कहि भेल अछि घोड़नक ओछाओन सन
प्रेममे भीजल रहतहुँ तापिघर ओंघरा रहल अछि

गाममे डिरिया जबन अछि बातिसं लहरैक लेल
मेट्रोपॉलिटन टाउनमे अछि बाति द्पहरिया रहल

पात बिछैलैक रहैब लोकक करमान छल
याब सभ खतोपित भेल एँठ उठेलैक रहैब

बातिक जे एकबाल रहल
दुर्लभ सगर गजोबिया भेल

संसद केर कोठैमे किछुओ नहि हेर-फेर
सांपनाथ, नागनाथ,गएह दुनू रहैब-रहैब

काब खोजै छै एम्हर फुटपाथ पर सूतल सिकार
यम खटैं छथि एहि नगर विभिन्न राहल पर सराब

संसदमे घुसिआयल जे
सात जनम लेल केनक जोगाब

गजलकारक भयंकर आमेरिस्वास एहि सेर सभमे देखू:

धन्य 'खबरिन'तों एनह गजलक जगतमे
फेर केओ 'खुसरो'की तोहर बाँद हेताह

नौ पाठक के चिन्ता खबरिन
नीक गजल के पढ़बैं करतै

এহনে আব ৰ্হত বাস নীক–নীক শেব রনা গজল পঠৰাক নেন দেখূ শ্রী খবরিন্দ ঠাক্ষবক বচন আ 'নরাবংভ' দ্বাবা 2011 মে প্রকাশিত আ ৰ্হত স্বংদব কাগতপব 'প্রাগ্রেসির প্রিংটর্স', নঙা দিল্লী দ্বাবা ৰ্হত স্বংদব ক্ষদ্রিত গজল সংগ্রহ 'ৰ্হক্ষপিযা প্রদেশমে'। খন্তমে হম গজলকাবক উঁক্তিক উঁল্লেখ কব' চাহৰ: '.......মাথক জেনা সভ ৰান্হ ঠূটি গেন । এহন ধাবা–প্রবাহ জে গজলক মিসবা,শেব,বদীফ,কাফিযা,ৰহব,গিবহ সভকেঁ সম্হাবৰ কঠিন....' ভবিসক, ওএহ কাবণ থীক জে গজেন্দ্র ঠাক্ষবজী দ্বাবা হিনক গজল সভকেঁ আজাদ গজল কহন গেন খছি। হম এহি রিচাবসঁ সহমত ছী।

<u>योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'</u>

<u>अन्याबक बखराब</u>

प्राकृतिक नियम छैक अन्याव स्थायी नहि होगत छैक। अन्याव आ गजोतक चक्र चलैत वहैत छैक। मुदा समाज मे पसरल अन्याव लगैत अछि प्रकृतिक एहि नियम कें नहि मानैत अछि। अन्याव मात्र बातिए टा कें नहि होगत छैक। जखन प्रशासन तंत्र कानून व्यवस्थाक प्रति उदासीन भs जागत छैक अथवा पक्षपातपूर्ण आचरण मे लागि जागत छैक तखन दिन देखाव अन्याव पसवि जागत छैक। तखन लगैत छैक जे प्रशासन तंत्र समाजक अवाँछित तत्वक संग मिल कए अन्याबक बखराब भs गेल।
आ तें अववरिन्द ठाकुवजी अन्याबक विवोध कववा लेल फाँड़ कसलनि।
अन्याबक एहि विवोध मे हुनका भेटैत छनि नायक अलीमुद्दीन "...कक्का, ओहि हवामजादाक खूने गवम भेल वहै तs हमवा मावितए, हम सहि लैतौं। खुदा कसम, हम सहि लैतौं मगव अप्पन टोल मे हम्र याव भाग कें .... हम्मव याव भाग कें ... आ सवँ सँ ं बँढ़ि कए एक गोटे हिन्दू कें ओ मावलक। वाँप दादाक देल

মোহম্মতক তানীম কঁে মাটি মে মিনা দেনক ও হবামজাদা। কোন গজ্জতি বহি গেনৈ এহি ছৈনক আ হমবা সবহক ? ”

নাযক খনীক্ষদ্দীন তাড়ী দাড়ূ পীবি মাবি পীটৈ ঝগড়া। ঝাঁটী কেনিহাব একটা হাড় মাঁসক মনুক্খ নহি খপিতু একটা সংস্কাব, একটা বিচাবধাবাক প্যাতক ভেন খছি। সমাজ মে খনীক্ষদ্দীন বহুত ছৈক, গাম গাম মে ছৈক জতএ হিন্দূ ক্ষসনমান সৈকড়া সান সঁ এক ঠাম বহি বহন খছি। কোনো হিন্দূ কিসানক হববাহ আ কি জন মজদূব ক্ষসনমান ভেনাগ কহিযো ককবো খখবনৈ নহি, আ নে ক্ষসনমানে নবাঁবক বাজ মে হিন্দূ বৈযত কঁে স্বখ সঁ বহবাঁ মে বাঁধা এনৈক।

ক্ষদা জকবা ফূটৈক দোকান চনেবাঁক ছৈক আ ওহী মে বাজনীতিক বোটী পকেবাঁক ছৈক তকবা নেন খনীক্ষদ্দীন নহি, বিক্ষআ সঁ কাজ ছৈক। ওহনে নোক বিক্ষআ কঁে আগাঁ বঢ়বো নেন সহাযতা সেহো কবৈত ছৈক। এহী সম্বন্ধ মে একটা ঘটনা মোন পবৈত খছি।

হমবা গাম মে পৈঘ ক্ষসনমান ছৈন ছৈক জাহি মে গবীব ধনীক সব তবহক নোক ছৈক। ওহী মে কিযো জেঠবৈযত সেহো কহবৈ বনা ভেনাহ, ক্ষখিযা সবপংচক পদ সেহো স্বশোভিত কেননি। এহনে ছৈনক একটা গবীব নবহাবক কঁে দেখন হাটৈ পব নোক কঁে ‘জয বামজী’ কহি খভিবাদন কবৈত। শহব মে বহুত দিন বহনহুঁ সে গামক নোকক বীচক আপসী সৌহার্দক বাত বহুত কিছু বিসবিযে গেন ছনিযৈক। কনে কানক নেন হম খকচকা গেনহুঁ – বহমতবাঁ বতাহ তs নে ভs গেনৈক ? জয বামজী বাজি বহন ছৈক। স্বননিযৈ ওকবা মসজিদ মে এক দিন খজানক বেব ক্ষন্না ছৈকি

देनकै जे ओ ठीक नहि करैत अछि। ओ एकदम झँझट जकाँ जरॅार देनकै "मै तो अपन अजान स ँ मतनर बाखs, हमबा नहि पढ़ ारैs जे हम कोना रॅाजी। जय बामजी रॅजना स ँ झँह मे घार भs जेतै की ओतरॅ स ँ हमब धवम चनि गेनै की ?" आ से बहितै तs की रॅारॅा अमबनाथक सेरक कोनो झसनमान होगतए ?

छोटै रॅात झदा गम्भीव रिचावक मसाना। रॅहत रॅैसी तीवरॅ एहि नेख कं तs साम्प्रदायिकताक आबोप नागि जाएत। झदा सह ओ जे दूनू पक्षक जनसाधाव˜क नेन निहक्रिया मे धर्मकि देरान कहाँ ठाढ़ होगत छैक ? अन्हाव पसावनिहाव आ देरान ठाढ़ केनिहाव तेहन्ने होगत छैक।

अन्हावक स्वरूप किछुओ भs सकैत छैक। गोपानजी कं आशा छनि "...ओ साँच अछि जे भ्रष्टाचावक अन्हाव रॅैस तेजी स ँ पसवन अछि झदा एहि घटाटैप अन्हाव मे न्यायपानिकाक प्रज्ज्वनित दीप भ्रष्टाचाव नेन चुनौतीक रूप मे मौजूद अछि आ देखरॅै अहाँ सरॅ जे एक दिन ओ प्रज्ज्वनित दीप भ्रष्टाचावक पसवन गुज्ज अन्हाव कं समूल नष्ठ कs कए छोड़त।" झदा गोपानजीक आशा टूटि जाएत छनि। कावण न्यापानिकाक हाथ पैव फेव प्रशासन तंत्रे होगत छैक आ कि रॅदनाम रकीन सम्प्रदाय। जज की कवतैक यदि दवोगा ठीक स ँ केस एन्ट्री नहि केने बहतैक अथरा गराह कं बस्ता स ँ हटा देन गेनैक ? अनेको उँदाहवण छैक जे साक्ष्यक अभार मे पैघ पैघ अपबाध मे सजा नहि भs परॅैत छैक। अन्हाव स ँ झण्डिक शपथ नैयो कए रॅैचावा जज असहाय भs जाएत

ঋছি ।
ঋন্হাবক বখরাবক ৰূপ মে ঋবরিন্দজী কেঁ ও পত্রকাবো ভেষ্টৈত ছথিন জে সমাচাব কেঁ মোড়ি তোবি কএ পস্তুত কবৈত ছথি। জতএ নোক পত্রকাবিতাক চোনা ওঢ়ত মাত্র ঋপনা কেঁ রঁচরৈঁক নেন ওতএ ঋন্হাব কেঁ পসবৈত বহবাঁ স ় কে বোকতৈক ? গএহ কাবণ ছৈক জে সবঁ প্রম্খ বাজনীতিক দনক ঋপন ঋখবাঁব বহৈত ছৈক, জাহি মে ওহনে খবঁবি ছাপন জাগত ছৈক জে ওহি দনক ম্খিযা কেঁ সৃষ্টি কবতৈক। ফন ছৈক ঋন্হাবে ঋন্হাব। "প্রজাতংত্র পবিকথা" ঋন্হাবক বখরাব সবঁ স ় ভবন ঋছি ঋা ওকব রিভিন্ন খেনা দেখবৈঁত ঋছি। ঋন্হাবক বখরাব সবঁ ঋপনা মে একটা মজগূত কিন্তু ঋদৃশ্য সূত্র স ় জোড়ন ঋছি। ওহি সূত্র কেঁ চিন্হিও কএ হম সবঁ ওকবা কাটি নহি সকৈত ছী। ও একটা জেনীফিস জকাঁ ঋখরা সহস্র ম্হঁহ রঁনা বাক্ষস জকাঁ ঋছি। ওকবা পব কোনা প্রভাব কববৈঁক সে বূঁমন নহি ঋছি। জেনা কমন ফমাব শর্মা কেঁ বূঁমি পড় ়ত ছৈক "...শহবক ডগব সবঁ পব একাধ ঘংটাক ঋন্তবান পব গ্বজবৈত প্বনিসক জীপ সবঁ রাতারবণ মে পসবন ভকোভন্ন ঋা নোক সবঁহক মনোমস্তিষ্ক মে গতানন ঋন্হাব কেঁ কনে কান নেন চিবীচোঁত কবৈত নিকনি জাগত ছনৈ ঋা ফেব ফেব ওএহ ঋন্হাব ঋা ভকোভন্ন ঋপন ঋতিক্রমিত ঠাম পব ঘ্বি ঋবৈঁত ছনৈ।"
ঋন্হাব কেঁ ভগেবাঁ নেন প্রযাস হোগত বহনৈক ঋছি, ম্দা ঋসংগঠিত সমাজক রীচ ফেব বখরাবে সবঁহক তন্ত্র হমবা সবঁহক রীচ ঘ্সিযা কএ সবঁ প্রযাস রিফন কs দৈত ঋছি। তেঁযো কিছু হোগত ছৈক জরূব। ঋন্ত মে নেখকক ঋাশা "গ তs চনৈত বহৈত ঋছি, চনিতে

बहुत, अनुरूपत" ।
हाथि नहि मानवाँक अछि । रैब रैब अन्हारक विरोध मे स्वर उँठवाँक चाही । साहित्यकारक काज छएह ने । एहि मे जरूर अरविन्द ठाकुरजी किछु सफल भेलाह अछि ।

एकैसम शताब्दी मे घसल अठन्नीक प्रासंगिकता

घसल अठन्नी करिताक रचना कें प्रायः सात-आठ दशक बीत गेलैक । ओहि समय अठन्नीक मोल बहुत बेसी छलैक । आठ आना मे चारि पाँच सेर चाउँर कीनल जा सकैत छल । घसल अठन्नी सम्बन्ध देखल अछि, ओ दू तरहें प्रचलित छल - एक तS वास्तविक अठन्नी जे बहुत पुरान भS गेला सँ ओकर छपलाहा किछु अंश मेटा जाइत छलैक आ दोसर जे सही मे नकली छल से अठन्नीक आकारक कोनो अन्य धातुक टुकड़ा । जाहि मे किछु छपले नहि रहैत छलैक । नेतघट्टू लोक एहेन सिक्का साधारणतः रातिक अन्हार मे चला दैत छल । पहिल प्रकारक सिक्का चलेबा मे ओतेक कष्ठ नहि होइत छलैक कारण किछु छाप तS रहितहि छलैक जदा दोसर तS सोर फोर ठकी छलैक । ओ सिक्का रहितहिं नहि छलैक ।

करिता मे समाजक एकटा चित्रण अछि । ओहि समयक समाज मे उत्पीड़न रहाँ छलाह जिनका लेल हरा केनाग मामूली बात छलन्हि कारण हुनका दरोगाक वरदहस्त प्राप्त छलन्हि -

"कै खून पचौननि ओ रँडा
रोगयो न भंग

যগ যগ দৰোগাজী জীৱঁথ্" ।

ভুঽক্ষন ৰাঁবূ দৰোগা কেঁ খ্ঋা পিযা কএ ঋপনা পক্ষ মে বখৈত ছনাহ। কিযো দৰোগা ঋাৱঁথ্, ভুঽক্ষন ৰাঁবূঁক ওতএ স ঁ ডানী হ্নকা পহিনহিঁ পঠা দেন জাগত ছনন্হি। মধ্পজীক সমযক ভুঽক্ষন ৰাঁবূ জমীন জথা ৰঁনা সামঁত ছথি। হ্নকব ঋপন ঋহঁকাব ছনি –

"ৰঁনিহাবক দS কএ উঁচিত ৰৌনি,
ক্ষন মে নগাএৱঁ কী হমহিঁ দাগ ? "

ঋাগ একৈসম শিতাব্দীক দোসব দশিক মে যদি সমাজ পব দৃষ্ঠিপাত কবী তS স্পষ্ঠ ভএ জাএত জে কতহ্ কিছু নহি ৰঁদননৈক ঋছি। ঢংগ ওএহ ছৈক, হ ঁ কনে বংগ ৰঁদনি গেনৈক ঋছি। গামক ভুঽক্ষন ৰাঁবূ কেঁ ঋাৱঁ মখনা খৰাঁস নহি বহন হোন্হি ক্ষদা ৰাঁহ্ৰঁনী নোক ঋপনা সংগ হ ঁসেবী বখিতহিঁ ছথি, জে দেখৰাঁ মে "ক্ষনিশিহ্ঁ স ঁ কর্কশি ভীমকায" বহিতহিঁ ঋছি ঋা জকব ঋাতঁক জনসাধাবণক নেন মখনাক চাঽ স ঁ ৰেঁসিযে ঘাতক হোগত ছৈক। ভুঽক্ষন ৰাঁবূঁক চোনা ৰঁদনি গেনন্হি ঋছি। জমীন জথা ৰঁনা সামঁত স ঁ ৰঁদনি ঋাৱঁ ও নেতা ঋা ঠীকেদাবক ৰূপ ধS নেনন্হি ঋছি। ও নেতা–ঠীকেদাব, জে ৰাঁত ৰাঁত পব দৰোগা কেঁ ৰঁদনী কবৰাঁ দেৰাঁক ধমকী দৈত ঋছি, তকবা দৰোগা কোনা নহি মদদি কবতৈ ? ওকব ঋপন হিত সাধন সেহো ওহী নেতা–ঠীকেদাবক সংগ দেনা মে হোগত ছৈক।

ঋঠন্নীক মোন ঋাৱঁ নহি বহনৈক। পবিবর্তিত ৰূপ মে

पचास पैसाक सिक्का सेहो बंद भऽ गेल। मात्र सरकारी खाता पर चालू छैक। यदि श्रेय मूल्यक बराबरी करी तऽ साठि सत्तरि साल पहिलुक अठन्नी एखुनक दू सौ टाकाक समतुल्य भऽ जाएत। एखन समाज मे जन रोजिगारक न्यूनतम रोजि सेहो दू सौ सँ कम नहिए छैक।

एहेन स्थिति मे पाँच सौ टाकाक नकली नोट मधुप जीक घसल अठन्नीक तुलना मे राखल जा सकैत अछि। आर कल्पना करियौ जे गाम घरक कियो रोजगारी (आ कि कियो आने नेतघंट्टू लोक, नेताक चमचा आ कि ठीकेदार) साँझू पहर दूटा जन केँ रोजिक रूप मे पाँच सौ टाकाक नोट देलखिन्ह आ कहि जे चौक पर भजा कए दूनू बाँटि लिहें। चौक पर ओ नोट नहि भजलैक कारण ओ नकली छलैक। एहन स्थिति मे यदि ओ नोट घुरेने हुनका लग आओत तऽ की ओ स्वीकार कऽ लेथिन्ह जे सम्भवतः हुनके देबा मे भूल भेल हेतन्हि आ नोट बदलि देथिन्ह ? के स्वीकार करत अपन आ गलती ? आ गलती भेलैक कोना जखन जानियो कए कएल गेलैक ?

मधुपजीक रचना अन्यायक प्रतीकार करैत अछि –

“मानिक, हम कर्ज न छी माँगैत,
अथवा नहि एलहुँ भीख हेतु,
उपजल रोजि टा देल जाए...”

कहो हल की भेलैक छैक ? मखनाक लात घूसा आ रेंगोस भऽ कए खसि पड़ला पर फेर उठैकल बाबूक

রেঁতক প্রভাব। ব্‌চনী ভাগমন্ত ছল, কণ্ঠ সঁ স্নিগ্ধ ভেটি গেনৈক। সোচিযৌক যদি ওহি দিন ও মবৈত নহি খা খপংগ ভs জাগত তখন ওকব জিনগী কেহন রৌম্ন ভs জগতৈক ? খথরা যদি খপনে ও মবি জাগত খা রঁচা ৫্খব ভs কএ জীরৈঁত বহি জগতৈক ? মধ্‌পজী খপন নাযিকা কেঁ ওহি কণ্ঠ সঁ রঁচা নেনখিন্হ –

“রঁস এক রেঁব খস্ফ্ৃ৫ ক্রন্দন
শিশ্ব সংগহিঁ ব্‌চনিক স্নিগ্ধ সৃষ্ঠি”

স্নদা কতেকো এহন “ঘসন জিনকব খদৃষ্ঠি” ব্‌চনী সন ভাগ্যশানী নহিযো ভs সকৈত খছি।

খাজ্‌ক জন রৌনিহাব কতএ জা কএ নানিস কবত ? এখনহ্‌ সমাজ ওহিনা ছৈক জে দবোগা তs পৈঘ রাঁত, সিপাহিএ ওকবা থানা পব ৫পএ নহি দেতৈক। ওঁনঠৈ ঝূঠক কোনো খপবাধ বঁনা কএ দশ নাঠী মাববৌ কবতৈ খা রেঁসী ৫ৈঁ৫ৈ কবত তs ওকবা হাজতক ভীতব রঁন্ন সেহো কs দেতৈক। খা তকবা ছোড়ৱৈঁ নেন ফেব ওএহ নেতা জীক সহাবা।

ভুৎস্কন বাঁবূঁক ঘমংড খা রেঁগমানী পোষিত ছনন্হি ভ্রষ্ঠ প্রশাসনক কাবণ। খা প্রশাসনক ভ্রষ্ঠাচাব রঁঢ়ৱৈঁ কেনৈ খছি, রঁহ্‌ত রেঁসী রঁঢ়নৈক খছি। নকনী নোৎক ব্যরসায জে ফবি খা হ্‌নাএ বহনৈক খছি সে কিএক ?

নরকা ভুৎস্কন বাঁবূঁ খথতি্‌ ঠীকেদাব সাহেঁব যদি পূবা রৌনি দs দেখিন্হ তs বূঁঝূ জমানা ওঁনষ্টিএ গেনৈক।

सरँ जनैत छी मनरेगा मे कतेक पर ठुँठा छापन जागत छैक आ कतेक हाथ पर देन जागत छैक। रोजिहारक उचित रोजि एकटा साधारण किसान भनेदs दैत होएक, ठीकेदार तs कतहु नहिए दैत छैक।

घसन अठन्नी कें एखनहु ठौर नहि भेटैनैक अछि। ओ एखनहु ओहिना रौआ रौआ कए गारि बकन अछि "हम कतए जाउ, अरँनमँ पाउ ?" आ बँचनीक रेटा रेटी नाती पोता खटि बकनैक अछि आ हाथ मे पाँच सौक नकली नोट नेने दोकाने दोकान रौआ बकनैक अछि। जेना समय ठाढ़ भs गेन होए।

मध्पजीक ई रचना कान निरपेक्ष भs गेन। कान रीतेत बहन क्षदा रचना सदिखन अपन प्रासंगिकता रँनौने बहन।

जमाना जमानाक स्टाइल

मोहन राँबू अपना जमाना मे ओरसियर छनाह। खूब पाग कमेननि। गाम मे जमीन जान कीनरँ केननि, पटना आदरभंगा मे सेहो नीक ठेकड़ा सरँ कीनन नि। गाम मे पोखरा पाटैन घर तs छननिहे, दरभंगो मे राँढ़ी याँ तीन मंजिलाघर रँनौननि जाहि मे नीचा आ उपर भाड़ा बहैत छननि आ बीचक तन्ना पर अपने बहैत छनाह।

मोहन राँबू भागमन्त नोक आ नियोजित परिवार। जेठ पुत्र आ छोट पुत्री। दूनू कें नीक शिक्षा दियौननि। समय परपुत्री सासुर रँसनथिन। पुत्र नेतरहा

ॐ सॅं पढ़ि आगआगाँ कानपुर सॅं गंजीनयर भेलाह आ दश साल अमेरिका मेरिभिन्न कम्पनी मे नौकरी करैत स्वदेश एलाह। हुनकर विचार जे अप नहि व्यवसाय करी आ सेहो दरभंगे मे। एकहिसाथें ओ क्रान्तिकारी विचार छलैक जकरा सब स्वागत केलक।

मोहन बाबू बैंटा कें सलाह देलखिन दरभंगा मे तीन तल्ला मकान अछिए, खाली करबा लिअs आ कोनो दू तल्ला मेऑफिस भेए जाएत। बाकी एक तल्ला मे अपने रहु। हम सब तs आब गामहिं रहब।

बैंटा छलखिन तs आज्ञाकारी आ बात काटैनिहार नहि। तथापि जमाना बदलि गेल छलैक। पुरना डेरा मे जेबा लेलवस्ता बैसी चाकर नहि जे आजुक पैघ काज जा सकए। बात बुझबैत बैंटा कहलखिन जे चारीस साल पुरान घरअपने लेल ठीक छल आ अछियो। मुदा हमरा आधुनिक तरीका सॅं रहबाक अछि आ बिजनेस करबाक अछि। हमरविचार अछि जे एहि जमीन कें घर समेत बेचि दियौक, पटना बा जमीन सेहो बेच दियौक आ एनएचक बगल मेएक बीघा जमीन कीन लिअs, से कने हटियो कए हेतैक तs कोनो बात नहि। ओहि एक बीघा मे कोना मकानरहतैक कोना सड़क आ पार्किंग आ कोन तरहक बाग बगीचा लगाएल जेतैक तकर ब्लूप्रिंट हम तैयार केने आएलछी। आ एकटा पैघ नक्शा बापक आगू ओ पसारि देलक।

ओरसियर मोहन बाबू नक्शा तs बुझिते छलखिन मुदा

ओकर विस्तृत विवरण जानि कने कानक नेन चकचो न्हीजकढ़व नागि गेननि। दवङ्गा मे एहि स्टोगनक घ बक कल्पना किंयो नहिए केने छन। मोहन बाबू कें ओ तीनतन्नाघब बनेबा मे जे पसेना बहन छननि त कब स्मबण एना पब ओकबा बेचब की तोवब कोनो त बहुँ उंचित नहि नागिबहन छननि। बेटा मधुब स्वबें ब् मेनखिन "पापा, नरका जमानाक नरका व्यरसायक नेन नर घब चाहबें कबी ने। थर्मी ने सिखेने बही प्रबान घब खसे तखन ने नर घब उंठें"। मोहन बाबू नि रुत्तब भs गेनाह।

उंचित जगह

नन्दू भाग साधाबण गृहस्थ। गाम मे किछु घब जजम निका। थाब सब जजमान दिन्नी पंजाब चन गेननि त s ओहो जेमास मे गोटेक दिन कतह् पूजा थादि भs जागत छनैक सेहो बन्द भs गेननि। सोचन नि थामदनी बढ़बें नेन किछुदोसब काज कबी।

ब्रह्मस्थान नग एक ठेकड़ ा गैबमजरुथा जमीन मे एक टा खोपड़ ा ठाढ़ केननि। साँझ कए ओहि मे प्याजू था तरुथाबना कए ह्मबही संग बेचs नगना। चाह सेहो बनाबथि। खोपड़ ा बस्ताक कात मे छनैक जाहि बाटें हाट दिन थानोगामक नोकक थबबजात ब हैत छनैक। ओहि दिन नीक बिक्री भs जागत छननि। बाकी दिन मामूनी। मिनाज्नाकए हप्ता मे सौ स बा सौ कमा नैत छनाह।

কিছু দিনক বাদ হুনক সাব গাম এলখিন। ও একটা আগডিযা দেলখিন। নন্দূ ভাগ দোকান উঠা কএ গাম কদোসব কাত বৈসা লেলনি।

হম জখন গাম গেলহুঁ তখন ব্রহ্মস্থান বলা জগহ খা লী দেখি নন্দূ ভাগ কেঁ পুছলিঅনি "দোকান কবর ছো ড়ি দেলিযৈকী ? " ও হমবা বুঝেললনি জে জগহ বদ নি দেলিযৈক। আব লীক রিঞী হোগত অছি। উসন ন খড়া আ তবন মাছসেহো বখৈত ছী। ওহি জগহ পব পাঁচ সৌ রুপৈযা মহিনা ভাড় া লগৈত অছি স্ম দা তৈযো হপ্তা মে হজাব বাবহ সৌ কমাবৈত ছী। হমবা বড় আশ্চর্য লাগল।

হমবা জিজ্ঞাসা কেঁ শান্ত কবৈত ও বুঝা দেলনি জে দোকান পসীখানাক বগল মে ছৈক। আব হম বুঝনি যৈক জেউঁচিত জগহ পকড় া গেলনি।

চংদ্র মোহন ঝা পড়ৱা

অববিন্দ ঠাকুব আ মিথিলা আবাজ

গৌব বর্ণ লমগব ধ্আ, চৌড়গব ছাতী আ পৈঘ-পৈঘ আঁখি লেলে মৌজূদ ছলা, অববিন্দ ঠাকুব। হম ঠাকুবজীসঁ পবিচিত লৈ ছলহুঁ। মানস পটলপব ওা নাম নাচি বহল ছল। ডা. দীলীপ কুমাব ঝা "গৌতম হোটল", তাকোলীন সমযমে আগত অতিথিক লেল বিশ্রামালয নির্ধাবিত ছল। দবভংগা সন শহবমে একটা পৈঘ অখবাবী প্রেসক স্থাপনা লেল অহর্নিস কার্যবত ছলা অজিত অজাদ। উপোদনক লেল সংপূর্ণ আবশ্যক তত্ত্বক

ध्रय केब भाव दऽ च्कन छला डा. सी.एम. झा, जिनका मिथिला निर्माता "निमि" केब कोटिमे बाखल जा सकैछ। जहिना निमि महबाजपब गंद्रक झचध्र प्रभावी बॅल तहिना सी.एम.झाक मिथिला श्वाराजपब सेहो। मिथिला श्वाराजक प्रझ्मख पदाधिकाबीगणमे "श्व" वर्ण प्रभावी छला– श्वजित, श्वबरिन्द, श्वशोक, श्वमबनाथ, श्वमनेन्द्र श्वा श्वमिताभ।

हमबा श्वबरिन्द ठाक्कबजीसँ पहिल भेंट गौतम झोटॅलमे भेल से एकटा संपादकक कपमे। श्वग्रज–पूर्वजक मिथिला–मैथिलीक श्वांदोलनकाबीक सपना साकाब भऽ बहल छल, श्वपन माटि–पानिक भाषामे बंगील श्वखबाब। ठाक्कबजीक पहिल दर्शलमे तीनू गुण ओज, माधुर्य श्वा प्रसादसँ श्वबगत भेलहुँ। हुनक पैघ–पैघ श्वाँखिमे ओज छल तँ वाणीमे माधुर्य श्वा साहित्यमे प्रसाद। हम हुनकासँ प्रश्न कएलें बही –श्वपलें श्वबरिन्द ठाक्कब ? " ओ कहलनि हँ श्वा श्वपलें ? , हम– चंद्रमोहल झा पड़वा। श्वछा, श्वछा, श्वाएल जाउं। श्वपलेंक नामसँ पबिचित छी।

ठाक्कबजीक विहंगम दृष्टि देखबाँमे श्वाएल। हम कंप्यूटबक की–बोंडपब कहियो श्वाँगुब तक नै देलें बही श्वाबो बाँत तँ दूब। तँए हमब नियुक्ति श्वानुवादकक कपमे भेल छल। ओना स्वयं डा.सी.एम.झा बाँदमे विचाब कबबाँक भावना स्वयं तक्षेण व्यक्त केलें बहथि। तहिया ठाक्कबजीक दबभंगा श्वागमन नै भेल छलनि। हमबा कोनो स्थान नै भेटि बहल छल। सूपक भाँटा जकाँ गुबकैत बही। झ्दा श्वजित श्वाजादक "द्कोब" श्वा माँ जानकी जीक कृपासँ की–बोंडपब दसो श्वाँगुब काज कबबँ शुक कऽ देलें छल। कंप्यूटबपब पेज बॅलबँ शुक भऽ गेल छलै झ्दा हमब काजक कोनो उंपयोग नै।

ঠাকুৰজীক কংপ্যূটৈবক রিশেষতা ছননি, ও কেকৰো কংপ্যূটৈবপৰ কএন গেন রিষয-রস্তুকেঁ দেখি সকৈত ছনা। এক বাতি ও ভৱন হাউসমে ঘোষণা কেননি- হমবা নোকনি পড়ৃৰা জীক উচিত উপযোগ নৈ কঽ বহন ছী। ঠাকুৰজী হমবা স্বতংত্র কংপ্যূটৈবপৰ স্থাপিত কেননি আ হম ফ্মাব শৈনেন্দ্রজী জেনবন ডেস্কসঁ জোড়ৃন গেনহুঁ।
অবরিন্দ ঠাকুৰজী গংভীবতাক সংগে হাস্য রিনোদক প্রেমী বহান। ও কেকৰো কাজসঁ উবঁয নৈ দেখি। জখন হুনকা রঁুঅরাঁমে আরিঁ জানি জে সহযোগীগণ উবিঁ গেন ছথি তঁ কোনো চুট্কুক্কা কী কেকৰোপৰ ব্যংগ কঽ হাস্য বসক ধাব রঁহা দেখি আ সভ হঁসি কঽ অপন থকান দূৰ কঽ নৈত ছন। এক দিন হম একটা পত্রিকা "শ্যামা সন্দেশ" দেনিযনি। ওহিমে একটা ভগৱতী গীত ছন- হে অম্বে হম অহিঁক শৰণমে আযন ছী। ঠাকুৰজী কহন কবথি- হে পড়ৃৰে হম অঁহিঁক শৰণমে আযন ছী, এহিঠাম অহাঁকেঁ কোটি-কোটি প্রণাম। অবরিন্দ ঠাকুৰক মাত্র ধ্এ টা জমীন্দাবক নৈ ছননি, অপিতু হুনক ক্রিযা-কনাপ সেহো জমীন্দাবক স্বরূপকেঁ দেখাৱ কবৈত বহন। এহন কোনো স্পতাহ নৈ জাহিমে পৈঘ রা ছোট পার্টীক আযোজন নৈ হোগত বহন। জাহিমে সভ রিভাগক সহযোগী সহভাগী হোগত বহনা। এক রেঁব কোনো কাবণরশ কর্মচাবী নোকনিক রেতন কাটৈন জেৰাঁক রিচাব আএন। তকব কাবণ ঠাকুৰজীক উপব দেন গেননি। অবরিন্দ ঠাকুৰ এহি বাঁতপৰ সহমতি নৈ দেননি। ও অপন খাতাসঁ রীস হজাব টাকা কর্মচাবী নোকনিক রেতন নেন দঽ দেননি। অবরিন্দ ঠাকুৰজী অনুশাসন প্রিয বহথি, স্বযং অনুশাসিত বহথি আ অপন অধীনস্থ

सहयोगीकेँ तकर शिक्षा देबाक क्रममे नै चुकथि। हुनका समयमे ओ कहारत चरितार्थ होइत छल- बाघ आ बकरी एक घाटपर पानि पिबैए। ओ व्यर्थक गप्पशप्पमे समय नै बर्बाद करथि मुदा हुनक राजपद्धति कोनो विशेष अवसरपर स्वनरा योग्य होइत छल। साम-दाम-दंड-भेदक प्रयोग समयानुकूल करबामे मिथिला भरि पाछू नै रहैत छला। मुदा कहल गेल छै -सीता जन्म वियोगे गेल, दुख छोड़ि सुख कहियो ने भेल। सीताकेँ मैथिली सेहो कहल गेल अछि तेँ हुनक भाषा मैथिलीक संग एहन स्थिति रहल। नान्हिटा रही तँ माए एकटा खिस्सा कहथि-"आधा चान गठि कऽ घर आएल, साते भाँग विदेशी चलि गेल, आँजुरकेँ दुख दगधे गेल। एहन स्थिति मिथिला आराजक संग रहल। सए बात तँ कहै होइते छै। अरविन्द ठाकुर मैथिलीक नामपर समझौता केलनि से निश्चय रूपें हुनक गलती साबित भेलनि। गौरीशीक अभियोगकेँ जनितहुँ, हम रही की नै रही "आराज" रहै तकर आकांक्षामे भीष्म पितामह बनल रहल। "आराजकेँ केंसर रोग धऽ नेनक। प्राण ताधरि नहि छुटैत छैक जा धरि माया ग्रसित केने रहैत छै। जखन अपन लोकक मुँह टेढ़ होबऽ लगैत छै, हृदय आ ठोरक स्वरमे भिन्नता आबि जाइत छै तँ प्रतिष्ठाक रक्षार्थ प्रस्थान कऽ दैछ अपन धरा धामसँ। हमरा जनैत अरविन्द ठाकुरकेँ सेहो एहने मान्सँ गुजरऽ पड़लनि आ अंततः कऽ नेलनि अंतिम प्रयाण।

<u>খবরিন্দ মিশ্র নীবজ</u>

<u>খবরিন্দ ঠাকুব : ব্যক্তিত্ব খা প্তিত্ব</u>

ব্যক্তি–ব্যক্তিক খপন ব্যক্তিত্ব েোগত ছৈক খা এহি মে কোনো ব্যক্তি খপন প্তিত্ব ন` ক` ব্যক্তিক জেব মে পংক্তি সঁ ফবাক খপন পহিচান বঁনা নৈত ছথি। জেহন ব্যক্তিত্ব খা তেহনে হ্নক প্তিত্ব। ও সভ সংস্কাবজন্য সংস্কৃতি কেঁ খপনা নৈত ছথি। সহজা, জেকব দোসব নাম সংস্কাব থিক, ও জন্ম–জন্মান্তব সঁ সংচিত েোগত খছি। সংস্কৃতি েোগত খছি ওহি সহজা প্রতিভাজন্য ব্যক্তিক বংশ, পবিবাব, পিতৃত্ব প্রভাব খাদি। সমাজ, সংগী খা খধ্যযন খাদিক সহযোগ জকবা উঁপোধ্যা কহন জাগত খছি খা জকব দোসব নাম থিক খভ্যাস, তঁ সহজা খা উঁপোধ্যা দ্নূ পবস্পব মিনি ব্যক্তি কেঁ এক সৃজনকর্তা বঁনা দৈত খছি খা হ্নকা দ্বাবা 'ক্রিএশন' যথার্থ েোগত খছি – বর্তমান মে প্রশংসনীয জে ভবিষ্য মে কানজযী ভ` জাগত খছি।

এতেক বাঁত কহবাঁক খভিপ্রায ওা জে হমব জে এখন খানোচ্য থিক সে এক এহনে কার্য্য–প্রতিভা সঁ প্রভাবী বচনাধর্মক পানন মে প্রতিবঁদ্ধ এবং প্রসিদ্ধ ব্যক্তিত্ব এবং প্তিত্ব। হম কহ` চাহবঁ জে মাত্রাক দৃষ্ঠিকোণ সঁ ও কতেক নিখনে ছথি খা ও কিতাবঁক রুপ মে ছপি ক` পাঠকক সোন্মাঁ কতেক খাযন খছি, সে তঁ বুঁঝন নহি খছি। ক্দা জে দূ–চাবি পোথী হমবা কোনো নে কোনো রুপ মে প্রাপ্ত ভেন খছি তকব খাধাব নৈত স্থানীপ্বনাক ন্যায সঁ বচনাকাবকক ব্যক্তিত্ব পব পহিনে দৃষ্ঠিপাত েোগত খছি। বচনা পঢৈত–পঢৈত জখন খাগূ বঁঢৈত ছী তঁ বচনাকাবকক ব্যক্তিত্বক পবিচয মানসপঢৈন পব সিনেমাক বীন জকাঁ উঁভব` নগৈত খছি

आ कोनो करिक पाँति मनहि मन गुनगुना उठैत छी – " जिनकी रचना इतनी सुन्दर वो कितना सुन्दर होगा " ।

तेँ रचनाक आधार पर व्यक्तित्वक परिचय सुनिश्चित भऽ जाइत अछि । आगू बढ़ैत छी तँ बढ़बढ़स पता लगैत अछि कि कोना नहि ! कोसी अंचलक एक कस्बानुमा गाम सुपौलक चकला निर्मली नामक एक ठाम जे आइ नगर परिषदक वार्ड मे अछि, ताहि ठाम परक एक रचनाधर्मिताक पालन करैत बहुआयामी व्यक्तित्वक धनी महान समाजसेवी, प्रगतिक नव–नव बाटक अन्वेषी कोसीक शलाका–पुरुष सुनामधन्य महनीय बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव' जीक जिनक आत्मज गजल अरविन्द ठाकुर थिकाह तँ अरविन्द जीक यथार्थक पता लागि जाइत अछि । विप्लव जी केँ जनैत छलहुँ । हुनकर लेखनी मे समाजवाद की राष्ट्रवाद आ जे से कहा अरविन्द हुनक रचनाक स्वरुप थिकाह से नहि बूझल छल । विप्लव जीक एक परिचय हुनक " उद्बोधन गीत " शीर्षक सँ –

साथियो, तुम सो रहे क्यों ?
कौन है उसका सहारा
कर्म को जिसने बिसारा
सत्य है संसार की यह
तुम अकर्मठ हो रहे क्यों ?
साथियो, तुम सो रहे क्यों ?

हम विषयान्तर नहि छी । हम रचनाक कारण पर चलि गेल छलहुँ । आउ, कनी अरविन्द जीक व्यक्तित्व केँ देखी, स्वरुप आ स्वभाव केँ परखी । गौर वर्ण, प्रसन्न मुद्रा पर चश्माक तर मे गंभीर आँखि, प्रत्यक्षतः मे

परोक्ष होइत, अत: केर भाव, नगरक बढ़ैत किछु क्षणक लेल दूर चलि जाइत स्वभाव। आ जाहिठाम छथि ताहिठाम ठेकानल वस्तुजात। चारू कात बैक पर सैंतल पुस्तकक बीच मे कुर्सी आ टेबुल। टेबुल पर पिताक परम्परा केँ प्रतिष्ठित करैत अरविन्द जी। परिष्कृत परिसर, कण-कण मे आकर्षण आ ओहि सँ उपरकैत सहितस्थ केर भावना मे साहित्य साधना अरविन्द जीक व्यक्तित्व केँ आकर्षित करैत अछि। बेटा-पुतहु आ अंगना मे डेगा-डेगी दैत पोता-पोती केँ देखि हिनक सहज मन साहित्य साधना दिस खिंचा जाइत अछि। अपन साधना कक्ष (स्टडीरुम) मे आसन जमा लैत छथि साधक जकाँ आ विसरि जाइत छथि अपन संसार केँ। बरबस लेखनी सँ नि:सरित होमए लागैत अछि – “ बहुरूपिया प्रदेश मे”। आ तेँ ने भुमिका मे कहि उठैत छथि अपन पौत्री आर्या, क्षिति आ पौत्र दिव्यांश केँ शुभकामना दैत जे ओ सभ एहि बहुरूपिया प्रदेश केँ नीक जकाँ चिन्हथु आ चिन्हि केँ अपना लेल स्वच्छ आ सुगम मार्ग प्रशस्त करथु। आ ताएह भाव मे आगू बढैत गजल संग्रह केर एक एक गजल कि शेर यथार्थहि वर्तमान मे भविष्यक द्रष्टा बनि आबए बला स्थिति सँ चेतेबाक प्रयास करैत छथि –

नव पूजीक आन-बान नहि ओकर शान बचत
नव जखन खेतिहरक ठोर परहक गान बचत
हरदी नव, हर्रे नव, बनियाँ सरकार मे
‘अरविन’ पेटेन्ट सँ की बासमती धान बचत

कहू, कतेक चेतनागुक्त संकेत देलनि करि। एहिठाम करिक/शायरक दृष्टि भावतक भविष्यक हेतु कतेक चिन्तित अछि। किताबक पहिने गजल मे

गजलक परिभाषा परिपूर्ण होइत अछि। गजल मे दर्द होइत अछि, वर्तमान मे भविष्यक चिन्ता होइत अछि। यथार्थ समवाद होइत अछि। जाहिठाम किछु कल्पने टा नहि, किछु आधार होइत अछि। पुनः देखू एकटा एहि गजलक पाँति मे करिक उक्ति-वैचित्र्य जकरा काकोक्ति कहल जाइत अछि, प्रकारान्तर सँ यथार्थक भाव –

छोड़ि क' सहक उपर वॅगमान वॅनवॅह
हओ कोना कँ आवॅ तों वॅनमान वॅनवॅह
पुनः–
आवॅ अयोध्या मे पुजावॅय छथि दशानन
जान नहि वॅचतह जँ तों हनुमान वॅनवॅह

केहन कटगर लोकोक्ति सन गजल भेल अछि ! कवि अरविन्द जीक गजल मे सहज शब्दक संगति एकर सुन्दरता कँ कोना वॅढा रहल अछि, वॉनगीक रूप मे देखू –

कलयुग असवार अछि 'अवविंन' रूपाव पव
जे हमव ठोंठ धवत, तकवे भगवान कहवॅ

दोसर उदाहरण देखू –

दिन मे पाकेट मावे छै
वाति मे जे छै पहवेदाव
वॅचिक' घोड़ा स्वतन बुॅड़ा
सिवमौना सँ तकिया पाव

केहन सहज शब्दक सहज यथार्थ ! किछो-किछो कहैत वहनाह अछि जे मैथिली मे गजल की, ओ तँ अववी, तुर्की, उर्दूक आ कनी-कनी हिन्दीक थिकै। ऐदा अवविन्द जी एहि अनवगल प्रलाप कँ निवाधाव क' गजल केव जे यथार्थ परिभाषा थिक तकवा अक्षवशः समेटैत

এহি চ্নৌতী কেঁ স্বীকাব কেনে ছথি, সে দেখূ –
চান পব রঁস্তী রঁসাওন জা সকৈ ছৈ
মৈথিনী মে গজন নিখন জা সকৈ ছৈ
খসীমিত রিস্তাবক খাকাস ছন সপনা হমব
খাসক তাগ মে ও রাঁন্হন জা সকৈ ছৈ

খা তখনে ঙা গজন সংগ্রহ " রঁহ্কপিযা প্রদেশী মে " পোথীক রুপ মে প্রকট ভ` সকন।

এহি গজন সংগ্রহ " রঁহ্কপিযা প্রদেশী মে " সঁ পহিনে কথাকাবক রুপ মে খবরিন্দ জীক পবিচয ভেটৈত খছি। হ্নক কথা সংগ্রহক নাম খছি – " খন্হাবক রিবোধ মে "। 'খিস্সা সিযাব যাব' শীর্ষক সঁ 'রিষ-পান' শীর্ষক ধবি দস গোট কথা এহি পোথী মে গ্বথন গেন খছি। কথা মে কথানকক ভাষা মে প্রাঁজন্যতা শীর্ষকক খন্বকূনে খছি। কথা মে জিজ্ঞাসা কথাক মহত্তা রঁঢা দৈত খছি। সভ সঁ রঁঢি ক` রাঁত ঙা জে কথাক পহিন পাঁতি রিঁনা থকানক কথাক খঁতিম পাঁতি তক যাত্রা কবা দৈত খছি। কথাকাব কেঁ খপন মাটি-পানি সংগ, খামৌযতাক সংগ সমাজক হব রস্মক গতিরিধি সঁ পবিচয কথাক রিশেষতা প্রকট কবৈত খছি। খভিজাত রস্মক সংগ বচন-পচন নেখকক সর্রহাবা সমাজক প্রতি সংরেদনা কোনা সাকাব ভ` উঁঠন খছি, কথাসভমে তেকব যথার্থ পবিচয খছি।

" খন্হাবক রিবোধ মে " কথা-সংগ্রহ নামক পোথী সঁ পহিনে নেখক করিক রুপ মে প্রস্তুত ভেনা – " পবতী টূটি বহন খছি " নামক করিতা সংগ্রহ ন` ক` , জাহি পোথী মে করিক খাধ শতক সঁ উঁপব 'যাত্রা' শীর্ষক সঁ প্রাবম্ভ হোগত 'ব্নর্ন' শীর্ষক সঁ খঁত হোগত করিতা সভ খছি। হ্মঙ বচনা মে উঁন্মুক্ত ভারধাবা

करिताक रिशेषता मे करिक सहज स्वभारक परिचय होगत अछि। जतय धरि हम एहि संग्रहक करिता पढि सकलहुँ ताहि मे कोनो रादक प्रभार नहि, करिक व्यापक यथार्थभार परिलक्षित होगत अछि। एतरा धरि अरश्य जे यथास्थिति रॅनल नहि बहय, ओ ट्टैय। तखने जड़ता सँ त्राण होयत, गति प्राप्त करैत दुख्याति सँ दूर करत, तेँ परती ट्टैरॅाक चाही। 'यात्रा' करिताक 'मा' शब्दक संरोधन मे करि आमेभारक यथार्थता देखै चाहि छथि। ओ कहैत छथि – 'हम' केर रूप मे के 'हम', सांसारिक मकड़जाल मे ओझराओल हमर आचरण आकि आचरण मे आमेरोध ?

'सुखि गेल गाछ' करिता मे प्रवखा द्वारा लगाओल गाछ पर करिक ध्यानैत लेल्हपन आ ओ गाछ सुखैलाक राद घरक रॅनल उपकरण मे करिक संरेदना, जखन ओ उपकरणक रूप मे सुखाओल गाछ सँ रॅनल चौकी पर करिक ज्ञानीक थकान केँ मेटौरैत अछि, प्रवखाक लगाओल आ पुन: सुखाओल गाछक रॅनल उपकरणक उपभोग करैत करिक संरेदना देखू –

'कहियो लेल्हपन मे
एहि ठारि सभ पर ध्यानैत
हँसैत-गरैत
चिरौने छलहुँ टिक्ला
लाल-पीअर-सलह्ना फलमे
गड़ाने छलहुँ दाँत
पओने छलहुँ अमृत-रस
तृप्त भऽ गेल छल मोन-प्राण............'

आ ओ गाछ जखन सुखा जागत अछि तखन करिक ओहि गाछ सँ आमिक भार आमेसंतुष्ठि प्रदान

क` बहन ख्छि। यथा –
'.........
दिन ভবিক ভাগমভাগসঁ
থাকন খা নিস্তজ
পড়`ত ছী খপন চৌকী পব
খা জখন খরৈঁত নহি খ্ছি নিন্ন
তখন থপকী দৈত
খা নোবী স্বনরৈঁত খ্ছি
প্ববখাক মমত্বসঁ নরাঁনরঁ
ও স্বখি গেন গাছ'

খন্তত: গএহ জে করি–কথাকাব শ্রী খবরিন্দ ঠাক্ববক সাহিহ–সাধনা সহিতস্যক ভারনা কেঁ পন্নরিত খা প্বষ্পিত কবৈত খ্ছি। জখন পন্নরিত খা প্বষ্পিত হোগত খ্ছি ও সাহিহ–সাধনা কপী বৃক্ষ, তখন তকব জে হফন খরৈঁত খ্ছি, ও খমবত্ব প্রদান কবৈত খ্ছি খর্থাত কানজযী হোগত খ্ছি। এহন কানজযী বচনাকাব খবরিন্দ ঠাক্ববক প্রতি হমব শতশ: সাধ্রাদ। রঁদনা মে সমর্পিত হমব খভারক ভার।

—

খবরিংদ শ্রীরাস্তর
সামংতী সভহঁক রিকল্প তৈযাব করি

নগতাব তেজ হোগত সংগীতক কাবণেঁ নোক রঁহীব ভহ বহন খছি হ্মদা ও সভ রঁহীব ছথি তঁগ খাব রেঁসী জোবসঁ সংগীত রঁজারঁহ পড়ি বহন ছৈ- মিনান হ্বংদেবা

খবরিংদ ঠাহ্নবক বচনামেক ধমক সাহিত্যিক ক্ষেত্রমে এহানিতে স্বনাগ পড়ি বহন খছি। খবরিংদ খপন বচনাকানমে সংরেদনহীন উত্তব খাধ্নিকতা সংগে-সংগ সাম্যরাদী সত্তা কে খংডিত হোগত দেখনে খছি। গুা সাম্যরাদী সত্তা জে পূবা সংসাবমে খপন রাঁত ছাতী ঠোকি কহরাঁক তাগতি বাখৈ ছন। গুা সাম্যরাদী সত্তা জে ধবতীপব সহ-খস্তিত্ব কেব ভারনা খা ওকব পক্ষমে ঠাঢ় ছন। গুা সাম্যরাদী সত্তা জে জনতাক সংগ ঠাঢ় ছন সএহ সাম্যরাদী সত্তা খাগ খপন ঘব তোড়ি নেনক। খা খারঁ জখন কী কেরাঁড় খোনিতে হাট-রঁজাব চৌখনিযাঁ হ্মস্কানক সংগ রেনকম কবৈএ হমবা গুা কহরাঁমে কোনো সংকোচ নৈ জে খবরিংদ ঠাহ্নবক বচনামেক দ্নিযাঁ এহী পবিস্থিতি সভহঁক উঁপজা খছি। হম ঐ

উঁপজা কে নর নৌ কহি সকৈ ছিঐ কিএক তঁ ঙা বচনাক্রম কোনো এক কান খংডমে নৌ খরৈঁএ খা নে ঙা বচনাক্রম কোনো একটা সত্তা, রিধা রা রিচাবধাবাপব খছি। খবরিংদক রঁহ্বংগী নেখনক সভসঁ রঁড়কা রিশেষতা খছি –সচ নিখরাঁক সাহস।

খবরিংদ ঠাকুবকেঁ পহিন রেঁব হম কবীরঁ পচীস রঁর্খ পহিনে পূর্ণিযাসঁ প্রকাশিত "কনা" পত্রিকামে পঢ়নে ছনহ্ঁ। খা ওহী দিনক খাস–পাস ও হমব সাহিত্যিক পবিচযমে এনা। মধেপ্পবামে প্বনিস কপ্তান মনমোহন সিংহক পোথী "মেবে মেঁ চাঁদনী" কেব নোকার্পণ খা কবি সম্মেনন খাযোজিত কবরাঁক ক্রমমে খবরিংদকেঁ খামংত্রিত কবরাঁক খরসব ভেঁটন ছন। ঐ সম্মেননমে পটনাসঁ গীতকাব গোপীরন্নভ সহায, সিদ্ধেশ্বব খা পংজাবঁ কিছু শাগব সহিত কোসী গনাকাক খধিকাংশি কবি–বচনাকাবক ভাগীদাবী ছন। খবরিংদসঁ এহী খাযোজনমে পহিন ভেঁট ভেন খা খপন পত্রিকা "সিনসিনা"মে হ্নক গজন প্রমুখতাসঁ প্রকাশিত কেনহ্ঁ। খবরিংদক সংগ রিবাসতক গহীব সংরঁধক চর্চা হম খপন পিতা হবিশংকব শ্রীরাস্তু "শনভ"সঁ কতেকো রেঁব স্বনৈত বহনহ্ঁ। খবরিংদক পিতা রঁনেন্দ্র নাবাযণ ঠাকুব "রিপ্লর"জীক কতেকো খিস্সামে হ্নক সমাজরাদী রিচাবধাবা, সমাজিক সমবসতা, নৈতিকতা খা খামেসম্মানক রিচাব ভবন ছন। খবরিংদ খপন নেখনমে এহী রিবাসতকেঁ রঁচা কহ বখনক খছি। পবতী টূটি বহন খছি নামক পোথীসঁ --- "মান্যরব হম খহাঁক নৌ দোসব পার্টীক কূকুব ছী" ঐ খঠ় াগ পাঁতিমে কতেক দর্দ কতেক খামেসম্মান ছৈ তকবা শব্দমে কহনাগ মোশ্কিন ছৈ।

অবরিংদ অপন করিতাসঁ সমাজিক বঁদনারক জকবতিকেঁ সোম্মাঁ–সোম্মী জোড়ৈএ। ওকব করিতা সামংতী মোহফিনসঁ নিকনি জনতাক পক্ষমে ঠাঢ় হোগত অছি আ ওকবা সংঘর্ষক হিস্সা বঁনবাঁসঁ আপত্তি নৈ ছৈ। অবরিংদক নেখকীয সক্রিযতা সাহিত্যিক আ সমাজিক সবোকাবসঁ প্রেবিত বহন অছি গএহ কাবণ অছি জে সাহিত্যিক সৃজনক সংগ–সংগ ও সমাজিক প্রতিবঁদ্ধতাকেঁ সেহো অপন সজগতাক হিস্সা মাননক। অবরিংদ পটনাসঁ প্রকাশিত "প্রবঞ্জা"মে "ঠাকুব কা ঠাঁব" নামক শীর্ষকসঁ সমসামযিক বাজনীতিক ঘটনাক্রমকেঁ বঁহত বেঁবাঁকী আ বেঁখৌফ ভৱ কৱ পাঠক সামনে আনৈত বহন।

দবভংগাসঁ প্রকাশিত দৈনিক সমাচাব পত্র "মিথিনা আরাজ" মে বঁতৌব সংপাদক অবরিংদ সাহিত্য আ সমাজক প্রতি অপন দাযিত্বক নিরহিমে কনিকো পাছু নৈ হটৈন। রিহাব প্রগতিশীন নেখক সংঘক প্রতি ওকব সমর্পণ দেখৈত ওকবা উপাধ্যক্ষ পদক জিম্মেবাবী দেন গেনৈ। মূনতঃ কবি অবরিংদ ঠাকুবক ব্যক্তিত্ব হিংদীক কবি বাজেশ জোশীক এক পাঁতিমে সমেটৈন জা সকৈএ-- "হম কবিক ব্রহ্মাংডক একটা ন্বকাএন অকাসগংগা ছী"।

পবমানন্দ প্রভাকব, দ্বাবা - সংত প‍ॉল্স হাঙা স্কূন, রঁগানী ঢৈনা, সমস্তীপ্বব, পিন - 848101

স্খননক প্রতিবোধমে -খন্ধাবক রিবোধমে

খাধ্নিক মৈথিনী কথা-সাহিত্যমে জাহি কথাকাব সভ্পব গর্বসঁ নিঘোখ মাথ উঁঠাওন জা সকৈছ্ত তাহী পাঁতিমে মন্দ-মন্দ হ্মস্কৈত উঁন্নত গ্রীর ঠাঠ় ছথি শ্রী খবরিন্দ ঠাক্বব ।

মন্বখক সভ্যতাক রিকাস কানহি সঁ খন্ধাবক রিবোধ হোগত খাযন খছি । রেদ মে খহী বাঁতকেঁ কিছ্ত দোসব তবহেঁ কহন গেন ছৈ জে দ্রষ্ঠব্য খছি -

"খসতো মা সদ্গময

তমসো মা জ্যাতিস্কামময ।"

সভ্যতাক রিকাস কান সঁ পূর্ব প্রঞ্কতিমে পসবন খন্ধাবকেঁ

দূব কবৰাঁক নেন, ওহি সঁ স্ববক্ষাক নেন মশীনক খ্যাবিষ্কাব ভেন ছন । হিন্দী সাহিত্যক কথাকাব ৰেঁনীশ্ববী জীক এহি মাঁদে কহৱ ছনি –

"জিস দিন মশীন ৰনী, দুনিযা কী সৱসে ৰড়ী ঞ্রাঁতি উসী দিন হুঙা"

মশীন ভৌতিকো ছৈ খা খামিকো । খামিক মশীন জ্ঞানক প্রতীক ছৈ, জকবা মাধ্যমে খজ্ঞানতাক খন্ধাবকেঁ মিটাওন জা সকৈত খছি । খাজুক বর্ত্তমান পবিস্থিতি মে প্রগ্নতিক সভটা খন্ধাব মনুখক চেতনা মে সমাহিত ভ' গেন ছৈ খা তেঁ চাবুকাত উঁপীড়ন, মাবি-কাট, খূন-খবাবী, মূঠ-পফবেৰ, ছটপটাহটি, শোষণক ত্রাসদ স্থিতি পসবন ছৈ । মনুখ এহি স্থিতি সঁ খপনা কেঁ উৰাবি সকত তকব জ্ঞান সেহো ওকবা মে ছৈ । ও সভ কিছু জনৈত খছি, তখনে ত বাষ্ট্রকবি দিনকব কহৈ ছথি 'কুরুক্ষেত্রাক' ষষ্ঠম্ সর্গ মে –

"যহ মনুজ বিজ্ঞান মে নিষ্ণাত

জ্ঞান কা, বিজ্ঞান কা, খানোক কা খাগাব ।"

তথাপি মনুখ ছটপটা বহন খছি খা উপর্যুক্ত ত্রাসদক স্থিতি সঁ ত্রাণক দিশি ওকব প্রবৃতি নগঁ ভ' বহন ছৈ । দুর্যোধনক উক্তি ছৈ –

"ধর্ম কো জানতা হুঁ প্রবৃত্তি নহীঁ হৈ ।

খধর্ম কো জানতা হুঁ নিবৃত্তি নহীঁ হৈ ।"

এহি মানসিকতাক কাবণেঁ মনুখক দশা ও দিশা দিনানুদিন খবাপে ভেল জা বহল ছৈ । মনুখ সভ্যতাক বিকাস কান সঁ পূর্ব জতেক আতংকিত নর্ত্ত ছল ওহি সঁ বেঁসী আতংকিত এখন অছি । তৈ

ত হিন্দী সাহিত্য মে 'কলম কে জাদূগব' নাম খ্যাত বেঁনীপুবী জী কহৈ ছথি । "অবঁ জহাঁ অন্ধকাব হৈ, বহাঁ পহলে সে ভী জ্যাদা ভযানক ঔব বীভৎসে হৈ ।" বেঁনীপুবী জীক এশাবা মনুখক হৃদয মে ব্যাপ্ত অজ্ঞানতা রূপী অন্হাবেক দিশি ছনি।

সমাজ মে পসবল বঁহ্ত বাস জে চাবিত্রিক স্খলন, সামাজিক বিদ্রূপতা রূপী অন্হাব ছৈ তকবে বিবোধ মে শ্রী অববিন্দ ঠাকুব ঠাঢ় ছথি, অপন পোথী 'অন্হাবক বিবোধমে' হাথ মে লেনে । হ্মদা ও জে বাঁটৈ পকড়ি ক' চলি বহল ছথি আ জাহি ক্রাঁতিকাবী তেবব মে বঁঠি চ্কল ছথি, তাহি লেল ত হম এতবেঁ কহবঁনি–

"শীশে কা মহল আপলে বঁলবা তো নিযা হৈ

পথেব কা জমানা হৈ মগব যে নহী সোচা"

সম্পূর্ণ পোথী কেঁ পঢ়না সন্তাঁ জ্ঞাত ভেল জে ঠাকুবজী একটা কুশল শব্দ শিল্পীএ নহি অপিতু এক গোটে মসিজীবী ক্রাঁতিকাবী ব্যক্তি ছথি । হম এহি বাঁতক লেল পূর্ণ আশ্বস্তা ছী জে জৈ অববিন্দ ঠাকুব জী কলম সঁ ক্রাঁতি কববাঁক লেল নিকলি চ্কল ছথি ত' ক্রাঁতি হেতৈ আ খূবঁ নীক জকাঁ হেতৈ । কিঐক ত কলম মে বঁড্ড তাগতি ছৈ । তখনে ত হিন্দী সাহিত্য মে 'নেপালী' নাম সঁ প্রখ্যাত কবি কহৈ ছথি –

“हम धरती क्या आकाशो दोनोंके नापे है
हम तो करि है, इतिहास दोनोंके नापे है
हर क्रांति कलम से शुरू हुआ सम्पूर्ण हुआ
चट्टान जुल्म की, कलम चली, तो चूर्ण हुआ”

प्रस्तुत पोथी मे दसटा कथा संकलित अछि । एहि कथा सभ मे कथाकार समाज मे परिव्याप्त सभतरहक समस्याकेँ उठौलनि अछि । जिनगीक सभटा पक्ष अछूतिक' आयल अछि । हम एतय उदाहरणक लेल खिस्सा-सिपाह राज, पियासल पानि, अन्हारक विरोध् मे, ‘भूख’, विषपान कथाक किछु प्रसंगक माध्ये समाजक वर्त्तमान दशाक दिग्दर्शन करा सकैत छी ।

पोथीक पहिल कथा ‘खिस्सा-सिपाह राज’ वर्त्तमान राजनीति सँ जुड़ल अछि । एहि मे जनता आ राजनेताक बीच उपजल नरका संस्कृतिकेँपरतविहाक' राखल गेल अछि । राजनायक आ कथन “हमर अहाँक मदद्र ओकरा सभक नेता लेल तखने ठाढ़ि अछि जा धरि हमरा सभक नसमे खून अछि । खून खतम-सम्बन्ध खतम” राजनेताक सोंसे चरित्रा उघारि क' राखि दैत अछि । एहि ठाम हमरा मोन पड़ैत अछि एक गोट ठाढ़ि नेताक उक्ति जे उपर्युक्त बातक पुष्टिए करैत बुझि पड़ैत अछि -

“दूसरा करो जमीन करो, सब करेंगे है ।

রॅন্দা তো উঁম্মীদরাব হৈ, চবণোঁ কী ধূন হৈ।

নেকিন বহে যহ যাদ কি চ্নার জীতকব,

ঋড়কব ন দেখনা মেবা পহনা রসূন হৈ। । ”

থহী কথা মে সদানন্দক চবিত্রা ঠাঠ় ক’ ক’ নেখক মহোদয ঙা কহৰাঁ মে সার্থকতা প্রাপ্ত কেননি থছি জে প্রজাতান্ত্রিাক ব্যরস্থা মাত্রা কহৰাঁক নেন ছৈ, ওনা ঙা ব্যরস্থা ছৈ শোঙ্গি তংত্রাক । থথরা একবা থহ্না কহি সকৈত ছী জে “জক্কব নাঠী তকবে ভৈঁস ।” ঙা কথা বাজনীতি মে পসবন ভাগ–ভতীজা রাদক নীতি কেঁ সেহো উঁঘাব কবৈত থছি ।

কথা হ্বতিক দোসব কথা ‘পিযাসন পানি’ নাবী শোষণ পব থাধবিত থছি । এহি মে নাবাযণ প্ববরানীকেঁজাহি রূপ মে প্রস্তুত কৈন গেন ছৈ ওহি সঁ নাবীক দশা–দিশা ও প্বরুষ রস্কাক কিবদানী জগজিযাব ভেন থছি । এতবেঁ নগঁ ঙা কথা থন্ধিশ্বাস সঁ জকড়ন সামাজিক সোচকেঁনাঘ্ষ্ট কবৈত থছি ।

তেসব কথা থছি ‘থন্হাবক রিবোধ্ মে’ । ঙা কথা হিন্দ্–ঋস্লিমক ৎৈকবাহৎিক সমস্যা কেঁ জগজিথাব কবৈত থছি । সামাজিক একতা কেঁ খন্ডিত কব’ বানী প্রবৃতি পব ঙা কথা সোনে প্রহাব কবৈত থছি । হমবা নগৈত থছি জে ঙা কথা জিনগীক সান্ধ্য বেঁনা মে নেখক মহোদয সঁ কিছু থাওব চিন্তন থা সমযক নেন নেখক দিশ ৎ্কব–ৎ্কব তাকি বহন থছি ।

'मूस' नामक कथा वंशी परम्परा पर आधारित बहितो प्रकारान्तर सँ राजनीति मे उँपजल वंशी परम्पराक नवँका संस्कृति पर चोटि करैत अछि । गहन चिन्तन केला पर स्पष्ट होइत अछि जे एखनो राजतंत्रा व्याप्त अछि । तखने त' वँहिनोआ, साव, बाँप-बेटा, बेटी-पुतोह् सभक जमारबा छैक राजनीति मे ।

अहिना 'विषपान' नामक कथा न्यायालय मे पसरल भ्रष्टाचारकेँनाँगटि करैत अछि । ओकीलक छद्रता केँ उँघार करैत अछि ।

एहि तरहेँ एहि कथा संग्रह मे सामाजिक सभ तरहक समस्याकेँ उँठाक' लेखक महोदय अपन खोजी प्रवृतिक तथा क्राँतिकारी व्यक्तित्वकेँ जगजिआर केलनि अछि ।

एहि ठाम वँचन जीक पाँती लेखक महोदय पर सटीक बैसैत अछि "बूँद के उँच्छ्वास का भी अनस्वनी करता नही रह"

अर्थात् लेखक कोनो वस्तुक छोटि आ पैघ सामाजिक समस्या सँ म्हँह पेहवि क' नगँ चलैत छथि। आ ले एहि कथाग्रतिक कथाकार चलला अछि ।

एक गोटि मैथिलीक अब्यता हेबाँक कारणे हम एहि कथाग्रतिक स्वागत अभिनन्दन करै छी आ लेखक महोदयक लेल किछु अपन शुभकामना हम अपन एहि पाँती मे दैत विराम लैत छी –

“ सृजन–शीलता बाति–दिन अहिना चलै अमन्द

कहियो पड़ै नैवाम नगँ करिता जीरन छन्द

तन–मन पौरुष मे बहै ऊर्जस्वित नर हर्ष

रचना मे सभदिन बहै भवन सौम्य उंकेर्ष । । ”

बाम चैतन्य धीरज, मानस नगर, हटियागाछी, सहरसा, बिहार

बँह्कपिया प्रदेशे मे : एक दृष्टि

‘एकोऽहं बँह्स्याम‘ क अरधावणा ओ अछि जे आमो एकहिटा होगत अछि, ऋदा प्रवृतिभेदक कावणेँ ओ बँह्तो रूप मे देखाब पड़ैत अछि। रस्तुत: जे भिन्नता अछि ओ भिन्नता प्रकृति रा प्रवृतिक थिकै, आमो रा चेतनाक नहि। प्राय: प्रवृतिए भोग आ यज्ञ मे निप्त होगत अछि ऋदा जखन प्रवृति आमेस्थ होगत अछि तँ ओ निर्द्वन्द्व अरस्था केँ प्राप्त कँ नैत अछि।

বস্তুহীন ভ' জাগছ। অর্থাত প্রবৃতি অপন অজ্ঞানতা সঁ হ্মঞ ভ' জাগত অছি ; তখনে ব্যক্তি কেঁ বাস্তবিক হ্মক্তি বা স্বাধীনতা ভেটৈত ছৈক।

সংযোগ সঁ এম্হব তীন-চাবিটা মৈথিনী কার্যক্রম মে ভাগ নেবাঁক অবসব ভেটৈন। প্রায: দেখবাঁ মে আএন জে হমব উঁপস্থিতি নগণ্য অছি। জহিনা বাজনীতি মে বিচাব আ ব্যবহাবক দ্বৈধতা ছৈক, তহিনা প্রায: সাহিত্যকাবো মে বিচাব আ ব্যবহাবক দ্বৈধতা ছৈক। জহিনা বাজনেতাক নেন জনতাক ভূখ, গবীবী আ ওকব বোজগাব সমস্যা বাজনীতিক নেন গবমাগবম হ্মদ্দা হোগত অছি, তহিনা প্রায: সাহিত্যকাবোক নেন যৌন সভ কথ্য বস্তু হোগত ছৈক। কোনো বৈচাবিক ক্রাঁতি নহি, কোনো ব্যবহাবিক আন্দানন নহি। নগৈত অছি সভ কিছু থম্হি জকাঁ গেন অছি। টৈনী-টৈনী আ ব্যক্তি-ব্যক্তি মে বঁটৈন সাহিত্যকাবক নেন অপন-অপন মথনিযাঁ ছনি, জাহি মথনিযাঁ সঁ ও সাহিত্যিক সৃজন আ ক্রিযা-প্রতিক্রিযা কবৈত ছথি। স্বন বঁনা, পঠ বঁনা আ বূঁন বঁনাক সর্বথা অভাব। নগৈএ জে সাহিত্য সাহিত্যকাবেক নেন বহি গেন অছি।

হমব উঁপস্থিতি নগণ্য অছি মানে – দর্শন-দৃষ্টি সঁ সৃজন কবৈবঁনা সাহিত্যকাব নগণ্য ছথি। দর্শনিক একহিটা দিশা ছৈক, জে বিশ্বশাঁতিক তানা-বাঁনা বুঁনৈত অছি আ প্রেম তথা সংঘর্ষক ভাব মে সহযোগ আ সহান্বভূতিক বিবেক প্রস্তুত কবৈত অছি – ও থিক বেদাঁত। বেদাঁত চেতনাক অখল্ডতা মে ' সর্বে ভবন্তু স্বখিন:। সর্বে সন্তু নিবামযা'ক আকাশ সজবৈত অছি আ ওহি আকাশ মে সভক স্বখক কামনা ওহিনা কবৈত অছি, জেনা তাবা অপন প্রকাশ সঁ প্রকাশিত হো।

করিতা হো, গীত রা গজল জে হো সগরে উঁসোহ আ উঁসেরক অভার র্ঝ্নমনা জাগত অছি। সগরে প্রভাহীন তাবা দেখাব দৈত অছি। ক্ষদা প্রতিরোধ আ যথাস্থিতিক রর্ণন, চিত্রন সগরে দেখাব দৈত অছি।

কী করিতা রা সাহিত্য কলামেক রেচন মাত্র থিক, জে রিনা ব্যরহারিক সোচ-রিচাবক অভিব্যঞ্জ হোগত অছি ? এখনো সাহিত্যকাবক নগ সংস্কৃতি চ্নৌতী রঁনল অছি আ সাহিত্যকাব সহিত অন্য সভ রস্থাক নোক হজাবো-হজাব রর্ষ পূর্বক সংস্কাব মে রঁন্হাএল ছথি - ঙা প্রশ্ন গংভীব রঁনল অছি। এক মাত্র সর্রহাবাক পক্ষধবতা মে নিখরঁ সাহিত্যক উঁদ্দশ্য নহি হোএরাঁক চাহী, অপিতু একবা সংগহি ব্যরহাব মে ওহি কঠিরাদী জড়তা কেঁ তোড়রঁ সেহো উঁদ্দশ্য হোএরাঁক চাহী, জে আমোকের্ষ মে রাঁধা রঁনল অছি। তেঁ আমে খোজ আরশ্যক অছি, জকব সর্রথা অভার সন নগৈত অছি। এহী সঁ ভোগরাদ আ অঁধরিশ্বাসক পবিধি নষ্ট হোএত, জাহি মে নোক সভ ঘেবাএল অছি।

মিত্র অবরিন্দ ঠাকুবক গজল সেহো সর্রহাবে প্রেমক অভিব্যক্তি থিক, জে হমবা সমাজক অংতিম আদমী আ ওকব আর্থিক ক্ষতি তক ন' জাগত অছি। ঙা রাঁত সহ ছৈক জে আমেরত ভার মে রস্থভেদ নহি হোগত ছৈক, ক্ষদা প্ররৃতিগত ভার মে রস্থভেদ ছৈক। উঁপভোগ আ সংতুষ্টিক রাঁজাব গর্ম ছৈক, এহি স্থিতি মে রৈচাবিক দৃষ্টিক উঁপযোগিতা প্রশ্নাংকিত অছি। অধিকাধিক উঁপভোগ আ অধিকাধিক সংতুষ্টি ক্রয-শক্তি, রাঁজাব আ রস্তু পব নির্ভব হোগছ। রৈচাবিক দৃষ্টি মে তঁ আরশ্যকতা নির্ধাবিত অছি, ক্ষদা অধিকাধিক উঁপভোগ আ অধিকাধিক সংতুষ্টি জীরনক মাপদণ্ড ভ'

जागक तँ नैतिक पाठ पढ़ाबएबला साहित्य क्षणभंगुर आ मनोरंजनक दृष्टि बनि जाएत आ कि नहि ? भोग आ यश्च मे सभक मन स्थिर भ' गेल अछि, ओहि स्थिति मे दर्शन आ विचारक की हेतैक ? मनुष्य कें की चाही – राजाव, वस्तु आ ऐश्वर्य – तखन विचार न' क' की हेतैक ? यैह कारण छैक जे राजनीतिक दृष्टि असफल भ' रहल अछि। ऐश्वर्यक वृद्धि होअए तेँ राजनीति मे अनीति आ पाप बढ़ि रहल अछि। अपराध प्रवृत्ति वा हिंसात्मक मनोभावक पाछू एकमात्र कारण ऐश्वर्यक होड़ अछि ; प्रतिस्पर्धा अछि आ अन्तत: अनैतिकता अछि – जे कोनो वस्तु कें छोड़' नहि रहल अछि। तेँ ओ साहित्यकार आग प्रभावी छथि जे साहित्यक व्यवसाय करै छथि। यैह अज्ञानता थिकै, तेँ दर्शन–दृष्टिक आवश्यकता स्पष्ट भ' गेल अछि ; जाहि सँ प्रवृत्ति आमेस्थ भ' सकय। वस्तुत: एहि अज्ञानता कें भेदबहित ज्ञाने समाप्त क' सकैत अछि। जाधवि मानव मे ज्ञानक संवर्द्धन नहि होएत, बौद्धिक निष्ठा नहि होएत आ निश्चयात्मक चेतनाक व्यवहार नहि होएत, ता धवि मुक्ति संभव छै की ? मित्र अरविन्द ठाकुरक गजल संग्रह ' वृहकपिया प्रदेशे मे' जे कह' नेल चाहैत अछि, ओकर चित्र एहि गजल–संग्रहक नामकरणेँ सँ स्पष्ट भ' जाइछ जे कोनो एहन ज्ञान नहि छैक, जे मानव मे एकात्मकता आनि सकय।

एकहि बाजनेता वृहकपियाक भूमिका मे स्वयं कें प्रदर्शित करै छथि आ एकर प्रभाव मे जनसामान्यक बाध्यता सेहो छैक। तेँ ओ सर्वहावा हो वा अन्य वस्तु सभ मे ऐश्वर्यक होड़ मचल अछि। बौद्धिक रूप सँ जे पिछड़ल रहल छथि, आजुक परिवेश मे बैहछो

পছুআএল ছথি, নহি তঁ প্রতিস্পর্ধা মে সভ লাগল অছি। শ্রী ঠাকুর স্বয়ং সাহিত্য মে দ্বৈধ চরিত্রক স্থিতি কেঁ স্বীকার করৈত এহি পোথীক ভূমিকা (অর্জ করক অছি জে.........) মে লিখলনি অছি জে –" বর্তুত বাস রচনাকার কলাক অনেকানেক আবরণ মে স্বয়ং কেঁ প্রস্তুত ক' অপন রচনা মে অপন বাস্তরিক জীরন সঁ ভিন্ন জকাঁ ব্যক্ত হোএবাঁক বাঁজীগরী করৈত ছথি।" রিচার আ ব্যরহারক সামংজস্য জখন টুটি জাগত ছৈক তঁ এহীঠাম সঁ রৈচারিক স্খলন প্রারংভ হোগত অছি আ সংরেদনশীলতাক সমস্যা উঁপেন্ন হোএত ছৈক। হমর ঙা অনুভর অছি জে করিতা মে, গীত রা গজল মে জে ভার ব্যক্ত হোগত অছি ওহি মে প্রতিরোধ তঁ অরশ্যে হোগত ছৈক, হ্মদা ব্যরহার মে ওহো এেযশাক্তিক রাঁঢোতবীক লেন অপস্যাঁত হোগত ছথি। চারিত্রিক দ্বৈধতা মে রৈচারিক সমস্যাক জন্ম হোএব স্বাভারিক অছি। জে রিচার ব্যক্ত করৈ ছথি রৈহ জখন প্রাফেশনল ছথি তঁ ফের হুনক রিচারক প্রভার জনসামান্যপর জতেক হোগ। তেঁ সাহিত্য নহি তঁ অংধরিশ্বাস সঁ লড়ি সকৈত অছি আ নহি ভোগরাদ রা অধিকাধিক সংতুষ্টিরাদ সঁ।

রিজ্ঞানক কারণেঁ জে পরিরর্তন ভ' রহল অছি আ ওকর প্রভার জে সমাজ পর পড়ি রহল ছৈক আ ওহি সঁ জে খতরা উঁপেন্ন হেতৈক তকর ভরিষ্যরাণী করৈত শ্রী ঠাকুর অপন গজলক পাঁতি কেঁ সজরৈত ছথি, দেখরাঁক থিক –

নগ পূজীক আন–রাঁন, নহি ওকর শান বঁচত
নগ জখন খেতিহরক ঠোর পরহক গান বঁচত
দূধ লেল লেনা আ রোগী হাকরোশি করত
নগ জখন গাম মে মানক বঁথান বঁচত

यूबो आ डाबब सँ पेटे भरैक भाँज करू
जँ खेतक आबि नग आ ने मचान बँचत
आयातित बीया आ पटौनी अकास सँ
दैब आ बिदेशी बँनेँ कोना किसान बँचत
रुबदी नग रुबेँ नग बँनियाँ सबकाब मे
'अबबिन' पेटेन्टे सँ की बाँसमती धान बँचत

सगाजक अंतिम आदमी कथी नअ अंतिम आदमी अछि ? बस्तुत: शाबीबिक सेबा नअ अंतिम आदमी होएत अछि। जाहि ठाम बौद्धिक चालाकी छैक वा तकनीकी ज्ञान छैक, ओहि ठाम पूँजीवादी ध्रयशक्ति होएत छैक आ जाहि ठाम नहि छैक, ओहि ठाम शाबीबिक सेबा होएत छैक। आगयो समाज मे शाबीबिक श्रम कबयबँनाक बिपन्नता छैक, किएक तँ ओ तकनीकी ज्ञान नहि बाखैत अछि। एहि बस्तुक ध्रयशक्ति सभ सँ कमजोब होएत छैक। ओ सत्य छैक जे पूँजीपति वा मानिक बस्तुक शान खेतिहब मजदूब होएत अछि, मुदा ओकब महत्व सामाजिको दृष्टि सँ कमजोब अछि – श्री ठाकुब एकब पक्षधबता मे अधिकाधिक गजलक भाब कँ प्रस्तुत कयननि अछि। हिनक चिन्ता भाबतक ओहि अबस्था सँ अछि, जाहि अबस्था मे भाबत साम्राज्यवादी शक्तिक उपनिबेशी बँनल जा बहल अछि। देशी आ गामक चिन्ता हिनक गजल मे प्रमुखता सँ आयल अछि आ सभ सँ बैसी प्रभाब ओहि चिन्ता मे अछि जाहि मे भाबतीयता नष्ट भ बहल अछि।

व्यक्तिक गढ़ा आ ओकब संतुष्टिक प्रश्न पब हिनक लेखनी बँहुत किछु कहैत अछि, मुदा अज्ञानता सँ मुक्तिक बाँटे नहि देखा पबैत अछि। तँ सामाजिक यथार्थक चित्रन आ बर्णन होएतो कुण्ठा, संत्रास, निबाशा

आ प्रतिरोधक स्वर हिनक गजलक मूल राग बनल अछि। संगहि वर्तमान समाजक बदलैत चित्र आ पूंजीवादी मानसिकता मे उबडूब करैत व्यक्ति-व्यक्तिक गप्प आ ओकर कार्यरूप तथा प्राचीन उत्पादन-व्यवस्थाक टूटैत स्थिति हिनक अभिव्यक्तिक प्रतिमान बनल अछि, संगहि हथियारक होड़ आ विश्वस्तर पर शान्तिक समस्या सेहो हिनका प्रभावित करैत छनि। तथापि हिनक चेतना अन्तत: साम्राज्यवादी अतरे सँ आहत होइत अछि। वस्तुत: ई प्रभावन ओहि वस्तुक प्रति वैचारिक प्रेमक आख्यान थिक, जे मानवीय रूप सँ उपेक्षित अछि।

पबमामोक गप्प थिकै संसार, तेँ द्वन्द्वक स्थिति बनितें अछि। जदा सत्क प्रत्क्षणक संगहि द्वन्द्व निवृत भऽ जाइत अछि – तेँ सत्क अन्वभर मे पबमामोक अस्तित्व गप्प बहित भऽ जाइत अछि, कामना बहित भऽ जाइत अछि। अर्थात गप्प आ कामना सँ जक्ति। वास्तविक जक्ति यैह थिकै, एहि मे एयशक्तिक चाहना आवश्यकतानुकूल उपभोग आ क्षमतानुसार कार्य मे सीमित भऽ जाइत अछि। तेँ राग-द्वेषक प्रवृत्तमेक पविधिक बन्हन टूटि जाइत छैक आ लोक पवम्पवागत कर्मकाण्डा सँ जक्त भऽ जाइत अछि। ई बात सत छैक जे वेदांत आमोक अस्तित्व सँ अभेद केँ स्वीकाव करैत अछि ; जदा लोक ई नहि बुझैत अछि जे आमो प्रवृत्ति कावण सँ भेदात्मक जगत मे होइत अछि। तेँ आमोक अभेद होइतो प्रवृत्तिक भेद भऽ जाइत अछि आ एही लेल प्रवृत्तिक दोष सँ उत्पन्न आक्रामकता आ अवाजकताक प्रतिकाव वा प्रतिवाद अवश्य भऽ जाइत अछि। अस्तु, ई नहि मानवाक चाही जे आमोकेर्ष मे शांतिक लेल प्रयत्ने एवं मानव मात्र मे

সমান ভারক চেতনা রেদাঁতেক থিক। যৌহ চেতনা রিশ্বি মানরতাক স্থাপনা করৈত ত্মছি।

গজনকাব শ্রী ঠাকুব রস্তুত: রেদাঁত কেঁ এহি রিচাব সঁ নহি দেখননি ত্মছি, তেঁ নিখৈত ছথি –

নিগমাগম–প্ববাণ সম্মত ছৈ– জীর ত্মংশ পবমামো কে

মন্তব নেন কছত্মা স্বনগারী, ও কেহন দন গপ নগৈএ

ওনা রেদাঁত সভহক বক্ষক ত্মছি ত্মা রিরেক সম্মত রিচাবক প্রধানতা দৈত ত্মছি, তেঁ দোসবা কেঁ উঁপৌড়ি ত করবাঁ এহন প্ররৃতিক রিবোধ করৈত ত্মছি। ত্মাজুক বিশ্তা–নাতা রস্তুত: রিরেক রা জ্ঞান সঁ নহি ত্মছি, ত্মপিতু ত্মর্থপ্রাপ্তি ত্মা ভূখ সঁ ত্মছি। এহি ত্মর্থ মে মনুষ্য সেহো রস্তুএ মানন জাগছ, তেঁ ভেদ–ভার সামান্য গপ থিক। জা ধবি গছা রা ভূখ জ্ঞান রা রিরেক সঁ নির্যংত্রিত নহি হোএত তা ধবি কী রস্মহীন ত্মামো রা চেতনাক সমাজ ভ` সকৈছ ; ও প্রশ্ন হমবা সভক সমক্ষ ঠাঁহ রৌনে ঠাঢ ত্মছি। শ্রী ঠাকুব রর্তমানক রাঁস্তুক–রিদ্রূপতা কেঁ রেখাঁকিত করৈত নিখৈত ছথি –

মাক্ষ, মাক্ষ, মাবি ভগারূঁ – সগব ঠৈন মে এক্কে রোঁন

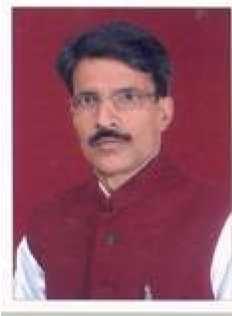
তখন কবী বক্ষক কে দারী, ও কেহন দন গপ নগৈএ

পেষ্ট রঁনারৈঁছ ত্মপন ঢংগ সঁ সভষ্টৌ বিশ্তা–নাতা, তেঁ

হম রিহাবী, তূ পনিজারী, ও কেহন দন গপ নগৈএ

রস্তুত: ঠাকুব জী ত্মপন গজন মে সামাজিক যথার্থ কেঁ ত্মা র্যরসাযিক রিদ্রূপতা কেঁ সূক্ষ্ম কপ সঁ রেখাঁকিত কযননি ত্মছি। মহত্বপূর্ণ তথ্য ও ত্মছি জে গজনক র্যাকবণ কেঁ ও ওতেক স্থান নহি দেননি জতেক শৈল্পী ত্মা ভারামেকতা কেঁ। তেঁ ভারক ক্ষোভ হিনকব গজন মে নহি ত্মছি। প্রতীক, রিম্বি ত্মা নর উঁপমানক সৃজনশীনতা এরং কনামেকতা হিনক গজন মে মহত্বপূর্ণ

রूपেঁ ব্যক্ত ভেল অছি, জাহি সঁ ব্যঞ্জনাক মার্মিকতা সিহ্ব ভ জাগত অছি। অস্তু, মিত্র শ্রী ঠাকুরক দৃষ্টিক পৈনাপন মে বেদাংতক সমীচীন বোধ অযবাক চাহী, এহী বিশ্বাসক সংগ হিনক সাবগর্ভিত ভারক প্রতি সংবেদনশীল ছী – এহী বাতক সংগ হিনকা বহুত-বহুত সাধুবাদ !



ডॉ. শংভু কুমাব সিংহ, বাষ্ট্রীয অনুবাদ মিশন, ভা.ভা.সং., মৈসূব

ঘসন অঠন্নী : একটা বিমর্শ

সাহিত্য অথবা কাব্য সময-সাপেক্ষ হোগত অছি; এহি কাবণেঁ সমযক সংগ-সংগ কাব্যক সেহো স্বরূপ বদলৈত বহৈত অছি। কাব্য কখনো কাল ওশ-মহিমাক বখান কবৈত অছি তঁ কখনো বীবগাথাক, কখনো কামিনীক দেহযষ্ঠিক সাংগোপাংগ বর্ণন কবৈত অছি তঁ কখনো সামান্য মানব জীবনক পীড়া, ওর্ষ্যা, দ্বেষ, বাগ আদিক। কহবাক তাপের্য জে সাহিত্যক যাত্রামে কাল আ স্থিতিক কাবণেঁ কাব্যক উদ্দেশ্য বেব-বেব বদলৈত বহৈত ছৈক। অতঃ মূল রূপমে জঁ বিচাব কএল জাএ তঁ সাহিত্য অথবা কাব্য বচনাক মুখ্য উদ্দেশ্য ভেল প্রকৃতি (সজীব/নির্জীব)ক প্রকৃতিসঁ তাবতম্যতা স্থাপিত কএ মনুখমে মনুখতাক অর্থ তাকব। এহি দৃষ্টিএঁ করিতাক

সার্বভৌমিকতা আ সর্বকালিকতা এহি শর্ত পর নির্ভর করैत अछि जे ओहिमे मनुखक संवेदनाक अभिव्यक्ति कतेक प्रभावी रूपें भेल छैक। ई संवेदना देश-कालकें समान रूपें प्रभावित करैत अछि।

करिचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' मैथिली काव्य काननक एकटा एहन नक्षत्र छथि जे अपन करिकर्मक हेतु युग-युगान्तर धरि मैथिली साहित्यमे पूजित रहताह। हम एतए "राधाविरह" सन उँचकोटिक काव्य रचयिता मधुपक चर्चा नहि कए जा रहल छी। हम चर्चा कए जा रहल छी 'घसल अठन्नी'क रचयिता मधुपजीक। एतए प्रश्न उठैत छैक जे कोन एहन परिस्थिति रहैत छैक जकरा कारणें 'घसल अठन्नी' सन काव्य रचना करबा लेल काव्यकार बाध्य होइत छथि अथवा प्रेरित होइत छथि। हमरा बुझने जखन लेखकक समक्ष ओहि कालखण्डक कोनो विस्मयकारी यथार्थ (जे कि घसल अठन्नीमे चित्रित कएल गेल अछि) उपस्थित भ' जाइत छैक तँ ओहि यथार्थसँ करि मन सेहो अपना आपकें मर्माहत महसूस करैत छथि आ तखने एहि पीड़ाकें जनमानसक सोझा आनबाक लेल ओ आतुर भ' जाइत छथि। बुचनी सन शोषित, पीड़ितक पीड़ाकें एहन मार्मिक रूपें प्रस्तुत करबाक हिम्मत संभवतः मधुपेजीसँ संभव रहनि किएक तँ समकालीन व्यवस्था किन्नहुँ हुनका पक्षमे नहि छलनि।

घसल अठन्नी करिताक अध्ययन केलाक पश्चात् निम्न विन्दु सभ पर विचार कएल जा सकैछ: शब्द-चित्रक माध्यमे प्राकृतिक चित्रण, भुटकुन बाबू (शोषक वर्ग)क अनाचार, मखना सन भटकल प्रजावर्ग, बुचनी (शोषित)क

रेखाचित्र, घसन ब्यवस्थासँ घसाएन अर्थन्नीक आर्तनाद।

घसन अर्थन्नी कविताक सभसँ पैघ विशेषता थिक एकर ब्यावहारिक भाषा, जकर पाठ कएनाक उपरान्त पाठकक मोनमे रौह भाव, रौह चित्र सोझा नाचए लागैत अछि। शब्द-चित्रक एहन जादूगरी कि गरमीक वर्णन पढैत काल पाठकक सोझा ओ दृश्य चलचित्र जकाँ चलए लागैत छैक आ पाठक ओहि स्थितिसँ अपन तादात्म्य स्थापित कए लैत अछि, जेना निम्न पाँति पढ़बा काल अंतिम पाँति पर अएनाक पश्चात् एहन अनुभूति होएत जे जँ आँखिकेँ झाँपि नहि लेब तँ ओ तापत धूवा कतहुँ आँखिमे नहि पड़ि जाए; *पछबा प्रचन्ड/विकट़ / उदन्ड/सन सन सन सन/छन छन छन छन/आगिक कण सन/सन्तप्त धूनि अछि उड़ / बहन।* अथवा *जनमोव बनल पोखविक पानि... /* वा *ओ अग्निवृष्टि ! / संहाव कवत की प्रकृति सृष्टि !* आदि कहैत-कहैत जखन ओ कहैत छथि- *छाहविरो अभिलाष करए भेटैए छाहवि...*तँ बुझाइत अछि जे एहिसँ आगू कविक कल्पना जाइए नहि सकैए। कल्पनाक एहन सजीव चित्रण! एहन विलक्षण पराकाष्ठा! कवि मधुपेसँ संभव छनि।

वस्तुतः कविताक पहिल भागमे कवि प्रकृतिक वर्णन करबाक नाथे एकटा भूमिका तैयार केलनि अछि जाहिसँ प्रकृतिक एहि रौद्र रूपकेँ उपरोक्त बाबूक सामन्ती प्रवृति पर आरोपित कएल जा सकए। मार्क्सवादी विचारधारामे सम्पूर्ण समाजकेँ दुगए वर्गमे विभाजित कएल गेल अछि-एकटा शोषक वर्ग आ दोसर शोषित वर्ग। एतए उपरोक्त बाबू शोषक वर्गक प्रतिनिधित्व

करैत छथि आ ब्रूचनी शोषित रहबाक। *गै छौक ने डर ? /कै खून पचेननि ओ रॉल्डा/बोगयो न भंग/हग-हग दाबोगाजी जीरॅथु/क' देरौ खून।* पहिने मखनाक आचाब- *चट-चट-चट-चट/फनिशेहुँसँ कर्कशी भीमकाय/मखनाक चाटसँ निस्सहाय/भू-लुण्ठित दनू माग-पूत/भ' गेनि बेहोशी।* आ ताहूपव मोन नहि भवननि तँ- *दन-दन-दन-दन/मूष्टितो देह पव बैंत वृष्टि/वॅस एक बेव अस्फुट क्रन्दन/शिश्न संगहि ब्रूचनिक फक्त सृष्टि !*

एतए मखनाक चवित्र ओहि भटकन हवावस्त्राक सदृशे अछि जे अपनहि हाथेँ अपन आ अपन समाजक सर्वनाशे कवबा नेन आतुव अछि। आखिव मखना सन नोकवकेँ तुटेफन बॉबू सन मानिकसँ की सभ सुविधा भेटैत छैक ? मानिकक पहिवनाहा प्रवनका धोती-तौनी, खएबा नेन नीक-नुफत भोजन आ कोनहुँ जग-जाजन पव खर्च कवबाक नेन कर्ज, सैह ने ? फदा मखना सन नोकव एहि भ्रमकेँ नहि तोड़ि पबैत अछि जे यैह कर्ज ओकवा प्रुश्त-दव-प्रुश्त तुटेफन बॉबूक चाकवी कवबाक ने बाँध्य कवैत वहैत छैक आ कवैत वहतैक। मानिकक सह पाबि ओ जाहि प्रकावेँ ब्रूचनी पव प्रहाव कवैत अछि ताहिसँ सिद्ध भ' जाइत अछि जे जाधवि मखना सन मूर्ख एहि समाजमे अछि ताधवि तुटेफन बॉबू सन शोषकक अत्याचाव निर्बाध रूपेँ चनिते वहत। *बौ, की तकैत छें मूँह हमव/छोटका नोकक एते ठेसी ?* जहिया मखना सन नोक एहि 'छोटका नोक' आ 'बड़का नोक'मे भेद जानि जाएत तहिए सँ समाजक काया-कल्प होएब प्रावंभ भ' जाएत।

কহন জা চুকন খছি জে প্রস্তুত করিতামে করি জে কিছু কহনে ছথি, জাহি কোনো পবিস্থিতিক বর্ণন কেনে ছথি ও প্রস্তুতিক পবাকাষ্ঠা থিক। ব্রুচনীক দুর্দৈন্য দশাক বর্ণন কবৈত কান করি দ্বাবা ব্রুচনীক খীচন গেন বেখাচিত্র– *হুষ্টী–হুষ্টী পবিধান মনিন/চেষ্টী জাগন/সৌন্দর্য গবীরীসঁ দাগন... । খাভূখক জ্বানাসঁ জবক ডবেঁ/তাকণ্য জকব খবিতহিঁ ভাগন/পাকন পানহুঁসঁ রঁঠ়ন–চঠ়ন/পীযব ও দূরঁব–পাতব তন/ফাটৈন ও হুফড় ী পড়ন ঠোব/খামক হাড় । সন নযন/খাধিমে ধএন জকব দুর্দৈর চোব।* এহন দেহক পবিণতি কী ভ' সকৈছ ? *শোণিতোক খাবঁ নহি ছৈক শেষ/প্বনি দূধক মোএবঁ কোনা সম্ভব ?* এহনো স্থিতিমে ব্রুচনী খপন খা খপন রঁচাক জীবনক বক্ষার্থ এহন ভীষণ সমযমে খেতমে কাজ কবৈত খছি। ঘসন খঠন্নী কোনহুঁ দোকানমে নহি চননাক স্থিতিমে ও প্বনঃ মানিকসঁ গোহাবি কবৈত খছি– *ও ঘসন খঠন্নী চনি ন সকন/হম সবঁ দোকানসঁ ঘূমি–ফীবি/ছী খাবিঁ বহনি/কক ছপা খঠন্নী দ' দোসব/এসককখা হম/ভ' গেন বাতি/গিবহত, ন খাবঁ দেবী নগাডঁ/ভূখেঁ–প্যাসেঁ হম ছী মবৈত/নেবৈঁ বেঁসাহ/কুটবঁ–পীসবঁ/বঁচা ভোবেসঁ কানি–কানি/ছটে–পটে কবৈত খছি জান নৈত।* হ্মদা স্তুটৈহন বাঁবূ পব এহি গোহাবিক কোনো খসব নহি পড়ৈত ছৈক। এতএ ব্রুচনীক ভূখ তঁ নহি মেটৌ সকন, হঁ ওকবা খপন শিশুক সংগহি এহি গহনোকসঁ হ্মক্তি খবশ্য ভেটৈ গেনৈক–*শিশু সংগহিঁ ব্রুচনিক হ্মক্ত সৃষ্ঠি !*

এতএ *ব্রুচনিক হ্মক্ত সৃষ্ঠি !* ক সংগহি করিতাক খংত নহি ভ' জাগত খছি। *হম কত' জাডঁ/খবনম্ব*

পাঙ/কে শিবণ ? /ঘসন জনিকব খদৃষ্ঠি ! কহি করি সমাজক সোঝা একটা রঁড়কা টা প্রশ্নচিন্ন ছোড়ি দেনে ছথি। এতএ ঘসন খঠন্নীকেঁ সমাজক শোষিত রস্কাক প্রতীকক রূপমে করি প্রস্তুত কেনে ছথি। খঠন্নী খথরা পাগ মানে কী ? খঠন্নীক মানে মৌদ্রিক র্যরস্থাক একটা ছোট কিন্তু মহত্ত্বপূর্ণ ঘটক, খর্থর্যরস্থাক বীঠ। খা গবীর্‌-গ্ববরা রা মজদূব মানে কী ? সামাজিক র্যরস্থাক একটা ছোট কিন্তু মহত্ত্বপূর্ণ ঘটক, সমাজক নির্মাণ, কন্যাণক সভসঁ পৈঘ সংসাধন। সমাজক ভৌতিক স্বখ-সাধন সঁ ন' কএ সভ্যতা, সংস্কৃতিক রিকাসক নেন দনূক দোহন খারশ্যক। ক্ষদা দোহনক দৃষ্ঠিকোণ কী হেরাঁক চাহী, যৌহ সভসঁ মহত্ত্বপূর্ণ প্রশ্ন খছি। ভুটক্ষন রাঁবূ সন সামংতী প্ররৃতিক নোক দোহনক মানে র্‌মৌত ছথি 'খূন চোসর্‌' খা জখন র্‌চনী সন পীড়িত, শোষিতক দেহমে শোণিতক খংশ মাত্র বহি জাগত খছি তখন ওকব খস্তিত্ব মেটা দেরাঁক ঙা প্ররৃতি নিশ্চযে দানরী প্ররৃতিক দ্যাতক খছি। তহিনা জখন হম ঘসন খঠন্নীক খর্থরিস্তাবমে জাগত ছী তঁ ওহিমে সমাজমে র্যাপ্ত ও সভটা ক্ষরীতি সমা জাগত খছি জে জকবা কাবণেঁ মনুখ জাতিক মূন্যক তীব্র গতিএঁ দ্রাস ভেন জা বহন ছৈক। ঘসন খঠন্নীক এহি খার্তনাদক রূপমে রস্তুতঃ করি খপন খার্তনাদসঁ জনমানসক ধ্যান খাকৃষ্ঠ কবরাঁক প্রযাস কেনে ছথি। খাখিব ঙা র্যরস্থা কহিযা ধবি চনৌত বহত ? একবা সঁ ত্রাণ কোনা হো ? কি এহি র্যরস্থাসঁ ত্রাণ দিখাএর্‌ কোনো এক র্যক্তি/সংস্থা সঁ সংভর ছৈক ? নিশ্চিতে রূপসঁ নহি। একবা নেন হমবা সভকেঁ সামূহিক প্রযাস কবএ পড়ত।



রিনীত উঁপেন

মৈথিনীক রিদ্রামী করি: কাশীকাঁত মিশ্র মধ্প

'মৈথিনীক নরনেখন এক 'জনারব' জকাঁ জীর র্ঁঋন জাগত ছন, জাহিসঁ পবম্পবারাদী সাহিল্কাব নোকনি ভযাঞাঁত ভs উঁঠন ছনাহ. খসনমে নে নরনেখন কোনো খজ্গত রস্তু ছন খা নে কোনো 'খজূরাঁ' রস্তু ছন. সাহিল্ক পবিরর্তিত রুপক এক 'তের্ঁব' ছন. নর্ঁতারাদী নোকনি নরনেখনক খাবস্তু বাজকমন সং মানৈত ছথি, ক্ষদা হমবা জনৈক তকব উঁসে যাত্রীজীযে মেং ছনি. যাত্রীজী খংততঃ স্বমন র মধ্প সং জে ভিন্ন

छनाह से ने केरन मार्क्सवादीसं प्रभावित लोयराँक कारण अपित्तु हुनक साहित्यिक अभिव्यक्ति, भंगिमा, ओहि दृनू गोष्ठ सं भिन्न छल आ तकरे गहिकs सं राजकमल आगाँ बढ़ल छनाह । '

ओ राँत स्वधांशु शेखर चौधरी १९+३ मे चेतना समिति द्वारा आयोजित विद्यापति पर्वक अवसर पर आयोजित विचार गोष्ठीक विषय 'आधुनिक साहित्य मे परिवर्तनक स्वर' मे कहने छल. अहि विचार गोष्ठी कs नs कs छपल 'आधुनिक साहित्य मे परिवर्तनक स्वर किताबँ मे रामन्वग्रह झा लिखैत छैथ, 'आधुनिकतम काव्य प्रवृति पर विहंगम दृष्टि सं विचार करैत तीन वर्ग केल जा सकैत छथि. यथा,संस्कृत साहित्यपेक्षी (स्वमनजी, जीवनाथ झा प्रभृति), उदार दृष्टिवादी (भुवनजी, मधुपजी, किरणजी, तंत्रनाथ झा, गोविन्द झा प्रवृति) तथा वाममार्गी (यात्रीजी, राजकमल, सोमदेवजी, किस्वनजी, मायानन्द जी प्रवृति).

'आधुनिक गीत मे परिवर्तनक स्वर' मे भीमनाथ झा लिखैत छैथ जे एके करि गीतक स्वर आ शिल्प दुहू मे व्यापक परिवर्तन अनराँक काज कयननि, से थिकाह करि चूडामणि श्री मधुप. आधुनिक काल मे गीत कें सभसँ लोकप्रिय बँनयराँक श्रेय हिनके छनि. ओ मैथिलीक अपन छंद मे शताधिक गीतक रचना तं करबे कयननि, संगहि हिंदी आ हिंदीतर भाषाक लोकगीत आ फिल्म संगीतक अनेक स्वर पर अपन शब्द कें सजौननि ।

स्वधांशु शेखर चौधरी, रामन्वग्रह झा आ भीमनाथ झाक तथ्य केर सोचैत आ मधुपजीक कविता आ गीत पढ़ैत ओ राँत स्वदृढ़ भेल जे मधुपजी एकटा

রিদ্রাহী করি ছৈথ আ ওঁপব নিখন তীন্ গোষ্ঠৈক নিখন ৰাঁত মে রিবোধাভাষ অছি. জখন বাজকমন চৌধবী স্বৰগাঁধাক ভূমিকা মে নিখৈত ছৈথ, 'করিতা অনুভর, জ্ঞান, আরেগ আ অভিব্যক্তিক একটা সশক্ত প্রক্রিযা হোগত অছি. এহি প্রক্রিযা মে শব্দ,ধ্বনি, ছন্দ আ নয, একটা রিশিষ্ঠ সম্বক অনুভূতি ৰঁনি জাগত অছি. তখন সাহিত্যিক অভিব্যক্তি আ ভঁগিমাক অঁতব কোন ধবাতন পব কেন জা সকৈত অছি.
জহি কান জেহন সামাজিক, বাজনীতিক আ আর্থিক রাতারবণ বহন, তহিনে করি আ নেখক অপন বচনা কেনখিন. কোনো ভী বচনাকাবক বচনা হুনকব জীরনানুভর পব আধাবিত হোযত অছি. ওনা মানন জাযত অছি জে রিদ্যাপতিক ৰাঁদ জতেক করি আ গীতকাব ভেন, ওহি মে মধুপজীক গীত সর্রাধিক হ্মখব ভেন ছথি. মোহন ভাবদ্বাজ 'গীত, নরগীত,গজন' নামক একটা নেখ মে নিখহি ছৈথ জে দেশী–দশা আ মাতৃভাষা কেঁ পৃষ্ঠভূমি মেঁ বাখিকেব গীত নিখ– নিহাব মে হিনকা নাম সর্রসে ৰেঁসী মহত্বপূর্ণ অছি.
চাবিম দশকক বচনাকাব মধুপজী কেব গীতক আঠটা পোথী প্রকাশিত ভেন অছি. এখন ধবি হুনকব বচনাক সমীক্ষা অহি ৰাঁত পব ভেন অছি জে হুনকব গীত আ করিতা ফিল্ম সংগীত পব আধাবিত ছন. হ্মদা অধ্যযন মে ও ৰাঁত আগূ আৰ্র বহন অছি জে মধুপজী জে রিষয পব করিতা আ গীত নিখনে ছথিন, ও রিষয অ াজুক যুগ মে, আজুক করিতা মে হাসিযো সে ৰাঁহব অছি. আজুক কোনো মৈথিনীক করি অপন করিতাক আধাব বসগুল্লা, ছতহুব, পতিত পীক, টিকা জিনেবী

কেব নহি রঁনারৈঁত খছি.
এখন হম সরঁ ওহি কান খঁড সঁ গ্বজবি বহন ছী জখন দ্নিযাক সরঁসঁ পৈঘ নোকতঁত্র ভাবতক বাজধানী মে নির্ভযা কাঁড হোযত খছি. খহি কানক দ্নিযাক সরঁসেঁ তাগতরব দেশী খমেবিকাক বাষ্ট্রপতি কিনঁটনক সেক্স স্কঁডন রা রুস বাষ্ট্রপতি প্বতিনক প্রেম প্রসংগ খখরাঁব স্বর্খী রঁনৈত খছি. মহিনা সশক্তিকবণ গপ খহি কানখঁড মে সরঁসেঁ রেঁসী ভেন, তখন খাজ্ সঁ সত্তব– খস্সী রঁবখ পিহন নাবী সমাজক রিদ্রূপতা খা স্বতন খঁতবামোক খারাজ গীতক মাধ্যম সঁ রাঁহব খানৈক কাজ কেব রিদ্রাহ নে কহন জায তে কী কহন জায.
ওহি কানক কতেক বাস বচনা মিথিনাক স্ত্রী সমাজক গপ খাগূ খাননক, একব গিনতী কেন জা সকৈত খছি. কতেক বাস সমীক্ষক হ্নকা শ্রৃঁগাবক করিতা গীত নিখহি রঁনাক রূপ মে প্রস্তুক কবৈত খছি,ক্ষদা হ্নকব করিতা খা গীত রিদ্রাহ করিক গীত খছি.
'পতিত পীক' করিতা মে মধ্পজী কহৈত খছি,
'স্বাথী সংসাবক কেহন নিযম,
উঁপগ্রতো উঁপদ্রব কবৈ ন কম.'
ওঁব তে ওঁব কহৈত খছি,
'নহি পতন এক দিন ককব হৈত,
পৃথ্বীক কোব মে কে ন জাগত.'
মধ্পজী ব্রাহ্মণ বর্ণ মে ভেনা কে রাঁদো 'ছতহব' গীত মে নিখৈত খছি,
'হো সদিখন সংসাবক স্বধাব,
পতিতৌক রঁনথি ক্যা কর্ণধাব.
উঁচ্চাব স্বধাবক সঁ ন হমব,
গ্র সভ্য সমাজক ছিক প্রতাপ.'

করিতাক ওা সভটা শৈষ্ঠ খা ভার কেব শ্রৃংগাব কহন জায যা একটা রিদ্রাহী করিক শৈষ্ঠ. ওা করিতা ওঁহি কান মে নিখন গেন ছন জহিযা নে তে ওতেক সংচাবক সাধন ছন খা নে ওতেক সামাজিক রিকাস. হ্নকব করিতা "ঝংকাব" খা "ঘসন খঠন্নী" মে সেহো যহি ভার খছি.

একটা গীত মে ও নিখৈত খছি,

"কব্ধ ভেদভার দূবে,
সংসাব কেব সূবে,
কবনীক কিংত্ত কাযা,
গাঁগিত কবয ন ছু বে."

ওহি কানক কোনো করিতা মে এহন ধাব নহি দেখা পড়ৈত খছি.

ভীমনাথ ঝা এক ঠাম নিখৈত খছি জে 'হন্নক' করিতা মে ও নাযিকা সমাজক ক্ষপ্রথাক প্রতিকাব কবরাঁক সাহস জ্টেবৈত খছি,

'মন হরৈষ্য ডাক দেন জে তনিকা কেঁ দী তনাক,
ঘ্মরী নরীন সৃষ্ঠি হেত্ত এক নরচাক,
ভৈ জাগ খাব ছোড়ি সে সমাজকেঁ হবাক.'

হ্নকব খ্যাতি প্রাপ্ত গীত

'হম জেরেঁ ক্ষশৈশ্রব ভোব,
বংগি কৈ ঠোব,
পহিবি কৈ কাড়া,

ঝনকায ঝনাঝন ধাবা' ক মাধযম সঁ ও স্ত্রী চেতনাক জে রূপ বাখনে ছথি, ও দ্নভ ছথি.

ভনে হী কতেক বাস করি কং হ্নকব সমকক্ষ বাখন জাযত খছি, হ্দা মধ্পজী পূর্ণরূপেণ রিদ্রাহী করি ছন, জকব পহচান কবর্ খ া সমীক্ষা কবর্ খারশ্যক

अछि.

मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग

रविशंकर श्रीवास्तव "रवि"

"मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग" मैथिलीमे पहिल बेर

रिदेह ई-पत्रिका *www.videha.co.in* *मे धावारारहिक रूपमे ई-प्रकाशित भेल छल।*

श्री हविशंकव श्रीरास्तव 'शैलभ'

जन्म: 1 जनरवी, 1934, एम.ए. (हिन्दी), री.एन., रिद्यारराचस्पति, प्रकाशित कृति: अर्चना (गीत कार्य), आनंद (खंड कार्य), एक रँनजाबा रिजन में (कार्य), मधेपुवा में स्वाधीनता आन्दानन का गतिहास, शैर अरधावणा ऒव सिंहेश्वव स्थान आदि

रिनीत उंपेल

जन्म : 7 अप्रैल, 1978. मधेपुवा, रिहाव. एक दशकसँ रँसी अरधि धवि वाष्ट्रीय सहावा, हिन्दुस्तान जेहन अखरॉवमे पत्रकावितक रॉद आय कान्हि अध्यापन. सम्प्रति जामिया मिल्लिया गस्लामिया, नई दिल्लीक मे शोधवत. अहाँक प्रकाशित कृति सभमे हम पुष्ठैत छी (मैथिली कार्य-संग्रह), नए समय में मीडिया (संपादन), साहित्य अकादेमी सं पुवस्कृत हिन्दीक रविष्ठ कथाकाव उंदय प्रकाशक कथा 'मोहनदास'क मैथिली अनुरवाद.

हिन्दीसँ मैथिली अनुरवाद **रिनीत उंपेल**

मन्त्रद्रष्टा ऋृष्यश्रृङ्ग

लेखक
रविशंकर श्रीवास्तव "रैनव"

संपादक
श्रीगोपाल पंडित

हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद
विनीत उत्पल

समर्पण

ऋष्यश्रृंग आश्रमक महान साधक आ श्रृंगेश्वर (सिंहेश्वर नाथ) मंदिरक एकनिष्ठ आराधक गोलोकवासी स्व. नानाश्री रैनी प्रसाद, स्व.

मामाश्री सहदेव प्रसाद, लक्ष्मी प्रसाद झा रामचंद्र प्रसादक पावन स्मृतिमे तर्पण तवहे श्रेद्धाश्रे निवेदित– तृप्यन्ताम ! तृप्यन्ताम ! तृप्यन्ताम ! ! !

–हविशंकव श्रीवास्तव 'शेलभ'

श्रृद्धांश्वेव (सिंहेश्वेव नाथ) महादेवजीक पौवाणिक कामना लिंगक मधेपुवा (विहाव) कँ स्मवण कवैत.

पवमपुवीवासीने पवमगुवु पवमात्मने नमः

सम्पादकीय

ভাবতক ঋগ পূৰ্ব ক্ষেত্র, এখ্নকা কোশী ঋঁচনমে ভাবতীয সাঁস্কৃতিক উঁদয প্রাগৈতিহাসিক কানমে ভেন ছন ঋা ঐতিহাসিক প্রক্রিযাক সামানাঁতব একব রিকাস ভেন. গতিহাসসঁ সরঁক্ষ ভেনাক রাঁদো গু ঋঁচন ঋপ্পন গতিহাস কে ঁ ঋারশ্যক নৈ র্ঁমনক. তকব রাঁদো গু ঋপ্পন প্ববনা ধবোহবকে ঁ মহাকাব্য ঋা প্ববাণমে মণি ঋগুা সন সম্হাবি ক' বাখনক. এতৌকা সংস্কৃতি নৈ তঁ বাজা, মহাবাজা ঋা উঁচবস্থক ঋছি, ঋদা গু সংস্কৃতি রিশ্বামিত্র ঋা ঋষ্যশৃংগ সন রৈজ্ঞানিক তপস্বী ঋষি সরঁহক দেন ঋছি জকবা উঁত্তব রৈদিক কানসঁ ন' ক' ঋাগ ধবি ঋগ ঠামক নোক ঋামেসাত কেনে ঋছি. তগসঁ গু সামান্য নোকক সংস্কৃতি ঋছি, রিশ্বস্ক জনরাদী সংস্কৃতি. কতেক জাতিক পবস্পব সংঘর্ষ, সংপর্ক ঋা সংত্তননসঁ একটা দীপসঁ ঋসংখ্য দীপ শৃংখনা জোড়ৈত ঋা ওকব ঋধিগ্রহণ ঋা ঋস্বীকাব কবৈক পবংপবাকে ঁ রিকসিত কবৈক সংস্কৃতি. কতেক বাস ঋনগ-ঋনগ জাতিক সংস্কাবক, উঁত্তব রৈদিক কানসঁ ঋাগ ধবি, ঋপ্পন সরোঁচতাকে ঁ স্ববক্ষিত বাখনে ঋছি.

কোশী ঋঁচনক সভসঁ মহান সাঁস্কৃতিক পীঠ শৃংগেশ্বব স্থান (সিংহেশ্বব স্থান) ক স্মবণ কবৈত এতৌকা তপঃ পূত ঋষ্যশৃংগ ঋপ্পন সমগ্রতাসঁ উঁপস্থিত ভ' জাগ ছথিন.

হ্নকব সম্পূর্ণ জীরন একটা খাদর্শ খছি. রাল্যারস্থামে ব্রহ্মচর্য পূর্রক খধ্যযন, গৃহস্থ খাশ্রমমে নিঃস্বার্থ সমাজসেরা, যজ্ঞানুষ্ঠান, খনার্য সংস্কৃতিক খার্য সংস্কৃতিমে সমন্বিত কবর খা ওকব বাষ্ট্রক মুখ্য ধাবামে প্ররল ঠেকবারক রাদো জোড়ৈমে সক্রিয হএর, ওা খগ ঋষিবাজক মহান উঁপনব্ধি ছল.

ঋষ্যশ্রৃংগক জীরনরৃত রাল্মীকীয বামাযণ, মহাভাবত, ভাগরত খা খন্যান্য প্ববাণ খা ভরভূতিক্বত 'উঁত্তববামচবিত' মে কনীটা সংকনিত খছি. হ্নকব সম্পূর্ণ জীরনক রৃত্তামেক খধ্যযন খখৈন ধবি নৈ ভেটৈত খছি. কোশী খংচনক ররিষ্ঠ সাহিত্যকাব খা ক্ষেত্রীয গতিহাসকাব শ্রী হবিশংকব শ্রীরাস্তর 'শনভ' রড নিষ্ঠা খা পবিশ্রমসঁ খগ খভারকেঁ দূব কবৈত ঋষ্যশ্রৃংগসঁ সংরধিত ঐ প্রামাণিক, রৈজ্ঞানিক খা গরেষণামেক পোথী নিখ ক' খারএরনা পীঢী খা শোধার্থী নেন মাত্মু প্রশস্ত কেনে খছি.

জখন সম্পূর্ণ ভাবত যজ্ঞক খাগিমে ঝুনসি বহন ছল, দেরাস্বব সংগ্রামক নাম পব নাশসঁ ধবতী পাটন জা বহন ছল খা ঋষ্যাশ্রমমে শতাগ্নী তৈযাব হোগত ছল, তখন কোশী কাতক ঋষ্যশ্রৃংগ খাশ্রম এক দীপসঁ দোসব দীপ কেঁ রাবি উঁত্তব ভাবতসঁ দক্ষিখন ভাবত মে শাঁতি–মংত্র রিস্তাবৈত ছল. ওা তহিযোকা গতিহাসক

एकटा महत्वपूर्ण इतिहास अछि. ब्राह्मण क्षेत्रमे ब्राह्मण स्वामी भगवान शिवक गण्ठ निंगकें पुनर्जागृत क' ओ महान तपस्वी वेदविरुद्ध आ वेदविहित मतकें समन्वित करबैबला काज केलक जे देश, जाति आ समाजक समन्वयवादी ऋषिवाजक स्वरूपसँ प्रभावित भ' भगवान राम, सागरक कात शिवनिंगक स्थापना केने छल जे ठाम तहियोका वक्ष-संस्कृतिक केंद्र छल आ भगवान शिव अगं संस्कृतिक संपोषक वारणक आवाध्य देव छल.
अगमे मत-भिन्नता हेबाक बादो प्रमाण तथ्य ओ अछि जे अग महान ऋषिक जन्म कोशीक कात अखुनका सिंहेश्वर स्थानमे भेल छल. ओ ठाम महर्षि विश्वामित्रक तपस्याक ठाम सेहो बहल छल. हुनकव नामपव अखनो कोशीक कातमे 'कुसहा' नामक कतेक बास गाम बसल अछि जे कौशिक ऋषि विश्वामित्रक स्मृति कें अप्पन नाममे संजोगने अछि.
ऋष्यशृंगक आश्रम अग देशमे कतेक ठाम अछि. हम नगभग सभटा आश्रमक परिभ्रमण केने छी. रूंगेवसँ 30 किलोमीटव नैऋत्य कोणमे आ भीम बाँधसँ पंद्रह किलोमीटव वायव्य कोणमे दुरूह पर्वत शिखवपव जनशून्य आ प्रकृति अप्पन चमकोबी हाथसँ सजल एकटा दर्शनीय ऋष्यशृंग आश्रम अछि. एतौका गोपानक सँ

হম পুছলৌं জে ঋষ্যশ্রৃংগক মূর্তি কতএ অছি ? ও সহজ ভাবসঁ কাজল, ঈ পৈঘ পহাড়, গাছ–বৃক্ষ, পাথরক টুকড় । যএহ তঁ ঋষ্যশ্রৃংগ ছথিন. কতেক বাস বস্তাসঁ ঝঁপি ক' আএল নির্ব্বিণীক জল এতেক শীতল ছল জে হম লহাকৈঁ লোভ ছোড়ি নৈ সকলৌं. গোপানক অপ্পন গমছা দেলক আ হম লহেলৌं. হমবা কতাএল গেল জে অএ নির্ব্বিণীক জল অখৈন গর্মীমে জতেক শীতল অছি, ঠাব মে ওতবেঁ গবম. হ্নংগেবসঁ দক্খিন ঋষ্যশ্রৃংগক তপ্ত কুংড অছি আ সীতাকুংডসঁ দস কিলোমীটবপব হিনকব আশ্রম অছি. ঋষ্যশ্রৃংগ আশ্রমক আস–পাস কতেক বাস বৈষ্ণব আ বৌদ্ধ মূর্তি ভগ্ন স্থিতিমে ভেটৈল অছি. ঈ নিশ্চতে সনাতন হিন্দূ আ বৌদ্ধক পাবস্পবিক সংঘর্ষক পবিণাম বহল হএত. অএ মলোবম ঠামক 'এশিয়াটিক বিসর্চ' ক অংক সাতক পৃষ্ঠ 376 পব উল্লেখ অছি. কিংবদন্তী অছি জে বাজা দশবথ এতএ অপ্পন চারু বেটৌক মুড়ন কবেলে ছল.

রএহ পর্বতমালা পশ্চিম দক্খিন দিস বঁঢ়ৈত গেল অছি. অখুনকা ভাগলপুবসঁ 42 কিলোমীটব দূব পশ্চিম আ বঁবিযাবপুবসঁ ছহ কিলোমীটব দক্ষিণ–পশ্চিমমে সেহো ঋষ্যশ্রৃংগক আশ্রম অছি. ঈ মৈবা পহাড় সঁ ঘেবল একটা গোল সন ঘাটীমে অছি. ঐ আশ্রম লগ ঋষিকুংড নামক একটা পোখৈব

অছি, জে ঠাব আ গবম জন স্রাতক একটা সমন্বিত জনবাশি অছি. অগ পোখৈবক উত্তব দিস ঋষ্যশৃঙ্গ আ হুনকব পিতা বিভাংডক সাধনামে বত বহৈ ছন. কজবা বেনরে স্টেশনক দক্খিন 12 কিনোমীটব দূব ঋষ্যশৃঙ্গ পহাড় ক ঋষিবাজক তপোবন হেবাঁক সম্মান অছি. ‘প্রাচীন ভাবতক ঐতিহাসিক ভূগোন’ নামক পোথী মে ডা. বিমন চবণ নাহা একবা ন’ ক’ পৃষ্ঠ 429 মে নিখনে অছি. এহন নগৈত অছি জে অগ ঋষ্যশৃঙ্গ পর্বতমানাকেঁ ঋষ্যশৃঙ্গক সম্বব বাজা বোমপাদ হুনকা কন্যা–দানমে দেনে ছন. অগ পর্বত শৃঙ্গ পব তপস্যা ক’ ঋষ্যশৃঙ্গ একবা আ সম্পূর্ণ ক্ষেত্র কেঁ মহিমা মংডিত ক’ দেনক.

অগ ঋষি কেঁ ধাবক কাত আ বন্য পর্বত শৃঙ্গক কোবা বেঁসী প্রিয ছন. ও প্রকৃতি পূজক ছন আ হুনকব আবাধ্য প্রকৃতি জগতক রূপ–রূপান্তব অছি. জাজ্বন্যমান বশ্মিবংত সূর্য, বাতিমে মধু বর্ষা কবৈত শীতন চংদ্রমা, যজ্ঞবেদী বাঁ পাকশানা মে ধধকৈত আগি, মেঘক তূণীবসঁ তীব সন নিকনৈত বিদ্যুমোনা, দিনক স্বচ্ছ আ বাতিক নক্ষত্রমংডিত আকাশ, ধাবমে বহৈবানী বেগমযী জনধাবা, প্রকৃতিক অচিন্ত্য শক্তিক প্রতীক অগ চেতন রূপমে ঋষিবাজক স্পষ্ঠ আ বচনামেক কল্পনা হুনকা দেবত্বক

দর্শন দেনক. রেদমংত্রমে কতেক দেরতা সভকে ँ প্রাকৃতিক জগত অধিষ্ঠাতা মানি, হুনকব আরাহন আ স্তুরন কএন গেন অছি, জেনা আকাশক দেরতা দ্যৌ, রকণ, সৌব মংডনক দেরতা সূর্য, মিত্র, সরৃত, পূষণ, আ রিষ্ণু, প্রভাতক দেরতা অশ্বিনী আ উঁষা, অন্তবিক্ষক দেরতা ওংদ্র, অপানাপাত, রুদ্র, গরুড়, রায়, পর্জন্য আ আপঃ, ধবাতনক দেরতা পৃথ্বী, অগ্নি আ সোম আ সিন্ধু, রিপাশা, শতদ্রু আ সবস্বতীক ধাব.
ঋষ্যশৃংগক আবংভিক জীরন প্রকৃতিমে এতেক বমন, বচন আ রঁসন ছল জে মহাকরি রাল্মীকি হুনকব 'স রনে নিত্য সম্বূদ্ধা হুনির্রনচবঃ সদা' রন্য প্রকৃতি মে একাকাব ভ' জাওক কল্পনা কেনে অছি. এহন ঋষি গূঢ় বহস্যক জানকাব, তথ্যক অন্বেষক, শোধকর্তা আ গরেষণামেক চিংতন আ রিচাবসঁ পূর্ণ সমনংকৃত হোওত অছি আ নিষ্ণাত রৈজ্ঞানিক সেহো. কৌশিকীসঁ ল' ক' তুংগভদ্রাক তীব আ হিমানয সঁ ল' ক' নীনগিবিক উঁপত্যকা আ রনখংড হুনকা রৌঁসী প্রিয ছল. ও কতেক বাস যজ্ঞক আচার্য ছল. হুনকব সম্পাদিত রৃষ্টি যজ্ঞ, পুত্রেষ্টি যজ্ঞ, দ্বাদশ রর্ষীয যজ্ঞাদিক অনুষ্ঠান তহিযোকা ভবতখংডক ওতিহাসমে কতেক বাস স্বর্ণিম অধ্যায জোড়নক. হুনকা তঁ জনপ্ররঁধনমে সেহো রিশেষজ্ঞতা ছল. এখৌনকা চম্পানগবক চম্পানানাক নির্মাণ,

মহানদীক উঁদ্ভৱ আ ওকৰ মাস্থাক নির্ধাৰণকেঁ ওকবা খেতী জোগব ৰঁনাএরঁ, হ্নকব রৈজ্ঞানিক সূক্ষ্মৰ্ঁক্ষক জরনংত প্রমাণ অছি.
কোশী অঁচনক এহন মহান সপূত ঋষ্যশ্রৃংগপব পূর্ণ পোথী নিখি ক' ও রিদ্বান নেখক ৰঁড় পৈঘ কাজ কেনে অছি. অগ রিষযপব আগূ জে কোনো গরেষণামেক কাজ হএত, ওকব আধাব যএহ পোথী হএত. হমব এহন রিশরাস অছি.
এতদর্থ ঋষ্যশ্রৃংগক জন্মভূমি সিংহেশ্বৰ স্থানমে ঋষ্যশ্রৃংগ শোধ সংস্থানক স্থাপনা অগ রিত্যান নেখকক সংজোকত্বমে কএন গেন অছি. সিংহেশ্বৰ মংদিব ন্যাসক প্রাথমিকতা মে ও উঁল্লিখিত অছি–
ঞ্রমাংক 3 : ন্যাসক দিসসঁ ধার্মিক পোথী, রার্ষিক পংচাংগ, ধার্মিক ফোটৈ, কনেংডব, পত্র–পত্রিকা আদি নাগত মূন্য পব রিঞ্রয আ প্রকাশন.
ঞ্রমাংক 4 : সার্রজনিক রাচনানযক নির্মাণ.
ঞ্রমাংক 6 : সিংহেশ্বৰ মংদিবক ঐতিহাসিক, প্বৰাতাত্বিক, ধার্মিক বৃতাংত আ নোক কথা সরঁহক সংকনন অ শোধ.
ঞ্রমাংক 8 : যগ আ সংস্কৃত শিক্ষণক র্য়স্থা.
জতএ ধবি ঞ্রমাংক 3 আ 6 ক প্রশ্ন অছি, অগ গ্রংথক রিদ্বান নেখক শ্রী হবিশংকব শ্রীরাস্তর 'শনভ' সিংহেশ্বৰ স্থানপব পহিন্বক শোধামেক পোথী 'শৈর অৰধাবণা ঔব

সিংহেশ্বব স্থান’ নিখি ক’, ঋষ্যশৃংগক পুনর্জাগৃত সিংহেশ্বব স্থানক পারন গর্ঠ নিংগক পহিল্বক সাবস্বত খর্চনা কেনে খছি. খগ পোথীক পা ঁচ সৌ প্রতি মঁদিব ন্যাস দিসসঁ কীন ক’ ন্যাসক রিধ্যান্ববাগী খা উঁদাব সচিব শ্রী বাম নাবাযণ মংডন, খন্বমংডন পদাধিকাবী, মধেপ্ববা নেখকক উঁসোহ বঁঢ়ৌনেক খছি. তগসঁ ঋষ্যশৃংগ শোধ সংস্থান দিসসঁ খগ প্বনীত কাজ নেন হম ন্যাসক খধ্যক্ষ শ্রী জ্যাতীদ্র নাথ পাল্ডয, খপব সমাহর্তা, মধেপ্ববা খা শ্রী বাম নাবাযণ মংডন, খন্বমংডন পদাধিকাবী, মধেপ্ববা কে ঁ হার্দিক ধন্যরাদ জ্ঞাপিত কবৈ ছী.

ন্যাসক প্রাথমিকতাক কংডিকা 3 খা 6 ক মোতাবিক, ন্যাস দ্বাবা ভূমি খা ভরন কে ঁ খারংঠিত কবৈ নেন নেখক দ্বাবা খন্ববোধ কএন গেন খছি, জগসঁ ঋষ্যশৃংগ শোধ সংস্থান সিংহেশ্বব স্থানমে কার্যবত ভ’ সকএ. জাধবি ভূমি খা ভরনক খারংঠন নৌ ভ’ জাএত, তাধবি একব হ্মখ্যানয কনা হ্মটীব, খশেষ মাস্ক্র, নক্ষ্মীপ্বব হ্মহন্না, মধেপ্ববামে বহত. হমবা পূর্ণ রিশ্বাস খছি জে ন্যাসক মাননীয রিদ্বান পদাধিকাবীগণ জন্দিযে খগ শোধ–সংস্থান নেন ভূমি, ভরনক ব্যরস্থা কবত.

হমব মমতামযী মামীজী স্বর্গীয সারিত্রী দেরী সিখরান খা খনংত শ্রী রিভূষিত, পূর্ব

ঋধ্যক্ষ ঋখিন ভাবতীয সিখরান মহাসভা, হমব পূজ্য মামা শ্রী স্বর্গীয কন্হৈযা নানজী পংডিত ঋপ্পন ঋধ্যক্ষ পদসঁ ম্নঞ্জ হোগ ক’ রাঁদ বাজস্থান গেস্ট হাঁউস, কনকত্তা মে ঋপ্পন কার্যকানমে কএন গেন কাজমে সঁ এক কে ঁ পূবা নৈ হোগসঁ দ্খী ছন. ঋষ্যশ্রৃংগক পারন চিত্রক সংগ–সংগ হ্নকা সঁ সংবঁধিত একটা প্রামাণিক আ গরেষণামেক পোথীক বচনা নৈ ভেন. হ্নকব গচ্ছা ঋগ পোথী বচনাক সংগ পূবা ভ’ বহন ঋছি. আহ, আগ জৌঁ ও দ্নূ জীরিত বহতিঐ তঁ কতেক প্রসন্ন হেতিঐ.

ঋষ্যশ্রৃংগক ভব্য সংগমবমবক মূর্তি সিংহেশ্বব মংদিবমে হমব মাতাশ্রী পার্বতী দেরীক আদেশানুসাব হমব পূজ্য পিতাশ্রী (স্বর্গীয) মোহননান জী পাল্ডযক স্মৃতিমে হমবা দ্বাবে স্থাপিত কএন গেন ঋছি. দিনাংক 20.06.2002 ক গংগা দশহবাক দিন বৈদিক মংত্রাচাবণক সংগ একব প্রাণ প্রতিষ্ঠা কএন গেন. ঋগ তবহে ঋষ্যশ্রৃংগ মহাবাজ সেহো এতএ স্থাপিত ভ’ চ্কন ছথিন. হ্নকব সংবঁধ মে ঞা গরেষণামেক পোথী প্রকাশিত ভ’ চ্কন ঋছি. আবঁ দোসব শোধ কার্য, ঋধ্যযন আদি চনৈত বহএ, ঐ নেন ভূমি, ভরন আ রিত্তক আরশ্যকতা ঋছি, জেকবা পূবা কবৈ নেন মংদিব ন্যাস সঁ ঋনুবোধ কএন জা চ্কন ঋছি.

ঋষ্যশ্রৃংগঃ মহাপ্রাজ্ঞঃ শান্তঃ শান্তাধিনাযকঃ

प्रज्ञानिमानी मूर्धानि सफलानि कृविश्वगे.
श्रृष्यश्रृंगाय कृनये, रिभाण्डक स्वते रै
नमः शान्ताधिपतयेसद्यः सद वृष्ठि हेतये.
पर्जन्य सूक्तक उपवका चारि नागनक संग हम अप्पन पूर्वज श्रृष्यश्रृंग के सादर प्रणाम करैत छी. विद्वान लेखक के साधुवाद दै छी आ

सिया राम मय सब जग जानी
करहु प्रणाम जोरि युग पानी.

श्री गोपाल पंडित

फ्लाइर-236,
सेक्टर-12,
नोएडा-201301

लेखकीय

श्रृष्यश्रृंगक विराट व्यक्तित्वके आंकब हमरा सन मंत्रहीन, क्रियाहीन आ तुच्छ प्राणी लेल कतेक संभव अछि, एकरा हम स्वयं बुझैत छी. हृदा संतोषक गप ई अछि जे अप्पन युगक अग महान वेदपुरुषक जन्म जइ कौशिकीक तटपर भेल छल, ओइ तटक वासी हमहु छी. हमरो जनम ओइ कौशिकीक तटपर भेल अछि. हम सभ एक्के ठामक वासी छी.

वन्ध्यानां पुत्रकर्ता त्वं सद्या वृष्ठि प्रदायिने.
श्री विभांडकक पुत्राय कौशिकी तीर

ৰাসিনে.

খগ তবফেঁ ঋষ্যশ্রৃংগক সংবঁধমে কিছু কহৈক দাযিত্ব হমবো খছি. হম খগ দাযিত্বক নির্বাহ কতএ ধবি কেনৌং, ওা রিদ্বান পাঠক খগ গ্রংথক খনুশীনন ক’ হমবা সূচিত কবৈক কৃপা কবৱ.

হমব ঋষিবাজ কোশী ক্ষেত্রক সাংস্কৃতিক সংবাহক ছন, ঋদা সহিষ্ণু. উঁত্তব রৈদিক কানমে রিবোধী সভকেঁ পবাজিত কবৈ নেন ঋষিগণ শাস্ত্র, শস্ত্র খা শাপক সহাবা নৈত ছন. প্রাযঃ সভটা ঋষি এহন কেনে খছি. ঋদা ঋষ্যশ্রৃংগ একব খপরাদ ছন. ও কহিযো শস্ত্র নৈ উঁঠৈনক খা নৈ কেকবো শাপ দেনক. ও শাস্ত্রক খধ্যযন, খধ্যাপন, খনুশীনন, কতেক বাস যজ্ঞক সংপাদন, নোক কন্যাণ খা নোক মংগনমে খপ্পন সম্পূর্ণ জীরন নগা দেনক. ওা খছি কোশী খংচনক রিভূতি ঋষ্যশ্রৃংগক গৌববোজ্জ্বন বৃতাংত খা হ্নকব দ্বাবা পুনর্জাগ্রত শ্রৃংগেশ্বব (সিংহেশ্বব) ক সংক্ষিপ্ত পবিচয.

ঋষ্যশ্রৃংগ রংশোদ্ভব হাববিসগংজ, খববিযা নিরাসী, সম্প্রতি নোএডামে ব্যরসাযবত শ্রী গোপান পংডিতক ঋণী ছী, জে তগাদা পব তগাদা ভেজ হমবাসঁ পোথীক বচনা কবেনক খা একব সংপাদন কেনক. হ্নকব মমতামযী মাতা পার্বতী দেরীক সেহো খাশীর্বাদ হমবা ভেটৈত বহন.

মধেপ্ববাক রবিষ্ঠ খধিরঞ্জা খা সাহিত্যকাব শ্রী শিরনেশ্ববী প্রসাদসঁ খনরবত প্রেবণা ভেষ্টৈত বহন খা সদিখন হ্নকব দেন গেন পবামর্শ খমূন্য সিদ্ধ ভেন. কৌশিকী ক্ষেত্র হিন্দী সাহিত্য সম্মনেন, মধেপ্ববাক সচির খা করি নেখক ডা. ভূপেন্দ্র নাবাযণ যাদর ‘মধেপ্ববী’ পোথীক পাণ্ডুনিপি খপ্পন দেখ–বেখমে তৈযাব করেনক. ও হম্মব ভাবকে ঁ হন্ত্বক ক’ দেনক.

মিত্রবব শ্রী ভোনা প্রসাদ সিন্হা খা শ্রীমতী রিমনা সিন্হাক রিদ্ষী খামেজা ডা. নীনা সিন্হা, হমব রিদ্বান খামেজ ডা. খবরিন্দ ক্ষমাব শ্রীরাস্তর খা হমব ধর্মপ্বত্র শ্রী সংজীর ক্ষমাব সিন্হা, খধিরঞ্জা, পটনা উঁচ ন্যাযানয খা ধ্বষ্যশ্রৃংগক রংশজ শ্রী এস.এন.ত্রিপাঠী. ডী.সী.পী. বাজস্থান প্বনিস, জযপ্বব সেহো কতেক বাস সামগ্রী দ’ ক’ খগ পোথীক রিষয রস্ত্ত্ব রিশ্লেষণ ক’ রেঁসী গল্পেষণামেক রঁনা দেনক. হম হ্নকা প্রতি প্রেম খা স্নেহ ব্যক্ত করৈ ছী. ওগ সভ নোক খপ্পন সাবস্বত সাধনা সঁ খগ কোশী খংচন কে ঁ পল্লরিত, প্বষ্পিত খা হবিত করৈত বহএ, যএহ কামনা খছি.

ধ্বষ্যশ্রৃংগক সস্বব চম্পানগব, নাথনগব, ভাগনপ্ববক নিরাসী হম্মব সম্মানিত সমধি শ্রী চাঁদ রিহাবী নান খা হ্নকব জমাতা হমব জেষ্ঠ খামেজ খানংদ ক্ষমাব শ্রীরাস্তর সঁ রঁড বাস মহত্ত্বপূর্ণ তথ্যক জানকাবী

भेटैन. हुनका प्रति हमर असीम स्नेह अछि. अहि पोथीमे जे दुर्लभ चित्र संलग्न कएल गेल अछि, ओ श्रीमती राजरानी पंडित आ हुनकर कनिष्ठ आमेज श्री कामेश्वर सिखरान आ ओहि फोटोके सर्वेक्षक फिनिशिंग आ करब पृष्ठ हुनकर दोसर आमेज श्री संजय सिखरान, नोएडा तैयार केने अछि. एकर संगे अहि पोथीक मुद्रणक सर्वाधिक काज श्रीमती संगीता राजेश शर्मा (सिखरान), शाहदरा, दिल्ली अपन देखरेखमे सम्पन्न करेने छथिन. हुनका प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करै छी. सर्वोपरि हम परमपूरी पीठाधीश्वर स्वामी श्री केशवानन्द पुरीजी महाराज महामंडलेश्वर (निरंजनी) क आभारी छी जे अहि पोथीकेँ मुद्रण पूर्व पढ़ि क' एकर तथ्य प्रमाणिकतापर अपन मोहर लगाक' हमर अपन स्नेहाशीष प्रदान केलक.

हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ'

कला कुटीर,
अशेष मार्ग, मधेपुरा,
बिहार-852111

विषय-सूची

2. नेखकीय

3. प्रथम पविछ्छद

अंग महिमा, प्राचीन निरासी, कौशिकी महिमा, पुण्याश्रम

4. दोसब पविछ्छद

ऋष्यश्रृंगक जन्म वृतांत, ब्रह्मचर्य आ अध्ययन, अंग नरेश रोमपाद वृतांत, ऋष्यश्रृंगक मानिनी प्रस्थान, मानिनीमे वृष्टि आ पुत्रेष्टी यज्ञ.

5. तेसब पविछ्छद

अयोध्या मे अश्वमेघ यज्ञ आ पुत्रेष्टी यज्ञ

6. चाबिम पविछ्छद

ऋष्यश्रृंग आश्रमक स्थापना, वेदक मंत्रदृष्टा ऋष्यश्रृंग, यजुर्वेदक विभाजन, माध्यन्दिन शाखा, आश्रम व्यवस्था, यज्ञ, सभ्यताक समन्वय, दक्षिणाहमे तपस्या, श्रृंगवेवपुव वृतांत, पुण्याश्रममे द्वादश यज्ञ, महानदीक प्रगर्ट होयब, वंश-विस्ताब

7. पांचम पविछ्छद

ऋष्यश्रृंगक समकालीन दोसर चर्चित ऋष्याश्रम, सिद्धाश्रम, राजा जनकक आश्रम, भारद्वाज आश्रम, अगस्त्याश्रम, महर्षि अत्रिकक आश्रम, वाल्मीकि, वशिष्ठ, शौनक, स्वतीक्ष्ण आदिक आश्रम.

8. **छठम परिच्छेद**

ऋष्यश्रृंगक श्रृंगेश्वर (सिंहेश्वर स्थान) पौराणिक आ परवर्ती साक्ष्

किरातक भूमि

कुषाण वंशीय राजभर

निषादक धरती

मूर्ति स्थापना

सिंहेश्वर मेला.

9. **सातम परिच्छेद**

उपसंहार

10. **परिशिष्ठ**

क) प्रत्रेष्ठी यज्ञ

ख) ऋष्यश्रृंगक सास्वर मानिनी (ऐतिहासिक आइनामे चम्पानगर)

ग) शंकराचार्य आ सिंहेश्वर (जगत प्रसिद्ध शंकर

মংডন মিশ্ৰ শাস্ত্ৰাৰ্থ সিংহেশ্ৱবমে)

11. সহাযক আ সন্দৰ্ভ গ্ৰংথক সূচী

ঋষ্যশ্ৰৃংগ আ হ্নকব আশ্ৰমক স্মবণ কবৈত

পহিল্বক পবিচ্ছেদ

অংগ মহিমা

প্ৰাচীন অংগক নিৰ্মাণকেঁ নঽ কঽ কতেক বাস কথা প্ৰচনিত অছি। রাল্মীকি বামাযণক হ্মতারিক, জতএ শোভাশানী কামদের অপ্পন অংগ ছোড়়নে ছন, ও অংগ দেশক নামসঁ রিখ্যাত ভেন।
অযোধ্যাসঁ সিদ্ধাশ্ৰম জাএ কঽ রাঁপ্তমে বাম-নক্ষ্মণক সংগ রিশ্বামিত্ৰ এক বাতি গংগা আ সবযূক কাতমে রিতৌনে ছন। ওতএ শুদ্ধ অংত:কবণরঁনা মহৰ্ষি সৱঁহক পরিত্ৰ আশ্ৰমক পবিচয দৈত রিশ্বামিত্ৰ রাঁজন ছন জে কহিযো এতএ ভগরান শির চিত্তকেঁ একাগ্ৰ কঽ তপস্যা কবৈত ছন। ওগ কান কামদের মূৰ্তিমান ছন। ও অপ্পন দেহ ধাবণ কঽ রিচবণ কবৈত ছন। এক দিন ভগরান শির সমাধিসঁ উঁঠি কঽ মকুদ্গণক সংগ কত্তৗ জা বহন ছন। ওগ কান ও দুৰ্বুদ্ধি হ্নকাপব আক্ৰমণ কঽ দেনক। ভগরান শির হুংকাব কঽ হ্নকা বোকনক আ অরহেনেনাপূৰ্বক ওকবা দিস তাকনক। ফেব তঁ কামদেরক সভটৗ অংগ হ্নকব দেহসঁ জীৰ্ণ-শীৰ্ণ হ্অএ নাগন। কঠিন তাপসঁ দগ্ধ ভেন কামদের ওতএসঁ ভাগি গেন। জগ ঠাম পব কন্দৰ্পক দেহ পূবা তবহে নষ্ঠ

ভেন, রএহ প্রদেশ শ্বংগ দেশেক নামসঁ রিখ্যাত ভেন। [1] শ্বংগ দেশেক নামকবণ ওত্তক্কা একটা বাজা শ্বংগক নামপব ভেন ছন। শ্বানর বাজ্য, জকব ধূবী শ্বংগ ছন, পাঁচ টা বাজ্যমে রিভঙ্ক ছন, জকব নামকবণ বাজা রঁনিক পাঁচটা প্বত্রক নামপব ভেন ছন। শ্বানরক শ্বধিকাবমে সংপূর্ণ পূর্বী রিহাব, রঁগান শ্বা উঁড় ীসা ছন, জগমে শ্বংগ, রঁগ, প্ব ড্র, স্বহা শ্বা কনিঁঙ্ক বাজ্য ছন। শ্বগ মে শ্বংগ একটা রঁড় শক্তিশানী জনপদ ছন। রাল্মীকি বামাযণক ঙ্কতারিক স্বগ্রীর সীতাকেঁ তাকৈ নেন শ্বপ্পন রানব সৈনিককেঁ পূবরঁক দেশেমে ভেজনে ছন,জগমে শ্বংগ সেহো একটা ছন। [2]
তগ কানমে শ্বংগক রিস্তাব শ্বসীম ছন। কিএকি রঁনি প্বত্র শ্বংগক রাঁকী চাবি ভাযক বাজ্যক সত্তাক কেঁদ্র শ্বংগ

---

[1] तत्र गात्रं हतं तस्य निर्दग्धस्य महात्मनः

अशरीरः कृतः कामः क्रोधात देवेश्वरेण

अनंग इति विख्यातस्तदा प्रभृति राघव

स चांग विषयः श्रीमान यत्रांग स मुमोचह.

बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड 23/13,14

[2] ब्रह्म मालान विदेहांश्च मालवान कासि कोसलन

मगधांश्च महाग्रामान पुंड्रा स्त्वंगा एतथैव च.

रामायण, किष्किन्धा कांड 40/42

বাজ্য ছল।
ঞ তথ্য সেহো বিচাবণীয অছি জে মহাভাবতক (শাঁতিপর্ব, 296) ম্ন্তাবিক, আদিকানমে চাবি টা গোত্র ছল, ভৃগু, অঁগিবা, বশিষ্ঠ আ কশ্যপ। ঋগ্বেদক দোসব, তেসব, চাবিম, ছঅম আ আঠম মংডনমে জগ ঋষি সভকেঁ মংত্র প্রাপ্ত হোগত অছি ও অছি, গৃৎসমদ, গৌতম, ভাবদ্বাজ আ কণ্ব। আচার্য অশ্বিনাযন অষ্ঠম মংডনক বংশকেঁ গোত্র ঘ্যাতক মানৈত অছি, সংগ-সংগ অগ মংডনক ঋষিক প্রগাথা সেহো কহল জাগত অছি। হ্নকা অনুসাব, অগ মংডনক পহিল্বক সূক্তক ঋষি প্রগাথ ছল জে স্বযং কণ্ব বংশী ছল। অগ মংডনক এগাবহ বানখিল্য মিন কঽ হ্মন ১০৩ সূক্ত কণ্বক অছি। গৌতম আ ভাবদ্বাজ অঁগিবা বংশক মানল জাগত অছি আ কণ্ব সেহো অঁগিবসেক অছি। অগ তবহেঁ অগ পাঁচ মংডনমে অঁগিবসক প্রধানতা স্বযং সিদ্ধ অছি।[3] অগ মংডনক ঋষি হ্মন অঁগিবস, অঁগ দ্বীপক ঋষি ছল। স্বযং ঞংদ্রক ঐবাবত হাথী পদমর্দন কঽ দেনে ছল, অগসঁ তমসাএল দুর্বাসা ঞংদ্রকেঁ শাপ দঽ কঽ হ্নকা সত্তাচ্যুত কঽ দেনখিন। ঞংদ্র বাজা বঁলিসঁ সহাযতা মাঁগনক। বাজা বঁলি ঞংদ্রক সংকেতপব দেবলোকেপব অধিকাব কঽ লেনক। বঁলি অঁগদ্বীপক বাজা ছল।[4] ও অপ্পন পাঁচ শক্তিশালী পুত্রমে অঁগক জনপদ বাঁটি হ্নকা সভকেঁ ওগ

---

[3] दृष्टव्य जर्नल बिहार रिसर्च सोसाइटी भाग 28 अंगिरस

[4] दुर्वासा सेहो अंग्ग देशक ऋषि छल.

जर्नल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल १९०९, पृष्ठ. 10

ठामक बाजा बँना देनक। एकव बांदो श्वंग श्वस्वब–स्वब संस्कृतिक ऋख्य केंद्र छन। ध्वृग्वदसँ स्पष्ठ ज्ञात होगत श्वछि जे श्वंगिबस श्वा ह्नकबे रंशज यज्ञ कर्मक जनक छन। ओ श्वग बहस्यक पहिन्वक ज्ञाता छन जे यज्ञाग्नि काष्ठामे निहित छन। श्वग तबहँ श्वंगिबिस सभ श्वग्निक प्रयोगसँ सभसँ पहिन्वक यज्ञासेरक नीर देने छन।

प्राचीन भावतमे जे सोनह महाजनपदक चर्चा श्वछि, ओगमे श्वंग प्रऋख छन। शेष महाजनपद छन,मगध, काशी, कौशन, बॅज्जि, मन्न, रसे, चेदि, पांचान, ऋक, मत्स्य, शूबसेन, श्वश्मक, श्वरन्ति,गान्धाब श्वा कम्बोज।

श्वंग श्वा मगधमे निबंतब संघर्ष चनैत बहैत छन। बुद्धक कानमे मगधक बाजा रिम्बिसाब श्वंगकेँ जीत कऽ मगधमे मिना नेने छन।

श्वंग रा श्वग पूर्री प्रदेशक नोग श्वा बाजतंत्र ब्रॉाह्मण ग्रंथमे ब्राह्य नामसँ जानन जागत श्वछि। ब्राह्यक शाब्दिक श्वर्थ श्वछि ब्रतकऽ धाबण कबैबॅना ऋदा एतए एकब प्रयोग बॅड़ गर्हित श्वर्थमे भेन श्वछि। एकब तात्पर्य श्वछि श्वनार्य, बैदिक कर्मकांड रिबोधी श्वा बर्णसंकब। सारित्री श्वा उँपनयनसँ भ्रष्ठ द्विजातिकेँ मन्वस्मृतिमे ब्रॉाह्य कहन गेन श्वछि।

द्विजाह: सरर्णास्तु जनयन्तव्रताश्च यान।

तान सारित्री पबिभ्रष्ठान ब्राह्यानिति रिनिर्दिशेत। ।

मन्वस्मृति 10/20

महाभावतमे ब्राह्यकेँ पातकी कहन गेन श्वछि। एकबा ऋतारिक, ब्राह्यकेँ श्वाग नगारैबॅना, रिष दैबॅना,मदिबा बॅचैबॅना, ऋसीद भक्षण कबैबॅना, मित्र द्राही, भ्रूण

व्यावा, व्यभिचारी आ ब्रह्मघाती कहल गेल अछि। [5] अंग तवहुँ ब्राह्मण ब्राह्मण ग्रंथमे पतित कहल गेल अछि।

वेदमे सेहो अंग ठामकेँ बड़ हेय दृष्टिसँ देखल गेल अछि। ऋग्वेदक प्रमगन्द शब्द अंग वंग आ मागध लेल प्रयुक्त भेल अछि। मागधकेँ वेदमे कीकट कहल गेल अछि। एहन लागैत छै जे संपूर्ण पूर्वी प्रदेश कोनो सांस्कृतिक अभिशापक आगिमे झुलसि रहल अछि आ वैदिक राजनीतिक शिकार बनि गेल अछि। अंग ठामक लोकक लेल छुनल-छुनल खराब शब्दक प्रयोग करबामे नै तँ वेद मंत्रकार पाछाँ रहल आ नहियेँ महाभारत व्यासे। ऋग्वेदमे एकटा ऋषि इंद्रसँ प्रार्थना करैत अछि, मगधक गाय कोन काजक अछि जकर दूध यज्ञमे अहाँक काज नै आबैत अछि। (यानि कीकटैक गायक दूध सेहो अपवित्र अछि आ ओकरासँ यज्ञ कर्म करबाक लेल वर्जना अछि) सोमरसक संग मिल कए ओ दूध यज्ञपात्रकेँ गर्म नै करैत छै। तएँ हे इंद्र! ओइ नैचाशाख प्रमगन्दक (निचला शाखाक अंग बंग आ मागध) ओ धन

---

[5] अंगारदाही गरदः कुंडाशी सोम विक्रयो

पर्वकारश्च सूची च मित्रधक् परिदारिकः

भ्रूणहा गुरुतल्पीच यश्च स्यात्पानपो द्विजः

सुवप्रग्रहणो व्रात्याः कीं नाशश्चात्म वानपि

महाभारत, उद्योग पर्व 35/46-48

ষ্মবা দিথ। [6]
ঋথর্ববেদ তঁ এক ডেগ ঋওব ঋাগূ ঋছি। ঋথর্ববেদক একটা ঋষি কহৈত ঋছি, জেনা মনুখ ঋা ভঁপভোগক ঋন্য সামান এক ঠামসঁ দোসব ঠাম ভেজল জাগত ঋছি, ওগ তবহেঁ জ্বৰকেঁ গন্ধাব ভূজবান,ঋংগ, মগধ প্রদেশমে ভেজি দেল জাগত ঋছি। [7]
ঋাখিব বেদ ব্রাহ্মণ গ্রংথকেঁ ঋগ প্রদেশপব এতেক কোপ কিএ ঋছি ? ঋাঙঁ, রিচাব কবী। ব্রাহ্মণ দ্বাবা রিনির্মিত জগ যক্ত–যোগাদি ক্রিযাক ভঁদয সপ্ত সিংধুক ঘাটীমে ভেল, বঁড় জোব মাবনাক বাঁদো ঙা রিধি–ক্রিযা ভাবতক ঋগ পূর্ব ক্ষেত্রমে ঋপ্পন জড় নৈ জমা সকল ঋা নে ব্রাহ্মণবাদ ঋা ব্রাহ্মণ রিচাবধাবা ঋগ ভাগমে ঋপ্পন সত্তা কাএম কঽ সকল। কিএকি ব্রাত্য ঋার্য ভেলাক বাঁদো বৈদিক কর্মকাল্ড, পশু হিংসাবঁলা যক্ত ঋা বঁড় খর্চবঁলা রিধি কর্মক রিবোধী ছল।
ব্রাহ্মণ ঋপলো ঋগ ধবতীপব বঁসৈ নেল নৈ চাহৈত ছল। এত্তক্কা নিবাসী স্বতংত্র রিচাবক, জ্ঞানী ঋা তপস্বী ছল।

---

[6] किन्ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो ना शिरं दुहं तपन्ति धर्मम

आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाख मधवन रन्धाया नः

ऋग्वेद 3.53.14

[7] गन्धारिभ्यो मूज्वदभ्यो अन्गेभ्यो मग्धेभ्यः

प्रेष्यन जनमिव शेवधि तुक्मानं परिदभासी

अथर्ववेद 5/22/14/

ও অপন আচরণ, ব্যবসায আ সংস্কৃতিপর ব্রাহ্মণক ছাযা ধরি সহন করৈ লেল তৈযার নৈ ছল। জে কোনো ব্রাহ্মণ তপস্বী তপস্যাক লেল অগ ক্ষেত্রমে ছল, সেহো কমনক তরহেঁ জনসঁ উঁপর ছল। হুনকা এত্তক্কা ব্রাহ্মসঁ কোনো সংপর্ক নৈ ছল। স্বয়ং ঋষ্যশৃঙ্গ নঃ কঃ রামাযণকার বাল্মীকি কহৈত অছি- সদিখন পিতাক সংগ রহৈসঁ বিপ্রবর ঋষ্যশৃংগ কোনো দোসরাকেঁ নৈ জানৈত ছল।"[8] অতসঁ স্পষ্ট অছি জে ব্রাহ্মণ ঋষি জন-সামান্যক সংপর্কসঁ অপনাকেঁ অলগ রাখৈত অছি।

কৌশিকী মহিমা, পুণ্যাশ্রম

বিশ্বামিত্র সেহো তপস্যাক লেল অগ পূর্বী অঞ্চলকেঁ চুননে ছল। কৌশীক কাতপর ও বড় কঠিন তপস্যা কেনে ছল জতসঁ সৃষ্টিক মূলচক্রে হিল গেল ছল। এহন ভূভাগমে কতেক তত্ত্বজ্ঞানী ক্ষত্রিয-ব্রাহ্মণ কের চলাএল গেল বিধি ক্রিযাকেঁ লাগর্ প্রতিষ্ঠিত করৈপর জোর দেলক। অগ ভাগক পিছড়ল আ গরীর্ জনতাক লেল ও নর্ আ ক্রাংতিকারী মার্গ-পদ্ধতি অনুকূল সিদ্ধ ভেল।[9]

চারূ দিস নদীসঁ আচ্ছাদিত অংগক ও উত্তরর্বিযা হিস্সা, ঘনা জংগলসঁ পরিপূর্ণ ছল। একর রমণীযতা সেহো অদ্বিতীয ছল। তএসঁ মহর্ষি কশ্যপক পুত্র বিভাণ্ডক নামক ঋষি অপ্পন তপশ্চর্যাক লেল অগ

---

8 नान्यं जानाति विप्रेन्द्रो नित्यं पित्रनुवर्तनात

बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड 9/5

9 बौद्ध धर्म आ विहार, हवलदार त्रिपाठी सहृदय, पृष्ठ 8

ভূভাগকেঁ নীক ৱ্ঝনে ছল।
ব্ৰাহ্মণ গ্ৰংথক অনুসাৰে, বাজা ৱলি অংগক শাসক ছল। হুনকা কোনো সংতান নৈ ছল। হুনকৰ স্ত্ৰী সুদেষ্ণা দীর্ঘতমা নামক ঋষিসঁ পাঁচটা পুত্ৰকেঁ জন্ম দেলক। এ ঋষি আন্হৰ ছল।[10] মহাভাৰতক অনুসাৰে, এ ঋষি সভ লোকক সোঝাঁমে স্ত্ৰী সংভোগ কৰৈত ছল।[11] হুনকৰ পিতা ছল উত্তথ,জিনকৰ স্ত্ৰীকেঁ বৃহস্পতি ভগা কঽ লঽ গেল আ হুনকা সংগ সংভোগ কৰলক। বাদমে বৃহস্পতিকেঁ দংডিত কঽ উত্তথ অপ্পন স্ত্ৰীকেঁ ৱাপস আনি সুখপূৰ্বক ৰহএ লাগল।[12]
গৰ্হিত পৌৰাণিক মিথকীয কথা জান আ ওকৰ টীকাকাৰ, ভাষ্যকাৰ, ৰচনাকাৰসঁ ৱৰ্টৈত এ কহএমে কোনো সংকোচ নৈ অছি জে পূৰা অংগক ৰাসী আ ৰাজতংত্ৰ আৰ্য আ অনাৰ্য সংস্কৃতিক সংগমপৰ ফল-ফুলি ৰহল ছল। ৱিভিন্ন জাতি, ৱিচাৰ আ সংস্কৃতিসঁ সমন্বিত এ গনাকা প্ৰাচীন ষোডশ মহাজনপদমে প্ৰমুখ ছল।[13]
ৱৈদিক গ্ৰংথমে জনাশয, জন আ ধাৱক প্ৰশস্তি অছি। ঋগ্বেদমে তঁ কতেকো ঋচামে এ অছি। জনক পৰিত্ৰতা প্ৰাকৱৈদিক অছি যানী আৰ্যকেঁ আৱএসঁ পহিলেসঁ অছি। একৰ জীৱামো আ উৰ্বৰতাসঁ গহীৰ সংবঁধ অছি। তএসঁ

---

[10] हरिवंश पुराण 31

[11] महाभारत आदिपर्व 104

[12] महाभारत अनुशासन पर्व 154

[13] शैव अवधारण और सिंहेश्वर स्थान, हरिशंकर 'शलभ', पृष्ठ 21

মহর্ষি কশ্যপক তেজস্বী পুত্র বিভাণ্ডক ঋষি অপন তপশ্চর্যাক লেল এহি কোশিকাচ্ছাদিত ভূভাগকেঁ সভসঁ উপযুক্ত বুঝলনি।
তীর্থ তপস্যাক লেল বৈ লোকত অছি। তীর্থক প্রথা তঁ অনার্য স্রাতসঁ গ্রহীত ভেল অছি। হিন্দূক সভটা তীর্থ আর্যক মূল স্থানসঁ বাহরক অছি। আর্যক আগমনসঁ পহিনে এতুক্কা ধর্মমে তীর্থ ছল। আর্যক সম্মিলন স্থল যত্ত ছল ওা অনার্যক তীর্থ। ওা তীর্থ শঙ্ক সেহো বেদবাহ্য অছি কিএকি বেদ বিবোধী মতকেঁ তৈর্থিক মত কহল জাগত অছি। তঁসঁ তপস্যাক লেল তীর্থ বৈ, অবণ্য ওা পবিত্র ধাবক কাত সভসঁ উপযুক্ত অছি। তঁসঁ ব্রাহ্মক ভূমি ভেলাক বাদো মহর্ষি বিভাণ্ডক উত্তবরবিযা অংগক সঘন অবণ্য ক্ষেত্রমে কৌশিকীক ধাবক কাতমে অপন আশ্রম বনেলে ছল। কোশী একটা পৌবাণিক ধাব অছি। একব কাতমে সাক্ষাত ভগবান শংকব বসৈ ছৈ। ওংদ্র, বিষ্ণু ওা ব্রহ্মা কেঁ ভগবান শিবসঁ ভেঁট কবহি কহ পূর্ব, নির্দিষ্ঠ ওা নির্ধাবিত ঠাম ওা কোশীক মনোবম তীব অছি।[14] অপন বহিন কৌশিকীক সংবধমে স্বয়ং বিশ্বামিত্র কহৈত অছি,

দিব্য পুণ্যাদকাবম্যা হিমবন্তম্পাশ্রিতা।
লোকস্য হিত কার্যার্থো প্রবৃত্তা ভগিনী মম।।[15]

অপন বহিনক প্রতি স্নেহক কাবণ এহি কাজমে বিশ্বামিত্র নিঅমসঁ বড় স্বখসঁ নিবাস কবৈত ছল। ও যত্তসঁ জুড়ল অপন নিঅমক সিদ্ধিক লেল অপন বহিন

[14] কুমার সংভব সর্গ 6 শ্লোক 33

[15] বাল্মীকীয রামাযণ বালকাণ্ড সর্গ 34 শ্লোক 9

কৌশিকীক সানিধ্যকেঁ ছোড়ি সিদ্ধাশ্রম আএল ছল। অগ কৌশিকীক কাত বিশ্বামিত্র সহস্র বৰখ ধবি ঘনঘোব আ অতিশয় কঠোব তপস্যা কেলে ছল জগসঁ সভটা সৃষ্ঠি চঞ্চ হিল গেল ছল।

কৌশিকী তীব মসাধ তপস্তুপে স্বদাৰুণম
তস্য রর্ষ সহস্ত্রাণি ঘোবং তপ উঁপাসতে।
বামাযণ 1–34–25

বাল্মীকি বামাযণমে কতেকো রৈব *কৌশিকী সবিতা রবা* (সভ ধাবমে শ্রেষ্ঠ কৌশিকী) বাঁলকান্ড শ্লাক 11, *কৌশিকী সবিতা শ্রেষ্ঠা কুলো দ্যাতকাবী তর* (ধাবমে শ্রেষ্ঠ কৌশিকী সেহো অপ্পন কুলক কীর্তি কেঁ প্রকাশিত কবৈরানী ছথিন। শ্লাক 21) জেহন উঁক্তি আএল অছি, জগসঁ পুণ্য সনিলা কোশীক মহিমা বেখাঁকিত হোগত অছি। তগসঁ কশ্যপ পুত্র মহর্ষি বিভান্ডকক তপস্যা নেল কোশীক কাত সভসঁ উঁপযুক্ত ছল, অতএ বিশ্বামিত্র কঠোব তপস্যা কঽ কতেক বাস সিদ্ধি প্রাপ্ত কেলে ছল।
ধাবক কাত স্বদূব ধবি ফৈলল পৈঘ পাথবক অদ্ভুত শ্রৃংখলা সেহো বিদ্যমান ছল, জে কোশীক তীব্র ধাবকেঁ নিযংত্রিত কবৈত ছল। নগভগ সাঠি সাত হজাব বৰখক ভৌগোলিক পবিবর্তনক পবিণামস্বরূপ ও পাথবক (চষ্টান) শ্রৃংখলা জমীনক ভীতব গহীবমে চলি গেল আ ওকব উঁপব মাটিক মোটকা পবত জমৈত গেল।[16]

---

[16] सिंहेश्वर महादेवक लिंग बाह्य रूप सं तीन गुना मोट आकारक नीचां पसरल अछि आ ओ विशाल चट्टानसं सेहो जुडल अछि. अहि

रेगरती नदी, रिशान चट्टान, बमणीय प्रकृति, समिधा बौह्न्य, आौषधिय़ुक्त रनस्पतिसँ आच्छादित अबण्य आ कनाँच भबैत मृगादि रन्य पशु, एहन शांत स्थानमे छल रिभाण्डक ऋषिक आश्रम, कोशीक धावक कज्जल रनमे। कोशी आ ओकब छाड़न धावक कातपब अप्पन सघनताक लेल प्रसिद्ध कज्जल रन स्थित पुण्याश्रम पूबे आयरिर्तमे प्रसिद्ध छल। ओ क्षेत्र अस्वबक प्रभारसँ सेहो मुक्त छल। तएसँ एतए कइ ऋषि आश्रम निबापद छल। एतए निर्रिघ्न रेद पाठ चलैत छल आ आश्रमरासीक समए समिधा संचय, अग्निहोत्र आ कृषि काजमे ब्यतीत होएत छल। ओ आश्रम ऋषि आ कृषि पबंपबाक अद्भुत संगम स्थल छल। भूमि बँड़ उर्रबा छल। महर्षि रिश्वामित्र अप्पन कालक महान कृषि रैज्ञानिक सेहो छल। हुनकब तपस्या आ प्रयोग स्थल कोशीक मनोहब तट सेहो छल। पूबा एलाका रन्य पशुक अभ्याबण्य छल। रिश्वामित्र केब अप्पन कठोब तपस्यासँ उर्जारान बँनाएल एलाका रुनि रिभाण्डक लेल सर्रथा उपयुक्त छल। अप्पन रंश पबंपबाक अनुरूप ओ सेहो रिपुल प्रतिभाक पुंज छल। महर्षि ब्यास हुनकब रंश पबिचय एना देने अछि:–

मबीचि: मनसस्य जज्ञे तस्यापि कश्यप: ।
मश्यपाकोबश्यप: जात: तस्यस्वतो रिभाण्डक: ऋष्यश्रृंग
तस्य पुत्रास्ति । । [17]

ब्रह्माक मानस पुत्र मबीचक पौत्र रिभाण्डक छल। उच

विशाल चट्टानक कारण कोशीक उफनैत धार मंदिरके क्षतिग्रस्त नै क’ सकैत अछि.

17 भागवत स्कन्ध 9 अध्याय 1

रंशोद्भर ओ ऋषि रेद रिहित संस्कावसँ संपन्न छन। कोशीक कातक ओ कज्जन रन ह्नकव साधना तपस्याक नेन पूर्ण उँपयुक्त आ निवापद छन।
अति प्राचीन कानमे (महाभावत, प्ववाण, रवाहमिहिव आ भास्कावाचार्यक मतानुसाव) भावत नौ खंडमे रिभक्त छन। ओ खण्ड
छन, ञंद्र, कसेकुमत, ताम्ररर्ण, गभस्तिमत, कुमाविक, नाग, सौम्य, रकुण आ गान्धर्र। पौवाणित साक्ष्य आ एकव पहचानक जे संकेत भेटैन अछि, ओकव अनुताविक पूर्री भावतक ओ क्षेत्र ञंद्रखण्ड छन। अग क्षेत्रपव ञंद्रक रिशेष कृपा छन। तगसँ ओ सदिखन हविअव फन-फून आ धान्यसँ संपन्न क्षेत्र छन। धाव सदानीवा छन।
ऋग्वेदमे अंगक उँन्नेख नै अछि। तगसँ एहन नागैत अछि जे उँत्तव रैदिक कानमे अंग जनपदक उँदय भेन अछि। ऋग्वेदमे कीकट शर्ब्दक प्रयोग भेन अछि जेकवा मगध आ अंग क्षेत्रक नोक नेन प्रयोगमे आनन गेन हएत। अदा कतेक वास आचार्य एकवा सप्त सिन्धुक पर्रतीय भाग नेन सेहो प्रयुक्त करैत अछि।[18] जे भी भेन ह्अए, वामायण युगक आर्य सभ्यता केव अग क्षेत्रमे उँदय भऽ चुकन छन। अदा वाक्षसी सभ्यता अओव आर्येतव रानवी सभ्यता एतए अप्पन जमीन नै रॅना सकन छन। अग क्षेत्रमे स्थापित ऋषि आश्रम अध्ययन, अनुसंधान आ यज्ञादि क्रियाक संपादन नेन उँपयुक्त छन।

---

18 प्राचीन भारत की संग्रामिकता, पृष्ठ 61

दोसर परिच्छेद
ऋष्यश्रृंगक जन्मक वृतान्त

महाकाव्य, पुराण आ दोसर पुरना ग्रंथक निर्माण जनमे प्रक्षेपक शैरान जान कम नै अछि। प्रक्षेपमे संकलित पुराकथाक तात्विक नीर क्षीर विवेचन निष्पक्ष प्रवृत्ति रखा कऽ सकैत अछि। महाभारतक वनपर्वक 110 केर ओ वृतांत विश्वसनीय भऽ सकैत अछि जे महर्षि विभाण्डक मृगिसँ संभोग केने छल। कतेक परवर्ती ऋषिकेँ लऽ कऽ एहेन चर्चा अछि। ऋषि दम सेहो मृगिक संग संभोग केने छल। मृगवेशमे अप्पन कनियाक संग रतिक्रीड़ा करैत एकटा ऋषि पांडुक द्वारा वध कऽ देल गेल छल, आदि। (आदि पर्व 118)

मुदा, नहि तँ ओ विश्वसनीय अछि आ नहियो कोनो चिकित्साशास्त्रक आधार पर तथ्यपरक अछि जे कोनो मृगिक पेटसँ मनुखक शिशु जन्म लेने अछि। ऋष्यश्रृंगकेँ लऽ कऽ कतेक आधारहीन लोकोक्ति प्रचलित अछि। कतेक कथामे हुनका मृगिक पेटसँ जन्मल मनुखक लेनाक रूपमे देखाएल गेल अछि, जे पूरा तरहे भ्रामक अछि। महाभारत (शांतिपर्व 296) सँ ज्ञात होइत अछि जे वशिष्ठ, ऋष्यश्रृंग, कश्यप, वेद, तांड, कृपाचार्य, कक्षिवत,
कमठ, यवक्रीत, द्रोणाचार्य, आयु, मतंग, दत्त, द्रुमद, मात्स्य आदि ऋषि अशुद्ध योनीमे जन्म लऽ कऽ तपस्या कऽ मूल पिताक वर्णमे पहुँचल। एसँ ओ स्पष्ट अछि जे ऐ सभ ऋषिक माय आर्येतर आ ब्राह्मणेतर स्त्री छली। तँएसँ हुनका अशुद्ध योनि कहल गेल। मुदा कर्मक सिद्धांतक अनुसार, ओ ऋषि अप्पन कठोर तपस्या

आ साधनाक बॅल पर अप्पन पिताक कोटिमे पहुँचल। ओ स्मरण रहबाक चाही जे स्त्री योनीक बिना मनुखक संततिक उत्पत्ति असंभव अछि।

परना भारतक संस्कृतिमे आमेलात आ समन्वयक प्रवृत्ति एतेक प्रबल छल जे तहियौका दृष्टि आदिम समूह आर्य आ अनार्यक परवर्ती जुग मे ऐ तरहेँ परस्पर समन्वय भऽ गेल जे ओ अप्पन गुणक कर्मक अनुसार चारि वर्णमे बँटि गेल। पूर्व वैदिक कालमे आठ तरहक विवाह नै छल। ओ उत्तरकालक देन अछि, जे सूत्रकाल धरि आबैत-आबैत पूरा तरहे संगठित भऽ गेल छल। तहियौका समाज विवाहक सभ रूप केर मान्यता देने छल। स्थापना उत्तर वैदिक कालमे बड़ प्रचलित छल आ ऐ समन्वयवादी प्रवृत्तिक प्रवर्तक दूरदर्शी ऋृषिगण छल। ओ भारतीय समाजक उत्कर्षक ध्यातक छल।

महर्षि विभाण्डक उत्तर वैदिककालक ऋृषि छल। कोनो संदेह नै जे हुनकर स्त्री आर्येत्तर नारी छल। हुनका गर्भसँ एकटा प्रखर शिशुक जन्म भेल जे ऋृष्यश्रृंगक नामसँ विख्यात भेल अछि। "भागवत दर्शन"क कृतारिक, विभाण्डक त्यागी, तपस्वी, संयमी आ स्वाध्याय-परायण छल। एक दिन पोखरिमे ठाढ़ भऽ कऽ कृनि तप कऽ रहल छल। ओइ काल स्वर्गसँ उतरि कऽ उर्वशी ओतए नहाबैं लेल आएल। हुनकर अनुपम रूप लावण्य देखि कऽ कृनिक मन विचलित भऽ गेल। ओ अपनक ओइ अप्सराक सौंदर्य देखैत रहल। अनजानमे हुनकर वीर्य स्खलित भऽ गेल। ओइ काल आश्रममे पलय बॅला एकटा हिरणी जल पीबॅय लेल आएल छल। ओ जलक संग ओइ अमोघ वीर्यकेँ सेहो पीबॅ

নেনক। ও গর্ভরতী ভ২ গেন। ওকব উঁদবসঁ মহাঋনি ঋষ্যশ্রৃঙ্গ জন্ম ভেন।[19]

কহন জাগত অছি জে ও সাধাবণ হিবণী নৈ ছন। পূর্র কানমে ও একটা দেরকন্যা ছন। কোনো পুণ্যামো বাজাকেঁ দেখি কঽ ও হিবণী জকাঁ অপ্পন পৈঘ–পৈঘ আঁখিসঁ বাজাক অন্নবাগ পারৈক নেন হুনক রিনোক কঽ বহন ছন। ব্রাহ্মাজী কন্যাক ঐ অরিনয ব্যরহাবকেঁ দেখি কঽ তমসা কঽ শাপ দঽ কঽ মৃৎ নোকক হিবণী বঁনা দেনক। শাপমে আগূ ঙা ব্যরস্থা দেন গেন জে ওকব উঁদবসঁ যশস্বী ঋষিক জন্ম হএত, তখন ও শাপসঁ মুক্ত ভঽ জাএত। রএহ দেরকন্যা এতএ হিবণী বঁনি কঽ বহএ নাগন। ও অপ্পন শাপক খমে হেবাঁক প্রতীক্ষা কবৈত বহন। এক দিন উঁর্শী ওস্হবসঁ নিকনন। জখন ও অপ্পন সখীকেঁ হিবণীক রূপমে দেখনক তঁ ওগপব ওকবা বঁড় বাস দযা আরি গেনৈ। ও সোচএ নাগন জে কোন তবহেঁ ওকব উঁদবমে ঋষিক শুক্রাণু পহুঁচএ। ওগ কান পোখবিমে তপস্যাবত রিভাণ্ডক ঋষিপব উঁর্শীক দৃষ্টি পড়ন। ও নজ্জা ভবন ভারকেঁ দেখারৈত পোখবিমে উঁতবন আ নহারৈক বঁহানাসঁ অপ্পন সমূচা অংগকেঁ অনারৃত কবএ নাগন।[20] রিধিক রিধান, হুনিক দৃষ্টি হুনকাপব পড়ন। ও কামাত্তব ভঽ উঁঠন আ হুনকব রীর্য স্খনিত ভঽ গেন। মৃগী ওকবা পীবঁ গেন আ একটা পুত্রকেঁ জন্ম দঽ কঽ স্বর্গ

---

19 श्री भागवत दर्शन प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, पृष्ठ 59

20 अप्सरा शब्दमे अपक अर्थ जल होयत अछि, ताहि सं अप्सराक पइनमे उतरब ओकर स्वाभाविक गुण अछि.

সিধাবি গেনি। ঋনি রিভাল্ডক ওগ নেনাকেঁ গো দূধ পিযা কঽ পানন–পোষণ কবএ নাগন।
মহাভাবত আ শ্রীমদ্ভাগরতমে, রিভাল্ডক আশ্রমমে শাপিত দেরকন্যা মৃগীক উঁদবসঁ ঋষ্যশৃঙ্গক জন্মক উঁল্লেখ আছি।[21] আজুক কান মে আদিরাসী নোকমে পশুক নাম পব ওকব গোত্র জানন জাগত আছি, জেনা ডুঁগডুঁগ (মাছ), কচ্ছপ (কচ্ছুআ), হাঁসদা (হংস) আদি। ওগ তবহেঁ ঋষ্যশৃঙ্গক মাঁ মৃগ গোত্রীয আর্যেতব কন্যা ছন। ও একটা রূপরতী ছন উঁর্বশী তবহে। তগসঁ প্ববাণকাব হুনকা উঁর্বশীক সখিক তবহে উঁল্লেখ কেনে ছন। ঋষ্যশৃঙ্গক মাঁ কেঁ একটা হিবণ হেরৌক একটা মিথক আছি। ও অযোনিজ সংস্কৃতিমে জন্ম নঽ কঽ ওকব নৈসর্গিক গুণ ব রূপ সৌন্দর্যক পবিচাযক ছন। ওকব নাম মৃগমন্দা ছন। ও রূপরতী কন্যা আষাঢ় পূর্ণিমাক দিন একটা মহান শিশু কেঁ জন্ম দেনক জে সংপূর্ণ আর্যারির্তক তকোনীন গতিহাসকেঁ একটা নরঁ ধাবা প্রদান কঽ গবিমা যুক্ত কঽ দেনক।[22] বাল্মীকি বামাযণমে মহর্ষি কশ্যপক প্বত্র রিভাল্ডক আ মহর্ষি রিভাল্ডক প্বত্র স্বপ্রসিদ্ধ ঋনি ঋষ্যশৃঙ্গ ভেনা।[23] শাস্ত্রক গহন

---

[21] श्री भागवत दर्शन प्रभुदत्त ब्रहमचारी, पृष्ठ 60

[22] श्रीमद भागवत स्क. 9 अ. 1

[23] काश्यपस्य च पुत्रोअस्ति विभांडक इति श्रुतः

ऋष्यश्रृंग इति ख्यातस्तस्य पुत्रो भविष्यति

स वने नित्य संवृद्धो मुनिर्विनचरः सदा.

থন্বশীননসঁ এহন নাগৈত থছি জে ঋষ্যশৃঙ্গ থপ্পন পিতাক সংগ রনমে বহৈত ছন থা রনমে হুনকব নানন–পানন ভেন ছন। কোনো প্ববনকা মহাকাব্য, কাব্য রা পৌবাণিক গ্রংথমে হুনকব মাঁক উঁল্লেখ নৈ ভেটৈত থছি। প্রাচীন থাখ্যানমে যোনিজ থা থযোনিজ, ঐ দূ তবহক জাতক উঁল্লেখ ভেটৈত থছি। যোনি শব্দক থর্থ মূনত: "ঘব" হোগত থছি থা প্ববান গ্রংথমে ঐ থর্থমে একব প্রযোগ ভেটৈত থছি।[24] জিনকব জন্ম ঘবমে নৈ ভেন থছি, ও থযোনিজ সংতান থছি।
সীতা, শকুংতনা, দ্রৌপদী থাদি থপ্পন মাতা–পিতাক থযোনিজ সংতান থছি। যজ্ঞভূমি মে 'রামদেব্যব্রত" কেব উঁপেন্ন নেনা সেহো ওগ কোটিমে থাবৈঁত থছি। জগ নেনাক জন্ম থপ্পন ঘবমে ভেন ও যোনিজ কহাবৈঁত থছি। হম্মব রিচাবসঁ ঋষ্যশৃংঙ্গ থপ্পন পিতাক যোনিজ থা ৗবস সংতান ছন। জন্মক পশ্চাত ঋষি থপ্পন নেনাকেঁ থার্যেতিব মাঁ সঁ থনগ কহ রিদ্যাধ্যযন কেব থপ্পন তপোস্থনীমে বাখনক।
একটা দোসব বৃতান্তক হুতারিক, শিশ্বকেঁ জন্ম দহ কহ মাঁ স্বস্থ সিধাব গেনি। তগসঁ পিতা রিভাল্ডক থপনা নগ বাখি কহ শিশ্বক নানন–পানন থা সভটা সংস্কাব দেনক। মহর্ষি রিভাল্ডক ব্রাহ্মাক মানস প্বত্র মবীচিক

रामायण बालकाण्ड 9/3-4

[24] आरोहन्तु जान्यो योनि अग्रे (स्त्री पहिने घरमे प्रवेश करय)

तैत्तिरीय आरण्यक 6/1

देखू छान्दोग्योपनिषद (वामदेव्यवृत)

বংশ পবংপবামে পবম তেজস্বী আ বেদ কেব প্রকাংড পংডিত ছল। মহর্ষি ব্যাস একব বর্ণন এনা কেনে অছি,

মবীচি ঁমানসস্য জক্ষে তস্যাপি কশ্যপ: ।
মশ্যপাকোশ্যপ: জাত: তস্য স্বতো বিভাণ্ডক:
ঋষ্যশ্রৃঙ্গ তস্য পুত্রাস্তি । ।[25]

মহর্ষি বিভাণ্ডক পুত্র ঋষ্যশ্রৃঙ্গক ছহ বৰখক আয়মে উঁপনযন সংস্কাব কবা কঽ যজ্ঞোপরীত ধাবণ কবৌনক আ বেদ বিধিসঁ বেদাবংভ সংস্কাব কঽ গাযত্রী মংত্র প্রদান কেনক। ব্রাহ্মচর্য ধাবণ কবা কঽ ব্রাহ্মচাবী কঠিন ব্রত, তপ, স্বাধ্যায, প্রাত: সাযং গাযত্রী জপ আদি কবাবৈঁত বেদক অধ্যযন কবৌনক।[26]

ব্রহ্মচর্য এবং অধ্যযন

শ্রী ভাগরত দর্শক অনুসাব, বিভাংডক সোচৈত ছলা জে অপ্সবা উঁর্বশীক দেখনেসঁ হুনকব তেজ নষ্ঠ ভেল। তণসঁ ও অপ্পন নেনাকেঁ গনতীযোসঁ কোনো স্ত্রীক দর্শন নৈ কবাএত। ওকবা বিশুদ্ধ ব্রহ্মচাবী বঁনাএবঁ, ঙা সোচি কঽ ও অপ্পন নেনা ঋষ্যশ্রৃংগকেঁ আশ্রমসঁ বাঁহব নৈ জাগনে দৈ ছল। ও হুনকাসঁ তপ, অগ্নিহোত্র কবাবৈঁত ছল, বেদ পঠ়াবৈঁত ছল আ পৈঘ-পৈঘ ঋষিকেঁ ছোড়় কঽ ওকবা কেকবোসঁ ভেঁটৈ নৈ কবঽ দৈ ছল। স্ত্রীকেঁ তঁ ও অপ্পন আশ্রমক পবিধি ধবিমে পএবো নৈ বাখঽ নেন দৈ ছল। কোনো বুঁঢ় ঋষিক স্ত্রী সেহো ওতএ নৈ আবি সকৈত ছল। আবৈঁক গপ তঁ দূব, ও অপন

---

[25] श्री मदभागवत स्कन्द 9 अंक

[26] ऋष्यश्रृंग स्मृति ग्रन्थ कुंवर लाल शर्मा, कोटा, पृष्ठ 6

নেনাক খাগূ কোনো স্ত্রীক নাম ধবি নৈ নৈত ছন। ঋষ্যশৃংগ জানিতো নৈ ছন জে হ্মনিক খনাবেঁ কোনো খওব স্ত্রী–প্বরুখ হোগত খছি। ও নৈ তঁ কোনো নগ্র দেখনে ছন খা নহিযে নগ্রক কোনো রস্তুএ।[27]
ঋষ্যশৃংগক সময খগ্নি খা খপ্পন তপস্বী পিতাক সেরামে রিতৈত ছনৈ। স্ত্রীক খস্তিত্বক তঁ হ্নকা পতো নৈ ছননি। তকব রাঁদো ও রেদক পবগামী রিদ্বান ছন।[28]
বামাযণকাব হ্নকা শৃঙ্গিশোনী মহর্ষি কহনে ছথি। হ্নকা রিষয–স্বখক কনিযো টৌ জ্ঞান নৈ ছন। ও খখণ্ড ব্রহ্মচাবী ছন।

---

27 श्री भागवत दर्शन प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, पृष्ठ 61

28 तस्यैव वर्तमानस्य कालः समभिवर्तत

अग्नि सुश्रूषमाणस्य पितरं यशस्विनम.

बालकाण्ड 9/6

आ

विभांडक सुतं राजन ब्राह्मणं वेदपारगम बा.का. 9/13

द्वैविध्यं ब्रह्मचर्यस्य भविष्यति महात्मनः लोकेषु प्रथितं

लोकेषु प्रथितं राजन विप्रैश्च कथितं सदा.

रामायण 1/9/5

থ্প্পন সমাজমে এহন মান্যতা থ্ছি জে ৰঁচা সন্তকেঁ রিষয–স্বখক কনিযো জ্ঞান নৈ দিযৌ তখনে ও পক্কা ব্রৃহ্মচাবী ৰঁনি সকৈত থ্ছি। ঙা রিচাব প্রাকৃতিক নিথমক রিপবীত থ্ছি। ঐ ঢোঁগসঁ জগ দ্স্থাক বক্ষা কএন জাগত থ্ছি, ও ৰঁড় থাসানীসঁ শত্রুক হাথ মে চনি জাগত থ্ছি। ঋষ্যশৃংগ বৃতাঁত সেহো এহনে থ্ছি। হ্নকামে কাম চেতনা স্বপ্ত ছন, ওকব সংৰঁধমে বামাযণকাবক ঙা টিপ্পণী দ্রষ্ঠব্য থ্ছি। – "বাজন! নোকমে ব্রৃহ্মচর্যকি দূটা ৰূপ রিখ্যাত থ্ছি থা ব্রাহ্মণ সদা ওগ দ্নূ স্বৰূপক রর্ণন কেনে থ্ছি। এক তঁ থ্ছি দংড, মেখনা থাদি ধাবণ ৰূপ ৰঁনা মুখ্য ব্রাহ্মচর্য থা দোসব থ্ছি ঋত্তকানমে স্ত্রী সমাগম ৰূপ গৌণ ব্রৃহ্মচর্য। ঋষ্যশৃংগ জেহন মহামো ঐ দ্নূ প্রকাবক ব্রৃহ্মচর্যকি পানন কেনে হএত।"[29]
থ্প্পন রিদ্বান পিতাক কঠোব থ্নুশাসন মে বহি কঽ ঋষ্যশৃংগ কতেক বাস ব্যরহাবিক জ্ঞান সেহো প্রাপ্ত কেনে ছন। কৌশিকীক তঽ পব নিরাস কবরাঁক কাবণ একব জনক সম্ভচিত উঁপযোগ থা ব্যরস্থামে হ্নকা রিশেষজ্ঞতা প্রাপ্ত ছন। থাশ্রমক চাৰু কাত ওহিনা নদীক জন–প্ররাহকেঁ ব্যরস্থিত কঽ ও বংগ–রিবংগক ফূন–মূন

---

[29] नान्यं जानाति विप्रेन्दो नित्यं पित्र वर्तनात

द्वैविध्यं ब्रह्मचर्यस्य भविष्यति महात्मनः

लोकेषु प्रथितं राजन विप्रेश्च कथितं सदा.

बालकाण्ड 9/5

উঁপজাবৈঁ ছল, সেহো পর্যাপ্ত মাত্রামে। বাল্মীকি বামায়ণক রৗনকাঁডক "চিত্রাণ্যত্র রঁহূনিস্‌ যমূনানি চ ফলানি" 10/27 মে উঁপযুক্ত গপ বেখাঁকিত খছি।

খংগ নবেশ বোমপাদ বৃত্তাঁত

ওগ কান বোমপাদ খংগ প্রদেশক নবেশ ছল। ও বাজা দশবথক মিত্র ছল। হ্নকা কোনো সংতান নৈ ছল। হ্নকব দুখ দেখি কঽ দশবথ খপ্পন পহিন্বক বানী কৌশল্যাক গর্ভসঁ উঁপেন্ন শান্তা নামক পুত্রীকেঁ হ্নকব পুত্রীক রূপমে দঽ দেনে ছল। [30]

বোমপাদ শান্তাকেঁ পুত্রীক রূপমে পাবি নেহাল ভঽ গেল ছল। ওকব নানন–পানন মহাশক্তিশালী খংগ নবেশক বাজকীয় গবিমাক খনুরূপ বাজ প্রাসাদ মে ভেল।

বাজা বোমপাদ যযাতি রংশক ক্ষত্রিয় ছল। "রংশোমন্বন্তবানি চ" কঽ ফ্নতাবিক, পুবাণমে এ রংশক বাজাক সংরঁধমে সূচনা খছি। বিষ্ণুপুবাণ 4/18 ক ফ্নতাবিক, যযাতিক চাবিম পুত্র "খনু" কেঁ তীন পুত্র ভেল, সমানল, চক্ষু খা পবমেশ্ব। ওগ রংশ খনুরংশ কহৈনক। সমানলক পুত্র কানানল ভেল খা কানানলক সৃংজয, সং়জযক পুবংজয, পুবংজযক জনমেজয, জনমেজযক মহাশাল, মহাশালক

---

[30] एकटा मान्यताक अनुसार, शान्ता अंग देशक प्रसिद्ध ऋषि अंगिरसक बेटी छलीह, हुनकर माँक नाम 'आणवी' छल. अप्पन स्त्रीक मृत्युक बाद ऋषि अहि कन्याके पालिता बेटीक रूपमे राजा रोमपादके द' देने छल.

सिखवाल ब्राहमण परिशीलन ब्यावर (राजस्थान) पृष्ठ. 52

মহামনা, মহামনাক উশীনব আ তিতিক্ষু নামক দূটা পুত্র ভেন।
উশীনবক শিবি, নৃগ, নব, ক্লমি আ বর্ম নামক পাঁচটা পুত্র ভেন। এ মে শিবিক বৃষদর্ভ, স্ববীব, কেকয আ মদ্রক নামক চাবি টা পুত্র ভেন। বিবিক্ষুক পুত্র রুশদ্রথ ভেনা। হ্নকব হেম, হেমেক স্বতপা আওব স্বতপাকেঁ বলি নামক পুত্র ভেন। এ বাজা বলিক বানী স্বদেক্ষণাসঁ আন্হব ঋষি দীর্ঘতমা পাঁচ পুত্রকেঁ জন্ম দেনক, জে অংগ, বংগ, কলিংগ, পুণ্ড্র আ সুহা ভেন। বাজা বলিমে পুত্র উপেন্ন কববাক ক্ষমতা নৈ ছন। হ্নকব প্রথম পুত্র অংগসঁ অনপান, অনপান সঁ দিবিবথ, দিবিবথসঁ ধর্মবথ আ ধর্মবথসঁ চিত্রবথক জন্ম ভেন। এ চিত্রবথক দোসব নাম বোমপাদ ছন।
শ্রীমদভাগরতক অনুসাব, রস্তুত: শান্তা মহাবাজ দশবথ আ কৌশল্যাক পুত্রী ছন আ অংগ নবেশ বোমপাদ দশবথক সখা ছন।[31]
"ভরভূতি" সেহো অপ্পন "উত্তব বামচবিত..." মে এ গপক উল্লেখ কেনে অছি।

কন্যা দশবথো বাজা শান্তা নাম ব্যজীজনত।
অপত্য ক্লতিকা বাজ্ঞে বোমপাদায যা দদৌ। ।

---

[31] रोमपाद इतिख्यातस्तस्मै दशरथः सखा.

आ

शान्ता स्वकन्याम प्रायच्छदृष्य श्रृंग उवाहताम.

श्रीमद्भागवत स्क.9

उत्तर रामचरित प्रथमांग

अपन शेष्ठ संतान नेन प्रयाग होगत अछि आ कृतक (स्त्रीलिंग कृतिका) केर अर्थ अछि कृत्रिमा। एँसँ स्पष्ट अछि जे शान्ता राजा रोमपादक कृत्रिम (दत्तक) पुत्री छल।

ऋष्यशृंगक मानिनी प्रस्थान

रामायणमे रोमपादकेँ महाप्रतापी आ बँनरान राजा कहल गेल अछि।[32]

एहन कहल गेल अछि जे ऐ राजाक धर्मक उल्लंघनक कारण हुनकर राज्य मे घोर अनावृष्टि भऽ गेल छल। एँसँ जनता भयभीत भऽ गेल। मानिनी सेहो गंगा कात अवस्थित छल। अंगमे जल संसाधनक प्रचुरता छल। तकर बाँदो जलक समुचित उपयोग नै हेबाँक कारणसँ अकालक स्थिति आबि गेल छल। राजा ऐ लऽ कऽ बँड़ दुखी छल। ओ एकर निराकरणक लेल वेदज्ञ पंडितसँ मंत्रणा केलक। सभटा पंडित, सर्वमतसँ अनुशंसा केलक जे महर्षि विभाण्डक पुत्र ऋष्यशृंग वेदक पारगामी विद्वान अछि। हुनका कोनो तरहे ऐ राज्यमे बँजा कऽ लीकसँ सकोर कएल जाए आ वैदिक विधिक अनुसार अप्पन कन्या शान्ताक ब्याह कऽ देल जाए। दूरदर्शी राजा रोमपाद सहर्ष ऐ प्रस्तावक अनुमोदन कऽ देलक। मुदा हुनका ऐ गपक चिंता छल जे ऐ शक्ति

---

[32] एतस्मिन्नेव काले तु रोमपादः प्रतापवान

अंगेषु प्रथितो राजा भविष्यति महाबलः.

बालकाण्ड 9/7

সংপন্ন ঋষিষ্কমাবকেঁ কোনা ওতএ খানন জাএ ? ও খপ্পন মংত্রী খা প্ববোহিতকেঁ পঠা ঋষ্যশ্রৃংগকেঁ সকোবপূর্বক মানিনী খনবাঁনে চাহি ছন। ষ্দা ঐ দবাঁগ ঋষিক স্বভাবকেঁ ও জানৈত ছনা তওসঁ ও বাজাকেঁ স্পঠ্ঠ কহি দেননি জে ও ঐ ঋষিসঁ ডবৈত খছি, তওসঁ হ্নকা ঙা কার্য নৈ দেন জাএ। তকব বাঁদো মংত্রীগণ সোচি-সমঝি বাজাকেঁ জে ঙঁপায বঁতৌনখিন, ওকবা কবএমে কোনো দোষ নৈ ছন। সংগে-সংগ ঐ কার্যমে কোনো বিঘ্ন-বাঁধা খএবাঁক কোনো সংভাবনা সেহো নৈ ছন।

বনচব জীবন ব্যতীত কবহ বঁনা ঋষিষ্কমাব শ্রৃংগ কহিযো কোনো স্ত্রী কেঁ নৈ দেখনে ছন। ও স্ত্রীকেঁ চিহ্নিতো নৈ ছন খা বিষয স্বখসঁ খনভিজ্ঞ ছন। এহন কঠোব চিত্তকেঁ মথি দৈবঁনা মনোবাঁছিত বিষযক প্রনোভন দহ কহ হ্নকা মানিনীমে খনবাঁক যোজনা বঁনএ নাগন। ঐ যোজনাক সফনতাক নেন তয কএন গেন জে স্বঁদব খাভূষণসঁ বিভূষিত মনোহব রূপবানী বেশ্যা ঋষ্যশ্রৃংগ কতয জা কহ খনেকানেক ঙঁপাযসঁ হ্নকা নোভা কহ মানিনী খানএ। বাজাজ্ঞসঁ এহনে ব্যবস্থা কএন গেন। কতেক বাস নাওকেঁ জোড়ি কহ বঁড়া বঁনাওন গেন। ওকবা মনোবম পাতসঁ সজাওন গেন। নাওমে কতেক বাস মিষ্ঠান খা মধ্ব ফন বাখন গেন। নগবক ষ্খ্য-ষ্খ্য রূপবতী বেশ্যাকেঁ সভ মংত্রণাসঁ খবগত কবেনাক বাঁদ জনমাক্সসঁ খাশ্রম দিস পঠা দেন গেন। খাশ্রমসঁ কনী দূব ঠাম কোশীক পাবন কাত বঁড়া বোকি দেন গেন। বেশ্যা ওতএসঁ ঋষিষ্কমাবসঁ মিনয কহ ঙঁপায কবএ নাগন। খংতর্ষ্খী স্বভাববঁনা ঋষ্যশ্রৃংগ বঁড় ধীব-গংভীব ছন। হ্নকা খপ্পন পিতাক সানিধ্য বঁসী স্বখকব নাগৈত ছন। যএহ কাবণ ছন জে ও খাশ্রমসঁ

ৰাহৰ নৈ কঽ ৰবাৰৰ নিকলৈত ছল। ও এক্ত একাতশীন ৰ্যক্তি ছল জে রন মে বহি কঽ খপ্পন পিতাক খনারা স্ত্রী সভক গপ তঁ ছোড়ৢ, কোনো দোসব প্বৰুখ ধবি কেঁ নৈ দেখনে ছল। তখৈন ভনা ঐ ঋষিমে চেতনা কোনা খা তিঐ ? কোনো খক্তাত প্রেবণাসঁ ঋষিক্ষমাব ঘ্মৈত–ফিৰৈত কোশীক ওগ ধাবক কাত পহুঁচল, জতএ ৰূপরতী রেশ্যাক ৰেঁড় া ঠাঠ় ছল। মংদ–স্বগংধ পরনক সংগ মীঠ খারাজমে সংগীত স্বনাগ দঽ বহল ছল। খগৰু ধূম খা দোসব স্বগংধিত দ্রব্যসঁ রাতারবণ ৰঁড় বমণীয ভঽ বহল ছল। ঋষিক্ষমাব স্বন্নব রেশী খা ৰঁড় খাকর্ষক ৰূপরানী রনিতা সভকেঁ দেখলক। ঋষিক্ষমাবকেঁ খপ্পন এতএ খাএল দেখি কঽ রনিতা সভ হর্ষোৎফুল্ল ভঽ গেল। ও মংদ মানক স্ববমে গাবৈত ঋষিক্ষমাব লগ খাএল। ঋষিক্ষমাব সেহো হতপ্রভ ছল। রনিতাক কল্পনা তঁ ও কেনে নৈ ছল। হ্নকা ভান ভেল জে ঞা ঋষিগণে খছি, জে কোনো দোসব নোকসঁ খাএল খছি। এখৈন ধবি ও স্ত্রী কেঁ দেখনে নৈ ছল তঁ ওকবা সংবঁধমে ও কী সোচতিঐ ? রনিতা হ্নকব সকোব কেলক খা স্নেহ প্রদর্শিত কবৈত কহলক, হে ব্রাহ্মণ! খহাঁ কে ছী ? কী কবৈত ছী ? স্ত্রীক কমনীযতা দেখি কঽ ঋষিক্ষমাব মংত্রমুগ্ধ ছল। হ্নকব খংতর্মনসঁ স্নেহক ধাবা ফূটএ নাগল। ও খপ্পন পিতাক খা খপ্পন পবিচয দেলক। ঋষ্যশ্রৃংগ বাজল জে মহর্ষি কশ্যপ রংশক মহর্ষি রিভাণ্ডক হমব পিতা ছথি। ভূমংডলমে প্রসিদ্ধ ছথি। ঠামে হমব খাশ্রম খছি। খহাঁক দর্শন হমবা লেল কতেক বাস স্বখক মূল খছি। খহাঁ সভ দেখযমে ৰঁড় স্বনব ছী খা দেহ সঁ খাভা সেহো ফূটি বহল খছি। খহাঁ সভকেঁ হম প্রণাম কবৈত

छी। ऋषिश्रृंगकेँ रनिताकेँ अप्पन आश्रम नइ कइ आएल। संजोगवश हुनकर पिता आश्रममे नै छल। ऋषि हुनका अभ्यागत सकोव आ विधिवत पूजन कइ कन्दमूल फल-फूल दइ कइ संतुष्ट केलक। रनिता सभकेँ ऋषिश्रृंगकेँ पिता विभाण्डकक एबाक डव सेहो नागि वहल छल। तएँ ओ तुवंत आश्रमसँ जाए लेल उत्सुक छल।
ऋषि श्रृंगक पूजा आ फलक उपहाव स्वीकाव कइ रनिता हुनका पर्याप्त आमेसंतुष्ट केलक। संगे-संग अप्पन संग आनल मिष्ठान आ फल सेहो ऋषिश्रृंगकेँ भेंट केलक। ओ जल्दीसँ ओकवा खाए लेल अनुवोध केलक। ऋषि ऐ पदार्थ आ फलकेँ खा कइ अपूर्व स्वखक अनुभव केलक। किछु कालक लेल ओ स्वर्गिक आनंदमे डूमि गेल। रनिता सभ हर्षसँ भवि हुनकव आलिंगन केलक आ कतेक वास फल आ भाँति-भाँतिक मधुव देलक। ऋषि श्रृंगव मधुवकेँ फल बुझि कइ खा लेलक। किएकि ओ वनमे वहैत कहियो मधुव नै खेने छल, तएँ ओ ओकव वसास्वादनसँ अनजान छल। भला सदिखन वनमे वहएबला नोककेँ एहन पदार्थक स्वाद नेबाक अवसव कतए अछि। एकव वाद महर्षि विभाण्डकेँ एबाक आशंकासँ डवल रनिता व्रत आ अनुष्ठानक बहाना बना कइ अप्पन वेडापव घुवि गेल। एदा ऋषि श्रृंगवकेँ गाढ़ आलिंगनमे भवि चतुव रनिता हुनका मनमे कामदेवक विजयी दुन्दुभिकेँ बजा देलक। चिवकालसँ स्वप्त भावना एक-एक कइ जागए नागल। ऋषि ओए रनिता सभक जाएक पश्चात दुखमे डूमि गेल आ गम्हव-उम्हव टहलय नागल। नै नीन, नै चैन, ऋषि श्रृंगव ओए कमनीय्खी रनिताक चिंतनमे डूमल वहल।

दोसर दिन शक्तिसंपन्न ऋष्यश्रृंग रहैब-रहैब ओहि वनिताक संबंधमे सोचैत-विचारैत अपनेसँ ओहि ठाम पहुँचल जतए वेश्या हुनकर प्रतीक्षा कऽ रहल छल। ऋषि कुमार आकर्षक डोरमे बन्हि अपनेसँ उपस्थित भऽ गेल। वेश्या पहिनेसँ तैयार छल। ऋषिकुमार हुनकर रूपाकर्षणक जालमे फँसि चुकल छल। वनिता सभ अप्पन स्वरमे रस घोरैत बाजल- सौम्य! हमर आश्रमपर चलू। एतए कतेक रास फल-फूल अछि, खाद्य ओतए सेहो ऐ पदार्थक कोनो अभाव नै अछि। ई कहि वनिता हुनका अप्पन ठाम मे रहैसा लेलक आ भरि राति ऋषिकुमारक मनोविनोद करैत अंगक राजधानी मालिनी नऽ आनलक। जीवनमे पहिल रहैब ऋष्यश्रृंग कोनो नगरकेँ देखलक। हुनक नगरमे प्रवेश करते इंद्र पूरा जगतकेँ प्रसन्न करैत पानि बरसाएब शुरू कऽ देलक।

ऋष्यश्रृंग जेहन विद्वान ऋषि कुमारकेँ वेश्या मालिनी नऽ आनएमे सफल भऽ गेल। हुनका ई सफलता एक-दू दिनमे नै भेटल हएत। एकर एकटा दोसर वृत्तान्त स्वामी अद्वैतानन्दपुरी प्रवचन संग्रह सच्चिदानन्द प्रकाश (पृष्ठ सं. ३१+) मे भेटैत अछि।

रोमपादक आँजल चतुर वनिता कौशीक धारक कात अप्पन शिविर लगा आ पुण्याश्रमसँ किछु दूर रहि ऋषिकुमारक दिनचर्याक सूक्ष्म निरीक्षण करए लागल। ऐ काजमे महीनो लागि गेल। वनिता सभ अप्पन गहन अध्ययनमे देखलक जे तपस्तुयावत ऋषिकुमारकेँ जखन भूख लागैत अछि तँ ओ विशेष जातिक गाछक तनामे अप्पन मुँह सटौरैत अछि आ भरपेट ओकर रस चुसि कऽ वापस तपस्यामे रहैसि जागत अछि। वेश्या सभ

एकांत पारि ओग विशेष गाछ आ वस चूसए कऽ ठाम पर चिन्ह लगा देलक। संगे-संग ओकरपर मीठ तरल पदार्थ (संभवत: गुड़) लेप देलक। फेर दूर ठाम ठाढ़ भऽ कऽ ऋषिकुमारक गतिविधिकेँ देखैत रहल। ऋष्यश्रृंग गाछक वसमे किछु दोसरे स्वाद पेलक। ओ अतृप्त भावसँ ऐ तरल पदार्थकेँ चाटए लागल। ई क्रम चलैत रहल। वेश्या आब ऐ तरहक स्वादिष्ठ मधुर ऋष्यश्रृंगकेँ खुआबए लागल। आब हुनका पूर्ण विश्वास भऽ गेल जे ऋषिकुमारकेँ स्वादिष्ठ मधुरमे आनंद आबए लागल अछि, तखन ओ ऐ क्रमकेँ एकाएक रोकि देलक। ऋष्यश्रृंगकेँ पुछलापर वेश्या कहलन जे ऐ तरहक स्वादिष्ठ भोजन बनाबैमे धन लागैत अछि आ ओ धन राजाकेँ एतएसँ आबैत अछि। राजा आब धन नै दऽ रहल अछि। जौं अहाँ राजा लग जाएब तँ धन भेटि सकैत अछि।

अप्पन गप्पा पूर्तिक लेल ऋष्यश्रृंग वनिता सभक संग राजा एतए जाए लेल तैयार भऽ गेल।

राजा रोमपाद राजप्रसादसँ बाहर आबि कऽ ऐ महान तपस्वीक अगवानी केलक आ पृथ्वीपर माथ टेकि कऽ हुनका साष्ठांग प्रणाम केलक। फेर एकाग्रचित भऽ ऋषिसँ वरदान मांगलक जे हुनका ऋष्यश्रृंग आ हुनकर पिताश्री महर्षि विभाण्डक असीम कृपाक प्रसाद भेटए। राजाकेँ शंका सताबए लागल जे कपटसँ ऋषिश्रृंगकेँ मानिनी आनए लेल जौं महर्षि विभाण्डक हुनकापर रुष्ठ भऽ जाएत तँ राजाक कल्याण नै अछि।

फेर ऋषिकुमारकेँ अप्पन अंत:पुरमे आनि कऽ अप्पन पालिता कन्या शान्तासँ हुनकर विवाह कऽ देलक। ऐ

𑒬𑒳𑒦 𑒏𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰 𑒣𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪।

𑒃𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒝𑓂𑒛𑒏 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒒𑒳𑒩𑒪 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒞𑒋 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒥𑒹𑒔𑒻𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒫𑒢 𑒮𑒰𑒧𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒃𑒧𑓂𑒯𑒩-𑒅𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒕𑒪। 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒢𑒱 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒻 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪। 𑒪𑒞𑒰 𑒂 𑒑𑒰𑒕 𑒙𑒴𑒙𑒻𑒪 𑒕𑒪 𑒂 𑒣𑒰𑒞 𑒮𑒦 𑒃𑒧𑓂𑒯𑒩-𑒅𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒥𑒱𑒐𑒩𑒪 𑒕𑒪। 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒧𑒵𑒑 𑒬𑒰𑒫𑒏 𑒂𑒥 𑒅𑒕𑒪𑒱 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒍 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒖𑓀𑒑𑒪 𑒞𑒰𑒏𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒇𑒭𑒱𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒞𑒰 𑒢𑒻 𑒔𑒪𑒪। 𑒏𑒲 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮𑒏 𑒧𑒰𑒨𑒰 𑒕𑒲। 𑒍 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒒𑓂𑒢-𑒥𑒰𑒡𑒰 𑒠𑒻𑒏 𑒞𑒰𑒏𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱 𑒠𑒳𑒐 𑒂 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒱 𑒅𑒚𑒪। 𑒍 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢𑒮𑓂𑒟 𑒦𑓄 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒂 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒂𑒥𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑓀𑒑 𑒢𑒩𑒹𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒠𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻 𑒪𑒹𑒪 𑒍 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢𑒲 𑒠𑒱𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒍 𑒢𑒠𑒲 𑒂 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩 𑒣𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒅𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒩𑒼𑒧𑒣𑒰𑒠 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒬𑓀𑒏𑒱𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒝𑓂𑒛𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒏 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒖𑒾𑓀 𑒡𑒡𑒏𑒱 𑒅𑒚𑒪 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑒩𑓂𑒟 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒮𑒪𑒰𑒯 𑒏𑓄 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒄 𑒣𑓂𑒩𑒥𑓀𑒡 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡 𑒬𑒰𑓀𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒋। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒖𑓀𑒑𑒪𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒩𑒰𑒖𑒡𑒰𑒢𑒲 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒙𑒣𑒩 𑒋𑒏 𑒮𑒋𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒠𑒳𑒡𑒰𑒩𑒳 𑒑𑒰𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒍𑒏𑒩 𑒑𑓂𑒫𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒚𑒯𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒑𑓂𑒫𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒝𑓂𑒛𑒏 𑒌 𑒥𑒰𑒙 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒂𑒥𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒦𑒩𑒣𑒴𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞-𑒮𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥 𑒂 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒄 𑒐𑒹𑒞, 𑒄 𑒑𑒰𑒨-𑒥𑒛𑓃𑒠 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒩 𑒕𑒲, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒂𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒱𑒨𑒾 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒲। 𑒋𑒯𑒢 𑒏𑒯𑒱-𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒦 𑒞𑒩𑒯𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒝𑓂𑒛𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒰𑓀𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒩𑒼𑒧𑒣𑒰𑒠

अपन योजनामे सफल भेल। क्रोधसँ लालकि आँखि लाल भऽ गेल छल, एना लागैत छल जे ओ रोमपादकेँ जरा कऽ भस्म कऽ देथिन। मुदा बाटे भरि ग्राम सभ हुनका दूध आ दोसर दुग्ध पदार्थ (दही, घी, पायस, तक्र आदि) सँ खूब स्वागत केलक आ सभटा गोधन आ खेतकेँ हुनकर पुत्रक संपदा बता कऽ हुनकर क्रोधकेँ शांत कऽ देलक। रोमपादकेँ राजभवन पहुँचैत विभाण्डक ऋषिक क्रोधाग्नि ममता आ प्रेममे बदलि गेल छल। राजाक अपूर्व सत्कारसँ ओ धन्य भऽ चुकल छल। ओ देखलक जे हुनकर पुत्र ऋष्यशृंग राजभवनमे ओना विद्यमान अछि, जेना अमरावतीमे इंद्र। हुनका बगलमे राजा रोमपादक राजकुमारी शान्ता ऋष्यशृंगक स्त्री विराजल छल, जेना इंद्रक संग शची। ई शोभाकेँ देखि विभाण्डक रोम-रोम पुलकित भऽ उठल। ओ राजा रोमपादकेँ आशीर्वाद देलक आ राजाक इच्छाकेँ पूर्ण करबाक आदेश अपन पुत्रकेँ देलक। संग-संग इहो कहलक जे एकटा पुत्रक प्राप्तिक बाद वन घुरि आएब। ऋषिशृंगक ई कथा महाभारत वनपर्वमे लोमश ऋषि सुनौने छल।[33]

अपन पुत्र ऋष्यशृंग लग पहुँचि विभाण्डक बड़ प्रसन्न छल आ हुनकर उत्कर्ष देखि कऽ हर्षोत्फुल्ल छल। राजा सेहो हुनकर सत्कारमे कमी नै केलक। मुदा महर्षि राजमहल परिसरमे बहबाकेँ उचित नै बुझलक। हुनका सघन वन आ गुफा चाही जतए ओ निर्विघ्न

33 दृष्टव्य महाभारत कथा चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, पृष्ठ 160

ध्यान, तप, व्रत, अनुष्ठान आदि करए सकए। राजा रोमपाद हुनकर राष्ट्रक सम्मान करैत मालिनसँ पश्चिम मेढ़क पर्वतपर हुनकर आश्रम बना कए हुनकर बैसक व्यवस्था कए देलक। ई महर्षि विभाण्डक अस्थायी आश्रम छल। ई स्थल वर्तमान भागलपुरसँ ४२ किलोमीटर पश्चिम आ लखीसरायसँ छह किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम कोनपर छल। ई ऋषिकुंड वा ऋष्यशृंग आश्रमक नामसँ प्रसिद्ध मढ़क पर्वत या भैरा पहाड़ीसँ बनल गोलकार घाटीमे स्थित छल। ऐ आश्रमक लग एकटा पोखरि छल जे ठाढ़ आ धीपल जलक एकटा समराचित जलराशि छल। ओइ पोखरिक उत्तर दिस ध्यान स्थली अछि जतए ऋषि ध्यान लगबैत छल। कजरा रेलवे स्टेशनसँ चारिम कि.मी. दक्षिण स्थित ई पहाड़ी ऋष्यशृंग पर्वतक नामसँ प्रसिद्ध अछि। एखन ई ठाम पर्यटकक लेल आकर्षणक केंद्र अछि।

मालिनीमे वृष्टि यज्ञ आ पुत्रेष्टि यज्ञ

मालिनीमे बसि कए ऋष्यशृंग राजा रोमपाद आ हुनक विद्वान मंत्रीसँ अंग देशमे अनावृष्टि आ सूखासँ प्रजाकेँ बचाबैक लेल उपायपर विचार-विमर्श केलक। एकर संगे ऐ देशमे उपलब्ध जल-संसाधनक सम्यक उपयोगक संबंधमे सेहो मंत्रणा केलक। ओ मालिनीमे वृष्टि यज्ञ केलक जइसँ राज्यमे दीर्घकाल धरि अकाल नै पड़ए।

आइयुक चम्पानाला ओइ ऋषिशृंगक गहन पर्यवेक्षणमे तैयार कएल गेल हएत जकर उपयोगिता साठ़ि सात हजार वरख बादो सिद्ध अछि।

काल वितैत गेल। राज्यमे वर्षा हुअए लागल। प्रजा धन-धान्यसँ संपन्न हुअए लागल। आब शान्ता एकटा स्वस्थ

ओा स्वस्थ पुत्रक जन्म देनक, जकर नाम सारंग राखल गेल। संपूर्ण राज्यमे आनंदक लहरि छा गेल।
एक दिन शान्ता अप्पन पतिदेव ऋृष्यश्रृंगसँ सविनय अप्पन मनोरथ कहलक। ओ राजन जे हुनका कोनो भाय नै अछि, तएसँ हुनकर माता-पिता बड़ दुखी रहैत छन्हि। हुनकर दुखसँ हम बेचैन रहैत छी। शान्ता साग्रह केलक जे अहाँ एहन कोनो उपाय करु जे हमरा एकटा भाय भऽ जाए।
विद्वान ऋृष्यश्रृंग चिंतन कऽ कहलक जे ओ विधिपूर्वक ब्रम्हचर्य व्रतक पालन कऽ वेदक अध्ययन केने अछि। ओ पुत्रक निमित्त अप्पन ससुर महाराज रोमापादक पुत्रेष्ठि यज्ञ कराएत। ऐ यज्ञक प्रधान देवता ईंद्र रहत। ओ महाराजकेँ यशस्वी पुत्र प्रदान करत।
शान्ता हर्षोत्फुल भऽ उठल। ओ यज्ञ संपादनक सूचना अप्पन माता-पिताकेँ देलक। राजा रोमपाद कतेक रास वेदज्ञ पंडितकेँ बजा यज्ञक संपूर्ण तैयारी केलक। कतेक रास राजा-महाराजा आमंत्रित कएल गेल। ऐ मे राजा रोमपादक परम मित्र अयोध्या नरेश दशरथ सेहो हएत। बड़ धूमधामसँ यज्ञ संपन्न भेल।[34] एकर तत्काल फल सेहो भेटै गेल, ईंद्र प्रसन्न भऽ राजाकेँ पुत्ररत्न हेबाक वरदान देलक। रानी गर्भवती भेल आ समय एलापर एकटा पुत्रकेँ जन्म देलक। माता-पिता ओए शिशुक नाम चतुवंग राखलक। अंग देशक राजाक वंशावली, जे चतुवंगसँ

34 प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, श्री भागवत दर्शन, पृष्ठ 82

শ্বৰু ভ২ মহাভাবত কানক কর্ণ ধবি জাগত খছি, ও নিম্ননিখিত খছি–
বোমপাদক প্বত্র চত্তবংগ, চত্তবংগক প্বত্র পৃথ্নাক্ষ খা পৃথ্নাক্ষক চম্পা নামক প্বত্র ভেন, জে চম্পানগবী ৰসৌনে ছন। চম্পাকেঁ হর্যংগ নামক প্বত্র খা হ্নকব প্বত্র ভেন ভদ্রবথ, ভদ্রবথকেঁ বৃহদ্রথ খা বৃহদ্রথকেঁ বৃহকের্মা নামক প্বত্র ভেন। বৃহকের্মাকেঁ বৃহদভান্ব, বৃহদভান্বকেঁ বৃহন্মনা খা বৃহন্মনা সংজযদ্রথক জন্ম ভেন। জযদ্রথকেঁ ব্রাহ্মণ খা ত্রিয সংযোগসঁ উঁপেন্ন ভেন স্ত্রীক গর্ভসঁ রিজয নামক প্বত্রক জন্ম ভেন। রিজযকেঁ ধৃতি, ধৃতিকেঁ ধৃতব্রত, ধৃতব্রতকেঁ সকের্মা খা সকের্মাকেঁ খধীবথ নামক প্বত্র ভেন। যএহ খধীবথ নহাগ নেন গংগা তটপব গেন বহথি জিনকা পিটৌবমে স্ববক্ষিত বাখন একটা ৰাঁনক ভেটন ছন। ঐ ৰাঁনককেঁ পৃথা (কুংতী) জন্ম দেনাক ৰাঁদ গংগামে ৰহা দেনে ছন, জেকবা খধীবথ প্বত্রক ৰূপমে গ্রহণ কেনে ছন। ও ৰাঁনক কর্ণ ভেন জে মহাভাবতক স্বপ্রসিদ্ধ মহাবথী ছন। কর্ণকি প্বত্র বৃষসেন।[35] খংগ নবেশীক এতৰেটা ৰংশারনী প্বাণমে উঁপনব্ধ খছি।

তৃতীয পবিচ্ছেদ
খযোধ্যামে খশ্বমেধ খা প্বত্রেষ্ঠি যজ্ঞ

খরধ নবেশ বাজা দশবথক বাজধানী খযোধ্যা ছন। ও নগবী সবযূ ধাবক কাতমে ৰসন খছি। ও প্রচুব ধন–ধান্যসঁ সংপন্ন, স্বখী খা ৰড় সমৃদ্ধশানী ছন। খযোধ্যা সভ নোকমে রিখ্যাত ছন। একবা মহাবাজ

---

[35] विष्णु पुराण 4/18

वैवस्वत मनु वंशमे छल। हुनके पुत्र छल इक्ष्वाकु, जिनकर तीन शक्तिशाली पुत्र (विकुक्षि, निमि आ दण्डक) मे विकुक्षिक वंशमे दशरथ एकटा चक्रवर्ती सम्राट छल।[36]
वाल्मीकीय रामायणक अनुसार, ई महापुरी बारह योजन लम्बा आ तीन योजन चौड़ा छल। अयोध्यासँ दोसर जनपदमे जाए लेल जे बड़ प्रशस्त आ चौड़ा राजमार्ग छल, ओकर दूनू कात कतेक वास सघन गाछसँ आच्छादित हेबाक कारण ओइ कालक दोसर मार्गसँ अप्पन फराक पहचान बना रहल छल। अयोध्यामे कतेक वास बाजार छल। ई सभ तरहक यंत्र आ अस्त्र-शस्त्रसँ संचित छल। अप्पन नामक अनुसार ई युद्धमे पराजित होएबला नगरी नै छल। एतए ऊँच-नीच अट्टालिका छल, जकर ऊपर ध्वज लहरा रहल छल आ पूरैदपर शतघ्नि (तोप) लागल छल। सुरक्षाक दृष्टिसँ अयोध्या अजेय छल। ओकर चारू कात गहीर खधाए छल, जेकरा नाँघब बा पार करब कठिन छल। नगरमे कतेक वास सांस्कृतिक कार्यक्रम लेल नाटक मंडल छल। ओकरामे स्त्रिगणे टा नृत्य आ अभिनय करैत छल। चारू कात आमक गाछ छल। नगरमे कतेक वास कूटागार (व्यायाम घर आ स्त्री क्रीड़ा घर) छल। राजा दशरथ ऐ संपन्न नगरमे रहि कऽ अप्पन प्रजाक पालन करैत छल। रामायणमे अयोध्यापुरीक वर्णन आ राजा दशरथक शासनकालमे अयोध्या लोकक उत्तम स्थिति

---

36 लोक संस्कृति कोश, पृष्ठ 170

খরনোকন কবৈমে খাদি করি রাল্মীকি কোনো তবহে গ্নপণতা নৈ কএনে খছি। [37]

বামাযণক খন্সাব খযোধ্যামে কত্তৌ কামী, গ্নপণ, ঞ্চূব, মূৰ্খ খা নাস্তিক মন্বখ দেখৰাঁমে নৈ ভেটৈত খছি। সভ নোক ধৰ্মশীন, সংযমী, প্ৰসন্ন, শীনরান খা সদাচাবী ছন। সভ নোক ঋংডন, ঋঋষ্ট খা প্পষ্পহাব ধাবণ কবৈত ছন খা হ্নকব খংগ চংদনক নেপ খা স্বগংধী সংযক্ত ছন। এত্তক্কা সভ নোক শ্ৰী সংপন্ন, ৰূপরান খা বাজভক্ত ছন। গংদ্রক খশ্ব উঁচশ্ৰৰাক তবহে কাম্বাজ খা রাহ্লীনক দেশিমে উঁপেন্ন ভেন শক্তিশানী খশ্ব খা সিংধ্নদমে পানন দবিযাগ ঘোড়া খযোধ্যামে ভবন ছন। রিহ্ম খা হিমানয পৰ্রতমে জন্মন মত্ত গজবাজ সেহো বঁড় সংখ্যামে খযোধ্যাক শৌৰ্যক খনরবত বৃহ্নি কবৈত ছন। খযোধ্যা সভ তবহেঁ স্ববক্ষিত ছন। এতএ খারি ক২ কেকবো নেন যহ্ম কবৰ খসংভর ছন, তগসঁ ওা প্পবী খযোধ্যা সহ খা সাৰ্থক নামসঁ প্ৰকাশিত হোগত ছন। ঐ যশস্বী বাজা দশবথক বাজকীয কাজক সংপাদন নেন মংত্রী–পবিষদমে খাঠ মংত্রী ছন, ধৃষ্ঠি, জযংত, রিজয, স্ববাষ্ট্ৰ, বাষ্ট্ৰৰৰ্ধন, খকোপ, ধৰ্মপান খা স্বমন্ত। স্বমন্ত খৰ্থশাস্ত্ৰ উঁদ্ভট রিদ্বান ছন। একবা সংগে মহৰ্ষি রশিষ্ঠ খা রামদের, মহাবাজ দশবথক দূটা রিদ্বান ঋত্বিজ (প্পবোহিত) ছন। একব খনারা, স্বযশ, জাবনি, কাশ্যপ, গৌতম, দীঘাৰ্য, মাৰ্কণ্ডয খা কাত্যাযন জেহন তপাযন ঋষিক দবৰাঁবমে মংত্রীপদ

---

37 बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड पांचम आ छठम सर्ग

প্রাপ্ত ছল। [38] ঐ মহর্ষিক সংগ কৌশল নরেশক পহিল্বকা পরংপরাগত ঋত্বিজ সেহো মংত্রীক কার্য করৈত ছল। সভ তরহেঁ তাকত ভেনাক রাঁদো রাজা প্বত্র রিহীন ছল। হ্নকর তীনটা রানী ছল। ক্ষদা, সূর্যরংশকেঁ চলারৈঁ রঁনা কোনো প্বত্র নৈ ছল। রাজা মংত্রসঁ মংত্রণা কঽ প্বত্র প্রাপ্তিক নেল অশ্বমেঘ যক্তক অন্বষ্ঠান করবাঁক রিচার কেলক। রেদ রিদ্যাক পারংগত রিদ্বান ঋষিমে শ্রেষ্ঠ স্বযশ, রামদের, জাবলি, কাশ্যপ, রশিষ্ঠ সভকেঁ সসম্মান রঁজা কঽ নরেশ অপ্পন মংতব্য দেলক। দশরথ অপ্পন গচ্ছা ব্যক্ত কেলক জে শাস্ত্রাক্ত রিধিসঁ প্বত্র প্রাপ্তিক নেল অশ্বমেঘ যক্তসঁ ভগরানক ভজন করবঁ হ্নকা নেল একমাত্র উঁপায অছি। রেদক্ত পংডিত একর অন্বমোদন কেলক।

রাজা দশরথ ব্যাকুল ভঽ কঽ মহর্ষি রশিষ্ঠসঁ ঐ ফলদাযক প্বত্রেষ্ঠি যক্ত অপলেসঁ করারৈক অন্বরোধ কেলক। ও কলঙ্কঁহ ভঽ অপ্পন কুল প্বরোহিত রশিষ্ঠসঁ রঁাজল জে হ্নকামে তপস্যাক এতেক রিপ্বল শক্তি অছি জে হ্নকে নঽ কঽ ব্রঁহ্মা যগমে পবিরর্তন কঽ দেলে অছি। ফের একটা সাধারণ প্বত্রেষ্ঠি যক্ত ও কিঅএ নৈ কঽ সকৈত অছি ?

ঐপর গ্বরু রশিষ্ঠ গংভীর ভঽ কঽ রাঁজল, –হে রাজন! প্বত্রেষ্ঠি যক্ত কোনো সাধারণ যক্ত নৈ অছি। ওা যক্ত রএহ করা সকৈত অছি জে ব্রঁহ্মচর্য অরস্থামে শাস্ত্রমে কহল গেল আঠ তরহক মিথ্বনক দৃঢ়তাসঁ ত্যাগ কেলে হএত। স্ত্রীক স্মরণ, স্ত্রীকেঁ নঽ কঽ গপ, স্ত্রীক

---

[38] বাল্মীকীয রামাযণ বালকাণ্ড 7/3-5

संग क्रीड़ा करब, स्त्रीकेँ देखब, स्त्रीसँ नुका कऽ गप करब, स्त्रीसँ भेँट करबाक निश्चय आ संकल्प करब आ स्त्री प्रसंगक गप करब।[39] ऐ आठ तरहक अवगुणसँ जे पूर्णत: रहित हुअए, निष्ठावान ब्रह्मचारी हुअए, ओ अप्पन ब्रह्मचर्य कालमे कोनो गृहस्थक अन्न नै खेने हुअए, वएह ऐ पुत्रेष्ठि यज्ञ करबामे सक्षम अछि। हम अहाँक वंशक राजाक कतेक तरहक अन्न खेने छी। तँए ऐ यज्ञक संपादन हम नै कऽ सकैत छी। महर्षि वशिष्ठ ध्यान लगौलक, फेर आँखि खोललक आ बाजल, पुण्याश्रममे महर्षि कश्यपक पुत्र विभाण्डक ऋषि अछि आ हुनकर पुत्र ऋष्यश्रृंग अप्पन पिताक संग रहि रहल अछि। ओ सभ तरहेँ पुत्रेष्ठि यज्ञ करबामे सक्षम अछि। ओ उक्त शास्त्रोक्त कठोर ब्रह्मचर्यक पालन केने छल। ओ ब्रह्मचर्य कालमे ई जानबो नै केलक जे स्त्री की होइत अछि।
ऐ यज्ञक संपादनार्थ अंग नरेश राजा रोमपादक जमाए ऋष्यश्रृंगकेँ सादर आमंत्रित करबाक निश्चय कएल गेल। रोमपाद राजा दशरथक अभिन्न मित्र छल। ओ नीक कालमे मंत्री आ रानीक संग अप्पन मित्र अंग नरेशक एतए प्रस्थान केलक, जतए ऋष्यश्रृंग अप्पन स्त्री शान्ताक

---

39 स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्य भाषणम

संकल्पो अध्यव सायश्चक्रिया निश्पन्तिरेवच

एतन्मैथुनमष्टा हूं प्रवदन्ति मनीषिणः

विपरीतं ब्रह्मचर्य मेत देवाष्ट लक्षणम.

संग निराास करैत छल। प्रज्ज्वलित अग्निक संग तेजस्वी ऋृष्यश्रृंग राजा रोमपाद लग विराजमान छल।
गम्भीर मित्रताक कारण रोमपाद अप्पन मित्रक विधिवत सत्कार केलक आ शास्त्रोक्त विधिक अनुसार पूजन केलक। संगे-संग अप्पन विद्वान जमाएसँ अप्पन अभिन्न मित्रक परिचय करेलक। ऋृष्यश्रृंग सेहो राजा दशरथक बड़ सम्मान देलक। राजा दशरथ अंग नरेशक एतए सात-आठ दिन धरि मित्र पाहुन तरहेँ रहि गेल। एकर बाद राजा दशरथ राजा रोमपादकेँ अश्वमेध अनुष्ठान केँ लऽ कऽ अप्पन मनक इच्छा बतौलथिन आ एकर निअमसँ संपादनार्थ ऋृष्यश्रृंग आ शान्ताकेँ अयोध्या लऽ जाए लेल अनुमति माँगलक। रोमपाद दुनू गोटेकेँ सहर्ष अयोध्या जेबाक अनुमति दऽ देलक।
रामायणकारक अनुसार, रोमपादक अनुमति लऽ कऽ ऋृष्यश्रृंग आ शान्ता महाराज दशरथक संग अयोध्याक लेल प्रस्थान केलक।[40] राजा दशरथकेँ विदा करैत काल रोमपाद बड़ भावुक भऽ गेल। दुनू गोटे हाथ जोड़ि कऽ एक-दोसराकेँ छातीसँ लगा कऽ अभिनंदन केलक।
दशरथ अप्पन द्रुतगामी दूतकेँ अप्पन नगरवासी सभकेँ समाद भेजि कऽ सूचित केलक जे विभाण्डक तनय ऋृष्यश्रृंग अयोध्या आबि रहल अछि। नगरमे तोरण द्वार बनाओल जाए, एकरा सजाओल जाए। सभ ठाम अगरू धूमक सुवास हेबाक चाही। नगरक सभटा बाट बहारल जाए आ ओकरापर पानि छीटल जाए, जइसँ

[40] बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड 11/6

ওকবাপব কনিযোগ্টা গবদা নৈ বহৈ। পূবা নগবকেঁ ধ্বজ পতাকাসঁ অলংঙ্কৃত কৎ দেল জাএ। বাজাক আদেশক পালন ভেল। নগবমে শংখ, দুন্দুভি আ দোসব বাদ্যযংত্র বাঁজএ লাগল। বাঁটৈক সভগ্টা কঠিনাগ কেঁ বিস্ববি কৎ বাজা স-দনরঁল প্রফুল্লিত ছল। বাজা ঋষ্যশ্রৃংগকেঁ আগূ কৎ নগবমে আএল। ঐ দ্বিজকুমাবক দর্শন কৎ নগবক লোগ, কৃতার্থ ভৎ উঁঠল। সভ কিযো পবাক্রমী মহাবাজ দশবথক সংগ ঋষ্যশ্রৃংগকেঁ অযোধ্যামে আবৈত পুষ্পবৃষ্ঠিসঁ স্বাগত কেলক। বাজা অপ্পন মহান পাহুনকেঁ অংত:পুবমে আনি কৎ শাস্ত্রাক্ত বিধিসঁ পূজা-অর্চনা কেলক। ওত্তক্কা স্ত্রী সভ দেবী শান্তাকেঁ অপ্পন বীচ পাবি বঁড় খুশি ছল।[41]

বাল্মীকীয বামাযণক বাঁলকাংডক দ্বাদশ সর্গক অনুসাব, অংত:পুবমে ঋষ্যশ্রৃংগ সপনীক বহএ লাগল। বঁড় কাল বীত গেল। বসংত ঋতুক আগমন ভেল। দশবথ এহল কালমে যজ্ঞ প্রাবংভ কববাঁক লেল বিচাব কেলক। একব বাঁদ দেবতা সন স্বকান্তি বঁলা ঋষ্যশ্রৃংগকেঁ আগূ কব জোড়ি কৎ দশবথ প্রণাম কেলক আ অপ্পন বিমল বংশক পবংপবাক বক্ষাক লেল পুত্র পাবৈক নিমিত্ত যজ্ঞ কববাঁক লেল হুনকা ববণ কেলক। ঋষ্যশ্রৃংগ তথাস্তু কহি হুনকব প্রার্থনা স্বীকাব কেলক। ঋষিক আদেশক মুতাবিক, যজ্ঞ সামগ্রী জমা হুঅএ লাগল, ভূমংডলমে ভ্রমণ কববাঁক লেল মহাবাজ দশবথক অশ্বকেঁ ছোড়বাঁক ব্যবস্থা হুঅএ লাগল, পাবংগত আ ব্রহ্মবাদী ঋষি আ পংডিতকেঁ বজৈলক। স্বযজ্ঞ, বামদেব, জাবলি, কাশ্যপ আ বশিষ্ঠ সংগ দোসব পংডিত সেহো আএল। দশবথ

41 বাল্মিকীয রামাযণ 11-15/31

सभ नोकक विधिवत पूजन केलक। पुत्र प्राप्तिक लेल अश्वमेघ यज्ञक अनुष्ठानक गप दोहराएल गेल आ विश्वास व्यक्त कएल गेल जे ऋष्यश्रृंगक प्रभावसँ हुनकर सभटा कामना पूर्ण हएत।
ऋषि सभ राजाक ऐ महान संकल्पक लेल साधुवाद देलक। ऋष्यश्रृंग आ दोसर ब्राह्मण भविष्यवाणी केलक जे ऐ यज्ञसँ चारिटा पराक्रमी पुत्र प्राप्त हएत। राजा प्रसन्न भेल। मंत्रीकेँ आदेश भेटैल जे गुरुजनक आदेशानुसार यज्ञक सामग्री जुटाओल जाए आ शक्तिशाली वीरक संरक्षणमे यज्ञक अश्वकेँ छोड़ल जाए। अश्वक संग प्रधान ऋत्विज सेहो रहता। सरयूक उत्तर दिसक तटपर यज्ञशालाक निर्माण भेल आ शास्त्रोक्त विधिक अनुसार क्रमश: शांतिकर्म पुण्याह वाचन आदिक विस्तारपूर्वक अनुष्ठान कएल जाए, जइसँ विघ्नक निवारण हुअए। अहाँ सभ किछो एहन साधन प्रस्तुत करू जइसँ ओ यज्ञ निर्विघ्न विधिपूर्वक संपन्न भऽ जाए।
मंत्री सभ राजाक आदेशक पालन केलक आ ओइ अनुसारेँ व्यवस्था सेहो केलक। ऐ तरहेँ एक वर्ष बीत गेल। दोसर वर्ष वसन्तागमन भेल। अयोध्याक आमक गाछी कोइलीक कूँक सँ गूँजि उठल। राजा अश्वमेधक दीक्षा लै लेल गुरु वशिष्ठ लग पहुँचल। ओ न्यायत: गुरुक अर्चना केलक आ अनुरोध केलक जे शास्त्रविधिसँ ओ ऐ यज्ञकेँ संपन्न करबाबथि आ एहन व्यवस्था करथि जे कोनो ब्रह्म राक्षस ऐ मे विघ्न नै उपस्थित कऽ सकए। दशरथ कहलखिन, –अहाँक बड़ स्नेह हमरापर अछि, अहाँ हमर सुहृद, हितैषी, गुरु आ परम महान छी। ऐ महान यज्ञक भार अहीं वहन करू। पुलकित भऽ कऽ गुरु वशिष्ठ अप्पन स्वीकृति

দেনখিন আ কহনখিন, –হে নরোত্তম ! হম রএহ সভ কাজ কবর্ জগ নেন অহাঁ প্রার্থনা কেনে ছী।
তকব বাঁদ, গুরু বশিষ্ঠ যজ্ঞ কাজমে নিপুণ আ যজ্ঞ বিষযক শিল্প কাজমে কুশল, পবম ধর্মাত্মা, বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ, যজ্ঞ কাজ খমে হুঅএ ধবি ওগমে সেরা কবএ রঁনা সেরক, শিল্পকাব, কমাব, খধাগ খোদএরঁনা, জ্যাতিষী, কাবীগব, নর্ট, নচনিযাঁ, রিশুদ্ধ শাস্ত্র রেত্তা আ রঁহুশ্রুত প্রুকখ সভকেঁ রঁজা কহ হুনকা সভসঁ কহনক, –অহাঁ সভ মহাবাজাক আজ্ঞাসঁ যজ্ঞকাজক নেন আরশ্যক প্ররঁন্ধ করু। জল্দীসঁ হজাব ওঁটা মংগারিযৌ। রঁজাওন গেন বাজাক বহৈক নেন, হুনকা ভোজন যোগ্য আ পীরঁএ আদিক উপকবণ যুক্ত কতেক বাস মহন রঁনাওন জাএ। ব্রাহ্মণক নেন আন্হব-পাগনক নিরাবণমে সমর্থ সৈকড়া। আরাস রঁনাওন জাএ। ঐ তবহেঁ প্রুবরাসীক নেন ঘব আ দূব ঠামসঁ আএন ভূপানক নেন সভ স্বরিধাসঁ যুক্ত মহন তৈযাব কএন জাএ। হাথীক নেন হথসান আ ঘোড়া নেন ঘুড়সান, সামান্য নোকক রিশ্রাম কবরঁাক নেন বৈন রঁসেবা আ দোসব দেশক সৈনিক নেন ছারনী রঁনাওন জাএ। রঁড় বাস মেহনত কবএ রঁনা সেরক আ শিল্পী কেঁ ধন আ অন্ন দহ কহ সম্মানিত কএন জাএ। সভ অপ্পন-অপ্পন কাজমে নাগি গেন। তকব রঁাদ বশিষ্ঠ মংত্রী স্বমংতকেঁ আদেশ দেনক জে ঐ ধবতীক সভটা ধার্মিক বাজা আ চারু বর্ণক সভটা নোককেঁ ঐ যজ্ঞমে ভাগ নেরঁাক নেন আমংত্রিত কএন জাএ। মিথিনাক নবেশ শূববীব সত্যরাদী জনক, দেরতা সন স্বকাংতিরঁনা কাশী নবেশ, মহাবাজ দশবথক সস্বব বৃদ্ধ কেকেয নবেশ, অংগ দেশক মহাধনুর্ধব বাজা বোমপাদক প্রুত্র সহিত কৌশন

বাজ ভানুমান, মগধ বাজ প্রাপ্তিজ্ঞ আদি কেঁ অপনেসঁ জা কহ সাদব সকোবপূর্বক ৰঁজওনে আএন। মহাবাজক আদেশে নহ কহ পূৰ্ব দেশক নবেশ, সিংধ্ সৌৱীব আ স্ববাষ্ট্ৰ দেশ ব দক্ষিণক নবেশক রিশেষ দূতসঁ নিমংত্রণ ভেজন জাএ। নির্ধাবিত দিন রিভিন্ন বাজ্যক নবেশ মহাবাজ দশবথক নেন ৰহুমূল্য বনে ভেঁট নহ কহ অযোধ্যা জাএ নাগন। বাঁছনীয বস্তুক সংগ সবযূক উঁত্তবৰঁবিযা কাতপব যজ্ঞশানাক ত্তবঁত নির্মাণ ভহ গেন। নাগন এনা জে মনক সংকল্পসঁ ও ৰঁনি গেন। মুনিরব রশিষ্ঠ আ ঋষ্যশ্রৃংগক আদেশসঁ শুভ নক্ষত্র ৰঁনা দিন বাজা দশবথ যজ্ঞক নেন বাজম রনসঁ নিকনন। একব ৰাদ রশিষ্ঠ জেহন শ্রেষ্ঠ দ্বিজরব ঋষ্যশ্রৃংগক নেত্তৃত্বমে যজ্ঞকার্য শুৰু কেনক আ তখনে বাজা দশবথ অপ্পন স্ত্রীক সংগ ঋষ্যশ্রৃংগসঁ যজ্ঞক দীক্ষা নেনক।[42] গম্ভব রর্ষ পূর্ণ হোগক সংগ অশ্ব ভূমংডনক পবিক্রমা কহ রাপস ঘূবি আএন। অশ্বমেধ যজ্ঞ শুৰু ভেন। ঋষ্যশ্রৃংগ আদি মহর্ষি অপ্পন অভ্যাস কানমে সীখন অক্ষব সংযুক্ত স্বব অ রর্ণ সঁ সংপন্ন মংত্রসঁ ইংদ্র আদি শ্রেষ্ঠ দেরতা সৰঁহক আহ্বান কেনক। সভ হ্নকব যোগ্য হরিষ্যক ভাগ সমর্পিত কেনক। যজ্ঞশানামে তীন সএ পশু ৰাঁন্হন গেন ছন আ দশবথক ওগ অশ্বিবনে কেঁ সেহো ওতএ ৰাঁন্হন গেন ছন। বানী কৌশল্যা ওগ অশ্বক সংস্কাব কহ ওকবা তনরাবসঁ তীন ৰেঁব স্পর্শ কেনক আ ধর্ম পানন কবৰাঁক ইচ্ছাসঁ ওগ অশ্ব নগ এক বাতি নিরাস কেনক। সভটা রর্ণ দ্বাবা অশ্বক স্পর্শক পশ্চাত চত্তব

42 বাল্মিকীয রামাযণ বালকাণ্ড ত্রযোদশ সর্গ

জিতেঁদ্রিয ঋত্বিক রিধিসঁ খশ্বিকঁদক গূদা নিকানি শাস্ত্রাঞ্জ রিধিসঁ পকৌনক। ওগ গূদাক খাহুতি সেহো দেন গেন। বাজা দশবথ খপ্পন পাপকেঁ দূব কববাঁক নেন ওকব ধ্খাঁ সূঁঘনক। খশ্বিমেধ যজ্ঞক খংগভূত জে হরনীয পদার্থ ছন, ওগ সভক সংগ সোনহ ঋত্বিক খগ্নিমে রিধিরত খাহুতি দিখএ নাগন।

খশ্বমেধ যজ্ঞ পূর্ণ ভেন। ঋত্বিককেঁ জে ধন দক্ষিণামে ভেটৈন, ও সভটা ও হ্মনিরব রশিষ্ঠ খা ঋষ্যশ্রৃংগকেঁ সৌপি দেনক। ঙা দূনূ মহর্ষি ন্যাযপূর্বক বঁটৈরাবা কহ সভ ব্রাহ্মণকেঁ সংতুষ্ঠ কেনক। এম্হব দশবথ ঐ উঁত্তম যজ্ঞক প্বণ্যফন প্রাপ্ত কহ মনে মন প্রসন্ন ভেন। ও ঋষ্যশ্রৃংগসঁ বাঁজন, –উঁত্তম ব্রতক পানন কবএবঁনা হ্মনীশ্বিব! খাবঁ জে কর্ম হমব ফনক পবংপবাকেঁ বঁঠ়বৈঁ বঁনা হ্খএ, ওকব সংপাদন কএন জাএ। ঋষ্যশ্রৃংগ বাজাক চাবিটা যশস্বী প্বত্র হেবাঁক ভবিষ্যবাণী কেনক। বাজা প্রসন্ন ভেন খা ঋষ্যশ্রৃংগসঁ একবা নেন প্বত্রেষ্টি যজ্ঞ প্রাবংভ কববাঁক নেন খন্ববোধ কেনক।[43] ঋষ্যশ্রৃংগ খত্তনিত মেধাবী ছনাহ খা বেদক সেহো জ্ঞাতা.[44] ও কনী কানক নেন ধ্যান নগা খপ্পন ভাবী কর্তব্যক নিশ্চয কেনক। ফেব ধ্যান ভংগ ভেনাপব দশবথসঁ বাঁজন, –বাজন! হম খহাঁকেঁ প্বত্র প্রাপ্তিক নেন খর্থবেদক মংত্রসঁ

---

[43] बाल्मिकीय रामायण बालकाण्ड चतुर्दश सर्ग

[44] मेधावी तु ततो ध्यात्वा स किंचिदिदमुत्तरम

लब्ध संज्ञ स्ततस्तं तु वेदज्ञो नृपम ब्रवीत.

बाल्मिकीय रामायण बालकाण्ड 15/1

প্বত্রেষ্ঠি যক্ত কবৰ। রেদোক্তি রিধিক খন্বসাব, খন্বষ্ঠান কেনাপব ওা যক্ত খরশ্য সফন হএত।
ঋষ্যশৃংগ খপ্পন জ্গক মহান চিকিসোশাস্ত্রী ছন খা শবীব রিক্তানমে হ্নকব গহীব পগঠ ছন। ও দীর্ঘকান ধবি খাহর্রেদক সেহো খধ্যযন কেনে ছন খা ওগমে খহিব্র প্রাপ্ত কেনে ছন। ও বাজা দশবথ খা হ্নকব তীনূ বানীক চিকিসো শাস্ত্রীয পবীক্ষণ কেনক। ও ওকবে হ্মতারিক জড়ী-বূঁটী খা খাহর্রেদিক গ্বণ সংযঞ্জ সমিধা সেহো গকষ্ঠা কেনক।[45] পবম তেজস্বী ঋষ্যশৃংগ প্বত্র ভেটৈরাক উদ্দেশ্যসঁ প্বত্রেষ্ঠি যক্ত প্রাবংভ কেনক। ও শ্রৌত রিধিক খন্বসাব, চিকিসৌয গ্বণ যঞ্জ সমিধা সভক খাহ্তি খগ্নিমে দের শ্বরু কেনক। ঐ মহান যক্তমে দেরতা, সিদ্ধ, গংধর্ব খা মহর্ষিগণ খপ্পন খপ্পন ভাগ নৈ নেন পহুঁচন। পাপী সভক রিনাশ খা সংতক কন্যাণক নেন সভটা দেরতা যক্তস্থন পব উপস্থিত ভেন খা খপ্পন ভাগ প্রাপ্ত ক২ যথেষ্ঠ খাশীর্বাদ দেনক। যক্তকুংডক খাৈষধি তৈযাব ভ২ গেন। ওা খীবক রূপমে তৈযাব কএন গেন। প্রজ্বনিত খগ্নিক সমান ওা দিব্যৌষধি দৈদীপ্যমান ভ২ বহন ছন। ওা জম্বূনদ নামক স্বর্ণসঁ বঁনন বঁড় পৈঘ বাস পবাতমে চাঁদীক ঢক্কনসঁ ঝাঁপিন ছন। খাৈষধি তৈযাব হেরাক সংগ একব স্বগংধ সভ দিশামে পসবি গেন। ঋষ্যশৃংগ খপ্পন সফনতাসঁ প্রফ্বল্লিত ছন। ও যক্তাগ্নিসঁ ওগ খমোঘ খাৈষধিসঁ ভবন পাত্রকেঁ নিকানি মহাবাজ দশবথকেঁ দেনক খা

---

45 ब्रह्मचारी कृष्णदत्त विजडम ऑफ़ द एंसियेंट रिसीज, पृष्ठ 64, वैदिक अनुसंधान समिति, नई दिल्ली-1972

কহলক, –বাজন ! অহাঁ একবা গ্রহণ করু। বাজাক অংত:প্ববক স্ত্রী সভমে হর্ষোন্নাস ভবি গেন, জেনা নির্ধনকেঁ কুবেবক খজানা ভেটি গেন। বাজা ওগ খীবক আধা হিস্সা মহাবানী কৌশল্যাকেঁ দেনক। ফেব বঁচন আধ হিস্সা বানী স্বমিত্রাকেঁ। ফেব দ্নূকেঁ দেনাক বাঁদ জতেক খীব বঁচন ছন ওকব আধ হিস্সা বানী কৈকেযীকেঁ আ হ্নকা দেনাক বাঁদ জে খীবক অবশিষ্ঠ ভাগ বঁচন, সে চত্তব নবেশ কিছু সোচি–সমঝ কঽ ফেব স্বমিত্রাকেঁ দঽ দেনক। বানী শ্রদ্ধা আ রিশ্বাসপূর্বক ঐ আ`ষধি যুক্ত খীবক সেরন কেনক। জন্দীযে ও অনগ–অনগ গর্ভধাবণ কেনক। (দেখূ পবিশিষ্ঠ ক)

চাবিম পবিচ্ছেদ

ঋষ্যশৃংগ আশ্রমক স্থাপনা

কিছু দিন অযোধ্যাক বনিরাস মে বহৈক বাঁদ ঋষ্যশৃংগ অপ্পন স্ত্রীক সংগ মানিনী ঘ্বন। মানিনী সং পশ্চিম ভাগ স্থিত অপ্পন আশ্রম কঽ স্বর্যরস্থিত কেনক।[46] ওহি আশ্রম মে রেদক অধ্যযনক র্যরস্থা কবন গেন, জে কতেক বাস আচার্যক দেখ–বেখ মে সংচানিত ছন।

একব বাঁদ ঋষ্যশৃংগ শান্তাক সংগ কৌশিকীক কাতক কজ্জন রন স্থিত অপ্পন প্বণ্যাশ্রম সেহো ঘ্বন। ওা রহি প্বণ্যাশ্রম ছন, জতয সং গণিকা হ্নকা অংগক বাজধানী মানিনী নঽ গেন ছন। অংতর্দ্ধখী হবক ঋষ্যশৃংগক রিনা ওা আশ্রম সূন ছন। মন সং রেদক সার্থক পাঠ কবয বঁনা

---

46 ऋष्यश्रृंगक पछिम स्थित आश्रम एखुनका किउल रेलवे स्टेशनसं पूब तीन पहाडीक बीच अछि. दोसर आश्रम एखुनका बरियारपुर रेलवे स्टेशनक दखिन मैरा पहाडी पर अछि, देखू सम्पादकीय.

ঋষ্যশ্রৃঁগ কে আবৈত নতা হিন-হিনকঽ স্বাগতাভিবাদনক মুদ্রা মে আবি গেন। পিতা বিভাল্ডক অপ্পন প্বত্রক অহি উঁপনর্দ্বি পব হর্ষোফ্েন ছন। শান্তা জেহন প্বত্রবধূ কঽ পাকঽ ও প্বনকিত ভঽ উঁঠন।
অহি প্বণ্যাশ্রম মে ঋষ্যশ্রৃঁগাশ্রমক স্থাপনা কেন গেন, জাহি কে পহিন্বক কুনপতি ঋষ্যশ্রৃঁগ ছন। উঁত্তব বৈদিক কান মে বিশ্ববিদ্যানযক স্তবক মান্যতা অহি আশ্রমকে প্রাপ্ত ছন। তহিযৌকা আর্য জাতিক শাবীবিক, মানসিক, নৈতিক, আধ্যামিক, ভৌতিক আ সাংগ্রামিক উঁন্নতিক কাবণ হ্নকব শিক্ষা প্রণানী ছন। বামাযণ কান মেঁ ঋষ্যশ্রৃঁগাশ্রম বঁড় চর্চিত ছন। মহাভাবত মে সেহো একব সংক্ষিপ্ত বিববণ ভেটৈত অছি। পংডিত বামদীন পাঁডেয নিখৈত অছি জে ঋষ্যশ্রৃঁগ অপ্পন যুগক মহান আচার্য ছন। চিকিসো শাস্ত্র মে হ্নকব অদ্ভুত প্রবেশ ছন। মহাভাবত যুগ মে ওা আশ্রম বঁড় বাস হবিহব ছন। যুধিষ্ঠিব বনবাস কান মে নোমশ ঋষিক সংগ অহি আশ্রম মে আযন ছন। আশ্রম মে দস হজাব ছাত্র সভোজন, সবস্ত্র আ নিশুল্ক শিক্ষা প্রাপ্ত কবৈত ছন।[47]
অহি আশ্রমক ব্রহ্মচাবী মে ভক্তি, শ্বদ্ধতা আ পবিত্রতাক সংগ ধার্মিক বৃত্তিক উঁদাত্ত আ গবিমামায ছন। ও সভ দৈনিক ক্রিযা, সংধ্যাপাসন, ব্রতক অনুপানন আ ধর্ম সমন্বিত উঁসের সে হ্নক জীবন মে উঁন্নতি, আমেবিশ্বাস, আমেবঁন আ আমিক শক্তি প্রচুব রূপ

---

[47] पंडित रामदीन पाण्डेय, प्राचीन भारत की संग्रामिकता, पटना, पृष्ठ 36

सं भेटैत छल। आचार्य फल मे अग्नि–परिचर्याक सभ दिन पालन, ब्रह्मचारीक लेल एकटा धार्मिक व्रतक समान छल आ ई आश्रमक अनुशासनक महत्वपूर्ण अंग छल। आचार्य ऋष्यशृंगक फशेन कुलपतित्व मे ई आश्रम जम्बूद्वीप मे चर्चित भऽ गेल। वेद आ ओकर सभटा अंगक संग चिकित्सा शास्त्रक गहन ज्ञान ब्रह्मचारी छात्र सभके देल जाइत छल। समिधा आ मेखला सं अप्पन व्रतक नियम सं पालन करैत ब्रह्मचारी श्रम, तप आ गुरुसभक आशीर्वादिक प्रभाव सं अध्ययन मे सफलता प्राप्त करैत छल। ऋष्यशृंग आश्रम मे तप ब्रह्मचर्य जीवनक आवश्यक अंग छल। तप सं हुनका मे आत्मसंयम, आत्मचिंतन, आत्मविश्वास, आत्मविश्लेषण, न्याय प्रवृत्ति, विवेक भावना आ आध्यात्मिक वृत्तिक उदय होइत छल।

कुलपति ऋष्यशृंग अपने यज्ञ देवताक साकार रूप छल। कहल जाइत अछि जे ओ जीवनभरि यज्ञ केलक आ करौलक। ओ एहन कतेक बास यज्ञक संपादन करैलक जकरा लेल मात्र रहि टा सक्षम छल। गृहस्थक लेल ओहि युग मे पाँच महायज्ञक विधान छल। ओ यज्ञ छल, ब्रह्म यज्ञ, पितृ यज्ञ, देव यज्ञ, भूत यज्ञ आ नृयज्ञ।[48]

पहिल्का विद्वान ऋषिक प्रति श्रद्धा व्यक्त करैत वेद मंत्रक पाठ कऽ अप्पन बौद्धिक उत्कर्ष करब आ याज्ञिक समारोहक अवसर पर स्वाध्यायक व्यवस्था करब ब्रह्मयज्ञक विधानक अंतर्गत छल। पितरक श्राद्ध तर्पण सभ पितृ यज्ञक अंतर्गत संपन्न होइत छल। देवताक लेल

[48] शतपथ ब्राह्मण 11.5.6

অগ্নিক আহুতি আ এঁদ্র, অগ্নি, প্রজাপতি, সোম, পৃথ্বী আদি দেরতাক নাম অগ্নি মে সমিধা প্রদান কবর দের যক্ত ছল। অনিষ্ঠকাবী প্রেতামোক তুষ্ঠিক লেল ভূত যক্ত আ অতিথি দেরতাক সকোব নৃযক্ত ছল।

রেদক মংত্রদ্রষ্ঠা ঋষ্যশ্রৃংগ

রেদক মহত্তা সার্রদেশিক আ সার্রকালিক অছি। সভ্যতাক উঁষাকাল সং রেদ সমাদৃত আ অপৌকষেয অছি। অহি দেশক প্রত্তো পর্রত সং নিকলল পতিত পারলী গংগাক সংস্পর্শ পাত্র সং সভষ্টা রিশ্ব চমকৃত আ আহ্লাদিত ভেল অছি। শুক্ল যজুর্রেদীয ব্রাহ্মণ গ্রংথ শতপথ ব্রাহ্মণক স্পষ্ঠ কথল অছি,

'যারন্তং হ রৈ এমা পৃথিরিং রিত্তেন পূর্ণা দদত লোকং জযতি ত্রিভিস্তারন্তং জযতি: ভূযাংসং চ অক্ষযং চ য এরং রিদ্বান: অহরহ: স্বাধ্যাযমধীতে, তস্মাত্ স্বাধ্যাযে অধ্যেযতব্য: । '

শতপথ ব্রাহ্মণ 11-5-6-11

(অর্থাত ধনসং পবিপূর্ণ পৃথ্বীক দান কবহি সং জতেক ফল ভেটৈত অছি, রেদক অধ্যযন সে সেহো ওতেক ফল ভেটৈত অছি। ওতবেঁ টা নহি, ওকবো সে রঢি় কে মনুখ অরিনাশশালী অক্ষয লোক কঽ প্রাপ্ত করৈত অছি। তাহি সং রেদক স্বাধ্যায কবর্ব রড় আরশ্যক আ উঁপাদেয অছি।)

প্রবাল কালক ঋষি রড় নিষ্ঠারাল আ তপ:শীল মনুখ ছল। সমাধিস্থ অরস্থা মে ও অপ্পল পবিরেশক অতিক্রমণ কঽ মংত্রক দর্শন কেলক। তাহি সং ঋষি রেদমংত্রক কাষ্ঠা লৈ, দ্রষ্ঠা কহল জাযত অছি। ঋগ্বেদক প্রত্যেক মংত্রক দ্রষ্ঠা কিযো লৈ কিযো ঋষি অছি। হুলকব

সংখ্যা নগভগ তীন সৌ টা খছি। খহি মে কিছু ঋষিক নাম খছি.[49]
মধ্ছন্দ, শ্বন:শৈষ, কণ্ব, গৌতম, খগস্ত্য, গ্বসেমদ, রিশ্বা মিত্র, ঋষভ, দেরশ্রের, রামদের, খত্রি, পৃথ্, গ্রঞ্জ, খপা না, দেরন, ভুগ্ব, চ্যরন, স্বমিত্র, খগ্নিপূর্য, রহিঁষ, স্বদাস, শ্রেষ্যশ্রৃংগ, প্রচেতা, উংৎরগ্রীরা, খধমর্ষণ, ভাবদ্বাজ, রী তহর্ব্য, গস্ক্ম, রশিষ্ঠ, মেধাতিথি, রসে, শশিকর্ণ, নাবদ, রিশ্বমনা, নাভাগ খাদি। ওা প্বকুষ সভক খনারা স্ত্রী সেহো মংত্রদ্রষ্ঠা ছল। খহি মে নোপক্ষদ্রা, গৌবী, জ্হ্রূ, শচী, ঘোষা, নোমশা, রিশ্বধাবা খাদিক নাম উল্লেখনীয খছি। ওা ঋষি সভ খপ্পন মংত্রমে মূনত: গ্রশ্বিবক দিব্য রিভূতিক প্রতি খপ্পন শ্রদ্ধামেক উদ্গাব ব্যক্ত কেনে খছি।

যজুর্বেদক রিভাজন

চত্তর্বেদ মে যজুর্বেদক সংবঁধ যজ্ঞানুষ্ঠান সে খছি। খহি মে সংকনিত মংত্রক রিষয যজ্ঞ রিধিক সংপাদন কবব় খছি খা কোন যজ্ঞ মে কোন কাংডক মংত্রক ব্যরহাব কববাঁক চাহি, ওকব রিধি যজুর্বেদ মে দেন গেন খছি। তাহি সং রেদ কর্মকাংড প্রধান খছি। রর্ষক গণনা তে কঠিন খছি, ক্ষদা ঋষ্যশ্রৃংগ সং নগভগ পাঁচ পীঢ়ী পহিনে যজুর্বেদক রিভাজন ভ২ গেন ছন, জে গ্রঞ্জ যজুর্বেদ খা শ্বক্ল যজুর্বেদক নাম সে জানন জাযত খছি।
খহি সংবঁধ মে রিষ্ণু প্বাণক হৃতীয খংশক খধ্যায পাঁচ মে একটা কথা খছি। মহর্ষি রৈশম্পাযন যজুর্বেদ জেহন বৃক্ষক সত্তাগস শাখাক বচনা কেনে খছি। ওকবা খপ্পন

---

[49] संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. वचनदेव कुमार, नई दिल्ली, पृष्ठ 10

शिष्य के पढ़ बैनक। हुनकब पबम धार्मिक आ हुनकब सेरा मे तपेब बहि रँना शिष्य याज्ञवल्क्य छल। एकटा कान मे सभटा ऋषि सभ ञा नियम रँनौलनथिन जे किछो ऋषि महामेक पब स्थित हमब अप्पन समाज मे शामिल नहि होयत ओकब सात बाति के भीतब ब्रह्महत्याक पाप लागत। अहि तबह जाहि कान के ऋषि सभ नियत केने छल,ओकब रैशम्पायन अतिक्रमण कऽ देनक। एक रँाद ओ प्रमादरश अप्पन भानजाक हत्या कऽ देनक। एकब रँाद ओ अप्पन शिष्य सं रँाजन, अहाँ सभ कोनो तबहक रिचाब नै कऽ हमबा नेन ब्रह्महत्याक पाप के दूब कबहि रँना ब्रत कक।

अहि पब याज्ञवल्क्य रँाजन, 'भगरन! ञा सभ ब्राह्मण रँड़ निस्तेज अछि। हुनक कष्ठ दैके कोन जरूबत अछि? हम असगबे अहि ब्रत अनुष्ठान कबरँ। अहि सं रैशम्पायन तमसा गेन। ओ रँाजनथिन, अहाँ ञा सभ ब्राह्मणक अपमान केने छी। अहाँ जे किछ हमबा सं पढ़ने छी,ओ छोड़ि दिओ। अहाँ अहि द्विज श्रेष्ठ के निस्तेज कहैत छी। हमबा अहाँ जेहन आज्ञा भंगकाबी शिष्यक कोनो प्रयोजन नहि अछि।

'निओ, हम जे किछ अहाँ से पढ़ने छी, ओकबा घुबा बहन छी'।

ञा कहि याज्ञवल्क्य रुधिब सं भबन मूर्तिमान यजुर्वेद रमन कऽ हुनका घुबा देनक आ स्वेछा सं चनि गेन। याज्ञवल्क्य के रमन कबन यजुश्रुति के दोसब शिष्य तीतब रँनिके ग्रहण कऽ नेनक। ताहि सं ञा सभ तैत्तिबीय कहौनक।

याज्ञवल्क्य यजुर्वेदक प्राप्तिक ईच्छा सं संयम चित्त सं सूर्यनाबायणक स्तुति कबनक। भगरान सूर्य अश्व रूप

মে প্রগট ভ২ ক২ খভীষ্ঠ রব মাঁগহি নেন কহনক। তখন যাজ্ঞরল্ক্য হুনকা প্রণাম ক২ রাঁজন, খহাঁ হমবা ওহি যজুশ্রুতীক উঁপদেশ দিযে জে হমব গ্রুরু নহি জানৈত খছি। হুনকব এহন কহনা পব সূর্য হুনকা 'খযাতযাম' নামক যজুশ্রুতীক উঁপদেশ দেনক, জকবা হুনকব গ্রুরু রৈশম্পাযন সেহো নহি জানৈত ছন।

মাধ্যন্দিন শাখা

যাজ্ঞরল্ক্য ওহি রাজ শ্রুত কে খপ্পন কণ্ব খাদি পঁদ্রহ শিষ্য কে প্রদান কবনক। ওহি মে মধ্যন্দিন মহর্ষি দ্বাবা প্রাপ্ত যজুর্রেদক রিশেষ শাখা কে মাধ্যান্দিন কহন জা নাগন। শ্রুক্ল যজুর্রেদক মাধ্যান্দিন শাখাক মংত্র কে মহর্ষি কাত্যাযন মহর্ষি কশ্যপ কে, মহর্ষি কশ্যপ মহর্ষি রিভাণ্ডক কে খা মহর্ষি রিভাণ্ডক ঋষ্যশ্রৃংগ কে দেনক। ঋষ্যশ্রৃংগ খহি মংত্রক প্রখব দৃষ্ঠ ছন। খহি মংত্রক সং স্থে বাজা বোমপাদক এতয রৃষ্ঠি যজ্ঞ কেনে ছন। ঋষ্যশ্রৃংগ খহি শাখাক মংত্রদ্রষ্ঠাক সংগ খহি শাখা স্বরূপক ওত-প্রোত ব্রহ্মনিষ্ঠ ছন, জাহি সং ও জতয কত্তো জাযত ছন, তে হুনকব পদার্পণক সংগ ওহি ভূমি পব ঐংদ্র দেরতা রর্ষা ক২ দৈত ছন।[50]

রাজসেনী প্বত্র যাজ্ঞরল্ক্য দ্বাবা নষ্ঠ হয কে কাবণ শ্রুক্ল যজুর্রেদক খহি সংহিতাক নাম রাজসনেয সংহিতা পড়ন। খহি প্রকাব যজুর্রেদক তৈত্তবীয খা রাজসনেয খহি দোনো শাখাক নির্মাণ ভেন। রাজসনেয সংহিতা মে বাষ্ট্রক উঁন্নতি খা ওকব স্বখ-শাঁতিক নেন রঁড় বাস ভারনা সভ খভিব্যক্ত কেনে খছি। 'হে

---

50 शिखवाल ब्राह्मण परिशीलन, ब्यावर(राजस्थान) पृष्ठ 24, 25

পিতৃদেরো ! নমস্কাব ! খহাঁক কৃপা সে রসংত ঋতু বাষ্ট্রে কে স্বখী কবয' । 'হে পিতব নমস্কাব ! খহাঁক কৃপা সে দেশ মে গ্রীষ্ম খনুকূন বহয' । [51]

ঋতু সভকে বাষ্ট্রক খনুকূন রঁনাবেঁ খা জন প্ররঁধন মে রিশেষজ্ঞতা প্রাপ্ত কবয রঁনা ঋষ্যশৃংগ খপ্পন সময মে মংত্রক সিদ্ধতা প্রাপ্ত কঽ চুকন ছন । রাঁল্মীকিক কান মে শুক্ল যজুর্রেদক রঁড়ৢ প্রভার ছন । ঋষ্যাশ্রম মে একব গহন খধ্যযন হোযত ছন । ক্ষদা ওহি কান তৈত্তিবীযক শিক্ষানয সেহো কার্যবত ছন । খযোধ্যামে এহন একটা শিক্ষণ সংস্থানক উল্লেখ রাল্মীকি কেনে খছি । খযোধ্যা কাণ্ড (32-15,16) মে বাম নক্ষ্মণক খাদেশে দৈত খছি, নক্ষ্মণ ! যজুর্রেদীয তৈত্তবীয শাখাক খধ্যযন কবহি রনা ব্রাহ্মণ কে জে খাচার্য খা সংপূর্ণ রেদক রিদ্বান খছি, সংগ হী জাহি মে দান প্রাপ্তিক যোগ্যতা খছি খা জে মাতা কৌশল্যাক প্রতি ভক্তিভার বাখি প্রতিদিন হুনকা নগ খারি কে হুনকব খাশীর্রাদ প্রদান কবৈত খছি, হুনকা সরাবী, দাস, দাসী, বেশমী রস্ত্র খা জতেক ধন সং ব্রাহ্মণ সংতুষ্ট হুযখ, ওতেক ধন খজানা সে দিযারিও ।

খাশ্রম ব্যরস্থা

বামাযণ কানক রিভিন্ন ঋষ্যাশ্রমক খধ্যযন সং ঞা জ্ঞাত হোযত খছি জে খাশ্রম মে গুরুক রাদ খাচার্য খা কুনপতিক গণনা কেন জাযত ছন । কুনপতিক খধীন দূব-দূব ঠাম সং খাযন সৈকড়ৢ া ঁ ছাত্র রিদ্যাধ্যযন

---

[51] संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य देवी शंकर मिश्र, लखनऊ, पृष्ठ 26

কবৈত ছন। শ্ৰোত্ৰিযক সংজ্ঞো ওহি খধ্যাপক রক্ষা কঽ দেন জায ছন জিনকব তামসিক বৃত্তিক পবংপবাগত বৈদিক খধ্যযন খা তপস্যা সং শেমন ভঽ চ্কন খছি। তাপসগণ তপোনিবত বহৈত খা খপনা নগ খারহি রনা কে শিক্ষা দৈত ছন। ও রনরাসী ছন খ হ্নকব উঁপদেশ খবণ্যক মে নিপিরদ্ধ খছি। উঁপাধ্যায নোক শ্বন্ধ নঽ কঽ শাস্ত্র রিশেষ রঠ় ারৈত ছন। ননিত কনাক খধ্যাপক শিক্ষক ছন। তুঁরব্ধ খপ্সবাক গান–শিক্ষক ছন। একব খনারা, খাশ্রম মে পবিব্রাজক সেহো বহৈত ছন। ও নিবৃত্তি মার্গী হোযত ছন। ও খরকাশিক কান ঘূমি–ঘূমি কঽ নির্বেদ খা বৈবাগ্যক জীরনক সর্বোচ্য ধ্যেযক তবহে প্রচাব কবৈত ছন।[52] দোসব খাশ্রমক তবহে খহি ঋষ্যশৃংগক খাশ্রম মে খধ্যাপক কে কোনো রান্হন খায নহি ছন। শিষ্য সং নিযত শ্বন্ধ নৈ কে প্রথাক প্রমাণ নৈ ভেটৈত খছি। এতয গ্বক প্ররোহিত সেহো হোযত ছন। খহি সং যক্ত যাজ্ঞোদিকক খরসব পব দান দক্ষিণা পর্যাপ্ত ভেটৈ জাযত ছন। একব খনারা, খতিবিঞ্জ খাশ্রম কে ঋষি সং সেহো পর্যাপ্ত খায হোযত ছন। খাশ্রমক ছাত্র মে তপস্বী জনা নাগ খা সহিষ্ণুতা খপেক্ষিত ছন। স্নাতক রনহি ধবি হ্নকব নৈষ্ঠিক ব্রহ্মচর্য ব্রতক পানন কবর খনিরার্য ছন। খহি খাশ্রম মে জ্ঞান–রিজ্ঞানক খজকা ধাবা বহৈত ছন। রিদ্যার্থী পিতা–প্বত্রক পবংপবা সং রবারব খারৈত বহৈত ছন। খহি খাশ্রম মে কতেক বাস পবিরাবক কতেক পীঠ় া শিক্ষা প্রাপ্ত কঽ চ্কন ছন। খহি খাশ্রম মে

---

52 शान्ता कुमार, नानू राम व्यास, रामायण कालीन संस्कृति, दिल्ली, पृष्ठ 119

ঋনি-শিক্ষক অপ্পন স্ত্রী (ঋনি পনেয:) আ সংতান (ঋনি দাবকা:) সংগ বহৈত ছন।
প্রাচীন ভাবতক গংদ্র খংডক (পূর্বী ভাগ) দৃষ্টৌ আশ্রম মিথিনাক সীবধ্বজ জনকাশ্রম আ অংগক উংত্তববরবিযা ভাগ স্থিত কজ্জন রনক ঋষ্যশ্রৃংগ আশ্রম তত্ত্বক রিরেচন, রিশ্লেষণ, চিংতন, অনুসংধান আ নির্ণযক নেন প্রসিদ্ধ ছন। তহিযৌকা ভাবতক সভ আশ্রম মে সংগ্রামিকতাক শিক্ষা দেন জাযত ছন। স্বযং বাম রশিষ্ঠাশ্রম সং দোসব রিষযক সংগ সংগ্রামিকতা মে স্নাতক আ রিশ্বমিত্রক সিদ্ধাশ্রম সে স্নাতকোত্তবক শিা পাযন ছন। আশ্রম মে সংগ্রামিকতাক শিক্ষা শত্র্ (অস্ত্রব) কে সংহাব শক্তি কে চ্নৌতী দৈক নেন ছাত্র কে দেন জাযত ছন। জতয-জতয অস্ত্রবক সৈন্য ছারনী ছন ওতয স্থিত আশ্রম মে সংগ্রামিকতাক উঁচা শিক্ষা দৈক ব্যরস্থা ছন।
ঋষ্যশ্রৃংগ আশ্রম আস্ত্রবী গতিরিধি সং দূব একাংত প্রদেশে মে ছন। তাহি সং অহি আশ্রম মে সংগ্রামিকতাক শিক্ষাক কোনো মহত্ত্ব নহি ছন।

যজ্ঞ

ঋষ্যশ্রৃংগ অপনে বৃষ্ঠি যজ্ঞক অদ্বিতীয আচার্য ছন। অপ্পন সস্ত্রব অংগ নবেশ বোমপাদক বাজ্য মে কহিযো অকান নহি পড়ৃয, একবা নেন ও শুক্ন যজুর্বেদ সংহিতাক রাজসেনীয মধ্যন্দিন শাখা সং কতেক বাস ঋষি-ঋনিক২ সাক্ষী বাখি সফন বৃষ্ঠি যজ্ঞ কেনে ছন। রৈদিক যুগ মে যজ্ঞক সরসে রেসী মহত্তা ছন। যজ্ঞ অগ্নি সংপন্ন হোযত ছন। উংত্তব রৈদিক কান মে সেহো যজ্ঞক মহত্ত্ব কম নহি ছন।

देरता आ मनुखक बीच संबंध स्थापना मे यज्ञक महत्वपूर्ण स्थान छल। उत्तर वैदिक काल धरि कतेक बास यज्ञ प्रचलित भऽ गेल छल जहि मे अग्निहोत्र, दर्श, पूर्णमास, चतुर्मास्य, आग्रयण, निरूढ़, सौत्रामणी, पिण्डपितृ यज्ञ, सोम यज्ञ, षोडशी, अतिवात्र, पुरुषमेध आ पंचमहायज्ञक अलावा गवामयन, राजपेय, वाजसूय आ अश्वमेध जेहन यज्ञ तहियौका भारतीय समाज मे मान्य छल। यज्ञ आर्यक मिलन स्थल सेहो छल। ऋष्यश्रृंगाश्रम मे यज्ञक संपादनक विशेष पाठ-क्रम छल। कज्जल वनक पुण्याश्रम वेद ध्वनि सं गुंजायमान छल।[53]

सभ्यताक समन्वय

उत्तर वैदिक कल मे भगवान शिवक महत्ता बढ़ बढ़ल छल। ओ युग आर्य आ आर्येतर जातिक सम्मिलन, सम्मिश्रण आ समन्वयक युग छल। भगवान शिव आर्येतर जातिक अबाध्य देव छल। हुनका दरकिनार कऽ समन्वित आर्य सभ्यता आ संस्कृतिक गठन असंभव छल। एहन स्थिति मे युगद्रष्टा ऋषि केव भगवान शिव दिस आकृष्ट होयब स्वाभाविक छल। वैदिक रुद्र जे उपहन्तृ (ध्वंसक) छल, ओ उत्तर वैदिक काल मे कल्याणकारी शिव बनि गेल। वेद मे रुद्र सं कतेक बास रुद्र के उद्भूत मानल गेल अछि, जे भगवान शिवक व्यापकता कऽ रेखांकित करैत अछि। ताहि सं अहि रुद्र के

5353 ब्रह्मचारी कृष्णदत्त विजडम ऑफ़ द एंसियेंट रीसिज (पृष्ठ 64) मे कजली या कज्जल वनक उल्लेख केने अछि.

গণপতি, হস্তকাব, কর্মকাব, বথকাব, রাজীগব আ নিষাদ জেহন দনিত, উঁপেক্ষিত আর্যেতব জাগতক স্বামীক তবহে স্বীকাব কবন গেন অছি। অহি তবহে ভগবান শিব উঁপর্যুক্ত শোষিত, দনিত, উঁপেক্ষিত আ অনার্য জাগতক উঁপাস্য আ আবাধ্য দেব ছন।[54] তকোনীন তত্বদর্শী ঋষি অহি আর্যেতব জাগত কে আর্য সভ্যতা সংস্কৃতিক মহাসিন্ধু মে বিনীন কব দৈক নেন সংকল্পিত ছন। একবা নেন ও শিবক সামান্য দেবক তবহে নহি রুদা মহাদেবক রূপ মে পূজা কবনক। অনার্যক পবমপূজ্য আবাধ্য দেবতা বহৈত ভগবান শিবক প্রতিষ্ঠা, মহানতা আ ব্যাপকতাক কাবণ ই ছন জে ও অপ্পন ঐশ্বর্য সং দেবতা কে, শক্তি সং অসুব কে আ যোগ সং প্রাপি সভকে পবাভূত কেনে ছন।[55] ই নির্বিবাদ অছি জে ভাবতীয সভ্যতা আ সংস্কৃতিক গঠন মে ভগবান শিবক বিবাট ভূমিকা অছি। জৌं শিব কে অহি সं অনগ কব দেন জায তে অহি সভ্যতা, সংস্কৃতি কে স্থিত হেবাক নেন কোনো আধাব নহি ভেটৈ সকত। ঋষ্যশৃংগ আশ্রমক সমস্ত ক্ষেত্র মে ব্রাহ্মক নিবাস ছন। অথর্ববেদক (11-2-7) অনুসাব দেবতা সভ মহাদেব কে বিভিন্ন দিশাক ব্রাহ্মক স্বামী নিযুক্ত কেনে ছন। সংভবত: অহি প্রতীকক স্বরূপ ভগবান বিষ্ণু এতয ব্রহ্মশিনা পব শিবনিংগক স্থাপনা কেনে ছন। ববাহপ্ববাণক উঁত্তবাদ্ধক একটা প্ববা কথা মে অহি তথ্য কব বেখাঁকিত কবন গেন অছি।

---

[54] अथर्ववेद 6-39-2

[55] वायु पुराण 70-61-62

रिक्षु द्वारा स्थापित शिवलिंग के ऋष्यश्रृंग फेर सं पुनर्जागृत करलक। एकर उल्लेख शिव पुराणक चतुर्थ रूद्र संहिताक सातम श्लोक मे भेल अछि। एकर अनुसार, कौशिकी कात स्थित शिव धाम मे दधीचिक रणभूमि मे श्रृंगेश्वर, रैव्यनाथेश्वर आ जपेश्वर नामक शिवलिंग प्रसिद्ध अछि।

'श्रृंगेश्वरश्च नाम्नारै रैव्यनाथ स्तथैव च।

जप्याश्वरस्तथा ख्यातौ यो दधीचिरण स्थले।'

चौबीस हजार श्लोक वाले वायु पुराणक एकटा अंश शिवपुराण अछि। ऋष्यश्रृंग द्वारा पुनर्जागृत केल जाय वला भगवान शिवक ई गर्भलिंग उत्तर वैदिक काल सं आय धरि
मंत्रयुक्त, मंत्रहीन, क्रियायुक्त, क्रियाहीन, ज्ञानी, अज्ञानी सभक लेल दर्शनीय वा पूजनीय अछि।
दूर ठाम धरि फैलल विशाल ब्रह्मशिला सं ई गर्भलिंग जुड़ल अछि। एखुनका शिवलिंग सं तीन गुना बेसी मोटं ओ दस फीटं नीचा ब्रह्मशिला धरि अछि। लिंगक वांतविक स्वरूप भव्य आ अद्भुत अछि। शिव पार्वतीक असंख्य प्रतिमा ओहि पर उत्कीर्ण अछि। ऋष्यश्रृंग अहि शिवलिंग के पुनर्जागृत कए आर्य आ आर्येतर संस्कृति कए एकाकार कए देने छल। ऋष्यश्रृंग द्वारा एकरा पुनर्जागृत करहि के कारण ई गर्भलिंग श्रृंगेश्वरक (या सिंहेश्वर) नाम सं विख्यात भेल।

दक्षिणाश्रमे तपस्या

उत्तर वैदिक काल धरि आर्य संपूर्ण उत्तर भारत मे पसैर चुकल छल। ओ कतेक बास समृद्ध जनपदक

सेहो स्थापना केलक। उत्तर भारत मे कतेक बास ऋृष्यश्रृंग आश्रम स्थापित छल। कनि-कनि अस्वर दक्षिणापथ दिस सिमटैत गेल। एतय ऋृष्यत: हुनकरे शासन छल। तकर बाद आर्य सभ्यता आ संस्कृति के दक्षिणा मे पसारैलक उद्देश्य सं कतेक बास ऋृष्याश्रम मिशनरीक तरहे काज कए रहल छल। अहि ऋृष्याश्रम के समय-समय पर निरीक्षण करैक दायित्व भगवान शिव पर छल। ओ अहि ठाम अबाध आबैत-जायत छल। क्याकि ओ अस्वर सभहक सेहो अबाध्य देव छल। वाम सरसे पहिलुक आर्य देवता छल जे दक्षिणात्य मे पगव राखलक। ओ एतय कार्यरत आर्य ऋृष्याश्रम के अस्वर सं अभय कयलक। निशिचर हीन करौं मही भुज उठाय प्रण कील्ह।

उत्तर भारतक ऋृषि सेहो दक्षिणाय जा कए तप करैत छल। तपक लेल दक्षिणात्यक ठाम बड़ उपयुक्त चल। ऋृष्यश्रृंग सेहो दक्षिणात्यक जे ठाम मे अखण्ड तपस्या केने छल ओ तप:पूत स्थल आय श्रृंगेरी क्षेत्रक नाम से चर्चित अछि। श्रृंगेरी ग्राम, श्रृंगेरी पर्वत आ श्रृंगेरी तालाव आयवो ओहि महान तपस्वीक तपस्याक साक्षी अछि। हजार बरखक बाद आद्य शंकराचार्य अप्पन पहिलुक मठ श्रृंगेरी मे स्थापित केने छल आ ओतय सं दिग्विजयक लेल अप्पन अभियान शुरू केने छल। शंकराचार्य ओहि ठाम पर देखलक जे प्रकृति विरोध धर्म प्रेम, सेवा आ दयाक आगू प्राणी कोन तरह अप्पन स्वाभाविक धर्म के बिसरि के कल्याण काज मे निरत भए जायत छल। थाकल-मांदल योगी शंकर एकटा रटरृक्षक नीचा बैसल छल। बड़ गर्मी चल। आपसी द्वेष के बिसरि के एकटा बेगना आ सांप खेल रहल

ছল। ওতয় সাঁপ অপ্পন আহব একটা রেংগ কপা ফাঁক সঁ পকড়ি় পগন মে ছোড়ি় দৈত ছল। ও রিস্মিত ভ২ জাযত অছি। ওা ঋষ্যশ্রৃংগক তপস্যা স্থনী ছল, জকব মহত্তা আয ধবি দৃষ্ঠিগোচব হোযত অছি। স্থ মহান ঋষ্যশ্রৃংগক প্রতি শ্রদ্ধারনত ভ২ ক২ অপ্পন শিষ্য সঁ কহৈ ছথিন, জতয ব্রহ্ম মে অপ্পন অংতকবণ কে নগা দৈ রনা ঋষ্যশ্রৃংগ আয ধবি তপস্যা ক২ বহল অছি। আ জতয স্পর্শ মাত্র সঁ কন্যাণ দহি রনা তুংগভদ্রা স্বশোভিত হোযত অছি, জতয অভ্যাগত প্বরুষক পূজা সঁ কল্পরৃক্ষ কে সেহো নজারৈ রনা, সমস্ত রেদ ক২ পঠ়য রনা, সৈকড় া ঁ টা যজ্ঞ সঁ প্রসন্ন হৈয রনা শান্তচিত্ত সজ্জন নোক সভ নিরাস কবৈত অছি।[56] শংকবাচার্য অহি তপস্থনীক স্তুতি কবনক আ ওতয রিদ্যাগ্রহণ মে সমর্থ রিদ্বান শিষ্য কে অপ্পন ফখ্য ভাষ্যক অধ্যযন সেহো কবৈনক। এতয সঁ রৌদ্ধ কে সেহো শাস্ত্র সে পবাজিত ক২ সনাতন ধর্মক প্বনস্থাপনাক নেন দিগ্বিজযক নেন চনন ছল শংকবাচার্য। অভিযানক পূর্ব আচার্য শংকব শ্রৃংগেবী মে অপ্পন পহিন্বক মঠ নির্মাণ ক২ রেদাঁত রিদ্যাপীঠক স্থাপনা কএনক। এত্ত সঁ সনাতন

---

[56] यत्राधुनाअप्युत ममुष्य श्रृंगस्तपश्चर त्यात्मात्म भृदन्त रंग

संस्पर्श मात्रेण वितीर्ण भद्रा विद्योतते यत्र च तुंग भद्रा

अभ्यागतार्चल्पित कल्पशाखा कूलकषाधीतं समस्त शाखा

इज्याशतैर्यत्र समलसंतः शान्तान्तरायानिवसन्ति सन्त.

शंकर दिग्विजय 12/64-65

धर्मक प्रचारार्थ मीमांसक ब्रह्मचारीक सम्प्रदाय सन्यास सम्प्रदाय मे दीक्षा ग्रहण करैत छल।[57] ऋष्यश्रृंग सेहो अप्पन कालक अद्वितीय मीमांसक छल। ओ ऋषि कतेक आश्रम मे कतेक ऋषिक आमेज आ मानस पुत्र के मीमांसाक अध्ययन करबैत रहल।

श्रृंगवेरपुर वृतान्त

ऋष्यश्रृंग अप्पन प्रताप सँ उत्तर पश्चिम गंगाक वाम कात पर सेहो तपस्या करने छल। ओ ठाम निषाद शासकक अधीन छल। आजुक काल मे ओ ठाम इलाहाबाद-उन्नाव राजमार्ग पर स्थित अछि। एतय गंगा कात पर एकटा बड़ पैग टीला अछि जकर नगभग आधा हिस्सा गंगा मे कटि चुकल अछि। यहि ठाम अछि ऋष्यश्रृंगक तपोभूमि श्रृंगवेरपुर। एतय मंदिर मे ऋष्यश्रृंग आ माँ शान्ताक भव्य मूर्ति स्थापित अछि। रामायण मे श्रृंगवेरपुरक बड़ महत्व अछि। अप्पन वनवासक काल श्रीराम अप्पन अनुज आ स्त्रीक संग एतय नाव सँ गंगा पार केने छल। पुरवासी सभक संग भरत जखन राम मे मिलैक लेल चित्रकूट गेल छल, तखन ओ श्रृंगवेरपुर आयल छल। कालिदासक रघुवंशी आ भवभूतिक उत्तर

[57] पूना बैंगलोर रेलवे लाइन पर तुंगभद्रा धारक बाम दिस श्रृंगेरी गाम अछि. छोट पहाडी पर भव्य शिव मन्दिर अछि जाहिमे विभांडक शिवलिंग अछि. एतयसं नौ किलोमीटर पच्छिम श्रृंग गिरि सेहो अछि, जतय तुंगा, भद्रा, नेत्रावती आ बाराही नामक चारि धारक उद्गम अछि.

बामचबित मे थिक प्श्यि स्थनक गौवबपूर्ण उँल्लेख थिष्ठ। तुनसीदास एकब सिंगबौबक प्राचीन नाम सं उँल्लेख केनेि थिष्ठ–

'केबष्ठै कीन्ह बह्त सेबकाञ
सो जामिनी सिंगबौब गबाञ।'

ञ ठाम ऋृष्यश्रृंगक तपस्या भूमि थिष्ठ। ऋृष्यश्रृंग मंदिब सं थाध किमी दूब गंगा मे बिभाल्डक क्कल्डक नाम सं घाठै सेहोबनन थिष्ठ।

श्रृंगबेबप्वब निबासी बाजा बामदत्त सिंह (18बी सदी) थाध्यामे–बामायणक टीक मे एतय ऋृष्यश्रृंग थाश्रम हेबाक संग थिक महर्षिक जीबनक थन्यान्य बृतान्त के थिक ठाम सं जोड़बाक यनेि केनेि थिष्ठ। हमब बिचाब सं थप्पन जन्मभूमिक प्रति मोह हेबाक काबण बाजा एहन केनेि होयत। श्रृंगबेबप्वब के ऋृष्यश्रृंगक जन्मभूमि मानबाक एतिहासिक भूल थिष्ठ क्याकि महाभाबत मे स्पष्ठ निखन थिष्ठ–

'एषा देबनदी प्श्या कौशिकी भबतर्षभ
बिश्वामित्राश्रमौ बम्य एश चात्र प्रकाशिते।
थाश्रमश्चैब प्श्याख्य: काश्यपस्य महामेन:।
ऋृष्यश्रृंग स्वतौ तस्य तपस्वी संयतेन्द्रिय:।'

कौशिकीक कात पब जतय बिश्वामित्रक थाश्रम छन, ओतय प्श्याश्रम मे महर्षि काश्यपक जितेन्द्रिय बंशज ऋृष्यश्रृंगक थाश्रम छन। एक ऋृषिक थप्पन म्यख्य थाश्रमक थनाबा कतेक ठाम हुनकब उँपथाश्रम होयत छन।

प्श्याश्रम मे द्वादश बर्षीय यज्ञ

ऋृष्यश्रृंगक म्यख्य थाश्रम कौशिकीक कात पब प्श्याश्रम मे छन। ओ जतय–जतय तप कबनक ओतय उँपाश्रम

रनौनक। ओ अप्पन जीरन मे कठिन तप आ योग साधनाक संग यज्ञ के मोक्ष प्राप्तिक साधना रनैनक। ओ समस्त भावतक परित्र स्थनक सेहो भ्रमण केनक। ओ कतेक बास कठिनतम यज्ञ केनक, जाहि मे द्वादशी रर्षीय यज्ञ सेहो छल। अहि यज्ञक रड़ पैग मार्मिक रर्णन भरभूति अप्पन उत्तर बामचरितक प्रथमांक मे केने अछि।

अयोध्या मे सभ दिन कोनो नै कोने उंसेर हैत छल। अहि रीच एकटा रिदेशी अयोध्या आरैत छल आ बाजधानी मे उंसेर नै हैत देखि के एकर काबण जानैन चाहैत अछि। नटै एकर उत्तर दैत अछि जे उंसेर नै हैक काबण अछि जे बामक माता महर्षि रशिष्ठक स्त्री अरुन्धतीक संग अप्पन दामाद श्रृष्यश्रृंगक आश्रम मे यज्ञ देखहि नेन गेन छथिन।

'रशिष्ठाधिष्ठिता देव्या गता बामस्य मातव:।

अरुन्धती प्रवस्कृष्य यज्ञ जामात्तवाश्रेमम्।'

ओ स्वनि के ओ रिदेशीक प्रश्नाकुनता आरो रढ़ि जायत अछि। ओ पूछि दैत अछि जे ओ जमाता के अछि? नटै उत्तर दैत अछि जे बाजा दशरथक प्त्री शान्ताक पति अछि श्रृष्यश्रृंग, हुनके कते हैरना यज्ञ मे भाग नैक नेन बामक माता सर गेन छथिन।

'रिभाण्डक स्वतास्ताम श्रृष्यश्रृंग उंपयेमे

तेन च साम्प्रतं द्वादशी रार्षिक सत्र माथ्यं।

तदप्परोधात कठोब गर्भपिति रधूं जानकी रिहृप्य

ग्रुरुजनस्तत्र: गत:।'

ओ स्पष्ट अछि जे बामक माता श्रृष्यश्रृंग के अप्पन जमाता मानैत अछि। यहि काबण अछि जे गर्भरत सीता के छोड़ि के अप्पन प्त्री शान्ता आ जमाता

ॠष्यश्रृंगक प्रति श्रकृत स्नेहक कारण माता ॠष्यश्रृंगक श्रश्रम मे पधारैत श्रछि।

तहनि श्रष्टावक्र सेहो यज्ञ मे उपस्थित छल। ओ श्रहि महान यज्ञक समाचार नइ कऽ पहिने श्रयोध्या घुरैत श्रछि। राम शान्ता के श्रप्पन पैग बहीन श्रा ॠष्यश्रृंग के श्रप्पन पैग बहनोइ जेहन सम्मान दैत यज्ञ कऽ नइ कऽ पूछैत श्रछि

'निर्विघ्न: सोमपीथी श्रावृत्ते मे

भगवान ॠष्यश्रृंग श्रार्या च शान्ता। ।'

राम ॠष्यश्रृंग के श्रावृत (बहनोइ) श्रा भगवान (पैग) श्रा शान्ता के पैग बहीन (श्रार्या) जेहन सम्मान दैत श्रछि। सीता सेहो क्षेम पूछैत श्रछि, 'श्रपि क्षेमं स जमात्त श्रस्स।' एतवे टा नै सीता के ओहो जिज्ञासा श्रछि जे ॠष्यश्रृंग के हुनकर याद श्रावैत श्रछि की नै? 'श्रहमेव स्वमवेति?' श्रष्टावक्र एकर उत्तर त्ववित दैत श्रछि. 'श्रथ किम्?' '(श्राओर की?)

तहनि श्रष्टावक्र सीताक नेन हुनकर ननद शान्ता के ओ प्यार भरल संदेश सेहो राम के दैत श्रछि जे सीताक गर्भावस्थाक काल जहि वस्तुक ईच्छा हुए, ओ हुनका उपलब्ध करा‌ओल जाय।

गर्भ दोधेश्रस्या भवति सोऽवस्यम चिवात सम्पादयित्व।

एकर संगे श्रष्टावक्र सं संदेश भेजकऽ ॠष्यश्रृंग सनहज के यज्ञ मे नहि बजारैक कारण क्षमारैक संग संरोधोचित परिहास सेहो कऽ नैत श्रछि

रत्से! कठोर गर्भेति नानितासि।

रसोऽपि रामभद्रस त्विनोदार्थमेव स्थापित:।

तप्त्रे पूर्णोत्संगामायुष्यति दक्ष्याम्।

অর্থাত রৎসে ! (রচী) গর্ভরতী হেরাক কারণ অহাঁ এতয নহি আরি সকলহুঁ আ রসে রাম তে অহাঁক মনোরংজনক লেল অযোধ্যামে অছিযৈ। হম তে অহাঁ কে পুত্র সং ভরন গোদরানী দেখর। ঋষ্যশ্রৃংগ দ্বারা রাম কে রসে আ সীতা কে রৎসে কহিকে প্ররাবর সং স্পষ্ঠ অছি জে দূনূক প্রতি ঋষ্যশ্রৃংগক ছোট সাঢ় আ সনহজক প্রেম ছল।[58]
ওা দ্বাদশ রর্ষীয মহাযজ্ঞ কৌশিকী তট স্থিত ঋষ্যশ্রৃংগক মূল আশ্রম মে ভেল ছল। কিছু রিদ্বান একরা রেরা নদী (নর্মদা) আ সমুদ্রক সংগম স্থল পর হয কে গপ কবৈত অছি।[59] জে সংদিগ্ধ অছি। ওহি সাধন রিহীন যুগ মে অপ্পন মূল আশ্রম সং হজার মীল দূর এতেক রৃহদ দীর্ঘকালীন কঠিন যজ্ঞক সংপাদন করর উপযুক্ত নহি জানি পড়ৈত অছি। ওহি ঠাম পর অহি যজ্ঞক কোনো চিহ্ন সেহো নহি অছি। কোনো ঠোস রহিসক্ষ্যি সেহো নহি অছি জে সিদ্ধ হ্র সকয জে যজ্ঞ অমুক ঠাম পর ভেল ছল। মুদা ঋষ্যশ্রৃংগক কৌশিকী তট স্থিত মূল আশ্রম অহি মহান যজ্ঞক সাক্ষী অছি। আশ্রমক নগ কোশীক কাত মে সতোখর গাম রসল অছি। এতয হজারোঁ ররখ প্ররান সাত রিশাল যজ্ঞ কুন্ড তালারক রূপ মেং এখনো অছি। দূ টা কুংড তে কোশী কে পেট মে চলি গেল মুদা পাঁচ টা এখনো অছি। কিছু দশক পহিনে অহি কুংডক জীর্ণোদ্ধার করয লেল খোদল গেল তে ওহি মে রাখক রড় মোট-মোট

---

58 साभार कादम्बिनी, जून 1991, लेखक श्रीकृष्ण कुमार शर्मा

59 ऋष्यश्रृंग स्मृति ग्रंथ, कोटा, राजस्थान, पृष्ठ 13

পবত নিকলল ছল। পবত এতেক মোটৈ ছল জে ও কোনো এক দিন যা এক মাহক যজ্ঞক বাধ নহি ভঽ সকৈত অছি। ঈ নিশ্চিত রূপ সঁ ররখ ভবি চলল যজ্ঞক বাধ হোযত। সাত কুংড এক সংগ বহরাক কারণ একবা সপ্ত প্ৰক্ষব কহল জাযত ছল। কুংড প্ৰক্ষবেক রূপ ছল। রহি সপ্ত প্ৰক্ষব আর সতোখব রনি গেল অছি।

ঋষ্যশৃংগ জেহল মহান বৈজ্ঞানিক দ্বাবা সংপাদিত অহি তবহক যজ্ঞ কতেক অর্থ মে মহত্ত্বপূর্ণ অছি। ঈ আ৾ষধিক অন্বসংধান, শোধ আ পবীক্ষণ সেহো অপ্পন যজ্ঞশালা মে কবৈত ছল। আয়ুর্বৈদিক গুণ সঁ যুক্ত সমিধাক চযন আ প্রযোগ, রনস্পতিক গুণ-দোষ রিরেচন আ হুনকব র্যরহাবক গরেষণামেক অধ্যযনক নেন অহি ঠামক অতিবিজ্ঞ আ৾ বো ঠাম ও এহি তবহক মহান যজ্ঞ কবনে হোযত তে ঋষ্যশৃংগ জেহল মহান যাজ্ঞিকক নেন অসংভর নৈ। কদা সভী কোণ সঁ পবীক্ষণক পশ্চাত ঈ নির্বিরাদ অছি জে ও ঋষ্যশৃংগ আশ্রম (বর্তমান সিংহেশ্বব) মে দ্বাদশ রর্ষীয যজ্ঞ কেনে ছল, জাহি মে আর্যাবর্তক সভ ঋষি-মুনি ভাগ নেনে ছল। সংগেসংগ অযোধ্যা সঁ বামক মাতা, বশিষ্ঠক স্ত্রী অরুন্ধতীক সংগ যজ্ঞ মে ভাগ নৈক নেন আযল ছল। বাবহ ররখ তক অনরবত ঈ ক্ষেত্র রেদমংত্রক সমূহ গান সঁ গুংজৈত বহল ছল।

মহানদীক প্রগট হেরাক

প্রাগৈতিক জল স্রোত কে স্বর্যরস্থিত কঽ ওহি সঁ সিচাঈক র্যরস্থা কবহি মে ঋষ্যশৃংগ সিদ্ধহস্ত ছল। এখুনকা ছত্তীসগঢ়়ক সিহোরা মে মহানদীক উদ্গম অছি।

ঋষ্যশ্রৃংগ সং পহিলে থহি নদীক থস্তিত্ব নহি ছল। রিশাল পথের সং স্মাঁপন উঁদ্গম কে ভগীবথক প্রযাস সং ঙা ঋষি নদী মে থরতবিত কেলে ছল। পবীক্ষণ সং হ্নকা জ্ঞাত ভেল জে সিহোৱাক শিলা মে থগাধ জল কাত থছি। জৌ জল কাতক নিকাসী থা রহার স্বব্যবস্থিত কঽ দেল জায, তে ঙা একটা বড় পৈগ নদীক রূপ লঽ সকৈত থছি।

ঋষ্যশ্রৃংগ এহলে কবলক। ও লোককল্যাণ, লোক বংজন থা লোক মংগলক লেল জনসহযোগ সং থহি দুষ্কব কাজক সংপাদন কবলক। থহি প্রকাব মহানদী প্রকট ভেল। কিংবদংতি তে ঙা থছি জে হ্নকব কমংডল মে প্বত্রেঠ্যি যজ্ঞক রচল মংত্রসিঞ্চ জল ছল। ওহি সে ঋষ্যশ্রৃংগ মহানদীকে প্রগট কেলক।[60] কথা জে ভী হিএ, সিহোৱা এখ্নকা বাযপ্বব জিলা মে থচি। ঙা দল্ডকাবণ্য ক্ষেত্রক প্রমুখ স্থান থছি। সিহোৱা পর্বত শিখব পব ঋষ্যশ্রৃংগক

[60] ब्रह्मपुराणक एकटा श्लोक खंडमे अहि जनश्रुतिक पुष्टि होयत अछि, श्रृंग तीर्थ महातीर्थ तीर्थ श्रेष्ठा महानदी.

योगिनी तंत्र (2.5 पृष्ठ 139-140) मे महानदीक वर्णन भेटैत अछि. महानदी बरारक दखिन पूब कोनक पहाडी सं निकलैत अछि, जतय सिहोबा अछि. ई बस्तर भ' क' निकलैत अछि आ बिलासपुर जिलाक दखिन सीमा पर पहुँचैत अछि. ई पांच सहायक धारसं जल ग्रहण करैत अछि. ई दखिनपूबमे बहैत अछि आ कटक शहर सं गुजरैत अछि. ई उडीसा राज्यक सबसं पैग धार अछि. ई बंगोप सागरमे गिरय सं पहिने पूब कात पर एकटा पैग डेल्टा बनाबैत अछि.

মংদিব অছি আ মাতা শান্তাক নাম পব একটা গুফা সেহো অছি। প্রাকৃতিক বাতাবরণ সং সংপন্ন ঈ একটা দর্শনীয স্থল অছি। মহানদীক উদ্গমক রমণীযতা তে অকথনীয অছি। মধ্য প্রদেশ মে চাঁদা (চন্দনপুব) মে সাঁদক যা ভাণ্ডক আশ্রম অছি জে বিভাণ্ডকক বিগড়ল রূপ অছি। সোযতকলাঁ (শাজাপুব) মে ঋষ্যশৃংগক মংদিব সেহো অছি। বেহটে (জিলা গ্বালিযব) ঋষ্যশৃংগ গুফা মে হুনকব মূর্তি স্থাপিত অছি। উজ্জৈন মে সেহো ঋষ্যশৃংগক আশ্রম অছি, জতয বর্ষকি লেল হুনকব মূর্তি বনাকে অনুষ্ঠান কেল জাযত অছি।

বংশ বিস্তাব

ঋষ্যশৃংগক বংশ বিস্তাব সেহো ভেল অছি। হুনকব পুত্র সাবংগ ঋষি ছল। ও বড় তপোনিষ্ঠ ছল। ও বেদক গহন অধ্যযন কেনে ছল। হুনকব চাবি টা পুত্র ভেল। চাবো পুত্র উগ্র, বাম, ভীম আ বামদেব আজন্ম ব্রহ্মচর্য ব্রত ধাবণ কঽ যোগ সাধনাবত ভঽ কঽ ব্রহ্ম মে লীন ভঽ গেল। শেষ চাবি পুত্র বসে, ধৌম্যদেব, বেদদৃগ আ বেদবাহু ব্রহ্মচর্য পূর্বক গৃহস্থ আশ্রম মে প্রবেশ কযলক। হুনকব বংশজ শিখবাল (শৃংগীবাল) ব্রাহ্ম অছি, জে সংপূর্ণ দেশ মে পসবল অছি। ও সমৃদ্ধ, বিদ্যানুবাগী আ উৎকৃষ্ঠ সমাজসেবী অছি।

বেদবেত্তা সাবংগক পুত্র বসেক বংশ মে মীমাংস শাস্ত্রক বচযিতা জৈমিনী ভেল।

ওনা ঋষ্যশৃংগ বৈদিক কর্মকাণ্ড আ যাজ্ঞকর্ম মে বিশেষ দক্ষ ছল। হুদা অহি ঋষিবাজক পশ্চাত ব্রাহ্মণ গ্রংথ আ উপনিষদক বচনাকাল মে ঋষি সভ দ্বাবা জীব ব্রহ্ম সংবংধী বিশেষ চিংতন মনন অন্বেষণ কবৈত বহয সং বৈদিক যজ্ঞাদি পবংপবা মে বিকৃতি আ বিভিন্নতা আবি গেল।

তখন মহর্ষি জৈমিনী যজ্ঞ মে পূর্ররত একরূপতা খানয কে উঁদ্দশ্যে সং রেদক প্রমাণক ঋতারিক, যজ্ঞক নিরূপণ খা প্রতিপাদন করৈত যজ্ঞাদি কর্মক সার্থক রিরেচন কবনক। খপ্পন কামনাক পূর্তিক নেন রিধিরত যজ্ঞ কবর জৈমিনীক খনুসাব ধর্ম খছি। তাহি সং ও মীমাংসাক দর্শন খাবংভ খথাতো ধর্ম জিজ্ঞাসা সূত্র সং কেনে খছি। ওনা তে রৈদিক কর্মকান্ডক রিধান মে তহিযৌকা রিরোধক নিরাবণ খা রৈদিক উঁক্তিক খর্থক সম্যচিত নিরূপণ দিস শ্রেতিকান মে ঋষি সভহক ধ্যান গেন ছন জকব প্রমাণ রৈদিক সংহিতা মে প্রযুক্ত মীমাংস খাদি সংজ্ঞা পদ সং ভেটৈত খছি। ঞা দর্শন কর্ম পব রিশেষ রন দৈত খছি খা রেদক খপৌরুষেয খা নিত্য মানৈত খছি। একব সাহিত্য সংপত্তি সেহো রিশান খছি।

পাচম পবিচ্ছেদ

ঋষ্যশ্রৃংগক সমকানীন দোসব চর্চিত ঋষ্যাশ্রম

বামাযণকানক শিখব প্বরুখ ছন ঋষ্যশ্রৃংগ। হ্নকব খাশ্রম রিদ্যাক স্থাযী কেঁদ্র ছন। একব খনারা পূবে দেশ সেহো খাশ্রম সং ভবন-প্বন ছন। ওহি মে জ্ঞান-রিজ্ঞানক খজস্ত্র মংদাকিনী প্ররাহিত ছন। বামাযণ কান খাস্ববী শক্তি পব খার্যক রিজযক জ্গ ছন। ঞা রিজয খস্ত্র-শস্ত্র সং সংভর নৈ ছন। খহি কান মে খাযরির্ত ছোট-ছোট বাজ্য মে রংটন ছন। সর বাজ্য স্বতংত্র ছন খা সভহক খপ্পন পৃথক সেনা ছন। মহর্ষি রনহি সং পহিনে রিশ্বামিত্র নগ সেহো চতুবংগিণী সেনা ছন। সেনা মে হাথী, ঘোড় া, বথ, পৈদন সভ চন। চিত্রকূট যাত্রাক কান ভাবতক খক্ষৌহিণী সেনা মে নৌ হজাব হাথী, সাঠ হজাব বথ, দোসব-দোসব খাযধধাবী খসংখ্য ধনুর্ধব খা এক নাখ খশ্বাবোহী সৈনিক ছন। খহি তবহে

বামাযণকান শেস্ত্র পবিচাননক হ্যগ ছন। খহি কাবণ দেশ মে পসবন প্রায: সভঠা খাশ্রম মে সৈন্য শিক্ষা, খাহ্যধ পবিচানন, শোধ খা নির্মণক শিক্ষা খনিরার্য ছন। সিদ্ধাশ্রম, ভাবদ্বাজাশ্রম, খগস্ত্যাশ্রম, স্বতীক্ষ্ণ খাশ্রম, রাল্মীকি খাশ্রম, রশিষ্ঠ খাশ্রম খাদি মে সংগ্রামিকতাক শিক্ষাক ভবপূব প্ররংধ ছন।
খার্য সভ্যতা খা সংস্কৃতিক সমূন নষ্ঠ কবহিক নেন বারণ মনদ, করুষ খা জনস্থান মে খপ্পন রিশান সৈন্য ছারনী রনৈনে ছন। খহি স্থান মে খার্য ঋষি–মহর্ষিক রড়ৃ পৈগ–পৈগ খাশ্রম ছন জতয বহি কে রিদ্যার্থী সর তবহক শিক্ষা খা র্যারহারিক জ্ঞান গ্রহণ কবৈত ছন। রিশ্বামিত্রক সিদ্ধাশ্রম খা খগস্ত্যাশ্রম মে জখৈন কহিযো খধ্যযন, চিংতন–মনন, খন্বসংধান খা যজ্ঞাদি ক্রিযা হোযত ছন, তখৈন খাস্ববী ছারনী মে তৈনাত সেনা রিঘ্ন উঁপস্থিত কবৈত ছন। ওা বাক্ষস রনরান খা হ্যদ্ধ কনা মে নিপ্বণ ছন। স্বয়ং রিশ্বামিত্র একবা দশবথক খাগূ স্বীকাব কেনে ছন–

মাবীচশ্চ স্ববাহ্শ্চ রীর্যরন্তৌ স্বশিক্ষিতৌ

বামাযণ রানকাঁড 20/5

এহন রনরান বাক্ষসক সংহাবক নেন সিদ্ধাশ্রম মে গহন শোধ কঽ নির্মাণ কবন গেন দূটা রিদ্যা উঁল্লেখনীয খছি। ওা দূটা রিদ্যা সভ তবহক জ্ঞানক জননী ছন। রনা খা খতিরনা, একব প্রভার সং ভূখ–প্যাসক কষ্ঠ নহি হোযত ছন। বাম পহিনে খাচমন কবি কে খপনা কে পরিত্র কেনক খা ফেব মহর্ষি রিশ্বামিত্র সং খহি দূনূ রিদ্যা কে গ্রহণ কবনক। খহি প্রকাব কতেক বাস বহস্যমওা রিদ্যা সেহো খাশ্রম মে সৃজিত কেন জাযত ছন।

आश्रमक वातावरण वैदिक मंत्रक घोष सँ गुंजायमान रहैत छल। ओ वैदिक मंत्रक पूर्ण फल प्राप्त करबाक लेल एकरा शास्त्रानुसार यथा स्वर पढ़बाक विधान छल। अर्जित ज्ञान कतो शिथिल वा विस्मृत न भऽ जाय, एकरा लेल प्राचीन शिक्षाविद दैनिक स्वाध्याय आ अभ्यास प्रणाली निकाललक। स्वाध्याय के अपने मे स्वयं शिक्षण विधि कहल गेल उपयुक्त अछि। इएह कारण ऋष्यश्रृंग छात्र जीवन मे पितृ सेवा आ स्वाध्याय मे एतेक निमग्न रहैत छल जे हुनक मे काम चेतनाक उदय नहि भेल।

स्नातक मे सामाजिक कर्त्तव्यक पालन करबाक लेल तत्कालीन शिक्षाविद ऋणानि त्रीणि केर सिद्धांतक प्रतिपादन केलक, जकर समाज मे महत्वपूर्ण ठाम अछि। एकर इतालिक, संसार मे जन्म लय वला सभ लोक पर देव ऋण, ऋषि ऋण आ पितृ ऋणक भार आबि जाइत अछि। यज्ञक अनुष्ठान, शास्त्रक स्वाध्याय आ संतानोत्पादन सँ मनुष्य अहि सभ ऋण सँ मुक्त भऽ सकैत अछि। स्नातक सभ मे पवित्र सामाजिक उत्तरदायित्वक भावना उत्पन्न करबाक लेल ओ सिद्धांत बड़ उपादेय छल।

ऋष्यश्रृंगक काल मे दोसर जे महत्वपूर्ण आश्रम आर्यावर्त मे संचालित छल, ओकर संक्षिप्त परिचय एना अछि–

सिद्धाश्रम

मगध प्रदेश मे आधुनिक बक्सर नगर विश्वामित्रक ओ चर्चित आश्रम छल। एकरा महाश्रम सेहो कहल जाइत अछि। एतय छात्र सभके अलग-अलग तरहक अस्त्र-शस्त्रक शिक्षा देल जाइत छल। एतय नव-नव अस्त्र-शस्त्रक

খরিষ্কাব খা ওকব পবীক্ষণ সেহো কবন জাযত ছন। খার্য সভ্যতা–সংস্কৃতিক ওা পূর্রী কেঁদ্র ছন। বারণ জেহন মহাপ্রতাপী সম্রাট সেহো খহি মহাশ্রম সং সদিকখন ডবন বহৈত ছন। যহি কাবণ ছন জে ও একটা সৈনিক ছারনী এতয রনৈনে ছন জে মাবীচ, স্বরাহু, তাড়কা জেহন মহাভট সং সংচানিত হোযত ছন। ককুষ মনদক স্ত্রী সেহো রড় রহাদুব খা সাহসী হোযত ছন। রিশ্বামিত্র ভগরান বাম কে এতয সৈনিক শিক্ষা দেনে ছন। সংগেসংগ ও কতেক বাস নর খা পবংপবাগত পচপন দুর্নভ খস্ত্র দেনক খা হুনকব প্রযোগ কবহি কে রিধি রতৌনক।[61] কোশী তট পব সেহো হুনকব তপস্যা স্থন ছন। এতয ও এতেক কঠিন তপস্যা কেনে ছন, জাহি সং সৃষ্ঠিক মূন চঞ্র ধবি হিন উঠন ছন। ও কোশী তট পব পগন মাগট খা রাতারবণক খন্নসাব চীনা, মডুখা, খেবহী জেহন খনাজ খা ভৈঁস জেহন পশুক রিকাস কবনক। ও খপ্পন কানক প্রখ্যাত ঋষি খা পশু রৈজ্ঞানিক সেহো ছন।
উত্তব রৈদিক কান মে খার্যক রীচ ওা রিরাদ ভ২ গেন জে রিজিত দস্যু ক২ কী কবন জায? জৌ ওকব রধ কবন জায তে খার্যক সেরা চাকবী কে কবত? জৌঁ ওকব জীরিত বাখন জায তে সমাজ মে ওকব কী পদ হোযত খা দাসী–পুত্রক হুটুম্ব মে কোন স্থান হোযত? ওা রিরাদ যাহুক রূপ ন২ নেনক। শাস্ত্রক খন্নসাব, রশিষ্ঠ খা রিশ্বামিত্র মে খহি সমস্যাক ন২ ক২ রিবোধভার রঠি গেন। রশিষ্ঠ বঞ শুহ্রিক পক্ষধব ছন খা রিশ্বামিত্র দস্যু সভ কে খার্য রনারৈন চাহৈত

---

61 प्राचीन भारत की संग्रामिकता, पंडित रामदीन पाण्डेय, पृष्ठ 36

ছন। রিশ্বামিত্রক খনুসাব, খার্যত্ব জন্ম সং নৈ গাযত্র মংত্রক জপ সং শ্বস্কু ভ২ ক২ সৎ খা শ্বৃত সং প্রেবিত ভ২ ক২ যজ্ঞোপরীত ধাবণ কবমি সং ওকব শ্বস্কি হোযত খছি। কোনো মনুখ খহি প্রকাব সং নযা জন্ম গ্রহণ ক২ সকৈত খছি। দ্বিজ বনি কে খার্য ভ২ জাযত খছি। তহিযৌকা সমাজ মে ও উঁদাববাদী বীতি বহি সিখৌনে খছি। খহি তবহে তহিযৌক ভাবতীয সমাজ সংবচনা মে রিশ্বামিত্রক বড় পৈগ যোগদান খছি। ও হ্নকব কৌশিকী তটক চিংতন-সাধনক প্রতিফন খছি।[62]

বাজা জনকক খাশ্রম

মহর্ষি যাজ্ঞবল্ক্য খহি খাশ্রমক খাচার্য ছন। ও মিথিনাক রিদ্বান নবেশ সীবধ্বজ জনকক দেখ-বেখ মে সংচানিত হোযত ছন। এতয জাগতিক বহস্য, জীরনক রিভিন্ন জটিন গ্বথী, জীরন-মবণক সমস্যাক সমাধান খা জ্ঞান-রিজ্ঞানক তত্ত্ব কে সার্থক খন্বেষণ কবন জাযত ছন।[63] খহি খাশ্রমক নাম এতেক পসীব গেন ছন জে মিথিনাক খমবাও কে সংচানিত গৌতম খাশ্রম ফীকা ছন।

ভাবদ্বাজ খাশ্রম

ও খাশ্রম প্রযাগ মে ছন। একবা রিশ্বরিদ্যানযক মান্যতা প্রাপ্ত ছন। ও সর্বশক্তি খা সাধন সংপন্ন খাশ্রম ছন। শ্রীবাম কে মনা ক২ ভবত সদনরন ফেব সং খযোধ্যা ন২ জায কে নেন চিত্রকূটক বাট মে প্রযাগক ভাবদ্বাজ খাশ্রম মে এক বাত্রি নিরাস কেনে ছন। রান্মীকীয

---

[62] लोपामुद्रा, कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी, दिल्ली, पृष्ठ 10

[63] प्राचीन भारत की संग्रामिकता, पृष्ठ 36

বামাযণক খযোধ্যাকল্ডক খধ্যায 89-90 মে একব রর্ণনি খছি। ও স্বাগত বৃতাঁত সঁ পত চনৈত খছি জে ও খাশ্রম কতেক সাধন সংপন্ন ছন। ভাবদ্বাজ রিশ্বকর্মা, ওঁদ্র, যম, রকুণ, ক্ষরেব, পৃথ্বী, খাকাশ, নদী, দের, গংধর্র, খপ্সবা, চিত্রবথ রন (জেকব গাছ খনংকাব সঁ নদন খছি), উত্তম খন্ন, ভক্ষ্য, ভোজ্য, নেহ্য খা চোষ্যক প্রচ্ব মাত্রা মে র্যরস্থা করৈত ভগরান সোম খাদি দেরতাক খাহ্বান কযনক খা দেরতা সভ হ্নকব খাদেশান্বসাব ভবত কেব স্বাগতক সভ র্যরস্থা কযনক। এতরে ঠা নৈ, হ্নকব যোগরন সঁ মনয খ দর্দ্ব নামক পর্রতক স্বগংধ হাঞ শীতন হরা সভ নোকক থকান হ নেনক। খামংত্রিত নদী মে মৈবেয ভবি গেন। সৈনিক ছক কএ একব বস পান কেনক। পাঁচ যোজন ধবি সমতন ধবতী পব নীনম খা রৈদ্র্য মণিক সমান কতেক তবহক কোমন ঘাস উগি গেন। খাশ্রম মে রেন, কৈথ, কটহন, খাঁরনা, রিজৌবা খা খামক ঘনা বৃক্ষ ছন। চাবি-চাবি কোঠনী সঁ হাঞ খসংখ্য চবূতবা ছন। হাথী, ঘোড় াক বাখহিকে নেন খনগ শানা ছন। বাজপবিরাবক নেন স্বনব দ্বাব হাঞ দির্য ভরন ছন। এতয সর তবহক দির্য বস, দির্য ভোজন খা দির্য রস্ত্র ছন। ভবতক নেন কতেক প্রকাবক বনে সঁ সজ্জিত মহন ছন। খতিথিক স্বাগত নেন হজাব দির্যাংগনাএঁ ছন। এতয খপ্সবাক নৃহ্য খা গীত চনি বহন ছন। সভ নোক ভবপেট মন জোগব ভোজন কেনক খা ছককয মৈবেয কেব পান কেনক। খপ্সবাক সংযোগ পারি কে ভবতক সৈনিক হম খযোধ্যা নহি ঘ্বর, খহি দল্ডকাবণ্য মে বহর, জেহন পবস্পব গপ কবি বহন ছন। মৃগ, মোব খ ন্ধগকি মাঁসক সংগ

मदिबापान कऽ सैनिक भूमि बहैत छल। आजराजन भिनाकऽ बनाओल गेल, बबाभ्री कंद सं तैयाब कयल गेल आ आम आदि फल के गबम कयल बस मे पकाओल गेल उँत्तमोत्तम व्यंजनक संग्रह, स्वगंधमय बसबला दान आ श्वेत बंगक भात सं भबल सहस्त्र स्वर्ण आदि केब पात्र ओतय सभ दिस बाखल छल, जेकबा फूलक ध्वजा सं सजाओल गेल छल। भबतक संग आयल सभ लोक हुनका आश्चर्यचकित भऽ कें देखलक। आश्रम मे सहस्त्र सोना के अन्न पात्र, लाख व्यंजन पात्र आ एक अबब थाली संग्रहित छल। सात-आठ तरुणी स्त्री भिनकऽ एक-एक पुरूख के नदीक मनोहब तट पब उँबटैन लग के नहाबैत छल। पैग-पैग आँखि बाली बमणी अतिथि सभ के पैब दबाबैक लेल आयल छल। ओ हुनकब भोजन अंग के सूखल बस्त्र सं पोछि के बस्त्र धाबण कबाकऽ हुनक स्वादिष्ठ पेय पिआबैत छल। महर्षि भाबद्वाज द्वाबा सेना सहित भबत के कयल गेल ओ अनिर्बचनीय आतिथ्य सकोब अद्भुत आ स्वप्नक समान छल। अहि वृतांत सं ओ पत चलैत अछि जे ओ आश्रम कतेक समृद्ध आ साधन संपन्न छल। सैनिक शिक्षाक उँद्देश्य सं ओ आश्रम बनल छल, एहन प्रतीत होयत अछि।[64]

अगस्त्याश्रम

नासिक सं 36 किलोमीटब दक्षिण पूर्व वर्तमान अगस्तिपुब मे ओ आश्रम छल। एकब कुलपति महर्षि अगस्त्य छल। ओ सैनिक शिक्षा, आयुध-अनुसंधान आ ब्रह्म विद्याक केंद्र

64 प्राचीन भारत की संग्रामिकता, पृष्ठ 38

ছল। ওা ক্ষেত্র জনস্থান কহল জাযত খছি। মহর্ষি খগস্তক খাশ্রম তে ওহি যুগ মে ভয খা খাদবক সম্মানিত ছল। খহি খাশ্রম মে এতেক রিধ্বংসক শস্ত্র–খস্ত্র তৈযাব হোযত ছল জহি সং বাক্ষসবাজ বারণক হৃদয মে সদিকখন খাতংক রনল বহৈত ছল। বারণ খহি ডব সং ওতয খপ্পন পৈগ সৈনিক ছাবন কাযম কহ দেনে ছল। বাম বারণক রধ পৈতামহ নামক খস্ত্র সং কেনে ছল। মহর্ষি খগস্ত্য খপ্পন খাশ্রম মে বারণ–রধক নেন একব খরিষ্কাব কেনে ছল। ভগরান বাম কে ও খহি উদ্দেশ্য সং হুনকা ভেংট কেনে ছল। পৈতামহ খস্ত্র মে পহাড় কে রেধয কে শক্তি ছল।[65] একব খতিবিক্ত খগস্ত্য বাম কে হীবা খা স্বর্ণ জড়ন দিব্য ধন্বষ, সূর্যক সমান দেদীপ্যমান খমোঘ বাণ, তীক্ষ্ণ খা প্রজ্জরনিত খগ্নিক সমান বাণ সং সদিকখন ভবন বহি রনা খক্ষয তবকস খা সোনাক ম্যান খা সোনাক মূঠ রনা তনরাব ভেংট দহ কহ বাক্ষস কেব সংহাবক নেন খাহ্বান কেনে ছল।[66]

খগস্ত্য খাশ্রম মে জ্ঞানক রিভিন্ন রিভাগ ছল। ব্রহ্ম থান, খগ্নি থান, রিষ্ণু থান, মহেন্দ্র থান, রিরস্বান থান, বাহ্য থান, বাকণ থান প্রভৃতি। ব্রহ্ম থান মে রেদক খধ্যযন হোযত ছল। খগ্নি থাম মে সাম গান হোযত ছল। এতয মংত্রাচাবণক সংগ সমিধা খাহুত হোযত ছল। রিষ্ণু থান মে বাজনীতি, খর্থশাস্ত্র, পশুপানন, খাক্রমণকাবী খা

---

[65] प्राचीन भारत की संग्रामिकता, पृष्ठ 113

[66] बाल्मीकीय रामायण, अरण्य कांड 12/32-34

বক্ষণশীন খাদ্যধক জ্ঞান প্রদান কবন জাযত ছন। রিরস্থান থান মে জ্যাতিষক পঠ় ায হোযত ছন। চিকিৎসা রিজ্ঞান সেহো এতয পঠ় াওন জাযত ছন। গরুড় থান মে যাতাযাত, যান খাদি কে জ্ঞান উঁপনর্ধ হোযত ছন। কার্তিকেয থান মে ব্রহ্মচাবী গ্বন্ম,পত্তি, রাহিনী খাদিক সংচাননক শিক্ষা প্রাপ্ত কবৈত ছন। কৌরেব থান মে জন সংতবণ, পোত সংচানন খাদি কেব শিক্ষা দেন জাযত ছন।[67]

মহর্ষি খত্রি খাশ্রম

ওা খাশ্রম চিত্রকূটক দক্ষিণ মে সংচানিত ছন। ওা তহিযৌকা খার্য সভ্যতাক হ্মখ্য কেংদ্র ছন। হস্তশিল্প কনা মে ওা খগ্রণী ছন। রনরাস কান মে মহর্ষি খত্রিক স্ত্রী খনুসূগযা সীতাজী কে এহন দির্য রস্ত্র খা খাভূষণ পহিনেনে ছন জে নিত্ নরীন, নির্মন খা স্বহারনা রনন বহৈত ছন। সংগেসংগ ও সীতাজী কে পতিব্রত ধর্মক সেহো শিক্ষা দেনে ছন।[68]

রাল্মীকি খাশ্রমক সংরংধ মে ওতিহাসকাব মে মত খনগ-খনগ খচি। ওা তমসাক তট পব স্থিত ছন। ওা রিশ্বরিদ্যানয খপ্পন কান মে শিক্ষাক মহান কেংদ্র ছন। মহাকরি ভরভূতিক খনুসাব, এতয ছাত্রা সভ সেহো খধ্যযন কবৈত ছন। এতয খনগ-খনগ শাস্ত্রক সংগ শস্ত্র/খস্ত্রক সেহো শিক্ষা দেন জাযত ছন। একব

---

67 बाल्मीकीय रामायण, अरण्य कांड अ.12

प्राचीन भारत की संग्रामिकता, पृष्ठ 40

68 रामचरित मानस, अरण्य कांड, पृष्ठ 601

প্রমাণ স্বযং বামক প্বত্র নর-ক্শ ছন। রশিষ্ঠ খাশ্রম খযোধ্যা মে স্থিত ছন, জতয ভগরান বাম শিক্ষা পাওন।

গ্বক গৃহ গযে পঠ়ন বঘ্বাঙ, খল্পকন রিদ্যা সর পাঙ।

বামচবিতমানস, রানকান্ড

মহর্ষি রশিষ্ঠক দোসব খাশ্রম হিমানযক তনহটী মে সেহো ছন, জকব র্ণন বঘ্রংশ নামক মহাকাব্য মে কানিদাস কেনে খছি। খহি খাশ্রম মে ছাত্র সংঘ সেহো ছন, জকব রাল্মীকি মেখনীনা মহাসংঘা কহি কে উল্লেখ কেনে খছি। খহি সংঘক বাজসভা মে সেহো প্রভার ছন। নৈমিষাবণ্য মে মহর্ষি শৌনক কে সেহো চর্চিত খাশ্রম ছন। এতৌকা খংতববাষ্ট্রীয সংগোষ্ঠী সভ রড় প্রসিদ্ধ ছন। খহি মে ধার্মিক, বাজনীতিক খা রৈজ্ঞানিক রিচাব পব সংরাদ হোযত ছন।[69]

একব খনারা, মহর্ষি স্বতীক্ষ্ণ, মহর্ষি শবভংগ, মহর্ষি মতংগ খা মহর্ষি জারানিক খাশ্রম শিক্ষাক প্রমুখ কেংদ্র ছন।

ছঠম পবিচ্ছেদ

ঋষ্যশৃংগক শৃংগেশ্বব (সিংহেশ্বব)

রিহাব বাজ্যক জিনা মুখ্যানয মধেপ্ববাক বেনরে স্টেশন দৌবম মধেপ্ববা কহনারৈত খছি। এতয সং খাঠ কিনোমীটৈব উত্তব ঋষ্যশৃংগক শৃংগেশ্বব খার সিংঘেশ্বব যা সিংহেশ্বব থানক নাম সং প্রসিদ্ধ খছি।

---

[69] साभार अखंड ज्योति (मासिक) मथुरा, जून, 2002, पृष्ठ 9-10

নগভগ দৃ সৌ রবখ পহিনে হবিচবণ চৌধবী নামক একটা নকড় ীক ব্যরসাযী কোশীক জনমাস্থ্র সং নেপান সং নকড় ী খানি কে ব্যরসায কবৈত ছন। এক রেব হ্নকা ব্যরসায মে রেসী নাভ ভেন। ও শিরভঞ ব্যরসাযী শ্রৃংগেশ্বৃব নাথ (সিংহেশ্বৃব নাথ) কেব একটা ভব্য মংদিব বনৈনক। জখন ভাগনপ্পব কেব জিনা খা সত্র ন্যাযাধীশ কেব এতয ক্ষেত্রীয সনাতন ধর্মী রনাম পংডাগণ (জয নাবাযণ ঠাকুব খা 13 খন্য) রাদ সংখ্যা 3/1937 চনি বহন ছন, ওহি সিনসিনা মে হবিচবণ চৌধবী কে পৈংসঠ রর্ষীয প্রপৌত্র দববাবী চৌধবী খপ্পন গরাহী মে রাজন ছন জে রর্তমান মংদিবক পূর ভবি দীরান পব স্বযং হবিচবণ চৌধবী, পশ্চিম ভবি দীরান পব নানজী চৌধবী খা উত্তব ভবি দীরান পব শির্ চৌধবী কে চিত্র খংকিত খছি। খহি তথ্যক প্বষ্ঠি ও খপ্পন সাক্ষ্য মে কেনে ছন। তাহি সং কতিপয স্থানীয ব্হিজীরী দ্বাবা মংদিব মে উংকোর্ণ খহি চিত্র কে ব্রু খা দোসব রৌদ্ধ ভিক্ষ্ কেব মানর সবাসব ভূন খছি।

ঋষ্যশ্রৃংগক জন্মভূমি খা কর্মভূমি হেরাক কাবণ খহি ক্ষেত্রক প্রাচীন মহত্ব খছি। এতয কে কণ-কণ মে ঋষ্যশ্রৃংগ এখনো বমৈত খছি। এতয কে মাটি খহি ঋষিবাজক যজ্ঞাগ্নিক ব্মন ভস্ম খছি। তাহি সং নদী সং খাছাদিত ঙা ক্ষেত্র রড় উর্রব খছি। একব প্রাচীনতা কে ব্নৌক নেন সরসং পহিনে শ্রৃংগেশ্বৃব নাথ (স্ং ােহেশ্বৃব) কেব নদী সভ (কোশী খা ওকব দোসব সভ ধাব) কেব খধ্যযন কবর খারশ্যক খছি। কোশীক কতেক বাস ছাড়ন ধাব সূখি গেন খছি খা ওকব ধাব খার নিস্তেজ ভঽ গেন খছি। হ্মদা ভাবত

সবকাবক কোশী নিযংত্রণ যোজনা সং পহিনে চীন কে হ্বাংগহো নদী সং রহি কে খপ্পন রিনাশকাবী রাহ কোশী জগ জাহিব ছন। দেখূ জে ভোনানাথক নগবী খা ঋষ্যশ্রৃংগক তপস্থনী মে কোশী খা ওকব ছাড়ন ধাবক স্থিতি কী ছন ?

কোশী ধাব ভগরান শির কে রড় প্রিয খছি। মহাকরি কানিদাসক খনুসাব, কোশীক তট পব সাক্ষাত শংকব রসৈত খছি।[70] তাহি সং কোশী শংকবক তবহে তাঁডর কবৈত খছি।

মহাভাবত মে কৌশিকী তীর্থক রূহত চর্চা খছি[71], জে খহি দেশক সাংস্কৃতিক ভূগোন কেব রেখাংকিত কবৈত খছি। একবা জানৈক নেন সিংহেশ্বব মে প্ররাহিত কোশীক রিভিন্ন ধাবক জানকাবী খারশ্যক খছি।[72]

হ্মখ্য কোশী নদী ভীমনগব সং দক্ষিণ চনিকে শিরনগব গামক নিকট দূ ভাগ মে রংটি জাযত খছি। ওতয পূর ভবি রনা ধাব সে রৈরাহ (ধসান) খা চিনৌনী নামক ধাব রনৈত খছি খা পশ্চিম ভবি রনা ধাব সং পবরানে, তিনারৈ, রড়হবী খা সোনেহ নামক ধাব খপন স্বরূপ গ্রহণ কবৈত খচি। তিনারৈ নদী এখন স্বপৌন জিনাক থুমহা, রসহা, ত্তনাপট্টী, বামনগব, বামপ্বব খাদি গাম কে স্পর্শ কবৈত সিংহেশ্বব স্থানক চর্চিত গাম রভনী

---

70 कुमार संभव, सर्ग 6, श्लोक 33

71 महाभारत, वन पर्व, अ. 84

72 बिहार की नदियाँ (एतिहासिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण), हवलदार त्रिपाठी सह्णदय, पटना, 1977, पृष्ठ 339-433

ভেনরা খারৈত খছি। ওা গাম বামপ্ববক খগ্নিকোণ মে খা তিনারৈ কে পাশ্‌র ভাগ মে খছি। কহন জাযত খছি জে কহিযো ওা গাম ভররারা থানক নাম সঁ প্রচনিত ছন। হ্মগন সম্রাট শাহজহাঁক কান মে ভররারা একটা সমাজ সেরী ছন, জিনকব জন্ম খহি ঠাম পব ভেন ছন। 350 ওাপূ খহি গাম মে হ্নকব স্মাবক ছন।

তিনারৈ রভনী ভেনরা গাম সঁ কনি নৈঋৎ কোণ মে ন্কি কে সিংহেশ্বব থানক মাব্ক্ষা মে স্থিত গম্হবিযা নামক গাম খারৈত খছি। খহি গাম মে সোনায মহাবাজ নামক একটা ধার্মিক খা সমাজ সেরী নোকদেরক স্মাবক খছি, জিনকা প্রণাম কবি কে তিনারৈ সঁ খাগূ রঠি় জাযত খছি।

সোনেহ একটা ছোট ধাব খছি জে সিংহেশ্বব থানক নৈঋৎ কোণ স্থিত দনদনী চৌব সঁ প্ররাহিত হোযত খছি। ওা পবরানে ধাবক একটা টূটৈন ধাব খছি। ওা খপ্পন উঁদ্গম সঁ দক্ষিণ দিস চনি কে নঁরা দূব তয কবি কে রঁশীবৌতা গাম মে তিনারৈ ধাব মে প্ররেশ কবি জাযত খছি।

পবরানে ধাব কপৌনী সঁ দক্ষিণ চনি কে সিংহেশ্ববক চর্চিত গাম বামপঙ্খী মে প্ররেশ কবৈত খছি, জতয ধসান খা রবহবীক ধাব খহি মে মিনিকএ একব জনভঁডাবক বৃদ্ধি কবৈত খছি। পবরানে খা ধসানক ওা সংগম সিংহেশ্বব খা গৌবীপ্ৱব সঁ কনি দূব ঠাম খছি। ধসানক খনগ খস্তিত্ব খছি হ্মদা রবহবী পবরানেক একটা উঁপধাব খছি, জে খার মৃত ভ২ গেন খছি। এক চৌব সঁ চনি কে রবহবীক ধাবা পবরানেক সমানাঁতব দক্ষিণ ভবি চনৈত খছি খা খপ্পনে রাম ভাগ সঁ ডঁডাবী, চম্পানগব, রৈবরন্না খাদি গামক স্পর্শ কবৈত

অছি।
পবরানে ধাব বামপঙ্খী সং চনিকে সিংহেশ্বব থান আরৈত অছি, জতয ও ভগরান শংকবক চবণ স্পর্শ কবৈত অছি। কোশীক চিনৌনী ধাব নানপ্পব সং দক্ষিণ চনিকে দাহিনা পাশ্র মে সবোপঙ্খী গাম কে স্পর্শ কবৈত অছি। নানপ্পব গাম কে নগভগ দূ সৌ ববখ পহিনে ভান্নদাস নামক হ্মশাগ্র রংশীয বাজভব সবদাব বসৈনে ছন। অহি গামক নগ গৌবীপ্পব অছি। সিংহেশ্বব নাথ মংদিব নগ চিনৌনী দূ ভাগ মে রংটিকে সমানাংতব মধেপ্পবা আরৈত অছি। গৌবীপ্পব সং দক্ষিণ পূর্বী ধাবক কাত বামপ্পব নামক গাম অছি, জতয দূ সৌ ববখ প্পবান একটা ব্রহ্মস্থান অছি।

চম্পাবণ্য তীর্থ

মহাভাবত মে বর্ণিত কৌশিকী তীর্থ মে একটা তীর্থ অছি চম্পাবণ্য। ওা ক্ষেত্র তকোনীন অংগ নবেশক অধীন ছন। মহাভাবত সং পূর অংগ দেশক বাজধানী মানিনী ছন। বাদ মে বাজা বোমপাদক প্রপৌত্র চম্পা নামক একটা বাজাক নাম পব চম্পা যা চম্পারতী কহ দেন গেন।[73] মহাভাবত কান মে ওা চম্পা নগবী চম্পকক বাগ সং পবিবৃত ছন।[74] তাহি সং অহি চম্পাবণ্য সং চম্পা বাজ্যক অবণ্য ভাগ বুঝরাক চাহি। একবা এখুনকা চম্পাবণ জিনা বুঝরাক ভৌগোনিক ভূন অছি। ছঠম শতাব্দীক বচনা শক্তি সংগম তংত্রক অনুসাব বিদেহ

[73] महाभारत, शांतिपर्व, 34-35

[74] महाभारत, अनुशासन पर्व, अ. 42

ভূমিক সীমা থিহ তবহে দেন গেন থিছ,

'গল্ডক তীবমাবম্য চম্পাবণ্যান্তক শিরে

রিদেহ ভূ সমাখ্যাতা তৈবহ্মঙ ভিরং স্বত। '

শক্তি সংগম তংত্র 7/27

রিদেহ ভূমি পশিচম মে গল্ডকী তীব খা পূর মে চম্পাবণ্য ধবি পসবন থিছ। রিদেহ ভূমি মিথিনাক পূর ঙা ক্ষেত্র চম্পাবণ্য থিছ। রর্তমান চম্পাবণ জিনা মিথিনাক পশিচম মে স্থিত থিছ।

মহাভাবতকাব জে চম্পাবণ্য তীর্থক রর্ণক কেনে থিছ, ও তীর্থ রড় পূণ্য প্রদান কবয রনা থিছ। মহাভাবতক থনুসাব, ওতয এক বাত্রি বহয সং সহস্রা গায কেব দানক ফন ভেটৈত থিছ।[75] ঋষ্যশ্রৃংগক তপোভূমি কৌশিকী তীর্থ মে রীবাশ্রম খা ফমাবতীর্থ সেহো থিছ, জে চম্পকাবণ্য তীর্থক উঁত্তব ভবি কে সীমা খা পূর সীমা পব স্থিত ক্রমশ: রীবপুব খা ফমাবখংড কে রেখাংকিত কবৈত থিছ। ঙা চম্পকাবণ্য তীর্থ সিংহেশ্বব থান নির্দিষ্ঠ হোযত থিছ। ঙা সমস্ত ক্ষেত্র চম্পা নবেশক থবণ্য ভাগ ছন। এতৌকা রেসী গাম মে চম্পা দেরীক পূজা হোযত থিছ। শংকবপুব মে রবহগাড়িযাক জমীদাব রারূ একদেশ্বব সিংহ চম্পা দেরীক মংদিব রনায কে ওতয চম্পাক মূর্তি স্থাপিত কেনক খা

---

75 ततो गच्छेत राजेन्द्र चम्पकराण्य मुत्त्सम

तत्रोष्य रजनीमेकां गो सहस्त्र फलं लभेत.

महाभारत, वनपर्व, 784/133

একটা পোখরি বনাকেঁ অহি ঠামকেঁ রমণীয বনৌনেক.[76] একর অলাবা, নিশিহরপুরমে সেহো চম্পা দেবীক মূর্তি স্থাপিত অছি, জতয প্রত্যেক বর্ষ মেলা লাগৈত অছি। অন্য দেবী-দেবতাক অলাবা রাঁতর জাগতক মান্য জন দেব চম্পাবতী সেহো অছি। [77] রাঁতরক অলাা দোসর কতেক রাস জাগত চম্পাদেবীক ভগৈত গাবৈত অছি। তাহি সঁ সিংহেশ্বর থানক চম্পারণ্য তীর্থ নৈ মানব একটা ঐতিহাসিক ভূল অছি।

পররানে নদী সিংহেশ্বর সঁ দক্ষিণ দিস চলি কে জোতলার গাম কে স্পর্শ করৈত অছি। কৌশিকী তীর্থ মে একটা জ্যোতিস্মর তীর্থ সেহো অছি, জতয হ্রদ মে নহারয সঁ বড় পুণ্য ভেটৈত অছি। ই জোতলার গাম মহাভারত কালীন জ্যোতিস্মর তীর্থ অছি। [78] তহযৌকা ভৌগোলিক সাক্ষ্যক আধার পর সমূচা ক্ষেত্র চম্পা রাজাক বনভাগ ছল। চম্পাবতীক বনদেবী সেহো কহল গেল অছি। [79] জো একটৈবা পৌরাণিক মান্যতা অছি। মহাভারতক অনুসার ঋষি আ রাজাক একটা দল প্রভাস তীর্থ সঁ যাত্রা শুরু কঽ কৌশিকী তীর্থ সেহো গেল ছল। অহি দল মে ভৃগু, বশিষ্ঠ, গালব, কশ্যপ, গৌতম, বিশ্বামিত্র, যমদগ্নি , অষ্টক, ভারদ্বাজ, অম্বরীষ আ বালখিল্য ঋষি ছল আ

[76] म.म. परमेश्वर झा, मिथिला तत्व विमर्श, पृष्ठ 80

[77] सहरसा गजेटियर, 1965, पृष्ठ 78

[78] हवलदार त्रिपाठी सहृदय, बिहार की नदियाँ, पृष्ठ 404

[79] मिथिला तत्व विमर्श, पृष्ठ 80

বাজা মে শিরি, দিলীপ, নহুষ, অম্ববীষ আদি ছল।[৪০] অহি যাত্রা বৃতাঁত অহি ক্ষেত্রক পৌবাণিকতা আ দর্শনীযতা কে বেখাঁকিত কবৈত অছি।

পৌবাণিক সিংহেশ্বব থান

সিংহেশ্বব স্থান ভগরান শংকবক পারন তপস্থলী অছি। ষোড মহাজনপদ মে শীর্ষস্থ জনপদ অংগ দেশক ও মহত্ত্বপূর্ণ তীর্থস্থল অছি। অংগ দেশক নির্মাণ মে সেহো ভগরান শিরক উল্লেখনীয যোগদান অছি।
দক্ষিণ মে মন্দবাচল পর্রত আ উত্তব মে মূজরান পর্রত ধবি পসবল রিশাল রন্য প্রদেশ শ্লেষামেক রন ছল, জতয কন্দর্প দহনক পশ্চাত ভগরান শির সমাধিস্থ ভেল ছল। কোশী কে কতেক ধাব রন মে রহৈত ছল। রাবাহ পুবাণক উত্তবার্ধক একটা পুবা কথাক অনুসাব, ওহি রন মে ভগরান শির কে খোজৈত দেরবাজ ইংদ্রক সংগ রিষ্ণু আ ব্রহ্মা পহুঁচল। ভগরান শির একটা সুনব হবিণক রূপ মে রিচবণ কবৈত ছল। তীনো অংতযামী দেরতা অহি হবিণ কে দেখহি কে বুঝি গেল জে ও ভগরান শংকব অছি আ ও হবিণ কে পকড়হি মে সফল ভ২ গেল। ইংদ্র হবিণক সীংগক অগ্র ভাগ, ব্রহ্মা মধ্য ভাগ আ রিষ্ণু নিম্ন ভাগ পকড়লক। একাএক সীংগ তীন ভাগ মে টুটিকে রিভাজিত ভ২ গেল। তীনো দেরতাক

---

[80] महाभारत, वन पर्व, 84/156

হাথ মে সীগক এক–একটৈ ভাগ বহল খা হবিণ লুপ্ত ভঽ গেল। তখনৈ খাকাশৱাণী ভেল কি খাব শিব নহি ভেটৈত। দেৱতা সভ খপ্পন–খপ্পন হাথ মে খাযল সিংহক ভাগ কে পাবি কে সংতোষ কঽ লেলক।
কহল জাযত খছি জে বিষ্ণু লোক কল্যাণার্থ খপ্পন ভাগক সীগ কে জহি ঠাম পব স্থাপিত কবলক, ও বর্তমান সিংহেশ্বব (শ্রৃংগেশ্বব) খছি। খহি তবহে একব সিংহেশ্বব নাথ নাম সার্থক ভেল।
বাবাহ প্ববাণক খহি প্ববা কথাক খনুসাব তীনোঁ দেৱতা কোশীক তীব পব ভগৱান শিব সে ভেঁট কবয লেল পহুঁচল ছল। খহি তথ্য কে কালিদাস গ্ৰত কুমাবসংভব মে স্পষ্ঠ কবল গেল খছি। ওকব খনুসাব, কোশী কে প্রপাত লগ ভগৱান শিবক নিৱাস খছি খা দেৱতা সং ওতয ভেঁট কবযক স্থান নির্দিষ্ঠ কবল গেল খছি। [81]
খত: কোশীক তীব পব ওংদ্র, বিষ্ণু খা ব ব্রহ্মা কা শংকব সং ভেটৈ কবব পূর্ব নির্দিষ্ঠ খা নির্ধাবিত ঠাম দিস হুনকব খাগমনক সূচক খছি।
ঝদা বাবাহ প্ববাণক খংতিম খধ্যাযক কথা জে প্রমাণক ৰূপ মে প্রচলিত খছি, ও স্পষ্ঠ লৈ খছি জে মৃগ ৰূপ মহাদেৱক শ্রৃংগ মূল পাবৈক ভগৱান বিষ্ণু ওকবা এতয স্থাপিত কেলে ছল। তাহি সং খহি বিষয পব প্রবুদ্ধ পাঠক খপনে সং বিমর্শ, বিশ্লেষণ খা বিৱেচন কবয, যহি উঁচিত খছি। মিথিলা তত্ব বিমর্শ, পৃষ্ঠ ৪০ মে বিদ্বান লেখক মহামহোপাধ্যায পবমেশ্বব ঝাক সেহো যৈ মত খছি।

---

[81] तत्प्रपातौषधि प्रस्थं सिद्धये हिमवत्पुरम महाकोशी प्रपातेअस्मिन संगम पुनरेवनः, कुमार संभव, 6/33

চৌরীস হজার শ্লোক রনা রাবাহ প্ববাণ একটা সতোগ্বণ প্ববাণ খছি, জহি মে রিষ্ণুক রবাহ খরতাব রর্ণিত খছি। মহাভাবত খা পদ্মপ্ববাণ ওহি রড় ক্ষেত্রক উঁল্লেখ তহ নৈ খছি, হদা খহি ক্ষেত্রক স্থান নির্দেশক নেন খপ্পন জানকাবী কেব রেস স্পষ্ঠ কবৈত খছি। ওহি মে খতীতকালীন প্ববা কথা খছি, জে জাগতিক বহস্য কেব উঁদ্ঘাটন কবৈত খছি। এহন প্ববাণক নির্মন জন মে প্রক্ষেপক শৈরান জান সেহো কম নৈ খছি। প্রক্ষেপ মে সংকনিত প্ববাকথাক তাত্বিক নীব–ক্ষীব রিরেচন নিষ্পক্ষ–প্ররৃক্ষ রস্থা কহ সকৈত খছি।

পবরর্তী সাক্ষ্য

কহন জাযত খছি জে সিংহেশ্বেবক জংগন মে পর্যাপ্ত গোচব ভূমি ছন। এতয দূব–দূব ঠামক গোপান খপ্পন গায কহ চবারৈক নেন খারৈত ছন। এহন মান্যতা খছি জে একটা রিশেষ ঠাম পব হ্বংখাবী গায খারৈত ছন খা ওকব থন সং দূধ টপকৈত নাগৈত ছন। ঞা সিনসিনা খনরবত চনৈত বহন। এক দিন গোপানক দূধ টপকৈত দৃশ্য খপ্পন খাঁখি সং দেখনক। ওকব রাদ কতেক দিন ধবি ও ঞা দেখৈত বহন। ওহি নির্দিষ্ঠ ঠাম পব ওহি গায কে খারিকে খা ওকব থন সং দূধ টপকা কেব ওহি ঠাম কে সিংচিত কবর একটা কৌতূহন ছন। ওহি গোপানক জিজ্ঞাসারশ ওতয সং মাটি হটাকহ দেখনক তে ও রিস্মিত ভহ গেন। একটা শিরনিংগ মাটিক নীচা ঝাঁপন ছন, জতয গাযক ধন সং দূধ টপকৈত ছন। ও গোপানক সেহো নিযমিত খহি শিরনিংগক পূজা কবয নাগন। দোসব সর গোপানক সেহো ওতয ভক্তি খর্চনা

কবয নাগন। রাদ মে কোনো ভঞ ওতয ছোট–সন মংদিব বনৈনক। কহন জাযত খছি জে যহি ঠাম ও পূর্বকানক গোচাবণ স্থন খছি খা সিংহেশ্বিব মংদিবক শিরনিংগ রহি খছি জেকবা কোনো খনাম গোপানক মাটি সং হটা কে দর্শন–পূজন কেনে ছন।

সিংহেশ্বিবক থানক খনারা দেরঘব খাদি মংদিবক শিরনিংগক কথা কিছু এহিনে তবহে খছি। জে ভী হএ সভ শিরনিংগক স্থাপনা খা ওকবা খোজ নিকনৈক শ্রেয গোপান কেব জাযত খছি। হ্মদা একব প্রত্যক্ষ নাভ দোসব সহ্মদাযক নোক কে ভেটৈত খছি।

শিরনিংগক তীন রূপ খছি, ভারনিংগ, প্রাণনিংগ খা গষ্ঠনিংগ। ভার কনারিহীন, সদ্রূপ কান খা দিক্ সং খপবিছিন্ন খা পবস্পব খছি। একব সাক্ষাত শ্রদ্ধা সং হোযত খছি। প্রাণ নিংগ কনাহীন খা কনা যাঞ দূনূ খছি। বুদ্ধি সং একব সাক্ষাত সংভর খছি। গষ্ঠ নিংগ কনা যাঞ হোযত খছি তাহি সং নেত্র সং একব দর্শন সংভর খছি। খহি তীনো কে ক্রমশ: সত, চিত খা খানংদ কহন গেন খছি। পবম তত্ত্ব ভার নিংগ খছি, সূক্ষ্ম প্রাণ নিংগ খছি খা স্থূন গষ্ঠ নিংগ খছি। সিংহেবব থান মে স্থাপিত শিরনিংগ গষ্ঠ নিংগ খছি, জে মংত্রযাঞ, মংত্রহীন, ক্রিযাযাঞ, ক্রিযাহীন, জ্ঞানী, খজ্ঞানী সভক নেন দর্শনীয খা পূজনীয খছি।[82]

কহন জাযত খছি জে নগভগ এক সৌ ববখ পহিনে সিংহেশ্বিব মংদিব মে স্থাপিত শিরনিংগক সর তবহ্ন জনঠ্বীক নিমিত সংগমবমব রৈসারৈক নেন খোদন গেন

---

82 डा. जयशंकर मिश्र, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ 772

ছন। মজদূব সভ কবীর খাঠ ফীট নীচা খোদনক। ও কিছু খদ্ভুত দৃশ্য দেখনক। নিংগক খাঁতবিক স্বরূপ ভব্য খা খদ্ভুত ছন। শিব পার্বতীক খসংখ্য প্রতিমা ওহি পব মুদ্রিত ছন। বাঘ রূপ সং তীন গ্বনা মোটা খাকাব নীচা পসবন ছন। একব বিশানতা দেখহি কে ও চকিত বহি গেন। কিছু মজদূব তে খপ্পন সংতুনন সেহো বিস্ববি গেন। এহন স্থিতি মে খুদাওক কাজ স্থগিত কঽ দেন গেন। একব সংস্থাপন কিছু খভিযংতা কেনে খছি। ও শিবনিংগ সং খনগ খুদাও কেনক তে খাঠ–দস ফীটক গহবাও মে একটা বিশান চট্টান দেখনক জাহি সং শিবনিংগ জুড়ন ছন। একটা বিশান চট্টানক কাবণ কোশীক উফনাইত ধাব খহি মংদিব কে ক্ষতি নহি পহুঁচা সকন। খহি মংদিবক পৌবাণিকতাক দেখৈত খায ধবি একব জাহিনা কে তাহিনা বনবন বহৈক শ্রেয খহি চট্টানী খাধাবশিনা কে দেন জা সকৈত খছি।

কিবাতক ভূমি

খহি মে কোনো মত ভিন্নতা নহি খছি জে প্রাচীন কান মে এতয ঘনঘোব জংগন খা নদীক সংগ পহাড় সেহো ছন জে কতিপয ভৌগোনিক কাবণ সং ধবতীক সংগ ধংসি গেন। এহনে ঠাম ভগবান শিবক নেন উপযুক্ত ছন ক্যাকি উপনিষদকবক মুতাবিক ভগবান শিব নির্জন জংগন খা পহাড় মে নিবাস কবৈত ছন।[83] জংগন, গিবিগহ্বব মে বহৈ বনা কিবাত জেহন নিবাসী মে হুনকব নোকপ্রিযতা বঢ়ৈত গেন। কানাংতব

---

[83] श्वेताश्वतर उपनिषद 3/4

मे ও জগপেতি আ দেরতাক দ্রষ্ঠা মানন জা নাগন আ ও আর্য আ অনার্য দূনূক দ্বাবা পূজিত হ্এ নাগন। প্রাচীন কান মে জহি কিযো রিদেশী জাগত ভাবত পব আক্রমণ কঽ অপ্পন রিস্তাব কেনক আ অপ্পন বাজ্য স্থাপিত কেনক হ্নকব রর্ণন মহাভাবত, পাতংজনিক মহাভাষ্য, মন্বস্মৃতি আ অন্যান্য স্মৃতি গ্রংথ মে অছি। মহাভাবতক অন্বসাব, যরন, শেক, পহ্লর, কিবাত, চীন আদি জাগতক প্ররেশ ভাবত মে ভঽ চ্কন ছন। [84] মন্বক
হ্মতারিক, পৌণ্ড্রক, দ্ররিড়, কম্বাজ, কিবাত, দবদ, চীন, খশ, যরন, শেক, পাবদ আ পহ্লর রিদেশী জাগত ছন। [85] অহি রিদেশী জাগত আর্য সভ্যতা অ। সংস্কৃতি পব প্রভার ডানৈত ভাবতীয ধর্ম আ সংস্কৃতি মে অপনা কেব আমেসাত কঽ দেনক। কনাংতব মে ও রিদেশী নহি বহি গেন। হ্নকব পূর্ণ রূপ সং ভাবতীযকবণ ভঽ গেন। এহনে রিদেশী জাগতক একটা জগত কিবাত ছন, জকবা প্রাচীন রর্ণ র্যরস্থা মে মন্ব শূদ্রক রূপ মে মান্যতা দেনক।
তহিযৌকা হিন্দূ সমাজ জহি সম্প্রদাযক তিবস্কব কেনক, ও ভগরান শিরক শবণ মে গেন। ক্যাকি অমবকোশ মে কিবাত কে ম্লেচ্ছক একটা ভেদ মানন গেন অছি। [86] হ্মাব সংভর (8.29) কেব হ্মতারিক, ঙা

---

[84] महाभारत, शांतिपर्व, 65/13

[85] मनुस्मृति, 10.44

[86] अमरकोश 2.10.20

জাগত হিমানযক পবরর্তী প্রদেশে মে বহৈত ছন। ভগরান শির হিমানযক কৈনাস শিখব পব বহৈত ছন তাহি সং ওা জাগত কে ভগরান শির কে তাদামেক কথা জ্ড়ন খছি। রাঘ প্ববাণ (47.48) খা ব্রহ্মাঁড প্ববাণ মে হ্নকব ধাবক কাত মে বহয রনা জাগতক তবহে উঁল্লেখ কবন গেন খছি। সংগেসংগ রিষ্ণু প্ববাণ (2.3.8) মে একব নিরাস স্থান পূর্বী ভাবত মানন গেন খছি।

ভনে হী ভাবতীয প্ববা সাহিত্য মে খহি জাগত কে রিদেশী খা খনার্য মানন গেন খছি, ক্ষদা একব মূন প্বরুষ খার্য ছন। একব প্রমাণ হবিরংশ প্ববাণক মহাবাজ সগবক চবিত–বৃতাঁত মে স্পষ্ঠ খছি জে বাজ্য মে নোগ সং রিজযী ক্ষত্রিয দেশাঁতব গেন ছন, ক্ষদা ও খপ্পন ব্রাহ্মণ প্ববোহিত কে নহি পারি কে খপ্পন মূন খার্য ধর্ম সং ভ্রষ্ঠ ভেন গেন জাহি সং কতেক বাস জাগত নিকনন.[87] রঁড বাস সংভর খছি জে ভাবত ঘ্বীকে ওা জাগত ব্রাহ্মণক রর্চস্ব কে স্বীকাব নৈ ভেন তাহি সং ম্লেছ কোটি মে দহ দেন গেন।

ভাগরত প্ববাণক স্কন্দ 9 কে 23ম খধ্যায মে উঁল্লিখিত খছি জে মহাবাজ যযাতিক প্বত্র দ্রুহ্যক সংতান উঁত্তব দিশ জাগকে ম্লেছক বাজা ভহ গেন। খহি তবহে গতাযাতক প্রক্রিযা চংদ্রগ্বপ্তক কান ধবি ভেন গেন। একব খনারা, খহি দেশক নোগ তহিযৌকা সৈন্য–রন মে নিযাঞ ভহ কহ ম্লেছক দেশ মে জা কে ম্লেছ রনি গেন। ক্ষদ্রাবাক্ষস নাটকক পংচম খংক মে একব উঁল্লেখ খছি।

---

[87] हरिवंश पुराण 10/43-44

𑒁𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒬𑒲 𑒧𑒹 𑒫𑒩𑓂𑒖𑒢 (𑒖𑒰𑒞𑒱-𑒔𑓂𑒨𑒳𑒞) 𑒏𑓄 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒥𑒛𑓃 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒾𑓀 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒼 𑒮𑒿 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒞 𑒂 𑒁𑒖𑓂𑒘𑒰𑒞, 𑒕𑒼𑒙 𑒫𑒰 𑒥𑒛𑓃 𑒁𑒣𑒩𑒰𑒡 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒹 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒚𑒹𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒱𑒭𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑓄 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒋𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒞𑒱𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒪𑒰𑒐 𑒁𑒢𑒳𑒢𑒨-𑒫𑒱𑒢𑒨 𑒏𑒩𑒯𑒱 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒍𑒏𑒩 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒒𑒳𑒩𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒢𑒞𑒲𑒖𑒰 𑒄 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒅𑒠𑒰𑒩 𑒮𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒨 𑒧𑒹 𑒬𑒰𑒧𑒱𑒪 𑒦𑓄 𑒧𑒴𑒪 𑒮𑒢𑒰𑒞𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒞𑒟𑒰𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒧𑓂𑒪𑒹𑒔𑓂𑒕 𑒧𑒹 𑒬𑒰𑒧𑒱𑒪 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒤𑒹𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒢𑒰𑒞𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒧𑒹 𑒂𑒢𑒨 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪। 𑒯𑒰𑒪𑒰𑒿𑒏𑒱 𑒨𑒰𑒖𑓂𑒘𑒫𑒪𑓂𑒏𑓂𑒨 𑒂𑒠𑒱 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒯𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒁𑒣𑒩𑒰𑒡𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒮𑒱𑒧𑒙𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒹𑒏𑒩 𑒯𑒰𑒟 𑒧𑒹 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒂 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒕𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒚𑒡𑒩𑓂𑒧𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑒠𑒰 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒟𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒧𑒹 𑒫𑒩𑓂𑒔𑒮𑓂𑒫 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒵𑒞𑒱 𑒁𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑓄 𑒏𑓂𑒭𑒲𑒝𑒏𑒰𑒨 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏।[44] 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒞 𑒂𑒠𑒱 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒯𑒱 𑒡𑒩𑒞𑒲 𑒣𑒩 𑒥𑒯𑒳𑒢𑒰𑒿𑒬𑒱 𑒁𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒮𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒩𑒹𑒐𑒰𑓀𑒏𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒯𑒰𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒩 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒞𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒳𑒪𑓂𑒨 𑒕𑒪। 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒂 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒥𑒩 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒄 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒕𑒪। 𑒁𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒬𑒏𑓂𑒞 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒤𑒪𑒤𑒴𑒪 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒙𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒮𑒦 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒞 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒪, 𑒖𑒹 𑒧𑒼𑒩𑓀𑒑 𑒫𑒰 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒞𑒩𑒰𑒃 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒕𑒪। 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒞 𑒋𑒏 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒬𑒰𑒪𑒲 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒕𑒪। 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒾𑒏𑒰 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒞𑒰𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒖𑒹𑒯𑒢 𑒣𑒩𑒫𑒩𑓂𑒞𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒩 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒂𑒨𑒪

---

44 मिथिला तत्व विमर्श, पृष्ठ 24

ঋছি। [89] ঋহি ক্ষেত্র মে ঋন্যান্য জাগতক সংগ কিবতা কে সেহো রড়় সংঘর্ষ কবয পড়়ন। [90]
মহাভাবত মে ঋর্জুন পাশুপতাস্ত্র প্রাপ্ত কবহি হিমানয জাগত ঋছি। ওতয ভগবান শিব ঋপ্পন প্রিয ভক্ত কিবাতক রেশ মে ভেটৈত ঋছি। শিব কে নহি চিন্হ সকয কে কাবণ ঋর্জুন ওহি কিবাত রেশ শিব সং যুদ্ধ কবৈত ঋছি, যদা হুনকা সং পবাস্ত ভঃ জাযত ঋছি। ফেব শিবক রাস্তরিকতা কে বুঝি ঋ ঋহি ঋরঢবদানী কে প্রসন্ন কবহি কে নেন ঋর্জুন মাটিক রেদী রনাকে হুনকব ঋবাধনা কবৈত ঋছি ঋা রেদী পব পুষ্প ঋর্পণ কবৈত ঋছি। ও ঙা দেখহি কে ঋাশ্চর্যচকিত বহি জাগত ঋছি জে জে ফূন শিবক নেন ও মৃত্তিকা রেদী পব চঢ়়াবৈত ঋছি ও ওহি কিবাত পব ঋারি জাযত ঋছি। ঋার ঋর্জুন কিবাত রেশ শিব কে চিন্হি মে রিনম্র নৈ হোযত ঋছি। [91] রিক্রমোর্রশীযম (1.11) মে কানিদাস সেহো নিখনে ঋছি জে পাশুপতাস্ত্র প্রাপ্ত কবহি কে নেন ঋর্জুন কঠিন তপস্যা কেনে ছন।
ভাবত মে জখৈন শিশুনাগ রংশ, নন্দরংশ, মৌর্যরংশ, শুংগ রংশ, ঋাঁধ্র রংশ ঋাদি কেব বাজ্য ছন। ওকব সমানাংতব নেপান মে নগভগ সাত সৌ রবখ ধবি কিবাতক বাজ্য ছন। ঋশোকক ধর্ম চক্র রিজয কান মে নেপান মে কিবাত বাজ্য স্থ্যাংক্ষ ছন। রৌদ্ধ ধর্মক ঋনুশ্রুতি মে

[89] सहरसा गजेटियर, 1965, पृष्ठ 17

[90] सहरसा गजेटियर, 1965, पृष्ठ 17

[91] महाभारत वनपर्व, 38-40

সম্রাট খশোক খপ্পন কন্যা চাৰুমতি খা জামাতা দেৰপানক সংগ নেপান জাকঽ কিবাত শাসকক সহাযতা সং কতেক বাস রিহাব খা বৌদ্ধ স্তূপ বনৌনে ছন। 92 কিবাত দৰংগ খা স্বতংত্র রিচাব বনা জাগত ছন। সাতম শতাৰদ্ মে ব্রাহ্মণবাদী ব্যৱস্থা খা কর্মকান্ড কে সর্বথা নকাৰৈক কাবণ এতৌকা কিবাতক নৱ নামাংকবণ বাঁতব কবন গেন জকব খর্থ খছি ক্ষপথ্য খা ৰাজ্য। তহিযৌকা সমাজ ব্যৱস্থাকাব একবা সংগঠিত হিন্দূ সমাজক নেন ক্ষপথ্য মাননক। জহি জাগতক সভ্যতা সংস্কৃতি মহাভাবত সং নঽ কঽ গুপ্ত–স্বর্ণ–যুগ ধবি খপ্পন যশোজ্জরন গাথা কহয মে সক্ষম হ্এ, জাহি জাগত হজাব ৰবখ ধবি বাজ্য সত্তাক সংচানন কেনে হ্এ, ও ম্লেছা খা শূদ্র ছৌ নৌ, সমাজক নেন ক্ষপথ্য সেহো ভঽ গেন।

ব্যস্থাকাব রর্ণ ব্যৱস্থাক বংধন এতেক মজবূত কঽ দেনক খা শাসক কে সদন্ড একব কার্যান্বিযনক দাযিত্ব সৌংপনক জাহি সং সামাজিক কনস্বিনীক প্রবাহ স্থিব ভঽ গেন। ও সচ খছি জে মনু দ্বাবা সংচানিত রর্ণ ব্যৱস্থা মে ঙুঁচ–নীচক ভারনা খা ভেদ–ভারক দৃষ্টি ছন, জে পবরর্তী হিংদূ সমাজ কে জর্জবিত কবয কে কাবণ রনি গেন। ভগরান বুদ্ধ খহি ব্যৱস্থা পব এতেক রেসী প্রহাব কবনক জে মবণাসন্ন খরস্থা মে খানি কে ছোড়ি দেনক। স্কন্দ শুংগক কান মে ও ফেব জীরিত ভঽ গেন।

খনরকনী গ্যাবহম শতাব্দী মে ভেন ছন। হ্নকব কথন খছি, প্রাচীন কান মে কর্ম পবাযণ বাজা জনতা

92 बिहार लोक संस्कृति कोश, पृष्ठ 34

কে কতেক বাস শ্রেণী আ কর্ম মে বিভক্ত করবাহি মে জোড়ৈ দৈত ছল। সংগেসংগ হ্নক এক-দোসবা সং ভেংটৈ আ ক্রম তোড়ৈক সং বোকহি কে যনে করৈত ছল। তাহি সং ও ভিন্ন-ভিন্ন শ্রেণীক লোক কে এক-দোসবা সং সংবংধ রাখহি সং বোকি দেলক আ প্রত্যেক শ্রেণীক লোগ কে বিশেষ প্রকারক কাজ আ শিল্প সৌংপ দেলক। ও কোনো লোক কে অপ্পন বর্গক অতিক্রমণ করহি কে লেল অনুমতি নৈ দৈত ছল। জে অপ্পন শ্রেণী সং সংতুষ্ঠ নহি ছল, হ্নকা দংড দেল জাযত ছল।[93] এহলে সমাজক সংবেদনশীলতা মারল গেল আ এক-দোসবা সং নৈ মিলয আ পারস্পরিক সংপর্কক অভার মে হ্নকর গতিশীলত অবরুদ্ধ ভেল। ব্রাহ্মণ সেহো ব্যরস্থাক নাম পর অপ্পন অধিকার কে খুনি কে দুরুপযোগ কেলক। বিরাট ভারতীয সমাজ মে বহি কে কতেক বাস জাগত অহি সং বিরুদ্ধ ভৈ কৈ অপ্পন দাযরা মে সিমটৈল চলি গেল। জে কহিযো গতিশীল জাগতক রূপ মে চর্চিত ছল, ও অংতর্মুখী বলৈত গেল।

গ্যারহম সদী মে নিশিহবদের কিরাত রংশী রাজা ভেল জিনকর রাজধানী নিশিহবপুর ছল ওা রর্তমান শংকরপুর অংচল অছি। হ্নকর ভরন আ দুর্গক অরশেষ একটা টীলাক রূপ মে অরস্থিত অছি আ জাহি পর একটা মংদির নির্মিত অছি। মংদির পরিসর মে রাখল গেল রাজভরনক স্মৃতি চিন্হ, নক্কাশীদার প্রস্তর খন্ড, প্রস্তরক চৌখটৈ আদি পানযগক প্রতীত হোযত অছি। সংভরত: ওা কিরাতক অংতিম রাজা ছল। হ্নকর অরাধ্য

[93] डा. जयशंकर मिश्र, ग्यारहवीं सदी का भारत, पृष्ठ 98

ৰ্উগবী মহাবাজ নামক একটা সিদ্ধ পুৰুষ ছন জে গুডি়যা (ত্রিরেণীগংজ নিরাসী) কমাব জাগত ছন। হ্নকা নোক দের খেদন মহাবাজ সং রৈব ছন। ষৈংগবাহা চৌব মে ও মাযাক রাঘিন কে ভেজি কে খেদন মহাবাজক রধ কবৈনে ছন, জে খেদন মহাবাজ কে ভগৈত গীত সং স্তাত হোযত খছি।
কনৰ্টি ক্ষেত্রীয নান্যদের 1097 ঙা. মে খহি ক্ষেত্র পব খপ্পন খধিকাব জমা কেব সত্তাসীন ভ২ চ্কন ছন। খাহি কান সিংহেশ্বব মে কিবাত খা হ্মষাণ রংশক ছোত্ত-ছোটৈ বাজ্য ছন জে রাদ ধবি কনৰ্টিক কবদ রনন বহন।

হ্মষাণ রংশী বাজত্তব

হ্মষাণ চাগত চীনক গোরী প্রাংত মে বহয রনা যূ-চী জাগতক একটা শাখা ছন। যূ-চী জাগতক পাঁচটা শাখা ছন, হিউমী, চাউযাংগ-মী, হী-ত্তম, তাউ-মী খা কোঙা-চাউখাংগ। কোঙা-চাউখাংগ কে হ্মষাণ কহন জাযত খছি। গোরী প্রাংত মে হ্ং-গ-নূ জাগত যূ-চি জাগত পব খাক্রমণ ক২ হ্নকা সভ কে গোরী প্রাংত সে নিকানি ক২ রাহব ক২ দেনক। ঙা সভ নোক ভাগি কে সবদবিযা খাযন। হ্মদা ওতয সং সেহো হ্নকা সভ কে ভাগয পড়ন। সবদবিযাক যু-স্বন নামক একটা জাগত দ্রুণক সহাযতা সং হ্নকা সভ পব খাক্রমণ ক২ দেনক খা ওতয সং সেহো রিস্থাপিত ক২ দেনক। নগভগ 140 ঙাপূ ঙা সভ রৈকিট্রযা খাযন। ওহি কান রৈকিট্রযা মে শকক শাসন ছন। এহি পব বহৈত হ্মষাণ খপ্পন শেষ চাবি শাখা পব রিজয প্রাপ্ত ক২ রেসী শক্তি সংপন্ন ভ২ গেন।

ओकर प्रथम राजा कुजूल कैडफिसेस छल, जे शक्तिशाली आ महत्वाकांक्षी छल। ओ पल्लव शासक के पराजित कए गन्धार आ सीमाप्रांत केर अप्पन अधीन कए लेलक। ओ बाद मे बौद्ध धर्मावलम्बी भए गेल। ओ अस्सी वर्ष धरि युद्ध मे संलग्न छल। ओ कुषाण वंशक नींव के आओर मजबूत कयलक।
एकर बाद ओकर पुत्र विमकैडफिसेस सत्तासीन भेल। ओ अप्पन योग्य पिताक योग्य पुत्र साबित भेल। भारत विजयक सेहो ओकरे श्रेय जाइत छै। एकर मृत्युक बाद एकर पुत्र कनिष्क प्रथम आ ओकर बाद कनिष्क द्वितीय कुषाण वंशक शासक भेल। कनिष्क अप्पन राजधानी सीमा प्रांतक पुरुषपुर मे बनौलक। ओ अप्पन प्रभुत्व पुरुषपुर से पाटलीपुत्र धरि स्थापित कयलक।
मान्यताक अनुसार, कनिष्क कठोर संघर्षक बाद पाटलीपुत्र के पराजित कयलक आ बौद्ध विद्वान अश्वघोष के जमानतक रूप अपना संगे लए गेल। अश्वघोषक संपर्क मे आबि के ओ सेहो बौद्ध धर्मावलम्बी भए गेल। ओ पहिनुक शैव धर्मावलम्बी छल।[94] संभावत: अश्वघोष जेहन बौद्ध विद्वान अप्पन अधिकार मे नहि के लेल ओ मगध पर चढ़ाइ

[94] जर्नल ऑफ़ रायल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, 9/1943 सं.,पृष्ठ 179-183

भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डा. ए.के. मित्तल, पृष्ठ 386-392

কেনক। ও পূর্ণী ভাবত পব খপ্পন খধিকাব জমা কে শাঁতি স্থাপিত কেনক। তিবহুত প্রমংডন মে কনিষ্কক ছিদ্রাঁকিত তাম্র–মুদ্রা প্রাপ্ত ভেন খছি খহি ক্ষেত্র মে সেহো নরীন প্রশাসনিক গকাঙাক রূপ মে রিভক্ত কতেক বাস বাজ প্রতিনিধিগণ ক্ষাণ শাসক খধন ক্ষেত্র রিশেষক সত্তাক সংচানন কবৈত ছন।

ক্ষাণক পতন খা গুপ্ত সাম্রাজ্যক উঁদয খা মধ্যরর্তী যুগ মে দূটা প্রমুখ বাজ্য সত্তা খস্তিত্ব মে খাযন। পহিন্বক নাগ রংশ খা দ্বিতীয রাকাটক রংশ। খহি দূনূ কে খতিবিক্ত ভাব শির রংশ ক্ষা সাম্রাজ্যক ভগ্নারশেষ পব সত্তাসীন ভেন, জকব প্রস্তুত্ব খহি পূর্ণী ক্ষেত্র মে রেসী ছন। হিন্দূ পানিটী (ভাগ–2 কনকত্তা, 1924) মে ডॉ. কাশী প্রসাদ জাযসরানক খভিমত খছি কি ঙা ভাব শির নাগা, খপনে কংধে পব ভগরান শির কে ভাব কো ঢোতে থে। ঙা রহি জাগত খছি জে ক্ষাণ রংশক পতনক রাদ সেহো নগভগ দূ সৌ ররখ ধবি খহি ক্ষেত্র মে সত্তাসীন ছন। কোশী খা দবভংগা প্রমংডন মে রহি নোক 15ম শতার্দী ধবি কতো–কতো শাসক রূপ মে খরস্থিত ছন।

এহন মান্যতা খছি জে কনিষ্কক পাটনীপুত্র রিজয খভিযানক সংগ রিহাবক ক্ষাণ রহ্নাশি মে প্ররেশ কেনক। ঙা উঁত্তব খা দক্ষিণ রিহাব দূনূ দিস পসৈব গেন। ঙা রহাদুব খা কষ্ঠ সহিষ্ণু ছন। জা ধবি বাজ্য সত্তা পব হিনকব খধিকাব বহন তা ধবি ঙা ক্ষত্রপক রূপ মে সম্মানিত হোযত বহন। সিংহেশ্বব থান মে ঙা রড় সংখ্যা মে ছন। ও শৈরমত খপনৈনক খা কানাংতব মে শিরক ভাব ঢোযৈ কে কাবণ ঙা ভাব শির নাগা সেহো কহারয নাগন। রড় রাদ শিরনাগা শর্দ

গৌণ ভ২ গেন খা ও মাত্র ভাব যা বাজভবক নাম পব চর্চিত ভ২ গেন। ডॉ. কে.পী. জাযসরানক খন্বসাব উঁত্তব রিহাবক খধিকংশ ঠাম পব গ্বপ্ত যগক উঁদয সং পূর্ব ভাব শিব নাগা দ্বাবা বাচ্য কবহি কে সংকেত খছি।[95] সিংহেশ্বব কে বাযভীব, বসংতপ্বব খাদি গাম মে ভব জাগতক নিবাস খছি। বাযভীব সং ও খপ্পন বাজ্যক সংচানন কবৈত ছন। ওতয হ্নকব দ্খ্ম সেহো ছন জে কোশীক ভীষণ বাঢ়ি ধো-পোঁছক২ খমে ক২ দেনক।

এখ্নকা সিংহেশ্বব মংদিব ক্ষাণ বংশীয ভব জাগতক ছন। দীর্ঘকান ধবি খহি মংদিবক ব্যবস্থা কবৈত খা ওকব ভাগ খাযত ছন। পিছনা সর্বে মে ভান্বদাস নামক একটা ব্যক্তিক নাম খতিযান মে দর্জ খছি, জে সিংহেশ্বব থান মংদিবক ভূমিক স্বামীত্ব দীর্ঘকন ধবি ছন। ভান্বদাস মংদিব মে সেবক খা খন্যান্য কার্যকর্তা সভহক নিযুক্তি কবৈত ছন খা মংদিবক খায প্রাপ্ত কবৈত ছন। খহি ব্যবস্থা মে কিছু বিকৃতি খাবি গেন। ভান্বদাস ক্ষাণ বংশী বাজভব জাগতক ছন। খব বাজভব (যা ভব) মংদিবক খধিকাবী বনি গেন খা প্রত্যক্ষ রূপ সং দান-দক্ষিণা খা চঢ়ৌখাক বাশি স্বযং গ্রহণ কবয নাগন। খহি জাগত কেব দান-দক্ষিণা খা চঢ়ৌখা গ্রহণ কবহিক নৈ তে কোনো ধার্মিক খাধাব ছন খা ন খধিকাব। ক্ষেত্রীয নোক সভ একব বিবোধ কেনক খা সংঘর্ষ ছেড়ি দেনক। খাখিব দীর্ঘকান সং মংদিব মে স্থাপিত খপ্পন স্বামীত্বক জনাধ্রাশিক কাবণ বাজভব

---

[95] सहरसा गजेटियर, 1965, पृष्ठ 20

ছোড়ি দেনক। রাদ মে পবসবম নিরাসী রাবূ হবদত্ত সিংহ মংদিব পব স্বামীত্ব গ্রহণ কেনক। হ্মদা হ্নকো ভাগয পড়ন। মংদিব পবিসব মে বহয রনা সন্যাসীক দরংগতাক খাগূ হ্নকো কিছু নহি চনন। কহন জাযত খছি জে রাবূ হবদত্ত সিংহ সং কতেক রেব সন্যাসীক ঘোব সংঘর্ষ ভেন। হ্মদা খহি সন্যাসীক প্ররনতাক খাগূ ও সেহো খপ্পন হথিযাব ডানি দেনক। খহি সন্যাসী মে বঘ্রবদাস খা স্বামী রীব ভাবতী রড় চর্চিত ভেন। বঘ্রবদাস মংদিব পবিসব মে বামজানকী মংদিবক নির্মাণ কবৈনে ছন।

উপব উল্লেখ কবন জা চুকন খছি জে কনিষ্কক পাটনীপুত্র রিজয খভিযানক পশ্চাত কুষাণ রহ্নাশি মে রিহাব মে প্ররেশ কবনক। ও উত্তব রিহাবক সংগ দক্ষিণ দিস সেহো গেন। বাঁচী জিনাক রেন্দাগ খা কর্বা মে ক্রমশ: কুষাণ বাজা জ্বিষ্কক এক স্বর্ণ হ্মদ্র খা কনিষ্কক তাম্র হ্মদ্রা ভেটন খছি।[96] জে দক্ষিণ রিহাব মে কুষাণক শাসনক পুষ্ঠি কবৈত খছি। বাজা সীত খা রসংত কুষাণ রংশীয ছন। বাজা সীতক গঢ় কোডবমা মে খছি। ও টিকৈত বাজা ছন। ছোটা নাগপুব মে কহারত খছি, ঘটনে ঘটরান রঠনে টিকৈত। যানী ধন ঘট জানে সে ঘটরান খা ধন রঠি জায সং ও টিকৈত ভ২ জাযত ছৈ। ছোটা নাগপুব মে রড় সংখ্যা মে ঘটরান রসৈত খছি। ও খপনা কে ক্ষত্রীয কহৈত খছি। হ্মদা রিহাব সবকাব হ্নকব উত্তব রিহাব কে বাজভব য ভব কে তবহে হ্নকা সেহো পিছড় া জাগতক সূচী মে দর্জ ক২ দেনে খছি।

---

96 डा. उपेन्द्र ठाकुर, मिथिला का इतिहास, पृष्ठ 108

ঘৈরনক নাক–নক্শী আ শাবীবিক সংবচনা ভব জগত সে মিনৈত–জ্নৈত অছি। দূনূ কে পবংপবা আ ধার্মিক গুহ সেহো সমান অছি। দূনূ শিরক উঁপাসক অছি। অহি সং ওা মানয মে কোনো সংকোচ নহি অছি জে ঘৈরান সেহো ক্ষষাণ রংশীয অছি। ছোটৗ নাগপ্পবক প্রাগ্গতিক পবিরেশ হ্নকা আওব রেসী শ্যামরর্ণ রনা দেনে অছি জখৈনকি হিমানযক পাশ্বরভূমি মে নিরাস কবৈক কাবণ ভব যা বাজভব হ্নকা সং রেসী সাফ অছি। ঘৈরান সেহো ঐকৈতক ঋপ মে কতেকো বাস বাজরংশ স্থাপিত কেনে অছি। এখনো অহি বাজরংশক নোক ক্ষত্রীয সং অপ্পন সংরংধ জোড়ৈত অছি। বাজা সীত কেব ছোটৈ ভায বাজা রসংতক গঢ়ক ভগ্নারশেষ সিংহেশ্বিবক রসংতপ্পব গাম মে অছি। ছোটৗনাগপ্পবক ঘৈরন সিংহ যা বায পদরী ধাবণ কবৈত অছি। উঁত্তব রিহাব কে ভব যা বাজভবক উঁপাধি সেহো বায অছি। বাযভীব অহি উঁপাধি কেব ভ্যাতক অছি আ বায উঁপাধি বাজরংশী হেরাক প্রমাণ অছি। বায কা অর্থ হোযত অছি বাজা।

রসংতপ্পবক রড় ভূভাগ মে বাজা রসংতক গঢ়ক অরশেষ পসবন অছি, জাহি মে ওকব গৌবরশানী অতীতক কথা জ্ড়ন অছি। কানাংতব মে সিংহেশ্বিব সং তীন ক্ষষাণ রংশীয বাজক্ষমাব শ্রীদের, রিজনদের আ কাংপদের

ক্রমশ; শ্রীনগব (মধেপ্পবা), রিজনপ্পব (পংচগছিযা) আ কাংপ (সোনরর্ষা) মে অনগ–অনগ অপ্পন বাজধানী

রনৈনক। [97] শ্রীনগব মে বাজা শ্রীদের নির্মিত রিশান গঠক খরশেষ খছি। খহি গাম মে এহন দূটা খরশেষ খছি। দূনূ পব মঁদিব খছি জতয ভগরান শির স্থাপিত খছি। হ্মখ্য খরশেষক ঊঁচাগু 12 সঁ 15 ফীট ধবি খছি। খহি খরশেষক উঁত্তব ভাগক মঁদিব পবিসব মে সৈকড়া প্রস্তব খংড পড়ল খছি জাহি পব কোনো খনাম মূর্তিকাব রড় হ্মশনত, নিষ্ঠা খা শালীনতা সঁ দুর্লভ নক্কাশী কেনে খছি। খরশেষ কে একটা প্রস্তব স্তঁভ (শিলানেখ) পব মকবধ্বজ জোগী 100 খংকিত খছি। খহি পব গহন গরেষণ খা প্ববাতাত্বিক সর্রেক্ষণক খারশ্যকতা খছি।
মধ্রনী জিলাক খন্ধবাঠাড় গাম মে গংগাসাগব পোখবি পব স্থিত মঁদিবক একটা প্রস্তব স্তঁভ কব সেহো মকবধ্বজ জোগী 700 খংকিত খছি। খহি মিথিলা তত্ত্ব রিমর্শ মে কোনো রৌদ্ধ ভিক্ষু সঁ সংরংধিত মানল জাযত খছি। [98] ভহ সকৈত খছি জে মকবধ্বজ যোগী নাথ পংথী খা সহজযান সম্প্রদাযক কোনো যোগী হ্এ।

নিষাদক ধবতী

খন্যান্য উঁপেক্ষিত সম্প্রদায মে নিষাদ জাগত সেহো ছল, জাহি পব ভগরান শিরক রিশেষ হ্নপা ছল। খথর্ররেদ (6.39.3) মে ভগরান রুদ্র খাদিম জাগতক সংগ নিষাদক স্বামীক রূপ মে স্বীকাব কবল গেল ছল। চর্ম ধাবণ কবহি কে কাবণ শির কে হ্নতিরাসন কহল

---

[97] सहरसा गजेटियर, 1965, पृष्ठ 29

[98] मिथिला तत्व विमर्श, पृष्ठ 104

গেল অছি। সম্ভবত: নিষাদ সঁ সংবংধ হেবাক কাবণ শিব কে চর্ম পবিধান ধাবণ কবয বলা মানল গেল অছি।
তহিযৌকা সমাজ মে চতুর্বর্ণক অতিবিক্ত অনুলোম প্রতিলোম জেহন অংতর্জাতীয বিবাহক কাবণ কতেক বাস জাগত আ ওকবা সঁ কতেক বাস উঁপজাগতক বিকাস ভঽ চুকল ছল। বোধাযন এহলে বর্ণসংকব জাগত কে ব্রাহ্মক সংজ্ঞা দেনে অছি।[99] অহি সূত্র মে বোধাযন নিষাদ জাগত চর্চা কেনে অছি, জেকবা হ্মতারিক ব্রাহ্মণ প্বরুখ আ শূদ্র স্ত্রী সঁ নিষাদক উঁপেতি ভেল অছি।[100] হ্মদা গৌতম ধর্ম সূত্র (4.14) কেব অনুসাব নিষাদ ব্রাহ্মণ পিতা আ ক্ষত্রিয মাতা সে ভেল অছি, জে উঁত্তম সংকবতাক পবিচাযক অছি।
বিষ্ণু প্ববাণ মে তে একব উঁদ্ভবক একটা অদ্ভুত কথ কহল গেল অছি, জকব হ্মতারিক ঋষি সভ প্বত্রহীন মৃত বাজা বেনক জাঁঘ কেব প্বত্রক নেল যনেপূর্বক মংথন কবলক। ওকব জাঁঘ কে মথয সঁ একটা প্বরুখ উঁপেন্ন ভেল, জে জবল ঠূঁঠক সমান কাবি, বড়ৃ নাটৈ আ ছোটৈ হ্মহ বলা ছল। ও অতি চত্তব ভঽ কঽ ওহি সভ ব্রাহ্মণ সঁ রাজল, হম কী কবী? ব্রাহ্ম কহলক, নিষীদ (বৈঠ)। তাহি সঁ ও নিষাদ কহলাযল। ওহি সঁ উঁপেন্ন লোগ বিন্ধ্যাচল নিরাসী পাপপবাযবণ

---

[99] বোধাযন ধর্ম সূত্র 1.9.15

[100] বোধাযন ধর্ম সূত্র 1.9.3.

নিষাদ গণ ভেন। [101]
ঋহি কথা নেখনক পাঁছা প্ৰবাণকাবক মংশা জে বহন হুএ ক্ষদা বামাযণ মে নিষাদবাজ গুহক বৃতাঁত ঋছি জে সানুজ ঋা সপনীক ভগরান বাম কে নদী পাব কবৈনে ছন। হুনকব ভক্তিক প্ৰশংসা রাল্মীকি ঋা তুনসীদাস সেহো কেনে ঋছি।
মহাভাবতক ঋনুসাব, নিষাদ ব্ৰাহ্মণ পিতা ঋা শূদ্ৰ মাতাক সংযোগ সঁ উঁপেন্ন ভেন ঋছি। [102] মনু নিষাদ কে মৎস্য ধাতো নিষাদানাং কহনে ঋছি জে মছনী মাবয রনা জাগত ছন। [103] মনুক ক্ষতাবিক, নিষাদ নাব খেরৈত ঋছি ঋা হুনকব নিম্ন জাগত মে গণনা কবন গেন ঋছি। জংগন, পহাড় মে ঙা ঋাখেটক রূপ মে জানন জাযত ঋছি। ঋাখেট কর্মক কাবণ ঙা ব্যাধ সেহো কহন জাযত ঋছি। মিথুন-বত ক্ৰৌঁচ কে একটা নিষাদ দ্বাবা রধ কিএ জায সঁ দযাদ্ৰ, ভৈ কৈ মহর্ষি রাল্মীকি কে এত্তু পৈগ শোক ভেন ঋা রহি শ্লোকক রূপ মে পবিণত ভৈ গেন।
নিষাদক কতেক বাস উঁপজাগত রনন, এহন স্মৃতি মে উঁল্লেখ ঋছি। তহিযৌক প্বক্কস জাগত নিষাদ প্বরুখ ঋা শূদ্ৰ স্ত্ৰীক সংযোগ সঁ উঁপেন্ন ভেন ঋছি। [104] ঋহি জাগতক কাজ রিন মে বহয রনা জীর কে মাবর

---

101 विष्णु पुराण 1.13.33-37

102 महाभारत, अनुशासन पर्व, 48.5

103 मनुस्मृति, 10.48

104 बोधायन धर्म सूत्र 1.9.14

छल। ब्राह्मण पुरुष आ शूद्र स्त्री सँ उत्पन्न पारशीर जातिकेँ सेहो निषाद कहल जाइत अछि।[105] ओहि तरहेँ शूद्र पुरुष आ निषाद स्त्री से कुक्कुटक जातिक उद्भव भेल।[106] निषाद जातिक पुरुख आ आयोगव जातिक स्त्री सँ जे संतान होइत अछि ओ मार्गव कहलाएल जाइत अछि जे आर्यावर्त मे कैवर्त सेहो कहल जाइत अछि। हिनकर कर्म नाव चलाबैक छल।

'निषादं मार्गवं सूते दासं नौकर्म जीविनम्
कैवर्त मिमियं प्राहुर्वार्यावर्त निवासिन: । 1'

तैत्तिरीय संहिता (10.34)

निषाद पुरुष आ वैदेह स्त्री सँ उत्पन्न प्राचीन काल मे चमड़ाक काज करबाक वला कारावर जाति उल्लेख अछि।[107] निषाद स्त्री अ वैदेह पुरुख सँ उद्भूत आंध्र जातिक सेहो उल्लेख वायु पुराण (10.36) आ मत्स्य पुराण(50.76) मे अछि। मनु अप्पन स्मृति (10.37) मे निषाद पुरुख आ वैदेह स्त्री सँ उत्पन्न अहिण्डक जातिक चर्चा केने अछि, जे कारागारक देखभाल करैत छल।

एहन कतेक बास निषाद प्रसूत जातिक आपस मे मिश्रण भऽ जेबाक कारण समान कर्मा शक्तिशाली जातिक विलयन भऽ गेल। उपयुक्त उपजाति आब ते खोजे सँ नहि भेटैत अछि। एहन कतेक बास उपजाति

---

[105] मनुस्मृति 10.8

[106] मनुस्मृति 10.8

[107] व्यास स्मृति 1.11

समान व्यवसाय करए निषाद, धीवर, मल्लाह, कैवर्त आदि जातिक मे विभक्त भऽ गेल। ओहि छोटे-छोटे उपजातिक अपन अस्तित्व रक्षाक लेल एहन भऽ जायव स्वाभाविक छल। वैश्य पुरुष आ क्षत्रीय स्त्री सँ उत्पन्न संतान कर्म जातिक धीवर कहैलक।[108]

कौरव आ पांडवक दादा शान्तनु धीवर(मछुआरा) जलधरक पुत्री योजनगन्धा (सत्यवती) सँ व्याह केने छल। अहि विवाहक पूर्व योजनगन्धा महर्षि वशिष्ठक पौत्र परासरक संयोग सँ कृष्ण द्वैपायन के जन्म देने छल, जे अपन कालक महान आचार्य भेल आ महर्षि वेदव्यासक नाम सँ विख्यात भेल। आदिकवि वाल्मीकि के किछु लोग व्याध (निषाद) मानैत अछि। ओ दूनू ब्राह्मण छल। रामायण आ महाभारत एकर साक्ष्य अछि।

रामायण मे वाल्मीकि दू ठाम पर अपन परिचय स्वयं दैत अछि। राम द्वारा संपादित अश्वमेध यज्ञक काल वाल्मीकि अहि यज्ञ मे सीता कऽ लऽ कऽ आवैत अछि आ राम के अपन परिचय दैत अछि

प्रचेतसोअहं दशमपुत्रो

(उत्तरकांड 96/19)

अर्थात हम प्रचेताक दसमां पुत्र छी।

एक दोसर ठाम वाल्मीकि परोक्ष रूप सँ अपन रामायण मेँ अपन परिचय देने अछि।

संनिबद्धं हि श्लोकानां प्राचेतसस्तदा
वाल्मीकि परमोदारस्तञ्जी मासीन्महा

(उत्तरकांड 93/17)

अर्थात अहि तरहे महायशस्वी प्रचेताक पुत्र वाल्मीकि दूनू

---

108 गौतम धर्म सूत्र 4.17

শিষ্যক শিক্ষা দঽ কঽ চুপ ভঽ গেল ছল। প্রচেতা ব্রহ্মক পুত্র ছল। মনুস্মৃতি (1.34.35) কের অনুসার ব্রহ্মা প্রজাক সৃজনক কামনা সঁ ঘোর তপ দ্বারা শুরু মে প্রজাক পতি দস মহর্ষি কে উঁপেন্ন কেলক। ও মহর্ষি মরীচি, অত্রি, অঁগিরা, পুলস্ত্য, পুলহ, ক্রতু, প্রচেতা, র শিষ্ঠ, ভৃগু আ নারদ অছি। বাল্মীকি অহি দস মহর্ষি মে একটা প্রচেতাক পুত্র ছল। তাহি সঁ হুনকর ব্রাহ্মণ হেরাক মে কোনো সঁদেহক গুঁজাগশী নহি অছি।
আধ্যামে রামায়ণ (অযোধ্যা কান্ড, সর্গ6, শ্লোক 65, 66) মে রাম আ বাল্মীকিক রন মে মিলয কের প্রসংগ অছি। বাল্মীকি রাম কে অপ্পন রিষয মে রতারয অছি, হম জন্ম সে দ্বিজ ছলহুঁ মুদা হমর আচরণ শূদ্র জেনা ছল। শূদ্র স্ত্রী সঁ হমরা অজিতেন্দ্রিয দ্বারা কতেক রাস পুত্র উঁপেন্ন ভেল। চোরক সঁগ বৈহক কারণ হম সেহো চোর ভঽ গেলহুঁ।
স্কন্দ পুরাণ মে সেহো উঁল্লেখ অছি জে ও ব্রাহ্মণ ছল আ হুনকর নাম অগ্নি শর্মা ছল। মুদা শিকার (ব্যাঘ্র কর্ম) আ দস্যুকর্ম মে ও নিপুণ ছল। রাদ মে সপ্তর্ষিক কৃপা সঁ ও মহর্ষি বাল্মীকি রনি গেল ছল।[109]
ওহি তরহে রেদব্যাস সেহো ব্রাহ্মণ ছল নৈ কি শূদ্র। মহাভারতক আদি পর্ব মে হুনকর জন্মক কথা অছি। ও মহর্ষি পরাশরক পুত্র ছল। হুনকর মাঁ সত্যরতী একটা অপ্সরাক কন্যা ছল। রাজা উঁপরিচর অহি কন্যাক পালন-পোষণক ভার মল্লাহক মুখিযা জরুথ কের

---

109 कल्याण, गोरखपुर, संक्षिप्त स्कन्द पुराण अंक, पृष्ठ 381, 709 आओर 1024

সৌংপনে ছল। ও নার চনারৈক নেন তঽ পব জাযত ছনি জতয হ্নকব মিনন ঋষি পবাশব সং ভেন। সংপূর্ণ কথ মহাভাবত (খাদিপর্ব 63.70−86) মে খংকিত খছি।

পবাশব মহর্ষি রশিষ্ঠক পৌত্র ছল। সত্যরতী সং জন্ম নহ কহ কৃষ্ণ দ্বৈপাযন (রেদর‍্যাস) গ্রণ, জাগত খা রর্ণক দৃষ্ঠি সং মহর্ষি পবাশবক রংশ মে খারৈত খছি। পবাশবক প্বত্র ভনা কোন খাধাব পব শূদ্র কহল জাযত খছি? সমান র‍্যরসায পবক জাগত মে কতেক উঁপজাগতক তিবোহিত ভহ জাযকে পশ্চাত নিষাদক রাগস উঁপজাগত এখনো খস্তিত্ব মে খছি. ওা উঁপজাগত খছি, কোরঽ, কৈরর্ত, চৌবা, তীরব, ধীরব, রেনদাব, রিন্দ, মল্লাহ, স্ববহিযা, রনপব, গোঢ়ী,খ্নরঽ, কৌন, জেঠৌত, পবরতিযা, চৌদহা, বাজরংশী, নহেবিযা, মহিষী, হ্মবিযাবী, কেরঽ খা ধোরী।

নিষাদক খহি উঁপজাগত মে কৈরর্ত খা গোঢ়ী সিংহেশ্ববক
কমবগামা, দ্নাব, , চম্পানগব, ডংডাবী, রভনী, গম্হবিযা, ঠৈকা জীরছপ্বব, জনরাব, মহ্নী খাদি গাম মে রহ্নাংশি মে বহৈত খছি। ওা সংপন্ন কৃষক খছি খা বাজনীতি মে হিনকব রর্চস্ব খছি। ওা এখনো ভগরান শিরক উঁপাসক খছি।

মূর্তি স্থাপনা

প্রত্যেক ররখ খাষাঢ় পূর্ণিমা কেব কৌশিকী মে নর জল উঁতবৈত খছি। জলধাবা তীব্র গতি সং খাগূ রঢ়ৈত খছি। প্রত্যেক ররখ খাষাঢ় পূর্ণিমা কে গতিহাস ক্ষণ ভবি এতয ৰুকি কে পদ্ম পনাশ খর্পিত কহ জাযত খছি। নাগৈত খছি, শূন্য মে রেদ ধ্বনী গূংজি বহল

अछि। नै जानय कहिया सँ श्रृंगेश्वरक कौशिकीक जल पीयब भऽ गेल। तहिया सँ कोशी पाल्ड, पड़्श्ना या परवान धाब रनि गेल।
श्रृंगेश्वर थान मे ॠष्यश्रृंग एखनो जीवित अछि। श्रीमद्भागवत स्कंधावैत शुकदेवजी कहैत अछि

'गालवो दीप्तिमान रामो द्रोण पुत्र: कृपस्तथा।
ॠष्यश्रृंग पितास्माकं भगवान बादबायण:। ।
इमे सप्तर्षयस्तत्र भविष्यन्ति स्वयोगत:।
इदानि मासते वाजन्म स्व स्व आश्रम मन्डले। । '

(गालव, दीप्तिमान, राम, अश्वथामा, कृपाचार्य, ॠष्यश्रृंग, म हर्षि वेदव्यास ई सातो ॠषि आठम सावर्णी मन्वन्तर मे सप्त ॠषि पद पर आरूढ़ होयत)
अहि श्लोक सँ ई सिद्ध भऽ गेल अछि जे ॠष्यश्रृंग आर आवय वला आठम सावर्णी मन्वन्तर मे सप्त ॠषि मे सँ एकटा पद अवश्य ग्रह कऽ अहि कौशिकी अंचल के फेर सँ महिम मंडित करत।

ॠष्यश्रृंगक मूर्तिक स्थापना

ॠष्यश्रृंगक तपोभूमि सिंहेश्वर थान मे अहि ॠषिवाजक भव्य प्रतिमाक अभाव खटकैत छल। ॠष्यश्रृंग वंशोद्भव फारबिसगंज (अररिया) निवासी गोलोकवासी मोहनलाल जी पाल्डयक आमेज श्री गोपाल पंडित (सिखवाल ब्राह्मण) कुचामण सिटी जिला नागौर (राजस्थान) निवासी द्वारा संगमरमर निर्मित ॠष्यश्रृंगक भव्य प्रतिमा अप्पन माता श्रीमति पार्वती देवीक आदेशानुसार मंदिर परिसर मे स्थापित करैलक। अहि प्रतिमाक प्राण-प्रतिष्ठा-

অনুষ্ঠান বৈদিক মংত্রোচারণক সংগ দিনাংক 20 জূন, 2002 (গংগা দশহরা) কে সংপন্ন ভেল। মংদিরক বিকাস মে ও একটা নব অধ্যায় জুড়ি গেল।

সিংহেশ্বর মেলা

এতয প্রত্যেক বরখ ফাল্গুন শিবরাত্রি মে বড় মেলা লাগৈত অছি। জখৈন কোশীক বিভীষিকাক কারণ অহি ক্ষেত্র মে যাতাযাতক ঘোর অসুবিধা ছল, পূর্ণিমা আ ভাগলপুর সং একর সংবংধ টূটি জাযত করৈত ছল তখৈন অহি ঐতিহাসিক মেলাক বড় উপযোগিতা ছল। বৈলগাড়ী পর সবার ভঽ কঽ দূর-দরাজক লোগ অপ্পন বসদ-পত্তলক সংগ অহি মেলা মে আবৈত ছল, অপ্পন শিবির লগাবৈত ছল, মেলাক আনংদ লৈত ছল আ সাল ভরিক লেল অপ্পন ঘরেলূ উপযোগক বস্তু কীনৈত ছল। এতবেটা নৈ, পহিলে ও মান্যতা প্রচলিত ছল জে বাবা (ভগবান শিব) কের বিবাহ ভঽ জায কের বাদ লোক অপ্পন বাল-বচা সভহক বিবাহ তয করৈত ছল। এতদর্থ ফাল্গুন মহাশিবরাত্রি কে কন্য আ বরক দেখা-দেখী আ সংবংধ তয ভঽ গেলাক সংগ ব্যাহক লেল উপযোগী সমানক খরীদ-ফরোখ্ত সেহো অহি মেলা মে হোযত ছল আ দহেজ মে দৈক লেল মবেশী সেহো মেলা মে কীনল জাযত ছল। অপ্পন দূরক ফৈলাব সে ভেঁটৈ-ফলাকাত সেহো অহি মেলাক বিশিষ্ঠ ঠাম ছল। তৈযৌকা কাল মে অহি মেলাক আর্থিক টা নৈ সাংস্কৃতিক মহত্ত্ব সেহো বড় ছল। কোশীক বাঢ়, মলেরিযা আ দোসর প্রাকৃতিক আপদা সং জুঝৈত লোকক লেল ও একটা উল্লেখনীয বিশ্রাম স্থল ছল, জতয আবি কে কিছু দিনক লেল লোক অপ্পন কষ্ঠ কং বিস্বরি জাযত

ছল, আগূক যোজনা বনারৈত ছল, আ অপ্পন জিজীরিষা কে তবংগিত কঽ জয ভোলানাথ, জীযব কে ফেব আযব, জেহন প্রার্থনা কঽ ঘ্বৈত ছল।
ও মেলা সদী সং উল্লাস আ আনংদক সংগম বহল অছি। রারা ভোলেনাথক পূজা–অর্চনাক রাদ মাটি খোদি কেব বনাযল চূল্হা পব অপনে সং ভোজন বনাযব, দিন ভবি মেল ঘূমব, টিক্কলী–সিনূব সং লঽ কঽ দোসব ঘবেলূ সামান কীনব আ বাত মে পন্না লাল থিযেটব কংপনীক নৌটংকী দেখব মেলা দর্শনার্থী সভহক দিনচর্যা ছল। ও থিযেটব কংপনী উত্তবপ্রদেশ সং প্রায: সভ রবখ আরৈত ছল। একব সংস্থাপক পন্না লাল অপনে একটা ফশেল কলাকাব ছল। লৈলা মজলূ, শীবী ফবহাদ, স্বলতানা ডাকূ, ভক্ত পূবন মল, মাযা মছন্দব, অমব সিংহ বাঠৌব আদি হুনকব শ্রেষ্ঠ আ চর্চিত নাটক ছল জকব অহি মেলা মে সফল মংচন হোযত ছল। নগাবেক আরাজ পব বহবেতবীল মে সভ কলাকাব অপ্পন ভূমিকা কে গাবি কে প্রস্তুত কবৈত ছল। মংত্রমুগ্ধ দর্শক পাত্র সং অপ্পন সাধাবণীকৃত কঽ অপূর্ব আনংদ, প্রেম, করুণা, বাগ–রিবাগ, আক্রোশ আদি ভারক অনুভব কবৈত ছল। অহি থিযেটবক ও একটা রিশিষ্ঠ গুণ ছল।
গনঠব সং চৌঠাবী ধবি চাবি দিন ধব মধেপুবা কচহবীক হাকিম–হুক্কাম অহি মেলাক কৈম্প কবৈত ছল। সীবিজ ওংস্টীট্যূশনক চুলল গেল স্কাউট কৈলাশী পতি মংডল শিক্ষক নেতৃত্ব মে মেলা আ মংদিব পবিসবক রিধি র্যরস্থাক সংচালন কবৈত ছল। অনুমংডল মুখ্যালয সং আবক্ষী বল আ চৌকীদাবক ড¬্যূটী সেহো মেলা মে বহৈত ছল। কতেক রবখ মেলাক অংত মে হৈজা আ

𑒂𑒑𑒪𑒑𑒲 𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒢 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒹 𑒏𑓂𑒭𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒮𑒦 𑒩𑒫𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒂 𑒥𑒳𑒡𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒯𑒰𑒙 𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒏𑓂𑒩-𑒥𑒙𑓂𑒙𑒰𑒏 𑒁𑒪𑒰𑒫𑒰 𑒁𑒯𑒱 𑒧𑒹𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒦𑒩𑒣𑒴𑒩 𑒏𑒧𑒰𑒃 𑒏𑓄 𑒋𑒞𑒾𑒏𑒰 𑒠𑒳𑒏𑒰𑒢𑒠𑒰𑒩 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒬𑒱𑒫𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒥𑒩𑒐 𑒥𑒰𑒠 𑒁𑒑𑒳𑒪𑒏𑒰 𑒧𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒨𑒰𑒞𑒰𑒨𑒰𑒞𑒏 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒮𑒿 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒮𑓂𑒣𑒩𑒱𑒏 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒏𑒧 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒑𑒰𑒧 𑒬𑒯𑒩 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒞𑒨 𑒒𑒩𑒹𑒪𑒴 𑒅𑒿𑒣𑒨𑒼𑒑𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒪𑒰𑓀𑒬𑒱 𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒬𑒱𑒫𑒏 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒦𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒳𑒝𑓂𑒛𑒢 𑒂 𑒧𑒢𑒾𑒞𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒍𑒨𑒞 𑒕𑒪 𑒂𑒥 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒑𑒳𑒝𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒧𑒲 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒥 𑒋𑒞𑒥𑒻 𑒙𑒰 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒪 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒯 𑒁𑒯𑒱 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒮𑒩 𑒦𑒹 𑒯𑒳𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒧 𑒟𑒱𑒨𑒹𑒙𑒩𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒏𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒧 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒟𑒱𑒨𑒹𑒙𑒩𑒏 𑒩𑓀𑒑𑒲𑒢𑒲 𑒠𑒱𑒢-𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱𑒞 𑒟𑒱𑒨𑒹𑒙𑒩 𑒂𑒥 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒩𑒾𑒞𑒰 𑒏𑒧𑓂𑒣𑒢𑒲, 𑒬𑒼𑒦𑒰 𑒟𑒱𑒨𑒹𑒙𑒩 𑒂𑒠𑒱 𑒪𑓄 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒥 𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱𑒞 𑒧𑒢𑒼𑒩𑓀𑒖𑒢𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒁𑒬𑓂𑒪𑒲𑒪𑒞𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒨𑒻 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒡𑒱 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒂𑒥 𑒂𑒍𑒩 𑒏𑒛𑓃𑒰 𑒏𑒩𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑒧𑒨-𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒩 𑒁𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒞𑒞𑓂𑒫 𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒏𑒰𑒥𑒪𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼।

𑒁𑒯𑒱 𑒧𑒹𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑒩𑓂𑒏𑒮 𑒂 𑒧𑒾𑒞𑒏 𑒏𑒳𑒂𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒏 𑒏𑒹 𑒥𑒛𑓃 𑒂𑒏𑒩𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒵𑒭𑒱, 𑒅𑒿𑒠𑓂𑒨𑒼𑒑 𑒂 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒢𑒫-𑒢𑒫 𑒅𑒿𑒣𑒏𑒩𑒝𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒢𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑, 𑒐𑒰𑒠𑒲 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒼𑒠𑓂𑒨𑒼𑒑 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒙𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒏𑒏 𑒦𑒲𑒛𑓃 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒲𑒣, 𑒙𑓂𑒩𑒻𑒏𑓂𑒙𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒳𑒪𑓂𑒨𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒂𑒥 𑒯𑒰𑒟𑒲𑒏 𑒅𑒿𑒣𑒨𑒼𑒑𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒧 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒫𑒹𑒬𑒲

मे घोड़ ा, बैंल,भैंस आ बकबी सभहक खबीद-बिक्री होइत अछि। सबकाबी स्तब पब ओ मेला पंद्रह दिन धबि, कदा ओना एक माह धबि चलैत अछि।

सातम पबिच्छेद

उँपसंहाब

उँत्तब बैदिक कालसं भाबतीय संस्कृतिक जय यात्रा आबम्भ होयत अछि. अहि युगमे नै जानय कतेक संभाबना साम्प्रतिक यथार्थक बिबाट सन्दर्भमे संग हेबाँक लेल तैयाब बैंसल छल, जे बाँदमे महाकाब्यामेक सम्पूर्णतामे अबतबित भेल. अप्पन बर्चस्वक लेल ब्राँहमण, क्षत्रियमे भयंकब युद्ध सभ्यताक एहल यथार्थ छल जे अहि देशक सांस्कृतिक जीबनके बैंसी क्रियाशील बँला देलक.

प्बरुष सूक्तक ब्राँहमणोस्य मुखमासीद बाहू बाजन्यः कृतः, के मोताबिक सभ बर्णमे ब्राँहमण श्रेष्ठ छल. अप्पन ज्ञान-बिज्ञानक काबण समाजक सांस्कृतिक बाँगडोब हुनके हाथमे छल. ब्राँहमण सत्व शक्ति सम्पन्न छल, ते छत्रिय बजः शक्ति सम्पन्न. उँत्तब बैदिक कालमे ब्राँहमणक बिशिष्ठता आ श्रेष्ठताके फेब सं प्रतिपादित कबल गेल छल. अहि कालमे समाजक संगठन सेहो शुरू भ' चुकल छ्ल. संगे बर्ण ब्यबस्थाक स्वरूप सेहो निश्चित भ' बहल छल आ सभ बर्णक श्रेणीक निर्धाबण सेहो.

उँत्तब बैदिककालीन समाज ब्यबस्था आ महाकाब्यकालीन समाज ब्यबस्थामे कोनो अंतब नै छल. महाकाब्यमे बर्णित समाजक आधाबशिला पूर्बबर्ती समाज ब्यबस्था छल. अहि समाजमे अध्ययन, अध्यापन, यजन-याजन आ दान-प्रतिग्रह जेहन प्रमुख कार्य सं बाज्य आ समाजक सभ

क्षेत्रमे ब्राह्मणक सर्वोच्च पद भेटैत छल. शैक्षणिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आ आर्थिक विशेषाधिकार हुनका प्राप्त छल. ब्राह्मण सभ वेदक ज्ञाता आ सभ विद्यामे मर्मज्ञ होयत छल. विद्वता आ ज्ञानक कारण ओ भारतीय समाजमे सर्वश्रेष्ठ छल. अप्पन सक्रियता, दूरदर्शिता आ कर्तव्य परायणता सँ ओ समाजक निर्माण करैत छल. धार्मिक क्रियाक उद्देश्य समाजमे एकजुटता आ अटूट संगठन स्थापित करब सेहो छल. अहि धार्मिक क्रियामे राज्य आ समाजक कल्याण निहित छल. ओ राजा आ समाजक कल्याणक निमित्त यज्ञ सम्पन्न करैत छल. ऋग्वेद (10.71.9) के मोतारिक, शत्रुक आक्रमणक काल ओ अप्पन राजाक संग युद्धभूमिमे जाइके सैनिकक उत्साह बढ़ाबैत छल. ब्राह्मण राजाके अप्पन प्रजा आ राष्ट्रक प्रति कर्तव्यबोध करबैत छल. शतपथ ब्राह्मण (11.5.7.1) के मोतारिक राजाक राज्याभिषेकक काल ब्राह्मण पुरोहित उपस्थित जनसमुदायके संबोधित करैत छल, 'हे प्रजा, इ व्यक्ति अहाँक राजा अछि. ब्राह्मणक राजा ते सोम अछि.'
अहि कथन सँ स्पष्ठ अछि जे ब्राह्मण राजासँ उपर वैसी आश्रित नै छल, मुदा राजा स्वयं ब्राह्मणक मुखापेक्षी छल. क्याकि ब्राह्मणक बिना राजाक अभिषेक हैय पायब कठिन काज छल. धार्मिक काजमे ब्राह्मणक अनिवार्यता पुरोहितक पदक विकास केनक. संकटकालीन स्थितिमे ब्राह्मण शस्त्र सेहो ग्रहण क' सकैत छ्ल.
दोसरा दिस, क्षत्रिय सेहो ब्रह्मतेज के पाबैय लेल अनवरत क्रियाशील छल. ओ अप्पन श्रेष्ठताक स्थापित करैक लेल कतेक बार प्रयास केनक. क्षत्रिय ब्राह्मणक बौद्धिक चुनौती स्वीकार नै केनक, मुदा कतेक बार

रिद्वान, दार्शनिक आ तत्वज्ञानी क्षत्रिय शासक कतेक बास ब्राह्मणके अप्पन शिष्य बनौलनक. एहन क्षत्रिय शासकमे जनक, अश्वपति कैकेय, काशिबाज अजातशत्रु, प्रारहण जैरनि आदि प्रमुख छल. छान्दाग्य उपनिषद (5.3.7) के मोतारिक पंचाग्नि-रिधाक उद्भर आ उन्नयन क्षत्रिय सबहक कारण भेल छल, जेकब दर्शन तत्व छल आरागमनक सिद्धांतक प्रतिपादन. ई रिद्या ब्राह्मणक लग नै गेल छल. ताहि सं सम्पूर्ण लोकमे अहि रिद्या सं क्षत्रिय के शिष्या क' ल' क' अनुशासन हैत रहल छल. (दृष्टव्य प्राचीन भावत का सामाजिक इतिहास, डा. जयशंकब मिश्र, पृष्ठ 121-122)

ब्राह्मणक तबहे क्षत्रियक अध्ययन-अध्यापनक अधिकाब छलन मुदा ओ यज्ञ नै कबा सकैत छल. अहि तबहे समाजमे क्षत्रियक अधिकाब ब्राह्मणसं हबछायन छल. ज्ञानक आलोक भेटैलासँ क्षत्रिय अपनाकेँ सात्विक दिस मोड़ैक प्रयास केलक. आ सांस्कृतिक क्षेत्रमे अप्पन रर्चस्व काएम कबए चाहलक. ई स्मरणीय अछि जे अइ युगमे पौण्डबक, ओड्र, द्ररिड़, काम्बोज, यरन, शक, पाबद, पह्लर, चीन, किबात, कबद आ खश जेहन हस्ती सभ सेहो अइ देशमे आएल. जे अप्पन कुशलता आ सक्षमतासँ ब्राह्मण द्वाबा चतुर्वर्णमे रिधिरत समारिष्ठ कएल गेल. एहन संघर्षशील संगठनामेक र बचनामेक कालमे ब्राह्मणक सूत्रग्रंथ, उपेबता आ याचिक कर्मकांड आ क्षत्रिय कर्तव्य कर्म आ तेजक प्रभार छल जे तहियाक भावतीय समाज एतेक संरर्धित भेल.

मुदा, जाग ब्रह्मरिन आ बाह्रबनक सामंजस्य ऐ देशक आ भावतीय समाजक अरिस्मरणीय रिकास केलक आ बाष्ट्रीय धाबाकेँ गतिमान केलक ओही स्पर्धा आ ईर्ष्याकि कारण

ও এক–দোসবাকেँ বণক্ষেত্রমে ননকাবএ নাগন. রশিষ্ঠ খা রিশ্বামিত্রক যহ্ন (দেখূ পাঁচম খধ্যায), পবশ্ববাম খা ক্ষত্রিযক নোমহর্ষক সংগ্রাম (দৃষ্ঠব্য ব্রহ্মরৈরর্ত প্ববাণ, গণপতি খংড, খধ্যায 40), দধীচি খা ক্ষ্রধ্ নামক বাজাক যহ্ন (শিরপ্ববাণ, খধ্যায 38, 39) খাদি এহন বৃতাঁত খছি, জে ব্রাহ্মণ–ক্ষত্রিয স্পর্ধা জনিত খছি. দধীচিক যহ্নভূমি তঁ খখ্নকা সিংহেশ্বব স্থান খছি.

শ্রৃংগশ্ববশ্চ নাম্না বৈ বৈদ্যনাথ স্তথৈব চ.
জপেশ্বব স্তথা খ্যাতো যো দধীচি বণ স্থনে.
শিরপ্ববাণ (রুদ্রসংহিতা) খ.2

খর্থাত দধীচিক বণভূমিমে শ্রৃংগশ্বব, বৈদ্যনাথেশ্বব খা জপেশ্বব নামক নিংগ প্রসিদ্দ খছি. খগ যহ্নমে ক্ষত্রিয বাজাক সহাযতা কবৈ নেন স্বযং ভগরান রিষ্ণু খাএন ছন, জকবা দধীচিসঁ হাবএ পড়ন ছন. কতেক বাস সংঘর্ষক বাঁদো সমাজমে ব্রাহ্মণক শ্রেষ্ঠতা বঁনন বহন. ক্ষত্রিয একবা ছীন নৈ সকন. রিশ্বামিত্র ক্ষত্রিয ছন. ও ব্রহ্মর্ষি পদক প্রাপ্তিক নেন কঠোব তপ কেনক. হ্নকা ব্রহ্মর্ষি বঁনি জেবাঁক প্রমাণপত্র রশিষ্ঠকেँ দিখএ পড়নৈ. ব্রহ্মা সেহো প্রগট ভ' ক' হ্নকা রব মাঁগৈনে কহনক. রিশ্বামিত্র কহনখিন জে হম ব্রহ্মর্ষি হ্খএ চাহি ছী. হ্মদা মাত্র খহাঁকেँ ব্রহ্মর্ষি কহনাসঁ হমবা সংতোষ নৈ হএত জাধবি স্বযং রশিষ্ঠ খাবিং ক' হমবা ব্রহ্মর্ষি নৈ মানি নেত. মহর্ষি ভৃগ্বক রিষ্ণুকেँ নাত মাববঁ সেহো ব্রাহ্মণ–ক্ষত্রিযক ঝগড় াক বৃতাঁতক একটা কড় ী খছি. ওহি বৃত্তাঁতসঁ ঙা স্পষ্ঠ খছি

जे ब्राह्मण क्षत्रिय सँ श्रेष्ठ अछि.
ऋष्यशृंग ओना जगमे उँच कुलोत्पन्न ब्राह्मण छल मुदा तहियोका ब्राह्मणमे व्याप्त अहम्मन्यता सँ ओ दूर छल, बहुत दूर. ओ अप्पन कालक महान समन्वयवादी ऋषि छल. ओ क्षत्रियक विरोध नै केलक, मुदा हुनकर हितक काज, जाहिसँ समाज उन्नति करए, तकरे संपादन केलक. हुनकर आगू जातीय स्वार्थ नै, राष्ट्रिक कल्याण आ मंगलभावना छल. ओ क्षत्रिय राजा रोमपादकेँ अप्पन सम्बन्ध बनौलक. ई जानैत जे रोमपाद उँच कोटिक क्षत्रिय नै अछि आ हुनकर वंश शाप भ्रष्ठ अछि. ओ ओकर संबंधक सहर्ष स्वागत केलक.
एकटा वृत्तांतक मुताबिक रोमपादक पूर्वज महाराज बलिक स्त्री महारानी सुदेष्णासँ अंध दीर्घतमा अंग, बंग, कलिंग, पुंडर, सुहा आ आंध्र छहटा नेना जन्म लेलक. कतेक ठाम वृतांतमे आन्ध्रक उल्लेख नै अछि. पाँचटा नेनाक उल्लेख अछि. कहल जाइत अछि जे गर्भाधानक काल किछु एहन घटना भ' गेल छल जे दीर्घतमा अओ नेनाकेँ क्षत्रियत्व सँ भ्रष्ठ क' देलक.
ई स्मरणीय अछि जे राजा बलि संतानोपेत्तिक लेल अप्पन स्त्री सुदक्षणाकेँ आन्हर ऋषि दीर्घतमाक पास पठेने छल. रानी 'हँ' त' कहि देलक मुदा ओना दिस हुनकर रूचि नै छल. ओ सोचलथिन, एकटा त' ऋषि अछि, दोसर आन्हर. संगे-संग हुनकर देह सेहो कार आ कुरूप छल. ताहिसँ ओ अप्पन एकटा दासीकेँ लग भेज देलक. मुनि ओकरासँ कक्षीवान आदि कतेक ठाम

पुत्र उत्पन्न केलक. जखन वस्तुस्थितिक जानकारी राजाकेँ भेटलैन तखैन राजा बड्ड कुम्मा-स्वम्मा क' रानी केँ तैयार केलक आ दीर्घतमा लग पठौलक. दीर्घतमा आन्हर होइक बादो बड रतिप्रिय छल. सुरभिक लेना वृषभसँ ओ गोधर्मक शिक्षा प्राप्त केने छल. आँखि नै रहबाक कारण ओकरा शील संकोच सेहो नै छल. कत' मानव धर्मक मर्यादित परिवेशमे रहएवाली सुदेष्णा आ कत' गोधर्ममे निष्णात दीर्घतमाक उद्दाम रति व्यवहार. भला कोना मेल हुअए ? ताहिसँ ओ तमसाएल ऋषि अप्पन लेनाकेँ क्षत्रियत्वसँ च्युत क' देलक. ओ सभटा पुत्र यशस्वी राजा जरूर भेल मुदा विशुद्ध क्षत्रिय नै भ' क' एकटा विशिष्ठ जाति बनी भेल. अंग वंशमे महाभारत कालमे 'अधिरथ' भेल जिनकर 'सूत' आ हुनकर पुत्र 'कर्ण' 'सूतपुत्र' कहल गेल. अंग क्षेत्रक निवासी आ राजवंशी ब्राह्मण ग्रन्थमे व्रात्य कहल जाए लागल. (देखू, व्रात्य, पहिल्लुक परिच्छेद) जेना राजा बलि क्षेत्रमे दीर्घतमा आ पुत्र उत्पन्न केलक, जे ब्राह्मण भेल. (द्रष्टव्य श्री भागवत दर्शन खंड 35, पृष्ठ : 39-46)

ऋष्यशृंग अंग सभटा भेदभावसँ ऊपर छल. ओ अप्पन मनमे ओ भाव आनबो नै केलक जे ओ ऊँच कनोजिया ब्राह्मण आ महान आचार्य होइक बादो निम्न कोटिक क्षत्रिय कन्याक पाणिग्रहण क' रहल अछि. संगे पहिलेसँ चलल आबि रहल क्षत्रियक प्रति ब्राह्मणक द्वेषकेँ ओ समग्र रूपसँ निवस्त क' देलक.

अहि तरहेँ शान्ताक पाणिग्रहणक बाद क्षत्रिय आ ब्राह्मणमे प्रसन्नताक लहर आबि गेल. ई स्वाभाविके छल. आब दुनू एक-दोसराक प्रति यज्ञक कट्टुताकेँ बिसरि शांति, सद्भावना, समन्वय आ समरसताक स्थापनामे जुटि गेल. अहि परिवेशमे विकासक काज तेजी भेल. देशक सभ ठाम क्षत्रिय राजा ऋष्यश्रृंग केँ जमाय जेना सम्मान देलक. ब्राह्मण आ क्षत्रिय शान्ति चाहे' लागल. ओ सभ कियो महासमर, दशराज्ञ युद्ध, वशिष्ठ-विश्वामित्र, परशुराम आ सहस्त्रार्जुन युद्ध आदि सबहक विभीषिका देखि चुकल छल. दशराज्ञ युद्धमे पचास हजार सँ बेसी ब्राह्मणक वध भेल छल.

राजा रोमपादक अहि वैवाहिक अनुष्ठानकेँ सम्पन्न करबाक पश्चात ब्राह्मण-क्षत्रिय एकता सभ दिन लेल स्थायित्व प्राप्त क' गेल. ईहो एकटा कारण भ' सकैत अछि जे भारतमे क्षत्रिय सभ ऋष्यशृंगक कतेक बास मंदिर बनबौने अछि.

मुदा, कतिपय कट्टरपंथी केँ ब्राह्मण-क्षत्रियक ई मेल आ आर्य-अनार्यक समन्वयक प्रयास नै सोहाएल. समाजमे एहनो लोक बहुत अछि जे स्नेह, सद्भावना आ समन्वयक वातावरण नै, अशांति आ विघटन पसिन्न करैत अछि. अहिने लोक सभ ऋष्यशृंगक प्रतिभा आ लोकप्रियतासँ ईर्ष्या सेहो कर' लागल. ई गप सर्वविदित अछि जे ऋष्यशृंग सभसँ पहिने पुत्रेष्ठि यज्ञ करने छल आ एकर मंत्रदाता आ मंत्राचित अनुष्ठानक मंत्रक प्रणेता छल. मुदा हरिवंश पुराणमे संकलित पुत्रेष्ठि-

যক্তক সৈকড় াসঁ রেঁসী মংত্রক সংগ কত্তী ঋষ্যশৃংগক নাম ধবি নৈ খছি. ওতএ মাত্র ‘ঋষি উঁরাচ’ টৌ খংকিত খছি. কোনো ঋষিক নাম নৈ খছি.
হমব রিচাবসঁ ঙা উঁত্তব রৈদিক কানমে সভসঁ পৈঘ ষড্যংত্র ছন. তপোপ্বচ সমন্বযরাদী ঋষ্যশৃংগক ছরিকে ঁ মৈন কবৈক নেন কষ্টবপথী সভ কতেক বাস ঘৃণিত ষড্যংত্র বচনে ছন. ও কষ্টবপথী ঋষ্যশৃংগক উঁদাবরাদী নীতিসঁ জবৈত ছন. ঋষ্যশৃংগ খার্য টৌ মে নৈ, খনার্য মে সেহো খপ্পন সাধনা তপস্যাক পারন স্থন রঁনৌনক. পূরঁমে রর্তমান খরুণাচন প্রদেশীক স্বনসবী নদীক তট পব ও তপস্যা কেনক. হ্নকব স্মৃতি চিহ্ন ঙা স্থন খাগ ধবি সমেট ক’ বাখনে ছন. হ্নকব ঙা তপস্থন ‘শ্রৃংগ গ্বড় ী’ ক নামসঁ চর্চিত বহন হএত, জে রাঁদ মে ‘সিংগোড় া’ রঁনি গেন. খগ ক্ষেত্রমে ‘গ্বড় ী’ শব্দ ঠামক নেন প্রযুক্ত হোগত খছি. রেগরতী স্বনসবীক ধাবক কাত সিংগোড় া ঘাট খা ঘাটপব স্থিত রিভংডক খাশ্রম এখনো ঋষ্যশৃংগক তপস্যাক সাক্ষী খছি. একব খাগূ রনাচ্ছাদিত পহাড় ী খছি. ওকব নীচা ঋষ্যশৃংগ মংদিব. এত’ সভ রঁবখ ফাল্গুন প্তঞ্চ পক্ষপব শিরবাত্রিক মেনা নাগৈত খছি. এতৌকা মোপা, শের্দুকমেন, দিগাব্দ, নিশি, খপতনী, হিনমিবী, তগিন, খ্ম্পবী, রাঁচূ, তংগসা, মিজি খাদি ভাষা–ভাষী খাদিরাসী নোকসঁ পূছূ. ঙা খহাঁকে ঁ ‘সিংগোহ্মনী’ কে ঁ ন’ ক’ রঁতাএত, কনকন করৈত স্বনসবী ধাব খা পহাড়পব ঝ্মৈত খেতী সভটৌ ‘সিংগোহ্মনী’ কেব প্রসাদ খছি. ঙসাঙ ধর্মক খগ গনাকামে প্রচাব–প্রসাবক

রাঁদ খগ ঠামক মহত্ত্ব কিছু গৌণ ভ’ গেন খছি. হ্মদা প্ববনা পীঠীক খাদিরাসীক মনমে খগ ঠামক চমকোবিক বৃত্তাঁত খখনো প্ববান নৈ পড়ন খছি. কিছু দিন রাঁদ ভ’ সকৈত খছি জে ও স্মৃতি–চিহ্ন কানক প্ররাহমে রঁহি জাএ.

ভাবতক ও পূর্বী প্রদেশে জত’ খস্পৃশ্য নবভক্ষী খনার্য জাতি নিরাস কবৈত ছন, ওগ যুগমে খার্য খা খনার্য দ্নূ ফবাক–ফবাক কোনপব খছি. হ্মদা শাঁতি, তপ খা সমন্বযক প্ববোধা ঋষ্যশৃংগক নেন খার্যরির্তক সহ্মচা ধবতী হ্নকব সাধনা স্থনী ছন. ও খস্পৃশ্যতাকেঁ ক ধর্মক কনংক খা একটা দানরীয গ্ণহ মানৈত ছন. সনাতন ধর্মমে খস্থাযী খস্পৃশ্যতা কানাঁতবমে জন্মজাত খস্পৃশ্যতাক জে ৰূপ গ্রহণ কেনক ও খগ ধর্মক রিঘটনক কাবণ ভেন.

ঋষ্যশৃংগ দূবদর্শী বহথিন. ও খপ্পন কানমে দেখি নেনে ছন জে বঙ্গ–শ্বঙ্কি খা দস্যু র খনার্যকেঁ খার্য ধর্মমে সংস্কাবিত কবরাঁক প্রশ্নপব মহর্ষি রশিষ্ঠকেঁ খপ্পন দৃঢ় সিদ্ধাঁতক খাকাশচাবী খাসনসঁ নীচাঁ উঁতবি রাস্তবিক খা জীরনগত যথার্থক সন্দর্ভমে নাচাব ভ’ ক’ খপ্পন ব্যরহাব রঁদনএ পড়ন কিএকি দ্নূ জাতিক সমন্বযসঁ বাষ্ট্রক হ্মখ্যধাবা তীব্রগতিসঁ প্ররহমান ছন. রিশ্বামিত্রক রাঁদ ঋষ্যশৃংগ খগ ধাবাকেঁ রেঁসী গতি দেনক. রিশ্বামিত্র শস্ত্রক সেহো প্রযোগ কেনক হ্মদা ঋষ্যশৃংগ রিপবীত সাংস্কৃতিক ক্ষেত্রমে ভারনামেক জনসংপর্ক, শাস্ত্র জ্ঞান, যজ্ঞ খা তপসঁ হ্নকা সাংস্কৃতিক দৃষ্টি সঁ পবাভূতকেঁ খপ্পন ধাবামে জোড়ি নেন খাজীরন ক্রিযাশীন বহন. স্বদূব পূর্বক

মোপা, মিজ, তংগসা জেহেন খতি দ্খ্রাম ক্ষেত্র হ্খএ রাঁ দক্ষিণক তুংগভদ্রাক সঘন রনাচ্ছাদিত দ্ররিড় ক্ষেত্র, ঋষ্যশৃংগ নির্ভয খা নির্রিকাব ভারসঁ এত' তপ করৈত ছন, শাস্ত্রজ্ঞানসঁ জনজীরনমে নর খালোক প্রদান করৈত ছন খা এক দীপসঁ দোসব দীপকে ँ প্রজ্জ্বলিত করৈত ছন.
দেশক পশ্চিম খা উত্তবমে ঋষ্যশৃংগক ঢেব বাস মঁদিব খছি, জে যা তঁ হ্নকব তপস্যা খা যজ্ঞস্থলীক স্মৃতিক চিহ্ন খছি যা হ্নকব রংশক রঁনাওন স্মাবক স্বরূপ মঁদিব খা সমাধি. ওগ ঋষ্যশৃংগ রংশজ মে কিছ ব্রাহ্মণ, কিছ ক্ষত্রিয খা কিছ দ্নূক রাঁচ একটা দোসব জাতি খছি জনা শ্রৃংগ্বান, শৃংগী, শিখরান, সিখরান, শ্রীন্গপ্ববী (মহাবাষ্ট্র মে), নাযক (মধ্যপ্রদেশ মে), শৃংগী ঋষি (কর্নাটক মে) ব্রাহ্মণ . দোসব দিস শ্রিংগা (বাজস্থান মে), রিশৈনরংশী, সেংগব রংশীয, শৃংঘ রংশীয জেহেন কতেক বাস ক্ষত্রিয সম্প্রদায খছি জে খপনাকে ँ ঋষ্যশৃংগক রংশজ মানৈত খছি. তাগসঁ দেশক রিভিন্ন ভাগমে হ্নকব রংশজক রঁনাওন কতেক বাস মঁদিব, খাশ্রম খা সমাধিক রূপমে খগ মহান ঋষিক স্মৃতি চিহ্ন খছি. একবামে কতেক বাস এহেন চর্চিত স্থল খছি জে ঋষ্যশৃংগক জন্ম খা মৃত্সঁ হ্নকব সংরঁধ জোড় ৈত খছি.
প্ববাকাল মে ঋষি রিশৈষক মুখ্য সমাধিক খতিবিক্ত খাব ঠাম পব কতেক বাস সমাধি হোগত ছন. এহেন সমাধিমে শ্রদ্ধান্ব দিরংগত ঋষিক দাঁত, কমংডল, খড় াম, চ্ঙ্গা খাদি সমাধিক ভীতব

बाखि देल जाग छल. यरलक ञाक्रमसँ कतेक मंदिर ध्वस्त भ' गेल आ समाधिक धरतीकेँ गीबि गेल. कतेक स्थानक पुनर्निर्माण रॉदमे श्रद्धालुक वंशेज करौलक. महाराष्ट्रमे ञ्तुसारलमे ऋृष्यशृंगक एकटा मंदिर छल. ताप्ती धारमे रॉन्ह रॅललासँ ओ मंदिर धारक पालिमे समाधि ल' लेलक. एत' स्थापित ऋृष्यशृंगक मूर्तिकेँ सरकारक सहयोगसँ श्रद्धालु रुरााक मंदिर बारेरमे फेर सँ स्थापित केलक. मन्दिरमे ऋृष्यशृंगक पूजा होगत ञछि रूदा समाधिमे लै. किएकि आर्य संस्कृतिमे समाधि पूजाक रिधाल लै ञछि, एकरा श्मशाल पूजल जेहल श्राद्ध कर्म मालल जागत ञछि.
भारतरर्षक प्राय: सभ राज्यमे ऋृष्यशृंगक मंदिर ञछि. एहल गौरर कोलो दोसर ऋृषिकेँ लै भेटैल ञछि. किछु मंदिरक रिररण लीचाँ देल जा रहल ञछि.

रिंहार

1. श्रृंगेश्वर स्थाल (सिंहेश्वर स्थाल) जिला रूख्यालय मधेपुरासँ आठ किलोमीटर उत्तर ओ सुप्रसिद्ध शैर तीर्थ स्थल ञछि. रूख्य शिर मंदिरमे ऋृष्यशृंग ञप्पल मंदिरमे स्थापित छथिल.(देखू परिच्छेद छठम)

2. ऋृषिकुंड (देखू सम्पादकीय)

3. राजगीर पटलासँ 120 किलोमीटर दक्षिण ऋृष्यशृंगक तपस्या स्थल. लीलगिरी पर्रतसँ जुड़ल सप्तकुंड. रलेगिरि पर्रतक लीचाँ एक तप्त कुंड जेकरा ऋृष्यशृंग कुंडक लामसँ जालल जागत

अछि. आग–कान्हि ओ मकद्म रूडक नामसँ चर्चित अछि.

उत्तरप्रदेश

4. शृंगरेरपुर (देखू चारिम परिच्छेद)
5. परीक्षितगढ़ मेरठ लगमे स्टेशनसँ एक किलोमीटर दूर पर ऋष्यशृंग आश्रम.
6. कन्नौज ऋष्यशृंग मंदिर.
7. सिंगीराम (शृंगीराम) फरुखाबाद जिलाक गाम ऋष्यशृंग मंदिर. एत' सब बर्ख दशहरामे मेला लागैत अछि.
8. अगस्त्य नगर (अगस्त्य मुनि, रुद्रप्रयाग) उत्तरांचलक अलकनंदा पर्वतपर ऋष्यशृंग आश्रम.
9. नैमिषारण्य (सीतापुर) लखनऊ सीतापुर लगमे गामक गाम भव्य मंदिर.

मध्यप्रदेश आ छत्तीसगढ़

10. चांदा (चंद्रपुर) सादक (मांडक) नामक स्थानपर ऋष्यशृंगक पिता श्री महर्षि विभाण्डकक प्राचीन आश्रम (सादक आ मांडक विभाण्डक क विगड़ल रूप अछि)
11. जबलपुरबरासागर झाँसी मार्गेर रोड पर पहाड़ी पर स्थल आ मंदिर.
12. सिहोरा (देखू चारिम परिच्छेद: महानदीक उद्गम हएत)
13. मंदसौर गीतामवनमे ऋष्यशृंग मंदिर आ धर्मशाला.

गुजरात

14. रिनोद (भड़ াচ) नर्मदा धावक कात ঋষ্যশৃংগ আ শান্তাক তপস্যা স্থন আ আগ ক্ষেত্রক প্রহ্মখ ঋষ্যশৃংগ আশ্রম.

মহাবাষ্ট্র

15. কোপবগাঁর গোদারবী ধাবক কাত ঋষ্যশৃংগক সমাধি আ মহর্ষি রিভাণ্ডক মংদিব. এত' সভ রঁবখ চৈত্র মাসমে মেনা নাগৈত অছি.

16. তাপসরাডী (ন. বাকেব, জিনা. জনগাঁর) ঋষ্যশৃংগক প্রাচীন মংদিব, জে শ্রীল্গ্য দেরক নামসঁ প্রসিদ্দ অছি.

17. সীগত (পো. তাঁদ্নরাডী, ত. বারেব জিনা. জনগাঁর), তাঁদ্নরাডী ভুসারনসঁ 14 কিনোমীটব স্বখন ধাবক কাত ঋষ্যশৃংগক প্রাচীন মংদিব. বিশ্যশ্রীল্গ্য পদমাসন মে.

18. আষ্ঠী (নাঁদেড়) ঋষ্যশৃংগ আশ্রম আ মংদিব.

19. অনসিংগ (জিনা. রাসিম, মহাবাষ্ট্র) ঋষ্যশৃংগ মংদিব.

20. কাবনা (ত. প্বষদ, জিনা. যরতমান) ঋষ্যশৃংগ সমাধি.

বাজস্থান

21. ঢ্স্বক (জিনা. অজমেব) মংদিব

22. সবেডী (জিনা ভীনরাড়) মংদিব আ স্কূন.

23. রিজয স্তম্ভ দোসব, চাবিম আ ছঅম মহন পব ঋষ্যশৃংগ আ শান্তা মাতাক মূর্তি নাগন অছি. (মহাবাণা কুম্ভাক সম্মান শোধক রিষয).

24. মাত্রিকুংদিযা (জিনা চিত্তৌড়গঢ়) রঁনাস ধাবক কাতক মংদিব.

25. বূঁন্দী মংদিব আ ধর্মশানা.

26. সংগারদা (জিনা বূঁদী) ত্রিরেণীক কাত মে.

27. চংদেসবা (জিনা উঁদযপ্পব) মঁদিব.

28. জৈতাবণ (জিনা পানী) মঁদিব খা ধর্মশানা.

29. কেশেরবায পাটন (জিনা বূঁদী) মঁদিব.

30. জযপ্পব মঁদিব খা ঋষি শ্রীন্গ্যশ্রেম.

31. কেকড় া (জিনা খজমেব) মঁদিব খাযা ধর্মশানা.

32. বরৈবারাদ (জিনা কোটা) মঁদিব.

33. ভ্রিভাসনী (জিনা নাগৌব) মঁদিব.

34. উঁদযপ্পব বিশ্যশ্রীন্গ্য মঁদিব.

35. ভীনরাড় া ঋষ্যশৃংগ সংস্থান. বিশ্যিশ্রংগ খা মাতা শান্তাক মঁদিব. 19 মঙা, 1996 কে ঁ মূর্তি মে প্রাণ-প্রতিষ্ঠা ভেন. রিশান পবিসব, স্কূন, ধর্মশানা খাদি.

36. প্বষ্কব. ঋষ্যশৃংগক মঁদিব, খ. ভা. সিখরান ব্রাহ্মণ মহাসভাক কার্যানয.

37. চিত্তৌড়গঢ় (রঁড় ামঠ) ঋষ্যশৃংগ খাশ্রেম খা ছাত্রারাস.

38. কোনব (পানী) খবারনী পর্বত শ্রৃংখনাপব মঁদিব. হ্নাদ বেনরে স্টেশনসঁ 35 কিনোমীটব. মূর্তিক প্রাণ-প্রতিষ্ঠা 4 মঙা, 1987 কে ঁ ভেন. রর্ষা ঋত্তুমে প্রাকৃতিক ছটা দর্শনীয.

কর্নাটক

39. শৃংগেবী মঠ (দেখূ চাবিম পবিচ্ছেদ)

40. শ্রৃংগ গিবি (দেখূ চাবিম পবিচ্ছেদ)

খাঁধ্রপ্রদেশ

41. হৈদবাবাঁদ ঋষ্যশৃংগ মঁদিব খা ধর্মশানা.

हिमाचल प्रदेशे

42. बाँगी (बँनजाव जिला कुल्लू) ऋष्यशृंग मंदिव
43. संकीर्ण (त. रंजाव, जिला. कुल्लू), जे नौ मास बँर्फसँ झा ँपल बहैत अछि. अति प्राचीन ऋष्यशृंग मंदिव आ नगमे हुनकव योगनी कुंड.
44. धौंधी (रंजाव) ऋष्यशृंग मंदिव (ई पाँच सौ साल पुवना अछि)

एकव अलावे दोसव–दोसव ठाम अज्ञात ठामपव सेहो ऋषिवाजक स्मृति चिन्ह हएत. ई ऋष्यशृंगक गौवरोज्ज्वल कीर्तिक साक्षी अछि.

अग ग्रन्थक समापनक पहिने हम श्रेद्धापूर्वक यजुर्वेदक सर्व शक्तिमान पवमेश्वबक विवाट स्वरूपक स्मवण कवैत छी.

सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात.
सह भूमिं सर्वतः स्पृत्व त्यतिष्ठद्दशांगुलम.
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानी जज्ञिवे.
छंदासी जज्ञिवे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत.

सृष्टिकक आवम्भ मे पवम पूर्ण अहंत पूजनीय सर्वहुतः पवमात्मा सँ (ऋचः) ऋग्वेद (सामानि) सामवेद (जज्ञिवे) उँत्पन्न भेल. (तस्मात) ओहि पवमेश्वबसँ (छन्दांसि) अथर्ववेद (जज्ञिवे) उँत्पन्न भेल. (तस्माद्यजुः अजायत) ओहि प्रभुसँ यजुर्वेद उँत्पन्न भेल. आ चवाचव मे व्याप्त मंत्रदृष्टा ऋष्यशृंगक असीम अनुग्रहके ँ दुनू हाथ जोड़ि क' प्रणाम निवेदित कवैत छी.

ॐ ऋष्यशृंगे नमः

पविशिष्ठ (क)
प्वत्रेठ्ठि यक्त

व्रॅह्मचावी थ्रञ्जदत्त 30 ॅबवखक ग्रवक छन. ओ पढ़न–निखन नै छन. कोनो रिघ्यानयमे ओ प्ररेशे नै नेने छन. ओ मह्मन योगी छन. ओ योग निकेतन ऋषिकेषक श्री योगेश्विवानंदजी मह्मावाजक शिष्य छन. जखन व्रॅह्मचावी थ्रञ्जदत्तयोग समाधिमे नीन ভ' जाग छन तखन ह्नकामे दिव्य ज्ञानक धावा प्ररामित हखए नागैत छन. कह्मन जागत थिष्ठि जे ऋषिक थामो ह्नकापव उँतवैत छन था ओ थर्धचेतन था थचेतनारस्थामे ओग ऋषि सभसँ कतेक बास काज–धाज क' थाध्यामिक था रैज्ञानिक र्याख्या कवैत छन. एह्मन नागैत छन जे ओ सतयग मे पहुँच गेन थिष्ठि जागमे रैदिक संस्कृति देरत्व, सत्, धार्मिक था परित्र थामो सर्रोपवि थिष्ठि. व्रॅह्मचावी थ्रञ्जदत्तक थचेतारस्थामे एह्मन रैज्ञानिक था थाध्यामिक र्याख्या था रिश्लेषण रिजडम ऑफ़ द एंसियेंट विसीज (WI SDOM OF THE ANCI ENT RI SHI ES)मे संकनित थिष्ठि.

एकव प्रकाशिक थिष्ठि रैदिक थन्वसंधान समिति I I I , E–31 नाजपतनगव, नओ दिल्नी–24. थहि ग्रंथक मून हिंदी मे थाॅर नै भेटैत थिष्ठि. थंग्रेजी मे थनूदित ग्रंथ उँपनर्ब्ध थिष्ठि. प्वत्रेठ्ठि यक्तक सरँधमे थग थमून्य ग्रंथक एकटा उँद्धवण

প্রস্তুত অছি. অগ গ্রংথমে লেখককে ঋষ্যশৃংগক প্বনবারতাব কহল গেল অছি.

Puttreshthi Yajna (Sacrificial ceremony for a son's birth) and medicines.

A herb– 'Kathakuta' growing on mountains, blooms with the white flower, keeps one thousand insects in the lower part of its root. Its body is white blue and leaves look like pun sagati. Sweet in its root and bitter in its top, this herbal medicine has to be mixed with another medicine known as 'ShankhaAnuvat'. Its flower looks like the flower of an Almond plant. It has a bitter bark although its root is replete with 'Baka' a tasteless juice which is also known as Akrata. The three doses of its leaves, bark and root be mixed with the five of that of 'Kirkir' (an herb I have already mentioned) to make a perfect 'Astanga'. A leaf like cake should be prepared of

this substance and be kept in an earthen pot to absorb its poisonous properties. This refined medicine has a curative effect on all gynecological troubles of urethra, eyes, Anawat (a vein) and other physical deficiency, if administered of a period of forty days. The panchang and the trigat are other prepa rate on like Astang. I had studied all of them along with the other skills of Ayurveda for 84 years before I (Shrangi Rishi) conducted 'Puttereshthi' Yajna for the emperor Dashratha. This Yajna can be successful performed only by a master of Ayurvedic knowledge. Only a few cruditė scholars of this science know this therapy by which ailing organs of human body viz. eyes, ears, tongue etc. can be cured.

Diagnose of Dashratha

Before setting up a yajnashala or the place for sacrifice of

'Puttreshthi', I examined the king Dashratha well and examined closely his 'Akrata-Dwar' one of the entrances in human body each haunted by a deity. The two eyes are consecrated by Jamdagni and Vishwamittra. The front of ear and that of nose is enshrined by Bharadwaj and Ashwani Kumar respectively. To purify them, one has to know these different medicines which are named after their name. Accordingly they are called Jamdagni medicine, Bharadwaj medicine and so on. These medicines have different therapeutic range. In Puttreshthi, in addition to other articles, the fuel (woodenslices) of aak, shami, Jatamansi, Trikata, Chandari (AnubhutaSamubhukta) Anikrata are required. The altar hasin in Yajnashala be shaped as virginal canal of womanand that too of the same size which the virginal canal of the woman

desiring son, has held. The smoke and odor created by such a sacrifice can cure and make up all diseases and deficiencies of my barren daughters. This is a miracle of Ayurveda which can't be mastered in a single span of human life.

Diagnose of the Wives of Dashratha

I, (Shrangi Rishi) had also availed the occasion of the examining perfectly all the three wives of Dashratha. On the basis of Ayurvedic Knowledge, I had to see the shape of their virgina-canals without which, I could have never set up the desired Yajnashala. Though a disgraceful act, yet Maharashi Vashistha insisted upon showing their vital organs to me, in spite of the reluctance of Arundhati. In this way, I could set up three altars of three different shapes.

Diagnose in one thousand pages

I recordedmy experience of the so called puttreshthi in many articles. These commentaries, compiled in a book, concentrate on various types of diagnose, each covering one thousand pages, are missing. I doubt whether Mahanandji (An unborn soul wandering in space since thousands year and casually interpreting the Bramchachari with its expositions and prophesies) shall be able to find out this volume which made to realize the vastness of the subject, after I wrote it.

পবিশিষ্ঠ (খ)

ঋষ্যশৃংগক সাম্বব মানিনী

(ওতিহাসক ঋএনামে চম্পানগব)

প্ববাণ ঋা মহাকাব্যক ঋনাবা উত্তবকানীন সংস্কৃতি, সাহিত্য, বুদ্ধ ঋা বুদ্ধোত্তবকানীন সংস্কৃতি, পানি সাহিত্য, মানিনী (চম্পাপ্ববী) ক পূর্ণ ঐতিহাসিক বিববণ প্রস্তুত কবৈ নেন বৈসী মহত্ত্বপূর্ণ ঋছি. জকব পূবক জৈন ঋা ব্রাহ্মণ সাহিত্য সেহো পর্যাপ্ত ঋছি. ভগবান বুদ্ধক ঋাবির্ভাবিসঁ পহিনে ঋা বাদ মানিনী (চম্পাপ্ববী) ক ওতিহাস ঋা ভূগোনক সন্দর্ভসঁ মহত্ত্বপূর্ণ ঋধ্যায ষোড়শ মহাজনপদক

ঙঁকের্ষ ঋা রিপর্যযক গতিহাস, ভৌগোনিক স্থিতি ঋা দোসব রিরবণক নেন জৈন গ্রংথ ঋা মহাভাবতক কর্ণ পর্বক ঋন্বপূবিত ঋন্যান্য পানিগ্রংথ প্রহ্মখ স্রাত ঋছি. ঋাঙঁ, ঐ স্রাতক ঋাধাবপব ঋৃষিবাজক সাম্বব মানিনীক গৌবরশানী গতিহাসক ঋধ্যযন কএন জাএ.

মানিনীক সমৃদ্ধি ঋৃষ্যশৃংগক মানিনী এৰাক সংগ নখাহ দিঋএ নাগৈত ঋছি. জে মানিনী ৰহ্ত কান ধবি ঋকানক চপেটমে ছন, ও ঋৃষিবাজক ঋারএসঁ হবিত–পন্নরিত–প্বষ্পিত ঋা ঋকৃত ধন–ধান্য সঁ পবিপূর্ণ ভ' গেন.

সংস্কৃত কথাকাব ঋা মহাকরি দংডী রিবচিত দশকুমাব চবিতম (মদন মোহন তর্কানংকাব সংস্কবণ, পৃষ্ঠ 59) ক হ্মতারিক চংপামে গংগাক কাত মহর্ষি মবীচি বহৈত ছন. ঙা জ্ঞাতর্য্য ঋছি জে মহর্ষি মবীচি ঋৃষ্যশৃংগক পূর্বজ ছন. তাগসঁ জাগ গনাকা সঁ মহর্ষি মবীচি ঋপ্পন সাধনা–তপস্যাক নেন নীক ৰ্ম্মনক ওকবা হ্নকব রিদ্বান ঋা তপোনিষ্ঠ প্রপৌত্র ঋৃষ্যশৃংগ ঋপ্পন রিপ্বন জ্ঞান–রিজ্ঞানসঁ ৰড বাস তপোজ্জ্বন ক' দেনক. ঋংগক ঋনারা ঋানর সভক বাজনৈতিক ধ্বি মানিনী ছন. ঙা নির্রিরাদ ঋছি জে বামাযণ কানমে ঋৃষ্যশৃংগক মহিমাসঁ ঙা নগব সমৃদ্ধ ভেন ছন. মহাভাবত কানমে ঋত্তনিত দানরীব ঋা শক্তি প্বজ কর্ণক কাবণ ঙা ৰৈসী প্রসিদ্ধ ভেন.

বাজা বোমপাদক প্রপৌত্র পৃথুনাক্ষক প্বত্র 'চম্প' মানিনীক নাম চংপা বাখনক. তহিযা সঁ ঙা চম্পাপ্বরী ৰনি গেন. চম্প ৰড শক্তিশানী বাজা ছন. মৎস্য

प्वाण 48/97 क ऋतारिक:-

'पृथ्नाक्ष स्वतश्चापी चम्प नामा रभूर रै.

चम्पस्यत्त प्वी चम्पा तीर्थ या मानिनी भरत.

थ्वग श्लाकसँ स्पष्ठ थ्छि जे चम्पा पहिने मानिनी छन. संगे-संग ओ चर्चित तीर्थ सेहो छन. बाजा चम्पाक रॉबहम पीढ़ ीमे थ्धिवथ भेन जे कर्णके ँ गंगामे प्रराहसँ निकानि क' पोष्यप्वत्र रॅनौनक.

संभरत: थ्धिवथक कान थ्रंग ऋरूक थ्धीन हनकव कवद बाज्य छन. गंगाक उंत्तव 'ऋवसेना' थ्छि, जतए कोशी गंगासँ संगम कबैत थ्छि. ओ प्राचीनकानमे 'ऋरुशिना' छन, जे ऋरु सर्रहक बाज्य हेरॉक प्रमाण थ्छि. प्वर्णिया गजेटियब पृष्ठ 737 क ऋतारिक ऋरुशिनासँ ऋरु बाजाक बाज्यक पहाड़ ी भागके ँ र्भ्रमरॉक चाही. एथ्नका ऋवसेनासँ दखिन गंगा कातपव रॅष्टैश्लेब पर्वत श्रृंखना थ्छि, जाणपव महादेरक रॅड बास प्वबना मंदिव थ्छि. योद्धा कर्ण के ँ ओकव मित्र द्र्योधन थ्ा दोसव कौवर प्रम्रथक थ्ाग्रहपव थ्रंग बाज्याभिषेक कबाएन गेन छन.

'प्रीत्या ददौ स कर्णाय मानिनी नगबी मय'

महाभावत (शांतिपर्व 5/6)

पद्मप्वाण (स्वर्ग खंड, 38/72) क मोतारिक भावतक चर्चित सनातन तीर्थमे चम्पाप्वीक नाम श्रद्धापूर्वक नेन जाणत थ्छि.

ततश्चम्पा समासाद्य भगीवथ्यांम्रतोद्भ:

दंडापर्ण समासाद्य गों सहस्त्र फनं नभेत.

प्वाणकाव भागीवथीक कात पव थ्वग चम्पाप्वीमे

'दंडापर्ण' नामक एकटा तीर्थक उल्लेख केने अछि, जेकर दर्शनसँ सहस्त्र गोदानक पुण्य भेटैत अछि.
'जिनप्रभसूरि' अप्पन ग्रंथ 'विविध तीर्थ कल्प'मे लिखने अछि जे कौशिक ऋषिक आर्य शिष्य 'अंगर्षि' आ 'रूद्रक' चम्पामे विधिसँ एकटा पैघ यज्ञ केने छल. (अस्यां कौशिकार्य शिष्यांगर्षि रूद्रकाम्याख्यान संविधानकं स्वजात प्रियंगवादि संविधान कानि च जज्ञिरे). ओ आगू लिखने अछि जे मालिनी (चम्पा) मे नीक लोग वाँसित अछि. ओ मणि-रत्ना सँ अलंकृत अछि, जे हुनकर समृद्धिक सूचक अछि.
'उत्तमतम नवनारी रत्नामणि घोवणिप्रस वस्वरतः
नगवी विविधादत्तवस्तु् शालिनी मालिनी जयति.'
विविध कल्प तीर्थ, पृष्ठ 69

चम्पा तहिया भारतक छहटा महानगवमे एकटा छल. ई महानगव छल साकेत, बाजगृह, श्रावस्ती, चम्पा, कौशाम्बी आ वाराणसी. दीर्घनिकाय II -146 क मोताविक मल्लक शालवनमे जखन भगववान बुद्ध पविनिर्वाण प्राप्त क' वहल छल तखन हुनकव शिष्य धर्म भण्डागाविक 'आनंद' हुनकासँ कोनो महानगवमे पविनिर्वाण कवैक लेल प्रार्थना कवैत कान चम्पाक सेहो उल्लेख महानगवक रूपमे केने छल.
चम्पा विश्वक प्रवना नगव सभमे एक छल. ई उत्तववैदिक कालमे बसाएल नगव अछि. ई पाटलीपुत्रासँ प्रवना अछि. वामायण आ महाभावत

कानमे पाटलीपुत्रक कोनो उल्लेख नै अछि, मुदा मालिनी (चम्पा) ओहि युगमे सेहो चर्चित छल. बौद्ध साहित्यमे पाटलीपुत्रक उल्लेख अछि. ताहिसँ चम्पा पाटलीपुत्रसँ बेसी पुरान नगर अछि.
भारतक ई प्रमुख व्यावसायिक केंद्र सेहो छल. एतौका व्यापारी सुदूर 'इंडोचीन' मे जा क' 'चम्पा' नामक नगर बसौने छल. ओहि काल समुद्रसँ व्यापार करएबला व्यापारीक दल एहि चम्पा नगरमे रहैत छल. जिनकर नौबेड़ा दक्षिण गंगाक लहरपर चलैत रहैत छल आ चम्पाक गंगामे लंगर द' क' ठाढ़ रहैत छल. एहि तरहे कतेक कथा–कहानी आ इतिवृत्ति सँ भरल ई चम्पापुरी अछि जकर प्राचीर गढ़ मे गंगाक लहरक भुजा दक्षिण आवेष्ठित रहैत छल. चम्पाक व्यापारी सिन्धु सौवीर देशक अनवरत यात्रा करैत छल. (दृष्टव्य बिहार की नदी, पृष्ठ 91–93)
चम्पा सनातन हिन्दू सबहक अलावा बौद्ध आ जैन सबहक सेहो महिमामंडित तीर्थ अछि. एकर सर्वाधिक चर्चा बौद्ध आ जैन साहित्यमे भेल अछि. चम्पाक बानी 'गग्गरा' एहि नगरक दक्षिण पश्चिम भागमे एकटा रमणीय पोखैर खुनौने छल. अश्विघोषक मोताबिक एहि पोखैरक कातमे पाँच तरहक चम्पाक फूल सँ युक्त उपवन छल. दीर्घनिकाय (शोणदंड सुत्त I/4) क मोताबिक भगवान बुद्ध अप्पन पाँच सौ भिक्षुक संग एहि उपवनमे रहल छल. चम्पामे भगवान बुद्धक दिनचर्याकि विवरण विनय पिटक (1/7 312–

315) সঁ ভেটৈত অছি. গন্ধবা পুষ্কবণী পবিব্রাজক, মুনি আ সংন্যাসীক বিশ্রাম স্থনক ৰূপমে প্রসিদ্ধি প্রাপ্ত ক' নেনে ছন. এ দার্শনিক পবিসংবাদক ধ্বনিসঁ অনরবত গুঁজৈত বহৈত ছন. চম্পামে বুদ্ধক যএহ স্থান নিরাস নেন বৈঁসী উপযুক্ত ছন.

চম্পামে অপ্পন প্ররাসক ক্রমমে চম্পা বাজ্যক অস্সপুব নগবমে বুদ্ধ ভিক্ষুক প্রতি 'মহা' আ চুল্লঅস্সপুব স্বত্তাঁতক প্ররচন কেনে ছন. চম্পাক নোক স্বাদিষ্ঠ আ শুদ্ধ ভোজন কবৈত ছন. জাতক VI –256 ক মোতাবিক বিমানযক ঋষি পাকন স্বাদিষ্ঠ ভোজনক বসাস্বাদন কবৈনে চম্পা আবৈঁত ছন.

দীর্ঘনিকাযক শোণদংড স্বত্তক মোতাবিক চম্পাপুবীমে পাঁচ সৌ বহুশ্রুত ব্রাহ্মণ নিরাস কবৈত ছন. ওগ ব্রাহ্মণক প্রমুখ 'শোণদংড' ছন, জে দোসব ব্রাহ্মণক সংগ গন্ধবা পুষ্কবণীক কাতপব বুদ্ধসঁ ভেঁট কেনে ছন. বুদ্ধক প্রভাপূর্ণ আকৃতি দেখি ক' ও অভিভূত ভ' গেন. বুদ্ধসঁ গপক কান হুনকব রচনক খংডন শোণদংড নৈ কেনক. ব্রাহ্মণক পবিষদ্ জে শোণদংডক সংগ গেন ছন, ও মূক ছন. বুদ্ধ হুনকা শীন প্রজ্ঞা আদি রিষযমে বুঝৌনক. শোণদংড বুদ্ধক উপাসক বনি গেন আ দোসব দিন হুনকা খাগ নেন নোত দেনক. মুদা ও ব্রাহ্মণ পবিষদক ত্যাগ নৈ কেনক. যএহ কাবণ ছন জে বুদ্ধক প্রতি আস্থারান হোএতো চম্পাক ও দবৈঁগ নোক ভগরান বুদ্ধকেঁ কখনো ন্মিকি ক' গোব নৈ নাগনক. শোণদংড

মগধ সম্রাঽ রিম্বিসাবক স্থাপিত চম্পাক খধিপতি ছন. ও হাথ উঁঠাক', বথ পব চঠনাপব চার্ক উঁঠাক' রাঁ র্হ্রুসঁ ভেঁঽ কান খপ্পন হ্মবেঠা উঁঠাক' সংকেত সঁ (হ্মদা, খপ্পন মাথকেঁ উঁঠা ক') র্হ্রু কেঁ গোব নাগৈত ছন.
সম্রাঽ খশোকক মাঁ ব্রাহমণ কন্যা ছনি, জে চম্পাক ছনি. ও সংভরতঃ খগ 'শোণদংড' ক রংশজ ছনি. খাব.এন. মিত্রাক নেপালীজ র্হ্রিষ্ঠ নিঽরেচব, পৃষ্ঠ ৪ ক 'খশোকরদান' ক মোতারিক চম্পাপ্ববীক এক ব্রাহমণ সহ্মদ্রাংগী নামক খপ্পন প্বত্রী বাজা রিম্বিসাবকেঁ উঁপহাবস্বৰূপ দেনে ছন. পহিনে রৌহ্রু ভিক্ষ্ নেন রিনা পদত্রাণক চনৈক নিখম ছন. ও 'পনহী' ধাবণ নৈ ক' সকৈত ছন. হ্মদা রিনয পিঽক 1/179 ক খনুসাব খপ্পন চম্পা প্ররাসমে র্হ্রু খপ্পন ভিক্ষ্কেঁ চপ্পন খা খডামক প্রযোগ কববাঁক খাজ্ঞা দেনে ছন.
চম্পাক নিরাসী ধন–ধান্য সম্পন্ন ছন. এত্তক্কা কতেক শ্রেষ্ঠি তঁ কবোড়পতি ছন. মহারঁগা (5/1) সঁ জানকাবী ভেঽৈত খছি জে চম্পাপ্ববীমে 'শোণকোঽিরিন্শ' নামক একঽা শ্রেষ্ঠি বহৈত ছন. হ্নকা নগ রীস কবোড় স্বর্ণ হ্মদ্রা ছন. সংগে খগ শ্রেষ্ঠিক নিজী কোষাগাবমে খস্সী রৈনগাড়ী হিবণ্যহ্মদ্রা ছন খা হ্নকব দ্বাবপব উঁনচাস মত্ত হাথী ছন.
এত' জৈন ধর্মারিনম্বী 'কামপান' নামক শ্রেষ্ঠি ছন জে খঠাবহ কবোড় স্বর্ণহ্মদ্রা খা দস কবোড় গাযক স্বামী ছন. হ্নমাব নংদী নামক একঽা রঁড ধনী স্বর্ণকাব চম্পাপ্ববীমে মহারীব স্বামীক গোশীর্ষ

चन्दनक प्रतिमा वॅनवॅाक' ओकवा स्वर्णाभूषण सँ अलंकृत क' स्थापित केने छल. जैन चम्पक श्रेष्ठि कथाक अनुसाव चम्पा वॅड समृद्धशाली छल. एत' गन्धी, मसाला आ मिश्रीक विक्रेता, जौहवी, चमाव, मालाकाव, कमाव, सोनाव आ वॅुनकवक संख्या वॅड छल. चम्पापुवी कल्प पृष्ठ 66 क मोताविक धन, ऐश्वर्य, आंतविक आनंद आ सुख सभसँ पविपूर्ण चम्पा नगव यथार्थतः धवतीक स्वर्ग छल. प्राचीन जैनागम औपपातिक सूत्रक मोताविक महावीवक शिष्य सुधर्माक कालमे 'पूर्णभद्द' नामक एकटा देवालय (चैत्य) चम्पाक गंगा कातपव छल, ओ वॅड महिमामंडित छल.

जैनक वॅावहम तीर्थंकव 'वासुपूज्य' क जन्मभूमि चम्पा छल. एत' ओ प्रव्रज्या, कैवल्य, ज्ञान आ निर्वाण प्राप्त केने छल. 'विविध कल्प तीर्थ' क 'चम्पापुवी कल्प' क मोताविक वासुपूज्यक पुत्रक नाम 'मधव' छल, जे ओग काल चम्पाक अधिपति छल. ओग ग्रंथक मोताविक तीर्थंकव वासुपूज्य अश्विनी नक्षत्रसँ युक्त फाल्गुन शुक्ल पंचमीक दिन अपवाह्न कालमे छह सौ मुनिक संग पविनिर्वाण प्राप्त केने छल. गुणभद्राचार्य क 'उत्तव पुवाण' सँ ज्ञात होगत अछि जे हुनकव पविनिर्वाण 'मंदाव' पर्वत पव भेल छल.

मगधक वाजकुमाव चम्पाक उपवाजा होगत छल. बिम्बिसाव सेहो अप्पन पिताक जीवन कालमे चम्पाक उपवाजा छल. बिम्बिसावक मवलाक वॅाद हुनकव पुत्र अजातशत्रु किछु दिनक लेल वाजगृहकेँ छोड़ि चम्पा आबि गेल छल.

महाभारतसँ न' क' बुद्धकाल धरि चम्पा चम्पक गाछसँ भरल छल.
मज्झिमम निकाय (1/128) क मोताबिक बुद्धक काल चम्पामे कतेक बास महाशाला या स्नातक संस्था छल, जे मगधराज प्रसेनजित आ बिम्बिसारक देल अन्नदान आ भूमिदानक माध्यमसँ संचालित छल. महागोविंद सुत्तांतक मोताबिक महागोविंद अंग जनपदक सात स्कूलक स्थापना अपना कार्यकालमे केने छल, जाहिमे चम्पा सेहो छल. ई सभ धर्मशास्त्रीय स्कूल छल, जाहिमे केवल ब्राह्मण तरुण (माणवका) केँ प्रवेश भेटै छल. अंग स्कूलमे तीन सौ छात्र विद्याध्ययन करैत छल. कुलपतिक बड़ प्रसिद्धिक कारण कतेक बास ठामसँ छात्र एत' पढ़ै लेल आबैत छल.
'चंपेय जातक' क मोताबिक अंग आ मगध दुनू पड़ोसी राज्यमे युद्धक वर्णन अछि. एक बेर हारलाक बाद अंगक सैनिककेँ पाछाँ करला पर मगध नरेश अंग आ मगधक बीचमे बहएवाली गंगामे कूदि क' जान बचौने छल. बादमे ई अंग नरेशक घनिष्ठ मित्र भ' गेल. ई सभ बरख चम्पा धारक कातपर एकटा समारोह करैत छल आ अर्घ्य दैत छल.
संयुक्त निकाय (1/195-96) क मोताबिक चम्पाक बौद्धभिक्षुक आचरण विनयक नियमक प्रतिकूल भ' गेल छल. अप्पन चम्पा प्रवासमे बुद्ध बंगीस नामक एकटा बौद्ध भिक्षुक अप्पन प्रशंसामे एकटा गाथा कहैत सुनने छल. बुद्धकेँ बोधि प्राप्त करबाक एक दशकक भीतर चम्पाक संग महत्वपूर्ण

নগবমে রৌদ্ধক প্রদ্ধখ রাস স্থাপিত ভ' চ্কন ছন. ওগমে সঁ সভ ঠাম পব র্বুদ্ধ কে ँ কোনো নে কোনো প্রসিদ্দ শিষ্যক নেতৃত্ব খা পথ–প্রদর্শনমে ভিক্ষ্কক একটা সংপ্রদায রিকসিত ভেন.

জৈন নেখক 'জিনপ্রভস্ববি' খপ্পন গ্রংথ 'রিরিধ তীর্থ কপ্প' মে কত্তী–কত্তী চম্পাক নাম 'নোমপাদ্পূ' খা 'কর্ণপূ' সেহো নিখনে ছন. খগ গ্রংথক পৃষ্ঠ সংখ্যা 65 খা 69 ক মোতারিক জৈন ঋষি 'প্রভর' খা 'স্বযংভর' খপ্পন চম্পা প্ররাসমে কেনে ছন.

একটা কিংরদংতীক মোতারিক চম্পামে স্বভদ্রা নামক একটা সতী ছনি জে চানৈন সঁ গনাবসঁ পানি ভবৈ ছনী. চম্পামে পাথবসঁ রঁনন চাবিটা গোপ্বব দ্বাব ছন, জে রঁড দিন সঁ রঁন্ন পড়ন ছন. ওা স্ত্রী চানৈন সঁ পানি ভবি তীন দ্বাবকে ँ ভিজা ক' খোনি দৈ মে সফন ভেন বহথি. কহন জাগত খছি জে চৌদহম শতাব্দী ধবি ওা দ্বাব রঁন্ন ছন. একবা নখনৌতীক স্বনতান শমস্বদ্দীন রিএম সংরত 1360 মে উঁখাড়ি ক' শংকবপ্পব কিনামে নগৌনে খছি. জিনপ্রভসূবী খগ বৃতাংত কে ँ খপ্পন গ্রংথ 'রিরিধ তীর্থ কপ্প' ক পৃষ্ঠ সংখ্যা 65 মে নিখনে খছি. খগ গ্রন্থমে দানরীব কর্ণক কতেক বাস ঠাম কে ँ সেহো চিন্হিত কএন গেন খছি.

পাংচম সদী মে চীনী যাত্রী ফাহিযান গংগাক কাত–কাত পাটনীপ্বত্র সঁ খঠাবহ যোজন পৈদন চনি চম্পা নগবী খাএন ছন. সাতম শতাব্দীমে হ্বেনসাংগ এত' খাএন ছন. হ্নকব মোতারিক চম্পা বাজ্যক পবিধি 4000 নী সঁ রেঁসী ছন. এক নী ছহ মীনক

ঽবাঽব হোগত খছি. খগ নগৰীমে দূ সএ সঁ ঽেসী হীনযান ঽৌদ্ধ ভিক্ষু বহৈত ছল. ও কিছু নষ্ঠপ্রায ঽৌদ্ধ রিহাব সেহো দেখনে ছল. ওগ কান চম্পামে সনাতন হিন্দূক কতেক দেব মংদিব ছল. এত্তক্কা খেত সমতল ছল. জমীন উঁর্বৰা ছল. এত্তক্কা লোক সোম্ম-সাম্ম হোগত ছল.
ও চম্পা কেঁ 'চেন পো' কহলে খছি. হ্বেনসাংগক কানমে চম্পা বাজ্যক পবিধি সিমটি ক' সত্তব মীল ঽঁচি গেল ছল জগমে কেবল নগবক পবিধি সাত মীল রিস্তৃত ছল. চম্পাপ্ৰবীক দেবাব পজেঽাক ঽঁনল ছল. ওা কত্তী-কত্তী তঁ কতেক বাস ফীট উঁচ ছল. কেনিংঘম হ্বেনসাংগক বৃতাংতক খাধাব পব খংগক বাজনৈতিক সীমা নখীতবায (নখীসবায) সঁ বাজমহল ধবি খা পাবসনাথ পহাড় ী সঁ ভাগীবথীক কাত কলনা ধবি বেখাংকিত কেনে খছি.
চম্পাপ্ৰবী খপ্পন বাজ্যমে কতেক বাস বাজনৈতিক উঁতাব-চঢাব দেখনে ছল. ঽৌদ্ধ যুগ মে রসে দেশীক শাসক শিতানিক পবন্তপ চম্পাক বাজা দধিবাহনপব খাক্রমণ কেনে ছল, ঽদা খগ যুদ্ধক পবিণামক জানকবী নৈ খছি. এতেক তয খছি জে একব ঽাদ খংগ শক্তিশালী হোগত গেল. ও মগধ শাসক ভট্টিয কেঁ যুদ্ধমে হবেনে ছল. ঽদা খগ ভট্টিযক প্ৰত্ৰ রিম্বিসাব (603 -551) খপ্পন পিতাক হাবিক ঽঁদলা খংগপব রিজয প্রাপ্ত ক' চুকা দেনক. খগ যুদ্ধমে খংগ নবেশ ব্রহ্মদত্তক রধ ক' দেল গেল খা খংগপব মগধক শাসন ভ' গেল. রিম্বিসাবক মবলাক ঽাদ খজাতশত্রু (551-519 ওা.পূ.) চম্পা কেঁ খপ্পন বাজধানী ঽঁনেনে

ছল. য়দা হ্নকব প্বত্র উঁদযন (519–503 ঙা.পূ.) চম্পাসঁ খপ্পন বাজধানী পাটৈলীপ্বত্র ন' খানলক. পবতংত্র ভেলাক বাঁদ চম্পাক নোকমে খাস্ত–খাস্ত নৈতিকতাক দ্রাস হ্খএ নাগন খা খপ্পন স্রবার্ব চবিত্রক কাবণ নোক উদ্দংড হ্খএ নাগন.
দশক্কমাব চবিতম খধ্যায 1, পৃষ্ঠা 3–6 খা খধ্যায 2, পৃষ্ঠা 7,11 খা 12 মে সেহো উল্লেখ খছি জে চম্পা মে দ্ঠ্ক বাঁহ্ন্য ছল.
খংগ শিশ্বনাগ, নন্দ, মৌর্য, শ্বংগ খা গ্বপ্ত যগ সেহো দেখনক. সংগে ক্ষষাণক খাধিপত্য খা বাজভবক সেহো শাসন দেখনক. গ্বপ্ত সম্রাট মাধর গ্বপ্তক প্বত্র খাদিত্য সেনক মংদব পর্বতপব ভেটৈন শিনানেখক খন্বসাব খগ ক্ষেত্রক শাসকক কীর্তিক বঁড বাস সাক্ষ্য খাগূ খাবৈত খছি. খাদিত্য সেন খা হ্নকব ধর্মপত্নী কোণদেরী মংদাব পর্বতপব বিষ্ণুক নবসিংহ মূর্তিক স্থাপনা কেনে ছন খা ওত' পাপহবণী নামক প্বষ্কবণী কেঁ খোদবৈনে ছন. কহন জাগত খছি জে যএহ শাসক খশ্বমেঘ খা কতেক বাস যজ্ঞ সেহো কেনে ছন.
খগ তবহেঁ কর্ণ স্বর্ণক শাসক শশাংক খা ওকব বাঁদ হর্ষবর্ধনক খধীন খংগ খাবি গেন ছন. চীনী যাত্রী হ্নেনসাংগ খগ সম্রাটক কানমে ভাবত খাএন ছন. হ্নকব খাগমন কান চম্পাপব খাতৌবীক শাসন ছন. ঙা শক্তিশানী ছন (দৃষ্টব্য ভাগনপ্বব গজেটিযব 1962, পৃষ্ঠা 41). পানরংশক খভ্যুদয খা চম্পাপব পানরংশক খধিকাবক বাঁদ একব বিকাস ভেন. বিশ্বচর্চিত বিক্রমশিনা বিশ্ববিদ্যানযক স্থাপনা (বর্তমান খন্তীযক) ভেন.

তকব ৰাঁদ সঁ ৰংশক শাসনমে চম্পা আএন. ওা শাসন নক্ষ্মণসেন ধবি শক্তিশানী বহন. হ্মদা অংতিম সময হ্নকব শাসন অবসাদ সঁ ভবন বহন. হ্মসনমানক ভীষণ আক্রমণ হ্অএ নাগন. ৰখিতযাব খিনজী ৰংগানপব বিজয প্রাপ্ত কেনে ছন. ও বিহাবপব সেহো কব্জ া কবৈ নেন ৰড বাস সংখ্যামে সৈনিকক সংগ চঢ় াও কেনক. এত্তক্কা সভ্যৈা বিশ্ববিখ্যানয কেঁ ও দ্দাঁতি আগিমে মোঁকি দেনক. মাস ভবি আগি জবৈত বহন জাগমে ভাবতীয জ্যাঁ-বিজ্ঞান, ধর্ম, সাহিত্-সংস্কৃতি জবৈত বহন.

অও তবহে চম্পা হ্মসনমান আ ফিবংগীক কানমে অপ্পন সভ্যতা-সাংস্কৃতিক চম্পক বন কেঁ নষ্ঠ হোগত দেখনে অছি.

চম্পা বাজ্যক নদীমে চাননক বিশিষ্ঠ ঠাম অছি. একব মূন স্রাত হ্মংগেব প্রমংডনক পঠাবী ভাগ অছি. অও মূনক স্রাত নগ দখিন পঠাব পব 'ৰাঁবো' গাম আ বর্তমান ৰাঁকা জিনাক কটৈবিযা থানাক 'ৰাঁক' গাম কিউঁন-আসনসোন বেনমাঙ্গক আবপাব ৰসন অছি. অও দ্নূ গাম সিহ্মনতন্না আ 'গঢ়জোবা' বেনবে স্টেশনক এক্ক সামান দূবী অছি. এতএসঁ চাননক হ্মখ্যধাবা ৰহৈত হ্মংগেব প্রমংডনক 'কবপা' আ 'ৰাঁবো' গাম হোগত ভাগনপ্পব জিনামে আবৈত অছি আ 'ৰাঁক' গাম সঁ হোগত পূবঁ দিশ ৰঢৈত অছি. অও পূবঁ প্রবাহমে দেবঘবক উত্তব ভাগক কিছু ছোট্ পর্বতীয স্ত্রাত চাননমে খসি ওকব জনভংডাব কেঁ ৰঢ় াবৈত অছি. ওা জ্ঞাতব্য অছি জে দক্খিন পহাডীক ৰসী

জনভঁডাব চানন গ্রহণ করৈত খছি. ভাগনপ্পব গজেষ্টিযব 1962 (পৃষ্ঠ 11)ক মোতারিক, চাননক উঁদ্গম দেরঘবক পহাডী সঁ ভেন খছি, ওা সহ নৈ খছি. খগমে কতেক বাস ছোষ্ট–ছোষ্ট পর্রতীয জনধাব খারি ক’ সেহো মিনৈত খছি. ওা নগভগ পাঁচ সৌ রস্কামীনমে পসবন খছি খা ঐ ধাবমে ভবি রঁবখ পানিক পর্যাপ্তি মাত্রা বহৈত খছি. ওা সংথান পবগনাক পর্রতীয ভাগ সঁ পর্যাপ্তি পানি গ্রহণ করৈত খছি, ফদা চম্পা বাজ্যক দক্খিন রর্তমান রাঁকা জিনাক সমতন ভূমিমে রঁহিক’ ওা রঁড পৈঘ ভূভাগ কেঁ খপ্পন রিপ্পন জনবাশি সঁ পষ্টরৈঁত খছি. খপ্পন গংগা সংগম স্থন সঁ নগভগ 50 কিনোমীষ্টব দক্খিন একব একষ্টা শাখা পূর্রঁ দিস রঁঠৈত খছি খা দক্খিন দিস ফড়ঁ ক’ ঘোঘা নগ ওা গংগামে মিন জাগত খছি.

চানন (চন্দন) ক উঁপব রঁনা জনগ্রহণ ক্ষেত্র পহাড় খা রন সঁ খাছাদিত খছি. ওা ধাব তীন সৌ রস্কামীন জংগন পহাড়পব রিচরৈত খা খনগ–খনগ জনস্রাত কেঁ খপ্পন উঁদবমে নৈত নগভগ দূ সৌ রস্কামীন মে কতেক বাস স্রাত, নহব খা উঁপনহবসঁ সমতন ভূমি কেঁ পষ্টরৈঁত গংগাসঁ সংগম করৈত খছি. চাননক ধাব নগভগ 15 খনগ–খনগ স্রাতমে রঁহৈত খছি, ফদা ওকব তীন ষ্টা স্রাত গংগাসঁ সংগম করৈত খছি. জগদীশপ্পব নগ চানন ছিন্ন–ভিন্ন ভ’ জাগত খছি. একব দূ ষ্টা পাতব ধাব ‘নাঠা’ খা ‘খন্হবী’ ক নাম সঁ পশ্চিম উঁত্তব কোণ দিস রঁঠৈত খছি. ওা ‘রঁড্খা’ ক রঁবসাতী পানিকেঁ সমেষ্টৈত ‘জফনিযা’ ক নামসঁ

गंगामे प्रवेश करैत अछि.
प्राचीन अंगक अग कटी प्रदेशक स्वबक्षा नेन प्रकृति गंगाक दक्षिन कात धवि रूंगेवसँ न' क' कहनगाँर, नगभग एक सौ किनोमीटव धवि तीन किमी सँ वेसी चाकव, चून-पाथवक वॅड पैघ पङ्गीक निर्माण क' देने अछि. अग अजेय पङ्गीपव प्राचीन अंगक बाजधानी चम्पाप्वबी हजाब वॅबख पहिने सँ वॅसन अछि. अग चून-पाथवक पङ्गीक काबण गंगाक कटाव सँ ओ नगव रूक्ष अछि.
अग तवहेँ प्राकृतिक जनस्रोतसँ चम्पा पविपूर्ण अछि. एकव माथपव अक्षय जनबाशि न' क' स्वयं गंगा अछि आ गंगाक ओ भाग जागमे कौशिकी सन सदानीवा धाव अप्पन दर्जन भवि छाड़न धावक संग गंगासँ संगम कवैत अछि आ पार्श्वमे मानिनी अछि जे महाकवि कानिदासक अगाध प्रेमक धाव अछि. महाकवि कानिदास शाकुंतनमक तेसव अंकमे ऐ धावक उँल्लेख केने छन, जकव प्वनिनपव अप्पन सखी संग शकुंतना विहाव कवै नेन गेन छन. विहावक नदी: ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक सर्वेक्षण पृष्ठ संख्या 91 क मोतारिक गंगा प्रवाह भागनप्वव नग्र पह्ँचैसँ पहिने चम्पा नगवक पश्चिम कात दिस जक्ष्निया धाव गंगासँ संगम कवैत अछि. ओ कोनो कानमे वॅड्आक संगम छन. वॉदमे वॅड्आ आ जक्ष्निया मिन क' एत' संगम कवए नागन. वॅड्आक प्ववना नाम वॅह्ना छन, जकव चर्चा महाभावत (भीष्म पर्व अध्याय 9 श्लोक 27) मे भेटैत अछि. भागनप्वव जिनामे चाँद सौदागाव आ ह्नकव प्वत्रवधू सती विह्नाक

পূজা হোএত অছি আ হুনকর গাথা গাএন জাএত অছি. ভ' সকৈত অছি জে বর্ষা ঋতুমে মনাওন জাএবঁনা বিহুনা পর্ব অগ বিহুনা নদীক গাথা অছি. জে কিছু হুঅএ, ওা পর্ব শিবপূজা, নাগপূজা আ একটা সতীক উঁচাদর্শক গাথা অছি.
ওা বঁড়ুআ ধাব জন্মওা জিনাক চকাওা সিদ্ধনতন্না মাত্মক কাত 'কর্ণগঢ়' আ 'চবঘবা' গামক কাতসঁ বঁহৈত অছি আ কতেক বাস পহাডী স্রাতকে ঁ ন' ক' ও চম্পা বাজ্যক দক্খিন-পশ্চিম ভাগমে হন্বমনাপর্বতক নগ 'স্বগযাথান' গাম নগ সমতন ভূমিপব উঁতবৈত অছি. (ওা ক্তাতব্য অছি জে ওা সভটা পর্বত ঋষ্যশৃঁগ পর্বতক পসবন শৃঁখনা অছি). অগ ঠাম ধাবমে পক্কা বাঁন্হ বঁনা ক' একটা ভাবী জনভঁডাবক নির্মাণ কএন গেন অছি, জতএসঁ ফ্ঁগেব আ ভাগনপ্বব জিনাক বঁড পৈঘ ভাগমে পটাবৈঁ নেন নহব নিকানন গেন অছি. নির্জন পহাডীক বীচ একটা পৈঘ ঝীন বঁনি গেনাসঁ অগ বাঁন্হক দৃশ্য বঁড নীক দেখাগএ. ওা স্ববম্য ঠামসঁ চনি ক' 'বঁড়ুআ' ধাব উঁত্তব দিস বঁহৈত অছি আ সাহেবঁগংজ, মোহনপ্বব, সিনৌটা আদি গাম নগসঁ হোএত তাবাপ্ববসঁ পূবঁ আবি জাএত অছি. এতএ ওা কতেক বাস ধাবমে বঁটি জাএত অছি আ ও ধাব কবহবিযা, দীনদযানপ্বব, বতনপ্বব, দৌনতপ্বব, বাঁথূ সন ঠামসঁ হোএত অন্হাব, কটহবা, ঙুঁচা গাঁবক তানমে হবা জাএত অছি. জহিযাসঁ বঁড়ুআ ধাবপব হন্বমনা বাঁন্হ বঁনাওন গেন অছি আ নহব নিকানন গেন অছি, তহিযাসঁ অগ ধাবক নিচনা ভাগমে পানিনক প্রবাহ কম

भ' गेल अछि आ पानिक मात्रा कम आबैत अछि. ई बड़्आ कोनो कालमे चम्पा नगरसँ सटि क' पश्चिमसँ बहि क' गंगामे प्रवेश करैत छल, जतए आब ई जम्हनिया धार बहैत अछि.
जम्हनिया धार चानन धारक एकटा उपधारा अछि जे बाजपुर आ खंजरपुरमे चाननक मुख्यधारासँ फराक होइत अछि. ई धारा मोहद्दीपुर, कनकैथी, बहादुरपुर आदि गामक लगसँ होइत नाथनगरसँ सटल पश्चिममे आबैत अछि आ उत्तर दिस मुड़ि क' गंगामे प्रवेश करैत अछि. जम्हनियाक उपरी हिस्साक नाम 'अन्हरी' अछि.
चम्पानगरक एकटा भाग नाथनगर अछि. कहल जाइत अछि जे प्राचीनकालमे 'नाथमल' नामक एकटा मैथिल ब्राह्मण संत एतए बसैत छल आ कालांतरमे हुनकर नामसँ अइ गामक नाम 'नाथनगर' पड़ि गेल (देखू भागलपुर गजेटियर पृष्ठ 623). आब ई नगर बनि चुकल अछि आ ई 2.51 मीलमे पसरल अछि. चम्पानगरमे जैन धर्मक दिगंबर संप्रदायक एकटा मंदिर आ धर्मशाला अछि. अइ मंदिरमे पाँचटा वेदी अछि, जाहिमे चारिटा तँ चारि कोनपर अछि आ एकटा वेदी मध्यमे अछि. अइपर जैन प्रतिमा राखल गेल अछि आ ओइपर तीर्थंकर वासुपूज्यक चरण चिह्न अंकित अछि. चरण चिह्नक आगू किछु पंक्ति अंकित अछि, जइसँ ज्ञात होइत अछि जे अइ ठाम वासुपूज्य जन्म ल' क' ध्यान आ ज्ञान प्राप्त केने छल. चम्पाक अइ पैघ जैन मंदिरमे वासुपूज्यक श्वेत प्रस्तर प्रतिमा अछि, जकर प्रतिष्ठा संवत 1932

ক মাঘ শ্বক্ল দশমী তিথি কে ঁ ভেল ঋছি. একব ঋখনারেঁ, রাস্বপূজ্যক দোসব প্রস্তুব প্রতিমা, পার্শ্বনাথ স্বামীক দূটা প্রস্তুব প্রতিমা ঋা স্বামী ঋষভদেরক একটা প্রতিমা সেহো স্থাপিত ঋছি. রেদীক মধ্য ধর্মচক্রক চিহ্ন সেহো ঋংকিত ঋছি, জকব দুনূ কাত দূটা হাথীক প্রতিমা উৎকীর্ণ ঋছি। মধ্য রেদীক উপব চাঁদীক সিংহাসনপব সাঢ়ে চাবি ফীট উঁচ পীতরর্ণক পাষাণক প্রতিমা সেহো দর্শনীয ঋছি. ঋগ মংদিবক ঋাগূ একটা 35 ফীট উঁচ ঋা দোসব 55 ফীট উঁচ দূটা পাষাণ খুম্বা সেহো ঠাঢ় ঋছি, জকব রঁগেরাঁনী ফগনকানীন ঋছি.

ঋগ পৈঘ জৈন মংদিবসঁ নগভগ এক কিমী দূব চম্পা নহব নগ শ্বেতাম্বব সম্প্রদাযক একটা জৈন মংদিব ঋা ধর্মশানা ঋছি. ঋগ মংদিবমে ঋাদিনাথ ঋাদি কতেক বাস জৈন ফনিক প্রতিমা স্থাপিত ঋছি.

ঋগ মংদিবক রঁড বাস প্রতিষ্ঠিত প্রতিমা এহন ঋছি জে পার্শ্বমে রঁহএরঁনা চম্পা নহব সঁ ভেটন ঋছি. ওা রিধর্মী সরঁহক কএন গেন ধর্মস্থন ঋা শিক্ষানযক রিধ্বংসক জীরংত সাক্ষ ঋছি.

দিগংরঁব জৈন সরঁহক পৈঘ মংদিবসঁ শ্বেতাম্বঁব জৈনক ওা মংদিব রেঁসী প্রবনা ঋছি. ঋগ ঋানেখমে জে ‘প্বণ্যভদ্দ’ নামক দেরানয ঋা চৈত্যক উল্লেখ ঋছি, ও সংভরতঃ ওা জৈন মংদিব ভ’ সকৈত ঋছি, কিএকি ঔপপাতিক সূত্রক মোতারিক, ‘প্বণ্যভদ্দ’ চৈত্য গংগা কাত স্থিত ছন.

রর্তমান চম্পা নানা (চম্পা নহব) সেহো ঐতিহাসিক ঘটনাক সাক্ষ্য বহন ঋছি. স্থানীয নোক ঋাপসমে

अंगिका भाषामे रचित अछि, 'चम्पा नाना छोटै-मोटै नहरो नै छै. एकरो कोनो आदमी नय बनैनो छय. ई रोमपाद के जमाय ऋष्यशृंग के दूतभूत के बनैनो छय. बहुत बड़ । अकान पड़नो छनय, तभियो ई नहरों के रूप में बननो छय जथि में बहुते नदी के पानी मिलै छै.' ऋष्यशृंग विश्विक पहिल वैज्ञानिक छल जे कतेक बार धार केँ परस्पर जोड़ि क' ओतए क्षेत्र विशेष केँ बाढ़ि सँ मुक्त आ अकालमुक्त क' देने छल.

नगभग बीस बरख पहिने नाथनगर स्थित अप्पन आवासपर स्वतंत्रता सेनानी पूर्णश्लोक बाबू बिहारी लाल अग लेखकके बतौने छल जे चम्पा नाना सामान्य नाना नहर नै अछि, मुदा चम्पा राज्यमे अकाल पड़लापर राजा रोमपाद नहरक रूपमे एकरा बनबौने छल जागमे चम्पा, बड़आ आ जम्हनियाक अक्षय जलस्रोत प्रवाहित होइत छल. ओ अप्पन ठेठ अंगिका भाषामे एकर संबंध मे कतेक बात कथा आ मिथकक सेहो उल्लेख केने छल.

जातक IV पृष्ठ 454 क मोताबिक, चम्पा धार पूबमे अंग आ पश्चिममे मगधक सीमा अछि. डा. विमल चरण लाहाक मोताबिक, ई एहन धार अछि जे चम्पानगर नाथनगरक पश्चिम मे अछि, जेकरा पहिने मालिनी कहल जाइ छल (दृष्टव्य : प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, पृष्ठ 360). पूर्णा अंगक सभ्यता धार एक-दोसर सँ कोनो नै कोनो तरहे जुड़ल अछि. एहन ठामपर

रॉढ़ि एरॉक संभारना नै बहैत अछि. सम्प्रति चम्पा तसब उद्याग मे आगू अछि.
ई छल ऋषिबाज ऋष्यशृंगक सम्बव मानिनी (चम्पा)क संक्षिप्त एतिहासिक आ सांस्कृतिक बृतान्त.

पबिशिष्ठ 'ग'
शंकबाचार्य आ सिंहेश्वब
(जगत प्रसिद्ध शंकब-मंडन मिश्र शास्त्रार्थ सिंहेश्वब मे नै)

सिंहेश्वब मंदिब न्यास किछु रॅबख पहिने एकटा हस्तपत्रक छपने छल जगमे ई उल्लेख छल जे आदि शंकबाचार्य आ मंडन मिश्रक शास्त्रार्थ सिंहेश्वब स्थानमे भेल छल. ई हस्तपत्रक जतेक रिरादस्पद अछि, अग रिषयक अध्ययन ओतेक बोचक.
पूर्णश्लोक मंडन मिश्र आ शंकबाचार्य अप्पन कोनो ग्रंथमे आपसमे भेंट कबैक, शास्त्रार्थ कबैक रॉ पबस्पब जीतरॅ-हाबरॅक संबंधमे एकोटा शब्द नै निखने अछि. शंकबाचार्यक रिजय रिषयक कतेक बास ग्रंथ अछि, जे हुनकब जीरनकानमे नै, ऋदा नगभग छह सौ रॅबख रॉद हुनकब धर्म-ध्वजधाबी शिष्य निखनक, हुनका महिमामंडित कबैमे अप्पन रिशेष योगदान द' क' गुरु-ऋण सँ ऋक्त हेरॉक उपक्रम केनक. अग ग्रंथमे माधराचार्य बचित 'शंकब दिग्विजय', सभसँ रॅसी प्रसिद्द अछि. अग ग्रंथक प्रामाणिकतापब तखने प्रश्नचिन्ह नागि जागत अछि जखन अगमे शंकबाचार्यक संग महाकरि रॉणभट्ट, मयूब, दंडी, अभिनरगुप्त, श्रीहर्ष

आदि केर शास्त्रार्थ वर्णित अछि, जे शंकरसँ पूर्ववर्ती वा परवर्ती छला. अष्टम शताब्दीक शंकराचार्य एगारहम शताब्दीमे जन्म लेल उदयनाचार्य आ श्रीहर्षकेँ शास्त्रार्थमे केना हरा सकैत अछि, ई आन ग्रंथक लेखकक छल-छद्म आ अनस्थान प्रतापक अलावा की भऽ सकैत अछि. शंकराचार्यसँ संबंधित दोसर विजय ग्रंथमे आनंदगिरी कृत 'शंकर विजय', वाजचूड़ामणि कृत 'शंकराभ्युदय', चिलविलासेन्द्र कृत 'शंकरविजय', सदानंद कृत 'शंकर जय', कांचीपीठक अध्यक्ष रहल सर्वज्ञ सदाशिव बोध कृत 'पुण्यश्लोक मंजरी', महादेवेंद्र सरस्वतीक शिष्य आमेबोध रचित 'पुण्यश्लोक मंजरी परिशिष्ठ', कांची मठाधीश परम शिवेंद्र सरस्वतीक शिष्य सदाशिव ब्रह्मेन्द्र कृत 'गुरुरत्नमाला' आ काशीलक्ष्मण शास्त्रीकृत 'गुरुवंश काव्य' वेसी चर्चित अछि. एकर अलावे, स्कंद्पुराणक नरमाशि, मार्कंडेय संहिता, शिव रहस्य पुराण, श्री विधलिव आ शक्ति-संगम तंत्रमे श्री शंकर चरित उपलब्ध अछि. ई सभटा वर्णन इतिहासकार आ शोधार्थी, अध्येता सबहक दृष्टिसँ अप्रमाणिक अछि. ऐ सभ रचनामे शंकरक चरित्रकेँ चमत्कारी वा लोकोत्तर वना केँ प्रस्तुत कएल गेल, जइसँ जनसाधारणमे हुनका प्रति श्रद्धा आ भक्ति बढ़ए.

मंडन मिश्र आ शंकराचार्य दुनू समकालीन छल. दुनूकेँ एक-दोसराक सिद्धांतक सभटा जानकारी छल. दुनू अद्वैत वेदान्तक पृष्ठक पोषक छल. जदा शंकरक अद्वैत वेदान्त संन्यासीक अछि जखन

कि मंडन मिश्रेक अद्वैत गृहस्थ आ कर्मयोगीक रहल अछि. ऐ तरहेँ दुनू एक-दोसराँ असहमत अछि. ई दुनू विद्वान अपन-अपन ग्रंथ मे एक-दोसराक मतक खंडन केने अछि. विद्वान विचारक एहेन बातक्रे श्रेणीर सेहो अइ विन्दुपर विस्तारसँ विचार केने अछि. ओ अप्पन शोध ग्रंथ 'द अद्वैत वेदांत ऑफ़ ब्रॅह्मसिद्धि' मे मंडन मिश्र रचन 'ब्रॅह्मसिद्धि' आ शंकराचार्यक रचन 'ब्रॅह्मसूत्र भाष्य' क पंक्ति सेहो उद्धृत केने अछि, जइसँ ई तथ्य सत्यापित होइत अछि. अइ दुनू विद्वानक विचारक तुलनात्मक विवेचनक लेल पंडित सहदेव झा रचित 'मंडन मिश्र आ शंकर अद्वैत वेदांत' आ आचार्य धीरज रचित 'विज्ञानमक्षरम' (भूमिका हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ') अवलोकनीय अछि. अलग-अलग साक्ष्यक आधार पर मंडन मिश्रक जे काल निर्धारण कएल गेल अछि, ओ निम्नांकित अछि-

1. पी.वी. काणे (धर्मशास्त्र का इतिहास) (690-710 ई.)

2. कुप्पूस्वामी शास्त्री (ब्रॅह्मसिद्धि भूमिका) (615-690 ई.)

3. एन. स्मिथसेन (विभ्रम विवेक टिप्पणी) (700 ई.)

4. वी.ए.रामास्वामी शास्त्री आ के.ए. शिवरामकृष्णन (भावना विवेक टिप्पणी) (650 ई. क बाद)

5. टी. वेंकटेश्वर (ब्रॅहमसिद्धि भूमिका)(700 ई.)

6. टी.आर. चिन्तामणि (स्वतंत्र लेख मे) (650-70 ई.)

7. पी. हेक्कर (विवर्त) (सातम शताब्दी)
8. एस. एन. दास गुप्ता (भारतीय दर्शन का इतिहास) (800 ई.)
9. के. कुन्ज्नीराजा (मंडन एंड धर्मकीर्ति) (8-9रम सदी)

मंडन मिश्रक जन्मभूमिक विषयमे माधवाचार्य अपन 'शंकर दिग्विजय' पोथी मे 'महिष्मति' आनन्दगिरी अपन पोथी 'शंकर विजय' मे 'विजल बिन्दु' (संभवतः उत्तर प्रदेशक बिजनौर), चिद विलास यति अपन पोथी 'शंकर विजय विलास' मे कश्मीर आ काशी लक्ष्मण शास्त्री अपन पोथी मे 'गुरुवंश काव्य'मे मगध मानल अछि. अइ संबंधमे हमर मान्यता अछि जे माधवाचार्यक 'शंकर दिग्विजय' भ्रामक आ अप्रमाणिक पोथी अछि. 'विजल बिन्दु' लेल बिजनौर जिलाक कोनो गाम अपन दावेदारी प्रस्तुत नै केने अछि. यएह स्थिति कश्मीरक अछि. ओतए कोनो गाम आ नगर मंडन मिश्रक जन्मभूमि होएबाक दावा नै करैत अछि.

माधवाचार्यकक आधारपर गोवर्धन पीठक शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ मंडन मिश्र केँ नर्मदा कातक वासी (उज्जैन, मध्य प्रदेश) बतौने अछि आ ओतुक्का मंडला नगरकेँ महिष्मती सिद्ध केने छल. मध्य प्रदेशक नर्मदा कात बसल 'महेश्वर' नामक उपनगर छल, ओकरा मान्धाता, मंडला या मंडलेश्वरक नामसँ उद्धृत कएल गेल अछि. 'महेश्वर' 'महिष्मती' अछि. ई तर्कसँ असंगत लागैत अछि. मत्स्य पुराणमे 'महेश्वरपुर' क

উল্লেখ একটা তীর্থক ৰূপমে অছি. ওতএ 'স্বাহা' নামক দেৱী সতী স্থাপিত ছল. অখৈন ওতএ জে দেৱী অছি, ও 'মংগলা গৌৰী' ক নামসঁ পূজিত অছি. ব্রহ্মাংড পুৰাণক মোতাৱিক 'স্বাহা' প্রসূতিক গৰ্ভসঁ উৎপন্ন দক্ষক পুত্রী অছি, জিনকৰ পতি অগ্নি অছি. ((মংডন মিশ্র ঔৰ উনকা অদ্বৈত ৱেদাংত, পৃষ্ঠ 16)
মহেশ্বৰক অপ্পন অলগ গৰিমা অছি, ওকৰ পহিচান মহিষ্মতিক ৰূপমে ক' ৱিতংডা ঠাঢ় কৰৈক অলাৱা কী ভ' সকৈত অছি ? ভাষা ৱৈজ্ঞানিক সভ একৰ পৰীক্ষণ কৰএ জে মহিষ্মতিক ধ্বনি সাম্য মহিষীসঁ ৱেঁসী ৱৈজ্ঞানিক ৱৈসৈত অছি জতএ 'ম', 'হ', 'ষ' আ 'ঙা' ক ৱৰ্ণ আ মাত্রা ৱিদ্যমান অছি, আ ফেৰ মাহেশ্বৰ, মান্ধাতা, মংডলা আ মংডলেশ্বৰ সঁ ৱাচস্পতি মিশ্র সেহো অপ্পন পোথীমে মহিষ্মতিক উল্লেখ পাটলীপুত্রক সংগ কেনে অছি (মংডন মিশ্র ঔৰ উনকা অদ্বৈত ৱেদাংত, পৃষ্ঠ 22, ৱিজ্ঞানক্ষৰম, পৃষ্ঠ 51) পটনাক সংগ মিথিলাক মহিষীক উল্লেখ সমীচীন অছি, স্বাভাৱিক অছি আ ভূগোল সম্মত অছি.
মিশ্র উপাধি ধাৰণ কৰএৱঁলা মহান দার্শনিক মিথিলামে ভেল অছি, জগমে ৱাচস্পতি মিশ্র, স্বচৰিত মিশ্র, পক্ষধৰ মিশ্র, জীৱনাথ মিশ্র, ভৱনাথ মিশ্র (অযাচী মিশ্র), শংকৰ মিশ্রক সংগ জগত প্রসিদ্ধ অদ্বৈত ৱেদাংতী মংডন মিশ্র প্রসিদ্ধ অছি. সভ কোণসঁ পৰীক্ষণক ৱাঁদ লগৈএ জে মংডন মিশ্র মহিষী (কোশী প্রমংডল, ৱিহাৰ) ক ৱহএৱঁলা ছল.

मंडन मिश्र आ शंकराचार्यक बीच शास्त्रार्थ भेल छल वा नै, एहि संबंधमे दुनूमे किछो अप्पन पोथीमे चर्चा नै केने अछि. एहन मत अछि जे पंडित वाचस्पति मिश्रक मंडन मिश्रक प्रति अकूत श्रद्धा देखैत शंकरक अनुयायी हुनकासँ तमसाएल रहए आ वाचस्पति मिश्रक प्रति असम्मानजनक विशेषण प्रयोग केने छल. एकर बाद मंडन मिश्रक कद छोट करबा लेल माधवाचार्य आ दोसर लेखक शंकराचार्यक पक्षमे कतेक रास पोथी लिखने छल.
ई लेखकक मात्र कल्पना कहल जा सकैत अछि. ई इतिहास सम्मत सेहो नै अछि. स्वामी अपूर्वानन्द अप्पन पोथी 'आचार्य शंकर' (प्रकाशक: रामकृष्ण मठ, नागपुर) मे भारती शंकराचार्य सँ शास्त्रार्थ करैत जे प्रश्न पुछने छल, ओकरा एना तरहेँ लिखने अछि, कामक लक्षण की होइत अछि ? काम कला कतेक तरहक होइत अछि ? देहक कोन अंगमे काम रहैत अछि ? कोन-कोन क्रियासँ ओकर अभिव्यक्ति आ तिरोभाव होइत अछि ? शुक्ल पक्ष आ कृष्ण पक्षमे पुरुष आ नारीक शरीरमे कामक ह्रास-वृद्धि कोना होइत अछि आ नारी कोन तरहेँ पुरुषक ऊपर कामकलाक विस्तार करैत अछि ? आब प्रश्न ई उठैत अछि जे कोनो संस्कार वाली विदुषी शास्त्रार्थमे कोनो बाल ब्रह्मचारीसँ कामशास्त्र संबंधित प्रश्न पूछत ?
शंकरमतक अनुयायी आ तलस्पर्शी विद्वान स्वामी सच्चिदानंद भारतीक कन्नड़ कृति 'श्री शंकर

ভগরপোদ বৃতাঁত সাব সরস্য' কেঁ সংদর্ভিত করৈত শ্রী নাবাযণ দত্ত ধর্মযগক খপ্রৈন, 1996 মে প্রকাশিত খপ্পন নেখ মে উঁপযঙ্ক রিচাব দেনে ছন. স্বামী খপূর্রানিংদক দৃষ্ঠিমে শংকব দিগ্বিজযমে রর্ণিত পবকাযা প্ররেশক মিথক শংকবাচার্যক মূন ব্যঞ্জিত্বকেঁ খংডিত ক' দৈত খছি. কী হুনকব সন জিতেন্দ্রিয ব্রহ্মচাবী মহজ শাস্ত্রার্থ জীতৈ নেন খপ্পন খনমোন ব্রত তোড়ি কাম শাস্ত্রক ব্যারহাবিক জ্ঞান সীখৈ নেন তৈযাব ভ' জাএত ? স্বযং শংকব সংপ্রদাযক খন্বযাযী ঞা স্বীকাব করৈত খছি জে খগ মিথক দ্বাবা হুনকব সভক পবমগ্বরুক উঁজ্জরন ছরিকেঁ ধূমিন কএন গেন খছি. স্বামী খপূর্রানিন্দ পোথী 'খাচার্য শংকব' (পৃষ্ঠ 95)মে খাগূ নিখৈত খছি জে ভাবতীক সংগ শংকবাচার্যক সংগ কোনো শাস্ত্রার্থ ভেনৈনে নৈ. তগসঁ শংকবক পবকাযা প্ররেশক কোনো প্রশ্ন নৈ উঁঠৈত খছি. মাধরাচার্য ঞা নিখ ক' শংকবকেঁ খনৌকিক শঞ্জি সম্পন্ন প্রতিপাদিত কেনে খছি. হ্মদা খনজান রংশজক খাচার্যক জিতেন্দ্রীয হেরোঁপব প্রশ্ন চিন্হ নগাক' ওকব মহান চবিত্রক সংগ খিনরাড় ক' দেনে খছি.

শংকবাচার্যক সন্দর্ভমে সিংহেশ্বৈবপব রিচাব করৈত কান ঞা কহন জা সকৈত খছি জে রর্তমান কোশী খংচন বামাযণ কান মে 'ঋষ্যশৃংগ খাশ্রম' খা মহাভাবত কান মে চম্পকাবণ্য (চম্পা বাজক খসংখ্য ভাগ) ছন. ঞা ক্ষেত্র বৃহ্ক্ষকান মে 'খাপণ নিগম' ক নামসঁ প্রসিদ্ধ ছন. গংগাক উঁত্তব রিশান ক্ষেত্রমে পসবন ছন 'খাপণ নিগম'.

हिंदी आ अंगिकाक प्रसिद्ध विद्वान डा. तेज नारायण कुशवाहा चिट्ठीसँ सूचित केने अछि जे कटिहार जिलाक सेमापुरकेँ ओ 'आपण निगम' क रूपमे चिन्हित केने छथिन. जखन कि श्री हरनदार त्रिपाठी सद्भदय महिषी वनगाँवकेँ 'आपण निगम' मानने छथिन. आपणक अर्थ बजार होइत अछि आ 'निगम' समितिक बोध करैत अछि. अर्थ विस्तारमे ई 'कारपोरेशन' क रूपमे लेल जा सकैत अछि. अइ तरहेँ 'आपण निगम' क क्षेत्र विस्तार ओइ कालमे सम्पूर्ण कोशी प्रमंडलमे छल, जइमे कतेक गाम समाहित छल. एकर मुख्यालय जल बॅहुल गाम एखौनका महिषी-बॅनगाँव छल. प्रशासनिक दृष्टिसँ ई व्यवस्था दीर्घकाल धरि चलल. ई सकैत अछि जे मंडन मिश्रक कालमे अइ क्षेत्रक यएह स्थिति रहल हएत. सिंहेश्वर शैव तीर्थ आ महिषी शक्तिपीठक रूपमे ख्याति प्राप्त छल आ दुनू एकर निगमक अंतर्गत छल. जौं शास्त्रार्थ आ विचारक आदान-प्रदान करै लेल शंकराचार्य एखौनका महिषी (जिला सहरसा) आएल हेतिऐ तँ सिंहेश्वर सेहो आएल हएत. सभ कोनसँ परीक्षणक पश्चात ई पूर्णतः निर्विवाद अछि जे मंडन मिश्र, मैथिल ब्राह्मण छल आ महिषी ग्रामक निवासी छल. ओ तहियोका भारतवर्षक सर्वाधिक प्रखर अद्वैतवादी वेदांती छल. एक ठामक तीर्थ हेबाक कारण महिषी आ सिंहेश्वरक संबंध अटूट रहल छल आ ओ आइयो अछि.

सहायक आ सन्दर्भ पोथीक सूची

1. ঋগ্বেদ, বৈদিক সংশোধন মংডন, পূনা
2. যজুর্রেদ, সংপাদক শ্রীপাদ শের্মা, ওঁধনগব
3. অথর্ররেদ, সংপাদক শ্রীপাদ শের্মা, ওঁধনগব
4. রাঁল্মীকীয বামাযণ, গীতা প্রেস, গোবখপ্পব
5. মহাভাবত, পাবডী সংস্কবণ (শ্রীপাদ দামোদব সাতরনেকব)
6. হবিরংশ পূবণ. চৌখম্ভা, রাবাণসী
7. শ্রীমদভগরত প্ববাণ, চৌখম্ভা, রাবাণসী
8. তৈত্তিবীয অবণ্যক, চৌখম্ভা, রাবাণসী
9. ছান্দাগ্যাপনিষদ, চৌখম্ভা, রাবাণসী
10. রিষ্ণু প্ববাণ, গীতা প্রেস, গোবখপ্পব
11. শতপথ ব্রাহ্মণ, অচ্যুত গ্রংথমানা, রাবাণসী
12. রাঘ প্ববাণ, রেঁকটেশ্বর প্রেস, রম্ব্বঁগ
13. গৌতম ধর্মসূত্র, আনন্দাশ্রম সংস্কৃত সীবিজ
14. রৌধাযন ধর্মসূত্র, আনন্দাশ্রম সংস্কৃত সীবিজ
15. শ্বেতাশ্বব উঁপনিষদ, রেঁকটেশ্বর প্রেস, রম্ব্বঁগ
16. মন্বস্মৃতি, কুন্নকভট্ট টীকা, রম্ব্বঁগ
17. অমবকোশ, ভংডাবকব বিসর্চ ওংস্টিট্যূট, পূনা
18. কুমাবসংভর, চৌখম্ভা, রাবাণসী
19. মত্স্য প্ববাণ,রেঁকটেশ্বর প্রেস, রম্ব্বঁগ
20. দশকুমাব চবিতম, চৌখম্ভা, রাবাণসী
21. পদমপ্ববাণ, রেঁকটেশ্বর প্রেস, রম্ব্বঁগ
22. রিরিধ তীর্থ কল্প, হিংদী জৈন পীঠ, শাংতি নিকেতন
23. দীঘনিকায, নানংদা পানি প্রতিষ্ঠান

24. रिनय पिटक, नानंदा पानि प्रतिष्ठान
25. महारॅग्ग थार्य भूषण प्रेस, शिरनग बपूना
26. मज्झिमम निकाय, नानंदा पानि प्रतिष्ठान
27. संयुत्त निकाय, महाबोधि, सावनाथ
28. ओपपातिक सूत्र, जैन रिद्यापीठ, भावतीय रिद्या भरन, रॅम्बॅओ
29. प्र्णियाँ गजेटियव
30. भागनप्वव गजेटियव
31. नेपानीज रॅुद्धिस्ट निटवेचव, कोनकाता
32. शैव थवधावणा था सिंहेश्वव, हविशंकव श्रीरास्तव 'शनभ', मधेप्वा
33. रौद्ध धर्म था रिहाव, हवनदाव त्रिपाठी सद्भदय, रिहाव बाष्ट्रभाषा पविषद्, पटना
34. रिहाव की नदियाँ, रहि
35. बामचवितमानस, गीता प्रेस, गोवखप्वव
36. प्राचीन भावत मे संग्रामिकता, पंडित बामदीन पाण्डय, रिहाव बाष्ट्रभाषा पविषद्, पटना
37. भागरत दर्शन, 35रां खंड, प्रभुदत्त ब्रह्मचावी, झूंसी
38. महाभावत कथा, चक्ररर्ती बाजगोपानचावी, सस्ता साहित्य मंडन, दिल्ली
39. भागरत कथा, सूवजमन मेहता, सस्ता साहित्य मंडन, दिल्ली
40. बिश्यिश्रृंग स्मृति ग्रंथ, झंरवनान शर्मा, कोटा, जस्थान
41. सिखरान ब्राह्मण पविशीनन, नेखक श्री रॅुद्धिप्रकाश देर उँपाध्याय, र्यावव, बाजस्थान

42. मिथिला लोक संस्कृति कोश, डा. लक्ष्मीप्रसाद श्रीवास्तव, दरभंगा
43. रामायण कालीन संस्कृति, शांति कुमार नानूराम व्यास, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली
44. लोपमुद्रा, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली
45. मिथिला तत्व विमर्श, म.म. परमेश्वर झा, तरौनी, दरभंगा
46. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, डा. जयशंकर मिश्र, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
47. प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, डा. विमल चरण लाहा, उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ
48. ग्यारहवीं सदी का भारत, डा. जयशंकर मिश्र, वाराणसी
49. प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, ए.के. मित्तल, आगरा
50. कल्याण, मासिक, गोरखपुर
51. अखंड ज्योति, मासिक, मथुरा
52. कादम्बिनी, मासिक, नई दिल्ली
53. सहरसा, गजेटियर, 1965
54. जर्नल ऑफ़ रायल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल
55. विजडम ऑफ़ द एंसियेंट सिरीज, ब्रह्मचारी विशुद्धदत्त, वैदिक अनुसंधान समिति, नई दिल्ली

56. सच्चिदानंद प्रकाशे, भाग एक, स्वामी ऋद्वितानन्द पुरीजी महाराज
57. स्मारिका राज. प्रदेश सिखरान ब्राह्मण सभा, जयपुर, प्रधान संपादक एस.एम. त्रिपाठी, जयपुर

कैप्सन

1. हिमाचल प्रदेशक कुल्लू अंचल मे सभ राहत पर ऋषिराजक जयकारा लिखल भेटैत अछि. ऋषिराज एतौका पहिल्लुक देवता अछि. तएसँ एतए श्री गणेशजी महाराजसँ पहिने हिनकर पूजा होएत अछि.
2. ऋष्यशृंग पहाड़ ी (रँजाव हिन रेंज, हिमाचल) क मनमोहक चित्र. सामनेरँना पहाड़ ीके ँ मारकण्डे पहाड़ ी कहैत अछि, जतए देवी त्रिपुररँाना स्वन्दरीजी प्रकट भेल छल आ एतए ओ दुर्गा सप्तसी आदि देवी-पोथीक रचना केने छथिन.
3. हिमाचल प्रदेशे पर्यटन विभाग श्री ऋषिराजक महानताके ँ मानैत अछि. ई चित्र एकर प्रमाण अछि.
4. शृंगी ऋषि मार्ग जे जलोड़ ी-पास मार्गसँ अलग भ' क' शृंगी ऋषि पहाड़ ीक परिक्रमा मंदिरक पैदल मार्ग धरि जाएत अछि, क चित्र.
5. हिमाचल प्रदेशमे ऋषिराजक मंदिर धरि 30 मीटर पैदल चढ़यके संकेत चिन्ह.

6. हिमाचल प्रदेशमे पूजित ऋष्यश्रृंगजी महाराजक दिव्य मूर्ति जेकरा स्थानीय लोक श्रृंगाऋषिक नामसँ पूजा करैत छथि.
7. बँागी (हिमाचल प्रदेश) क लगभग छह सौ पुरना ऋष्यश्रृंगक महाराजक मंदिरक दृश्य, जे सालमे आठ मास बर्फसँ झापल रहैत छथि. ई मंदिर समुद्रतल सँ छह हजार फीटक उँचाइपर छथि.
8. हिमाचल प्रदेशक श्रृंगा ऋषि (ऋष्यश्रृंग) क सोनाक पालकी केँ ल' जाइत भक्तगण. एहि प्रदेशक मान्यता छथि जे ई देवता सभसँ बेसी ठामक भ्रमण करैत छथि.
9. ऋषिराजक महानदीक प्रकट्य स्थल सिहोरा पहाडीसँ लेल गेल एहि धारक चित्र, जइमे दक्खिन दिससँ उत्तर वाहिनी बहैत ई धार.
10. ऋषिराजक तपोभूमि महानदी उद्गम स्थल सिहोरा पहाड़ ीपर तपस्यारत साधु-संन्यासी.
11. ऋष्यश्रृंगक तपोभूमि 'सिहोरा' छतीसगढ़क पहाड़ ी पर जाइत श्रद्धालु.
12. श्री सिंहेश्वर मंदिरक मुख्य प्रवेश द्वार.
13. श्री सिंहेश्वर मंदिरक मध्य प्रवेश द्वार.
14. श्री सिंहेश्वर महादेवजीक मंदिर.
15. श्रृंगेश्वर (सिंहेश्वर) मंदिर स्थित शिव-गंगा (पुरातन नाम श्रीविभांडकक कुंड) क दृश्य.
16. श्री सिंहेश्वर मंदिर (बिहार) मे श्रद्धालुक भीड़. संगे विभांडक कुंडसँ नहाक' दंड प्रणाम करैत (लेटि-लेटा क') मंदिरमे प्रवेश करैत श्रद्धालु.

17. শ্রী সিংহেশ্বব স্থাপিত মংদিবক প্রাংগণমে ঋষ্যশৃংগক প্রতিমাক মনোহাবী দৃশ্য.
18. শ্রী সিংহেশ্বব মেনামে ফ্টৈব উঁদ্যাগক সামান বেঁচৈত গ্রামীণ স্ত্রীগণ.
19. শৃংগরেবপ্ববমে ঋষ্যশৃংগ আ মাতা শান্তাক হ্মকত.
20. বারেব, জিনা জনগাঁর, মহাবাষ্ট্র নগ 'শৃংগাব ঋষি' ক মংদিবক দৃশ্য.
21. খনসিংগ, জিনা রাসিম, মহাবাষ্ট্র ক ঋষ্যশৃংগ মংদিবমে ঋষ্যশৃংগ আ ভগরান শিরক হ্মকতক খনৌকিক দৃশ্য. সংগমে প্বজাবী শ্রীসদাশির পাষ্টিনজী.
22. কাবনা, যরতমান, মহাবাষ্ট্রমে ঋষ্যশৃংগক সমাধি মংদিবক হ্মখ্য দ্বাব.
23. কাবনা, যরতমান, মহাবাষ্ট্র ঋষ্যশৃংগ সমাধি মংদিব জগ নেন ভর্য্য সীঢ় িক দৃশ্য.
24. সিংগত, তহসীন বারেব, জিনা জনগাঁর মে ঋষ্যশৃংগ জী মহাবাজক সমাধি মংদিব জে নৌ মাস জনক ভীতব বহৈত খছি.
25. ঋষিকুংড, হ্মংগেবক তেসব গবম জনক কুংডক দৃশ্য.
26. ভীমবাঁধ, হ্মংগেব, বিহাবক ঝবনাসঁ বহি ক' খাবৈত গবম পানিক জনধাবা, জে ভীমবাঁধক নামসঁ প্রসিদ্দ খছি.
27. ভীমবাঁধ সঁ খাবএবনা গবম জন ধাবক সংগ ঠাঢ় পানিক দোসব ধাবক সংগম. দৃষ্ঠব্য– খংগবাজ বোমপাদ ঋষ্যশৃংগকেঁ ও ক্ষেত্র কন্যাদানমে দেনে ছন আ ঋষিবাজ খগ গবম

পানিক ক্ষংড খা ঝবনাক নির্মাণ কেনক. কানাংতবমে দ্বাপব যুগমে খগ রিশান জন প্রপাতপব ভীম ৱান্ধ ৱনৌনে ছন খা জাগ কাবণসঁ খগ গবম পানিক ঝবনাক নাম ভীমৱাঁধ পড়ি গেন জে খড়গপ্পব খন্বমংডন, জিনা ক্ষংগেব, রিহাবমে খছি.

28. ঋষিক্ষংড (গবম পানিক ক্ষংড), জে ৱবিযাবপ্পব, জিনা ক্ষংগেব, রিহাবমে খছি, ক দৃশ্য. সংগমে সংপাদকক মাঁ শ্রীমতী পার্ৱতী দেৱী. খগ তবহক তীন গবম পানিক ক্ষল্ড খগ ঠাম খছি. ঙুঁপবকা পহাড় াপব শ্রী ঋষ্যশ্রৃংগক মংদিব খা গুফা সেহো খছি.

29. ঋষি ক্ষংড, জিনা ক্ষংগেব, রিহাবমে দোসব গবম পানিক ক্ষংডক দৃশ্য.

30. সিগংবীবিসী ঋষি স্থন, ক্যূন, রিহাবক দৃশ্ম ৱাঁচক মনোহাবী দৃশ্য.

31. সিংগবীবিসী, ক্যূন, রিহাবক পংচধাবাক দৃশ্য. ঐ জনস্রাতক স্রাত কতএ খছি কেকবো খাগ ধবি জানকাবী প্রাপ্ত নৈ ভেন খছি.

মোহনদাস (দীর্ঘকথা): ***লেখক: উঁদয প্রকাশি***_*(মূল হিন্দীসঁ মৈথিলীমে অনুবাদ বিনীত উঁপেল)*



উঁদয প্রকাশি (১৯৫২–) "মোহনদাস"– হিন্দী দীর্ঘ কথাক লেখক উঁদয প্রকাশিক জন্ম ১ জনরবী ১৯৫২ ঈ. কেঁ ভাবতক মধ্য প্রদেশি বাজ্যক শিহডোল সংভাগক অনূপপুব জিলাক গাম সীতাপুবমে ভেলন্হি। হ্নকব হিন্দী পদ্য–সংগ্রহ সভ ছন্হি: স্বনো কাবীগব, অবূঁতব কবূঁতব, বাত মেঁ হাবমোনিযম, এক ভাষা হ্আ কবতী হৈ। হিনকব হিন্দী গদ্য–কথা সভ ছন্হি: তিবিছ, ঔব অন্ত মেঁ প্রার্থনা, প◌ॉল গোমবা কা স্কূটব, পীলী ছতবী বালী লড়কী, দত্তাত্রেয কে দুখ, অবেৰা পবেৰা, মৈঁগোসিন, মোহনদাস। মোহনদাস– দীর্ঘকথা লেল হিনকা সাহিত্য অকাদেমী পুবস্কাব ২০১০ (হিন্দী লেল) দেল গেল অছি।

অনুবাদক:

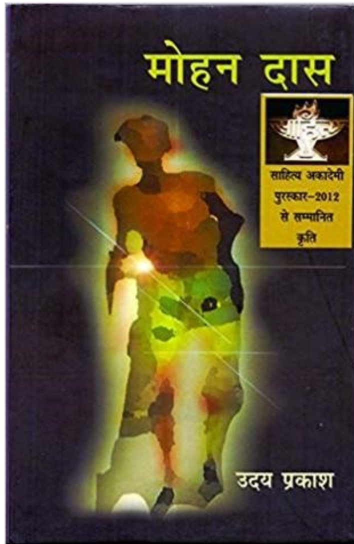


বিনীত উঁপেল (১৯৭৮–)

আনন্দপুবা, মধেপুবা। প্রাবংভিক শিক্ষাসঁ গঁৈব ধবি

ऋंगेब जिना थंतस्नात बणगांर था तावाप्वबमे। तिनकामांब्नी भागनप्वब, रिश्विरिच्यानयसँ गणितमे रीएससी (थानर्स)। ग्वब्ब जस्मुश्वब रिश्विरिच्यानयसँ जनसंचावमे मास्टंव डिग्री। भावतीय रिच्या भरन, नगा दिल्लीसँ थंगरेजी पत्रकावितामे स्नातकोत्तव डिप्लामा। जामिया मिल्लिया गस्लामिया, नगा दिल्लीसँ जनसंचाव था बचनामेक नेखनमे स्नातकोत्तव डिप्लामा। नेन्सन मंडेना सेंटंव फ◌ॉब पीस एंड कनक्लिकंट बिजोन्यूशेन, जामिया मिनिया गस्लामियाक पहिन रैंचक छात्र भs सर्टिफिकेंट प्राप्त। भावतीय रिच्या भरनक फ्रेंच कोर्सक छात्र। थाकाशिराणी भागनप्वबसँ करिता पाठ, पबिचर्चा थादि प्रसावित। देशेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे रिभिन्न रिषयपव स्वतंत्र नेखन। पत्रकाबिता कैबियब- दैनिक भास्कब, गंदौब, बायप्वब, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंद्स्तान, नगा दिल्ली, फबीदाबॉद, थकिंचन भावत, थागबा, देशरॅध्, दिल्ली मे। एखन बाष्ट्रीय सहाबा, नोएडा मे बबिष्ठ उंपसंपादक।

"हम प्बष्ठेत छी" मैथिनी करिता संग्रह

প্রকাশিত। 

মোহনদাস পোথীক আবরণ-চিত্র মার্কুস ফোবনেনক চিত্রক উঁদয প্রকাশ দ্বাবা রূপান্তবণ।

মোহনদাস : *উঁদয প্রকাশ* (২০১২ মে সাহিত্য অকাদেমী প্রবস্কাবসঁ সম্মানিত পোথী)

ঞা উঁপন্যাস মৌথিলীমে পহিল বেঁব বিদেহ ঞা-পত্রিকা www.videha.co.in *মে ধাবাবাহিক রূপমে ঞা-প্রকাশিত ভেল ছল।*

মোহনদাস

ডবক বংগ কেহন হোগত অছি ? ভর্টবংগ, অকস্মাত, অনাহনি সন , কাবী-স্যাহ আকি ফেব ছাউঁব সন ? এহন ছাউঁব জকবামে আগি এখন ধবি মিঝাএল নৈ গেল অছি ! ... আ ফেব কোনো এহন বংগ, জকবা পাছাঁসঁ একবৈংগ কিযো সূন-মসান সন তাকএ নাগৈত

ঋছি ঋা ওকব হ্ফাৗন ঠামমে সঁ কনেকে দূবীপব কোনো কানৈক গধমিসান থকমকাএন সন নখা দৈত ঋছি।

সহ্মদ্র ঋা ধাবক কোনো ধাবসঁ ঋনচোহ্ক রাঁন্বপব তবপি কহ পৗকন মাষ্টক ঋাঁখি কহিযো ঋহাঁ দেখনে ছিঐ ? দম তোড়ৈত, খ্জন-হ্ফাৗন ঋাঁখি... ? ...ওহিনো তবহক বংগ... !

হ্মিন্মক নীকসঁ নীক হীবো সেহো ঋপ্পন ঋাঁখিক ডিম্হা, তকব চান্ধ কাতক উঁজবকা স্থন ঋা হ্মঁহপব কতরৈঁযো কোশিশি কেনাক রাঁদো ও বংগ নৈ ঋানি সকৈত ঋছি জে ঋসন জিনগীমে কোনো রঁড় ডবাএন জিরৈঁত মন্বখক ঋাঁখি ঋা হ্মঁহপব দেখা পড়ৈত ঋছি। এহন মন্বখক, জে কত্তৗ রৈঁবিযা কান ধবি কাজ কহ থাকি-হাবি কহ ঘব ঘ্বি বহন ঋছি। ওকব হাথমে একৗো হোবা ঋছি, ওগমে নেনাক নেন কম্মে দামরঁনা ৗাঁহ্ফী ঋা খিনৌনা ছৈ ঋা কনিযাঁক খোঁখীক গোনী সেহো , হ্মদা এহ্ক কোনক ঋাগূ ও দংগা কবহরঁনা সভক রীচমে কোনো স্বন-মসান ঠামপব ঋনচোহ্ক নসকি জাগত ঋছি ঋা দূর্ভাগ্যসঁ ও ওগ সংপ্রদায, নস্ল ঋা সংগোবক নৈ ঋছি জে ভীড় ওকবা ঘেবনে ছৈ। তখনে ওগ কান ঋপ্পন হনাক একাধ ক্ষণ পহিনে ওগ মবৈরঁনাক ঋাঁখি, হ্মঁহ ঋা সমূচ দেহমে রএহ বংগ দেখাগ পড়ৈত ছৈ, জেকব চর্চা হম কেনে ছী ঋা জকবা ওগ দিন হম মোহনদাসমে দেখনে বহী।

"शिंडलर्स लिस्ट' आ फेर ओहने कतेक सिनेमामे अहाँ ओग जर्मन रेलगाड़ी क दृश्य देखने होएत, जकरा कतौ दूर ठाम पठाएल जा रहल छै। ओग रेलगाड़ी क डिब्बाक खिड़कीसँ झाँकैत ताकैत लेना, मौगी आ बुढ़बाक मुँह अहाँक मोनमे होएत! आ एखन किछु दिन पहिने गुजरातक कतेक शहर-मोहल्लाक घरक छत, खिड़की आ छातमे सँ झाँकैत ताकैत मुँह।

डरक रंग किछु-किछु ओहने रंगक होगत अछि। मोहनदास आगू ठाढ़ अछि आ अप्पन थरथराएत, दुब्बर अरौजमे कहैत अछि,-"कका, कोनो तरहेँ हमरा बचा लिअ! हम अहाँक आगू हाथ जोड़ैत छी! ...लेना-बेंदरा सभ अछि हमरा! बूढ़ बाप मरि रहल अछि टी.बी.सँ! ... अहाँ कही तँ हम अहाँक संग चलि कऽ कोर्टमे हलफनामा दै लेल तैयार छी जे हम मोहनदास नै छी। हम ऐ नामक कोनो मनुखकेँ नै चिन्हैत छी! किये आब होएत मोहनदास! आनी कोनो तरहेँ हमरा बचा लिअ! '

मोहनदाससँ जखन अहाँक भेंट होएत तँ पहिने तँ अहाँकेँ ओकरापर दया आएत मुदा अहाँ डरा जाएब। किएक तँ ओ कान डरैएबला कान अछि आ ओ आब डरैबला भेल जा रहल अछि।

মোহনদাস আ হ্নকব পবিরাবক কএকটা পীঢ়ি কেঁ হম জানৈত ছী। গাম-ঘবমে তঁ এহনে হোগত আছি। হ্নকা দেখি কঃ থহাঁ সোচিযো নে সকৈত ছী জে ও ঐ জিনাক সবকাবী এম.জী. ডিগ্রী কॉনেজসঁ গ্রেজ্এট ছথি। ফর্স্ট ডিরীজনক সংগ! ...আ রিশ্বরিদ্যানযক টॉপব সূচীমে, আগসঁ দস র্ববখ পহিনে হ্নকব নাম দোসব নংর্বব পব ছন। হ্নকব আজুক দেহ-দশা হ্নকব ওগ কানকেঁ নঃ কঃ কোনো গপ নৈ কবৈত আছি। একটা ফাটন, রঁদবংগ ভেন, ঠামে-ঠাম চিপ্পী নাগন, কোনো কান নীন বংগক ডেনিমক ফ্নপেন্ট, সস্তা টেবিকॉটক আধা বাঁহিক, দহিনা কন্হা নগ উঁঘড়্ন থংগা। একবামে কোনো কান চৌখানা রঁনন বহৈত, জেকবাসঁ ও ডবীড় মেটা বহন আছি, জেকব বংগ কহিযো হন্নুক বহন হোএত। আ একটা বর্ঁড়্ক সস্তা-র্ববসাতী পনহী, জকবা মাটি, ধূবা, দ্খ, পানি, কান আ বৌদ এক্ত চাটি গেন আছি জে আর্ব ও কখনো চমড়্া। তঁ কখনো মাটিক রঁনন দেখা পড়্ৈত আছি।

মোহনদাসক উঁমেব খখন পৈতীস-সৈঁতীস র্বখক হোএত, ক্ষদা দেখর্বামে ও হমবে র্ববার্বব আকি হমবাসঁ রঁসী নাগৈত আছি। এক তবহেঁ হকাসন আ দৌড়্-ভাগ কবৈত ওকবা হম সদিখন দেখনহুঁ। গামমে কত্তৌ রৈঁসি কঃ গপ কবৈত, তাশ খেনাগত, হঁসী-ঠহক্কা দৈত আ টৌরী দেখৈত নৈ দেখনহুঁ। কিযো কতরৌ নচাব আ ডবাএন বা জন্দীমে আছি; ও ওকবা কত্তৌ ঠাঢ় নৈ হুখএ দৈত আছি। মোহনদাসকেঁ নঃ কঃ নোক-রঁদ কহৈত

अछि जे ओ सदिखन कोनो-नै-कोनो काज पकड़ि ये कऽ बाजैत अछि, किएक तँ ओकरा पानि पीबाक लेल सभ दिन एकटा नरुका गनाब कोड़ऽ पड़ैत छै आ सोहावी खेबाक लेल नित्तः नरका फसिन जनमाबऽ पड़ैत छै। ओकरा परिवारमे बोटी-पानिक लेल ओकर बाटे जोहैबला एक गोटा नै पाँच गोटा छै। पाँचटा पेटे आ पाँचटा म्हँह।

मोहनदासक बाप काबा दास, जकरा पछिला आठ बरखसँ टी.बी. छै। ओकर माए पुतलीबाग, जकर आँखि कोनो मंगनीक नेत्र शिविरमे मोतियाबिंद आपरेशन भेलाक बाद आन्हर भऽ गेल छै आ चारू दिस अन्हारे-अन्हार लखा दै छै। ओकर कनियाँ कस्तूबी बाग, जे किछु नै, अप्पन रबक छाह छिऐ। कस्तूबी बाग मोहनदासक काजमे संग दैत छथिन आ घबक चूल्हा-चौका ओबियाबैत छथिन। गामक लोक कहैत अछि जे आग धबि कहियो दुनूकेँ लड़ैत- झगड़ा करैत नै देखने छी। नागैत अछि ओ रिपैत आ आफैत मोगत अछि, जे स्त्री-पुरुखक संबंधक नीरकेँ कमजोर करैत अछि।

बचन दूटा प्राणीमे एकटा अछि देवदास आ दोसर अछि शाबदा। मोहनदास आ कस्तूबीक दुगटा संतान। ऊँमेब आठ आ छह बरख। देवदास गामक प्राथमिक पाठशालामे पढैत अछि आ स्कूलक बाद गामसँ जागबला सड़कपर अर्जुन "दुर्गा ऑटो रिक्शा' मे गाड़ीमे हरा

ভরৈএ, পঁচব সাণ্টৈএ আ স্কূটৈব-মোটৈব সাণকিনক ছোটৈ-মোটৈ ভওঠী কবরাঁমে হেম্পবক কাজ করৈএ। ঐ কাজক নেন ওকবা মাসমে সএ টৈকা ভেটৈত ছৈ। তগমে সঁ কহি সকৈত ছী জে মোহনদাসক রেঁটৌ খপ্পন পঠ়রাঁক সংগ খপ্পন দানি-ভাতক গঁতজাম খপ্পন মেহনতিসঁ কঽ বহন খছি। তগপব সঁ ও খপ্পন পএবপব ঠাঠ় খছি। পাঠশালাক মাস্টৈব সাহেরঁক কহরঁ খছি জে চাবিম ক্লাসমে দেরদাস পঠরাঁমে সভসঁ নীক বহএ। ক্ষদা জখন ঙা গপ ওকব পিতা মোহনদাসকেঁ রঁতৌনহি তঁ ওকব খাঁখি কন্তী টৈঁগি গেনৈ। ওকবা জেনা খকাশী নাগি গেনৈ। ওকবা ক্ষঁহ পবক ডবীড় থবথবাগত ছৈ। খাঁখিক তেজী মিন্মাএ নাগৈত ছৈ। জেনা কোনো গহ্ববসঁ ওকব কঁঠক খরাজ রঁহবাগত খছি, "হমহুঁ তঁ রী.এ. ফস্ট্ট ক্লাস ছী। দিন-বাতি ঘোটৈঁত বহী...! কী ভেন ? "

একব রাঁদ মোহনদাসক খাঁখি চমকি জাগত খছি আ ও পপড় ী পড়ন ঠোবসঁ হঁসৈত কহৈত খছি, "খাগ কান্হি হম কমপ্যূটৈব সিখৈত ছী। রঁস স্টঁডপব জে "স্টাব কমপ্যূটৈব সেঁটৈব' খছি, ওতএ হম জাগত ছী। গমাবতী সমান আ হাডরিেযবক দোকান চনরৈঁরঁনা মোহম্মদ গমবানক রেঁটৌ শকীন ঐ কমপ্যূটৈব সেঁটৈবক মানিক খছি আ ও কহৈত খছি, "ককা, টৌগপিঁগ, কঁপোজিঁগ আ প্রিঁটৈ নিকানৈরঁনা কাজ রুঁঝি গেনহুঁ তঁ ছহ সএ টৈকাসঁ রেঁসী দেরঁ।' মোহনদাস কহৈত খছি জে, "টৌগপিঁগমে ঐ মাস হম তীসক স্পীড নিকানি নেনহুঁ। ছোটৈ-মোটৈ কাজ ভেটৈ জাগত খছি ক্ষদা এখন রঁহ্ত বাস গনতিযো ভঽ

जागल छथि आ ओहिना बाल कान ओल गनतीकेँ ठीक करबैमे लागि जागल छथि।'

सदा ओ सभटा गप ओहिना कान पहिलुके छथि। मोहनदासकेँ भावी रिपोर्ट पढ़ैन छै आ ओ बेर-बेर कहैत छथि-

"हमर नाम मोहनदास नै छथि।... हम अदालतमे हलफनामा दै लेल तैयार छी। जेकरा ओनैक छै ओ बनि जाए मोहनदास। कोनो तरहेँ अहाँ सभ हमरा बँचा लिअ!... हम अहाँ सभक कहैन जोड़ैत छी!'

मोहनदासक दिक की छथि? ओ ओतारैक पहिने ओकर परिवारक पाँचम प्राणी माने मोहनदासक घरक छह बरखक शारदाक गप कह लेल जाए। छह बरखक शारदा गामक सरकारी प्राथमिक पाठशालामे दोसर कक्षामे पढ़ैत छथि आ स्कूलक ओद ओ खटाल किलोमीटैर दूर, दू पोखरि पार ओसल गाम बिछिया टैला चलि जागल छथि, जतएसँ ओ माँझ बातिकेँ करीब सौ-दस ओजे घर घुसैत छथि। बिछिया टैलामे ओ बिसनाथ प्रसादक एक बरखक बेटाकेँ सम्हारैत छथि आ ओकर घरक काज-धाज हाथे-पाथे करैत छथि।

बिछिया गामक पैघ किसान आ जीवन बीमा निगममे बाबूगिरी करैबला नगेंद्रनाथक कलेक्टरीसँ लऽ कऽ मंत्री धरि पहुँच आ धाख छै। दूरा बेर ग्राम पंचायतक

सबपंच आ एक रौब जिना जनपदक उपाध्यक्ष रहल अछि। बिसनाथ प्रसाद, जिनकर एक रबखक बेटीकेँ शोबदा सम्हारैत छन्हि, ऐ नगेन्द्रनाथक पाँच मे सँ एक बेटा छथिन्ह। हुनकर असली नाम विश्वनाथ प्रसाद अछि मुदा गामक लोक हुनका बिसनाथ कहि कऽ बजाबैत अछि आ पीठ पाछाँ कहैत अछि, "असून करैत अछि बिसनाथ। गजबक बिखधारी। ककरो फूकि मारि दिअए तँ बूझू जे ठैं...। बाप नागनाथ तँ बेटा साँपनाथ...। ओ अहाँकेँ देखि कऽ मुस्किया रहल अछि आ ग्वड़क बसमे लपेटि कऽ कहि रहल अछि तँ अहाँ साकांक्ष भऽ जाउ। डसबाक पूरा तैयारी अछि।' बिसनाथक लग एकटा चीज नै अछि, ओ अछि ईमान। कखनो शोबाबै पी लेलाक बाद ओ अपने मुँहेसँ कहैत अछि, "एकक टैपी दोसबाक मुँहमे ठाँगैबना हेबाफेबीमे जे आनंद छै भगया, तकर सोझाँ अनकर कनियाँकेँ जाँघक नीचाँ दाबैबना मजा बड्ड छोटे चीज छै...! हा...हा...हा...!' ओकर उठैब-बैसब सेहो गामक आ एम्हर-ओम्हरक तेहन लोक सभक संग अछि, जेकरा लऽ कऽ कहियो कोनो नीक गप नै सुनल गेल।

बिसनाथ उँच जातिक अछि मुदा मोहनदास नीच जातिक कबीरपंथी अछि। ओकर बिरादरीक कतेक लोक सभ आगयो सूप-चटाइ, दबी-कंबल बुनैत अछि। मोहनदास हमरे गाम नै, आसपासक कतेको गाममे अप्पन बिरादरीक पहिल्लुक लड़का हएत जे बी.ए. पास केने छल। आ ओहो फर्स्ट डिवीजनसँ आ मेरिटमे दोसब नंबबक संग।

(एतए थम्हि जाउँ। सत्त बताउँ जे कतौ अहाँकेँ ई तँ नै लागैए जे हम अहाँकेँ कोनो प्रतीकवादी कूटकथा सुनाबै लेल बैसि गेलहुँ ? एहि कथाक मुख्यपात्रक नाम मोहनदास, ओकर कनियाँक नाम कस्तूरीबाइ, माएक नाम पूतलीबाइ आ बेटाक नाम देवदास... ?

कस्तूरी बाइ नामसँ कस्तूरबाक मोन पड़ि‍त अछि, मोहनदास तँ साफे अछि। मुदा अहाँ महात्मा गांधीक "आत्मकथा' माने "दि स्टोरी ऑफ माइ एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रूथ' पढ़नै तँ पता लागत जे हुनकर पिता करमचंदक दोसर नाम काबा सेहो रहन्हि। आ माएक नाम सेहो पूतली बाइ... फेर हुनकर बेटा देवदासक खिस्सा केकरा नै बूझल छै ? जे अहाँ मोहनदासक रंग-रूपी आ देह-दशा देखबै तँ अहाँकेँ फेर ओ गलतिहास घेर लेत। अंतर बस एतबे जे ओ एहन मोहनदास सन अछि जेकरा पोरबंदर, काठियावाड़, राजकोट, विलायत, दक्खिन अफ्रीका आ अंगरेज-विरुद्धा भरलमे नै छत्तीसगढ़ आ विंध्यप्रदेशक बौन-झाँखड़, खोह-तबलवि, खेत-पथारमे बौद-भूख, रोग-घाम आ अन्याय-अपमानक आँचमे पालन-पोसन भेल छै। ... आबो सत्त सत्तै ओहने...

...मुदा ऐठाम हम, कथाक बीचेमे ठाढ़ भऽ ई कहि दैत छी, जे रंग-रूपीक मिलान एकटा संजोगे अछि। जखन हम अहाँक लेल ई कथा लिखैले बैसलहुँ, ओइ काल हमरा अपने नै बूझल छल जे हमर गामक

मोहनदास आ ओकर परिवारक लोकक निरूपणमे ऐतिहासिक कोनो एहन अन्तर्गूंज सेहो नुकाएल छै।

विश्वास करू, एहन किछु नै अछि। ई कोनो प्रतीक कथा, रूपक आकि कूटाख्यान नै अछि। ई तँ एकटा साफे सरल खिस्सा छी। यदा सत कही तँ ई कोनो खिस्सा नै अछि। किएक तँ हम सदिखन कान जना खिस्साक आड़ि मे, अहाँकेँ फेरसँ अप्पन कान आ समाजक एकटा असल जिनगीक ब्याँबा दै लेल रहैसल छी। मोहनदास वास्तवमे एकटा जीवैत असल मनुख अछि आ ओकर जिनगी एखन बड़्ड़ संकटमे छै। हँ, ई गप अवश्य अछि जे हम सत गपमे सदिखन जना ऐरेंब फेरसँ कम-रैंस हेरफेर केने छी। यदा ई हेरफेर तेहने अछि, जेना किओ हाथीकेँ नुकेबाँ लेल ओकर बड़्ड़का देहक ऊपर डेढ़ हाथक गमछा ओछा दैत अछि।

अहाँकेँ मानऽ पड़त जे सत गप एकटा हाथी होएत अछि आ जखन कोनो कवि आ कहानीकार ओकर ऊपर गमछा ओछा कऽ ओकरा नुका कऽ बोमि कऽ सभक आगू ठाढ़ करैत अछि, तँ तखन ओकर अपनक जिनगीक सभटा प्रन टूटि जाएत छै आ ओकर सभटा नाह जरि कऽ छाउँर भऽ जाएत छै।

...तँ... मोहनदास एकटा असल लोक अछि। एकर पुष्टि अहाँ चाही तँ हमर गामेक लोकसँ नै ऐ देशक कोनो गामक कोनो लोकसँ पूछि कऽ कऽ सकैत छी।)

মোহনদাস জখন বী.এ. পাস কেলক তঁ বাপ কাকা আ মায প্রতনীবাগকেঁ আশা বহৈ জে আব ওকরা ভুরন্ত নোকরী ভেটি জএতৈ। মোহনদাসক বিয়াহ চৌদহ-পংদ্রহ বরখমে কটকোনা গামক রিবংজক স্বন্নব সন বেটী কস্তূরী বাগক সংগ ভঽ গেল ছল। কস্তূরী বড় কাজ করৈবানী ছল। সাস্বর আবৈক সংগ ও ঘবক সভটা কাজে টা লৈ সম্ভাবনক ম্দা এম্হব-ওম্হব ছোট-মোট মজূরী কঽ কিছু পাগযো কমাবৈ লাগল, জগসঁ মোহনদাসক পঢ়বাক খর্চা নিকলি জাএ। সভক আঁখি মোহনদাসেপব লাগল বহৈ। বী.এ. কবৈবনা ও জাগত-সমাজক পহিল বচা বহএ। সেহো হস্টে ডিবীজন। পবীক্ষাক বিজল্টে জখৈন বহবাএল তখন ওকব কএকটা ফোটৈ সেহো খখবাবমে ছপল। কোচিংগ চলাবৈবনা কংপনী সেহো ওকব ফোটৈ ছাপলক।

মোহনদাস বোজগাব কার্যালযমে অপ্পন নাম লিখৌলক আ "বোজগাব সমাচাব' মে ছপৈবনা বিজ্ঞাপনকেঁ দেখ কঽ জত্তঽ-তত্তঽ দর্খাস্ত পঠাবএ লাগল। লিখিত পবীক্ষামে সভসঁ ঊপব বহৈ ছল ম্দা জখন গংটবর্য হোগত বহৈ তঁ ওকবা অনুত্তীর্ণ কঽ দেল জাগত ছল। ও দেখৈত ছল জে ওকব ঠাম আঠম-দসম পাস, থর্ড-সেকেংড ডিবীজনসঁ বী.এ. কবৈবনা লড়কাকেঁ নোকরী ভঽ জাগত অছি। ওগমে সভক লগ কোনো-নে-কোনো পৈববী বহৈত ছলৈ। সভ কোনো-নে-কোনো অফসবক, নেতাক আ পৈঘ নোকক জমায, বেটা, ভাতিজ, ভাগিন আ নন্না-চপ্পা কবৈবনা আকি কর্মচাবী বহৈত ছল। মোহনদাস সভ বেব অসফল ভঽ কঽ ঘুবৈত ছল ম্দা

ও অপ্পন আস নৈ ছোড়়নক। ও বুঝৈত ছন জে হিন্দুস্তানমে ভ্রষ্টাচাব বড্ড বাস ছৈ মুদা তখনো সৈকড়় ামে দস-বীসটা নোককেঁ অপ্পন মেবিট আ যোগ্যতাক দমপব নোকবী ভেটৈ জাগত ছৈ। আস্তে-আস্তে মোহনদাসকেঁ ওহো বুঝহমে আবি গেনৈ জে কতেক বাস নৌকবী নেন বৌনী নাগৈ ছৈ। ওকব বাপ কাবা দাস নগ জে নাখ-পচাস হজাব বহিতিযৈ তঁ দূ-তীনটা এহন নৌকবী হাথ জে ওকব হাথসঁ ছুটনৈ তগমে ও ঘূস দহ বহান ভহ সকৈ ছন।

কান বিতৈত গেনৈ। ওকব উমেব সবকাবী নোকবীক আঘবেখা পাব কবহ নগনৈ। ঘবক নোক সভ অসোথকিত হুঅএ নাগন। তেযো কস্তূবী বৌন-ভবোস দৈত ছন। কোনো গপ নৈ, সবকাবী নৌকবী নৈ ভেটৈত তঁ প্রাগবেটমে দেখি নে। নৈ তঁ কোনো ধংধা কহ নে। আগ-কাল্হি পঢ়়র্ব-নিখর্ব বেবোজগাবক নেন সবকাবক কএকটা যোজনা অছি। ফক্কট পানন কহ নে। অংডাক ধংধামে কতেক বাস ফাএদা অছি। মোমবত্তী, অগববত্তী আ আটা-দনিযা বনাবৈক কাবখানা খোনি নে। সবকাব বৈংকসঁ নোন দৈত ছৈ। এক বেব সাক্ষবতাক কাজ আএন ছন। শিক্ষাকর্মীক অস্থাযী কাজ ওকবা ভেটৈ সকৈ ছনৈ। মুদা বাদমে পতা চননৈ জে জাগ অহসবক নীচাঁ ওা কাজ ছন ও অপ্পন জাতি আকি এক-দূ বাজনীতিক পার্টীক নোককেঁ ওগমে ভবি বহন অছি। মোহনদাস নীচাঁক জাতিক ছন আ কোনো পার্টীক সদস্যা নৈ ছন।

মোহনদাস বড় সোঝ, সংকোচী আ স্বাভিমানী ছন। ঐ

কাজক নেন জতেক দৌগ–ভাগ কবঽ পড়ি তৈ, জতেক খফসব–হাকিমক হাথ–পএব জোড়ে পড়ি তৈ , এতএ–ওতএ জে খ্খাৰঽ–পিযাৰঽ পড়ি তৈ ও ওকবা সক্কমে নৈ বহৈ। ওগ সংগে নৌকবীক জকাঁ এতএ সেহো নড়াগ–ঝগড়া সেহো ছনৈ। এহন নৈ ছন জে মোহনদাস প্রতিস্পর্ধসঁ ডবাগ ছন, এহন বহিতে তঁ ও বী.এ. ক পবীক্ষাক মেবিষ্টমে কোনা খরিতে ? ক্ষদা ও জন্দীযে বুঝি গেন জে স্কূন–কॉনেজক বাঁহবক খসন জিনগীক খেন একটা এহন মৈদান খছি, জতএ ও গোন বনা সকৈত খছি জকবা নগ দোসবাকেঁ নংগড়ী মাববাক তাগতি ছৈ। খা ওা তাগতি পৈববী–পৈগাম, জোড়–তোড়, ঘূস, চিহ্নন–জানন, ধ্বফংদী এহন কতেক খবৈধ খা খনৈতিক বৌস্তুসঁ বনৈত খছি, জকবামে সঁ এক্কাটা মোহনদাসক বূতাক গপ নৈ ছন।

মোহনদাসে টা নৈ, ওকব কনিযাঁ কস্তূবী, বাঁপ কাবাঁ খা মায প্বতনীবাঁগ সভক ভীতব ওকব সবকাবী–খফসব–হাকিম বনৈক খাস মিঝা গেন, খাব তঁ নঽ দঽ কঽ সএহ নাগৈত ছন জে এহন কিছু ভেটৈ জাএ, জকবাসঁ বেবোজগাবী খা খসগব বহনাগসঁ মোহনদাসক পিঁড ছুটি জাএ খা ঘবক দানি–বোটী কোনো তবহেঁ চনএ নাগৈ। খহী বীচ কাবাঁ দাসকেঁ টী.বী. ভঽ গেনৈ। ও খাঁসি নাগন খা কফক সংগ খূন বৌকবঽ নাগন। ঠীক একব বাঁদ একটা খৈবাতী নেত্র চিকিসো শিরিবমে প্বতনীবাঁগক খাঁখিক গজোত চনি গেনৈ। কস্তূবীপব ঘবক কাজ–ধাজ খা বাঁহবক মজূবীক সংগ সাস–সস্ববক সেবা–স্বশ্রূষাক ভাব সেহো খাবি গেনৈ। সেহো এহন কানমে

जखन ओकरा स्वस्त्ागक जरूरी छलै, किएकि ओ गढ़्र्खारि छल। गर्भेमे देरदास खारि गेल छलै।

मोहनदासकेँ देखियो कऽ लागैत छल जे ओ कतेक दिनसँ रौमार खछि। गाममे ओ कम्म लोकसँ भेँट करैत छल। गाम-घरक लोकक खागू खारैसँ ओ न्वकायल रहैत छल। सभटा लोक लग एकटा प्रश्न लोग छलै- , "की कऽ रहल छी ? कोनो जोगाड़ भेल ? '

गामक लग कठिना नामक एकटा धार रहैत छल। मोहनदास गर्मीमे गामक दोसर लोक जकाँ धारक राँलूमे खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज रोपैक काज केलक। कलियाँ कस्तूरी टा लै, ओकर राँप-माय काराँ खा प्वतलीराँग सेहो ओतए जागत छल खा पलिया रैला कऽ धारक पालिसँ छोटे लत्तीकेँ पालि पटा कऽ खेती करैत छल। दुपहरिया खा रातिमे रौरा-रौरी पहरा दैत छल। रबख भरिमे खाठ-दस हजार टाका खही तरहे भऽ जागत छलै। कहुदा कतेक रास रिल कालक पालि पड़ैसँ धारक पालि रठ़ि जागत छल। मोहलदास संगे एहल दू रौर भेल छलै। कली-कली कऽ राँड़का खरसाद खा लिरासा ओकरा भीतर रैसए लगलै। जग दिल कस्तूरी देरदासकेँ जन्म देलक, ओग राति मोहनदास खप्पल घर लै घुरल। ओ कठिना धारक राँन्वपर लिचाँटे पड़ल खाकाशक सूल-सपाटकेँ ताकि रहल छल। संजोगेसँ ओग राति सेहो खमारशीक राति छल, जै राति देरदासक जन्म भेल। प्रसरक काल एक रौर तँ एहल भऽ गेलै जे कस्तूरी मरत की जीत। लालक गड़मे फँसि गेलासँ राँचा खधरीचमे

বহি গেল ছল আ প্রসর কবরেঁ লেল আএল রিলসপ্পবহিল ঘরঁবা কঽ কণ্ঠমে রেঁহোশ কস্তূবীকেঁ ফ্গল ঘোষিত কঽ দেলক।

আন্হব ভঽ গেল মায প্বতলীরাঁগ আ গৌরীসঁ খোঁখী কবৈত রাঁপ কারাঁ দাস, দ্নূ অপ্পল রেঁগৌ মোহলদাসকেঁ তাকৈত বহল, ফ্দা ও কতএ ভেটৈতিযৈ ? ও তঁ ওগ বাতি কঠিনা ধাবক বেতমে, অমারশীক আকাশকেঁ কোলো ফ্দা জলা ঘূবি বহল ছল, অপ্পল ভীতব জীরলক কোলো চিহ্ন তাকি বহল ছল। হ্নকব দেহক লসমে ওগ বাতি খূল লৈ, অমারশীক কাবি অন্হাব রঁহি বহল ছল। আ হ্নকব স্বন্ন ভেল মগজমে লীল লৈ, ও ডবাএল সপলা উঁমড়ি - ঘ্মড়ি বহল ছল, জে কোলো ভ্রষ্ঠ আ পতিত ভঽ গেল র্যবস্থাক কোখিসঁ জন্ম লৈত অছি।

মোহলদাস ওগ বাতি ধাবক কাতমে রেঁহোশ ছল, তগসঁ ওকবা অপ্পল রাঁপ কারাঁ আ মায প্বতলীরাঁগক টৈব স্বলা লৈ পড়লৈ আ লৈ কস্তূবীক কালরঁ; আ লহিযে ভিলসবে চাবি রঁজেক আসপাস অপ্পল লরজাত রেঁগৌ দেরদাসক কালরঁ।

ভোবক স্বরুজ উঁপব আর্বি গেল ছল, জখৈল বৌদক আঁচ গামসঁ এক কিলোমীটৈব দূব কঠিনা ধাবক বেতমে স্বতল মোহলদাসক লীল আ মূৰ্ছা তোড়লক।

মোহলদাস কতেক কাল ধবি ধীপল বেতপব ওহিলা পড়ল বহল। ওকব দেহ পাটৈল ছলৈ আ স্মৃতি মিজ্মড় ছলৈ।

ওকবা ঙা ৰ্‌ষ্মৰাঁমে কনেক কান নগনৈ জে ও খপ্পন ঘবক ওসাব খা খাঁগনমে নৈ, কঠিনাক ওগ ৰেতপব পড়ন খছি, জতএ কিছু দিৰস পহিনে ও মতীবা, ককড়ী, খবৰুজ খা ফম্হব-ঠৈমাঠৈব ৰোপনে ছন খা কানক পানিসঁ উঁগড্‌ম ধাবক পানি সভটা গীবি গেন ছনৈ।

মোহনদাস জখন ঘব ঘ্‌বন তঁ ওতএ গামক কতেক বাস নোক ঠাঠ় ছন। স্ত্রীগণ সেহো ছনৈ। নাগৈত ছন জে সভ কিযো ওকৰে নঽ কঽ গপ কবৈত ছন। কিএকি ওকবা দেখিযে কঽ সভ চ্‌প ভঽ গেন খা একাএকী সভ কিযো ওতএসঁ চনি গেন।

"পূত খানী দযঙুক কিবপাসঁ ৰঁচন। গামক নোক তঁ ত্তনসী-গংগাজন নঽ কঽ খারি গেন ছন।" মায প্বতনীৰাঁগ খাঁচবসঁ নোব পোছৈত কহনখিন। "জা কঽ দেখি নিযৌ। দেউঁতা সন ঝনকৈএ।'

মোহনদাস ওগ সোগবী ঘব গেন, জাগমে কস্তূবী এখনে কিছু কান পহিনে মৃত্‌ক ফাঁহসঁ ৰঁহাব ভঽ খপ্পন নেনাক সংগ খাটৈপব স্বতন ছন। ৰোঁবসীমে গোগঠাক সংগ নীম-খজৰাগন জড়িত ছন খা কোঠবীমে তকব ধ্‌খাঁ ভড়ন ছন। কস্তূবী থাকন খাঁখিসঁ মোহনদাসকেঁ

देखनक। ओकरा देखबेँमे एतेक असहायता आ ग्लानि छलै जे मोहनदासक करेज धकसँ बहि गेलै। एकटा आर पेटे आजुक दिन घरमे जन्म नइ लेनक। आरेँ कमसँ कम छह-आठ मास धरि सभ दिन आध सेर गायक दूधक इंतजाम करैए पड़ैत। कस्तूरीक लेल मास भरि देसी सोंठ, गुड़ आ घी आ हरदिक संग भात। छठ्ठी, बरहों आ पसनी (अन्नप्राशन) मे लोकक खुआबैक खर्चा सेहो। ऋदा तखने मोहनदासक नजरि कस्तूरीक बॅगलमे सूतल बँचापर पड़ल। मोटे-सोटे, गोल-मटोल बँचा निश्चिन्त भइ माएसँ सटि कइ सूतल छल। बॅड़ सुन्नर आ अबोध। सतमे कोनो देवताक बँचा लागैत छल। मोहनदासक भीतर पहिल्लुक बेर एक बाँपक संवेदना जन्म लेनक। हुनकर आँखि बँचापर सँ नै हटैत रहए। तखने बाँहर ओसारेसँ काबाँक चिकरैक अबाँज सुनाय पड़ल। "सीताराम डाकिया आएल छल। कोनो कागड देने छल।'

मोहनदास देखनक, एहि जिनाक सभसँ पैघ कोनियरीसँ लोकरीक लेल इंटरव्यू लेटर आएल अछि। मोहनदास लग पछिला कतेक माससँ एहन तरहक कार्ड नै अबैत छल। तँ की बातिमे कठिना धारक रेतमे जे किछु ओ सोचैत छल, ओकरे कोनो भनक आकाशक कोनो ग्रह-नक्षत्रकेँ लागि गेल छलै ? कोनो देवता हुनकर दुख आ आफत जानि गेल ? की कस्तूरी तँ नै जे आग भिनसरे बेटा जन्म देनक, रएह सतमे कोनो देवदूत अछि जे अप्पन जन्मक संग अप्पन परिवारक लेल एकटा नवँका जीवनक केराड़ खोलि रहल अछि।

𑒍𑒩𑒱𑒨𑓀𑒙𑒪 𑒏𑒼𑒪 𑒧𑒰𑒃𑓀𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒚𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒂 𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒤𑒞 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒃𑓀𑒙𑒩𑒫𑓂𑒨𑒴 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒧𑒼𑒯𑒢𑒠𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒫𑒏𑒰 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒦𑒼𑒩 𑒗𑒱𑒪𑒧𑒱𑒪𑒰𑒃𑒞 𑒪𑒐𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒠 𑒍𑒏𑒩 𑒯𑒵𑒠𑒋𑒧𑒹 𑒤𑒹𑒩𑒮𑒿 𑒂𑒬𑒰𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒯𑒩𑒱𑒨𑒩𑒏𑒰 𑒢𑒩𑒧 𑒠𑒴𑒥𑒱 𑒅𑒿𑒑𑒻 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒍𑒃 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒼𑒯𑒢𑒠𑒰𑒮 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒢𑒰 𑒢𑒻 𑒮𑒳𑒞𑒱 𑒮𑒏𑒪। 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒖𑒻 𑒑𑒰𑒕𑒏𑒹𑒿 𑒍 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒚𑒳𑒙𑓂𑒚 𑒥𑒳𑒗𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪, 𑒍𑒃𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒾𑒮𑒿 𑒤𑒹𑒩 𑒢𑒫𑒏𑒰 𑒣𑒰𑒞 𑒥𑒯𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪।

𑒍𑒩𑒱𑒨𑓀𑒙𑒪 𑒏𑒼𑒪 𑒧𑒰𑒃𑓀𑒮𑒧𑒹 𑒍𑒃 𑒠𑒱𑒢 𑒍 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒒𑓀𑒙𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒏𑒳𑒪𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒧𑒢𑒃𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒨 𑒂 𑒮𑒞𑒑𑒳𑒩𑒳𑒏 𑒏𑒥𑒲𑒩𑒠𑒰𑒮𑒖𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒖𑒣𑒻𑒞 𑒍𑒏𑒩 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒹𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒪𑒑𑒹 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒪। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒏 𑒖𑒼𑒬। 𑒋𑒏 𑒒𑓀𑒙𑒰𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒞 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒕𑒪, 𑒤𑒹𑒩 𑒋𑒏 𑒒𑓀𑒙𑒰𑒏 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒬𑒰𑒩𑒲𑒩𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰। 𑒧𑒼𑒯𑒢𑒠𑒰𑒮 𑒦𑒩𑒱 𑒧𑒼𑒢𑒮𑒿 𑒂 𑒖𑒰𑒢 𑒪𑒑𑒰 𑒏𑓄 𑒖𑒳𑒧𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒏 𑒒𑓀𑒙𑒰𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒞 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒍 𑒂𑒡 𑒒𑓀𑒙𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒧𑓂𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒏। 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒥𑒛𑓃 𑒂𑒮𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒻 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒖𑒥𑒰𑒥 𑒞𑒿 𑒍𑒞𑒋 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒕𑒪𑒻। 𑒥𑒮 𑒮𑒯𑒲 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒣𑒩 𑒮𑒯𑒲𑒏 𑒔𑒹𑒢𑓂𑒯 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒻𑒏 𑒕𑒪𑒻। 𑒋𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑓑𑓓𑓐𑓐 𑒧𑒲𑒙𑒩𑒏 𑒠𑒾𑒛𑓃, 𑒦𑒰𑒑𑒱 𑒏𑓄 𑒔𑒪𑒥, 𑒧𑒻𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒻𑒏, 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒝, 𑒩𑓀𑒑𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒬𑒰𑒩𑒲𑒩𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒒𑓀𑒙𑒰 𑒪𑒑𑒪𑒻। 𑒧𑒼𑒯𑒢𑒠𑒰𑒮 𑒋𑒞𑒋 𑒏𑒏𑒩𑒼𑒮𑒿 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒻𑒮 𑒢𑒻 𑒕𑒪।

𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒥𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒪𑒱𑒨𑒩𑒲𑒏 𑒦𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒠𑒤𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒖𑒰𑒮𑒿 𑒛𑒹𑒜𑓃 𑒮𑒋 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒔𑒳𑒢𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒢𑒰𑒧

প্বকাবন গেন, ওগমে পহিন্বক নাম মোহনদাসক ছন।

মোহনদাসক দ্বদএ ধবধড় কহ বহন ছনৈ। একটা এহন গপ ভহ বহন ছন। খার্ব কতেক জন্দী ওকব জীরনক খনিশ্চিততাক খংত হোগর্বনা ছনৈ। সভ মাস ওকবা দবমাহা ভেটতৈ। ঘবমে সভ দিন চূল্হি জবতৈ। খা তবকাবী র্বনতৈ। র্বাপ খা মাযক গনাজ হেতৈ। দেরদাসক নানন-পানন খা পঢ় াগ নীকসঁ হেতৈ। কস্তূবীকেঁ মজূবীমে দোসবা জকাঁ নৈ খটহ পড়তৈ।

কোনিযবীক র্বার্বূ মোহনদাসসঁ হ্নকব সভটা সর্টিফিকেট খা মার্কশীট জমা কবেনক হ্মদা র্বী.এ. মার্কশীট দেখৈত ও কহনক, "খাঁয হো, এখন ধবি কোনা নৈ খহাঁ নোকবীক জোগাড় কহ সকনিঐ? একবামে তঁ খহাঁকেঁ থোড়-র্বেস নমবা-পহুঁচ কৈনাসঁ কোনো নীক সন নোকবী ভেট জৈতিযৈ।"

"জ্বাগনিংগ কহিযাসঁ হোএত?" জখন মোহনদাস প্বছনক তঁ জরার্বমে র্বার্বূ কহনখিন, "জ্বাগনিংগে র্ব্যূ। ঐ হফতামে ভীতবে-ভীতব কাগজী কাজ পূবা ভহ জাএত খা খগিনা হফতা ধবি নিযুক্তি পত্র খহাঁক পতাপব পঠা দেন জাএত। ...র্বেসীসঁ র্বেসী পংদ্রহ দিন নগা কহ চনূ।"

মোহনদাসক ঘবমে একটা নর্ব যুগ খারি গেনৈ। পোস্ট খাফিসক খাতামে জে দূ হজাব টকা ছন তগসঁ

মোহনদাস নরঁকা মসহবী, এক সেব দেশী ঘী, চিন্নী, সোঁঠ, কিছু নরঁ রঁবতন আ কস্তূবী আ দেবদাসক নেন কিছু কপড়া কিননক। অপনা নেন সেহো ও নীন বংগক জীসক পৈঁট, টৈবিকাঁটক চৌখানা রঁনন অংগা, তীস টকাক পর্স আ পাঁচ-পাঁচ টকাক দূ টা রুমান কিননক। পবসূকেঁ কহি কহ ও রোজ ভিনসবে আধ সেব দূধক সেহো ব্যবস্থা কহ দেনক। গামমে ও গপ হ্অএ নাগন জে মোহনদাসকেঁ আখিবীমে ওবিযংটন কোন মাগংসমে নীক সন নোকবী ভেটি গেন অছি। গামমে জে সভ ওকবাসঁ সোঝ মুঁহ গপ নৈ কবৈত ছন, সেহো ওকবাসঁ মেন-জোন রঁঠা এরঁ শুরু কহ দেনক। জে সভ ওকব মেহনতি আ পঠাক হঁসী কবৈত ছন, সেহো নীকসঁ রাঁজরঁ শুরু কহ দেনক, "ও তঁ হেরাঁকে ছনৈ। এহন ডিগ্রী আ পঢ়াগক রাঁদ মোহনদাস কহিযা ধবি খানী রৈসিতিযৈ।" কিছু নোক সভ ওহো টিপ্পণী কেনক, "অসনমে মোহনদাস জৈ রঁসহব-পনিহা জাতিক অছি, ওকবা আরঁ বিজরেশনমে বাখি দেন গেন ছৈ। নৌকবী ওকবা কোটাসঁ ভেটন ছৈ কিএকি ঐ জাতিক কোনো দোসব নড়কা রী.এ. ছেরেঁ নৈ কবৈ।"

ওগ হফতা মোহনদাসক ঘবমে এক রেঁব খীব সেহো রঁনন আ এক রেঁব আনূ-মটবক মসল্লা সেহো। মায প্বতনীরাঁগ অপ্পন আঁখিক অন্হাবকেঁ রিসবি গেনী আ আংগ্বসঁ ছুরি-হথোড়া যা দহ সূপমে পসবন দানি আ চাউঁবসঁ কাঁকোড়া রিছৈ নাগন। তোড়াক তেন আ নূন-অমচুবসঁ নান মিবচাগক চটনী সেহো রঁনৌনক। রাঁপ কারাঁদাস গণেশ ছাপ মংগনূবী রীড়াক পূবা কঞ্চা আ নরঁকা জহাজ ছাপ সনাগক ডিরিযা কিননক, জকব

काठीकेँ बगड़पट्टीमे अाङुसँ घिसनासँ फर्वसँ आगि जबि जागत छल। घबक ग़ाहब ओसावपब बैसल, स्वट्टा मारैत कार्रा कतेक बाति भोकाबि पावि कह करीबदासक भजन गओनक आ ओकवा नै तँ एक्का बेंब खोँखी भेलै आ नहियेे खूनक संग कफ ग़ाहब निकललै।

एक दिन भोवे-भोव आन्हव प्वतनीबाग आँगनमे ख्शीसँ घूमि-घूमि कह नाचैत जोब-जोबसँ गार्बह नागल, "टैबर्रा-प्वतड़ँ की कोठबिया मानेे खनोपी मगना खोंाथा डाबिस हरैं। भाग आगस, कनेस गगस... ! ! ! किसमत जागिस...'

जै हो मनगहा माग... ! तोवाने गोब नागी सतग्वह्व महवाज... ! ! ! जै हो...जै हो ! '

सभ किओ देखनक जे मोहनदासक आन्हव मायक आँखि खनोपी मैनाक जे खोता कस्तूवी-देरदासक कोठवीमे देखने छल, ओ सत छल।

मोहनदास दोसव हथतासँ कोनिगवीक चिट्ठीक बाट जोहि नागन। स्नदा ओग हथता डाकिया नै आएन। एकव बाँदक हथता सेहो बीति गेल। बीस-बाँगस दिन भह गेल छलै। पता चललै जे कांसाकोड़ाक कंचनमन शर्माकि बेटा संतोष कमाब शर्माकेँ चिट्ठी पहिने भेटै गेलै आ ओ नोकवी सेहो ज्वाइन कह नेनक। मोहनदास बेचैन भह गेल। ओ बाज्य पविवहनक बस पकड़नक आ कोनिगवी पहुँचन। भर्ती दफ्तवमे ओ

রাঁবূ কহনক জে এখন নেষ্টব পঠাওন জা বহন খছি। পোস্ট তীন টা ছন, চ্নন গেন ছন পাঁচ টা নোক। ক্ষদা জগহ নৈ রঁঠ় াওন গেন তঁ দূ কৈঁডিডেষ্ট কষ্টত। মোহনদাস ডবি গেন। ওকব ম্বাগ পড়ন চেহবা দেখি কহ রাঁবূ ভবোস দেনকৈ, উম্মীদ খছি জে দূ টা পোস্ট রঁঠ়ি জাএত খা নৈ রঁঠ়ত তঁ মোহনদাসক নাম নৈ কষ্টত কিএকি নিস্টমে হ্নকব নাম পহিন খছি।

মোহনদাস ঘ্বি গেন। রাঁবূ ওকবা একাধ মাস গঁতজাব কবৈ নেন কহনক খা পূবা ভবোসা দেনক। ক্ষদা মোহনদাসক ভীতব কিছু মিম্বা গেনৈ। ওকবা চিন্তা হ্খএ নগনৈ জে পবসূ মাস রিঁতৈত দিনক খাধা সেবক দূধক পূবা হিসাবঁ দেরঁহ পড়তৈ। জোশিমে এতএ–ওতএ কিছু উঁধাবী সেহো ভহ গেন ছনৈ। খারঁ সভটা কোনা চুকাওন জাএত? কস্তূবী ওকবা ঢাঢ়স বাখহ নেন কহনক। মায প্বতনীরাঁগ মনগহা মাগসঁ গছনক। হঁ, কারাঁ দাস কিছু দিনসঁ চুপ বহহ নাগন। বাতিমে ভজন গাওন ও ছোড়ি দেনক খা ওকবা খোঁখী খারঁহ নগনৈ।

ডেঢ় মাসক রাঁদ মোহনদাস ফেব ওবিযংষ্টন কোন মাগংস গেন। কতেক প্রতীক্ষা কেনাক রাঁদ রাঁবূ ওকবা ভবতী দফ্তবক ভীতব খারঁহ দেনক। ও ওকবা খাব গংতজাব কবৈনে কহনক। ক্ষদা ঐ রেঁব ও গংতজাব নেন কোনো খংতিম সমএ নৈ রঁতেনক। ঐ রেঁব ওকব খারাজমে পহিনে সন খপনাপা সেহো নৈ ছনৈ।

মোহনদাস চনৈসঁ পহিনে জখন জোব দহ কহ প্ছনক

तँ अमनसँ ओ कहलक, "ओना पता करबाक जरूरत की अछि ? चिठ्ठी भेटैत तँ अपने आप पता भऽ जाएत।' फेर ओ कहलक, "असलमे ओग दिन कैंडीडेटकेँ सलेक्ट करै लेल रिहावसँ कोन गंडियाक जे अहसव आएल छल, ओ एकटा पोस्टपर अप्पन जमायकेँ फिट कऽ देलक। सभटा डुंपर रनाक खेल छी।' मोहनदासक आँखिक आगू अन्हार पसरऽ लगलै।

अगिला मास मोहनदास फेर पता करै लेल गेल। कतौसँ किछु भऽ जाए। भोर दस बजेसँ लऽ कऽ दुपहरियाक साढ़े तीन बजे धरि ओकरा दफ्तरक बाहर बैसल रहऽ पड़लै। चपरासीक चिरौरी-विनतीक बाद जखन ओकरा भीतर आबऽ देल गेलै तँ पता चललै जे पहिल्लुक बाबू छुट्टीपर गेल अछि आ ओकरा ठाम जे दोसर मोटका-सन बाबू ओकर काज देखि रहल अछि, ओकरा ओग फाइलक कोनो जानकारी नै छै। मोहनदासकेँ अप्पन मार्कशीट आ सभटा ओरिजनल प्रमाणपत्र केँ लऽ कऽ चिन्ता हुअए लगलै। जखन ओ एकरा दिया पुछलक तँ नरका मोटका बाबू कहलकै जे अहाँक सर्टिफिकेटक हम की करब ? नौकरी नै देल जाएत तँ रजिस्ट्रीसँ आपस घुरा देब, नै तँ अगिला बेर आबि कऽ अप्पन संगे लऽ जाएब।

मोहनदास फेर घुरि गेल। ओकरा मोनक सभसँ भीतरी कोन सेहो नीकसँ बुझि गेल छल जे ओकर जिनगीक ठूठ गिरहसँ जे नरका कोंपरक कल्ला आश्चर्यसँ

ৰ্হবাগৰ্না ছনৈ, আকাশিক দেৰতা ওকৰ ৰিপতিকেঁ জানি, ওকৰা নেন দযাক জে ৰ্বুন খসেনে ছন, তকৰা দ্ভাগ্য আ ভ্রষ্ঠাচাৰক নূ ঝৰকা দেনক।

আৰ্ কোনো আস কতৌসঁ নৈ ৰ্বাঁচন অছি। জৌঁ ওকৰা সংগ কোনো নকদী জমা-পূঁজী হোগত তঁ কোনো দনানসঁ ভেঁট কঽ টৈকা ঙঁপৰ ধৰি পহুঁচা কঽ ও ঐ নোকৰী কেঁ নঽ নিতএ। মোহনদাসক হানত গামক ধনীক নোক সভসঁ পহিনে ৰ্বুঝি গেন আ পহিনে জকাঁ ও ফেৰ ওকৰ পঠ়াগ আ প্রতিভাক হঁসী কৰঽ নাগৈ গেন। ওগ দিন মোহনদাস অপমানক কড়ু ঘূঁট পীৰ্ কঽ বহি গেন, জাগ দিন পঁডিত ছত্রধাৰী তিৰাৰীক ৰ্বেঁটা ৰিজয তিৰাৰী, জে ওকৰা সংগে কঁানেজমে পঠ়ৈত ছন আ থর্ড ডিৰীজনসঁ ৰ্বড় ম্হশ্কিনসঁ ৰ্বী.এ. পাস ভঽ সকন ছন হ্মদা অপ্পন সম্বৰক তিকড়ম আ পৈৰৰীসঁ প্বনিসমে সৰ্-ঙস্পেক্টৰ ভঽ গেন ছন, ওকৰাপৰ গৰ্বৈজ কঽ ৰ্বাজন আ কহনক, "মোহনা, পৰস্বএ হম সৰকাৰী যোজনামে দস টা মহীস কিননে ছী। ডেযৰী খোনি বহন ছী। জৌঁ ঠীক ৰ্বুঝী তঁ মহীসসক সানী-ভুস্সা, গোঠ্ন্নাক কাজ কস্তুৰী ভঙঁজীক সংগ সম্হাৰি নিঅ। সভ মাস পহিল্বক তাৰীখকেঁ দৰমাহা তঁ ভেঁটৰেঁ কৰত, গঁদিৰা আৰাস যোজনামে হম অহাঁকেঁ মকান পক্কা সেহো কৰৰ্বা দেৰ্। ভঙঁজীক মোন নাগি জাএত হম্মৰ গোসাৰেমে।'

"সোচি কঽ ৰ্বতাৰ্বৈত ছী।' মোহনদাস জৰ্বাৰ দেনক আ অপ্পন ভীতৰ ঙঠৈত অপমানক আগিকেঁ হ্মঁহ ঘ্মা

कऽ न्वका नेनक। रिजय तिरावीक स्मँहसँ कस्तूवीक नाम स्वनि कऽ ओकवा भीतव कतौ अप्पन असमायता आ निर्जनताक अहसास गहीव भऽ गेनै आ एकटा डव सेहो दिमागक कोनो-कोनामे आवि गेनै। जन्दिये किछु कवए पड़तै, नै तँ ओकव पविवाव टूटि कऽ छिडिया जाएत। कोनो एहन काज, जे ओकवा वशमे छै। जकवा नेन ककवो मदति आ तिकड़मक जरूवत नै छै। कस्तूवीक स्वन्नव चेहवा आ रिजय तिरावीक शातिव आँखि रेव-रेव ओकवा आगू घुमि जागत छन।

ओग कान ओ सोचि नेनखिन जे ओ अप्पन प्रमाणपत्र, अंक-सूची आ दोसव कागचक पता कवरा नेन ओविपंटेन कोन मार्गस नै जाएत, किएकि ओग कागचक टुकड़ाक मून्य कतौ किछु नै बहि गेन छनै। जग आधावपव नोकवी भेटैत छन आ सवकावी योजनाक नाभ उंठाओन जागत छन, ओ आधाव ओकवा सन नोक नग नै छनै।

मोहनदास ओग बाति खेनाग खेनाक बाद घवमे नै स्वतन। कस्तूवीसँ भोवमे घुवैक गप कहि कऽ कन्हापव कोदावि वाखि आ वोपा टाँगि कऽ ओ कठिना धाव दिस चनि गेन आ भवि बाति कोनो रंताह प्रेत सन मतीवा, खवबूज, ककड़ी, तवबूज, टमाटव, भट्टा, ककड़ी नगावैक नेन पनिया बनावैमे नागन बहन। भोव साढ़े चावि बजेक आसपास, जखन उत्तवबविया कात ध्रुवतावा अप्पन पूर्ण आभामे दोसव तावाक एक्का-एक्की मिनैनाक बाद चमकि बहन छन, मोहनदास अप्पन माथ आ छातीक पसेनाकेँ पोछि आ कनी-कनी बुनैत

কঠিনাক ধাবমে ঠাঠ় ভ৽ গেন।

থঁজ্নিমে পানি ভবি ও থপ্পন মাথপব ছীঁটা মাবনক থা দ্নূ হাথ জোড়া কে৽ রাঁমান গড়সঁ কহনক, "রঁস থহাঁ টা থাঁখি নৈ মোবরঁ কঠিনা মায। তোহবা মনগহা মাযক কিবিযা। হমব রেঁটা দেরদাসক কিবিযা। হমব পসেনাক উঁপজিসঁ থপ্পন পেটক জঠব থাগি নহি র্নাএরঁ কঠিনা মায... ! নৈ তঁ...দযঙু কসম, রীচ থসাঠ় তোহব ধাবমে রাঁন-রঁচা সংগ কূদি কে৽ তোহব পেট হম ভবি দেরঁ... । '

মোহনদাস জখন সতগ্বক করীবক নাম জপৈত কঠিনা ধাবসঁ রাঁহব থারি বহন ছন, তখৈন ওকব থাঁখিসঁ রঁহৈত নোব কঠিনা ধাবক পানিমে ঢরঁকি কে৽ রঁহি বহন ছন, জতএ ছোট-ছোট কোতবী মাঁছ ওকব নূনকেঁ চীখৈ নেন এক-দোসবাসঁ উঁপরৌঁম কে৽ বহন ছন।

জখন মোহনদাস ঘব পহুঁচন তঁ ও দেখনক জে কস্তূবী পূবা থাংগৈনকেঁ গোরঁবসঁ নীপি কে৽ বাখনে ছন, মায প্বতনীরাঁগ সূপপব মতীবা, কদ্দূ, খবরূঁজক রিযা পসাবি কে৽ থপ্পন থাংগ্বসঁ নজরিজ্জীকেঁ রীছ বহন ছৈ, রাঁপ কারাঁদাস পবছীক কোনমে রাঁসিক কমচী নিকানৈমে নাগন ছৈ থা মাঁম থাংগনমে ওকব ডেঠ় রঁবখক রেঁটা দেরদাস খ্বপীসঁ ঘাসকেঁ ছিনৈক র্তব্দরঁনা খেন খেনাগমে মগন ছৈ।

ওকব র্নরাঁক থাহট স্বনি কে৽ প্বতনীরাঁগ থপ্পন মূড় াকেঁ

ঊপব কেনক আ কিছু নৈ নখা দৈৰঁনা আঁখিসঁ অপ্পন ৰেঁটৌক আঁখি মিনা কঽ ক্ষস্কাগত কহনক, "জানৈত ছীহীঁ মোহনা, আগ অনোপী মৈনাক খোতামে মাদা মৈনা দ্গ টৌ ৰঁচাকেঁ জন্ম দেনক। '

প্বতনী ৰাঁগ ৰেঁসী খ্শি হেতিযৈ জৌঁ নখা দৈতিযৈ জে ওকব গপ স্বনি ওকব ৰেঁটৌ মোহনদাসক চেহবাপব খ্শী কোন তবহেঁ দিপদিপা বহন ছৈ।

ওগ দিন–বাতিমে ৰিযাবীক ৰাঁদ মোহনদাস কস্তূবী আ দেৰদাসকেঁ সেহো অপনা সংগ কঠিনা ধাব নঽ গেন। কস্তূবী অপ্পন ডাঁড়ক খোঁগছ–ওটনীমে কতেক বাস ৰীযা বাখনে ছন আ কান্হপব দেৰদাসকেঁ বৈঁসৈনে ছন। মোহনদাসক কান্হপব বাঁপী, কোদাবি আ ৰঁগগক ডোবী ছন।

দেৰদাস কনী কানমে ধাবক কাতক ঠাঠ় হৰাক ঝোঁকসঁ ভেটৈৰঁনা স্বখমে ডূমি কঽ গহীব নীনমে সূতি গেন ছন। কস্তূবী আ মোহনদাস ৰীযা ঙঁগাৰৈঁক পনিযামে গোৰঁবক খাদ দঽ কঽ অনগে–অনগ হৃন আ তবকাবীক পনহা ৰঁনাৰৈঁমে নাগন বহন। দ্গ ঘঁটৌমে কাজ ভঽ গেন। কস্তূবী জখন ৰঁাসন–ঘৈনাসঁ কঠিনাসঁ পানি আনি কঽ ৰীযাকেঁ পনিযামে পটৌ বহন ছন তঁ আকাশিমে টিমটিমাগত বহন তাবাক গজোতমে মোহনদাস ওকব স্বঁদবতাকেঁ দেখি বহন ছন। আকাশিক নক্ষত্রসঁ ঝবৈত সনেটৌ চানীক মদ্ধিম আভামে কস্তূবীক পিবসাম দেহ

মনগহা মাযক মঠ্ যাক রাঁহব বাখন ওগ প্বনকা পাথবক মূর্তি জেহন দেখা দ২ বহন ছন, জে রঁহ্ন্ধে পোখবিকেঁ কোড় কান নিকনন ছন খা জেকবা খানি ক২ নোক সভ ওতএ বাখি দেনে ছন। দেহ, ডাঁড়্, রাঁহি, ছাতী, জাঁঘক ঠীক ওহিনে কঠোর খা ওহনে স্বঁদবতা, জনা কোনো কাবীগব ছেনী-হথৌবী নহ ক২ মন নগা ক২ রঁবখমে হ্নকা বকম-বকম গঠ়নে ছন।

খধাসঁ রঁসী বাতি রীত গেন ছন। টিঠহবী খা পনক্ষকবীক শোব কখনো-কান স্বনা জাগত ছন। কঠিনা ধাবক ভাবী হরাক ভাবীপনমে কস্তূবীক দেহসঁ উঁঠএরঁনা পসেনাক গঁধ মোহনদাসকেঁ চাব্ধ দিসসঁ ঘেব নেনক। ঙা স্ত্রী ওকবাসঁ র্যাহ কবৈ কান কোন সপনা দেখনে হেতী খা ওকবা কী ভেঠৈন ? ভোবসঁ নহ ক২ বাতি ধবি, সভ দিন রিনা নাগাক, সভ স্বখ-দ্খ, হাবী-রঁমাবী, ভূখ-প্যাসমে ও ওকবা সংগ ঠাঢ়্ ছন। মোহনদাসক মনমে কস্তূবীক নেন রঁড়্ সহান্বভূতি খা খামৌযতা খাএন। ও ওকবা একটৈকসঁ তাকি বহন ছন। কস্তূবী রাঁসনকেঁ রান্বপব টিকৌনক খা ঠাঢ়্ ভ২ ক২ খপ্পন জূড়্ া রাঁহ্ন্হ২ নাগন। মোহনদাস উঁঠি ক২ ওকবা নগ খাএন। কস্তূবী চ্প ছন। "ঐ কস্তূবী, করঁড্ডী খেনরঁ ?' মোহনদাস হ্মস্কাগত কহনক, "হ্ল...তূ...তূ... !'

ও কস্তূবীক রাঁহিকেঁ পকড়্ নেনে ছন খা ওকব রঁগনী খা পেটৈমে গ্বদগ্বদী কব২ নাগন ছন। কস্তূবী ওকবাসঁ ছূটৈ২ নেন ছটপটৌ বহন ছন, "ঙহ...ঙহ... ! দেরদাস

জাগি গেন... ! কী কবৈত ছী ? ছোড়ি ... দিখ...হমবা ছোড়ূ নে ! ...ছোড়ূ... ! ' কস্তূবী দেখনক জে মোহনদাস ওকবা ছোড়ি বঁনা নৈ খছি তঁ ও ওকবা ধক্কা দঽ দেনক খা ঘ্বি কঽ কঠিনা ধাব দিস ভাগি গেন। ও কোনো উঁন্নসিত স্বতংত্র হিবণ জনা তবপান মাবি নক্ষত্রক ধ্ঁখাগত সিনেঠৌক ফবীছমে নীচাঁ দূব ধবি পসবন ধাবক বেতপব দৌগি বহন ছন।

"খা...খা...খা... ! হমবা ছবৌ....তঁ জানিযহ.... ! খা...খা.... ! ' ওকব খারাজ সভ পন দূব ভেন জাগত ছন খা ও প্রতি পন ছাহ বঁনৈত খন্হাবমে রিঁনাযন জা বহন ছন।

"দ্দ্...ত্ত...তূ...তূ...তূ...ত্ত...তূ...তূ... ! ' কহৈত মোহনদাস খূবঁ জোবসঁ ওকবা দিস দৌগন।

কস্তূবী খাওব দম নগৌনক। মোহনদাস সভ পন ওকবা নগ খারিঁ বহন ছন। ও খাব জোব নগেনক খা কঠিনা ধাবক কাতে-কাত, পানিমে ছপ-ছপ কবৈত পূবা জী জানসঁ ভাগৈত চনি গেন। "খা...খা... ! ছূবৌ হমবা...তঁ হম মানবঁ ! ' ওকব দম হ্নঽ নগনৈ। ও হাঁফি নাগন ছন। মোহনদাসক "দ্দ্...ত্ত...তূ...তূ...' সভ ক্ষণ ওকব কান নগ খারিঁ বহন ছনৈ। কস্তূবী ব্ঁনৈ ছন জে ও খারঁ মোহনদাসকেঁ খাব ছকা নৈ সকত, তকব বাঁদো ও খাখিবী জোব নগৌনক। হ্মদা তখৈন ধবি এক্ক তবপানমে মোহনদাস ওকবা পকড়ি নেনক। দ্নূ কঠিনাক ধাবমে ছপাকসঁ খসি গেন। "ছোড়ূ... ! ঐ...ছোড়ূ ! ' ও ঝগড়া কঽ বহন ছন খা মোহনদাসক উঁপব পানি উঁপছি বহন ছন হ্মদা মোহনদাস ওকবা

ছোড়াঁক রঁদনা ওকবাসঁ খাব সটৈন জা বহন ছন।

ধাবক ভাবী হরামে দ্নূক সাঁস এক–দোসবামে পৈসি বহন ছন। ও জেহন তবহে ওকব দেহমে খপ্পন খাংগ্বসঁ গ্বদগ্বদী কঽ বহন ছন, ওগসঁ কস্তূবীক গবসঁ নির্হিঝ কিনকাবী খা হঁসী রঁহবা বহন ছনৈ। ওকব ছদ্ম প্রতিবোধ শিথিন ভঽ বহন ছনৈ খা ও সেহো মোহনদাসকেঁ দূব ধকেনৈরঁনা দিখারাক সংগে ওকব দেহসঁ সটৈন জা বহন ছন। তহিনা জনা নোহাক কোনো ঠ্কড়া কোনো চ্রঁকসঁ সটৈ ছৈ।

মোহনদাস কঠিনাক পানিমে ওকবা খসা দেনক খা ভুঁপব সসবি কঽ কহনক, "খহাঁ রঁড়া নীক ছী খা কতেক স্বঁদব ছী কস্তূবী... ! দেখূ হমবা... ! ' খা ওকব চ্ম্মা নেনক। রৈশাখ ও গবম বাতিমে দূব খাকাশিমে টিমটিমাগত তাবাক মদ্ধিম সনেটী গজোতমে, কঠিনা ধাবক শীতন পানিমে দূগটা জরান গোঁছ রা পাঠা ন মাঁছ সন ও দ্নূ উদ্দাম খা নির্বঁধ ছপাছপ কঽ বহন ছন।

রীচ–রীচমে কস্তূবীক কঁঠসঁ উঠৈত হঁসী খা কিনকাবীক সংগ মোহনদাসক ভাবী সাঁসসঁ নিকনৈত "হূ...ত্ত...তূ...তূ' বাতিক নিস্তব্ধতাকেঁ চিবৈত জাগত ছন।

থাকন কস্তূবী ধাবসঁ ঘ্বি কঽ ভীজন ন্বখামে দেরদাসক রঁগনমে স্বতি গেন ছন হ্মদা মোহনদাস নৈ জানি কতেক

बाति धरि कठिनाक कातक उँचनी धाबमे पड़ऽल बहल,
आकाशीक देवताकेँ तकैत गारि बहल छल,

"पंछी-परौना झाँझैत अछि,
कतऽ गेल हे संगराती, कबउँदा हबत हे...
कबउँदा हबत हे...
मोर राँनी हे उँमरिया कबउँदा रँता तोना के...'

ओकर गबमे आग एकटा एहन स्वर उतरि गेल छल जे दूर धरि स्वना दैत प्रनक्षकरी आओर टिटिहरीक रौल सेहो ओकरा नग आरि कऽ संगत करऽ लागल।

राँदमे शीवदा ओग बातिक स्मृति रँनल।
ओग रँवख तँ ककड़ी-तवरूँज आओर तवकावीक हसिन नीक भेल ख्दा राँजाबक भार मंदा भऽ गेनासँ कमाग कोनो आस नै भेलै। कस्तूरी गढ़ आबि छल, तकर राँदो ओकरा दोसरक मजूरी करहि पड़ैत छलै। मोहनदास सेहो जी-तोड़ मेहनति करैत छल। कठिना एक रँव तँ ओकर प्रार्थना स्वनि नेने छल ख्दा राँदमे रँसी कान ओगमे पानि ममा जागत छलै। कारा दासक खोँखी रँठऽ नागल छलै। ख्दा छह किलोमीटर दूरक कस्राँक सरकारी अस्पतालमे एकटा खूर नीक डाँक्टर आबि गेल छलै, डाँक्टर राकलकव, आ मोहनदासकेँ बुझेलै जे टी.री.क नेल अस्पतालमे ख्हत दवाँग भेटैत छै आ ओकर राँपकेँ एकर पूरा

কোর্স কবরাঁক চাহী।

ও হুনকা একটা প◌ॉনিখিনক থৈনীমে দূ মাসক দরাগক খ্বাক ভবি কঽ দেনক ক্ষদা কারাঁদাস নৈ তঁ সমএপব খ্বাক নৈত বহথিন আ নৈ পবহেজে বাখি সকৈত ছন। খাগ-পীরৈঁক কোনো ঠেকান নৈ ছনৈ। মায প্বতনীরাঁগ আঁখিক নেন ড◌ॉকিষ্টব রাকণকবকেঁ কহনখিন জে আপবেশনসঁ চানীস পৈসা গজোত ঘ্বি জাএত ক্ষদা একবামে আঠ-দস হজাব টৈকাসঁ কম খর্চা নৈ হোএত। ও মোহনদাসকেঁ ভবোস দেনক জে জৌঁ জিনামে কোনো নীক আ ঙমানদাব কনেক্টব আওত তঁ ও ওকব ঙা কাজ কবরাঁ দেত। ক্ষদা রঁবখপব রঁবখ রীতন গেন, এহন কনেক্টব নৈ আএন। রীচমে এক রেঁব একটা স্বযংসেরী সংস্থা দিসসঁ একটা নড়কা আ একটা নড়কী রঁসহব-করীবপংথীক রঁস্তীমে আরঁহ নাগন ছন। ও কস্তূবী আ মোহনাকেঁ কতেক বাস আশ্বাসন দেনক জে জন্দিযে ও এহন কোনো ব্যরস্থা কঽ দেত জে ওকব পবিরাব অপ্পন গ্বজব-রঁসব আবামসঁ কবঽ নগতাহ। ও কতেক বাস অর্জী সেহো নিখনক আ ওকবাপব মোহনদাসসঁ দস্তখত সেহো কবৌনক। ক্ষদা ফেব ওকব আএরঁ-জাএরঁ রঁদ ভঽ গেন। পতা নাগন জে দুনূ নড়কা-নড়কী ব্যাহ কঽ নেনক আ ও দিল্লী চনি গেন। ও নড়কী আরঁ কোনো টী.রী. চৈননমে কাজ কবৈত অছি আ নড়কা দিল্লীমে অপ্পন আগ.এ.এস. ফূফাক সহাযতাসঁ ম্যুগীমে বহৈরঁনা নোক নেন কাজ কবৈএ রঁনা সংস্থা খোনি নেন ছন আ দেশ-রিদেশক জত্রাপব বহৈত অছি।

समए रितैत गेल। मोहनदास आ कस्तूरी अप्पन मेहनत-मजूरी आ मनगहा मायक शुपासँ कोनो तरहेँ दिन गुजारि रहल छल। शारदा दू बरखक भऽ गेल छल आ देवदास चारि बरखक। कारी आबि बैसी-खाटपर पड़ल रहैत छल। बगलक डोबी कखनो कान बैना दैत छल वा बाँसक कमची निकालि दैत छल। ओदा ओकर खोँखी बढ़ि तेँ जा रहल छल। ओकर छातीक एक-एकटा पसली गानल जा सकैत छल। कतेक बेर ओ खाँसैत छल तँ कफक संग खूने टा नहि, लागैत छल जना मौसक थक्का बाहर निकलि रहल छै। ओम्हर डॉक्टर शाकालकरक बदली नेता-अफसर कोनो दोसर जिलामे करा देलक। आबि मोहनदासकेँ अस्पतालसँ टी.बी.क ओदत गोली दैबैना किओ नै छल। जखन कखनो ओ जागत छल, ओ अगिना हरता आबैक लेल कहि देल जाएत छल। ओकर बाप कारी एतेक कमजोर भऽ गेल छल जे खोँखीकेँ थूकनाक बाद, खाटपर पटायल-पटायल चुपचाप धरतीकेँ देखैत रहैत छल।

चिड़ै आ माछी धरि ओकर खोँखीक आराज चिन्हि छल, पता नै कतएसँ मटा आ चिड़ै ओकर कफ दिस झुंड बना कऽ दौगि पड़ैत छल। एक दिन तँ कारी हदसि गेल, जखन ओ देखलक जे ओकर खोँखी करैत देवी गिद्धा माछी भिनभिन करैत ओकर चारू दिस मँडराबऽ लागल। कारीकेँ अप्पन अंत लग आएल बुझाए लागल छल। ओ पुतलीबाँगकेँ शोर कर चाहलक ओदा जखैन

ধবি ওকব খাৰাজ নিকনিতিযৈ, তকব পহিনে খোঁখীক তেজ দৌবা ওকব গবকেঁ ফেবসঁ খপ্পন কৰ্ক্টামে ক৽ নেনকৈ খা খাখিবমে ওতএসঁ খাঁজ্‌ব ভবি খূন খা মাঁসক থক্কা ৰাহব নিকনন। মোহনদাস খা কস্তূবী কঠিনাক পনিযা সংভাৰৈ নেন জা চ্‌কন ছন, ঘবমে খান্হব প্বতনীৰাঁগ টৌ ছন। ও দৌগি গেন, গিবৈত-পড়ৈত খাএন খাওব খপ্পন বব কাৰাঁকেঁ ছবি-ছবি ক৽ কান৽ নাগন। পৌককাসঁ ওকব ঠেহ্‌নমে গঠিযা ধ৽ নেনে ছন। কাৰাঁ ৰৈহান বৈ। কনী দেবীমে ওকব সাঁস স্থিব ভেন খা প্বতনীৰাঁগকেঁ ৰিগড়ি ক৽ কহনক, "কানৈ কিএ ছী খঁধবী ? হম এখন নৈ মবৰ। দেৰদাসক ৰিযাহ খা শাঁবদাক দ্‌বাগমন কবা ক৽ মবৰ। ...নৈ কানূ। '

কাৰাঁ খপ্পন কনিযাঁক মাথপব হাথ ফেবনক খা কহনক, "দিখ হমবা ৰাঁস খা ফবহড়ি। হম ৰাঁসক কমচী ছীন দৈত ছী। '

(এতএ ঠাঢ় ভ৽ জাঙ এক মিনষ্ট। খহাঁকেঁ নাগি বহন হএত জে হম হিন্দীক কথা সম্রাষ্ট প্রেমচংদক সৰা-সএম জযংতীক খরসবপব সমকানীন কথাক ৰহন্নে খহাঁকেঁ কোনো সৰা সএ ৰবখ প্বনকা খিস্সা স্বনা বহন ছী। হ্মদা সত তঁ ঙা খছি জে এহন প্বনকা খা পিছড়ন শৈনী, শিল্প খা ভাষামে জে ৰ্যাবা খহাঁক সোঝাঁ খছি ও ওগ কানক খছি জখন ৯/১১ সিতম্বব ভ৽ গেন ছৈ খা ন্যূযার্কিক দূষ্টৌ গগনচ্‌ংবী ব্যাপাবিক গমাবতকেঁ খসৰাঁক প্রতিক্রিযামে এশিযাক দূষ্টৌ সার্বভৌমিক, সংপ্রভুতা-সংপন্ন বাষ্ট্রকেঁ গর্দা খা কদৰামে ৰঁদনন জা চ্‌কন ছৈ। জখন খমেবিকা খা যোবোপক ভগবানক খনাবা ৰাঁকী

सभटा भगरानक आगू प्रार्थनामे ओ निरंन फासिस्ट, आतंकरादी आ सांप्रदायिक मानि नेन गेन। तेन, गैस, पानि, रंजाव, नफा आ नूटैके नेन सभ दिन कंपनी, सबकाब आ सेना सम्हचा धबतीपब दिन–बाति निर्दोषक हत्या कर बहन छै।

एहन कान, जकबा नीक जना देखू तँ जे कोनो सत्तामे छै, ओगमे सभ किनो एक–दोसबाक कनान अछि। सभ किनो एक सन ब्रांडक उँपभोक्ता अछि। ओ एक्के जेहेन चीज पारि बहन अछि, एक्के सन चीज आ बहन अछि। एक्के सन कंपनीक कावमे घुमि बहन अछि। सभक एकाउंट एक्के सन बैंकमे अछि। सभक जेबीमे एक्के सन ए.टी.एम. रा क्रेडिट कार्ड आ हाथमे एक्के सन मोरांगन अछि। एक्के सन ब्रांडक शिबारंक नशामे अखबांबक पेज एकसँ नऽ कऽ पेज थ्री धबि रा टीबी क एकटासँ नऽ कऽ सत्तब चैनन धबि ओ एक्के जेहन धूर्त, निर्लज्ज आ नांगट अछि। नीकसँ देखू, हुनकब चमडा़ क बंग आ हुनकब भाषा एक्के अछि।)

मोहनदासक नीन बंगक जींसक पेंट आ चबिखाना बुशर्टके बंग उँड़ि गेन छन आ ठामे–ठाम कस्तूबीक नगाएन चिप्पीसँ भबि गेन छन। कारां दास दिशा–मैदान कबरें टा नेन खाटसँ उठैत छन ह्मदा जखन ओकब नैत–नातिन देरदास आ शाबदा ओकबा नग बहतिऐ, ओकबा नागैत बहै जे ओकब देहक मबबरंठथ्थीमे प्राणे टा नै रबन ममता आ रासेनताक बस नरांनरं भबन छै।

দেরদাস খপ্পন রব্বা কারাক খাটপেব কৃদ–ফান মচারৈত ছন খা শাবদা খপ্পন খাজী প্বতনীক কোবামে ছিড়া যাগত খেনাগত বহৈত ছন।

ওগ দিন খাঁগনমে মোহনদাস খা কস্তূবী রাঁস খা ছীদীক পটিযা, খোঁভবী খা পথিযা–পকডঁথী রনারৈমে নাগন ছন। রজাবক মোহননান মাবরাড় াক দ্কান "রিংধ্যাচন হৈডীঞ্রাফহ্টস' সঁ এতেক রড়কা খাডিব ভেটন ছনৈ জে দূ–তীন মাস ধবি মোহনদাস খা কস্তূবীকেঁ দম মাবরাকো ফ্বসতি নৈ ছনৈ। কারা খা প্বতনী রচা সভকেঁ সংম্ভাবনে বহৈ। পচাসটা পটিযা, পচাস টা খোঁভবী খা তীসটা পকডঁথী রনারৈক বহৈ। কারা রীচ–রীচমে খপ্পন খাটসঁ ডঁতবি জাগত ছন খা জখন ধবি খোঁথী ওকবা রহান নৈ কহ দৈত ছনৈ, রাঁস–কমচী ছীনহিমে ও নাগন বহৈত ছন। প্বান ওনম খা তর্জ্রা ছনৈ। কস্তূবী পটিযা ওহিনা বৃ্নৈত ছন জেনা ওকব খাঁগ্বকেঁ কোনো মশীন চনা বহন হোগ। সাঢ়ে চাবি রবখক দেরদাস খোঁভবীকেঁ মাথপব নগা কহ হাথমে রাঁসক নাঠী নহ কহ খঢ় াগ রবখক শাবদাকেঁ রকবী সন "খর্ব খর্ব...' কবৈত জা বহন ছন খা ছোট সন শাবদা তবহথো খা ঠেহ্ন ভবে গ্বড়কৈত রকবী রনন ছন, খাঁগনক এক কোনসঁ দোসব কোন ধবি, খসৈত–পড়ৈত গ্বড়কি বহন ছন। তখনে দবরাজাপব খাহটি ভেন। মোহনদাসক সাঠূ গোপান দাস খপ্পন সাগকিনকেঁ দেরানসঁ খড়কা কহ ভীতব খাএন। ও রজাবক "নর্মদা টিরব এঁড ফর্নীচব' মে খাবা মশীন চনরৈত ছন খা মানিকক কহনাপব ওসূনী নেন সাগকিনসঁ এতএ–ওতএ জাগত

बइत छल।

गोपालक आग्रैसँ कस्तूरी बड़ खुशी भेल। कतेक दिन बाद ओकर नैहर लगक गामसँ कोनो पाहुन ओकर सासुर आएल छल। पानि-तमाखूक बाद गोपाल मोहनदासकेँ बतौलक जे एखन तीन दिन पहिने ओ ओविर्यंटन कोन मार्गसँ कोनो काजसँ गेल छल। ओतए गेलापर ओकरा मालूम भेलै जे रिछिया टैलक रिसनाथ ओतए मोहनदासक नामसँ पछिला चारि बरखसँ डिपो स्वपररागजरक नौकरी कऽ रहल अछि आ दस हजारसँ ऊँची सभ मास दरमाहा लऽ रहल अछि। गोपालदास कहलक जे ओकरा पता लगलै जे रिसनाथक बाप नागेंद्रनाथ भर्ती दफ्तरक बाबूकेँ पटिया कऽ मोहनदासरबला नोकरीक चिठ्ठी अप्पन खराबा रहैत रिसनाथकेँ दऽ देलक। मोहनदास साक्षात्कारक दिन जे प्रमाणपत्र आ अंक-सूची जमा केने छल ओगमे मोहनदासक फोटो नै लागल छलै, एकर फाएदा उठा कऽ रिसनाथ अपनाकेँ मोहनदासक रूपमे प्रस्तुत कऽ देलक आ सभ ठाम अप्पन फोटो लगा कऽ अदालती हलफनामासँ लऽ कऽ गजेटेड अफसर धरि सँ ओकरा प्रमाणित करा लेलक। ऐ तरहे रिसनाथ ओविर्यंटन कोन मार्गसमे मोहनदास बल्द काबा दास, जात कबीरपंथी विश्वकर्मा बनि कऽ निचेनसँ डिपो स्वपररागजरक नोकरी करऽ लागल आ दस हजार मास दरमाहा लिअ लागल।

गोपालदास कहलक जे ओ रिसनाथकेँ कोनियरी लग एकटा होटलमे चाह पिबैत देखने रहए, ओकर गरमे

जे प्लास्टिकक थाग. कार्ड टाँगल छलै ओगमे नाम तँ मोहनदासक छल मुदा फोटै रिसनाथक छल। एतरेँटा नै ओकरा संग ओग कान जतेक लोक छल ओ सभ ओकरा मोहनदासे कहि बहन छल।

ओतए गहो पता लागल जे रिसनाथ अप्पन गाम रिछिया टेलामे बहरँ चाबि सालसँ छोड़ि देने अछि आ आरँ ओबियंटेल कोन मार्गसक रकर्स क◌ॉलोनी "लेलिन नगव' मे रॉन-रँचा संग बहि बहल अछि, जतए ओकर कनिया र्‍यॉजपव टैका देरॉक धंधा करैत छै आ चिटफंड चलारँैत छै। मजारँना गप ई बहै जे लेलिन नगवमे बहरँना सभ गोटै रिसनाथकेँ मोहनदास आ ओकव कनिया अमिताकेँ कस्तूबी मैडम नामसँ जनैत छै। रिसनाथ मोहनदासे जना बी.ए. तँ छै नै, दसमा फेल छै, ताओसँ कोनियवीमे काज कवरॉक रँदना अफसवक चापलूसी, कोयनाक तस्कवी आ यूनियनरॉजीमे लागल बहैत छै।

अप्पन साहू गोपालदासक गप स्वनि मोहनदासक माथ घुमि गेलै। एना कोना भऽ सकैत छै ? कोनो लोक ओना कोना दोसव लोक रँनि सकैत अछि ? आ सेहो दिने-देखारे, सोन्नाँ-सोन्नी एना भऽ कऽ ? एकाध दिनक लेन नै, पूरे चाबि सालसँ ? मुदा मोहनदास अप्पन गबीबी आ लचाबीमे जेहल दिन देखने छल आ अप्पन रॉप कारॉसँ ओ ओकव जिनगीक जे प्रवान खिस्सा स्वनने छल, ओगसँ ओकरा लागलै जे

ঋফসব–হাকিম, ধনীক–মনীক ঋা পার্টীরঁনা নোক এতেক তাগতিরঁনা হোগত ঋছি জে কিছু নহি কঽ সকৈত ছী। ও ঝঝবকেঁ রঁড়দ, স্বগ্গবকেঁ রাঁঘ, খধাগকেঁ পহাড়, চোবকেঁ সাহ্– ককবো কিছু রঁনা সকৈত ঋছি। মোহনদাসঁকে ঋপ্পন সাঁস ঝকৈত সন ব্ঁঝাএন। হে সত্ গ্বরু, কেহন কান ঋছি জে চাবি রঁবখমে এতএ এক্কা টা নোক এহন নৈ ভেন জে কহি সকৈত ছন জে ওবিযংটন কোন মার্গসমে জে নোক মোহনদাসক নামসঁ সভ মাস দস হজাব দবমাহা নঽ বহন ঋছি ও মোহনদাস নৈ রিসনাথ ঋছি, জকব রাঁপক নাম কারাঁ নৈ নগেংদ্রনাথ ছিঐ, জকব কনিযাঁক নাম কস্তূবীরাঁগ নৈ ঋমিতা ভাবদ্বাজ ছিঐ ঋা জকব মাএ প্বতনীরাঁগ নৈ, বেন্বকা দেরী ছিঐ ? ...জে প্ববরঁনবা গামক নৈ রিছিযা টৈনক রঁসিন্দা ঋছি ? জে রী.এ. পাস নৈ দসমা ফেন ঋছি... ? ওগ দিন পটিযা ব্ঁনৈত–ব্ঁনৈত মোহনদাস রেঁব–রেঁব ঠমকি জাগত ছন। ওকব আঁখি কতৌ রিসবা জাগত ছনৈ ঋা ও কিছু–কিছু সোচৈত গ্বম ভঽ জাগত ছন। রাঁসিক কমচী রঁনরৈঁত–রঁনরৈঁত ওকব হাথ ভসিযা জাগত ছন। এক রেঁব তঁ কচিযাসঁ ওকব হাথ কটৈত–কটৈত রঁচন। কস্তূবী সভ কিছু দেখি বহন ছন ঋা ঋপ্পন ববক ভীতব চনি বহন উঁথন–প্বথন ঋা রেঁচৈনীকেঁ নীকসঁ ব্ঁঝি বহন ছন। ও মোহনদাসক হাথসঁ কচিযা নঽ নেনক ঋা কহনক, "ঋাগ রৌদ কিছু রেঁসিযে ছৈ। জাউঁ, ঋহাঁ হাথ–ঝঁহ ধো কঽ কনী কান পটায বদ্ধু।"

ঋগিনা ভোব সাত রঁজেরঁনা রঁস পকড়ি মোহনদাস ওবিযংটন কোন মার্গসক নেন রিদা ভেন। বাতি ভবি

ওকবা নীকসঁ নীন নৈ এনৌ। ঠীক সাঢ়ে দস রঁজে ও কোনিযবী পহুঁচি গেন।

দিক্কত ঙা ছন জে ও ওতএ ককবাসঁ গপ কবিতিঐয ? কেকরো তঁ ও জনৈত নৈ ছন ? ঙুপবসঁ ওকব রঁগেরাঁনী এহন ছনৈ জে কেকরো ঙা মানরাঁমে দিক্কত হোগতে জে শ্বসনী মোহনদাস রএহ ছী জে এম.জী. ক◌ॉনেজসঁ রী.এ. ফস্ট্ঠ ডিরীজন শ্বছি শ্বা শ্বাগসঁ কিছ রঁবখ পহিনে জকব হোটৈ শ্বখরাঁবমে ছপন ছন। দিক্কত ঙাহো ছনৈ জে ওকবা নগ ও শ্বখরাঁব নৈ রঁচন ছনৈ জগমে ছপন শ্বপ্পন হোটৈ দেখা কহ ও রঁতা সকৈত ছন, "দেখূ, হমহী ছী মোহনদাস, রন্দ কারাঁ দাস, সাকিন প্ববরঁনবা, জিনা শ্বনূপপ্পব, মধ্যপ্রদেশী জে এম.জী. শাসকীয ডিগ্রী ক◌ॉনেজসঁ রী.এ.ক পবীক্ষামে মাত্র কিছ রঁবখ পহিনে, ফস্ট্ঠ ডিরীজনক সংগ মেবিষ্টমে দোসব স্থান হাসিন কেনে ছন। চেহবাক মিনান কহ দেখি নিযৌ। হমহী ছী শ্বসনী মোহনদাস।'

রঁড় মোশিকনসঁ মোহনদাসকেঁ ফাটকক ভীতব শ্বারঁহ দেন গেন। ওকব নীন বংগক পৈংট ঠেহ্ন ধবি ফাটি গেন ছন। পাছাঁসঁ ঘসা কহ ও জাহবী রঁনি গেন ছন জতএ কস্তূবী ওহী বংগক চিপ্পী সাটি দেনে ছনৈ, জে যা তঁ ওকব প্ববনা র্ঁনাউঁজমে সঁ নিকানন গেন ছন যা প্ববনা চন্দবিমে সঁ। রৌদ, গ্বমাব, ঠঁঠী, কড় াচূব মেহননি শ্বা এতেক দিন্বকা ভূখ-পিযাস মোহনদাসক চেহবা শ্বা চামক বংগকেঁ স্যাহ-পকিযা রঁনা দেনে ছনৈ। দ্খ শ্বা রিঁপতি

ओकर चेहरापर एतेक डर् ीर खेंचि देने छलै जे नागेत नै छल जे ओकर उमेर एखन चालीसकेँ पार नै केने अछि। जतेक रॅार अप्पन अड़ारक रोमसँ ओ झहरैत छल आकि अपमानक आगिमे चुपचाप नहकैत रहल, ओकर भौं आ माथ-छातीक रोगयां उज्जर भेल गेल। तीस-पैंतीसक उमेरमे ओ पचास-पचपन सन लगैत छल।

मोहनदास ओग दफ्तरक आगू ठाढ़ छल जतए चारि रॅारख पहिने ओ अप्पन सभटा सर्टिफिकेट आ कागज जमा करै लेल गेल छल आ जतए काज करैरॅला रॉर्बू भरोस देने रहैक जे अहाँक नाम तँ कहियो कटि नै सकैत अछि, किएकि लिखित आ शारीरिक परीक्षामे अहाँ सूचीमे सभसँ ऊपर छी।

मोहनदास देखलक जे रएह रॉर्बू ओग कोठलीमे रॅसल अछि, जकरासँ ओ पहिने भेंट करैत छल। ओकर कर्सी पैघ भऽ गेल छलै आ आगूक टेरॅबुल सेहो। ओकर पीठक पाछाँ ठाढ़ हरा फेकैरॅला ए.सी. लागल छलै। मोहनदास दररॅज्जा लग ठाढ़ भऽ कऽ देखि रहल छल जे रॉर्बू रिस्कुट खा आ चाह पीरॅ रहल अछि आ ओकर आगूक कर्सीपर दू गोटे रॅसि कऽ आस्ते-आस्ते रकम-रकम गप कऽ रहल अछि। एकाएक रॉर्बू ओकरा दिस देखलक तँ मोहनदास कर जोड़ि कऽ नमस्कार केलक आ प्ररलका याददकेँ जगारॅक लेल ओकरा दिस देखि कऽ मुस्कुरायल। रॉर्बूक माथपर जोर पड़ि गेलै। किंसागत ओ ओकरा चीन्हि नै सकल। मोहनदास ओकरा

দোৰাবা কন জোড়ি কঽ নমস্কাৰ কেনক আ ৰাজন, "সাহেব, হম মোহনদাস... ! ' ক্ষদা তখন ধৰি ৰাৰূ অপ্পন মেজক নীচাঁ লাগল ঘংটীক স্বিচ দৱা দেনক। ৰড় জোৰ কৰ্টাহ সন খৰখৰাযল অৱাজ ভেল আ একটা চপৰাসী দৌগৈত ভীতৰ গেল। ৰাৰূ ওকৰাপৰ কনী রিগড়ল জে মোহনদাস নৈ স্বনি সকল। চপৰাসী আৰি কঽ কোঠৰীক পৰ্দা খেঁচি দেনক আ মোহনদাসকেঁ মাথসঁ পএৰ ধৰি নিঙহাৰি কঽ কহলক, "কী কাজ অছি ? জাউ ওম্হৰ ৰৈসূ, ওসাৰাক ওগ ৱেঁচপৰ... ! এম্হৰ কোনা আএল ছী ? '

মোহনদাস ওকৰা কহঽ চাহলক জে ওকৰ নাম মোহনদাস ছিঐ আ আগসঁ চাৰি ৰৰখ পহিনে ও কোনিযৰীমে নোকৰী লেল সনেক্ট ভেল ছল আ অপ্পন সভটা কাগজ ওগ আফিসমে জমা কেনে ছল ক্ষদা ওকৰ ঠাম কিযো আৰ নোক ওকৰ নামসঁ নোকৰীপৰ নাগি গেনৈ....। ওকৰ অৱাজ ততেক কমজোৰ ছনৈ, উঁপৰসঁ চপৰাসী ওকৰা জেনা ধকনৈত ওসাৰাক কোনামে ৰাখল ৱেঁচ দিস নঽ জা ৰহল ছল, ওগসঁ ধৰফড় ীমে ৰাজল গেল ওকৰ গপক লাগলমে কোনো তাৰতম্য নৈ ৰহি গেল ছনৈ। গৰমে কিছু ফঁসি ৰহল ছনৈ আ ও তোতৰা ৰহল ছল। মোহনদাসকেঁ ৰকৌৰ নাগি গেনৈ ক্ষদা ও চপৰাসীসঁ অপ্পন ৰাঁহি ছোড় াৰৈত ৰাজএ লাগল, "ভাগ, এক ৰেৰ ওগ ৰাৰূসঁ ভেঁট কৰা দিঅ। হমৰা অপ্পন প্ৰমাণপত্ৰ আ মাৰ্কশীট রাপস লেৰাক অছি। '

চপৰাসী হুনকা ধকিযাৰৈত দেৱানসঁ সটল লকড় ীক ৱেঁচপৰ ৰৈসা দেনক আ জাএ লাগল। মোহনদাস ৰূনি

গেন জে আৰ ওকবা দোৰাবা এতএ ধবি আএৰ ক্ষশিকন হেতৈ। ওা আখিবী ৰেব ছৈ। ও জোবসঁ চপবাসীপব গবজন জে ভতী কার্যনিযক দববাজাসঁ ভীতব পৈসি কঽ নপত্তা হোএ ৰনা ছন।

" হে...হে.. ! জা কঽ ওগ ৰাৰূসঁ কহিযৌ জে মোহনদাস ৰী.এ. আএন অছি আ 18 অগস্ত, 1997 কেঁ জমা কবাএন অপ্পন সভটা কাগজ আপস মাঁগৈত অছি... । তমাশা ৰনা কঽ বাখি দেনে ছৈ। কোঠনী আ ফসীমে ৰৈসি গেন ছৈ তঁ কি অঁধেব মচেতৈ ? ...দিঅ, পর্চী দিঅ, হম অপ্পন নাম নিখ দৈত ছী... ! ৰাৰূকেঁ দঽ দেৰৈ ! '

চপবাসী এক ৰেব তঁ সন্ন বহি গেন। কোনো ৰূঢ় ভিখমংগা সন চেথবীমে ঘোঁসিনাএন এহি নোকক গবসঁ ৰড় নীক ফবিছাযন ভাষা নিকনি বহন ছৈ। এহন ভাষা আ নহজা জে পঢ়ন-নিখন ৰাৰূ আ অফসবক হোগত অছি। চপবাসী দববাজাপব কিছু কান ঠমকন আ মোহনদাসকেঁ নিঙহাবৈত বহন। ফাটন ৰেবংগ ভেন, ঠামে-ঠাম চিপ্পী নাগন পেঁট, ফাটন ঘিনাযন চৌখূটা ৰুশর্ট। চনেন ভেন মাথপব স্বখন ৰিখবন খিচড়ী সন অধপক্কূ কেস। ঝূবী আ ভঙতবাহ সন, টেঢ়-টূঢ় ঝূবীসঁ ভবন পকিযা বংগক অস্কতাগত চেহবা। গৰীব, ধঁসন, কনী-কনী মিঝাগত সন অপনাকেঁ দেখৈত, হতাশ কমজোব আঁখি। নীচা পএবক আঁগ্বমে কোনো তবহেঁ ওঝবাএন বৰড়ক কতেক প্ৰবান, সস্ত চপ্পন, জকবা ৰেৰোজগাবী, অভাব, দূখ আ হতাশ বৰড়ক বষৈযে নৈ

देनक, माटि, काठ आ कागचक बना देल छल।

"बुबबनेन... ! साव बताह... ! बहानचो... कोन पाटी आ अफसब अहि सम्बव सुबखनक संग देत ? ' यएह ओ फदबैत बह जगसँ चपवासीक ठोढ़ तामसे हिलि बहल छलै। मोहनदासकेँ लागलै जे चपवासीकेँ ओकब गपपब विश्वास नै भऽ बहल छै मुदा भगवान जानै छल जे ओ सत बाजि बहल छल, ताँगसँ ओ बैंचसँ उठि कऽ आमेबिश्वाससँ भबि सधल चालिसँ ओकवा दिस बढ़ल। ओकवा मनमे छल जे ओ जा कऽ ओकवा बुझाबैक प्रयसे कबत जे विसनाथ ओकबे संग टी नै वबन ओबियंटेल कोन माजंसक संग जानसाजी आ धोखाधड़ी कऽ बहल अछि।

मोहनदास जेहन व्यग्रता आ जल्दीसँ चपवासी दिस बढ़ि बहल बह आ ओकब चेहबापब दिमागमे चलि बहल उठा-पटकक कावण टेढ़-टूढ़ डड़िब बनि बहल छल, गर्मीब धसल आँखिमे जे एकटा खास कछमछीक चमक आबि गेल छलै आ अप्पन सभटा गप एक्के संग कहि दै लेल उग्र व्याकुलतामे ओकब स्वखायल पपड़ी पड़ल ठोढ़ जेना थबथबा बहल छलै, ओगसँ चपवासी सशंक डबा गेल छल। ओ मोहनदास दिस देखैत जोवसँ चिकवल:

"हे...हे... ! एक्को डेग आगू नै बढ़ाउ, बुझलिऐ ! ठाढ़ भऽ जाउ ओग ठाम बबगाही भाग... ! हम कहै छी, ठाढ़ भऽ जाउ...ओही ठाम... ! '

"हे...हे... भाय ! ...हमब गप तँ सुनू... ! ' मोहनदास

ৰিগড়ি গেল। গপকেঁ সম্ভাবৰো নেল কিছু জোবসঁ ৰাজল। ক্ষদা ওকব গপমে বিলম্রতা কম আ কিংসাগত ৰেঁচৈলী ৰেঁসী ছলৈ, জাগসঁ গপ আব ৰিগড়ি গেল। চপবাসী ততি কঽ ঠাঢ় ভঽ গেল আ জোবসঁ চিকবল; "ৰঁহীব ছী কী ? থম্হি জাউ ওগ ঠাম, নৈ তঁ খ্গল কঽ গাবি দেৱঁ ৰঁবগাহী ভাগ! এক্কা ডেগ আগূ ৰঁঢ়ৈ নিযৈ তঁ! '

দববাজা পব হো হল্লা স্বনি কঽ দথতবক ভীতবসঁ চাবি-পাঁচ গোটে ৰাহব ৰঁহবা কঽ আএল। ও খহ্সব নীক কপড় ামে ছল আ ঘ্বি কঽ মোহলদাসকেঁ মাথসঁ পএব ধবি দেখি বহল ছল।

"কে ছী ? ...এতএ ভীতব ধবি কোনা আৰি গেল ? '

"সিক্যাবিটী আঁফিসব পাঁডেকেঁ ৰঁজাৰিযৌ ? ...ঙা গাডি খৈনী বগড়ি কঽ ক্ষসীপব স্বতল বহএ। '

"আগ মেল গেটপব ডূটী কেকব-কেকব বহৈ ? ডূটী বজিস্টব আনূ ? '

"হে, ভগাউ একবা। '

"ঙা তঁ আকড়হব কঽ দেলক... ! কিযো ঐ তবহে অঁদব পৈসি জাগত খ্ছি, ককবো ঠাঁয-ঠাঁয গোলী মাবি দেত... ! হে, কিছু নৈ তঁ ৰঁমে ফোড়ি দিতিযৌ... ! '

"প্বনিসমে দঽ দিযৌ। শৰ্মাজী, মিনাৰ্ব্ অপ্পন মোৰাগল...ৰএহ সএ লম্বঁৰ! '

मोहनदासक गप किये नै सुनि रहल छल। ओकरा धकियायल जा रहल छल। माथ, पीठ, कनहा आ झाँपर थापर, झक्का, आ कोहनी रबसि रहल छल। मोहनदास दुनू हाथसँ अपन चेहरा झाँपि कऽ अपन आँखि रचा रहल छल। "हम्मर गप तँ सुनि नियौ! ...हे...माफ नै! हे...हे... ! '

एतबेमे तीन-चारिटा गार्ड दौगैत आएल। ओगमे एकटा कऽ हाथमे राबड़ रोलक दुनाली छलै, जेहन रैंकक चौकीदार लग रहैत छै। आ सभक हाथमे डंटा छलै। मोहनदासक पीठ खनोदार भऽ गेलै। ओकर आँखिक आगू कठिना धारमे अमारशेक रातिमे देखल सभटा नक्षत्र हहारो करैत, फहरैत, उंकापतंग सन टूटि-टूटि कऽ खसऽ लगलै। कोनो एहन रज्र चोट कतौ पड़लै जे ओकर गरसँ ठीक ओहने फहरबाक अवाज निकललै, जेहन ओग सुगरक गरसँ निकलैत छै, जकर टाँगकेँ बान्हि कऽ ओकरा गरकेँ रेतल जाएत छै। ओ एहन जोरसँ फहरल जे कोगना खदानक सभटा कामगार बाहर निकैल गेल आ घेरा बना कऽ ओग तमाशाकेँ देखऽ लागल।

(ध्याद दियौ, ई घटना ओग कालक छी जखन हिंदूक जगदगुरु अपन मठमे रौसि एकटा स्त्रीक संग रएह सभ किछु कऽ रहल छल जे हजार किलोमीटर दूर,

কতেক সম্প্রদ্র পাব, র্হাগষ্ট হাঁউসক ফসীপব বৈঁসন খমেবিকাক বাষ্ট্রপতি কহ বহন ছন। জখন দজনা খা ফবাত ধাবক নগ কোনো খধাগমে খপ্পন জান বঁচাবৈঁক নেন ন্বকাযন গিনগমেশকেঁ একটা প্ববান সম্প্রদ্রী ডাকূক বংশজ বাঁহব খীচ কহ ওকব দাঁত গানি বহন ছন। এহন কান জাগমে জকবা নগ জতেক মাত্রামে সত্তা ছন ও বিনোমান্বপাত নিযমসঁ ওতেক বৈঁসী নিবংকশ, হেহব, খ্নীমা, খনৈতিক খা শৈতান ভহ গেন ছন। ...খা গু গপ বাষ্ট্র, বাজনীতিক দন, জাতি, ধার্মিক সম্প্রদায খা নোক ধবি এক্ক সন নাগূ হোগত ছৈ।)

মোহনদাস ওবিযংটন কোন মার্গসক ম্খ্য গেটক বাঁহব সড়কপব ঠাঢ় ছন। একদম বীচোবীচ। ওকব দিমাগ কিছুও সোচবঁ ছোড়ি দেনে ছনৈ। একটা ডবৌন সন গ্বমকী ছনৈ জে সৌংসে বাতাববণমে সাঁয-সাঁয কবৈত বাঁজি বহন ছনৈ। ওকবা গুহো হোশ নৈ ছনৈ জে ও সড়কক ঠীক মাঁঝমে ঠাঢ় খছি খা ওকব দ্নূ কাতসঁ ট্রক, মেটাডোব, টেঁপো খা দোসব গাড় ী হর্নি বঁজাবৈত ওকবা কোনো তবহেঁ থফচেবাঁসঁ বঁচাবৈত তেজ গতিসঁ নগাতাব জা বহন ছনৈ।

মোহনদাসক জেবীমে ও পর্স এখনো ছন জে ও নোকবী নাগৈক খাসমে তীস টকামে কিননে বহএ। ওগমে খখনো এক সএ সত্তবি টকা ছনৈ। ওকব মেহনতি খা কমাগক টকা। পৈঁসঠি টকা বঁসক কিবাযা দেনাক বাঁদো ওকবা নগ এক্ত টকা বঁচন ছনৈ। খপ্পন জেবীক পর্স ছনাসঁ ওকব দিমাগ শাঁত হ্খএ নাগন। এক্ত কান

ৰাঁদ ওকবা একাএক বৌদক তেজ হেৰাঁক খন্নভূতি ভেনৈ। ও ঝঠকাবি কহ সড়কক কাত খাৰি গেন। ওকবা ভূখ নাগন ছনৈ।

"মোষ্টূ ৰৈঞ্জুৰ শ্বহ্ন শীকাহাবী হোঠন" ঢাৰাঁমে খাগত কান ওকবা পতা নগনৈ জে সাঁঝমে এতএসঁ বাজ্য পবিৰহনক দূটা খাব একটা প্ৰাগৰেঠ ৰাঁস সেহো ওকব গাম প্ববৰাঁনবা দিস জাগ ছৈ। এখন তঁ খানী এক্ক ৰাঁজন ছৈ। ও নির্ণয নেনক জে ও এক চক্কব ওবিযংঠন কোন মাৰ্গসক কাঁনোনী "নেনিন নগব' দিস ঘ্মি খাৰাঁএ। ওতএ কিংসাগত চিন্হন-জানন কিযো দেখা জাএ। স্কূন-কাঁনেজক কোনো প্ববনকা সহপাঠী খাকি কিযো খান।

নেনিন নগবমে এতএসঁ ওতএ ধবি ও ঘ্বিখাগত বহন। দ্পহবিযা কান ছনৈ। সভটা ফ্লৈঠ এক্ক জেহেন ৰাঁনন ছনৈ। নোক কাজ কববাঁ নেন কোনযবী জাগ গেন ছন। ঘবমে স্ত্ৰীগণ খা নেনা সভ টা ছন। স্কূনক একটা ৰাঁস ঠামে-ঠাম ঠাঢ় হোগত ৰাঁচা সভকেঁ উঁতাবি কহ খাগূ চনন জা বহন ছন। নেনিন নগব ৰাঁড় পৈঘ কাঁনোনী ছন। জোঁ হমবা সংগ ধোখাধড়ী খা জানসাজী নৈ কএন গেন হোগত তঁ হমহুঁ খপ্পন পবিৰাবক সংগ নেনিন নগবক এহনে কোনো ফ্লৈঠমে বহতৌঁ, সভ মাস দবমাহা ভেঠতিঐ, দেৰদাস খা শাবদা ঐ তবহেঁ স্কূন ড্ৰেস খা জূতা-পৈতাৰাঁ পহিবি কহ ঐ ৰাঁসসঁ উঁতবিতিঐ। কূনব-পংখামে স্বতিতিঐ। হ্নদা

কেহন ভাগ্যক খেলা ছল জে মোহনদাসকেঁ রিসনাথক ফ্লৈটক পতা পূছৈ লেল অপ্পন নাম লিখ পড়া বহল ছলৈ।

"মোহনদাসক ফ্লৈট কোন ছৈ, ভাগ সাহেব ? '

"কোন ? ও স্বপবরাগজব সাহব ? '

"হঁ... ! ”

"আগূ চলি জাউ সোমে। তীন কট্ট ছোড়া কহ চাবিমমে বাঁমা হাথ ঘুমি জাএব। তেসব মকান ছৈ। এ বঙ্গা এগাবহ। ড◌াক্টব জনার্দন সিংহক বগনবলা ফ্লৈট। '

ফ্লৈটক দববজ্জা বন্দ ছল। বাঁহবী দেরানপব লেম প্লেট নটকি বহল ছল, জাগপব লিখল ছল– "মোহনদাস রিশ্বকর্মা, কনিষ্ঠ আগাব অধিকাবী, ওবিযন্টল কোন মাগংস”।

মোহনদাস কনী কাল ধবি গুম্ম ভহ লেম প্লেট পঢ়ৈত বহল, ফেব ও ক◌ানবেলক স্বিচ দবৌলক, জে ঠামে লেম প্লেটক নীচা ছল। মোহনদাস এক বেব তঁ ডবি গেল কিএক তঁ জে আরাজ ভেল ও ঠীক রএহ কটাহ আরাজ

ছল জে ভতী দথতবক ৰাৰ্‌ক ৫ৈৰ্‌নৰনা ঘংটীসঁ ভেল ছলৈ খা তকব ৰাদ ওকবা সংগ ঙা দ্‌ঘটনা ভেল ছলৈ।

দবরজ্জা একটা চৌদহ–পন্দ্রহ ৰবখক ৰচা খোননক।

"সাহৰ নৈ খছি! খখনে নিকনন খছি। খাগূৰনা ৰজাবমে নস্সী পিৰৈত হএত।' ছৌবা এক্ক সূবমে ৰাজন।

"পিৰৈ নেন পানি ভেটৈত কী?", মোহনদাসক ঠোঁঠ স্বখা বহন ছন। বৌদ ৰড় তীখ ভঽ গেন ছলৈ খা হরামে নূ ৰহৈ ছলৈ, সে ও ঝবকা বহন ছলৈ। কোনযবীমে জখন ওকবা ধক্কা মাবি কঽ পিটৈত ৰাহব নিকানন গেন ছন। ওকব কোহনী, গান খা পীঠপব এক–দূ ঠাম নোম্ভাব নাগি গেন ছলৈ। ও নোম্ভাব ঘামক নূনসঁ নহবি বহন ছলৈ।

"খমাঁ এতএ ঠাঢ় বহু, দৈত ছী।' ছৌবা ওকবা মাথসঁ পএব ধবি নিঙহাবনাক ৰাদ কহনক খা ভীতব চনি গেন।

মোহনদাস তীন গিনাস পানি স্ববকি গেন। ছৌবা ফ্রিজসঁ ঠবন ৰোতন নিকানি কঽ খাননে বহৈ। পানি পিনাসঁ ওকব দেহমে জান এনৈ, খাঁখিমে বোশনী ঘ্‌বনৈ

आ मोन किछु शांत भेलै तँ ओ देखलक जे गिलास
घृणा कऽ लऽ जाएबँला छौँड़ा ओकरा सहानुभूतिक संग
देखि रहल अछि।

"ओकर घरमे एखन के-के छै?', मोहनदास
पुछलक।

"कियो नै। कस्तूरी मैडम टा छै। ...एखन स्वस्थ
छै। अहाँ पाँच मिनटक बाद आउ।' छौँड़ा खाली प्लेट
आ गिलास लऽ कऽ अंदर जाय लागल तँ मोहनदास
कहलक, "अहाँ साहेब आबिथि तँ हुनकासँ कहबै जे
पुरैनिया गामसँ मोहनदास आएल छल। साँझकेँ हम
फेर आएब।'

लड़का भीतर जाइत-जाइत ठाढ़ भऽ गेल। ओ
मोहनदासकेँ निङहारि कऽ देखलक आ कहलक, "की
कहलिऐ? ...के आएल छल!"

"मोहनदास!", मोहनदास जोरसँ बाजल आ बकमे-
बकमे मग मासक आगिमे जरैत आ पसिनैत
कोलतारक सड़कपर घृणि कऽ आबि गेल।

नेनिन नगरक मार्केटमे बड़ भीड़ नै छल। ई सदा आधुनिक
फेशन लेल ओ छटपटा रहल छल। तीन-चारि
डिपार्टमेंटल स्टोर्स, किछु खुदरा सन किरानाक छोट सन

দোকান। ডোসা–গডনী–ৰঁড় া ৰঁনা "কারেবী ফাস্ট ফূড"। দূ তঁদূব, সান মখনী, কড় াহী পনীব, ৰঁষ্টব চিকেন, খানূ পবাঠা ৰঁনা হোষ্টন। একটা দেশী খা খংগ্রেজী শিবাৰঁক দোকান, জগমে "এতএ শীত ৰীযব সেহো ভেষ্টৈত খছি' ক ৰোঁর্ড নাগন ছন। পান–সিকরেষ্টক দূটা গ্বমটী খা প্লাস্টিক, গনেকট্রোনিক্স খা গনেকট্রোঁনিক্স সামানক, সীসা ৰঁনা শো–রিংডোজৰঁনা দূটা দোকান। একটা কপড় াক ৰঁড় পৈঘ হানসন দোকান ছন, জকব খাগূ গেষ্টপব খা সীসাক ভীতব সেহো, জানীদাব ব্রাঁসবী খা জানীদাব জংঘিযা পহিবনে, খপ্পন সভ কিছ দেখৰৈঁত, খাদম–গুর সন উঁজ্জব ফাগৰঁবক প্বত্তন ঠাঢ় ছন।

মোহনদাস দেখনক জে নক্ষ্মী রৈঞ্চুর ভোজনানযক খাগূ প্বনিসক টোটা স্বমো ঠাঢ় ছন, জগমে দূ–তীন টা সিপাহীক সংগ ওকব গামক পঁডিত ছত্রধাবী তিরাবীক নড়কা রিজয তিরাবী, জে খপ্পন সম্বৰক ঘ্বপেঁচসঁ দবোগা ভঽ গেন ছন, নস্সী পীরি বহন ছন।...খা রিসনাথ সেহো ওতে ছন।

রিসনাথ কোনো গপপব ঠঠা কঽ হঁসি বহন ছন খা খপ্পন নস্সী সঠা কঽ টোটা স্বমো দিস ৰঁঢ়ি বহন ছন, তখনে ওকব নজবি মোহনদাসপব পড়নৈ। ও সতর্ক ভঽ গেন। এক ক্ষণ নেন ওকব চেহবাক বংগ উঁড়ি গেনৈ। এখন ধবি জে হঁসী ওকব চেহবাপব নাচি বহন ছনৈ সে ত্তবত্ত রিনা গেনৈ। রিসনাথক চেহবাপব খাএন গড়ৰঁড় ীকেঁ খকানি কঽ রিজয তিরাবী ঘ্বি কঽ দেখনক। ও গাড় ীমে ড্রাগরব সীষ্টপব ৰৈঁসন ছন,

রদীমে সজন-ধজন।

মোহনদাস চেথড় ামে, নূ মে ঝবকৈত, সড়কক কাত, রিঁজনীক খাম্হ নগ, নগভগ পঁদ্রহ গজক দূবীপব ঠাঢ় ছন।

একটা তনারসঁ ভবন গ্বমকী খনচোক্ক ওগ দ্পহবিযাক বৌদমে এতএসঁ ওতএ ধবি পসবি গেন ছনৈ।

রিঁসনাথ গাড় াপিব চঢ়ি গেন। রিজয তিরাবী চাভী ঘ্মা কঽ গঁজন স্টাৰ্ট কেনক খা এক্ক ধক্কামে ওকবা দৌগরৈঁত জোবসঁ ওগ দিস খাএন জেম্হব মোহনদাস ঠাঢ় ছন। মোহনদাস থকমকা গেন খা ডোনি কঽ রিঁজনীক খ্ঞ্চা দিস সহটৈন। রিজয তিরাবী জোবসঁ ব্রেঁক মাবনক খা গাড়ি াকেঁ মোহনদাসক ঠীক খাগূ ঠাঢ় কঽ দেনক। ব্রেঁক নৈ নগিতিযৈ তঁ মোহনদাস খ্ঞ্চা সঁগ ওকব চপেটমে খারিঁ জৈতিযৈ। মোহনদাসকেঁ খদংক নঽ নেনকৈ।

"এম্হব খা ! ', রিজয তিরাবী ওকবা রঁজেনকৈ। খাগসঁ মোটামোটী সাত-খাঠ রঁবখ পহিনে, যএহ রিজয তিরাবী ওকবা সঁগ এম.জী. ডিগ্রী কॉনেজমে পঢ়ৈত ছন। সভ দিন এক্ক কনাসমে ও বৈঁসৈত ছন। পঢ়ৈ-নিখৈমে

ও নষ্কুঢ় ছন। ওকব ৰাঁপ পঁডিত ছত্রধাবী ওকবা মোহনদাসক উঁদাহবণ দৈত ছনৈ জে সভ ৰবখ ফর্স্ঠি খাৰৈত ছন। খখন রএহ রিজয তিরাবী প্বনিসক রদীমে ৰত্তী খা নাউঁডস্পীকব নাগন ঠাঠা স্বমোমে ৰৈসন ওকবা জগ তবহে নিঙহাবি বহন ছন, ওগমে খনচিন্মাব ৰনৰাসঁ ৰৈসী হিঁসা খা তামস সাফ–সাফ নখা দৈত ছন। এহন কী ভ২ বহন ছন ? কী মোহনদাস গবীৰ খা নিচনকা জাতিক ছন, তাগসঁ ? রা তাগসঁ জে ও ৰৈবোজগাব ছন খা খপ্পন মেহনতিসঁ চ্পচাপ খপ্পন পবিরাবক খাজীরিকা চনা বহন ছন ? রা ঐ নেন জে ওা সভ নোক ওকবা ঠকনে ছন। ওকব খহঁ মাবি দেনে ছন খা খাৰ এতএ ওকব সোন্মাঁ ওকব খাজাদী খা মৌজ–মস্তীমে ৰাঁধা ৰনি বহন ছন ?

"খ্ঙ্গা ৰচা নেনকৈ ৰবগাহী ভাগ, নৈ তঁ খখন নোথ ৰনি গেন বহতিঐ !” রিজয তিরাবী বকমসঁ ফ্সফ্সা ক২ কহনক।

"হৌ ছোড় ! মাছী মাবি খাব হাথ গঁধ কবত !' রিসনাথ ৰাজন।

"ওহিনে হ্ড়কি দৈত ছিঐ ! কখনো এম্হব দিস নৈ তাকত সাব !'

মোহনদাস খখন ধবি খপ্পন ঠামসঁ হিনন নৈ ছন।

রিজয তিরাবী জোবসঁ কতেক রেঁব হর্ন রঁজেনক, ঋা তকব রাঁদ একাএক গাড◌় ৈক ঙুঁপব নাগন স্পীকবমে ওকব ঋারাজ চাক্ক দিস গূঁজৈ নাগন, "হে মৌ রিঁসনাথ ! গাড◌় ৈক ঋাগূ কিএ ক্ষদনহ মৌ রিঁসনাথ ? তোহব দিমাগ সনকি গেন ছহ কী রিঁসনাথ ? রিঁসনাথ, রাঁজৈত কিএ নৈ ছহ ? রঁহীব ভ২ গেন ছহ কী মৌ রিঁসনাথ ! রিঁসনাথ, হে মৌ রিঁসনাথ ! ”

গাড◌় ৈক ভীতব জোবসঁ ঠহক্কা ঙঁঠ২ নাগন ছন।

"ভৌজীকেঁ এতএ নৈ ঋাননৌঁ রিঁসনাথ ? ঋসকবে মবৈ নেন ঋাএন বহহ...হে ! ”

রিঁসনাথ গাড় ৈসঁ ঙঁতবন ঋা মোহনদাস নগ ঋারিঁ ক২ ঠাঢ় ভ২ গেন। ও ঋপ্পন জেরীসঁ পাঁচ সএক একটৌ নোটৈ নিকানি ক২ মোহনদাসক শর্টক জেরীমে খোঁসি দেনক।

"স্বনূ, ঋারঁ ঋহাঁ ঋপ্পন প্রবনকা নাম রিঁসবি জাঙঁ ঋা ঋারঁ ঋাগক রাঁদ কহিযো নেনিন নগব দিস পএব নৈ রঁঠ◌় াএরঁ ! রুঁমনিঐ ! ঋাগ তঁ হম দাক্ক নৈ নস্সী পীরিঁ বাখনে বহী, ঙুঁপবসঁ রিঁজনীক খাম্ভ ঋারিঁ গেন, নৈ

তঁ খাগ চাপি দৈতৌঁ। দোৱাবা কতৌ খাসপাস দেখা দেনৌঁ তঁ কঁানিযবীক ভঞ্জীমে ছাউব ৱনা দেৱ।"

একব ৱাদ ৱিসনাথ ঘূমন খা মোষ্ঠূ ৱৈঞ্জুব ঢাৱা দিস দেখৈত জোবসঁ গবজন, "হে হৌ নংদ কিশোব, ঐ ৱিসনাথকেঁ এক গিনাস নস্সী পিযা দেৱহী ঠংডা! ৱবফ দ২ ক২! ৱবফ দ২ ক২ হৌ! হম্মব পড় াসী গামক খছি ৱিসনাথ...!" টৌটা স্বমোক ভীতবসঁ খনৱবত ঠহক্কাক খাৱাজ খাৱি বহন ছন।

ৱিসনাথ সেহো হঁস২ নাগন ছন। ঘ্বি ক২ গাড় াৈমে চঢ় ৈত-চঢ় ৈত ও বকমসঁ ৱিজয তিৱাবীসঁ কহনক, "ঔ নংদ কিশোব খছি তঁ ভখাবক ঢীমব হ্মদা এতএ ৱাভন ৱনি ক২ ৱৈঞ্জুব শীকাহাবী হোষ্ঠন চনা বহন খছি। সজনপ্বক চৌৱেঁ ঘবেনক ৱদ্দুকেঁ ৱিযাহি খাননক সাব।

"পংডীজী কহিযৌ তঁ ফূনি ক২ ফপ্পা ভ২ জাগত ছৈ।"

"নীকে ছৈ! সমাংগ ৱঢ় ৈত ছৈ।", ৱিজয তিৱাবী ৱাজন খা ঠহক্কা নগা ক২ ঢাৱা দিস হ্মঁহ ক২ ৱাজন, "ৱিসনাথকেঁ কনেটৌ সম্হবি ক২ নস্সী পিখাযৱ পংডিতজী, উঁপবকা পেঁচ কনী নূজ ভ২ গেন ছৈ...! হাঁ ৰূপা

হম্মব খাতামে চঢ় া নের্ঁ। ”

নিফিকিব বন্ধু ! নিফিকিব ! ঘবক কাজ ছিঐ ! পেঁচ তঁ হম সেষ্ট কঽ দেরৈঁ ! ”

মোহনদাসক স্কঁহমে টৌটৌ স্বমোক ধ্বা-গর্দা খা ধুঁখা ছোড় ৈত ও সভ চনি গেন। মোহনদাস ওগ ঠাম ঠাঢ় বহন, রিঁজনীক খূঞ্ঝাকেঁ খপ্পন হাথসঁ থাম্হনে। কী ঙা কোনো ফিল্ম ছন জকব সীন এখনে-এখন পূবা ভেন খা জাগমে ও সেহো একটা পাত্র ছন ? রা ঙা কোনো খজীরেঁ সপনা ছন ?

মোষ্টূ রৈক্সুর শীকাহাবী ঢারাঁসঁ গোব-নাব, কাবী-চমকৈত খাঁখিক খধরযসূ রঁড়কা পেষ্টরঁনা হন্বরাগ নংদ কিশোব নস্সীক গিনাস হাথমে থম্হনে গবজি বহন ছন- "খার্ঁূ ভাগ রিঁসনাথ ! নস্সী তঁ পীরৈঁত জাউঁ ! ”

মোহনদাস জখন নেনিন নগবক মার্কেটসঁ রঁস স্টেঁড দিস জা বহন ছন তঁ ওকব বস্তামে একটা পবেশান-সন খরৈঁত নোক দেখাগ পড়ন। ও নেনিন নগব দিস জা বহন ছন। ওকব খংগাক বংগ কহিযো নান ছন হেতৈ জে খারঁ মৈন খা প্ববান ভঽ কঽ কথেগ ভঽ গেন ছনৈ। মোহনদাস নগ খারিঁ কঽ ও ব্দকন খা প্ৰছনক-

"ভাগ, নেনিন নগবমে সূর্যকাঁতক হ্লৈষ্ট কোন ছৈ ? ”

মোহনদাসক মোনমে এনৌ, জখন ও রিঁসনাথক পতা তাকি বহন ছন, তখনে ও ঙা নেম-প্লষ্ট দেখনে ছন। ও মন পাড়ৈক কোশিশি কেনক।

"আগূসঁ দহিন হাথ ঘ্মি জাএরঁ আ সএ গজ আগূ জা কঽ তিনহ্মহানী নগ, মষ্টিযানী চৌক নগ ককবোসঁ পূছি নেরঁ। ওতৈ ছৈ।”

জখন ও সভ জাএ নাগন তঁ মোহনদাস বকমসঁ ওকবাসঁ প্বছনক- "থহাঁ কেকব হ্লৈষ্ট তাকি বহন ছী ? ”

"সূর্যকাঁতক ! উঁন্নার নগক গামক ছৈ।”

"ওকব গামক কী নাম ছিঐ ? ”

"গঢ় াকোনা... ! ”

"আ থহাঁক কী নাম ছী ? ”

ও নোক কনী কান চ্প বহন। ওকব ঠোঢ় থবথবেনৌ, গহীব ধসন আঁখিসঁ পানি খসঽ নগনৌ। ওকব স্বখাএন গবাসঁ একটা ক্ষীণ ভবভবাএন আবাজ এনৌ- "সূর্যকাঁত !

गढ़ ।कोनाक सूर्यकांत। ”

ओ आदमी घुमन आ बकम-बकम थबथबागत नेनिन नगब दिस बँढ़ि गेन।

(ओ खिस्सा ओग कानक अछि जखन संसाबक सभ देशेक सभ सबकाबक अर्थनीति आ बाजनीति एक्कहि बंगक छन, जखन धनीकक आ गबीबँक बीचक खधाग एत्तु गहींब आ चाकब भ२ गेन छनै जे ओकब कोनो प्रायोजित बिज्ञापन न्वका नै सकै छन...ओग कान जखन बीसम सदीक श्वब्दमे उँपीड़ित आ शोषित मनुष्यताकेँ न२ क२ क्रांति कबैबँना तागति, साम्मा सबकाब बँनाबैँ नेन, पेट्रोनक दाम कम कबबाँक आ गबीबँपब बाज कबबाँक शितबंज खेना बहन छन...आ एहन समए जागमे ऐ देशमे जे किछो ओमानदाब छन आ अप्पन श्रम आ प्रतिभापब जिबैत छन, ओकबा माबबाँ बा थक्कचबाँ नेन एकैसम सदीक उँत्तब औद्योगिक नोकतंत्रमे एकटा अभूतपूर्व सर्वदनीय ऐतिहासिक सहमति छन...। बाजनीतिक सभटा कप सत्ताक एहन उँपकबणमे बँदनन गेन छन, जकब ओस्तुमान प्रजाक उँपीड़न, दमन आ ओकबापब अन्याय नेन भ२ बहन छन।)

बातिमे एगाबह बँजे मोहनदास अप्पन घब पहुँचन। सभ किछो ओकब बाँटै जोहि बहन छन। कस्तूबी भात-दानि आ बामसुमनीक अशीमा बँनेने बहथि। कनीटा काँच आमक चटनी सेहो ओ सिन्ना-नोबहीपब

पिसने छली। देवदास आ शोवदा सुति गेल छल। कारी ओसाबपव खाटपव पड़ल-पड़ल खोंखी कऽ बहल छल।

"आग तीन दिन खोंखीक संग खून आ मौस खसल।" कस्तूबी दतेनकै।

प्वतनीदाग ओतए कादाक खाटक नीचाँ शीतवंजी ओछा कऽ सुति गेल छनि। कस्तूबी एखनि धवि नै खेने छनि। ओ थाबीमे अप्पन आ मोहनदासक खेनाग नगा कऽ झाँपि देने छल।

हाथ-पएव धोनाक दाद जखन मोहनदास अप्पन कपड़ा उँताबनक आ गमछा नपेटनक तँ ओकव उँघाव देहमे नागन चोट आ नोछाबक चेन्ह कस्तूबीकेँ देखा पड़नै। ओ चिंतित भऽ गेनि।

"की भऽ गेल? कतऽ खसि पड़निऐ?", कस्तूबी उँठि कऽ ओकबा नग आयनि आ ध्यानसँ ओकव देहकेँ छूरि-छूरि कऽ देखऽ नागनि।

"हे दाग! ओ तँ मावि-पीटक घाव छिऐ!", मोहनदास चुपचाप हाथ-पएव धोगत बहल। ठाव पानिक संग ओकव दिन भविक थकान धुआ

कऽ नानीमे रहैत जा बहल छलै। मंजलौंठे नग रहैक एकटा पैघ सन गाछ लागल छलै जकरामे कतेक बाम फूल भेल छलै आ ओकर महक भरि आंगनमे भरल छलै। मोहनदास सांस घीचि कऽ अप्पन करेजामे भरि लेलक आ कनी काल धरि आँखि मूनि कऽ सतगुरु कबीरक जाप करैत रहल।

कस्तूरी खेबाक थारीक उपरसँ परात हटैलक तँ भरि आंगनमे भातक गमक भरि गेलै। लोहंदी चाउर छलै, पुरनका। गोठन्नाक कोनो कोनमे पुरनीराग न्वका कऽ राखल छल आ रिसबि गेल छल। आग ओकरा ओ जोगाएल चाउर मोन पड़लै जे छरि-छरि कऽ ओ पोटरी ताकि कऽ निकाललै छल। मोहनदास हपसि कऽ खेलक। ओ आमक चटनी आंगुरमे लगा कऽ चाटि रहल छल तँ कस्तूरी कहलक- "रिसैंधी आमक गाछपर खूब फल आएल छल। रैचनापर कमसँ कम हजार-दू हजार तँ भेटैरै करत। काल्हि रैचि दी की?" मोहनदास तिरपित भऽ कऽ बड़का ढेकार मारलक आ कहलक, "अहाँक हाथक पकाएल भोजनमे जादू अछि कस्तूरी। आमक चटनी, भात आ भूखक संग जौं अहाँक हाथसँ परसबाक संयोग भऽ जाए तँ स्वर्गो भेटै जाइत अछि।" कस्तूरीक आँखि लोरा गेलै। ओ बुझैत छल जे आग मोहनदासक संग कोनो अनहोनी भेल छै, जकरा ओ सभ दिन जकाँ ओकरासँ नुका रहल छै।

ओग बाति कस्तूरीकेँ बड़ बाति धरि जगबनाक रहद

স্বতন ভেলৈ ন্দা মোহনদাসক খাঁখি এক্কা ক্ষণ নেন নৈ নগলৈ। ও রেঁব-রেঁব উঁঠৈত ছন খা গটাগট পানি পিরেঁত ছন। ওকব দিমাগক ভীতব কোনো ধ্বা-গর্দা খা ক্ষসেসঁ ভবন তেজ খান্ধী চনি বহন ছলৈ। খান্হিযে নৈ, কোনো কতেক বাস ঘ্বমৈত রিবোঁ।

মোহনদাস দূ-এক রেঁব ফেব ওবিযংটৈন কোন মাগংস গেন ন্দা ওতএ জাএরঁ ব্যর্থ ভেলৈ কিএকি ওতএ খাব নেনিন নগবমে গু উঁক্কা পসাবি দেন গেন ছলৈ জে একটা রঁতাহ হফ্তা-পদ্রহ দিনপব এতএ খরেঁত খছি খা খপনাকেঁ মাগংসক খসনী ডিপো স্বপবরাগজব খা খসনী মোহনদাস রী.এ. কহৈত খছি। জোঁ ওকবা রিসনাথ কহি কঽ গবজিযৌ তঁ খংট-শংট রাঁজঽ নাগৈত খছি খা ওকবা রঁতহপনীক দৌড় । পড়ৃ ছৈ।

মোহনদাস হাবি গেন খা ও কোনিযবী জাএরঁ ছোড়ি দেনক। ও দিন-বাতি পজবৈত বহন। কঠিনাক বেতপব বাতি ভবি জাগি কঽ চ্পচাপ খাকাশকেঁ ঘ্বৈত বহৈত ছন। গামমে ওহিনো করীবপথী রঁসহব-পনিহা নিচনা জাতিক মানন জাগত ছন। ও খন্বসূচিত জাতিক খছি রা খাদিরাসী রা খাদিম জনজাতিক, এখন ধবি সবকাবী গজেটমে গু হফবিছাএন নৈ ছন। দস রঁবখ পহিনে ভেন জনগণনামে ওকব জাতিক খাগূ "রঁসোব" রা "পনিহা" টা নিখন ছন। দোসব কাগজমে ধর্ম "হিন্দূ' খা বাষ্ট্রীযতা "ভাবতীয"। ওকব সভক সংখ্যা কম ছলৈ। ওকব সমাগক কোনো নোক পার্টী রা সবকাবমে নৈ ছন। ওগসঁ মোহনদাস এতএ মজাক খা ঠট্ঠাক রিষয রঁনি গেন ছন। উঁচ জাতিক ধনীক নোক

ওকবা দেখৈত খা প্বছৈত ছন, "তোহব নোকবী কহিযা নাগি বহন ছৌ বে মোহনা ? ” কিযো ওকবা সনাহ দৈত ছনৈ জে রিজয তিরাবীক মহিসরাবী সম্হাবি নে। কমসঁ কম খাগ–পিরৈঁনে তত্তা–সিহব তঁ নৈ হেতৌ। কস্তূবী সেহো মৌজ কবতৌ। সাড়ী–সঁডিনক দিক্কত নৈ বহতৌ।”

কিযো–কিযো তঁ ওকবা নেনিন নগব জা ক২ রিসনাথক পএব পকড়ি ক২ ওকব ঘবক চাকবী কবরাঁক স্বন্মাব দৈত ছন। মোহনদাস গামক পৈঘ নোককেঁ দেখিযে ক২ বস্তা রঁদনি নৈ ছন। ও ওকবা দেখযে ক২ দূবসঁ ঘ্মি জাগ ছন।

এহনো নৈ ছন জে ওকবা ন২ ক২ গামক নোককেঁ সহান্বভূত নৈ ছনৈ। সত তঁ ঙা ছৈ জে রেঁসী নোক ওকবা ন২ ক২ চিংতিত ছন। কোনো–নৈ–কোনো তবহে ওকব মদতি কব২ চাহি ছন। হ্মদা ঙা ও নোক ছন জে খপনে কতেকো তবহক সংকষ্ট খা রিপদামে রাঁন্নন ছন। একবামে সঁ ককবো কত্তীসঁ ঙঁপব ধবি পহুঁচ নৈ ছনৈ। ও সভ খপ্পন ঘাম খা খপ্পন–খপ্পন নোবক সংগ ঐ কানমে চ্পচাপ জীরৈঁরঁনা নোক ছন।

ঘনশ্যাম এহনে নোকমে একষ্টা বহএ। জাতিক হ্মমী বহৈ। হ্মদা ও গবীরঁ নৈ বহএ। তীস রীঘাক খেতী ছন। রৈঁকমে কিস্তপব ও ট্রেক্টব নেনে ছন। শাক–সব্জী খাদি ঙগারৈঁক খনারা ও খপ্পন ট্রেক্টব কিবাযাপব ঙঠা বখনে ছন। তখনো সভ মাস সাঢ়ে সাত হজাবক কিস্ত কষ্টাযরঁ ওকবা হ্মশিকন হোগন ছনৈ। খেতমে

উপজৈবঁনা অনাজ আ দোসব ফসনক দাম বাঁজাবমে নৈ বহি গেন ছনৈ। নগ-পাসক গাম বঁনহবাক বিঁসেসব জে গ্রামীণ বৈঁকসঁ কর্জ নঽ কঽ সোযাবীনক খেতী কেনে ছন, দূ মাস পহিনে অপ্পন খেতকেঁ নীনামীসঁ বঁচাবৈঁ নেন বিঁজনীক খুঁম্ভাপব চঢ়ি নাঁগঠৈ তাবসঁ সটি কঽ মবি গেন ছন। ছোটকা কিসান আ জোন-মজদূব গাম ছোড়ি - ছোড়ি শহবক দিস ভাগি বহন ছন। ঘনশ্যাম সেহো পবেশান বহৈত ছন।

ওগ দিন মোহনদাসকেঁ কনী জূড় ি চঢ়ন ছনৈ। দিন ভবি সূপ-ঠৈকেবী বঁ্নায আওব বঁড় বাতি ধবি পনিযামে পানি পটৌবৈঁক বাঁদ ও এত্ত থাকি গেন ছন জে বিঁনা খাএন-পীএন স্বতি গেন ছন। ভিনসবে উঠন তঁ দেহ গবম ছনৈ। পবছীমে পটৌএন ছন তখনে ঘনশ্যাম আবি গেনৈ। ও অপনা সংগমে মোহনদাসক সাঢ়ূ গোপানদাসকেঁ সেহো পকড়ি কঽ আননে ছন। দ্নূ মোহনদাসসঁ কহনক জে ওকব চিন্হাব একটা নোক ভেটৈ গেন জে ওবিযংঠৈন কোন মার্গসক জী.এম. (জনবন মৈনেজব) এ.কে. সিংহকেঁ জানৈত অছি। ও মোহনদাসসঁ কহনক জে ও এখন ত্তবত হাথ-ঝংহ ধো কঽ তৈযাব ভঽ জাএ, অগনা বঁসসঁ ওতএ চনবাঁক ছৈ। ঘনশ্যাম আ গোপানদাস দ্নূ উসোহমে ছন। ও সভ কহনকৈ জে আগএ পহুঁ্চবঁ ঐ নেন জরুবী ছৈ কিএক তঁ পবসূ সঁ জী.এম. এক মাসক ছুঞ্চীমে বাঁহব জা বহন ছৈ। গোপানদাস অপ্পন মোবাসঁ মোহনদাসক পহিববাঁ নেন একটা পৈঁট আ একটা শর্ট সেহো কীন কঽ আননে ছন। ও হঁসৈত কহনক, "নিঅ, একবা পহিব নিঅ! বঁ্ঠবাঁ বঁড়দক পোথা সন মৈনেজব নগ চেহবা নটকা কঽ নৈ জাউ।" মোহনদাস জূড় িমে হঁসএ নাগন।

ओविधंटेन कोन मार्गसक जनवन मैनेजव एस.के. सिंहसँ भेंटे कववामे कोनो दिक्कत नै भेलै। गोपालदासक पैंटे आ बॉस्शर्ट मोहनदासक भीतव नव आमेरिश्रीस भवि देने छलै। ओ जी.एम. कें सम्बंधी खिस्सा सुनौलक जे कोना 18 अगस्त, 1997 कें भवी पवीक्षामे ओ नोकवी लेल सलेक्ट भेल छल आ पाँच कैंडिडेटेक लिस्टमे ओकव नाम सभसँ ऊपव छलै। ओग दिन ओ अप्पन सम्बंधी सर्टिफिकेट आ कागच दफतवमे जमा कऽ देने छल मुदा ओकवा नग कहियो नियुक्ति पत्र नै एलै आ आब कोना रिश्वेया टेलाक रिसनाथ ओकव नामसँ पिछला पाँच बवखसँ एतए नोकवी कऽ वहल छै आ डिपो स्पवरागजव रॉनि दस हजावसँ ऊपव दवमाहा लऽ वहल छै। मोहनदासकें घनश्याम कहि कऽ वाखने छल जे ओ जी.एम. कें ओग दिनका घटना नै बतावें, जहिया ओ कोनियवी अप्पन कागज माँगे लेल आएल छल आ भवती दफतवक बाबू सभ ओकवा मावने छलै आ फेव बादमे लेनिन नगवमे पुलिसक दवोगा रिजय तिरावी आ रिसनाथ ओकवा धमकी देने छलै। ऐ लेल मोहनदास एतवेंपव ककि गेल। ओकव गपक समर्थन ओतए बैसल घनश्याम आ गोपालदास सेहो केलक।

जनवन मैनेजव एस.के. सिंह कें लऽ कऽ ई प्रसिद्ध छल जे ओ बड़ सोझ अफसव अछि। ध्रुवफंदीबाला लोकक संग जौँ ओ वहितो अछि तँ ऐ लेल जे ओकवा महग दाढ़क हिस्सक छै। नै तँ ओ एतेक सोझ छै जे ओ नै तँ ककवो अधलाह कऽ सकैत अछि, नहियें ककवो नीक।

मुदा जी.एम. मोहनदासक सम्बंधी गप सुनि कऽ ओविधंटेन

कोनो मार्गसंक रेलवेक ऑफिसर ए.के. श्रीवास्तवकेँ ऐ मामिलाकेँ जाँचेक आदेश देलक आ कहलक जे अगिला मास जखन ओ छुट्टीसँ घुरताह, तखन धरि हुनका जाँच रिपोर्ट भेटि जेबाक चाही। मोहनदास एस.के. सिंहक एहि बर्खसँ एतेक भारुक भऽ गेल जे रेब-रेब ओकर आँखि नोरा जाइ छलै। ओ मोने मोन सतगुरु कबीर आ मनगहा माइक नाम जपि रहल छल।

अगिला हफ्ता जाँच भेल। रेलवेक ऑफिसर ए.के. श्रीवास्तव लेनिन नगरक फ्लैट नंबर ए बाँटा एगारहमे पहुँचल। बिसनाथकेँ एक-एक गपक जानकारी पहिलेसँ छलै। ओकर तार सभ जगह फिट छलै। पछिला पाँच बर्खसँ ओ लेनिन नगरमे मोहनदास नामसँ बसि रहल छल ताइसँ ओ लेनिन नगरमे मोहनदासक नामसँ जानल जाइत छल। ए.के. श्रीवास्तव जकरासँ पुछैत छल जे फ्लैट नंबर ए बाँटा एगारहमे बहैबला लोकक की नाम छै तँ सभ किओ एक्के जरबाब दैत छल, "मोहनदास।" ओ सेहो पछिला चारि-पाँच बर्खसँ जकरा मोहनदास नामसँ जानैत छल आ जकरा लेल ओ बर्कर्स रेलवेक फंडसँ लोन सेहो सेंक्शन केने छल ओ "मोहनदास' माने बिसनाथ छल। फेर ओइ दिन जी.एम. क चैंबरमे जकरा ओ देखने छल जे अपनाकेँ मोहनदास कहि रहल छल, ओकरा देखि कऽ ओकर मोनमे कत्तौ-नै-कत्तौ संदेह भऽ रहल छलै जे एहन नथा दै बला लोक ग्रेजुएट कोना भऽ सकैत अछि ? अप्पन सात्हू गोपालदासक कपड़ा पहिर लेलाक बादो एतेक बर्खक बेरोजगारी, मेहनत आ अभावसँ

মোহনদাসক চেহবা খা সহ্মচা দেহক হ্নিযা এহন ৰনি গেন ছনৈ জে এক নজবিমে ও ৰেমাব, ৰতাহ খা খনপঢ় নজব খাৰৈত ছন। গংক্লাযবী আঁফিসব শ্রীরাস্তবক মন ৰেব–ৰেব কহৈত ছন জে ভহ সকৈত খছি জে মোহনদাস ৰনন নোক ডিপো স্বপবরাগজব মোহনদাস নৈ হ্খএ হ্মদা কিযো খাব হ্খএ হ্মদা ওা জে খপনাকেঁ মোহনদাস হেৰাক দাৰী কহ বহন খছি ও সেহো কত্তৗসঁ মোহনদাস নৈ নগৈত খছি।

রিসনাথ জৰবদস্ত ব্যবস্থা কহ কে বাখনে ছন। খপ্পন স্লটমে ও শ্রীরাস্তবজীক খূৰ সকোব কেনক। খপ্পন কনিযাঁ খমিতাকেঁ ও নো কট ৰ্নাউঁজ খা নীচাঁ সাবীমে শৰ্ৰতিক ঘ্রে নহ কহ ড্রাগংগ কমমে খাৰৈ নেন কহি দেনে ছন। নেনিন নগব মার্কেটমে এম্হব খ্জন শিল্পা ৰ্যুটী পার্নবমে জা কহ খমিতা খপ্পন হেশিযন কবৌনে ছন। ও শৰ্ৰতিক ঘ্রে ঢৈৰ্নপব বাখৈত হ্মস্ক্বাগত ছ্ন জখন শ্রীরাস্তবজীকেঁ ও নমস্তু কেনক খা কহনক, "সবিতা দীদীকেঁ সংগমে নৈ খাননিঐ সব ? " তঁ একাএক ওত্তক্কা রাতারবণ খামৌয, ঘবেনূ খা এঁদ্রিক ভহ গেনৈ। গংক্লাযবী আঁফিসবক নজবি ৰেব–ৰেব খমিতাক খ্জন ঢোঢ় াপব জাগত ছন। টৗরীপব তখন দিল্লী–হ্মৰগ মে চনৈৰনা ফৈশন শো কার্যক্রমক সমাচাব চৈনন নব–ৰড় দেখন জাগত ছন। হ্মদা এতএ তঁ একদম্ম জিঁদা ম াঁডন জেহন স্ত্রী খাগূ ঠাঢ় ছনৈ। ওা সমাচাব নৈ হ্মদা একটৗ সত ছনৈ।

"ওা হমব কনিযা খছি সব ! ” রিসনাথ নমকীন রিগজী শ্রীরাস্তরজী দিস রঁঢ়রৈঁত কহনক–"কস্তূবী ! '

"নাম কোনো প্ৰবান স্হাগনক নৈ নগৈত খছি ? ” গংক্লাযবী আঁহ্নিসব ঠাম ঘৈর্ন পব নমকীনক বাখন প্লষ্টসঁ একটা রিসক্ষ্ট উঁঠরৈঁত ক্ষস্কিযাগত কহনক ।

খমিতাকেঁ হঁসী নাগি গেনৈ ।

"ওা কী খছি সব জে জ্যাতিষী পিতাজীসঁ কহনে ছন জে মীন বাশিরানী নড়কীকেঁ খপ্পন রাঁজৈরঁনা নাম সেহো বাশি রঁনা বাখরাঁক চাহী... ! তখন হন হোগত ছৈ । তগসঁ হমহুঁ সেহো কহনিঐ...চনূ কোনো গপ নৈ ! বাখি নৈত ছী । ”

"ওহ ! তঁ কস্তূবী খহাঁক বাশিরঁনা নাম ছী ? ” গংক্লাযবী আঁহ্নিসব খারঁ খমিতাসঁ গপ্প কহ বহন ছন । "খছা তঁ রাঁজৈরঁনা নাম কী ছী খহাঁক ? ” ওকব হঁসীমে খামৌযতাক ঘনত্ব নগাতাব রঁঢ়া বহন ছনৈ ।

খমিতাক চেহবাপব খসমংজসক ডবীড় রঁনহ নাগনৈ । এক পন নেন ও চ্প বহি গেন । রিসনাথ ঐ গপকেঁ তকোনে রঁ্ঝি গেন ।

"खूबे छी। आबे नाम बेतौबैमे कथी लेल लजाइ छी कस्तूरी।" रसिनाथ ठहाका लगौलक–"चलू, हमहीं बेता दैत छी।... सब मिलकए बाँजेबेना नाम छन्हि अमिता।... अमिता भावद्वाज। घबमे सभ यएह कहै छन्हि।"

गंक्काबबी ऑफिसक श्रीवास्तव हँसै लागल।

"लेडिज कें लाज लै हुअए तँ नीक लै लागैत छै। कनीटो किछो तँ लेडिजपना बैनल बहबाक चाही आकि लै।...चलू कस्तूबीजी हम अहाँकें अमिताजीए कहब। कोनो ऑब्जेक्शन तँ लै अहाँकें?"

"लै सब। एक्को बत्ती लै।" अमिता हड़दकि उठल।

"मुदा सत गप तँ ई अछि जे जखन किओ हमबा अमिता कहैत अछि तँ लागैत अछि जे ओ हमबे घब दिसका अछि।"

अमिता एकटो बेड़का साँस भवलक, "ऐ शनाकामे अप्पन सन किछु लागिते लै छै। बेकबर्ड छी हम सभ। बौब भऽ जाइत छी हम सभ।"

"এখন ডেরনপ ষমে টৌগম নাগত। ওনা প্রাগ্রেস তঁ রঁড় ছৈ এম্হব। দূ রঁবখ পহিলে কী ছল এতএ ? ' শ্রীরাস্তরজী সহজ ভঽ বহল ছল। "খহাঁকেঁ টৌগম কোনা পাস হোগত খছি এতএ, নেনিন নগবমে ? ”

"রঁস ভঽ জাগত খছি কোনো তবহে। কিঙ্কী পার্টী ভঽ জাগত ছৈ। এক–দূ কমেষ্টে ডানি দেনে ছী, গবীরঁ মজদূবক ভলাগ নেন। সোশিন সর্রিসমে মন নাগি জাগত খছি। ”

"নীক খছি, নীক খছি। সবিতাকেঁ সেহো রঁড় শৌক ছৈ সোশিন সর্রিসক। খহাঁ খাএন কঙ্ক হমবা দিস। সবিতাকেঁ সেহো গনরান্ত্র কঙ্ক খপনা সঁ। ” শ্রীরাস্তরজী রিঁসবি গেন ছল জে ও এতএ কোন কাজ নেন খাএন ছল।

রিঁসনাথক রঁাঁহি ফূনি গেনৈ। মৌকা সহী ছনৈ। ও রঁাজন, "দেখূ সব, ঙা নেনিন নগব এহন ক◌াঁনোনী ছৈ জতএ পড় াসিযে পড় াসীক দ্শমন খছি। কিযো ককবো হংসী–খ্শী খাব রঁঢ়ৈ ত দেখিযে নৈ সকৈএ। খারঁ যএহ রিঁন–রঁাতক রঁাত। খাব কিছো নৈ ভেটনৈ তঁ পকড়া খাননক ককবো দূ–চাবি দানা ফেঁক কঽ খা কঽ দেনক শিকাগত। হম জানৈত ছী ককব কাবস্তানী ছিঐ ঙা। জাতিরাদ রেঁসী পসবি বহল ছৈ খাগ–কান্হি। ঙা সভ খারঁ মাথপব রৈঁসত। হম রঁ্নৈ ছী জে ককব কবাএন ছৈ ঙা সভটৌ খেন হ্দা জাএ

दियौ। साँचकेँ आँच की? अहाँ अपन गंङ्गाधरी निष्पक्ष भऽ कऽ करू।"

गंङ्गाधरी ऑफिसर डायरी निकालनक आ पुछलनक,

"फादरक की नाम छी अहाँक?"

"बॉबूजी! ओ बॉबूजी! कनी रैसकीमे आरि जाउ!" रिसनाथ जोरसँ चिकरल आ फेर फ्रस्क्रो कऽ कहलनक,

"देखू संजोगे छै जे माय-बॉबूजी दुनू कान्हि एतए आएल छथि। अचार सभ बॅनल बहै। पहुँचाबैक बॅहन्ना चलि आएल, बेटौ-बॅह्केँ देखबॅा लेल! हमर बॅन्दियत अहाँ हमर फादर-मदरसँ पूछि लियौ।"

"हम तँ जागत छी।" अमिता कहलनक, "ट्रेडिशनल फैमिली अछि हमर।" ओ उठि कऽ भीतर चलि गेलि।

नगेंद्रनाथक पाछाँ ओकर कनियाँ रेणुका देवी सेहो ड्राइंग रूममे आरि गेलि। तिनक चंदन देखि कऽ गंङ्गाधरी ऑफिसर श्रीवास्तवजी अपन सोफासँ उठि कऽ हुनका नमस्कार करबॅासँ अपनाकेँ रोकि नै सकल। बॅड़

রিনম্রতাক সংগ ও প্বষ্ঠনক, "খপ্পন–খপ্পন শ্বভ নাম ৰঁতা দিখ খহাঁ দ্নূ গোষ্ঠে। খসনমে কাগজী কাবৰাগ ছৈ। পূবা তঁ কৰৈএ পড়ৈত ছৈ।"

নগেঁদ্রনাথ এক্কা পনক দেবী নৈ কেনক, "হম্মব নাম ছী কাৰাঁদাস।" ও ক্ষবতাকেঁ গবমে সঁ খীচ কঽ মানা নিকানি ৰাঁজন– "গ্ৰ ত্তনসীক মানা জহিযাসঁ ধাবণ কেনে ছী, তহিযাসঁ ত্তনসীদাসক চৌপাগ হম্মব ওঢ়না–ৰিছৌনা খছি। "দাস" নাম হম তহিযেসঁ জোড়ি বাখনে ছী।...খা গ্ৰ খছি হমব কনিযা প্বতনীৰাঁগ। মোহনাক মহতাবী।" বেণ্বকা দেবী মূড়ী ডোনা কঽ হঁ কহনক।

ঐ তবহে গংক্কাযবী পূবা ভঽ গেন। ওবিযংৈন কোন মাগংসক ৰেনহেযব আঁহিসব এ.কে. শ্রীরাস্তব খপ্পন জাঁচমে পেনক জে মোহনদাস ৰন্দ কাৰাঁ দাস, গ্রাম প্ববৰঁনবা, থানা খা জিনা খনূপনগব, মধ্যপ্রদেশী কেঁ নঽ কঽ উঁঠাওন গেন সভষ্টা খাপত্তি নিবাধাব খছি। ও প্বষ্ঠি নেন প্ববৰঁনবাক সবপংচ ছত্রধাবী তিরাবী খা জিনা জনপদ সদস্য শ্যামনা প্রসাদক কএন গেন তস্দীকক কাগজ সেহো বপষ্টক সংগ নথী কঽ দেনক জে ওকবা ৰিসনাথ দেনে বহৈ।

ৰিসনাথ খা খমিতা মানে মোহনদাস খা কস্তূবীক খাগ্রহপব শ্রীরাস্তবজী দ্পহব ধবি ওতএ ৰিশ্রাম কেনন্হি, সাঁঝমে ৰিযব খা ৰাঁদমে ৰ্হিস্কী সেহো ওতএ পিনন্হি,

সামিষ খাহাবমে দেশী ক্ষগা খা জখন ও বাতি এগাবহ রঁজে খপ্পন নরঁকা "মাকতি জেন" সং ওতএসঁ রিদা ভ২ বহন ছন, তখন রেঁব-রেঁব খমিতাকেঁ "কস্তূবীজী" সংরোঁধিত কবৈত খপ্পন ঘব খারেঁক নেন খা খপ্পন রাগফ সবিতাকেঁ সমাজ সেরামে গন্নান্ন কবৈক খাগ্রহ ক২ বহন ছন।

ক্ষদা নশাক রাঁদো ওকব খাঁখি খমিতাক ঢোঢ় াপব ঠকন ছনৈ জে বাতিক খন্মাবমে পৈঘ ভ২ ক২ ওকব সক্ষচা চেতনাপব খাচ্ছাদিত ভ২ গেন ছনৈ।

(ঙা সভটা গপ ওগ কানক খছি জখন পংজারঁমে নোক সেরা খাযোগক চযন সমিতিক খধ্যক্ষ কবোড় া ঠকা ঘূস খা ক২, পূবা বাজ্যমে হজাবো সবকাবী খধিকাবীক নিযুক্তি ক২ দেনে ছন খা সী.রী.খাগ.ক ছাপা মাবন গেনাপব ফবাব ভ২ গেন ছন। ...জখন পৈঘ-পৈঘ মংত্রীক খারাসমে জেড সিক্যাবিটীক ভীতব সূটকেস খা নোটক রঁডন পহুঁচি বহন ছন খা ওতএ ভাবতক কোনো সাধাবণ নোকক প্ররেশ রর্জিত ছন। ...জখন হবিযাণাক একটা খাগ.জী. খাওব উত্তবপ্রদেশক একটা করীনা মংত্রী স্ত্রীগণক সংগ খরৈধ সংরঁধ খা হত্যাক খাবোপমে গিবফতাব ছন খা ক্ষরঁগমে এনকাউংটবসঁ খংডবরন্ডিক খপবাধীকেঁ মাবৈরঁনা "স্বপবক ॉপ" সেহো মাফিযাক "স্বপাবী কিনব"ছন। ...এহন কান জখন ঐ উপমহাদ্বীপক প্রজাক ভাষা হিংদী খা উর্দূ কেঁ "বাজভাষা' রঁনেনাক রাঁদ প্রেমচংদ, নেরুদা, ফৈজ খা নজরুন-নিবানা কেঁ "বাজ-নেখক" রঁনেরোঁ নেন সত্তাধাবী বাজনীতিক দনক নোক নেখকক ক্ষখৌটা নগা ক২ কমেটী রঁনা বহন ছন। ...এহন কান জখন দিল্লীক একটা রেঁমাব খা কর্জদাব

दर्जी अप्पन दूटा संतान आ अप्पन कनियाकेँ मारुर खुआ कऽ मारि देलाक बाद अप्पन हत्याक प्रयास करैत पकड़ल गेल, किएक तँ ओकरा लग आजीविकाक कोनो विकल्प नै बचि गेल छल। आब ओकरा जेलमे दऽ कऽ गँडियल पीनल कोडक धारा 302 आओर 309 लगा कऽ हत्या आ आत्महत्याक कोशिशक मुकदमा चलाओल जा रहल छल। ...आ...)

पाँचम आ अंतिम खेप

ओरियंटल कोन मार्गसक ग्रंथ्रायरी कमेटीक रिपोर्टकेँ बाद मोहनदास टूटि गेल। घनश्याम आओर गोपालदास जनरल मैनेजर एस.के. सिंहसँ एक बेर आओर भेँट कऽ हुनकासँ दोबारा ग्रंथ्रायरी करबाक माँग केलक मुदा ओ कहि देलकन्हि जे बेर-बेर ग नै हएत। हमर सभसँ सक्षम आ ईमानदार अधिकारी एकर जाँच केलक, दोबारा ग्रंथ्रायरीक आदेश दऽ कऽ हम हुनकापर संदेह पैदा नै करैऽ दै चाहै छी। बादमे पता चलल जे बिसनाथ आ अमिता जनरल मैनेजरकेँ सेहो नेलिल नगरक अप्पन घरपर बजा कऽ खुआयब-पिआयब शुरू कऽ देने छल आ ओकर कनियाकेँ सेहो "समाज सेवा' आ किटी पार्टीमे शामिल कऽ देने छल।

कोन मार्गसमे अफवाह ग्रामो छल जे अमिता जनरल मैनेजर एस. के. सिंहकेँ फाँसि लेने छै आ आब बहरहाँ ओकर काम नेलिल नगरक फ्लैट नंबर ए बीटा एगारहक बाहर मोहनदास, कनिष्ठ भागार अधिकारीक फाटकपर ठाढ़ बहैत छ। खबर ग्रामो छल जे बिसनाथ

সেহো হ্নকা পঠা নেনে খছি। সিংহ সাহেবঁ ওহিনো মৌজ–মস্তী, খাগ–পীবৈক শৌকীন নোক ছন।

মোহনদাস ঠুঁঠি কঽ ছিড়া যা গেন। নৈ তঁ ও ঠীকসঁ খা সকৈত ছন, নৈ তঁ স্বতি সকৈত ছন। কোনো কাজমে ওকবা মোন নৈ নাগৈ ছনৈ। কেহন–কেহন প্রশ্ন খাওব সংদেহ ওকব দিমাগমে খাবৈত ছন খা ও বেচৈন ভঽ জাগত ছন। ওকবা নাগৈত ছন জে জত্তু নোক নৌকবীমে ছৈ রা উঁচ জগহপব বৈসন ছৈ, কাবমে ঘূমি বহন ছৈ খা জে নাম খা চেহ্নসঁ ও সভ জানন জা বহন ছৈ ও খসনমে কিযো খাব ছৈ খা ও জানসাজী কঽ কোনো খান হ্মখৌটা নগা বখনে ছৈ। কী নেনিন নগবমে কোনো খসনী নোক, খপ্পন নাম, বন্দিযত, পতা–ঠেকানক বঁচনো ছৈ রা সভ বিসনাথে সন বঁহ্ৰূপিযা খা ড্প্লীকেট ছৈ ? মোহনদাসকেঁ সেহো খপনাপব সংদেহ হ্খএ নাগন জে খাখিব ও কে ছী ? মোহনদাস রা বিসনাথ ? খাকি ও এম.জী. ডিগ্রী ক◌ॉনেজসঁ বী.এ. ক পবীক্ষামে জে ডিগ্রী পৌনে ছন ও বিসনাথক নেন ছন ? কী সভক সংগ খহিনে হোগত ছৈ ?

ও ঘবক ভিতবে কোনমে সবকাবী বোজগাব দফতবসঁ পঠাওন গেন প্ববনকা পোস্টকার্ডকেঁ তকৈত বহতিঐ। নৈ ভেষ্টনাপব কস্তূবীসঁ নড়া তিঐ–ঝগড় া কবিতিঐ। ও কিছ বঁবখ পহিন্বকা এহন কতেক পোস্টকার্ড তাকি কঽ নিকাননে ছন, জগমে ওকব নাম খা পতা নিখন

ছনৈ। ও গামমে খপ্পন নোককেঁ ও সভ চীজ দেখাবৈঁ ছন। নোক সভ যা তঁ চ্প বহৈত ছন বা ওকবা কোনো খফসব থাকি নেতাসঁ ভেঁটৈ কববাঁক সনাহ দৈত ছন। মোহনদাস জেহন হানম ন, ওগমে এহন ভহ সকবঁ সংভব নৈ বহি গেন ছন। প্ববরঁনবাক সবপঁচ পঁডিত ছত্রধাবী সেহো ঙা নিখিত প্রমাণপত্র দহ দেনে ছন জে রিঁসনাথ প্ববরঁনবাক মোহনদাস ছী। ওকব বেঁটৌ রিজয তিরাবী তঁ ওহিনো রিঁসনাথসঁ মিনন ছন। কস্তূবীপব ওকব নজবি সেহো ছনৈ খা গিদবমাবা জকাঁ ও খহী গঁতজাবমে ছন জে এক নৈ এক দিন ঠূঁটি কহ মোহনদাস ওকব পএবপব থাবিঁ খসত খা ওকব মহিসবাবীক কাজ সম্হাবি নেত।

মোহনদাস দেখৈত ছন জে সবকাব দিসসঁ গ্রাম পঁচাযতকেঁ জে হৈডপপ স্বীকৃত হোগত বহৈ ও পৈঘ নোকক ঘবক খাগূ নাগি জাগ ছনৈ। শিক্ষাকর্মীক নিযুক্তি হোগত ছন, স্ত্রীগণক নেন খাঁগনবাঁড়ী খা শিক্ষিকাক পদ নিকনৈত ছন, গঁদিবা খাবাস যোজনামে ঘব বঁনাবৈঁ নেন খনুদান ভেটৈ ছন, গনাব খা খেতকেঁ ঠীক কববাঁ নেন গ্রামীণ রিকাস রিভাগসঁ টৈকা খবৈত ছন, নেহৰু বোজগাব যোজনামে শিক্ষিত বেঁবোজগাবক নেন কোনো পবিযোজনা খাবৈত ছন তঁ ঙা সভ ওগ নোকক রীচ বাঁটি জাগ ছনৈ। শাবদা খা দেবদাস কহৈত ছৈ জে স্কূনমে দ্পহবিযামে জে খেনাগ বাঁটৈ ছৈ ওগমে ভেদভাব হোগত ছৈ।

ওগ দিন মোহনদাস কতেক ৰবখক খপ্পন নেনাক সংগী ৰীবন ৰৈগাক ঘব জা কঽ মহ্‌ক দাৰু উঁতবৰৌনক খা স্বগবক মাউঁস ৰনৰৌনক। সংগমে ওকব সাঠূ গোপানদাস সেহো ছন। ও চাবি–পাঁচ নোক ছন খা সাঁঝ সাত ৰজেসঁ ও সভ পিনাগ শ্বৰু কঽ দেনক। ঢোন–মংজীবক গংতজাম কবনে বহয। ওগ দিন মোহনদাসকেঁ "ৰিংধ্যাচন হৈডীএৱাফষ্ঠ" ৰনা সেঠ ৰাঁসক মানক ভুগতান কেনে ছন। ৰাবহ সএ ঠৈকা ওকবা ভেঠৈন ছনৈ। গোপানদাসক জেৰী সেহো ওগ দিন ভবন ছন। ঘব তঁ ৰীবন ৰৈগাক ছন ঝদা দাৰু–মাউঁসক সভঠৗ খর্চা মোহনদাস উঁঠেনে ছন। ৰীবনক ঘবৰানী খা ওকব ৰহিন মহ্‌ক দাৰু এতেক নীক উঁতাবৈ ছন জে ভীতপব জোবসঁ বগড়া দিযৌ তঁ ভক্কসঁ খাগি নাগি জাগত ছন।

মোহনদাস ওগ বাতি খপ্পন দোস্তক সংগ বাস–বংগমে কিছু ক্ষণ নেন খপ্পন সভঠৗ দ্‌খ ৰিসবি গেন ছন। ৰিহাবী ঢোন ৰজা বহন ছন, পবমোদী মংজীবা। মোহনদাস মস্তী খা নশীমে গাৰি বহন ছন:

"পতা দগ জা বে, পতা নগ জা বে...গাড় ীৰনা....

তোহব নামক, তোহবা গামক

পতা দগ জা...

মাযা বে, মাযাক ঠাম ৰতাৰৈ মাযাক খানথি খৰবিযা

কাযা মাযা দ্নূ নাচ নচারৈঁ, মাযাক সগব নগবিযা

পতা দগ জা বে, পতা নগ জা বে...গাড়ী রিঁনা... । '

রীবনক ঘবরানী জখন খানা পবসনক তঁ বাতিক দূ রাঁজি গেন ছনৈ। ভূখ সভকেঁ নাগন ছনৈ। তোবীক তেনমে মসন্না–নহসূন–পিযাজ্ দ২ ক২ স্বখবক মৌস রীবনক রঁহিন বান্হনে ছন। বসক গঁধ পূবা খাঁগনমে পসবন ছন। সভ নোক হাথমে বোটী ন২ ক২ খাগপব টূটি পড়ন। টৈকেনা ভবি ভাত সেহো রঁনন ছন। ক্ষদা মোহনদাস চ্প ছন। গীত গরৈঁত–গরৈঁত ওকবা ভীতব কতৌ কোনো একটা ফাঁস, জনা একরৈঁগ গবি গেন ছন। ওকব টৌস রেঁব–রেঁব ওকব ছাতীক ভীতব জাগৈত ছন, জকবা দরাঁরৈঁ নেন খা রিঁসবৈনে ও খাব নোকসঁ রেঁসী পী নেনে ছন।

খাগত–খাগত একাএক কৌব হাথমে বোকি ক২ মোহনদাস রেঁব–রেঁব সভকেঁ দেখনক ফেব ওকব গবসঁ হিচকী নিকন২ নগনৈ। ও কূহী ভ২ কান২ নাগন। গোপানদাস, রীবন, রিহাবী, পবমোদী সভ কিযো এক্ত ভূখাএন ছন খা এক্ত দিনক রাঁদ এক্ত নীক খেনাগ ভেটি বহন ছনৈ জে ওকবা সভকেঁ মোহনদাসক ঐ কান কানরঁ নীক নৈ নাগৈ ছনৈ। সভ কিযো খপ্পন ক্ষঁহসঁ ভবি–ভবি কৌব চরাঁ বহন ছন খা প্বছৈত সেহো জা বহন ছন জে কী ভেন! পহিনে খেনাগ কিএ নৈ খা বহন

ছিঐ ?

"ঋহাঁ কে ছী ? ঋহাঁক নাম কী ? '

"হমব নাম ছী রীবন। রীবন রঁগগা।" রীবনকেঁ হংসী ঋারি গেনৈ।

"ঋা ঋহাঁক রন্দিযত ? ঋহাঁক রাঁপ কে ছথি ?" মোহনদাস ফেব প্বছনক।

"হমব রাঁপক নাম ডিঁডরা রৈঁগা ঋছি।" রীবন হঁসৈত জরার্ব দেনক। ঋহাঁকেঁ মহ্ক দারু চঢ়া গেন ঋছি।

সর্ব হঁসহ নাগন। মোহনদাসক ঋাঁখি নান ভহ গেন। ও হাথক কৌব ছিপনীমে দহ দেনক ঋা গবজি কহ রাঁজন:

"হৌ রীবন, হৌ পবমোদী...হম কে ছী ? সত সত রাঁজূ ? হমবা র্বুবরক নৈ রঁনাউঁ। ঋহাঁ সভকেঁ মনগহা মাগক কিবিযা!"

"ঋহাঁ ছী মোহনদাস! ঋহাঁক রাঁপ কারাঁ দাস ঋা মাগ প্বতনীরাঁগ!"

রীবন ঋপ্পন ঋগঁঠ হাথ মোহনদাসক ছাতীপব গড় ারৈত জোবসঁ জরার্ব দেনক। সভ কিযো হঁসহ নাগন। মোহনদাস কনী কান চ্পচাপ রীবনকেঁ নিঙহাবৈত বহন, ফেব রেঁবা-রেঁবী সভকেঁ তাকহ নাগন। ও ঋপ্পন শংকা মেটৌরহ চাহি ছন জে ও সভ ঋসনী নোক ঋছি রা কিযো ঋাব ঋছি ? কনী-কনী ওকবা নাগৈ ছন জে ঙা সভ ওকবে সন ঠকাএন গেন ঋসনী নোক ঋছি। একবা

सभकेँ धोखा देल गेल छै। अन्तत मात्र एतबे जे ओ ऐ बहस्यकेँ बुझि गेल अछि आ एकटा सभकेँ एखन धरि नै पता चलल छै।

मोहनदास अप्पन लोकक संगी-साथीकेँ बतेलन्हि चाहै छल जे अहाँ सभ किछो सरकारी दफ्तरमे, शहरक ऊँच-ऊँच बिल्डिंगमे आ पैघ-पैघ बँगला-कोठीमे, कोनो अदान-कारखानामे आ लेबि नगर, गांधीनगर, अंबेडकर नगर, शास्त्रीनगर जेहेन कॉलोनीमे जा कऽ पता करू जे कतौ ओतए अहाँक नाम, वल्दियत आ पता-ठेकानाक किछो दोसर फर्जी जालसाजी तँ नै बैसल अछि, जे अहाँक हक छीन लेने अछि। ऐ दुआरे निशाँक बाँदो ओकरा लागि रहल छल जे एहन गप कहलापर ओ सभ किछो ओकरासँ कहत जे अहाँपर ठर्रा निशाँ बैसी चढ़ि गेल अछि।

बीवन, परमोदी, गोपालदास, बिहारी सभ किछो खाटमे लागल छल। बीवनक घरवाली सितिया आ ओकर बहिन बमोली सेहो आबि गेल छल। ओ दूनू सेहो मह् पीबि रहल छल आ चूल्हक जरौर चूल्हसँ दऽ रहल छल। सभ किछो हँसि-बाँजि, खा-पी रहल छल। ऐ दुआरे मोहनदास सभसँ फराक, भीतक कोनमे बौतल लऽ कऽ बैसि गेल छल आ हिचकीक बीच कबीरदासक पद गेबाक संग पीबि सेहो रहल छल।

ভোবক চাবি ৰাঁজি গেন ছন জখন ওকব সংগী ওকবা নাদি–ঠাঁগি কঽ ঘব ধবি পহুঁচৌনক। কসতূবী পহিন ৰেঁব খপ্পন সাঁযক ঙা হানত দেখনে ছন। ও গোপানদাস খা ৰীবনপব কৰঁদয নাগন। হ্মদা জখন গোপানদাস ওকব তবহথোীপব এক হজাবসঁ ঙুঁপব ঠৈকা বাখনক খা দ্খী ভঽ কঽ কহনক, "হম কতেক বোকনহুঁ জে মোহনা নৈ পী...নৈ পী হ্মদা ঙা নৈ মাননক। ঙা ঠৈকা বাখি নিখ। একব জেৰীসঁ ৰাহব খসি পড়ন ছন।" তঁ কস্তূবী চ্প ভঽ গেন।

ভোব সাত ৰাঁজন ছন জখন কাৰাঁ দাসকেঁ খোঁখীক দৌবা পড়ন। কোনো খান্হী জনা খোঁখী ভেন ছন। থমৈক নামে নৈ নঽ বহন ছন। খান্হব প্বতনীৰাঁগ ডোবী ঠ্ূঠৈন গাএ সন চাব্দ দিস খসৈত–পড়ৈত ভসিযাএন দৌগি বহন ছন। ওকব কানৰঁ পূবা ৰঁস্তীমে গূঁজি বহন ছনৈ। কস্তূবী সেহো জাগি গেন খা মোহনদাসকেঁ হিনা–হিনা কঽ জগেৰাঁক কোশিশ কঽ বহন ছন।

হ্মদা ও মহ্ক নশামে ধ্ত্ত পড়ন ছন খা ঙঁঠৰাঁক নাম নৈ নঽ বহন ছন। কস্তূবী ডোনমে পানি নঽ কঽ খাএন খা ওকবা মোহনদাসক ঙুঁপব ঢাবি দেনক। মোহনদাসক খাঁখি খ্জন। ও এতেক নান ছন জে ওকবামে খূন হেন বহন ছন। ওকব নশা নৈ ঙঁতবন ছনৈ। কস্তূবী চিকবি কঽ ৰাঁজন, "ঙঁঠিযৌ...যৌ! ড◌াঁক্টৈবকেঁ নঽ কঽ খৰিযৌ! ৰাঁবূকেঁ খোঁখী ভঽ বহন ছৈ!"

গামসঁ নোক–ৰেদ ঋা স্ত্রীগণ–নেনা সভ ঋাৰঁ২ নাগন ছন। দেৰদাস ঋা শাবদা ডবাযন ঋপ্পন ৰাঁৰা কাৰাঁক খাঁট নগ ঠাঢ় ছন। কাৰাঁক গব জনা ফাটি গেন ছনৈ ঋা ওগমে সঁ খূন ঋা মৌসক থক্কা সভ ৰেঁব খোঁখীক সংগ ৰাঁহব নিকনি বহন ছন। ধবতীপব চিঙ্কা–মঙ্কাক ধাবী নাগন ছন। গিহ্মা মাঁছীক ঝুঁড ওকব চাৰু কাত ভিনভিনাগত ঘূমি বহন ছন।

নোক মোহনদাসকেঁ উঁনটৌ–প্বনটৌ বহন ছন ঋা ওকবা জগাবৈঁমে নাগন ছন। ৰঁড় ক্ষণিকনসঁ মোহনদাস হাথ ঠেক কহ কনী টৌ উঁটেঁগা ভেন ঋা খূন জেহন নান ঋাঁখিসঁ চাৰু দিস ভক্ষঋাএন চোন্হবাএন দেখ২ নাগন। ও কেকবো চিন্হ নৈ সকৈ ছন। ওকব নজবি কতৌ স্থিব নৈ ভ২ বহন ছন। একাএক ওকব ঠোঁঢ়পব হঁসী এনৈ। ও ঋপ্পন ঋাঁখিপব জোব নগা ক২ বমণ কক্কাকেঁ চিন্হ গেন। ও গবসঁ টূটৈন ঋবাজ নিকাননক, "কক্কা, হম কে ছী ? হমব নাম কী ঋছি কক্কা ! হমবা কহু কক্কা, হমবা ৰঁতৰিযৌ ? " ঋা ও ৰেঁদম ভ২ ক২ ওগ ঠাম ওঁঘবা গেন।

গামসঁ ঋাএন স্ত্রীগণক কানৰঁ ঋা চিকবৰাঁক হন্না উঁঠন। প্বতনীৰাঁগক চিকবৰঁ সভসঁ উঁচ ছন। কনী কান সভ স্ত্রীগণ জনা কোনো নযমে কানৈ নাগন।

কাৰাঁ দাস মবি গেন। ওকব খাটৈক নীচাঁ বাখন ৰাঁস ঋা কচিযাপব মাঁছী ভিন–ভিন কবৈ নাগন।

काल्हि खदहा बाति धवि ओ टैकबीक नेन कमची छीनैमे नागन छन। काल्हि द्पहवमे रॅजावक रिन्ध्याचन हैंडीध्राफ्ह्ंसर्सँ तीस टैकबी आ पचीस सूप रॅनारैक आडिब भेटैन छनै।

ओग भोव कबीरॅ साढ़े सात रॅजे कस्तूबीक कोठबीमे रिनैया झपङ्गा मावनक आ खनोपी मैनाक जोड़ा कें खा गेन। मादा मैनाक पेटमे नरॅ खंडा आएन छन। ओकब नोचन पाँखि आ खूनक दाग कोठबीक माटिक जमीनपब रॅचन बहि गेन छन। कस्तूबी एक्कः दिन पहिने गोरॅबसँ ओकबा निपने छन।

ओग दिन मोहनदासकेँ किछ नै बूझन भेनै जे ओकब रॅाप कारॅा दासक दाह-क्रिया कोना भेनै, ओकबा ओसावपब नशामे रॅहोशि छोड़ि कऽ गाम-रिंवादबीक नोक कारॅाक नाशकेँ श्मशान धवि नऽ गेन, ओकब माए प्वतनीरॅाग कोनो तवहेँ कारॅाक खाटपब माथ पटकैत बहन आ रॅाँस, पथिया, कमची, पटिया, नोटा आ कचियासँ ओकब खून धारैत-ध्खारैत कानि-कानि कऽ गारैत बहए, छोट-सन देरदास कोना खप्पन रॅाप मोहनदासक रॅदना खपनेसँ खप्पन ररॅाक चितामे आगि देनक आ ओकब नेनाक संगी रॅीबन रैंगा ओकब किबिया-कवम

केनक !

मोहनदासकेँ किछ्छो पता नै। गोसाईं कस्तूरीसँ पाँच सए टैका स्वतावनक, पाँच सए जंगनक फारेस्टगार्ड लऽ लेनक। ओ पतेबासँ कारोंक चिता लेन स्वरखन नकड़ ी रिंछे लेन नै दऽ बहल छल। कस्तूरी नग ओ सभटा टैका खमे भऽ गेल जे गोपालदास ओकबा देने छल।

मोहनदासक गबसँ फोंफ कटैरोंक ध्वनि नगातार निकलि बहल छल। एकाध रेंब ओ श्रप्पन आँखिकेँ खोलि, चारू कात एहन तबहेँ देखतियै, जना ओ कोनो नरँ श्रा अनचिन्हाब ठामपब श्रावि गेल छै श्रा फेब ओ स्वति जागत छल। ओ नीन छल रा फेब महक दारूमे यूबिया रा नैटैनाक पात मिना कऽ उँतावन शिबारँ छल रा स्वगबक मौसमे कोनो छूति नागन छल। कदा एहन हैतियै तँ ओग बाति ओकबा संग खाग-पीरेंरेंना रीबन, पबमोदी, रिंहाबी, सितिया, बमोनीक संगो एहने हैतियै। ओ सभ किछो तँ ठीक छल श्रा कारोंक मबनापब नकड़ ीक जोगाड़सँ लऽ कऽ खाँड़ ा गाम जा कऽ गोसाईंकेँ रँजारैँ श्रा सभटा कर्म निपटौरेंमे तँ रएह सभ किछो नागल छल। मोहनदासक नशा साधारण नै छलै।

"दारू दिमाग धबि चढ़ि गेल छै। दहीमे जीबा-जमैन धबिकेँ कंठक भीतब दियौ।" रीबन रैंगा सलाह देनक।

कस्तूरी रौटीमे जीबा-जमैनक घोब लऽ कऽ मोहनदास

नग आएन आ गोपानदास ओकर माथकेँ अप्पन कोरामे राखि कऽ जखन ओकर मुँह खोनय नागन तँ मोहनदासक आँखि ख्जनै। ओ कस्तूरी आ गोपानदासकेँ एना देखनक जना ओ ओकरा चिन्हैत नै छनै। ओ बँड़ कमजोर आ थरथरायन अराजसँ कस्तूरीसँ पुछनक–

"अहाँ के छी बाँग? आ हम के छी? हमरा बँतारियौ?' एकर बाँद ओ कस्तूरी दिस ताकि–ताकि कऽ मुस्कियाएत नीक अराजमे गाबँऽ नागन–

"अहाँ बिनसप्वरहिन छी,

हम छी बैगड़ा या,

हमर–अहाँक जोड़ ा, सजन अछि बँड़ बँढ़ा या....।"

कस्तूरीसँ बहन नै गेनै। ओ कूही भऽ कानऽ नागन। शाबदा सेहो अप्पन पिताक हान देखि कऽ कानऽ नागन। गोपानदास अपनाकेँ संयमित करैत कस्तूरीक हाथसँ बाँटी नऽ नेनक आ मोहनदाससँ कहनक, "निअ, ग्ञ काढ़ ा पीबँ निअ।"

मोहनदास कतेक बास गहीब आँखिसँ गोपानदासकेँ किछु कान धबि देखनक आ फेब कोनो बँचा सन बाँटी मुँह नगा कऽ सभटा काढ़ ा गटागट पीबँ गेन। शागत ओकर दिमागक कोनो कोनमे अपनाकेँ

ঠীক কবরাঁক সেহন্তা এখনো দম মাবি বহন ছন। কস্তূবী আ গোপানদাসকেঁ আহিযত ভেনৈ। জৌং দরাগ অসব কহ জাএ তঁ ঠীক নৈ তঁ ডাঁকটবকেঁ রঁজারঁহ পড়ত।

মোহনদাস ফেব স্বতি গেন।

মোহনদাস অপ্পন ঘবক ওসাবপব ওনাহিতে পাঁচ দিন আ চাবি বাতি নগাতাব স্বতন বহন। গামমে ঞা গপ পসবি গেন জে ওকব দিমাগ সনকি গেন ছৈ আ ও কেকবো চিন্হৈত নৈ অছি, এতএ ধবি জে অপ্পন কনিযাঁ কস্তূবী আ রঁচা ধবিকেঁ নহি। কিযো কহতিঐ জে মহক দাৰুমে যূবিযাক ফেঁটক কাবণ এহন ভেন , কিযো কহতিঐ জে ও ওবিযঁটন কোন মাগংসক কাঁনোনী নেনিন নগবমে নূ নাগি গেনাসঁ খসি গেন ছন, তখনেসঁ ওকব স্মৃতি চনি গেন। রিজয তিরাবী ঞা গপ পসাবি দেনক জে ওকব কবঁবা ফত্তা মোহনদাসকেঁ ধোখাসঁ কাটি নেনকৈ, আরঁ দেখৈত বহরঁ, জহিনা পানি রঁবসত ও ফফব জনা ভূকত। জতেক ফঁহ ছন ওতেক গপ ছন। ফশিকন দেরদাস আ শাবদাক সংগ সেহো ছন। ও স্কূন জাগত ছন তঁ ওতএ মাস্টব আ রঁচা ওকবা সঁ প্বছৈত ছন, কী অহাঁক রঁাপ রঁতাহ ভহ গেন অছি ? অহাঁক রঁাপ অহাঁকেঁ চিন্হৈত নৈ অছি কী ? কী ও স্বতন বহৈত অছি ? তখন ফেব ওকব দাতমনি-সফাগ আ হগরঁ-মূতরঁ কোনা হোগত ছৈ ?

একটা খফরাহ গহো পসবন জে এক বাতি মোহনদাস একাএক উঁঠন খা খপ্পন রাঁপ কারাঁ দাসক কচিযা নঃ কঃ ঘবক সভ নোককেঁ কাটৈ–মাবৈ নেন দৌগন। ও তঁ কস্তূবী ওকবাসঁ ওঝবা গেন খা খান্হব প্বতনীরাঁগ ওকবা বস্সীসঁ রাঁন্হি দেনক, নৈ তঁ পতা নৈ কী ভঃ জৈতিঐ।

(এা সভ ঘটনা ওগ কানক ছী জখন "গঁডিযা শাগন' কঃ বহন ছন খা রিত্তমংত্রী খা রিশ্বৈরেঁকক দাবা ছন জে সন ১৯৯০ সঁ শ্বদ্ধ ভেন ৯.+ প্রতিশতক খার্থিক রিকাসক খখ্নকা রিকাস দব জৌঁ এতেক সান ভবি খাওব রঁনন বহন তঁ গঁডিযা খমেবিকা রঁনি জাএত কিএকি ঐ সঁ খদহা রিকাস দবপব পচাস রঁবখক ভীতব খমেবিকা খমেবিকা রঁনি গেন।

...রএহ কান জখন হমবা খস্থি–যক্ষ্মা ভেন ছন খা হমব বীঢ়ক হড্ডী এন.খাব–৪ খা ৯ গনি গেন ছন। হম নৌ মাস ওছাওনপব বহি খা কাঁধাবমে রঁমিযানক পহাড়মে রঁ্হ্রক ঝস্কাগত মূড় ৗকেঁ ফিবকাপবস্ত াব নাঁচব–মিসাগনসঁ তোড়ি বহন ছনৌঁ...

...রএহ কান জখন দিল্লীমে গবীরঁ মজদূবক চাবি সানক ঘামসঁ, ১৯ হজাব টন নোহা খা ৪ নাখ ৯৭ হজাব ঘন মীটব ধবতীকেঁ খোদি কঃ এশিযাক সভসঁ পৈঘ, দ্নিযাক সভসঁ মহগ খা খাধ্নিক মেট্রো বেন রঁনাওন জা বহন ছন...। ...জখন সাঢ়ে তীন হজাব রাঁন্হক নেন পাঁচ

করোড়সঁ বেঁসী আদিরাসী আ দনিতক ঘব-খেত-বাঁড় ী পানিমে ড়ুমা দেন গেন ছন...। জখন দেশক ২০ করোড় নোক নগ পিরাঁক নেন পানি ধবি নৈ ছনৈ...আ সাঠি করোড় নোক নগ হগৈ, নহারৈক আ মৃতৈক নেন জগহ নৈ ছনৈ..

...জখন সবকাবমে সাঝীদাব রামপথী পার্টী পেট্রোনক দাম নৈ বঁঢ়বৈঁ নেন দিল্লীমে হল্লা মচা বহন ছন, জখন হিন্দুস্তানক পূবা আবাঁদীক ৯০ প্রতিশত মানে নগভগ ৯২ করোড় নোককেঁ পেট্রোনসঁ কিছু নেনাগ-দেনাগ নৈ ছন...

...জখন বাজস্থানক গংগানগব আ টৈঁকক এক দর্জন গবীবঁ কিসানকেঁ প্বনিস ঐ নেন গোনী চনা কঽ মাবি দেনে ছন কিএকি ও অপ্পন স্বখাগত ফসিনকেঁ পানি পটৌবৈক নেন পানি মাংগৈত পথেবরাঁজীপব উঁতবি গেন ছন...

...রএহ কান জখন অর্জুন কবীম তেনগী কতেক হজাব করোড় টৈকাক জানী টিকট বেঁচনে ছন আ ঐ ঘোটানামে দেশক কতেক পৈঘ অফসব আ নেতা মিনন ছন ! ...রএহ কান জখন হিন্দীক একটা বূঁঢ় আনোচক এক অফসবকেঁ হ্নত্তিবোঁধ আ দোসব খ্বর্টি দোসব অফসব কেঁ প্রেমচংদ আ ফণীশ্বিবনাথ বেণু ঘোষিত কঽ বহন ছন...জখন পোখবণমে বঁম ফূর্টি গেন ছন আ কাবগিনক বাঁদ সম্ভাবনা বঁস চনাওন জ বহ ছন...

...রএহ কান জখন প্ববরঁনবাক কঠিনা ধাবক পানি একটা কাগজক কাবখানাক নেন নকড় ী সড় াবৈঁক বাঁন্হমে বঁদনন জা বহন ছন খা ও সভটা হিস্সা পানিমে ডূমি গেন ছন, জতএ মোহনদাস পনিযা বঁনা কঽ তবর্বূজ, ককড় ী, খবর্বূজ, সজমনি উঁগাবৈঁ ছন...

...খা জতএ এক বাতি "হ্ ত্ত তূ...তূ তূ..' কবৈত ও কস্তূবীক ছপাকসঁ কঠিনাক ধাবমে খসি কঽ প্রেম কেনে ছন খা নক্ষত্রক সনেটী খাভামে কএন গেন ওগ উঁদ্দাম সহরাসক স্মৃতিক ৰূপমে ঠীক নৌ মাসক বাঁদ শাবদাক জন্ম ভেন ছন...)

ক্ষদা খসনমে মোহনদাস নৈ তঁ পাগন ভেন ছন, নৈ ওকব স্মৃতিমে কোনো খোট ছন। ওকব চেতনামে জে ঘার নাগন ছন ও নগভগ এক হথতাক খখড নীন, মূর্ছা রা নশা কান চ্পচাপ ভবি গেন। জখৈন ও জাগন তঁ ও ফেব পহিন্বকে জেহন মোহনদাস ছন, জে নীক তবহেঁ ব্ঁমৌত ছন জে খসনী মোহনদাস রন্দ কারাঁ দাস, সাকিন প্ববরঁনবা, থানা খা জিনা খনূপপ্বব, মধ্যপ্রদেশ রএহ বহ, জে খাঠ–দস বঁবখ পহিনে শাসকীয এম.জী. কঁানেজসঁ বী.এ. কএনে ছন খা মেবিটমে দোসব ঠাম হাসিন কএনে ছন। খসনী মোহনদাস রএহ ছন জকবা নৌকবী ঐ দ্বাবে নৈ ভেটন ছন কিএকি ওকবা নগ কোনো পৈবরী, চিন্হন–জানন তিকড়ম খা ঘূসক

নেন টৈকা নৈ ছনৈ। ও কোনো গিবোহ বা মাফিযাক সদস্য নৈ ছন, কিএকি ও ওগ জাতিক খা বস্মক নৈ ছন, জৈ জাতি–বস্মক নগ তাগতি ছন। ওকবা নীক জকাঁ বূঁঝন ছনৈ জে ওকবা সংগ খা ওকবা জেহন খসংখ্য নোকক সংগ নগাতাব পিছনা কতেক সানসঁ ধোখাধড় ী খা ছন কএন জা বহন ছন ক্ষদা ও কিছ কহ সকৈমে খসহায ছন।

মোহনদাসকেঁ ঙা সেহো নীকসঁ বূঁঝন ছনৈ জে বিঁছিযা টৈনাক বিসনাথ বঁন্দ নগেঁদ্রনাথ, জে নেনিন নগবমে মোহনদাস বিশ্বকর্মা বঁন্দ কাবাঁ দাস বঁনি কহ ওবিযংটৈন কোন মার্গসমে কনিষ্ঠ খাগাব খধিকাবীক নৌকবী কবৈত দস হজাবসঁ বেঁসী দবমাহা নহ বহন ছন, ও কত্তৌসঁ মোহনদাস নৈ ছন। ও একটৌ বঁদমাশ, কঞ্চব জাতিবাদী জানসাজ খছি, জকব তাগতি এতেক বেঁসী ছনৈ জে মোহনদাস ওকব খাগূ কোনো নাচাব–বীমাব মূস সন ছন।

মোহনদাস বূঁনৈ ছন জে ওকব বাঁপ মানে খসনী কাবাঁ দাস, জে টী.বী.ক বোগী ছন খা জে খো ীক সংগ খূনক কৈ কবৈত বাঁসক টৈকবী, সূপ খা পটিযা বঁনাবৈঁ ছন, ও মবি গেন ছন ক্ষদা একবা সাবিত কহ সকবঁ ওকব বশীমে নৈ ছনৈ, কিএকি বিসনাথক বাঁপ নাগেঁদ্রনাথ কাবাঁ দাসক ৰূপমে বিঁছিযা টৈন খা নেনিন নগবমে খখনো বহৈ ছন খা ওকবা সভ নগ একব দস্তাবেজী সবূঁত ছনৈ।

मोहनदास चुप बहरेँ शुरू कऽ देने छल। ओ कस्तूर रजित छल। कठिनाइमे रहैत रहनि गेलासँ ओकर रोजी-रोटीक एकटा आसरा छिना गेल छलै तेँ ओ रजाबमे आरबानक "स्टार कंप्यूटर सेंटर' पर टाइपिंग, प्रिंट आउट आ जीव ाक्सक काज सीखरेँ शुरू कऽ देलक। ओकर रेटा देरदास, सङ्कक कात "दुर्गा आँटो विपेयरिंग वर्क्स" मे पंचर बनाइएँ आ पाना-पेचकसक नमरा-पहुँचा करबएहेना हेल्परक काज करए लागल छल। मासमे सए-दू सए धरि ओ कमा लैत छल आ अप्पन पढ़ाइक खर्चा अपनासँ उठाबरेँ लागल छल। शारदा तँ दू बरखसँ रिछिया टोलमे रिसनाथक बचाकेँ सम्हारैक काज धेने छल आ घरक काज छोड़ि देने छल किएकि रेन्नुका देरी नेनिन नगर जाए अप्पन रर रिसनाथ लग रहए लागल छल। शारदाकेँ पछिला एक बरखसँ रजाबमे "ऐश्वर्या ब्यूटी पार्लर" मे नोकरी भेटि गेल छल। ओतुक्का शिखा मैडम ओकरासँ बड़ प्रेम करै छल आ ओकरा पढ़ाइमे मदति करैत छल। ओ कहैत छल-

"शारदा हम अहाँकेँ एक दिन एहन म ाडल बनाएब जे अहाँ मिस वर्ल्ड बनि जाएब आ टी.वी. पर आच्छादित भऽ जाएब!" आठ बरखक शारदा सत्तुमे बातिमे एहन सपना देखऽ लागल छलि।

कस्तूरी गाम-मोहल्ला मे खेत-मजूरी कऽ फसलक ओगवरीक काज कऽ लैत छल। हँ, मोहनदासक माँ पुतलीबाइक दुनू ठेहुन कारा दासक मरलाक बाद पाथर

ভ২ গেল ছল খা ও চলি-ফিবি নৈ সকৈ ছল। দিশা-ফবাকত নেন সেহো ঘিসিযাগত-ঘিসিযাগত পছরড়া যা কাতক ৰাবী ধবি জাগত ছল খা ফেব ঘ্বি ক২ পবছীক কোনমে ওছাওন পটিযাপব ৰৈসি জাগত ছল। ওকব খাঁখিমে খন্দাব গহীব ভ২ গেল ছল।

"স্টাব কংপ্যূটব সেংটব' মে হর্ষরর্ধন সোনীসঁ মোহনদাসক ভেঁট ভেল। হর্ষর্ধন ওতএ কিছু খদানতী কাগজাতক ফোটৈকোঁপী খা কিছু টৈাগপিংগক কাজ কবৰা নেন গেল ছল। তাধবি মোহনদাসক টৈাগপিংগ স্পীড ঠীক-ঠাক ভ২ গেল ছলৈ খা ও কম্মে গনতী কবৈত ছল। ওতএ মোহনদাস খপনেসঁ হর্ষরর্ধনকেঁ খপ্পন সভটা খিস্সা ৰতৌনক।

ৰীসম সদীক উঁত্তবার্ধমে জেহন রিচাবধাবা ৰনা পার্টীমে হম নগভগ ৰীস ৰবখ ধবি কাজ কএনে বহী, হর্ষরর্ধন সোনী ওহী পার্টীমে ছল। ওকব জীরন কতেক তবহক দ্খ-সংঘর্ষসঁ খা উঁথোন-পতনসঁ ভবন ছল। মাধ্যমিক স্কূনক একটা মাস্টবক ৰেটা হর্ষরর্ধন শ্বুরুহেসঁ সংরেদনশীন খা স্বতংত্র রিচাবক ছল। ওকব পৈঘ ভাএ শ্রীরর্ধন সোনী ৰী.এ.ক পবীক্ষামে টাঁপ কেনে ছল খা গংজীনিযবিংগক ডিগ্রীক ৰাদো, ছহ ৰবখ ধবি খীচন ৰেবোজগাবীসঁ হতাশ ভ২, পাঁচ ৰবখ পহিনে এক বাতি খপ্পন কোঠনীক সীনিংগ ফৈনমে বস্সীক ফংদা নগা ক২ খামেহত্যা ক২ নেনে ছল। ৰজাবমে ছোট-সন দ্কান চনাৰৈৰনা ৰূঢ় ৰাপ খা মিডিন স্কূনক মাস্টবী কবএরানী

माँक रहैत हर्षवर्धन सोनीक मोनमे अप्पन भागक आमेहलाक घटना एकटा एहन गहींर घा छल जे पढ़ै कालेसँ ओ छात्र आंदोलनमे भाग लिअए लागल छल। ओ दोसर जातिमे बियाह केने छल आ ओकर दंडमे ओकरा जातिसँ पैरछा देल गेल छल।

हर्षवर्धन सोनी एल.एल.बी. कऽ लेने छल आ अप्पन पार्टीक संग स्थानीय अदालतमे ओकालतक काज करैत अप्पन आजीविका चला रहल छल। ओ ओग दिन जखन "स्टार कंप्यूटर सेंटर" मे मोहनदाससँ ओकर खिस्सा सुनलक जे असलमे खिस्सा नै, एकटा असल जिनगीक सत्क खेरहा छल, तँ ओ ऐ केसकेँ लऽ कऽ अदालतक शरणमे जएबाक फैसला केलक।

"अहाँ लग ऐ लेल कतेक पाग यए ? ', मोहनदासक रंगंग, फाटल-चीटल, पैबंद लागल, कोनो जमानामे नील रंग रहल डेनिम पेंटकेँ तकैत हर्षवर्धन बाजल, "हम अहाँक केस लड़ब आ अहाँकेँ न्याय दिआएब।"

मोहनदासक आँखिमे चमक आबि गेल। ओकर दुब्बर-पातर देह एक-दू बेर थरथरायल। एक बेर तँ ओकरा विश्वास नै भेल जे कियो ऐ तरहेँ ओकर संग दऽ सकैत अछि, फेर ओ बाजल, "हमरा संग ऐ काल अस्सीटा टाका अछि। दू-चारि दिनमे चालीसक

জ্গাড় কহ দের। গমবানসঁ সএ–দূ সএ পেশগী ভেটৈ জাএত।”

হর্ষবর্ধন বুঝি গেন জে মোহনদাস বৈসীসঁ বৈসী চাবি–পাঁচ সএ টৈকা জোগাড় মাস ভবিমে কহ সকৈত অছি জখন কি অদানতমে কেস দাখিন কববামে হুন খর্চ কবীব পাঁচ হজাব টৈকা ছন। একক বাদ দোসব সবকাবক ও আর্থিক নীতি, জে দেসক মহানগবকেঁ অমেবিকা বনা বহন ছন, ওহী দেশক গাম আ পিছড়ন গনাকাকেঁ কংগান বনা কহ ওতএ অসংখ্য গথিযোপিযা, ববাঁডা আ ঘানাকেঁ জন্মা বহন ছন।

দিল্লী–নখনঊ, হ্মবঙা–ভোপান, কোনকাতা–পটনামে জখন সভ বাজনীতিক পার্টী আ বিচাবধাবাক প্রাফেসব চানীস–পচাস হজাব বেতন নহ বহন ছন আ ছোটসঁ ছোট হ্রী–নাসব ধবি দূ পন্নাক বপটপব পাঁচ সএসঁ হজাব টৈকা কমা বহন ছন, তখন গাম আ ছোট কস্বামে, মেহনতি কহ কাজ কবএবনা মোহনদাস জেহন নোককেঁ চাবি সএ টৈকা জোগাড় কববামে মাস নাগি জাগ ছৈ।

হর্ষবর্ধন বুঝি গেন জে মোহনদাসকেঁ অদানতসঁ ন্যায দিযাবৈক নেন ওকবা অপনেসঁ টৈকা জমা কবএ পড়তৈ। ও এক হজাব টৈকা অপনা নগসঁ নগেনক, দূ হজাব কিছু দোস্তসঁ মাঁগনক আ বাকী টৈকা নার্যস ক্লবক চৈবিটী ফংডসঁ ডোনেশনমে নেনক, মানে সংক্ষেপমে জে জোগাড় ভহ গেন। তঁ ঐ তবহেঁ আখিবীমে মোহনদাসক মামনা

गजानन माधर म्ुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी (प्रथम श्रेणी), जे सिगरेट नै पीबैं छल आ बड़ दुब्बर छल, जकर गानक हड्डी छती सन छल आ उभरल छल आ जकर माथपर असंख्य टेढ़-टूढ़ डड़ीर छलै, क अदालतमे दाखिल भऽ गेल।

मोहनदास वल्द काशी दास जाति विश्वकर्मा, साकिन प्वरलनवा, थाना आ जिला अनूपप्पुर, म.प्र. वनाम विश्वनाथ वल्द नगेंद्रनाथ, जाति ब्राह्मण साकिन विछिया टोला, हाल-वाशिन्दा ए/11, नेहरू नगर, ओरियंटल कोल माइंस, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़।

मामिलाक दाखिल हेबाक संगे अदालत ओरियंटल कोल माइंसक महा-प्रबंधक एस.के. सिंह आ वेलफेयर ऑफिसर ए.के. श्रीवास्तव संग कतेक आओर प्रबंधक श्रेणीक अधिकारीकेँ तलब केलक आ ओकरासँ अदालतक आगू ओ साक्ष्य पेश करै लेल कहलक जे ओ प्रमाणित करए जे ओकर कंपनी ओरियंटल कोल माइंसमे जूनियर डिपो. ऑफिसरक पदपर पछिला कतेक बरखसँ काज करैबला मोहनदास विश्वकर्मा असल मे विछिया टोलाक विश्वनाथ वल्द नगेंद्रनाथ किये आन नै अछि ?

न्यायिक दंडाधिकारी गजानन माधर म्ुक्तिबोध अनूपनगर आ दुर्गक जिलाधीशकेँ आदेश देलक जे ओ ऐ मामिलाक

शासकीय जाँच करबए आ दू सप्ताहक भीतर अदालतक सोझाँ अप्पन जाँचक रिपोर्ट पेश करबए।

रीडर ी पियेरॅना न्यायिक दंडाधिकारी जी.एम. क्षत्रिरॊधक ऐ आदेश आ अदालतक सम्मनसँ ओबिर्यर्टन कोन मार्गसमे हड़कंप मचि गेल। स्थानीय अखरॅबमे एकर खरॅबि छपल–

"असन'" मोहनदास के ? "

"एन.डी.टी.वी." आ "आज तक" ेननक स्थानीय संराददाता क्रमश: अनिल ादर आ खानिद वशीद ऐ मामलाक रॅार्गट दिल्ली आ भोपाल पठेलक क्षदा समाचार "राष्ट्रीय स्तर" आ "अखिल भारतीय परिव्याप्ति" क नै भऽ सकल, कारण जे ऐ मे दिल्ली–भोपाल–नखनउं क कोनो पैघ नेता रा अफसरक नाम शामिल नै छल, तएसँ ई प्रांतीय रा राष्ट्रीय "खरॅर" रा "सूचना'क रूपमे प्रसारित नै कएल गेल।

(...ई ओए कालक रॅ्यारा अछि, जखन रिध् रिनोद चोपड़ ाक फिल्म "क्षन्ना भाओ एम.री.री.एस.", रॅाक्स आॅफिसपर स्वपर हिट भऽ गेल छल। जार्ज रॅुश आ टैनी रॅ्लेयर, दुनू अप्पन–अप्पन देशमे दोरॅारा चुनार जीति कऽ सत्तामे आरि गेल छल, अमेरिकाक जहलमे

ভিখমংগা ফকীৰ জেহন দাঢ়ী আ নাক, ঝাগসঁ ভৰল চেহৰাৰ্ঁনা সদ্দাম হুসন খবৰমে কৰিতা নিখৰ নাগন ছন আ মংডন আযোগক সিফাবিশ নাগূ কৰৈৰ্ঁনা ভাৰতক পূৰ্ব প্ৰধানমংত্ৰী বিশ্বনাথ প্ৰতাপ সিংহকেঁ কৈংসৰ ভৰ গেন ছন, কিডনী খৰাব ছন। ও জে.পী. জকাঁ ডাযনিসিসপৰ ছন আ দিল্লীক এক কোনমে কৈনৰাসপৰ চুপচাপ চিত্ৰ ৰ্ঁনা বহন ছন...

...ৰএহ কান জখন পটনাক কনেক্টৰ ৰ্ঁাঢ় বাহতক কৰোড় া ং টকা মাবি কৰ নপত্তা ভৰ গেন ছন আ নৰ সৰকাৰ ফিল্ম সেংসৰ ৰ্ঁোডক প্ৰৰান অধ্যক্ষকেঁ হটা কৰ জকৰা নৰ অধ্যক্ষ ৰ্ঁনৌনে ছন, ও ৰ্ঁানীৰুড ফিল্মসঁ ৰ্ঁাহৰ নখাহ দৈত বহন ওগ দৃশ্যপৰ সেংসৰক কৈংচী চনেৰ্ঁাপৰ ৰিচাৰ কৰ বহন ছন, জগমে একটা খানদানী নৰাৰ্ঁক জিপ্সীসঁ শিকাৰমে মাৰন গেন কানিযা মৃগ, দূটা খৰগোশক নাশ, সৰ্চ নাগট আ ৰ্ঁদূকক ৰ্ঁৰামদগীক শৰ্ঁট ছন।

...ওা ৰএহ কান ছন জখৈন নগাতাৰ পদ্ৰহ ৰ্ঁৰখসঁ হিংদী ভাষাক সংৰ্ঁধিত পদক চযন সমিতিক সভ সদস্য, খানী পদপৰ অপ্পন জমায, ৰ্ঁেটা, ৰ্ঁেটী, সমৈধ, চাপনূস, সেৰককেঁ নিৰ্নজ্জতাসঁ নিযুক্তি কৰ দৈত ছন আ ওগপৰ নৈ কোনো সী.ৰী.আগ. গংক্কাযৰী হোগন ছন, নৈ বাজ্যসভা ৰা নোকসভামে কোনো সৱান উঁঠৈত ছন...

...জখৈন সভ সত্তাধাৰী পাৰ্টী, মানৱ সংসাধন মংত্ৰানয,

পরি্নক সেক্টব ভ্রষ্ঠ কাবখানা ৱনি গেন ছন আ ওা সভ রিদ্বান, শিক্ষামিত্র, সমাজশাস্ত্রী, সাহিত্যকাব, বু্দ্ধিজীরী, গতিহাসকাব, কনাকাব, অধ্যাপকক উঁপোদন কঽ বহন ছন...

আ ৱচাক দিমাগপব কব্জা কবৈ নেন শিক্ষা–সংস্থানমে গতিহাস আ পাঠ্য-পুস্তককেঁ দোৱাবা–তিৱাবা নিখৱাক বাজনীতিক জংগ চনি বহন ছন...

...তখন ভাবত ভ্রষ্ঠ দেশক সূচীমে...সংসাবমে ৭৯ম, পবমাণু ৱম ৱনাৱৈঁ ৱনা দেশ মে ৬ঠম, জনসংখ্যামে দোসব আ ভযারহ গবীৱীমে খানী ৱাংগ্লাদেশ টাসঁ উঁপব ছন।)

হর্ষরর্ধন সোনী আ মোহনদাস দ্নূকেঁ হ্মদা উঁম্মীদ ছন জে ন্যাযিক দংডাধিকাবী জী.এম. হ্মত্তিৱোঁধক অদানতমে দূধক দূধ আ পানিক পানি ভঽ জাএত। ঐ রিশ্বাসক পাছাঁ দূটা হ্মখ্য কাবণ ছন। পহিন তঁ ওা জে দংডাধিকাবী ৱীড় া পিৱৈঁত ছন আ ঠেনাক কড়ক চায সেহো। আ হ্নকা কোনো তবহক ঘূস রা নানচসঁ ভ্রষ্ঠ নৈ কএন জা সকৈত ছন...

...আওব দোসব ওা জে সত মোহনদাস দিস ছন কিএ তঁ অসন মোহনদাস ৱী.এ. রএহ ছন।

"ম্মূঠক পএব–মূড় ী কিছা নৈ মোগত খছি ! ভিনসবেক গজোত সন সভ কিছ সাফ নখাম ভ২ জাএত ! জৈ মো মনগমা মাগ ! হ্নপা রঁনন বমএ সতগ্বন্ধ করীব ! ” কস্তূবীক মৌনাগন জিনগীমে খাশাক একটা খূরঁ নর মবিযব কোমন দূরিঁ উঁগি বমন ছন। প্বতনীরাঁগক খাঁখিমে খন্মাব তঁ কারাঁক জেরাঁক রাঁদেসঁ রঁঢ় ি গেন ছন ম্নদা পবছীক কোনমে চটাগপব কোনো বূঁঢ়, পংখমবী চীন সন রৈঁসন ও খপ্পন কান নগাতাব কোনো ভীতব কোঠনী দিস নগওনে বাখৈ ছন।

খা এক দিন ভিনসবে জখন মোমনদাস খদানতক পেশীমে জএরাঁ নেন রাঁসি ভাত খা খন্নূক তবকাবী খা বমন ছন, তখনে একাএক প্বতনীক খ্শীসঁ ভবন রোঁন খাংগনমে গূঁজি গেন। ওকবা গবসঁ জেনা কোনো প্রসন্ন চিড়ৈ রাঁজি বমন ছন:

"মে...ঐ...কনিযাঁ ! মে দেরদাস ! কোঠবীক ভীতব তাকি ক২ দেখিযৌ ! নাগৈত খছি জে খনোপী মৈনা নরঁকা ঘোঁসনা রঁনেনে ছৈ কী ? দৌগূ–দৌগূ... ! ”

মোমনদাস জন্দী–জন্দী খাগমে নাগন ছন, জগসঁ রেঁবসঁ পমিনে খদানত পহুঁচি জাএ কিএ তঁ নোক কমৈত ছন জে রীড় াক স্বপ্তা মাবৈরঁনা জজ টাগমক রঁড় পারঁদ খছি। জৌঁ পাঁচ মিনটক রেঁব ভেন তঁ পিছনা পেশীমে

খগনা তাবীখ দ২ ক২ খগনা পেশী শ্বৰু ক২ দৈত ছৈ।

জখন মোহনদাস দিন ভবি নেন, ভবি পেৈ ভাত–তবকাবীক কনেরা খা ক২ ঘবসঁ ৰাহব নিকনি বহন ছন তঁ পাছাঁ ওকব খাম্হব–ৰূঁঢ় চিড়ৈ সন মাঁ প্বতনী জোব–জোবসঁ প্বনকিত ভেন গারিঁ বহন ছন:

"চোনা তব জগ বামা...তন তব জগ বামা,

সত গ্বক সাখী না...চোনা তব জগ...

...চোনা তব জগ'

খদানত মে ওবিযংৈন কোন মাগংসক মহাপ্রবঁধক এস.কে. সিংহ হাজিব নৈ ভেন ছন। হ্নকব খর্জী রকীন পেশ ক২ দেনক। ক◌ॉনযবীক রেনফেযব আঁফিসব এ.কে. শ্রীরাস্তব খপ্পন গনক্লাযবীক সভৈা ফাগন খা সংগমে নাগন সভৈা দস্তারেজ ন্যাযিক দংডাধিকাবী, প্রথম শ্রেণীক খরনোকনার্থ হ্নকব ৈবৃঁনপব বাখি দেনক। হর্ষরর্ধন সোনীক চেহবা উঁড়ন ছনৈ কিএ তঁ রিঁছিযা ৈনাসঁ জৈ তীনৈা গরাহকেঁ খদানতমে খারিঁ ক২ সাক্ষ্য দেরাঁক ছন, জে মোহনদাস নামক জে ক্যা ওবিযংৈন কোন মাগংসমে পছিনা কতেক ৰবখসঁ কনিষ্ঠ খাগাব খধিকাবীক নৌকবী ক২ বহন ছন, ওকবা ও সভ নেনাসঁ নীকসঁ চিন্হিত ছন জে ও মোহনদাস নৈ রিঁশ্বনাথ খছি।

ওগ তীন গরাহমে সঁ দূৈা গরাহ খদানতমে হাজিব নৈ ভেন খা তেসব গরাহ দিনেশ ক্মাব সাহ্ন পনৈী মারৈত

भवि अदालतमे तस्दीक कऽ देलक जे विश्वनाथ मोहनदास छी। ओ आंग्लवसँ हर्षवर्धन सोनी आ मोहनदास दिस इशारा करैत कहलो कहलक जे ई दुनू गोटे मास भवि पहिने ओकव घव आएल छल आ ओकवासँ कहलक जे जौं अहाँ हमव सिखायल बयान कोर्टमे दऽ देबै तँ हम अहाँकेँ पाँच हजाव टाका देब।

न्यायिक दंडाधिकावी गजानन माधव म्रजिरोध अगला सुनवाईक लेल एक मास बादक तावीख धऽ देलक। हर्षवर्धन आ मोहनदास दुनू स्तब्ध छलाह।

आब सभटा आस जिलाधीशक जाँच विपोर्टपव लागल छल। मोहनदासकेँ न्याय जौं भेटि सकैत छल, तँ तखन जखन सत आगू आबतिऐ।

अगला पेशीमे दुआ आ अनूपपुव, दुनू जिलाक कलेक्टवक जाँच विपोर्ट जखन अदालतमे पेश कएल गेल तँ हर्षवर्धन आ मोहनदास अवाक बनि गेल। ओहि जाँच विपोर्टमे छल जे मोहनदास वल्द काबा दास, जूनियव डिपो ऑफिसव, ओविएंटल कोल माइंसक नाम आ शिनाख्तीकेँ लऽ कऽ उठाएल गेल सभटा आवोप निवाधाव अछि। दस्तावेज, आवश्यक साक्ष्य, पविस्थितिगत प्रमाण, कएकटा ग्रामीण आ पंचायत सदस्यसँ गपसपक बाद निर्विवाद रूपसँ ई सिद्ध होइत छल जे मोहनदास, मोहनदासे अछि, विश्वनाथ नै।

ৰাঁদমে পতা চনন জে রিশ্বনাথ ঐ রেঁব দ্স্ক্ষ খা খনূপপ্পব দূনূ জিনাক সংরঁধিত পটৈরাবীকেঁ দস–দস হজাব টৈকা ঘূস খা দাক–ক্ষর্গা দেনে ছন। রিজয তিরাবী সেহো প্বনিস গাড় ীমে রিসনাথকেঁ রৈঁসা কঽ পটৈরাবীকেঁ ঘূস পহুঁচারঁঽ নেন গেন ছন। খসনমে জেহন প্রশাসনিক পবিপাটী ছন, ওগমে কনেকটৈব মানে জিনাধীশ মানে ডিস্ট্রিক্ট মৈজিস্ট্রেটৈক গংক্লাযবীক খসন মতনরেঁ হোগত ছন সংরঁধিত তহসীন রা পবগনাক পটৈরাবীসঁ জাঁচ।

জৌং কোনো খদানত কনেকটৈবকেঁ কোনো জাঁচক খাদেশ দৈত ছন তঁ কনেকটৈব নোটৈ নগা কঽ ওগ খাদেশকেঁ খপ্পন মাতহত, সংরঁধিত গনাকাক এস.ডী.এম. কেঁ পঠা দৈত ছন। এস.ডী.এম. ওকবা তহসীনদাব খা তহসীনদাব ওকবা নযরঁ তহসীনদাবকেঁ দঽ দৈত ছন। ঐ তবহেঁ বেরেন্যূ গংস্পেকটৈব মানে খাব.খাব. মানে কানূনগোসঁ ভেন খাখিবমে ও খাদেশ পটৈরাবী নগ পহুঁচি জাগ ছন। মানে খাখিবমে পটৈরাবী কনেকটৈবক খাঁখি–কান খা নাক রঁনি জাগ ছন।

ওগ বাতি জখন গাম রিছিযা টৈনো খা প্ববরঁনবাক পটৈরাবী কমন কিশোবকেঁ রিসনাথ খা রিজয তিরাবী দস হজাব টৈকাক গড্ডী দেনক খা মৈকড◌ॉরন নংরঁব রন রি্হস্কীক সংগ রঁটৈব চিকেন খা মটৈন জীসক করাঁরঁ খ্এনক তঁ কমন কিশোব পটৈরাবী জমীনপব দ্নূক পএবপব নোটৈপোটৈ কবএ নাগন।

"यौ, अहाँ सभक हुक्म हम कहियो टारब यौ ? ...एतेक एमाउंटमे तँ हम सात मूसकेँ हाथी, खेतकेँ सड़क आ बनगोरिनाकेँ छह बर्खक माए बना देब । " कमल किशोर पटेरारी मगन भऽ कऽ नोटकेँ अप्पन मोटामे धऽ कऽ उड़ि बहल छल । ओ मैकडॉनल्ड नर्सरी स्कूल पछिलका पैंग एक घोंटमे गदाक नीचाँ उतारलक आ ओतए ओकर सभका सोझेँ, बिना कनो गेने, मामलाक सभटा तहकीकात कऽ देलक आ पन्द्रह मिनटमे मोहनदास नामक विश्वनाथ मामिलामे जिलाधीश द्वारा पूर्ण कएल गेल अंग्रेजीक स्वच्छ टिपोर्ट सफेद कागजक एकटा पन्नापर तैयार भऽ गेल ।

अर्थात अंग्रेजक अनाम भारतपर शासनक लेल तैयार कएल गेल लोकतंत्रीक ऐ बीमार खाएल लौह ढाँचामे, जे आजादीक साठि बर्खक बादक आधिकारिक सरकारी दस्तावेज धरि विश्वनाथ नन्द नगेंद्रनाथ छल, ओ मोहनदास नन्द काबा दास बना देलक ।

मोहनदास फेर ट्रेनमे लागल । ओ लगातार कबीरक जाप करैत छल । मनहुस मामक मढ़ि याक ड्योढ़ीपर ओ घंटे बैसल रहैत छल । मनहुस माग मन्दिर ठोक भोग लगाबैत छल । सेहो बहुतोटा दूधक मलाइक । उँच जातिक लोक ओकर मढ़ि यामे नै जाइत छल । ठाकुर, बनिया, बाभन, नानाक देवी-देवता दोसर

छल। मनगहा मागक पूजाक काज ब्राह्मण नै गोसाञं करैत छल। कहैत छै जे दलित-आदिवासीक संग भात-रोटी, बेटी-बेटीक संबंध बनाबैक कारण, जाति-पातिसँ निकालल गेल ब्राह्मण गोसाञं करबैत छल।

मोहनदास खाड़ ा गाम जा कऽ सिउँनाबायण गोसाञंकेँ बजौलक, ओकरा बीस टेका आओर दालि-चाउँर, नून, हरैद, चूदक, सीधा देलक। ओकरासँ ओ मनगहा मागक पूजा करौलक आ शुद्ध बकरीक दूधसँ निकालल गेल पायस भवि मनागक भोज चढ़ेलक।

ऐहि बीच एकटा घटना आब भऽ गेल। एक दिन भिनसर काल, जखैन कस्तूरी गामक दू-तीन टा मौगी संगे दिशा-फरकत करए लेल गेल, ओकरा सभकेँ जंगल-झाड़क पाछाँ कोनो हलचलक आभास भेलै। जेना किओ ओतए नुकाएल छै। कस्तूरी आग-कान्हि अप्पन हिफाजत लेल हरदम कछनीमे कचिया खोँसि कऽ बाखैत छल। ओकरा ऐ गपक नीकसँ आभास छलै जे दू बर्चाक माए बनि गेलाक बादो ओ एखन धवि गाममे सभसँ स्वस्थ काठी आ चेहरा-मोहराक मौगी अछि। आओर कतेक दिनसँ गामक ठक्कवान-बभान सोहादक नजरि गिद्ध जेहन ओकरापर गड़ल छै।

कस्तूरी उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ओ डाँरमे खोँसल कचिया निकालि कऽ हाथमे थाम्हि लेलक आ समधानल

डेगसँ जंगल-झाड़ दिस बढ़ल। ओकर पाछाँ रमोली, सितिया, चंदना आ सावित्री छल।

“की छी...केकर भीतर हरँस पैसल छै! निकल तोहर गर्मी निकालि दैत छी हँसौरेँ! झँहझड़को।” कस्तूरी चिकरलक। बाँकी मौगी सभ सेहो ठाँव-झाँखरकेँ घेरबाक शुरू कऽ देलक। सभक हाथमे एक-एक दिसा-फराकतरबला लोटा छलै।

झाँखरसँ फटाकसँ निकलि कऽ छत्रधारीक लड़का विजय तिवारी भागल। गंजी-जंघियामे ओकर चरी चढ़ल थुलथुल देह भागैत काल गोलमटोल तरबूज जेहन लगाह दऽ रहल छल। कस्तूरी किछु दूर धरि हाँसू तानि कऽ ओकरा दिस दौगल। रमोली, सितिया आ सावित्री गरियाबैत पोखरि दिसक लोटा खेंचि-खेंचि कऽ मारलक। दरोगा विजय तिवारी खसैत-पड़ैत लंक लऽ भागि रहल छल। मौगी सभ पाछाँसँ चिकरि रहल छल:

'यौ, टी.वी. बलाकेँ बजाउ, सीन खीचू।'

'दौड़ऽ हे दौगऽ! दरोगा कछियामे हगि रहल छै...'

ओग दिन सचमे विजय तिवारी डरि गेल छल जे कत्तौ

মোহনদাস খপ্পন রকীন হর্ষরর্ধন সোনী সংগ মিন কঽ টী.রী. খা খখ়ৰাবমে কিছু খঁট-শঁট নৈ দেখা-ছপা দিঐ।

(ওা সভ কিছু ওগ দিনক ঘটনা ছী জখন সদ্ধচা এশিযাক বাজনীতিক গতিহাসমে পহিন ৰেব একটা ভাবতীয স্ত্রী কম্যুনিস্ট পার্টীক পোনিত ৰ্যুবোক সদস্য ৰনন ছনি, একটা দোসব স্ত্রী প্রধানমংত্রীক ফর্সী ঠ্কবা দেনে ছনি......খা স্ত্রী, সংসাবক ওগ সভসঁ প্রতিষ্ঠিত জূবীক সদস্য ৰনি গেন ছনি, জগমে ঋত্বিক ঘটকক স্বর্ণ বেখা রা কোমন গাঁধাব রা শৈলেদ্রক তীসবী কসমক স্ক্রীনিংগ ধবি নৈ ভঽ সকন ছন......খা ওহী কান জখন ৰগদাদক খৰূ গবীৰ জেনমে একটা খমেবিকী স্ত্রী ওবাকী প্বকষকেঁ নাংগব কঽ ওকবা এক-দোসবাক ঙুপব নাদি কঽ একটা পিবামিড জেহন ৰনা দেন ছন খা খমেবিকী ঝংডা নঽ কঽ ওকব ঙুপব চঢ়ি গেন ছনি......ওহী কান জখন পারব সদনমে জেংডবকেঁ পবিভাষিত কঽ বহন ছন! ...ওগ কান জখন দিল্লীক ধৌনাক্ষখাঁ নগ উত্তব-পূর্বক একটা নড়কীকেঁ কাবক ভীতব খীচ কঽ বাজধানীক সভ রী.খাগ.পী. সড়কপব খঢাগ ঘংটা ধবি নগাতাব দিল্লীক পাঁচ প্বকষ ৰনাকোব কবৈত বহন ছন...খা গফ্ফানমে মনোবমাক ৰনাকোব খা হত্যাক রিবোধমে ঘ্রঞ্চক ঙুপাসনা কবএরানী কএক সএ মৈতেগ স্ত্রীগণ তামসমে খা হতাস ভঽ নাংগট ভঽ গেন ছনি......ওগ কান জখন দূটা স্ত্রী সবদাব সবোরবমে ৪০.০০০ দনিত খা খাদিরাসীক ঘব-জমীন-জাযদাদকেঁ পানিমে ড়্মা দৈ ৰনা যোজনাক রিরুদ্ধ নড়াগ নাবি গেন ছন খা জনপ্লারনমে রন্য

প্রাণী, রনস্পতি, গাছ সভ কিছ ডূমি গেন ছন......টী.রী.পব ওগ টৈটাএন স্ত্রীগণক কানৈত, হবন চেহবা নগাতাব নখাহ ভ২ বহন ছন......রএহ কান জখন হম দিল্লী ছোডি ক২ রৈশানী খারি গেন বহী খা হমব ছতসঁ গাজিযাবাঁদ ও ঝংডাপ্পব সাফ নখাহ দৈত ছন, জতএ ঠীক পংদ্রহ রঁবখ পহিনে ওগ ঞাঁতিকাবী কনাকাব খা বংগকর্মীক হত্যা ভেন ছন, জাকব নাম সফ্দব হাশমী ছন...)

গজানন মাধর হ্মক্তিরৌধ, ন্যাযিক দংধাধিকাবী (প্রথম শ্রেণী) ক খদানতমে সভ গরাহ, সবূঁত, জাঁচ বিপোর্ট এতএ ধবি জে দূ-দূটা জিনাধীশিক গনক্লাযবী ঙা সিদ্ধ ক২ দেনক জে রিঁসনাথে মোহনদাস খছি। তখন জে গবীবঁ সন খাদমী মোহনদাস হেরৌক দারা ক২ বহন ছন ও কে খছি ? – একব খদানতমে চনি বহন মামনাসঁ কোনো সোদ্ম কানূনী সংবঁধ তঁ নৈ ছনৈ। ও একটা খনগ কেস ভ২ সকৈত ছন, হ্মদা সে তখন জখন ওকব দবখ্বাস্ত খদানতমে কোনো রকীন রাদী দিসসঁ দাখিন কবএ।

হর্ষরর্ধন সোনী তীন দিন, তীন বাতি ধবি স্বতি নৈ সকন। ও নীকসঁ বুঁঝৈ ছন জে মোহনদাস মোহনদাস ছী, হ্মদা একবা প্রমাণিত ক২ সকবঁ নগাতাব কঠিনেটা নৈ খসংভর ভ২ বহন ছনৈ। ও হমবা ঙা-মেন পঠেনক:

"ঙা তঁ হদ ছৈ! নৈ হমবা কিছ খাএন-পীএন ভ২

बहन छथि, नै बातिमे नीन आबैत छथि। ओम्हर मोहनदासक सेहो यएह हालत छै। सभ किछो बुझैत छथि जे असली मोहनदास यएह छी मुदा एकटा साबित करए सकबा लाखकिन नै बहि गेल छै। की करी किछु सुझैत नै छथि। मोहनदास आ हमरा दुनू गोटेकेँ धमकी देल जा बहल छथि जे चुप भए कए बैसि जाउ....ऐ बीच पता चलल जे बिसनाथ बासबिहाबी बाबकेँ अप्पन बकील बनौने छथि। हुनका तँ अहाँ जनैत छियन्हि, सत्ताधाबी पार्टीक बड़ पैघ नेता छथिन। बहू नगब निगमक अध्यक्ष छनि आ कतेक सबकाबी-गैब-सबकाबी संगठनक प्रमुख छथिन। मोहनदासक पक्षमे आबे चाबि-पाँच लोक गबाही दै लेल तैयाब भेल छथि- बीबन बैगा, गोपालदास, बिहाबीदास, बमोली, सितिया...मुदा ओकब सभ बंगे-बाली एहन छै जे लागैत छै जे एहन गबाह तँ पचीस-पचासमे कत्तौ भेटै जाएत। भिखमंगा लागैत छथि सभ गोटे। ...सोचैत छी हम न्यायिक दंडाधिकाबीसँ सोझे भेंटै कए कए देखिऐ। ओ बीड़ा पीबैत छथि आ किछु अजीबे सन लागितो छथि। जी.एम. मुक्तिबोध हुनकब नाम छन्हि। मबाठी छथि मुदा हुनकब हिन्दी अद्भुत छथि। कोर्टकि बाँद सड़कक कात बामदीनक ठेलापब कड़क चाह पिबैत छथि। ...हम नोट केने बही जे ओ जखन अदालतमे मोहनदास दिस देखैत छथि तँ ओकब आँखिमे एकटा बेचैनी आबि जाए छनि। हुनकब माथक एकटा नस उभबल छनि आ जखन ओ किछु सोचैत छथि तँ ओ फूलि जाए छनि।....हमबा डब लागल बहैत अछि जे कत्तौ कोनो दिन ओ नस फाटि ने जाए। हुनकब आँखिमे किछु एहन तँ अछि

जना ओ कोनो जासूस रा ख्फियाक ऑँखि ह्खए जे कानि कऽ च्पचाप केकरो आमोक भीतव धँसि कऽ ओकव सभ किछु पखाबि सकैत अछि। ...सभ कहैत अछि जे ह्नकव घवमे कतेक बास कितार्ब छन्हि आ ओ तीन ब्रँजे बाति धवि पढ़ैत वहैत छथि। एकटा रिचित्र सन गप हमवा ओहो पता नागन जे जी.एम. क्षत्रिरौध छथि तँ प्रथम श्रेणी दंडाधिकावी क्षदा सवकाव ह्नकव पाछाँ सी.आग.डी. नगा कऽ बाखने छन...।'

कोनो दोसव ब्रात नै देखि हर्षरर्धन एक तवहँ ज्आ खेनेनक। कोनो रिचाबाधीन मामिनाक संर्बंधमे भेंट कवर्ब, सेहो एहन जजसँ जे किछु वहस्यपूर्ण देखर्बामे नगैत अछि, एकटा खतवासँ भवन निर्णय छन। जौं जी.एम. क्षत्रिरौध तमसा जेतथि तँ ओकव कैविवव ब्रर्बाद भऽ सकैत छन। हर्षरर्धन सोनीक अतीत ओहिनो ब्रड़ कठिनाओ, संघर्ष आ द्:खसँ भवन छनै, र्बेवोजगावीमे भोगक हताशे आमेहना ओकव मनसँ कखनो एक्का पन नेन नै जाओ छनै। रकानत तँ खानी नाम मात्र नेन छनै। ओकवा नग र्बैसी रएह सभ अर्बैत छन जकव जेर्बीमे महग रकीन कवर्बा नेन टैका नै होओ छनै। मोहनदासक मोकदमामे ओकवा किछु नै भेटै वहन छनै, ऊँपवसँ ओकवा पाँच हजाव टैका अपनेसँ जोगाड़ कवए पड़न छन। तकव ब्राँदो ओ न्यायिक दंडाधिकावीसँ भेंट कवर्बाक खतवा नेनक।

हर्षरर्धनकँ आश्रिस्ति भेनै जखन अप्पन फ्लैटपव ओकवा

দেখ কঽ গজানন মাধর ময়্জিরৌধক চেহবাপব এহন ভার এনৈ জনা ওকবা পহিনেসঁ ওকব এরাঁক গপ বুঝন হ্খএ। জনা হুনকা পহিনেসঁ পতা ছন জে হর্ষবর্ধন ওকবা নগ খএরেঁ কবত। ও একবা নেন নকড় কি একটা প্ববনকা ফর্সী বাখি দেনক খা "রৈসূ! হম চাহ বঁনারৈত ছী!, কহি কঽ ভীতব চনি গেন'।

হর্ষবর্ধন কোঠনীমে নজবি দৌগেনক। ওতএ সভটা চীজ রেঁতবতীরঁ ছন। কতেক কিতারঁ এতএ-ওতএ পসবন ছন খা ওকবামে সঁ কতেক পন্না খুজন ছন, জকব রাঁচমে পেঁসিন, কার্ড খা গাছক পাত খোঁসন গেন ছন। ভঽ সকৈত খছি জে কিতারঁক ও পৃষ্ঠ ওকবা রঁছু পসীন হেতৈ খা ও রেঁব-রেঁব ওকবা পঢ়ৈত ছন হোএত। কোঠনীক হানত দেখি কঽ নাগৈত ছন জে ও এতএ খসগবে বহৈত ছথি। হর্ষবর্ধনকেঁ পতা নাগন জে ওকব রঁদনী খধিক কান ওগ খাদিরাসী খা পিছড়ন গনাকামে কঽ দেন জাগত খছি, জতএ এহন মকদমা নৈ খারৈত ছৈ, জকবাসঁ কোনো পৈঘ নোক খা ব্যাপাবীকেঁ কোনো ন্বকসান ভঽ জাএ। হর্ষবর্ধনক খাঁখি ডুঁপব ডঁঠনৈ। ভীতপব গাঁধীজী খা মার্ক্সক চিত্র টাঁগন ছন। একটা কোনমে গণেশক প্রতিমা সেহো াখন ছন। রাম ভাগক ভীতসঁ নাগন বুকসেন্ফ ছন, জগমে কানূনক কতেক কিতারঁ বাখন ছন, জনা ওকবা কতেক রঁবখসঁ খোননে নৈ গেন হ্খএ।

জী.এম. ময়্জিরৌধ চাহ নঽ কঽ খারি গেন ছন। সংগেমে

एकटा छिपनीमे कनीटा रौसनक सेरॅ छल। चाहकेँ मचियापर बाथि कऽ मिञिरोॅध तश्तापर रौंस गेलथि। चाह रॅड़ कड़गर आ मगोर छल। खूॅर उँटेल आ भफाएल।

कतेक काल धरि कोठलीमे स्वन-सन्नाटा रहल। हर्षवर्धनकेँ हिम्मत नै भऽ रहल छलै जे ओ ओकरासँ गप शुरू करितिऐ। सोझाँक भीतपर एकटा पुरान घड़ ी छल जे चाभी भरनासँ चलैत होएत। मुदा लागैत छल जे कतेक कालसँ कियो ओकरामे चाभी भरनहियै नै अछि। ओ ठाढ़ छल। घरमे एकटा कलेंडर टाँगल छल, जगमे माथपर मुरेठा बॉन्हल बॉल गंगाधर तिलकक चित्र छपल छल। हर्षवर्धन देखलक जे ओ कलेंडर सन 1964 क अछि।

–हम जानैत छी जे (एकटा रॅड़ पैघ कतेक दूरसँ जा कऽ घूरैत साँस).... मोहनदासे असली मोहनदास अछि। न्यायिक दंडाधिकारीक अराज जना कोनो गहीर गलार रा तरहरिमे सँ आरिं रहल छल। रॅड़ रकम, मध्दिम अराज। ओ चाहक एकटा रॅड़का चुस्की भरलक। ओ घोंटे आ स्वाद जेना ओकर माथक तनारकेँ कनी कम कऽ देलक।

"...आ ओ दोसर लोक फ्रॉड अछि। ओ सरासर

গমপর্সোনেিষ্ট কঽ বহন খছি। হমবা ব্র্যন যঽ ও রিসনাথ রন্দ নগেন্দ্রনাথ, জূনিযব ডিপো আঁফিসব ছী জে এ রাঁষ্টা এগাবহ, নেনিন নগবমে খরৈধ ঢংগসঁ মোহনদাসক খাগডেঁষ্টিষ্টী, চোবা কঽ বহি বহন খছি। হী গজ খ চীষ্ট, খ ঞিমিনন। খ স্কাউঁড্রন! '

হ্নকব রাঁজরাঁ রাঁড় পাতব হ্মদা কোনো ধাত্ত জেহন ধগ্গড় খা দৃঢ় ছন। ও খপ্পন জেরীসঁ রীড় ীক রাঁডন নিকানহ্নি খা ওগমেসঁ একষ্টা রীড় ী নিকানি কঽ পহিনে ওগমে উঁল্টা হ্নূক মাবনক, হেব সনাগক কাঠীসঁ ওকবা পজাবি কঽ একষ্টা গহীব সন স্বঙ্গা মাবনক।

হর্ষরর্ধনকেঁ নাগন জেনা ও খপ্পন কানসঁ রাঁহব, কোনো ষ্টাগম মশীনপব রৈসন, কোনো দোসব কানমে পহুঁচি গেন খছি। ও রাঁজন, "হম যএহ তঁ রাঁতারৈক নেন খর্মা নগ খাএন বহী। হ্মদা খর্মা কোনা জানি নেনিঐ জে খসনী মোহনদাস কে ছিঐ। '

"একবা জানরাঁ তঽ রাঁড় হন্নক খছি। জোঁ খর্মা নগ কনিযো সংরেদনা খা রিরেক হ্খএ", হ্মজিরৌধ রাঁজন খা ও চিংতিত ভঽ কঽ কিছু সোচঽ নাগন। ও রীড় ীক একষ্টা খূরাঁ গহীব সোঁষ্ট নেনক। "হম তীন বাতিসঁ নগাতাব জাগি বহন ছী। খাগ কাঁষ্ট স্লীপ হ্ৰাঁব খ মোমেংষ্ট! ...গষ্ট গজ খরাঁসর্ড এংড খ রেবী ষ্টৈস এক্সপীবিএংস। ' হ্নক খাংগ্বক রীচমে হ্নঁসন রীড় ী

मिथिलाक लोक। वासुदेव देख संघर्ष। नमितर्मिनि शुद्ध विहुल बैनवा यित्र निहार भपना।

"दि मोन सिस्टेम इज टैटेनी कोमैल्पसड... ! जस्टें नागक ख्रिन टॉरर्स गन न्यूयार्क...नागन गनेरन ! ...नाउँ र्‌हाटें गज नेक्स्टें ह्‌ॉब दि सबजेक्ट्स एंड प्वखर गज खनार्की एंड कैटेॅस्ट्रोफ ! ! (सम्पूर्ण व्यवस्था ढहि गेल अछि, न्यूयार्कक जोड़ा मीनार सन...सितम्बर एगारह ! ...आब प्रजा आ गरीबक आगू अराजकता आ विनाशे टा बचल छै।) हमरा लगैत अछि, पूँजी आ सत्ता...कैपिटेल एंड पारबकेँ एकटा एकदम्म नव रूपमे आगू अछि। मोहनदास गज बिगंग डिनाइड ऑफ ख सिंपल ग्रसेंशियल नीगल जस्टिस, किए तँ ओ न्यायकेँ कीनि नै सकत ! ओह ! " गजानन माधव मुक्तिबोधक माथक नस फूलि रहल छल। ओकर आंखिर थरथरा रहल छल। ओ बैचैन भऽ कऽ ठाढ़ भऽ गेल छल। ओ मिथिलाक वीड़ीकेँ देखलक आ जेबीसँ सलाई निकालि कऽ ओकरा फेर सुलगाबै लागल।

"सम्पूर्ण सिद्धांत खतम भऽ सकैत छै। ...कहियो बड़ परिवर्तनकारी लागैबला वैज्ञानिक आ दार्शनिक संरचना बदलैत कालमे खाली वाग्जाल, अनर्गल बकवास आ ठकक प्रवचनमे बदलि सकैत छै। इतिहासमे एहन बेर-बेर भेल छै। मुदा...'

ও রীড় িক একটা গহীব সোঁটে ভীতব খীচ কহ সাঁস কনী কান নেন বোকি নেনক। নগৈত ছন জে ও খপ্পন চঢ়ৈত রেঁচৈন সাঁসকেঁ নিকোটৈনক ধ্খাঁসঁ শাঁত কবরাঁক কোশিশি কবৈত ছন। ওকবা খোঁখী ভহ গেনৈ। রাঁমা হাথসঁ ও খপ্পন ছাতীকেঁ কিছু কান ধবি দরাঁ কহ বাখনক, ফেব খবখব খরাজমে রাঁজন, "ক্ষদা মন্বখক ভীতব একটা চীজ এহন খছি জে কহিযো কোনো জ্গমে কোনো তবহেঁ সত্তাসঁ মেটৈএন নৈ জা সকৈত খছি! ...খা ও খছি ন্যাযক খাকাংক্ষা! ডিজাযব ফ ৰ জস্টিস গজ গনডিস্ট্রিকটরেঁন...! গটে গজ খাল্লেজ গস্মার্টন...! ন্যাযিক খাকাংক্ষা কানাতীত খছি!'

ও খপ্পন মধ্যমা খা তর্জনীক রীচ ফসন রীড় িকেঁ খিড়কীসঁ রাঁহব ফেকি দেনক। ও মিন্না গেন ছন।

হর্ষবর্ধন সোনী মংত্রবিদ্ধ ছন। ও কেহন নোক খছি। এহন নোককেঁ ন্যাযিক দংডাধিকাবীক তবহেঁ খাগক কানমে দেখব কোনো খসংভব স্বপ্ন ছন। একটা দুর্নভ ফেঁটেসী।

ও রেঁচৈনীক সংগ কোঠনীমে টহনি বহন ছন। একাএক ও ঠাঢ় ভহ গেন খা ওকব খাঁখিমে একটা গহীব খামীয হঁসী কোনো তবন দ্রব্য সন মিনমিন কবৈ নাগন।

"খহাঁ জাউ, হর্ষবর্ধন! ...ডোঁটে রবী মচ! হমবা পতা

অছি জে অছুঁ পঢ়িনা কতেক বাতিসঁ স্বতন নৈ ছী। হমবে সন'! ও বঁড় জোবসঁ একটা ঠহক্কা নগেনক আ বাঁজন, "পার্টনেব, বেঁহ্ফিকিব ভ২ ক২ স্বতূ। স্লীপ নাগক অ ডেড হর্সি। নাউ, আগ হৈর গর্টে রিদ সমথিংগ'।

একব বাঁদ ও হর্ষরর্ধন নগ আএন। ওকব কান্হপব ও হাথ বাখনক। হর্ষরর্ধনকেঁ নাগন ওকব হাথমে কোনো ভাব নৈ ছৈ। কাগজ, ফূন, স্বপ্ন আ ভাষাসঁ বঁনন হাথ।

গজানন মাধব ফ্ক্তিবোঁধ, ন্যাযিক দংডাধিকাবী, প্রথম শ্রেণী বকমসঁ হর্ষরর্ধনক কান নগ ফ্সফ্স ক২ বাঁজন, "হমবা নগ একটা পারব অছি। বঁস একটা পারব। দৈর্ট গজ... সীক্রেট জূডীশিযন এংক্কাযবী। হম অপনা সঁ ও জাঁচ কববঁ। গোপনীয ন্যাযিক জাঁচ। জস্ট নীর গর্ট ট্ মী'।

হর্ষরর্ধন সোনী জখন ফ্ক্তিবোঁধক স্লৈটসঁ বাঁহব আএন তঁ ওকবা নগনৈ জে ও কোনো বঁড় পৈঘ স্বপ্নক বীহড়ি সঁ বাঁহব নিকনি ক২ অপ্পন কান আ যথার্থমে ঘ্বি বহন বহএ। ওতএ জতএ মোহনদাস অছি, বিঁসনাথ অছি, ও সেহো অছি আ আগক যথার্থ অছি।

চাবি দিন বাঁদে বিশ্বনাথ আ ওকব বাঁপ নাগেদ্রনাথকেঁ জী.এম. ফ্ক্তিবোঁধ ন্যাযিক দংডাধিকাবী (প্রথম শ্রেণী) ক

আদেশপব জালসাজী, ধোখাধড় ী, হবেৰ, চোবী আ গবঁনক জ্র্মমে গঁড়িযন পীনন কোড়ক ধাবা 419/420/464/467/ আ 403 ক তহত গিবহতাব কঽ জেল পঠা দেল গেলৈ। অদালত ওবিযংঠন কোন মাগংসক জনবল মৈনেজব এস.কে. সিংহ কেঁ আদেশ দেনক জে ও মোহনদাস রিশ্বকর্মা উর্ফ রিশ্বনাথ, জুনিযব ডিপো আঁফিসবক রিরুদ্ধ তুবংতে কার্বরাগ কঽ কার্বরাগক সূচনা দূ হহতাক ভীতব অদালতমে পেশ কবএ। একব অলাবেঁ ঐ পূবা প্রকবণমে প্রত্যক্ষ আ পবোক্ষ রূপসঁ সম্মিলিত আ লিপ্ত অধিকাবী আ কর্মচাবীক রিরুদ্ধ উপযুক্ত রিভাগীয জাঁচ আ কার্বরাগ শুরু কএল জাএ। জৌঁ ওবিযংঠন কোন মাগংস ঐ সভক রিরুদ্ধ ন্যাযিক আপবাধিক প্রক্রিযাক অংতর্গত অপবাধ কাএম কবএ চাহৈত অছি তঁ গ্র ন্যাযালয একব অনুশংসা কবৈত অছি।

হবরির্বো মচি গেল। অখবাঁবমে নকলী মোহনদাসক গিবহতাবীক খবঁব প্রমুখতাসঁ ছপল। ওবিযংঠন কোন মাগংসে টৌ লৈ মদ কতেক খদাল আ সার্বজিনক উপক্রম অধিকাবী, যূনিযন নেতা আ কর্মচাবীক হোশ উড়়ি গেলৈ। চারু দিস ভাগা-দৌবী ছল। লেলিন নগব, গাঁধীনগব, অংবেঁডকব নগব, জরাহব নগব, শাস্ত্রী, নেহরু আ তিলক নগব জেহেন স্বব্যরস্থিত কॉলোনীমে হজাবো রিসনাথ জেহেন লোক ছল জে কোলো দোসব পহচান, অধিকাব, যোগ্যতা আ ক্ষমতাকেঁ চোবা কঽ কতেক রঁবখসঁ বৈঁসল ছল আ কএক হজাবমে দবমাহা লঽ বহল ছল।

রাঁদমে মানূম ভেন জে গজানন মাধর ফ্মক্তিরোঁধ, ন্যাযিক দংডাধিকাবী (প্রথম শ্রেণী), খনূপপ্বব, (ম.প্র.) খপ্পন খাপাতকানীন স্ববক্ষিত ন্যাযিক খধিকাবক গস্তুমান কঽ খপনেসঁ ঐ মামিনাক গোপনীয জাঁচ কএনে ছন।

ওগ বাতি রঁড় ী কান ধবি ও পঢ় ৈত বহন। ভোবমে ও নৌ রঁজে ড্রাগরবকেঁ হোন কঽ খপ্পন সবকাবী গাড় ী মংগৌনক, জকব গস্তুমান ও খদানতেটৌ জএরাঁ খা ওতএসঁ ঘ্ববাঁ নেন কবৈত ছন। দোসব হোন ও এচ.এস. পবসাঙা (হবিশংকব পবসাঙা) কেঁ কএনক, জে পর্িনক প্র াঁসিক্যূ্টব ছন। তেসব হোন ও এস.রী. সিংহ (শমশেব রঁহাদ্ব সিংহ) কেঁ কএনক, জে খনূপপ্ববক এস.এস.পী ছন। ঙা সভটৌ খধিকাবী খপ্পন–খপ্পন কর্তব্যনিষ্ঠা খা ঙমানদাবীক নেন জানন জাগত ছন। চাবিম হোন ও হর্ষরর্ধন সোনীকেঁ কএনক খা ওকবাসঁ এতরেঁটৌ রাঁজন– "পার্টনেব, স্টেঁপ পেপব নঽ কঽ ত্তবত খারি জাঙ'!

শমশেব রঁহাদ্ব সিংহ রঁতৌনক জে ন্যাযিক দংডাধিকাবীক গাড় ী সীধা নেনিন নগবমে মটিযানী চৌক নগ, এ/11 নরঁবক ফ্লেঁটপব ঝকন। রিসনাথ ওগ কান রিজয তিরাবীক সংগ কোনো নেতাক সবোকাবমে রাঁহব গেন ছন। ফ্লেঁটমে ওকব কনিযাঁ কস্তূবী মানে বেন্বকা দেরী টৌ ছন, জে চিটহংড, সোশিন সবিসি, কিটী পার্টী খা হাগনেংসক ধংধা কবৈত ছন। ন্যাযিক দংডাধিকাবী ওকবাসঁ সোনে ওকব রঁন্দিযত খা ওকব নৈহবক পতা প্বছনক। কস্তূবী মৈডম মানে বেন্বকা দেরী সবকাবী

रॅत्तीनना गाड़ ी ञ्ञा एतत्त नोककेँ देखि कऽ घरॅड़ ा गेन छन ।

एकव रॉद न्यायिक दंडाधिकावीक गाड़ ी नेनिन नगवसँ निकनि कऽ मिजप्पिव-रॅनावस जाए रॅना सड़कपव दौगय नागन । ठीक पैंसठि किनोमीटव रॉद ओ गाड़ ी ञ्ञाराजप्पव गाम दिस जाएरॅना कची सड़कपव उँतवि गेन ञ्ञा ञ्ञाध घंटा रॉद नंकाप्पव नामक गाममे एकटा भव्य पक्काक मकानक ञ्ञागू ठाढ़ भऽ गन । न्यायिक दंडाधिकावी ओतए ओग मकानमे वैठॅरॅना नानू प्रसाद पाँडे ञ्ञा ओकव कनियाँ जय ननिता पाँडेसँ दूटा सवान केनक । पहिन ओकव ञ्ञा ओकव रॅटा-रॅटीक की नाम छै । ञ्ञा दोसव ओकव जमाय सर्वहक नाम ञ्ञा पता । एकव रॉद ओ पर्रिनक प्रासिक्युटव एच.एस.पवसाओकेँ निर्देश देनक जे ओ हर्षरर्धन सोनीसँ स्टैंप पेपव नऽ कऽ ओकव हनफनामा तैयाव कऽ निञ्ञए ।

न्यायिक दंडाधिकावीक गाड़ ी एकव रॉद ग्राम पंचायतक सवपंचक घवपव रूकन, जतए सवपंच ञ्ञा किछ गरहक रॅयान दर्ज कएन गेन ।

एस.एस.पी. शमशेव रॅहाद्दुव सिंह जोवसँ ठहक्का नगा कऽ रॉजन, "जानसाज तँ एतत्त धवि सोचनो नै छन ञ्ञा सभक सभ फँसि गेन । हम तँ नंकाप्पवसँ ञ्ञनूपप्पव थानाक एस.एच.ओ. केँ फोन कऽ देने वही जे रिछिया टैनो ञ्ञा नेनिन नगव जा कऽ नगेन्द्रनाथ ञ्ञा रिसनाथकेँ थाना नेने ञ्ञारॅ, नै तँ फवाव भऽ गेन तँ मोसीरॅत भऽ जाएत ।

একব ৰাঁদক রিরবণ ৰঁড় সংক্ষিপ্ত খ্ছি।

ৰ্হষরর্ধন সোনী খ্া মোৰ্হনদাস দ্নূ ঐ জীতসঁ ৰঁড় খ্ুশী ভেন। কস্তূবী সৌংসে প্ববৰঁনবামে নচৈত বৰ্হন। খ্ান্হব প্বতনীৰাঁগ গঠ্ন্নামে নজরিজ্জীক ৰীচ ন্বকা ক্ঽ বাখন একৗা পোৗবী ফেব খোজি ক্ঽ নিকাননক, জগমে রিস্বনভোগ চাউঁব ছন। মোৰ্হনদাসক ঘবক সভৗা কোন রিস্বনভোগ, খেসাবী খ্া ৰঁকবীক দূধসঁ ৰনৈৰঁনা খীবক গমকসঁ গমকি গেন। খ্নোপী মৈনাক খোতামে খ্ংডাক খোনকেঁ খ্প্পন ছোৗ-ছোৗ নোনসঁ ভীতবসঁ ফোড়ি ক্ঽ দূৗা স্বন্নব ৰঁচা ৰাঁৰ্হব নিকনি খ্াএন ছন খ্া ওকব খ্ৰোঁধ চিচিযেনাগ কোঠবী খ্া ওসাবমে একৗা নর সংগীত ভবি দেনক।

প্বতনীৰাঁগক গঠিযাক দর্দ কম ভ্ঽ গেন খ্া পৰ্হিন্বক ৰেঁব ও খ্াঁগন খ্া পবছীমে খ্পনেসঁ ৰাঁঢ়নি নগেনক। ও মগন ভ্ঽ ক্ঽ চনন জা বৰ্হন ছন ক্ষদা ওগ গীতমে কোনো প্রসন্ন চিড় ৈক কংঠক সংগ একৗা কোনো উঁদাস-সন স্বব সেৰ্হো ছন:

"খ্ৰ্হাঁ রিঁন জগ নাগে স্বন্ন...

জগ নাগে স্বন্ন...

নৈ ভাৰৈ ৰ্হমবা

সোনা–চানী মহন খটৌবী...'

হর্ষবর্ধন সোনী মোহনদাসসঁ কহনক জে খার্ঁ খগনা কেস ওবিযংঠন কোন মার্গসমে তোবা তোহব নোকবী ঘ্বা কহ দিযারৈঁক নেন দাখিন হোএত। খদানত রিঁসনাথক সরিঁস র্ঁকসঁ খহাঁক সভটৌ সর্টিফিকেট, মার্কশীট খা টৈস্টিমোনিযন জর্ঁত কহ নেনে খছি। ও খহাঁকেঁ দহ দেন জাএত। মোহনদাস হর্ষবর্ধনসঁ নিপর্টি গেন। ওকব কমজোব–গবীর্ঁ শবীব থবথবা বহন ছনৈ। ওকব গব ভাবী ছন খা খাঁখিসঁ হৃতক্তা খা খাহ্লাদক নোব নগাতাব র্ঁহি বহন ছনৈ। জনা খষাঢ়– সাওনক তোব নাগন হ্খএ।

রীবন রৈঁগাক ঘবমে ফেব বাস বংগ ভেন। সিতিযা তোবীক তেন, বসূন–প্যাজ খা গবম মস্সনামে বসদাব স্বখবক মৌস বান্হনক। তীন মটকী মহ্ক শবার্ঁ উঁতাবনক। ঢোনক, মংজীবাক সংগ ঐ রেঁব বাম কবন হাবমোনিযা সেহো নহ কহ খাএন ছন। গোপানদাস, রীবন, রিঁহাবী, পবমোদী, মোহনদাস সভ কিযো পীনক। সিতিযা, বমোনী, কস্তূবী, সারিত্রী সেহো ঠর্বা পীর্ঁ কহ ভেব ভহ গেন। ও নাচি বহন ছন খা গারিঁ বহন ছন। মোহনদাসকেঁ পতা নৈ কতএ–কতএসঁ একক রাঁদ এক গীত মোনা পড়া বহন ছনৈ। সভ মস্ত ভহ গেন ছন।

কস্তূৰীকেঁ খাগ দাব্দ কিছু ৰেঁসী চঢ়ৗ গেন ছনৌ। ও ৰেঁব–ৰেঁব মোহনদাসক হাথ পকড়ৗ কঽ খীঁচঽ নাগন। "হ্ তূ তূ ...ত্ত...ত্ত! হমবা সংগ কৰঁড্ডী খেনৰঁ? হ্ তূ তূ তূ ত্ত ত্ত...!' ও মোহনদাসক দেহমে গ্বদগ্বদী নগাৰঁঽ নাগন।

" জো ভাগ ঐ ঠামসঁ! জো দৰোগা তিৰাবীক মহিসৰাবীকেঁ সম্হাব...!' মোহনদাস ওকবাসঁ চ্হ্ন কঽ বহন ছন। সভ হঁসৈত–হঁসৈত নোটপোট ভঽ বহন ছন।

জখন সাৰিত্ৰী একাএক গবজি কঽ বাঁজন, "দৌগঽ হৌ...দৌগঽ! তিৰাবী দৰোগা ধবিযামে হগি বহন খছি! !' তঁ হঁসী খা ঠহক্কা এক্ক ৰৈঁগ ৰঁম জনা ফূটৈন, জকৰ ধমক্কাসঁ খাধ বাতিমে পূবা প্ববৰঁনবা ডোনি উঁঠন।

মোহনদাস খা ৰীবন ৰৈঁগা উঁঠি কঽ খাঁগনক ৰীচোৰীচ ঠাঢ় ভঽ গেন ছন। জনা ওতএ কোনো খদানত চনি বহন হ্খএ। দ্নূ ডাযনাঁগ মাবি বহন ছন।

মোহনদাস: এ...হে! খহাঁ কে ছী? খহাঁক নাম কী? চন্ব কোবটৈক নাম ৰঁতাউ!

ৰীবন ৰৈঁগা: হমব নাম ছী ৰীবন ৰৈঁগা। খা হমব ৰাঁপক নাম খছি ডিঁডৰা ৰঁগগা! ডিঁডৰা ৰঁগগা! !

মোহনদাস: এ হে! খা হম কে ছী? হমব কী নাম?

রীবন রৈঁগা: (খাগূ রঁঢ়ি কঽ ওকব ছাতীপব খাঁগ্বব গড় ারৈঁত) হে সাঁঢ় ভুকখড় ! তোহব নাম ছিযৌ মোহনদাস ! মোহনদাস ! ! (গবজি কঽ) মোহনদাস করীবপংথী রঁসোব ! ! !

মোহনদাস: খা হমব রাঁপক নাম কী ছী ?

রীবন রৈঁগা: তোহব রাঁপ তঁ মবি গেনৌ ! তোহব রাঁপক নাম বনৌ কারাঁ দাস !

মোহনদাস: এ হে ! হম মোহনদাস এম্হব খা হমব রাঁপ কারাঁ দাস ওম্হব ডুঁপব, সবগমে...তঁ সাব ও ওম্হব খনূপপ্ববক জেনখানামে কে রৈঁসন খছি ?

রীবন দাস: (কূদি কঽ হাথ নজারৈঁত গবজৈত খছি)...ও দেহজবা রিঁসনাথ ! চাবি সৌ রীস... ! ওকব রাঁপ ডরঁন চাবি সৌ রীস ! ওকব মৌগী চাবি সৌ রীস... ! কোগনা খদানরঁনা নেনিন নগবক খফসব নেতা সভ কিযো চাবি সৌ রীস !

(পবমোদী, সিতিযা, রিঁহাবী, বামকবন, বমোনী, সরিত্রী, গোপান দাস সভক মিনন ঠহাকাক সংগ ঢোনক, মংজীবা, হাবমোনিযমক সংগীত)

ঐ পূবা কথাক ডঁদাস, হতাশী ধূসব বংগক রীচমে চংখ প্রসন্ন বংগক ওা ছিঞ্চা খহাঁকেঁ কোনো ক্ষেপক সন নাগি বহন হোএত। কি নৈ ? খহাঁক সোচ একদম্ম সত খছি। গবীরঁ খা খন্যাযক শিকাব নোকক জিনগীক খবখব যথার্থমে এহন স্বন্নব বংগ কহিযো–কান খানী এহনে কিছু পন নেন খরৈঁত খছি। সত্তা খা পূজীসঁ জ্ড়ন তাগতি একাএক কোনো রাঁজ সন ঝপঞ্চা মাবি কঽ

अनोपी मैनाक खोताकेँ उजाड़ि दैत अछि आ राँहर नखाह दैत छै चिड़ै क छोटै-छोटै गेन्हक पंथ आ खूनक किछु दाग। ई दाग कोनो पार्टीक सरकारक मानर संसाधन मंत्रालयसँ निर्धारित इतिहासक पाठ्य-पुस्तकमे कहियो नै नखाह दैत अछि। किएकि इतिहासकारक पेशे अछि जे अपना कालक सत्ताक आँचरक दागकेँ नुकाएब।

ओ मास कतेक बास अजगुत घटनासँ भरल छल। भारतक राजधानी दिल्लीसँ एक हजार पचास किलोमीटर दूर जे किछु भऽ रहल छल, ओकर सूचना आ खबरि ऐ खिस्साक अनारेँ अहाँकेँ आर कतौसँ नै भेटैत। अनूपपुरमे मोहनदासक जीवन जइ हलातसँ गुजरि रहल छलै, ओकर संक्षिप्त विवरण ई अछि:

गजानन माधर मुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणीक बदली एकाएक राजनांदगांव भऽ गेल आ ओ अनूपपुर छोड़ि कऽ चलि गेल।

बिसनाथक रकील बास बिहारी राय, जे सत्ताधारी पार्टीक पैघ नामरर- मातबर नेता छल आ जकर प्रतोद्ध नगर निगमक अध्यक्ष छल ओ एक्के पेशीमे बिसनाथ आ ओकर बाप नगेंद्रनाथक जमानत करा देलक। बास बिहारी राय एखुनका राजनीतिक माँजल खिलाड़ी छल। बिश्वनाथ माने मोहनदासकेँ जेलसँ बिहा करैत, पुलिससँ गठजोड़ कऽ ओ ई चलाकी केलक जे पुलिस रिकार्डमे मोहनदासे नाम दर्ज रहए देलक। किएकि जाधरि अदालत अंतिम फैसला नै सुनैबितिऐ ताधरि मोहनदास

মানে রিশ্বনাথ খপবাধী নৈ কানূনী ৰূপমে খানী সংদিগ্ধ ভবি ছন। মানে প্বনিসক দস্তারেজ খা খাধিকাবিক কাগজমে খনূপপ্বব জেনসঁ জে দূটা কৈদী জমানতপব বিহা কএন গেন ছন ও খপ্পন প্বান নাম মোহনদাস মানে রিশ্বনাথ খা কাৰাঁদাস মানে নগেন্দ্রনাথক নামসঁ জেনসঁ ৰাঁহব ছন। ওগ দূনূ টৌক বিহাগৰনা দস্তারেজপব ৰাঁদৰনা নাম এহন তবহে নেভবা কঽ নিখন গেন ছন জে পঢ়ৰাঁমে নৈ খৰৈঁ ছন।

ওস্হব একাএক এক দিন খৰব ভেটৈন জে বাজনাঁদগাঁরমে ন্যাযিক দংডাধিকাবী জী.এম. ক্ষত্তিৰোঁধকেঁ ব্রেন হেমবেজ ভেন খছি খা হ্নকা খচেতারস্থামে রিনাসপ্ববক খপোনো খস্পতানমে ভবতী কএন গেন খছি। খপোনোমে কাংগ্রেস পার্টীক মহামংত্রী শ্রীকাংত রর্মা খা ক্ষত্তিৰোঁধক খভিন্ন মিত্র নেমিচংদ জৈন হ্নকা নগ ছন। ক্ষদা 72 ঘংটা ধবি জীৱন–মৃত্যুক ৰীচ চনন কঠিন সংগ্রামক ৰাঁদ গজানন মাধর ক্ষত্তিৰোঁধ, ন্যাযিক দংডাধিকাবী, প্রথম শ্রেণী খপ্পন খংতিম সাঁস নেনক। ...ঐ খংতিম সাঁসমে ও "হে বাম! ' কহনক।

ওকব মৃত্যুক সূচনা ভেটৈনাপব হর্ষরর্ধন সোনীক সংগ কূহী ভঽ কানৈৰনা প্ববৰনবা গামক মোহনদাস করীবপংথী ৰঁসোব সেহো ছন। ওকব জিনগীক খাশাক খসগব গজোত মিঝা গেন।

अखन्नका हाल ई अछि जे विसनाथ अप्पन कनिया बेन्नका संग मिलि कऽ कोनियबीक दलालीमे बड़ पाई कमा लेने अछि। विजय तिवारीक संग ओकर बैसकी अखनो चलैत अछि। ओ अखन सोझाँ भऽ वाजनीतिमे आवि गेल अछि आ जिला जनपदक अध्यक्ष पदक चुनाव लड़ि वहल अछि। ओकव जाति-विवादवीक लोक तँ ओहिनो ऊँच जगहपव अछि। ओ सभ तवहेँ ओकव मदति कवैत अछि। ओ कहैत अछि, "असली मोहनदास के अछि आ नकली के, एकव फैसला तँ हम कवव। ओ साव दू कौड़ीक कन्नव वँसोव हमव गञ्जतिपव बँठ्ठा लगौलक, लागल-लगाएल लोकवी छिनलक, आवँ हम अपन तागति ओकवा देखा देवैं।

अखन पछिला हफ्ता जखन हम अप्पन गाम गेल वही तँ हर्षवर्धनक चेहवा उड़ल छलै ओकव आँखि लाल छलै। ओ बाँजल, "पछिला तीन वातिसँ हम स्वतल नै छी। बुझबामे नै अबैत अछि जे की कवी। विसनाथकेँ लऽ कऽ प्रवर्तनवाक लोग सत कहैत अछि। गज भविक विसधावी। असल कवैत'।

ओ बड़का साँस भवलक आ बाँजल, "लेनिन नगवक गलाकामे विसनाथ सभ दोसव-तेसव दिन कोनो-नै-कोनो क्रिमिनल अपवाध कवैत अछि। कखनो केकवो चेन खीच लैत अछि, कखनो ककवो संग मावि-पीट कवैत अछि। ओकव कनियाँ हाफगलेंस आ चिट्ठफंडक जगल धंधामे अछि, ओकव रसूलीमे ओ कर्जदावसँ मावि-पीट कवैत

অছি আ ঘরমে পৈসি কঽ সমান উঠা লৈত অছি। ...আই থানামে জে এফ.আগ.আর. দর্জ ভোগত অছি ও তঁ মোহনদাসক নামসঁ দর্জ ভোগত অছি কিএকি ওতএ রেঁসী লোক রিসনাথকেঁ অখন ধরি মোহনদাসক নামসঁ জনৈত ছল। আ ওম্হর পুলিস পুররঁনবা জা কঽ ঐ রেঁচাবা অমলী মোহনদাসকেঁ পকড়ি লৈত অছি।

হর্ষরর্ধনক আঁখিমে অসহাযতাক নোর ছল। রিসনাথ পুলিস ওঁস্পেক্টর রিজয তিরারীসঁ ভেঁট কঽ থানাক সিপাহীকেঁ খুআ-পিআ কঽ রাখনে অছি। ও মোহনদাসকেঁ পীট-পীট কঽ ওকর হাথ-পএর তোড়ি দেনে ছল। ও চলি-ফিরি নৈ সকৈ ছল। ওকর মাগ পুতনীরাঁগ সেহো চারি দিন পহিনে গনারমে খসি কঽ মরি গেল ছল। কস্তূরী হাড়-তোর মজূরী কঽ কোনো তরহেঁ চূল্হাক আগি জরৌনে রখনে ছল।

হমর আঁখি উপর উঠল। আগুএসঁ মোহনদাস লংগড়াগত রঁনল আরি রহল ছল। ওকর দেহপর পুরনকা রেঁবংগ, চিপ্পী লাগল পেঁট আ চেথড়া ভেল চৌখুঁটা অংগা নৈ, একটা ধরিযাটা রঁচল ছল। ওকর মাথক কেস খসি গেল ছল আ আঁখিমে গোল ফ্রেমক সস্তা সন চশ্মা লাগল ছল। ও রকম-রকম ডগমগ কর়ৈত লাঠীক সংগ কোনো রেঁমার রূঁঠ জনা রূঁনি রহল ছল।

"ককা, রাম রাম'! ও হমরা দেখি কঽ হাথ জোড়ৈনক। ওকর চেহরাপর পীড়া আ হারর়াঁক গহীর

ডড় াব খারি গেলৌ। হম দেখনহুঁ ও রঁড় রূঁঠ নাগি বহন ছন। খস্সী–পচাসী সানক খাসপাস। নাঠী ঠৈক কঽ ও ওতএ ধবতীপব রৈঁস গেন। ওকব গবসঁ ফহবৈক সংগ ভাবী খরাজ নিকনন, ফদা ও খরাজ জেহন ভাষামে ছন ও ছন বাজভাষা হিন্দী। ও রাঁজন:

"হম খহাঁ সভক হাথ জোড়ৈত ছী। হমবা কোনো তবহেঁ রঁচা নিখ। হম কোনো খদানতমে চনি কঽ হনফনামা দৈ নেন তৈযাব ছী জে হম মোহনদাস নৈ ছী। হমব রাঁপ কারাঁ দাস নৈ খছি খা ও মবন নৈ খছি, খখনো জিরৈঁত খছি। রঁড় মাবনে খছি হমবা প্বনিস, রিসনাথক কহনাপব। সভটা হড্ডী তোড়া দেনে খছি। সাঁসো টা নেরাঁমে ছাতী দ্খাগত খছি।'

হম দেখ বহন বহী, মোহনদাসক ঠোঢ় কটৈন ছন খা ফঁহ পোপটা গেন বহৈ। শাগদ থানামে ওকব দাঁত তোড়া দেন গেন ছন। ওকব খরাজ টূঁটি কঽ ছিতবা বহন বহৈ:

"জকবা রঁনরাঁক ছৈ রঁনি জাএ মোহনদাস। হম নৈ ছী মোহনদাস। হম কহিযো কত্তীসঁ রী.এ. নৈ কেনহুঁ। কহিযো টৈাঁপ নৈ কেনহুঁ। হম কহিযো কোনো নোকবীক কারিন নৈ বহী। খানী হমবা চৈনসঁ জিরৈঁত বহন দেন জাএ। খাবঁ হিংসা নৈ কব্ধ। জে ন্বটৈরাঁক খছি ন্বটি নিখ। খপ্পন–খপ্পন ঘব ভব্ধ। ফদা হমবা তঁ খপ্পন মেহনতিপব জিযএ দিখ। কাকা, খহাঁ সভ হমব সংগ দিখ'।

পতা চনন মোহনদাসক ৰাবহ ৰবখক ৰেঁটা দেৰদাস দস দিনসঁ ঘব নৈ ঘ্বন খছি। কিযো কহৈত খছি জে ৰিসনাথ ওকবা গাএৰ কবা দেনক, কিযো কহৈত খছি জে ও ডবে ঋংৰঙ ভাগি গেন ছৈ...

...খা কিযো-কিযো ঙাহো কহৈত খছি জে ওকবা পবসূ ৰস্তুবক জংগনমে দেখন গেন খছি।

(ঙা ওগ কানক গপ খছি, জখন ভৰুচ নগক একটা ঙঁচ ডিম্হাপব বাঘব নামক একটা তীস ৰবখক ধন্বহাব ঠাঢ় ভেন ছন। ও বাতি ভবি জাগি ক২ ৰাঁস চীব-চীব ক২ কতেক বাস তীব ৰনেনে ছন। ও ধন্বষক প্রৎচা চঢ়া ক২ খাকাশি দিস তীব চনৰৈত ছন, ফেব দৌগি ক২ ডিম্হাক নীচাঁ খসন তীবকেঁ ৰিছি ক২ খানৈত ছন।

দোৰাবা, তিৰাবা...পতা নৈ কতে ৰেব ও ঐ তবহে তীব খকাশি দিস চনৰৈত বহন খা ধবতীপব ওকবা ৰিছৈত ছন। ঋদা কতেক বাস তীব খাৰ পানিমে ডূমএ নাগন ছন। ওকবা তাকৰ খা ৰীছৰ ঋশিকন ভেন জা বহন ছন। কিএকি পহাড়ক ৰীচ, দূব-দূব ধবি পসবন মৈদানমে পানি ভবন জা বহন ছন, গাছ ডূমি বহন ছন। দিশা খা স্মৃতি সভ কিছু ডূমি বহন ছন।

...তীস ৰবখক বাঘব ঋদা ওগ ডিম্হাক ঙঁপবসঁ খকাশি দিস তাধবি তীব চনৰৈত বহন খা দৌগ-দৌগ ক২ ওকবা ৰিছৈত বহন, জাধবি ও সেহো ডূমি নৈ গেন...

বাঘব খাৰ কত্ত২ খছি ? জতএ ও ছন, ওতএ খাৰ

পানিযে–পানি বহএ। অজগ অথাহ জল। ...ওতএ বিজলী পৈদা হোএত। ...ভৱ্ধচমে হিলসা মাছ হোগল ছল। ভাবতক ধাবক সভসঁ মহান আ সংসাবক বিলক্ষণ মাঁছ। হিলসা বহৈত পানি ৫ৗমে, ধাবক তেজ ধাবে ৫ৗমে জিবৈত বহি সকৈত অছি।

...হিলসা আবে ঠাঢ় বাঁন্হক বেমাব আ প্রদূষিত পানিমে মবি গেল হোএত।

...ও ওগ কানক গপ অছি, জখন হম ও খিস্সা অহাঁক লেল জগ ভাষামে লিখ বহল ছী, ওগ ভাষাক ভীতব হম বঁগদাদক অৰ্থ গবীবঁ জেলমে গবাকীক তবহে ছী! বা 1943 ক জর্মনীক কোনো গৈস চেংবঁবমে যহুদী সল! বা কোনো বীমাব প্রদূষিত ঠাঢ় পানিমে ডূমল হিলসা মাঁছ জেহল! ...বা অখলো সংগ্রামবত বাঘর ধন্বহাব জেহেল!

...ও বএহ কান অছি, জগমে মোহনদাস অছি, অহাঁ ছিঐ, হম ছী আ বিসনাথ অছি। আ আগক যথার্থ অছি।

...ওগ কান, জকবা একৈসম শিতাব্দীক পহিল দশকক ৰূপমে সভ কিযো জনৈত অছি আ জখন হম সভ হিন্দীক কথা সম্রাট ঝংশী প্রেমচংদক সবা সএম জযংতী সত্তাধাবীকেঁ মনাবৈত দেখি বহল ছী...

ঝদা সত বতাউ, মোহনদাসক গাম প্ৱবৱঁনবাক নাম কী অহাঁকেঁ পোববঁদবক মোন নৌ পাড়ৈত অছি? ...)

"বেহনপব বগ্ঘ্"– শ্রী কাশীনাথ সিংহ (হিন্দীসঁ মৈথিনী খনুবাদ শ্রী রিনীত উংপেন)

*****

কোনকাতামে তেজস্বী পত্রকাব

বাঁগ্লা–হিন্দী সেতু

খপন ছোট ভাগ গুপাশংকব চৌবেঁ নেন

*****

জঁ "কাশীক খস্সী" হমব নগ্র ছন

তঁ "বেহনপব বগ্ঘ্ হমব ঘব খছি"

খা কিংশাগত খহাঁক সেহো।

–কাশীনাথ

******

<u>রেহনপব বগ্ঘ্ (২০১১ মে সাহিৎ খকাদেমী প্ববস্কাবসঁ সম্মানিত পোথী)</u>

ঞ উঁপন্যাস মৌথিলীমে পহিল রেঁব রিদেহ ঞ-পত্রিকা www.videha.co.in মে ধাবারাহিক রূপমে ঞ-প্রকাশিত ভেল ছল।

**

জনরবীক ও সাঁঝ কহিযো নৈ রিঁসবরঁ।

সাঁঝ তঁ মৌসম কহ দেনে ছল ঋদা বহএ দ্পহবিযা। কনী কান পহিনে বৌদে ছল। ও খেনাগ খেনে ছল খা খা কহ খখন খপ্পন কোঠনীমে পটৌযনে ছল খাকি একরৈঁগ রিঁর্বো ঐন। ঘবক সভটৌ খ্জন খিড়কী-দবরঁজ্জা ধাঁগ-ধাঁগ করৈত খপনেসঁ রঁন্দ হ্খএ নাগন খা খ্জএ নাগন। কিন্নী উঁড়া কহ কতৌ খসন খা ভঈ-ভঈ কী-কী কেনা-কেনা খসহ নাগন, নাগন জেনা ধবতী থবথবা বহন খছি খা ভীত হীনি বহন খছি। খকাস কাবী খঈখঈ ভহ গেন ছল খা চাৰু দিস খন্হাব গ্বজ্জ ছল।

ও উঁঠি কহ রৈঁসি বহন।

খঁগনা খা দবরঁজ্জা রঁড়কা-রঁড়কা ওনা খা রঁবহফক পাথবসঁ ছবা গেন, দনানক রেনিংগ টুঁটি কহ দৃ নগ্গা

দূব জা কঽ ধড় ামসঁ খসল। একব ৰাঁদ জে নিবাঙ ৰৰ্খা ৰবিখৰ শ্বব্ধ ভেল তঁ ও পাগলক ৰ্ন্নী নৈ ছল, নাগএ জেনা পাগলক ৰড়হা ছল, জকবা পকড়ি কঽ কিযো চাহএ তঁ ওতঽ ধবি চলি জাএ জতঽ সঁ ও ছোড়ল খাকি খসাএল জা বহল ছল। মেঘ নগাতাব গবজি বহল ছল, দূব নৈ, নগেমে মাথক ঙুপব জেনা রিজনৌকা নৌকি বহল ছল, দূব নৈ, খিড়কীসঁ ভীতব খাঁখিমে। একহত্তবি ৰৰ্খক ৰূঢ় বঘ্নাথ খবাক ! ঙা একাএক কী ভঽ গেল ? কী ভঽ বহল ছৈ ? ও ঝঁহপবসঁ ৰনবৰ্ষ্টেপী হৰ্ষ্টেনক, দেহপব পড়ল সীবক হৰ্ষ্টেনক খা খিড়কী নগ ঠাঢ় ভঽ গেল।

খিড়কীক দ্নূ পল্লা খড়কাক ষ্টৈকসঁ খ্জল ছল খা ৰাঁহব দিস দেখি বহল ছল। ঘবক খাগ্বএ কদম্বক ৰড়কা গাছ ছল ঝদা ওকব পতা নৈ চলি বহল ছল, খন্হাবক কাবণ, খা ৰৰ্খাকি কাবণ জে ধঽ কঽ তোপলে ছল, পথিযাক পথিযা ঙঝীল বহল ছল। ছাতক ডাঙল–পাগপসঁ পাগলক ধাব খসি বহল ছল খা ওকব হমাবো খলগেসঁ স্বনা দঽ বহল ছল। এহেন মৌসম, এহেন পাগল খা এহেন হবা ও কহিযা দেখলে ছল ? দিমাগপব জোব দেনাপব মোন পড়ল– সাঠি–ৰাঁসঠি ৰৰ্খ পহিলে ! ও স্কূল জাএ নাগল ছল, গামসঁ দূ মাগল দূব। মৌসম খবাপ দেখি কঽ মাস্টব সমযসঁ পহিলে ছুট্টী দঽ দেলে ছল। ও সভ লেনা–ভুষ্টকোক সংগে গাছী পহুঁচলে ছল খাকি খান্হী–রিবোঁ–পাগল খারি গেল খা খন্হাব পসবি গেল। সভ কিযো খামক গাছক খঢ় লেৰঽ চাহলক ঝদা রিবোঁ ওকবা সভকেঁ জেনা লঽ কঽ ঙড়া গেলৈ

आ गाछीसँ ऑहव धानक ऑधमे नऽ जा कऽ पटैकनकै। ककरो मोबाक आ किताबँ–पत्तवक कोनो पता नै छनै। पाउनक बॅुन्नी ओकव देहपव गोनीक छर्वा सन नागि वहन छनै आ ओ मावे चिचिया वहन छन। ढिँढो थम्हनाक ऑाद जखन पाउन–बॅुन्नी कनी कम भेन तँ गामक नोक नानटैन आ डिरिया नऽ कऽ ऑहाव भेन छन ताकै नेन। ओ एकटा खनहोनी छन आ खनहोनी जँ नै हुखए तँ जिनगी की ?

आ ओहो एकटा खनहोनीये छन जे ऑहव एहेमे मौसम छै आ ओ कोठनीमे अछि।

कत्तेक दिन भऽ गेन ऑर्खामे भिजना ?

कत्तेक दिन भऽ गेन गवमी मासक दुपहविवाक ऑहैत नूमे घुमना ?

कत्तेक दिन भऽ गेन जेठक गुमावमे ऋवकनाउ ?

कत्तेक दिन भऽ गेन उजोबिया वातिमे ऑौएनाउ ?

कत्तेक दिन भऽ गेन ठावमे ठिठुवि दाँत कटैकटैनाउ ?

की ओ अही नेन होउत अछि जे हम एकवासँ कोना ऑचि कऽ वही ? ऑचि–ऑचि कऽ चनी ? आ अही नेन की एकवा भोगी, एकवा जीवी, एकवासँ दोस्तियावी कवी, गप कवी, माथपव वैसावी ?

हम एकवासँ एना व्यवहाव कऽ वहन छी जेना ओ हमव शत्रु अछि। किए कऽ वहन छी एहेन ?

এম্হব কতেক দিনসঁ বঘ্নাথকেঁ নগৈত ছনন্হি জে ও দিন দূব নৈ জখন ও নৈ বহত খা ঙা ধবতী বহি জাএত। ও চনি জাএত খা ঐ ধবতীক বৈভব, একব ঐশ্বর্য, একব সৌন্দর্য– ঙা মেঘ, ঙা বৌদ, ঙা গাছ–বৃঁছ, ঙা ফসিন, ঙা ধাব, কছাব, জংগন, পহাড় খা ঙা সভ কিছু এতহ ঘ্বি জাএত। ও ঙা সভ কিছু খপ্পন খাঁখিমে বঁসা নৈক চাহিত খছি জেনা ও জঁ চনিযো জাএত তঁ ওকব খাঁখি খতে বহি জেতৈ। চমড় াপিব সভ চীজক থাপ সোখি নৈ নহ চাহিত খছি জেনা চমড় া কেঁচ্ন জকাঁ এতহ ঘ্বি জাএত খা ওকব স্পর্শ হ্নকা নগ পহুঁচৈত বহত। হ্নকা নাগৈত ছন জে বেঁসী দিন খাবঁ হ্নকা নৈ খছি জাগমে। ভহ সকৈএ জে ও দিন কান্হি হ্খএ, জহিযা হ্নকা নেন স্বকুজ নৈ উঁগৈ। উঁগত তঁ খবঁস্স ফদা সে দোসব নোক সভ দেখত, ও নৈ। কী ঙা সম্ভব নৈ খছি জে ও স্বকুজকেঁ বাঁন্হি কহ খপনা সংগ নেনে জাএ, নে ও বহত, নে ও উঁগত খা নহিযে কিযো খাব ওকবা দেখত! ফদা একটা স্বকুজে সৌংসে ধবতী তঁ নৈ, ও কোন–কোনক বৌস্ত্কেঁ বাঁন্হত খা ককবা–ককবা দেখবাঁসঁ বোকত?

হ্নকব হাথ এতেক নম্হব কিএ নৈ ভহ জাগ ছন্হি জে ওগমে সভটা ধবতীকেঁ সমেটি নিঐ খা মবৈ বা জিখএ তঁ সভক সংগ!

ফদা একটা মোন খাব ছন, বঘ্নাথক জে হ্নকা খিক্কাবি বহন ছন, কান্হি ধবি কতহ ছন ঙা প্রেম? ধবতীসঁ প্রেমক ঙা খাত্তবতাগ? ঙা খহনদিনী? কান্হি সেহো ঙা ধবতী ছন। যএহ মেঘ, খকাস, তবেগণ, স্বকুজ, চন্দ্রমা ছন। ধাব, নির্ঝব, সাগব, জংগন, পহাড় ছন।

যএহ গনী, মকান, চৌরঁষ্টিযা ছন। কতহ ছন ওা খহনদিনী ? হ্ফবসতি ছন হ্নকা ওা সভ দেখৈ কহ ? খাগ জখন মূহ্ রিঁনাড়ি জকাঁ খাস্তুসঁ কোঠনীমে ঢ্কি বহন খছি তখন রাঁহবক জিনগীক খরাঁজ স্বনাগ দহ বহন খছি ?

সত-সত রাঁজূ বঘ্নাথ। খহাঁকেঁ জে ভেষ্টন খছি ওকবা নহ কহ কহিযো সোচনে বহী ? কহিযো সোচনে বহী জে একটা ছোট সন গামসঁ নহ কহ খমেবিকা ধবি পসবি জাএর্ঁ ? ওসাবপব পিবহীপব রৈঁসি কহ বোটী-পিযাজ্-নূন খাগরঁনা খহাঁ খশোক রিহাবমে রৈঁসি কহ নংচ খা ডিনব কবর্ঁ ?

ক্ষদা বঘ্নাথ ওা সভ নৈ স্বনি বহন ছন। ওা খরাঁজ রাঁহবক গড়গবাহষ্টি খা রঁখাকি খরাঁজমে দরি গেন ছন। ও খপ্পন সকমে নৈ ছন। ওকব নজবি কোনমে বাখন নাঠী খা ছত্তাপব গেন। জাড়ক ঠঁঢ় া ওহিনে ভযংকব ছন খা ডুঁপবসঁ ওা ওনা খা রঁখা। হিম্মত জরার্ঁ দহ বহন ছনৈ, তকব রাঁদো ও দবরঁজ্জা খোননক। কিন্নী খোনি কহ ও ঠাঢ় ভেন তঁ দবরঁজ্জা খপনে খ্জি গেন। সিহকৈত রঁসাত সনসনা কহ ভীতব পৈসি গেন খা ও ডবা কহ পাছাঁ হটি গেন। ফেবসঁ ও সাহস কেনক খা রাঁহব জেরাঁক তৈযাবী শ্বব্ধ কহ দেনক। পূবা রাঁহিরঁনা গবম গংজী পহিবনক, ওগপবসঁ সূতী খংগা, ওগপবসঁ স্ব্লীটব খা ডুঁপবসঁ কোট। ডুঁনী পৈংট ও পহিনহিযে পহীব নেনে ছন। যএহ ওকব জাড়ক মাসমে ভোবমে টহনরাঁক রস্ত্র ছন। মোফনব সেহো ছনৈ ক্ষদা ওগসঁ রেঁসী জব্ধবী ছনৈ গমছা।

ৰ্খাকেঁ দেখৈত জেনা-জেনা কপড় া ভিজৈত জেতৈ ও একাএকী উঁতাৰৈত জাএত খা ফেকৈত জাএত খা খন্তিমমে বহি জেতৈ মাত্র ঙা টৌ গমছা।

ও খপ্পন পহিবাৰা-ওঢ় াৰাসঁ খাৰ সভ তবহেঁ নিশ্চিন্ত ছন ক্ষদা খানী মাথকেঁ নঽ কঽ ও ততমতমে ছন, কনষ্টৈপ ঠীক বহতৈ খাকি মাথমে গমছা ৰান্হি নএ।

ওনা জতেক খসৰাক বহৈ সে খসি গেন ছনৈ। খাৰ ওকবা কোনো খন্দাজ নৈ ছনৈ। ও গমছাকেঁ গবদনিক চাৰু দিস নপেটি নেনক, খানিযে মাথ ৰহবা গেন।

খাৰ নে কিযো বোকৈৰনা ছনৈ খা নে টৈকৈৰনা। ও কহনক- "বৌ মোন! ঘ্বি কঽ খাৰি জেমেঁ তঁ ৰাম- ৰাম খা নৈ ঘ্বি কঽ খাৰি সকমে তঁ ৰাম-ৰাম।"

ৰ্ফ সন পাগনক খন্হাব ৰীমবিমে উঁতবৰাসঁ পহিনে ও ঙা নৈ সোচনে ছন জে ভীজন কপড় াক ভাব সংগ এক্কা ডেগ ৰঢ়ৌৰ ওকবা নেন মোশ্কিন হেতৈ।

ও কোঠনীসঁ তঁ ৰহবা গেন ক্ষদা গেষ্টসঁ ৰাহব নৈ জা সকন।

ছত্তা খ্জনাসঁ পহিনে জে পহিন্বক ৰ্ন্ন ওকব ৰিন ঝাঁপন কেশহীন চানিপব পড়নৈ তঁ ও ত্তবত্ত ৰ্বুঝি নৈ সকন জে ঙা ৰিজনৌকা খসন ছনৈ খাকি নোমাক কিন্নী খসন ছনৈ জে মাথমে ভূব কৰৈত ভীতবে-ভীতব তবৰা ধবি পহুঁচি গেনৈ। ওকব সম্পূৰ্ণ শবীব ঝনঝনা গেনৈ। ও পানিক খছাবসঁ ডবা কঽ ৰৈসি গেন ক্ষদা ভিজৰাসঁ নৈ ৰচি

সকন। জাধবি ছত্তা খ্জিতৈ তাধবি ও পূবা ভীজি গেন ছন। খাৱঁ ও ওমবীমে পড়্ গেন ছন, ৱঁৰ্ফ সন ৱঁসাত খা খছাবক ৱীচ। হৱাঁ ট্টৈন দূভি সন হ্নকা উঁড় । বহন ছন খা খছাব ধবতীপব পৈকি বহন ছন। ভীজন কপড় াক ভাব হ্নকা উঁড়ঽ নৈ দৈ ছন খা হৱাঁ হ্নকা ঘিসিযা বহন ছন। হ্নকা এতৱেঁৗ মোন ছন্হি জে নোগাক গেঁৈপব ও কতেক ৱেঁব ভহবা কঽ খসনা খা ওা ৱেঁব-ৱেঁব তখন ধবি ভেন জখন ছত্তাক কমচী টূটি গেন খা ও উঁড়্ত গেৈক ৱঁগাব জা কঽ ৱিঁনা গেন। খাৱঁ ওকবা এনা নগৈ ছন জেনা ৱঁসাত ঠামে-ঠাম নোচি বহন হোগক খা পাগন ধীপন নোহসঁ দাগি বহন হোগক। ৱেঁহোশি ভঽ কঽ খসৱাঁসঁ পহিনে ওকবা নগ দিমাগমে ক্তানদত্ত চৌৱেঁ এনৈ। ও দূ ৱেঁব খামেহনা কবৱাঁক রিচাব কেনে ছন- পহিন ৱেঁব নোহতা স্টৈশনক বেনক পৈবীপব গাম-ঘবসঁ দূব নির্জনমে, জতঽ কিযো খাৱেঁ জাগ নৈ ছন। তগ কান ও সামান্য পৈসেংজব রা মানগাড় াকেঁ নৈ, এক্সপ্রেস রা মেনকেঁ চ্ননে ছন, কিএক তঁ জে হ্খএ সে হ্খএ খৈ দঽ, এক্ নিশাঁসিমে, জগসঁ তকনীফ নৈ হোগ। ও পৈবীপব স্বতনে ছন খাকি মেন খৱেঁত দেখা পড়নৈ। পতা নৈ কিএ ওকবামে জীরনসঁ মোহ উঁপেন্ন ভঽ গেনৈ খা ও উঁঠি কঽ ভগৱাঁপব ছন খাকি ঠেহ্ন নগক একৗ পএব খচাক।

ওা তঁ মবৈসঁ ৱেঁসী খবাপ ভেনৈ। ৱৈঁশাখীক খাশি খা ঘবক নোকক গাগব খা ধ্কোবী। এক ৱেঁব ফেব খামেহনা কবৱাঁক ধ্নি সরাব ভেনৈ ওকবাপব। ঐৱেঁব ও চ্নকক সিমানপবৱঁনা গনাব। ও খপ্পন ৱৈঁশাখী

ফেকি কঽ ওগমে ফাঁগি গেন ছপাকসঁ থাকি একটা ৰবহা পকড়া মে থারি গেনৈ। তীন দিন রিন খেনে পীনে ভূখন সোব পাড়ৈত বহন ও গনাবমে খা নিকনন তঁ দোসব পএব তোড়রা কঽ।

থাগ রএহ ক্তানদত্ত – রিন পএবক ক্তানদত্ত– চৌৰটিযাপব ভীখ মংগৈত খছি। মবৰাক ওকব গছা ওকবা কতৌ কঽ নৈ ছোড়নকৈ। হ্মদা গ্র হবমজদা ক্তানদত্ত ওকবা মোনমে এনৈ কিএ নৈ ? ও মবৰাক নেন তঁ নৈ নিকনন ছন ? নিকনন তঁ ছন ও পাগনক ঠোপক নেন, ওনা সভক নেন, ৰঁসাত নেন। ও ঐ রাতপব থারি গেন জে জীরনক খন্বভরসঁ পৈঘ খছি জীরন। জখন জীরনে নৈ তঁ খন্বভর কেকবা নেন।

**

পহাড়প্পবমে বঘ্নাথ এক্কটা ছন।

ওনা কহৈক নেন বামনাথ, শোভানাথ, ছরিনাথ, শীমনাথ, প্রভুনাথ সেহো সভ ছন হ্মদা ও বঘ্নাথ নৈ ছন।

খা বঘ্নাথক গ্র ভাগ্য ছন জে জতঽ কতৌ ও দেখা পড়ৈ ছন, গাম ঘবক নোক রিখ–সরিখ ভঽ জাগ ছন খা পৈঘ সাঁস নৈত কহৈ ছন– রাহ! কী ভাগ্য পেনক খছি গ্র রিবনন! বঘ্নাথ পহাড়প্পব গামমে খসগবে পঢ়ন নিখন নোক ছন। ডিগ্রী কাঁনেজক খধ্যাপক। দ্বৰ্ব–পাতব নমগব–ছবগব দেহবৰনা। শ্বকহক দস

रॅबख धबि साॅगकिनसँ थरैत जाॅगत छन, राॅदमे स्कूटेबसँ। पछिना सीटेपब पहिने रेंटी रैसे छनै, राॅदमे रेंटी रैसह नगनै। कहियो एकटी, कहियो दुनू। मोटी-मोटी पाँच-छह माॅगनक दूबी बहे।

सभ स्वखी आ सफन नोक सन बघुनाथ सेहो थपना जीराॅ नेन, आगाँ रॅढ़राॅ नेन आ थकास छूराॅ नेन किछ ओनम ताकि नेने छन। सत्त पूछू तँ ओ तकने नै छन, ओकबा प्रस्तुतिमे छनै। ओ खानी बूझि गेन छन आ ओकबा ओ निज व्यवहाबक संग रॅनौने छन। ओ पातब आ नमगब छन आ तगसँ कने नीरॅ कह चनै छन। कतौ थरैत-जाॅगत कान, केकबोसँ भेँटे-घाँटे कबैत कान, राॅजैत कान ओ कनी नीरॅन बहे छन। पहिन रेंब ओ थप्पन राॅबेमे केकबो दोसबासँ गप्प कबैत प्रिन्सिपन साहेरॅक ऋँहसँ "रिनम्रता" शब्द स्वननक। एहेन ह्नकब प्रशंसामे कहन गेन छन। जग नीरॅन बहेमे ओ नाजक थन्वभब कबै छन, ओकब रएह खूरी छन, ओ नब रॉध ओकबा भेनै। एँमे ओ थागू जा कह दूटी खूरी थाब जोड़ि दनक, ऋस्कियेनाॅग, आ सहमति दनाॅग। किछो किछ कहितिऐ ओ ऋस्कियाॅगत बहितिऐ आ समर्थनमे मूड़ी हिनारैत बहितिऐ। ओ तखने सन्तुष्ट छनै जखन थहाँ थपना दिससँ कम राॅजी।

ऐ तबहेँ बघुनाथ रिनम्रता, कम राॅजाभूकी आ ऋस्की संगे जीरनक यात्राक प्राबम्भ केने छन।

आ एकबा संयोगे कहियौ जे ओ कहियो थसफन नै भेन। ऐ संयोगकेँ दोसब नोक सभ "भाग्य" कहैत छन। आ ऐपब बघुनाथ सेहो रिश्वास कह नेने छन।

ভেল ওা জে এক রেঁব ও জখন ক◌ॉলেজসঁ সাওকিলসঁ ঘব ঘ্বি বহল ছল তখন ও দেখলক জে ওকব সাওকিলক চেল হৃটি গেল ছৈ। ও সাওকিলকেঁ ক◌ॉলেজমে ছোড়ি দেলক আ ব্ঁনি কহ আরঁহ নাগল। গর্মী মাস, বৌদ খূরঁ, হরা কতৌ নৈ, দেহ ঘামসঁ ভীজল। রাঁটমে কতৌ গাছো-পাত নৈ। অকাসমে মেঘ ছলৈ ক্ষদা দ্বস্তমে। হ্নকব মোন রাঁজল- "ওহ! ওা মেঘ জঁ বহিতএ মাথক ঙুপব ছত্তা সন।" আ দেখূ, এক ফলাঁগি এরেঁ কএল বহএ আকি মেঘ সগু ওকব মাথক ঙুপব আরি গেলৈ। আ এতরেঁটা নৈ, ও মেঘ হ্নকা সংগে ছাহ কবৈত গাম ধবি আএল।

অগিনা দিন ওা সিদ্ধ ভহ গেল জে ওা মাত্র ভ্রম নৈ ছল। ও বস্তামে পঢ়বোঁ নেল জহিনা রিঁদা ভেল, তহিনা ধ্যান গেলৈ জে কলম নৈ ছৈ। চাহে তঁ ও ঘবেমে ছূটি গেলৈ আকি রাঁটমে খসি পড়লৈ। ও এখন কলাসমে পহুঁচলো নৈ ছল আকি আগূ হ◌ॉলমে ওকবা একটা কলম খসল নখা দেলকৈ, বৌদমে চমকৈত।

এহেন গপ আন নোকক সংগ সেহো হোওত অছি ক্ষদা নৈ জানি কিএ হ্নকা নগৈ ছল জে দীনদযান্ব পবমপিতাক হ্নকাপব রিশেষ গ্রুপা ছন্হি। ও হ্নকব সভ স্বরিধা-অস্বরিধাক ধ্যান বখৈত অছি। ঐসঁ জে ও চাহৈত ছথি ও দেব সবেঁব ভহ জাওত অছি। আ দেখূ জে ও জখৈন-জখৈন চাহলক, জে জে চাহলক সে ভেল গেল। হ্নকা কিছু কবহ নৈ পড়ল, অপনে মোনে ভহ গেল।

পঢ় াগ খতম কেলাক রাঁদ ও শোধ কহ বহল বহথি আ হ্নকব মোন নৈ নাগি বহল ছলন্হি। আরঁ কহিযা

धवि ओ कवैत बमितिऐ शोध ? कतौ नोकवी भेटि जेतिऐ तँ जान रँचितिऐ।

आ रँसी दिन नै रितनै आ ह्नका नोकवी भेटि गेनन्हि।

एकव श्रेय ओ मानेमे जन्मन अपन रँटीकेँ देनक। रँटी नक्ष्मी मोगत अछि। रएह अप्पन संगे आ अपना नेन ह्नकव नोकवी नऽ कऽ आएन छन। म्दा आरँ एकव रँाद एकटा रँटा चाही। ञा ओ नै, ह्नकव द्धदय रँाजन।

आ देखू, चावि रँर्खक रँाद रँटा सेहो आवि गेन। एकव रँाद एकटा आव रँटा- रँस !

ऐ तवहेँ एकटा रँटी, दूटा रँटा, शीना आ वघ्नाथ, सभ कियो मिना कऽ पाँच नोकक पविवाव। छोटँ पविवाव, स्वखी पविवाव। पविवाव स्वखी वहन ह्अए रा नै, वघ्नाथ स्वखी नै छन। जिनगी ह्नका नेन पहाड़प्वबक धून-धक्कव आ हँसी खेन नै छन। जन्मने छन तँ स्वयं कीड़ा-मकोड़ाक योनिमे किए नै जन्म नेनक ? ओ ओतऽ जनमि सकै छन म्दा नै, भगरान जँ ह्नका ऋषि-म्निक नेन दुर्नभ योनिमे जनम देने अछि तँ एकव पाछाँ ह्नकव कोनो उँद्देश्य वहन हेतन्हि। जे जाउँ, साठि-सत्तवि रँवखक मौका दैत छी अहाँकेँ, जाउँ धवतीकेँ स्वन्नव आ स्वखी रँनाउँ। धवती स्वन्नव आ स्वखी तखैन हएत जखैन अहाँक रँान-रँचा स्वखी, स्वन्नव आ सम्पन्न हएत। अहाँकेँ जे रँनरँाक अछि ओ तँ अहाँ रँनि गेनौं, आरँ रँचा अछि जिनकव आगू पूवा जिनगी आ दुनियाँ वाखन छै। यएह अहाँक भविष्य अछि।

जीवू तँ हुनकव जिनगी, मवू तँ हुनकवे जिनगी।

आ वघुनाथ से केलक। हुनकव सभटा शक्ति आ सभटा वुद्धि आ सभटा पूँजी हुनका सभकेँ वनवैमे लागल वहल।

ओ चाहलक- सबला पढ़ा लिखि कऽ नोकवी कविताऐ।

सबला पढ़ा लिखि कऽ नोकवी कवऽ लागल।

ओ चाहलक- संजय साॅफ्टवेयवक इन्जीनियव वनिताऐ।

संजय साॅफ्टवेयवक इन्जीनियवटा नै वनल, आमेविका तक पहुँचि गेल।

ओ चाहलक- मैनेजव समधी हुअए।

संजय ओा नै चाहलक। ओ से केलक जे ओ चाहलक।

वघुनाथक आस वहि गेल। दयानिधान किछु मदति नै कऽ सकल हुनकव। हुनका दुख ऐ गपक छल जे मैनेजव एकवा वाॅप-वेटाक मेलपेंच वुझलक। ओ वड़ मानसिक तनावमे चलि वहल छल, कदा काॅलेजक हुनकव सहयोगी हुनका वाधाग दऽ कऽ भवोस देलक जे एकटा अन्याव अधागमे असवासँ ओ वाँचि गेला। ऐमे प्रिन्सपलक भूमिका आव नीक छल। ओ मोटामोटी तीस साल पहिने वघुनाथक संग काॅलेज पकड़ने छल। दुनूक दोस्तियावी छलै। जखैन भेटैतिऐ हँसी मजाक, हाहा हूहू कविताऐ। ओ एक दिन आस्तेसँ कहलक- “यौ वघुनाथ, हमवा आश्चर्य लगैत अछि जे एतवेटा गप अहाँकेँ वुझैमे किए नै आएल? ओ अहाँक वेटाक वदलामे अहाँक वेटाकेँ खवीद वहल छल।”

ঐ তবহেঁ বঘ্নাথ সহজ ভ২ বহন ছন জে এক দিন ঘবপব হ্নকা প্রিন্সপনক দসখতৱঁনা নোটিস ভেট্টন। খাবোপ দূট্টা ছন– “নেগ্লিজেন্স আঁফ ড্যূটী”(কাজমে ঢিলাগ) খা “গনসৱঁআঁডিনেশন”(উঁচ খধিকাবীক গপ নৈ মানৱঁ)। এহেন কোনো সংকেত খপন গপমে নৈ দেনে ছন ও পহিনে কহিযো।

ঙা দ্নূট্টা খাবোপ ছন নিবাধাব। একবা বঘ্নাথেট্টা নৈ, সহযোগী সভ সেহো জানৈত ছন খা প্রিন্সপন সেহো। সৱঁহক সহান্বভূতি ওকবা সংগে ছনৈ, ক্ষদা সংগ দেৱাঁ নেন কিযো তৈযাব নৈ ছন। ও উঁত্তব দ২ দেনক ক্ষদা ও ঙা জানৈত ছন জে একবাসঁ কোনো নাভ নৈ খছি। ও হেঁহিযাগত এত২ সঁ ওত২ দৌগৈত গেন। খাজিজ খারিঁ ক২ প্রিন্সপনসঁ ভেঁট্ট কেনক খা হ্নকাসঁ সনাহ মাঁগনক। ও কহনক– “দেখূ বঘ্নাথ, খহাঁ জতেকো দৌড়–ধূপ করু, নিনম্বনক মোন ৱঁনা নেনে খছি মৈনেজব। হ্নকব শক্তি খা পহুঁচকেঁ খহাঁ জনিতে ছী। একব ৱাঁদ খহাঁ কচহবী জাএৱঁ, হৌদাবী নড়ৱঁ, ঙা কহিযা ধবি চনত, কিযো নৈ জনৈত খছি। ভ২ সকৈত খছি জে হৈসনা হোগসঁ পহিনে খহাঁ মবিযো জাগ। হঁ, জাধবি ক্ষকদমা চনত, তাধবি পেঁশন রুকন বহত। ঙা সভ দেখি ক২ হমব তঁ সনাহ খছি জে খহাঁ রী.খাব.এস. (ৱাঁনন্টৈবী বিট্টাযবমেন্ট স্কীম, স্বেচ্ছাসঁ সেরানিরৃত্তি স্বরিধা) ন২ নিখ।

বঘ্নাথ ৱঁড় া কান ধবি চ্প বহন। হ্নকাসঁ কিছু ৱাঁজন নৈ গেন।

“ঠীক খছি, ক্ষদা একট্টা খহাঁ মদতি করু।”

“কহু, কী কহ সকৈত ছী হম ? ”

“নিনর্ম্বনকেঁ খহাঁ তাধবি নষ্টকেনে বাখূ জাধবি রেঁষ্টীক রিযাহ নৈ ভহ জাএ। হেব হম সএহ কবর্ত জে খহাঁ কহনে ছী। ”

মন্বষ্যতাক নেন ঙা কবর্তাকে ছন। প্রিন্সপন চিন্তিত ভহ কহ রাঁজন– “জাঙ, কোশিশি কবৈ ছী, হ্মদা ঙা গপ খহাঁ কতৌ নৈ রাঁজী, সে। ”

খা প্রিন্সপন কহিযা ধবি রাঁষ্ট তকিতিঐ।

এহেন হ্মসীরঁতমে বঘ্নাথকেঁ কিও খান নৈ হ্নকব খপ্পন রেঁষ্টে ধহ দেনে ছন।

রেঁষ্টেমে সংজয ! সংজয ষ্টা !

খা ঙা নম্হব খিস্সা খছি– বাঁচীসঁ কৈনিহোর্নিযা ধবি পসবন।

সংজয প্রেম কেনে ছন সোননসঁ ! ঙা প্রেম কোনো চৌরঁষ্টিযাপব ঘ্মৈত নহ্খা ছৌড় াক খনগঢ় প্রেম নৈ ছনৈ, ঐমে গ্বণা–ভাগ সেহো বহ খা জোড়–ঘষ্টা সেহো ! জতেক গহীব ছন ততবেঁ ব্যাপক।

সংজযক সোনন প্রাহেসব সক্সেনাক রেঁষ্টী ছন।

সদিখন প্রথম শ্রেণী, ব্যাখ্যাতাক যোগ্যতা পবীক্ষা পাস খা দর্শনশাস্ত্রসঁ পী.এচ.ডী.। নৌকবী তঁ পক্কা ছন, বঁনাবসক বিশ্ববিদ্যানযমে, জতয ওকব মায হ্মনপতি

छल, ममदा ओगमे अखन देबी छलै, तखनि धबि रिंयासक बॉटे तकरॉक छल !

रिंयासमे बॉधा भऽ बहल छल, ओकब ठोढ़सँ बॉहब आएल दाँत आ सटल नाक जकब क्षतिपूर्ति ओ अप्पन सर्टिफिकेटसँ करैत छल। छूटैल-बॅढ़ल कसबि पूबा कऽ बहल छल सकलनाक पसाबल ओ फूस कि हुनका एकटा एहेन कलामी सॉफ्टबेयब अभियन्ताक आवश्यकता छन्हि जे अमेबिकाक एकटा बह्बाष्ट्रीय कम्पनीक तील बॅर्षक कान्ट्रेक्टपब कैलीफोर्नियाजा सकए। ऐ आवश्यकताक अनुभब सम्पूर्ण गल्सटीब्यूट ब्न्मैत छल।

संजय अन्तिम पबीक्षा दऽ देने छल, बिजल्टक घोषणा बॉकी छल !

एम्हब कतेक बेँब माँ-बॉपक संदेशे आएल छल जे आबूँ, लड़कीकेँ देखि लियौ। लड़कीकेँ की देखब, ओ तँ देखने छल ! बघ्नाथ जग कॉलेजमे पढ़बैत छल, पूर्ब बिधायकक बेटी तकब मैनेजब छल। गोब, लमछबक, स्वन्नब आ आकर्षक। एम.ए.। नीक गृहणी। मैनेजब प्रबाल जमानाक जमीन्दाब, अथाह सम्पत्तिक मालिक। बघ्नाथक कोनो हैसियत नै छलै ओकब आगू। लहिये नीक सन घब द्आब, लहिये जमीन-जथो। आठ बिगहा खेत आ हबक जोत। लेनपन आ घबाबस्था बड्ड तंगीमे बितलै। बचा सभकेँ पढ़ालेक तँ खेतकेँ बन्हकी लगा कऽ आ कॉलेजसँ ऋण लऽ कऽ। स्पष्ट छल, मैनेजब "सॉफ्टबेयब अभियन्ता" केँ देखने छल, अप्पन कॉलेजक मास्टब बघ्नाथकेँ

नै ।

ओ सम्बन्ध रघुनाथक लेल सपनासँ आगूक चीज छल । फाएदे-फाएदा छल ऐसँ ! जिनामे पहिचान आ प्रतिष्ठा जे भेटैतिऐ, से अलग । ओ कीसँ की भेल जा रहल छल ।

तँ गाम आबैसँ पहिने सहजना सब सँ बिदा नै लेल गेल छल संजय ।

एकबा अहिनो कहि सकैत छी जे ओकबा सहजना सब डिनरपर रजेने छल ।

गर्मीक साँझ । अप्पन ल◌ॉनमे सहजना रैतक कुर्सीपर चुपचाप रैसल छल । मानी गमनामे पाजन दह बहल छल । रँगनाक भीतरक रत्ती जड़ि बहल छल । कोनो कोठलीसँ संगीतक धुन आबि बहल छल । अरकाशे प्राप्तिक कबीरँ, हृदयक मबीज प्रा. सहजना संजयक एराँसँ अनजान चुपचाप रैसल छला आ आगू देखि बहल छला । रड़ ी कानक राँद ओ प्रछनक, “कोन इन्स्ट्रूमेन्ट अछि” ।

संजय रिना रुझने माथ हिलेलक ।

“आ बाग ? कोन बाग अछि ? ”

संजय निरुत्तर, फेर माथ हिलेलक।

ओ ससरि गेल आ ऊँच आवाजमे बजेलक- “सोनू”।

जीन्सक पेंट आ टी-शर्टमे कूदैत सोनू आएल- “हँ पापा”।

संजय ठाढ़ भऽ गेल। सलोना झाँकी देलक, पहिने संजयकेँ देखलक, फेर सोननकेँ। सोनल सेहो झाँकी देलक। संजय सोननसँ भेँट तँ कतेक बेर केने छल मुदा देखने पहिलुके बेर छल। ओकरा नजरिमे जे कोनो छौड़ीकेँ छौड़ीमे नै “सम्पूर्णता”मे देखबाक चाही। कतेक फर्क पड़ि जाइत छै। संगे संग छौड़ी आ कनियाँकेँ एक तरहेँ नै देखबाक चाही। रूप-रंग, ठीक-ठाक, मान-मर्यादा छौड़ीमे देखल जाइत अछि, कनियाँमे नै! ई सभटा पुरान धारणा अछि, हमर पापा-मम्मीक जमानाक, हमर नै।

सलोना गम्भीर तोड़लक- “ई अछि सोनम, जगमे हमर प्राण बसैत अछि। सितार, सरोद, संतूर माने सोनल। सोनल माने संगीत। चीपनेस एकरा पसिन्न नै। फिल्मी गीतकेँ ई गीत नै मानैत अछि। किएक तँ ई अपने कथक नृत्यांगना बनल अछि। तँ की आब बनल छी हमरा सभकेँ आग?”

“ও তঁ তখনে পতা নাগত জখন খাএরঁ।” সোনন নজা কহ ভাগি গেন।

“রৈঁসূ সংজয।” ওা কহৈত সকনা সেহো মূড় ী ঝ্কা কহ রৈঁসি গেন। কিছু সোচৈত। টূ্টৈন স্ববমে রাঁজন– “কোনা বহরঁ একব রিঁনা, বহরঁ কোনা সে নৈ রঁ্মি পড় ্ত খছি। ওা চৌদহে রঁর্খক ছন জখন একব মায গ্বজবি গেনৈ।”

তকব রাঁদ ওকব খাঁখিসঁ নোব খসহ নগনৈ– “তীন চাবি রঁবখসঁ নগাতাব খারৈঁত বহন খছি নড়কা। একসঁ এক।

খহাঁক সীনিযব সেহো, কনাসহেনো সেহো। হ্মদা রেঁটৗ ভাবী সংকটমে ছী, খহী উঁরাঁবি সকৈ ছী ঐ সংকটসঁ। পছিনা রঁবখ ওা রাঁজন ছন জে রিঁযাহ কবরঁ তঁ সংজযসঁ, নৈ তঁ নৈ কবরঁ রিঁযাহ। খপনা ভীতব ন্বকেনে বহনৌঁ ঐ গপকেঁ। খাগ রাঁজি বহন ছী, সেহো ঐ দ্খাবে জে হ্কৈসনাক ঘড় ী খারিঁ গেন খছি। তীনচাবি মাস – খাব খছি কৈনিহোর্নিযা জেরাঁমে। ঐ রীচ রিঁযাহ খছি, হরাগ টিকট খছি, পাসপোর্ট খছি, রীজা খছি, সভটৗ তৈযাবী খছি। সোনন খমেবিকা খা হনীমূনকেঁ নহ কহ উঁসোহিত খছি।”

ও খাঁখি পোছনক খা সংজযকেঁ দেখনক।

“সভ রাঁপক সপনা হোগ ছৈ খা হমবো খছি। নৈ হেতিঐ তঁ সেংগ্রৗ কাব কিএ নৈতিঐ ? খপনা নেন হিএট তঁ ছেরেঁ কবন। নর ঘব গৃহস্তীক সমান কিএ জ্টৈরিঁতিঐ ? খহাঁক নগ্রমে একটৗ কাঁনোনী খছি

अशोक रिपाव। ओगमे एकटा छोटे सन रंगना रंनरेंने छी। सभ किछु कम्प्लीट अछि। रंस फिनिशिंग टा रांकी अछि। सोचने वनी जे एतहसँ विदायव कवरं तँ काशीरास कवरं। सभ लोक यएह चाहि छै। अहाँक पापामम्मी सेहो चहैत होएत। ममदा स- ाचैत छी जे काल्हि सोनल रिश्वरिद्यालयमे ज्वाएन कवत तँ कतए वहत ? हमव तँ सभटा जीरन वाँचीमे रीतल, सभटा दोस्तमित्र-, सवसम्वन्धी एतए अछि। ओतह जा कह - की कवरं ? तएसँ रंगना ओकवे नाम कह वहल छी।"

संजय चिन्तित भेल। ओकव आँखिमे पापामम्मीक - चेहवा घूमि वहल छलै। ओकवा लागि वहल छलै जे ओ हुनका हँ कवैमे जल्दी कह देने छल। रांजल "रंड देव कह देलौं सव सोनलक रांत रंतारेंमे।"

"देव सरेंव किछु नै होएत अछि संजू, सभ चीजक रेंव होए छै। आरं यएह देखू, हमव सादू प्राफेसव अस्थानाकेँ रंनावस मे एहने घड़ ीपव ज्ञलपति किए हाँकि देने छल जखन सोनल थीसिस जमा कह वहल छलि ?"

ओ सिगवेट जवेलक -"ओना तँ सिगवेट मना अछि ममदा कहियो काल एकाध सोंटा लह लैत छी। तँ अहाँक पापा। हुनकव परेशानी रंुझि सकैत छी। कहैत वहल छी हुनका लह कह। छोटे भाए अछि अहीँक। पछिला तीनमैंट पवीक्षा दह वहल अछि। -चावि रंर्खसँ कैंट- लोक सेरा आयोगक पवीक्षा दह वहल अछि। आ कोनोमे नै आरि वहल अछिओकव परेशानी। गप - आएल रीचमे तें, परेशान भह कह किछु कह नै निअए तेँ ओएसँ पहिने कोनो मैलेजमेन्ट एल्स्टीट्यूटमे

নামাংকন কবা দিযৌ। এনা নৈ তঁ ডোনেশন দঽ কঽ। ঐঁ যৌ, কত্ত নাগত ? ডেঢ় নাখ, দূ নাখ, খাব কী ? খহাঁ ৰতেনে ছনৌং জে খহাঁক পঢ় াগ নেন ঋণ নেন গেন ছন খা খেত সেহো ভবনাপব বাখন খছি। ঐ সভ পবেশানীসঁ ৰহাব হোগনে কতেক জৰুবতি হএত হ্নকা ? হ্নকাসঁ গপ কঽ কএ তঁ দেখূ। কী চাহিত ছথিন ও। দেখূ, ৰবিযাতী, ধূমধবক্কা–, গাজা ৰাজা– ও সভ হ্সিযাহীক ৰখেবা ছী। কোনো জৰুবতি নৈ খছি দেখারটী ব্যরহাব খা তমাশাক। ৰিযাহ নেন কোর্ট খছি খা দোস মহীম নেন একটা স্বাগত সমাবোহ বাখি দেৰৈ। ও হম কঽ দেৰ, ফেব ? ওনা একটা গপ ৰতা দৈ ছী, জেহেন কম্পনী খা জেহেন শর্তপব খমেবিকা জেৰাক খছি ওগসঁ তীন ৰবখমে কিযো এতে কমা নেত জে জৌঁ ওকব ৰাপ চাহি তঁ গামক গাম কীনি নেত। ৰু্মনৌং ? ”

“প্রশ্ন ও নৈ খছি সব। পিতাজী কনে নোকনাজ খা – জ াতিপাতিমে ৰিশ্বাস কবঽৰনা প্বান ঠণ্ডক নোক – ছথিন। ”

সত্মনা গম্ভীব ভঽ গেনা। কনী কান ধবি চ্প বহনখিন। ঐ ৰীচ সোনন সাড় ীমে খাএন। খাগক নেন ৰজাৰৈক নেন।

“দেখূ সংজূ। ন ॉ আঁফ গ্রেরিটেশনক নিখম গাছ খা ফড় ধবি নেন মাত্র নাগূ নৈ হোগত খছি। মনুক্খক সম্বন্ধরূপব সেহো নাগূ হোগত খছি। সভ ৰেটাৰেটীক – ৰাপ পূথ্বী খছি। ৰেটা ঙঁপব–মাঁ জাগনে চাহিত খছি খাব ঙঁপব, কনিক খাব ঙঁপব তঁ মাঁৰাপ খপন – খাকর্ষণসঁ ওকবা ঘিচৈত খছি। খাকর্ষণ সংস্কাব ভঽ

সকৈত অছি আ প্রেম সেহো, মাযামোহ সেহো। মংগী–গিবাবৈক নৈ হোগত অছি। ক্ষদা খসা দৈত অছি। জঁ হম অপন বাঁপক স্বননে হেতিঐ তঁ হেতমপ্ববমে পঠৈবাবী বনি গেন হেতিঐ। তঁ ঙা অছি। হমবা জে কহবাঁক বহএ, সে কহি দেনৌं। অহাঁকেঁ জে নীক নগৈত অছি সে করু। হঁ, জাগসঁ পহিনে সোননসঁ গপ কঽ নেবঁ।”

**

জ্নাগমে বিযাহ ভঽ গেন চিবংজীবী সংজয আ সোননক কোর্ঠমে।

নহিযে বঁবিযাতী আ নহিযে বাঁজাগাজা। –

প্রীতিভোজক নেন নোত আএন ছন, বঘ্নাথক নামসঁ সেহো। ক্ষদা ও নৈ গেনা।

এহেন চোর্ঠ নাগন ছন বঘ্নাথ আ শীনাকেঁ জে ও দোসবকেঁ নৈ দেখা সকৈত ছন আ নহিযে ককবোসঁ ন্বকা সকৈ ছন। এহেন ঠামপব জাএবঁ ও বন্দ কঽ দেনে ছন জতঽ দূচাবি গোর্ঠে জ্মৈত হোথি। ও মানি নেনে – ছন জে দূ বেঁর্ঠামে একর্ঠা বেঁর্ঠা মবি গেন। জখন মাএ বাঁপক প্রতিঠ্যাক–ওকবা চিন্তু নৈ তঁ মবনে বঁ্নূ। সিতম্বঁবমে ও অমেবিকা জাএ আকি নর্কি, ঐসঁ ওকবা কোনো সবোকাব নৈ।

ঐ ঘড় ী নেন ও ওকবা পাননেপোসনে ছন–, পঢ় নে–নিখেনে ছন, গাছ কর্ঠনে ছন, কর্জ নেনে ছন, ভবনাপব

খেত দেনে ছল, ঋা দ্নিযা ভবিক তগেদা স্বননে ছল ?

হ্নকব নাখ মনা কেনাক ৰাঁদো বাজূ গেন ছল, বামূ মানে সংজযক ভাএ ধনংজয, ঘ্বন তঁ ওকবা হাথমে একটা ব্ৰীফকেশ ছল জে বঘ্নাথ নেন সক্ননা পঠেনে ছল।

বঘ্নাথ ক◌ॉনেজক তৈযাবী ক২ বহন ছল। ক্ষমোনসঁ ব্ৰীফকেশ দিশ দেখনক ঋা ৰাঁজন –“বাখি দিযৌ।”

“এঁ, এনা কোনা বাখি দী। ঋপ্পন সংদূকমে বাখূ।”

ৰাঁৰাঁ জমানাক সন্দূকমে কী কহাঁ বাখৈ ছল বঘ্নাথ ঋা ওকব চাভী ও ককবো নৈ দৈ ছল। ৰিনা কিছু ৰঁজনে ও চাভী ওকবা দিশ ফেকি দেনক। বাজূ ব্ৰীফকেশকেঁ সংদূকমে বাখি চাভী ঘ্বা দেনক ঋা ৰাঁজন, “ঋাব কিছু নৈ প্বছৰঁ ?”

শীনা উঁদাস মোনসঁ দবৰঁজ্জাপব ঠাঢ়ি ছল, ভীতব চনি গেনি।

“ঋহাঁ সভ তঁ এনা গ্বম্ম ছী জেনা কোনো ৰিপতি ঋাৰি গেন”, বাজূ হঁসৈত মাঁক পাছাঁ ভীতব চনি গেন। “কনিযাঁ এহেন জে নাখমে এক। মাঁ ঋহাঁ চিন্তা নৈ কৰু। সভ কিছু কবত ও জে সংজয ৰাঁজৈত ছল। হাথপএব জাঁতত–, ক্ষঁহ দৰাঁএত, ৰঁর্তন মাঁজত, ৰাঁঢ়নি নগাএত, খেনাগ ৰঁনাএত, জে জে চাহত সে সভ কিছু কবত। কনী ঋমেবিকাসঁ ঘ্বিক২ ঋাৰঁ২ তঁ দিযৌ। ঋখন হনীমূনপব জা বহন ঋছি দার্জিনিংগ, ওতএসঁ দমদম হবাগ ঋড্ডা, ফেব ওতএসঁ ঋমেবিকা। ৰঁচি গেনৌ ঋহাঁ, জঁ গেন বহিতিঐ তঁ ক্ষঁহ দেখাগ দেৰঁ২

पड़ति छैक। ओ कहने, अहाँक गोष्ठी पढ़लक अछि स्वागत समारोहक... ।"

बाजू नै जानि कीकी रखैत- कहल, ओ स्वनितो कहल, नहियो स्वनैत कहल।

दुनू गोष्ठीक गोष्ठी ओतए पड़ल कहल जतऽ ओ रहैसल छल। एकटा मन कहि कहल छल, "देखी", दोसर कहि कहल छल, "छोड़ू, जाए दियौ"।

सभटा सख धवने बहि गेल।

बाति भऽ गेल छल।

गामसे सनाटा पसरि गेल छल।

एक दिन पहिनहियें खूब रवखा वृन्नी भेल छल। हरियरी पसरि गेल छल। झिंगुरक अरोज गामकेँ गनगनेने छल। मेघ घटाटोप केने छल। दूर अकाशमे बिजलौका लौकै छल। ओम्हर कतौ पानि पड़ल हेतै, एम्हर नै भेल।

रघुनाथक घर दुआर गामक राहरी ओनाकामे छल। घरक अगुनका हिस्सा दुआर पछुनका घर। दुआरक माने दलान आ रवल्ला। ऐ रवल्लामे सुतै छल रघुनाथ आ बाजू। बाजूक सुतलाक बाद रघुनाथ आध रातिमे लुका कऽ भीतर गेल, ठिरकी लेसलक आ सन्दूकसँ ब्रीफकेश निकाललक। जखन ओ ठिरकी आ ब्रीफकेश लऽ कऽ शीनाक रगनरना कोठली गेल तँ ओकरा मोन पड़लै जे ब्रीफकेशक चाभी तँ बाजू देरे नै केलक। ओ रकमसँ बाजूकेँ जगेलक। बाजू रतेलक जे

ব্রীফকেশ চাভীসঁ নৈ নম্বৰসঁ খ্জত, ঐ নম্বৰসঁ। থা ৰঁড়্গেন। খ্জি ব্রীফকেশ কৰৈত ৰঁড়- বঘ্নাথ ব্রীফকেশকেঁ খোননক তঁ ভাররিভোব। ৰেঁটৌ - সংজযকেঁ নঽ কঽ জন্তু তামস বহৈ সভ টৌ রিনা গেনৈ। টৌকাক এতেক গড্ডী থপন থাঁখিক সোন্মাঁ একটৌ ব্রীফকেশমে ও পহিন ৰেঁব দেখি বহন ছন। থা ঙা কোনো সিনেমা নৈ রাস্তরিকতা ছনৈ।

গামক নোক বঘ্নাথকেঁ ঝগড় াৰ্াঁঝ্ঠিসঁ দূব বহৈৰঁনা - ক্ষ্দা কঁজূসক শ্রেণীমেগনতী কৰৈ ছন জে টৌকামে থঠন্নী ভজৰেঁত থছি। নোক ঙাহো কহৈ ছন জে ৰঁড্ডু নোভ নৈ কেনে বহিতিঐ তঁ ঙা দিন নৈ দেখঽ পড়া তিঐ।

বঘ্নাথ ব্রিন্চকেঁ থপনা দিস ঘিচনক। পহিনে সএ-এক ৰঁল্ডনক -গননাগ শ্বৰ্দ্ধ কেনক। ও এক সএক গড্ডী সংখ্যা সেহো নিখি বহন ছন। ফেব ও পাঁচপাঁচ - সএক নোটৈক গড্ডী ডঁঠা কঽ গনৰঁ থা নিখৰঁ শ্বৰ্দ্ধ কেনক। গনৈতগনৈত বাতি ৰেঁশী ভঽ গেন থা - হজাব। সাঠি নাথ চাবি ভেন সভটৌ ৰুপৈযাক জোড়

হ্নকব হথদয কাঁপন, জঁ গনৈযোমে গনতী ভেন হএত তঁ এতেক টৌকা কোনা ? ও ডঁঠি গেন থা সন্দূকমে নোঁকি ফেব থানি নেনক। ঘ্বতীমে ভঁসাঘবসঁ কণ্টৈবামে পানি নঽ বহন ছন তঁ শীনা জাগি গেন। থংগ্বব ভিজাভিজা কঽ ফেবসঁ টৈকা গননক ক্ষ্দা ফেব রএহ - চাবি থা সাঠি।

ও মাথ পকড়া ৰৈঁসি গেন।

“कोन गप छैक ? ”, शीना पुछलक।

“पाँच नाखमे कम छैक चालीस हजार, किये सन्दूक तँ नै खोललने छल ? ”

“चाभी तँ हमरा लग छल, खोलत के ? ”

“किये बाप तँ नै आएल छल घरमे ? ”

“हमँ आ बाजू आएल छलौं, बाप तँ किये नै। ”

कनी कालक बाद ओ नै जानि की सोचि कऽ उठल आ बाजूकेँ जगा कऽ लऽ अनलक। बाजू आँखि मिड़ैत आएल।

“ऋषीकेशी के देने छल हमरोकेँ, संजू आकि सज्जना ? ”

“किए ? की गप छैक ? ”

“रौतीउ, कम छैक पाँच नाखमे ? ”

बाजू हँसल, “मंगनीक बाछीक दाँत नै गानल जाइत छै। संतोष करू, जतेक भेटि गेल से मंगनीमे, सएह बहुत। ”

ओ एकटक बाजूकेँ देखैत बाजल, “हमँ तँ किछु एम्हर-ओम्हर नै केने छी ? ”

“हम जनैत छलौं जे यएह शक करबैं हमँ, हमँ स्वभावेसँ शक्की छी। ”

“चुप्प”, शीना बाजलि, “अहिना बापसँ गप्प कएल जाइत छै ? ”

“ৰ্ন্নি গেলৌং, যএহ চোবেনক অছি। ৰতেনক নৈ।”

“পহিনে ৰ্ন্নি জেৰাক চাহী। চোবা কতৌ ৰতৰেঁ ছৈ জে চোবি রএহ কেনে অছি”, বাজূ ৰাজন।

বঘুনাথ আশ্চর্যসঁ দেখনক ওকবাদিস, “কী ভহ গেন ছৈ ঐ ছৌড়া কেঁ। একব ভাএ কম্প্যূটৈব অভিযন্তা। ও ঐ তবহেঁ কহিযো গপ নৈ কেনে অছি ৰাপসঁ।”

“গপ্প নৈ কেনক, তেঁ অস্থিবেসঁ চুপচাপ রিযাহ কহ নেনক আ ৰাপকেঁ খৰবি ধবি নৈ কেনক।”

ঝনঝনা উঁঠন গ্বস্সা সং বঘুনাথ। মন ভেনওকবা – ঘব সং নিকনি জাযৈক কহিযৈ ঋদানৈজানি কী সোচহি কে ওতয সং উঁঠন আ আঁগন মে আবি গেন। ছন কোনা মে ৰঁসখটৈ পড়ন, ওহি পব ৰৈঁসি গেন। ও ভগবানক নেন মাথ উঁঠৈনক আসমান দিস।

'দেখূ মাঁ, হম ডেঢ় ৰবখ সং কহি বহন ছনহুঁ হিনকা সং জে মোটৈবৰাগক দহ দিযৌ। ঘবানাক সভ ছৌড়া নগ অছি, একটৌ হমহী ছী জকবা নগ নৈ অছি। হিনকব কহৰ ছন জে হাথ অছি পাগব তোড়ৰাক– কী? মাথ ফোড়ৰাক অছি কী? চোবীচকাবী আ – নফংগঙা কবৰাক অছি কী? ডাকা ডনৰাক অছি কী? কেকব হাথপগব টূটৈন অছি–, কহু তে? তে সংজূ হমবা সং পুছনক–'অহাঁ কে কী চাহি? জখৈন হম ওতয সং ঘুবহি নাগনহুঁ। হম কহনহুঁ–'হাঁ, মোটৈবৰাগক। ও হমবা টৈকা থমা দেনক। ও ব্রীফকেস মে সং দেনক যা কতয সং দেনক হমবা নৈ পতা।"

'सवासव स्मृठ। ओ जानैत अछि जे संजय आर नै आरय रना अछि। हम नै पूछि सकर ओकवा सं। "
 बघ्नाथ के ओ स्मृठ रदर्शितनैभेन।

शीना ठाढ़डिर ठाढ़-बीक मछिम बोशनी मे कानि बहन छनि। ओ अप्पन रेंटोक अहि रूप सं अनजान छनि।

'आ ब कद्ध। हमव रापजानक दूटो रेंटोसंजू आ - हम। ओ एक्का आंखि सं हमवा देखनक तकनै। ओ ओकवे पव खर्च सभटा मेहनत आ सभटा पाय कवनखिन। पढ़ नक, निखैनक, कंप्यूटेव गंजीनियव रनैनक आ हमवा नेन। कामर्स पढ़ । जकवा पढ़हि मे नै ते मदद कर सकैत छन, नै हमवा मन नागैत छन। कोनो तवहे रीकाम कवनहुं ते कोचिंग करू, ओ टैस्ट दियौ, ओ टैस्ट दियौ। हम थाकि गेन छी टैस्ट दैतदैत। हिनका सं कहियौ-, ओ टैका कत्तौ गमढ़ खर्च उंमढ़-नैकवैथ , डोनेशन नेन बाथ् ौथ। रिना डोनेशन कत्तौ एडमिशन नै हय रना छै। पवछा के रता दैत छी। "

'जों डोनेशनक टैका नै देर तर ? "

'ते कहियौ नै पूछर जे ओ की कर बहन छी ? "'कियअ कर बहन छी ? "

'की कवर ? डाका डानर ? तस्कवी कवर ? गांजा हेवोगन रेंचर ? कत्न कवर ? "

की रकरक कर बहन छी अहां- ? फानतू ? स्माजव के शीना राजन, 'आओव अहां चुप बद्ध। अनापशनाप - "कहि बहन छी राप सें।

बाजू कमवा सं राहव निकनैत पिता सं राजन, 'रस

কহি দেলন্হি। "

'স্বন্ স্বন্। ভাগ্-নৈ। খপনা নঽ কঽ সোচৈত ছী খা কহিযৌ খপ্পন ৰঁহিন কঽ নঽ কঽ সোচলে ছী ? জখৈন েসোযত খছি তখন জাগত ছী হজাব পাঁচ সৌ মাবি কে খাৰি জাযত ছী ওকবা সঁ ? ওকব ৰ্য়াহ কঽ নঽ কঽ কখনো সোচৈত ছী ? "

'দেখি বহল ছী হিনকব ? " ও মাঁ দিস ঝড়ল, 'জকবা সঁ কহৰাঁক ছল, ওকবা সঁ নৈ কহলন, কহি হমবা সঁ বহল খছি, জে এখন পঢ়ি বহল খছি। ডোনেশনক গপ খাযল তে দীদীক খ্যান খাৰি বহল খছি। পহিনে হিনকা সঁ কহিযৌক জে কংজূসী খা দবিদ্রতা ছোড়ৈক খাৰঁ। হঁসী উঁড়াৰৈত খছি নোক। ঞা ঠিৰঁবী খা নানষ্টৈন ছোড়য খা খান জনা তাব খীচৰাঁকেকম - সে কম খাঁগন খা দবৰাজা পব নষ্টু তে নগৰায নিযৈ। গজোত হ্যৈ ঘব মে। একব সংগে ফোন নগা বহল খছি নোক। ঘব মে ফোন েসোযত তে সংজ্ জখন চাহত, গপ কঽ নেত। খহাঁ সবনা দীদী সঁ গপ কঽ নেৰঁ। দীদী সে ঁচৌ কিযা ভৌজী সঁ সেহো। "

মাথা ফোড়ৈত ফেব সঁ ৰৈস গেল বঘ্নাথ-'যহি ছী ভাগ্য। জকবা নেল কংজূসী কবলন্হি, ৈওকবে ঝঁহ সে ঞা স্বনৰাঁক ছল। "

'খাওব একটৌ গপ কহি দৈত ছী খহাঁ সে খাওব হিনকো সঁ। ফেব এহন ৰেঁবকূফী নৈ কবৈথ জেহন সংজ্ক কান মে কগলয খছি। দীদী সে পবছা কে গপ কঽ লহি চে ও হিনকব তয কবল সঁ ৰ্য়াহ কবত যা নৈ। ঞা তে দৌড়ভা-গ কঽ কত্তী তয কঽ খগথিন খা ও কহি

दियै जे हमरा ब्याह नै करबाक अछि। फेर भद पिटैत हेतैक।"

'ओ अहाँ कोनो कहि सकैत छी।"

'कियैकि हम एकटा आदमी के अकसर हुनका संग देखनी छी। के छी ओ, नै जानैत छी।"

'देखनियै नै? एकरा शेखर भाइ टा नै अछि बाँहेन कऽ नऽ के अहि तरहे गप करैत?" रघुनाथ दाँत पीसैत ओतय सं बाँजल।

**

सपना दुविधा मे छल-ब्याह करि आ नै करि?
पक्का एतबेक टा छल जे ओकरा ओ ब्याह नै करबाक अछि जे पापा खोजि के आनत।
कतेक बास नोचा छल ओकर दुविधा मे!
आजुक सं कोनो सात-आठ बरख पहिने। ओ अपना भीतर किछु अजब-सन महसूस केने छल-मन उँखड़ल रहैत छल, कत्तो हेरायल-हेरायल सन छल, बिना गप्पक हँसी आबैत छल, हरदम गुनगुनाबैक जी चाहैत छल, बाँहर आबैत छल, ते दोस्तनी सबं हँस के कहय लागल छल-देखू-देखू। पैरक चप्पल-दू डिजाइनक। कनास कहानी के, किताबं करिताक माथ मे। ओ रहि दिन छल जखन नगर मे आबि बँना कोनो फिल्म ओकरा सं नै छूटैहि छल।
अहिना मे नै जानि कोना कौशिक सब नका के आयल

आ ओकर दिन मे आरि के रौसि गेल।
कौशिक सर करिताक अध्यापक। बड़ गंभीर आ चुप रहि वला आ सिद्धांतवादी। पातर-दुबर, नमर गर आ देखहि मे आकर्षक। अधेड़ आ तीन नेना नै हराक पिता ? अद्भुत 'सेंस ऑफ ह्यूमर"क मालिक। हुनका सं प्रेम करबहि मे कोनो खतरा नै छल। नै कोनो खतरा, नै कोनो तरहक संदेह। ओ बड़ बुधियारी आ विवेक सं काज लेने छल अप्पन 'ब्वायफ्रेंड" चुनहि मे। छौड़ ा-छौड़ ीक 'ग ॉसिप"क डर सेहो नै छल।
कौशिक सर द्वतक्त आ अभिभूत छल। मिज्ञर होयत जिनगीक अंतिम प्यार। सेहो सरना जेहन सुनर छौड़ ी सं। पचास-पचपनक उमर मे ते कियो सोचहि नै सकैत अछि, एहन भाग्यक नइ कइ।
सरनाक मन रौचैन छल, देह सेहो। रस प्रेमक गप आ तड़प। आर किछु नै। सइ ते ओकर सहेलीक संग भइ रहल छल। किछु ्ते अलग हुयै-कौशिक सर कोनो विद्यार्थी थोड़े अछि। अहिने जगहा कौशिक सर के सेहो छल क्षुदा नगर मे कत्तौ एहन ठाम नै छल, जतय हुनका कियो नै जानैत हुयै।
निश्चित भेल जे कौशिक सर एक दिन टैक्सी सं 'अन्हक ठाम" पहुंचत, ओतय सं सरना के 'पिकअप" करत आर दू-चारि घंटाक लेल सारनाथ। फेर सोचल जायत 'एकांत" आ 'निर्जन"क नइ कइ।
प्रेम रंद आ सुरक्षित कोठलीक चीज नै अछि। खतरा सं खेलहिक नाम अछि प्रेम। लोकक भीड़ सं रचारैत, हुनका धत्ता रतारैत, हुनकर नजरि के चकमा दैत जे करल जायत अछि-ओ अछि प्रेम। र्याह से

पहिने यदि चाहैत छल सबना। ब्याहक बाद ते ओ विश्वासघात होयत, व्याभिचाव होयत, अनैतिक होयत। जे कवबाक अछि, पहिने कऽ लियअ। अन्नतव कऽ लिअ एक बेव। मर्दक स्वाद! एकटा एडवेंचव! जस्ट फॉव फन!
सबना बोमांचित छल। नर्भस छल आ उत्तेजित सेहो। जहि दिन जेबाक छल ओकवा सं पहिलुक बाति। ओ स्वति नै सकल नीक सं। नींद नै आबि बहल छल। कतेक बास गप, कतेक बासक ध्यान, कतेक बासक गुदगुदी। अपने सं लजाबैत छल, अपने आप हंसैत छल। ओ सोच लेने छल जे अरसब भेंटय पव एतु आगू नै बढ़हिक दैक अछि कौशिक सब के जे ओ ओकवा गलत बुझि लियअ। ई ते शुरूआत अछि...
एखन नै जानि कतेक कनाकात बाकी अछि। नै, आबि कतय कनाकात? 'फेयबरेल" भऽ चुकल अछि। दू-चाबि दिन आब चलि सकैत अछि क्लास, ओकव बाद ते गमतहान! फेव कतय संभव अछि भेंट? कोन बहाना बहत भेंटै कवबाक लेल?
कौशिक सब लोकप्रिय लोक छल! विश्वविद्यालयक नै, नगवक सेहो! जानहि बना बड़ छल। तवह-तवहक लोक! अहि बातक गर्व छल सबना के जे ओ जेकवा सं प्याव कवैत छल, ओ कियो सीटी बजाबहि बला, लागल मावहि बला सड़क छाप विद्यार्थी नै, विद्वान अछि।
कौशिक सब बड़ सावधानी बवतलक-ओ छुट्टीक दिन नै हुयै, स्कूल-कॉलेज खुजल हुयै, कियैकि छौड़ा-छौड़ी पढ़हि मे आ अध्यापक पढ़ाबै मे व्यस्त हुयै, पिकनिक आ भ्रमणक कार्यक्रम नै बनाबै, सावनाथक मेला सेहो नै हुयै ओहि दिन!

अहि सारधानीक संग कौशिक सब अपनाक संग टैक्सी सँ पहुँचल चौखंडी स्तूप ! सारनाथ से पहिने ! सड़कक कात पहाड़ नियमा ढूहक ऊपर खंडहर जेहन टूटल-फूटल स्तूप ! ठाढ़ भऽ जाउ ते पूरा सारनाथ ते नै, दूर-दूर धरि गाम गिरार आर गाछ-वृक्ष नजरि आयत। खाली पड़ल छल स्तूप ! नीचा चौकीदार, सिपाही, माली अप्पन-अप्पन काज मे लागल छल। एकदम निर्जन असगर ठाढ़ छल स्तूप ! 'हिमगिरि के उत्तुंग शिखर" के तरहे। कियो दर्शनार्थी नै !
मन्नू श्रद्धा सँ देखलक !
श्रद्धा मन्नू के देखलक !
दूनू टैक्सी सड़कक कात मे ठाढ़ करलक आ चलि पड़ल। घ्यारदार गाछ से चक्कर काटैत। आगा-पाछाँ नै, अगल-बगल। संगे-संग। हाथ मे हाथ लेल ! अपना असगरे मे कौशिक सब के 'मीतू" कहैत छल। ओहि दिन ओ सत मे मीतू भऽ गेल छल। अपना-जे अदिखल समीज अलरार आ दुपट्टा मे रहैत छल-ओ अपना हरका गाढ़ रंगक गाढ़ संती साड़ी मे गजब ढ़ा रहल छल। गाढ़ रंगक साड़ी सँ मैच करैत ब्लाउज आर माथ पर छोटे-सन लाल बिन्दी ! हरा उड़ रहल जा रहल छल आँचल के, जकरा ओ रैर-रैर संभारि रहल छल।
ओ चढ़ रहल छल स्तूपक लग पहुँचल आ चारो दिस देखलक-दूनूक मुँह सँ एक संग निकलल-'जेहन अछोर, अनंत, असीम हरियालीक समुद्र" । आर ओहि मे पीयर फूलल तोड़ीक जतय-ततय खेत--एहन लागि रहल छल जेहन पान वाली हिलैत-डुलैत डोंगी ! 'आ हम ? " अपना पूछलक ! कौशिक सब मुस्कुरायल !

রাঁজন–'মস্তূন রঁনা রঁড় পৈগ জহাজ কে ডেক পব। "
স্তূপ কে খহি ধবি ছাঁহ ছন খা ওহি ধবি ফনফনী বৌদ! ছাঁহ নম্হব মোযত ওতয ধবি চনি গেন ছন, জতয মানী কাজ কহ বহন ছন। ও ওহি কাত গেন বৌদ মে, জিম্হব সহ্মদ্র ছন খা হিনৈত–ড্নৈত পীযব ডোংগী!
ও স্তূপ সে সঠন সাফ–স্বথব ঠাম পব রৈঁসি গেন–চ্পচাপ! ও চ্প ছন হ্মদা হ্নকব দিন রাঁজি বহন ছন–খপনে খাপ সং, খাব এক–দোসব সং সেহো! হ্নকা নগ কী বহি গেন ছন কঠৈক–স্বনৈক নেন? ডেঢ় রঁবখ সং যহি তে ভহ বহন ছন–গপ, গপ খাব গপ্প ঠৌ! গপ সং ও থাকি গেন ছন খা মন সেহো ভুঁরি গেন ছন। সবনা রঁগন মে রৈঁসন নগাতাব কৌশিক সব দিস দেখহি জা বহন ছন খা ও দেখহি কে দেখৈত দ্রঁবী নে নোচি বহন ছন। ফেব একাঠৈক দিনীপ ফমাব স্ঠাগন মে হ্মস্ক্বা কে রাঁজন–ভুঁ! কী কহনিযৈ! হঁসৈত সবনা খপ্পন সিব হ্নকব কান্হা পব বাখি দেনক–'রঁড় বাস গপ? স্বনহ্ তখৈন নৈ! "
ও দিন, জে খারিঁ ধবি খডহবক পাছাঁ গ্বঠৈব গ্ কহ বহন ছন, ফকড় ্ কূং কবহি নাগন ছন ভবি দ্পহবিযা মে! কৌশিক সব সবনাক পীঠক পাছাঁ সং হাথ রঁঢ় াকে ওকব স্বডৌন গোনাঙা মসৈন দেনক! সবনাক পূবা রঁদন মে একঠৌ ঝ্বঝবী ভেন খা ও শিবমারৈঁত হ্নকব কোবা মে ঠহি গেন।
খরঁকী রেঁব কৌশিক সব কনি জোব সং মসননক।
চিহঁ ্ক কব সীকোব কহ উঁঠন সবনা খা খাঁখি রঁদ কহ নেনক–'জংগনিযৈ ছিযৈ কী! "
কৌশিক সব মাথ সং নিরাঁ কে ওকব খাঁখি কে চূমি

नेनक !
'ई की भऽ रहल अछि चचा ? " अचानके एकटा कड़कड़ाती आराज आ आगू सं ठाढ़ ऐतिहासिक धरोहरक पहरेदार आ सिपाही खाकी वर्दी मे !

*

सबटा चलि गेलि, मुदा रघुनाथक सुख-शान्ति नइ गेलि।

रघुनाथ कतेक बाति स्मृति नै सकल। हुनका लीन नै आरि रहल छल। कोन जन्मक पाप छल जे ओ ऐ जन्ममे भोगि रहल छल। वँचा सभकेँ एहन संस्कार कतऽसँ भेटैल छलै जे ओ ऐ जन्ममे भोगि रहल छल। संजयकेँ किछो नै भेटैलै- नहियेँ ठाकुर, नहियेँ वाँसल, नहियेँ भूमिहार; भेटैलै तँ नानाक लड़की। तकर वाँदो ओ ओग नाएक छल जे मुँह देखा सकए, मुदा ई सबटा। ओ ककरा मुँह देखाएत। कतऽ मुँह देखाएत।

लड़कीक अप्पन तर्क छलै, जे ओ जागत-जागत स्वना गेल छल। जे भी गलत काज करैए, ओ ओकर पक्षमे तर्क गढ़ि लैए। ऊँहो ई तर्क गढ़ने छल- अहाँ दोसराक शर्तपर बियाह कऽ रहल छी, एतऽ हम बियाह करब मुदा अप्पन शर्तपर, अहाँ हमर स्वाधीनता दोसराक हाथमे सौंपि रहल छी, एतऽ हमर स्वाधीनता सुरक्षित अछि, अहाँ अतीत आ वर्तमानसँ आगू नै देखि रहल छी, हँ, हम भविष्य देखि रहल छी, जतऽ स्पेसे-स्पेस अछि।

स्पेसे-स्पेस, ऊँह्हुँ। स्पेस माने की। अिबक्षण अा कोनोक अखनारेँ एकर कोनो मतलबेँ अछि ? एतबेँ नै, अिबक्षण नै छेतिये तइ भावती केकरो ने केकरो दिखाबि जागत छेतिये अा पढ़य-लिखय कइ बाँदो नग्रमे बिकलो खींचैत छेतिये। अहाँ कहैत बनी जे एकदम गधा अछि, किछु नै बुझैत अछि। आग पी.सी.एस. भइ गेल तँ ओकरा जेहन किछो नै।

ओ अप्पन मनक लौंग्न निकाललाक बाद हुनक अन्तभर कइ बहन छल कि पाछाँसँ कोनो हल्ला स्वनाग देनकै- यौ मास्टर साहेबँ। जमायक की हाल अछि ? अा कनी-कनी हुनका लागै छल जे ओ हल्ला पाछाँ टी सँ नै, आगूसँ सेहो- बाम-दहिनसँ सेहो, ऊँपर-नीचाँसँ सेहो आरि बहन छलै। चारू दिससँ। गाम-घर, आस-पड़ोस, जान-पहिचानक सभ किछो हुनकर जमायकेँ लइ कइ चिंतित छलनि सदा हुनकासँ हँसी कइ बहन छलनि। ऐ बीच नै जानि किम्हरसँ कोनो बँचाक किलकारी स्वना पड़ल अा ओ हुमचैत हुनका दिस अप्पन नाम्हि-नाम्हि बाँहि पसाबि देलक- नाना, ओ देखू की अछि। ओ ओकर हाथसँ एकटा कागज लेलथि, जे हुनकर परोक्षमे चमटैलसँ मृूबी देने गेल छल। ओ निमंत्रण पत्र छल मूबीक पोतीक। तँ आरँ यएह हुनकर दियाद अा नगीचक अछि। लोत-हकार अा खानपीन आरँ हुनके संग हेबाँक अछि, गेल अप्पन दियादबाद।

बघुनाथ निश्चय केलक जे आरँ ओ रानटैबी बिटायबमेंटे लइ लेत। ओ शीनासँ अप्पन ओ गष्छा बँतौलक जे आरँ ओकरा लोकबीक जरूबत नै छै।

ञा नै रहैौनक जे ओकरा री.आर.एस. आ सम्प्रेशनमे सँ एकटा चूनरीक छै आ ऐमे यएह ठीक छै जे ओ कररीक नेन सोचि रहल अछि।

चन्द्रमाक रोशनी पसरल छल, अगहनक।

अकास साफ छल। आध आंगेन गजोबिया छल, आधमे छाह। चन्द्रमा सोमे रघुनाथक चेहरा देखि-देखि मुस्करा रहल छल। ओ ओकर जन्दीसँ हटैरीक आसमे छल मुदा ओ अप्पन ठामसँ हटैरीक नाम नै नइ रहल छल। ओ हुनका नजरि गाबि कइ देखैत रहल आ हुनका नागइ नगननि-जेना चाँद ऐना अछि आ ओकरामे नखाह पड़इ रैना दाग हुनकर मुँहक झाग।

गामक सिमानक पारसँ शब्द भइ जागत अछि फसियार आ बाहरिक खेत, जतइसँ नवहियो एक्क संग हुआँ-हुआँ शब्द केनक।

गामसँ फफड़ सेहो ओही भारसँ उँतारा देनक आ जना देनक जे ओ सभ सेहो स्वतन नै अछि।

शीनाक खाटे रघुनाथक कातेमे छनै आ ओ स्वतनि छनि।

पछिना कतेक दिनसँ रातिमे यएह भइ रहल छल। रघुनाथ रतजग्गा कइ रहल छल आ शीना गप करैत स्वति जागत छनि।

रघुनाथ उँठि कइ रैंस गेन। गजोबियामे ओकर मुँह देखनक। भरन-भरन गोन गोर चेहरा आ नाकक नोनपर चमकैत चन्द्रमाक किरिण। एकरासँ पहिने ओ हुनका सदिखन पटौयन देखने छल, स्वतन

নৈ। ও একটৈকসঁ নিহারৈত বহল হ্নকা। ও করৌটৈ নেনে ছল আ ওকর চেহরা রঘ্নাথে দিস ছল। ওকরাসঁ সাত রঁবখ ছোটৈ, মুদা উঁমের ওকরো নৈ ছোড়নে ছল। ওকরা ভীতর প্রেম ঘ্মরঽ লাগল- হঁ, আরোঁ স্বন্নরি ছল হ্নকর স্ত্রী। ওকরা লাগল, ও কহিযো ঠীকসঁ প্রেম নৈ কেলক হ্নকা। ও হাথ রঁঢ় া কঽ হ্নকর র্নাউঁজক একটা রঁটৈল খোলি দেলক, চ্প্প দোসর, ফের তেসর। স্বতন ছাতী জেহল নীনসঁ জাগি গেল, ফলফ্লেলক আ ফের ঘ্রঽ লাগল। রিস্তৌনপর ম্কল-ম্কল। ওগমে জান রাঁকী ছল।

ও উঁঠল আ হ্নকর রঁগলমে পটা বহল। শীনা ঠাম রঁনৌলক হ্নকা লেল আ আঁখি রঁন্দ কেনে-কেনে অপনাকেঁ হ্নকর আশ্রিত কঽ দেলক। আঁখিকেঁ খোলরাঁক প্রযোজন নৈ ছলৈ, হ্নকর ওংগরী দেহক সভটা কোন-অঁতরাসঁ পরিচিত ছল। ও রঁড় কাল ধরি এক-দোসরাক দেহক ভীতর ওগ চীজকেঁ তাকৈত বহল, জে নৈ জানি কহিযা অপ্পন ঠাম ছোড়ি কঽ চলি গেল ছল। রঘ্নাথকেঁ লাগি বহল ছল- নৈ, কত্তৌ নৈ অছি, কত্তৌ নে কত্তৌ ঐ রাঁ ওগ দেহমে অছি সত্ত মুদা জোঁ সচ হেতিঐ তঁ কতঽ জৈতিঐ। পরেশান ভঽ থাকি-হারি ও অপ্পন মুঁহ শীনাক ছাতীক রাঁচমে ধঁসা দেলক আ শাঁত পড়ি গেল।

মন নৈ কঽ বহল অছি, তঁ ছোড়ূ।- শীন আস্তসঁ রাঁজল।

কনী কাল ধরি রঘ্নাথ কিছ নৈ রাঁজল, ফের এক রেঁব হিচকী লেলক।

শীনাকেঁ লগলৈ জে ওকর ছাতীক রাঁম দিসসঁ জে গরম চীজ রিস্তৌনপর টৈঘরি বহল অছি, ও লোর থিক।

বঘ্নাথক নোব। ও হ্নকব ঙঁঘাবন পীঠ সসাবনক–খাস্তুসঁ।

মন তঁ কঽ বহন খছি, দেহে সংগ নৈ দঽ বহন খছি। – ঢুঁঢৈন সাঁসে বঘ্নাথ ৰাঁজন।

–তঁ ঐমে দ্খী হেৰোঁক কী গপ খছি? মোগত ছৈ এনা কখনো–কখনো।

–নৈ, ঙা খাৰঁ কখনো কানক গপ নৈ নাগি বহন খছি, শীনা।

–ৰঁড় তনারমে বহি বহন বহী ঐ ৰীচ। তগসঁ এনা খছি।

–নৈ, নৈ, হ্ফ্সিযে মোন নৈ ৰঁহৌঞ্চ। হম ওগ নীখকেঁ চীন্হি গেনৌঁ, জগ ৰাঁঢৈ চনি কঽ ঙা দেহমে পৈসৈত খছি।

–কে ঙুঁ।

–ৰ্বুঁঢ় াপা। বঘ্নাথ ৰাঁজন খা কূহী ভঽ কানঽ নাগন।

শীনা ওকবা পকড়া কেঁ ৰৈঁসৌনক খা সাঁন্বনা দৈত ৰাঁজনি– এহন কিছু নৈ খছি। দিমাগী ভূত খানী। ৰিনা কাজক সোচৈত বহৈ ছী, বাতি–দিন। হম কোনো শিকাগত কেনে ছী কহিযো? খাব কী চাহৈ ছী। সদিখন জৰানে বহৰঁ কী? ওনা, ঙা সভ ৰেঁঢৌ–ৰেঁঢৌ নেন ছোড়া দিযৌ। হমব–খহাঁক ঙঁমেব থোড়ে খছি ঙা সভ কবৰাঁক।

খগনা চাবিম খা পাঁচম দিন সাঁঝমে জখন বঘ্নাথ কॉনেজসঁ ঘ্বন তঁ শীনা ওকবা খৰঁবি কেনক জে ঢৈস্ঠ দঽ কঽ ধনংজয খাৰি গেন খছি। ওনা জৌঁ ও খৰঁবি নৈ কবিতিঐ তখনো ওসাবপব ৰাঁগকেঁ ঠাঢ়

देखि कऽ ओ बुझि गेल छल। कपड़ा बदलि कऽ जखन ओ बाहर आएल तँ धनंजयकेँ देखलक। पुछलक- ऐबेर केहन भेल पर्चा।

-बड़ नीक। निकालि लेब ऐबेर।

-पाँच बरखसँ यएह गप सुनि रहल छी। सभ बेर निकालि लै छी।

-एस.सी., एस.टी. कोटा आ घटैत सीटपर हमर सन लै अछि। ओकरा लेल हम की करी ?

रघुनाथ ओकर कोना उतारा नै देलक। ऐ बीच शीला बाप-बेटा लेल चाह लऽ कऽ आएल। चुपचाप चाह पिबैत रहल। चुप्पी बाजू तोड़लक- सुनलेँ छी, अहाँ सभसँ पहिने विटामिनेट नैबना छी।

-नैबना नै, नऽ लेने छी। आग चिट्ठी देलौं।

-एना किए केलौं अहाँ।

-ई हमरासँ नै, अप्पन भाग संजयसँ पुछू। शीला दिस देखैत रघुनाथ बाजल।

-संजय तँ अछि नै, हम छी। कोनो निर्णय लेबासँ पहिने अहाँकेँ हमरा बतेबाक तँ चाही छल।

-बतेतिऐ तँ अहाँ की करतिऐ। हुनकर चेहरा कनी कानलेल खिचा गेल, एक केर हँ देखलौं, दोसर केर नै, नै सुनऽ चाहैत रही। आ अखन ओ दिन नै आएल अछि जे हम अहाँ सनाह पर चली।

धनंजय हुनका दैखैत रहल। फेर माँ दिस देखलक। शीला माथ झुकेने बैसल रहल, किछु नै बाजल।

-अहाँकेँ निर्णय लैत काल हमरा नऽ कऽ सोचबाक चाही। अखन अनिश्चिते अछि हमर

ভরিষ্য।
–ওা সোচৈত–সোচৈত হম ব্ঁঢ় ভহ গেল ছী।
অহাঁ ৰাঁনিগ ছী আরঁ। অপ্পন অপনে দেখূ। –
বঘুনাথ খিসিযাগত ৰাঁজন।

ঐ উঁত্তবসঁ ধনংজয মসোসি কহ বহি গেল। ও
আসসঁ মাঁ দিস দেখনক জে ও কিছু ৰাঁজএ।
–অহাঁকেঁ ওা ব্ঁধি দীদী আ সংজযক কানমে কিএ
নৈ আএন ছল, হমবে কানমে কিএ আরিঁ বহল অছি।

শীনাকেঁ খবারঁ নগনৈ। ও ঢৈকলক– চুপ বহ
বাজূ, কখৈন কী ৰাঁজৰাঁক চাহী, ব্ঁমৌত নৈ ছিহী
কী।
–সভ ব্ঁনৌ ছী মাঁ, এক্ত ব্ঁবৰাঁক নৈ ছী। পতা
নৈ কিএ, হমবোসঁ ওার্ষ্যা কবৈ ছথিন ওা। অহাঁ তঁ ব্ঁস্নিতে
ছী জে ঢৈস্ঠক কোনো ভবোস নৈ অছি, যএহ সোচি হম
নোএডাক একটা মৈনেজমেঁট ওংস্টীঢ্যুঢক পতা কেলে ছী।
ওংস্টঢীঢ্যুঢ তঁ আবো ছৈ, হ্মদা বেঢ ৰাঁড্ড ছৈ। যএহ ছৈ
জে নীক অছি আ অপ্পন সীমাক সেহো। দোসবাসঁ
ডোনেশন তীন নাখ হ্মদা হমবাসঁ অঢ় াগ নাখ নহ বহল
অছি। সভটা মিনা কহ এক ৰাঁবখক খর্চ ছহ নাখ
ঢৈকা পড়া বহল অছি। আ আরঁ। জখন হমব ৰাঁব
আএন তঁ ওা বিঢাযব ভহ কহ ঘব বৈঁসি গেল ছথি।
অপনাকেঁ হমব ঠামপব বাখি কহ সোচিযৌ নে।
বঘুনাথ স্বনৈত চুপচাপ বৈঁসল বহল।
শীনা হুনকা দেখনক আ ও শীনাকেঁ। কিযো
ককবোসঁ নৈ ৰাঁজল।
বঘুনাথ উঁঠি কহ ভীতব গেল আ কনী কানক

রাঁদ নোঠক গড্ডী সংগ খাএন।

–ওা নিখ সাঢ়ে চাবি নাখ। রাঁকী রঁচন ছ্ঽ মাসমে নঽ জাএরঁ। ও গড্ডী ওকব খাগূ ফেক দেনক খা ওতঽসঁ হটি গেন।

*

রঁড় সমএ নাগি গেনৈ বঘুনাথকেঁ ঘবপব বহরাঁক খাদতি পকড়ৈ মে। ও বহন তঁ গামমে হ্মদা গামক নৈ বহন।

গামমে ও নৈ বহন তঁ ও গামমে কী কবিতিঐ। পহাড়প্পব জাএ নঽ চাহিত ছন, খপ্পন গাছী, রঁসরিঙ্গী খা পাখৈবক কাবণ– জতঽ চিড়ৈক রৌনী খা গায–মহীসক ডিবিএনাগ খা রঁড়দক ঘঁটীক ঠৈনঠৈনসঁ গাম গনগনাগত ছন, হ্মদা খারঁ গাছ কটি গেন ছন। রঁসরিঙ্গী সাফ ভঽ গেন ছন খা পোখবি ধানক খেত রঁনি গেন ছন। গাছীক রীচসঁ একটা নহবি গেন ছন, জকব কাতমে প্রাগমবী স্কূন খুজি গেন ছন।

ওকবে রঁগনমে দরাগক দোকানক নেন জমীন ঘেব নেন গেন ছন।

খাম্বেডকবক গাম ভেনাক রাঁদ পহাড়প্পব তেজীসঁ রঁদনি বহন ছন। গামমে রিজনী খারি গেন। কেরঁনক নাগন রিছা গেন ছন। খখরাঁব নঽ কঽ হাঁকিব খারঁঽ নাগন ছন। কিছ ঘবমে টৌরী, পঁখা খা ফোন নাগি গেন ছন। সড়কপব খডঁজা রিছা গেন ছন। খপরৈনক কিছ মকান বহি গেন ছন, রাঁকী সভ পক্কা ছন। জে পক্কা নৈ ছন, তকব খাগূ ওঁটা খসন নজবি খারি বহন ছন।

বঘুনাথ খপনাকেঁ টী.রী. খা খখরাঁবমে ব্যস্ত বাখঽ নাগন। শৌক তঁ উঁপন্যাস পঢ়ৈক ছনৈ হ্মদা উঁপন্যাস

ক◌ॉনেজক প্বস্তকানযমে ছনৈ জতহ জাএবঁ ও বঁদ কহ দেনে ছন। হঁ, ও বএহ উপন্যাস দোবাঁবা পঢ়ি বহন ছন, জকবা কহিযো ও পঢ়ি গেন ছন। মাসমে একাধ বেঁব নগবক পেঁশন আঁফিসক চক্কব ও জব্দব নগা নৈ ছন। গামমে ও নহিযে ককবো কতয জাগ ছন, নহিযে হ্নকা কতয কিযো খাবেঁ ছন। ও নড়কা-বঁচাক নিখাগ-পঢ় াগকেঁ কাজ বুঁঝৈ ছন, বাঁকী কাজ তঁ হ্বানত্তএ। সম্মান সভ কবৈ ছনৈ, ছোট-পৈঘ সভ, হ্মদা খগ্বখাএন বস্ত্মসঁ বেঁসী পিছড়ন খা দনিত। তগসঁ বঘুনাথ হ্নকব কিতাবঁ-ক◌ॉপীসঁ নহ কহ নাম নিখেবাঁক ফীস খা ফীসক মাফী নেন জে কহ সকৈ ছন, কবৈ ছন। ও গামক প্রপঁচ খা বাজনীতিসঁ নির্নিপ্ত বঁড় সোঝ-সবন খা সজ্জন নোকক ৰূপমে সবঁহক প্রিয ছন।

হ্মদা ও সবঁহক প্রিয নৈ ছন। ঠক্ববানক, জকবা ও খপ্পন দিযাদ-বাঁদ কহৈ ছন, ওকব নড়কা ওকবা পসঁদ নৈ কবৈ ছন খা তকব কাবণ ছনৈ এক তঁ জখন মঁডন খাযোগ নাগূ কএন গেন তঁ তকব স্বাগত কবৈবঁনামে ক◌ॉনেজমে খসগবে খগ্বখাএন বস্ত্মক খধ্যাপক বঘুনাথ ছন।

দোসব জখন-তখন চমটৈনেক হবরাহ হড়তানক ধমকী দৈ ছন, ও মানৈ ছন জে সে বাজিবঁ খছি খা হ্নকব সভক হক খছি।

–উপাএ কী খছি, সে তঁ বঁতাউ ?

–উপাএ খছি। চাহে তঁ হ্নকব মাঁগপব সহান্বভূতি সঁগ বিচাব কৰু বাঁ ফেব একটা ট্রেকটব কীনূ। খা কিএক তঁ খপনামে সঁ কিযো ঐ ওকাতিক নৈ ছী, জে খসগবে কীন সকী, তগ দ্খাবে হবক পাছাঁ

दाम बाँन्हि दियौ, जे सभ लोक मिन कऽ कीनी।

ई गप्प सुनि छल बर्ब्बन कक्काक दबराजा पर जखन दियाद-बाँदक सभ बड़-छोट जमल छल। चलाएत के? ड्राइवरक संग हेल्पर चाही, खलासी चाही।

अप्पन ई छौड़ा। सभ जे पढ़िला सात-आठ बरखसँ कंपीटिशनक नामपर गामसँ नग्र आ नग्रसँ गाम मोटरसाइकिलपर घूम-फीर कऽ रहल अछि, जखन लोकसीक कोनो आस नै तँ यएह करए। रघुनाथ बाँजि तँ गेल मुदा ओकरा नगने नगनै जे गलती भऽ गेलै।

छौड़ा। सभ रिख-सरिख भऽ गेलै, आँखि लाल भऽ गेलै। मुदा आगू बुढ़-पुरान छलै, से मसोसि कऽ रहि जाइ गेल। ओइमे सँ किछु बिसर्छ कऽ रहल छल, किछु कोचिंग कऽ रहल छल, किछु केर अंतिम चांस छलै कंपीटिशनक, किछु कंपीटिशनक इंटरव्यूक तैयारी करैत जाइ छल आ ओइ बीचमे कोनो तरहक बाँधा नै चाहि छल। एहन तरहक प्रस्ताव अपमानजनक छलै ओकरा लेल। ई तँ किओ नै जानै छल जे ककर भाग्यमे की लिखल छै? आ की कहतै लोक, यएह जे ड्रैक्टर चलाबैक लेल केने छल एम.ए., एम.एस.सी. आ पी.एच.डी.। ओकरा सभकेँ जे कहतै से तँ कहबे करतै- अहाँ की कहबै? अहाँ तँ बाप छी। सभटा लाज-धाख घोरि कऽ पी गेल छी की?

मुदा ओकरामेसँ किओ बाँजितिऐ, ओकरासँ पहिने आहत स्वरमे बर्ब्बन कक्का बाँजल- बगू। जाए दियौ। की कहियौ तोरासँ? तोहर बेटा एकर मानत मे हेतिऐ तँ आग एना नै बाँजितिऐ।

बघ्नाथ उठि कऽ घर घुरि आएल, चुपचाप।

ओकरा दुख छलै जे ओ ओतऽ जे गप करलनि छल, ओग छोड़ । सबहक बाप ओकरा सभसँ कहै छल- कोढ़ि या, खराबा। ई गप केकरोसँ नुकाएल नै अछि जे कोचिंग, फार्म, टेस्ट ओकरामे सँ कतेक लेल नगरक दोस्तसँ मिलै-जुलैक बहन्ना छलै। ई बघ्नाथे टा नै, ओकर सभक गार्जियन सेहो बुझै छलै जे ओकरा सभ लेल कोटा वा आरक्षण एकटा सहज करच बनि गेल छै, जकर प्रयोग ओ सभ अप्पन असफलताकेँ नुकेबा लेल करैत अछि। मुदा ऐ समस्याक जे हल स्वयोनक तरसँ बहे सभ टा नै बाप सभ सेहो खराब मानि गेलै।

एकर बादसँ नहियें कहियो किनो बघ्नाथकेँ बजौलकै, नहियें ओकरासँ पुछलकै आ नहियें ओ कोनो सलाह देलक। हँ, ओकरा कतय एकमात्र आरऽ बना बहि गेल छलै छब्बू पहलवान। ओ किए आबै छलै आ सेहो शुरूहेसँ- तकर उत्तर नहियें छब्बू लग छलै, नहियें बघ्नाथ लग। ककरो पुछनापर एतबे टा कहतिऐ- नीक लागैए। शांति भेटैए। ओ जखन आबै छल तँ गाँजा, भीजल साफी, चिलम, डोबक टेकड़ आ आ सलाइ-काठी संग आबै छल। असगरे निश्चिंतीसँ दम लगैतिऐ। आ खाटपर पटा बहै छल। एम्हर किछु सधुआ गेल छल। जखन-तखन बाजि उठतिऐ- मास्टर कक्का, पता नै किए आब जीयैक मन नै करैए।

एक बेर हुनका चुप आ उदास देखि कऽ बघ्नाथ पुछलक- की गप अछि छब्बू। ऐ तरहें किए पटायल

छी ? छुट्टी आँखिकेँ बंद कऽ राजन- कक्का, आग लोकमे रंजबंग रंगीक सपना आएल छल। राजन, छुट्टी। अहाँ जे पाप कऽ रहल छी, ओकर प्रायश्चित सेहो अहींकेँ करऽ पड़त, दोसराकेँ नै।

-जखन अहाँ जानै छी जे पाप अछि, तँ किए करै छी ?

-हम देखिते रंगेंस भऽ जाइ छी मास्टर कक्का, की रंतारी अहाँसँ ?

रघुनाथ दिसा-हवागत लेल जेबाक तैयारी कऽ रहल छल, राजन- मुदा छुट्टी, हम एकटा गप अहाँसँ कहि रहल छी, ध्यान राखब। जखैन धरि हुनकर हड़ताल चलि रहल अछि, ताधरि रिसेबियो कऽ चमचैन दिस पएर नै राखब। कोनो भरोस नै अछि ककरो।

-गप तँ ठीके कहि रहल छी कक्का, मुदा एकटा हमर गप अहूँ सुनि लिअ। जौं ठोन रंजाएत, तँ पाथर पड़ै वा रंज्जर खसए, हम नै सुनब, नहियो देखब- चलि देब।

जखन अहाँकेँ ककरो गप मानबाके नै अछि, तँ जे इच्छा अछि, से करू। रघुनाथ रंड़रंड़ ागत सिमान दिस चलि गेल, जिम्हर रंब्बल सिंहक पंपिंग सेट छल।

ओ हड़तालक सातम दिन छल।

अषाढ़ शुरू भऽ गेल छल आ ऐरंब पानि खूब रंबिसल छल।

हवरामा एहन कालमे हड़ताल केने छल- खेतक जोत, रौनि आ केबाकेँ नऽ कऽ। हवरामी आ खेतकेँ नऽ कऽ। रंरा आदमक जमानासँ चलि आबैत बेटपर काज करबासँ मना कऽ देने छल हवरामा सभ। बीच-बीचमे हड़ताल केने छल ओ सभ, मुदा ठाकुर सभ

ৰৌনি কনী ৰৈসী ৰঁঢ় া দেনে ছনৈ আ ওকবা সভকেঁ ৰ্ঁঝা–স্বঝা কঽ ঠীক কঽ দেনে ছনৈ। ঝদা ঐৰৈব আব–পাবক নড় াগ ছন। ঐমে গোৰব পাথৈৰানী ওকব ছৌড় ী আ স্ত্রী সভ সেগো ছনৈ। পবিণাম ওা ভেনৈ জে খেতমে নাগন পানি স্বখাএ নাগন ছন, চবনীপব ৰান্হন মান–জান নগমী–গোৰবমে ঙঁঠি–ৰৈস বহন ছন আ পূবা ঠক্কবপঙ্কী গঁদগীসঁ ভবি গেন ছন।

ঐৰৈব হড়তান ৰ্ঁঝৈমে ঠাক্কব সভ চূকি গেন ছন। হবরাগা থাকি–গাব কঽ নৈ আএন আ নহিযে খেখনিযা কেনক, নহিযে ওকব চূক্তি মিঝেনৈ। জৰুবী পড়নৈ তঁ খহিবপঙ্কী গেন, এম্হব নৈ আএন। পূবা গনাকাক চমঙৈনীক ভবিষ্য পগাড়প্ববক হড়তানপব আশ্রিত ছনৈ– ও সভ সে ৰ্ঁঝি জাগ গেন ছন।

ঠাক্কব সভ বাতি ভবি ৰব্বন সিংহক দ্বাবপব পঁচাযত কবৈত ছন আ ঝংসফ, জজ, মজিস্ট্রেট, কনকক্টব, এস.পী., গঁজীনিযব, ডাক্টব নৈ ভঽ সকৈৰনা হ্নকব ছৌড় া সভ হ্নকব পঁপিগ সেঙ্টপব ৰৈসকী। ও সভ দিন সাঁঝ আঠ ৰজে ধবি ওতঽ জ্মৈ ছন, কহিযো গাঁজাক দম নগাৰৈত ছন, কহিযো দাৰুক ৰৌতন খোনৈত ছন আ চমঙৈনীকেঁ সদিখন সঁতৰাক যোজনা ৰনাৰৈত ছন। কোনা সঁতন জাএ, কখৈন সঁতন জাএ, সঁতৰাক নেন তবীকা কী হ্খএ– ওা সভঙা সমস্যা ছনৈ জগ নঽ কঽ ও সভ গঁভীবতাসঁ রিচাব কবতিঐ আ তেসব গিনাস ধবি পহ্ঁচৈত ও সভ কোবস গাৰঽ নাগৈ ছন।

গাৰৈত চনূ, গাৰৈত চনূ, এক দিন খহ্রঁক জমানা আএত।

জহিনা ওা খমে হেতিঐ তহিনা গঁঙবনেশনন ন্বক

ভ৽ জাগ জাগত ছলৈ– মনমে খছি বিশ্বাস। সো সো মনমে খছি বিশ্বাস হম হএব কামযাব, এক দিন।

ওগ কান বামভবোস দ্রে, জে পড় াসী গামক ছন খা ভংগেড় ী ছন খা ওকবা ছোড়ি ঐ মংডলীক নিখমিত সদস্য বনি গেন ছন– পতবা খোনি ক৽ দিন দেখৈত বহতিঐ জে সঁতবাক তিথি কোন হ্খএ ? ও ষহ্র্তে তঁ বতা দেনে ছন– শুক্লপক্ষক খমারস্যাক বাতি, ষদা কোন মাসক খমারস্যা হ্খএ, ঐ ন৽ ক৽ খাশ্বিস্ত নৈ ভ৽ পারি বহন ছন।

ওস্হব হড়তান খিচৈত জা বহন ছন খা গদ্দবি ফসিনক খাস খতম ভ৽ বহন ছলৈ।

ওগ কান এক দিন নহবক বস্তু একটা ট্রেকটব ধড়–ধড় কবৈত খাএন ছন খা খহিবপঞ্জীমে দশবথ বাউতক দববজ্জাপব ঠাঢ় ভ৽ গেন।

ওকবা ন৽ ক৽ খাব৽বনা খান কিযো নৈ জসবংত ছন– দশবথক বেটা।

দশবথকেঁ চাবি টা বেটা ছন– দূটা গামমে খা দূটা মধ্যপ্রদেশক কোববামে। গামবনা দূধ খা খোখাক ব্যবসায কবৈত ছন খা কোববাবনা বনবংত কোনিযবীমে ঠেকাপব নেবব সপ্লাগ কবৈত ছন। খা জসবংত দেসী দাৰুক ভঞ্জী চনাবৈত ছন।

জসবংত জাধবি গামপব ছন ন্বচা, নহ্ফংগা খা নতখোব মানন জাগ ছন। ভাগনো ছন তঁ বাপসঁ মাবাপীটী কেনাক বাদ। শ্বৰু–শ্বৰুমে মধ্যপ্রদেশসঁ প্বনিস খাএন ছন, এক–দূ বেব তকৈত, ষদা বাদমে স্বধবি গেন কনী–মনী। এস্হব জখৈন গাম খাবৈ ছন– ভৈযা, বাবূ, কক্কাসঁ নীচাঁ ককবো নৈ কহৈ ছন। কহৈ ছন জে

पवदेसमे सभ किछु अछि, गज्जत नै अछि। चासी जतेक कमा निअ, बहरॅ दूगये नरॅबक आदमी। दू नरॅब माने दू कौड़ ी। आरॅ ओ सभ किछु छोड़ि - छाड़ि कऽ गाम-जरॅाबक सेरा करऽ चाहि छन। संजोगे छनै जे ओ पछिना एक-दू रॅेब जखन-जखन गाम आएन, गाम हड़तानक चपेटमे छन। ओ नै एम्हब छन, नै ओम्हब। ओकब डॅठरॅ-रॅैसरॅ दुनू दिस छन- ठाकुब दिस सेहो, हबराहा सभ दिस सेहो। ओ अप्पन दिससँ दुनूक रॅीच स्वनह-समझौताक पूबा कोशिशि केनक, मुदा नजदीक एरॅाक रॅदना दुनू एक-दोसबाक आब रिकुछ होगत गेन।

जयरंत ओग दुनूकेँ जरारॅ देनक ट्रैक्टब आनि कऽ, जे सभ किचकिचरॅैत बहैत छनै जे अहीबक रॅुधि ओकब ठेह्नमे होगत अछि (तगसँ कावण ओ सभ ठेह्नक रॅीच रॅान्टी दरॅा कऽ गाय आ महीस दुहैत अछि)।

ट्रैक्टब खेतमे ठाढ़ छन- ट्रॅानी, कल्टिरेटब, हारॅेस्टब आ थ्रेशबक संग, गेंदाक माना पहिबने। ओकब कातमे आठ पब डॅटा नऽ कऽ दशबथ रॅैसन छन। गामक नेना सभ ओकबा घेबने छन- किछो छू कऽ देखऽ चाहि छन, किछु ट्रॅानीपब चढ़ऽ चाहैत छन। दशबथ तमसा बहन छन आ डॅटा पटकि कऽ ओकबा सभकेँ भगा बहन छन।

जाधबि कथा आ हरन नै भऽ जाग छन ताधबि नोकक नजबिसँ रॅचा कऽ बाखैक छनै ओकबा।

भगरंत डॅर्फ भगनूक जिम्मा दोसब काज छनै। ओ कॅापी आ कनमक संग गम्हबसँ डॅम्हब भाग-दौड़ कऽ बहन छन। किसानक नेन सभसँ मुशिकन आ

परवेशानीक छल ओ मास। अगहनक खेत तैयार छल, खेती पछुता भऽ रहल छल, जन्दीसँ जन्दी जोताओ आ रोपनी करबाक छलै, तकर बाद बरीक नंबर छल। बड़ मौकापर आएल छलै ट्रैक्टर। तारीख लेल लूटि मचल छलै, भाड़ा चाहे जे लिअ, बीघाक हिसाबेँ। आर भाड़ा सेहो की लेबाक छलै–एहन जे बेटे बान्हि देने छल, दू कोस दूरक ओकरानपुरक काशी सिंह अप्पन ट्रैक्टरक।

कथा लेल अखन तीन दिन बाकी छलै आ ओम्हर अगिला तीन मासक सभटा तारीख बुक।

दशरथ जकरा ककरो पुछै छल, तकर तँ बुझू भाग्य। हुनका पुछैबेना एहन छल जे नव घर–दुआर बनबा रहल छल, माटि आ खपरैलक घर खसा कऽ। जखन बिजली आबि गेल छल तँ ओग स्टैंडरक घर चाही। दीया बाती आ लालटेन बेना नै। एहन लोकसभ पहाड़पुरबेटा मे नै, पास–पड़ोसमे सेहो छल। ककरो पजेबा चाही, ककरो सीमेंट, ककरो बान्ह, ककरो गिट्टी, ककरो लोहा–लक्कड़। केतारी सेहो तैयार भऽ रहल छल, गुड़ार मिलक लेल। जखन ट्रॉली छल, तखन सौ टा काज।

दशरथ सबहक स्वनतिऐ आ धैर्य राखैक लेल कहैत छल– सभ भऽ जाएत। कनी–कनी हएत। सदा सबहक काज हएत।

ठाकुर सभ सर्द छल। ओ सभ ओकरा सभकेँ सदिखन अपनासँ नीचाँ बुझैत छल सदा आब हुनकर सभक चिरौरीक दिन आबि गेल। हुनका सभकेँ आब अफसोच भऽ रहल छलनि जे ओ गप जखन रघुनाथ कहने छल तँ हुनकर किऐ नै स्वनलौं।

*

বাতি ভ২ গেন ছনৈ। গামমে শান্তি পসবন ছনৈ। কনী-কনী ঝিস্সী পড়া বহন ছনৈ। ঢার্স রেঁগক ৫র্ব-৫র্ব খা সনকিবরাঁক ঝন্ন-ঝন্নসঁ দিগত গূজি বহন ছন। ট্রৈক্টবক কাজ শ্বরু ক২ দেনাক রাঁদো ঠাক্ষব মাবন সন খন্বভর ক২ বহন ছন কিএকি চমটেনমে কোনো তবহক রেঁচৈনী নৈ ছনৈ। খন্তব এতরেঁ টৌ খাএন ছনৈ জে হবরাহা সভ খারঁ গামমে খা গামক বস্তাসঁ খারঁ২-জাএ নাগন ছন- মূড় ী ঝ্কৈনে, খাবামসঁ, রিনা রাঁজনে রাঁ দ্খা-সনাম কেনে। ঠাক্ষব সভকেঁ নাগৈত ছনৈ জে ও ছাতী উঁতানি ক২ হ্নকা সভপব হঁসৈত খারি বহন খছি- জা বহন খছি।

বঘ্নাথ স্বতএসঁ পহিনে রাঁত্তী মিঝারেঁনে জা বহন ছন খাকি মাথপব রোঁবা বাখনে পানিমে ভিজৈত গনপত রাঁবল্ডাপব খাএন। গনপত হ্নকব হবরাহা ছন, হবরাহীক খনারেঁ ঘব-দ্খাবক কাজ সেহো দেখৈত ছন। বঘ্নাথ ওকব রেঁটৌকেঁ খপ্পন ক◌াঁনেজসঁ রী.এ. কবৌনে ছন, ওকব রাঁদ ওকবাসঁ একটৌ ফার্ম ভবরৌনে ছন, জগ কাবণসঁ ও রাঁটখিবা-নাপ ওংস্পেক্টব রাঁনন ছন। ঐ খন্বভরকেঁ গনপত কহিযো নৈ রিসবন। ঐ কান হ্নকব ও রেঁটৌ এম. বাম মিজর্প্বিবমে পোস্টেড ছন।

-ঐঁ গনপত, তূঁ ? কিযো দেখনকৌ তঁ নৈ ?

-নৈ মাস্টব সাহেবঁ।

ও রোঁবা খাম নগ বাখি মচিযা খিচনক।

-একটৌ গপ রাঁতা দী। হম খহাঁকেঁ নৈ ছোড়রঁ, ভনে খহাঁ ছোড়া দিযৌ। হঁ, ওা কান কনী খবাপ

अछि ।

–जानै छी । अखनौं कोना, से कहू ।

–गेल छलौं मगहवला हिंया मिर्जापुर । सोमाक्ष सेहो ओत्तहि छै ने । मगह ओकरा आटा–चक्कीपर ओतऽ काज पकड़ा देने छै आ ओ पक्का भऽ गेल अछि ओहि काज मे ।

–तँ ?

–तँ मगह कहलक जे जाँत, ओखली, मूसरा, ढेकी, चक्की तँ किनो चलाबैत नै अछि आब–कान्हि आ आटा पिसाबैं लेल जाए छै लोक एक–डेढ़ कोस दूर–डेढ़गारा राँ कमानपुर । एनामे जौं गामपर आटा–चक्की बैसाएल जाए तँ केहन रहत ? सोमाक्ष सम्हारि लेल काफी अछि ।

–बैसेबैं कतऽ ?

–सरकार, चमटैल आ गामक बीचमे जे ऊँपर जमीन छै, ओहपर । आन कोनो काजक तँ ओ छै नै ।

रघुनाथ किछु काल धरि सोचैत रहल ।

–प्रहरीक एहो छल जे ठाकुरे लेल धत्... रोटी आ भात छै, आटा आ चाउर तँ नै छै ।

रघुनाथ हँसल– ई सभ नै सोचू । शुरूमे भले थनसोहाँत सन रहत, देख–सुनैत सभ जाएत आ पिसाएत । एतबे टा नै, आस–पड़ोसक गामसँ सेहो आएत । जखन चक्की गाममे रहत तँ ओत्तहि दूर के जाएत ? रँस देब नै करू । आब बैताउ, कत्तहि दिन रहलौं मिर्जापुरमे ।

–रहलिऐ दस दिन । एक दिन तँ प्रवेश–पाडैत ग्रहा या बेंटौक गस्कुन चलि गेलिऐ । बड़ खुशी भेल ।

ঘব নঽ গেন। ঋপ্পন হাথসঁ খানা পকেনক, খ্এনক, ঋহাঁক ঋা মনকাগনক হান-চান প্ষ্ডনক। চনঽ নাগনৌঁ তঁ ৱীস ৻টা ৻টকা জৰ্বদস্তী পকড় া দেনক। এক্কা বত্তী নৈ ৰঁদনন ছৈ।

—ঢেব দিন বহি গেনৌঁ মগক্ষ নগ।

—নৈ মাস্টব সাহেবঁ, সভ দিন ওতঽ নৈ বহনৌঁ। তীন দিন তঁ পীসীক হিযাঁ বহনৌঁ। পীসীক জঁ সভসঁ ছোট রেঁটা ঋছি, ও উহাঁক ডিপ্টী মজিস্ট্রেবট ছৈ-যসডীযম। ৰঁড় পৈঘ কোঠী ছৈ, ওকব ঋাগূ কনম সেহো ৰঁড় পৈঘ ছৈ। জীপ ছৈ, প্ষনিস ছৈ, ড্রাগরব ছৈ, নোকব-চাকব ছৈ। ভঁ সাধাবণ নোক থোড়ে ছৈ। গজনাস নাগৈ ছৈ। সভ কিযো ভেঁট নৈ কঽ সকৈ ছৈ। পীসীসঁ কতেক-কতেক দিন ভেঁট নৈ হোগ ছৈ। হম তঁ দেখবেঁ নৈ কেনে ছনৌঁ ওস্ত পৈঘ নোক। ওস্ত বহি গেনৌঁ তীন দিন। পীসী বোকি নেনক।

বঘুনাথ কনী গংভীব ভঽ গেন- নাম কী ছৈ ওকব।

—হম সভ তঁ সিহ্ন-সিহ্ন ৰাজৈ ছী হ্মদা নাম ছৈ স্বদেশী ভাবতী। বাম নৈ নিখৈত ঋছি।

বঘুনাথকেঁ কাষ্ঠ তঁ খূন নৈ। গ রএহ স্বদেশী ভাবত ছন জেকব জিঞ্চ সবনা কেনে ছন। ওকবাসঁ ও রিযাহক গপ কেনে ছন। জৌঁ ও সচমে কঋ নেতিঐ তঁ গনপত জে হব জোতৈত ছন ঋা ওকব ঋাগূ ঠাঢ় বহৈত ছন ঋা মচিযাপব বৈঁসৈত ছন, ওকব বিশ্তেদাব হেতিঐ। খবপত জে গনপতক ৰাপ ঋছি, হ্নকব সমধী হেতিঐ ঋা গব মিনতিঐ। হ্নকব সংগ খাটপব বৈঁসতিঐ ঋা জমাযক ৰাপক হৈসিযতসঁ উঁচ হেতিঐ হ্নকাসঁ। হ্নকব মন ভেন জে শীনাকেঁ ঋৰাজ দঽ কঽ ৰজাবেঁ

ओ कहै जे स्वनू, गनपत की कहि रहल अछि।

–बाँकी सरहक अप्पन दुख छै मास्टर साहेब। ओकर बियाह नेन्नेमे भऽ गेल छलै। ओ अप्पन मेहरकेँ छोड़ि देने अछि। ओकर ममेरा चलि रहल छै आग-काल्हि एकटा मास्टरनीसँ। ओ ऊँच जातक छै। कहियो कहै छै जे बियाह करब ओहीसँ, कहियो कहै छै- नै करब। माँ-बाप नै चाहैए। ऐसँ ओकरा नटकेने चलि रहल छै। पीसा बड़ दुखमे रहै छै।

–तूँ जो, देर भऽ रहल छौ।

ऊ मास्टरनीक संग जहाँ-तहाँ जाइ छै, होटेल सेहो जाइ छै, दोसर शहर सेहो घूमै छै, खूब मौज करै छै, मुदा पीसीसँ नै मिलाबै छै। पीसी बाजल जे हमरा देखा दे, एक बेर हम बतेबै ओकरा जे किए नै कऽ रहल छी बियाह। मुदा, भेँट करबाएब तखैन ने।

–कहनियो ने, नीन आबि रहल अछि। ओ बत्ती बुझा दही।

–अच्छा साहेब।

गनपत ठाढ़ भऽ गेल।

–मुदा साहेब, एक बेर बुझा देतिऐ जे मेहरकेँ छोड़ि कऽ किए एना कऽ रहल छी। मेहरिया तँ कत्तौ चलि जाएत आ ककरो ने ककरो राखि लेत, मुदा बदनामी ककर हएत। ओकरे ने।

–तूँ जेमे कि नै, दिमाग नै चाट।

–अहाँ नै जाएने चाहब तँ कहियो कोनो काजक बहाना कऽ हमहीं ओकरा आनि देब।

रघुनाथ तमसा कऽ थरथराए लागल। ओ उठि कऽ समाबि कऽ बत्ती मिझा देलक। ओ ओकरा ठेल

कऽ राँहब कऽ देनक। गनपत माथपर रोोबा बाखि कऽ राँजन- साहेबें, जे कष्ट नेन खाएन बहि, से तँ रिसबिए गेनौं।

एकरेंग ओकब खराँज ह्सह्साहटिमे रेंदनि गेनै, देखियै बहन छी हरा खबारें छै। नै, एकटा गप कहि बहन बनी। एहन कोनो गप नै खछि स्दा पहनमानकेँ बुझा देबेँ जे जखन धबि हरा खबारें छै, चमठेन दिस नै देखए। खा देखत की, उम्हब नै जाए।

बघुनाथक ध्यान नै छन ओकब ह्सह्साहटि दिस। ओकब चिंता खा रेंचैनीक कावण दोसब छन- कि कत्तौ एकबा सबना खा भावतीक संबंधक जानकाबी नै हुखए। जखन संबंधी खछि तँ कहियो ने कहियो मगक जरूब भेंट कबैत हएत, भऽ सकैत खछि जे भावती सेहो चर्चा केने हएत। खा नै हुखए तँ मगक दुनूकेँ कहियो संगमे देखने हएत। जखन एक्के नग्रमे खछि तँ कोना संभव खछि जे ओकबा पता नै चनन हेतै खखन धबि।

-शीना।

खाखिब ओकबा बहन नै गेनै खा ओ दोसब रेंब शोब पाड़नक- तामसेमे।

*

पहनमान मानें छब्बू पहनमान।

पहाड़पुबक दक्खिन हिस्सामे घब छन रेंजबंगी सिंहक। ओ गनाकामे छब्बू पहनरानक नामे जानन जाग छन। गामक नाम दूब-दूब धबि पसावने छन। दंगनमे जतऽ-जतऽ गेन, जीत कऽ घुबन गनामक संग। ठेंगड़ा खा धोरियापाठ ओकब प्रिय दांब छन। नंरोग कम नै, जुन्वम तागति खा फुर्ती छनै ओकबामे। ककबो

পকড়া নিঋএ তঁ ছোড় াএরঁ ফ্নশিকন, দারি দিঋএ তঁ উঁঠরঁ ফ্নশিকন, পঠ পড়া কঽ মাঠি পকড়া নিঋএ তঁ চিত্ত কবরঁ ফ্নশিকন। ভেঁসক কেহ্নীসঁ মাবি দিঋএ তঁ পসবি জাএ ঋা উঁঠি নৈ সকএ।

ফ্নদা হ্নকব পৈঘ ভাএ- জকব চনিতে ও পহনরানী কবৈ ছন, জখন ঋসময একাএক গ্বজবি গেন তঁ ও নংগোঠ খ্ষ্টাপব ঠাঁগি দেনক ঋা ঘবক জিম্মাদাবী সংভানি নেনক।

ছব্বূঁক রিঁযাহ নৈ ভেন ছনৈ। জখন উঁমেব ছনৈ তখন কেনক নৈ ঋখাড় াক জোশিমে ঋা জখন কবএ চাহনক তঁ উঁমেব নৈ বহনৈ। কিযো ঋগরোঁ নৈ কেনৈ। ঐ তবহেঁ পবিরাবক নামপব হ্নকব দস রঁবখক ভাতিজ ছন ঋা মসোমাত ভৌজী। ভৌজী দিন-বাতি পূজা-পাঠ ঋা ধবম-কবমমে নাগন বহি ছনি ঋা ভাতিজ স্কূন জাগ ছন। খেতী-বাঁবী ছব্বূ সম্হাবৈ ছন ঋা সম্হাবত কী- ঝূবী হবরাহাক জিম্মা ছোড়া কঽ নিশ্চিংত বহি ছন।

ফ্নদা ঙা নিশ্চিন্তী ওকব ভাগ্যমে নৈ ছনৈ। এক দিন ওকব নজবি পড়া গেনৈ ঝূবীক স্ত্রী ঠোনাপব। দূ রঁচাক মাএ ফ্নদা কহৈক নেন। উঁ কনরা নঽ কঽ ঋাএন ছনী, ঋপ্পন মবদক নেন। ছব্বূ ওকবা পহিনো দেখনে ছন-নৈ জানি কতেক রেঁব। ফ্নদা ঐরেঁব নজবি নৈ পড়নৈ, গড়া গেনৈ। ও ওকবা ঋারৈঁত দেখনক, রৈঁসৈত দেখনক, চনৈত দেখনক- কী ছড় া সন শবীব, কী নচক, কী গস্সন বাঁহি। গড়া গেন ঋাঁখিমে। কতঽ ঙা ঋবক্ষব ঝূবী ঋা কতঽ ঙা গাঁজাক কনী। রঁস স্বষ্টা নগি জাএ তঁ উঁড়া জাউঁ ঋাসমানমে ঋা হেব উঁড় ত বদ্ধ। জমীনপব ঘ্বৈক নৌরঁতি নৈ ঋারঁএ।

আব ফের তকর ৰাদ শুরু ভেল ছব্বূ পহলমানক স্বপ্না মাৰৈক খিস্সা। হ্নদা খিস্সা বহুতাব পকড়তিঐ একবাসঁ পহিলে ভৌজীকেঁ খঁদাজা ভঽ গেলৈ। ভাতিজ হ্নন্না মাঁকেঁ ৰতেনক জে ও কক্কা আ ঠোনাক দনানমে ওকবা ন্বক্কা-ছপ্পী খেলৈত দেখনে ছল। ভৌজী কানএ নাগন। ও ছব্বূসঁ ৰাজন- ছব্বূ, হমব একটা রিনতী আছি। ভৈয়া তঁ বোকৈ-টৈকৈক নেন নৈ আছি, আহাঁ কবৰ আপ্পন মনক। হ্নদা চাহে জে কবী, করু ঘবসঁ ৰাহেব। একবা সাফ-স্বথবা বহঽ দিযৌ। গশাবা ৰ্নিম্নি গেন ছব্বূ। একব ৰাদসঁ ছব্বূক চমটৈনীমে আরাজাহী ৰঢ়ন।

হবরাহা নেন হ্খএ ৰা বোপনী-কটিযা নেন ৰজেৰাক নেন। চমটৈনীমে জাএৰ ঠাকুব আপ্পন ৰেঁগজ্জতী ৰ্নৌ ছন। জরুবী কাজ ভেন তঁ ও ৰচা সভকেঁ পঠৰৈ ছন। হ্নদা ছব্বূ এহন মান-সম্মানসঁ দূবে ছন। জঁ ও গামমে নখাহ নৈ দৈতিঐ, কনম ৰা নহবপব সেহো নৈ নখাহ দৈতিঐ, আবি-খেতপব সেহো নৈ নখাহ দৈতিঐ তঁ নোক গুা মানি নৈ ছন জে ও চমটৈন গেন হএত, ঠোনাক সংগ। গুা চমটৈন সেহো জানৈত ছন আ গাম সেহো। তমসাহ এত্ত জে ওকবাসঁ সোহ্মাঁ-সোহ্মী কহৈক হিম্মত ককবো নৈ ছনৈ।

সভ অগ্রএনহা ৰেব-ৰেব মিন কঽ ঘবেনক সভসঁ প্রতিষ্ঠিত ৰব্বন কক্কাপব দৰাৰ ৰনেনক জে ও আপ্পন সকসঁ জে কিছু কঽ সকএ, কবএ। ৰ্নাৰিযৌ ৰা ধমকারিযৌ ৰা জাতিসঁ ৰাহেব করু। এহন কহএৰনা আগন-ৰগনক গামক নোক সেহো ছন। শিকাগতসঁ তংগ আরি কঽ কক্কা ছব্বূকেঁ ৰজৈনে ছন। ছব্বূ হ্নকব গপ ৰড় ধ্যানসঁ স্বননক আ খঁতমে ৰাজন- গপ তঁ গুা

ठीक अछि कक्का म्हदा ककवा-ककवा जातिसँ राँड़़ेँ। ककबो-ककबो अाँपन अछि आ ककबो-ककबो उँघाव। म्हदा रँचन तँ किछो नै अछि हमब नजबिमे। बहन गप हमब तँ अहाँसँ नै नुकाएबँ। हम सभ किछ करबै छी म्हदा म्हँहसँ म्हँह नै सटेबैं छी। अप्पन धबम आ जातिकेँ नै रिसबै छी।

कक्का माथ म्हुका कऽ बैसन बहन, किछ नै बाँजन।

छब्बूँ कनी कान बाँद उँठि कऽ चनि गेन।

नोक मजाकमे कहै छन जे चऽबमे म्हूबी पहनमानक खेत जोतैत अछि आ पहनमान चमटैनमे ओकब खेत। हिसाबँ बँबाबँब।

आ म्हूबीकेँ ओा छनै जे जखन ओ खेत जोति कऽ घुबै छन तँ छब्बूँ घबमे बोपनी कऽ कए आबैत छन। जखन छब्बूँ घबमे बँजाबसँ घुबतिऐ तखन छब्बूँ घबमे। ओ ओकब हेबाँक आहटे भेटितै ओबक्षु आपस भऽ जाग छन।

ओ एक बेँब हिम्मत केने छन। हाथ जोड़ि कऽ कहनक- मानिक, हमब नै तँ कमसँ कम अप्पन गज्जतक ध्यान कक्ष। नोक की-की कहैत अछि अहाँकेँ नऽ कऽ।

एकब नतीजा ओा भेनै जे ओ चौदह दिन भबि देह हबैद-प्याज देहपब पाति कऽ घबमे पड़न बहन।

असहाय ठोना। जीअबँ कठिन भऽ गेनै। नबक भऽ गेनै ओकब जिनगी।

बाति भबि म्हूबीकेँ छातीसँ नगा कऽ कानैत बहन आ तामससँ फनफनागत बहन।

সভসঁ পৈঘ গপ ঙা ছন জে গ্রাম সেরক চমঠৈনক, ওকবে জাগতক, পহনমানক সংগ গাঁজাক স্বঙ্গা নগারৈঁত ছন খা জখন কহিযো কহতিঐ– কনেজা কড় া বাখূ, খানী কনী বাঁঠ তাকূ।

–কহিযা ধবি বাঁঠ তাকূ।

সারন শ্বব্ধ ভ২ গেনৈ। ঐ মাসমে পচৈযাঁ (নাগপঁচমী) পড় ৈত ছন। পহাড়প্ববমে পচৈযাঁ ছব্বূঁ পহনমানক পর্ব ছন। ওগ দিন তীনঠা বাঁল্টীমে ভীজন চনা খানন জাগ ছন, পবাত ভবি মিঠাগ খারৈঁত ছন, বঁতাশা খারৈঁত ছন, বঁজবংগ বঁনীক পূজা কএন জাগত ছন, ছব্বূঁ পহনমান নংগোঠ পহিব ক২ খখাড় াকে মোহাবপব বৈঁসৈত ছন খা খপ্পন চেনাক গঙ্গাপব বক্ষা বাঁল্হৈত ছন। ও সভ উঁস্তাদক খাশীর্বাদ সংগে খখাড় ামে উঁতবৈত ছন। ওকব সভক কতেক জোড় া হোগত ছন খা দ্পহবিযা বাঁদ ধবি পঙ্গা সভ খখাড় ামে জোব–খাজমাগশী কবৈত বহতিঐ।

সভসঁ খাখিবীমে ছব্বূঁ উঁতবিতিঐ– পৈঘক পএব ছবি ক২ খা ছোঠ সবঁহক হাথ জোড়া ক২। ঙা প্রদর্শনী–ক্ষশতী হোগ ছন। ও খপ্পন দাঁব খা কবতবঁ দেখারৈঁ ছন– পহনমানী ছোড়া দেনাক বাঁদো।

ঐ কান চমঠৈনসঁ ডফনী খা নগাড় াবঁনা সেহো খারৈঁ ছন খা ন্মূমি ক২ বঁজারৈঁ ছন। খহিবঠৈনীক বঁনেঠীবঁনা সেহো বহৈত ছন খা এক–দোসবাসঁ খেনাগত পসীনা–পসীনা ভ২ জাগ ছন।

দোসব গামমে পচৈঁযা পর্ব বহি গেন ন্মদা পহাড়প্ববমে ঙা খখনো চনি বহন ছন– চননিক রূপমে সএহ। ন্মদা ঙা গপ সভ জানৈত ছন জে ঙা তহিযে ধবি খছি জাধবি ছব্বূঁ খছি। কোনো ঠাক্ষবক নব

পীঢ় ীক নেন দেহে রঁনাএরঁ, কশিবত ্থা ্খন্যাস কবরঁ, ক্ষশতী নড়রঁ হ্মানতূ চীজ ছন। একদম মূর্খতাগ। রঁন্দূকক ্থাগূ মজগূতসঁ মজগূত শিবীবক কী মতনরঁ ? তগসঁ ওকব চেনামে রঁসী ্খহীব,কহাব, নোহাব, গড় বিযা ছন, ঠাক্ষব রাঁভন নৈ।

হ্মদা ঐরেঁব খবাপ ছন পচৈযাঁক। পানি ভোবসঁ পড়ি বহন ছনৈ– কহিযো মহ্মিম, কহিযো তেজ। ্খখাড় া এক দিন পহিনে তৈযাব কেনে ছন ্খপনেসঁ ছব্বূঁ। গা কাজ চেনামে সঁ ককবো নৈ কবহ দেনে ছন। হ্মদা ডুঁ থানম থান ভহ গেন ছন– ধানক খেত সন। মিঠাগ ্থা রঁতাশা ্থারি গেন ছন। রঁদাম হ্মনি কহ ্খঁখ্্থা গেন ছন। গঁতজাবী ছন রঁবখা থস্কৈক। ছব্বূঁ কহি গেন ছন জে ্খহাঁ সভ তৈযাবী বাখরঁ, জহিনা মৌসম ঠীক হএত, হম ্থারি জাএরঁ।

হ্মদা নহিযে মৌসম ঠীক ভেন, নহিযে ছব্বূঁ ্থাএন।

পানি তখনে থমকন জখন সাঁঝ ঝনহ্মনাএন। ্খকাস সাহ্ম ভেন ্থা জতহ–ততহ একাধটা তাবা নজবি ্থারঁহ নাগন। ওগ কান প্বনিসক জীপ ্থাএন গামমে ্থা পতা চনন জে ছব্বূঁক হত্যা ভহ গেন ্খছি। জনপদক সভসঁ কবেজারঁনা ্থা দমগব নোকক হত্যা।

গা খরঁব নৈ, রিজনী ছন, জে রঁদবী ছটৈনাক রাঁদ তবতড় া কহ ঠাক্ষব ষৈনপব ্থারি খসন ছন। ও চাহে জে ছন, জেহন ছন– ঠাক্ষব ছন। ্থা ওকবা বহিতে ককবোমে ঐ ষৈন দিস ্থাঁখি ডঁঠা কহ দেখরাঁক তাগতি নৈ ছনৈ। ্থা ্থারঁ ?

্থারঁ, চমষৈনক রাঁহবী হিস্সামে, একটা নোপড় াক ্থাগূ থানমে চিতঁগ পড়ন ছন। মবন। ডঁঘাব ্খকাসক

নীচাঁ। একটা নানটৈন ওকব মাথ নগ ছন, দোসব পএব দিস, দ্নূ গুঁটাপব। জেনা নাশপব নজবি বাখন জা সকএ। নাশ সেগো থান আ মাটিমে নেভবাএন পড়ন ছন। পএব ঐ তবফেঁ ছিতবাএন পড়ন ছন জেনা রাঁচসঁ চীব দেন গেন ছন। জননাংগ কাটি দেন গেন ছন আ ওগ ঠাম খূনক থক্কা ছনৈ, জগপব মাছী ঝরঁবন ছনৈ, উঁড়ি আ ভিনভিনা বহন ছন। প্বনিস পবেশান ছন, ওগ জননাংগক নেন। কটৈন তঁ গেন কতএ ? ঐ নাশ নগ কত্তী নৈ ছন। ও নানটৈন আ টোর্চিক বোশনীমে ওকবা তাকি বহন ছন। জমীন সমবস নৈ ছনৈ– খধাগ রঁহ্তে ছনৈ আ সভমে পানি ভবন ছন। ওকবা জত২ কত্তী সংদেহ হোগ ছনৈ, নাঠীসঁ দ্রূড়ি ক২ দেখি নৈ ছন, ভনে ও মাটিক ঢেনা হ্খএ। এক ডব সেগো ছন কত্তী ভীতব, জে এহন নৈ হ্খএ জে ফক্কুব আএন হ্খএ আ মাঁসক নোথ র্ঁ্নি কোনো দোসব ঠাম ন২ গেন হ্খএ রাঁ খা গেন হ্খএ।

গু খোজ দেব বাতি ধবি চনৈত বহন।

প্বনিস খপ্পন দিসসঁ সভটা তৈযাবীক সংগ আএন ছন ক্ষদা জগ আশংকাক সংগ আএন ছন, ওহেন কিছু নৈ ভেনৈ– নহিযে কোনো দংগা ভেনৈ, নহিযে চমটৈন ফূকন গেন, নহিযে রঁদনাক কার্ববাগু ভেন।

ঝূবীক মোপড় িক রাঁহব তানা নটকি বহন ছনৈ আ চমটৈনমে স্বন–সন্নাটা ছন। এক্কাটা মর্দ নৈ। সভটা মর্দ রঁস্তী ছোড়ি ক২ নৈ জানি কত২ চনি গেন ছন। প্বনিস এরাঁসঁ পহিনেসঁ। মৌগী আ নেনা ছন, ও সভ খপ্পন ঘবমে রঁদ ছন।

হনা একটা এহন নোকক ভেন ছনৈ জকব ঘবমে কিযো এফ.আগু.আব. দর্জ কবৈরঁনা নৈ ছনৈ। হনা কে

कखनक, कखैन कखनक, कोना कखनक, किऐ कखनक- एकर कोनो गराम नै छनै।

खंदाज जकर नगाएल जा रहल छल ऋदा ओ खंदाजे भवि छल जे छबूँ भोरे-भोरे खप्पन देहक खागि मिरमारेँ लेल ममूवीक घर पहुँचल। खाहटे नागिते ममूवी दोसर कोठवीमे नुका गेल। दोसर ढोना चाँचर खोलि कऽ ओकरा भीतर नऽ गेल। खनधेर्य छबूँ नुंगी खोलि कऽ जहिना ओकरा संग स्वते लेल भेल खाकि ओ ओकर ढोता पकड़ि ये कऽ ममनि गेल। ओ ओकरा मारैत-पीटैत चिचियारेँत रेँगोशे भऽ कऽ खसि पड़ल। ओग कान ममूवी हस्वथा लऽ कऽ खाएल खा ओकर जननांग काटि कऽ फेक देनक। दुनू राँहर खारि गेल कोठरी रँद कऽ कए खा ओकरा तड़पैत, छटपटोगत खा मररोँक गंतजार करैत छोड़ि कऽ। राँदमे दुनू घिसिया कऽ ओकरा राँहर कऽ देनक।

खाकि ओ धानक रीखा छीटेऽ रीखड़ि मे गेल छल ओग दुनूक संग। मारनक ओतहिये, ऋदा रँनाकोरक केस रँनारेँ लेल ओकरा दरवँज्जाक खागू खानि कऽ पटैकनक।

खाकि नि:शस्त्र भेनाक राँदो पहनमान दू-चारि टो केँ तँ काँचे चराँ जागत। दू-चारि मनक नै छल ओ। चमटैनकेँ पता छनै जे ओ किम्हर दिसा-फराँगत ठैक लेल जागत खछि। पूरा चमटैन उँम्हरे घेर कऽ रामविक खेतमे मारनक जेना ओ स्वगरकेँ चारू दिससँ घेर कऽ मारैत खछि खा ममूवीक घरक खागू खानि कऽ फेंकि देनक। चऽरमे कतरोँ चिचिऐरँ तगयो केकरा स्वना पड़त मेघक गड़गड़ ाहटिमे।

ऐ तरहक चर्चा छल। खनग-खनग खंदाज,

খনগ-খনগ নোকক। সচ গপ কেকরো নৈ পতা। নাশি নগ কিযো এরেঁ নৈ কএন তঁ কোনা পতা নাগিতিঐ ? প্বনিস ককরো খারেঁএ নৈ দেনক।

ক্ষদা একটা গপ কনী-কনী সাফ ভেন জে, জে কিছু ভেন, খচানক খা সংজোগে নৈ ভেন ছন। একব পাছাঁ মাস ভবিসঁ তৈযাবী ছন। ঐ তৈযাবীমে খসগবে পহাড়প্বব চমটৈন নৈ, খাস-পড় াসক বীস-পচীস গামক চমটৈন মিনন ছন। পহিনে খা বাঁদমে খর্চে-খর্চ ছন-থানাক সীওকেঁ চাহী, ফ্ৰশীকেঁ চাহী, পোস্টমার্টম বঁনা ডাঁকিটবকেঁ চাহী, পৈবরীকাবকেঁ চাহী, রকীনকেঁ সভ তাবীখপব চাহী, গরাহকেঁ চাহী- ঢেব বাস খর্চ।

ঞা কতঽ সঁ কবত ম্নূবী ? তঞসঁ সভ চমটৈনেক হবরাহা চংদা জুটৈনেক।

দোসব, হুনকা সভকেঁ গংতজাব ছন খপ্পন জাঞতক কোনো প্বনিস খধিকাবীক, জে ধানাপ্বব থানা সম্হাবএ খা সে খারি গেন ছন, দূ মাস পহিনে। ভগেনূ মানে বী.বাম। সংগে খকটূবঁবমে চুনার ছন রিধানসভাক খা কোনো এহন পার্টী নৈ জকবা খন্বসূচিত জাতিক রোটক দবকাব নৈ হুখএ। তেসব, চমটৈন জানৈ ছন জে ছব্বূক মামিনামে ঠাকুব ঘবেন বঁটি জাএত, কহিযো এক নৈ হএত।

খা জন্দিযে ঞা সারিত ভঽ গেন।

*

ছব্বূক মাবন জেবাঁক খাদংক জকবা সভসঁ বেঁসী ছন ও বঘুনাথ ছন।

নৈ জানি কী ছন জে ছব্বূ জহিযা কহিযো কনম দিস ঔতিঐ, নহব খা খখাড় া দিস ঔতিঐ খা খপ্পন

মহীসক সংগ উত্তব দিসক চ২বমে ঔতিঐ –বঘ্নাথক দ্খাবকেঁ জব্ধব দেখতিঐ– মাস্টব সাহেবঁ খছি কি নৈ। খছি তঁ খানী বৈঁসন খছি বাঁ কাজ ক২ বহন খছি। জোঁ বঘ্নাথ খানী বহ্ন ছন তঁ ছব্বূঁ খারি ক২ বৈঁস জাগ ছন। বাঁজৈত কিছ নৈ, বঁস বৈঁসন বহতিঐ। প্বছনেপব বাঁজৈ ছন জে কোনো কাজ নৈ, বঁস খহাঁ নগ কিছ কান বহবঁ নীক নাগৈএ হমবা। নীক নোকক সংগতি ভেটৈত কহাঁ খছি।

ও জাগ ছন সভ ঠাম হ্মদা বৈঁসৈ নৈ ছন।

ও বঘ্নাথক কহনে রিনা হ্নকব হিত–খহিতক খপনে খাপ ধ্যান বাখৈ ছন। ঙা হ্নকব ভাবনা ছন জকব পাছাঁ কোনো কাবণ নৈ ছন। ঙা গপ বঘ্নাথ দোসবাসঁ স্বনৈ ছন, ছব্বূসঁ নৈ। খখন সান ভবি পহিন্বক্কা গপ খছি– বঘ্নাথক পছখাবমে হ্নকব পিতযৌত ভাগক ঘব–দ্খাব খছি জকব খাগূ তীন রিগহাক কবীবঁ হ্নকব জমীন খছি। হ্নকব মানে বঘ্নাথক। ভাগ ধবি তঁ ঠীক ছন। ও বাঁটৈ–বঁখবাক সম্মান কবৈ ছন হ্মদা ভাতিজ সবঁহক নেত খবাবঁ হ্খএ নাগন। হ্নকব ঘবক খাগূ দোসবাক জমীন। ও সভ চাবি ভাঁয ছন খা সভ সমর্থ। পৈঘকেঁ বঘ্নাথ পঢ়নে ছন খা রিজনী রিভাগমে নোকবী দিএনে ছন। ও সমএ–সমএপব কর্জ্জা কবৈক তবকীবঁ খা বঁহন্না খোজৈত বহ্ন ছন। ও এক বেঁব বাতি ভবিমে বঘ্নাথক পছখাবমে একটা ঙাংটাক দেবান ঠাঢ় ক২ দেনক খা হ্নকব বাঁটৈ বঁদ ক২ দেনক। বঘ্নাথকেঁ তখৈন পতা চননৈ জখন হো–হন্না স্বনা পড়নৈ। ও পহুঁচন তঁ দেখনক জে ছব্বূ নাঠী ন২ ক২ দেবান খসা বহন ছন খা ধ্ববঝাড় গাবি পঢ়ৈত নবেশকেঁ ননকাবা দ২ বহন ছন– ঘবঘ্স্সা, বাঁহব নিকন খা

হিম্মত মোউঁ তঁ ঠাঢ় কব দেৱান। হমছুঁ দেখিঐ। মাস্ঠবকেঁ খসগব ব্ঁঝনে ছৗহী কী ? খসবা–খতৌনী কোনো চীজ খছি কি নৈ ?

নবেশ খা ওকব ভাগ ঘবমে ঘ্সন বহন। ওকবামে সঁ ককবো হিম্মত নৈ ভেনৈ জে বাঁহব খাৱঁএ খা ছব্বূঁসঁ ভিড়এ।

সৎ গপ তঁ ঞা ছনৈ জে বঘ্নাথকেঁ নোকবী জাগক জতে দ্খ ছনৈ, ওগসঁ এক্কাবত্তী কম ছব্বূঁক জাগক নৈ ছনৈ। কিএকি ছব্বূঁ ছন তঁ বঘ্নাথ সেহো ছন খা হ্নকা নেন পহাড়প্বব সেহো। খাৱঁ ককবা ব্ঁঝ্ও ও বহত।

ছব্বূঁক মাবন জেৱাঁসঁ পহিনে গনপত বঘ্নাথকেঁ গশাবামে বঁতা দেনে ছন জে পহনমান জঁ খহাঁ কতহ খাৱঁএ তঁ ব্ঁঝা দেৱেঁ– চমঠৈনসঁ দূব বহএ। ঞা হমবা দ্নূক গপ তেসবাকেঁ পতা নৈ চনএ। খানী দূব বহএ। বঘ্নাথ একটা বঁহন্না তাকি কহনো ছন জে ছব্বূঁ, খাৱঁ বঁহ্ত ভহ গেন, জাএ দিঔ।

ছব্বূঁ বাঁজন ছন– মাস্ঠব সাহেবঁ। ছোড়ি তঁ দিঐ, ক্ষদা জাউঁ কতহ ? গামমে তঁ সভ বেঁঠী খছি, প্বতোহ্ খছি। খাব কতহ জাএবঁ।

বঘ্নাথ ওকবা তবহ–তবহসঁ ব্ঁঝাবেঁক প্রযাস কেনক, ক্ষদা সভ বেঁকাব। ওনাহুঁ ও সোচনে ছন জে বেঁসীসঁ বেঁসী কী হএত– যএহ নে জে ছব্বূঁ বেঁগজ্জত কএন জাএত খা ঝূবী ঢোনাক সংবঁধ সভ দিন নেন খমে ভহ জাএত। ক্ষদা ঞা তঁ ছব্বূঁক দ্শমন সেহো নৈ জানৈ ছন জে এহন হএত। ও ঞা কহৈত ঘ্মৈত বহন জে ঞা একটা ঠাক্ষবক হত্যা নৈ, পূবা দিযাদক সমর্থাগিকেঁ চ্নৌতী খছি, ওকবা ননকাবা দেন গেন খছি– ক্ষদা ঐ ঘটনাকেঁ রিসবৱঁ খা একব চর্চা নৈ কবৱঁ নীক ব্ঁঝনক

सन्त।

कनी कान नागन ठाकुर चैनाकेँ बँदमैत समएकेँ बुझबामे आ ओकर हिसाबेँ अपनाकेँ ढालबामे। कतेक दिन धरि दुआर कूड़ा आ कचबाक ढेर बनल रहल, कतेक दिन धरि नादिक लग गोबर बजबजाइत रहल, कतेक दिन धरि बड़द अकुलासँ बान्हल उठैत-बैसैत रहल, गाए-महीस डिरिआइत छल आ पगुराइत रहल। पटोयन-पटोयन खटिया तोड़ैबला ठाकुर कखनो कोन भरे पड़ल कोदारि दिस ताकितथि, कखनो हँसुआ दिस, कखनो खाढ़नि दिस आ थाकि कऽ अंतमे ओइ छाउर दिस जिम्हरसँ हरबाहा आबैत छल।

झदा हरबाहा जे चमैनसँ भागल, से नै घुरल।

एक हफ्ता बीतल।

फेर दोसर हफ्ता बीतल।

फेर तेसर हफ्ता बीतल।

ओकर जेबाक बाद ठाकुर जतेक परेशान छल, दशरथ यादव ततेक खुशी। ओकर बैसा जसवंत ऐ कानमे ठाकुरकेँ सम्हारि लेने छल। ओ हुनका सन्तकेँ हरबाहाक कमी नै हुअए देलक। ओ सबहक खेत भाड़ापर जोतलक। एक्का दिन ओकर ट्रैक्टर नै बैसल। सन्तक हर कामै बहि गेल। ओ सन्तकेँ बुझा देलक जे बड़द मथदुक्खी आ रोग्ग अछि, फालतू अछि। दुआर गंदा करैत अछि, ओकरा हटाउ। ओकर गोबर कोन काजक? ओकरासँ उपजाउ तँ घटिया अछि।

किछु गप बादमे पता चलल, ओइ कान नै। जेना ओ जग तरहेँ ठाकुरकेँ सम्हारलक, तहिना ओ चमैनकेँ सेहो सम्हारलक। किछु हरबाहा तँ शहर

चलि गेल– बिकलो चलेलौ लेल सोचिए कऽ लौ लौनिपर काज करै लेल ऋदा लेर बास लोक कोवलौ गेल– जसरंतक छोटे भाग लेलरंत नग, जे लौनि मजूरक ठिकेदार छल। ओ सभकेँ खदानमे काज दिएलक। आर ओहो जे गामक घर होएसँ ओ दोसरासँ जतेक लै छल, ओएसँ कम लेलक। एतबेँ टा लै, जसरंत ओकरो मदद केलक जे चमटैलमे बहि गेल छल, खास कऽ मौगी सबहक। बाशिल–पाएलक गरजसँ अलाजक लेल ओ ठक्करटैलीमे जाएबेँ लेंद कऽ देलक आ सूदपर जसरंतसँ या अहिरटैलीसँ टैका लिअए लागल। ओ आबेँ सोझे गज्जल सार केर दोकालपर जाए छल। लगद पाए दै छल आ किबाना समान लै छल।

गाम कली–कली परिवर्त्तल जकाँ घुरए लागल छल– लर लेंदलार आ लर व्यरस्थाक संग। अन्तर एतबेँ टा आएल जे हबराहा लौहर लोकरी करै छल। आ ओ जखल गाम घुरै छल तँ ठक्करटैलीमे लै जा कऽ अहिरटैलीमे जाएबेँ, उँठबेँ–बैसबेँ लैसी परील करै छल। लोएत हुलका ओतऽ लेबालेंबीक अन्तर होए छल।

बिटायरमेंटक लौद लोकक देखा–देखी रघुलाथ सेहो अप्पल खेत–लौबीक दोसर व्यरस्था केलक। ओ अप्पल खेत सलेहीकेँ अधियापर दऽ देलक। सलेही हुलकर कॉलेजक चपरासी छल आ सात मील दूर अप्पल गामसँ कॉलेज आबै जाए छल। जाएतक कोएरी। ओकर समस्या ओकर औरत आ लौल–लेंचा छल। रघुलाथ ओकर परिरारक लेल ओसारक एकटा हिस्सा आ लौहरक खोपड़ ी दऽ देलक। ऐ तरहेँ ओ खेतीक झंझटसँ लिश्चिन्त भऽ कऽ कत्तौ आबै जाए जोग भऽ गेल।

आब कतउ आएत-जाएत, मैनेजर आ प्रिंसिपल पेंशन लऽकेने छल आ ओ अहीमे लागल छल। ओ ओग चक्करमे दू-तीन दिन लेल नग्र गेल छल तखने हुनकर भातिज नरेशो घरक पछुआरक जमीन दोराबा घेर लेलक- ऐ रंेब काँटे रंना तारसँ।

एतबेटा नै, नरेश प्रबला नादि ओग जमीनपर गाड़लक आ महीस बान्हि देलक। चारू दिस गोबर आ गोगठा फेकरा देलक, जतऽ-ततऽ सण्ठी आ प्रआरक रौम्म बखरा कऽ ओ सिद्ध करैक प्रयास केलक जे पछिला कएक बरखसँ ओ ओकरे कब्जामे अछि।

गाममे घुसैत रघुनाथ एकरा देखलक आ सोन्हे ओतऽ पहुँचल जतऽ नरेश महीसकेँ सानी दऽ रहल छल। ओ माथ पोछि कऽ कक्काक पएर छूलक।

ओ सभ की छै ?

नरेश हुनका आश्चर्यसँ देखलक- किछु तँ नै, की अछि ?

तामस मे थरथरा उठल रघुनाथ- रंदमाशी करै छी आ सेहो अप्पन कक्कासँ।

-कनियो टा लाज नै एलौ तोरा ? हटा ओ सभ खुट्टा-तुट्टा, ताब-फाब।

नरेशक तीन भाग सेहो घरक भीतरसँ बाहर आबि गेल। पड़ोसीमे किओ नै आएल। सभ अप्पन-अप्पन दरबज्जापर बैसल ध्वनि रहल छल।

-ओ तँ नै हटत कक्का। हमर घर-दुआरिक आगूक जमीन सारिकक अछि आम जमीन आ फानतूमे अहाँ फँसेने छी। अहाँक ओ छेरेँ नै करी, ओ तँ गाम-समाजक अछि।

एतबेँ ध्वनैक छल आकि रघुनाथक देहमे जना

আগি লাগি গেল। ও হলহলা উঠল আ এক লাত মাবলক লাদিপব। তোহেব সাতী কহ, আ গাম সমাজক।

অখন মাটি কাঁচ ছল নাগদক, ও এক দিস ভসকি গেল।

ঐ বীচ তামসসঁ আগি-পানি হোগত আ গাবি পঢ়ৈত নবেশীক ছোট ভাগ দেরেশ দৌগন আ ধক্কা দই কহ বঘুনাথকেঁ খসা দেনক। ও সম্ভবিতিঐ, তগসঁ পহিলে ও হুনকব ছাতীপব রেঁস কহ গবজন- সাঢ় বুঁঢ়রা, গবদনি পকড়ি কহ অখনে দরা দিঐ তঁ মবিএ জাএত। হম জতেক নীক লোক জকাঁ গপ কহ বহল ছী, ওতেক শৈব রনি বহল অছি। জা, জে কবৈক অছি, কহ নিঅ। উঠৈত ও হুনকব ডাঁবপব এড় ী মাবনক- সাঢ় বুঁঢ়রা হবমজদা।

বঘুনাথ উঠরাক প্রযাস কেনক ক্ষদা উঠি নৌ সকল।

নাগদক কাতমে পড়ল-পড়ল ও চারু দিস তাকনক। দিযাদ-রাদ দেখি বহল ছনৈ আ অপ্পন-অপ্পন দবরজ্জাপব রেঁসল ছনৈ।

কনী কালক রাদ নবেশ ওকবা ঠাঢ় কেনক আ ঘব দিস ঠেল দেনক।

পীস কহ নগারেঁ নেল হবদি-পিযাজ নৈ হুঅএ তঁ পঠরা দের। - দেরেশ চিকড়ল।

-কী ভহ গেল অছি গাম কেঁ ?

-এতহ জনম নেনৌঁ, পোসেনৌঁ, রঢ়নৌঁ, পঢ়েনৌঁ, সরহক মদতি কেনৌঁ- কখনো কিতার-কাঁপীসঁ, কখনো ফীস মাফীসঁ, কখনো টৈকা-পৈসাসঁ, কতেক সব-সংরঁধী অছি আ বহত। আগ-কান্হি কী ভহ গেল অছি

গামকেঁ ?

কী খহীসঁ জে ও দিযাদ-রাঁদক ঐ রাঁ ওগ পার্টীমে নৈ খছি ?

কী খহীসঁ জে ও বিটৌযব ভ২ গেন খা কোনো কাজক নৈ বহন ?

কী খহীসঁ জে ও কহিযো কোনো ঝগড় । রাঁ ঝমেনামে নৈ পড়ন ?

কী খহীসঁ জে ও রেঁটৌ জাতিক রিঁযাহ রাঁহব কেনক ?

কী খহীসঁ জে ওকব রেঁটৌ খমেবিকা মে ড◌াঁনব কমা বহন খছি ?

কী খহীসঁ জে ওকব দোসব রেঁটৌ সেহো নোএডামে এম.রী.এ. ক২ বহন খছি ?

কী খহীসঁ জে ও রঁটৌগপব খেতী সনেহীকেঁ দেনক- রাঁহবী নোককেঁ, হিনকা সভকেঁ নৈ ?

কী ভ২ গেন খপ্পন দিযাদ-রাঁদকেঁ ? বঘ্‌নাথ র্ঝরাঁমে খসমর্থ বহন ।

*

বঘ্‌নাথ দনানপব কবঠ ভ২ ক২ পটৌযন ছন ।

নৈ, নৈ কবৈক রাঁদো শীনা ডাঁড়পব হ্নন হস্তী নগ হবৈদ, পিযাঁউজ খা চূনক ঘোব নগা বহন ছনি । খা ঝঁহক ভিতবে-ভীতব কিছু রঁড়রঁড় ক২ বহন ছনি, নাককেঁ স্বড়কৈত ।

দূ-দূ টৌ ঝস্টঁড রেঁটৌ ঝদা দ্নূ পবদেশীমে ।

এক্কা টৌ এত২ নৈ জে রাঁপক রঁগনমে ঠাঢ় হেতিঐ ।

रघुनाथ जग खंडाकेँ पैघ केनक, ओ कोगनीक नै कौआक छल। आ ओ अपने कौआ छल, नै तँ ओ गप बुझियेँ गेल हेतैऐ।

ओ आग धरि घरमे बहैत आएल छल, जे अपवैनक छल, माउग्टैक मोटे-मोटे देरावक। सारिकी घर। पाछाँरैना जमीन जानि-बूझि कऽ रहैरावामे नेने छल ओ, कि जखन पाग आ समए हएत तँ पक्काक घर रँनाएरँ-छोटे सन। ओ जरूरी छल- हुनका नेन नै, रँटौ नेन। घरे नै बहत तँ ओ आएत किए? आएत तँ बहत कतऽ? आ जखन एरँ नै करत, बहरँ नै करत तँ गाम-घरकेँ बूझत-गमत की? फेर बाँप-दादाक जमीन-जथोक की हएत? के देखत जा कऽ? अपवैनक घर तँ ढहि बहल अछि। कखन रँसि जाएत, कियो नै जानैत अछि?

तेँ किछु दिन पहिने जखन प्रारिडेन्टे फंडक पाग भेटैन तखने नर घरमे हाथ नगारँक फैसना कऽ नेने छल। आरँ ओ नर आफत।

हुनका छर्ब्बूक कमीक अन्वभर भऽ बहल छल- नगातार।

ओ नर खाढ़ ी पैदा भेल छल गाममे- तहियासँ जखनसँ गाममे रिजनीक खाम, केर्बुन, ट्रैरँरेन, पम्पिंग सेटे आ दराग दोकान आएल छल। जातिक पार्टी आएल छल, हवाहवी तेसर घरसँ फौजमे कियो ने कियो भर्ती भेल छल। सर्णमे एकटौ रस्त्र *रिसर्च आ कोचिंग* करैरँना छौड़ ा। सरँहक छल, जे शहरसँ रँा कोनो फौजीक घरसँ रँोतन नै छल आ बाति पम्पिंग सेटेपर रिताअँत छल।

दोसर रस्त्र नरेशे आ ओकर भागक छल। नरेशे

रिजनी मैकेनिक छल। सबकाबी कर्मचाबी छल। ऋदा खुंट्टासँ ताब खीच कऽ घबमे अरैध कनेक्शन दै छल आ चिक्कन कमाग छलै। ओकब तीनू भाँगकेँ प◌ॉनिटिक्समे मोन नागै छलै। देरेशे सपा केब कार्यकर्ता छल, बमेशे रॅसपा केब आ महेशे भाजपा केब। ओ पार्टी पछिला रीस रॅबखसँ सत्तामे आरि-जा बहल छल आ क्षेत्रक रिधायक आ सांसद सेहो अही पार्टीक भऽ बहल छल। तीनू रॅड़ बु्धियाबीसँ कोनो ने कोनो नेताकेँ पकड़ने छल। ओ अप्पन-अप्पन नेताक संग बहितिऐ, घुमितिऐ, खेतिऐ-पितिऐ आ जनताक सेरा कबैतिऐ- माने ठ्रांसफब कबरॅारैक आ बोकरॅारैक काज। छोटे-मोटे नोकबीसँ ओ पैघ आ सम्मानजनक धंधा छल। नोकपब बोरॅदारॅ सेहो बहै छलै आ कआरॅ सेहो। हुनकब सभक मंत्री संग उठरॅाक-रैसरॅाक आ खाग-पीयैक खिस्सा बहै छल।

ओ जहिया कहियो चाबि-पाँच दिनक नेन गामसँ निपत्ता बहतिऐ तँ सोमे नखनउँसँ या कोनो महाबैनीसँ या हन्ना-रॅानसँ आरैत छल।

ओ भाग सरॅहक पहुँच आ पाग केब तागतिके रॅाध बघुनाथकेँ तहिया भेलै जहिया हुनका दस-रॅाबह दिन दौड़ऽ पड़लै- कखनो नेखपान नग, कखनो थानापब, कखनो एस.डी.एम.क ऑफिसमे। ऋर्सी सभ देनक, सम्मान सभ केनक, ध्यानसँ स्वननक हुनकब गप आ अंतमे रॅाजन- मास्साब। अहाँ रिद्वान छी, शेबीफ छी, अहाँक सभटा गप सह अछि ऋदा कोन ममेनामे अपनाकेँ दऽ बहन छी? ओ सभ नीक नोक अछि की? ऋँह फोड़ि कऽ किछु नै कहनक, ओशीबासँ जकब बु्मा देनक जे कऽ सकैत अछि तँ किछु नै,

ফ্দা খালী গপে কহ সকৈত অছি।

ওগ কান হ্নকা গ্রামো পতা চলল জে দিযাদ– রাঁদক আঠো পবিরাবমে সঁ সভ পবিরাবকেঁ চ্প বহ নেল নবেশে দৃ–দৃ হজাব টৈকা দেনে ছল।

বঘ্নাথ দৌড়ৈত–দৌড়ৈত থাকি গেল। গ্রা উমব সেহো এহল কাজ নেল নৈ বহি গেল ছল। আর্ব পহিন্বক জেহল শক্তি সেহো নৈ বহি গেল ছলৈ। ঠেহ্নমে দর্দ বহ ছলৈ আ গবদনিমে সেহো। শীনা অনগে মবীজ ছল দমাক আ গৈসক। জখৈন বঘ্নাথ নগ আর্বৈত ছল, ডকাব নেনে আর্বৈত ছল। আ পছিনা দিনক ঘটনা আ পতিক পবেশানী ওকবা আবো নর্বস আ নিবাশ কহ দেনে ছল।

বঘ্নাথ দ্পহবিযাক খেনাগক রাঁদ নীমক নীচাঁ পটোযল ছল আ সোচিযে বহল ছল জে আর্ব কী কবী। একমাত্র বস্তা হ্নকা নখাহ দহ বহল ছল– কচহবী। ফ্দা ও বস্তা রঁড় নম্হব ছল। ও জানৈ ছনি জে তাবীখপব তাবীখ পড়ৈত জাএত। ঐ তবহেঁ এক দিন আগত–জাগত মবি জাএর্ব আ ফৈসনা নৈ হএত।

ঐ রীচ শীনা আএল। ও রাঁজল– অজীর্ব নোক ছী অহাঁ। অসগবে চিঁতামে মবল জা বহল ছী, জকবা গ্রা সভটা সম্হাবৈক অছি, ওকবাসঁ সনাহ কিএ নৈ নহ বহল ছী ? প্ছিযৌ তঁ ওকবাসঁ।

–ককবাসঁ– রেঁটোসঁ।

–হঁ, মাননৌ জে একটা দূব অছি, ফ্দা দোসব তঁ নগ অছি।

–একদম সহ কহি বহল ছী অহাঁ।

ও নিসাঁস নেনক– কহু তঁ! ঐ দিস তঁ হমব ধ্যান গের্বৈ নৈ কএল।

ও উঠন আ শীনাক সংগ ফোনমে ভিড়ি গেন। শীনা হ্নকা রেঁব-রেঁব ব্ঁমরৈত বহন জে রঁন-ধকেনক, পঠকৈক, মাবি-পীঠক গপক চর্চ নৈ কবরাক খছি নৈ তঁ ও পরেশান ভ২ জাএত আ পঢ়র ছোড়ি ক২ রীচেমে চনি দেত। নাগন ভেঠন বাতিক দস রজেক রাদ। স্বপব সংযম বাখৈত বঘ্নাথ রিস্তাবসঁ সভটা গপ কহৈত হ্নকাসঁ রিচাব প্ছনক। ওহো রাজন জে এত২সঁ কৈনিফোর্নিযাক নাগন নৈ নাগৈ ছৈ, সংজূসঁ সেহো সনাহ ন২ ক২ রতাএর।

বাজূ রীচমে ঠৈকনক- কিএ মবন জা বহন ছী জমীন ন২ ক২। ছোড়ূ ওকবা আ স্বনূ, ভৌজী বনাবস আরি গেন খছি খশোক রিহাবমে। জ্বাগন ক২ নেনে খছি যূনিরসির্টীমে। খহাঁ মাঁকেঁ ন২ ক২ চনি জাউ আ ওগু বদ্ধ আ স্বনূ।

স্বনৈসঁ পহিনে ফোন বাখি দেনক বঘ্নাথ। ও মাথ পকড়ি ক২ বৈসি গেন।

-কী-কী ভেন? -শীনা প্ছনক।

-ভেন কী? আর সম্হাব্দ ওকবা। উড়ি ক২ আরি বহন খছি হরাগ-জহাজসঁ। আরৈতে গোনী মাবি দেত নবেশকেঁ। ও সভ রদাশ্ত ক২ নেত, রাপক রেগজ্জতী রদাশ্ত নৈ কবত।

-খবে বোকূ, বোকূ ওকবা।

-ওকবা তঁ বোকি দের, সংজযকেঁ কোনা বোকর? ও তঁ ওত২সঁ মিসাগনসঁ সোনে ঘবমে আএত।

শীনাকেঁ সংদেহ ভেনৈ খপ্পন বৃধিপব আ ও চ্প ভ২ ক২ হ্নকা দেখ২ নাগন।

-সাঢ়। কহৈত-কহৈত ও মাথ উঠা ক২ শীনাকেঁ দেখনক।

–হমবা ডব ছল তাগসঁ হম গপ নৈ কঽ বহল বহী, ক্ষদা খহাঁক কহনাসঁ কেনৌঁ। হম এক্ত ব্র্বরক নৈ ছী জে হমব দিমাগ মে নৈ আএল। ক্ষদা খহাঁকি জিদপব কেনৌঁ। নৈ জানি কতঽসঁ এহেন রেকাজক আ কোঢ়া যা ছৌড় া জনম নঽ নেনক– সাঢ়। পছিনা জন্মক পাপ। হম তীস–পৈঁতীস ববখ নোকবী কেনৌঁ, নাথক নাথ কমাগ কেনৌঁ আ হাথমে একটা পাগ নৈ। ঐ হাথ আএন, ওগ হাথ গেন। পুছু তঁ কতঽ গেন, সে বতা নৈ সকব। আ ঙা জমীন। আগযো ওতৈ কঽ ওতৈ ছী। মিসিযো ভবি টৈসসঁ মস নৈ ভেন অপ্পন ঠামসঁ। ঙা খহাঁক দাদা–পবদাদা–বাপকেঁ খ্এনক, খহাঁকেঁ খ্এনক, এতবে টা নৈ রেটা আ নাতী–পোতাকেঁ খ্আএত। খহাঁ কবোড় া কমাএব ক্ষদা টৈকা আ ড◌ানব নৈ খাএব। ভগবান নে কবএ জে ও দিন আবএ জখন বৈঁক চাঙব–দানিক দানা বাঁটৈত। ও জাঁঘপব ক্ষক্কা মাবনক আ শীনা দিস তাকৈত বাজন– সাঢ়, তূঁ সভ পৈঘ ভনহি ভেন হুঁখএ অপ্পন মাঁক দূধ পী কঽ, ক্ষদা তোহব মাঁক মাএ অছি ঙা জমীন। চাঙব, দানি, গহুম, তেন, পানি, নূন যএহ জমীন দেনে অছি। আ বাঁজৈ ছী জে হটাবূ ওকবা।

–ছোড় ূ ওকবা।

তামসমে বঘুনাথ কী সভ বাজৈত বহল, হুনকা অপনো নৈ পতা।

কোন তবহে শীনা হুনকা সম্হাবৈত পকড়া কঽ আঁগনমে নঽ গেন– জাঙ, সূতি জাঙ। সোচূ নৈ।

*

ঐ কান বঘুনাথকেঁ একটা বোধ ভেনৈ।

ঙা জে নীক নোকক মতনব অছি নিবর্থক নোক,

আ ভনা আদমীক অর্থ অছি ডরপোক নোক। জখন কিযো অহাঁকেঁ রিদ্বান কহএ তঁ ওকর অর্থ মূর্খ র্হ্মূ আ জখন কিযো সম্মানিত কহএ তঁ তকর অর্থ দযনীয র্হ্মূ।

হ্নকা সভ ঠাম যএহ কহন গেন আ হ্নকর কোনো কাজ নৈ কএন গেন। হ্নকা সভ ঠাম হ্ঁট-হ্ঁট আ দ্ব-দ্ব কএন গেন। ও ওগ রঁকবী আ গাএ জেনা অছি জে মেঁ-মেঁ আ রাঁ-রাঁ ক২ সকৈত অছি, মাবি নৈ সকৈত অছি। যএহ ওকর ছরি, সরঁহক আগূ মিমিযারৈঁ আ ঘিসিযাবী কাষ্টৈরঁনা মাস্টরক। ওা হ্নকর ছরি নৈ অছি, যএহ ছথিন ও।

ও ওগ ছরিকেঁ তোড়ৈ নেন সোচি বহন ছন, রঁব্বিন সিংহ ও অরসব দ২ দেনক।

ওগ কান বঘ্নাথ অপন খেতমে ছন। ও মচিযাপর রৈঁসন ছন আ আগূ সনেহী অপ্পন আ হ্নকর হিস্সাক গহ্নম নপরাঁ বহন ছন। রঁগনসঁ জা বহন রঁব্বিন ঠাঢ় ভ২ গেন। গামক সভসঁ বূঁঢ়-প্ববান আ মর্জদিরঁনা। গামে টৌ নৈ, পাস-পড় াসমে কত্তী রিরাদ হোগ ছন তঁ এক পঁচক রূপমে কোনো নে কোনো পার্টী দিসসঁ ও সেহো বহ্ন ছন। ওা অনগ গপ অছি জে ও মামনা স্বনঝারৈঁক রঁদনা আব ওঝবা দৈ ছন। ওা হ্নকা নীক নৈ নাগৈ ছন জে বঘ্নাথ নৈ জানি কত২-কত২ দৌড়ন, হ্নকা নগ নৈ আএন। বঘ্নাথ হ্নকা দেখনক ঝদা কোনো ভার নৈ দেনক।

-মাস্টর। - ও শৌব পাড়নক।

বঘ্নাথ নগ গেন আ গোব নাগনক।

-জমীন অহাঁক অছি, গাম-সমাজ যা নরেশকেঁ ওকবাসঁ কী নেরঁ-দেরঁ ? দোসব কিযো কোনা কঞ্জা ক২

नेत ?

–एतबेॅ टा हमहूँ जानै छी।

–जानै छी तँ विधायकजी सँ किए ने भेँट करै छी ?

–कोन विधायकसँ ?

–खरे रएह, खप्पन कॅानेजक मैनेजर।

माथ ठनकनै रघुनाथक। एकर मतलबेॅ जे ऐ पूरा मामिलाक तार ओतेसँ जुड़ल अछि। संजयक रियाहसँ। ओकरा हुनका विरोधर करबेॅनेसँ आ पेंशन रोकबेॅनेटा सँ संतोष नै भेलै– आ ओ अछि दियाद-बाँदक सभसँ बूढ़-पुरान आ मजदुरॅना लोक, जे नरेशकेँ नै बुझा कऽ हमरा बुझा रहल छल। आ बुझा की रहल छल, ओगमे रस नऽ रहल छल। ओग कान रघुनाथक दिमागमे एकटा अबाफाती विचार आएल।

–कक्का।– ओ रॅब्बनक हाथ पकड़ि कऽ कनी फराक लऽ गेल। अहाँसँ एकटा विचार लैक चाहैत रही, कतेक दिनसँ। जखन अहाँ भेटियै गेलिऐ तँ कहू तँ एतेक पूछि नै छी।

–रॅाजू, रॅाजू।

मन तँ नै रॅनेने छी मुदा कखनो-कखनो सोचै छी जे ओग जमीनकेँ बेॅच दी।

रॅब्बन हुनका आश्चर्यसँ देखैत रहल।

–अहाँकेँ पता अछि, कतेक महंग अछि ओ जमीन। आरॅादीक भीतर। कतेक काजक अछि। ओकरा बेॅचबेॅ सोना बेॅचै सन अछि। आ बेॅचबेॅ किए ?

–मथदुक्खी राखैसँ की फाएदा ?

–यएह तँ चाहै अछि नरेश। मुदा ओकरा नै बेॅचबाक अछि। ओ जे केनक, तकरा कोना रिसबि

सकै छी ?

–तँ फेर ?

–फेर की ? अखन तँ यएह सोचने छी जे ओकरा नै देबाक अछि, बाँकी तँ घर अछि, गाम अछि, अहाँ चाहबै तँ अहीं छी। देखल जाएत, कोनो जल्दी थोड़े अछि।

रबरन कनी गंभीर भेल– आ ओकर कब्जाक की करबै ?

–कब्जाक की, खूँटा अछि। आर किछु नै तँ जे उँखाड़ि कऽ फेक देत ओकरो दऽ सकै छी। मैनेजर साहेबे सेहो खोलऽ चाहिए रहल सरहक अंग्रेजी स्कूल ऐ ठनाकामे कत्तौ। एतऽ खोलि लिअए।

–अरे गामक लोक मरि गेल अछि जे बाहरी लोककेँ देबै ?

–नै, एकटा गप कहि रहल छी। अखन किछु तय–तफसिला थोड़े अछि। रघुनाथ धीरेसँ बाजल– हम दान तँ नै दऽ रहल छी ककरो। जखन राजिबै आ सही भेटैत तखने ने।

–अहाँ तँ गाममे फौजदारी करा देबै मास्टर। –चिंतित भेल रबरन बाजल।

–हम की करबै ? जखन ओ अपने करैपर उतारू अछि तँ किओ की कऽ सकैत अछि। रघुनाथ हुनकर कान लग झुकि लऽ जा कऽ बाजल– सदा ई गप अपने धरि राखब। दुनिया भरिक लोक आबैत रहैत अछि अहाँ लग। की फाएदा कहएसँ ? छै कि नै ? तँ चली।

रघुनाथ खेत दिस घुरि गेल। सनेही दोसर रौद पुछने छल जे गहुमकेँ अखारीमे आगये राखि

दिऐ या काल्हि नेन छोड़ा दिऐ। शीनाक कहब छल जे बाहैव आ तोड़ ा सेहो रौंहि जाअ तँ सभकेँ रेबा-रेबी बाखि देन जाअ। बघुनाथ ओ निर्णय शीनापब छोड़नक आ ओसाबपब आरि कऽ बैसि गेन। शीना सेहो पाछाँ-पाछाँ आएन।

-किए भवि-ठेहुन भवि-छाबा कऽ बहन बनी हुनकासँ? सभटा खुबाफातक जड़ा तँ रएह छथि।

-अहाँ चुप बहि कऽ तमाशा देखू। हम बड़ बास मसाना दऽ देनौं हुनका। आब काल्हिसँ एतऽ बैसकी नगाएब शुरू कऽ देत नोक।

बघुनाथक चेहबापब बाहत आ संतोषक चमक छन। शीना उँखड़न मनसँ पुछनक- अहाँ जमीन बेचैक गप कऽ बहन बनी हुनकासँ?

बघुनाथ हँसन- गपे तँ कऽ बहन बनी, बेच नै बहन बनी। बेचबाक नै अछि हमबा। हमब अप्पन कमाएन चीज छेबौं नै कबअ जे हम बेची। बाप-दादा नग हुनकब पुबखासँ कोना आएन हएत, रएह जानैत हएत। म्हदा ओ नोक नहियें अपने चैनसँ बहत, नहियें बहऽ चाहैए, नहियें बहैने देत। आब यएह देखू, हमब दोष कतऽ अछि? संजय बियाह केनक। ओतऽ केनक जतऽ चाहनक, जतऽ ओकबा अप्पन हित देखा पड़नै। भविष्य देखनक। हमबो नीक नै नागन म्हदा ओकब अप्पन पसीन आ जिनगी बहै। हम की कऽ सकैत बनी? म्हदा तकब सजा मैनेजब हमबा देनक। हानतूमे। हमहूँ कहनौं-ठीक अछि। गामपब बहब- सुख आ शांतिसँ। नहियें उँधोक नेब, नहियें माधोकेँ देब। एक समअ छन जखन खेत-पथाबक अतिबिक्त किछु नै छन एतऽ-

नहियो अखबारक छल, नहियो रेडियो छल, नहियो फोन, नहियो टेलीविजन छल। आइ सभटा अछि आ हमरा लगैत अछि जे हम दुनू लोक लेल कहबो आपु माथ ने पसारि जइबति। बहुत गप्प दोसर जइबतक लेल तँ आइ ने काल्हि पेंशन भेटिते करत। फेर कोन गप्पक चिन्ता। की।

रघुनाथ झलफलाइत शीना दिस देखलक। आ सभ सुख-दुखमे संगिनी संग देबाली स्त्री अखन जीवित छलि। ओ हुनका खिचलक आ अपना लग बैसा लेलक। ओ लजाइत हुनका लग बैसल रहलि आ ओ हुनका एकटकसँ देखैत रहल।

-शीना, ऐ सभ चीजक सहारे जिनगी तँ काटल जा सकैत अछि, जिअल नै जा सकैत अछि। एकाएक हुनकर आवाज भारी आ उदास भऽ गेल।

-शीना। अप्पन तीनटा बच्चा अछि, मुदा पता नै किए, कखनो-कखनो हमर भीतर एहन हूक उठैत अछि जेना लागैत अछि- हमर स्त्री बाँझ अछि आ हम निपुत्तर छी। माँ आ बाप होएबाक सुख नै जानलौं हम। हम सभ नहियो बेटाक बियाह देखलौं, नहियो बेटीक। नहियो पोतो देखलौं, नहियो होएबला जमाएकेँ। हम एहन अभागल माँ-बाप छी जकरा ओकर बेटा अप्पन बियाहक सूचना दैत अछि आ बेटी कहैत अछि जे जँ अनुमति नै देब तँ लोत नै देब। आ आब अहाँक नजरि अछि बाजूपर जे ओ सभ साध पूर कऽ देत।

-नेहाल कऽ देत अहाँकेँ, एहन भ्रम हुअए तँ निकालि दियौ अप्पन दिमागसँ। हमरा पता अछि जे ओ एकरोसँ आगू जा रहल छै। ओ एकटा एहन रिधरा

नड़कीकेँ ताकि नेने अछि जकरा दू बरखाक बच्चा छै। एतबे नै, ओ कोनो नीक सरिसि सेहो करै छै। ओकर पाससँ ओ दिल्लीमे मौज कऽ रहल अछि। मोटबरीगक नऽ गेल अछि मस्ती करबाक लेल। बच्चा पोसब आ मौज करब दू टा काज अछि ओकर। गेल छल डोनेशनक पाग नऽ कऽ, आग धरि पता नै चलल जे एडमिशन लेलक आकि नै।

–अहाँ एतेक गप जानैत रही तँ कहियो बतौलिऐ किए नै।

–की कऽ लेती अहाँ ? की करितिऐ बता कऽ। शीला, हम जानै छी ओकरा। पढ़ैमे कहियो रूचि नै रहलै ओकरा। अप्पन बापसँ कोन स्वरमे गप करैत अछि। एकरा अहाँ देखने छी। ओ शॉर्टकटसँ पैघ लोक बनैले चाहैत अछि। ओकरा लेल पैघ लोकक मतलब अछि धनी लोक। आ सेहो खून-पसीन बहा, बिन मेहनतिक। ओ महत्वाकांक्षी नड़का अछि सदा लालच आ महत्वाकांक्षा बुनैत अछि। ओ बड़ बास चीज हासिल करए चाहैत अछि– अनचोक्के बिना पढ़ने-लिखने, बिना नीक नंबर आनने डिग्रीजन आननक, बिन प्रतियोगिता देने, बिना खटने आ नौकरी करने। हमरा नै पता जे ओ नड़की ओकरा कोना भेटलै। कतऽसँ भेटलै। भऽ सकैत अछि जे ओकरा कोनो मर्दक खोज हुअए। एतबे जरूर अछि जे डेढ़ बरख पहिने कोनो सड़क दुर्घटनामे ओकर पति मरि गेल। ओग नड़कीक अप्पन फ्लैट अछि, कार अछि, ऑफिसक काजसँ सिंगापुर, बैंकाक आबैत-जाइत रहैत अछि आ ई ओकर बच्चा सम्हारैत अछि आ घर जोगैत अछि। जेना हम नै जानै छी, तहिना ओ नै जानै छै जे ओकर मनमे की छै, की

रिचाव छैे।

–अहाँ ओ सभ कोना जाननिऐ।

–ओ नै पुछू। लोएडामे हमरो लोक अछि, जे आबैत–जाइत रहैत अछि।

शीना चिंतित भऽ उठल– सभटा दुख अही बुढ़ापामे देखऽ लिखल छल की? एकटा बेटा परदेसमे, पता नै कहिया आएत। दोसर एतऽ सदा ओकरो रएह हाल। सदा ओकरोसँ खराप। आ गम्हर बापक दोसर सधीरैत। गाम छोड़ऽ तँ जानि जाएत, नै तँ मारल जाएब। नहियेे किछो देखएबैना अछि, नहियेे सुनएबैना, नै जानि ककर नजरि लागि गेल अछि घरकेँ।

रघुनाथकेँ ओतऽ असगरे छोड़ि कऽ चुपचाप ओ अंदर गेल आ पटा रहल।

*

घरमे फोन आबऽ जीक जंजाल भऽ गेल छल। जखन रघुनाथ कनेक्शन लेने छल तँ बाजूक जिदपर जे संजू अमेरिकासँ जखन गप करऽ चाहत तँ केना करत। कोनो संदेशो देबाक हुअए तँ। भौजीकेँ जौं मम्मीसँ किछु बाजबाक वा पुछबाक हुअए तखन। हमरे कोनो सनाह लेबाक हुअए तखन। चिठ्ठी–पत्री आबऽ के लिखैत अछि, ककरा लग एतेक समए अछि। आ सबला दीदी सेहो तँ अछि शहरमे, हुनकासँ गप नै करबाक अछि की अहाँकेँ आ मम्मीकेँ। तँ कोनो हालमे जरूरी अछि ओ। गाममे सेहो बेसमतलऽ थोड़ लेने अछि लोक।

फोन लागल तँ बाजूक लेल। जखन कखनो

घरमे बैसल छल, नागर बैसल छल ओकरा, कखनो ऐ दोस्तक, कखनो ओइ दोस्तक। संजूकेँ तँ नागरसँ नै भेटै छलै। हँ, कखनो-कखनो सपना जरूर भेटै जाइ छल। आरौ जखन बाजू ताँहर अछि तँ फोन ओकरा ताँकार पड़ल बैसै छै जखन नारि आ थूक्सा ताँ हर आ ठेंगा।

तइसँ बातिमे जखन फोनक घंटी बाजल तँ रघुनाथ आ शीना डरि कऽ एक-दोसराकेँ ताकलक। घंटी बजबाँ तँ बन्न भऽ गेल, ओइमे सँ किओ उठोल नै देखलक। जखन दोसर बेर बाजल तँ रघुनाथ उठल आ रिसीवर उठेलक।

-हैलो।

दोसर दिससँ आवाज आएल। चिन्हलक ओकरा। देर धरि सुनैत रहल, फेर शीनाकेँ रिसीवर पकड़ा देलक। आ माथपर हाथ राखि चुपचाप बैस गेल।

कनी काल बाद दोसरठाम दिससँ कानैक आवाज सुना पड़ल। ओ उठल आ अप्पन बिछौनपर आबि गेल।

रिसीवर राखि कऽ शीना सेहो आएल आ अप्पन बिछौनपर बैसि गेल।

ओ कान्हि आबि रहल छथि अपना सभकेँ लऽ जाइ लेल।

-अहाँकेँ जेबाक अछि तँ जाउ, हमरा नै जेबाक अछि।

बड़ कानि रहल छल। पुछि रहल छल जे हमर कोन एहन गलती अछि जे देखै लेल तँ दूर, अहाँ सभ फोन धरि नै केलौं।

ओ केलक कहियो फोन। हम सपना देखि रहल

बनी जे मनाबानी घुरि आएल अछि अप्पन देशे। आकाशवाणी भेल छल हुनकर आगमनक लेल।

–ओ तँ नै बाजू। बाजू बजौने छल।

–हम कोनो बाजू-ताजूकेँ नै जानै छी। ओ किए नै कहलक। बापकेँ कऽ सकैत छल सम्बनक संगे। ओकरा बजौलक, ज्ञागन करौलक, अशोक रिहाब आएल। एतेक दिनसँ बहि बहल छथि, बीचमे पापा-मम्मी मोन नै पड़लै, आग मोन पड़लै। ओहिना तँ मोन नै पड़ल हेतै, आएल हएत, कोनो गप हएत जरूर।

कानि-कानि कऽ कहि बहल छल जे हम मम्मी-पापाक बिना नै बहि सकैत छी।

–झूठ बाजैए। बहैबा बहल छल अहाँकेँ। जानैए कतेक अपना सभकेँ। नहियेँ कहियो देखने अछि, नहियेँ भेंटे अछि तँ ओ किजाने गेलए पापा-मम्मीकेँ। हम तँ जानै नै छी जे हमरो कोनो पुतोहु अछि।

–पूतोहु नै सही, बेटा तँ अछि। नै जानि की सोचत।

–कोन मतलब अछि बेटा-बेटी बहु दुनिया। सभहक चिंता करै लेल हमही छी।

बघुनाथ तमसा गेल।

ओकरा तँ चिंता छै जे लोक की कहतै। सास-सम्बन गाममे पड़ल अछि आ पुतोहु नग्रमे मजा कऽ बहल छै।

–ओ अहाँ कहि बहल छी, अप्पन मोनसँ। बुझनिऐ। किछु बजाउ नै हमबासँ। बघुनाथ उठल आ आंगनमे टहलऽ लागल।

नील भागि गेल छल हुनकर। ओ कोनो निर्णय

नै कऽ पारि रहल छल। ओ गामसँ सेहो तंग भऽ गेल छल मुदा ओकरा छोड़ऽ नै चाहै छल। मन लगल छलै कॅ◌ालोनी दिस जागल छलै- जीवनक नव दिस, नव जिनगी दिस, साफ-सुन्दर पक्का मकान आ अनकतरा छावल सड़क दिस, गंगाक घाट दिस, अनचिन्हार नव संबंध दिस। ई आकर्षण छल मुदा उम्हर जाएमे भऽ रहल छलै जे कतौ एना नै हुअए जे पछुआरक जमीन हाथसँ निकलि जाए, रिन देख-रेखक मकान ढहि जाए, सनेही चोरी आ बेइमानी शुरू नै कऽ दिऐ, कतौ लोक सदा लेल गामसँ गेल नै मानि लिअए। आ एहन करहएरबा तँ कम नै हएत जे गाम छोड़ि कऽ भागि गेल। एकबासँ पैघ जगहंसाग आर की भऽ सकैत अछि।

ओ आंगनक चक्कर काटैत ओतऽसँ ठाढ़ भऽ गेल जतऽसँ खपरैलसँ ऊपर उठैत चन्द्रमा लखाइ दऽ रहल छल। ओ ओकरा देखऽ लागल जेना गाम छोड़लापर फेर नै लखाइ देत- बाबा ओकरेसँ पूछि रहल अछि- आ तखन की करबाक चाही।

ई चैत मासक बाति छल। दशरथ यादव अप्पन दरबाजाक आगू नव शिव मंदिर बनौने छल। पछिला दस घंटासँ ओतऽ अखंड हरिकीर्तन चलि रहल छल। कीर्तनिया मंदिरक बगलमे ठाढ़ नीमक गाछपर लाउडस्पीकर बान्हि देने छल आ समूचा गाम हरे राम, हरे राम सँ दनमनित छल। ई एकरस गूंज ओकर मनकेँ भावी कऽ रहल छलै।

-अहाँ जाउ, हम एतऽ रहब, अप्पन घरमे। सुनलिऐ। ओ ऊँच आवाजमे शीलासँ बाजल।

-अहाँकेँ असगरे छोड़ि कऽ। नै बाबा नै,

पता नै की भऽ जगतए। शीना ओतऽसँ बाजल- आ ऊँ घर तँ सेहो अहाँक छी। संजू की कहैत छल। हम चाहैत छी जे मम्मी-पापाक अंतिम दिन काशीमे बितए। चैनसँ बितए। जखन समए आएल अछि तँ ना-नुकुर कऽ रहल छी। सोनल दोसर नै अछि, प्रतोष् अछि अपन।

-अहाँ, बुझै किए नै छी। सोनल प्रतोष् अछि, घर प्रतोष्क अछि, अपन नै। कोन ऐकातिसँ जाएब हम। पाहुन बनि कऽ। किबाएदार बनि कऽ। कोन ऐकातिसँ।

ओग दिस ध्यान नै गेलै शीनाक। ओ कनी कान अचकचाएल, फेर बाजल- ठीक अछि, ह्नकर घर तँ अछि मुदा संजू तँ अछि नै। ओ हम्मर बेटो अछि। देव-सबेर तँ आबए पड़त ओकरा। बाजूकेँ रएह नै कहै छल जे पापा-मम्मीकेँ पठा दियौ। आ सोचू जे प्रतोष्क घर की हमर नै अछि ?

बघ्नाथ चुप रहल। किछु नै बाजल।

-देखू, अपना सभ चलू। एहन नै जे घरकेँ छोड़ि कऽ जा रहल छी। कहियो घुरि आएब ऐमे। जखन परेशानी हएत तँ आबि जाएब। खेतीक जिम्मा तँ सुनीकेँ देने छी। बहि गेल घर तँ दस बिस्सा खेत आब दऽ दै छी गनपतकेँ। कमबा बँद कऽ दबराजाक ताना ओकरा दऽ दियौ। साफ-सफैयत आ देखभाल करैत रहत।

शीनाक गपमे दम नखाह देनक बघ्नाथकेँ। ह्नका चाबि दिन बाँद जेबाँक छल पेंशनक काजसँ। दिक्कत केरल ओ छल जे गनपत मिजप्पिर गेल छल अपन बेटो नग।

तँ एहन करू शीना, अहाँ तँ सोनन नग कान्हि चलि जाउ। हम एतुक्का व्यवस्था कऽ पाँचम दिन पहुँचब। पेंशन ऑफिसमे अप्पन काज निंघटा कऽ सोझे अशोक नगर आबि जाएत। कोनो जरूरी गप हुअए तँ फोनपर खबर कऽ देब। अबे हँ, फोनक कनेक्शन सेहो तँ कटौबए पड़त। छोड़ू, अहाँ अपन तैयार करू, गहूम, चाउर, दालि, घी, अचार। कनी-बेसी जे नऽ जा सकब, नऽ नेब।

*

बघ्नाथ बाजल पाँच दिन क्षदा नागि गेल पचास दिन।

ओगमे ओकर कोनो दोष नै छल। सोचने छल जे जखैन जेबाके अछि तँ एतुक्का सभटा समस्या स्वनन्‍ना कऽ गेल जाए, ओ नै हुअए जे बनी ओतऽ आ मन नागल बहए एतए।

बड़ बास सोचि-विचार कऽ ओ फैसला नेनक जे रूकल पेंशन हुअए वा आबादीक जमीन, जखन अही दुनूक जड़ि मे मैनेजर अछि तँ हुनकासँ एक बेर भेंट कऽ नैमे की हर्ज अछि। जौँ एतबेँ टा सँ हुनकर ओगो तुष्ठ हएत तँ कहएमे की खबापी अछि। आग जे किछु छी, अहीक कारण छी, नोकरी नै देने हेतिऐ तँ जानि कतऽ हेतिऐ। जखन बनैने छिऐ तँ बिगाड़ि नै कबियौ।

आब स्थिति सेहो बदलि गेल छल। मैनेजरक बेटीक बियाह भऽ गेल छल बनमंत्रीक ठिकेदारक बेटासँ। ओ पड़ासी जिलाक छल। मैनेजरसँ ढुँच स्टैटसवना। आब बघ्नाथसँ शिकायतक कोनो कारण

सेहो नै बहि गेल छल। ओ मिठाइक पैकेट आ सेव, संतोला आ अंगूरक संग पहुँचल तँ मैनेजर, जकरा लोक सरकार कहैत छल, नीक मूडमे छल। रघुनाथकेँ देखैत ओ छुट्टल कहैत कहलन- मास्टर। अहाँक स्वास्थ्य देखि कए लागैत अछि, जे शुरूसँ दरमाहा नै लए कए पेंशन लेबाक चाही छल। जरूरी तँ आब आएल अछि अहाँपर।

–सरकार।– रघुनाथक मुँहसँ निकलल आ ओ कानए लागलखिन।

–की। की भेल ? आइ धरि लो-ब्लड प्रेसर तक नै भेल की ?

मैनेजर चौंकि कए पुछलक आ प्रिंसिपलकेँ फोन केलक। फेर कहलन- जाउ, चिंता नै करू। भए जाएत। आर किछु ?

रघुनाथ लजेलै आ रब्बन सिंहक सभटा किस्सा कहलक। ओ चुपचाप सुनैत रहल। कनी काल कहलन ओ कहलन- जखन ओ अहाँक घरक छल तँ कहाँ किए देलिऐ। गलती तँ अहींक अछि।

रघुनाथ किछु नै कहलन। हुनका ई कहबाक ठीक नै लागल जे कहबाक लोककेँ तँ कखनो हटाएल वा भगाएल जा सकैत अछि मुदा हुनका मुश्किल हएत। ओ एतबे टा कहलन- हँ, गलती तँ भए गेल। आब किछु केलो नै जा सकैत अछि।

–अहाँ समस्या ठाढ़ करैत रहू आ हम निपटारा करैत रही, यएह ने।

मैनेजर एस.डी.एम.केँ फोन केलक आ गम्भीरतासँ किछु बुझेलक।

रघुनाथ ओतए काल माथ झुकेने बैसल रहल।

–ঋার্ব কোন সোচমে ছী। জাউঁ ঋা ৱর্ব্বন সিংহকেঁ পঠা দের্ব।

ও উঁঠন ঋা ৱাঁথক্ষমমে চনি গেন। জাগত–জাগত কহনক– ভহ সকৈত ঋছি এস.ডী.এম. আঁফিস দৌড়এ পড়এ একাধ ৱেঁব। দৌড় াএর্ব ঋা ঋহাঁসঁ কিছু ৱাঁজএ তঁ হ্নকা ঋাগূ ৱঁড় সিদ্ধাঁতরাদী ৱনৈক জক্ষবত নৈ ঋছি। সর্বহক কিছু নে কিছু মজৰ্বূবী হোগত ঋছি। ঠীক।

ৱীস–পচীস দিনক দৌড়–ধূপক ৱাঁদ এক দিন এস.ডী.এম. দূটা সিপাহী ঋা নেখপানক সংগ ঋাএন– জবীর্ব ঋা গামক নকশা নহ কহ ঋা সর্বহক ঋাগূ জমীনক পৈমাগশী কেনক। ঐৱেঁব জমীনক ও হিস্সা সেহো বঘ্নাথক হকমে নিকনন জে নবেশীক ঘব–দ্ঋাব ছন। একব মতনর্ব ঙা ভেন জে বঘ্নাথ চাহএ তঁ নবেশীক ঘব–দ্ঋাব গিবা দিঋএ ৱাঁ বহএ দিঋএ ঋা ওক্ত জমীনক দাম রসূনি নিঋ।

ওকবা বঘ্নাথক ভনমনসাহত পব ছোড়ি দেন গেন।

ঙা হ্নকব ৱঁড় পৈঘ সফনতা ছন– নিশ্চিংতী সেহো। পাপড় তঁ ৱঁড় ৱেঁননে ছন ক্ষদা সম্মান ঘ্বি এনৈ। ঋার্ব ও ৱঁনাবস জা সকৈত ছন মাস– দূ মাসক নেন। ক্ষদা জোঁ মন নাগি গেনৈ তঁ সংদেশী ঋা ফোনা–ফোনীসঁ কাজ চনি জেতৈ।

ও জাগক তৈযাবী শ্বক্ষ কহ দেনক ঋা তৈযাবী কী কবৱাঁক ছন। বাশিন নেনক। দূ টা ছোট–ছোট ৱোঁবামে ঋনগ–ঋনগ ঋন্নূ ঋা পিযাজ্ ছনৈ। চাবি ৱঁজেক ৱঁস নেন তৈযাবী কহ বহন ছন জখন ৱাঁহবমে ডাঁট ডপটিক ঋারাজ স্বনাগ দেনকৈ।

निकनन तँ देखनक- जयनाबायण मानें जग्गन। बॅड़ उँखड़न छन आ कसन। हुनकब एक हाथमे कन्नूक कान छन आ दोसबमे दू टा ॲधपक्कू आम। डबन कन्नूकेँ पकड़ि कऽ सनेहीक मोपड़ाक आगू ठाढ़ छन- सनेही, सनेहिया बे।

भीतबसँ सनेहीक स्त्री निकनन- की ॲछि मानिक ?

ओ झपटि कऽ कन्नूकेँ खिंचनक, दू थापड़ हेब झक्का माबैत आ धकियाबैत भीतब ठेन देनक। ओ कानैत भीतब चनि गेन।

मामना ब्रुझैत देब नै नगनै बघुनाथकेँ। घबेनमे सबॅहक दबराजाक आगू नीमक गाछ ॲछि, ॲसगबे बएह टा ॲछि जकब दबराजाक आगू आमक गाछ ॲछि। टिक्कना नागैसँ नऽ कऽ ओकबा पाकै धबि, जकब नौबॅति शागतेँ कहियो आबैत छन। घबानाक छौड़ा सभ हाथमे ढेना न्बका ओकब चक्क दिस घुमैत बहै छन आ जग्गन ताधबि ओकब नीचाँ खाटे बाखि कऽ पड़न बहैत छन जाधबि गर्मी बॅदर्शित होएब जोग बहैत छन। दब-दियाद भबि केँ कऽ चटैनी, ॲचाबक काज हुनकब नाख प्रयासक बाँदो ओकबेसँ चनैत छन। गन्हबसँ ढेना चनैत छन, उँम्हब जग्गन पकड़ैक घातमे बहैत छन। एक कऽ पकड़ैत ॲछि, तीन टाक मौका भेटे जाएत ॲछि। हुनकब आ छौड़ा सबॅहक ब्यस्तता कहियो-कहियो डेढ़-दू मास धबि चनि जाएत छन।

-आउ, आउ जग्गन। हमबासँ कहू की गप ॲछि।

-काकी ॲछि आकि नै, आबॅए तँ आबी ॲहाँ कतए।

–आउ, रौसू तँ सही। ओ जग्गनक आगू खटियापर रौसि नेन गप्पपा केनक आ भोर पाड़नक नोपड़ कि आगू ठाढ़ सनेहीक स्त्रीकेँ।

–जग्गनकेँ सत्तए घोबि कऽ पियारियो। स्वबाहीक पानिमे रँनाएरँ।

जग्गन कनी स्थिर भेन आ रौसि गेन। फेर अप्पन बंगीक फाँड़सँ तमाकुनक डिब्बा रहाब केनक आ मिड़ए नागन। रॉजन– मास्टर कक्का, अहाँ गा रँड़ पैघ गनती कऽ देनौं। कोणबी–कहावकेँ अप्पन रीचमे रँसा कऽ अहाँ रँड़ पैघ गनती केनौं।

–ऐमे गनती की अछि ?

–अरे, अहाँकेँ नखाम नै दैत अछि। अही रॉटे देने हम दिन–बाति आरौ–जाग छी। गा रौसन तँ रौसन अछि, पटोयन अछि तँ पटोयन अछि। पैघ नोगक रीच बहैक सउँब नै छै। आ हिनकर रैटो।

रीचे मे बघुनाथ टैकि देनक– देखू जग्गन, फानतूक गप अछि गा। समै–कान रँड़ रँदनि गेन अछि। आग मानसिक रूपसँ रिकनांगे एहन गप करैत अछि। कोन गपक पैघ छी अहाँ। प्रबखा, जमीन आ जातिक भबोस। छब्बूक हनाक रॉदो गा भ्रम अछि तँ बाखने बद्धू। पछिना दिन अद्धूँ अप्पन खेत रौचनिऐ। ठाकुबमे सँ कियो किए नै किननक। किननक तँ आखिर जसरंते। आगयो हम्मर अहाँक खेती ओकरे भबोसे होगत अछि, ट्रैकटैर ओकरे नग अछि, टैका ओकरे नग अछि। रिधायक ओकरे अछि, सांसद ओकरे अछि, सबकार ओकरे अछि, ओकागतो ओकरे नग अछि, कोनो काजक नेन पैबरी कबरॉक होगत अछि तँ अहाँ ओकरे नग जाग छी, तकर रॉदो पैघ नोक छी

থ্রহাঁ। এহন গনতফহমী পোসরাঁক থ্রছি তঁ পোসনে বদ্ধু। হঁ, ওা জরুব থ্রছি জে ও দোসব গামক থ্রছি, পবাযা থ্রছি, থ্রধিযা দেরাঁকে থ্রছি তঁ ওকব রঁদনা কোনো থ্রপ্পনকেঁ দেরাঁক চাহী ছন। থ্রারঁ থ্রহী রঁতারিঁযৌ, কে থ্রপ্পন থ্রছি জকবা দৈতিঐ।

জগ্গন গ্বম্ম বহি গেন। বঘ্নাথ সভসঁ নগক পড় াসী ছন। নবেশ ওকবে ভাগক রেঁটৌ, জকব নজবি রঁবারঁব পছথ্রাবরঁনা জমীনপব ছনৈ।

কনী কান গংতজাবীক রাঁদ বঘ্নাথ রাঁজন- দেখূ জগন, পবাযামে থ্রপ্পন ভেঁচ জাগত থ্রছি হ্মদা থ্রপ্পনমে থ্রপ্পন নৈ ভেটৈএ। এহন নৈ ছন জে থ্রপ্পন নৈ ছন। ছন হ্মদা তখৈন জখৈন সমাজ ছন, পবিরাব ছন, সব-সমাজ ছন, জখন ভারনা ছন। ভারনা যএহ ছন জে ওা ভাগ ছী, ওা ভাতিজ ছী, ভতীজী ছী, ওা কক্কা ছী, ওা কাকী ছী, ওা পীসী ছী, ভৌজী ছী। ভারনামে কমী হোগ ছন তঁ ওকবা পূবা ক২ দৈত ছন নোক নাজক কাবণে। নৈ তঁ এনামে নোক কী কহত। মাত্র ভারনা ছন, গণিত নৈ, নেন-দেন নৈ। ঐরাঁচ সত্তূক ঘোব দ২ ক২ গেন সনেহীক স্ত্রী, বঘ্নাথ চ্প ভ২ গেন। ওকব গেনাক রাঁদ ফেব শ্বক কেনক- থ্রারঁ থ্রহী কদ্ধু, নবেশসঁ রেঁসী কে থ্রপ্পন ছন। সোচনে ছন, ওকবা দ২ ক২ নিশ্চিংত ভ২ জাএরঁ। হ্মদা ওকব নেতপব শিক ছন, রঁড় া কান পহিনেসঁ। থ্রা ওকবা নৈ দ২ ক২ নীক কবনিঐ। নৈ তঁ সে দিন সেহো থ্রগতিঐ জখন থ্রপ্পন খেত কী, গামমে ও ঘ্সৈ নৈ দৈতিঐ। থ্রা কহৈক জরুবত নৈ জে ওগ কান থ্রদ্ধুঁ হমব নৈ, ওকব সংগ দৈতিঐ। হঁ, সনেহীকেঁ হম জানৈ ছী। ও থ্রপ্পন কাজসঁ কাজ বাখএরঁনা নোক থ্রছি। থ্রহাঁ থ্রাব

ককবো শিকাগত হ্খএ তঁ ৰ্তাএৰ্। মৌকে নৈ দেত, ৰ্তাএৰ্ কী ?

*

ও ঘব, জকবা বাঁচীক প্রাফেসব বাজীব সক্সেনা বিৈাযব ভেনাক ৰাঁদ খপনা বৰ্চ নেন ৰ্নাবসমে ৰ্নৰ্নেনে ছন খা জকবা খপ্পন ৰ্নৈী সোননক নাম কঽ দেনে ছন, ও খশোক রিহাবমে ছন।

ৰ্নাবসমে মোহন্না ছন, রিহাব খা ক◌ॉনোনী নৈ। একব নির্মাণ শ্বৰু ভেন ১৯৮০-৯০ ক খাসপাস জখৈন পূর্বাঁচন খা রিহাবক ভূ-মাফিযা খা ৰাঁহ্ৰ্নীক উঁদয ভেন। ও নগ্রক দক্খিন, পছিম খা উঁত্তব দিস ৰ্সন গামকেঁ কিননক খা ওকব প্লাট্টিং কঽ ৰ্নৈচৰ্ শ্বৰু কঽ দেনক। দেখৈত-দেখৈত ১৯-২০ ৰ্বখক ভীতব গামক খস্তিত্ব খতম ভঽ গেন খা ওগ ঠাম নর-নর নামক সংগ নগব, ক◌ॉনোনী খা রিহাব ৰ্সি গেন।

ঞা নর ৰ্নাবস ছন- মহানগব সন।

মোহন্নামে বহএৰ্না মোহন্নমে বহন। খপ্পন প্ববখাক কাজ-ধংধা, দোকান, বোজগাব খা ঘাৈক সংগ। ঋদা ঐ ক◌ॉনোনীমে ৰ্সঽৰ্না ৰ্নৈসী নোক নর নাগবিক ছন।

ও ৰাঁহবসঁ খাএন ছন। খগন-ৰ্গনক জিনাসঁ। সৌ-পচাস কি.মী. দূবসঁ। হ্নকব নগেমে গাম ছন, থোড়-ৰ্নৈস জমীন ছন, খেতী-ৰাঁবী ছন। হ্নকা সমএ-সমএপব ৰ্নাবস খাৰ্বঽ পড় ৈত ছন-কহিযো কোৰ্ট কচহবীক কাজসঁ, কহিযো খস্পতানক কাজসঁ, কহিযো তীর্থ-ৰ্বত নেন, কহিযো শাদী-রিযাহক খবীদাবী নেন, কহিযো নেনা সৰ্বহক এডমিশন খা পঢ় াগ কবৈক নেন। ৰ্নৈব-ৰ্নৈব খারি কঽ ঘ্বএসঁ নীক ছন জে এতঽ ঠহবৈক

आ करैक एकटा स्थाओ ठाम छ्थिए, एकटा डेरा छ्थिए।

ऐखनो ओ ओकरा सभ लेल संभव छल जकरा लग अप्पन कोनो छोट-मोट नोकरी अछि, आ ओकरा लेल जकर रौटा सभमे सँ कमसँ कम एकटा राशन कार्ड बनल छ्थिए। जकर लेना सभ गाममे रहैत छल छ्थिए आ ओतह नै बसए चाहैत छ्थिए, शहरक आदति लागि गेल छल आ अप्पन हित ऊँच्चरे देखह चाहैत छ्थिए।

ऐखनो गाममे ओगमे सँ किछु पहुँचि बसल छल कनी-कनी, जे शहरमे छल- बिजली सेहो, नल सेहो, फ्रिज सेहो, फोन सेहो, टीवी सेहो, अखबार सेहो। ऐखनो ओ मजा नै छल जे शहरमे छल। मजा छल तँ ओकरा लेल जकरा लग ट्रैक्टर छल, थ्रेशर छल, पंपिंग सेट छल, रोजगार आ सफारी छल, जे खेतीक पेटैक लेल नै, व्यवसाय लेल कह बसल छल, जे एक नै, एक संग सभ राजनीतिक पार्टीक हितैशी आ मददि केनिहार छल।

एहन लोकक कॉलोनी सेहो दोसर छल- नम्बर- चौड़गर प्लाटवाला।

ऐखनो अशोक विहार छ्लकर कॉलोनी छल जे अध्यापक छल, डॉक्टर छल, दोसर श्रेणीक सरकारी, गैर-सरकारी कर्मचारी छल आ एकरासँ खास गप ओ छलै जे या तँ रिटायर भह चुकल छल या निकट भविष्यमे रिटायर होबवला छल।

नै तँ अखबारमे कोनो विज्ञापन, नै कोनो चौकपर ऐ लह कह कोनो होर्डिंग जे ऐ कॉलोनीक प्लाट छ्लके बेचल जाएत जे पचास-पचपनक ऊपर हएत आ जल्दिये रिटायर हएत। ऐखनो जानि ने कोना

ভেল জে জখন ক◌ॉনোনী তৈযাব ভেল তঁ ভেল জে ঙা বুঁঢ়ক ক◌ॉনোনী ছী। এহেন বুঁঢ়-বুঁঢ় াক জিনকব বেঁটা-বেঁটী খপ্পন স্ত্রী খা নেনা সবঁহক সংগ পবদেসমে নোকবী কঽ বহন খছি-কিযো কোনকাতামে খছি, তঁ কিযো দিল্লী, কিযো ঋংবঁঙা তঁ কিযো বেঁগনৌব তঁ কতেক বাস তঁ রিদেশমে।

হ্নকব দ্খ খপবম্পাব ছন। ও বেঁটা-বেঁটী নেন খপ্পন গাম ছোড়ি দেনে ছন, খপ্পন জন্মভূমিকেঁ। ঙা খপনা নেন তঁ ঠীক, চাহে জনা বহি নিখএ, ঋদা হ্নকা নেন নৈ। নহিযে রিজনী, নহিযে পানি, নহিযে নিখাগ-পঢ় াগ, নহিযে খাবেঁ-জাগক স্বরিধা। ঘব হ্খএ তঁ এহেন ঠাম জতঽসঁ খেতী-বাঁবীপব সেহো নজবি বাখন জা সকএ খা বেঁটা-বেঁটীকেঁ সেহো খস্বরিধা নৈ হ্খএ। ও খপ্পন ঠাম জমীন, সংবঁধ, সংগী-সাথী, বাঁগ-বঁগেচা, ড্বঁবা-পোখবি ছোড়ি কঽ জগ সংতান নেন খাএন, বএহ বাঁহেব খছি। এতঽ ধবি তঁ ঠীক ছন, ঋদা খাবঁ হনাত ঙা খছি জে জতঽ সর্রিস কঽ বহন খছি, ও ওগ নগ্রমে বমি গেন খছি খা ওতঽসঁ ঘ্বি কঽ এতঽ নৈ খাবঁঽ চাহিত খছি। জোঁ ও খাবঁএ চাহিত ছন তঁ হ্নকব বঁচা সভ নৈ খাবঁএ চাহিত খছি।

নিখ, ঙা নর খাফত।

জকবা নেন ঘব ছোড়নৌং ওকবে খপ্পন খনগ ঘব।

ঙা নর খাফত হ্নকা জিখ নৈ দঽ বহন খছি, নহিযে মবৈযে দঽ বহন খছি। গামপব দাদা-প্ববখাক জমীন-জেদাদ। বাঁপ-দাদাক ধবোহেব নৈ দেখূ তঁ কখৈন দোসব কর্জ্জা কঽ নেত কহবঁ ঋশিকন। প্ববখা সভ তঁ এক-এক কৌড় ী বঁচা কঽ, পেটৈ কাটি কঽ,

জোড়ি -জোড়ি কऽ জেনা-তেনা জমীন ধঁড়া নে ছল। চাবি কऽ পাঁচ কেনে ছল, তীন নৈ হুখএ দেনক খা তঁএ ওা হান খছি। কনীঠা গম্হব-উম্হব ভেল তঁ খাড়ি গাএবঁ। মহীনা-দূ মহীনামে কমসঁ কম এক বেঁব গামক চক্কব নগাবৈত ছল। দেখ নিখ নোক, জে নৈ খছি। ধ্যান বাখএ। হান চান নৈত ছেম-ক্ষশৈন-মংগন প্বছৈত। দুখ-স্বখমে জাগত, সভসঁ বঁনা কऽ বাখূ। খধিযা যা বঁঠৌগপব খেতী তখনে কব্ধ। দিযাবাঁতী বাঁ ঘব দুখাবক দেখ-বেখ নেন কোনো নৌকব-চাকব বাখূ তখনো।

হুনকব বেঁঠৌক নেনপন গামমে বীতন ছল। নগ্রমে পঢ়ৈত কান সেহো ও খাগত-জাগত বহন ছল গামমে। ও খেতী ভনে নৈ কেনে হুখএ ক্ষদা হুনকা ওা পতা ছল জে হুনকব খেত-পথাব কোন ছৈ, ধানক, গহুমক, দনিহনক। হুনকা খোড়-বহুত জানকাবী ছল। খেনা-ধূপী বাঁ কৌত্তহুনমে বাঁপ-কক্কা সংগ বহি কऽ ও খগোব কেনে ছল, বোপনী-কঠৌনী সেহো দেখনে ছল। নোক সেহো জানৈত ছল জে ওা ফনানাক বেঁঠা যা ভাতিজ খছি। গাম ঘবসঁ মাযা-মোহ নেন এতবেঁ কম নৈ ছল ক্ষদা হুনকব বঁচা। ও তঁ দাদা-দাদীকেঁ ছোড়ি কऽ চিন্তি ককবা ছল ? খা দাদা-দাদীকেঁ সেহো চিন্তি কতऽ ছল। চিংতা ওকবা হোগ ছৈ জকবাসঁ মোহ হোগ ছৈ, প্রেম হোগ ছৈ। পবিচএ খা সংবঁধ নৈ তকব কী চিংতা। খেত সেহো ওকবে চিন্তিত খছি জে ওকবা সংগ জিযৈত-মবৈত খছি। ও খেতকেঁ কী চিন্হত, খেতে হুনকা চিন্হএসঁ মনা কऽ দৈত খছি।

ওা সভঠা গপ বেঁঠা সবঁহক নজবিমে বূঁঢ়ক ভাঁসবঁ ছল। খহাঁ মাটিমে পৈদা ভেনৌঁ খা এক দিন ওগ

माटिमे मिलि जाएत। कहियो ओइसँ छूटैक वा ऊपर उठैक वा आगू बढ़ैक गप अखनोंक दिमागमे नै आएल, किएकि ओइमे गौरव नै माटि छल। की कइ लेलौं खेती कइ कए अखनो। कोन युद्ध जीत लेलौं। खाद महग, बीज महग, नहरमे पानि नै, मौसमक भरोस नै, बड़द नै रहल, भाड़ापर ट्रैक्टर समएपर भेटए नै। हरवाह आ मजूर रहल नै। ककर भरोसे खेती करू आ खेती सेहो तखन करू जखन हाथमे बाहरसँ चारि पाइसा आबए। की फाएदा एहन खेतीसँ।

असल चीज पाइसा अछि। जौं हाथमे पाइसा हुअए तँ ओ सभटा जिन्स बिना किछु केने बजारमे भेटि जाइत अछि, जकरा लेल अखनो राति-दिन खून-पसीना एक करैत छी। बिना किछु केने, बिना किछु करेने।

सभटा गप आ सभटा झगड़ा। बेटीसँ चलि रहल छल, गामकेँ नइ कइ। ऐ दा आब नइ आहत। अशोक बिहारक मकानक की हएत। ओ जतइ अछि, ओतइसँ आबइ नै चाहैत अछि।

अछि तँ ई जे हुनकासँ गाम तँ छूटिये रहल अछि, अशोक बिहार सेहो ने छूटि जाए।

*

अशोक बिहारक लेल नंबर ४ क डी.१ मे अमेरिकासँ आएल सोनल सकुना रघुवंशी, तीन बरख बाद।

हुनकर डैडी आएल छल सोनलकेँ सेंट्रोसँ पहुँचाबै आ विश्वविद्यालय ज्वाइन करबाबै लेल। एतबे टा नै, हुनका भरि बहि कइ सभ चीज ठीक-ठाक केलक, ओकरा सजेलक-धजेलक, भोर-साँझ बेटीकेँ चाह पिएलक, ओकर दिनचर्या निर्धारित केलक आ विदा होइसँ

পহिনে ওকবা সনাহ দেনক। সংজূক মম্মী–পাপাকেঁ ৰজো নিখ, ও কাজ খাএত। ঘব সেহো দেখত খা খহাঁকেঁ মদতি সেহো কবত।

যএহ ৰাজন ছন সংজয সেহো খমেবিকাসঁ ৰিদা কবৈত কান।

–হম দ্নূ ভাঁয ৰাহবে ছী, মম্মী–পাপা গামমে খসগবে খছি। ঐ ওঁমেবমে হ্নকা সহাবাক জৰুবত খছি, হ্নকা সংগে বাখৰ।

ওা পহিন্বক বাতি ছন জখন ও ঘবমে খসগবে ছন। দেব বাতি ধবি ঘব খা খপ্পন ৰেঁডৰুমমে সংগীত স্বনৈত বহন। এক কৈসেট্টক ৰাদ দোসব কৈসেট্ট। শাস্ত্রীযসঁ মোন ভবিতিঐ তঁ খৰ্ধশাস্ত্রীয, ওগসঁ মোন ভবিতিঐ তঁ ফিল্মী গানা। পঢ়ৈত বহিতিঐ, স্বনৈত বহতিঐ। ৰত্তী মিঝা কঽ স্বতৰাক খাদতি ছনৈ। ৰেঁডৰুমকেঁ ছোড়ি কঽ খান কোঠনীক ৰত্তী ৰবৈত ছোড়ি দেনক খা পটা গেন।

স্বন–সন্নাটাক সেহো খাৰাজ হোগত খছি খা সে নীক কম, ভযৌন ৰেসী হোগত খছি। এতবে টা নৈ। ওা খাৰাজ স্বনাগযে টা নৈ, নখাহ সেহো দঽ বহন ছন। হ্নকব ঘবক খাগূ পার্ক ছন– ৰড় পৈঘ। পূবা মোহন্না যা কহিযৌ ক◌ॉনোনীক। জখনসঁ খাএন ছন, তখনেসঁ ভোব–সাঁঝ দেখি বহন ছন। ও তীন ৰবখসঁ এহন দ্নিযামে বহি কঽ খাএন ছন জতঽ খন্হাব নৈ হোগ ছন। জতঽ ৰূঢ় নৈ বহৈ ছন। জতঽ সভটা চীজ দৌড়ৈত–ভাগৈত ওঁছনৈত–কূদৈত নজবি খাৰৈত ছন। জগমে পানি ছনৈ, তেজী ছনৈ। জতঽ জৰান খা জৰানী খা তবহ–তবহক বংগ ছনৈ। জতঽ কোনো চীজ খপ্পন ঠাম ঠাঢ় খা স্থিব নৈ নখাহ দৈ ছন– খা

आबि ओ पार्क आ ओ कॉलोनी।

बूढ़, अपंग आ बिकलांग ओ बिहाव।

हुबहबीक ऐ मासमे खिड़की आ दबराजापब थाप दैत बसंती हवा आ पार्कमे घिसियाएत, उड़ैत सूखल, मड़ल मृत सन पातक चबमब शब्द।

मानि निषो ककबो घबमे कोनो चोब पैसि जाए। ककबो की, हमबे घबमे चोब पैसि आबिए आ सेहो अधसगबे। बिना कोनो संगीक, औजाबक, डाकू पैसि आबिए बिना बाधक्रन-बंदूकक अधसगबे। बाति-बिबाति तँ छोड़ू, बीच दुपहबियामे। कोनो बनाकोबी पैसि आबिए दिनेमे आ हमबा उठा कऽ चलि जाए पार्कमे, आ हम चिकड़ो जे बचाउ-बचाउ तँ के सुनत (बैसी बूढ़ या तँ बहीब अछि या ऊँच सुनैत अछि)।

के दौड़त (बैसी बूढ़ ठेहुन या जोड़क दर्दसँ पबेशान अछि)।

के देखत (बैसी बूढ़ तँ मोतियाबिंदक आपबेशन कबा कऽ आँखिपब हबियब पट्टी बान्हने छल), ओ सभ नै कऽ सकए तँ ठाढ़ भऽ कऽ चिकबए तँ सही (बैसी कऽ डाँड़ झुकल अछि आ मुँहमे दाँत नै, ओ घिघिआ तँ सकैत अछि, मुदा चिकड़ि नै सकैत अछि)।

ऐ सोचसँ सोननक भौंआ ठाढ़ भऽ गेलै। ओ कोनो अनजान डबसँ सिहबि उठल।

फेब एकाएक ध्यान गेलै फक्कुब दिस। फक्कुब बड़ बास छल कॉलोनीमे- सभ सड़कपब, सभ गेटक बाहब बैसल या घुमैत नखाह दैत छल मुदा एतऽ एक्के टा 'मुदा' छल। एखुने दिनसँ ओ ककबो भूकैत नै सुनने छल। ओकबे मकान डी-१ क गेटपब एकटा भूबा बैसल बहैत छल मुदा जखन जाउ, कखनोसँ जाउ-

गेटसँ चुपचाप हटि जाइत छल आ दोसर ठाम कनी हटि कऽ बैसि जाइत छल।

कॉलोनीक बँगिदाक अनाएँ किराएदार सेहो अछि- सभ घरमे। नीचाँ मालिक, ऊपर किराएदार। किछुमे देसी, किछुमे विदेशी- ओइमे बेसी जापानी, कोरियाइ वा थाइ। विद्यार्थी वा ट्रेनिस्ट अप्पन काजसँ काज राखैत छल। ओकर अनाएँ ओ कर्मचारी अछि जकर कोनो समए बँदली भऽ सकैत अछि। यानी ओ जिनकर दिमागमे मकान कइटा करबाक गप नै आबँए। एहन लोकक मोहल्ला, लोकसँ की लेन-देन, हुनका सभकेँ अपनेसँ फुर्सत नै छनि।

एहन तरहक जे ओकरे घर की, कॉलोनीक कोनो घर- एतए धरि जे कॉलोनीक कॉलोनी दिनमे लूटि कऽ लऽ जाए, बोकै-टैकैबँला किछो नै भेटैत।

सोचैत-सोचैत लागल जे ई खाली एकटा सोच नै अछि- एकटा हॉरर फिल्म अछि, जे ओकर आँखि देखि रहल अछि। ओ पार्कमे ठाढ़ैत, चिरी-चोथ होइत जा रहल साड़ी-ब्लाउजमे लम्हर-ऊम्हर भागि रहल रहए- जोरसँ गरजि रहल रहए, मुदा किछो अप्पन घरसँ निकलिये नै रहल अछि। ककरो सुनाइ नै दऽ रहल अछि तँ निकलत कतऽसँ।

उठि कऽ चाटैकि कऽ ओ बँत्ती जरेलक आ फिल्म खसे। साँसमे साँस एलै। कैसेट लगेलक। दुर्भाग्यसँ कैसेट तेहेन निकललै जकरा ओ नै सुनऽ चाहैत छल, नै सुनले रहऽ चाहैत छल-

रक्स ने किया, क्या हँसी सितम, तुम रहे न तुम, हम रहे न हम।

ओ कोनाक सोननकें सबीव देने छल- तीन रवख पहिने, रिंगाहक विसेज्शनक दिन। तखैन ओकरा नै तँ एकवा देखैक खगता भेलै आ नहियें स्वनैक। ओकरा सदिखन अपना नग बाखनक स्पृहा कहियो नै स्वननक। आग ओ स्वनैत ओकरा नागि बहन छलै जे कक्ष रबदनि गेल ओग गीतक अर्थ आग। ओ संजयक कोनो चर्चा नै केनक अप्पन डैडीसँ, जानि-बूझि कऽ। ओ द्वन्दएक मवीज अछि, हुनका ठेस नागितिऐ। जौं विश्वविद्यानयक सविसि नै भेटैन हेतिऐ आ ओ अमेविकामे बहि गेल हेतिऐ तँ की हेतिऐ।

गनती कतऽ भेल आ ककवासँ भेल- ओ बूझि नै सकन।

आवती गर्जव ओकव नैंडनाडिक रहैछ। ओग कॉन सेंटवमे काज कवैत छन जगमे संजय कवैत छन। संग आएब-जाएब ओकवे कावसँ होग छनै। दिन-वातिक संग। आश्चर्य ओ छन जे आवतीक माए-बाप हुनका एक-दोसवाक कवीब आबैत देखि बहन छन, तकव बादो चुपचाप छन। आश्चर्य ओ छन जे ओकव सभक आँखिक आगू ओ हँसी कवैत छन- निर्लज्जताक सीमा धवि आ ठेकनापव हँसऽ नागैत छन। आ एकवोसँ पैघ आश्चर्य ओ छन जे आवतीक पति जखन कहियो न्यूयार्कसँ आबै छन तँ ओ अप्पन पतिसँ ओकव ब्वॉयफ्रेंडकें नऽ कऽ गप कवैत छन आ ओकवा डिनवपव नऽ जाग छन। जाए तँ संगमे ओ सेहो, स्पृहा ओकवा सदिखन नागैत छनै जे नै जगतिऐ तँ बैसी नीक बहतिऐ।

ओ एकटा एहन समाजमे आबि गेन छन जगमे डॉनवकें छोड़ि कऽ कोनो आन चीज जना प्रेमक

नेन ओर्ष्या कवरॅ पछएरॅाक निशानी छल।

ओ जखन संजयसँ ओकव किवदानीक शिकाओत कवै छल, ओ तमसा जाओ छल।

–अहाँ देशी आ कानक हिसाबॅसँ अपनाकेँ बॅदलैनइ सीखू, चलैनइ सीखू। नै चलि सकी तँ चुपचाप बैसल बद्धू बॅा घुबि जाउँ।

–घुबबॅ तँ अंसगवे किए ? अहाँकेँ संग नइ कइ।

–हम तँ डिअव पवदेसकेँ अप्पन देस बॅनाबैक सोचि बहल छी। म्हस्कुबाओत ओ आँखि मावि कइ बॅाजल–अहाँ किए नै खोजि नै छी एकटा ब्लॉयफ्रेंड।

–नीक नागैत अहाँकेँ ? ओ सीधा संजयक आँखिमे देखलक।

–नीक, की कहै छी। निश्चित भइ जाएबॅ सर्वदा नेन। हा, हा, हा।

सोनल संजयक आँखिमे गौवसँ देखलक। ओ आँखि छल या दिन।

ओ गप ओ जबॅानसँ बॅाजल छल या दिनसँ। ओ कत्तौ सच्चमे सोनलसँ म्हक्ति तँ नै चहैत छल। ओ देखि बहल छल जे अमेविका एलाक बॅाद हुनकामे तेजीसँ अन्तव आएल छल। एक–दू बॅवखक भीतव। ओ ओकव तेसव नौकवी छल। ओ एकटा शुक्ष कवैत अछि, दोसवाक खोजमे नागि जाओत अछि। पहिनेसँ नीक, पाओकेँ नइ कइ। हुनकामे गन्तजाबी नामक चीज नै अछि। ओ जन्दीसँ जन्दी उँचसँ उँच स्थान छुअ चहैत छल। जहिना एकटा उँच स्थानपव पहुँचै छल, कनी दिनमे से नीचाँ नागइ नागै छल। एकबा ओ महत्वाकांक्षा कहै छल। जँ ओ महत्वाकांक्षा अछि तँ फेब नालच की

ঋছি।

নানচ। ঋাবতী গ্বর্জবক সংগ সংজযক দোস্তীক পাছাঁ খানী ঋাবতী গ্বর্জব ঋছি ৰাঁ ওকব এন.ঋাব.ঋাগ. মাএ–ৰাঁপ, জকব গ্বজবাতী হস্তশিল্পক চমকৈত ব্যরসায ঋছি। জকব ও একমাত্র সংতান ঋছি। ঋাবতীসঁ সংজযক সম্বন্ধ ওকবা ৰ্‌ধিসঁ ৰাঁহব ছন।

এত২ বহি ক২ সোনন সেহো কমা সকৈত ছন। কোনা রিশ্বরিদ্যানযমে, কॉনেজমে, নাগব্রেবীমে, কত্তৌ সেহো। কংপ্যূটবমে সেহো নীক গতি ছন। হ্নদা সংজয জখৈন সোচনক, ঋপনা ন২ ক২ সোচনক। সোননকেঁ ন২ ক২ সোচৈক ফ্‌বসতি নৈ ছনৈ। ও সোননকেঁ হাঁউস রাগহসঁ ৰেঁসী হগনে নৈ দেনক ঋা ও সেহো ৰঁনাবসক গংতজাবীমে ঋাগ–কান্হি–পবস্‌ কবৈত বহি গেন।

সোননক ঋাঁখি ভবি গেনৈ। ওগ কান ও নির্ণয নেনক জে ও ঋাৰ্ঁ এত২ নৈ ৰুকত। ও ৰঁহন্না তাকি বহন ছন জে বাঁচীসঁ পাপাক ঙা–মেন ঋাএন জে ত্তবংত ঋারিঁ জাউঁ। ১৩ কেঁ ঋহাঁক গংটবন্ন্‌ ঋছি। ওকব খ্‌শীক সীমা নৈ বহনৈ। ঙা ওকব ঋামোক প্বকাব ছন জে রিশ্বরিদ্যানয ধবি পহুঁচন ছন।

ঋাগ ভোবক প্রকাশমে খিড়কীসঁ ফেব গবজি বহন ছন সোননক ঋামো।

–সংজযকেঁ নৈ, সমীবকেঁ স্বন্‌ ঋা চনি ঋাউঁ।

*

ৰেঁসী নৈ, হফতা–দস দিন নগনৈ সোননকেঁ ঐ ঘবক একাঁত ঋা স্বন–সন্নাটক হিসাৰ্বসঁ ঋপনাকেঁ উঁতাব২ মে। ঋা জখন উঁতবি গেন তখন মজা ঋাৰ্ব২ নগনৈ। ঋপ্পন 'ঋসগবে' কেঁ গংজ্বায কব২ নাগন।

ओ डेढ़-दू बरिसराक बियासतक बानी छन-मानकिन। जखन चाहै स्वत्त, जखन चाहै उँठू, जतऽ चाहै रैसू, जना चाहै ओहिना घवमे बद्ध। बँ्रां रॉ गंजीमे, त्वंगीमे, गाउँनमे। नंगटे नहारी, कूदी-फ़ांगी। नै कियो देखैरॅना नै कियो स्वनएरॅना। जखन चाही, जेहन चाही खेनाग बान्ही। नै बान्ही, उँपास कवी, ओकव मोन। जौं संगमे ङा सास्व-सस्वव ह्थएं तँ ङा कन्ध, ङुं कन्ध, एना कन्ध, ओना नै कन्ध। दुनिया भविक ऋमेना, टैको-टौकी।

टैपरेकॅर्डिव छै, टी.री. छै, कंप्यूटेव छै, मोरॉगन छै, फोन छै जगसँ खपनाकेँ ब्यस्त बखरॉक चाही। एकव खनारेँ कितारॅ छै, बनासक तैयाबी छै, काव छै। रॅसी नै, साँझकेँ फ्रेश भेनाक रॉद खाध घंटाक ड्राागरपव रॅहबा जाउं खा घ्बि कऽ रीखबक एकटा पैग खा सिगरेटे (ङा कैनिफोर्निर्याक खादति छन जकबा देव-सरॅव छोड़ैये पड़तै, ऐ सड़न-गनन नग्रमे से ओ जानैत छन)।

-ऋदा समीव कतऽ खछि। ओ पापाकेँ फोन केनक। कोनो खास गप नेन नै, रॅस ओहिने।

जखन ओ बिसर्ज कऽ बहन छन गतिहासमे, तखने समीवसँ पबिचए भेन छनै। एकटा तेज खाकर्षक युरक छन। नीक खागत-पिरैत घवक। ओकवासँ दू रॅबख सीनिखव खा बाजनीतिमे पी.एच.डी.। नौकवी भेटै बहन छन ऋदा ओ खप्पन हितकेँ नै देखि कऽ किसान-मजदूवक हितकेँ देखनक।

ओकवामे देशी खा दुनिया खा समाजक सभटा ऋद्दापव नम्हव रॅहस कववॅाक खा विश्लेषण कववॅाक दक्षता छनै। ओकवा बाजनीतिक ऐकिटैरिस्ट हएरॅ पसीन छन।

ओहि समयमे बिहारमे एहन कतेक ग्रुप छल आ ओ ओहिमे सँ एकटा ग्रुपसँ जुड़ि गेल आ सक्रिय भऽ गेल। ओ हस्तामे एक बेर पटना आबैत छल आ पूरा दिन सोनल संग बिताबैँ छल। ओकर सपना छल जे बियाह करब आ अप्पन जीवन किसानक खुशिहालीक लेल समर्पित कऽ देब संगे-संग। सोनल जखन डेडीकेँ बतौलक तँ ओ बुझाबैत बाजल जे ई आतंक दिमागक सोच अछि। कनियाँक कमाइ आ लोकविहाबाक चंदापर क्रांति करऽबेना एहन हरकक कमी नै अछि बिहारमे। ओ जन्दीसँ जनथे आ चाह-पानिक लेल दोसबाकेँ ताकैत सड़कपर नखाह पड़ैत बहैत अछि। एहन सनकीमे नै आबू। आ हुनके समझेना-बुझेनापर ओ संजयसँ बियाह तँ कऽ लेलक मुदा समीबकेँ हृदयसँ नै निकालि सकल। एतऽ धरि जे अमेरिकामे जखन संजय ओकरासँ ब्वायफ्रेंडक गप केलक तँ ओ डरि गेल जे कत्तौ ओकरा समीबक दोस्तीक खबरि तँ नै अछि।

हुनका समीबक बड़ सोच लागल छन्हि, ओकरा एतऽ एलाक बादसँ। ओ भोर कऽ छतपर टहलि बहल छल जे डी-४ क आगू सड़कपर पुलिस बैन नखाह देलकै।

ओकर नजरि जाइसँ पहिनेसँ ठाढ़ छलै ओ बैन।

किछु लोक छल जे भीतर-बाहर आबि जा बहल छल। लेलक एकटा कोनपर ओकर डी-१ आ दोसर कोनपर डी-४। ओकर दुनूये मकानक बाद। बबतल माँजै आ झाड़ू पोछा करैबाली दाइ ओहि कॉलोनीक छल। जहिना ओ आएल, ओ पुछलक। दाइ गीता जे किछु बतौलक से भयौल छल। ई ओहि कॉलोनीक तेसर घटना छल। ई बबखक तेसर।

डी-४ बाय साहबक बँगला छल। बाय साहब

রাঁগরানীক খূব শৌকীন। হুনকব নাঁনমে মখমন সন ঘাস ছন, জেনা হবিযব বংগক গদ্দা। ওগমে জুত্তা-চপ্পন পহীব কহ নে ও খপনে জাগ ছন, নহিযে দোসবাকেঁ জাএ দৈ ছন। ঘাসক গদ্দাক চাব্ব দিস ফূন আ বংগ-রিবংগক পাতরঁনা গমনা ছন। ও দিন ভবি কৈঁচী সংগ নাঁনমে নজবি খারৈঁত ছন- কাটৈত-ছাঁটৈত। হবিযব বংগক পাছাঁ এহন বঁতাহ জে বঁগনাপব সেহো হবকে ডিস্টংপব। এতহ হবিযবী হুনকব মুবীরঁনা ঝঁহপব বহ ছনৈ সদিখন।

এক দিন একটা ফোন এনৈ বায সাহেবঁক নামে।

-এহ জন্দী কী খছি মকান রেঁচবাঁক। কনী বুকি জৈতিঐ।

বায সাহেবঁ হেনো, হেনো কবৈত বহি গেন, ঝদা ফোন কটি গেন ছনৈ।

ওগ দিন হুনকা খাশ্চর্য ভেনৈ, হঁসী সেহো এনৈ।

ফেব সভ তেসব-চাবিম দিন বোজ যা তঁ কোনো নে কোন ফোন খারৈঁ ছনৈ যা কিযো নে কিযো মকানকেঁ নহ কহ জানকাবী কবৈক নেন খারৈঁ ছনৈ। ফোন কবহরঁনা কী খছি, কতহসঁ কহ বহন খছি, মকান রিকেবাঁক গপ কে বঁতৌনক, বায সাহেবঁকেঁ কিছু পতা নৈ চনি সকনৈ। খারঁহরঁনা কেঁ ও রিগড়ি কহ ভগা দৈ ছনা, ফাটকক ভীতব পৈসহ নেন নৈ দৈ ছনা। ও কহত-কহত থাকি গেনা জে ওা খরঁব গনত খছি, হুনকা রেঁচবাঁক নৈ খছি। তকব রাঁদো ওা খেবমা খতম নৈ ভেন।

ও পবেশান ভহ গেন। নাগৈত বহএ জে ও পাগন ভহ জাএত। ও স্বতে নেন ছটপটা কহ বহি জাগ ছন আ নীন নৈ খারৈঁত ছনৈ। দোস্ত মিত্রক

সনাহপব ও প্বনিসকেঁ বিপোর্ট কেনক জে হ্নকা নগ কেহন–কেহন ফোন খাবৈত খছি, কেহন–কেহন নফংগা খাবৈত খছি, খা কেহন–কেহন গপ কবৈত খছি।

চাবিম দিন জে নোক মকানকেঁ নঃ কঃ প্বছৈনে এনৈ, তকব গপসঁ বায সাহেবকেঁ নাগি গেনৈ জে প্বনিস বিপোর্টকি জানকাবী হ্নকা খছি ফদা একব নহিযে ডব ছৈ, নহিযে খাদংক।

জগ মানসিক তনাব খা বেঁচৈনীসঁ ও জীবি বহন ছন, ওগসঁ হ্নকা ওগ দিন ফজি ভেটৈন জগ দিন একাএক হ্নকব নেনাক মিত্র বাজবাম পাঁডে উর্ফ ভুটনে গ্বরু খাএন। ভুটনে গ্বরু খাবঁ তঁ নগবক প্রসিদ্ধ বগ্তাস ছন ফদা ছন হ্নকব পড় াসী গামক। মাগ্তস্কূন ধবি হ্নকব সংগ গামমে পঢ়া চ্কন ছন। কতেক মোহল্লামে কতেক বাস মকান ছনৈ। ও ওম্হবসঁ জা বহন ছন তঁ হ্নকা বায সাহেবঁ মোন পড়ন খা প্বছৈত–পাছৈত ডী–৪ মে চনি খাএন।

–ভজাব। বঁড় নীক ঘব খছি স্ববেশ। ও গেটমে পৈসৈত বাজন।

বায সাহবঁ বঁড় উসোহসঁ হ্নকা ঘব দেখেনক। ও পহিন বেঁব খাএন ছন। ও ঘব–খাঁগনক প্রশংসা কবৈত বঁতেনক জে ওগ সমএমে ভনে নে ভেঁট ভেন হ্খএ, দ্নূ বেঁটৌক বিযাহ খা ভাভীক স্বর্গ্ববাসক খবঁবি হ্নকা ভেটৈন ছন। ড্রাগংগ রুমমে পৈসৈত হ্নকা প্বছনক।

–স্ববেশ। খহাঁক বেঁটৌ কতঃ খছি খাগ–কান্হি জকব ওনাজ কবা বহন ছনৌं।

ভুটনে গ্বরু সোফাপব বৈসন, বায সাহেবঁ হ্নকা খাগ্য বৈসি কঃ কূহী ভঃ কানঃ নাগন। ভুটনে গ্বরু

सेहो सोफासँ नीचाँ खारि गेल आ स्वबेशे बायकेँ वाँहिमे भवि आगू दीरान दिस ताकैत बहल। दीरानपव मोटेबी जकाँ एकटा छोौड़ा पड़ौयल छल। ओ ट्रैफव-ट्रैफव उँ्सेक भइ हुनका ताकि बहल छल। दाढ़ी-मोंछ बेहिसाबे बढ़ल छलै। खाली हाड़ खुजल छलै। देह झाँपल छलै। एकटा स्वखाएल नकड़ी सन विछौनपव पड़ल छल। लागै नै छलै जे डाँड़क नीचाँ किछु छै।

ओ वाँजैत तँ तहियो नै छल। हुदा ओ ख्यान नै जे किछु बुझैत अछि वा नै। भुटने ग्वक प्वछलक।

बाय साहेबे विना किछु वाँजने हिचकी निखए लागल।

भुटने ग्वक साांत्वना दैत हुनका उठेलक आ सोफापव अप्पन बगलमे बैसेलक। कनी काल बाद बाय साहेबे खाएल आ खंदव चलि गेल। जखन ओ चाहक संग घुवल तँ सामान्य छल। चाह पीबैत ओ बतौलखिन जे कोना पेटे काटि कइ, गामक जमीन बेचि कइ, बैंकसँ कर्ज लइ कइ कोन तवहेँ ओ घव ठाढ़ केलक, दू बवख पहिने बिटौयव भेलाक बाद ओगमे खाएल। हम कहियो नै सोचलौं जे केकवा लेल घव। बस ओ छल जे अपना लेल एकटा घव हुअए। एकवा ठाढ़ हेते-हेते स्त्री सेहो चलि गेल। हुदा लागल बहलौं विना सोचने-बुझने जे घव हुअए तँ केकवा लेल। देखि बहल छी ऐ बेटाकेँ। नै चलि सकैत अछि, नहियें स्वनि सकैत अछि, नहियें वाँजि सकैत अछि। की हएत एकव जखन हम नै बहब। नै जानि कोन जन्मक पापक सजा दइ बहल अछि भगवान।

–हम छी ने, चिंता किए करै छी ? –भुटने गुरु हुनकर कान्हपर हाथ राखलक।

–चिंता तँ ई अछि भुटने गुरु जे छह-सात माससँ सुतल नै छी। नै जानि कतएसँ केहन-केहन लोकक राति-बिराति फोन आबैत रहैत अछि, धमकी दैत। पता नै के उड़ा देलक जे सुरेश राय अप्पन घर बेचि रहल अछि। परिणाम ई अछि जे गुंडा-बदमाश धरि घरक भीतर घुसल चलि आबैत अछि आ सलाह दऽ रहल अछि, जे जतेकमे बेचब ओतबेमे दू टा कमराक फ्लैट आबि सकैत अछि आ बाँकी सूदसँ बीस-पचीस बरख निश्चिन्तीसँ कटि लेब। पुछलौं जे अहाँ के ? तँ बाजैत अछि- प्रापर्टी डीलर, प्रापर्टी डील अहाँ कऽ रहल छी, बिना पुछने जे अहाँ बेच रहल छी आकि नै ? ललान साढ़। हिम्मत तँ देखू ओकर। जौं आइ नरेश नीक रहितिऐ तँ ई नौबति नै ऐतिऐ।

भुटने गुरु गंभीरतासँ ई सभ किछु सुनैत रहल आ सोचि-विचारैक बाद बाजल।

–एना अछि सुरेश। हम दू-तीन दिनमे एकटा दरबान आ लोककेँ भेज देब। बड़ भरोसक लोक। ओ अहाँक सभटा समस्या दूर कऽ देत। ठीक।

तेसर दिन सचमे एक लोक आएल आ राय साहेबक फिकिर खतम भऽ गेल। नहियेँ कहियो फोन आएल, नहियेँ गुंडा-बदमाश सभकेँ साहस भेलै जे लगमे कत्तौ लखाइ दैतिऐ।

ज्यादा जे हेबाक छल, भऽ कऽ रहल। तीन मास बाद। राति दिन पूरा घरक देखभाल करैबला दरबान राति भरक छुट्टी लऽ कऽ भतीजीक बियाहमे

अप्पन गाम गेल छल आ अन्हर ओत बाति ओ दुर्घटना भऽ गेल। ओत पतंगपर पटायल बाघ साहेबक लेटो ट्रेकर-ट्रेकर ताकैत रहल आ ओकर हत्या भऽ गेलै।

भुटनी गुरु ऐ दुर्घटनाक दू दिन पहिनेसँ अस्पतालमे छल। कटीन चेकअप भेल। दबरान हुनका ओ खरबरि देलक। ओ अस्पतालसँ सोझे अप्पन गाड़ीमे आएल। दबरंज्जापर ठाढ़ भीड़केँ ओतऽसँ हटेलक, रहेलक, डाँटलक, डपटलक आ भीतर जा कऽ पुलिससँ जनतब लेलक। फेर ओत कमरामे गेल जतऽ रिक्चौनपर बाघ साहेब पटायल छल। ओतऽ रँगनमे एकटा तस्तापर हुनकर लेटो सेहो छल, जे निश्चल पड़ल छल। मूकदर्शक।

दुर्घटनाकेँ आँखिसँ देखैरना गराह। ओ पुलिसक संग भीतर गेल, ओकरे संग घुरि आएल।

राहर खंदाजी गप आ कनफुसकी चलि रहल छल- या तँ झाँह या नाकपर गेकुआ दबा कऽ मारल गेल या गला दबा कऽ। देहपर कतौ चोटक चिन्हासी नै छल। हाथ ऊँठेराक कोनो चिन्हासी नै। रिक्चौन मोचड़ाएल नै। गेकुआपर शोनितक छोट-मोट चिन्हासी छल जेना ओ झाँहसँ निकलल हुअए।

नहाशे जखन पोस्टमार्टम लेल आनल जा रहल छल, सोनल अप्पन गेटपर ठाठ छल। सोनल अप्पन गेठपर ठाढ़ ओकरा जागत देखि रहल छल। कॉलोनीमे मकान कब्जा करैक तेसर घटना छल। घरमे ओ सेहो असगरे छल। रिश्वरिव्यालय आरैं-जाएक समए अनिश्चित। कोनो दिन दुपहरियासँ पहिने कलास, कोनो दिन दुपहरियाक बाद। घरमे किछो नै। दिनमे तँ चोरी भऽ सकैत अछि झदा बातिमे

तँ हमरा धरि संभव अछि। ऐ कल्पनासँ ओकरा थरथरी छूटि गेलै। आँखिमे उँतरैवला सिहरी सगरे देहमे पसरि गेलै। ओ ऐ ग्रन्थीमे पूरा दिन पड़ल रहल। लोकर नै भेटि रहल छलै, नहियेँ लोकर बाथरूम कनासिरूँ छल। लोकरनी झाड़ू-पोछासँ आगू नेन तैयार नै छल। रूब-रूब ओकर ध्यान जा रहल छल सासुरपर।

बातिमे ओ पहाड़परक कोड खोजनक आ फोन केलक- पापा, हम सोनल। आरि रहल छी काल्हि, अहाँ दनूकेँ लैक नेन। तैयार रहब। नै, किछु नै स्वनर। मम्मीकेँ फोन दियौ..।

*

शीनाकेँ सोनल ओ मान-सम्मान देनक जे कोनो प्रतोज् की देत अप्पन सासुकेँ। भोर-साँझ मम्मी, बीच बाति मम्मी, घरमे मम्मी, बाहर मम्मी- रूस सभ दिस मम्मीये मम्मी। जखन कि शीना सोननक संग आएल लोक लाजक कारण, तएसँ जे नै जाएत तँ बेटा की सोचत हुनका लए कए। की जे बेटाक सहारा बूढ़ापा काटै नेन अछि तँ ओकर स्त्रीक कोना नै स्वनी? ओ नै स्वनत तँ ओ हुनकर किए स्वनत? लोक अप्पन बेटाक भविष्य किए सिटैत अछि। तएसँ किएकि हुनकर भविष्यमे हुनका अप्पन भविष्य नखाइ दैत अछि। काएदासँ देखल जाए तँ ओ हुनकर नै, अप्पन भविष्य सिटैत अछि। ऐ सौटैल भविष्यमे डेग राखने छल शीना आ प्रसन्न छल। जएँ नड़कीसँ कोनो पूर्व परिचय नै, कोनो सम्बन्ध नै, एतए धरि जे नहियेँ अप्पन जातिक, नहियेँ अप्पन क्षेत्रक। नहियेँ संस्कार। ओ

শীনাক পাছাঁ মবন জা বহল ছন– মম্মী, চাহ পীৱ। মম্মী জনখৈ কবৱ, মম্মী নহা নেনখিন। মম্মী খানা খা নেনখিন, মম্মী কোনো জৰুবতি।

এন্তু খযান তঁ হ্নকব ৱেঁঠী সবনা সেহো নৈ বাখৈত ছন।

সোনন পহিনে হ্নকা ঘব দেখৈনক– ড্রাগংগ ৰুম, ওগসঁ সঠৈন কোঠনী, খাঁগন, ফেব ও কোঠনী জগমে মম্মী–পাপা বহত, ফেব কিচেন খা স্টোব, ফেব পছখাবক হীস জগমে নোকব–চাকব নেন ঠৈনক খ্জন শেডৱঁনা কোঠনী। ফেব ও ঙঁপব নঃ গেন, ছতপব খা দেব ধবি মম্মীকেঁ ঠৈহনাৱৈঁত বহল জে নোক দেখএ খা জানএ জে ও ঘবমে খসগবে নৈ বহৈত খছি। ঐ ঘবমে ও সভ কিছ ছন জকবা নঃ কঃ শীনা সোচনো নৈ ছন।

হ্নকা বাতি ভবি নীন নৈ খাএন– কাবণ জে হ্খএ। কাবণ নব ঠাম সেহো ভঃ সকৈত খছি, চৌড়গব ডৱঁন ৱেঁড সেহো, গদগব বিছৌন সেহো। খা স্বখ ছন জে খনচোক্ক হ্নকব জীৱনমে খাবি গেন ছন। ও ঘবমে খাএন নৈ ছন, গৃহ প্ৰবেশ কেনে ছন। যএহ কহনে ছন সোনন খা নীকসঁ নীক ডিশ ৱঁনা কঃ খ্এনে ছন। শীনাক খ্শী ৱেঁব–ৱেঁব ওকব খাঁখিমে নোবা বহল ছন। খা ণ্ড নোব খাব কিছ নৈ, পহাড়প্ৰবক খপবৈনৱঁনা ঘব ছন, হ্নকব ৱেঁঠী–ৱেঁঠী ছন খা দ্খ ছন জে ও খপ্পন জীৱনক ভবি সহল ছন।

একাএক হ্নকা মোন পড়ন সংজযকেঁ নঃ কঃ, নহিযে ও কিছ প্ৰছনক, নহিযে সোনন খপনাসঁ কিছ ৱতৌনক। দোসব–দোসব গপ হোণ্ডত বহল খাণ্ড ধবি।

খগনা দূ–তীন দিনসঁ শীনা খপ্পন দিনচৰ্যা

निश्चित कऽ देने छल। खाना बनाबैबला मनोबाजिन आग धरि नै भेटैन छल आ ओ बैसल-बैसल की करितथि दिन भरि।

भोर कऽ चाह, आ बीच बातिक खेनाइ ओ अप्पन जिम्मा नऽ नेनक। कठ्ठ मात्र एतबे छलै जे गप करैबला अखन धरि किओ नै भेटैन छलै। डी-पॉकेटैक घटनासँ सभ कॉलोनीबला अपनाकेँ घरमे रोकि राखने छल। ओ सभ डरल छल जे कतौ एहन नै हुअए जे ओ मकान छोड़ए आ घरमे घुसल अशिकल भऽ जाए। ऐसँ पार्क सेहो खाली पड़ल छल- नहियेँ कोनो औरत, नहियेँ कोनो मर्द। तीन-चारि दिन धरि किओ अप्पन घरसँ बाहर नै निकलल- सरिसि करैबलाकेँ छोड़ि कऽ।

शीला माड़ु-पोछा करैबालीक पाछाँ-पाछाँ घुमैत रहैत छल आ गप करैत रहैत छल जे कतेक छोड़ा छै, कतेक छोड़ी छै। कतेक बियाह भेलै। जमाए की करैत अछि। कतेक पुतोहु अछि। ककरा संग रहै छी। स्वभाव केहन अछि। सेवा करैत अछि आकि नै। बेटा ध्यान दैत अछि कि नै। अखन कोनो पोता-पोती अछि कि नै। किछु सुनैत, किछु अप्पन सुनाबैत छलि। ओइ कान सोनल अप्पन काज करितथि, पढ़ितथि, लिखितथि आ नै तँ कंप्यूटर माउससँ खेलैतथि या टीवी करितथि।

ऐ बीच शीला दू बेर पुतोहुसँ दुखी भेल छल। ओ भोरमे चारि बजे जागि जाइ छल आ सोनल सुतल रहै छल आठ बजे भोर धरि। ओ ओकरा जगबैक एकटा तरीका निकालनक। ओ भोर चारि बजे चाह तैयार करनक आ हुनका जगेनक। सोनल सुतल

बहुत आ उठनाइब चाह सिंकमे फेंक देलक। फेर अप्पन अलगसँ नेस्कैक चाह बनेलक।

शीना देखैत बहल।

दोसर दिन ओ नेस्कैक चाह बनेलक कनी देरीसँ। माने सात बजे। ओइ दिन सेहो यएह भेल।

सोनल बाजल- मम्मी, हमर चाह बहुत देल कतहिन अहाँ। जखन उठब, तखन बना लेब।

हुनका नीक नै लागल। अप्पन आदतिक अलग ओ कोनो तरहेँ चुप रहि गेल। एतए धरि तँ ठीक जैतिऐ मुदा एक दोसर प्रसंगमे तँ जेना हुनकर मन उचटि गेल। होइत ई छल जे शीना भोरमे बासिक बचल रोटी वा पराठा आ सब्जी जलखै कए लैत रहथिन। सोनल देखलक तँ बिगड़ल- नै मम्मी, ई नै चलत। अहाँ ई खाएब जे हम खाएब। टैस्ट ब्रेड, दलिया, दूध, फल। ई सभ नै। ठीक। शीनाक दिमागमे सवाल उठल जे रोज-रोज जे बैसका रोटी या पराठा बचि जाइत अछि, ओकर की हएत। ओकरा दाइ गीताक ध्यान आएल। ओ सेहो आबैत शीनाकेँ माताजी-माताजी कहैत छलि। काज-धंधा खतम कए जखन गीता जाइ छल तँ ओकरा रोकि कए खुआ दैत छल। तरकारी नै रहलै मुदा नै रहलाइब कखनो चाह दैत छल, कखनो अचार। सोनलकेँ पता चलल। पता की चलल ओ गीताकेँ एक कोनमे बैसल खाइत देखि लेलक।

-मम्मी। -गीताकेँ जाइत बाद सोनल बाजल।

-अहाँ किए ओकर आदति बिगाड़ि रहल छी मम्मी।

शीना बुझैक ध्यानसँ ओकरा दिस ताकलक।

-ओकर नोकरीक शर्तमे चाह-नाश्ता नै छल।

পাঁচ সৌ মহীনা আ সানমে দূ রৈব সাড় ী, রঁস।

—হ্মদা, হম চাহ-নাশ্তা কতহ দৈ ছী। জে কিছু রঁচন-খ্চন বই ছৈ, সধা দৈ ছী।

—ফেকৈসঁ রাঁ ক্ষক্ব-রিনাগকেঁ খ্আরৈসঁ নীক অছি জে ককবো স্বার্থ সিদ্ধ হোগ।

—যএহ তঁ। ক্ষক্ব-রিনাগকেঁ ভনে খ্আ দেখিন, ওকবা নৈ দেখিন- যএহ কহরঁ অছি হমব।

—আঁএ। ঙা কেহন গপ কহ বহন ছী অহাঁ। ফাঠন আঁখিসঁ প্বতোহ্ দিস তাকনক শীনা।

—নৈ, খবাপ নৈ মানরঁ। একবা এনা ব্ঁঝথিন। মানি নিঅ কাল্হি অহাঁ কত্তৌ চনি জাগ ছী রাঁ এতহ নৈ বহরঁ। ও হমবোসঁ আশা কবত আ হম নৈ দহ সকরঁ তঁ খবাপ নাগত, ঠীকসঁ কাজ নৈ কবত। ছৈ কি নৈ।

—সভ ঠীক। হ্মদা ঙ গপ হমব গবামে নৈ উঁতবি বহন অছি জে ক্ষক্ব-রিনাগকেঁ খ্আ দেরঁ, হ্মদা ওকবা নৈ খ্আএরঁ।

—মম্মী, ও অহাঁক পবজা নৈ অছি, নোকবনী অছি- প্রাফেশনন। ওকব পেঠ বোটী-পবোঠাসঁ নৈ, পৈসাসঁ ভবত। এতরৈঁটৌ নৈ, অহাঁ ওকবাসঁ গপ কবরঁ আ ও অহাঁক মাথ চঢ়া জাএত।

—কাল্হি জখন কোনো গপপব ওকবা ঠৈকরঁ তঁ ও নড়হ নাগত। ওকবা অহাঁ রএহ বহএ দিযৌ জে ও ছী। আরঁএ, অপন কাজ কবএ আ রাঁঠ নাপএ।

শীনা মাথ ঝ্কা কহ চ্পচাপ স্বনৈত বহন আ ঠাঢ় ভহ গেন।

—হ্মদা হম অন্নক অপমান নৈ হ্অএ দেরঁ। ওকবা নৈ খ্আএরঁ তঁ অপনে খাএরঁ।

—অহাঁ অধনা মানি গেনৌ। নৈ ব্ঁঝনৌ হমব

गप।

–बुझि गेलौं, कोनो अनपढ़ नै छी। हमहूँ बी.ए. छी अप्पन कानक।

–ठीक अछि। ऐदा हम तँ हिनका बैंस कऽ खाए नेन नै देब। कान्हि ओ कहथिन जे हमबा बैंसा कऽ भुआबए छन।

–तँ हमबो सुनि निअ, हम अन्नकेँ एना फेकै नेन नै देब।

ओ बहस तखने खतम भऽ सकैत छन जखन ओग दुनूमे सँ कियो चुप भऽ जाए आ ओतऽ सँ हटि जाए।

आखिबीमे सोनन कोनो काजक बहन्ने ओतऽसँ चनि गेन।

शीना किछु कान धबि बैंसन बहन। ओकबा नागन जे बद्ध नकचढ़ ीयै टा नै, मथचढ़ ी सेहो अछि। पैदा कबितिऐ तखन ने अनाजक मोन पता चनितिऐ। माँ-बापक एकेटा ओनादि, जातिक नाना- खेत-पथाबसँ मतनब नै, ओकबा की बुझन छै अप्पन फसनक सुख-दुख।

ओ घबक पछुआबमे गेन जतऽ बघुनाथ बाहबसँ घुमि कऽ आएन छन आ नहाग नेन जा बहन छन। ओ जहिना शुब्ध केनक तहिना बघुनाथ टैकनक- सनी बाजनक ओ। पुतोहुकेँ सुनै आ हुनका संग बहैक आदत डानू।

–की? अहाँक ओ सभ कहब अछि।

–नै। हमब ओ कहब नै अछि। हमबा ओ कहब अछि जे जकब घबमे बहै छी, खाग छी, पहिबै छी, ओकब गपपब कान-बात दियौ। रएह कब्ध, जे ओ

चाहैत अछि।

–बाहिर हम खाइत नहि, चाह–नाश्ता हम बनबैत छी, खाना हम पकबैत छी। जे किछु खाइत अछि, हुनका उठबैत–बैसबैत छी– आ हमर कोनो पुछि नै।

–अच्छा जाउ अहाँ एतएसँ। जे करबाक अछि करू। खिसिया कऽ रघुनाथ बाजल आ बाथरूममे चलि गेल।

–हम नै बहरब एतए। हमरा गाम पहुँचा दिअ आ नै पहुँचाएब तँ अपने चलि जाएब।

बाथरूमक भीतर रघुनाथ हँसैत बाजल– अरे। प्रतापसँ तँ प्रचुर निकलै। अपने सँ नै एलौं अछि अहाँ, लएल आनल अछि। कोना अछि ओ गीत।

ओ मन खोलि देलक आ गाएब शुरू केलक–

अभी न जाओ छोड़ कर, कि दिल अभी भरा नहीं।

अभी अभी तो आये हो, बहार बन के छाये हो

अभी जरा सहा तो नूँ, अभी जरा ... न... नम... न... नू...

साँझक चारि बजेक आसपास सबलाक फोन आएल– बड़ दिन बाद। बड़ दुखी आ शिकाइतक स्वरमे। उठेलक शीला। सोनल कॉलेज गेल छल, घरपर रहए छल। एकबासँ पहिने दू–तीन बेर ओ गामपर फोन केने छल। ओकर खराप भाग्य जे बिसीरब उठेने छल रघुनाथ आ ओकर नाम सुनि झुनने, बिनि पुछने आ बिनि बाजने फोन राखि देने छल। एकर चर्चा सेहो शीलासँ नै केने छल।

–माँ आब तँ आबि सकैत छी हमरा कतए।

–एना किए रॉजि बहल छी सबना। शीना कननम्हँह भऽ उठल।

–हम विवाह नै केने छी माँ, पापाकेँ कहि देबै। चाहे तँ ओहो थारि सकैत छथि।

–हुनकर हम नै जानैत छी मुदा हम तँ तैयारे छी। जखन कही तखन थारि जाएब।

–ठीक छथि, अगला पंद्रह दिनक भीतर कोनो व्यवस्था करैत छी।

–मुदा अहाँ विवाह किए नै करलौं। हम तँ मानि नेने छलौं जे भऽ गेल हएत।

–माँ, हम सोचि नेने छी। भगवान आ विवाहक विना जिअल जा सकैत अछि, बहल जा सकैत अछि। कोनो गपक फिकिर नै करब। ठीक।

सबना विसीरब बाखि देने छल। शीना जतऽ छल ततै ठाढ़ बहल। ओकरा बुझैमे नै एलै जे ओ नीक भेल कि अधला। ओ बघुनाथकेँ बतौलक। बघुनाथ मात्र एतबेँ टा कहलक जे ऐसँ नीक हेतिऐ जे ओ विवाह कऽ नेतिऐ।

*

शीना सोननक आग्रहपर ताधरि रुकल बहल जाधरि खेनाग वॅनाबैरानी दाजक व्यवस्था नै भऽ गेलै।

जऽ दिन शीना गेल, ओऽ दिन सोनल गेटै आ घबक चारीक ड्प्लिकेटै वॅनबैनक आ ओकरा बघुनाथकेँ दऽ देनक। दुपहबियाक एक–डेढ़ घंटा छोड़ि कऽ ओ जखैन चाहे तखन, जतऽ चाहे ओतऽ आ–जा सकैत छल, घूमि सकैत छल, भेँटै–घाँटै कऽ सकैत

छल, किएो पूछै–ताकैबला नै छलै।

ओहिनो बघुनाथ घबमे बहैत एक तबहेँ घबक बाहेब छल। पछुआबक बाउँडबीबानसँ नागल एक अँटैक दूटौ देबाल छल, जगपब अस्बैस्थैव पड़ल छल। सोचल गेल छल जे जौँ नोकब–चाकब बा ड्राग्रबब भेल तँ ओगमे बहत। बघुनाथक व्यवस्था शीनाक संग ओग कोठलीमे छलै। ऐसँ बेसी ओ अपन कनियाँ संग स्वतलो नै छल। आबैं कइ दिनसँ हुनका ओ ठाम जँचि गेल छल। ओकब बँगलमे नल सेहो छल आ शौचालय सेहो। आब की चाही। नाश्ता–खाना घबमे, बाँकी सभ बाहेब।

शीना संग बघुनाथक संबँध दाम्पत्यक बहलै मुदा प्रेमक नै भइ सकलै। ओहो कहि सकै छी जे ओ शीना संग स्वति जाग छल मुदा प्रेम नै कबै छल। आ मानै छल जे ऐनेल शीना जिम्मेदाब छथि। ओ एहल स्त्री छल जकबा सभ दिन प्रेमक प्रमाण चाही। एतबेँ टा नै, एक बेब या दू बेब या तीन बेब अहाँ हुनका आश्वस्त कइ देलौं जे अहाँ ककबो आनसँ नै हुनकेसँ प्रेम कबै छी तँ ओ मानि जाएत। फेब ओ अगिला दिन पबीक्षा लेने चाहत जे ओ कोनो ओहिना तँ नै छल। एतबेँ टा नै, ओ अप्पन प्रेमकेँ लइ कइ मात्र शिकाग्रत कइ सकै छल। एकब अतिबिक्त ओकबा लग कोनो आन भाषा नै छलै। ओ सभ स्थिति बघुनाथमे मात्र खिसियैली टा नै आनलक, ओकबा दिससँ अबहेलना सेहो आनलक। शीना कहियो हुनकब कचि आ पसीनक हिसाबेँसँ अपनाकेँ बँदलैक प्रयत्न नै केलक। जेना शीना चाहै छलि जे घबमे कोनो गप हुअए जगसँ ओ खुशी हुअए, उन्नसित हुअए, ओकबामे उत्साह आ जोश

নখাহ দিখএ, হঁসএ, গাৱঁএ, খাব কিছু কবএ। ক্ষদা তৈযো হ্নকব চেহবাপব কোনো তবহক কোমন ভাব নৈ খাৱৈঁ ছন। এতহ ধবি জে বঘ্নাথ জখন খ্শীসঁ মাবে কূদ–ফান কবএ খা ৱৈচৈন হ্খএ নাগৈত ছন তখনো ও হ্নকব উঁপহাস কবৈত নির্বিকাব ঠাঢ় বহৈত ছনি।

খ্শী হ্নকব চেহবাপব খৱৈত ছন তঁ জৱঁবদস্তীক দাগ সন ফেব গাএৱঁ ভহ জাগ ছন। একব খনাৱেঁ হ্নকামে খূরীযে খূরী ছন। ও খপন পতি খা ৱৈঠৌক পদ খা প্রতিষ্ঠাকেঁ হবদম ফবাক বাখৈ ছনি। দোসবা নগ ৱড় বাস এহেন ৱৌস্ত্ হোগ ছন জে হ্নকা নগ নৈ ছন ক্ষদা হ্নকামে কখনো ঙর্ষ্যা নৈ হোগ ছন। সমভাব হ্নকব স্বভাব ছন। ও তখনে রিচনিত হোগ ছন জখন ও কোনো গবীৱঁ গ্ববৱাঁকেঁ নন্ন খা রিবশ দেখৈ ছনি। ও সভ কিছু সহি সকৈত ছনি ক্ষদা ককবো জৱঁর্দস্তী নৈ।

শীনাক গেনাক ৱাঁদ বঘ্নাথ নিসাঁস নেনক। ও হ্নকাসঁ প্বতোহ্ নহ কহ কিছু নৈ ৱাঁজৈ ছনি, ক্ষদা একব ৱাঁদো ও তনাবমে বহৈত ছন। ঐ তনাবসঁ ও খাৱঁ ক্ষঔ ভহ গেন ছনি।

শ্বক্ক–শ্বক্কমে বঘ্নাথকেঁ খশোক রিহাব পসীন নৈ এনৈ। ও ততৱেঁ উঁজাড় খা উঁদাস গনাকা দেখনে নৈ ছন। দেখৱঁ তঁ দূব, সোচনো নৈ ছন। হ্নকা কিযো ৱঁতৌনে ছন জে ঙ পূবা গনাকা কহিযো পূবা শ্মশান হোগ ছন। যএহ ওজহ ভহ সকৈএ জে হ্নকা সভ গনী খা সভ মকানক সভঠাঁ খিড়কীসঁ খাৱৈঁৱঁনা হবা মূহ্গংধ ফেঁঠৈন নাগৈ ছন। মনে গম্হবসঁ জাউ যা উঁম্হবসঁ জাউ নাক দৱাঁ কহ যা ফেব ওগপব কমান বাখি কহ।

খাঁখি ৱঁন্দ কহ দেখূ তঁ পূবা ৱঁস্তী ওগ ৱঁদবগাহক

সন ছন জতঽ সভটা যাত্রী মহাপ্রযাণ পব নিকনৈ যা ওগ পাব জাগক তৈযাবীমে নাগন ছন।

ক্ষদা এক ভোব– এহন ভোব বোজ আবৈঁ ছন– আ ঐ আঁখিসঁ বঘ্নাথ দেখৈ ছন। ওগ ভোব ধ্যান গেনৈ পার্ক দিসনসঁ আবৈঁত একটা ব্ঁঢ় দিস– নকরা মাবন, ঝঁহ ঢৈঢ়, গবদনি ঝ্নৈত, বাম হাথ ঝ্নৈত, ঘিসিআগত অসক্ত পএব, দোসব গনীসঁ নিকনন একটা দোসব বূঁঢ় জকব একটা আঁখি খ্জন ছনৈ আ দোসবপব হবিযবকা পঞ্ছী ছনৈ, আ তকব পাছাঁ একটা দোসব বূঁঢ় জকব গবমে কানব মানে স্পাঁডিনাগটিসক পঞ্ছা ছনৈ। তেসব গনীসঁ সেহো একটা বূঁঢ় আবি বহন ছন, পার্কক গেটক দিস আস্তে–আস্তে। হ্নকব একটা হাথমে বৌতন ছন আ ঠ্যূবঁ ন্বগীক ভীতব।

সূর্য জনা–জনা ডুঁপব উঠন জাগ ছন, ওনা–ওনা সভটা কোনাসঁ আবাম খটখটবৈঁত আবৈবঁনা এহন বূঁঢ়ক সংখ্যা বঁঢ় ৈত জাগত ছন।

বঘ্নাথকেঁ নাগন জে ওা বূঁঢ় নৈ অছি– জিনগীক ভূখ অছি, জীবনক প্যাস অছি, স্বযং জীবন অছি– জে ঠোপে–ঠোপে একটা অধাগমে জমা ভঽ বহন অছি ওহিনা জেনা কোনো পহাড় ীক কতেক বাস দবাবিসঁ পানিক একটা ডবীড় চনৈত অছি আ কোনো আন স্রাতসঁ মিনিকঽ কহিযো নৈ সূখৈবঁনা, মীন ধবি হ্নুহী উঁড় াবৈঁ বঁনা, শোব মচাবৈঁ বঁনা অজস্র ধাব বঁনি জাগত অছি।

জীবনক ঝবনা সভ ভোব বঘ্নাথকেঁ আপনা দিস খীচৈত অছি– বগ্যূ, আবূঁ, স্বনূ, ভীজূ। ক্ষদা বঘ্নাথ হ্নুহীমে ভীজৈসঁ বঁবাবঁব বঁচৈত অছি।

কিএ বঁচৈত অছি বঘ্নাথ– ওকবা ও বুঝি নৈ সকন ছন।

जखन सभ बूढ़ अप्पन म्हड्क विरोधमे बड़ मन आ जतनसँ बाबा बामदेव बनैत अछि, बघ्नाथ मूड़ ी निहुबेने चुपचाप पार्कसँ बहवा जागत अछि।

हुनकव पसीनक ठाम ओ नै, नहवि छल। अशोक विहावसँ डेढ़ किलोमीटव दूव। नहवक पाव ओकवासँ सटैन बगेचा छल आ तकव आगू संजय कॉलोनी। ओ कहियो घनगव छल, जगमे छल-धातवीम, बेंन आ नताभक गाछ। बघ्नाथ नहवक पुनपव ताधवि बैसल बहैत छल जाधवि बौद सहि सकै जोग बहै छल ओकव गाछीमे।

ऐ पुनपव हुनकव भेंट भेल छल एन. एन. बॉपटसँ। बॉपट बनाबसक महाबाष्ट्रीयन छल। एतह पढ़नक लिखनक, एतैसँ नोकवी शुरू केनक आ जौनपुवसँ डिप्टी जेनव भऽ बिटायव भेल। बड़ मस्तमौला आदमी छल- पुवना फिल्मी गानाक शौकीन। हुनकव दूटा शौक छल- पीअव आ गीत गायव। गाबै तखने टा छल जखन पीबै नेल बैसै छल। हुनका कोनो संतान नै छलन्हि- नहियेबेटा, नहियेबेटी। स्त्री छल जकवा सभ बूढ़ा या कहै जाग छल। ओ संजयनगवमे एकटा छोट सन फ्लैट नेने छल आ जगमे कहियो-कहियो जबर्दस्ती बघ्नाथकेँ नऽ जाग छल। आ जखैन नऽ जाग छल, किताबी कीड़ ा ऐ मास्टवकेँ गवियाबैत कनी टा चिखा दै छल।

सूर्य हुनकव शत्रु छल। ओ निअमसँ पाँच बजे साँझ कऽ पुनापव आवि जाग छल आ हुनका गावि देबं शुरू कवैत छल- बघ्नाथ, कनी देखू साढ़केँ। जानि-बूझि कऽ अबेंव कऽ बहल अछि। ओ साँझ कैक संग बेंचैन हुअए नागैत छल आ घव दिस एना भागैत छल

जेना प्वनिसक चांग्वबसँ छ्टैत चोब।

ह्यतासँ ड़ुँपब भ्२ गेन छन जखन ब़ाँपर्ट बघ्नाथसँ भेंर्ट नै केने छन- नहियें प्वनपब, नहियें ओग गाम्छीमे। ओ सभ दिन जाग छन आ घ्‌बि आबेँ छन।

ओ ओग दिन जन्दी घ्‌बि आएन छन किएकि ग्वमाब ब़ड़ छन आ पानि ब़बसैक आस छन।

कानोनीक ऋहथबिपब मकान छन मन्ना सबदाबक। बिँन पनस्तबक, ङंटोक। पैघ दबब़ज्जा, जगमे एक दिस नम्हब सन खटौन, ओत्२ ब़ान्हन चाबिटा महीस, तीनटा गाए। एत्२ भोब आ साँझ दूधक ब़र्तनक क्ृ नगाबेँ छन ब़ूँढ़। ङा काबोबाँब मन्ना सबदाबक नैत देखै छन, ह्‌नकासँ एकब कोनो मतनब़ नै छन।

कहैत अछि जे ङा कानोनी ह्‌नकब जमीनपब ब़सन अछि।

पचहत्तब-अस्सी ब़बखक मन्ना सबदाब अप्पन जमानाक पहनमान। काबि, मोर्ट, गस्सन शबीब। पेर्ट कनी निकनन। आगयो नान नंगोर्ट आ छीर्टब़ना गमछामे ड़ँघाब देह बहैत अछि आ निअमसँ पछिम ऋँह कर्२ कए पचास डंड-बैंसकी कबैत अछि। ह्‌नका ब़ँस एक्कटा शौक अछि आ एक्क टा बोग। शौक अपन हाथसँ भाँग घोर्टब़, गोना जमाएब़, ड़ुँपबसँ मनाग-बब़ड़ ी खाएब़ आ बोग- गठिया। ह्‌नकासँ डाॅक्टैब ब़ाजन छन जे जौं चाहि छी गठिया ठीक ह्‌अए तँ भाँग छोड़ि दिअ। ओ जबाब़ देने छन- ओ डाॅक्टैब साहेब़, अहाँ कहब़ तँ द्‌निया छोड़ि देब़, ब़ाकी भाँग नै।

ओ जबानी धबि शहेब जाग छन आ जे कियो पकड़ामे आबि जाग छन ओकबा ओग दिनक खिस्सा

স্বনারেঁ ছল।

বঘ্নাথ হ্নকব পহুঁচিমে খারি গেন ছল ওগ দিন। ও জহিনা ফ্নড়ন, তহিনা সবদাব প্বছনক– জেঁ বামজী মাস্টব সাহেবেঁ। ফম্হব কহ বহ রঁনা ছী খহাঁ। কী রঁতৌনে ছনৌঁ ওগ দিন।

–ধানাপ্বব সাগডক।

–খবে, খহাঁ রঁতৈনিঐ কিএ নৈ, ওগ সাগডক তঁ গ্বরু ছল।

–গ্বরু কে ?

–ছক্কন গ্বরু। খহাঁ কেনা নৈ হ্নকা চিন্হৈ ছী ? ওা তঁ খাশ্চর্যক গপ খছি। খাবূ, রৈঁসূ তঁ। পানি নৈ রঁবসত, চিন্তা নৈ করু। দেখূ প্ববরাঁ শ্বরু ভহ গেন খছি। পীতাম্ববী খা খড় াম– রঁস যএহ ধ্খা–ধজা ছল হ্নকব, চাহে জতহ বহএ। কী নম্হব ছনথি, কী ছবী সন দেহ। পবরাঁ পোসনে ছল ও। রঁস একটা পবরাঁ– সেহো সোন সন। ও খপ্পন হাথসঁ কিসমিস, রঁদাম, ছোহাড় া খ্খারেঁ ছল। এক রেঁব ও গাএরঁ ভেল ছল, হথতা ভবি নেন। গ্বরু চিংতিত। সাঢ় রিঁনা রঁতেনে কতহ চনি গেন। খাঠম দিন ঘ্বন তঁ নোন একদম নান। মাঁহি বহন ছল। গ্বরু রাঁজন– সূর্য দেবতাকেঁ ঠোব মাবি কহ খাএন খছি, জীহ খা নোন জবি বহন খছি ওকব, নখাহ নৈ দৈত খছি। পহিনে পানি পিখা। তঁ এহন ছল গ্বরু। এক রেঁব সাঁঝ কহ ভাঁগ ঘোটি কহ ওগ পাব গেন, সাহা পানি দেনক, চংদনক তিনকপব ঠোপ নগৌনক, গঙ্গাপব গজবা নপেটনক খা দানিক মংডী দানমংডীমে পৈসন। ফন্নী রাঁগ খপ্পন ঘবসঁ দেখি বহন ছল জে গ্বরু খারি বহন খছি। জহিনা গ্বরু ওকব কোঠা নগ পহুঁচন ও খপনাকেঁ সম্হাবি নৈ সকন। রাহ

রে গ্বরু। গ্বরু ওকবা ত্থপন কন্ধা ত্থা কোহনীক রীচক ঠামপব বোকি নেনক। গ্বরু রাঁজন– ম্মন্নী, ত্থাগ ঐপব ম্মজবা হোগতএ ম্মদা ঐ গনীমে নৈ, চৌকপব। ত্থসগবে হ্মম টৌ নৈ, সগব নগ্র দেখত। ত্থা গ্বরু ওকবা ঠীকে চৌকপব ত্থানি নেনক। ত্থা হ্মেব জে ম্মজবা ভেন সে নৈ পূছূ তঁ সএহ নীক। ত্থা ত্থহাঁকেঁ পতে নৈ জে গ্বরু কে ছন ?

জখন ও উঁঠন তঁ ত্থকাস সাফ ভ২ গেন ছন ত্থা জত২–তত২ ছিবিত্থাএন তাবা নখাহ পড়ি বহন ছন।

*

বঘ্নাথ জখৈন সাঁঝমে ঘূমৈ, টৈহনৈ ন২ যা মিনৈ–জ্নৈন২ রাঁহব জাগ ছন, তঁ কোশিশি কবৈ ছন জে নৌ রঁজে ধবি ঘ্বি ত্থারঁএ। বাতিক খানা ও সদিখন সোনন সংগ খাগ ছন। ণ্ডা সোননক জিদ ছন। দ্পহবিযাক২ এনা তখনে সংভব ভ২ সকৈ ছন জহিযা ওকব ছুট্টী বহএ। নৈ তঁ দাগ খানা পকা ক২ চনি জাগ ছনি ত্থা ও ত্থপনেসঁ খানা নিকানি ক২ খা নৈ ছন। নাশ্তা হিনকব ত্থনগ ছন ত্থা সোননক ত্থনগ। হিনকা ত্থঁখ্ত্থাএন রঁদাম ত্থা দূধসঁ খানী মতনরঁ ছন।

শীনাক গনতীসঁ ও রঁড় বাস গপ সিখনে ছন। ও ত্থপ্পন হিসারঁসঁ হ্নকা নৈ চনরৈঁ ছন, হ্নকব হিসারঁসঁ ও ত্থপনে চনৈত ছন। হ্নকা সস্ত্বব রঁনৈক রঁদনা রাঁপ রঁনি ক২ চনরঁ রৈসী স্বরিধাজনক নাগৈ ছন। ত্থা তামসক কোনো গপ নৈ হ্ঐন২ দিযৌ ত্থা হেরোঁ কবএ তঁ রঁদাস্তি ক২ নিত্থ ত্থা টৌবি দিযৌ। দূনূ সাঁঝক খেনাগ ত্থা স্বতরাঁসঁ মতনরঁ ছন– রাঁকী ত্থহাঁ জানূ, ত্থহাঁক কাজ জানএ। খর্চী গামসঁ, তব–তবকাবী

पेंशनसँ। आ पेंशन एतरेँ भेटै जाइ छन जे अपनेटा नै, दोसरोक छोटै-मोटै जरूरत पूरा भऽ जाए।

रहैटा प्रतोष्क संग जीवैक यएह तरीका हेरौक चाही जे सभकेँ एक-दोसराक दोस्त रहना देने छन। भऽ सकैए जे एकर पाछाँ कतौ ने कतौ हुनकर अप्पन अनुभवकथा प्रवृत्ति हुअए रा हुनकर अकछाएरँ।

जखन सोननक आग्रहपर पहिल रहैब सरना आएल छल अशोक रिहाब तँ ओ सोननक दीदीक संग ननदि सेहो छल। रिदा करै काल ओ सोनाक चेन आ अँउठी संग दूटा साड़ ी हुनका देल आ दूटा मम्मी देल देने छल। तकरा राँदो सरना कतेक रहैब आएल आ सभ घड़ ी सोनल जे कऽ सकै छल, करैत रहल- माने घरक जे चीज सरनाकेँ पसिन्न आरै ओ सरनाक। ओ कहियो नै सोचने छल जे सरना पैघ अछि- दैक कर्तव्य ओकर छै।

शीनाकेँ सेहो अप्पन गलतीक अनुभव भऽ गेल छलै जे ओ अप्पन प्रतोष्केँ र्‍यौयेमे गलती केने छल।

एतरेँ टा नै, सोनल अपना दिससँ राँप आ रहैटा- रघुनाथ आ धनंजय- क रीचक दूरी सेहो कम करैक कोशिश केलक। ओ अनग गप अछि जे दूरी घटैक रँदना रढ़ ित गेल- क्षदा ऐमे ओकर दोष कतऽ छल।

ओ धनंजयकेँ फोन कऽ कहलक जे भैया, अहाँ तँ जुन्नम करै छी। अमेरिकासँ पैसा मंगारैक होइ छल तँ की-की नै राजै छलौं। कतेक बास गप करै छलौं जे ओ जरूरत अछि, ऊँ जरूरत अछि। आ एतऽ एतेक दिनसँ हम आएल छी आ एक रहैब देखैले

नै एलौं जे भौजी कोना छथि। पापाकेँ सेहो ठीकसँ नै मालूम छथि जे ओहाँ एम.बी.ए. केलौं कि नै आ कऽ लेलौं तँ आब की कऽ रहल छी। अहाँक बियाह लेल लोक आबि रहल छथि। पापा मम्मी परेशान छथि। की चाहै छी, बताउ तँ ? एक दू दिनक लेले सही, आबि तँ जाउ।

ऐ फोनक नतीजा छल जे ओ आएल मुदा अपन घरमे नै, डायमंड होटलमे। तइसँ जे ओ असगरे नै छल, संगमे एकटा महिला छल अप्पन टिटिहरीक संग।

सोनल हुनका सभकेँ बातिमे खेलाएक लोत देने छल।

जखन रघुनाथकेँ ई खबर भेटल छल तँ ओ उठल आ चुप्पे पहाड़पुर चलि गेल।

धनंजयकेँ आबैमे कनी देर भऽ गेल छल। ओ टैक्सीसँ आएल छल। संगमे आबैवाली स्त्री नै, लड़की छल– के. विजया। सोननक उमेर की छल। नाकमे हीराक चमकैत कील, कानमे झूलैत बिंग, जूड़ ामे बेलक फूल। एकदम दक्षिण भारतीय मुदा गोर आ सुन्नर। गपसँ पता चलल जे ओ दक्खिन दिल्लीमे कोनो कारपोरेट कंपनीमे नोकरी करैत छथि। ओइ कंपनीमे ओकर पति सेहो काज करैत छल, पहिनेसँ। ओकरासँ नीक पद आ वेतन छल। ओ बिन-बियाहल छल। दुनू बियाह केलक आ नोएडामे डूप्लेक्स फ्लैट लेने छल। बच्चाक पैदा हैक किछु दिन बाद एकटा सड़क दुर्घटनामे हुनकर मृत्यु भऽ गेल छल। घर, गाड़ ी, नोकरी, बच्चा, सभ किछु मुदा छल बेसहारा। भावनामेक रूपसँ टूटि चुकल छल ओ। एनामे धनंजयसँ

भेंटै भेल छलै।

बँचीक नाम बनो डी. छल। ओ धनंजयकेँ पापा कहैत छल।

सोनल स्वनि कऽ असमंजसमे पड़ल बहल, किछु कान धवि। फेव एतबेँ बाँजल- अहाँ सभकेँ सोमे घव एबाँक चाही।

धनंजय बँहल्ला केनक जे विजयकेँ समए नै छलै। ओकबा बाँबाँ विश्वनाथक दर्शन कबैक छल, गंगा नहाबैक छलै, घाटे देखबाँक छलै, सावनाथ जेबाँक छलै- समए कतऽ अछि।

जग कान असेविकाक अनबँम देखै-देखाबैक कार्यक्रम चलि बहल छल, ओग कान डिनवक तैयावीक बँहल्ले सोनल किचेनमे आएल आ सहायता नेल धनंजयकेँ बँजेनक।

-बाजू, एतेक पैघ गप। ने अहाँ पापाकेँ बँतेनिऐ, ने मम्मीकेँ आ नहिये हमबा। ई की देखि बहल छी ?

-कोन गप ?

-एँ, यएह जे अहाँ बिँयाह कऽ नेनौं आ ककबो खबँबि धवि नै देनौं।

-के बाँजल जे हम बिँयाह कऽ नेनौं।

सोनल आश्चर्यसँ धनंजय दिस ताकनक- अहाँ दुनू एक्के छतक नीचाँ बहि बहल छी नै जानि कहियासँ, आ बँची पापा कहि बहल छी अहाँकेँ आ बिँयाह सेहो नै ? मामिना की अछि ?

धनंजय झक्किएनक- भौजी, मामिना किछु नै अछि। गप एतबेँ टा अछि जे ओकबा हमब जरूबत अछि आ हमबा ओकब- जाधबि ज्ॅबँ नै भेटै जागत

अछि।

–की ओकरा ऐ गपक अभास छै जे ओ ओकरा संग ताधरि अछि जाधरि ज◌ॅरूरि नै भेटै जागत अछि।

–ओ हम नै जनैत छी।

–अहाँ ओकरा संग रहि रहल छी, ओकर खा रहल छी, पी रहल छी, पहीर रहल छी, ओकर गाड़ ी आ पेट्रोलसँ घूमि रहल छी, ओकर रुँचिया अहाँकेँ पापा मानैत अछि, अहाँक भरोसे घर आ रूँचीकेँ छोड़ि ़ नोकरी करैत अछि। अहाँ ओकर संबंधी रॅा नोकर सेहो नै छी– फेर कोन संबंध अछि अहाँ आ ओकर बीच।

अपरतीर् भऽ धनंजय रॅाजन– भौजी, छोड़ि यौ ओ सभ। चलू आग छी।

–ऐँ, एना कोना छोड़ि देबॅ। अहाँ ओकरा धोखा दऽ रहल छी आ रेबरकूफ बॅना रहल छी। आकि फेर हमरासँ झूठि रॅाजि रहल छी रॅा नुका रहल छी।

–दिल्लीक लड़कीकेँ नै जानै छी अहाँ। भऽ सकैत अछि, काल्हि रॅची स्कूल जाए लागए तँ कान पकड़ि कऽ रॅाहर कऽ दिअए।

–एकदम कऽ देरॅाक चाही, अहाँक चानि देखि कऽ। सोनल ओकर ठेहे नैत पुछनक– एकटा गप कहू, अहाँक नजरि ओकर घर–घरारी आ सुख–सुविधा पर तँ नै अछि ?

–अच्छा, रहऽ दियौ। अहूँ हद करै छी।

–हम ऐ द्वारे कहि रहल छी, जौं हुअए, अहाँकेँ कऽ लेरॅाक चाही। सुन्दर अछि, बुझनुक अछि, ज◌ॅरूरमे अछि, अहाँकेँ ज◌ॅरूरि नै भेटए तखनो कोनो हर्ज नै। हम संग छी अहाँक। बुझलौं। चलू आरॅ।

सोनन विजयकेँ आवाज देलक। सभटा किचेनसँ कप्टैबी, प्लेट आ थाड़ी डाइनिंग रूममे लऽ गेल, एक–एक कऽ कए। सोनन बलो डी. केँ कोबामे बैसेलक, खैलक आ खुआएलक आ साढ़े एगारह बजे विदा केलक।

विदा होइसँ पहिने धनंजय भौजीकेँ असगरे लऽ गेल।

–भौजी, की ओ सत्त अछि जे भैया ओतऽ बियाह केने अछि ?

सोनन ओकर मुँह देखऽ लागल।

–आवती कऽ कए कोनो छौड़ी अछि की ओतऽ ?

सोनन बिना हुनका सभकेँ विदा केने घर भागि गेल।
*

रघुनाथ गामसँ घुरल सदा स्वार्थी आ कृतघ्न बेटाक जाइत बाद।

ओ हुनकर विचार छल, अप्पन छोटे बेटा धनंजयकेँ लऽ कऽ। ओकरा पता छलै जे ऐ नगरक अशोक विहारमे ओकर भौजीक संग बाप सेहो रहैत अछि, सदा ठहरल होटलमे। माननिऐ जे ओकर संग छलै– काशी दर्शन लेल आएल छल जे ओ लड़काक घर अछि, आसान हएत। कबराक ओ चाही जे हुनका होटलमे ठहरा कऽ अहाँ अप्पन घर आबि जैतिऐ, एतऽ रुकतिऐ सदा नै। रघुनाथ नाराज हुअए, हुनका दुख सेहो भेल। ओ गप ओ प्रतोह्सँ नै कहि सकैत छल। दोसर गप छल बापक ओगो। देखऽ चाहि छल जे जे बेटा दिल्लीसँ बनारस आबि सकैत अछि, ओ बापसँ

ভেঁটৈ করৈ নেন রঁনাবস খারি সকৈত খছি, ও রাঁপসঁ ভেঁটৈ করৈ নেন রঁনাবসসঁ ডেঢ় দূ ঘংটা দূব পহাড়প্পব খারি সকৈত খছি রাঁ নৈ।

শিকাগত তঁ হ্নকা খপ্পন রঁড় রেঁটা সংজযসঁ সেহো ছন হ্মদা পবদেসক দূবী খা ওকব খসগবে পড়ি জাগক কম্পনা হ্নকব কড় াপনকেঁ কম কহ কএ বাখনে ছন। ও এহন দেশীমে ছন জতহ মাঁ নৈ, রাঁপ নৈ, স্ত্রী নৈ। ওকব ওতহ কী হানত হোগত হেতৈ, এনামে জখন ওকবা নেন হ্ক উঠৈত ছন। ও রিস্বন নৈ ছন জে খপ্পন রিযাহ কবরাঁক রাঁদো ও খপ্পন পিতাক জব্ধবতক ধ্যান বাখনক। এতরেঁ টা নৈ, ও জে ডী-১ খশোক রিহাবমে এত্তু দিনসঁ নিস্কিকিব খছি খা খাটৈ তোড়ি বহন খছি- ওকবে চনতে। হ্নকা ওকব এক খা একমাত্র গচ্ছাক জানকাবী খছি- এক তবহে পিতাক খংতিম গচ্ছা জে ও খপ্পন খন্তিম সাঁস পহাড়প্পবমে রঁনন নর ঘবমে ছোড়এ। ও গামক পী.সী.ও. সঁ শ্বব্ধমে দূ-চাবি ফোন কহ মোন সেহো পাড়নে ছন জে কিছু ভেজূ, জতরেঁ রঁনি সকএ ওতরিযে টা, কমসঁ কম ঢাঁচা তঁ খপনা বহিতে ঠাঢ় কহ দৈতিঐ। ও শ্বব্ধমে উঁসোহ দেখেরোঁ কেনক হ্মদা খাখিবীমে ও খোঁম্বা কহ কহনক জে টকা কিএ রঁববাঁদ করৈপব নাগন ছী, ওকব সদ্পযোগ কবরাঁ নেন সোচূ। একব রাঁদসঁ বঘ্নাথ ব্ধসি গেন ছন। নহিযে ও ফেব ফোন কেনক, নহিযে ও গম্পা কেনক।

সোনন জব্ধব গপ করৈত ছন-কংপ্যুটৈবক খাগূ রৈঁসি কহ, কানমে ওযব ফোন নগা কহ। মাসমে কহিযো এক রেঁব, কহিযো দূ রেঁব। বঘ্নাথসঁ কহৈত ছন জে পাপা, খারি জৈতিঐ। খহাঁ গপ কহ নিযৌ।

ঋদা সংজয নৈ কহৈত ছল তেঁ সোননকেঁ কহৈ খা চাহৈসঁ কী। ঐ তবহেঁ হ্নকব ঝসরঁ চনৈত বহন- রএহ রাঁপক গুগো। এতরৈঁ জঝব ছল জে জখন কখনো ফোন খারৈঁত ছল, ও খপনাকেঁ রঁজারৈঁক গংতজাব কবৈত ছল, জে কহিযো নৈ ভেন।

সংজয এক রেঁব রাঁজি গেন- খনচোক্ক। তখন ওকব ভাগ ওকবা সংগ ছল। ও বাঁচীমে পঢ়ি বহন ছল ওগ কান। বঘ্নাথ মাস্টব- খাদমী কোনো প্রসংগমে গ্নতক্ততাক মতনরঁ রঁ্নিম বহন ছল জে কিযো খর্মাঁ নেন কনিযো টৌ কিছ কবৈত খছি তঁ ওকবা রিস্ববী নৈ, মোন বাখূ খা মৌকা ভেটৈএ তঁ জে কিছ কহ সকৈত ছী, কঝ। ঐ জন্মমে উঋ্ণ ভহ জাউ। একবাসঁ পৈঘ স্বখ দোসব নৈ। জখন বঘ্নাথ চ্প ভহ গেন তঁ সংজয রাঁজন- পাপা, একব মতনরঁ তঁ খর্মাঁ জতহ বদ্ধ, ওতৈ ঠাঢ় বদ্ধ। রেঁব-রেঁব ঘ্বি কহ দেখরঁ তঁ খাগূ কহিযা রঁঢ়রঁ। খর্মাঁ গ্নতক্ত হগ নেন কহি বহন ছী খাকি পএবমে রেঁড় া পহিবৈ নেন। গু গপ ঐন-গেন ঋদা বঘ্নাথক দিমাগসঁ গেন নৈ ছল।

বঘ্নাথ সেহো চাহি ছল জে রেঁটৌ খাগূ রঁঢ়এ। ও খেত খা মকান নৈ খছি জে খপ্পন ঠাম নৈ ছোড়এ। ঋদা গুহো চাহি ছল জে এহনো মৌকা খারঁএ জখন সভ কিযো এক সংগ হ্খএ, এক ঠাম হ্খএ। খপনামে হঁসৈএ, গারৈঁএ, নড় এ, ঝগড় া কবৈএ, হা-হা খী-খী কবৈএ, খাগএ পিরৈঁএ, ঘবক স্বন-সন্নাটৌ টূটৈএ। ঋদা কতেক রঁবখ ভহ বহন খছি- কিযো কত্তী খছি, কিযো কত্তী। খা রেঁটৌ খাগূ রঁঢ় ত এত্ত খাগূ রঁঢ়ি গেন ছল জে ওতহ সঁ পাছাঁ দেখএ তঁ নহিযে রাঁপ নজবি খারৈঁ নহিযে মাঁ।

कखनो कखनो हुनका लागै छल जे ओ बाँझपनै जना विभिन्न सन्तान रहितहुँ तँ बेसी नीक होइतए। ओ सेहो हुनके सन दारू छानि कऽ गओतहुँ आ मस्त रहतहुँ।

गामसँ घुरलाक बाद ओ अप्पन प्रतोष्सँ घनंजयकेँ लऽ कऽ किछु नै पुछलक। प्रतोष् अपने उदास आ बेमार लागि रहल छल। ओ सोचि कऽ जे ओकरकेँ बँहुत बास एहन बीमारी होइत अछि जइ लऽ कऽ पूछब ठीक नै। ओ चुप्पा लगा गेल।

हुनकर बीच गप होइत छल बातिमे, खेलाइक ऐबेलपर। रघुनाथ गामक सोचमे जीबैत रहैत छल, ओ रएह गप करैत छल, प्रतोष्क विश्वविद्यालयक, अप्पन विभागक, लड़का-लड़कीक, प्रशासनक। हुनका अनुक्षणाम सन देखि कऽ रघुनाथ शुरू केलक, पहाड़पुरमे हुअबेला ग्रामसभा चुनाव कऽ लऽ कऽ- बूझू, एहन कानपर गेल छी जखन चुनावक माहौल छै। पहाड़पुरक ग्रामसभा अछि आरक्षित कोटाक। लड़ैत अछि दलित आ पिछड़ल होइत अछि ठाकुर वोटै, जकर संख्या अछि साठि। ओ साठि वोटै जकरा चाहै सभापति बना दिअए आ जकरा चाहै प्रधान बना दिअए। ठाढ़ अछि सोमारू राम आ मगरू राम- हम जइ दिन पहुँचलौं, ओइ दिन साँझकेँ ठाकुरक सभक बैठकी छल बब्बन काका कतय। तय भेल जे यएह मौका अछि जखन ओ पकड़ा मे आएत आ यएह मौका अछि बदला लेबाक। जेतबा ऐंठैक अछि, ऐंठ लिअ, नै तँ फेर हाथ नै आबएबला। विचार भेल जे दुनिया आ देश एक्कैसम शताब्दीमे चलि गेल अछि आ पहाड़पुरमे मंदिर नै, जत चढ़ाबै लेल खाली महादेव स्थान अछि। कहल जाए तँ जे एक लाख

देत, रोटि ओकरे देल जाएत।

जौं एकबा लेल दुनू तैयार भऽ जाए, तखन ? किये नीचेमे ठेकलक।

ऐपर दू टा विचार आगू आएल। एक ग्रुपक कहब छल जे एहन हालतमे रोटी बाँढ़ि लैत बढ़ू। एक कऽ डेढ़, डेढ़ कऽ दू- एना। जे बेसी दिअए, रोटि ओकरे देल जाए। दोसर ग्रुपक कहब छल जे नै, ई मोल भाव अछि, नीलामी सन चीज अछि, अप्पन जखानसँ पनठबै अप्पन प्रतिष्ठाक आ मर्यादाक अनुकूल नै अछि। दुनूसँ एक-एक आध नऽ लेल जाए आ रोटि आध-आध बाँटि लेल जाए। तीस एक कऽ, तीस दोसर कऽ। बँटाएल दुनूकेँ नै जाए। ओ मानि कऽ चलए जे साठियो हमरे जा रहल अछि।

नर पीढ़ी ऐ दुनूसँ असहमत छल। हुनकर कहब छल जे अहाँ सभ अप्पन मंदिर आ महादेवकेँ लऽ कऽ चाटू, हमरा हमर दारू आ मुर्गा चाही।

रघुनाथकेँ ई सभ सुनबैत मजा आबि रहल छलै मुदा ओ देखि रहल छल जे सोनन नहियें सुनि रहल छल आ नहियें बस लऽ रहल छल। हुनकर मन कतौ आन ठाम छल। खाना खाए लेलाक बाद जखन ओ हाथ धोगले आएल तँ देखलक जे सोनन अप्पन बिछौनपर चितांग पड़ल छल आ कानि रहल छल। रघुनाथ हुनकर कोठलीमे ठाढ़ भऽ कऽ किछु काल धरि बुझबाबैक कोशिश करैत रहल- बेटा सोनन, की गप अछि ?

सोनन आर कानऽ लागल।

-बेटा, आज तँ की गप अछि। रघुनाथ अपनाकेँ सम्हारैत पुछलक।

-संजय दोसर बियाह कऽ लेलक। सोनन

मिचकीक संग राँजन- हम काल्हि फोनपर गप केलौं। तखन राँजन- कमसँ कम हमरासँ पूछि तँ लैतिऐ।

*

भ्रम आ भरोस- यएह अछि जिनगीक स्रोत। ऐ स्रोतसँ फूटैत अछि जिनगी आ फेर रहैत निकलैत अछि- निर्मल-कलकल।

कखनो-कखनो लागैत छल जे ई अलग-अलग चीज होइत अछि। स्रोत एक्के होइत अछि-ओकरा भ्रम कहू आकि भरोस। ई नै हुअए तँ जीअरो सेहो नै हुअए।

यएह स्रोत रघुनाथक जिनगी छल। जखन अमेरिकासँ घुरलाक बाद सोनल राँजल छल जे पापा, हमरा लागि रहल अछि जे संजय ओतइ रहि जाए चाहैत अछि। गंडिया आएत जरूर मुदा रहत नै, रिजिष्ट करै लेल। तँ रघुनाथ हुनकापर व्यंग्यसँ मुस्की देने छल- कतेक जानै छी संजयकेँ। बाप एतइ, माँ एतइ, भाए एतइ, बहिन एतइ। आर तँ आर स्त्री सेहो एतइ। ओ कहलक किछु नै, खाली मुस्की देने छल जे ओ अप्पन बापक दीनता आ दरिद्रता देखने अछि। ओ दुखी आ परेशान भइ कइ कहियो-कहियो राँजै छल जे चिंता नै करू, एतरेँ कमाएब-एतरेँ कमाएब जे घरमे बाथैक जगह नै हएत। मुदा कमाइेक ई रहस्य नहियेे ओ बुझि सकल आ नहियेे सकलना। आग हुनका लागै छल जे ओ सोनलसँ बियाह सोनल लेल नै, अमेरिका जाए लेल केने छल।

रघुनाथ, तँ जिनगी अहाँकेँ जे जियैक छल, ओ जी चुकलौं। आबे अहाँ अप्पन रैगज्जती लेल जीबि

रहल छी।

ई कियो नै कहि रहल छल मुदा हुनकर कान सुनि रहल छल आ ई मूक स्वर हुनकर हृदए धरि पहुँचि रहल छल।

ओइ साँझ ओ भोजन केलाक बाद घरक पछुआरमे अप्पन डेरा नै गेल। ड्राइंग रूममे बैसल रहि गेल। ओ पूरा राति ओहिना काटि देलक- बैसल-बैसल। नीन नै एलै। तरह-तरहक आशंका आबि-जा रहल छलै जइमे सभसँ प्रबल छल जे कतौ ई लड़की आवेशमे आबि कऽ किछु कऽ नै लिअए।

ई कहैक जरूरत नै आ एकरामे दू राय नै जे ऐ समाचारसँ हुनका एक तरहेँ आली सुख भेटैत छल जे ओकरासँ बियाह करैक पहिने की ओ हमरासँ पुछने छल। अहाँक बाप तँ गप करबाक जरूरतो नै बुझलक। एतऽ धरि जे नोत सेहो ऊपर मोने देने छल। आब बुझू। जे केलौं तकर दंड भेटैत। आब कानि किए रहल छी। हम आकि कियो आन की करत। मुदा ई सुख कनी काल धरिक छल। एना सोचब ओकर निष्ठुरता आ अमानवीयता हेतै। ओइ हालतमे तँ आरो जखन ओ अप्पन व्यवहारसँ हुनकर हृदए जीत लेने छल। एहन विचार अपनामे निचताइ अछि। एहन कालमे सहृदएता आ प्रेम चाही।

बिजली ड्राइंग रूम सेहो जरि रहल छल आ सोनलक कमरा सेहो।

रघुनाथकेँ कनियो टा आहटि भेटै तँ आस्तेसँ जाइ छल आ ओकर कोठलीमे हुलकी दै छल जे सभ किछु ठीक-ठाक तँ अछि।

रातिक डेढ़-दू बजेक आसपास सोनल हँसैत

डाॅक्टर कमरे आएल– पापा, आमेहला नै करू, निश्चिंत रहू। जाउ, स्वति जाउ। मम्मीक कोठलीमे रहा देबामे।

रघुनाथ नजा गेलथि। हम ऐ उबरसँ थोड़े रहैसन छी भाग। हमरा नीन नै आबि रहल अछि। सोननक ध्यान डाॅक्टर कमरक ओग पैघ फोटोपर गेल जे ओकर रिपोर्टक छल। शाोत विसेपशनक छल। संजय–सोनन दूटा ऊँच मथमनक फूलसँ सजल कुर्सीपर रहैसन छल आ दुनूक माथपर हाथ बाखने सक्सेना साहेब पाछाँ ठाढ़ छल।

–पापा एकटा प्रार्थना अछि।

–कहू।

–ई गप घरमे रहए। अहाँ, मम्मी आ सबना दीदीक बीच। हमर पापाकेँ नै पता चलए।

–किए ?

–ओ बर्दाश्त नै कऽ सकथिन। दू बेर अटैक भऽ चुकल छन्हि।

रघुनाथ किछु कहऽ चाहैत छल मुदा चुप भऽ गेल। ओ सोननकेँ बाजऽ दै चाहै छल जइसँ जे ओकर मनमे अछि, निकालि कऽ हल्लुक भऽ जाए। ई नीक अछि जे ओ खाली स्वनए।

–पापा हम चाही तँ हुनका कोर्टमे नमाड़ि सकै छी, पेमान लोगत रहता। हम भागि कऽ नै आएल छी, हुनक छोड़ि कऽ नै आएल छी। आएल छी निर्णय भऽ कऽ। हमही टा नै, ओ सेहो चाहैत रहथिन जे हम हाउस वाइफ बनि कऽ नै रही। नोकरी करी आ सेहो अप्पन देशमे। आब एतऽ एलाक बादो अहाँ मीठ–मीठ गप करैत रही। एक बेर नै बतौलथिन

জে হ্নকব মনমে কী খছি ? এহনো নৈ জে হমবা ৰজৌনখিন নৈ খা হম খাৰঁহ সঁ মনা ক২ দেনে হোগ ।

–জ্ন্বম খছি । সোনন ৰিখ–সৰিখ হোগত ৰাজন । –খহাঁ কী ৰ্ন্নৈ ছী হমবা । এঁ, খহাঁ ডাযৰোৰ্সক নেন প্বছনে তঁ বহিতিঐ হমবা, হঁ ক২ দৈতিঐ । খহাঁ নৈ দৈতিঐ, কহতিঐ তঁ হম দ২ দৈতিঐ । প্বছৰো টৌ নৈ কেনক, গশাবা সেহো নৈ কেনক । ৰিনা ডাগৰোৰ্স ৰিযাহ ক২ বহন ছী । খপমানিত ক২ কএ । ৰিনা কোনো গনতীক, কসূবক । খা নির্নজ্জতা ঙা খছি জে প্বছনাপব হ্মস্ক্বাৰৈত কহৈ ছী জে হঁ ভাগ, ক২ নেনৌং । কব২ পড়ন । মূর্খ ৰ্ন্নৈ ছী হমবা । জেনা হম খহাঁকেঁ জানিতে নৈ ছী । জেনা হমবা খহাঁক কিবদানী নৈ ৰ্ঝন খছি । হম তঁ ৰাৰূ খহাঁক খাটৈ ঠাঢ় ক২ দৈতৌং, হ্মদা কী ৰতাৰী । নোক যএহ ৰ্ঝত জে হম ঙা সভ গ্বজাব নেন ক২ বহন ছী, জখৈন কি হম থূক ফেকৈ ছী খহাঁক কমাগপব । কী সময ভ২ বহন খছি পাপা । চাবি, সাঢ়ে চাবি । ৰুকূ, খহাঁকেঁ চাহ পিযাৰৈঁ ছী ।

ও উঁঠন খা কিচেনমে চনি গেন ।

ঠঁডী ৰেঁসী ছন । বঘ্নাথ পএবকেঁ সীবকমে নপেটৈ ক২ সোফাপব পড়ন ছন । হ্নকা নীক নাগি বহন ছননি জে সোননক মূড ৰঁদনি গেন ছৈ । হ্মদা ঙা নীক নৈ নাগি বহন ছননি জে ও হ্নকাসঁ ওনা গপ কবএ জেনা ও সংজয খছি । গনতী হ্নকব ৰেঁটৌ কেনে ছন হ্মদা খপবাধৰোধসঁ গ্রস্ত ও ছন । ও ভীতবসঁ ডবন খা ঘৰঁবাএন ছন ।

ও কহৈ তঁ ককৰোসঁ নৈ ছন হ্মদা গাম হ্নকা নেন স্ববক্ষিত নৈ বহি গেন ছননি । ৰেঁটৌ সভকেঁ গাম

𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒥𑒩𑒐 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒩𑒼𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿। 𑒒𑒩𑒹𑒪𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒢𑒹𑒯𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒚𑒲𑒏𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑓄 𑒠𑒻 𑒕𑒪। 𑒞𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒏 𑒏𑒩𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒿𑒠𑒼 𑒖𑒮𑒩𑓀𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒐𑒹𑒞 𑒞𑒐𑒻𑒢 𑒖𑒼𑒞𑒻 𑒕𑒪 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒖𑒼𑒞𑒰𑒃 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪 𑒂 𑒩𑒼𑒏𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒿𑒠𑒼 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒪𑒲 𑒥𑓀𑒠 𑒏𑓄 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒐𑒹𑒞𑒧𑒹 𑒪𑓄 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦। 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒲 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒗𑒑𑒛𑓃𑒰 𑒧𑒼𑒪 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒙𑒱𑒏𑒥 𑒧𑒳𑒬𑓂𑒏𑒱𑒪 𑒕𑒪। 𑒩𑒒𑒳𑒢𑒰𑒟 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒪– 𑒮𑒦 𑒥𑒹𑒩 𑒔𑒳𑒣 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒅𑒿, 𑒮𑒯𑒱 𑒪𑒱𑒁, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒗𑓀𑒗𑒙𑒱 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒴। 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒠𑒏 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒐𑒹𑒞𑒣𑒩 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪– 𑒄 𑒑𑒣 𑒏𑒏𑒩𑒼𑒮𑒿 𑒢𑒳𑒏𑒰𑒋𑒪 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒮𑓂𑒨𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒪।

𑒢𑒩𑒹𑒬 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒒𑒩𑒏 𑒂𑒑𑒴 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒖𑒧𑒲𑒢𑒣𑒩 𑒐𑒳𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒧𑒯𑒲𑒮 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒥 𑒤𑒹𑒩 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪। 𑒩𑒒𑒳𑒢𑒰𑒟 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒼 𑒏𑓄 𑒁𑒢𑒚𑒰 𑒏𑓄 𑒔𑒪𑒱 𑒠𑒻 𑒕𑒪। 𑒏𑒹 𑒩𑒼𑒖–𑒩𑒼𑒖 𑒏𑒱𑒔𑒏𑒱𑒔 𑒏𑒩𑒋।

𑒌 𑒥𑒹𑒩 𑒞𑒿 𑒮𑒢𑒹𑒯𑒲 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪, 𑒍𑒃𑒮𑒿 𑒍 𑒂𑒩𑒼 𑒯𑒳𑒠𑒻𑒮 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒃𑒮𑒿 𑒞𑒲𑒢 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒳𑒏𑒰 𑒑𑒣 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒼𑒙𑒩𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒕𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩। 𑒣𑒻𑓀𑒙–𑒬𑒩𑓂𑒙𑒧𑒹। 𑒍 𑒅𑒞𑒩𑒪 𑒂 𑒥𑒩𑒢𑓂𑒛𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒐𑒰𑒙𑒣𑒩 𑒣𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒪। 𑒮𑒢𑒹𑒯𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒖𑒾𑒪𑒏, 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒥𑒏 𑒨𑒋𑒯 𑒒𑒩 𑒕𑒱𑒌? 𑒤𑒹𑒩 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒍 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰–𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒂𑒥𑒻𑒿 𑒕𑒟𑒱𑒢। 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱𑒢। 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱𑒢। 𑒬𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒞𑓄 𑒥𑒮𑒼𑒥𑒰𑒮 𑒕𑒢𑒱– 𑒞𑒩𑒯 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢। 𑒖𑒰𑒃𑒞–𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒃𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒱𑒧𑒰𑒑 𑒚𑒹𑒏𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒂𑒏𑒱 𑒢𑒻। 𑒮𑒢𑒹𑒯𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒖𑒹 𑒍

नीक छौड़ा। सभ्य नै अछि। कोनो भरोस नै अछि एहन छौड़ाक संगक। जखन दिनोमे एतऽ आबि सकैत अछि तँ नग्न रंगावस करै दूबे अछि। एकबासँ पहिने कहियो देखने नै छल ओकरा। जे चुपचाप पठौने छल ओकर शर्टक नीचाँ पेस्तौल राँ बिराल्वर जेहन चीज छल। सनेहीक विपोर्टक अनुसार ई भेल जे ओ बनरफल लोगते घरसँ राँडल निकलल रंग कऽ देने छल। ओ कारण राँसौक कोशिश करै छल मुदा किछु राँस्य नै सकल।

शीने सन वघुनाथक सेहो अजीबे स्थिति छल। ओ एतऽ वरहितिएँ तँ गामक नेन चिंतित बनै छल, ओतऊका गप करै छल आ घुरैक राँहन्ना खोजैत बनै छल मुदा एँराँव जेहन संकेत भेटै बहन छलै से ओतऽ घुरैक सोचेमे डर लागै छलै। एँराँव ओ तय कऽ नेने छल जे राँसी जरूरी हुअए तँ दोसर गप अछि, मुदा अशोक रिहाबक डेरा अछिये। ओ राँनल बहुए, हुनका आब किछु नै चाही। मुदा एतऽ? एतऽ संजय हुनका आगू दोसर समस्या ठाढ़ कऽ देने छल। आबे ओ पूर्ण रूपसँ सोननक मर्जीपर छल। ओ चाहे तँ बहऽ दिअए, चाहे तँ निकालि कऽ राँहल कऽ दिअए। भाग, अहाँ ताधरि हमर सम्बन्ध छी जाधरि अहाँक राँटौ हमर साँए छल। जखन ओ पति नै, तँ अहाँ सम्बन्ध केहन, कोन गपक? ई कोनो सवाय आ धर्मशाना अछि नै जे पड़ल-पड़ल रोटी तोड़ि बहन छी, स्थितयाक। चलू एतऽसँ, अप्पन राँटे नापू।

हुनका नीक गप यएह लागि बहन छलनि जे ओ किछु कहऽए, ओतसँ पहिने ओ कहि दिअए, राँटी, राँड़ भऽ गेल, आबे आक्तो दिअ।

(ओ ओ बुझैत छल जे ओ कहैसँ नाञ्‍ि हुनका भेटैत। भऽ सकैए ओ पिघन जाए आ मना कऽ दिअए।)

सोनल चाह नऽ कऽ आबि गेल- दूटा पैघ मगमे। एकटा मग हुनकर आगू राखैत बाजल-पापा, अहाँ एहन बेटा किए जनमेलौं। जे ओ नै देखै छल जे ओकरा नग छै, सदिखन उँम्हरे देखैए, जे दोसराक नग छै- नेब चुअबैत। पता अछि, ओ आबती ग्रुर्जरसँ बियाह करने अछि।

रघुनाथ चाह सुड़कलक। ओ कोनो सोचमे डूमल छल।

-ऐ दुआरे जे ओ असगर संतान अछि- करोड़पति एन.आर.आइ. व्यवसायीक। एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट कंपनी आबती इंटरप्राइजेजक मालिकक।

-बेटा, हम सभ ओ नै सुनऽ चाहै छी। हम खाली एतबे चाहै छी जे अप्पन पापाकेँ जा कहियौ आ आबे हमर छुट्टी करू।

-की। की कहलौं अहाँ? कनी फेर तँ सुनी। सोनलक अबाज अनचोक्के उँच भऽ गेलै।

रघुनाथ बिना ओकरा दिस ताकने चाह सुड़कैत रहल। सोनल हुनकर हाथसँ मग छीन लेलक। -एकदम्म नै। कान पकड़ू आ कहू जे एहन गप फेर नै करब।

रघुनाथ असहाय आ निराश आँखिसँ हुनका ताकलक।

ओ कानैत रघुनाथक कोरामे गुबकि गेल- पापा, संजय छोड़ि देलक, कोनो गप नै, अहाँ तँ हमरा नै छोड़ू।

*

रघुनाथ अप्पन जिनगीक समए नापैत छल, अप्पन पएरसँ, ओकर चालि आ तागतिसँ, फेफड़ ासँ आबैत जागत साँससँ। एक समए छल जखन ओ पंद्रह सोलह मील जाग छल मामागाम। रौदमे। रौद थाकल, रौद कत्तौ रौसन- आ प्रसन्न बहै छल। फेर ओ समए घटैत श्वरू भेल- आठ मील, फेर छह मील, फेर चारि मील, फेर एक मील। आ ओ आब डेबामे आरि कह घोकचि गेल छल। जौं कत्तौ निकलबाक होगत अछि तँ आब दूटा पएर रौसी नै होग छै, एकटा तेसर पएर सेहो लगाबह पड़ ैत अछि आ ओ तेसर पएर छल- छड़ ी।

आब ओ तिपहिया मनुख छल।

संतोष ओ छलै जे हुनकर सन चौपाया मनुखसँ कॉलोनी भरल छल। जीयैक आस यएह छलै जे ओ असगरे नै अछि। हुनकर सन रौड़ बास लोक अछि। कतेक लोक तँ हुनकोसँ खराप स्थितिमे अछि। जे हिस्सा ओ किरायापर देने अछि आ अपना बहै लेल एकमहला चुनने अछि, ओ ओतै अटैकल बहैत अछि। कोनो तरहे रौनकनीमे आबैत अछि आ ओतह रौसन-रौसन पूरा दिन लोककेँ आबैत-जागत देखि कह अप्पन जीवित होगक अहसास करैत अछि।

रघुनाथ कोनो तरहेँ पार्क आ लहर तक आरि जाग छल, गाम नै जा सकै छल। एतहसँ थ्री-व्हीलर रौ टेम्पो लेबै, रौस अड्डा जाएबै, रौसमे धक्का-मुक्कीक रौच चारि घंटा रौसन बहबै, लहरपर उतरबै, फेर ओतहसँ पाँर-पैदल डेढ़-दू किलोमीटर गाम जाएबै मुश्किल भह जाग छल। जोड़मे दर्द सेहो बहह लागल छल। सदा जेना-जेना गाम जाएबै कम होगत

গেন, তেনা–তেনা ওত্তক্কা জমীন–জানক চিংতা ৰঁঢ়ন গেন।

সোনন হ্নকা ডেবাসঁ হটা কঽ ঘবক গেস্ট–ৰুমমে বাখি দেনে ছন। ও ঠঁডীসঁ ৰঁচি গেন ছন ক্ষদা খিড়কী নগ ৰৈস কঽ বাতি ভবি খপ্পন গাম খা খেতমে ঘ্মৈত বহৈত ছন খা সনাহ দৈত বহৈ ছন। থাকি জাগ ছন তঁ ৰাঁকী সমএ ঐ সোচমে নগাৰৈঁ ছন জে সোনন হ্নকব কে খছি। নে প্বতোহ্, নে ৰেটী– কী ও ওকব ঘবমে ৰৈসন খছি? জে হ্নকব খছি, ও নৈ জানি কতঽ–কতঽ খছি। হ্নকা তঁ ফিকিবে নৈ ছনি। পূবা দিযাদ–ৰাঁদ– জকব এক–একটা পজেৰাঁ ও জোড়নে ছন– ছিড়ঁা যা গেন ছন। এতঽ ধবি জে শীনাকেঁ সেহো খপ্পন ৰেটীক ঘব ৰৈস কঽ ৰাঁঢ়নি নগাএৰ খা খেনাগ ৰঁনাএৰ স্বীকাব ছন, ক্ষদা প্বতোহ্ কতঽ বহৰ স্বীকাব নৈ। খা খাৰ তঁ প্বতোহ্ সেহো কহাঁ বহি গেন খছি। শীনা যা জকবা ককবো পতা চনত, দস ৰাঁত হ্নকে স্বনাএত, উঁনটৈ জে কোন সবোকাবসঁ ওতঽ ছী খহাঁ।

ওা হনদনী এক ভোব হ্নকা কঁনোনীক শৰ্মা পী.সী.ও. ধবি নঽ গেন। হ্নকা সৰ্দী–ৰোঁখাব ছননি। কতেক দিনসঁ ৰাঁহব নৈ নিকনি বহন ছন। সোনন নৈ নিকনঽ দৈ ছন। ক্ষদা খপ্পন দ্নূ ৰেটাসঁ হ্নাগনন গপ কবৈক উঁদ্দেশ্যসঁ সসবি খাএন– চ্পচাপ।

সভসঁ পহিনে সংজযকেঁ ফোন কেনক– যএহ সাঢ়ে খাঠ ৰজেক সমএ হোগত খছি, জখন সোনন কংপ্যূটৈবপব ৰৈসন ছন।

–হনো, হম ৰঁনাবসসঁ বঘ্নাথ।

–সংজয। খপনা নগ বাখূ ওা চবণ–স্পৰ্শ।

নাজ খারৈঁএ খপনাকেঁ খহাঁক রাঁপ কহৈত হমবা। জে নীচতা খহাঁ দেখেনে ছী খহাঁ, ওগসঁ হমবা গপ নৈ কবরাঁক চাহী, ক্ষদা...

–খনস্মন গপ রঁদ কব্ধ।

–স্বনূ, হম খশীঞ্চ ভঽ গেন ছী। জিনগীক কোনো ঠেকান নৈ, কখৈন কী হ্খএ। খারঁ খেতী নৈ হএত হমবাসঁ। যা তঁ খারি কঽ সম্হাব্ধ যা রঁতাঙঁ কী কবী। গামক জমীন–জানক। সংজয। ধনংজযসঁ তঁ প্বছরেঁ কবরঁ, ক্ষদা খহাঁ পৈঘ ছী। মানিক ছী। খহাঁ কী কহৈ ছী ?

সংজয–০০০০

–নৈ, নৈ, হম রএহ সভ কবরঁ জে খহাঁ কহরঁ। কহিযৌ তঁ। রিচাব দিখ খপন।

–সংজয–০০০০

–হঁ। তঁ সভ রেঁচি দিঐ। ওগ পাগসঁ এক–ডেঢ় কোঠনীক রঁনাবসমে ফ্লৈট নঽ নিঐ। রাঁকী জমা কঽ দিঐ খা ওকব সূদসঁ দ্নূ পবানী জীরী–খাগ।

–সংজয–০০০০

–হঁ, হঁ। পেঁশিন তঁ বহরেঁ কবত। ক্ষদা স্বনূ, ঙা কাজ খপ্পন মাঁ–রাঁপক নেন খহী কব্ধ। ঙা হমবাসঁ নৈ হএত।

–সংজয–০০০০

–ঐ দ্খাবে জে ঙা পাপ খপনা হাথসঁ নৈ কবরঁ। ঐ দ্খাবে জে ও প্ববখা সরঁহক চীজ ছী, হ্নকব ধবোহব ছী। দোসবাক চীজ রেঁচরাঁক খধিকাব হমবা নৈ খছি।

–সংজয–০০০০

–নৈ, হম একদম্মে ভার্ক নৈ ছী। ক্ষদা হমব খেত নৈ ছী। একবা হম জিন্স খাকি মান মানৈ নেন

তৈযাব নৈ ছী। আ স্বনূ, অপ্পন সনাহ অপনা নগ বাখূ। সাঢ়। নমকহবাম।

ও ফোন বাখি দেনক।

কিছু কান ধবি সোচৈত বহন জে ফোন কবী আকি নৈ কবী। আখিবমে নগা দেনক নংবঁব।

–হনো, ধনংজয অছি কী ?

–মহিনা স্বব–০০০০

–হম বঘ্নাথ। হ্নকব পিতা।

–ধনংজয–০০০০

–হনো বাজূ। অহাঁ বঁনাবস এনৌং হ্মদা গাম নৈ এনৌং। হম গংতজাব কবৈত বহি গেনৌং।

–ধনংজয–০০০০

মৌকা নৈ ভেঁটৈন তঁ নৈ ভেঁটৈন। জাএ দিযৌ। এহন অছি বেঁটৗ জে হম আবঁ কোনো কাজক নেন নৈ বহনৌং। কাজ–ধাজ নৈ হোগএ। সমস্যা অছি খেতক। ওকব কী কবী ?

–ধনংজয–০০০০

–নৈ, ও তঁ ঠীক অছি হ্মদা সনেহী কহিযা ধবি দেখত। ওকবা নোক কবৈএনে নৈ দৈত অছি। ওকব সবঁহক আঁখি নাগন অছি অপ্পন খেতপব।

–ধনংজয–০০০০

–তঁ অখৈন বকি জাগ ছী। মানি নিঅ বকি জাগ। হ্মদা ওকবাসঁ পহিনে হম চনি জাগ তঁ। সংজয সেহো বাঁহব, অহুঁ বাঁহব। ফেব কে ?

–ধনংজয–০০০০

–ঠীক অছি, বেঁচ দৈ ছী হ্মদা ওতবেঁ পাগক কিছু কবএ পড়ত নে। কী কবী ওকব ?

–ধনংজয–০০০০

–आध–आध बाँटि देबै अहाँ दुनू भागमे। फेर हमर आ अहाँक माँक की हएत ? हम की खाएब ? अच्छा स्वनू, ओ बताउ जे अहाँ की कऽ रहल छी आग–काल्हि।

–धनंजय–००००

–आग धरि नै भेटैल अछि नोकरी। कतेक दिन लागत अखन। अहीं किए नै आरि जाग छी। मैनेजमेंटक ज्ञानक उपयोग खेतीक बिजनेसमे नै भऽ सकैत अछि ?

धनंजय फोन काटि देलक।

–हरामखोर। रघुनाथ पी.सी.ओ.सँ बाहर आरि गेल। साढ़, डोनेशनसँ पढ़बै तँ पुछत के ? ने कारिनती अछि नहियेँ पैरवी– चलल अछि मैनेजर बनै नऽ।

ओ घर नै जा कऽ सोझे पार्क गेल आ नकड़ ीक बैंचपर बैसि गेल।

पार्कक बगलबला नेनमे घर छल पारसनाथ शर्माक आ तीन–चारिटा दाग हुनकासँ झगड़ ा कऽ रहल छल। हल्लामे एक–दू बेर कानोनीक कोनो ने कोनो घरक आगू एहन सीन भऽ जाग छल। किए होग छल एहन सीन, एकरा सभ किछो जानै छल तँए महत्व नै दै छल।

–छल ओ जे सभ घरमे बाँग्लादेशी दाग छल। सोलह–सत्रहक उमेरसँ पैंतीस–चालीस सालक। बूढ़मे सँ ककरो ने ककरो बुढ़ी या अप्पन बेटा–पुतोहु नग बाहर चलि जाग छल किछु मासक लेल। बहै छल तँ बाग–द्वेषसँ मुक्त भऽ आ बुढ़बाकेँ एतबेँ छुटैट देने। बूढ़मे शागते कोनो बूढ़ छल जकरा अप्पन जरान

হেৰোঁক ভ্রম নৈ হএত খা ও সমএ–সমএপব পবীক্ষণ নৈ কবহ চাহৈত জে হ্নকামে কিছু ৰচন খছি খাকি নৈ। হুঞ্ঝাক মাবন সভ বূঁঢ় প্রেম, দ্নাবক নামপব এহেন ছূষ্টৈ নহ নৈ ছন খা দাগ সভ সেহো সার্বুন, তেন, নেনপ◌াঁনিশি, নিপিস্টিক ৰাঁ পদ্রহ–ৰীস টৈকা ৰখশীস পারি সংতোষ কহ নৈ ছন। ও হ্নকা কতহ কাজ কবৈত স্ববক্ষিত খনুভব কবৈত ছন। সমস্যা ওতহ ঠাঢ় হোগ ছন জতহ বূঁঢ় খপ্পন দাগকেঁ সেরাক ঋতারিক ৰখশীস দৈমে না–ন্বক্ষড় কবৈ ছন। ঙা প্রণয কনহ জেহেন মামনা হোগত ছন জগমে তেসবাক দখন দৈক জৰুবত নৈ পড় ৈত ছন। (ৰেঁসী জানকাবী নেন পত্রকাব স্বশীন ত্রিপাঠীক স্টাবী পঢ়ূ– খাখিব খশোক রিহাবক প্ররেশি–দ্বাবপব মদানা কমজোবী খা সিসনোথোনক সমস্যাক নিরাবণক জড় ী–বূঁটী রনৌষধিসঁ শৈর্তিযা গনাজক পীখব তম্বূঁ সান ভবি কিএ তনন বহৈত খছি।)

ঐ কনহ–কোনাহনসঁ নিবপেক্ষ বঘ্নাথ ৰেঁচপব ধূপ সেরন কহ বহন ছন তখনে হ্নকা তাকৈত প্ববনা মিত্র জীরনাথ রর্মা পহুঁচন। ও হ্নকে সংগ বিষ্টোযব ভেন ছন খা বসাযন শাস্ত্রক খধ্যাপক ছন। নগ্রমে ৰেঁষ্টো–প্বতোহ্ক সংগ সাকেত রিহাবমে বহৈত ছন।

কার্যকানক দিনমে কিছু নোক হ্নকা পাগন বুঁনৈ ছন খা কিছু জীনিযস। চনা–চৰেঁনাপব জীরিত বহৈৰানী ভাবতক খস্সী প্রতিশৈত জনতা হ্নকব চিংতাক রিষয ছন। ও সেহো শৌকীন ছন ভূজাক (ভুজনাঠীসঁ ভুজন চনা, মষ্টৈব, নাগ, চূড় া, ৰাঁনি) ক। ভাবী মোশিকন ছন সামান্য নোকক। কড় াহী জ্টৌঙ, ৰাঁন্ব খা নীমকক ৰঁদোৰস্ত কৰু, চ্ন্হা জবাঙ, ওকব গবম হোগক খা ধধকৈক গংতজাব কৰু, তখন জা কহ ভুজ্জা তৈযাব

होगत अछि। एहन नै भेल सकैत अछि जे ओ सभ अंग्रेजी नै पोसल पड़ए। कतेक बास वर्षक चिंतन मननक बाद ओ एकटा प्रयोग केने छल। किएक तँ ओ राष्ट्रीय स्तरक समस्या छल जकर समाधान खोजि कऽ निकालने छल तएसँ हुनकर हार्दिक इच्छा छल जे एकर उद्घाटन वैज्ञानिक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम करथि। यदा मिनिस्टरी लगेने छल रघुनाथे। ओ कहने छल जे प्रयोग अखन प्रक्रियामे अछि तएसँ आयोजन स्थानीय स्तरपर हुअए।

बड़ खर्च केने छल रमा। घरक आगू तम्बू लगेनक, तीस अध्यापक लेल कुर्सी मंगबैने छल, कैटेररसँ चालीसटा थारी मंगबैनक, माइक लगबैनक। सभ अध्यापकक थारीमे चारिटा चना राखनक आ प्रिंसिपल, जकरा उद्घाटन करबाक छलै, हुनकर थारीमे पाँचटा। थपड़ीक गड़गड़ाहटिक बीच प्रिंसिपल साहेब पाँचो दाना खसेलक आ दकड़ैत थुकड़ा देलक। माइकपर एक वाक्य बाजल- ओ चना लोहाक अछि आ जहर अछि।

सभ अध्यापक चिखने बिना प्लेट फेक देलक आ चलि गेल।

हुनका मोताबिक रमा हुनकर अपमान केलक आ रमाकि मोताबिक ओ रमाकि।

प्रयोग ओना तँ गोपनीय छल, ओकरा लऽ कऽ बताओल सेहो नै जा सकै छल यदा रघुनाथकेँ जे जानकारी छलै से ओ जे रमा झाड़ू पोछि कऽ जमीनपर एक किलो चना पसारलक, ओइपर स्पिरिट छिड़कलक,काठी जरैलक, धधरा उठल आ चना भुजा गेल। (खोइचा जड़ि गेल, यद्दा ओहिना काँचे बहि

গেল।)

যএহ ভুজ্জা ফেমরঁনা রর্মা কিছু কাল হুনকা দেখৈত রহল আ আস্তুসঁ কহলক- রঘুনাথ। রঘুনাথ জখন মাথ উঠেলক তঁ ও নপকল-এঁ। ঞা সম্ে থহী ছিঐ। ভজাব, কী ভ২ গেল থহাঁকেঁ। কল্লা রৈসি গেল ছৈ, গাল ধঁসি গেল ছৈ, দাঁত ঝড়ি গেল ছৈ, আঁখি ভীতর চলি গেল ছৈ- এনা কেনা ভ২ গেল। চিন্হমে নৈ আরি রহল ছী থহাঁ।

রঘুনাথ হঁসল, ঠাঢ় ভেল, হুনকা রাঁহিমে লেলক আ থপনা সংগ রৈসারৈত রাঁজল- কনী ঞম্হব।

কিছু নৈ ভজাব, গেল ছলৌं কাল্হি পেঁশন আঁফিস। জখন ঘুবং নগলৌं তঁ রঁড় । রাঁবূ পুছলক- রঘুনাথ জিরিতে থছি আকি গুজবি গেল। হম পুছলৌं- এনা কেনা রাঁজি রহল ছী। ও কহলক- ফাগল রঁদ পড়ল থছি হুনকর। মগসঁ পেঁশন নৈ চঢ়ল থছি। কিএ ? ও রাঁজল জে নাগর সর্টিফিকেট নৈ দেলে থছি। তঁ হম যদি দেখৈযে লেল এলৌं জে মামিলা কী থছি ?

-রঁড় নীক কেলৌं, ঐ রঁহল্লে থহাঁসঁ ভেঁট ভ২ গেল। ওকবামে কিছু কবরাঁক তঁ থছি নৈ। ফাবম ভবি ক২ বজিস্ট্রাবকেঁ দেরাঁক থছি। ও দস টকা লেত আ প্রমাণিত ক২ দেত। ফেব রঁবখ ভবিক চিন্তা থমে।

রঘুনাথ রঁড় মিঝাএল মোনসঁ রাঁজল- জীরনাথ। হমবা চৌথনিযা জীরনমে কোনো কচি নৈ থছি।

রর্মা রঁড় দুখী ভ২ ক২ রঘুনাথকেঁ দেখলক- ভজাব, কী রাঁত থছি। থহাঁ এহল তঁ নৈ রহিঐ। চলূ ঘব। জাঞক হুথএ তঁ সাঁঝকেঁ জাএরঁ। রঘুনাথ

एकटा हाथमे लाठी आ दोसरमे रमाकि कन्हा धेने घुरल।

*

जीरनाथ रमा जागत-जागत एकटा नव आफत ठाढ़ कऽ कए गेल छल, ओ कहैत जे अपना सरँहक लेल ठँड़ जीलौं बग्घू म्हदा अपना लेल जीवूँ।

यएह ओ गप छल जे कहियो हुनका अप्पन दिमागमे नै आएल। अपनासँ अलग सेहो किछु होगत अछि की? की रँटा अप्पन नै छल? रँटी अप्पन नै छल। स्त्री अप्पन नै छल। खेत-खलिहान अप्पन नै छल। ओ जरूर अछि जे सभ कियो अपना लेल जीरन चाहि छल। ककरो ऐ गपक चिन्ता नै छलै जे ओ जी रहल अछि आकि मरि रहल अछि। ओकर अप्पन खगता सभसँ रँसी बहै छलै आ ओ नै चाहि छल जे कियो ओकरापर कोनो सराल उँठारँ। अहाँ ओकरा अप्पन रौँटे जाए दियौ आ जाए दगमे मदति करू तँ अहाँसँ नीक कियो नै।

म्हदा की हुनकर जिनगी बघुनाथक जिनगी छल।

नै, हुनाँक चाही छलै अप्पन अलगसँ। जे भेलै नै। आ जीरनाथ रमा ओ सभ तखैन कहि रहल छल जखन कान स्वनि नै सकैत छल, आँखि देखि नै सकैत छल। कन्ना चराँ नै सकै छलै, डाँड़ सोझ नै भऽ सकै छलै। आ ओ सभ किछो अपन प्रति आ पतिक कर्तव्यक भेँटे चढ़ा गेलै। ओ ओ मानै लेल एकदम्म तैयार नै छल जे अप्पनक भेषमे ओ दोसर छल। ओ कत्तौसँ अलग नै छल, अलेकआ नै छल। बघुनाथ स्वयं सुतक्ते भारसँ शीनाकेँ दोसराक घरसँ आनने छल, यएह हुनकर हुनका सभपर उपकार छल जे हुनका नै

जानैत-पहचानैत हुनका संग आएल छल आ एक नव दुनिया बचएमे हुनकर संग देने छल।

आखिर कोन उम्मेदसँ रघुनाथ शीनासँ मिलि कऽ रचने छल ओ दुनियाँ।

ओ एतबेँ निःस्पृह आ निस्वार्थ तँ नै छल आ हुनकर आशा सेहो हुनकासँ अलग नै छल, जे गाम-घरक छल। की जे ओ अशिक्ष भऽ जाए तँ बँच हुनकर आँखि बँनत, हुनकर हाथ-पएर बँनत। ओ दुखित हएत तँ यएह बँचा हुनकर सेवा करत, दवा-दारू करत, अस्पतालमे भर्ती कराएत। मरऽ लागत तँ मुँहमे गंगाजल-तुलसी देत, अर्थी सजाएत, श्मशान लऽ जाएत, क्रिया-कर्म करत।

मुदा देखू तँ एकरासँ बेसी मूर्खता की भऽ सकैत अछि। अरे, मरलाक बाद सड़य-गलय, कौआ-चील खाए वा फफर- की फर्क पड़ै छै।

मुदा यदि दुनियाक आ दुनियाक चलैत रहैक कायदा ओ रहैत अछि कि की पैदा हुअए वा जिअए। जीअबेँ अहाँक कर्तव्य अछि। कर्तव्य माने की? अशिक्ष। किये ओ नै पुछलक अपनासँ- ककरा लेल जी रहल छी? ओ जन्मक बाद जाधरि जी रहल अछि, जी रहल अछि। मरय कऽ दिन धरि। मरय कऽ दिन बाँप-बेँटाक हाथ ओ सभ किछु सौंपि कऽ जागत अछि जे ओकरा संग रहैत अछि। निअ, सम्हारू आबेँ। हम चललौं।

रघुनाथ लग गामक जमीनक अलाबेँ किछु नै छल आ ओग जमीनकेँ ओ अलमोल बुझैत छल। बेँटा हुनका कैशमे भजोखा देखैत छल आ कहि रहल छल जे एकरासँ बेसी तँ हमर एक मासक गलकम अछि।

সংজযক টিপ্পণী বঘ্নাথক ভীতবক সভটা জীরনক বস চূসি নেনে ছন। ও খপ্পন কোঠনীক খিড়কী নগ রৈসন কদম্বক পাতক পাব খাসমান দেখি বহন ছন জে সূর্যাস্তক রাঁদ মনিছৌঁহ ছন। ওতহ হ্নকব খাঁখিক খাগূ একটা মফ্রিম তাবা ছন জে হিনৈত পাতক খড়মে কখনো ন্বকা জাগ ছন, কখনো হ্নকহ নাগৈ ছন। ঞ তাবা নৈ ছন। হ্নকব পিতা ছন জে হ্নকাপব হঁসৈত ছন খা ন্বকা জাগ ছন।

–হৌ জীরনাথ স্বনহ। খপ্পন দিন তঁ রঁচন নৈ জীরাঁক নেন ফদা জীখন ছী খপনা নেন। ও খচানকে চিকড়ি উঁঠন জেনা জীরনাথ সদ্যঃ গেটৈক রাঁহব ঠাঢ় খছি।

তাবাক ত্তকমিনানী নাবা। তাবা হ্নকা নাবাক মোন পাড়ি দেনে ছন, ওগ নাবাক জে হ্নকব নিতাঁত খপ্পন জিনগীক গ্বপ্ত হীস ছন।

জগ দিন বঘ্নাথ খপ্পন কিশোবারস্থা পাব কহ বহন ছন ওগ কান হ্নকাসঁ টক্কব নেনে ছন নাবা চন্থা। একটা খল্হড় খা সোন্ন সন নড়কী। খঁডাকাব ফঁহেরানী স্বন্দব নড়কী। সপনাএন খাঁখি। নাকক নোকপব রঁদমাসী। ঠোঢ়ক কোনপব হঁসী। ছড় ৗসন দেহ জনা হরামে থবথবাগত রঁ্নরঁ্না। কমী ছন তঁ রঁস দূটা পাঁখিক, জকব সহাযতাসঁ ও জখৈন চাহএ তখন উঁড়ি সকএ।

বঘ্নাথ মামক ঘব বহি কহ পঢ় াগ কেনে ছন খা ও খাগূ বঢ় ছন রঁগনামে। পৈঘ রঁহিন হ◌াঁস্টনমে ছন খা ও মাঁ–রাঁপক সংগ। বঘ্নাথসঁ এক কনাস উঁপব ছন। ও জখৈন–তখৈন সাঁঝক রঁল্বঁক বোশনীমে পাপাক সংগ রৈডমিংটন খেনাগ ছন তঁ বঘ্নাথ খপ্পন

দবরাজাপব ঠাঢ় ভ২ ক২ দেখৈত ছন।

এক দিন জখন নাবাক মাএ-ৰাঁপ কোনো সমারোহমে ৰাহব গেন ছন, ও গশাবাসঁ বঘ্নাথকেঁ ৰজৈনে ছন। ও ঘবক ড্রেসমে ছন- স্কর্ট খা ৰ্নাউঁজমে। ও বঘ্নাথক সংগ কৈবম খেনাগ নেন ৰৈস গেন খা কিছু কান ধবি খেনাগত বহন। ফেব খচানকে উঁঠন, দৌড় ক২ ন◌াঁনমে গেন, পীখব গ্বনাৰক ফূন সংগ ঘ্বন খা কেসমে নগা ক২ ঠাঢ় ভ২ গেন- খাৰ কহ্ন, কেহন নাগৈ ছী। খপবতীৰ ভ২ বঘ্নাথ দেখৈত বহন খা খাস্তুসঁ ৰাজন- নীক।

-এঁ, খানী নীকে ? নাবাক খাঁখি ফাটৈন বহি গেনৈ।

বঘ্নাথকেঁ ৰ্নৌমে নৈ এনৈ জে খাগূ কী ৰাজী।

নাবা পএবসঁ ঠেন ক২ ৰোঁউকেঁ এক দিস কেনক খা হাথ পকড়া ক২ ঠাঢ় ক২ দেনক বঘ্নাথকেঁ। ওকব খাঁখি নোবা গেনৈ, ৰাজন- গোৰব। মোনেমোন চাহি ছী জে নীকে-নীক ৰাজী, খহাঁক খাঁখি ঠোঢ়, খাংগ্বব, ৰাঁহি, খা পূবা দেহ নীক ৰাজী। খা... ও এক-এক ক২ ওকব খংগা খা পৈঁঠ খোনৈত গেন।

-খপ্পন সেহো হম খোনী খাকি খহুঁ কিছু কবৰ। ও নজাগত কনহ্সকী কেনক।

জনা-জনা বস্ত্র ওকব দেহসঁ খনগ হোগত গেন, ওনা-ওনা একটা খজ্ঞাত, খনদেখন, খকল্পিত দ্নিযাঁ খ্জৈত গেনৈ ওকব খাগাঁ কনী-কনী। হ্মদা ঙা কনী-কনী খসহ্য ভ২ গেনৈ বঘ্নাথ নেন। ও ৰৈসব্র্ব খা জংগনী ভ২ উঁঠন। ও নাবাক সংযমপব চকিত সেহো ছন খা হ্মথ্ব সেহো। ও হ্নকা খাস্তুসঁ ৰৈসৈনক খা হ্নকেপব নমড়া গেন- ফূনসঁ ৰনন গাছ সন। হ্নকা

भीतर नैसँ पहिने हुनकर कानमे फुसफुसैनक– बुझ्बाम। कहियो मेट्टाएबँ नै। आ हुनकर आँपन जीहक नोकसँ दहिना दिस निखनक– एन.ए.। जखन बाँम छातीपर आब. निख बहन छल ओग कान कॅानिबेँन बाँजन।

ओ तवपि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। बाँजन– पहिक्ष आ भागू पाछाँसँ।

फेर तँ मास भविक बाँदे चछा साहेबँक बँदनी भऽ गेन आ ओ चनि गेन।

ऐ गपकेँ या तँ बघुनाथ जानैत छन या नाबा–तेसब किया नै। एहन बँहुत बास गप अछि हुनकर जिनगीमे जे रएह टा जानैत अछि। की ओ नै छन अपना नेन जिअबँ।

ककरो नै पता जे श्बव्सँ बघुनाथ एकटा चोबक जिनगी जिअन अछि जे हुनका नजबि आबैबँना जिनगीसँ बेँसी असनी आ अप्पन बहन अछि। नहियो माँ–बाँपकेँ पता, नहियो स्त्रीकेँ, नहियो बेँटा–बेँटीकेँ। ऐ जिनगीक भीतर एकटा दोसब जिनगी। जकबा नोक देखैत छन आ बुझैत छन ओ दोसबाक नेन आ दोसबाक काजक नेन भने बहन हुअए– हुनकर अप्पन जिनगी नै छन। मजा आ ममेना ऐ जिनगीमे छनै जे हुनकर निजी छन आ जे प्रेमक खोजमे गुजबि गेन। जमानासँ बँचा कऽ, नोकक आँखिसँ चोबा कऽ, अपना आँखिमे गर्दा मोंकि कऽ, हुनका धोखा दऽ कऽ। जे हुनकर अनाबेँ, ओकबा पता छनै, ऐ गपक भनक भने भेंटैन होएत ककबो, पूर्ण जानकाबी ककबो नै।

पूबा जानकाबी तँ अहाँक बँदमाशीक सेहो नै अछि ककबो बघुनाथ। ओहो चोबीक जीवन छन

ঋহাঁক। ঋহাঁ হ◌স্পিটলমে ছলৌং ওগ কান। ঋহাঁক ভজাব শ্রীবাম তিরাবী, ভেঁটে কবএ নেন খাএন ছল ঋহাঁসঁ। খাএন ছল তঁ ঋস্পতান ঋপ্পন মাঁকেঁ নহ কহ, হ্নকব হানত সীবিযস ছল। মাঁকেঁ ঋপ্পন ভাগক জিম্মা ছোড়ি কহ ঋহাঁসঁ ভেঁটে কবহ নেন খাএন ছল। জখন ও জাএ নাগন তঁ ওকব জেবীসঁ খসন তাগসঁ বাঁহ্ন নোটে ঋহাঁ দেখনে ছলৌং খা চ্প বহলৌং। বাঁদমে গাননৌং তঁ এক সএ তীন টৈকা ছল। মাঁকেঁ দেখা কহ ঘংটা ভবি বাঁদ ফেব খাএন- চিন্তিত, পবেশান খা ঘবঁড় াএন। ঋগতে ও জতহ বৈঁসন ছল ওতহ ফেব চৌকীক নীচাঁ টৈবুঁনপব খা ওকব নীচাঁ কোঠনীমে চাব্দ দিস দেখৈত বহল। বুঁঝনাক বাঁদো ঋহাঁ ওকবা প্বছলে ছলৌং- কী গপ ঋছি ? কিছু টৈকা ছলৈ দবাগ নেন, ভেটে নৈ বহল ঋছি। খান ঠাম কত্তৗ তঁ গেনৌং নৈ। ঋহাঁ দেখনৌং তঁ নৈ। খা ঋহাঁ উত্তব কী দেনৌং- ঋস্পতানক ভীড়-ভাড়মে কনী সম্ভবি কহ বহবাঁক ছল। ওতহ জতেক পেশেন্ট খাবৈত ঋছি ওন্ত চোব খা পাকিটমাব সেহো। ঞা সভক শিকাগত ঋছি। নৈ ভজাব। খাব কত্তৗ গেনে নৈ ছী। খসন হএত তঁ এন্ত কত্তৗ, জেবী কটবাঁক তঁ সবানে নৈ ঋছি।

-তঁ দেখূ নে, কতহ ঋছি এতহ। ঋছি কত্তৗ ?

-তঁ বঘ্নাথ ঞাহো ঋহী ছলৌং। বএহ ঋহাঁক নিজী জিনগী। জৌং ঞা জিনগী নোককেঁ পতা চনন হেতিঐ তঁ ঋহাঁ কী এতেক খাদবণীয খা গণ্যমান বহি গেন হেতিঐ যা নৈ, ঋপনে সোচূ।

বঘ্নাথ সোচনক খা বমাকেঁ ঋপনা নেন জিবূঁবনা সনাহপব ঋবিচনিত বহল। ঐ দগাবাঁজ খাদব খা প্রতিষ্ঠাক বঁদনা খামোক ঞা নংগটপনী বৈঁসী নীক ছল।

অপনা নেন সেহো আ সমাজ নেন সেহো। ঈ আদমী ঠৌক নৈ সমাজক বিসংগতিক সেহো চেহবা অছি, জে ঝাঁপন–ফনাএন অছি। সমাজ জানএ জে জঁ হম বঁদমাশী ছী তঁ ঐ বঁদমাশীক কাবণ অসগবে হম নৈ ছী, ও সেহো অছি। আ সহী কহিযৌ তঁ ওকবে কাবণ হম এহন ছী।

–পাপা। সোনন দববাজাসঁ আরাজ দেনক। –অহাঁ অখৈন ধবি অন্হাবমে পঠৌযন ছী। ও স্বিচ আঁন কেনক আ কমবামে বোশনী ভ২ গেন।

বঘুনাথক আঁখি চোন্হৈন, ফেব পসবি গেন। পহিন বেঁব সোননক সংগ একটা ঘবা। নম্হব, স্বন্দব, আঁখিপব নৈ মাথপব চশ্মা, কন্হাপব ঝোবা, খাদীক ফর্তা আ জীন্সক পৈঁট। এক হাথমে নপেটৈন অখবাব। বঘুনাথ উঠি ক২ বিছৌনপব আএন।

–পাপা। যএহ অছি সমীব। দৈনিক ভাবতক উপ–সংপাদক।

বঘুনাথক পএব ছুনক সমীব।

–হমব কজিন অছি। হম বতৌনে বহী। ঈ বিসবি গেন হেথিন। জগ কান হম পটনামে বিসর্চ ক২ বহন বহী, ওগ কান ঈ সেহো ওত্তে ছন। আগ অচানক সেমিনাবমে ভেটৈ গেন। নহ ক২ আবি গেনৌং অপনা সংগ।

–কত২ বহৈ ছী বেঁটা।

–এত্তে, নগেমে। সংজয নগবমে।

–ঐঁ। ওত২ তঁ হম গেন ছী। অপ্পন দোস্ত বাপটৈ কতয।

–হম হ্নকে ফ্লৈটক নীচাঁ বহৈ ছী। আবঁ তঁ হ্নকব ফ্লৈটমে হ্নকব বেঁটা আবি গেন অছি, স্ত্রী বঁচাক

সংগ।

চৌংকল বঘ্নাথ– হ্নকব ৰেংটৗ ? ৰেংটৗ কহাঁ ছল হ্নকা।

সমীব সোননকেঁ তাকনক। সোনন ৰতৈনক জে ওগ কান খহাঁ গাম গেন ছলৌঁ। হ্নকা কিছু নৈ পতা।

সমীব ৰাজন– পাপা। কী খহাঁকেঁ খৰব খছি জে ৰাপটৈক মডব ভৼ গেন খছি পছিনা দিন। নহবমে হ্নকব নাশি ভেটৈন ছল। খা খহাঁ খাশ্চর্য কবৰ জে এফ.খাগ.খাব. খহী ৰেংটৗক নামে খছি। পেপবমে খাএন ছল ঔ সমাচাব। খহী ৰেংটৗকেঁ ও খনাথানযসঁ খডাপ্টৈ কেনে ছল, জখন ও ৰঁচা ছল। পঢ়ৈনক, নিখৈনক, কোনো নোকবী সেহো দিখা দেনে ছল ওকবা। চানি–চনন নীক নৈ ছনৈ তগসঁ নিকানি দেনে ছল ওকবা ঘবসঁ। ঔ চাহি ছল জে খপনা বহিতে ফ্লৈট ওকব নাম নিখি দিখএ। শাযদ নিখৰাগও নেনে ছল ও, ঐ শর্তপব জে ও ঐমে তহিযে খাএত জখন ও নৈ বহত। কহৰ ফ্শিকন খছি জে কী কোনা ভেন।

বঘ্নাথ কাঠ সন ৰৈসন বহন– ৰিনা হিন–ড্ন। কনী কানমে চশ্মা উঁতাবনক, গবমে নপেটৈন মফনবসঁ পোছনক, ফেব নগা নেনক। জনা ও ৰাপটৈকেঁ দেখৼ চাহি ছল। ঐ নগবমে এনাক ৰাদ জে নোক খসগবে হ্নকব দোস্ত হৈত ছল হ্নকব ও ৰাপটৈ ছল। হ্নকব ফ্হসঁ খাশ্চর্য সন নৈ, একটৗ খাহ সন নিকনন ঔ ৰাক্য– ঔ কী হৈত জা বহন খছি নোককেঁ। ঔ কেহন হৈত জা বহন খছি দ্নিযাঁ। হম ৰড় নীক নৈ বহী ফ্দা এন্তু খবাৰ সেহো নৈ ছনৌঁ।

–পাপা, সমীবসঁ কহি বহন ছী জে ঐ নগবমে

जखन अप्पन घर अछि तँ ओतऽ किए। ऊपरो तँ एकटा कमरा खाली पड़ल अछि।

रघुनाथ कातर भऽ कऽ हाथ जोड़लक- जे करबाक अछि करू, हमरा अहसगरे छोड़ि दिअ। प्लीज।

रघुनाथ बिना खेने-पिने बाति बुझाबि देलक। नीन नै एलै। ओ कोठलीमे बत्ती मिझा कऽ स्वतेत छल मुदा आग जड़ैत छोड़ि देलक। एक बेजे बाति लुनकर आँखिक आगू बापटैक चेहरा घुमैत रहल आ कानमे ओकर गीत- हाए हाए ये जालिम जमाना। मुदा एकर बाद लुनकर द्वादएक अबाज कानमे धक-धकक बदना मारलक-मारलक कहि धड़कवें शुरू कऽ देलक। रोशनीक रंग पीअरसँ लाल हुअए लागल। फेर तँ ओ जिम्हर नजरि घुमाबै छल, उम्हरसँ कोदारि, फड़हरि, हँसू, चक्कू, पघरिया, डंटा, पाथर, पेस्तौल कूदैत-फाँगैत ननकारा दैत नचाह दै छल। कनी कानमे रोशनी नै, जना शोनितक फूही उड़ए लागल आ चारू दिस दीवार लाल भऽ गेल। ओ उठि कऽ बैस गेल आ अपनासँ बाजल- ऐ दुनियाँमे कहियो हरियरका रंग लोगत छलै भाग, ओ कतऽ गेलै ?

*

जनरवीक ओ साँझ कहियो नै बिसरत।

साँझ तँ मौसम कऽ देने छल मुदा छल दुपहरिया। कनी काल पहिने बौद छल। ओ खाना खैने छल आ खा कऽ अखन अपना कोठलीमे पटायल छल, आकि अन्हर-बिहाड़ि। घरक सभटा खिड़की दरबज्जा भड़-भड़ करैत अपने-आप बन्द-खुलय

नागन। छिटैकिम्ने छिड़ि या कऽ कत्तौ खसन, सभ रौस्त उँघड़ा-भाँड़ भऽ गेल नागन, जेना धवती हिनि गेल हुअए। देराव थवथवाए नागन। अकास कावी भऽ गेल आ चाक दिस घोव अन्हाव।

ओ उठि कऽ रैसि गेन।

आंगन आ न◌ाॅन पैघ-पैघ रॅर्फक पाथवक पथाव नागि गेन आ वेनिंग टुटि कऽ खसन-धड़ाम। ओकव वाद जे मूसनाधाव रॅर्षा शुरू भेन तँ ओ पानिक ठोप नै छन, नागन जेना ओ पानिक वस्सी हुअए जकवा पकड़ि कऽ किओ चाहे तँ ओतऽ धवि चनि जाए जतएसँ ओ छोड़न जा वहन अछि। मेघ नगाताव गड़गड़ा वहन छन- दूव नै, माथपव विजनी कड़कि वहन छन, दूव नै खिड़कीसँ भीतव आँखिमे।

एकरहत्तवि रॅवखक बूढ़ वघुनाथ आश्चर्यचकित। ओ अचानके की भऽ गेन। किए भऽ वहन अछि। ओ क्षणपवसँ रॅनवटैपी हटैनक, शेवीवसँ सीवक अनग केनक आ खिड़की नग ठाढ़ भऽ गेन।

खिड़कीक दून्नू पन्ना गिड्डीक मदतिसँ खुजन छन आ ओ वाहव देखि वहन छन।

घवक वाहव कदम्बक रॅड़ पैघ गाछ छन क्षदा ओकवा पता नै चनि वहन छनै ऐ अन्हावक काबण, घनघोव रॅर्षाक काबण। छतक डाउँन पाइपसँ जनधावा खसि वहन छन आ ओकव अवाज अनगसँ स्वनाइ पड़ि वहन छन।

एहन मौसम, एहन रॅर्षा आ एहन हवा ओ देखने नै छन। दिमागपव जोव देनाक वाद मोन पड़नै- साठि-वासठि रॅवख पहिने। ओ स्कूल जाए नागन छन- गामसँ दू मील दूव। मौसम खवाब देखि कऽ मास्टव

साहेबें समएसँ पहिने छुट्टी देने छल। ओ सभटा बँचा संग गाछीमे पहुँचने छल आकि बिहाबि, बँर्खा आ अन्हाब। सभ आमक गाछक अढ़ नैने चाहनक म्दा बिबौ ह्नका घास सन उँड़ेनेक आ गाछीसँ बाँहेब धानक खेतमे जा कऽ पटकि देनक। ककबो मोबा-मपटा आ किताबँ-कापीक पता नै। बँर्खाकि बुँन्नी ह्नकब देहपब गोनीक छर्बा सन नागि बहन छन, ओ कानऽ बाँजऽ नागन। बिबौ थमनाक बाँद जखन बँर्खा कनी कम भेन तँ गामक नोक नानटेन आ टॉर्च नऽ कऽ निकनन छन खोज नेन।

ओ एकटा दुर्घटना छन आ दुर्घटना नै ह्थए तँ जिनगी की ?

आ ओहो एकटा दुर्घटने छन जे बाँहेब एहन मौसम अछि आ ओ कोठनीमे अछि।

कतेक दिन भऽ गेनै बँर्खामे भिजना।

कतेक दिन भऽ गेनै नू केब मोकसी मोकेना।

कतेक दिन भऽ गेनै जेठक घाममे ड्मना।

कतेक दिन भऽ गेन ओजोबिया बातिमे घुमना।

कतेक दिन भऽ गेनै जाड़मे ठिठ्बना, दाँत कटकटेना।

की ओ तओसँ होओए जे हम एकबासँ बँचन बही। बँचि कऽ चनी। या तओसँ जे एकबा भोगी, एकबा जीबी, एकबासँ दोस्ती कबी, गप कबी, माथपब बैंसाबी।

हम एकबासँ ओना ब्यबहाब कबै छी जेना ओ हमब शत्रु अछि। किए कबै छी एना।

ओम्हब कतेक दिनसँ बघुनाथकेँ नागै छन जे ओ

दिन दूर नै जखन ओ नै बहैत आ ई धरती बहि जाइत। ओ चलि जाइत आ ऐ धरतीक वैभव, ऐश्वर्य, सौंदर्य- ई मेघ, रौद, गाछ-वृक्ष, फसिल, धार-नाला, कछार, जंगल-पहाड़ आ ई सभ किछु एतै छूटि जाइत।

ओ सभ किछु अप्पन आँखिमे रखा लैत चाहै छल जेना ओ भने चलि जाइत, आँखि बहि जेतै, चामपर सभ चीजक थाप सोख' चाहैए जेना चाम केचुली सन एत' छूटि जाइत आ ओकर स्पर्श हुनका धरि पहुँचैत बहैत।

हुनका लागै छल जे रौसी दिन नै रहल अछि हुनका जागमे। सम्भव अछि जे ओ दिन काल्हि हुअए जखन हुनका लेल सूर्य नै उगए। उगत जरूर, मुदा ओकरा दोसर देखत- ओ नै। की ई संभव अछि जे ओ सूरजकेँ बान्हि क' अपना संग लेने जाए- नहियेँ ओ बहए, नहियेँ उगए आ नहियेँ देखए। मुदा एकटा सूरज पूरा धरती तँ नै, ओ कोन-कोन चीजकेँ बान्हत आ ककरा-ककरा देखैसँ रोकत।

हुनकर बाँहि एतेक नम्हर भ' जाइए जे ओ ओइमे पूरा धरती समेटि लिअए आ मरए वा जिअए तँ सभक संग।

मुदा एकटा कचोटि आर छलै रघुनाथकेँ जे ओकरा कचोटि बहल छलै, काल्हि धरि कत' छल ई प्रेम। धरतीसँ प्रेमक। ई व्यग्रता। काल्हि सेहो ई धरती छल। ई मेघ, अकास, तारा, सूर्य आ चन्द्रमा। धार, झरना, सागर, जंगल, पहाड़। ई गली, मकान, चौरेटिया। कत' छल ई उद्वेग। फुर्सति नै छलै एकरा सभकेँ देखबाक। आइ जखन मृत्यु बिनाश जना

आस्तेसँ कोठलीमे आबि बहल अछि तँ बाबूक जिनगी खनाग दऽ बहल अछि।

–सत सत बताउँ बघुनाथ, अहाँकेँ भेटैत जकबा नऽ कऽ कहियो सोचने छलौं। कहियो सोचने छलौं जे एकटा छोटे गामसँ नऽ कऽ अमेबिका धबि पसबि जाएब। पीठ्चीपब बैसि कऽ बोटी–पियाज्–नीमक खाएबला अहाँ अशोक बिहावमे बैस कऽ नंच आ डिनब कबब।

म्हदा बघुनाथ ओ सभ नै सुनि बहल छल। ओ अबाज बाबूक गड़गड़ाहटि आ बखाकि अबाजमे दबि गेल छल। ओ अपना बंगमे नै छल। हुनकब नजबि गेल कोनमे ठाढ़ लाठी आ छत्ता दिस। जाड़क ठंठी ओहिनो भयानक छल उपबसँ पाथब आ बर्खा। हिम्मत जबाब दऽ बहल छलै, तकब बादो ओ दबबज्जा खोलनक। खोलनक की, ओ ओत्तै ठाढ़ छल आ अपने–आप खुजि गेलै। भीजल हबा सनसनाएत अंदब आएल आ ओ डबि कऽ पाछाँ हटि गेल। फेब साहस केलक आ बाबू निकलैक तैयाबी शुरू केलक। पूबा बाँहिमे थर्मोकोट पहिबलक, ओएपब सूती अंगा, फेब ओएपब स्वेटब, उपबसँ कोट। उनी पैंट पहिने पहिबनेने छल। ओ जाड़क भोबमे पहिब कऽ टहलैक कपड़ा छलै। छलै तँ मफलब सेहो म्हदा ओकबासँ बेसी जरूबी छलै– गमछा।

बखाकेँ देखैत। जना–जना कपड़ा भिजतै, ओ एक–एक कऽ उताबैत आ फेकैत जाएत आ अंतमे बहि जेतै ओ गमछा।

ओ अप्पन साज–बाजक संग अखनो पूबा आश्वस्त नै छल। उघाब, बिना केसक माथकेँ नऽ कऽ ओ

द्‌रिधामे छल- कनटेप ठीक बहुत रंगा गमछा रान्हि निर्खए ।

पाथर जे खसरौंक छल, श्वकहेमे खसि गेल छल आ आरं ओकरा कोनो खंदेशो सेहो नै छलै ।

ओ गमछाकेँ गरमे चारू दिससँ लपेटैनक आ उंघावे माथे राहब आरि गेल ।

आरं नहियो कियो बोकैरना आ नहियो टेकैरना । ओ राजल- हे मन । चलू । घुरि कह एनौं तँ राम-राम । नै एनौं तँ राम-राम ।

पाथररना रंथकि थन्हार स्वरंगमे उतरैसँ पहिने ओ ओ नै सोचने छल जे भीजल कपड़ाक भारक संग एक ठेग रढ़र हुनका लेल कक्शकिल हएत ।

ओ अप्पन कमरासँ निकलि आएल कदा गेटैक राहब नै जा सकल ।

छत्त खुजैसँ पहिने जे पहिन्नक ठोप ओकर उंघार, खन्नाठै माथपर खसल, ओ एतेक पलखति नै देलक जे ओ रुम्मि सकए जे ओ रिजली कड़कल छिछि आकि नोमाक किन्नी छिछि जे माथमे भूर करैत भीतरे-भीतरे तड़रा धरि पैसि गेल छिछि । ओकर पूरा शरीर कनकना उठल । ओ निराउं रंथामे रैस गेल कदा भीजैसँ नै रचि सकल । जखन धरि छत्ता खुजल, ताधरि ओ पूरा भीज गेल छल ।

आरं ओ फँसि गेल छल- रफरिना हरा आ रंथकि रीच । हरा घास सन ओकरा उंपर उड़ । बहल छलै आ रंथा जमीनपर पटैकि बहल छलै । भीजल कपड़ाक भार उड़ह नै दह बहल छलै आ हरा घिसियेने जा बहल छलै । हुनका एतरें टौ मोन छलनि जे नोमाक गेटैपर ओ कतेक रेर भहरा कह खसल आ ओ तखन

ধবি চনন জখন ছত্তাক কমানী ঠূটি গেন খা ও উঁড়ৈত গেটক বাহব গাএমে ভঽ গেন। খামে হ্নকা এহন নাগি বহন ছন জে হবা ঠাম-ঠামসঁ নোচি বহন খছি খা পানি দাগি বহন খছি- জবৈত ছোননীসঁ।

খচেত হৈকঽ খসৈসঁ পহিনে হ্নকব দিমাগমে জ্ঞানদত্ত চৌবে খাএন- হ্নকব মিত্র। ও দূ বেব খামেহ্না কবৈক প্রযাস কেনে ছন- পহিন্বক বেব নোহতা স্টেশনক নগ বেন পটবীপব নগ্রসঁ দূব নির্জন স্থনপব, জতঽ ককবো খাএব-জাএব নৈ ছন। সময ও পৈসেংজব বা মানগাড় কি নৈ, এক্সপ্রেস খাকি মেনক চ্ননে ছন। জে হৈক খছি খটৈসঁ হ্খএ, জগসঁ তকনীফ নৈ হোগ। ও পটবীপব স্বতনে ছন জে মেন খাবৈত দেখনক। জানে কী, ওহি সং জীবনক মোহ পৈদা ভেন খা উঠি কেব ভাগহি মে ভেন জে ঘ্টনাক নগ পগব খচাক। ওা মবহি সে বৈসী খবাবে ভেন। বৈসাখীক সহাবা খা ঘব বনা কেব গাগব খ দ্কোব। এক বেব ফেব খামেহ্নাক জ্নূন সবাব ভেন ওহি পব। খহি বেব সিবানক গনাব। ও বৈসাখী ফেংক ছনাংগ নগৈনক খা পগন মে ছপাক কি বাবোহ পকড়ি মে খাবি গেন। তীন দিন বিনা খাযন পিযন ভূখন চিন্নাবৈত বহন গনাব মে-খাওব নিকনন তে দোসব টূটৈন পগবক সংগ।

খাগ বএহ জ্ঞানদত্ত বিনা পএবক জ্ঞানদত্ত চৌবাহাপব ভীখ মাংগৈএ। মবৈক খাস ওকবা কতৌকঽ নৈ ছোড়নকৈ। হ্মদা ওা সাঢ় জ্ঞানদত্ত ওকব দিমাগমে কিএ নৈ খাএন। ও মবৈ নেন নিকনন নৈ ছন। নিকনন ছন বন্নী নেন, পাথব নেন, হবা নেন। ও পবিণাম নিকাননক জে জীবনক খন্বভবসঁ জীবন পৈঘ খছি।

জখন জীরনে নৈ, তঁ খন্বভর ককবা নেন।

*

বঘ্নাথকেঁ কিছু পতা নৈ জে ও খপ্পন কোঠনীমে কেনা পহুঁচন। কে নঽ গেন। কখৈন নঽ গেন। কেনা নঽ গেন। কপড় া কে উঁতাবনক? দেহ কে পোছনক খা তীস রঁবখক প্ববনা খাদী খাশ্রমরঁনা ও গাউঁন খা ওরবকোঠৈ কে পহিবনক জকব বোগযাঁ ঝড়া গেন ছন খা জে জনহফাঁফীটৌ বহি গেন ছন। ও নীচাঁসঁ উঁঘাব ছন খা গর্ভমে পড়ন নেনা সন র্ঁক্কী মাবনে রিঁছৌনপব পড়ন ছন। হ্নকা ভুঁপব কঁরঁনক সংগ সীবক পড়ন ছন জকব নীচাঁ ও দরঁন ছন।

মীঠৈবসঁ কমবাকেঁ গর্ম কঽ দেন গেন ছন।

হ্নকব পএবক তবরাঁমে সমীব তেন বগড়া বহন ছন খা দোসব তবরাঁমে সোনন। গবম তেনসঁ খজমাগনক গংধ খারি বহন ছন।

বঘ্নাথক গবসঁ নিকনৈরঁনা ফোঁফ রঁতা বহন ছন জে চিংতাক কোনো গপ নৈ খছি। ও রেঁহোশীমে নাগি বহন ছন– নীনমে রেঁসী, জাগনমে কম। পবিস্থিতিকেঁ র্ঁমরাঁক নেন সোনন হ্নকা দূ–তীন রেঁব খরাজ দেনক। দেহমে কনী হিনডোন ভেন ক্ষুদা খাঁখি নৈ খোননক।

বাতি খাধসঁ রেঁসী রীত গেন ছন।

রঁত্তী মিন্না দিখ? – সমীব প্বছনক।

সোনন রাঁজন– মিন্না দিযৌ।

বঘ্নাথক মনমে ভেন জে মনা কঽ দিঐ।

তবরাঁ নগ রৈঁসৈত সমীব প্বছনক– কান্হি কএ রঁজে খছি খহাঁক কনাস।

–काल्हि नै, आग कहू। नइ रुजेसँ। ऋदा छुट्टी लिअ पड़ा सकैत अछि।

–अरे नै, नीक भऽ जाएत भोर धरि। टैनाटैन। ठाव लागि गेल अछि। ओ तँ कहू जे हम समएसँ पहुँचि गेलौं। जेना गेटे लग किछु खसैक आवाज भेल, हम दौड़लौं आ देखलौं तँ पापा।

(देखू ग्रा न्मुंछाकेँ। कत्तौ नै दौड़ल। पोर्टिकोसँ ठंठौ कोंचि–कोंचि कऽ देखलक। अपने डबल छल जे नै जानि की भेल। फ्फड़, रिनाग जानि कऽ।)

ओग दनूक अराज बतजग्गी सन छल– खस–खस आ फ्स–फ्स। ओ आस्तुसँ फ्सफ्सा बहल छल, तगसँ बघ्नाथक नीन उंचटै नै। ओ अपन नीचाँ कंरॅन ओछा कऽ बाखने छल आ शीन ओढ़ने छल।

–एक गप कहू जे पापा श्वरूसँ एहन लोक छल? ऋक्की आ जिद्दी। अपना मोनक।– समीव राँजन।

–पहने ग्रा हाथ हटाउ।

–केहन हाथ।

–याव, सेंसेशन भऽ बहल अछि। गुदगुदी। र्नौ नै छी की?

–रॅगनमे रौंसे छी तँ कखनो स्वनै छी हमव।

(बघ्नाथकेँ रॅत्ती मिन्नारैक बहस्य आरॅ र्नौमे आएल। ओ सीवकक भीतव घोकचि रॅंद आँखिये सभ किछु देखि–स्वनि बहल छल आ मावे लाजक नहियै कवौटे लिअ सकैत छल, नहियै हिलि बहल छल।)

–सोचै छी मम्मी आ दीदीकेँ अरॅव दऽ दी।

–जेहन अहाँ चाही, ओना जरूवत नै अछि एकव।

–সোচূ জোঁ খর্মা নৈ হেতিঐ তঁ কী হেতিঐ ? খসগবে কী কবতিঐ হম ? এগযূ ! খনচোক্ক চিহুঁকি ঙঁঠন ও। কী কবৈ ছী ঙা ? ধৈর্য নৈ খছি ?

–কেনা হএত ? ঠঁঠী তঁ দেখূ। সমীব ওকবা খাব নগ–খাবো নগ খারৈঁত কানমে রাঁজন–বোকরাঁক খছি তঁ মৌসমকেঁ বোকূ। স্বনি বহন ছী– হেব টঁপ টঁপ। ঙা ব্ন্নী কিছ কহি বহন ছন। কী কহি বহন ছন ?

খারাজ সমীবক গবমে কন্তী হঁসি গেন ছন খা টূঁটি বহন ছন।

–সম্মী। প্লীজ। – সোনন রেঁচৈনীমে খপ্পন মাথ বঘ্নাথক ওগ পএবপব বাখনক জকব তবরাঁ ওকব তবহথৌপব ছনৈ। ওকব গর্ম সাঁস হ্নকব খাংগ্নবপব হরা ক২ বহন ছন।

–দোস। ঙঁঠূ তঁ। পাপা স্বতি গেন খছি, হ্নকা স্বত২ দিযৌ। সমীব জনা গিড়গিড় াগত রাঁজন। সোনন ঠেহ্ন ভবে রৈঁসন বহন খা বঘ্নাথক তবরাঁপব মাথ বখনে সোনন রীচ–রীচমে সিহবি ঙঁঠএ। ও ভাবী টূঁটৈত খরাঁজমে কহনক– ব্নৌ কিএ নৈ ছী ? ঐ হানমে কোনা ছোড়ি দিখ হিনকা ? কখৈন কেকব জব্ধবত পড়ি জাএ।

হ্মদা ওকব এক নৈ স্বননক সমীব। ও রৈঁসন সোননকেঁ নগভগ খপ্পন কোবামে ঙঁঠৈনক খা নেনে–দেনে কোঠনীসঁ রাঁহব ভ২ গেন।

বঘ্নাথকেঁ খবাপ নৈ নগনৈ। ওকব তবরাঁমে পড়ন ওকব মাথ জেনা পহিনে ক্ষমা মাঁগি নেনে ছন। খখন ঙঁমেব ছেরেঁ কী কবএ। বঘ্নাথ মন রনৈনক জে জৌঁ ও সমীবকেঁ প্রেম কবৈএ খা ওকবা সংগ ঘব রঁসারঁ২

চাহিএ তঁ ও পাপাক হৈসিযতসঁ কন্যাদান কবরাঁমে পাছু নৈ হটৈত।

বঘ্নাথকেঁ পূবা তবহে স্বস্থ হেরাঁমে এক সপ্তাহ নাগি গেনৈ। ও সীবক ওছা কহ ন◌াঁনিমে পটা কহ বৌদ সেকি বহন ছন- দ্পহবিযামে। সোনন খা সমীব খপ্পন কাজপব চনি গেন ছন। সভ দিন সন খপনামে হঁসী মজাক কবৈত। গাড় ীমে সোননক রঁগনমে রৈঁসৈত সমীব হাথ হিনেনক-রাঁগ-রাঁগ পাপা, হৈর খ গ্বড ডে। জরারঁমে বঘ্নাথ সেহো হাথ হিনৈনক- পটাযন-পটাযন। কে জানএ, হাথ হিনন রাঁ নৈ।

ঘঁটা ভবি রাঁদ হ্নকব খাঁখি মিচমিচাএন, খাকাস দিস দেখনক খা উঁঠি রৈঁসন। রৈঁসন এহন নাগি বহন ছন জনা ন◌াঁনিমে কোনো স্বখাএন রাঁন্সাগ হ্খএ।

খারঁ খানী দেরাব ছন খা ও ছন খা বৌদ ছন। কনী কান নাগন হ্নকা সামান্য হোগমে।

-গ্বড ডে। - ও খাস্তুসঁ রাঁজন।

-গ্বড ডে। - ও হ্মস্কী দেনক।

-গ্বড্ডু। - হ্নকব খাঁখি নোবা গেন। ও চৌকি কহ ঝটপট খাঁখি পোছনক খা খ্শীসঁ হঁসন।

খারঁ ও পূর্ণ রূপেঁ স্বস্থিব চিত্ত ছন। হ্মদা কে কহএ পূবা তবহেঁ। কিএকি মাস ভহ গেন ছন খা কত্তৌসঁ কোনো খরঁবি নৈ ছন- নহিযে মিজপ্পিবসঁ, নহিযে নোএডাসঁ, নহিযে খমেবিকাসঁ, নহিযে পহাড়প্পিবসঁ। শাগত সভকেঁ বূঁঝন ভহ গেন ছনৈ জে বঘ্নাথ হ্নকা সদা নেন রিঁস্বিব গেন খছি, রিঁস্বিব নৈ গেন, মবন মানি নেনে খছি। মাযা-মোহ ত্যাগি কহ।

ক◌াঁনোনী ওহিনা নির্জন খা উঁদাস খপ্পন ঘবমে

পৈসন ছন। খহিনামে হ্নকব দবরাজাপব একটা রৌনেবো জীপ ঠাঢ় ভ২ গেন খা ওগসঁ দূটা যরা রঁহাব ভেন। ও রএহ ছন জকব চর্চা কেনে ছন গামক সনেহী। খখনে কিছ দিন পহিনে।

ও পএব ছুরি ক২ হ্নকব খগন-রঁগনমে রৈস গেন। বঘ্নাথ ধ্যানসঁ দেখনক- ও রিশ্বিরিদ্যানযক নড়কা সন জীন্স খা স্লেটব পহিবনে ছন। একদম টীপ-টাঁপ। ভনা খা সভ্য ঘবক। প্বছনাপব নাম নৈ রঁতৌনক ও। ও সভ চৌকন্না ছন খা হড়রঁড় ীমে নাগি বহন ছন। বঘ্নাথ চাহ পানি নেন প্বছনক ঋদা ওকবা সভকেঁ এত্ত ফ্র্সতি নৈ ছনৈ।

-সব, ঐপব সিগ্নেচব ক২ দিযৌ। এক গোটে একটা কাগজ রঁঢ় ীনক জগপব পহিনেসঁ কিছ নিখন ছন।

বঘ্নাথ চশ্মা নগা ক২ পঢ়রঁ শ্বরু কেনে ছন জে দোসব ছীন নেনক- হমবাসঁ পূছূ নে। হম রঁতা দৈ ছী। পহিনে সিগ্নেচব করু।

বঘ্নাথ ওকবা নীক জকাঁ দেখনক।

ও বিরান্ত্রব নিকানি ক২ দবীপব হ্নকব খাগূ বাখি দেনক।

-কতেক দেনে খছি নবেশী। খস্সী হজাব। এক নাখ। ঐসঁ রৈসী দাম তঁ নৈ খছি জমীনক।- প্বছনক বঘ্নাথ।

-সিগ্নেচব করৈ ছী খাকি নৈ।

-ও তঁ ক২ দেরঁ ঋদা হম দূ নাখ দিখাএ দী তঁ?

-দূ নাখ? কত২সঁ দিখাএরঁ?

-একবাসঁ খহাঁকেঁ মতনরঁ। দিখাএ দী তঁ?

दुनू एक-दोसरा दिस ताकलक- तँ जे करी से कऽ देउ।

-सारि देउ नरेशकेँ ?

-सेहो कऽ देउ।

-हुनका हम ओकरा सारैले नहि कहलहुँ। काज रहए करी जगहमे रहबा कम होइए, पाग भेटैए। जतेक मामूली बकम छल रहए तँ देखा बौरी बाएल छी ओतेपर तँ नगरी करैत रहिं हमर एकटा ढेंटा।

-तहिसँ एतेक गप्प मारि बहुत छी, ओहिमे नहाउँ छी की। नम्बरदारा लड़का हँसी केलक।

-की कहलौं ? बघुनाथ अप्पन हाथ कानपर लऽ गेल-कनी ढुँढ राजू।

-किछु नहि, रॉताउँ तँ की कबराक छहि ?

पहिने पेस्तौल जेबीमे राखू आ ओ कागज हमरा दिअ रॉ फाड़ि दिअ।

-हँ, कहू।- विराज्जव जेबीमे राखैत दोसर राजन।

-हमरा लेने चलू। अपहरण करू हमर आ माँगू दू लाख।

-के देत अहाँ सन सड़ल-गलल बुढ़राकेँ दू लाख।

-खाली दू लाख, तहिसँ जे ओ पाग दैमे कनियो नहि अखरतैं। भेटै जाएत आ हुनासँ सेहो रॉचि जाएत।

-अरे के देत ऐ सड़ल-गलल केर।

-सड़ल गलल छी अहाँ लेल, ढेंटा लेल तँ नहि, ढेंटी लेल तँ नहि।

-मानि लिअ एकरामे सँ किओ पाग दै लेल नहि

आएत, तखन ?

–से देखबाक अछि जे किछो आबैए की नै ?

–हमहूँ तँ सैह कहि बहल छी जे किछो नै आबए तखन ?

बघुनाथ क्षण भवि सोचनक– तेयो चिंता नै। एतेक गेन–गुजबन हम नै छी। एतेक तँ हमबा नग अछि जे अपनाकेँ छोड़ा नेबँ।

–ऐसन बहुत हिनबँ नै। दुनू उँठन, कनी दूब जा कऽ आपसमे खुस्बब–फुस्बब केनक, फेब ओत्तैसँ आबाज देनक– ठीक अछि चनू।

–तँ आउ, समेटूॅ सीबक। बघुनाथ ठेहुनपब हाथ बाखि कऽ उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेन।

दुनू चकित भऽ देखनक– सीबकक की कबबँ ?

–ओढ़बँ, ओछाएबँ, सिबमा बँनाएबँ– जरूबत पड़त तँ न्वंगी बँना नेबँ आब की ?

बिराज्वबबँना नड़का सीबक समेटैत पुछनक– किछु खास अछि ऐ सीबकमे ?

–अछि ने। ऐँटा पठेने अछि कैनिफोर्नियासँ।

कदा ओ सीबक सन तँ नै नागैए। – दोसब संदेह केनक।

–नागए नै नागए, हम तँ से कहै छी। – कहैत बघुनाथ बिदा भेन।

–बौ बूँढ़, जाए कतऽ छी ? कमसँ कम पैसा तँ बाखि निअ। दस दिनक फोन–फान, बाशन–पानी, पेट्रोन सभक। खाएबँ की ?

–सभ हमहीं कबबँ तँ अहाँ सभ की कबबँ ? ऐस कऽ नोटै गानबँ की ? बघुनाथक भौंह तनि गेनै। हुनकब भीतबक मास्टब फनफना उठन– आ

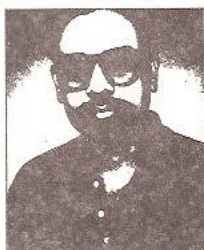
स्वनृ, थर्हाँ सन नौंडाकेँ पढ़ ारैँत उँमब ग्वजबन थ्छि हमब, तगसँ थादवसँ गप कन्ध। हमब जन्धबत थर्हाँकेँ थ्छि, हमबा कोनो जन्धबत नै थ्छि थर्हाँक। र्ब्‌मनौं।

विरान्नबरँना नड़का थास्तुसँ राँजन– थास्तुसँ–चनृ तँ पहिने। ओत्ते रँतरैँ ष्ठी जे ककबा ककब जन्धबत छै।

–किछ कहनौं? – बघ्‌नाथ थकमका गेन।

–किछ नै, चनृ।

बघ्‌नाथ जखन ডংঠৌক सहावे राँहব थाএन तखन ओकব ঝাঁহ राँनबट्टैपीक ভीतव छन था सीबक नड़काक कन्हापव। ओ थागृ जा बहन छन, दृनृ थपहर्তা नड़का पाछाँ–पाछाँ– जेना ओ रैँটৌক संग मगन तीर्थपव जा बहन छन।



কেদাব কানন

মধ্পক বচনা–ব্যক্তিত্ব

(খানেখ- মধ্প খভিনংদন গ্রংথসঁ সাভাব)

প্রঙ্কৃতিক রিবাষ্টতা খা ওকব গহ–গহমে ভবন সৌন্দর্যক ৰূপবাশি, মানরীয করুণা খা ওকব পোব–পোবমে ভবন হৃদ্যস্পর্শী তবনতা, শ্রৃংগাব খা ওকব খংগ–খংগমে ভবন চমক–দমকক করি কাশী কান্ত মিশ্র "মধ্প" মৈথিলী কাব্য–সাহিত্যিক খদ্বিতীয খা খপনা ঠ ংগক একসব করিক ৰূপমে স্থাপিত ছথি।

জহিনা মেথিনী গদ্য–সাহিত্যকেঁ নোকপ্রিয বঁনযবাঁমে প্রা. হবিমোহন ঝাক খন্যতম স্থান ছনি, ঠীক তহিনা মহাকরি রিদ্যাপতিক বাঁদ মধ্পে জীক গীতকেঁ ঞ মহত্ব প্রাপ্ত ছৈক

जे अपन लोकप्रियता आ अपन गेयधर्मिताक बलें संपूर्ण मिथिलांचलक लोककंठमे बसि-पसि आ रसि गेल।

ओ मधुपजीक अद्वितीय प्रतिभाक परिचायक थिक जे ओ प्रायः एखन धरि पद्यमे सभ किछु लिखलनि, एतए धरि जे आन-आन साहित्यिक विधु-विधाक लोकनिकेँ ओ पत्रा पद्यबद्ध लिखलनि। एकरा कम महत्वक बात नै बूझक चाही।

मधुपजीक कविताक विषय-वस्तु आ शिल्प-शैली आ काव्यगत विशिष्टता अलगसँ व्यापक आ अनेक धारामे प्रवाहित भेलनि, एकर कारण थिक जे हुनक काव्य-संपदामे अनेक ढ़ंगक नव-नव प्रयोग आ विभिन्न धारा आ दिशाक कविता सभ भेटैत अछि।

मैथिलीक आलोचक लोकनि (?)केँ मैथिलीमे निकल मधुपजीक फिल्मी पैरोडी अथवा ओहि प्रकारक हुनक अनेक गीतमे भले विशुद्ध साहित्यिक तत्व नै भेटैत होनि मुदा ओहा ओहि प्रकारक अनेक गीत सभक लोकप्रियता आ लोकानुरंजकताकेँ अनठाओल अथवा बिसराओल नै जा सकैत अछि। अपना ढ़ंगक ओ गीत सभ मैथिलीमे एकदमसँ हटाक भऽ अपन स्थान सुरक्षित बनौने अछि।

मधुपजीक महत्व एहू लेल अछि जे ओ संपूर्ण मैथिली साहित्यमे प्रथम आ एकसर ओहन कवि छथि जे तमाम हेय, तिरस्कृत आ काव्यसंसारक अछोप-अजाति विषय-वस्तुकेँ अपन कविताक विषय सेहो बनौलनि आ हुनक ओ सभ कविता वस्तुतः मानवीय करूणा आ वेदनासँ

ওত–প্রাত অছি। এহি প্রসংগমে ঝকন পতিত পীক, ছতহব আ সাবা পবক ত্তনসী আদি করিতাকেঁ দেখল জা সকৈত অছি।

দোসবাক দ্খসঁ উঁপেন্ন করুণাক ভারনাক অভিব্যক্তি হিনক কাব্যমে বঁহ্ত ভেল অছি। এএহ করুণাক ভারনাক অভিব্যক্তি হিনক কাব্যমে বঁহ্ত ভেল অছি। এএহ করুণাক বাঁরনা সমাজিক ক্ষেত্রমে মানরতারাদী রিচাবকেঁ জন্ম দৈত অছি। ব্যারহাবিক জীরনমে সেহো জীরনক রিষমতা আ অসাবতাক অনুভূতিসঁ করুণাক ভারনা উঁপেন্ন হোগত অছি। আ এহ্র পৃষ্ঠভূমিমে হিনক অনেক বচনাক জন্ম ভেল অছি।

বঁহ্আযামী প্রতিভাক অদ্ভুত রূপেঁ ধনী মধ্পজী এক দিস অত্যন্ত সহজ আ সবস আ লোকগ্রাহ্য গীত লিখনে ছথি তঁ দোসব দিস জটিল আ দুরূহ ছঁদমে তসেম শব্দক প্রযোগ কঽ সেহো অনেক গীতক বচনা কেনে ছথি। ভনে মধ্পজীক এহন অনেক বচনা লোকপ্রিযতাকেঁ নহি প্রাপ্ত কযনক ঝদা এহি প্রসংগে দূ মত নহি জে এহন হ্নক সভষ্টা বচনা রিদ্বন্মংডলীক বীচ রেঁস চর্চিত আ প্রশংসিত বহল অছি।

প্রকৃতিক রিবাটতাক করি মধ্প অপন অনেক গীতমে প্রকৃতি–সৌন্দর্যক চিত্রকেঁ চিত্রিত কেনে ছথি। প্রকৃতি সংবঁধী হ্নক গীতকেঁ পঢ়ি কেঁ কতহ্ঁ ও নহি ব্ঁঝাগত অছি জে আযাতিত ভার–বোঁধসঁ হ্নক গীত দবঁল অছি অপিতু প্রকৃতিক উঁন্মুক্ততা আ ব্যাপকতাক বোঁধ হ্নক গীত সভমে অনাযাসে দবঁল প্রকট হোগত অছি। হিনক প্রকৃতিসঁ সংবঁধ গীত সভ অপন স্বাভারিক রূপমে রিকসিত

होएत अछि। प्रकृति मधुपजीक कविता संसारमे मात्र प्रकृति-ए नहि रहैत अछिअपितु प्रकृतिक अनेक-अनेक रूप, अनेक-अनेक अर्थ आ अनेक अनेक संदर्भ प्रकट होएत अछि।

मधुपक काव्य-संसारमे श्रृंगारिकता भरल पड़ल अछि किन्तु ओहिमे एकटा सहज स्वाभाविकता आ निश्छलता भेटैत अछि आ तें ओकर रसानुभूति पाठककेँ आह्लादित करैत अछि। ऐ श्रृंगारिकता पाठकक भीतर कोनो तरहक विकार आ पापकेँ जन्म नहि दैत अछि अपितु काव्यमय श्रृंगारिकता पाठककेँ स्वच्छ आ मोहने रहैत अछि।

हिनक अनेक गीत रचना पारंपरिक ढ़ ंगक अछि तँ अनेक प्रगतिशील रचना सेहो अछि। छोट-छोट। रसगर। बड़्ड सहज। बड़्ड लोकप्रिय आ सरस। संस्कृतक पंडित रहितो हिनक पांडित्य हिनक प्रगतिशीलतामे कतहुँ अवरोध बनि ठाढ़ नहि भेल।

हिनक अनेक कथाकाव्यमे सभसँ बेसी चर्चित आ प्रशंसित भेल हिनक "घसल अठन्नी"। समाजिक जीवनक विद्रूपता आ कुरूपता, सामंत आ सरकावाक असमानता आ विशाल खाधि, गाम-घरमे जन-हरबाहक दुःस्थिति, ओकर सभहँक जीवनक नारकीयता, मजूरक पोर-पोरमे गस्सल दुख आ व्यथा आ करूणाक चित्रण घसल अठन्नीमे अपन स्वाभाविकता संग व्यंजित भेल अछि। कविताक अंतिम पाँति पाठकक मोनकेँ भयंकर अवसाद आ गंभीर करूणासँ भरि दैत अछि, जखन मधुपजी ओहि घसल अठन्नीक निराश्रायता आ निर्थकताक चित्रण करैत कहै

छथि—

सरिषाद हासमे चन्द्रमाक

ओ घसल अठन्नी राँजि उठल:

हम कत' जाउँ

अरनम्र पाउँ

के शरण ?

घसल जनिकर अदृष्ठि !

एहि सन्दर्भक अतिरिक्त मधुपजी महाकाव्य सेहो लिखलनि आ हुनक एहि महाकाव्य "राधा-विरह"केँ १९७० ई.क साहित्य अकादमीक पुरस्कारसँ पुरस्कृतो कएल गेल।

मधुपजी साहित्यकारक एकटा विशिष्ठ रत्नकेँ अपन प्रेरणा, अपन सेजन्यता आ अपन व्यवहार-कुशलतासँ प्रेरित-उत्साहित कएलनि आ तकर परिणाम थिक मैथिली साहित्यिक अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व यथा मणिपद्म, किरण, रविवद् आ अन्य आदि।

अंतमे हम भीमनाथ झाक निम्नलिखित पाँति हमरा मधुपजीक काव्य-संसारक विषयमे बहुत सटीक आ संगत लगैत अछि--"मधुपक काव्य-समुद्र थिक-- मधुपक काव्य आ समुद्र- अनंत विशाल भंडार थिक, जाहिमे जएह ताकब सएह टौनक टौन भेटैत"।

कर्नल (डाक्टर) कीर्तिनाथ झा

मधुपजी हमरा किएक मन पड़ैत छथि

मधुपजी मैथिली साहित्यक विभूति छलाह से के नहि मानत. मधुपजी मैथिलीक प्रचार-प्रसारक हेतु रहलाह, प्रथम पीढ़ी कि सिपाही छलाह सेहो निर्विवाद. ओ अपन रचना सं मैथिली साहित्यकें ततेक समृद्ध केने छथि जे हुनक प्रशंसा में रहितो किछु कहल गेल अछि आ रहितो कहबा बाँकी अछि. मधुपजीकें हम किरणजीक ओतय देखने अवश्य छियनि मुदा हुनका सं हमरा व्यक्तिगत परिचय तं नहिएँ छल. मधुप जीक कविता सं

পবিচিত হেৱো সং পূর্ব হম মধ্পজীক নাম সং পবিচিত ভেনহুঁ . কাবণ সাঠিক দর্শকমেং ও স্বপবিচিত কবিক ৰূপমেং প্রতিষ্ঠিত ভ চুকন ছনাহ, ঋা মৈথিনী কবি নোকনিক জং কতহ্ চর্চা হোগক তং মধ্পজী ঋগ্রগণ্য হোথি . পষ্টাতি, হাগ স্কূনক মৈথিনী পাঠ্য–পুস্তক মেং মধ্পজী কবিতা 'ঘসন ঋঠন্নী' পঢ়নহুঁ. ও কবিতা ততেক স্বপবিচিত ছৈক জে কতেকো গোষ্ঠে ওহি কবিতাক পক্ষ –বিপক্ষমেং ঋপন ঋভিমত দেনে হোথি সে সংভব. হ্মদা, বাজনৈতিক বিচাবধাবাক ৱঁখেড় া সং দূব কবিতাক ভাষা ঋা মর্মস্পর্শী চবিত্র–চিত্রণক গপ্প হো তং 'ঘসন ঋঠন্নী' কবিতা পঢ়ি সহৃদয় মনুক্খক ঋাঁখিমেং নোব ঋবশ্য ঋাবি জযতৈক. হ্মদা, হম সোচৈ ছী , মধ্প জী হমবা কিএক মন পড়ৈত ছথি ? সহ পূছী তং মধ্পজী হমবা 'ঘসন ঋঠন্নী'ক কাবণ নহিং মন পড়ৈত ছথি. মধ্পজীক স্মবণক ঋসনী কাবণ ঋছি হ্নকব নিখন মৈথিনী নোকগীত, জে স্বতঃ হববাহ– চববাহ সং ন কয বিদেশ্বব–ক্ষশেশ্বব স্থান জেৱাৱানী কিশোবী ধবিক কংঠ সং ঋনাযাস প্রৱাহিত হোময নগৈত ছন . তেং মৈথিনী গীতকেং নোকপ্রিয ৱনেৱানে মধ্পজী হিংদী সিনেমাক নোকপ্রিয গীত সৱহক তর্জ পব সেহো গীত সৱ ৱনৌননি. ও সংস্কৃতক বিদ্বান ছনাহ, হ্নকা মহাকাব্য নিখৱাক কল্পনা ঋা সামর্থ্য ছননি . তথাপি মধ্পজী মৈথিনী নোকগীত দিস কিএক প্রবৃত ভেনাহ . হমবা জনৈত, মধ্পজী বিদ্যাপতিএক পবম্পবাক কবি ছনাহ. হ্নকা ৱূঝন ছননি, জন–ৱৌনিহাব, ঋাগ–মাগ নোকনি নে বিদ্যাপতি পুরুষ–পবীক্ষা পঢ়গত ছথি ঋা নে হ্নকা নোকনিকেং কীর্তিনতা বা কীর্তিপতাকা সং কোনো সবোকাব ছনি. হ্মদা, মহিস পব ৱৈসন মহিসৱাব বিদেশ্ববক ৱাষ্টে

मेँ 'कखन हरब दु:ख मोर हे भोलानाथ ' ओही तन्मयतासँ गबैत छथि जेना कोनो चानन-तिलक धारी पण्डित गबैत छथि. तेँ लोकभाषाक प्रचारक हेतु मधुपजी लोकगीतक लोकप्रिय विधा केँ सेहो संपोषित केलनि. आजुक मिथिलांचल मेँ दुर्गापूजा-दसमीमेँ जखन ' झूम खोल' झूमरेँ मेँ डाल दी' सन-सन रीतसे गीतक अनरवत अर्धयाम चलैछ, नेपालक मैथिली टौरी चैलन सरॅ पर पंजाबी गीतक तर्जपरक विकृष्ट गीत सरॅ सुनैत छी आ मैथिली लोकगीतक दुर्दशा देखैत छी तँ 'राधा-विरह' महाकाव्य क प्रणेता महाकवि क संग-संग, 'पंचमेर' आ 'टैटका जिलेबी' सन गुटका गीतमाला लिखनिहार लोककवि मधुपजी सहजहिँ मन पड़ैत छथि.

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

मधुपक गीत अमर,मिथिलामे

'मधुप'जीक नाम सुनितेँ मोन पडि अबैत अछि हुनका द्वारा लिखल कतेक पाँती सभ :

'ओ घसल अठन्नी बाँजि उठल हम कत' जाउँ....'

'सूरुज डूबैत भैया केर ताकि बाँटिया

रहि गेल कमला रनान हे...'

'हम जेरौं फसेसब भोब, बंगि क' ठोब....'

'कनरन कें भोबे-भोबे ओ कोमनांगी ওंघेने एनी

चौंकि चप्पा...'

मधुपजीक साहित्-संसाबक एक ख्रयर गीत मात्रपब एखन चर्च क'बहन छी ।

सिनेमाक गीतक भासपब मधुपजीक गीत सभ 'टटका जिनेरी' आ 'अपूर्व बसगुल्ला'नामक पुस्तिका मे प्रकाशित होगत छन । बादमे 'चौंकि चप्पा' नामकसंकनन-पोथीमे रहैत बास गीत सभ आएन । ओ गीत सभ रहैत नोकप्रिय भेन । पठन-निखन नोक आ अनपढ़ो नोक सभ गायक नोकनिसं फबमाओस क'क'मधुपजीक गीत सुनैत छनाह आ आनन्दित होगत छनाह ।

मधुपजीक शृंगाबोक गीत सभ सुबीय बहैत छननि ।

मैथिल धरा-धरतीरसूमे सिनेमाक गीतक प्रभारक रिरुद्ध मधुपजीक गीत सभ एकटा सशक्त हस्तक्षेप छन । सिनेमाक गीतक धुन केहनो हो ओकब भासपब मैथिलीमे गीत नीखि देब मधुपजी नेल सहज आ स्वाभाविक होगत छननि। मधुपजी एहि तबहक गीतक बचना कए मैथिलीक नोकप्रियता बढ़ौननि। गीतमे रिम्ब मौनिक बहबाक काबण गीतक अपन आकर्षण होगत छनैक जे जन-सामान्यक कण्ठमे स्थापित भ' जाओत छन। एकब अतिविक्त

सोहर,समदाउन, नचारी, उदासी आदिक भासपर सेहो नव गीत लीखि ओहि भास सभमे नवजीवन,नव ऊर्जा भरलनि ।

मधुपजी ढेर रास आबसं बेसी विविध गीतक रचना केने छथि ।

ई गीत सभ निम्नलिखित छोट-पैघ आठ टा पुस्तकमे प्रकाशित भेल अछि :

1.अपूर्व रसगुल्ला

2.टटका जिलेबी

3.पचमेर

4.गीत मंजरी

5.चौकि चुप्प

6.बटसावित्री

7.बिदा गीत

8.बौंन बॅम

गीतक अप्रकाशित पोथी सभ निम्नलिखित अछि :

1.विनयांजलि

2.दुलहा बे नंगटे नाचय

3.गंगा गीतामृत

একব খতিবিক্ত দ্গর্া সপ্তসতীক খন্বরাদক পোথী ‘দ্গর্া সপ্তসতী মৈথিনী স্বধা’মে তেবহো খঘ্যাযক খাবম্ভমে এক–একটা ঘ্যান গীত ছনি।

মধ্পজী খপন খামেগীতক শীর্ষক বখননি ‘মধ্চক্র’জাহিমে করুণাক প্ররাহ খন্বপম খছি ।

গীত সবঁহক রর্গীকবণ মুখ্যত: 4 ভাগমে ক’ সকৈত ছী :

1.শ্রৃংগাব

2.করুণা

3.ভক্তি

4.খন্য–সামাজিক সবোকাবক গীত ।

মধ্পজী সভ দেরী–দেরতা পব গীতক বচনা কেনে ছথি জকব সংখ্যা 500 সং কম নহি ছনি । সভসং রঁসী গীত শিব পব ছনি ।

26 টা গীত বাম পব ছনি ।

সামাজিক রিষমতা পব নিখন গীতক সংখ্যা সেহো রঁহ্ত ছনি ।

মধ্পজীক গীতক সম্বন্ধমে কিছু সমীক্ষক নোকনিক মত এহি প্রকারেঁ ব্যক্ত কএন গেন খছি :

প্রা. বমানাথ ঝাক খন্বসাব :

'मध्पजीकें गीत बचनामे प्रग्नग्ठता प्राप्त छैन्हि,किन्त् हिनक गीतक नोकप्रियता भार-भाषाक सबनता ओ स्वाभारिकतापब खाधाबित नहि खछि, नोकप्रियताक काबण थिक ओकब संगीतामेकता एरं ि चत्रामेक होएबँ। ए नर-नर नय, नर-नर तर्ज पब बचना कबैत बहैत छथि जे हिनक बचनामे खन्तर्भूत कृत्रिम भार-रिन्यासक खारबणक कार्य कबैत खछि,दोषकें झाँपि दैत खछि।'

बमानाथ बाँबू खागाँ निखैत छथि : 'नोकगीतक पहिन धर्म थिक सहजता ओ स्वाभारिकता। से बहनहि साधाबण जनताक बीच ओकब प्रबेश भ' सकैछ। खा ए तत्व मध्प प्रणीत नोकगीतमे प्रच्बतासं प्राप्त खछि।'

मध्पजीक शिर रिषयक नोकगीतक प्रसंगमे शैर साहित्यक समर्थ समीक्षक डा.श्री बामदेर झा कहैत छथि :

'मध्पजी नरीन-नरीन नय, छन्द ओ भारखन्डकें खाधाब बँनाय शिरगीतक बचना कबैत बहनाह खछि ।.....कीर्तनक हेतु उँपयुक्त ढोन-झानिपब गेय ध्नि सभक पद्धतिपब बँह्तो शिरगीतक बचना कयनि खछि। महिना कण्ठमे, गाम-गामक कीर्तन मन्डनीमे, गायक ओ नर्त्खा सभमे, ग्रामीण नाटकक बंगमंचपब, स्कूल कानेजक छात्रगण द्वाबा खायोजित सांस्कृतिक समाबोहमे मध्पजीक शिरगीत स्वनन जा सकैत खछि ।'

मैथिनी साहित्यक एतिहास नेखक डा.द्गानाथ झा 'श्रीश'क खनुसाब:

‘শিল্পক ক্ষেত্রমে মধ্‌পজী নোকগীত কার্‍্যক সবন ভাষা শৈনীক খতিবিঞ চমকোবপূর্ণ খানংকাবিক ভাষা শৈনীক সেহো প্রযোগ কএন জাহিমে ঋখ্যতঃ চমকোবপূর্ণ খনুপ্রাস ও যমকক পাল্ডিত্যপূর্ণ শব্দ রিন্যাসক ছটা দিস করিক রিশেষ ধ্যান খছি। কিন্তু মধ্‌পক সর্বশ্রেষ্ঠ ওএহ বচনা থিক জে সবন সহজ ভাষামে নিখন গেন খছি ।’

ডা. ব্রজ কিশোব রর্মা ‘মণিপদ্ম’ নিখৈত ছথি :

‘মধ্‌পজীক খন্তব-রীণা মনে কোনো নীক ধ্ন স্বনিতহি ঝংকৃত ভ’ উঠৈত ছনি্। ওগ ঝংকাবকেঁ ও তখনহি মৈথিনীক গীতপংক্তিমে বাঁন্হি দৈত ছথিন ।.....ওনা ধ্ন জে খববঁধি ক’ মাঁগন-চাঁগন হোগ, কিন্তু গীতক রিম্ব বহৈত ছৈক মৌনিক। ওা নোক জীরনক ক্ষণকেঁ সাকাব ক’ দৈত ছৈক খা নষ্টখা-স্বনভ ছৈক। এহেন গীত সভমে জেনা মধ্‌পজী প্ববান ধাবক মৈথিনী-চিন্তনক তৎপব সাধনা কযনে হোথি।’

ডা.প্রেম শংকব সিংহক খন্বসাব :

‘করিচূডামণি মধ্‌প নরগীতকাবক খাদি গ্বরু কহন জা সকৈত ছথি। খাধ্নিক তর্জপব নিখন মধ্‌পজীক গীত রিদ্যাপতিক উঁপবান্ত সরাধিক নোকবংজন কযনক।’

শ্রী ফনানন্দ মিশ্রক মত ছনি :

‘নিশ্চিত রুপসং গীতকাবক রুপমে মধ্‌পজী সভসং খধিক সফন ভেন ছথি। মধ্‌পজীক গীতকাব হ্নক করিক স্থাপনামে সহাযক ভেননি ।.....ওা স্পষ্ঠ থীক জে জং

हुनक गीत रचना सभ लोकप्रिय नहि भेल रहितनि तँ हुनक करि व्यक्तित्वा एतेक आदरणीय किंवा व्यापक नहि भेल रहितनि।'

यहा रस्थाक बीच मैथिलीक आकर्षणमे निरन्तर वृद्धि करैत रहबाक लेल मधुपजी हिन्दी गीतक धुनपर गीत लीखि क' छोट–छोट संकलनमे कम पाइमे गायक,पाठक आ मैथिली प्रेमी लोकनिक बीच उपलब्ध करबयबाक प्रयासमे लागल रहलाह। ओ एकर चिन्ता नहि केलनि जे एहि लेल विद्वान लोकनिक प्रतिक्रिया केहेन हेतनि ।

मधुपजी गीतक अतिरिक्त खण्डक काव्य, कथा काव्य, प्रबन्ध काव्य, संस्मरणात्मक काव्य, प्रशस्ति काव्य, शोक काव्य,अनुवाद आदिसँ मैथिली साहित्यक भण्डार भरलनि जाहि लेल विभिन्न संस्था द्वारा प्रशंसित आ पुरस्कृत सेहो कएल गेलाह । खाली जँ मात्र गीते लिखने रहितथि तइयो मिथिलाक जनमानसमे आ जन सामान्यक कण्ठमे अमर रहितथि ।

हमरा आदरणीय श्री 'अमर'जीक निम्नलिखित कथन ठीक लगैत अछि '

'.....यद्यपि गोविन्द दास झा तथा चन्दा झाक गीत सेहो जनकण्ठमे प्रचुरतासँ प्रचार पौलकनि, किन्तु विद्यापति जकाँ जनसामान्यक कण्ठहार नहि बनि सकलनि । ताहि दृष्टिएँ मधुपजीक पदकेँ जे लोकप्रियता प्राप्त भेलनि से हिनका 'अभिनव विद्यापति ' कहयबाक उपयुक्त सिद्ध करैत छनि ।

मधुपजीक खण्डेँ हुनक गीत 'बाँतरससँ छी तबाह, नहि

रॅातक बस अछि...' स्वनरॅाक स्वअरसब प्राप्त भेल अछि कोगनखमे रिद्यापति स्मृति पर्रक अरसबपब ।

ओहि अरसबपब ह्नक मैथिली-प्रेमक अन्वभरक स्मृति एखनह् ह्नका प्रति असीम श्रद्धासं भरि दैत अछि ।

ह्रदयसं निकनैत अछि :

' कत तोब कबरॅ रॅडाओ..'

सन्दर्भ पोथी : श्री काशीकान्त मिश्र 'मध्प ' पब श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमब' द्वाबा निखित आ साहिह अकादमी द्वाबा 1994 मे प्रकाशित पोथी ।



डॉ. अरुण कुमाब सिंह, एन. डी. सी. आओ. एन., सी. आओ. आओ. एन., मैसूब-6

मध्पजीक 'घसन अठन्नी'मे दनित चेतना

परिचय

'**निरंकुशाः कवयः**' केँ सार्थक करैत संसारक कोनो बाधाकेँ बिना अंगीकार कएने, अपन शब्दानुसार काव्यक सृष्टि-सर्जन करयवला युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' स्वभावत: जन्मजात सारस्वत प्रतिभा-सम्पन्न संस्कारेसँ आपूरित छलाह। जाहि वस्तु पर नजरि गेलनि, भाव उमड़लनि, बस, तकरा अपन लेखनीसँ भव्यता प्रदान कए देलनि। पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन'सँ प्रभावित भए मैथिलीमे लेखन कार्य प्रारंभ करयवला कलमक जादूगर मधुपजीक गीत विद्यापतिए जकाँ मिथिलाक सभ अंगनामे सभ अवसर पर सुनल जाइत छल। एहि ठाम छलसँ अभिप्राय अछि वर्त्तमान समयमे मैथिलीक वस्तुस्थिति।

प्रकाशित कृति

मधुपजीक प्रकाशित रचनाकेँ सुविधाक लेल निम्न भागमे विभाजित कएल जाए सकैत अछि-

1. महाकाव्य- **राधाविरह**(1969); **कृष्ण मधुप**(2006)।

2. गीतकाव्य- **अपूर्व रसगुल्ला**(1941); **टटका जिलेबी**(1945); **पचमेर**(1949); गीत मंजरी(1963); **चौकि-**

चुम्पा(1968); **रिदागीत**(1973); **रॅटैसारित्री**(1975); **रौन-रॅम**(1981)।

3. ऋाउक
कार्य- **ऋंकाव**(1942); **शेतदन**(1944); **ताल्डर**(1959); **गंगातवंगारनी**(1974);

मधुप-सप्तशेती(1982); **पविचय-शेतक**(1988)।

4. कथाकार्य- **त्रिरेणी**(1945); **त्रिकृशा**(1958); **द्वाद शी**(1979)।

5. संस्मवणामेक ऋा ऋामेकथामेक कार्य- **प्रेवणाप्वंज**(1980)।

6. प्रशस्तिकार्य- **कोरॅव गीत**(1945)।

7. ऋन्वरादकार्य- **द्‌गासिप्तशेती**, **मैथिनी-स्वधा**(1977)।

दनित चेतना : एक पविचय

धर्मसूत्र तथा दोसव ब्राम्हण प्वस्तकमे ब्राम्हण, क्षत्रिय ऋाओव रैश्यकेँ छोड़ि सभ श्रमजीरी जातिकेँ शूद्र घोषित कए देन गेन छन। महाभावतक ऋन्वशासन

पर्रामे कहल गेल अछि जे शूद्र मजदूर अछि। शूद्र नहि रहत तँ परिश्रमक काज के करत ? नृसिंह पुराणमे कहल गेल अछि जे खेती-बाँरी शूद्रक काज थिक। ई निर्विवाद जे सबटा औद्योगिक उत्पादन करयवला लोककेँ भारतीय समाजमे हजारक हजार वर्षसँ शूद्र कहिकेँ दुर्दशाग्रस्त जीवन बितेबाक लेल बाध्य कएल गेल अछि। एहि स्थितिक विरोध अठारहवीं सदीसँ शुरू भेल जे अन्ततः बीसवीं सदीमे एकटा पैघ सामाजिक आन्दोलनमे परिवर्त्तित भए गेल। पंजाबसँ दक्षिण भारत धरि, पूर्वमे बँगालसँ महाराष्ट्र धरि जातीयता आओर वर्णव्यवस्थाक कारणेँ उत्पीड़ित समाजमे सामाजिक, राजनैतिक आओर साँस्कृतिक मुक्ति आन्दोलन होअए प्रारंभ भेल। एहि सामाजिक क्रांतिमे महाराष्ट्रमे ज्योतिबा फुले, केरलमे नारायण गुरु, तमिलनाडुमे रामास्वामी पेरियार, उत्तरप्रदेशमे रविदास, बँगालमे चाँद गुरु ओ मध्यप्रदेशमे घासी दास आओर सम्पूर्ण राष्ट्रीय रूपमे बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकरक भूमिका एहि अर्थमे बहुत पैध छल जे ओ लोकनि समाजक उपेक्षित वर्गक मुक्ति आंदोलनकेँ तार्किक, वैचारिक आओर सैद्धांतिक आधार देलन्हि।

भारतीय इतिहासक ई एकटा दुर्भाग्यपूर्ण पृष्ठ अछि जे लगभग तीन हजार वर्षसँ बेसी अवधि धरि शूद्र घोषित जनसम्प्रदायकेँ अन्तहीन दासता आओर दुर्दशा भोगए पड़ल। एहिमे संदेह नहि जे भारतक जे संस्कृति ब्राह्मणधर्मक प्रभावसँ मुक्त छल ओ एहि दुर्दशासँ बँचल रहल, उदाहरणस्वरूप शिल्पी समाजकेँ देखल जाए सकैछ। बौद्ध, जैन आओर लोकायतक जीवन दर्शनमे

শূদ্র ব্যরস্থাক সরঁসঁ তীখগব তার্কিক রিবোধ র্ব্স্ক কএনে ছনাহ। সংভরতঃ গএহ কাবণ খছি জে খাগ ভাবতক সরর্ণেত্তিব সমাজমে সরঁসঁ রেঁসী খাদব রৌদ্ধ ধর্মকেঁ দেন জাগছ। রৌদ্ধ রিচাবক সমাজকেঁ খংধরিশ্বাসসঁ রাঁহব নিকানি তার্কিক রৌদ্ধিক সংস্কৃতিক রিকাস কএনে ছনাহ। সমাজক নিম্ন রস্মক খান্দানক গএহ র্ব্নিযাদী তাকত বহন খছি।

খম্ব্রেদকব প্রেবিত দনিত পৈন্থব খান্দানন মবাঠী করিতা এরং কথাসাহিত্যমে সহসা একটা চমকোব খানি দেনে ছন, জকব খারাঁজ মৈথিনীমে সেহো স্বনন গেন। তকবে পবিণাম থিক মধ্প রিবচিত কথা কার্য্য 'দ্বাদশী'ক খন্তস্মত সমাহিত 'ঘসন খঠন্নী', জকবা মধ্য দনিত চেতনাকেঁ দেখরঁ হমব ধ্যেয খছি।

ঘসন খঠন্নীমে দনিত চেতনা

ঘসন খঠন্নী 'মধ্প'ক সরাঁধিক প্রখ্যাত, সরাঁধিক প্রশংসিত কথাকার্য্য থিক। এহিমে দনিত রস্মক একটা রিধরা স্ত্রী র্ব্চনীক চিত্রণ কএন গেন খছি। ও জেঠক রিকবান সমযমে খেতমে রিন্ব জনখৈ-কনোক কাজ কবরাঁক নেন রিরশ ছন, খপন খা খপন রঁচাক জীরন বক্ষার্থ। এহি কাজক রঁদনা ওকবা ভেটৈতৈক মাত্র খাঠ খানা। ওকব পতি মবি গেন ছৈক। ওকবা একটা ছৌ মাসক নেনা ছৈক। সাঁঝমে ওকবা ভুটৈক্ষন রাঁবূ দিসসঁ রৌনিমে ভেটৈত ছৈক খঠন্নী, জে কোনো দোকানমে নহি চনৈত ছৈক কিযৈকতঁ ও ঘসন ছৈক। র্ব্চনী ওহি খঠন্নী নএকেঁ পরেসান খছি খা ও ভুটৈক্ষন রাঁবূ নগ পহুঁচি রঁদনি দেরাঁক খাগ্রহ কবৈত ছৈক। তাহি পব

ভুটৈক্ষন রাঁবূ ওঁবতক ত্রিযাচবিত্রকেঁ র্যাখ্যাযিত করৈত উঁচিত রৌনি দেনাসঁ খপন ক্ষনমে দাগ নহি নগোতাহ সন রাঁত কহৈত ওকবা পিষ্টৈত ছথিন্হ খা এহি দ্হ্র মায–রেঁষ্টৌক প্রাণাঁত ভএ জাগত ছৈক। ণ্ডা তঁ ভেন করিতাক সংক্ষিপ্তসাব।

দ্বাদশীক খাম্মুখকক খন্বসাবেঁ– "প্রস্তুত দ্বাদশী সংকনন এহনে করুণাক নির্মবিণী থিক জাহিমে খরগাহন কযনাসঁ করুণাক এহি খারবণমে ধ্রাঁতিক জ্বানাম্মুখী পাঠককেঁ দৃষ্ঠিগোচব হোযতনি। এহি সংকননমে 1940সঁ 50 ঙা.ক মধ্য বচিত 12 গোষ্ঠ করুণ বসামেক কথাকার্য্য সংকনিত খছি। ণ্ডা সংকনন সামাজিক রৈষম্য, শোষণ ও খনাচাবক জীরন্ত চিত্র সমক্ষমে উঁপস্থিত করৈত খছি।"– খাম্মুখ, পৃ.– খ

উঁপরোক্ত পবিপ্রেক্ষমে খানেখক মূন উঁদ্দেশ্য র্‌চনীক ক্ষঁহসঁ নিঃসৃত পাঁতি–

"মানিক !

হম কর্জ নহি ছী মঁগৈত

খথরা নহি খএনহুঁ ভীখ হেত্ত

উঁপজনে রৌনি ষ্টৌ দেন জাএ" সঁ খছি। জাহি মধ্য দনিত চেতনাক খরগাহন হোণত খছি। র্‌চনীক রাণীমে দৃঢ়তা ছৈক জে ভুটৈক্ষন রাঁবূক খহংকাব খনাচবক সমক্ষ টুটি ভনহি গেন খছি, ক্ষদা ন্যুকন নহি।

রহ্ত বাস খালোচকক কহের্ ছন্হি জে মধ্পজীক করিতাক পাত্র রিদ্রাহক স্বব হ্মখবিত নহি কঽ পবিস্থিতিক খাগূ খামেসমর্পণ কএ দৈত ছনি। হ্মদা এহি ঠাম হম কহএ চাহের্ জে একাএক রিদ্রাহক স্বব নহি উঠৈছ খর্থাত্ রিন্ব চেতনাক রিদ্রাহ কোনা সংভর ভএ সকৈছ ? স্বতংত্রতাসঁ পূর্র দনিত রস্ত্র খপন হকক প্রতি সারধান ভএ উচিত মাঁগ কবর্ প্রাবংভ কএ দেননি সৈহ তঁ ভেন দনিত চেতনা। জেকি 'ঘসন খঠন্নী'ক র্বচনী খপন পাবিশ্রমিক মাঁগৈত সিঙ্ক কএ দেননি।

এক হিসারেঁ রাঁত রঁড্ড ছোটৈ ছৈক, খদৌসঁ সামর্থ্যরান খসহাযকেঁ কঠ্ঠ পহুঁচরৈত খাএন ছথি, জনিকা নগ শক্তি ছনি, ও ওকব উপযোগ নিবীহ পব কবৈত খএনাহ খছি, হ্মদা 'ঘসন খঠন্নী' খপন প্রকাশনক সংগ সভক ধ্যান খপনা দিস খাহ্বষ্ঠ কবর্াক হেত্ত রাধ্য কএনক, জে একব সরঁসঁ পৈঘ উপনব্ধি মানন জাএ সকৈছ। শক্তিশানী হোথি রা শক্তিহীন, সভ কেও এহি দিশামে কিছুও কান খরশ্য মনন কএননি, জাহিসঁ এহি সাহিত্যক উদ্দেশ্য সোনহো খানা সফনতা প্রাপ্ত কএনক, জে চিকড়ি-চিকড়ি ওহি সাহিত্যকাবক গ্ণগান খদৌসঁ খাগ ধবি কএ বহন খছি, এহিসঁ রৈসী একটা সাহিত্যকাবসঁ এহি সমাজকেঁ খপেক্ষা কী ?

নিষ্কর্ষতঃ কহন জা সকৈত খছি জে সমাজক দনিত-পীড়িত রস্ত্রক রেদনাকেঁ হ্মখব কবর্, ওকবা সমাজক সহান্বভূতি খর্জিত কবৈর্ হিনক কথাকার্যক উদ্দেশ্য বহন খছি। হিনক কথাকার্যক নাযক দনিত রস্ত্রক প্রতিনিধিত্ব কবৈত খছি তথা খননাযক সামন্ত রস্ত্রক। শোষিত রস্ত্রক খমান্বষিক খত্যাচাবক চক্কীমে

दनित रक्ष्मकेँ पिसाएत देखाएबाक एवं ओकरामे अपन हकक प्रति चेतनाकेँ जागृत करबाक हिनक ध्येय छन्हि।


आशीष अनचिन्हार

निर्यंत्रित पूँजी आ मध्यमार्गीक मार्क्सवाद

आधुनिक समयमे जतेक बेसी गंजन "मार्क्सवाद" वा "साम्यवाद" वा "समाजवाद" वा "वामपंथ" वा "प्रगतिशील" नामधारी विचार सभहँक भेलै ततेक आन कोनो विचारक नै। आ ऐ गंजन लेल मात्र आ मात्र ओ तथाकथित "मार्क्सवादी" वा "साम्यवादी" वा "समाजवादी" वा "वामपंथी" वा "प्रगतिशील" सभ जिम्मेदार छथि जे छद्म रूपेँ एकरा मात्र कैरियर वा फैशन लेल अपनेलथि। जँ उपरलिखित विचार सभहँक अर्थ पूछल जाए तँ वस्तुतः सभहँ अर्थ एकै आएत आ तकरा सरल शब्दमे एना कहि सकैत छी--"जे मनुख धन संचयक प्रवृति छोड़ि आ आनो लोकेँ ऐ लेल प्रोत्साहित करथि संगे-संग ओइ धनक उपयोग सामूहिक हितमे होए से "मार्क्सवादी" वा "साम्यवादी" वा

"समाजवादी" वा "वामपंथी" वा "प्रगतिशील" कहैतो। आबि ऐ प्रवृति लेल नास्तिक भेनाइ जरूरी छै की नै से कहब मोश्किल कारण बँगालक करोड़पति "मार्क्सवादी" वा "साम्यवादी" वा "समाजवादी" वा "वामपंथी" वा "प्रगतिशील" सभ हरेक बर्ख धूमधामसँ दुर्गापूजा मनबैं छथि। ओना प्राचीन कालमे वाममार्गी ओहन लोककेँ कहल जाइत छलै जे की संसारक प्रचलित परंपरासँ हटि कऽ काज करथि। तखन एहिठाम हम ऐ सोचमे छी जे प्राचीन भारतक तंत्र-वाममार्गी आ आधुनिक भारतक राजनैतिक वाममार्गीमे की संबंध छै तँ हमर लजिब अनायासे "पंच-मकार" दिस चलि जाइत अछि आ अद्भुत साम्य भेटि जाइए। तँए हम "आधुनिक भारतक राजनैतिक वाममार्गी" सभकेँ साम्यवादी सेहो बुझैत छी। ओना कतबो ताकै छी तँ धन-संचयक प्रवृतिकेँ छोड़बाक आदति "आधुनिक भारतक राजनैतिक वाममार्गी" सभमे नै भेटैए। स्वतंत्रता समयमे जखन जमिंदारी प्रथा समाप्त भेलै आ जमिंदार सभ कांग्रेसक सदस्यता लऽ कऽ अप्रत्यक्ष रूपें अपन जमिंदारी बँचेलक तेलाहितेँ किछु अति-महत्वाकंक्षी लोक सभ "मार्क्सवाद" वा "साम्यवाद" वा "समाजवाद" वा "वामपंथ" वा "प्रगतिशील" आदिक चोंगा पहीरि कऽ सामजाक सभ क्षेत्रमे प्रवेश केलक। आ, "मार्क्सवाद" वा "साम्यवाद" वा "समाजवाद" वा "वामपंथ" वा "प्रगतिशील" नामक ऐ विचारक सभहँ छद्म रूपसँ साहित्यकेँ सभसँ बेसी लोकसान भेलै। ओना हमरा ई स्वीकार करबामे कोनो हर्जा नै जे किछु लाभ सेहो भेलै तखन ओकरा एना बुझू जेना कोनो लोक दस रूपैयाक उगाही लेल पचास रूपैया खर्चा करथि।

2

ऒँ नास्तिकताकेँ "मार्क्सवाद" वा "साम्यवाद" वा "समाजवाद" वा "वामपंथ" वा "प्रगतिशील" आदिक तत्व बूझल जाए चार्वाक आ हुनक अनुयायी वॅड़का "मार्क्सवादी" वा "साम्यवादी" वा "समाजवादी" वा "वामपंथी" वा "प्रगतिशील" निकलत। प्रस्तुत अछि हुनक किछु विलक्षण विचार—

१) मानं त्वक्षजमेव हि' हिशेष्ट्वा:त्र विशेषणार्थो वर्तते। विशेष: प्वनश्चार्वाकैर्लोकयात्रानिर्वहणप्रवण धूमाद्यनुमानमिष्यते क्वचन न प्वन: स्वर्गादृष्टादिप्रसाधकमलौकिकमनुमानमिति। –
षड्दर्शनसमुच्चय– पृ0 457

२) केचित्तु चार्वाकैकदेशीया आकाशं पंचमं भूतमभिमन्यमाना: पंचभूतात्मकं जगदिति निगदन्ति। षड्दर्शन समुच्चय– पृ0 450

३) लोकसिद्धो भवेद् राजा परेशो नाऽपर: स्मृत:। देहस्य नाशो मुक्तिस्तु न ज्ञानान्मुक्तिरिष्यते॥ सर्वदर्शन संग्रह– पृ0 9

४) ऋंगनाঽ২নিংগনাজন্যস্বখমের প্বমর্থতা। কণ্টকাদির্য্যথাজন্যং দ্:খং নিবয উচ্যতে॥ সর্বদর্শন সংগ্রহ– পৃ0 9

জঁ প্রাচীন মতকেঁ খংডন কবর্ "মার্ক্সিরাদ" রা "সাম্যরাদ" রা "সমাজরাদ" রা "রামপংথ" রা "প্রগতিশীন" ঋাদিক তত্ত্ব বুঁঝন জাএ তখন তঁ সভ উঁপনিষদ্কাব গীতা সংগ হ্নক ঋনুযাযী রঁড়্কা "মার্ক্সিরাদী" রা "সাম্যরাদী" রা "সমাজরাদী" রা "রামপংথী" রা "প্রগতিশীন" নিকনত। কাবণ উঁপনিষদ্ সভমে কর্মকাংডক ও রেদক যজ্ঞকেঁ রিরোধ ভেন ঋছি।

জঁ সমানতাকেঁ প্রতিপাদিত কবর্ "মার্ক্সিরাদ" রা "সাম্যরাদ" রা "সমাজরাদ" রা "রামপংথ" রা "প্রগতিশীন" থিক তখন যাজ্ঞরন্ক্যক রিচাব সর্বাধিক মহান ঋছি। যাজ্ঞরন্ক্যস্মৃতিক গৃহস্থধর্মপ্রকবণমে নিখন ঞা শ্লোক দেখূ–
–

রাঁনস্বরাসিনীরৃদ্ধ– গর্ভিণ্যাত্তবকন্যকাঃ ।

সংভোজ্যাতিথিভৃত্যাংশ্ চ দংপত্যাঃ শেষভোজনম্ ॥ যাস্মৃ১.১০৩ ॥

मने ৰাঁন ৰঁচা ৰ্বূঠ़ ও সংগমে বহএ ৰনা নোক (নৌকব–চাকব সহিত), খাত্তব, গর্ভিণী, কন্যা খতিথিক খাদি ভোজন পহিনে হেৰোঁক চাহী তকব ৰাঁদে গৃহ মানিক খপনে কবথি। নিশ্চিত ৰূপসঁ নৌকব চাকবকেঁ ঐ সূচীমে খানি যাজ্ঞরন্ক্যে খপন মহানতাক পবিচয দেনে ছথি। খা নিশ্চিত ৰূপসঁ খাজ্ক "মার্ক্সরাদী" রা "সাম্যরাদী" রা "সমাজরাদী" রা "রামপংথী" রা "প্রগতিশীন"সঁ ৰেসী মহান ছথি।

জঁ দযা ও করুণা "মার্ক্সরাদ" রা "সাম্যরাদ" রা "সমাজরাদ" রা "রামপংথ" রা "প্রগতিশীন" খাদিক নক্ষণ থিক তখন ৰৌদ্ধ খা জৈন ধর্মক পানন কবহ ৰনা সভ সেহো মহান ৰড়়কা "মার্ক্সরাদী" রা "সাম্যরাদী" রা "সমাজরাদী" রা "রামপংথী" রা "প্রগতিশীন" ছনাহ ও ছথি।

জঁ খখিন রিশ্বক নাবা দেনাসঁ "মার্ক্সরাদ" রা "সাম্যরাদ" রা "সমাজরাদ" রা "রামপংথ" রা "প্রগতিশীন" ৰ্ঝ্নন জাএ তখন রৈদিক ঋষি সভহঁক ও ঋচা ৰেসী জোবগব খছি জৈমে কহন গেনৈ জে–– রস্বধৈর ক্ষ্টৈুম্ব্ৰকম্।

জঁ রস্তুতঃ দেখন জাএ তঁ সংসাবমে "নির্যংত্রিত পূঁজী" রা "নির্যংত্রিত পূঁজীরাদ" কেব ৰহ্ত মহত্ব ছৈ। মনে এহন পূঁজীরাদ জৈমে শোষণক দব কম হোগ (জী

ঠীক পঢ়ৢনিঐ খপনে "জৈমে শোষণক দব কম হোগ)। খাৰ্ব ৰঁহ্ত নোক একবা কাল্পনিক কহতা ফ্দা রর্তমান সময়মে স্বঁয সোরিযত রুসক রিঘটন খা চীনক খার্থিক প্রসাব দেখি ও নিশ্চিত হোগত খছি জে পূঁজীরাদ ৰঁহ্ত জরুবী ছৈ। খাৰ্ব ও হমবা খহাঁক হাথমে খছি জে ওকবা নির্যংত্রিত কবী রা খনির্যংত্রিত ছোড়ৃ দী। ৰঁহ্ত নোক একবা এখনো কাল্পনিক মানতা। একটা উঁদাহবণ নিখ– "জঁ সভহঁক পেট ভবি জাএত তঁ ও সংসাব কতেক সময টিকতৈ। হমবা হিসাবেঁ মাত্র এক ঘঁটা কাবণ সভহঁক পেট ভবনে ছৈ তখন এক দোসবক মোজব কী ? তঁএ হমবা হিসাবেঁ জা ধবি পেট খানী ছৈ তা ধবি নোক এক দোসবক গপ্প মানহ নেন মজৰ্বূর ছৈ। হঁ, কমসঁ কম চাবি ঘঁটাসঁ ৰেসী পেট খানী নৈ হেৰাক চাহী খা ঐ নেন জৈ পূঁজীরাদক খরধাবণা দেনহ্ঁ সে ভেন "নির্যংত্রিত পূঁজীরাদ" ।

3

সাফ শৰ্ব্দমে কহী তঁ মধ্পজী ভাবতীয পবংপবাক মার্ক্সরাদী ছথি। ও খনগ গপ্প জে ও খপন সাহিত্যমে নান ঝংডা কহিযো নৈ উঁঘনা। ফ্দা কী জেনা সভ নোক জানৈ ছথি জে সাহিত্যমে নান ঝংডা উঁঘনিহাব ছদ্ম মার্ক্সরাদী ছনা রা ছথি। খাৰ্ব হম মধ্পজীক কিছু সাহিত্যক উঁদহাবণ দৈত ও সিদ্ধ কবৰ্ব জে মধ্পজী নির্যংত্রিত পূঁজীরাদক সমর্থক ছনা। মধ্পজীক সর্বাধিক নোকপ্রিয করিতা থিক "ঘসন খঠন্নী" একব খংতিম

ভাগমে পাত্র ৰাঁজি উঠৈত খছি ---

হম কর্জ ন ছী মঁগৈত

খথরা নহি খএনহুঁ ভীখ হেত্ত

উপজনে ৰৌনি টৌ দেন জাএ

হম থিকহুঁ খহী কেব প্রজা পূত

কৈ ৰেবি এনউঁ

টুটি গেন টৌঁগ

খন্নক মাবন খছি হমব খাঁগ....

সপ্ষ্ঠতঃ মধ্পজীক রিচাব খছি জে স্বপ্পত উপজন ৰৌনি দেন জাএ। খা গএহ তঁ নির্যংত্রিত পূঁজীরাদ ছৈ। হম ফেব কহবঁ জে খাবঁ ঃা হমবা খহাঁক হাথমে খছি জে ওকবা নির্যংত্রিত কবী বা খনির্যংত্রিত ছোড়ি দী।

তেনাহিতে মধ্পজী খপন খান দোসব প্রসিদ্ধ করিতা "পীক" কেব মাধ্যমেঁ কহৈ ছথি--

নহি পতন এক দিন ককব হৈত ?

पृथ्वीक कोबमे के न जैत ?

तें सकन रस्तुमे एक भार

निश्चित रूपसँ ओ साधावण भावतीय जन-मानस केव अभिव्यक्ति अछि मुदा एकव मून "नियंत्रित पूँजी"मे नुकाएन छै। जैठाँ नियंत्रित पूँजी छै ताही ठाम स्वय्यरस्थित ढ़ ंगसँ उँथोन-पतन संभव छै।

मध्पजीक रँह्त बास करिता गीत हमब तथ्यक गराही दैए मुदा ऐठाम सभकेँ बाखर हमब अभीष्ठ नै। काबण ऐ नेखकेँ हम मात्र प्राबंभिक मानै छी। की काबण छै आन आनोचक सभ मध्पजीकेँ प्रगतिशीन तँ मानै छथि मुदा मार्क्सरादी नै जखन की मध्पजी आन कथित मार्क्सरादीसँ रेसी प्रमाणिक मार्क्सरादी छथि। हम ऐ नेखकेँ आब आगू रँढ़ाएर आ ओततहि ओ र्बुझना जाएत जे मैथिनीक आनोचक सभ कोना " कथित मार्क्सरादी" सभ मात्र पार्टी ज्वाागन करैत छन बाजैनितिक ओ प्वबस्कावक स्वार्थ नेन ऐ फेबमे मध्पजी सन स्वचा मार्क्सरादी कोन कतिया गेना।

21 दिसम्बँव 2014केँ गाम कोर्थ्मे स्व. काशी कान्त मिश्रे "मध्प"जीक प्रतिमा हुनक पनीक प्रतिमा संग स्थापित भेन। ऐ कार्यक्रमक रिरबण एना अछि--

करिचूड़ ामणि मध्पजी 27म रँबखीपब हुनक गाम कोर्थ्मे मध्प स्मृति मनाओन गेन अहि अरसब पब मध्प

जीक स्मारकक स्थापना सेहो कएल गेल। राम जी ठाकुर दीप जरा कऽ कार्यक्रमक शुरुआत केलनि आ मंचक अध्यक्षता जीतेन्द्र नारायण झा " जीतू" आ संचालन डॉ जयप्रकाश चौधरी "जनक" जी केलनि। मुख्य अतिथि श्रीमती नीरजा रेनु, किशोर नाथ झा आ विशिष्ठ अतिथि चंद्रभानु सिंह आ वैद्यनाथ मिश्र "वैद्यू" छलाह। ऐ संगे आरो प्रबुद्ध लोक छला- शंभु नाथ मिश्र, सारदा सिंह, दिनेश चन्द्र झा, वैद्यनाथ झा, उमेश झा, शुद्ध कुमार झा, रामचंद्र झा शिवशंकर श्रीनिवास, चंद्रदेव झा, जटाशंकर मिश्र, कमल जी ठाकुर, प्रो. महेश झा, त्रिपुरारी ठाकुर, सुरेन्द्र झा, चंद्रकिशोर राय सरस जी, मदन झा, वरुण चौधरी, सवरन झा, सहयात्री जी, फूलचंद्र मिश्र"रमण", उदय चन्द्र झा "विनोद", मिथिलेश झा, सुमन सौरभ, उमानाथ झा ,कमल पाठक जी, चंद्रकिशोर झा, राघवेन्द्र चौधरी, आ राजीव मिश्र। प्रस्तुत अछि किछु फोटो (स्रोत- राजीव मिश्र, कोर्थु ग्रुप)—





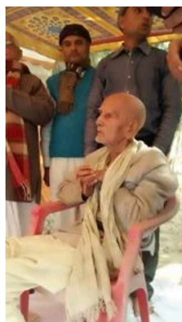



॥ ओम् शान्तिः ॥

बलियासे नरसाम उच्च कुल, कविचूड़ामणि 'मधुप' महान
चन्द्रमुखीमौ तनिक भामिनी मामती[illegible]न वती प्रमाण
पुत्रवधू सौभाग्यशालिनी प्रेमक[illegible]न पितरक ध्यान
युगल समाधि उपर श्रद्धासँ, सुन्दर स्मारक निर्माण
अमर मधुप-दम्पति मिथिलामे, प्रतिमा पूजन चिर अभिलाष
सकल जनक हित अर्पित करथु, नमन, वंदन, रक्षण सोल्लास

रचनाकार:- डा॰ जयप्रकाश चौधरी 'जनक'
दि॰ 13-2-2014 ई॰

निर्वाण तिथि:-
पूज्य पिता कविचूड़ामणि 'मधुप' 20 दिसम्बर 1987 ई॰
(जन्म तिथि:- 2 अक्टूबर 1906 ई॰, आश्विनी पूर्णिमा, कोजागरा)
पूजनीयामाँ चन्द्रमुखी- 18 जून 1993 ई॰
(जन्म वर्ष - 1910 ई॰)





मेक इन मिथिला (व्यंग्य)

मेक इन मिथिला भाग-१

रंग-ढंगी, रंगभाषी, रंगमुखी, आदि कतौ नै पवाजित होइत अछि कारण ऐ शब्दक आगूएमे "रंग" लागल छै आ मैथिल हरेक काजमे पाछू रहि "रंग"केँ आगू कऽ दैत छथि। आरो अहाँ सभ खिसिआउ नै। उपरका शब्द सभ रंगप्रचलित अछि मैथिलीमे। निञ प्रचलितमे सेहो "रंग" मिथिलाक सभ चीजमे "रंग" भेटैत। रंगदेव-राद सेहो। ई "रंग" विश्वरू मिथिलाक रंगल अछि आ तँए आँटी मैथिल सभ लग रंगयात रूपें भेटैत। विश्वक आन कोनो भागमे एहन "रंग" नै भेटैत।

मिथिलामे रंग देवराद रंगत दिनसँ अछि। रंगौ लेल बाना माइसँ कर्‍ना तँ रंगौ लेल चौवचन्ना। नाती लेल मंगल केव उपास तँ साँए लेल किछु। मने एक एकटा लोक लेल एक एकटा देवता। मैथिल चत्तुर होइ छथि हुनका ब्रम्हाण छनि जे एकै देवतासँ सभहँक लेल माँगबै तँ कनी-कनी हिस्सा भेटैत तँए अलग-अलग देवतासँ अलग-अलग कर्‍ना। सदा ई तँ सभ जनितेत हएत जे रंगसी ब्रुधियाव तीन ठाँ माँखै छै। ई मैथिल सभ देवताकेँ जते रंगूरह ब्रुनौ छथिन तते रंगसी रंगूरह ओ अपने छथि। भाग देवता सभहँक आपसी लड़ाइ ाग संपादके सनक होइ छै। जेना संपादक सभ कोहि निकानै छथि जे ओकवासँ जे दोस्ती बाखत

তকবা খপন পত্রিকামে নৈ ছপবৈঁ তেনাহিতে দেবতা সভকেঁ সেহো ছৈ। শংকব দেবতাকেঁ বিষ্ণুসঁ দুশ্মনী। খাবেঁ বিষ্ণুসঁ জে ববদান মঁগনক সে শংকব দেবতা নেন খছূত। নক্ষ্মী খা সবস্বতীক সৌতিযা ডাহসঁ কে নৈ পবেশান ভেন। .... কবৈত বদ্ধ বঁহ্দেব পূজা। তঁএ দেখৈত হেবৈঁ জে মৈথিনক কোনো কর্ব্না ফনদাযী নৈ হোগ ছৈ। ভাগ, সভ দেবতাকেঁ খপনামে ঝগড় া ছৈ। কিনকোসঁ সচৈবঁ তঁ হ্নকা দুখ হেতনি। তঁগ মৈথিন সভ গবীবঁ বঁনি ঐ কাতসঁ ওগ কাত ছিছিখাএন হিবৈ ছথি। খা কতৌ স্বখ নৈ ভেটৈ ছনি।

বঁহ্উংস্থশীয সেহো খাঁচৌ মৈথিন খছি। হবেক মৈথিন নগ কমসঁ কম 100 উংস্থশ্ব বহৈত ছনি। মঁচপব জেতা দূ শৰ্দ্ধ নেন হ্মদা খাঁখি বৈঁচৌক বিযাহ নেন ববক সংধানমে। মঁগতা মিথিনা বিকাস কেব নামপব খা বঁনৈ ছৈ খপন দূমহনা–তিমহনা। এহন বঁহ্উংদেসী জে হাচৈ বঁজাব জাগ ছথি তঁ মোনে মোন সোচৈ ছথি জে মাএ–বঁহিনিকেঁ বেঁচি কঽ কোন সমান নেন জাএ।

বঁহ্বাষ্ট্রিযতা। ওা শৰ্দ্ধ খপনা–খাপমে মৈথিনময খছি। একচৌ খাঁগন মনে চাবি চৌ বাষ্ট্র। খা চাব্দ বাষ্ট্রমে মূঁহা–হ্ন্নী। ঐ শৰ্দ্ধক খাব উংপযোগ ছৈ। পোথীমে দম হোগ কী নৈ হ্মদা পোথীক পাছূ নেখক বঁহ্ বাষ্ট্রিয কম্পনীমে কাজ কবৈ ছৈ সে সূচনা জব্দব ভেচৈত। মনে ঐ সূচনাসঁ পোথীক ওজন বঁঠ ি জাগত ছৈ। বঁহ্বংগী ঐ মিথিনাক ঠেঠ শৰ্দ্ধ খছি খা ভাব খন্বব্দপ খছি। একব সূত্র খছি "তোবা নগ তোবা সন, মোবা নগ মোবা সন"। খা ঐ সূত্রক বঁনপব বৈদিক মিথিনাসঁ এখন্বক মিথিনা ধবি চনি বহন খছি। ওনা ঐ

সূত্রক ওপরাদ সেহো অছি। মিথিলাক লোক পীঠ পাছু ছুরা ঘোপৈত অছি ঘোপরবৈত অছি। আ সভ "বঁহ্"মেসঁ ঔ "বঁহ্" মৈথিলক মূল অছি।

আর এতেক বঁহ্নতা দেখি কনছী নৈ কাৈ২ নাগর। রর্তমান সমযমে মিথিনামে একটা নর "বঁহ্" কেব জন্ম ভেন অছি জকব পূবা নাম ছৈ "বঁহ্ ভাষী নেখক"। ঔ রিশ্বস্থামে রিশ্বস্থ মিথিনাক অছি। জেনা আগসঁ 100 বর্খ পহিনে রিকৌআ সভ বঁহ্ রিযাহ করৈত ছন তেনাহিতে আজ্ক নেখক সেহো বঁহ্-ভাষী নেখন করৈ ছথি। জে জতে ভাষামে নীখি সকতা তিনকা ততেক সামথ্র্নি বূঁঝন জাগত অছি। ওনা সভকেঁ বূঁঝন ছৈ জে রিকৌআ সভহঁক "বঁহ্"কেঁ গামক নোক ৎৈবৈ ছনৈ ঝদা "বঁহ্ ভাষী নেখক" কেব নেখনকেঁ কিযো নৈ ৎৈবৈ ছৈ। এক বাঁতমে রিকৌআ আ বঁহ্ভাষী নেখক এক অছি জে রিকৌআ কেব সংতান অবৈধ হোগত ছনৈ আ বঁহ্ ভাষী নেখক কেব বচনা বর্ণসিংকব হোগত অছি।

ঐ প্রকাবক নেখক সভমে "বঁহ্ ছপাস" বোগ সেহো ভেৈত। ঔ বোগ সংক্রামক হোগত ছৈ। দেখা-দেখী পসবৈ ছৈ। জিনকা ঔ বৈমাবী নৈ নাগন তিনকব জীবন বেকাব। কিছু গোটৈ তঁ এহন স্টেজপব পঁহ্চি জাগ ছথি জাগ ঠাম হ্নকা অপনা ছপাসক বৈমাবী ঠীক কববাঁক নেন হিন্দী অখবাঁবক কোনটা পকড়২ পড়ৈ ছনি। ওনা সচ পূছু তঁ পূবা হিন্দী অখবাঁবমে দূ শব্দ মৈথিনীক ওহনে নাগৈ ছৈ জেনা পূবা সবদব পৈন্ট আগূমে কনী ফাটি গেন হো। ঝদা নোচনী বৈমাবী হোগ ছৈ ঝদা ওকবা নোচনাপব আনংদ ভেটৈ ছৈ তেনাহিতে হিন্দী অখবাঁবক কোনটা পকড়ব সেহো বৈমাবী

ছৈ ক্ষদা ও রেঁমাব নোক ওহীমে খানংদিত বহৈ ছথি। কী কবরেঁ রেঁমাবীক খরস্থ সএহ বহৈ ছৈ।

খা খংতমে রঁহ্ প্রচাবিত .... খবে ঞা বোগ তঁ হমবোমে খছি। তঁএ কহৈ ছী নে জে ঞা র‍্যংগ রঁহ্ প্রচাবিত হএত।

মেক গন মিথিনা ভাগ–২

খপনা মহান মিথিনামে সমর্থন খ্নন ভেষ্টত। নামক সাথ। নৈ জহ্মবতি বহত তৈযো ভেষ্টত, শ্বভকমানা খা রঁধাগ তঁ ওকবা সংগ হ্রীমে ছৈ। ওহো শ্বহ্ম, খাস টৌক তাবজূপব তৌনন। ক্ষদা এহন গপ্প রিবোধ নেন নৈ ছৈ। খান দেশীমে জঁ সমর্থন খ্নন ভেষ্টত তঁ রিবোধ সেহো। ক্ষদা জা হে মহান মিথিনা------

খপন মিথিনামে রিবোধ মূঁহপব নূখা ধহ কহ হোগত ছৈ। ওকা নূখা তঁ জনানীক পহিচান থিক ক্ষদা রিবোধক কানমে মৈথিনকেঁ জনানীসঁ কম নৈ বুঝূ। একটৌঙ দাহবণ নিখ। একটৌ হেসবুকিযা এ্রাতিরীব খপন রিবোধ কেনা ব্যক্ত কবৈ ছথি--

"ওকবা সনক নোক মিথিনামে রিহাবক এজেষ্ট ছৈ খা মৈথিনীমে হিন্দীক। খহাঁ জেনা 'রিহাবী'কেঁ জীযরেঁ ছিযৈ, জেনা হিন্দীকেঁ জীযরেঁ ছিযৈ, জে সভ রঁনার্ষ্টোখ ছি। কনেক দিন মিথিনা–
মৈথিনীকেঁ জীরিক' দেখিযৌ। এহি সভ হোগসঁ তকোন ভনে কিছু রাহরাহী ভেষ্টি জাএত। ক্ষদা ঞা সমাধা

न नै छै। विहाव आविहावीक पक्षमे फोकना तर्क नै चलत। कनेक तैयारी कऽ एहि विषयक"

आर देखू ऐ भाषाकेँ। ओ भाषा अपना आपमे दोग ला भाषा अछि जे लिखनिहारक मानसिकताकेँ देखाब कऽ रहल अछि। ऐ भाषामे केकरो नाम नै छै म ले"तेसर पुरुष" के अरधाङ्गी। आ मैथिल तँ ले म र्द लोगत छथि ले माउँग। ओ तँ ईस तेसर "पुरुष " लोग छथि। ले चुप्प रहता ले थुकि कऽ ईजता । ओ देखारपौराणिक संग वास्तविक रूपमे खानी ऑ टैबलेटपर भेटैता।

ओ ग्रप मैथिलक अपन ग्रप छै। जँ विश्वक आन को नो ठाम ओ ग्रप भेटैए तँ बुझू जे ओ मिथिलेसँ एक्स पोर्ट कएल गेल छै।

<u>फर्क (व्यंग्य निबंध)</u>

1

दूटा कुक्कुर लड़ैत रहै। खूब लड़ल। खूने-खुनाम। दूनूक भुकनाइसँ टोला-पड़ोसा परेसान। रहतो लाठी लऽ कऽ दौड़ल। दूनू कुक्कुर हटि गेल आ कनेदेरमे फेर लड़ाइ शुरू कऽ देलक। फेर रहल बंग फेर रहल तान।

ता ओम्हरसँ तेसर कुक्कुर एलै आ हानति बुझि पहिने

ক দূনূ ঋক্কবকেঁ কহলকৈ---

"এনা জে নড় ি ছহ তঁএ তঁ ঋক্কব ছহ"

এতে স্বনিতে পহিন্বক দূনূ ঋক্কব প্বছনকৈ--

"তখন তোঁ খাদমী কিএ নৈ ছহ ? "

2

হমবা গংঠবনেঠপব রঁড় মোন নাগৈএ। সভ কিছ নে ঠেপব। কহিযো কান ক রিঁযাহক রাঁত চনৈএ তঁ মো ন হোগএ জে গংঠবনেঠপব রিঁযাহ কহ নী। এক দি নএনাহিতে হম দূনূ খাঁখি সমধানি নেঠপব নাগন বহী কী ওম্হবসঁ ভ্রাতা শ্রী প্বছনা কী কবৈ ছহী ?

হম কহিনিখন্হি কিছ নৈ রঁস কনে গংঠবনেঠপব ঋশতী নড় ি ছিঐ।

ভ্রাতা শ্রী খিসিখা কহ কহনা জে নোক খখাড় ামে ঋশতী নড় ি ছৈ খা তোঁ গংঠবনেঠপব....

হম কনে কম জোবসঁ কহনিখন্হি জে হমহুঁ তঁ কগজি যে পহনরান ছী নে ----

3

একঠা ছনা মনভৌক মহবাজ। সদিখন রাঁপ রঁনেং

फौदारी करब रहना। लोकक रचनापर हँसए, दूसरें आ खासी अपने लोकके सर्वश्रेष्ठ मानए हुनक हिस्सक छलनि। हुनकर धारणा छलनि जे आलोचना करब समर सभहँक परम कर्तव्य अछि। नित रचि-रचि कर अपन लोकक प्रतिद्वंदी सभहँक आलोचना करथि। ओ रैब-रैब कहन करथि---

"आलोचनासँ रचना स्वस्थ होइत छै। गलती स्वधरै छै..आदि-आदि"

एक दिन एहन भेलै जे एकटा आर महान आलोचकक पदार्पण भेलै आ हुनकर लोकक आलोचना होमए लागल। आरौ ओ नित कटकटाथि। खौंझाथि। भूकथि ... आ अंतमे ओ रैब-रैब कहए लगला--

"लेखकके अपन रचना संतान सन प्रिय होइत छैक। संतानक निन्दा माय-लोकके कनियों नै सोहाइ छै। तँइ ककरो रचाके दूसए उचित नै। दूसराक रदना साहित्यिक रचना रूपी संतानके अधिकाधिक नीक रहनेराक स्वभार आ सहयोग कएल जेराक चाही"

4

आग-काल्हि साहित्यकारो सभकें आगू-पाछू नटकेलमा चाही। किछो प्रगतिशील छथि तँ किछो जल चतनासँ भवल तँ किछो ....

মতনৰ্ব সাহিত্যকাব ৰাঁদমে ৰনতা ঘ্দা নষ্টকনমা পহিনে চাপী। আ জঁ কোনো কাজসঁ হিনকব নামক আগূ ওা নষ্টকনমা নৈ নগাওঁ তঁ খিসিযা কহ হ্চ। আ ঠীক ওহনে ঘ্দ্রামে আরি জেতা জেনা ঘক্কব সভকেঁ ঘক্কব কহনাপব কাষ্টহ নেন দোড়ি ছৈ আ "ডাগী" কহনাপব চাষ্টহ নাগৈ ছৈ। কিছু সাহিত্যকাবক সংস্কাব ওহনে তেজ ভহ জাগত ছনি জেনা "পৈখানা" কহনাসঁ ভাষা মহকি জাগত ছৈ আ "পোষ্টী" কহনাসঁ হ্নক জীহ সংস্কাবিত।

ব্যংগ নিৰংধ– **নিষ্টবেচব ফেস্ষ্টীভন**

হিন্দু ধর্ম পার্বনি প্রিয অছি। আ ওা কোনো নব তথ্য নৈ অছি। মিথিনা তঁ হিংদু ধর্মক গঢ় মনে পার্বনিক গঢ়। পার্বনি ৰহুত তবহঁক হোগত ছৈ পাববাবিক, সমাজিক,ধার্মিক, আফিসিযন.................. ।

আ ঐ ভেদ উঁপভেদক হিসাবেঁ একব উঁদ্দেশ্য সেহো ভিন্ন প্রকাবক হোগত অছি। আন রিকসিত চীজ জকাঁ পার্বনিমে সেহো নব প্রাকপ জুড়ি ত–হষ্টৈত বহন অছি। হেমনিমে পার্বনিক নাম ভিন্ন ৰূপেঁ সেহো আএন অছি আ নোক একবা ফেস্ষ্টীভন কহএ নাগন অছি। ঐ ফেস্ষ্টীভন শৰ্ব্দক ৰড়কা রিশেষতা অছি জকবা পাছু ওা নাগি জাগত ছৈ তকবা উঁচ্চাব কহ দৈত ছৈ আ ঐ ফেস্ষ্টীভন শৰ্ব্দসঁ আন জীচ জতে উঁচ্চাব ভেন হো ঘ্দা অপনা মৈথিনীমে "নিষ্টবেচব" ৰড় উঁচ্চাব ভেনৈ। কী

कहनियें उँहकाब भेलै ? उँहकाब तँ ओकब होंग छै जे पतित भऽ जाइत छै, नीच भऽ जाइत छै। तँ की मैथिली साहित्य.................. ।

हँ सबकाब ठीक बुझलनियें अपने मैथिली साहित्य................. । आ नहि-नहि आबो उँहकाब भऽ बहल छै। ओना हेंस्थीभल केब संग-संग आन बहित बाम चीजसँ उँहकाब होंगए। उदाहबण लेल पूबा जनमये जकब एकटा पोथी छपै छै तकबा अकादेमी प्रबस्काब मने एकपोथिया साहित्यकाबक उँहकाब। जे कहियो मैथिली साहित्य केब मूँह नै देखलक से जूबी बनि जाइए मने जूबीक उँहकाब। जे कहियो सर्च नै कऽ सकल तकब "बिसर्च" छपैए मने बिसर्चक संग गाइडक उँहकाब। आ जिनका कोनो पबि नै लगैए से क्षबता पैजामापब बँडी पहीबि करिता पाठ कबऽ पहुँचि जाइत अछि मने करिता संगे क्षबता-पैजामा-बँडीक उँहकाब। । जे कहियो मैथिली साहित्य केब मूँह नै देखलक से जूबी बनि जाइए मने जूबीक उँहकाब। जे कहियो सर्च नै कऽ सकल तकब "बिसर्च" छपैए मने बिसर्चक संग गाइडक उँहकाब। आ जिनका कोनो पबि नै लगैए से क्षबता पैजामापब बँडी पहीबि करिता पाठ कबऽ पहुँचि जाइत अछि मने करिता संगे क्षबता-पैजामा-बँडीक उँहकाब।

उँहकाब आबो तबीकासँ होंगत छै। सम्बब अपन जामएक चेनाकेँ बजबेँ छथि तँ जमाए अपन सम्बबक चेनाकेँ। मने सम्बब-जमाएक संगे चेनाक उँहकाब। बड़ महीन तबीका छै। सभ अपन-अपन ग्रुप बना अध्यक्ष बनबाक हिबाकमे। ओना गौब कऽ कऽ देखि निअ जे जकब

রেঁটী হ্মাবি ছৈ রা জকবা খানী রেঁটিএ ছৈ সে রেঁসী গ্বষ্ট রঁনেরাঁক হ্বিবাকমে বষ্ট ছৈ কাবণ ওকবা দহেজ–হ্মঞ্জ রিযাহ কবেরাঁক ছৈ। ঙ্গ হমব শ্বপন বিসর্চ শ্বছি গৌবসঁ দেখি নিশ্ব চাব্ধ কাত। জকবা মাথপব রেঁটা ছৈ সে কম গ্বষ্ট রঁনরৈঁ ছৈ। শ্বা একব পবিণাম জে গ্বষ্ট সংগে রেঁটীক উঁহ্মাব। উঁহ্মাবে–উঁহ্মাব।

ঐ উঁহ্মাব প্রকবণকেঁ দেখৈত কিছু গোটা উঁহ্মাবক কোচিংগ সেন্টব খোনি নেনা শ্বা ঐশী কোর্সক শ্বাফব দ২ বহন ছথি। কিছু সেন্টব কিশতীপব উঁহ্মাব কবরাঁ বহন ছথি। মনে কৈবিযবক সংগে সমাজ সেরাক সেহো উঁহ্মাব। ওনা হম রঁহকি গেন ছনহুঁ হমবা হ্বেস্টীভন দ্বাবা জে নির্টবেচবক উঁহ্মাব হোগ ছৈ তৈপব কহরাঁক ছন। তহ শ্বারঁ কষ্ট ছী। নির্টবেচব হ্বেস্টীভন ওহনে নোক কবরাঁ সকৈএ জে শ্বপনা–শ্বাপকেঁ শ্বকাদমী প্ববস্কাবক মজগূত দাবেদাব মানৈত হোথি হ্মদা হ্নক দাবেদাবী হবেক রেঁব পাছু ঘ্সকি জাগত শ্বছি। ওনা হমব কথনক জাঁচ শ্বামংত্রণ পত্রসঁ সেহো কএন জা সকৈএ। শ্বামংত্রণ পত্রমে ওহনে সাহিত্কাবক নাম ভেটৈত জে শ্বপনে নাঙবি বহিতো ওগ শ্বাযোজন কতকি সোংগব রঁনি জাগত ছথি। ওনা গৌব কবরৈঁ তঁ পতা চনত জে শ্বসনী রেঁবমে ঙ্গ সোংগব সভ নাগন তোড়ি শ্বকাদমী নগ পহিনে পহুঁচি জাগত ছথি । শ্বা শ্বাযোজকক হাথমে কঠবী রাঁরাঁজীক ঠ্নু রঁচি জাগত ছনি। খৈব শ্বাগূ রঁঠ় ী। শ্বাযোজনক প্রাব্দপ এহনে হোগত ছৈ জে হম তোবা দেরৌ তোঁ হমবা দে শ্বা মামিনা হ্বিহটী–হ্বিহটীপব নিপটি জাগত ছৈ। শ্বা ঙ্গ 50–50 সভ ঠাম নাগূ হোগত ছৈ। ঐ রেঁব তোঁ শ্বকাদমীক জূবী ছহ তঁ হমবা দে শ্বা শ্বগিনা রেঁব হম

सकारात्मक जूरी बहरौ तँ तोबा देरौ। जेना खेती आर रंटैयापर होगत छै तेनाहिते साहित्यमे रंटैया नागल छै...। हालेमे अकदमीमे पुरस्कार लेल एहल पोथीकेँ आमंत्रित कएल गेलै जकरापर आरोप छै जे ओ दोसरसँ लिखराओल गेल छै मने पाग दऽ कऽ..।

जे किछु हो फेस्टीभलसँ जेकीक उद्भाव सेहो होगत छै। आर ई नै पूछर जे कोना ? ईहो नै कहर जे घाटै होग छै। सरकार ई तँ रिजनेस छिऐ लाभ आ लोकसान तँ होगते बहतै। ऐ फेस्टीभलमे घाटा तँ ओगमे लफा। ई सभ चलिते बहै छै। जेना मोराँगल कम्पनी सभहँक हिसाब चार्ज बहै छै तेनाहिते फेस्टीभल आयोजक सभहँक हिसाब लाभ छै। किनको रेंटा तँ किनको रेंटीक रियाह भऽ जागत छनि। किनको रँचाक एडमीशन तँ किनको कनियाकेँ नौकरी। ई सभ हिसाब लाभ छै। दहेजमे 10लाख दर्रऽ पड़तनि आ ऐ आयोजनक मार्फत 8 लाखमे भऽ गेलै आ तै लेल जँ 50 हजार घाटै भेलै तँ कोन दिक्कत। 1.50 लाख रुपैया तैयो लफा छै। हिसाब लाभ जकाँ हिसाब एजेंडा सेहो बहत छै। परका रेंर हम पत्ता गोल केने छल आर तँ हमरे हाथमे आयोजन अछि, हमहूँ गोल कऽ देरेँ एकरा। किनको एजेंडा छनि जे ऐ ग्रुपमे हमरा मोजर नै अछि तँए ओग ग्रुपमे चलि जाग।

ऐ लिटे.फेस्टमे रँड़का रँड़का लमूना सभ व्याख्यान दै छथि। एकटा महान लोक जे आली हतरा देरँऽमे रँहाद्र छथि ओ अपन जन्मसँ पहिलेसँ घोषित आरि बहल छथि जे --"आर मैथिली मरि जाएत.."--"आर मैथिली

मरि जाएत.."--"आर मैथिली मरि जाएत.." । से ऐ निष्ठ.फेस्ष्ठमे रजना जे --"आर मैथिली नै मरत.." । ओना ओ स्वकाएल नै छै जे मंच प्रेत्ठलापर लोक सापेक्षी कोना होगत छै । ओना दुनियाँमे रदमाशक कमी नै छै । फेसरुकपर एकटा रदमाश लिखलकै छै आर अड्ढक स्थानपर सेहो फेस्ष्ठी हेराक चाही की उपरोक्त फतरा देनिहारक फतरा आरि गेल जे---"एक दिस मैथिली मररा नेल अछि, आ दोसर दिस महोसेर पर महोसेर । " तकर राद ओ रदमाश ह्नकासँ पूछि रैसल जे --" अपने जखन ओग फेस्ष्ठीमे रहिऐ तखन मैथिली जिंदा छलै की ?

फतरा देनिहारक गोल छला..... ।

आ एहले-एहले र्याख्यान सभहँक संग निष्ठ.फेस्ष्ठ खमे भ२ जागत अछि क्षदा जेना राठ़ि गेलाक राद कादो, गंध आ नष्ठप्राय जीरनकें आगू रठ़रामे लागि जागए तेनाहिते ऐ रेकुक चुकल आगिला रेर शामिल हेराक चक्करमे लागि जागत छथि आ जलिका ऐ रेर हाथ लगलनि सेहो अगिला रेर कंष्ठीन्यू करराक जोगाड़मे लागि जागत छथि । क्षदा फेस्ष्ठीभलक ऐ भागम-भगमे निष्ठरेचर हरेक रेर थक्कचागत रहल अछि ।

<u>*र्यंग निरंध*- **"प्र.म"**</u>

जेना जीर-
जंत्तुक अलेक योनि होगत छै । तेनाहिते मंत्री-

संत्रीक सेहो अनेक योनि होइत छै। मनुख सेहो जन्म आ मरणक चक्रमे फँसैत अछि तँ मंत्री सभक्का रन आ बिजारन केर चक्रमे। जेना मनुखक रहैत बास नाम होइत छै तेनाहिते मंत्रीक सेहो रहैत नाम होइत छै। किछु नाम काजक आधारपर होइत छै तँकिछु शारीरिक लक्षणपर तँ किछु नाम किछुपर। प्राचीन कालमे जेना-

जेना संस्कृत पसरैत गेल तेनाहिते-

तेनाहिते ओकरा सम्हारब कठिन भऽ गेल। ठीक ते हलेहालति मंत्री-संत्रीक नामावलीक भऽ गेल अछि।

प्राचीन कालमे पाणिनी सूत्र रूपमे संस्कृतकेँ बान्हि दे ला तेनहिते आधुनिक कालमे हम अपनाकेँ लघ पाणिनी मानि आग-कान्हि मंत्री-

संत्रीक नामावली प्रस्तुतकेलहुँ। आरो चूँकि एखनुक समय मे केकरो लग फुरसति नै छै जे ओ सूत्रक टीका-भाष्य करत। तँए एँठाम हम अपने टीका ओ भाष्य प्रस्तुत कऽ रहल छी(ओना सूत्र भाष्यमे रहैत बास के छैँगरी छूटि जाएत जेना प्रमेह मंत्री, प्रसिद्ध मंत्री, प्रबंध मंत्री आदि तँए आरो हम अति महत्वपूर्ण नामावली सभहँक दर्शनकरारी....) ---

1) दिनक गरीरो आ बात्तक धनिक जकर असीमित प्रर चनसँ तृप्त होइत छथि, अथरा खाली पेटे जकर पर म पवित्र शब्द, धात्तु, अलंकार आदिसँ भरि जाएअथरा, जकर मूँहक शब्दसँ सभ समस्याक समाधान भऽ जाए से प्ररचन मंत्री भेल।

2) जे लोक समाजक नामपर अपन ओ अपन गोंति या आदिक विकास करए, अथवा जकर शासन कालमे समाजक विकास ओ प्रगति रुकि जाए अथवाद्‌बाचारी स भरँक प्रगति ह्अए से प्रगति मंत्री छथि।

3) ओहन लोक जे अपन प्रतिमा मूर्तिकेँ चौंग-चॅगैचा, चौबाहा, आदिपर लगाबैथि। अथवा, ओहन लो क जे समाजक विकासकेँ नकाबि प्रतिमा आदिक निर्मा णपरव्यय करए से प्रतिमा मंत्री भेल।

4) प्रति शब्दसँ सजल आन शब्दक मानिक सेहो मंत्रीक कारिन होएत छथि जेना जे लोक छाँह जकाँ म्ह ख्यमंत्री पदक मर्यादा तेयागि कोनो घरा लड्ंकीक छाँ हजकाँ जासूसी करबैथि से प्रतिछाया मंत्री छथि। जे लोक सदिखन प्रतिवादे टा करइ अपन वा अपन लो कक विकास करथि से प्रतिवाद मंत्री छथि, प्रतिबोधमं त्री सेहो कहि सकै छिऐ करहॉक लेल प्रतिक्रिया मंत्री सेहो कहि सकै छिऐ। जे लोक आनो प्रतिशोध लेल वैसल रहथि से प्रतिशोध मंत्री छथि, अथवापहिन्व क सोधल पद ओ खजानाकेँ फेरसँ सोधि लेथि से प्र तिशोध मंत्री छथि। ऐ खंडमे वहुत बात संभावना छै जेना प्रतिदेह मंत्री, प्रतिदान मंत्री, प्रतिदिन मंत्री, प्रतिवास मंत्री आदि-आदि। ऐठाम सभहँक भाष्य संभव नै। ओना ऐ खं डक सभसँ शक्तिशाली "प्रतिफल मंत्री" छथि। भोटक विजलैक वाद जनताकेँ सेहो आसत्ता-विपक्षीकेँ सेहो सभकेँ अपन-अपन कर्मक प्रतिफल भेटै जाएत छै। किएो ऐ मंत्रीक प्रकोपसँ वॅचि नै पाबैए आ जे बॅचि जाएए

तकवा नेन तँ भगरान 5 रॅर्ख देने छथिन। ऐ खंड मे प्रतिरिँरॅ नामक मंत्री पद सेहो महत्वपूर्ण अछि। जे नोक च्नारसँ पहिने आ च्नारक रॅाद रिँरॅ निर्धारिण मे निपुण छथि से ऐ मंत्रीपदक अधिकारी छथि।

6) जे नोक रिदेशी भ्रमण क२ खानी प्रपोज करथि आ देशकेँ विजनेंट स्वन्ना भेटै से प्रपोज मंत्री रॅनि सकै छथि। एकरा प्रस्तार मंत्री कहि क२ भारतीयक रर्णक२ सकै छी।

7) नोक सभा ओ रिधान सभामे जे उँत्तर देरॅाक रॅ दना जे जनतासँ प्रश्न पूछथि आ जनताक मूँह रॅंध क २ देथि से प्रश्न मंत्री छथि।

8) जे नोक जनताक रीच योजना सभहँक नाभ प्र साद रूपे रॅाँटि सकथि आ अंतमे अपने ओकर पूर्ण भोग करथि से प्रसाद मंत्री छथि।

9) जे खानी प्रथम-प्रथम मने गतिहासमे अपना-आपकेँ पहिन घोषित कर२ से प्रथम मंत्री रॅनि सकै ए। ओना ऐ मंत्री पद नेन कम्पीटीशन रॅह्त कड़गर छै आऐ नेन रॅह्त रास कोंचिग सेन्टर सेहो खुनन छै। रॅह्त रास नोक ऐमे सफन होगए न्दा जे पहिनेसँ साहित्यकार अछि से ऐ मंत्री पदककेँ एकै रॅवक परीक्षामेपारि नैए।

तँग सभ क्षेत्रक अनारे साहित्यमे ऐ मंत्री पदक रॅह् त डिमांड छै। एकटा खिस्सा निअ-
- एकटा गाम रहै जैमे सभ साहित्यकारे रहै। मर्दसँ जनानी धरि सभसाहित्यकार। रॅचासँ रॅुढ़रॅा धरि सभ

किछो साहित्यकार। ओहि गाममे सभ कम्पीटीशन लेल
 मरै। ओहि गाममे किछो लोकनो कहियो 3 रुपैए
भोरसँ पहिने दिसामैदान नै गेल रहै... रस एकटा ब्र्
ठ़ड़ा चारि दिन उपास कऽ कऽ पाँचम दिन भुज्जा
फाँकि लेलक। आ दू रुपैए लोटा लऽ कऽ रिदा भऽ
 गेल। भोरे–
भोर सौंसेहल्ला भऽ गेलै जे ऐ गामक इतिहासमे
हल्लाँ महाकवि पहिल रहैब दू रुपैए दिसा–
मैदान गेला।

माने–
दिनहानमे एकटा संगोष्ठी भेल जकरा कहल गेल जे
 मैथिलीक इतिहासमे पहिल रहैब "सेरु संगोष्ठी" भेल
 अछि। हुनके मोतारिक ऐ संगोष्ठीमे भाग लेनिहार
सभ प्रतिभागी कहियो सेरु नै देखने रहथिन। स
भकेँ सेरु देखाओल गेलै। रुताएल गेलै जे सेरुप
र छूरी कोना चलाओल जाइत छै। कोना फाँक काटै
ल जाइतछै। फेर हुनके मोतारिक प्रतिभागी लोक
नि पहिल–
पहिल रहैब सेरु खेलथि। एहन– एहन रुत्त उदाहर
ण अछि। एकटा लोकक ओ रहैमारी तँ रुत्त उपर च
नि गेलछनि। हुनका ऑंटरनेटपर पहिल हेराक रहैमा
री छनि। आँखिक सोझा देल सभ सबूतकेँ ओ गप्पार
 कऽ दै छथि। हुनका मोतारिक ओहि समयमे हम
ओ नै देखनेरहिऐ तँए ओ पहिल नै हएत। आरु हु
नका के कहतनि जे सरकार ओ अहाँक आँखि आ दि
मागक कमजोरी अछि। अस्तु किछु गोटैके ओहो दा
री करै छथि जेराजकमल चौधरीकेँ पहिने–
पहिल हमही दारु पिएनिऐ। किछो ओहो कहै छथि

জে প্রা. হবিমোহন ঝাকেঁ পহিনে–
পহিন হমহী পেশোরঁ কবৈত দেখনিঐ খা তখনে পহিন রেঁব কহিনিঐ জে ঙা রঁচা খাগৃ রঁঠ়ত। ঙা পহিন হেরঁাক চক্কবে তেহন ছৈ জে একষ্টা রাঁনক 2009মে রঁ নাএন রঁ্নাগকেঁ ডী–
একিষ্টভেষ্ট কঽ কঽ ঘোষণা কেনা জে হম2007মে রঁ্নাগ রঁনেনে বহী। ঔ মহবাজ জঁ রঁনেনে বহী তঁ ক মসঁ কম নোককেঁ দেখরঁাক নেন নিংক তঁ ছোড়া দি তিঐ নে। কতেক কদ্রু ওনা ষ্টষ্টকা–
ষ্টষ্টকী এখনেপতা চনন খছি জে একষ্টা যরা সাহিত্যকাব ঘোষণা কেনা খছি জে মৈথিনী সাহিত্যমে পহিনে–
পহিন হমহী খঁডা দেনিঐ।

হেরঁাক নেন তঁ খাবো ভঽ সকৈ ছথি ঝদা জে ঐ স ভহঁক জে প্রধান গোথি সে................. ঙাগো নিখনাগ জরুবী ছৈ কী ?


डॉ. ऋजीत मिश्रे

<u>ऋर्पण-तर्पण-समर्पण</u>

<u>करिचूडामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'</u>क "हम जेहेँ ऋसेस्सव भोव, बंगि कै ठोव, पहिवि कै काड़ ा, ऋनकाय ऋनाऋन छाड़ ा"सन-सन कतेको मनोवम पद मिथिनाक बग-बगमे रँसन ऋछि, रँसन ऋछि हुनक नाना नाम साहित्, रँसन ऋछि जनिक मनमोहक काया-छाया मैथिन जन-जनकेव ह्रदयमे- ओहि प्वण्यामोकेँ शत-शत नमन कवैत सादव समर्पित ग्रा शर्द्ध-प्वष्प...

प ल्डित केव जे पल्डित रँनि-रँनि, कएन मैथिनी श्रृङ्गाव,

का मना जनिकव सदा, मैथिनीक हो जय-जयकाव ।

शी तनता जे पसावन सरँतवि, मधुपक कएन ऋंकाव,

का वीगव तँ बहथि तेहन जे, साधन साहित्

ভবমাব।
ন্ যাসী ৰঁনি জে ননিত গীতকেব, ৰঁনি গেনা কণ্ঠহাব,
ত এঁ তঁ খাগও পূজিত ছথি ও, সভ ঘবকেব চিনৰাঁব।

মি সবীসন <u>বাধা-রিবহ</u>, <u>মধ্প</u>
<u>সপ্তশেতী</u> খা <u>দ্বাদশী</u> <u>পচমেব,</u>
শ্রে হ্মা ভার জনিকা প্রতি সৰঁতবি, <u>ঋংকাব</u> <u>ঠ্ঠকা</u>
<u>জিনেৰী</u>কেব।

ম স্কঁন গীত স্বনাওন জখনে, শ্রোতা তখনে ধএন পঙোড়ু,
ধ্ নী বমাকেঁ সাধন ধ্ন জে, সভহিঁ জনা ভেনা চকরিঁদোব।
প ঠ্ ছনাহে খপন কনামে, কএননি এহন স্বন্দব সঙ্গীব,
জী রন সদা সাহিহ সমর্পিত, সদা মাঁ মৈথিনীকেব
কোব।

কেঁ ড় । ৰঁনি গেন জনিক বচনাসভ, বচন সাহিহ পূবজোব।

শ ছঁ জনিক ঘব কএনক জন-জন, মোহি

नेनक <u>ड्डतहब,</u>
त गमा जनिका चाग़ी ने कोनो, ड्डथि मात्र मैथिन खेतहब।

शी ड्ढं-शीड्ढंमे मैथिनी सिबजथि, मात्र <u>ब्रॅान ब्रॅम</u> हब-हब,
त बा-ङंपबी जनिक बचनासभ, तेँ तँ सजथि ओ घब-घब।

न ख-शिख ब्रूप सिबजन जे मैथिनी, कएननि चह्दिस चमकोब।
म कबन्द जकब चह्दिस पसबन ख्रड्डि, ड्डिड़ा थ्राएन सौसेँ कचनाब।
न मन कबी ओहि प्ब्ण्य धबाकेँ, जतए मध्पकेब सबॅतबि म्नंकाब। ।

नोटः बेखाङ्कित शीड्ढं ह्नक ख्रमूल्य बचना थ्रा साहिह्यिक-थ्रुति थिक, तँ 'कैँड़ा' (plumb-rule of mason)कहन जागत ड्डैक साह्नमे नागन काठीकेँ।

<u>फाग्ननान साह्</u>

<u>मानव जीरनमे नाबी स्रब्रूपक गबि मा</u>

ও হমব মাগযক সানি ধ্যক বাঁত ছী। হে মাগ ত্থহাঁক সানি ধ্য পারি হম জানি সকনৌ জে নাবী ব্রহ্মেরি ত্থা ছী। শ্রেধা ছী। কনা, মমতা, শানতি , দযা সংগে পরি ত্রতা সেহো ছী। ত্থহাঁ সভ্ঠা ছী জে সংসাবমে সর্বশ্রেষ্ঠক দৃষ্টি গোচব হোগত ত্থছি । এতরেঁ নৈ নাবী কামধেনু ত্থন্নপূর্ণা সি হ্মী-বি হ্মী সেহো ছী। নাবী মানর প্রাণীক সমস্ত ত্থভার কষ্ট ত্থা সংকটসঁ বাঁহব বথৈক সমযানুসাব ত্থপন স্বরূপ বঁদনি -বঁদনি কঽ নি ষ্ঠাপূর্বক সামর্থ্যরাণ হোগত ত্থছি । জৌঁ হ্নক শ্রদ্ধা-শকতি ত্থা ক্ষমতাকেঁ চি ন্হন জাএ, মানন জাএ তঁ সমস্ত রি শ্ব ভবি ক কণ-কণমে স্বর্গীয স্বরূপ বঁহান কঽ সকৈত ছথি ।

মাএ ত্থহাঁক সি নেহ পারি কঽ হমবা ও বোঁধ ভেন জে নাবী সনাতন শকতি ছী। ত্থাদি কানসঁ সমাজি ক দাযি ত্বরকেঁ ত্থপন কান্হপব উঠৌনে ত্থারি বহনী ত্থছি । জৌঁ ও ভাব প্রকৃথক কন্হাপব দঽ দেন বহৈত তঁ কহি যা নে ডগমগা গেন বহৈত। কি ন্তু রি শান ভরনক নীবঁ জকাঁ ওতরেঁ কর্তর্যনি ষ্ঠ মনোযোগ, সংতোষ, সংগমকেঁ প্রসন্নতাপূর্বক ত্থখনো ঘব চনরৈত চনি ত্থারি বহনী ত্থছি । ও তঁ মানরীয মূনক সাকাব প্রতি মা ছী।

হে জগত জননী ত্থহাঁক কৃপাসঁ হম নিম্ন ঋষি বাণীকেঁ ত্থন্ত:করণমে বঁসৌনে বহী ছী। কহেন গেন ত্থছি-

রি ত্থা সমস্তাতর দেরী ভেদা: ।
সত্রি যা: সমস্তা সকনা জগত্স। ।

ঔরযৈকযা পূবি তমস্ৰঁএতত্ কাতে।
সত্তিত : স্তর্ঁযপবা পবোকঔ া। ।
হে দেরী সমস্ত সংসাবক সভ রি ঘ্যা খহীসঁ নি কনন খছি । সভ স্ত্রী খহীক স্ৰৰূপ ছী। সমস্ত রি শ্বি এক খহীসঁ প্ববি ত খছি । খহাঁক সত্তুতী কোন ৰূপে কএন জাএ, খন্ত:কবণমে ঐ ভারক ঘনীভূত খন্বভূতি সঁ প্রেবি ত ভ২ হম সভ খহাঁক সন্তান... ।
নাস্তি মাতৃসমা ছাযা
নাস্তি মাতৃসমা গতি :।
নাস্তি মাতৃসমা ত্রাণ:
নাস্তি মাতৃসমা প্রি যা।
মাএক সমান কোনো ছাযা নৈ খছি । মাএক সমান কোনো সহাবা নৈ খছি । মাএক সদৃশী কোনো বক্ষক নৈ খছি । মাএক সদৃশী কোনো প্রি য রস্তু নৈ খছি ।
সৃষ্টি ক বচনা খা ওকব পানন সেহো খহাঁক কার্য বহন খছি । সন্তানো নির্মাণমে মাএক জে ভূমি কা বহৈত বহন সে পি তাসঁ হজাবো গ্বণা খধি ক হোগত দেখন জাগত খছি ।
দেরী খশি জ প্বত্র কাদি রানকেঁ খপনা সংবক্ষণ সান্ধি যমে বখি ক২ শি ক্ষা দেনখি ন। হ্নকা রি দ্বান রঁনেৰাক খতি বি কতো যোগয রি ঘ্যামে প্রকাণ্ড রি দ্বতা সেহো হাঁসি ন ভেন। মর্মক্ত ঋৃষি পংচশি খ রি ষযপব খনেকো গংথ নি খননি তগমে স্ৰযং স্ৰীকাব কেনে ছথি জে ঔা জ্ঞান মাগ স্বনভাসঁ ভেটৈন খছি ।
রনরাসী শিক্ষন্তনা খপন প্বত্র ভবত জি নকা নাওঁপব ঐ দেশীক নাখ া ভাবতরর্ষ পড়ন খছি ।

ह्नक पानन–पाषेण संगे प्रक्रमी रॅनेरॅाक श्रेय माएक थ्वरि बन थ्छि । ভবত মাগক সি নেহ পারি রॅचपनेसँ शैवक रॅच्चाक संग खेनैमे मस्त बहन।

नि ष्ठा थ्वा नगनक प्रति क ध्रुरक पानन–पोषण ह्नक माग स्वनीति तपश्विनी रनमे बहि कঽ केने छेनी। थ्वपन शि क्षण द्वावा संस्कावि त कঽ रॅचपनेमे जीরनक বহস্যক রॅाध कবা দেনখি হি ন। তগসঁ ধ্রুব প্রমাতৃমাক থন্বভূ তকঁ সাক্ষাত দি গ্দর্শন প্রাপ্ত কঽ নেনা।

সতযনি ষ্ঠ সীতা রনরাসি নী থ্বপন জীরনোপবান্ত সাতি তৃরক ব্রর্ত ধাবণ কবৈত পতি ব্রতাক নির্বাহণ কবৈত থভাবগ্রস্ত সথি তি মে বহি তো নর–ক্ষশিক পানন–পোষণ রানমি কী থাশ্রম বহি কেননি থা নর–ক্ষশিকঁ এহেন যোগ্য সামর্থ পুরুষার্থ রॅनौননি জে থজয হন্বমান, তথা নক্ষমণ জৈসন রীব মহাপুরুষকঁ নর–ক্ষশিক সোন্মহামে পবাজি ত হ্থ পড়ননি ।

ত্তান রি ত্তান থা থাধ্যাতৃমি ক প্রতি ভারক ক্ষেত্রমে দেখন গেন কি ঢেব বাস উঁদাহবণক পাত্র সোন্মামে থারি জাগএ। জেনা মহর্ষি পুনোতৃমাক পুত্রী শচী, মহর্ষি রশি ষ্ঠক থাশ্রমমে বহি কঽ ত্তান–রি ত্তানক প্রবীণতা হাঁসি ন কেনে ছেনী। শচীকঁ সাধনাক প্রতি ভাসঁ প্রভারি ত ভঽ কঽ দেরবাজ গন্দ্র হ্নকা মংগরৈনে পুনোতৃমাক দ্থাবপব স্বযং পহুঁচনা। তথা শচী গন্দ্রানী ভঽ গন্দ্রপুবীক মর্যাদাকঁ রॅঢ়ৌনখি ন।

মন্ব একবৈব রॅজপেয যত্ত কেনা। তঁ কোনো যোগ্য পুবোহি ত নৈ মি ন সকননি । তখনি মন্ব থপন পুত্রী গনাকঁ যোগ্য সমন্মি যত্তাচার্য নি যুক্ত কেননি

ঋা ঋন্বষ্ঠান সমপন্ন কৰৌন গেন। গনা ঋপন পি তাক মযদাকেঁ ঋাগূ ৰঁঠ় নৈনি ।

ঋাদি শংকবাচার্য ঋা ম᳚ডন মি শ্রেক শাস্ত্রার্থমে ধর্মপনৌ ভাবতী ঋপন রি দ্বতাসঁ প্রভারি ত কবি কঽ সবস্রতীক ঙঁপমা প্রাপ্ত কঽ চ্কন ছথি । তথা পতি ম᳚ডন মি শ্রেক রি জযী হেৰোক গৌবর প্রাপ্ত কবা চ্কন ছথি ।

ভাবতক প্রসি দ্ধ জোতি ষ রি দ্বন ভাস্কবাচার্য দ্ঋাবা বচি ত সি দ্ধান্ত সি রোমণি প্ৰস্তকেঁ ঙঁত্তার্ধ হ্নক নড়়কী নি না দ্ঋাবা নি খন গেন ছন। নি না ঋপন পি তাক মযদাকেঁ ৰঁঠ়ৰৈমে সদি খন তত্পব বহৈত ছেনী।

মহবাজা জনকক দবৰাবমে মহারি দ্ষী গাংগ্রীকেঁ ঋা মহর্ষি যাজ্ঞবল্যকাযক শাস্ত্রার্থ প্রসি দ্ধ ঋছি । ওহী শাস্তার্থমে যাজ্ঞবককযকেঁ গার্গীক প᳚ডি ত ঋা ৰৈদ্ষ্যকেঁ নোহা মানএ পড়়ন ঋছি । এহেন ৰহ্তো সমত্তল্য নাবী ছথি জেনা ঙঁদনিংকা, রি ধ্যগাথা, ঋন্বস্বগযা, গৌতমীযমী, রি হ্না ঋাদি ঋনেক রি দ্ষীগণ প্রখ্যাত ঋছি ।

জ্ঞান, রি জ্ঞানক ক্ষেত্রমে রি শ্বেক ঋতি বি কত শৌর্য, সাহস এৱং পবাক্রমীমে ভাবতীয নাবীকেঁ ৰঁঠ়ন–চঠ়ন দেখন গেন ঋছি । ঋত: ঋৱনা কহৰামে হাস্যপদ ৰ্মনা জা বহন ঋছি । ঙঁদাহবণ স্বরূপ তঁ ঋনেকো ঋছি জেনা শি রক ধনুষক শর্ত বাজা জনককেঁ সীতা স্বযংবমে বাখএ পড়়ি গেন জে ঐ ধনুষক তোড়়ি নি হাবেসঁ সীতাক রিঁ ঋাহ কবৱ। ঙা তঁ সীতাক পবাক্রমক ঝনক ছন।

দশবথক যুদ্ধমে কেকযী সার্থিক ভাব নিরাহি কবৈত

अपना पति केँ संकटसँ प्राण बँचौने छेली।

कृष्णार्जुन युद्धमे अर्जुनक संग रथ संचालन द्रोपदी बॅड़ ी कुशलताक संग निर्वाह केने छेलखि न।

अर्थशास्त्रमे सेहो धनुषधारी महि लाक उल्लेख भारि बहल अछि । संगे ओहो वर्णन भारि बहल अछि जे बेटी-बेटीकेँ समान शि क्षा देल जाइत छल। ओ जागरूकता भार्र समाजमे भारि बहल अछि ।

धर्म ओर समाज संस्कृति क सेवामे नारी जाति बॅढ़ि -चढ़ि कऽ बनि दान प्रस्तुतक उदाहरण अछि ।

आचार्य बृहस्पति क पुत्री देवीभूति ओर भारतवर्षक कन्या बोमशा अपन पि ता तथा पति सँ आज्ञा प्राप्त कऽ रि भि न्न क्षेत्रमे धर्म प्रचार केने छेली। तथा समाज कल्याणक कार्यमे दक्षता प्राप्त केने छेली।

अत्रुण ऋषि क कन्या एकटा गुरुकुल खोलि छात्र-छात्राक समान रूपे प्रवेशक अधि कार दऽ शि क्षा दान करबाक बॅवस्था केने छेली। आगक युगमे नारी रूपमे मदर टेरेसा भारतीय नारीकेँ गौरवान्वित सेहो केनी अछि ।

नेतृत्वक क्षेत्रमे सेहो महि लाक भूमि का अग्रसर बहल अछि । इन्द्रकेँ दि शा निर्देश इन्द्राणीसँ प्राप्त होइत बहल छल।

धृतराष्ट्र तँ राज्य संचालनमे असमर्थ छला। अही कार्यकेँ हुनक पत्नी गंधारी कऽ बहल छेली । ऐति हासि क तथ्यकेँ देखलासँ स्पष्ट होइत अछि जे आग धरि राजश्री रानी पद्मावती, लक्ष्मी बाइ,

খহেলো, সরোজনী নাগড়ূ তথা কস্তুবরা গাঁধী জকাঁ খনগি নি ত উঁদাহবণ খছি ।

রাঁত প্রতি ভা প্রমাণি ত কবরাঁক তথা স্বয়ং রি কসি ত হেরাঁক তক সীমি ত নৈ খছি । প্রতি ভাসঁ কহী খধি ক হ্নক তি যাগক খছি জে খসীমি ত খছি । জেতএ স্বয়ং পদামে বহি কহ খপন পতি ক সমাজ নিমাণি খা খাত্ম নিণাণিমে সহাযতা প্রদান কবৈত বহন খছি ।

এতেরেঁ নৈ, ধর্মপনীক ৰূপমে যোগদান প্রস্তুত কবরাঁমে সেহো মর্যাদাক নিরহি কবৈত বহন খছি । জেনা মহান রি দ্ষী রি ধোতমাক রিঁ খাহ খশি ক্ষি ত কানী দাসসঁ ভেন। রি ধোতমা এতেক রি দ্বান ছেনী জে রিঁ খাহক নেন শাস্ত্রার্থমে শর্ত বাখন গেন। খনেকো রি দ্বান ওগঠামসঁ হাবি মানৈত খাপস ভহ গেন। খন্তমে, ক্ষনসঁ মূঢ় কানী দাসক সংগ হ্নক রিঁ খাহ করৌন গেন। রি ধোতমাকেঁ জবঁ ঐ রাঁতক পতা চননি তঁ পতি কানী দাসকেঁ উঁত্তেজি ত কবি কহ জ্ঞানক প্রতি নগন পৈদা কেননি খা হ্নকা খধ্যযনক ৰূচি জগেননি । ফনস্বৰূপ মূঢ় মতি কানী দাস খখনি মহা করি কানীদাসক ৰূপমে রি খযাত ছথি ।

ঐ তবহেঁ তুনসী দাসক পনী বনোরনী খপন স্বখ-স্বরি ধাকেঁ তি নাঁজনি দৈত খপন পতি কেঁ কাম্কতাসঁ গশ্বিবভকতি ক ওব মোড়ৈত বামভকত মহা নেখক রঁনৌনখি ন। গ সত্ সাহস বনোরনীকেঁ ছন জে ছদ্র মানরসঁ তুনসী দাস জকাঁ সংত খা বামচবি ত মানস মহা গ্রংথক বচি যেতা রঁনৌননি । স্বয়ং বনোরনী উঁচ্চ কোটি ক সাহি ত্যকাব সেহো ছেনী।

मैत्रेयी महर्षि जाज्ञवल्क्यक पत्नी छेली। ओ कोनो संसारिक सुखक लालसासँ नै जुड़ल छेली। आपि तु ओ आत्माक साधना लेल हुनक सहधर्मिणी बनली। संसारिक सुखक इच्छाक ओ त्याग कऽ आत्मज्ञानक प्राप्ति हेतु हुनक संग देली।

ऐ तरहेँ राजकुमारी सुकन्या आन्हर वृद्ध च्यवन महर्षि केर एकमात्र आश्रय बनि हुनक सेवा कएलनि जे हुनक तपस्या आ शोधकार्य हेतु आवश्यक साधन जुटाबैमे सहायता प्रदान कऽ सकलनि।

राजा अश्वपति क पुत्री सावित्री, अति रूपवती राजकुमारी सावित्री एक वनवासी आ निर्धन सत्यवानसँ मात्र ऐ उद्देश्यसँ विवाह कएलनि जे हुनक वनौषधि शोधमे सहायक भऽ कऽ मानव मंगल हेतु महत्वपूर्ण योगदान करि सकलनि।

ऐ तरहेँ असंख्य प्रमाण अछि जइसँ सिद्ध होइए जे प्राचीन कालसँ आदर्शवादी नारीमे अपन प्रति भाव, क्षमता आ योग्यताक लाभ समाजकेँ देबामे अपन योगदान दैत मानव विकासमे मुख्य भूमिका निभाबैत रहल अछि। जरूरतो तँ बुझाइत अछि।

नारी नव केर शक्ती अछि
सृष्टि केर अभिव्यक्ति
नारी बिना शिव शव सदृश
कण-कणक शक्ति केर भक्ति।

हमर समाजिक जीवन दाम्पत्य जीवनसँ आरम्भ होइत अछि। पति-पत्नि क बीच जतेक प्रेम, सौजन्य, आत्म भाव, आत्म समर्पण आदि व्यवहारीक भाव रहत ओतबे मानवीय वा गृहस्थी जीवनमे आनन्दक

প্রাপতি হএত। ওতরেঁ খন্নপাতমে শ্রী সমৃদ্ধ এরং স্বখ–শানতি ভেটৈত। মাএক স্বরূপ ধানণ কবৈত গংগা সদৃশী ভঽ জাগত খছি ।

মাগক ডাঁটৈ

রাঁত রঁচপনক ছী। হমব মাএ সদি খন হমবা নজবি চঠ়ানে বহৈ ছেনী। পঠ়াগ খাতি ব সদি খন সমঝরৈঁত বহৈ ছেনী, স্কূনক সমৈমে খি যা–পি যা কঽ সহি যাবৈত–প্বচকাবৈত রি ছ্যানয পঠরৈঁত ছেনী। ক্ষদা হম তঁ রেঁসী দি ন খদহে রাঁটৈমে সংগত্তবি যাক সংগ খেনৈত বহি জাগত বহী। জখনি রি ছ্যানযক ছঙ্গীক সমএ হোগ ছন তখনি ঝটৈদনি ঘব খাপস খারিঁ জাগ ছেনৌং। হমব মাএ নীক–নি ক্ষত খাগনে দঽ দগ ছেনী। ক্ষদা হম তঁ রি ছ্যানযক চৌকৈঠো তক নে জাগ ছেনৌং। তঁএ, মন তঁ গ্বদগ্বদাগত বহৈ ছন।

মাএ জখনি খান ছাত্র সভসঁ প্বছৈ ছেনখি ন হমব হান–চান তঁ সভঠৗ পোন খ্নি জাগ ছন। নৈ পঠ়রাঁ খাতি ব রহ্তো টৈঁটৈ–হটৈকাব কবৈত ন্নন্বখারৈঁত ছেনী। হম ক্ষঁহ নটৈকৌনে চ্প্পী সাধনে সজ্জনক স্বরূপ রঁনৌনে নি রিঁ ব–নি রিঁ ব তকৈত মাগক মমতা জগরৈঁত খপ্পন দোখ ছপরৈঁত সহ্নাগ রচন রঁজৈত বহৈ ছেনৌং। তেতরেঁ নৈ! পীটৈাগও তঁ খাগএ পড়ে ছন। পি তাজীক সেহো খা গ্বরুজীক তঁ খনগে। ক্ষদা হমবা তঁ মাগক ডাঁটৈ রঁড় খধনা জকাঁ নগৈ ছন। হমবা ঐ রাঁতক ভান থোড়ে ছন জে মাএ

পঠ়্ াগক মহত জনৈ ছথি ন তঁএ ডঁটৈ ছথি ন। জেনা–তেনা মৈথ্রি ক ধবি তঁ খারি গেনৌং হ্মদা পঠ়্ াগমে হম কেহেন ছেনৌং সে তঁ ব্ঁঝি এ গেন হএব়। পি তাজী সেহো হমব পঠ়্ াগ–নি খাগ খাতি ব চি ন্তি তে বহৈ ছনা।

পি তাজী সদি খন চি ন্তামে ড্মন বহৈ ছনা। এক দি ন দি নক দৌড়্ া পড়্ি গেনাসঁ সবস্থধাম চনি বসনা। খাব় হমবা রি ছ্যানয জেবাক সংগ ঘব পবহক পঠ়্ াগ সেহো বন্ন ভ২ গেন। চূকি ঘবোক কাজ–ভাব হমবেপব পড়্ি গেন। বোর্ড পবীক্ষামে সেহো ফেন ভ২ গেনৌং। মৈথ্রি ক পবীক্ষামে ফেন ভেনে নাগন কি সম্পূর্ণ জীরন দ্খে–দ্খমে রি তন। সংগী–সাথীক সেঝহা নজজি ত সেহো বহএ পড়্ত, ঙা সোচৈত মন পড়্ন মাগক ডাঁটৈ–ফটকাব। জখনি ও হমবা পঠ়্ াগ খাতি ব ডঁটৈ ছেনী তখনি হমব খন্তব খাত্মাসঁ খরাজ খাএন–

"খখনি রেব নৈ ভেন খছি , সমএ বঁচন খছি শেষ।"

খাব় হমবা পঠ়্ াগক জ্নূন সরাব ভ২ গেন। হম প্নন: মৈথ্রি কক ফার্ম দ্বাবা ভবৈত পঠ়্ াগ শ্বরু কেনৌং। মৈথ্রি ক পবীক্ষামে প্রথম স্থান কেনৌং। প্রথম স্থান পারি খাগূক পঠ়্ াগ জাবী বখনৌং। মাগক হ্নপা ভেন, সংগে খাসি বরাদ ভেটএ নগন। খাজূক দি ন সবকাবী সেরামে পদাধি কাবীক পদপব বহি সেরা দ২ বহন ছী। মাগক ডাঁটৈ, খসি বরাদমে বদনি গেন। হমব কামযারীক সভটৗ শ্রেয মাগক ছী। সংগে হমবা ঙা খন্বভর ভেন জে মাতা–পি তাক ডাঁটৈ–ফটকাব

ৰেঁজা নৈ গোগত খছি । কি এক তঁ মাগক ডাঁটমে ৰচ্চাক ভনাগক কামনা ন্বকাএন বহৈত খছি ।

খাত্ম নির্ভবতা নেন কোনো উঁমেব নৈ–

পছি না মহি না হম খপন মি ত্রসঁ মি নৰাক খা তব বাজস্থান গেন ছেনৌং। মি ত্রক ঘবক ৰগনমে একটা সাগঠ ৰৰ্খক মহি না ছন। জি নকব মাথ খঁচবসঁ ঝাঁপন ছন খা পত্থী মাবি জমীনপব ৰৈসন ছেনী। সহাযতা সমূহ জীবি কা প্রশি ক্ষণ প্রাপ্ত কবি কহ পাপড় ৰনৰৈত জীবনক খাত্ম নির্ভব ভহ খপন সহাযতা সমূহক মাধ্যমসঁ গামমে একটা পবি যোজনা চনা বহন ছেনী। পবি যোজনাক মাধ্যমসঁ গামক ৰহ্তো মহি না সভ খাত্ম নির্ভব প্রতি ভাবী প্রাপ্ত কেনে কম্প্যূটব, সৌব ঊর্জকি ক্ষেত্রমে সমপন্ন খ্শিহানী পকড়া কহ বখনে ছেনী। সংগে গামক ৰানক–ৰানি কা সেহো সভ ক্ষড় া–কড়কট খথৰা নকড় ীসঁ খেনৌনা ৰনেনাগ সীখ কহ কাৰি নেতাবি ফ ছন। হ্নকা সৰহক প্রতি ভা খা জীৰঠ দেখৈত ৰনৈ ছন।

দেখৈমে খাএন জে ঠনৈত উঁমেবক ঔবত সভ জে কম্প্যূটবপব ৰৈস খপন–খপন কাবোৰাবক নেখা–জোখা তৈযাব কবৰামে সেহো কাৰি নেতাবি ফ ছন। হমবা ঝাঁকৈত দেখি ও ঔবত ক্ষস্কবাগত কহনী–

"খন্দব খাৰি জাউঁ নে।"

হম খন্দব চনি গেনৌং। প্বছনি যনি –

“ঋহাঁ কী ক২ বহন ছী ? ”

রঁজনী–

“কম্প্যূটৈবপব নোটি শ রঁনা বহন ছী। হমব কাজ ঋছি গামমে জা নোক সভসঁ মি নি ক২ হ্নকব সরঁহক তকনি ফ ঋা স্বস্মার গকস্থা কবি ক২ কম্প্যূটৈবপব টৌগপ ক২ জীরি কা ঋধি কাবীকেঁ পঠা দেনাগ। ”

হম ঋাগূ প্বছনি যনি –

“ঔ কাজ ঋপনে কেতেক দি নসঁ কবৈ ছী ? ”

ও রঁজনী–

“কি ছএ সানসঁ ক২ বহন ছী। হম ঋনপঠ় ছেনৌঁ। ঔ কাজ কবৈনে পঠ়নাগ–নি খনাগ সীখনৌঁ। ঋারঁ হম ঔ–মেন কবরঁ। ”

ঔ কহৈত হমবা ধি যানকেঁ ঋপনা তবফ খিঁচৈত টৌগপ কবরাঁমে নগি গেনী। টৌগপ রিঁ নক্ষন দেরনাগবী নি পি মে স্বসজজি ত ছন, সজৌন ছন। গুা সাগঠ রঁর্থক মহি নাক তজ্বরাঁ দেখি হম চকি ত ভ২ গেনৌঁ। ঋারঁ হমব উঁত্স্বকতা ঋাগূ রঁঠ়ন নগন। রঁঠ় ৈত উঁত্স্বকতাক ঞমমে ফেব প্বছনি যনি –

“ঋাব কী সভ কবৈ ছী ? ”

ও রঁজনী–

“দূ সএ পচাস নড়কীকেঁ কম্প্যূটৈবক জ্ঞান জেতেক হমবা ঋছি ও সীখা চ্কন ছী। ”

হম ওা স্বনি খাবো চকি ত ভেলৌং। নজবি রঁগনক কোঠবীমে গেন। দেখনৌং একটৌ নরঘরতী কম্পযূটৈবপব খপন খাঁগূব দৌগা বহন খছি । ওগ নরঘরতী দি স হমব নজবি কেঁ দেখৈত প্বন: রঁজনী–

> “ও নরঘরতী জি নকা খহাঁ দেখৈ ছী, খনেক নর–নর নোককেঁ খার্ঁ হমবে জকাঁ কম্পযূটৈবক জানকাবী দৈত বোজগাব যোগয রঁনা বহন খছি ।”

হম একরেঁব ফেব চকি ত ভ২ গেনৌং। নাগন জে কি ছ কবরাঁক হেত্ত ওঁমেব কোনো রাঁধা নৈ হোগত সি বি ফ জি ত্তাসা চাহী ।

মদর্নী নাবী

মদর্নীক মতনর্ঁ হোগত খছি , নি ডব, সাহসী, স্বতংত্রতা র খাত্মনির্ভবতা। নাবী জেতেক খছি সর্ঁহক খন্দব ওা তাগত খছি , পবন্তু খগতা ঐ রাঁতক খছি জে নাবী সভ ওা রাঁতকেঁ সমনৌ খা সমন্নি কং রাঁহব নি কানৌ।

ওা কথা ছী একটৌ খর্র্ঁন–দ্র্র্ঁব গবীর্ঁ নাবীক। রর্ঁখ ২০১৩ তি থি স্বতংত্রতা দি বসক দি ন হবি প্বব ডীহ টৈনেক রূপনী দেবী, মধ্র্ঁনীসঁ কন্বখাহী জাগবানী পক্কী সড়কক কাতমে একটৌ ছোটৈ–ছীন চাহক দোকান খোনি খপন বোজগাবক শ্বরু কেনক। রূপনীকেঁ ওা দোকান খোনৈক প্রযোজন ঐ নেন পড়ন জে এক দি ন

ঋন্নক ঋভাবমে বাঁনে–বঁচ্চে ভূখনে সূতএ পড়ৈ। রি হান ভনে রূপনীক পতি ভোনা বোজী রাসতে গামক মানি ক হ্নৈনহ্নৈন ঠাকুবক হবেলীমে পহুঁচ মজদুবী কবএ নগন।

দোকান খোনৈসঁ পনবহ দি ন পহি নেক বাঁত ছী। রূপনী ঋপন পতি ক কমাএন রৌগন নবৈনে হ্নৈনহ্নৈন ঠাকুব হবেলীপব গেন। ভি নসবক ঋাঠ বজৈত বহৈ। রূপনীকেঁ দেখি তে ঠাকুব সাহিবঁ প্বছি বৈসন– "কেতএ এনেঁ রূপনী ?"

বাঁজনি –

"মানি ক, রৌগন নগনে।"

এতবেঁ বাঁত স্বনৈত হ্নৈনহ্নৈন বাঁবূ ভড়কি উঁঠনা। রূপনীকেঁ ফঙ্কাবৈত বঁজনা–

"ঋখনি তঁ ভোনবাঁ খেতমে পহুঁচবেঁ কএন ঋা তূঁ রৌগন নে চনি এনেঁ।"

রূপনী সকদম ভ২ ঠাঠ়ে ছন। ঋাকি প্বন: হ্নৈনহ্নৈন বঁজনা–

"খ্বপী নে, দববঁজ্জাক সভঙ্গৌ ঘাস উঁখাব তখনে রৌগন দেবৌ।"

ও বাঁত স্বনি তে রূপনীক ঋাগূ বাতি ক তবেগন সোন্নহামে ঋারি গেন। মাথপব হাথ দ২ সোচএ নগন। কী কৰুঁ, বাতি মে তঁ সব পবানী ভূখনে স্বতি বহনৌ। ঋখনি কী খাএত ঋা খাএবঁ। মানি কক বাঁত তঁ নি ঠ্ব হোগতে ঋছি। কমাএনো রৌগনপব ন্বনকাব স্বনৈএ পড়ৈ ছৈ। ঋাবঁ কী কববঁ! পেঙ্গমে

খন্ন নৈ, গামপব ৰ্চ্চা ৰাষ্টে তকৈত হএত জে মানি ক ঐঠামসঁ কি ছ খানত মাএ তঁ খাএৰ। ক্ষদা ঔ কোন ভগবানক চন্দ্র ছী। নৈ খাৰ ছুছ হাথে ঘব নৈ জাএৰ। সোচৈত ৰূপনী চষ্টে হৰেৰনীসঁ ধ্বি যাএনে পএবে ঘূমি ৰজাব পহুঁচন। ৰজাবক একটৌ কি বানা দোকানপব খাৰি দোকনদাবকেঁ কহনক–

"মানি ক, ঔ হমব নাকক ছোঁক বখি নি খ খা চাউঁব–খাঁটৌ দি খ।"

দোকনদাব ৰাজন–

"ভোনা হমব দূ দি ন কাজ কেনে ছন, জে ৰোঁগনো পছখাএন ছৈ। খহাঁ জে সমান নেৰ সে ৰাজূ দহ দগ ছী।"

ৰূপনী সোচৈত ৰাজনি –

"এক দি নক ৰোঁগনক চাউঁব–খাঁটৌ দহ দি খ খা এক দি নককেঁ চাহপতী–চীনী খা ব রিঁ স্কন্ট খা বো পনাষ্টি কক পচাসটৌ গি নাস দহ দি খ।"

দোকানদাব ৰাজন–

"পাহ্ন খৰৈঁ ছথি কী ?"

ৰূপনী–

"নৈ, চাহক দোকান খোনৰ।"

দোকানদাব চাহক দোকান খোনৈ জোকব সভ সমান দৈত সমঝৰৈঁত–ৰ্ঝৰৈঁত দোকান চনৰৈক সভ তবীকা ৰ্ঝা ৰূপনীকেঁ রি দা কেনক।

रूपनी घर अरि ते पहि ने खेनाग रॅना रॅान–रॅच्चाकेँ खि आ पति नेन खेनाग नः ठाकुर साहिरॅक खेत जा भोनोकेँ खि एनक। पछाति ओतएसँ घर आपस रि दा भेन। रॅाटमे अरॅैत रूपनीकेँ ठाकुर साहिरॅक मनि काना रॅात म्ड़म्ड़ ागत माथकेँ घ्ड़ा यरॅैत, पछाति रॅवहम स्थानमे रॅैसि दोकानक जगह टैहि या नेनक। टैहि यरि ते ओतए घर आरि पहि ने खेनाग खेनक।

दोसरे दि न रूपनी स्रतंत्रता दि रसक अरसवि पव चाहक दोकान खोनि अपन मधुर भाषाक सहयोगसँ चाह–रि स्फुट रॅैचए नगनी। अपन द्धनव संग साहसकेँ रॅटैवि पति केँ मजदूरी करैसँ मना करैत दोकानेपव काज करैक रॅोध देरॅए नगनी। भोना सेहो मानि क ठाकुरक ममकावकेँ मोन पड़ैत दोकानक काजमे जतनसँ नागि गेन।

रूपनी साने भवि मे काफी उँन्नति करैत दोकानक बंग–ढंग रॅदनि देनक ओर अपन पति भोनाकेँ मानि क कहि सम्रॅोधि त करैत चाहक दोकानसँ मि ठाग, जनपान आ भोजनक दोकान रॅना रूपनी अपन साहस आ मदनीक संग आत्म निर्भवताक पवि चए दैत स्रतंत्रताक जि नगी जीरि वहन अछि।

<u>आत्म निर्भवता नेन कोनो उँमेव नै</u>

पछि ना महि ना हम अपन मि त्रसँ मि नरॅाक खा तर बाजस्थान गेन छेनौं। मि त्रक घवक

রॅগনমে একটা সাগঠ রॅর্থক মহি না ছন। জি নকব মাথ খঁচবসঁ ঝাঁপিন ছন খা পথী মাবি জমীনপব রৈসন ছেনী। সহাযতা সমূহ জীরি কা প্রশি ক্ষণ প্রাপ্ত কবি কঽ পাপড় রॅনরৈত জীরনক খাত্ম নির্ভব ভঽ খপন সহাযতা সমূহক মাধ্যমসঁ গামমে একটা পবি যোজনা চনা বহন ছেনী। পবি যোজনাক মাধ্যমসঁ গামক রॅহ্তো মহি না সভ খাত্ম নির্ভব প্রতি ভারী প্রাপ্ত কেনে কম্প্যূটব, সৌব ঊর্জাকি ক্ষেত্রমে সমপন্ন খুশিহানী পকড়া কঽ বখনে ছেনী। সংগে গামক রॅানক-রॅানি কা সেহো সভ ফড়া- কড়কট খথরॅা নকড় ইসঁ খেনৌনা রॅনেনাগ সীখ কঽ কারি নেতাবি ফ ছন। হ্নকা সরॅহক প্রতি ভা খা জীরॅঠ দেখৈত রॅনৈ ছন।

দেখৈমে খাএন জে ঠনৈত উঁমেবক ঔবত সভ জে কম্প্যূটবপব রৈস খপন-খপন কারোরॅাবক নেখা-জোখা তৈযাব কবরॅামে সেহো কারি নেতাবি ফ ছন। হমবা ঝাঁকৈত দেখি ও ঔবত ঝ্স্ফবাগত কহনী-

"খন্দব খারি জাউ নে।"

হম খন্দব চনি গেনৌঁ। পুছনি যনি -

"খহাঁ কী কঽ বহন ছী?"

রॅজনী-

"কম্প্যূটবপব নোট্টি শ রॅনা বহন ছী। হমব কাজ খছি গামমে জা নোক সভসঁ মি নি কঽ হ্নকব সরॅহক তকনি ফ খা স্বন্মার গকঙ্খা কবি কঽ কম্প্যূটবপব টৌগপ কঽ জীরি কা খধি কারীকেঁ পঠা দেনাগ।"

হম খাগূ প্বছনি যনি –

“ঙা কাজ খপনে কেতেক দি নসঁ কবৈ ছী ? ”

ও বঁজনী–

“কি ছএ সানসঁ কঽ বহন ছী। হম খনপঠ় ছেনৌঁ। ঙা কাজ কবৈনে পঠ়নাগ–নি খনাগ সীখনৌঁ। খাবঁ হম ঙা–মেন কববঁ। ”

ঙা কহৈত হমবা ধি যানকেঁ খপনা তবফ খিঁচৈত টৗগপ কববাঁমে নগি গেনী। টৗগপ বিঁ নক্ষন দেৱনাগবী নি পি মে স্বসজজি ত ছন, সজৌন ছন। ঙা সাগঠ বঁর্থক মহি নাক তজ্‌ববাঁ দেখি হম চকি ত ভঽ গেনৌঁ। খাবঁ হমব উঁত্‌স্বকতা খাগূ বঁঠ়ন নগন। বঁঠ় ৈত উঁত্‌স্বকতাক ঞমমে ফেব প্বছনি যনি –

“খাব কী সভ কবৈ ছী ? ”

ও বঁজনী–

“দূ সএ পচাস নড়কীকেঁ কম্পযূটবক জ্ঞান জেতেক হমবা খছি ও সীখা চ্‌কন ছী। ”

হম ঙা স্বনি খাবো চকি ত ভেনৌঁ। নজবি বঁগনক কোঠবীমে গেন। দেখনৌঁ একটা নরহরতী কম্পযূটবপব খপন খাঁগূব দৌগা বহন খছি। ওগ নরহরতী দি স হমব নজবি কেঁ দেখৈত প্বন: বঁজনী–

“ও নরহরতী জি নকা খহাঁ দেখৈ ছী, খনেক নর–নর নোককেঁ খাবঁ হমবে জকাঁ কম্পযূটবক জানকাবী দৈত বোজগাব যোগয বঁনা বহন খছি। ”

হম একরেঁব হেব চকি ত ভ২ গেলৌঁ। নাগন জে কি ছ কবরাঁক হেত্ত ডঁমেব কোনো রাঁধা নৈ হোগত সি বি ফ জি ক্তাসা চাহী ।

চত্তব রাঁনক

ওা কথা সোনূ নামক একটা দস রঁর্খক রাঁনকক ছী। সোনূ গবীরঁ পবি রাবমে জনম ভেনে গামক-ঘবক নড়কা সভসঁ কতবাগতে বহ ছন জে, হমব মাএ-রাঁরূঁ গবীরীক জি নগী জীরঁ বহন খছি ।

এক দি ন সোনূ খপনা গামসঁ রঁজাব চনি দেনক। রাঁটমে সোচৈত বহন জে গবীরঁসঁ ধনীক কেনা হএরঁ। ওা সোচৈত সোনূ একটা হোটনক সোন্মহা সড়কপব ঠাঢ় ভ২ গেন। সোচৈত-সোচৈত সোনূ হোটন দি স ডেগ রঁঢ়নেক। তখনে হোটনক মানি ক মনেজবকেঁ কহনক-

> "হম ডঁপবকা ৰূপমে স্বতৈনে জাগ ছী, রেঁসী খগতা হ্খএ তখনে হমবা ডঁঠাএরঁ।"

সোনূ ঐ রঁখতকেঁ মোনাসীরঁ রূঁন্মি দস মি নষ্ট ৰূকি ক২ মনেজবকেঁ কহনক-

> "হোটনক মা নক- রৌধূ রাঁরূঁ হমব পি তাক দোস্ত ছথি ন। হ্নকাসঁ ভেঁষ্ট কবরাঁক খছি ।"

মনেজব একটা রেঁড় া দি যএ সোনূক সমাদ মানি ক নগ পঠেনক। মা নক খধকচ্খা নীনমে বহক কাবণে রেঁড় াক রাঁতকেঁ ঠীকসঁ নৈ রূঁন্মি

कहलनि –

“जाउ, जे मगैत होग से दऽ देबै।”

नि च्चाँ खारि बैंड़ ा मानि कक कहबँ मनेजबकेँ स्वना देनक। ओ अपन काजमे लागि गेल।

मनेजब सोनूकेँ पुछलक–

“बौआ, की लेबह ?”

सोनू उत्तब दैत कहलक–

“खेलाएल थि आ दीथ आ जे बँठ ा याँ मि ठाग हथए से दूटो डि ब्बामे दऽ दीथ।”

मनेजब सोनूकेँ खेलाएल थि आ दू डि ब्बा बँठ ा याँ मि ठाग सजा कऽ दऽ देनक। सोनू होटेलसँ दुनू डि ब्बा मि ठाग लऽ रि दा भऽ गेल।

हाथमे दुनू डि ब्बा लेने चहुबाग कबबाक तजूबबा कबबाक लेल दोसब शहब चलि गेल। ओतए सोना-चानीक दोकानमे पहुँचल। दोकानक मानि क लोभी छल। ओ बात सोनूकेँ मानूम भऽ गेल छेलै। सोनू ओग लोभी मानि ककेँ चि न्ह, प्रेम-भाव देखबैत मि ठागक स्वन्दव साजौल दुनू डि ब्बा दैत बाबूजी शब्दसँ सम्बोधि त कबैत हाथमे थम्हा दैत अछि ।

लोभी मानि क मि ठागक डि ब्बा अपन पत्नी नि कटकेँ बजा दऽ दैत अछि । कि छए कानक बाद, जखनि दोकानमे गहिंकी सबहक भीड़ लगल, तखने बाजल–

“बाबूजी, डि ब्बा महक मि ठाग बथि नि थ

আ ডি র্‌রা হমবা দহ দি খ।”

মা নক রি ন্ব সোচনে সোনূকেঁ কহনক–

“জা ভীতব, চাচীসঁ ডি র্‌রা মাঁগি নি হহ।”

সোনূ ভীতব গেন আ মানি কি নকেঁ কহনক–

“চাচী, রাঁবূঁজী দূটা সোনাক সি ক্কা দগনে কহননি ।”

স্বনি তে মনি কি নী রি চাবএ নগনী। দেরাঁক মন নৈ দেখি সোনূ জোবসঁ রাঁজন–

“রাঁবূঁজী, জারঁএ খপনেসঁ নৈ কহরৈঁ তারঁএ চাচী থোড়় দেতী, খপনেসঁ কহি যৌ নে।”

মানি ক দোকানপব ভীড়ক কাবণে গদ্দীএপব সঁ পনৌকেঁ কহনখি ন–

“দহ দি ঔ নে।”

পতি ক আদেশে পারিঁ মনি কি নী সোনাক দূটা সি ক্কা সোনূকেঁ দহ দেনী। নহ কহ সানূ ওতএসঁ সসবি গেন।

আরঁ সোনূ ওতএসঁ তেসব রঁজাব গেন আ ওতএ ও দূনূ সোনাক সি ক্কা রেঁচি ধন গকথ্থা কবএ নগন।

ঐ রাঁতক জানকাবী গামক মানি ক নরীন রাঁবূঁকেঁ সেহো ভেননি । নরীন রাঁবূ দবরাঁবক সি পাহীকেঁ কহি সোনূকেঁ রঁজা পূছ–তাছ কেননি । সভটা রাঁত সাঁচে–সাঁচ রঁতরৈঁত কহনক–

“খপন গবীরীসঁ ছুটকাবা পরৈনে হম এনা কহ

बहल छी।"

ओ रौँत कहैत सोनू मानि ककेँ प्रणाम कऽ सोझहेमे ठाढ़ भेल बहल। कि छुए कानक रौँद सोनू फेव रौँजन–

"जारेँ हमद्धुँ धनीक नै हएर्ँ तारेँ कोनो ने कोनो चत्तुबाग तँ कवि ते ठौ बहर्ँ ने।"

मानि क नरीन रौँर्ँ सोनूक चत्तुबाग संग धनीक हेरौँक दृढ़ सोचकेँ देखैत गम्भ भऽ गेना। डण्डि त कवर्ँ सेहो मनमे एननि क्षदा ओ सोचननि जे से नग तँ एकवा नि थमि त काजमे नगा दि ऐ जगसँ ऐ तवहक ठकपानासँ दूव भऽ जाएत। यएह सोचि थपना दवर्ँवमे बथि नेनक।



বাম রিনাস সাহ্

স্কূনক খি চড়ী

একটা খভি ভারক তমসা কহ স্কূন পহুঁচনা। হেড মাস্টবকেঁ উঁপবাগ দৈত রঁজনা–

"পঠ়াগ–নি খাগ তঁ জএহ–সএহ হোগএ। খানী খি চড়ীযেমে রেঁহান বহ ছী। জখনি ধি যা–প্বতা পঠ়রেঁ নৈ কবতৈ তখনি তঁ হাকি ম–হ্ক্ষমক তঁ বাঁতে ছোড় চপবাসি যো নৈ রঁনতৈ। এসঁ নীক তঁ প্রাগরেষ্টৈ স্কূন নে জগমে দূটা পাগযে নে নগৈ ছৈ, পঠ়াগ তঁ নীক হোগ ছৈ। খাগ তক ঐ স্কূনক রঁচ্চা পঠ়ি কহ কোন নাম কমেনকৈ।"

মাস্টব সহাএবঁ শান্ত ভারসঁ খভি ভারককেঁ সমঝবৈঁত রঁজনা–

"দেখূ, তমসাউঁ নৈ কোনো হম খি রৈঁ ছী খি চবী। গু তঁ সবকাবক যোজনা ছী। ঐ যোজনাসঁ নাভো রঁহ্ত ছৈ। নি চ্চাসঁ ঙুঁপব ধবি সভ মানে–মান হোগ ছৈ।"

খভি ভারক রঁজনা–

"से केना ? "

मास्टैब सहाएबँ कहलखि न–

"सहीमे प्रागरेटे स्कूलक बँच्चा सभ पढ़ि – लि खि हाकि म–हुक्म बँनै छै। आ ओहो देखैत हेबैँ जे ओ सभ माए–बाँप, गाम–समाजकेँ छोड़ि   एवं मातृभूमि केँ बिँ सबि जाएए, बूँमू बौँब जाएए। से तँ ऐ स्कूलक बँच्चामे नै हाेएए।"चोब–सि पाही

माघ मास खन्हबि या बाति । ओस–कुहेसेसँ हाथो–हाथ ने स्बझैत। एकटा चोब चाबि कऽ भागल जाए छल। तखने एकटा सि पाही गस्तीमे आबि बहल छल। चोब सि पाहीकेँ देखि ते भागल। चोब बूँढ़ छल कुदा सि पाही बँनंठ छलै। भागैत चोबकेँ बपटि कऽ पकड़लक सि पाही। पकड़ि हाजति नेने जाए छल।

चोबकेँ डंढ़ ासँ देह थबथबाए छल। मने–मन ओहो सोचै छल जे केना ऐ यमबाजक हाथसँ बँचबँ। थोड़े आगू चलि कऽ देखल जे सड़कसँ हटि एकटा घूब बहै। आगि देखि ते चोब बाँजल–

"सब, खहाँ एत्ते बद्ध आ हम ओए धूबासँ कनी बिँ ड़ ा नेसने खबैँ छी ? "

सि पाही कने सोचि कऽ बाँजल–

"खबे, तूँ हमबा मूर्ख बूझै छेँ बे ! आ जे तूँ भागि जेमे तँ हम तोबा पतानमे खोजबौ ? चूपचाप एतए बैँस हम खपनेसँ

রীড় ী স্বনগেনে খরৈঁ ছী। ”

<u>গমানদাবীক পাঠ</u>

নন্বখাঁ প্বছনক কন্বখাঁসঁ–

“ভৈযা খাগ–কাল্হি তঁ গামোক স্কূনমে রঁড় স্বরি ধা ভেষ্টৈ ছৈ খা পঠ় াগও হোগ ছৈ তৈযো রি দ্যাথী সভ শিহবক স্কনমে কি এ পঠ় ৈ ছৈ ? ”

কন্বখাঁ জরাঁর দেনক–

“গামক গস্কূনমে গমনদাবীক পাঠ খা শিহবক গস্কূনমে রোজগাবক পাঠ পঠ়রৈঁ ছৈ। ”

“সে কেনা ? ” –নন্বখাঁ প্বন: প্বছনক।

কন্বখাঁ উঁত্তব দেনক–

“গামক গস্কূনমে এহেন পাঠ পঠ়রৈঁ ছৈ জে কহ্না সাক্ষব ভ২ জাএ, গাএ–ভৌঁস চবারঁএ খা নমহব ভেনাপব হব–ফাব জোতএ, খেতী কবএ। খন্ন উঁপজা ক২ খপনো খাএ খা খানোকেঁ খি যারঁএ। ঙা ছি ঐ নে গমানদাবীক পাঠ হ্মদা শিহবক গস্কূনমে রি দ্যার্থী সভকেঁ রোজগাবক পাঠ পঠ়রৈঁ ছৈ। ও সভ পঠ় ি ি– নখি রোজগাব নেন খান–খান শিহব চনি জাগ ছৈ। খপন ঘব–পবি রাব খা সমাজ সেহো ছুটি জাগ ছৈ। সমাজসঁ রৈঁহ্মখ ভ২ জাগ ছৈ। খারঁ তোহী কহ জে গমানদাবীক পাঠ কে পঠ়তৈ ? ”

রৌখা রাঁজন

পঠ়ন–নি খন রেঁবোজগাব ছী ক্ষদা দি ন কেনা কষ্টৈ ছন তকব কোনো স্বধি –র্ঁধি নৈ ছন। উঁপবসঁ পবি রাবক রৌম্ম, খাগূ পঠ়রাঁক গচ্ছা বহি তো কি ছ নৈ কহ সকনৌং। এক দি ন মনমে হ্ক্বাএন জে কি ছ নেনা–স্তুষ্টকাকেঁ পঠ় াএন জাএ। খহ্না তঁ হম র্ঁড়া খাএনে ছী ঔবো র্ঁড়া যা জাএরঁ।

এক দি ন ভোবমে রৌখা–র্ঁচ্চীকেঁ ওসাবপব পঠ়রৈঁ ছনৌং। দ্নূ রেঁবা–রেঁবী প্রশ্ন প্বছএ খা হম উঁত্তব দগ ছেনি ঐ। খহি না সখি তি মে রৌখা প্বছনক–

"নোক এক্ত মেহনতসঁ কি এ পঠ়ৈএ, জে পঠ়ৈএ সেহো খা জে নৈ পঠ়ৈএ ওহো তঁ এক নে এক দি ন মবি ঐ জাগএ ?"

রৌখাকেঁ হম সমঝরৈঁত কহনি ঐ–

"জীরন–মবণ তঁ প্রকৃতি ক নি খম ছী। ও নি বংতব হোগত বহৈত খছি ।"

রৌখা ফেব প্বছনক–

"তখনো নোক কি এ পঠ়ৈএ ?"

"মনুখ পঠ়া –নি খ জ্ঞান খর্জিত কবৈএ খা ওগ জ্ঞানসঁ খপন জি নগীকেঁ স্বনভ রঁনা খসনী জি নগী জীরৈঁএ। নোক পঠ়া –নি খি ডাক্টব–গঁজি নি যব, ঔহি সব, করি নেখক খা উঁপদেশীক গত যাদি রঁনৈএ। খচ্ছা ও কহহ জে তূঁ কী রঁনরঁহ ?"

রৌখা রাঁজন–

“হম পঠ়া –নি খ কোনো কাজ কঽ সকৈ ছী হ্মদা করি –নেখক নৈ রঁনরঁ। সভ কমা কঽ স্বখ–মৌজসঁ জি নগী রিঁ তরৈঁ ছথি হ্মদা করি –নেখককেঁ কোনো কমাগ নৈ হোগত ছনহি । খখরাঁবমে পঠ়নি ঐ জে মবনা রাঁদ প্ববস্কাব ভেষ্টৈ ছৈ।”

ঘূসহা ঘব

হ্মখি যাজী পংচাযতক গামে–গাম খাম সভাক রৈঁসাব নেন ডোল্হা দি যৌননি । গামক নোক সভ একজ্‌ষ্ট ভঽ খাম সভামে পহুঁচনা। সভাকেঁ সংরোধি ত কবৈত হ্মখি যাজী রঁজনা–

“ঐ রৈঁসাবমে সভ কি যো মি ন া নর্ণএ নি খএ জে পংচাযতক গবীরঁ খা মসোমাত, জি নকব ঘব ঝ্‌ষ্টৈন–ফাষ্টন হোগ রা বহরাঁ যোগ নৈ হোগ ছৈ। ওগ র্‌যকতি ক সূচী রঁনাএন জাউ। হ্‌নকা সভকেঁ সবকাব তবহফসঁ ঘব রঁনরৈঁনে গন্দি বা–খারাস যোজনাসঁ রুপৈযা ভেষ্টৈতনি ।”

রাউ সদস্যক সহযোগসঁ হ্মখি যাজী নগ গন্দি বা খারাসরঁনা সূচী পহুঁচন। রিঁ হানেসঁ হ্মখি যাজীক দনান সভ সূচীমে নামাঁকি ত র্‌যকতি সঁ ভেঁষ্ট কঽ এক–একষ্টা ফার্ম দঽ কহি দেনক জে ফার্ম ভবি কঽ হ্মখি যাজী নগ জমা কবৈ জাউ খা রৈঁকমে খাতা সেহো খোনরাঁ নগ জাউ। সংগে সংগ পাঁচ হজাব রুপৈখা সেহো দি খএ পড়়ত। তখনি গন্দি বা খারাস ভেষ্টৈ

জাএত।

রঁহ্ত গোষ্টৈ তঁ ঋপন গাএ–মহি ংস–রঁকবী–ছকবী–গহনা–জেরঁব জেকবা জে গব নগনৈ রেঁচি কঽ ঋপৈখা দঽ ঋপৈখা উঁঠেনক। কি ছ ঋাদমী এহনো ছন জেকবা সকর্তা নৈ ভেনৈ ও রংচি ত বহি গেন। রঁদনামে পাগরঁনা নোক ঋপনা নামে উঁঠা নেনক।

কি ছ দি নক রাঁদ বঘি যা মসৌমাত গনদি বা–ঋারাস নে ফার্ম ভবি ঋখি যা জী নগ পহুঁচনীহ। ঋখি যাজী ফার্ম পঠ্‌া রঁজনা–

"পহি নে গনদি বা ঋারাসমে পচীস হজাব ভেষ্টৈ ছনৈ ঋারঁ চানি স হজাব ভেষ্টৈ ছৈ ঋদা ঋাগূ ভেষ্টৈরঁনা সাগঠ হজাব ভেষ্টতৈ। জগমে পচ্চীসমে পাঁচ হজাব ঋা ঋখনি চানি সমে দস হজাব খর্চা নগৈ ছৈ ঋদা ঋাগূ সাগঠমে পনবহ হজাব নগতৈ।"

বধি যা স্বনিতে কানি –কনপি কঽ ঋপন মজরূঁবী স্বনৌনকনি। ঋখি যাজী ঋড়্‌ া ডোনরৈঁত রঁজনা–

"যগ কাকী, হমবে কেনে নৈ নে হোগ ছৈ, ডেগে–ডেগ হাকি ম–হ্ক্ষম রৈঁসন ছৈ। ওহো তঁ কষ্টি যা সোন্হা কঽ বখনে বহৈ ছৈ তেকবা কী হেতৈ। ঋা হমবো কোনো দবমাহা ভেষ্টৈ ছৈ হমদ্ধঁ তঁ ওহীমে নি মহৈ ছি ঐ। তঁ ঙা হেতৌ জে হম ঋপনরঁনা নৈ নেরোঁ।"

স্বনি বধি যা সভ রাঁত স্বনি পবি সখি তি রূঁনি ঋাপস ঋারিঁ গেনীহ।

রূঁধনী রূঁঠ্‌া যা গামমে সভসঁ উঁমেবগব। জ্ঋানি যেমে ঘবরঁনা রাঁঠ্‌া মে ড্‌মি মবি

গেনখি ন। দূটা ৱৈটাক সংগ ৱ্‌ধনী কহি যো হি মমত নৈ হাবনি। সংঘর্ষ কৱৈত আত্মা- নর্ভবতাপব ধি যো-প্বতোকেঁ সঙ্কত ৱনৌনে ছথি । হনাঁকি আর্থিক ৰূপে কমজোৱে ছথি ।

এক দি ন হ্মখি যাজীক নজবি ৱ্‌ধনী ৱ্‌ঠ়া যাপব পড়ননি আ দেখি তে প্বছনখি ন-

“গামক ৱহ্‌তো নোক সভ নাভ নেনক হ্মদা তূঁ কোনো হ্যাবমো নৈ ভবনীহী ? তোবা তঁ দূটা নাভ ভেটৈতৌ। একটা বৃহ্মা-পেঁসন ও দোসব গনদি বা আরাসক।”

ৱধনী ৱজনীহ-

“ঐমে কোনো খর্চো-রর্চো নগৈএ ?”

হ্মখি যাজী-

“হঁ, বৃহ্মা-পেঁসনমে পাঁচ সএ আ গনদি বা- আরাসমে পনবহ হজাব।”

ৱ্‌ধনী-

“হম ওা নাভ নৈ নেৱ।”

হ্মখি যাজী-

“কি এ নৈ নেৱ ?”

ৱ্‌ধনী-

“ঘূস দ২ ক২ ঘব ৱনাএৱ তঁ ওগ ঘূসহা ঘবমে বহৈৱনা কেহেন হেতৈ ?”

হ্মখি যাজী আ ৱ্‌ধনী ৱ্‌ঠ়া যাক গপ অপনা ঘবক কোনচব নগসঁ বধি যা মসোমাত স্বনৈত ছনীহ অপনা মনকেঁ ৱ্‌ঝৱৈত ৱজনীহ-

"जनिद वा आराम कि ए घूसमा घर कहि यो नै।"

जाति क भोज

आब फूलबाबूक बेटीक बिआहक भोज अछि । गौआँ सबहककेँ आशा छेलनि जे ई भोज हमरो सभकेँ खेबाक अवसरि भेटैत । किएक तँ ऐ भोजकेँ सफल बनेबाक लेल बहुतो जाति-वर्गक लोकक सहयोग छेलनि । किओ जारनि फाड़ए तँ किओ साफ-सुथरा करए । किओ बर्तन-बासन माजै छल । गामक डोम बाँससँ बनल छिट्टा-पथिया, ढकैस, डाल-दौरा, चंगेरा बना देलक । मालि फूल आ फूलक माला, कुम्हार बर्तन-बासन, मल्ला पोखरिसँ माछ मारि मनक मन ढेर लगौलक । कतेको कबीगर आ हलुआब सभ भोजक समग्री बनबैमे भिरल छल । भोजमे सहयोग तँ सभ जातिक लोक द्वारा भेल । मुदा आनक अवसर सभकेँ नै भेटैलनि । ओतबे नै, किनको नगद टाका देल गेल तँ किनको उधार बहलै आ किनको सीदहा भेटलै । मुदा भोज खाएक नोत सभकेँ नै भेटलै ।

भोजक आयोजक भलहिं फूलबाबू छला मुदा करबाबी तँ सभ जातिक लोक छेलखिन । किछु लोकक मनमे, जे नका सभकेँ नोत नै देल गेलनि । हुनका सबहक मनमे एहो होन्हि जे काज जखनि नै छुआए छै तँ पाँति मे बैस खेलापर पाँति केना छुबा जेतै ।

ई छी हमर मजबूरी

জহ্মনা ৰাঁৰাঁক দ্খাবি পব সতসংগ-প্ররচন মোগ ছেনৈ। ভীড় দেখি হমহুঁ সসবি কহ গেনৌং খা ৰৈঁস স্বনএ নগনৌং। প্ররচনকর্তা সেহো জ্ঞানী খা রি দ্বান ৰূম্নি পড়না। ও মন্বখক জি নগীক সমৰূপতা ৰঁতৰৈঁ ছনা। কহৰঁ বহনি জে সভ মন্বখ এক সমান ছী। সভ একে ঙশ্বিবক সংতান ছী খা সৰঁহক খত্মামে একে পবমাত্মাক খংশ বমি বহন-এ। হ্মদা হম তঁ ৰঁড় খংতব দেখৈ ছী। সৰঁহক ক্রি যা-কনাপ, বহন-সহন খা খানো-পানমে ৰঁড় পৈঘ ভি ন্নতা খছি। কেকবো ৰোঁবে-ৰোঁবে নূন খা কেকবো বোটীওপব নে নূন। কোগ খাগতে-খাগতে মবৈএ খা কোগ খাগএ রিঁ ন্ব মবৈএ। কেকবো ৰীঘা-ৰীঘে কোঠা-সোফা কেকবো খোপড়ীওপব খাফত। কোগ বৌদে-রসাতে জবি -মবি কাজ কবৈএ তঁ কোগ এ.সী.মে মৌজ্ কবৈএ। কি যো উঁড়ন জহাজসঁ দেশ-রি দেশক যাত্রা কবৈএ তঁ কি যো পএবে চনি -চনি সড়কেপব পবাণ তি যাগৈএ। কি নকো রিঁ মাবীক গনাজ কবোড়। ৰূপৈখাসঁ রি দেশমে মোগএ তঁ কি নকো পবাণ সাধাবণ গনাজ রিঁ ন্ব চনি জাগএ।

ঐ সভ হ্মদ্দাপব সোচ-রি চাব কবৈত জখনি প্ররচন খতম ভেন তখনি হম হ্নকা নগ জা কহনি ঐ-

“মহবাজ, খপনে প্ররচনমে সভ মন্বখকেঁ সমৰূপ ৰঁতৌনি যনি। হ্মদা হম তঁ ৰঁড় খন্তব দেখৈ ছী। সে কনী ফড়া ছা কহ কহি যৌ।”

প্ররচনকর্তা মধ্ব স্রবমে ৰঁজনা-

“সে তঁ ঠীকে খহুঁ কহৈ ছী। হম জে প্ররচনমে

कहलौं सेहो ठीक आ अहाँ जे कहै छी सेहो ठीक। सत्‍ ई छै प्राकृति द्वारा जे स्वरि धा मनुखक देल उपलब्‍ध छै ओ समरूप छै। ऐदा मनुखक बीचमे जे अन्तर छै से अन्तर व्यवस्थामे कमीक कारणे छै। मनुखे मनुखक दुश्मन छि ऐ। जे जेते सबल छै ओ ओते दोसराक हक मारि व्यवस्थाकेँ दुरूपयोग करै छै। जहि ना हाथीकेँ दूटा दाँत होइ छै एकटा खाइबला आ दोसर देखबैबला तहि ना व्यवस्था करैबलाकेँ दू नजरि होइ छै। कथनी आ करनीमे अन्तर रखने छै। ऐ सभ बातक रि चार-अनुभव मनुखकेँ अपने करए पड़तै। ओकर समाधान देल संघर्ष करए पड़तै। रि नु माँगने तँ भीखो नै मि नै छै। ई तँ अहाँ अधि कारक बात करै छी। जौं हम प्रवचनमे समरूपताक बात नै कहबै तँ व्यवस्था हमरा नै ने जीबए देत। अहाँ जकाँ जौं हमहूँ प्रवचनमे बाजबै तँ कहि या ने हमरा जमपुरी पहुँचा देने बहि तए। यहए छी हमर मजबूरी।"

<u>अरि सराम</u>

काल्हि ए नूनू बाबूक बेटीकेँ रि आह छी। नूनू बाबू रि आहक सरमजान सबहक ओरि यानमे लगल छला। गि रहत आ सम्पन्न परि वार बहि तो रूपैआक अभार छेलनि। चारि लाख टाका, पाँच भरि सोना आ

एकटा मोटर साइकिल न देलखिन्हरि आर स्कूटर लेल तैयार नहि भेलाह । दुनू भाँइ इंजीनियरिंग कॉलेजक छात्र । सुखी सम्पन्न परिवार । दुनूक पिता मोहन बाबू एस.डी.ओ. छथि सेहो बड़ इमानदार । नीक कमेने-खटेने छथि । तँए नूनू बाबू अपन बेटी लेल तीनटा लड़काक घरमे छुट्टैकेटी करैक निर्णए लेने छथि ।

नूनू बाबू बहुत परिवार करैत तीन लाख रूपैआ मोटर साइकिल, दू भरि सोना तिलकक समैमे चुकता कऽ देलनि । शेष तीन भरि सोना बेटीक गहना स्वरूप विवाहक दिन देबाक आ एक लाख रूपैआ जे बाँकियौता बचि गेल ओ बेटीक नामे एन.आइ.सी. बीमामे जमा करत । जे दू तीन मास पछाति मिलत सेहो चुकता कऽ देब । तिलकक भेला पछाति विवाहक दिन ठेकन गेल । मुदा दुनूक पिता मोहन बाबू बड़ लोभी । ओ मोने-मोन सोचलनि , प्रतोष जखनि हमर हएत तँ एन.आइ.सी.क रूपैआ आइ ने काल्हि हमरे हएत । बाँकि यौता रूपैआ विवाहसँ पहिने लऽ लेब तँ लाभमे रहब । मोहन बाबू विवाहसँ एक दिन पहिने समाद नूनू बाबूक घर पठौलनि जे हमर एक लाख टाका बाँकि यान्हा अछि ओ रूपैआ चुकता करि दिअ तखने बरि यात्री जाएत नै तँ अहाँ जानू । नूनू बाबू समाद सुनि ते जेना देहपर बज्जर खसि पड़ल । ओ सोचमे पड़ि गेला । होशि सम्हारि मोहन बाबूसँ भेँट कऽ बड़ विनती केलनि । अखनि ऐ लेल माफी दिअ । हम बेटीवाला छी । बहुत चीज-बौसक ओरि यान करए पड़ैत । तैपर सँ बरियातीक स्वागतमे सेहो बहुत खरच हएत । मुदा मोहन बाबू

নূনূ ৰাৰূকেঁ একোটা ৰাত নৈ স্বননকনি , খা নে খাঁখি ক নোব পোছনকনি । তখনে নূনূ ৰাৰূ ৰজনা–

“খৈব, নৈ মানৰ তঁ খৰ্মা ৰবি যাতী নঃ কঃ খাউ, হম দবৰজজেপব রিঁ খ াহসঁ পহি নে ঝপৈখা ৰবি যাতীএ ঘবমে চ্কতা কবি দেৰ তখনি রিঁ খাহ কবৰ। ”

নূনূ ৰাৰূ খেত ভবনা বখি ঝপৈখাক ওবি যান কেননি । ৰবি যাতী সমৈপব খাএন। সৰহক স্বখাগত ভেন। দবৰজজেপব সৰহক সোঝহেমে এক নাখ টাকা দ্নহাক পি তা– মোহন ৰাৰূকেঁ চ্কতা কঃ দেননি । দ্নহাক পবি ছন ভেন, ৰবমানাক কাজ শ্বৰূ হএত তখনে একটা নর ৰাতক চৰ্চা ভেন জে দ্নহা পহি নে দ্নহি নকেঁ দেখতা। পসি ন ভেনা পছাতি নে ৰবমানা খা সেনূবদান হএত। ঐ ৰাতসঁ কন্যাঁ পক্ষমে খনৰনী মচি গেন খা খাএাশি সেহো ৰঠ্ৗ গেন। খন্তমে নিৰ্ণএ ভেন জে ঠীক ছৈ পহি নে কন্যাঁ দেখ নেন জাউ। তখনে খাগূক কাজ হএত।

দ্নহি ন চিত্রা তঁ পহি নেসঁ ৰবমানা নেন সজনে ছনি । একটা কোঠনীমে দ্নহাকেঁ নোকনি যাঁ সংগে ৰজৌন গেন। ওহী কোঠনীমে দ্নহি ন চি ত্রা সহেনীক সংগে খাএন। চি ত্রা গন্টৈব পাস পূৰ্ণিমাক চান সন স্বন্নবি । দ্নহা দেখি কঃ মোনে–মোন খ্শি ভেনা। কি ছ গপ–সপ্প সেহো ভেনৈ। তখনে চি ত্রা ৰজনী–

“কী যৌ দ্নহাজী, হম খপনেকেঁ পসীন ভেনৌঁ ? ”

দ্নহা ঝস্কী মাবি পীঠে নাগন ৰজনা–

“হঁ, কী হমহুঁ খহাঁকেঁ... । ”

চি ত্রা ত্তবন্তে জরার্ব দেনক–

“নৈ থর্হাঁ হমবা পসীন নৈ ছী। তঁএ থার্ব ঞা রি থাহ হম কি ন্নী নে কবর্ব। চি ত্রাক ঞা নির্ণএ স্বনি সখী–র্বহি নপা, মাএ–র্বাপ, সমাজক র্ব্জ্স্ম গত্যাদি র্বহ্তো গোষ্টে সমম্নেনকনি হ্মদা একেঠাম চি ত্রা জি দ্দ ধেনে বহনি জে ঐ রবসঁ হম রি থাহ নৈ কবর্ব।”

দবর্বজ্জা র্ববি যাতী–সবি যাতীসঁ ভবন ছন। ঞা র্বাত স্বনি তে নগনে সনসনা কঽ থগি নগ্গী জকাঁ চান্দ দি স সৌঁসে গাম পসবি গেন। র্বহ্তো র্ব্জ্স্ম নোকনি দ্নহি নক পি তাকেঁ র্ব্ম্মা–সমম্মা কঽ কহনকনি হ্মদা চি ত্রা থপন দৃঢ়পব থবন বহনি। চি ত্রাসঁ কাবণ পূছন গেন। কহনক–

“জখনি দ্ন্হাকেঁ থপন মাএ–র্বাপ থা সব–সমাজ কি নকোপব রি সরাস নৈ ছন্হি তঁ ও হমবাপব রি সরাস কেনা কবতা থা হম কেনা হ্নকাপব রি সরাস কবর্ব। দোসব র্বাত জে হি নকব পি তাজী দহেজক থাতি ব জমীন থাগজ্জত র্বৈচর্বা সকৈ ছথি তখনি ও হমবো র্বৈচি সকৈত ছথি কি নে। তঁএ হম র্বীখ পীর্ব মবি জাএর্ব হ্মদা এহেন থরি সরাসী থা দহেজ রুপী দানরক র্বৈষ্টৌ সংগে রি থাহ নৈ কবর্ব। ঐসঁ নীক তঁ হম ওহেন দ্ন্হা জে গবীর্বে কি এক নে হএত, তি নকাসঁ কবর্ব, জে থপন গজ্জতক সংগে দোসবোক গজ্জত কবত।”

চি ত্রা সহেনী সংগে কোঠনীসঁ নি কনি গেনি। দ্ন্হা থা নোকনি যাঁ সভকেঁ ওহী কোঠনীমে র্বন্ন কঽ

তানা নগা খাঁগন খারিঁ গেনি । রিঁ খাহ নৈ ভেন। ঔ খরঁবি বাতি এ ভবি মে চৌতবফা পসবি গেন। পঁচৈতীক রৈঁসাব ভেন। পঁচ নোকনি রিঁ খাহ হেৱঁাক রঁহ্‌ত পবি যাস কেননি ক্ষদা চি ত্রা খপন সংকল্পেপব খডি গ বহনি । খন্তমে জে দহেজেক নেন-দেন খা স্বখাগতক খর্চ ভেন বহৈ ও সভটৌ খাপস ভঽ জাএ। দ্‌নহি নক পি তা নূনূ রাঁবূঁ রঁজনা-

> “চাবি নাখ টৌকা, দূ ভবি সোনা, মোটৈব সাগকি ন সংগে স্বখাগতমে দূ নাখ টৌকা খর্চ ভেন খছি সে সভটৌ খাপস কঽ দি খ তখনে হি নকা সভকেঁ ছঙ্খী ভেটৈতনি । নৈ তঁ হম কানূনক শিবণ নেরঁ খা দ্‌নূ রাঁপূতকেঁ জহন কটৈরঁনি ।”

সভ পঁচক রি চাব ভেননি । রাঁত তঁ উঁচি তে নে নূনূ রাঁবূঁ কহৈ ছথি । কোনো জরঁবন জ্‌র্মানা তঁ নৈ... ।

দ্‌ল্হাক পি তা মোহনরাঁবূঁ ছহ নাখ টৌকা, সোনা, মোটৈব সাগকি ন ঘবসঁ মংগরাঁ নূনূ রাঁবূঁকেঁ পঁচক রি চ্‌চেমে খাপস কঽ দেনকনি । তখনি হ্‌নক রেঁটৌকেঁ কোঠনীসঁ রাঁহব নি কানি দেন গেন। জহি না খান গামক চোটৌএন ক্ষক্ষব নাঁগবি দরৌনে দ্‌নকী দৈত খপন গামক রাঁটৈ পকড়ি সোনহে-সোন জাগত বহৈএ তহি না সভ কি যো রি দা ভেনা।

চি ত্রা পি তাক ক্ষবনাএন ক্ষঁহ দেখি রাঁজনি -

> “রাঁবূঁজী, খহাঁ এক্কা পাগ চি ন্তা নৈ করু। হম মন্বখ সংগে রিঁ খাহ কবরঁ। পঠ়ন-নি খন কমমো বহত তগনে একো পাগ চি ন্তা নৈ।

এহী খাতি ব নে এতে ঝমেন হোেগএ। এক্কা পাগ চি ন্তা নৈ কব্ধ।”

<u>গংগা নহাএবঁ</u>

কাতিক মাসক প্বর্ণিমা নগিচাএন। সানক তেবহম মাস, রেঁসী পারনি–তিহাব ভেনে হাথো খানীএ, ঝ্দা গামমে দনমনিত হোেগএ– গংগা নহাগনে সিমবিযা ঘাট জাএবঁ।

ঐরেঁব প্বকখসঁ রেঁসী জনানীএ সভ গংগা নহাগ জাগনে ছান ছীননে। তীনূ ঠৈনক জনানী সভ প্বদ্ব–ফ্স্বব কবৈমে ভবি–ভবি দিন নগন। চনবদের ভোবে উঁঠি গাএ–রঁবদকেঁ ফগ্ুী–সানী নগা ধনখেতী দিস রিদা ভেন কি রঁড়কী ভৌজী খা সারিত্রী মাএ ডেঠ়ি যাপব খারি গেনী। রঁড়কী ভৌজী ঝস্কী মাবি রঁজনী–

“রৌখা চনবদের, স্বনৈ ছী গামক নোক সভ গংগা নহাগনে জা বহন খছি। খহাঁ নগ জাএবঁ। কহিযা প্বর্ণিমা ছিঐ।”

চনবদের দিন–তিথি গীনৈত রাঁজন–

“প্ববস্বএ প্বর্ণিমা ছী। হমব তঁ হাথে খানী খছি, তহন ছচ্ছে হাথ জাএবঁ কেনা। ঐরেঁব নগ জাএবঁ। গংগা মৈযা জঁ ঐ সান নিকে–স্বখে বখননি তঁ পৌককাঁ খরঁস্স জাএবঁ।”

সারিত্রী মাএ রঁজনী–

“চনবদের, এহনো রাঁত নোক রঁজৈএ! গংগা নহাগনে তঁ রিনা জতবো–কে–জতবা রঁনবৈঁএ,

अछाँ किए झाँठ मोड़ै छी।"

गंगा नहाइक चर्च सुनि एकक-दूगोए जनिजाति सभ ससरि-ससरि लग्गे आबि चनवदेरकेँ घेरि लेली। लड़की भौजी चौल करैत कहलखिन-

"यौ अहाँ सभ दिनक लहन्नालीज छी, से लहन्ना छोड़ू जे हाथ छुट्टे अछि। अपनो चलू आ हमरो सभकेँ लेने चलू। बहल खर्चाक बात, हम तँ खर्चा देखबे ने करै छी। घरेसँ खेनाइ-पीनाइक समान लेना नइ लेब। रेलगाड़ीमे मेलाक भीड़ रहबे करत, टिकटो कोनो लगबे ने करत। एक गड़ीसँ बातिए-बाति जाएब आ दोसर दिन घर घूमि चलि आएब। ने कोनो घरक काज पछुआएत आ मंगनीमे गंगा नहा लेब। जखन मेलामे कोनो चीज-बौस कीनबे ने करब तखन खर्च बेसी किए हएत। अहूँ तँ सिधाब ग्रहकेँ परवरित लगबै छी।"

लड़की भौजी गपक लखाड़ी खोलि चारू दिससँ चनवदेरकेँ गछाबि लेली। चनवदेर सकदम भऽ गेल। किछु उत्तर नइ देलक। जनिजाति सभ समझि गेली जे चलैले तैयार भऽ गेल।

चनवदेर मने-मन सोचए लगल जे वेद-पुराणसँ लऽ कऽ साइयो पोथीमे गंगा स्नानक बड़ पैघ महत बतौने अछि। सतयुगसँ लऽ कऽ अखनि धरि अपन देशक लोक आ आनो देशक लोक गंगा नहाइए तँ चनवदेर किए पाछू रहत। हमहूँ किए ने लगले सूरमे रेड़ा पार भऽ जाइ।

एमहर भरिए दिनमे जनिजाति सभ खेनाइ-

পীনাওক ওবিযানমে নগি গেনী। কিযো খবরা চাবক বোটী, খনূক ভুজিযা রনৌনক তঁ কিযো পবোঠা-ভুজিযা, তঁ কিযো চূড়া-হ্মবনী, সত্তখা-নোন খা মিবচাওক মোটবী রাঁনহি চনৌনে তৈযাব ভ২ গেন।

পচীস-তীস গোটে সঁঝ্কে গড়ী পকড়ৈনে টেশিন দিস রিদা ভেন। নিবমনীসঁ সকবী জাওত-জাওত ভীড়ক কাবণে রুঝ্ দেহক মোনি ছুটি গেন। হ্মদা কোনো ধবানী ভোবে-ভোব সিমবিযা টৌশিন পহুঁচ গেন। কিছুকান টিশিনেপব খঁটকৈ গেন খা খন্হবোখে গংগা ঘাট দিস সভ কিযো রিদা ভেন। টিশিনসঁ ঘাট ধবি চ্ঠী জকাঁ সত্তবি নগন নোক। কেতৌ কনীযোঁ জগহে নগ জে ঠাঠ়া ভ২ নোক জীড়াএত।

সসবৈত-সসবৈত কহ্না গংগা ঘাট পহুঁচ গেন। দিসা-মৈদানসঁ খারি চনবদের দতমনি কবএ নগন। গামেসঁ সাহোবক দতমনি খননে ছেনএ। হ্মঁহ-হাথ ধোয রেঁবা-রেঁবী গংগামে নহাও গেন। চোব উঁচক্কাক কোনো কমী নগ, জঁ একেরেঁব সভ কিযো নহাওনে জেওতএ তঁ মোড়া-ঝাঁটী ন২ পাব ভ২ জওতএ।

নোক তঁ গংগাও নহাওত খছি প্বন্য সমন্যি ক২ হ্মদা পাপো কবৈরনা ওতওগ রেঁসী হোওএ। সভ কোয নহা এক-এক ডিব্বা গংগাজন ভবি খানি উঁপব বখনক। পানি তেতে ঘোব-মষ্ঠা ভেন ঘিনাএন ছেনৈ জে হ্মহোঁমে নগ নগকে মন হোওত। ঘাটসঁ হটি উঁপবমে একটা মন্দিব ছন। ওতওগ একটা চাপাকন সেহো ছন। সভ কিযো ধক্কম-ধ্ক্কা কবৈত কন নগ পহুঁচন। ভূখ-পিযাস সভকেঁ নগন ছেনৈ খপন-খপন খাএক নিকাওন খা-খা পানি পীরঁ, মোটবী-চোটবী রাঁনহি নেনক।

সৰ্হক রিচাব ভেন জে গড়় ামে ৰঁড়় দেবী ছৈ তঁএ হম সভ তারেঁ মেনা ঘূমি দেখৰ। ঘূমি-ঘূমি গংগা ঘাটৈক মনোবম ছরিক খানন্দ নেৰ। সভ কিযো ঘ্মৈত দছিন-পূৰ্ব দিস গেন। জেতএ খানী হ্মবদে জবৈ ছেনৈ। নাশি খধজহ্ম হোগ কি পানিমে ধহাবি-ধহাবি কহ ভঁসা দগ ছেনৈ। তগ ৰগনেমে এতেক ঘিনাএন ছেনৈ জে থ্কো হেকনাগ খপবাধে ব্ৰুমৈ ছন। নাক-হ্মঁহ হ্মনি সভ কিযো পড়় াএন।

গংগা কাতমে কিছু দূব তক ঘাটৈ ৰনন। নহাগক ভীড়় ওবেরেঁ নগ কবৈৰনা। তখন ঘ্মৈত সভ কিযো বাজেন্দ্র প্বন নগ খারি গেন। জেনা প্বন কিযো দেখনে নগ ছন তহিনা আঁখি হাবি-হাবি প্বনকেঁ দেখহ নগন। ঘ্মৈত-হিড়় ৈত সভ থাকি-হাবি গেন। কাতিকক দ্পহবিযাক তিখব বৌদ ভেনে গবমী ৰঠ়ি গেন। ছাহবিক কোনো খসে নগ। ভিজনাহা রস্ত্র মাথপব বাখি হাথসঁ পকড়় ি ঝাঁহ ৰনা-ৰনা হাথসঁ পকড়় ি সভ ঘ্বিযা কহ ৰৈসন।

ৰৈসনে-ৰৈসন নোক সভ গংগা মহাত্মক চর্চ কবএ নগন। জেকবা জে ব্ৰুঝন-স্বনন খাকি মনমে হ্বাগ সে ৰজৈ ছন। তখনে ৰড়় কী ভৌজী খা হ্মপহারানী কাকীকেঁ বহি-বহি কহ মন মৌংবহ নগননি। ৰৌকবি-ৰৌকবি ভবনী। গংগামে কখনো মবনাহা জীর-জন্তুকেঁ ভঁসৈত জাগত দেখৈ তঁ কখনো হ্মবদাকেঁ, তহিনা চাহ্মকাত জে ঘিনাএন দেখৈ সে পবপংচে নে হোগ।

চনবদেরক মনমে গংগাক প্রতি শ্রদ্ধা-ভকতি খা খাস্থা ছন ওহো কমএ নগনৈ। কথা-প্বাণ খা সাধ্-সংতক প্ররচনমে গংগা-মহাত্ম পঠ়নে-স্বননে বহএ ও সাঁচ ছী কী ঝূঠ তগ ওঝবীমে ওঝবা গেন। তৈযো

चनवदेर मनमे सबुव रॉनहि सोचए– जेतए चाक्ष जगमे नोक गंगा–महात्मकेँ मानैत श्चाएन छथि, तेतए हमवा माननें वा नग माननें की हएत। एतेक नोक जे गंगा नहाएए, की ओग पुण्य–प्रतापे सभ स्वर्ग जाएए ? श्चा जे गंगा नग नहा पवैएं ओ की नवक जाएए ? तखन तँ केहनो कुकर्म कवि निश्च श्चा गंगा नहा स्वर्ग चनि जाउँ, स्वकर्मक कोनो जरूवते नग !

तमी रिचमे स्वगापर्ङ्गीरानीकेँ रॅड़रॅड़ नी धेनकै। श्चकचकाएत रीवप्ववरानीकेँ कहनक–

"दीदी, एगो रॉत फविष्ठा कह बुझ्ना दथ्। जखन गंगा श्चपनें एते घिनाएन श्चछि श्चा नोक सभ नहा कह श्चपन पाप धोएए तँ एतेक गंदकी श्चा पापकेँ गंगा मैया केतए जमा कवैए ?"

रीवप्ववरानी काकी स्वगापर्ङ्गीरानीकेँ समझ्वैत कहनखिन–

"देखै नग छहक गंगा मैयाकेँ कोनो रॅखावी श्चाकि गोदाम छै जे ओएमे जमा वाखत।"

स्वगापर्ङ्गीरानी– "तखन गंगाजी श्चपना पेटमे सोनहि–मोएन रॅना वखैत हेती।"

तैपव रीवप्ववरानी रॅजनी– "हे हए, एना श्चनवगन किए रॅजै छहक ! गंगा मैया एहेन नग छथि जे एतेक वास पाप श्चा गंदकीकेँ जमा कवत। कथीनें कवत श्चा किए जमा कवत। पाप श्चा गंदा तँ नोक कवैए। जे कवत से नें भोगत। ओ श्चपनें नें पाप कवैए श्चा नें गंदा। सभटा नोककेँ रॅाँटि दएए।"

स्वगापर्ङ्गीरानी–

"से केना दीदी। एतेकोनसँ बुझी, कतौ किछु
बँटैत देखै छी गंगाजीकेँ।"

प्रीतम्बरानी काकी बजली- "हम अपनाक्षीरानी,
तोरा सनक सोझमतिया जनानी अछि जगमे अछि से
हम नहि बुझलौं एकनौं। एक गाममे जनमल आ दोसर
गाममे बियाहल बहल हुएक से ओहिना। देखहक
गंगा केना पाप आ गंदगीकेँ बँटै छथिन। जेते लोक
गंगा नहा कऽ पाप धोअए ओ अपना-अपना मनक भरम
दूर करैए। जखनि ओ डुबकी मारि डिबिआमे जल घरक
खातिर भरैए, जहि जलसँ लोक तन-मन शुद्ध करैए
तखने जेकर जे पाप केनहा रहै छै, तेकरा गंगा
बाँटि दैत छै।"

बिच्चेमे रूपमारानी काकी आ बड़की भौजीकेँ
विषयसँ भँसियाइत देखि सावित्री माए बजली- "बौआ
चनरदेव, हम तँ कान पकड़ि छी एहेन करम
जिनगीमे फेर कहियो ने करब। ई तँ देखौंस
केनौं। असल गंगा तँ सबहक मनेमे बसैए। जे
किओ देखबो ने करैए। कहबीओ छै, मन चंगा तँ
कठौतीमे गंगा। बहल गंगा नहा कऽ पाप धोअब आ
पुण्य लूटब। तँ जखन पाप करबे ने करब तँ पुण्यक
कोन काज अछि। जखन करमकेँ धरम बुझि करब
तखन अधरम किए हएत। जे जेहेन करत तेकर
फलो तँ तेहने ओकरा भोगए पड़त। हमरा बुझने
ई सभटा मनक भरम छिऐ।"

गप-सप्पक बीच दुपहरिया बितल कि तखने घर
जाइत गाड़ी धुधुआइत आबि गेल। सभ किओ
गाड़ीपर चढ़ि बिदा भेल। टीशनसँ चलि जखन
गामक सीमा कात आएल तखने सभ किओ तीन-तीन

ৰেব গংগাজী কেঁ গোড় নাগি ৰাজন জে এহেন দিন নগ কবিহন জে দোসব ৰেব খাৰ কহিযো গংগা নহাগনে জাএ পড়এ। কান পকড়ি –পকড়ি জিনগী ভবিক নেন গংগাজী সঁ মাফী মাঁগি নেকক।

<u>ডোমক খাগি</u>

জেঠবতি কক্কাক মৃত্য সএ ৰর্খিক ঙুপবে ঙঁমেবমে ভেননি। সৌংসে গামমে সোগ পসবি গেন। গামমে দনমনিত হুখ নগনৈ জে খাগ গামক মানিকক খন্ত ভেনে একটা যুগক খন্ত ভং গেন। জেঠবতি কক্কাক ধাক জহিনা গামক মানৈত তহিনা খাদবো কবৈত। হ্মগনা পছাতি সহ্মচ্চা গামক নোক দাহ সংস্কাবমে পাঁচকঠিযা দগনে পহুঁচন ছন। ভীড় ৰহৃত হ্মদা খখনি ধবি খছিযামে খ াগি নে পড়ন ছন। নোক সভ থাহা–থাহী ঠাঠ, কিযো ৰৈসন কনহ্ফুসকী কবৈত খা কিছু নোক নিগ্বন ভজন গৰৈত বহএ–

“হংসা ঙঁড়ি গেনৈ ভমহবা ৰনি হে... ।”

“সভ দিন হোত নে এক সমানা... ।”

কিযো ঙা গৰৈত–

“খাযা হৈ সো জাএগা বাজা বংক ফকীব... ।”

ভিনসবসঁ দুপহব ভেন জাগত বহৈ। খখনি ধবি নোক কানে খাশামে সমএ ৰীতবৈ ছন, তেকব কোনো থা–পতা নহি ছন। জখন ৰৈসন–ৰৈসন নোকক মন খগ্বতাএ নগনৈ, ভূখসঁ পেটমে ৰিনাগ হ্মদং নগনৈ। তখনি জা কং বিনমক কাবণক পতা নগৰং নগন।

মনিকপনাৰনা ৰাত, কে হিম্মত কবত জে খাগূ

ভৈ প্ৰছৈনে জাএত। অপনামে গৱদ্ব–হ্স্বব কবৈত বহএ। কিযো অাগূ জেরেঁ নে কবৈত বহএ। তখনে বৌদী ৰাঁৰা পহুঁচলা। পহুঁচিতে ৰঁজনা–

"অখনি তক অছিযামে আগিযো নে পডূন। কিএ এতে অৰেঁব ভেন। ধিযা–প্ৰতা সভ ভূখে নহানোঠ হোগএ!"

সভ কিযো বৌদী ৰাঁৰাকেঁ কহলকনি–

"অহাঁ ৰূঠূ া–প্ৰবান ছী আ গামক অন্বভরী সেহো ছী, সে কনী ঝৰঁদে পতা কবিযন্ব জে...।"

অগ্ৰতাএন বৌদী ৰাঁৰা নোকক ৰীচে–ৰীচ টৌটীপব বাখন ক্ষদা নগ পহুঁচলা। ওগ ঠাম জেঠবতি কক্কাক পবিরাবক সভ নোকক সংগ পহুঁচন হ্ড্ৰম সভ অপনামে কহা–স্বনী কবৈ ছন...।

নগমে জা বৌদী ৰাঁৰা জোবসঁ প্ৰছনখিন–

"যৌ, অহাঁ সভ নাশীকেঁ জবৰৈনে এনৌং হেন আকি গংগা সেৰৈনে?"

জেঠবতি কক্কাক জেঠকা ৰেটৌ– ৰূপচন্দ– কহলকনি–

"দাদা, সভ কিছু তৈযাব অএ, ক্ষদা ৰৌকূ ডোমক গন্তজাবমে ছী।"

বৌদী ৰাঁৰা প্ৰছনখিন–

"সে কিএ?"

ৰূপচন্দ–

"নোক সভ কহৈএ জে অসমসান ঘাটপব ডোমক

মাথক খাগি কীনি নাশকেঁ জবৌনাসঁ মৌক্ষক প্রাপ্তি মোগ ছৈ তঁএ কনী রৌকূ ডোমক বাঁট তকৈ ছী।”

বৌদী বাঁবাঁ বঁজনা–

“খমীনে এতে খবৈঁব মোগএ খাকি খাবো কোনো বাঁত ছম? গামমে ডোম, সভ কিযো ভোবসঁ খাএন খছি ওকবা কানমে খবঁবিযো নে ছৈ।”

রূপচন্দ–

“নগ মৌ কাকা, কাল্হিএ রৌকূ সমধিযৌনা গেন বমএ, খবঁবি ভ২ গেন ছৈ। ও জখনে–নে–তখনে পহুঁচৈএবঁনা খছি।”

রূপচন্দক বাঁত স্বনিতে নগমে বৈঁসন শিরনান কাকাকেঁ খনবগন নগননি। তড়বাঁক নমবি মগজ ধবি পহুঁচ গেননি। জোবসঁ বাঁজএ নগনা–

“গামক এতেক বঁড়–বুঁজুক্খ জে খাএন ছথি ও বুঁড়া বঁকে ছথি কী! জখনি এতে বুঁঝৈ ছমক জে ডোমক মাথক খাগি কীনিকে ওগ খাগিসঁ ন্ধখাগিনী কববঁ তঁ পমিনে ডোমকেঁ বঁজা নগতম। পছাতি নোক সভকেঁ বঁজৈবঁতম। ভিনসবসঁ দুপমব ভ২ গেন, সভ নোক ভূখে–পিযাসে নমানোঠ ভ২ বমন খছি খা রৌকূ ডোমক খখনো কোনো থা–পতা নগ ছম!”

কনীকান বমি ফেব বঁজনা–

“খাগ–কাল্হিক নর–নৌতাব সবঁমক নর–নর কানূন। জখনি জে মনমে ফুড়ৈএ সমএ কব২

नगैए ! नर-नर जोगीकेँ ভबि देह টीक्का ! ”

शिरनान कक्काक तमसाগत ब়ोन स्वनिते नग খরॅ२ नगन। सভकेँ হোগ कখनि ঝরঁদে খাগি পড় জে নোক পঁচকঠিযা ফেকি নহা-সোনাগনে চনি জাএত। হ্মদা খখনো ধবি রৌকূ ডোম নহি পহুঁচন।

सीताবাম দাস নগ খারি রঁাজন-

“মৌ ৰূপচন্দ মানিক, কনীনে এতে নেষ্ট ভ২ বহন ছৈ মৌ ? ”

রঁাজি সীতাবাম মনে-মন সোচএ নগন। জখনি র্ন্নৈ ছিঐ জে ডোম সমাজক নেন এতে পৈঘ নোক ছৈ, রিনা ডোমক খাগিসঁ নোককেঁ মবনোমে হ্মকতি নগ ভেষ্টৈ ছৈ, তখন ডোমকেঁ এতে নিচ্চা কিএ র্ন্নৈ ছিঐ...। জখনি কি জীরৈতমে সভ ডোমসঁ ছূরাঁগ ছী, খা হ্মগনাপব পৈঘ র্ন্নৈ ছী...। ডোমো তঁ খহী সমাজক নোক ছী, হ্মদা গামসঁ হটি ক২ রেচাবা সভ গামমে রঁসৈএ। সভ কিযো ওকবা খছোপ রূন্নি খাগ ধবি নগ রৈসি খেনাগ তঁ দূব জে রাঁতো নে কবৈএ। এক নগগা হটিকেসঁ প্বছ-পাছ কবৈএ...। ঐরেঁবমে কোন খসোগবজ নগি জাগএ...।

বংগ-রিবংগক রাঁত সীতাবাম কক্কাক মনমে নচ২ নগননি। মিথিনাক সামাজিক পদ্ধতিক রঁনারঁষ্টপব ধিযান গেননি। জাগতে মন জেনা খাবো চৌবহ্ফ রৌখএ নগননি। রেঁরস্থাক জনিযাএন ৰূপ সভ সোন্না খরঁ২ নগননি। কিছু রাঁজি নগ বহন ছনা।

তখনে রৌকূ ডোম হহাএন-হ্ফহাএন খাএন। রৌকূ ডোমসঁ কীনন জাএত তেকব মোন-জোন হ্খ নগন। প্বছনাপব রৌকূ রাঁজন-

“জেঠবতি কাকা গামেক মানিক ছলা তঁ হমবো মানিক। হমবা কোনো নোভ–নানচ নগ খছি হ্মদা দান–দছিনামে জে দের্ঁ সে খ্শী–শ্বখী দঽ দিখ।”

ৰূপচন্দ একটা চানীক সিক্কা দঽ খাগি কীনঽ খাগূ ৰঁঠ়না। তখনে শিরনান কাকা, বৌদী ৰাঁৰাঁ খা সীতাৰাম দাস খপনামে রিচাব ৰঁজনা–

“ওা উঁচিত নগ ভেনঽ ৰূপচন্দ। জেকবা খাতিব ভোবসঁ দ্পহব ভঽ গেন, খসমসান ঘাটপব নাশ পড়ন খছি, তেকবা খহাঁ এগো চানীক সিক্কা... ! জেঠবতি কাকা গামক মানিক ছলা, ও এতে খবজি দেনে ছথি জে তীনো পীঠ়ামে নগ সধত। খপনো সমাঁগ ৰূঁন্নি ৰৌকূকেঁ জে দেৰেঁ সে দিযৌ, তখন নে ৰৌকূও খপ্পন ৰূঁন্মত।”

সএহ ভেন। হ্মখাগিনী ভেনা পছাতি সভ কাজক খন্ত কৰৈত সভ কিযো খাগূএ তকৈত রিদা ভেন। নিগ্বন গৌনিহাবকেঁ জেনা রিসবাস খাবো ৰঁঠ়ি গেননি। প্বন: গাৰঁএ নগনা–

“সভ দিন হোত নে এক সমানা.... ।”

<u>স্বৰস্মক স্বখ</u>

কোসী নদীক ছীটপব ৰৌকূ সদায খোপড়ী ৰঁনা বহ ছন। খগন–ৰঁগনমে হ্মসহব সভ সেহো কাশ–পটৈবক খোপড়ী ৰঁনা বহ ছন। কোসীক কটনিযাঁ ভেনে হ্মসহবী টৈন উঁজবি গেন।

মাঘ মাসক সমএ। রস্ত্রক খভাবসঁ জাড়ক মাবন

रौकू ठिठ्रैत घूब तपै छल। जखने घूबमे थागि जरेनक थाकि रौकूक रेंग्टा–रेंग्टा सटि कऽ रैसि थागि खोबि–खोबि तापए नगन। पनी रनरारानी खोपड़ ासँ रकड़ ा निकानैत जोबिसँ रजनी–

"बातियोँ सिदहाक थभारमे सभ कोग भुखने स्वति बहनौं, थार दिनोमे रान–रच्चा की खाएत। भूखसँ तवपि की रान–रच्चाक संगे कोसीमे ड्मि मबर।"

रौकू सदाय राजन–

"भोरे–भोब एहेन थश्वभ रात नग राजू। शीतनहबी भवि कोनो तवहेँ पवान रँचाउँ। पवान रँचत तँ नाखो उँपए कबर। कनीको समए हबिच हेते तँ खाग–पीरैक जोगाड़ कबर। एक तँ कोसी मैयाक मावन छी दोसव भगरानो रैंम्हख थछि।"

शीतनहबीक कोनो ठेकान नग थछि म्हदा भूख तँ सयैपव नगिए जागए। रेंग्टा–रेंग्टी बातिमे किछु ने खेनक। भिनसव होगते जोब–जोबसँ खागने मॉंगए नगन।

रनरारानी पड़ ासीसँ दू सेव पाँचि थानि घूबक थागिमे पका–पका रेंग्टा–रेंग्टीकेँ देनक। थपनो दूनू पवानी खेनक। उँपवसँ पानि पीर–पीर भूख मेट्हैनक।

रु्हसे कमिते बौदक दर्शन भेन। रनरारानी पतिकेँ कहनकनि–

"दू दिनसँ स्वखन बोटी था थल्ह्था खा कऽ कोनो तवहेँ दिन कटनौं म्हदा थाग भातक कोनो जोगाड़ करू।"

रौकू जाड़क कोनो परराह नग कबैत धोतीक

तब-ऊँपबा ओठ्ऻत रॉजन-

"सरॅ मिनि चनॣ पबसा चौबीमे धानो नोठ्रॅ ऄा घोंघी-डोका सेहो रॊछि ऄानरॅ।"

सारीकेसँ पबसा चौबी सिंगबा-रॅनौड् ऄा सतबाज धानक नामी ऄछि।

चौबी पहुँचिते रौकॣ रॅठो-रॅठीकेँ कहनक-

"तूँ सभ घोंघी-डोका रॊछि-रॊछि छिठ्ठामे बाख ऄा हम दुनू गोबे धान रॊछै छी।"

दुनू गोबे मिनि कबीरॅ पसेबी भबि धान नोठ्नक। रॅठो-रॅठी घोंघी-डोका छिठ्ठामे ऊँठौनक।

जखन घब चनैने तैयाब भेन तँ रौकूक पनौ रॅजनी-

"स्वतैने एकेटा गोनबि ऄछि। किछु नाब सेहो नेने चनॣ। रिछौना मोटसँ देरॅ।"

नाब रॊछैकान रौकॣ एकटा ऄठ्ऻया भबिक काछकेँ देखनक। देखिते रौकॣ काछकेँ ऊँनठौनक।

काछकेँ ऊँनठा देने भागन नग होग छै। ऊँठा कऽ तौनीमे रॉन्हनक। धान ऄा नाब पनौक माथपब देनक ऄा ऄपने रौकॣ घोंघी-काछ नऽ रॅठो-रॅठीकेँ संग केने रिदा भेन।

घब पहुँचिते धान बौदमे पसाबक। पड् ासीसँ ऊँखबि-समाठ ऄानि धान-कुटि कऽ चाऊँब तैयाब केनक। कौछुक मास्व रॅना बान्हनक। दोसब रॅर्तनमे भात बान्हनक। सभ कोग संगे खेनाग खागने रॅसन।

जाड्क समैमे सिंगबा-रॅनौड् ऄा देसहबिया धानक चाऊँबक नान-नान भात तेनगब ऄा स्वादिष्ट

হোগতে খছি। তৈপব সঁ কৌড়ক মাস্ব খপনে তেনসঁ এঁঠন-এঁঠন, ভাতপব পড়ি তে ভাতো তেনসঁ তব-ৰতব ভঽ গেন। ৰৌকূ ৰঁমবোষ্টিযা হাথসঁ ভাত-মাস্ব ৰঁষ্টৰোঁ কবৈত খা খেৰোঁ কবএ। খেনাগ খধপেষ্টা ভেন তঁ পানি পীৰ পিযাস মিঝা নহমব স াঁস নৈত ৰাঁজন-

"এহেন খেনাগ ভাগশানীএ নোক খাগএ। বাজা-মহবাজাকেঁ নশীর নগ হোগ ছৈ। ঙা খেনাগ দেখিতে কেহেন-কেহেন সাধ্-ৰৰাঁজীকেঁ সেহো মন ননিচা জেতগ।"

ভোজন কেনাপব ৰৌকূ ঘূব পজাবি দেহ ষৈনকৌনক। ৰনৰাঁরানী খবামসঁ স্বতৈনে ঠেহ্ন ভবি নাব ৰিছৌনক খা ৰাঁন-ৰচ্চাক সংগ ওগপব স্বতন। খা ঙঁপবসঁ গোনবি ওঠ়ি নেনক। কনীকানক পছাতি সৰহক দেহ গবমা গেনৈ।

ৰনৰাঁরানী হাফী কবৈত পতিকেঁ কহনী-

"ওঝকা মেহনত সাফন ভেন। এহেন ৰিকষ্ট সমৈমে এহেন খেনাগ খা এহেন ওঠ়না ৰিছৌনা মিনন।"

নীক খরসব দেখ ৰৌকূ ৰাঁজন-

"ঙা ছী সরস্ক স্বখ। এহেন স্বখ বজো-বজরাবকেঁ স্বন্দব মহন খা সজন পনংগপব নগ ভেষ্টৈএ। খপনা দেখিযো তব নাবাযণ খা ঙঁপব গোরিন্দ ছৈ খা ৰীচমে ৰৌকূক পবিরাব খবামসঁ স্বতন ছৈ। নগ কোনো ডব-ভব ছৈ খা ৰঁগনেমে কাসী মৈযাক দিন-বাতি পহবা পড়ৈ ছৈ।"

মিথিনাক মাষ্টিমে পসবন কহরী (সংকননকর্তা- বাম রি নাস সাহ্)

1. এক তঁ বাকস দোসব নোতন।
2. ক্ষমহবপব সি ত্তথা চোখ।
3. চষ্ট মংগনী পষ্ট রিখাহ।
4. মংগনী রঁবদক দাঁত নৈ দেখন জাগত।
5. খেত খাএ গদহা মাবি খাএ জোনহা।
6. ক্ষঁহ দ্রঁবাক কনিযাঁ সরঁহক ভৌজাগ।
7. রাঁরাঁজীক রঁেন হাথে–হাথে গেন।
8. পঠ়ন স্বগ্গা রৌক রঁনন।
9. হগরাঁ মানএ রঁঘরাঁক ডব।
10. ডূমি কঽ পানি পীরী তঁ একাদশীক মাগও নে জানএ।
11. চোব–চোব মসিঔত ভায।
12. সড়নো ত্তন্না তঁ বেহ্ক দ্না।
13. সখ্থা সড়ৌ তঁ খৈব ঘমৈ।
14. পিখাস নে জানএ ধোরী ঘাষ্ট, প্রীত নে জানএ ওছী জাতি।
15. নীন নে জানএ ষ্ট্টন খাষ্ট, চোব নে জানএ গংগা ঘাষ্ট।
16. ধর্মক সোবি পতান তক।
17. নোঠগব দেহ সি নৌষ্টী নেনে জাএ, দনকন–দনকন নৈহবা জাএ।
18. রঁনিযাঁ কাষ্টে চি ন্হাবকেঁ, ক্ষক্ষব কাষ্টে খনচিন্হাবকেঁ।
19. খাগনে নাগ নৈ, ক্ষঁহ পোষ্টেনে মি ঠাগ।
20. ছোষ্ট খিখিবকেঁ মোষ্ট নাংগবি।
21. ভোজ ভাবী দানি খেসাবী।
22. হাকীম ছোষ্ট গজনাশি ভাবী।

23. ডুঁপবসঁ ফ্ষীষ্ট–ফাষ্ট নি চ্চাঁসঁ সিমবিযা ঘাষ্ট।
24. মাবি কম রঁপহাবি রঁসী।
25. থপনে খাএ দোসবকেঁ নজাএ।
26. কোঠ়ি যা রঁবদক ফূংফকাব ভাবী।
27. হঁসি কঽ রঁজৈ নাবী তীনূ কূন রিঁ গাড় ী।
28. ভাএ–ভৈযাবী ভৈঁসী সীঁগ জখনে জনমন তখনে ভীন।
29. ছোষ্ট গহরঁবমে নমহব পূজা।
30. ভাদরক ওন কি ছ খাএ বাজা কি ছ খাএ চোব।
31. কান তঁ সোন নৈ সোন তঁ কান নৈ।
32. খান্হব গ্বরু রঁগীব চেনা মাঁগে গ্বড় দৈত ঢেনা।
33. পাপ নৈ পাপী নজাএ খাঁখি ক্ষনি গংগা নহাএ।
34. ভজন কম হবিরোঁন রঁসী।
35. চানি চনী সাদা নি মহএ রাঁপ–দাদা।
36. খণ্ডী–রঁঘণ্ডী গাছ ভেন সভ পাখণ্ডী মহন্থ ভেন।
37. নিচ্চাঁসঁ ঝব ডুঁপবসঁ ভব তেকবা নৈ কোনো ডব।
38. মান কেকবো কমান কবএ কোগ।
39. রঁকবী কবএ পাঁজ তঁ মহত্তমানি কহৈ হমবে গড়ি যরঁএ।
40. জুন্না জবি গেন ক্ষদা এঁঠন নৈ জবন।
41. খাঁখি রঁন্ন ডির্রাঁ গাগরঁ।
42. ভবি দি ন মনহা পানি মে নহাগক ফ্র্সতে নৈ।
43. জনমন রঁষ্টা মবন জাগ দোসব নে ওঝাগ কবএ জাগ।

44. मानिककेँ नेरॉने नै चोव कवए दौनी।
45. ङतहव कर्मी घवहव मोग।
46. ऋवजै काशी भोगए रि सनाथ।
47. देहातक दानि –भात शहवक सीता–वाम।
48. रॅहिवा नाचए ऋपने तान।
49. गज भवि नै फाड़े थान भवि हावै।
50. तेन घटैत गेन नाच रॅठ़ैत गेन।
51. जे वोगीकेँ भारॅए से रेदा फवमारॅए।
52. डाक्टैव नग गेने द्‌ख ओऋहा नग भूत।
53. नंगटै नहाएरॅ तँ गावरॅ कथी।
54. चोवरॉ कमाएन सभ खाए ऋसगव चोवरॉ जहन जाए।
55. ऋनकव दानि –चाउँव ऋनकव घी हमवा पवसैमे नगैए की।
56. चाउँव–दानि केकवो घी पवसै दनान।
57. जड़, जमीन, जोरू जोवकेँ नै तँ केकवो ओवकेँ।
58. चोवक ऋागू तानाकी रेंगमानक ऋागू केरॉना की।
59. घसटैन रि ब्या नपटैन जोव नै कि छ तँ थोड़रॉ थोड़।
60. कनफूकासँ चुन्हि फूका नीक।
61. गाए रि काएन चवराहि तवे।
62. पानि मे मछवी नौ–नौ कुटि या रॅखवा।
63. रॅंनक रॅंन गेन नौ हाथक पगहा संगे गेन।
64. धनि छी ऋहाँ धनि छी हम चनै छी ऋहाँ निहावै छी हम।

65. দস সেবে নৈ খগবাগ দস সমাংগে খগবাগ।
66. নগমে কচহবী ঘূস দহ রেঁগাব।
67. ধূর্ত্তসঁ মূর্খ নীক।
68. মন হর্ষিত তঁ গারী গীত।
69. সৌ চোট সোনাবক এক চোট নোহাবক।
70. খাগক মন খপনা তঁ গোসাগ দেনক সপনা।
71. রাঁবহ রাঁপূতমে তেবহ হ্ক্কা তগমে উঁঠৈ ধক্কম-ধ্ক্কা।
72. পসেবী ভবি নৈ খাএ সেব ভবি নে ব্দসন জাএ।
73. খনেব গাএক ধবম বখরাঁব।
74. কেকব খেতী কেকব গাএ কোন পাপী বোমএ জাএ।
75. নমবী জাএ তঁ জাএ হ্মদা দমবী নৈ জাএ।
76. খপনে কবনী ভেনৌং রঁতবনী।
77. উঁ দি ন কহি যা এতৈ জে প্বতোহ্ কহত রৌংগমবনা।
78. গৈ মৌগী তোহব খঁগনে কেত্তৌ।
79. খপন কনহী চন গৈ খোনহী।
80. কনহী গাএক ভিন্নে রঁথান।
81. খন্হবা দ্সএ ডি ঠবাকেঁ।
82. খপনা নে নন সাগ তোড়এ চন।
83. ঘবমে ভাত তঁ পড় াসনী পকড়এ হাথ।
84. ঐ রেঁটৈরাঁসঁ নৈ পোতাক খাশ।
85. হবরঁবী রিঁখাহ কনপঞ্জী সেন্নব।
86. রঁড়-রঁড় জন ভাঁসন জাএ গদহা কহএ কেতে পানি।

87. অপন হাবন রহ্ক মাবন কি যো কেতৌ নৈ রাজৈত।
88. ঝগড়া নে দংগ চ্ন-তমাকুন রন্ন।
89. সত্তবি মূস খা রি নাগ হজ কবএ জাগ।
90. দূধগবি গাএক নথাব সহএ পড়ৈ ছৈ।
91. নদীকাতক চাস রৈবনী নগক রাসক কোন ঠীক।
92. রব ভেন র্বুড়া রক তঁ জৈত্তক কে নেত।
93. সাত বাব সাত পেঠ সাত রাভন এক পেঠ।
94. মন্বখ এক বংগা, জাতি রহ্বংগা।
95. মি থি না মৈথি নীক ঝগড়ামে মৈথি নী ডূমি গেন সরর্গ খারি স্বরুজ ভেন।
96. র্বুড়া রক কেব ধন ভেন তঁ করি নাহা কর্হী উঁপাস পড়এ।
97. রুসন কনিযাঁ দূধ দূধ-ভাত নৈ খাএ ডোকা তি মন নে ঘ্সকন জাএ।
98. হানমে ভেন ররাজী তঁ দানি কেঁ কহনক রৈক্ষন্ঠী।
99. নর নৌকাব র্বূঠ রৌকাব।
100. খাপে প্বত্তা রাপে খাএ এক্কা হিস্সা রাহব নে জাএ।
101. সৌ বত্তী সোনা নৈ নীক এক বত্তী তকদীব নীক।



ননন ক্ষমাব কামত– ননমনি যাঁ, স্বপৌন। গোন গাঁগ্লিশী গার্ডেন নির্মনী।

<u>ভগরানে ভরোসে</u>

কোসীক কছেবমে একটা ছোট–ছীন গাম– ছোটপ্পব অছি। ছোটপ্পবমে খটক্ষদাস নামক এগো মধ্যমরর্গীয কিসান ছথি। কোসীক রিঁকবান ৰূপসঁ গ্রামীণ নোকনি বেহন–খেহন ছথিযে। সভ সান কোসীকেঁ মেনৈত আএন ছথি। খটক্ষদাস ধার্মিক প্ররৃতি ক নোক ছথি। প্রগ্নতি ক রিপতিকেঁ মেনৈতো ভগরানপব হিনকা অনন্ত আস্থা ছনহি।

অখাব মাস আএন। কোসীক মি জাজ রিঁকবান হ্খ নগন। নোকসভ আন সান জহাঁতি তৈযাবীমে বহথি। ক্ষদা ঐরেঁব কোসী অপন রাঁঠ়া ক অনহোনী–ঘন্টী শ্বৰুহেসঁ রঁজরঁহ নগন।

নোক সভকেঁ ভনক নাগন জে ক্ষসহা–রাঁন্হ টুটি গেন! সৌংসে দিগা বিমে আতংক জকা ঁ মচি গেন! গাম–ঘবমে রাঁঠ়া ক পানি পসবএ নগন। সভঠাম হাহাকাব মি চ গেন! সভ কি যো অপন–অপন জানমান নেনে ডুঁচকা স্থান দিস ভাগ২ নগন। জগহ–জগহপব ফঁসন নোককেঁ রাঁচরৈঁ খাতিব নাহ চনএ নাগন। সভ কিযো ঘব–রাঁব ছোড়া দেনক ক্ষদা খটক্ষদাস অপন ঘবক ছতপব চঠ়া ক২ ভগরান–

ভগৱান কবএ নগনা।

ভীষণ ৰাঁঠ়ি ক চপেটমে খাৰি সৌংসে গামক ঘব–মকান ড্মঽ নগন। জগ ঘবক ছতপব খষ্টক্ষদাস ঠাঠ় ছনা সেগো নকসকাগত–নকসকাগত ড্মি গেন। ক্ষদা খষ্টক্ষদাসকেঁ খখনো খপন মা নিকপব খষ্ট্ট ভবোষ ছনিহেং, ও খপন ঘব নৈ ছোড়়ননি।

গামক একগোষ্টে ভসাঠীৰঁনা নকড় িকেঁ জোড়ি ডোংগা–নাৱ ৰঁনা খষ্টক্ষদাসকেঁ ৰাঁচৰৈঁনে খাএন। ঘব নগ খাৰি সোব পাড়়ৈত কহনখিন–

> “ভাগঽ হৌ খষ্টক্ষদাস! তূঁ কিএ এতএ খঁষ্টকন ছহক? ভাগঽ নৈ তঁ জান নৈ ৰাঁচতঽ।”

খষ্টক্ষদাস ঘৱেপব সঁ ৰজনা–

> “তূঁ সভ ভাগি জা, হমবা কিছ নৈ ভঽ সকত। হমবা ভগৱানপব ভবোস খছি । ৱএহ হমবা ৰাঁচেথি ন।”

নাহৰঁনা খপন জান ৰাঁচৰৈত খাগূ ৰঠ়ি গেন। ৰাঁঠ়ি ক স্তবমে খাবো বৃষ্কি হোএত গেন। খষ্টক্ষদাসক ঘবক ছতপবসঁ খাৰঁ পা নি ৰঁহএ নগন।

একটা সবকাবী খাদমী মোষ্টব নাৱ নেনে হঁসন নোক সভকেঁ তাকি বহন ছন। খকষ্ট্দাসকেঁ খঝপপে দেখি চকবি কঽ সোব কেনক–

> “কে ছহক! খাৰঁঽ হমবা নাৱপব ৰৈঠ জা, ভীষন ৰাঁঠ়ি খাৰি বহন ছৈ, জান ৰাঁচাৰঁ।”

খষ্টক্ষদাস হিনকো ৱএহ উঁতব দেনখি ন–

> “তূঁ সভ ভাগি জা, হমবা কিছ নৈ ভঽ সকত। হমবা ভগৱানেপব ভবোস খছি ৱএহ

হমবা বঁচেথি ন। ”

নারপব খাবো কিছু নোকসভ বৈসন ছন, নারবৈনা খাগূ বঁঠ়ি গেন। বাঁঠ়ি ক পানি খাবো বঁঠ় ৈত গেন। কনীকানক পছাতি ফেব, একটা হেনীকেপ্টববৈনা খাএন। হিনকা দেখিতে ডুঁপবসঁ বস্সা খসবৈত চিকবি কহ খবাঁজ দেনকনি–

“খাৱ! বস্সী জোবসঁ পকড়! হম খীঁচৈ ছিযৌ। হম তোবা স্ববক্ষি ত জগহপব পহুঁচেবৌ। ”

খষ্টক্ষদাস হিনকো নকাবি দেনখি ন–

“তূঁ সভ ভাগি জা, হমবা কিছু নৈ ভহ সকত। হমবা ভগৱানেপব ভবোস খছি, ডঁৱেহ হমবা বঁচেথি ন। ”

হেনীওকেপ্টববাঁনকেঁ হাবি কহ জাএ পড়ন। খন্তমে খষ্টক্ষদাসকেঁ স্বস্মক বস্তা দেখএ পড়ন।

জৱ ভগৱানক দববাঁবমে হাজবীক সমএ খাএন। খষ্টক্ষদাসক মনমে ভগৱানসঁ জে ডঁন্হেন–ডঁপবাগ বহনি সে কহহ নগননি –

“হে নাথ! হমবা খহাঁক প্রতি খষ্টুষ্ট বিসৱাস ছন, খষ্টুষ্ট ভবোষ ছন জে খহাঁ হমবা বঁচবৈ খাতিব নিশ্তকী খাএৱ। হ্মদা এনা কেনা ভহ গেন, খপনে হমবা কিএ নৈ বঁচেনৌঁ ? ”

ভগৱান জৱাঁব দেনখি ন–

“তোবা খাৱ কেতে মদতি হমবাসঁ চাহী ? দূটা নাববৈনাকেঁ হমহী ভেজনৌঁ তূঁ নৈ এনঁ, একটা

फेनीकेप्टैब बनाकेँ सेहो भेजनौं, तूँ नै एनँ। बाजह, आब आबो केते तोहब सहायता हम कबब।”

दहेजक मावि

एकटा समए छल जब शिबचबणकेँ चावि बिगहा खेत, जोड़ भबि बबद, कटही गाड़ी आ मान-भेंस सँ दुआबि भबल-पूबल बहै छल। हिनकब जिनगीओ खेति तएमे, खेती कबैत बीतल अछि। खेतक उँपयोगी सभ समान, जेना हब, पालो, चौकी, कोदावि, खुबपी, हँस्सुआ, गन्नादि, एखैनो दुआबिपब पसबल अछि, हदा शिबचबणकेँ आब खेत नै बँचल। खेतक बिन्नु सभ ओजाब झाम बुबैए आ बीज खेने जाइए। एगो बुड़बा नेङबा बबद टुटैनाहा नाधि पब टैकटैकी नगौने ताकैत बहैए। कटही गाड़ीक तकथा सबैककेँ खास्सन जाइए। एकटा चक्का माटिमे धसल आ दोसबक डेना सभ छुटि-झबिकेँ बिखबल जाइत अछि।

शिबचबणकेँ तीनटा बेटी बामेशबी, कालो, पाबो आ तेपबसँ बिबजू, पनबह सालक सभसँ छोटे बेटा अछि। शिबचबण आए बिना जथा-पथाक नोकमे गिनल जाइत अछि। एकब काबण अछि तीनटा बेटीक बिआह। सभटा बेटीयो तबे-उँपबे छेनिन तँए बिआहमे आ दहेजो तिनकक बोंझतब दबाएकेँ नकीब सँ फकीब बनि गेल अछि।

दहेज! ओ केहन प्रतिबोधी प्रथा छी जेकब शिकाब शिबचबणेटा नहि कतेक आबो नोक भेल अछि। मोन-भाब तँ मान-जान आकि चीज-बीतक

काएन जाइत अछि। आइ जाहि वस्तुक दाम प्राप्त होइत अछि, ओ चीज कीननिहारकेँ सौंप देल जाइत अछि। तखन ई केहन प्रथा छी, जेकर मोल-भाव केनहि बिकाइ, आ कन्या रूपी वस्तुओ, ओकरा आदमी लेने जाइए? परिवारमे एकटा आर्थिक वस्तुक माने होइत अछि, काम-काजमे आ परिवारक ओहि उपार्जनक रास्तामे एकटा अतिरिक्त श्रमिक। दोसर दिशि, कनियाँक पिताक परिवारमे एकटा कमाउ सदस्यक घटती भऽ जाइत अछि। क्षति तँ कनियाँक पिताकेँ होइत अछि, तखन क्षतिपूर्ति वरक बाप आकि वरकेँ प्राप्त होइत अछि। दहेज! कोनो सहेजकेँ बाटैक प्रथा छी?

शिवचरण पचपन वर्षक आ हुनक पत्नी पार्वती पचासक अवस्थामे छथि। हुनका एक बीघा जमीन वचल अछि। पछिला वर्षक एकलौता बेटी विवाह वृद्ध माए बापक वृद्धा-अवस्थाक पहिया खीचैले पत्निपिते बहिन की असहनीय कर्जक बोझ तरमे तेहेनकेँ दबाए गेल, जेना उनाव भेल कटैही गाड़ीक पाछाँ असगर वरिनराम दरिकेँ हर-हराए उठैए। तीन महिना पहिने छोटकी बेटी पारोकेँ विवाह सम्पन्न केलखिन, जैमे कर्जा-वर्जा भऽ गेल बहि न। तैपरसँ, एहि वेरुक गहुँमक खेती तेहेनकेँ धोखा देने छल जे गहराइ भरि फसल घर नै आएल छलनि। माघ फागुनमे, जर फसल नीककेँ पकल जाइत छल, पछआ बसात, बिहाड़ि आ पाथरक वज्रपात तेहेनकेँ भेल छल, जे सभ किसानक फसल माटिया माटि भऽ गेल बहिन आ काइल-धाइल खेती नोकसान भऽ गेल छल।

ओहिना शिवचरणक घरमे अन्न पानिक दिक्कत

চনি তে বহৈত ছন। হ্মদা এহি সান সনক দিক্কত, সাগতে কহিযো ভেন বহি ন। ওনাতঁ, রঁহ্তো নোক গামমে ওহনে গবীরীকেঁ মেন বহন খছি। সভক খপন জীরৈঁক তবীকা খছি। শিরচবণক ঘব ছ মাস চাঙঁব খা ছ মাস গহ্মক সহাবে কটৈএ। কহনো জাগএ, গবীরঁ নোক ভগরানে ভবোসে জীরৈঁএ। হ্মদা ভগরানক আঁ ংখি কখখৈন কেকবা পব ৎৈঁড় ভ২ জাগত খছি, ঙা কোণ বুঁঝি সকৈএ। ঐ রৈঁবি ধান মহবাজ তঁ খপ্পন পাবি প্ববেনখিন, হ্মদা গহ্ম মহবাজ খিসিযা গেনখিন। জন মজদূব সভ পবদেশ খাকি শহব খটৈনে চনিগেন। হ্মদা শিরচবণ ঐ বুঁড়হাবীমে কতে জাএত খা কী কবত ? সোচএপব মজবূঁব খছি।

রিকনা, নন্হীযা খা চৌঠিযা ঢেবরেঁ সঁ পজারঁ খটৈত খছি। তীন্বঠা গামক সভসঁ গবীরঁ ঘবক বহিন হ্মদা জহিযাসঁ পবদেশ খটৈ নাগন, গবীরী হিনকা সভক ঘবসঁ ভাগি গেন। হিনকা সভক জথা, প্বজী খা নীক নতা–কপবাকেঁ দেখি কতে নোকনিক হ্মॅ ংহ ননিযা জাঙএ।

রিকনা খাগযে কান্হমে পজারঁসঁ এন খছি, জে রৈঁদবামে শিরচবণকেॅ ং চবরাহী কৈবকেঁ খা খন্ন–পানি খাএকেঁ পোসন–পানন গেন বহি ন। মাঁগি–চাঁগি কেঁ খাকি কেকবো দেনহা, খংগা পেন্ঠৈ পহিরৈত ছেনিন। কতেক–কতেক দিন তকি , ফাটৈন–চিটৈন খংগা, পেন্টক রিচনা সিনাঙা টুঁটি জাগত বহি ন খা ভানবি সন ডॅ ংবমে ফব–ফব করৈত বহি ন। ততরেঁ নৈ, ডॅ ংবসঁ মটিযা–মাটি ভেনহা কছা, রিস্ঠী জঁকা ঝূনৈত বহৈ ছন। হ্মদা পহিন্বক রিকনা, খা খাজ্কমে খন্তব ভ২ গেন খছি। হিনকব বোনক খা চানি–চনন দেখিতে রনৈএ। জরঁ গাম খারৈঁএ তঁ নক্স স্বজ্কিকেঁ নরঁকা

जँघिया, नवँका गंजी आ नवेँ न्वँगी पहिरकेँ, काँखमे तीन रुपैयाक फिनिप्स रेडियो नइकेँ फ्नु भागसमे, दहिना हाथे न्वँगी उठाएकेँ तेना पकरैए, जेनाकी तवका स्वर्ग़ूकिक जँघिया ओहिना देखाइत रहैए। ई पहिरावा देखिकेँ कतेकोक आँखि पथराइत रहैत अछि।

जवँ जवँ विकना गाम आवैए, शिवचरण-पार्वती दुन्नू रेडियोक भेँट जरूर करैए। एहि रेडियोक शिवचरणक नचारी के नै जानैत अछि? विकना अपन सनाह आ सहानुभूतिकेँ प्रकट करैत आएन आ कहै छैन्ह-

"ददागौ, विरजू कक्काकेँ ऐरेब हमरा संगे पंजाब कमाइलने जाए दहक।"

पार्वतीकेँ ई बात पसिन नै पड़लनि। ओ बजली-

"एखैन! ई अजोह रेदवाकेँ? नै बौ बौआ, जो तुँ हुँ कमैहँ गामे मइ छै तँ कन्न रैठन बहै छै? खेती-बाड़ी, हव-हाव तँ कैइबते छै। असगर तँ बड़हसपतियो झूठे होयत छै। एकरा बाबू जीसँ आब नै सम्हरै छै।"

मुदा शिवचरणक विचार अलग रहि न। ओ अपन नचारीक जानैत रहथि जँ दु पाएक आमदनीक जोगाड़ नै हेत तइ आब गुज्जर नै चलत। बजलथिन-

"कमौत नै तइ ई खेतके ओगरनेसँ किछु नै हाएत। उवँजा-बाड़ि साड़हे बाँगस अछि। एकर भरोसे काज नै चलवँना अछि।"

हँमे हँ भरैत फेरि शिवचरण बाजे छथि-

"हँ बो विकना हमर मन छौ नने जाहि तू अपने संगे। नीक काम धराए दियहनि।"

दौनमट्ठैन हैत विरजूकेँ पंजाब जाइने सहमति

রৈনিএ গেল। পার্বতীকেঁ রেঁটো মোহ মে মন ঘরবাগত বহলৈ ক্ষুদা মানএ পবন। ভড়া খর্চা রিকনে গছনক। জাএক দিন এল। পার্বতী দূ কিলো খেড়হি রেঁচকেঁ রিবজূ রাস্তে রঁ্টখবচা রনেনখিন। দবভঁগা সঁ খমৃতসব কে তীন রজে দুপহব মে ট্রেন খছি। নির্মলী সঁ ছ রজিযা ভোবকা গাড়ী পকবৈনে পাচে রজে সভগোটে রিদাহ ভেননি। রিবজূকেঁ স্টেশন্ বন ছোবৈনে পার্বতী মাথ পব রেঁগ খা মাথমে রঁ্টখবচাকেঁ পন্নী নেনে রিদাহ ভেলী। রিবজূও গোসাগকেঁ গোব নাগি, মোহন্নাকেঁ রূঁঠ পূবানকঁ পাএব ছরৈত খাগা রঠন। শিরচবণো সংগ নাগন রিদাহ ভেননি। রাটে ভবি রিবজূকেঁ সমঝারৈত রূঝারৈত,

"খসগব কতৌ নৈ নিকনিহন। মন নগাএকেঁ কাম কবিহেন। কেকবোসঁ ঝগড়া ঝাটি নৈ কবিহেন। টেনিফোন কবৈত বহিন।"

গনাদি তবহসঁ সিখারৈত স্টেশন পব পহুঁচন। ওমহব পার্বতীকেঁ মন রৈথিত ছৈন, আঁখি ডবডবাএল খছি ক্ষুদা নোব ভিতবে ভিতবে পিরৈত বহী। সাড়ীসঁ ক্ষুঁহকেঁ ঝাঁপনে, মনক রেঁদনাকেঁ মনেমে দরেনে, রিবজূকেঁ স্নেহক দৃষ্টিসঁ দেখৈত, গাড়ী খুনৈকেঁ গন্তজাব কৈব বহলী হেন। কনীএ কানকেঁ পছাতি গাড়ী স্টেশনসঁ সসবে নাগন, পার্বতীকেঁ মন খাডঁব রিহল মোযত গেন। জেনা দুধাক গাযকেঁ নেব্ধ দুধ পিনাকেঁ পছাতি নংগবী ডঁঠাএকেঁ মন্নছা মারৈত জব নজবিসঁ ওঝন ভহ জাগএ খা ওম্হব গাএ কান খড়া কৈব রৌমি দিএ নাগৈ খছি। তহিনা পার্বতীকেঁ মন মোগয কানী, ক্ষুদা সোচৈ ছথিন্হ জে রেঁটোকেঁ সামনে কানব ত রেঁটোকেঁ

মন দ্খী ভ২ জাএত। গাড় ী বেস পকবৈ নাগন, একরঁবি ফেবি রিবজূ খঁতিম ঝনকনে মাএ পিতাকেঁ ঁ তবফ তাকনক। গাড় ী খাগা বঁঢৈত গেন খা পার্বতীকেঁ ঁ ধেবজকেঁ ঁ বাঁন্হ ঠ্ঢৈত গেন। খদৃশ্য হোযত গাড় ী পবসঁ ঁ নজবি ঘ্মি খাএন খা পার্বতী ভোকাবি পাবি কেঁ ঁ কানে নাগনী।

জেঠক মহিনা খাএন। সমএসঁ ঁ বঁবখা হ্এ নাগন, খা কিসান সভ বোপনীমে ভিব গেন। শিরচবণো একটা বঁবদক ভজৈতী হবসঁ ঁ কাম চনাবেঁ নাগন। এক দিন ছোড়ি এক দিন হবকেঁ ঁ পাব হোযত বহেন ওযসঁ ঁ কতএ সম্হবত ? ঝদা বহথি খসগবে। খবস্থা হিনকব কিনাবে পকবনে জাএত বহেন। চিন্তা ফিকিব, তৈপবসঁ ঁ খান পান মে কমি, দেখৈমে সত্তব সানক নাগৈত বহেন। সবীব স্বখিকে জেনা জিমহবকে সঙ্গা সন ভ২ গেন বহেন। এক একটা নস দেহ পবহসঁ ঁ ঙুঁপব খনৈগ গেন বহেন। পজবাকেঁ ঁ, পীঠকেঁ ঁ খা খানো হাব পবকেঁ ঁ মাঁস জেনা রিনাএ গেন বহেন। সচমে, খন্হবিযা বাতিমে কোয খনচিন্হাব হিনকা দেখতা ত খসনি ভূত সমৈঝ বেঁহোশি ভ জেতা। ঙা ত২ জবাঁনীকেঁ ঁ খাএন পীযন কাযা ছৈন্হ জে চিমঠি খা কবগব ছৈন।

খায পনবহ দিনসঁ ঁ ভবি ভবি দিন খেতমে কাম কবৈত ঝূন ঝূন ভ২ গেন খছি। জেনা খন্ন পানিসঁ ঁ ভেঁটৈ নৈ। সঁা ঁঝ হোযত ঘব খাবৈঁযে খা বোঁখাব সঁ ঁ হ্হ্বাএ নাগৈএ। গামক বৈঁদ্য সঁ ঁ ঙনাজ কবেনক ঝদা কোনো ফর্ক নৈ পবন। এক ত২ খেতিকেঁ ঁ তবক খা দোসব হাথ ঝঁ ঁঠী খনী। নীক ডাক্টবসঁ ঁ ঙনাজ কতএ সঁ ঁ কবাএত ? খহ্ হানত মেঁ, জাবেঁ

धरि देहमे शक् लागल शिरचरण खेतमे खून पसीना एकाकेँ करैत रहल। जेना तेना खेति सम्पन्न भेल।

खेति सम्पन्न होयते, शिरचरण नीक जेकाँ बीमार भऽ बिछान धरि लेलक। बिन्नु पायकेँ अनाज कतए सँ आएत? ओहुना भादो मासमे किसानकेँ घर खगले रहैए। कर्जा केँ नाम पर लोकसभ ठाढ़ो नै हुए दैए। सेठ साहुकार आ पूँजी पघा बना लोक बिन्नु गहना जेबरकेँ बातो नै करैए। पारोकेँ द्वारागमन नै भेल रहैक तँए नैहरे मे रहौ। पिताकेँ हालति देखि पारोकेँ नै रहल गेली, ओ अपन बुच्चि आ हँसुली निकालकेँ माए पार्वतीकेँ दैत कहली

"माए! ल ने, एकरा बन्हकी लगाकेँ बाबू जीकेँ अनाज कर।"

पार्वती कि मन एकर स्वीकृति नै दैत रहैन मुदा पतीकेँ जर्जर अवस्थाक देखि ओकर स्वीकार कऽ सेठ लूचाय ठाकुर लऽ रखि पनरह सए टाका उठाए शिरचरणकेँ तक्षशिलाक डा. डी. एस. प्रसाद सँ देखाए दबाइ चलाबै लगली। भोर साँझ आ दुपहर पनरह दिनक दबाइ केँ डोज रहैन। दस दिन धरि दबाइ चलल, मुदा हिनका स्वास्थमे कोनो उतार चढाव नै भेल। उल्टै कमजोरि तेहेनकेँ बढ़ि गेल कि बिछान परसँ उठब बैसबमे समस्या भऽ गेलनि, खोराकि सेहो साफके कमि गेल। चेहरा उसठ भऽ गेल, पेट साफे बैठकें पीठमे सटि गेल। रबरिया लैग गेल। आब शिरचरण भोरे स्वति उठिकेँ बाध दिशे बिदाह भऽ गेला। पार्वतीकेँ बूझना परल, आगत हिनकर मन नीक भऽ गेल अछि।

ৠকৈত প্ৰছনখিন–

”কতএ ৰিদাহ ভঽ গেনিয ভোবে ভোব ? “

শিরচবণ সূখনে মনে ৰাঁজন–

”ৰাঁধ দিশে জাযছী, ৰঁহ্তে দিনা ভঽ গেন হেন খেতকেঁ দেখনা । “

শ্বিচবণকেঁ পাছনাগন পার্ৱতী পীঠে পব ৰিদাহ ভেনী । দ্ন্ব ৰেঁঞি সভঠা খেতক খাবি পব জাঽ ধান নাগন হসনকেঁ নহনহাএত হবিযানি দেখি হর্খিত হোযত ৰাঁত কবৈ ছথি । শিরচবণশ্

”দেখ্ ! ঐ ৰেঁবি সভঠা গাছ জেনা হনৈশিকেঁ ঙঁগনৈ হেন । “

পার্ৱতীশ্

”এহন বহত তখনে নে ? কে জনৈএ মোসমক মিযাদ ? কহি ৰৌদী নৈ ভঽ জা ! “

শ্বিচবণ ঙঁঝষ্টিকেঁ ৰাঁজনশ্

”ছোকনে ! কাহ্নি কি হাএত কৈ জনৈএ ? এখ্নি নীক খছি তঽ ৰ্ঁঝিনিযন খাগ্বরো নিকে বহত । “

ঙঁপব খাসমান মে কড়া যা মেঘ খা স্বকজকেঁ ৰীচ ন্বকা ছিপিক খেন ভোবেসঁ চনৈত বহেন । ঐ খেনমে কড়া যা মেঘক জীত পক্কা ৰ্ঁঝনা গেন বহেন । দক্ষিণশপূৰ্ৱক কোণসঁ কড়া যা মেঘক একটা খূৰ তবগব খছাড় খন্হাব কেনে বমকন খাএন । জে হবহবাএত খা হষ্টকাব নগাৰৈত, ‘জে জতে কতৌ ছিমী খপন খপন ঘব জাএ জো, খায হম্মব দিন ছৌ হেন । ’ শিরচবণ খা পার্ৱতী মেঘক ঙঁনষ্টন মিযাদকেঁ ভাঁপ, ঘব দিশে ৰিদাহ ভেননি । হ্মদা ঘব পহুঁচৈত ধবি দ্ন্ব ৰেঁঞি নীক জঁকা ভীজ গেননি ।

গাযক দূধ খা ৰোটী খেনাগক পছাতি দৰাঁগ নেনক

ঋা শিরচবণ দবর্জা পঽ জা বৈসন। পার্বতী রিছান ননে এনী ঋা ভিঁএ মে রিছা নেঠ জাএনে কহননি। শিরচবণ নেঠ তঽ গেন হ্মদা ছটশপট কছশ্মছ কবৈত পেটমে দর্দ কহি কহবে নাগন। দর্দ বঁঢৈত গেন, ঘঁটে ভবিক পছাতি শিরচবণ ঋসহায হোযত, স্বধি বুধি সভ চৈন গেন। সৌসে ঋাঁগনমে কনা বোহটি শ্বরু ভঽ গেন। ঋবোসি পবোসি সভ জমা ভেননি। শিরচবণক ভাতিজ হ্মঁগানান ওা হান দেখি কহএ

”কাকী! কি দেখৈ ছিঐ! উঁঠার! ডাক্টব নে নঽ চন্থ।“

হ্মঁগানান হঠা প্বঠ জবাঁন বহথি। হঁ ায হঁ াযকেঁ কন্হাপ উঁঠেনক ঋা নির্মনীকেঁ ডা. কে. এন. গুপ্তা নঁগ নঽ গেন। পার্বতী ঋা পাবো দুন্থ মায রেঁঠী পাছসঁ হাযশরাঁপ কবৈত দৌবন এনী। ডাক্টব মবীজকেঁ পবীক্ষণ কেনাক পছাতি গমবজেন্সী দবাঁওা নাবৈক ঋাদেশ দেনখিন ঋা প্বছৈএশ্

”কোন ডাক্টবসঁ গনাজ কবাবৈত বহিযনি? “

পার্বতী মঁ ্হপ ন্থঋা নঽ সভটা বাঁত বঁতেনখিন। ফেবি ডাক্টবসাহেবঁ বাঁজৈএশ্

”সভটা উঁন্টা প্বন্টা দবাঁওা দঽকে পেসেন্টকেঁ জান মাবি দেনক হেন। খবাবী কিড়নীমে ঋছি ঋা দবাঁওা খানী বঁনড প্রসব কে দকনক হেন।“

নসমে পানিক বোঁতন ঋা তীনটা সূওা ঋাবো দবাঁওা দেনাক পছাতি ডাক্টব সাহেবঁ একটা ডিনেরবী পেসেন্টকেঁ হোমকাঁন পব চৈন গেনখিন। কনীএ কানক পছাতি শিরচবণকেঁ হ্মঁহসঁ গৌঁজ পোটা চনএ নাগন। হিচকী জোব জোবসঁ উঁঠি গেন, দেহ হাথ তনাএ গেন ঋা ঠন্ডা ভঽ গেন। ফেবি একবেঁব

কনা বোমষ্টি পসবি গেন।

ভোনা

খাম তবহসঁ দেখন জাগএ জে সতমাগক খিধাঁশি জোব-সাবেসঁ নোগ কবৈএ। খগব কোনো বঁচ্চাকেঁ সতমাএ বহএ তঁ ওকবা নোকক সহান্বভুতি বহত খছি। হ্মদা কোনো সোতেনা বাঁপক জিকিব কেতৌ হোগত নৈ দেখন জাগএ। জখনি কি ভেদ-ভাব দ্নূঠাম হোগত খছি। ভানো খপন মাএ দ্খনীক দোসব বিঁখাহমে পছিনগ্বখা বঁনি খাএন বহএ। কবম বুঁড়ন ছেননি দ্খনীকেঁ জে বিঁখাহক দসে দিনক পছাতি বিঁখহ্খা ঘববঁনাক দেহান্ত হেজাক বৈঁমাবীসঁ ভ২ গেন ছন। পতিক গ্বজবনাসঁ দ্খনীক নাতা ওগ ঘবসঁ ঠুঁটি গেন। হ্মদা খাশাক কিবণ নখ মাস খনহবিযা বীতনা পছাতি ভোনাক জনম ভেনাসঁ ফেবি চমকি ডঁঠন। দ্খনীকেঁ নাগন জেনা বৈঁটাক জনমসঁ বিঁখহ্খা ঘব চিকবি ক২ সোব পাড়নকনি হ্মদা গুহো গজোত গহননগ্বখা ভ২ গেন, চানপব দাগ নগি গেন। সোসবাক নোক দ্খনীকেঁ স্বীকাব নৈ কেনক, কিযো হ্মনচ্ছনী তঁ কিযো হ্মননাসনী কহত সদাক নেন ঠাকেব মাবি দেনক। তগ দিনমে সমাজ খাকি বিজ্ঞান ওতে প্রগতি নৈ কেনে ছন জে ডী.এন.এ খাকি খাবো জাঁচসঁ সাবিত কবিতে জে ভোনা দ্খনীক জাগজ সন্তান ছী।

সমৈক পহিযা নাচৈত গেন। দ্খনী একটা বৈঁটা ৰূপী ধনসঁ সবুব কেনে জীনগীক স্বখ-দ্খসঁ তানমেন বৈঁসবৈঁত পাঁচ বঁবখ কাটি নেনী। খাবঁ ঢৈনা-মোহননা

आ समाजक लोक सभ दुखनीकेँ दोसर रखिबाक गप-सप करए लगल। होइत-होइत खुशैना गामक मोहन दाससँ दुखनीक सम्पर्क भेल, जेकर एकटा रबैया सोनवा रखै छेलै आ एगो बबैया-फ्लोटोन्त भीन भइ कइ रहै छल। मोहनाक थोर-बहुत खेत आ चारिटा भैंस रहनि जेकर दूध बेचि गुजर-बसर करैत छला। सम्पर्क भेलासँ दुखनी-मोहनाक जीवन हरियरी तँ घुमि आएल मुदा भोला जे पिताक खातिर जनमसँ बेकल छल, ओकरा पिताक सुख नसीब नै भइ रहल छेलै जे मोहनासँ भेटैबाक चाही।

भोलाकेँ बापरूपमे पिता भेटैल, मुदा ऐ अवरोध लेलाक जरूरतसँ हिनकर सतबाप साफ कइ अलभित छथिन। मोहनाक सम्पर्क करैत धरि दूटा कमौआ प्राणी घर आएल, दुखनी पत्नी बनि घर-आँगनक काम-काज सम्हारली आ भोला पोसल-पालल बेटा रूपमे भैंसक चरबाहि आ घासो भूसामे लगाओल गेल। दुखनीक इच्छा छेलनि जे भोलाकेँ पढ़ाबी-लिखाबी, तँए बाँस्ते गामक स्कूलमे नाओं लिखा देली। मुदा मोहनाक इच्छा नै छेलनि जे भोलाकेँ पढ़ाबी। हिनक खिसियाएल बरैया भोलाक प्रति देखि दुखनीक सस-बस नै चलि सकल। ऐ खातिर बेर-बेर भोलाकेँ डाँट-फटकार मोहनासँ पड़ैत रहै। दुखनीकेँ तरे-तर टैसकेलापर भोला कहियो-काल नुका-छिपा कइ स्कूल जाइत छल मुदा ओ बेसी दिन नै चलि सकल। भोला एकदिन स्कूलसँ अबिते धरि मोहनाक तामसपर चढ़ि गेल। मोहना तमसाएल दाँत पिसैत हूबकैत बजला-

"बड़ नबाबक नाति छिही! केतौ बैस कइ बाप-संगे कौड़ी खेलैत हेबही आ कहै छीही

পঠ়ৈনে গেল ছেলিএে ! মবি কিএ নৈ গেলেঁ ওতে ? জবঁ ঘাস-নে জাগ ছিলী তঁ তোবা ঘাসে নৈ মিলৈ ছৌ। কহবী খ্বপী ভোঁথ ভঽ গেলৈ তঁ রেঁগৈ ঢীলা ভঽ গেলৈ। পচাসগৌ রঁহন্না রঁনরেঁ ছঁহ। হগৈ নজবিপব সঁ ঝনক্ষলাঁ ! ”

পাগবক চপ্পন নিকালি কঽ ঝগৈ-ঝগৈ সিন পীঠপব রঁবসাএ দেলখিন। ভোলা ধমম সিন ওতে রেঁসি গেল খা ছগৈ-পগৌগত রোঁমী পাড়ি কালএ নগল। মোহনাক খপন রেঁগৌ নৈ বহলি তঁএ মমত নৈ, হ্মদা মাতা হ্মমাতা নৈ ভঽ সকৈএ, দ্খনী দৌগল এলী খা ভোলাকেঁ উঁঠা-প্বঠা কঽ পজিওলে খঁগনা নঽ গেলী।

প্বকষ প্রধান সমাজমে স্ত্রী শিরঁদ কেতেক খস্ববক্ষিত হোগত খছি সে দ্খনীক হানতসঁ বূঁঝন জাএ সকৈএ। স্ত্রীকেঁ খপন খর্ধাগিনী রঁনেলোপব হ্নকব মতি মোহি কঽ প্বকখ খপনা খন্বকূল রঁনা লৈত খছি। বসে-বসে ধবক রাতাববণ রঁদলৈত গেল খা মোহনাক খাকর্ষন দ্খনীপবসঁ ঘটৈত গেল। ধবক কাম-কজক খলারেঁ মান-জান খা খেতীও-পথাবী দ্খনীক মাথপব রঁজবি গেল। মোহনা ভিনসবে ভৈঁস দূহি, দূধক ডোল রঁজাব নেনে জাগএ, খন্বমণ্ডলক পজবেমে দ্গাঁ দাসক হোগৈন খছি, জগমে দূধক উঁঠৌনা নগল খছি, এতএ এনা পছাতি গপ-সবক্কা সংগে গাজাক নত সেহো প্বড়ৈরেঁত এক্করেঁব দ্পবিযামে হোগত ঘব খরেঁ ছথি।

হোগৈনক মানিক দ্গাঁ দাস রেঁদক্কিযা নাকেবক খোজমে বহথি জেকব জিকিব ও মোহনাসঁ কেলখিন-

“খাঠ-দস রঁর্খক রেঁদবা কাজ কবৈরঁনা গামমে জঁ ভেগৈত তঁ ননে খরিহঽ। তো তঁ জানিতে ছহক

হোটৈনমে খেনাগ–পীনাগক কোনো কমী নহিযেঁ বহৈ ছৈ। নূগবো–বঁূগধ সীখতে খা পোসনো–পাননো তঁ জেরেঁ কবতে ? ”

মোহনো ভবোস দৈত কহনখিন–

“খচ্ছা দৈখৈ ছিঐ, নজবিপব এতৈ তঁ নেনে এরঁহ। ”

ঘব এনাপব রেঁবমে মোহনক খিযান রেঁদকিযা নোকবপব গেন, মনে–মন সোচৈত এনা জে কেকবা কহক চাহী ঐ রাস্তে ? একাএক মোহনাক ধিযান ভোনপব গেন খা সোচএ নগন। খন্তমে ঞ রিচাব কেননি জে ভোনাকেঁ হোটৈনমে নগা দেবঁ সএহ নীক বহত। ঘব খরিতে দ্খনীকেঁ গপ–সপ্পক ঝাঁসা দৈত কহনখিন–

“ভোনাকঁ রঁজাবমে নোকবী নগা দগ ছিঐ। ঘবমে খাগ–পিরেঁক দিককত ভহ বহন ছৈ। রঁজাবমে বহতে তঁ দূটা নূগবো–বঁগধ সিখতে, গামমে দেখৈ ছিঐ নে রৌনাএন জাগএ ? ”

দ্খনী ঐ রাঁতসঁ বাজী নৈ ছেনী ঋদা মোহনক জিদ্দক খাগূ হাবএ পড়ননি। খগিনে দিনসঁ ভোনা দুর্গা দাসক হোটৈনমে কাম কবএ নগন। ঐ খরোঁধ রেঁদবাক রোনরাঁসসঁ একটা খাবো নেনাক মৌনিক খধিকাবসঁ বোকি দেন গেন। সোতেনা মাগক খিহ্মাশি তঁ হোগত খছি ঋদা সোতনা রাঁপোক হেরেঁক চাহী জেকব হকদাব মোহন ভেনখিন। স্কূনী শিক্ষা তঁ রাঁন–রোঁধক মৌনিক খধিকাব হোগত খছি জে খাম নোককেঁ সমঝমে নৈ খারি বহন খছি। পবিণাম স্বরূপ, খখনো রাঁন–শ্রম খপনা দেশমে চবমপব খছি। গবীরঁ ঘবক নেনা–ভুটকা সভসঁ রঁনপূর্বক খাকি জোব–জরঁবদস্তী ভাবী–ভবকম

কাজ জেনা সৈব উৎপাদনমে জুতাক পালিশ, দোকানমে সাফ-সফাই, ভোজনক ঠাম আ হোটলমে জরবন রবতন-বাসনক মাজৈক কাজ, চাহ দোকানপর গিলাস ধোএক অলাবে আনো অনোপচারিক ক্ষেত্রমে কাজ করাএল জাএত অছি। ঘরেলু কাজ করৈলে সেঠ-সাহুকার সভ কাম-কাজী বেদরাকেঁ ঘরমে লুকা কএ রাখৈএ, জএসঁ সরকারী শ্রম নিরীক্ষক আকি মীডিআক নজরিসঁ বাঁচি সকএ। ঈ সভটা কাজ ন্যূনতম মজদূরীপর বেদরা সভসঁ করাএল জাএএ, বুঝিতো জে ঈ কানূনী জুলুম অছি। একরা অলুচিত আ শোষিত মানল জাএএ তেঁযো বহুত গরীব পরিরার অছি জে অপন অবোধ বেদরাক মজুরীক সহারে ভরন-পোষন করৈএ। কানূনো বনল অছি জে অঠারহ বর্খসঁ কম উমেরক বানক মজূরী নৈ কএ সকৈএ। হুনা কানূনক অনদেখী কএল জাএএ আ ভোলা সনক নঅ বর্খক বেদরাসঁ সতরহ-সঁ-বীস ঘণ্টা কাজ করাএল জাএত অছি।

দুর্গাদাসক হোটলমে অন্নমণ্ডল আ বেকোক স্টাফ জেনা হাকিম, কিরানী, চপরাসী আ আনো ভী.আই.পী সবহক চাহ, নস্তা, কলৌ বলৈএ। কিছু মহাত্মাবক ডেরাপর চাহ, নস্তা, খেনাএ পঠাএল জাএএ। দুর্গা দাস সোভারসঁ এক নমবক পোলটিসরাজ ছথিন জহিসঁ কামকাজী বেদরা সভসঁ গপ মারি কাজ করবৈ ছথি। জব্দরী পড়লাপর ডাঁট-ফটকার আ নপ্পর-থপ্পরসঁ সভকেঁ সকপকেলে বহৈ ছথি। হোটলমে ছহসঁ দস বর্খক আবাবে চারিটা বান-মজদূর কাজ করৈত ছল। ভিনসরবাক চারি বজৈত ধরি সভটাকেঁ হবপেট কএ জগাএল জাএএ আ বরতন-বাসন, চুল্হা-চৌকীক মাঁজ-

मजरैन, निपा-पोतीसँ ग्राब-पोछक काजमे लगाएल जाइए। कोनो चाह लऽ डेरे-डेरा पहुँचाबैए तँ कोनो जलखै, खेनाइ बनाबैमे लागि जाइए।

कखनो-काल सभ बैदयामे कोनो-कोनो बातपर छैौ-माँसीसँ झगड़ा-झाँटी भऽ जाइत अछि, तइ घड़ीमे दुर्गाकेँ अपन सकत मिजाजि देखबऽ पड़ै छै, जाबनि लऽ कऽ झाँटियेबो करैए। खेनाइमे सभटाकेँ बसिया भात, टटाएल रोटी, मड़कौआ तीमन आ बँचल-खूचल तरकारी दैत बजै छथिन—

"बै छौड़ा सभ अतेक नीक चीज तँ तोहर बापो-दादा नै खेने हेतौ। खाइ जाइ जो मन लगा कऽ।"

दुर्गा दासक एकनौता बेटा- अमर- दरभंगामे पढ़ैत अछि। जहिया कहियो ओ गाम अबैत अछि तँ जाइ घड़ीमे टाकापैसा पहुँचबैक जिम्मा ओकरेकेँ बहैत अछि। आइ अमर दरभंगा विदा भेल। दस-दस किलोक गहूम आ चाउरक मोटा ओकाक माथपर आ कन्हापर बैग लटकेने टौसन दिसि विदा भेल जे कबीर कोस भरि हटि कऽ अछि। रस्तामे भारीसँ ओकर कन्हा-पजरा एँठने जाइत रहै दुदा गाड़ी छुटैक डरे केतौ जिराइओ नै सकल। टौसन पहुँचिते रेलगाड़ी ससरऽ लगलै। अमर लपैक कऽ पौदान पकड़ि चढ़ल। ओना नीचासँ सभटा मोटा-चोटा आ बैगो जेना-तेना अमरकेँ पकड़ा आ अपन भाड़ उतारलक। ओकाक माथक बोझ उतरिते मन हल्लुक हुअ लगलै, दुदा घुरन्ती-डेग नै उठि रहल छै ओकाकेँ। मन भेलै किछुकाल जिरा ली। कन्हा आ गरदनि सेहो एँठने जाइत रहै। गाड़ीक चलैतवापर

ধমম দ২ বৈঁস ক২ হাঁফএ নগন। কিছুকান বৈঁসনা পছাতি খানস খারি গেনৈ খা ওতগ ওঁঘবা ক২ স্বতি বহন। সাগত এতে নিচেনক নীন কহিযো নৈ স্বতন ছন। ও নীনক মহাসাগবমে হেনো মাব২ নগন। চাবি ঘণ্টাক কড়্গব নীন খীঁচনা পছাতি জখনি গাছক ছাহবি ঘ্সকি ক২ দূব হটি গেন খা দেহপব দ্পহবিযাক বৌদ নাগএ নগনৈ তখনি জা ক২ খাঁখি খ্জনৈ। ভূখো জোবসঁ নগি গেন বহৈ, খাঁখি মিবৈত হোটৈন দিস বিদা ভেন।

ওমহব দ্গা দাস তামসসঁ খাগি খংগোবা হোগ ছনা। ভোনাকেঁ দেখিতে মাতব তববাঁমে নহবি দিখ নগন, গাবি–বাঁত দৈত ঘোনাগত দ্ববকৈত ভোনাকেঁ কহনখিন–

> “বে সাব! গেনহী তঁ মবি গেন বহী? কী বাঁপ পকড়্ি নেনে ছেনৌ? ভুখ নগনৌ তঁ দৌগন এনহী। নমক হবামী কহীঁ ক২! হ্নব–হ্নব কেনা তকৈএ সাব!”

বঁগনসঁ কবমীনক ছড়্ া উঁঠা খা ভোনাক পীঠপব সটাক–সটাক খিঁচএ নগনখিন। ভোনা ওতৈ তিনমিনাগত নূদ সিন বৈঁসি বহন খা বাঁপ–মাএ চিচিযাএ নগন–

> “গৈ মাএ২২... হৌ বাঁপ২২... মবি গেনিযৌ গৈ২২... মাএ গৈ মাএ২২...”

খিসিযানে হ্নহেঁ দ্গা দাস ফেবি বঁজনা–

> “সাব তূঁ হমবা হোটৈনমে টপি নৈ সকৈ ছেঁ। জো জগ বাঁপ নগ জেমে। দেখৈ ছিযৌ তোবা

के बखै छौ आ के खेनाग दग छौ। ”

घण्टा भरि भोला ओतै कनैत रहल। रहि-रहि कऽ दुर्गा दास छूबैक-छूबैक मारैने छटैत रहथिन आ रॅजैत रहथिन-

“भगवनँ कि नै सबरॉ ? एने की टैक-टैकी देने छीमी ? आरॅ खाने ? टैपऽ तँ देरौ नै आ खेनाग के देतौ ? चनि जागत रह जतए जेरॉक छौ। ”

भोलाकेँ बॅुझना गेल आरॅ निश्तुकी नै रहए देता आ ने खेनागए भेटैत। उठि-पुठि कऽ कासी प्राजेकटॅरॅना खबंजा पकड़ने एस.डी.ओ साहॅरॅक खरास दिस रिदा भऽ गेल। मन्ह्खानए-सन्ह्खानए आँखिक नोब पोछैत भोला एस.डी.ओ.क खरासक आगूसँ जागत छल तख ने भीम रॅहादुरक नजरि भोलापर गेलनि। भीमरॅहादुर एस.डी.आो साहॅरॅक भनसिया, जे दयालु प्ररृतिक नेपाली पहाड़ी जातिक छथि। रॅहादुर भोलकेँ जानिते रहथि पुछलखिन जे की भेलौ, किए कनै छीमी, केतए जाग छेँ ? भोला हिचैक-हिचैक कऽ सभटा रॉत रॅतेलक-

“हमरा नै रखतै। मानिक कहलखिन भागि जो, नै रहए देरौ। ”

भीमरॅहादुरक उमेर पचास-पचपनसँ कम नै हेतनि मुदा खुशि मिजाज आ दयालु प्ररृतिक लोक छथि। भोलाकेँ केम्पसक भितर लऽ गेलखिन आ खागले दूटा रोटी संग कनी तरकारी देलखिन जे रँचल छेलनि। भोला भोककेँ खेलहा, भूखसँ लहालोट हबरेँ करए। मुदा ऐ रोटीक पैलठेगहासँ देहमे छूरॉ एलै।

কিছুকান ধবি ওতএ রৈঁসন বহন। এস.ডী.ও পাঠক জীক দ্নূ সন্তান নন্দন সাত বঁর্খক আ নেহা চাবি বঁর্খক অছি জে কেম্পসমে রৈঁষ্ট–রৌন খেনাগত বহএ। ভোনো দৌগ–দৌগ কহ সংগ দিঅ নগন। সাঁঝ হোগত ধবি পাঠক জীক জীপ কেম্পসমে প্ররেশ কেনক সংগ নগন কিছু গাম–ঘবক নেতা নোকনিক হ্জুম সোহো জুষ্টএ নগন। গপ–সবককাক রীচ সভ নেতাগণ অপন–অপন কাজ কবা রিদা হোগত গেনা। রীচ–রীচমে পাঠক জীক নজবি তীন্ব নেনাপব সেহো জাগত বহনি জে প্রসন্নচিত হ্মদ্রামে খেনৈমে মগ্ন অছি। ভোনা এস.ডী.ও সাহৈবঁক কার্যানিযমে চাহ পহুঁচরৈঁনে জাগত বহনি তঁএ চিন্হতো বহথিন। হ্মদা ভোনাকেঁ এতএ দেখ পাঠকজী দুরিধামে ছনা। পাঠকজী বঁহাদুবসঁ পুছনথিন–

> “বঁহাদুব, ঔ নড়কা তঁ দুর্গাদাস–হোষ্টনক নগৈএ, ঔ এতএ কেনা আএন ? ”

ভীমবঁহাদুব সভষ্টা বাঁতক জানকবী দৈত আগ্রহ কেনথিন–

> “সাহৈবঁ, ধিযা–পুতা জাগত ছিঐ, ভগা দেনে ছৈ, বাতি–রিবাতি কেতএ জেতৈ, আগ ভবি এতৈ বহে দৈতিঐ তঁ নীক হোগতৈ। ”

পাঠকোজী নেক রিচাবক নোক, হঁ ভবৈত বঁজনথিন–

> “বহহ দহক কী হেতৈ ? ধিযে–পুতা তঁ f ছএ। ”

বঁহাদুব গবীরীক দিন দেখনে। তঁএ মনমে গবীবঁ নাকেক প্রতি দজা আ সহান্বভূতি ভবন ছন্হি।

रॅमाद्रवमे दूटा नीक गुण छलि, पहिल ई जे जॅं केतौ भूखनकेँ देखैत तँ खेनाइक आग्रह जरूर करैत, दोसर ई जे दोसरक बॉल-बोधकेँ अपना जकाँ सिनेह दैत छथिन। एस.डी.ओ- पाठकोजी- तहिना मिललसाब आ दयानन्द प्रभृतिक लोक छथिन, तँए दुनू गोटेमे नीक जकाँ बनै छलनि। भिनसर भने रॅमाद्रवक दैनिक काजमे भोला संग दिअ लगल। दस बजैत पाठकजी ऑफिस बिदा भेला। रॅमाद्रव अपने संगे भोलोकेँ जलखै करबैत गप-सप्पमे पुछलखिन-

"तोहर घर कतऽ छौ? कौन गाम?

भोला सकपका गेल, किछु नै बाजल, मुदा रॅमाद्रव ओइ चुप्पीकेँ बुझैत खातिर फेर पुछलखिन-

"तोहर जेठाक मन नै लागि छौ?"

भोला मुँह नटकेने बाजल-

"नै जेठँ, दुर्गा मालिक बड़ मारै छै। खेनाइओ भरि पेट नै दइ छै आ भगाइओ देलक, कहलक आबै तोरा नै रखबौ।"

रॅमाद्रव-

"तूँ अपना बापकेँ किए नै कहै छी?"

भोला-

"हमर बाबा एक बरखसँ दूध नइ कऽ नै अबै छथिन। दुर्गा मालिक कहलखिन, बाबू सरँटा भैंस बेचि लेलकौ।"

रॅमाद्रव-

"मोगथ । भेँट–घाँट करैने नै थरैं छौ ? "

भोना– "भेँट नै केनकै । एकरेंव खज्वी कका दिथए समाद पठेने बस भेँट कवि जागने । स्मदा दुर्गा मानिक नै जाए देनखिन था हमवा गाम देखनो नै छै । "

एकरेंव फेवि रँमाद्वकेँ भोनापव दया नगननि, जे कि मनुखक मून सोभारो छी । ओना तँ सभ धर्मक पोथीमे रँता ेन गेन थछि, जे नोकनि कनैत–कनपैत नेना–भुटका, भूखन, रेँमाव था बूँठ–प्रवानपव दया–दवेज नै कवि सकैए, ओकव ओ मनुखक जीनगी रेँकाव होगत थछि । मनुखक प्रनवारृतिक नक्षण थछि, जनम भेनाग, खेनाग–पिनाग, पननाग–रँठनाग, रिथाह–दानसँ रँश–रृद्धि कवैत पवरिावकेँ थागू रँवहेनाग था फेव मवि जेनाग । ओ जीरन तँ पशु था पक्षीओ जीरैए । तखनि मनुख था जानरवमे की फवक वहत ? दया मनुखक सभ गुणमे श्रेष्ठ थछि जे मनुखमे वहरँक चाही ।

भीमरँमाद्वक मनमे रिचाव उँठन, साहिरँसँ गप कवि भोनाकेँ थमीठामक काजमे वथि नेरँ तँ एकटा रेँदवाक उँपकाव भऽ जागत ! साँझ पड़ ेत पाठकजी एनखिन । काजसँ फूर्सत भेना पछाति रँमाद्व पाठकजी सँ रिनती कवैत भोनाक खातिव गप कहनखिन जेकवा पाठकजी स्वीकाव केनकनि ।

भोना घवक काजमे संग–साथ दिथ नगन । मौका भेटैनापव नन्दन–नेहा संगे पठ़ ेओने रैसि जागत वहए । कनी दिन रीतना पछाति रँमाद्व भोनाक माए–रँबूँकेँ समाद पठेनखिन, भेँट कवैने ।

डेठ सानसँ दुखनी रेँटाक सोगमे चिन्तीत छेनी ।

ऋदा ओ खरॉबि जे भोना एस.डी.ओ साहैबॅक घवमे काज करैत छथि, स्वनि स्वप सन कनेजो भेनै। खगिने दिन द्खनी दौगन एनी। दू रॅविखापव भोनाकेँ देखितै द्खनीकेँ ख्शीक ठेकाना नै बहनै। गप-सपसँ पता नागन जे भोनाक सतरॉप, मोहना भैंसपव सँ खसि पड़न खा डाँव टूटि गेन। पछाति सभटा भैंसकेँ रॅचए पड़नै। तहियासँ खाग तक माहना रॅमावे बैहै छथि, कोनाे काज-बाज हिनकासँ नै भऽ बहन छनहि।

भेँटे-घाँटे भेना पछाति द्खनी गाम दिस रिदा ह्ख नगन ऋदा एस.डी.ओ साहैबॅसँ भेँटे करैत निहोवा केनी-

> "हूजूब, खागसँ खहाँ ऐ निभोगाक माग-रॉप छिऐ। खहाँक नून खा कऽ एकव भाग चमकतै।"

पाठकजी भवोस दैत कहनखिन- "भोनासँ खहाँ निफिकिब बहू। खर्चा-पानीक दिककत हएत तँ हमबा खरॉबि कबॅ।"

पाठकजी भोनाक हाथे पाँच सए टैका खा एक सेटे कपड़ ा द्खनीकेँ रिदागबीमे देनखिन। द्खनी हँसी-ख्शीसँ गाम दिस रिदा भऽ गेनी।

<u>खप्पन माए-रॉप</u>

स्वनीन जीकेँ दूटा सन्तान। सौवभ दस सानक जे पाँचमा कक्षामे खा छोटैका स्वमन छह सानक जे पहनामे मेडोना स्कून, कटैहन राड़ ी दवभंगामे पठ़ ए। स्कून घवेक रॅगनमे छै। स्वनीनजी खकाशिराणी दवभंगामे नौकवी करै छथि ।

हम स्वनीन जीक द्नू रॅच्चाकेँ घवपव जा ट्रेशेन पठ़रेँ छी। ह्नकव कनि याँ मंजू हवि दम रॅच्चाक कपड़ ा-नत्ता, रर्तन-रॅासन थ्रा थ्रानो-थ्रान घवक काम-काजमे ओझवाएन बहै छथि न। स्वनीनजी नौ रॅजे भोवे नि कनै छथि थ्रपना काजपव। दृ रॅजे खेनाग खागने थ्रवेँ छथि । फेव बाति मे दस रॅजे घव थ्रवेँ छथि ।

चावि रॅजे रेंक पहवमे हम पठ़रेँने सभ दि न जाग छी। थ्रागओ गेलौं। कनीए कान पछाति मंजू चाह नइ कइ हमवा नग एनी। चाहक कप पकड़ ा रॅच्चाक रॅदमाशीक ढ़ंपवाग कम ऋदा काजक रेंस्ततताक पोथी खोनि छनेमे संसावक पवेशानीक पाठ पठ़ ि गेनी। फेव काजमे एना नागि गेनी जेना टौंग-पव-टौंग नै पड़ ैए।

छुट्टीक समैमे स्वनीनजी सेहो घवक काम-काजमे रेंस्त बहै छथि । द्नू गोटेके पवि रावक प्रति समवपन देखि हमवा रॅ्ुझागत बहैए जे ऐ छोटै पवि रावक थ्रनारेँ हि नका सभकेँ ऐ संसावमे कि छ ने छनहि । थ्रचानक गामसँ ह्नका फोन एननि जे ह्नकव पि ताजी सि वि यस छथि न। स्वनीनजी थ्राॅफि समे छुट्टी नेन दवखास दइ गाम रि दा भेना। गाम जा पि ता जीक संग माएकेँ सेहो संगे दवभंगा थ्रानि नेननि । रॅाबूजीकेँ थ्रसपतानमे डाक्टवसँ जँचरौननि । डाक्टव कहनकनि -

"थ्रहाँक पि ताजी कें टी.री. भइ गेननि हेन।"

"थ्राव की ढ़ंपए थ्रछि डाक्टव साहैव ?"

स्वनीनजी प्वछनखि न।

“नौ मासक दरॉगक कोर्स ख्छि । देख–रेखमे समैपव दरॉग चनरॅए पड़ृत।”

स्वनीनजी, ख्ॉंफि स जा ख्दगा दि नक छुङ्गी छुग मासक नेन दवखास नगा माए–रॉपक सेरामे नीन ভঽ गेना।

कঠगन राड़ृ ी सथि त नीज खरासपव माए–रॉरॅ बगए नगना। ফ্দা सप्তাगमे दृ दि न খसপতানমে जाए–खारॅए पड़ृनि ।

খারॅ मंजू पहि नेसँ रॅसी परेशान बगए नगनी। एक दि न मंजूक रार्ता हमवासँ भेन। रॅजनी–

“की कद्धँ सव, एक्का–वती मन नै होगए जे ঐ घवमे वगी।”

हम प्वछनि यनि –

“कि ए, की भेन ?”

“तेतरॅ घवक काज तेतरॅ धि या–प्वताक काज খা तैपवसँ माए–रॉरॅजी माथक रॉम्ब रॅनि गेन छुथि । খপনে जे छुथि ओ एकাटৌ काज नै समगारै छुथि ।”

हम कगनि यनि –

“খगि ना होग छै, काम–धाम तँ सভ दि न नगने वर्ह छै। ফ্দা माए–रॉपक सेरा सेहो ঐ जीरनमे जरूवी छै।”

मंजूकें जेना हमव उँपदेशे एक्का–वत्ती नै

সোহেননি । তমতমাগত রঁজনী–

> “মাস্টবজী, হমবা খহাঁ নৈ সি খাউ। খহাঁকেঁ দ্নিযাঁ–দাবীক থাহ নৈ চনন খছি খখনি । সাস্ব–সস্বব হমব ওহেন খদবগব নৈ ছথি ।”

মংজূক ঙা রাঁত স্বনি হম স্তর্ঁধ বহি গেনৌঁ। ঋহক রাঁত ঋহেঁমে বহি গেন। সঁচ–মঁচ রঁচ্চা সভকেঁ পঠ়রঁএ নগনৌঁ। ঋদা মংজূ রঁড়রঁড় াগত বহনী–

> “চৌরীস ঘঁটা কাজে–কাজ। সভ খঠ়রৈঁএ রঁনা। ঐ ঘবমে বহক মন একোবতী নৈ হোগত খছি । জেতরেঁ ঘবক কাম–কাজসঁ মাথা দ্খাগত বহএ খা তৈপব সঁ ব্ঁঠ়রাঁ–ব্ঁঠ়া যা মাথ ভুকরৈঁত বহ ছথি ।”

তহী রীচ ব্ঁঠ়হাক খোঁখী জোব–জোবসঁ স্বনি পড়ন। খোঁখী কবৈত–কবৈত রঁদহান ভ২ কহবি –কহবি ক২ রাঁজএ নগনা–

> “কনহৌনীরানী, স্বনীনক মাএ, কেতএ ছী ? ওহ্ল ব্ঁঠ়া যাকেঁ জেনা হমবা নগ নীক নৈ নগৈ ছৈ। জেনা হম কাটৈনে দৌড়ৈ ছি ঐ।”

ব্ঁঠ়হাক হফনীক খরাজ ফেব স্বনি পড়ন–

> “কনি যাঁ ছী হে, নহানরানী, ঐ সৌবভক মাগ ? রাঁপ রে রাঁপ! কোগ নে স্বনৈএ।”

মংজূ রঁড়রঁড় াগত ঘ্মনী–

> “মবরোঁ নে কবৈএ ব্ঁঠ় া জে হমব সি বক রোঁম্ম হটৈত। জানি নে কোন পাপক ফন ছী।”

স্বনীন জীক ঘবক ঙা কথা বোজক ভং গেন। এক দি ন খনাযাস হ্নকব ঘবক হবা একদম শান্ত ব্ঁঝনা গেন। ছতক চৌকীপব জাজীম বিঁ ছৌন ছন। দ্নূ বঁচ্চা ওগপব খাবিঁ পঠ্ ৈনে বৈঁসন। হম পনাস্টি কক হ্কবসী খিঁচ বৈঁসনৌঁ। কনীএ কান পছাতি মংজূ পনেষ্টমে জনপান খা কপমে চাহ নং মীঠ–মীঠ চানি মে হ্মস্কীখাগত এনী। হমবা ব্ঁঝাএন জে খাগ মংজূজী তি বপি ত ছথি । গচ্ছা ভেন জে ঐ খ্শীক কাবণ জানী। প্বছনি যনি –

> "ভাভীজী, খাগ খপনে বঁড় খ্শি নজবি খবৈঁ ছী, কী বাঁত ছি ঐ ? "

> "হঁ, খ্শী কি এ নে হএবঁ। খাগ হমব খপন মাএ–বাঁবূ গামসঁ এনা খছি । খ্শী তঁ সোভাবি ক ছৈ।"

মংজ্ক ঙা বাঁত স্বনি খ্শি তঁ ভেবেঁ কেনৌঁ জে মাএ–বাঁপক দর্শনসঁ সোভাবি ক খ্শী জে হেবঁক চাহী সে হি নকো ভেননি । হ্মদা দ্খ সেহো ভেন। দ্খ ঙা ভেন জে খাখি ব সাস্ব–সস্ববক বি ষযমে জে মি থি নাক দর্শনমে নাবী নেন বঁতৌন গেন ছৈ জে খপন মাএ–বাঁপসঁ বঁঠ্ি কং সাস্ব–সস্বব হোগ ছৈ সে হি নকামে কি এ নৈ ছনহি ।

<u>দস হজবিযা নোষ্ট *(নোক কথাক প্বনর্নেখন)*</u>

হম খপন গনাকামে জানন পহচানন পেন্টৈব ছেনৌং। পেন্টিংগমে রেঁদরেসঁ নগার বখৈক কাবণ, ভাড়ৃ া-সঁ-ভাড়ৃ া চিত্র পন ভবিমে রঁনেনাগ হমবা নেন খসান ছন।

একটা নঙোটিযা দোস্ত ছন ধীরেন্দ্র, কিবানা দ্কানদাব খা জাতিক ভূমিহাব। রঁখত-স্ক-রঁখতপব হম এক দোসবকেঁ মদতি নিস্বার্থ ভারসঁ কবৈ ছেনৌং। এক দোসবকেঁ রিশ্বস্ক দোস্ত মানৈ ছেনৌং। নোক সভ হমবা ঐ দোস্তীকেঁ দেখি হৈবত বহৈ ছন। হৈবত ঐ খাতিব বহৈ ছন জে হমব দোস্ত ধীরেন্দ্র ভুমিহাব জাতিক ছন। কেতে নোগ কহৈতো ছন-

"কী বৌ, ভুমিহাবসঁ দোস্তী কেনঁহ..., ঠীকসঁ বহিহেঁ. কহী ভুমিহাবী দাঙমে ফঁসনঁহ তঁ বু্নি যৌহনি !"

স্নদা ঐ বাঁতপব হম কোনো কান-বাঁত নৈ দগ ছেনৌং। একদিন জহিনা হম বংগ-ব্রঁশক মোবা নঃ কঃ কেতৌ কাজপব রি দা ভেন ছেনৌং খাকি জনক কাকা দনানপব সঁ চিকড়া কঃ রঁজা কহনথি -

"বৌ, স্বন কহৈ ছিযৌ তূঁ জৌং ভুমিহাবসঁ দোস্তী কেনঁহ তঁ ভুমিহাবী দাঙ একোটা সিখনেঁ খাকি নৈ ?"

হমবা জিজ্ঞাসা ভেন খা প্বছনিযনি-

"কাকা, ভুমিহাবী দাঙ কেকবা কহৈ ছৈ হৌ ?"

"হম জঁ বু্নি তৌং তঁ হমহী নে তোবা সিখা দৈতিঔ ? নোক বাঁজৈ ছৈ জে ভুমিহাবী দাঙ বঁড় পেঁচিদা হোগ ছৈ।"

হম ভবি বাঁট গ্বন-ধ্বন কবৈত এনৌং 'স্নদা ঔ কোন দাঙ ছী ? জে নোক সভ দোসক সংগ দেখি প্বছৈত বহৈএ ? সে নৈ তঁ, খাগ হম দোসেসঁ ঐ রিষযমে প্বছি

कऽ बहरॅ।

दुपहरियाक बौदामे हम कोसी प्राजेक्टक देखानपर एकटा रिक्शापर निचैत बही संयोगसँ तखने पाछूसँ मोटर साइकिलक सीटीक अवाज पिपियाएल! हम बंगक डिजाइन रॅनरॅमे मगन बही। मने-मन ताससँ देह रॅहिर भऽ गेल! 'के एहेन दुष्ठ छी जे डिस्टर्ब करैए?' मुदा ताकरॅ केना? जौं ताकरॅ तँ डिजाइन खराप भऽ जाएत। नगन माथ छोड़ि ,ि ताकलौं। अवाक् बहि गेलौं! रएह भुमिहार दोस धीरेन्द्र छल। दोस्तीमे कनी-मनी शैतानी तँ चलिते बहैत छल। मन्द मुस्कान चेहबासँ सेहो छुटैल। तैरीच धीरेन्द्रक नजरि पेन्टिंगपर पड़ल आ प्रशंसा करए लगल। मुदा हमर प्रशंसा, जे हमरे मुँहपर रॅाजल जाइत अछि! नीक नै लगल, अंग्रेजीक एकटा मुहाबरा मन पड़ि गेल, 'बेस्ट आॅन रन्स नाॅबेन्स' अर्थ अछि, 'अप्पन ख्यातिसँ संतुष्ठ नै रहक चाही,' हम रिनम्रतासँ कहलियनि-

"दोस, अहाँक ऐ प्रशंसासँ हम खुशी नै छी। हम मात्र एकटा छोटका कलाकार छी, खरचा-पानि चलेबॅा लेल ओ काज करै छी।"

तैरीच हमरा मन पड़ल 'भुमिहारी दाउ' पुछलियनि-

"दोस, लोक कहैए जे भुमिहारी दाउ रॅड़ नीक होइत छै, हमरो सिखा दिअ।"

धीरेन्द्र पहिने तँ हमरा रॅातपर धियान नै देलक मुदा रॅेर-रॅेर जिद्द केलापर सोचए लगल, कनीकाल सोचि कऽ रॅाजल-

“दाउ तँ अहाँकेँ सिखा देबै अदा बँदनामे किछु दिअ पड़त।”

हम पुछलियहन–

“कथी देबए पड़त ? बाजू।”

धीरेन्द्र फेर बजला–

“अहाँकेँ एकटा दस-हजबिया नोटक पेन्टिंग बना कऽ हमरा दिअ पड़त।”

हम बजलौं–

“अपैआक नोट ! दस-हजबिया आ पाँच-हजबिया की, जौं पेन्टिंगेसँ बनाएब तँ किए नै ? जरूर बना देब। कनीए दिन अरू फुरसति हुअ दिअ तँ छापि देब।”

पेन्टिंग हमर ईश्वरीय देन छल, बँदरेसँ अनेक प्रकारक चित्र पाड़ै छेलौं, स्कूलमे सबजीकेँ यार-दोस्तक आ संग पढ़ैत नड़कीओ सबहक। बाबूजी सधारण किसान छल, हमर पढ़ाइ लेल पर्याप्त खर्चा नै बहैक कारण अध्ययनक संग उपार्जनक मार्ग अपनौने बनौं। अखनि हम निर्मली आ आसपासक क्षेत्रमे जानल-पहचानल चित्रकार छी। कामक व्यस्तता हबिदम बहैए। ऐ व्यस्ततामे दोसक लेल दस-हजबिया नोट बनेनाइ हम साफे बिसरि गेलौं।

एकदिन हम नगर सेठक दोकानक बगलमे साइन बोर्ड बनबैत बही, तखने धीरेन्द्रक अवाज सुनि पड़ल। काम रोकि गद्दी लग हम ससरि कऽ एलौं, तही समैमे आउरो किछु जानल-पहचानल लेपारी सभ पहुँचल छल। धीरेन्द्र जोरसँ सभकेँ सुना कऽ हमरा कहैए–

“की दोस, हमर काम नै हेतै ? ”

हम चौंकि गेलौं जे हमरा कोन काम कहने छथि ! पुछलियनि,

“कोन काज ? ”

“दस हजारक ! ”

हमरा मन पड़ि गेल दस-हजरिया नोट ! मुड़ि ा हिला स्वीकृति दैत कहलियनि-

“ओह हाँ, हेतै, हेतै, किछु दिन रुकू । ”

सेठजी नोटक गड्डी गीनैत-गीनैत, चश्माक भीतरे-भीतर, रुपैयाक बात सुनि हमरा दिस ताकए लगल । हम चुपचाप, काम करए लगलौं । हमरा एना पछातिि, धीरेन्द्र सभ लग बाजल, जे ‘ओ पेन्टर हमर दोस छी, हमरासँ दस हजार टाका लेने अछि, केतेक महिना भऽ गेल, मुदा टाका मांगलापर, आगु-काल्हि करैत, समए काटैए । ’

समए बीतैत गेल, छह महिना-सान भरिक बाद, फेरि दोसर रंगपारीक दोकानपर दस हजारक तकेजा केलक । हम दस-हजरिया पेन्टिंगक नोट समटि टौड़ि देलौं । मुदा हमरा गेलाक पछाति धीरेन्द्र सभ लग बाजल फिरै छल जे साँचेमे ओ हमर रुपैया लेने अछि ।

ई बातक दू बरख भऽ गेल । जेतए-तेतए लोक सभ हमरा कहए लागल-

“धीरेन्द्रक रुपैया किए ने फड़ि या दए छिही ! दोस-रौनक पैसा एते-एते दिन रखनाए नीक बात नै छै । ”

पहिने तँ हम असमंजसमे रहलौं मुदा, जखनि पता

चनन जे धीवेन्द्र दस–हजविया पेन्ष्टीगक वँदनामे दस हजाव टाका नोक सभ नग वाँजन फिड़ ेए, हम थ्वराक् बहि गेनौ ! केतेक गोटेकेँ समयेवाँक पवियासो केनौं ओ वाँत, ऋदा जेकवे कहि ऐ वएह, वुड़ि वँक वँनवँए नगन–

'कनाकाव भव कव एहेन नीयत तोहव नै हेवाँ चाही।'

हम चिंतित भव सोचए नगनौं, 'ओ दोस्त नै छी, द्शमन छी, एते भाड़ ी फेवामे पड़ । देनक ! केतएसँ एते टाकाक ओवियान कवव ! ' हमव ओकाति हजाव टाका जेना नाथ टाकाक के वँवावँवि छन। विना जमीन–जथा वेँचने दोसव उँपए नै छन।

कनीए दिनक पछाति, पँचैती भेन, पँचक फैसना भेन, कटि–मावि कव दू हजाव स्वगदकक संग वाँवह हजावक देनदावी ठहवौन गेनौं। नोक सभ वाँजए नै दैत छन। जीवनमे एहेन वेँज्जती कहियो नै भेन वहए। दस दिनक समए देन गेन।

टाकाक ओवियान नै भव वहन छन। कोनो गुंजागश नै देखि, एकटा उँपए सूझन, जमीन वेँच् नै तँ, भवना नगाउँ। एक वीघा जमीन भेयावीक फाँटे पड़न छन। वेँचवँ तँ फेव कीनन नै हएत, से नै तँ भवने नगा देवाँक चाही।

हजाव टाकाक दवसँ वाँवह कठ्ठा खेत भवना नगेनौं, रूपैथा नव कव दोसक घव पहुँचनौं। दनानपव कियो नै छन थ्वसगवे वैंस गेनौं, दोस्तीनीकेँ थ्ववँवि गेन। कनीकानक पछाति, दोस्तीनी एक हाथमे पानिक नोटा था दोसव हाथसँ घोघ तानि, थ्वदहा ऋँह

ঝাঁপন খদহা দেখাগত, খাগূমে পানি রঁঠ় া দেনী। তামসসঁ তঁ হমব দেহ রঁহিব ছন, সোচনে ছেনৌं জে দোসকেঁ কিছু কহরঁনি, ম্দা কী কবরঁ! চোটেপব দোস্তীনী পড়ি গেনী। ভাড় াএ মনসঁ কহনিযনি–

"দোসকেঁ রঁজাউ খা কহিযন জে খপন টৌকা নেতা।"

কনী কান পছাতি ধীবেন্দ্র হঁসৈত–হঁসৈত দনানপব এনা। ও হঁসী, হমবা হবিযাএন ঘাপব, নূনক নহবি জকঁ া নাগন। চ্প চাপ কপৈখাক গম্ভী দেনিযনি,গিননা পছাতি ফেবসঁ হমবে হাথমে ধবাহ দেননি। হম চ্পে ছেনৌं ম্দা ধীবেন্দ্র রঁজন–

"দোস, যাদ কক। খহাঁ হমবা কহনে ছনিএ নে ভুমিহাবী দাউ সিখরঁনে? যএহ ছিঐ ভূমিহাবী দাউ।"

একরঁব ফেব দোসক ঐ রঁতরিসঁ হম চকিত বহি গেনৌं।

__নগন__

গোনব রেঁদবেসঁ সংগীতক প্রেমী খছি। দিরানী, দশিহাবা, সবোসতী পূজা খা খানো–খান খরসবি পব গামমে নাটক হোগক পবচনন খছি। ম্দা গোনবকেঁ ওগ সভমে মৌকা কমে মিনৈএ। মৌকা ওকরে পহিন রেঁব মিনৈএ জে ওগমে চন্দা দগএ। গোনবক পিতা সাধাবণ কিসান ছথি। গোনবক পিতাক দোস্ত দেরঁন পঁডিত গামমে কীর্তনিযাঁমন্ডনী চনরেঁ

छथि , तँए लोकसभ गरबैया कहै छलन्हि । गोनबकेँ संगीतसँ लगाओ देखि पिताजी केतेक बेर कहै छलन्हि –

"गोनब, दोसक ऐठाम जा कऽ घड़ी–घंटा हेबन्हनियाँ किए ने सीख लबै छँह ? "

आग स्कूलमे शनिचराक पछाति सबजी गोनबसँ गीत गबौलनि आ खुश भऽ खूब प्रसंशो केलनि। स्कूलसँ घबैतकाल बाटे भबि गोनब सोचैत आएल जे आग देबल काकाक घब जा हेबन्हनियाँ सीखनाग शुरू कबब।

दुपहबियाक टहटहाएल बौदमे, सभ लोक घबे–घब सूतल–पड़ल, अबाम कबैत बहए मुदा गोनब, देबल पंडितक घब बिदा भेल। देबल सभ दिन बेरूपहबमे अप्पन एकलौता पुत्र हबियाकेँ संग कऽ साज–बाजक संग बियाज कबैत बहथि । आबो गोनबो संग दिअ लगलनि ।

सप्ताहे दिनमे गोनब हबि मुनियाँक बीठ़ आ पढबीकेँ नीक जकाँ पबखि लेलक आ सा बे गा मा पा पहिल्लुक धुन बजबए लगल। ओ आकस्मिक आ तेज शुरूआत देखि देबल सोचमे पड़ि गेल, 'हमब हबिया बेदबेसँ साज–बाजक संग खेलैत आएल तैयो अखनि धबि एतेक नै सीख सकल!

देबलके डाहक संग पक्षपातक भाबना सक्रत भऽ आ अगिले दिनसँ गोनबकेँ दुआबि पहुँचिते, साज–बाज समेटि बखि दैत बहए। एक–दू दिन गोनब जागते बहल मुदा ओहिना घुमि कऽ आबि जाएत बहए। गोनब उदास तँ होएते बहए मुदा हताष आ निबास नै भेल, तँए संगीत सिखैक जीद्द मनसँ नै

गेल।

साँझ पड़ैत सभ दिन, देवेन चाह-पान कवैले बेजाव जाइत छल। ई बात गोनव जनैत वहए, तँए साँझ होइतते देवेनक घव पहुँच कऽ, हविचाकेँ हकसना कऽ साज-बाज पसावि सीखए लगल। कहुना ई होते सीखनाइ तीन-चावि दिनक पछाति स्वाइ रूपे बन्न भऽ गेल। जइ दिन देवेन पण्डित दुनू छौड़ाकेँ साज-बाज निकालि सिखैत देखि गेला। कड़गव हकैकाबो दुनूटाकेँ लगेलथि न आ सभटा साज-बाज समेटि कऽ संदूकमे बन्न कऽ देलथि न।

कहल जाइए जे समए आ नहवि केकवो इंतजाव नै कवैए। ई बात साँच भेल। गोनव ऐ दसे दिनमे जे किछु सिखले वहए वएह बामवाण भऽ गेल आ सङ्कत अधाव बनि, ताबक गाछ सन बढ़ए लगल। कहल जाइए जे कोनो तवहक बुधि आ हुनव सिखैले निर्धावित समए नै होइए। जेतै-तेतै, चलैत-फिवैत गोनव स्वव आ तानकेँ साधैत, गुनगुनाइत धूनमे मगन वहै छल। कहुना साँझ-भोव संगीतक अभ्यास केनाइ अप्पन दिनचर्या सेहो बना लेलक। टोल-टोपड़ा आ गाममे जखनि केतौ भजन-कीर्तन आकि नाच-गानक आयोजन होइत वहए तइमे गोनव बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लैत वहए। तइसँ गाम भविमे लोकसभ गोनवकेँ गवैया कहए लगल।

गामक सटले शहव अछि। शहव छोटे सन अछि स्वखी सम्पन्न लोक आ पैग-पैग वेपावीसँ लक हाकिमो-अफसव सभ एतए वहै छथि। गोनवकेँ शहवमे केकवोसँ जान-पहिचान नै अछि। एकटा डाक्टव सुवेन्द्र नावायण नामक गण्यमान बेकती छथिन जे महिला

কা৾নেজমে হিন্দীক সবকাবী প্রাফেসব খা সংগৈ-সংগ মহিনা কন্যাণ সংস্থানক খধ্যক্ষ সেহো ছথিন। সংগীতক প্রেমী বহৈক কাবণ সানে-সান সাংস্কৃতিক কার্যক্রমক খাযোজন কবরৈত বহৈ ছথি । প্রাফেসব সাহৈরঁক এগো রেঁদক্ষকিযা সংগী জে দিল্লীমে নাট্যে খা কনা রিভাগক প্রাফেসব ছথি ও বিটৌযব ভহ খপন পৈতৃক শহব পহিন রেঁব এনা, তগসঁ ঐরেঁবক খাযোজন রঁড় জোব সোবসঁ ভহ বহন খছি। শহবক গণ্যমান নোকসভ জে উঁচ-উঁ পদপব কার্যবত ছথি , সভকেঁ কার্যক্রমমে শামীন হোগক রাঁস্তু ন্যাঁত পঠাএন গেন। তগমে ঐরেঁব টী.রী সীবিযনক জানন-মানন কনাকাব জীতুবাজ জোহব সেহো হিস্সা নহ বহন ছথিন।

কার্যক্রমক দিন নগি চাগত গেন। শহবমে জগহ-জগহ রৈঁনব-পোস্টব নগাএন গেন জে খক্ষখ তিথিকেঁ সাংস্কৃতিক কার্যক্রমক খাযোজন জানন-মানন সংগীত প্রেমী সরঁহক সহযোগসঁ ভহ বহন খছি । ক্ষদা গোনবকেঁ ঐ রাঁতক কোনো খররঁবি নৈ ভেন ছেনৈ।

শহবমে স্টেশন চৌকপব রঁরাঁজী পানরঁনা খছি। হিনকা দোকানপব গামক রেঁসী নোক পান খাগনে সাঁঝ-রিহান জাগত-খরৈত বহৈএ। রঁরাঁজীকেঁ বূঝন ছনহি জে গাম ভবিমে গোনব সেহো নীক গরৈযা ছী। মাত্র দূ দিন রঁচন বহএ, জরঁ গোনব খনাযাস রঁরাঁজীক পানক দোকানপব গেন, রঁরাঁজীকেঁ মনমে ঠহকননি খা জনৈক জি জ্ঞাসা ভেননি জে গোনব ঐ কার্যক্রমমে ভাগ নেনে খছি কী নৈ। প্ছনখি ন-

“কী বৌ তূঁ ঐ কার্যক্রমমে হিস্সা নেনে ছেঁ কিনে ? ”

গোনব জিজ্ঞাস্ব ভহ রিনম্রতাসঁ প্ছনক-

"भैया यौ, के ओ कार्यक्रम करबैं छै यौ ? "

रंगाजी बूझि गेला जे गोनर भाग नै लेने अछि तैयो आश्वासन दैत कहला–

"अच्छा रूक, हम परोफेसर साहैबसँ बात करै छी। "

रंगाजी मोबाइल लऽ कऽ नम्बर मिलौलनि आ बात करए लगला–

"हेल्लो सरजी, परनाम ! हम रंगाजी पानरला कहै छी। "

ओमहरसँ जे जबाब पुछने हेतनि, मुदा रंगाजी फेर कहला–

"एकटा लरजुँक बड़ नीक गबैया छथि । "

कनीए कालक पछाति फेरि कहला–

"लड़का तँ लोकले छथि मुदा एक नम्बर गबैया छथि ! "

कनीए काल रूकि कऽ फेर आग्रहक स्वरमे रंगाजी कहला–

"सर ! देखियौ कनीए, मौका देल जेतैक चाही। "

कनीकाल पछाति फोन डिसकनेक्ट भेल। गोनरकेँ रंगाजी कहलखिन–

संस्थापक चलि जो, ओतए कहतौ हेँ। पहिने गीत गबबैतौ तखन चुनाव हेतौ। अखने चलि जो। "

गोनरकेँ रंगाजी साइकिल बढ़ेँ करए, मुदा बूझल नै छल जे संस्थान छै केतए ! तैयो पुछैत-पुछैत

रिंदा भेल। शेहवक दक्षिन, रॉन्हक कछेवमे उँजवा बंगक मकान, अग्वथारे-पछथारे नाना पवकावक बंग-रिबंगक फूलक गाछसँ सजल-धजल फुलरॉड़ ी अछि। सड़कक कातमे साएनरोॅडपव निखल अछि 'महिला कल्याण संस्थान'। गोनव साएकिल नीचाँ धँसा संस्थानक प्राङगनमे पहुँचल, जैठाम दुचक्किया आ चविचक्किया गाड़ ीक पार्किंग लगल छल। बुझना गेल, एते सभकेँ-सभ भी.आइ.पी. पहुँचल अछि। कातमे साएकिल लगा, एकटा हॉलमे लोक सरॅहक स्वनगाम देखि भीतव घूसल। प्राफेसव साहेबॅक नाओं पूछि गोनव लग गेल आ पविचए देलकनि। पवि चए दएतो रैसैक आदेशे भेटलै। गीत गोनहाव, नाच केनहाव आ आनो आन कनाक प्रदर्शन केनहाव सभ वहए आ बिहनसव होएत वहए। कनीए कालक पछाति गोनवसँ गीत गरॅरोल गेल, गोनवक सेलेक्सन नै हेबॉक तँ कोनो सवाले नै वहए, आश्वासन भेटै गेलै जे एकटा गीत गोनवो गाएत।

गीतक आयोजन शुरू भेल। एक-सँ-एक भी.आइ.पी. सभ पहुँचल छला। विशिष्ठ अतिथि सभकेँ रैसैक रेॅरस्था मंचपव आ मंचक अगल-बॅगलमे कएल गेल वहए। ओ आयोजन सार्वजनिक चंदा चिठ्ठासँ होएत वहए जइमे बॅड़का-सँ-बॅड़का प्रजीरॅला लोकक धिया-प्रुता सभ भाग लेने वहए। सिरनाथ सहाय, जीतुवाज जौहव आ स्थानीय सिरिल अधिकावी सभ मुख अतिथिक रूपमे मंचपव आसीन भेल वहथि।

गायन, रादन आ नृत्य ओ तीन्‌ संगीत छी एकव प्रस्तुति बसे-बसे हुअ लगल। हव-एक आदमी जे रॉजि सकैए ओ गाएरो सकैए किएक तँ गायन रोॅलीएक

एकटा उँन्नत रूप छी। स्फदा नर-सिख्था गारैंया नेन समान रूपसँ निर्देशेन था निथमित रूपसँ थभ्यास जरूवी होगत थछि, जे रैंसी-सँ-रैंसी रँचा सभमे ओतेक नै छनहि। गायन एकटा एहेन काज छी जगमे स्ववक सहायतासँ संगीतमय ध्वनि निकानन जागत थछि। स्वरेरस्थित ध्वनि जे वस दैत थछि था वसक थनुभूति कवरैंत थछि रएह संगीत कहरैंत थछि। ऐ कनाक प्रदर्शन यहरू, उँसेर, प्रार्थना था भजनक समए मन्वथक द्वावा गारन था रँजारनक माध्यमसँ कएन जागत थछि। जे गारैंए ओकवा गरैंया, जे नाचे ओकवा नचनियाँ था जे रँजरैंए ओकवा रँजनियाँ कहन जागए।

प्राग्राम होगत-होगत थदहा वाति रीति गेन स्फदा थखनि धवि गोनवकेँ मौका नै भेटैन। रँखत केव पहियया रँठ्ाैत गेन था वाति दू रॉजि गेन। रिशि ष्ठ थतिथि सभ घव दि स रिदा भेना, दर्शको सभ वसे-वसे जाए नगन, तरँ जा कह गोनवक नाओं एनोन्स कएन गेन। गोनव स्टेजपव थाएन। गोनवक स्फँहसँ वाग नयामेक रूपसँ रेंरस्थित भर संगीतरूपी नहवि सम्फ्रद्रक जरावि जकाँ पसवए नगन। जग प्रस्तुतिमे कनाक प्रदर्शन ह्थए था जग कनाकेँ संगीत या मनोवंजन कहन जाए, गोनवके कंठसँ रएह स्ववीनी कंठाध्वनि, ओहिना उँपेन्न ह्टै नगन जेना राध्ययंत्रसँ स्वसज्जित ध्वनि निकनैए।

जे सभ प्राग्राम छोड़ि ,ु घव दिस रिदा भेन वहए, उँहो ओते ठमकि गेन, डेग पाछू थींचए नगनै, सभ थापस थारँए नगन था जेकवा घवपव थरॉज जागत वहए, ओकवाे जिज्ञासा ह्थ नगन जे के एहेन गरैंया छी था केतक छी? किछ रि शि ष्ठ मेहमान

सभ सेहो घूमि आएल छला। गोनबक गाौना पछाति सभ हिनका लग रँजा परिचए-पात पूछए लगल आ प्रसंशा सेहो करए लगल। गोनबकेँ आशा जगल जे किछो हिनका मदति करथि।

जौं शुद्ध मनसँ भगवानकेँ यादि कएल जाए तँ भगवानो कोनो रूपमे दर्शन देबेँ करै छथि न। वएह भेल, जीत्तबाज जौहर शौ.री कलाकार, गोनबकेँ आश्वासन देलकनि-

“दू महिना बाँद अहाँ दिल्ली आउ, ओतए संगीतक ऑडिसन छै।”

गोनब हर्षित भऽ गेल आ जोर-सोरसँ ऑडिसनक तैयारीमे लागि गेल।

डॉ. श्रीमोहन झा, अध्यक्ष– मैथिली विभाग, कवि प्रसाद साह महाविद्यालय, निर्मली (स्वपौल)

<u>मिथिलाक इतिहास</u>

इतिहास साक्षी अछि जे वैदिक कालहिसँ जाहि मिथिलाक प्रतिष्ठा ब्रह्मज्ञानक विकास-केन्द्रक रूपमे भेल, जतय खेलहुमे ब्रह्मविद्या सिखाओल जाइत छल, जकर अनुशासन द्वारा स्मार्त कालहुमे देश-देशान्तरक आचार-विचारक क्षेत्रमे प्रेरणाक श्रोत बहल, जे जनपद अपन दर्शनिक विचार-धारासँ सम्पूर्ण भारतकेँ आलोकित कयलक ओ जकर काव्य-कल्पना भारतीय साहित्यक रस-प्रवाहकेँ निरन्तर समृद्धि कयलक ओहि मिथिलाक पावन भूमि जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, कपिल, कणाद, गंगेश, चिन्तामणि, मण्डन, उदयन, वाचस्पति, पक्षधर, विद्यापति, गोकुलनाथ, अयाची, शंकर ओ ज्योतिरीश्वरक मिथिला न्याय, तत्वमीमांसा एवं सांख्यक जन्मभूमि मिथिला ख्यातिसँ भारतमे नहि अपितु समस्त विश्व आलोकित अछि।

मिथिलाक सीमा प्रसंग वृहद् विष्णु पुराणमे कहल गेल अछि जे मिथिलाक उत्तरमे नागाधिराज हिमालय एकर प्रहरीक रूपमे ठाढ़ छथि। दक्षिणमे पतित पावनी गंगा अपन कलकल-ध्वनिसँ एकर चरण स्पर्श करैत छथि। पूवरमे नृत्य करैत चिर-चंचला कौशिकी एकर सभ्यता आ संस्कृतिक संवाहिका तथा विध्वंशिका दुनू मानल जाइत छथि तँ पश्चिममे धीरगमिनी गण्डकी स्वर्णक समान चकमक करैत एकर श्रृंगार करैत छथि।

कवीश्वर चन्दा झा सेहो अपन रामायणमे उपर्युक्त आधारकेँ स्वीकार करैत मिथिलाक सीमाक प्रसंग कहलने

ছথি–

"গংগা রঁহথি জনিক দক্ষিণ দিশি পূর্র কৌশিকাধাবা।

পশ্চিম রঁহথি গণ্ডকী উঁত্তব হিমবত রন রিস্তাবা। ।

কমনা ত্রিহগা খমৃতা ধহ্মবা রাগমতী হৃতসাবা।

মধ্য রঁহথি নক্ষমণা প্রভুতি সে মিথিনা রিদ্যাগাবা... ।"

রর্তমান সময়মে মিথিনাক পূর্ণ রিস্তাব ভ২ গেনাক কাবণেঁ একব সীমা দবভংগা, মধ্রঁনী, চম্পাবণ, হ্মংগেব, হ্মজথহ্মবপ্পব, সহবসা, পূর্ণিযাঁ, খববিযা, কিশনগংজ, ভাগনপ্পব এরং হিমানয কেব তবাগ ধবি পসবি গেন খছি। এহি প্রকাবেঁ গংগা–প্ররাহসঁ নহ কহ উঁত্তব হিমানয ধবি সএ মীন তথা পূববঁমে মহানন্দাসঁ পশ্চিম গণ্ডকী ধবি ২৩০ মীনমে মিথিনা দেশ খছি।

খতি প্রাচীন কানসঁ মিথিনা তীবভুকতি নামসঁ প্রচনিত ছন। এহিঠাম নদীক রাঁহুন্য খছি এরং ওহি সভক তীবমে নোক সভ রঁসৈত গেনাহ তেঁ মিথিনাক পর্যায তীবভুকতি নাম প্রচনিত ছন জে রর্তমান সময়মে তিবহুত নামসঁ প্রসিদ্ধ খছি।

মিথিনা নামকবণক প্রসংগ খনেক পৌবাণিক খাধাব খছি। ভরিষ্য প্পবাণক খনুসাব মিথিনাক নামকবণ বাজা 'নিমিক'ক প্পত্র মিথিক নামপব বাখন গেন খছি। খযোধ্যাক বাজা নিমি এহি পূণ্য ভূমিপব খযনাহ তেঁ নিমিক প্পত্র মিথিক নামপব এহি প্রদেশক নাম মিথিনা

পড়ৢন। ক্ষদা পাণিনিক কথন ছনি জে জতয শেত্রক উন্মূনন কযন জায তাহি ভূ-খণ্ডক নাম মিথিনা খছি। মহাভাবতক যজ্ঞমে মিথিনাক বাজা পাণ্ডরক সংগ যজ্ঞ কযনে ছনাহ। এহিসঁ স্পষ্ট খছি জে মৈথিন নোকনি যোদ্ধা সেহো হোগত ছনাহ। বাল্মীকি বামাযণমে সেহো মিথিনা নবেশক রীবতাক বর্ণন ভেন খছি।

রিশ্ব রাঙ্গমযমে সংস্কৃতক সাহিত্য-সবিতা খত্যন্তর্যাপক, দীর্ঘকানিক ও নিবন্তব প্ররহমান বহন খছি। এহি খমৃত সিন্ধুসঁ রিন্দু-রিন্দু গ্রহণ কয ভাবতক সমস্ত নোক ভাষা-সাহিত্য সমৃদ্ধ ও সংরনিত ভয যগ-যগসঁ সমস্ত রিশ্বকেঁ প্রেবণা-পুঞ্জ খানোক প্রদান করৈত খারি বহন খছি। সংস্কৃতক খক্ষয-ভণ্ডাবসঁ ভার বাশি গ্রহণ কয ভাষা-সাহিত্যক পবতী-পাঁতিব পর্যন্ত স্ববভিত ও স্বরাসিত হোগত বহন খছি।

ভাবতীয গতিহাসক ও সাংস্কৃতিক মর্মজ্ঞ মনীষী নোকনি জনৈত ছথি জে ভাবত রর্ষক বাষ্ট্রীয খখণ্ডতামে সংস্কৃত ভাষাক খদ্বিতীয স্থান বহন খছি। প্রাচীনকানসঁ নয খাসেত্ত হিমানয সাংস্কৃতিক, ধার্মিক ও দার্শনিক রিচাবক খাদান-প্রদানক মাধ্যমে সংস্কৃতে ভাষা বহন খছি। কার্যক কোনো রিধাক সর্জনা এহিমে ভেন খছি।

গতিহাসকাব নোকনি ভাবত রর্ষক ওহি ভূ-ভাগকেঁ মিথিনা কহন খছি জে কতেকো দৃষ্টিসঁ খপন খপ্রতিম রিশিষ্টতাক মহত্ত্বকেঁ খদ্যারধি স্ববক্ষিত বখনে খছি। মিথিনাক ও পারন-ভূমি খপন সভ্যতা-সংস্কৃতি, জপ-তপ, ধ্যান-ধাবণা-সমাধি খাদি উন্নত মানরতাক সাধক

ग्णक कावणेँ श्वाग संसाव मध्य शीर्षस्थ स्थान वखने श्विछ। मिथिनाक माटि-पानिमे किछ एहन रिनक्षण शकति सर्रदासँ सन्निहित वहनैक श्विछ जाहिसँ एहिठामक नोक शिष्ट, सज्जन, प्रतिभाशानी, रिघा-र्यरसायी एरं तत्र्र चिन्तनक होगत वहन श्विछ। यज्ञ-स्थनक केन्द्र मिथिना जे श्वपन यज्ञक धूआँसँ समस्त रातारवणकेँ पारनमय रॅनौने वहन श्विछ। रैदिक कानसँ नय श्वद्यारधि मिथिनामे उँत्पन्न भय श्वपन दिर्य श्वरदानसँ समस्त-रिश्वकेँ चकित-स्तम्भित कयनिहाव श्वृषि-म्नि, योगी-साधक, दर्शनिक रिद्वानक जँ सूची रॅनाओन जाय तँ ओहिसँ केओ श्वाश्चर्यचकित भय जायत।

दर्शनिक क्षेत्रमे मिथिनाक नाम श्वग्रगण्य वहन श्विछ। न्याय सूत्रक प्रणेता गौतम, रैशेषिक दर्शनक प्रणेता कणाद एरं नर्य-न्यायक जनक गंगेश उँपाध्यायक कावणे मिथिना दर्शन क्षेत्रमे पूर्ण ख्याति प्राप्त कयने छन। हिनक श्वतिविकत उँद्योतकव, मण्डन, राचस्पति श्वादिक नाम उँननेखनीय श्विछ। रेदान्त सूत्रक शंकवक र्याख्या राचस्पति द्वावा भामती नामसँ निखन गेन श्विछ। मण्डन एरं शंकवाचार्यक शास्तार्थ तँ जगत प्रसिद्ध श्विछ। जैमिनिक मीमांसा तथा कपिन म्निक सांख्य दर्शनक निर्माण सेहो एहि परित्र भूमिपव भेन। मिथिनाक महान नगवी तथा रौद्ध एरं जैन धर्मक म्ख्य प्रभार क्षेत्र निच्छरी रंशक वाजधानी रैशानी प्राचीन गतिहासमे महत्त्रपूर्ण स्थान वखने श्विछ।

मिथिनाक गतिहास एकव साक्षी श्विछ जे रैदिक य्गहिसँ मिथिना संस्कृति, न्याय, तर्कशास्त्र, रिज्ञान,

গণিত, কামশাস্ত্র, মীমাংসা, ব্যাকবণ, ধর্মশাস্ত্র তথা দর্শনক অধ্যযন-অধ্যাপনক কেন্দ্র দীর্ঘকান ধবি বঁনন বহন। সম্বন্ধ যুগহিমে বিভিন্ন প্রকাবক বিশান সাহিত্য অসতিত্বমে আযন, জাহিমে বৌদ্ধিক বিকাস তথা আধ্যাত্মিক প্রগতিক পবাকাষ্ঠাক রূপমে সথিত বিভিন্ন উপনিষদ সভ সমমিনিত অছি। বিশ্বাস দেবীক সমযমে মিথিনামে চৌদহ সয মীমাংসকক এক বৈসক ভেন ছন। অত: উকত যুগহিমে গার্গী, মৈত্রেযী তথা স্বনভা সনক প্রতিভাশানী নাবীক উদাহবণ ভেটৈত অছি। এহি প্রকাবেঁ তত্কগীন বাজা সবঁহক সংবক্ষণমে উচ্চ শিক্ষাক অনেক নিযমিত সংস্থা ছন। এহন সংস্থা সভ সামান্যত: 'চবণ'ক নামসঁ জ্ঞাত ছন।

অত: এহী বৈদিক যুগহিমে জনক ও যাজ্ঞবল্কয সন শ্রেষ্ঠও অগ্রণী দার্শনিক ছনাহ। ওহি সমযমে অন্য প্রান্তহ্সঁ দার্শনিক নোকনি জনক ও যাজ্ঞবল্কযসঁ অধ্যাত্ম সম্বন্ধী শিক্ষাক জ্ঞানোপার্জন হেতু অবৈত ছনাহ। যাজ্ঞবল্কযক জীবনবৃত্ত বস্তুত: হ্নক মাতৃভূমিক তত্কানীন সাংস্কৃতিক ইতিহাস থিক। যাজ্ঞবল্কযক অতিবিকত গৌতম, কপিন, বিমাণ্ডক, শতানন্দ তথা শৃংগ-ঋষি ততেক বিখ্যাত ছনাহ জে বাজা দশবথ সেহো হিনকা পুত্রেষ্টি-যজ্ঞক সম্পাদন হেতু কৌশিকী ঘাটমে আমংত্রিত কযনে ছনথিন। ও কাশ্যপ শাখাসঁ সম্বন্ধ ছনাহ। অত: জাহি মিথিনাক পাবন ভূমিপব ব্রহ্মজ্ঞানক সর্বশ্রেষ্ঠ মহর্ষি যাজ্ঞবল্কযক সিদ্ধতা আদি মিথিনাক আধ্যাত্মিকতাকেঁ সিদ্ধ-প্রসিদ্ধ কবৈত অছি। স্মৃতিকাব যাজ্ঞবল্কয পবম ধর্মকেঁ নিরূপিত কবৈত কহনে ছথি-

"অযং তু মবমো ধর্মো যদ্যোগেনাত্মদর্শনম্।"

मिथिनाक सभ्यता आ संस्कृतिक प्रसंग महापण्डित बाहुन सांकृत्यायन ऋृग्वेदकेँ 'प्राचीन ऋृषि' शीर्षक नेखमे कहने छथि जे गौतम, बहुगण, दीर्घतमा, कक्षिरन्त, विश्वामित्र आदि पूर्वोत्तब विभावक सभ्यता आ संस्कृति आदिक जनक छनाह। विश्वामित्र 'कौशिक' नामसँ प्रख्यात भेनाह तथा कौशिकी हिनकब शापभ्रष्टा सहोदबा छनथिन। एही कौशिकी क्षेत्रमे विश्वामित्र ब्राह्मणत्व प्राप्त कयने छनाह। आ ओ कौशिकी क्षेत्र नि:सन्देह मिथिनाक भू-भाग बहन अछि।

मिथिनाक सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवस्थाक सम्बन्धमे ज्योतिवीश्वब अपन 'धूर्तसमागम' तथा 'वर्णबत्नाकब' मे पूर्ण सामग्री प्रस्तुत कयने छथि। वर्णबत्नाकब महत्व ऐतिहासिक दृष्टिसँ भावतीय प्रवातत्वक एकटा कोष अछि तथा मध्यकानीन पूर्वोत्तब भावतक एवं विशेषतया मिथिनाक जनजीवन एवं संस्कृतिक जीवन्त चित्रण प्रस्तुत कबैत अछि। समाजमे संस्कृतक एतेक अधिक प्रभाव एवं प्रचाब छन जकब उँदाहबण स्वयं विद्यापति देने छथि। बाजा हवि सिंहदेवक आदेश तथा प्रेबणासँ बनाओन पंजी-प्रबन्ध, जे तत्कानीन समाजमे अत्यधिक प्रचनित भेन, संस्कृतहिमे निखन गेन।

एहिसँ स्पष्ट होगत अछि जे तत्कानीन समाजक बीति-नीति, आचाब-विचाब, धर्म-कर्म सामाजिक बन्धन, क्रिया-कनाप, दर्शन, स्मृति आदि सम्बन्धी विषय-वस्तुक बचनाक माध्यम संस्कृते छन। तकब मून काबण जे मिथिनाक बाजन्य वर्ग संस्कृति, साहित्य, दर्शन, ननित कनामे रूचि बखैत छनाह ओ कतोक बाजा संस्कृतक विद्वान सेहो छनाह। एहिठामक बाजा नोकनि संस्कृत

बचनाक अध्यापन तथा रद्वान लोकनिक आश्रियदाता बहैत अयनाह। महाराज महेशे ठाकुर तँ अपन रिद्वताक कारणेँ मिथिलाक राज्य प्राप्त कयने छलाह।

रिद्यापतिक बचनापर दृष्टिपात कयलासँ स्पष्ट होइत अछि जे तत्कालीन बचनाक माध्यम कोन भाषा छल तथा राज दरबारमे कोन-कोन रिषय सर्हक बचना होइत छल रिद्यापति राज पण्डित छलाह। पण्डित रर्गक भाषा संस्कृत छल। अत: अपन पाण्डित्य प्रदर्शन करबाक हेतु संस्कृतेमे बचना करब अनिरार्य बूझि पड़ैत छनि।

मिथिला तंत्र रिद्याक प्रधान केन्द्र छल एरं कतेको ताँत्रिक एरं रैज्ञानिक सेहो छलाह। मिथिलामे नरीन भकति मार्गक रूपमे तंत्र मार्गक रेंस प्रचार भेल। फलत: जाहि रंशमे सिद्ध ताँत्रिक बहथि, ओहि रंशमे सिद्ध ताँत्रिकक उपास्य देरीक मंत्र ग्रहण कय ओही देरीक उपासना करबाक प्रथा मिथिलामे अद्यपर्यन्त प्रचलित अछि।

रस्तुत: प्राचीन धर्मशास्त्र आदिक मनन ओ चिन्तनकय युगक आरश्यकतानुसार आचार सूत्रक अनरेषणक संगहि ओकरा नर र्याख्या देबाक आरश्यकता छल। ई ओहि समयक समाजक हेतु जीरन-मरण ओ अस्तित्रक प्रश्न छल। मिथिलाक पण्डित लोकनि एहि उत्तरदायित्रकेँ निष्ठापूर्रक रिराहि कयलनि। अतएर महाकरि रिद्यापति सेहो एही परम्पराक आश्रय ग्रहण कयलनि।

प्राचीन कालहिसँ मिथिलाक ई रिशेषता रहल अछि जे एहिठामक राजा लोकनि जनक रंश, कर्णाट क्षत्रिय अथरा ओइनराब शासक होयबाक संग-संग धर्म-कर्म एरं सामाजिक आचार-रिचारक नियामक सेहो होइत

ছনাহ। এহী কাবণেঁ স্মৃতি গ্রন্থক বচনা এতেক স্বদৃঢ় ভয গেন ছন। খপন খাচাব বক্ষাক হেতু সংস্কৃতক জ্ঞান খাবশ্যক ছনৈক তেঁ সমাজক জনমানসমে সেহো সংস্কৃতক প্রচাব-প্রসাব ছনৈক। এবং প্রকাবেঁ ভাবতক ধর্ম, সংস্কৃতি-সাহিত্য, সংগীত ও কনাক ক্ষেত্রমে কর্ণাট শাসক নোকনি জে প্রেবণা-পুঞ্জ নয খবতীর্ণ ভেনাহ সে ওগনবাব কানমে গতিমান নহি বহন খপিতু ওকব ব্যাপক প্রভাবক সমতা পববর্তী কোনো শতাব্দীমে নহি ভয সকন।

কর্ণাট খা ওগনবাব বংশক পতন মিথিনাক হেতু কষ্টকব সিদ্ধ ভেন। বাজনীতিক খধ:পতনক সংগ-সংগ পববর্তী কানমে মিথিনা সাংস্কৃতিক ক্ষেত্রমে সেহো খবনতিক দশামে খাবি গেন। কিন্তু খানোচ্য কানমে সাহিত্য খা কনাক ক্ষেত্রমে মিথিনাক উল্লেখনীয খবদান বহনৈক। এহি স্তবপব কর্ণাট-ওগনবাব-যুগীন মিথিনা জনক-যাজ্ঞবল্ক্য কানীন মিথিনাসঁ তুননীয খছি।

ওগনবাব কান ভাবতীয সাহিত্যেতিহাসমে বস্তুত: 'স্বর্ণযুগ'ক রূপমে গনন জাগত খছি, কাবণ উক্ত কান পর্ববর্তী যুগসঁ এহি দৃষ্টিসঁ ভিন্ন খছি জে এহিমে সংস্কৃত-বিদ্যাক ক্রমিক প্রচাব-প্রসাবক সংগ-সংগ নোক ভাষা সাহিত্যোক বিকাসক মার্গ প্রশস্ত ভেন। মিথিনাক বিদেহ বাজা জনকক সমযমে জাহি সংস্কৃতিক সূত্রপাত ভেন ছন ওকব পূর্ণোৎকর্ষ মহাকবি বিদ্যাপতিক যুগমে ভেন।

জযোতিবীশ্বকক পশ্চাত্ মহাকবি বিদ্যাপতিক কোমনকান্ত পদাবনীক বসাস্বাদন কয সম্পূর্ণ পূর্বোত্তব ভাবতবর্ষক সাহিত্য-প্রেমী ভাব-বিভাবে ভয

গেনাহ । মিথিনাক সংগ ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক বহরাঁক কাবণেঁ এহিঠামক চিন্তন, সাহিত্য তথা সংস্কৃতি রঁগান, খাসাম এরং উঁড়ীসাক প্রেবণা শ্রোত রঁনি গেন । হিনক গীতক খনুকবণপব একটা নরীন ভাষা ব্রজরুনি সাহিত্যক জন্মভেন । খাসামক প্রমুখ রৈষ্ণর ভকত শংকবদের তথা রঁগানক মহা প্রভু চৈতন্যদের তঁ সহজহি রিদ্যাপতিক গীত গরঁত-গরঁত মূর্ছিত ভয জাগত ছনাহ ।

এগাবহম শ.মে ভাবতমে মুসনমান সরঁহক খাগমন ভেনাসঁ হিন্দু সমাজক খসতিত্বর রস্তুত: সংকটাপন্ন ভয গেনৈক । হিন্দূ নোকনিক বাজনীতিক স্বতংত্রতা সমাপ্ত ভয গেন । এহি জাতিক সমাজিক শ্রৃংখনা তথা পাবস্পবিক সৌমনস্যক খন্ত ভয বহন ছনৈক । এহি সংকটসঁ রঁচরাঁ নেন ব্রাহ্মণরস্ক নিরঁন্ধ নিখি ওহি সামাজিক মন্দিবকেঁ ধ্বস্ত হোযরাঁসঁ রঁচযরাঁক প্রযাস কযনক । বাজনীতি তথা খর্থ র্যরস্থাপব কোনো খধিকাব নহি বহি জযরাঁক কাবণেঁ উঁকত ব্রহ্মণ নোকনি খপন ধ্যানকেঁ মুখযত: সামাজিক তথা পাবিরাবিক জীরনপব কেন্দ্রিত কযননি । ওকব পবিণতি জীরনক রিভিন্ন ক্ষেত্রক নিযমনক হেতু খাচাব সংহিতা তথা রিধি-র্যরস্থাক সমরঁন্ধী নিরঁন্ধক ও নিযম-পবিনিযম নির্মাণ ভেন । উঁকত স্মৃতি রিষযক বচনা খপন খান্তবিক মূন্য, সার্থকতা খা সরঁনতাক কাবণেঁ খনেক শতকক দুর্দশা গ্রস্ত স্থিতিওমে হিন্দূ সমাজক স্বতংত্র র্যকতিত্বরক বক্ষা কয সকন । হিন্দূ রিদ্যাক একটা প্রমুখ কেন্দ্র বহরাঁক কাবণেঁ মিথিনামে নিরঁন্ধ নেখনক স্বতংত্র পবমপবাক খসতিত্বর খাশ্চর্যজনক খছি ।

ওগনরাব কানহ্মে প্রশাসনিক স্বরূপ ওহিনা বহন

जे कर्णाटि कालमे छल। मैथिल लोकनि वर्णाश्रम-व्यवस्थाक कट्टर अनुयायी रहलाह अछि। सम्बन्धकालक मैथिल समाजमे सनातन धर्मक पालनक प्रति पूर्ण निष्ठा परिलक्षित होइत अछि। विदेशी सभसँ आक्रान्त भेलहुँ मैथिल समाज अपन स्वतंत्र व्यक्तित्वकेँ सुरक्षित रखबामे पूर्ण सफल रहल।

महाकवि विद्यापति सेहो तत्कालीन समाजक विशद वर्णन कयलनि अछि। हुनक कीर्तिलताक विभिन्न स्थलसँ ज्ञात होइत अछि जे मुसलमानी आक्रमणक फलस्वरूप तिरहुतमे बहुत दिन धरि अराजकता तथा अव्यवस्था व्याप्त रहल। हिन्दू समाज उत्पीड़ित तथा अपमानित जीवन व्यतीत करबाक हेतु विवश छल। मुसलमान आक्रमकक आतंककारी प्रशासनसँ साहित्य साधना ओ परम्परा सेहो क्षत-विक्षत भय गेल छल। भारत पर मुसलमानी प्रभाव जाहि निर्मम ओ नृशंस रूपमे बढ़ल रहल छल ताहिसँ समस्त भारतीय जन-मानस आलोड़ित भय उठल छल। विद्यापति तत्कालीन समाजक विशद वर्णन 'कीर्तिलता' मे कयने छथि जे दृष्टव्य अछि-

"धरि आनए बाभन बड़ुआ।"

मथाँ चढ़ाबए गाइक चुड़ुआ।।

फोर चाट जनउ तोड़

उपर चढ़ाबए चाह घोड़।।"

एहि प्रकारेँ ज्ञासाक तेरहम-चौदहम शतकमे एहि ब्राह्मण धर्म प्रधान प्रदेशकेँ एकटा सर्वथा भिन्न आ

প্রতিক্ষন ধর্মকি সামনা কবয পড়ৈনৈক। ও ধর্ম ছন গসনাম জে ক্ষসনমান রিজেতা সৰ্হক সংগ এহি প্রদেশিমে প্ররেশ পওনক। নিৰ্ন্ধকাব তথা ধর্মিক নেতা নোকনি ৰ্হ্ত দিন ধবি এহি ধর্মক প্রভারকেঁ বোকৰাক প্রযাস কযননি। কিন্তু সমযক প্ররাহক সংগ-সংগ গসনাম সেহো হিন্দূ ধর্ম খা সমাজপব খপন প্রভারক প্রসাব কবএ নাগন। মৈথিনীমে র্যরহৃত খনেক ফাবসী তথা খবরী শর্ব্দ, মিথিনাক খাদানতিমে পাবম্পবিক হিন্দূ রিধিক খন্বসাব ন্যাযিক ক্রিযা-কনাপক সম্পাদন, তজিযা, দাহা খাদি ক্ষসনমানী পর্ব-তযোহাবক প্রতি হিন্দূক সম্মান তথা ছঠি, ঘড়ী খাদি হিন্দূ পর্ব খা ধার্মিক খন্বষ্ঠানমে ক্ষসনমান সৰ্হক খাস্থা, খকৰ্ব দ্বাবা চনাওন গেন হুসনীসানক বাষ্ট্রীয সংরতক রূপমে মিথিনামে প্রচনন, খনেক ক্ষসনমান সন্ত দ্বাবা খপন বাগ তবংগিণীমে গমাম তথা হিবদাসী নামক ক্ষসনমানী বাগক সমারেশ খাদি কতিপয তত্বর হিন্দূ খা ক্ষসনমান জন সম্প্রদাযমে সাংস্কৃতিক তত্বরক খাদান-প্রদান তথা সমমিশ্রণক সূচক থিক।

ওগনরাব কান তুর্ক খাক্রমণক যুগ ছন। জখন ক্ষসনমানী খাক্রমণক পহিন ৰাঠ় রিহাব ধবি পহুঁচি গেন ছন, ক্ষদা তখনহুঁ মিথিনা ওহিসঁ ৰচন বহন খা মৈথিন বাজ সভামে সংস্কৃত কার্য সাহিত্য খাদব পৰৈত বহন। যদ্যপি উঁকত যুগ-পূর্বরতী যুগ জকাঁ প্রকাণ্ড রিদ্বান সভকেঁ জন্ম নহি দয পওনক। এহি বাজরংশক শাসনকানমে জগধব, রিদ্যাপতি, শংকব মিশ্র তথা রাচস্পতি মিশ্র গা চাবিটা মিথিনা রিভূতি ভেনাহ।

রিদ্যাপতিক সমযমে গসনাম এরং হিন্দূ ধর্মক ৰীচ সেহো এক প্রকাবক খাদান-প্রদান প্রাবম্ভ ভয চুকন

छल। उँत्तर विहार ओहि समयमे सूफी लोकनिक एक प्रधान केन्द्र बनि चुकल छल। महाराज शिवसिंह मुसलमान सन्त एवं फकीरकेँ जे दान देने छलाह ओकर प्रमाण सेहो प्राप्त भेल अछि। ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'मे जे विदेशी अरबी-फारसी- शब्द भेटैत अछि जाहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे राजनीतिक आधिपत्यक बहुत पूर्वहि मिथिलामे अरबी-फारसी भाषासँ सम्पर्क भय गेल छल। सूफी सन्त एवं फकीरक माध्यमसँ एहि प्रकारक सम्पर्क सम्भव भेल होयत। तिब्बती यात्री धर्म स्वामी जखन १२३६ ई.मे तिरहुतक राजा रामसिंह देवक अतिथ आयल छलाह ओही समयमे एहि क्षेत्रमे मुसलमानक प्रकोप बढ़ि रहल छल। दुनू धर्मक समन्वय एवं समागमसँ नवीन दृष्टिकोणक बीजारोपण भय रहल छल एवं विद्यापति युग धरि अबैत-अबैत एकर आओरो विकास भेल।

उँन्नैसम शताब्दीक मध्यमे अबैत-अबैत मिथिलाक सामाजिक जीवनमे परिवर्तनक प्रक्रिया प्रारम्भ भेल। अंगेज लोकनिक राज्य भारतधरि नीक जकाँ प्रतिष्ठित भय गेल छल। एहि क्रममे ओलोकनि अपन धार्मिक तथा सांस्कृतिक प्रचार जोर-शोरसँ प्रारम्भ कयल। अपन धर्मग्रन्थक भारतक विभिन्न भाषामे अनुवाद कराय जनतामे प्रचार प्रारम्भ कयल। भारतक अनेक भागमे लोक सभ इसाइ बनय लागल। एकरे प्रतिक्रियाक रूपमे प्राय:एतय ब्रह्म समाज एवं आर्य समाजक आन्दोलन आरम्भ भेल। राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द ओ स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि धर्मिक एवं सामाजिक नेता लोकनिक आन्दोलनक फलस्वरूप जन साधारणमे एक नवीन चेतनाक संचार

ভেল। ফলত: পাশ্চাত্য সাহিত্যসँ প্রেবিত ভয় খপন ক্ষেত্রিয় খান্দোলনসँ উদ্বাধিত ভয় এহিঠামক নোক খপন-খপন মাতৃভাষা সাহিত্যকেঁ নরীন ভার-শিল্পসँ সমন্বিত কবরাক হেতু খগ্রসব ভেল। ১+৩৪ ঙ্‌.মে চাল্সি উড জাহি প্রণানীক শিক্ষাক খাধাবশিনা বাখন তাহিমে মাতৃভাষাকেঁ শিক্ষাক মাধ্যমক রূপমে স্বীকাব কযন গেনৈক।

খংগ্রেজী প্রশাসনক সময় মৈথিনী সাহিত্যক সাধক নোকনি পুন: খপন প্রশস্ত মাগ্রপব খগ্রসিত ভেনাহ জে স্বতংত্রতা সংগ্রামক পৃষ্ঠ ভূমিমে পুন: নর চেতনা ও নর স্ফূর্তি বীজরূপমে মৈথিনী ভাষা ও সাহিত্যক বহুমুখী উত্থানক প্রেবক হোগত খাবি বহন খছি। বিদ্যাপতিক পশচাত্ গোবিন্দদাস, মনরোধ, হর্ষনাথ, চন্দা ঝা খাদি কবিগণ ভেনাহ। খত: মিথিনা খপন বৈভরপূর্ণ সাহিত্যিক পবম্পবাক কাবণেঁ ভাবতরর্ষমে খদ্বিতীয স্থান বখনে খছি।

---

(১) বী.সী. না গ্রন্থ ভাগ-১ ১২+-১৩৯ হু. সবকাব, এ্যীএষ্টিব গ্ল্ডিযা পৃ. ৪

(২) বৃহ. উপ. ৬, ২-১-৭ ঐ. পৃ- +৩-++

(৩) মুখর্জী, মেন এল্ড থাট্ গন এনশিএন্ট গ্ল্ডিযা- পৃ- ৩৩

(৪) দ্. ঝা খভিনন্দন গ্রন্থ, পৃ- ২১৬, মহা. বনপর্র- ১১০

(৩) বিদ্যাপতি নিখনারনী

(৬) পংজী প্রবন্ধ- শ্নোক- ১-২, মি. ত.- পৃ- ১৩৬

(७) ज. ए. सी. बँ. १९१ऽ/ न. स./ पृ- ४३२

(+) ज. बि. ओ. बि. सो.- १३/ सर्च फ़ॅार संस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्ट्स इन ऐण्ड ओड़ि या/ ३-४

(९) वाचस्पति मिश्र- विवाद चिन्तामणि/ ड़ॉ. गंगानाथ झाक अनुवाद/ भूमिका-९-२४

(१०) ज्योतिरीश्वर, वर्णरत्नाकर, सम्पादक डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी एवं बबुआ जी मिश्र, एसिएटिक सोसायटी ऑफ बँगाल, कलकत्ता, प्रथम संस्करण, १९४०

(११) रोयरिक द्वारा सम्पादित, बायोग्राफी ऑफ धर्मस्वामी, १९ऽ९

डाॅ. शि व कुमार प्रसाद, अध्यक्ष हि न्दी वि भाग, हवि प्रसाद साह महावि द्यालय- नि र्मली (सुपौल) , जन्म- 12/11/1956. गाम+पोस्ट- सि मरा, भाया- झंझारपुर, जि ला- मधुबनी, (बि हार)

__बनमानुष__

एकटा भयंकर जंगल छल। ओहि जंगलमे भाँति -भाँति क गाछ-वि रि छ आ जानवर रहै

छल। नोक्सी मनुख जंगलक जाबनि , नकड़ ी आ पशु-पक्षीकेँ व्यापाब कबैत ओग जंगलमे जाग छल। एकटा जंगल जागक खूब चाकब बस्ता बनि गेल छल। ब्रेक-ब्रेकटबक खराज स्वनि ते जानरब सम नंक नष्ट भागि जाग छल। ओही जंगलमे कि छ बनमानुख सेहो बहै छल।

एक दि न एकटा मनुख ओग जंगलक कातमे एकटा बनमानुखकेँ देखनक। मनुख सन बुधि याब जीव केतए भेटैत। बनमानुखकेँ देखि कष्ट ओ सोचए नगन। हे भगवान! ग केहेन जीव अछि । ने नुआँ ने नत्ता। भक्ष-अभक्ष कि छ ने बुझैत अछि । सौंसे देह केश केना ऋबड़ न छै। देह गन्ह तोड़ ैत छै।

बनमानुख सेहो मनुखकेँ देखनक। ओ चुप्प! गुमशुम बैसन छल। मनुखकेँ मन भेनै जे ओहो तँ हमबे जकाँ अछि , ह्दा कोन कि सि मक जीव अछि । छी: छी: एहनो जीव होग छै। बनमानुखकेँ मने-मन धि क्काबैत मनुख पुछनक-

"हौ बनमानुख, पूर्व जन्ममे कोन-कर्म केनह जे भगवान बनमानुख बना देनकह ? "

बनमानुख स्वनि कष्ट चुप्पे बहन। मनुख बएह बात फेब दोहबेनक। आब बनमानुख मनुख दि स बि नु देखनहि बाजन-

"हौ मनुख, भगवान जे कबै छथि न से नीके कबै छथि न। हम पूर्व जन्ममे बड़ नीक कर्म केने बही तँए भगवान हमबा बनमानुख बनौननि । हमबासँ तोँ कथीमे नीक छह से

ৰঁতা সকৈ ছহ কী ? ”

মন্বখ ঔ ৰাঁত স্বনি তে কৃদি উঠন। ৰাঁজন–

“মৌ ৰঁনমান্বখ, সৌঁসে সংসাবমে তোমী সভসঁ কারিঁ ন ? খঁগ মৌ, নে দেহপব কপড়া, খা নে খন্ন–পানি ক ঠেকান ! নে ঘবক ঠেকান। রিঁ মাবী মোগতে পঙ্ক দনি মবি জেরোঁ সে কোনো ঠেকানে নে। পেটক খাতি ব সৌঁসে জংগন ঢহনাগত ফি বৈ ছহ। খা... । ”

জারঁত্ মন্বখ কি ছ খাব ৰঁজৈত তগসঁ পহি নে ৰঁনমান্বখ ৰাঁজন–

“মৌ মন্বখ, থমহ২–থমহ২ দম ন২ নৌহ, খপসি যাঁত ভ২ গেন হেৰঁ২। কনী হমবো স্বনি নৌহ, মৌ, চাননি দ্সনক সূপকেঁ জগমে ৰঁহত্তবি গো ভূব, ঔহ ! ”

তৈপব মন্বখ ৰাঁজন–

“মৌ, ঔ ৰাঁত ঠীকে কহনহ, নে দেহপব কপড়া–নত্তা ! একটৌ ৰাঁত কহ২ তঁ, তোঁ সভ কেতে কপড়া পহি বৈ ছহ। হমবা তঁ ওতেকেঁ নামো নে ৰঁুঝন খছি। ঝদা কি ছ হমহুঁ কহ২ চাহি ছি খ। মৌ, কোট–পেট, পতনূন, ধোতী–সাড়ী, সনরাব–ফবাক কী–কী নৈ তোঁ সভ ৰঁনেনহ। ঝদা সভটৌ ৰঁধি যাবী তঁ ঘোঁসবন জাগ ছহ। মৌগী–ঝনসা সভ কি যো খাগ একটৌ ছোটকা পেট গংজী পহি বনে মাট–ৰঁজাবমে ৰৌখাএত ফি বৈ ছহ। খছৈতে কপড়া দি ন–দি ন দেহ পবহক কপড়া ঘটনে জাগ

ছহ। মৌ, তোবা সৰহক ৰহ্কপি যা ভেষসঁ তঁ হমহী নে নীক। রি ধাতা জে রস্ত্র দেনক ওহীসঁ ত্থপন দেহ ঝঁপনে ছী। সর্দী–গর্মী ত্থা ৰবখোসঁ ত্থপন স্ববক্ষা কবৈত বহৈ ছী। মৌ মন্বখ, তোঁ ঘবক ৰাত কহৈ ছহ। চ্প বহ২ তোঁ সভ কী ৰজৰহ। এক–এক গঁচ জমীন নেন কি যো কেকবো ছোড়়নহক মৌ ? জমীন নেন ভাএকেঁ ভাএ, ৰাপকেঁ ৰেটা, ৰেটাকেঁ ৰাপ, ভাযকেঁ ৰহি ন, কাকাকেঁ ভতীজা, সাবকেঁ ৰহনোগ, মাএকেঁ ৰেটা–ৰেটী কোনো নতীজো ৰাঁকী বখনে ছহক। বাম–বাম। মৌ গুঁটা–খপড় া কি ফূসি –ফটকসঁ ৰনন ঘব ঘব নৈ হোগ ছৈ। জেতএ জীব শান্তি সঁ সাঁস নহ সকএ, জেতএ সভকেঁ সভসঁ প্রেম হোগ ও ঘব ঘব হোগ ছৈ। মৌ, হমসৰ খেত–পথাব, ঘব–দ্ত্থাব ত্থা ধন–সম্পতি নেন কহি যো কেকবো খূন নৈ কবৈ ছি ঐ, ত্থা নে কেনি ঐ। ত্থাব স্বনহ, দাদা–পবদাদাক নগৌন গাছ–রি বি ছ, পবতী–পৰাঁত সভটা তঁ চটনে জাগ ছহ, ত্থাৰ কী চটৈৰহ। রি হাড়় ি –স্বখাব, ভুমকম–স্বনামী জীৰহ দেতহ। হো নাখক নাখ সভ ি দন মবৈ ছহ সে নৈ ব্নৌ ছহক।”

কনীকান ঋকি প্বন: ৰাজন–

“ত্থাৰ চন২ ত্থন্নক ৰাতপব। মৌ, জংগন–খেত–খবি হাঁনমে জে ত্থন্ন, ফন, কন্দ–মূন ছেনহ তগমে কেতেক ৰঁচন ছহ ? কি ছ বহ২ দেৰহক তৰ নে। মৌ, কেতেক ৰড়়কা পেট ৰনা নগ গেনহ ? তোবো তঁ হমবে জকাঁ ফেংফি এ

পড়ৈ ছহ। খমেবি কা, ৰূস, চীন, জপানে নৈ সৌঁসে সংসাবমে সভ কোগ ফেঁফি ঐ বহন ছন। মৌ, তোবে সৰঁহক মাবনে সভ মবন জাগত খছি। পহাড়, জংগন, নদী, সমুদ্র, ধবতী, স্বৰূজ, সভষ্টা ধীবে-ধীবে খতম ভেন জাগত খছি। মৌ, পহাড়, জংগন, নদী সভ জঁ মবি জেতহ তঁ তোহুঁ সভ নৈ বঁচৰঁহ, মবৰঁহ মবৰেঁ কবৰঁহ। হম তঁ ঠীকে পএবে-পএব ৰৌখাগ ছী। ঋদা তোবা জকাঁ পাঁচে ডেগ চননাপব থুস্বৰুনি যাঁ নৈ পাড়ৈ ছী। পবমাত্মাক দেন ফন খাগ ছী। কন্দ-মূন খাগ ছী। নদী, পোখবি ক পানি পীৰেঁ ছী। পহাড়ক খোহমে হমব ঘব খছি। কেশৈ হমব ন্বখাঁ খছি। তোবা সভসঁ খধি ক তাগতি ও খছি খধি ক উঁমেব ধবি জীরি তো ছী। তোঁ দরাগ খাহ, স্বগযা ভোঁকাৰঁহ। টৌ.ৰী. তোবা হোগ ছহ। কৈঁসব তোবা হোগ ছহ। এড্‌স খা নরকা-নরকা ৰেঁমাবী তোবা হেতহ। হমবা নৈ। দৈরক ডাঁগসঁ বঁচৰঁ ৰঁহ্‌ত কঠি ন হোগ ছৈ। জা-জাহ খপন বস্তা দেখহ গহ।”

এতৰাঁ কহি ও চুপ ভহ গেন। মন্বখ সন্ন ছন। কি ছ নৈ জরাৰঁ দৈত দেখি ৰঁনমান্বখ ফেব ৰাঁজৰঁ শ্বৰূ কেনক-

“ৰাঁপকেঁ ৰেঁটৌ খূন কৰৈ ছহ। ৰঁহি নক গবদনি পব নাত দহ কহ হি স্সা নেন ঘবসঁ নি কানৈত ছহক। তঁএ তোঁ ৰঁড় নীক খা হম ৰঁড় খধনা। মৌ, তোবাসঁ হম নাখ গ্বণা নীক।

ভগৰানসঁ হম কহৈ ছি ঐ জে হে ভগৰান, কহি যো হমৰা মন্বখ নৈ ৰঁনাএৰঁ। জাহ, হম জে কহনি খ তৈপব সভ মন্বখ মি নি কহ রি চাব কবি হহ।”

মন্বখ খপনে সন ফ্লঁহ ৰঁনৌনে ৰঁনমান্বখকেঁ তকি তে বহি গেন। ৰঁনমান্বখ জংগন দি স রি দা ভহ গেন।

(81ম সগব বাতি দীপ জবয’ দেৰঘবমে পঠি ত...।)

<u>জমীনা</u>

১

খগিযাএন মন কন ঘমনে ছেনৌ কি কনিযাঁ রিঁখনি নেনে ঠাঠ়। স্বমনজী তম-তমা গেনা। খৰঁতে জঁ পনৌ রিঁখনি নেনে ঠাঠ় ভেনী কি ৰ্ঁম্লূ জে হ্নক চবখা শ্বৰু। শ্বৰু ভাগএ গেনী-

“খঁএ যৌং! খাব কিযো নোকবী কবৈ ছৈ কি নহি। হমবা তঁ নগৈত খছি জেতেক দবমাহা খহাঁক ঔপিসমে খবৈঁ ছৈ সভটা খহীকেঁ ভেটি জাগত খছি...

...হে কিযো কাজ নগ দেত।”

স্বমনজী কী ৰঁজতা। সভ দিন একে খিস্সা। আঁফিসমে সভ কাজ কবৈ ছৈ ফ্লদা স্বমনজীক ফশন, কর্মঠ খা দৃঠ় র্যকতিত্বক সোন্না সৰঁহক মাথ স্নূকনে বহৈ ছৈ। চামক পূজাসঁ কামক পূজা পৈঘ হোগ ছৈ।

ऐ बातक प्रत्यक्ष प्रमाण स्वमनजी छथि। हुनक सहकर्मी संगे-संग हुनक पदाधिकारीओ स्वमनजीकेँ सम्मान दैत छथिन। सदा पत्नी सेहो धैनसन।

स्वमनजी बजला-

> "हे यै, एक गिलास जलो तँ देने खरितौं! के काज देत। यै, जिनगी भरि तँ अहाँ आ अहाँक बाल-बच्चा सेहो कमा-कमा कऽ देलौं से तँ एक गिलास पानियोँ लाबत अछि। फेर आनसँ हम की आशा करब।"

पत्नी झँह फ्लौने घरसँ निकलि बैंटीपर फुफकार छोड़ैत लगली कि तावत बस्तापर गो-हल्ला सुनि लगलै।

स्वमनजी कपड़ा ने बदलने बहथि। ओ ओहिना दरबज्जा दिस विदा भऽ गेला। पत्नी सेहो पाछू-पाछू दरबज्जापर एलखिन। बीच सड़कपर सौंसे टोलक जनानी-पुरुखक करमान लागल छल। बीचमे कोनो जनानी कानि-कानि कऽ लगबक लोककेँ बिखैन-बिखैन गारिसँ असिरबाद दैत बला निसाफ करतौ, बला निसाफ करतौ...। कहैत बीच सड़कपर पड़ल छल।

स्वमनजी चकित। ओ बलारानी स्त्री केतएसँ टोलपर आबि गेल। कोनो चाकरनी ने तँ छी...।

...ओ सोचिते छला कि पत्नी हाथ पकड़ि कहलखिन-

> "चलू-चलू, कथीले गारि सुनब। ओ छतबाही केकरो ने छोड़तै। जे जेहने करम करत ओकरा ओहने ने फल भेटतै।"

স্বমনজীকেঁ কিছু ভাঁজ নৈ নগননি। পবংচ ঙা থৱস্স ব্ঁঝনা গেননি জে কোনো রিশেষ ৱাত থৱস্স ছুগ। ও চ্প-চাপ পনী সংগ থঁগনা থারি গেনা। থ া ঁগন থরিতে ৱৈঁটী মাএপব ৱাজনি–

"এতেকান হ্ফকাব কষ্টৈ ছেনেঁ জে এক নোটা পানিযোঁ নে ৱাবূকেঁ দেন হোগ ছৌ, হম পানি নঽ কঽ ঠাঠ় ছী থা দ্নূ গোবে তমাশা দেখঽ চনি গেনেঁ।"

স্বমনজী ৱৈঁটীক ৱাত স্বনি ঝমা কঽ খসনা। কিযো কম নহি। জন কী পীতা। ৱৈঁটী দিস তকৈত হতাস্ ভেন থপন কোঠবী দিস রিদা ভঽ গেনা। মন তঁ ভেননি জে ৱৈঁটীক হাথসঁ নোটা নঽ জ্মা কঽ ৱাড় ামে ফেকি দী, ঝদা ফেব থপনাকেঁ বোকনা থা ওহিনা রিছৌনপব নিঠ় ান ভঽ পড় ি বহনা।

ৱৈঁটী ঢৈৰ্নপব নোটা বখি চনি গেননি। পনী পতিক ঝঁহক ভাব দেখ নেনে ছেনখিন। ভযসঁ হ্নকা নগ নহি এনখিন। হ্নকা ব্ঁঝৱামে কনিকো ভাঁগঠ নৈ বহননি জঁ থখন থগব নগমে জেৱনি তঁ নিশ্চিত নোটা পানি সমেত ৱাড় ামে চনি জেতৈ।

স্বমনজী ৱহ্ত সোঝ থা শান্ত ৱৈকতী। কিনকো কিছু থধনা নৈ কবতা। কিনকো শ্রাহ্ন থাকি রিথাহমে মদতি কবৈনে সদিখন তপেব। হ্নকা নেন কিযো থান নহি। ৱান–ৱচ্চা তঁ হ্নক প্রাণ। ঝদা জখন ক্রাধ থৱৈ ছনহি তঁ কিযো হ্নকা সামনে জাগক সাহস নগ কঽ সকৈত থছি। একটা মাএ থা ৱাবূএজী এহেন ছথিন জিনকা সোঝা স্বমনজীকেঁ কোনো রশ নগ চনৈ ছনহি। থপন জনমদাতাক প্রতি হ্নকা থগাধ শ্রহ্না ছনহি।

স্বমনজীক ভাব–ধাবা প্বন: বস্তা দিস ৱহঽ

নগন। কী ৰাঁত ছিঐ... ? ও জনানী কে... ? কিএ সৌঁসে ৎৈনক নোক জমা ভ২ ওগ খরনাকেঁ মাবি বহেন খছি... ? ও কোন কাবণে ‘খেনো’কেঁ গরামী বখি সঁসে ৎৈনসঁ নড় ৈনে তৈযাব খছি... ? জৰুব কোনো খসাধাবণ ৰাঁত খছি। প্বন: সভ ৰাঁতসঁ খনগ সিবমাপব মাথ দেনে ছতকেঁ নিহাব২ নগনা।

পনৌ চ্প-চাপ তারত্ ৎৈর্ৱ্নপব চাহ খানি ক২ বখি দেনে ছেনখিন। হ্নকব ঋহেক ভার সেহো ৰঁদনি গেন ছেননি। স্বমনজীকেঁ কহেনখিন-

“কপড় া নে ৰঁদননৌঁ। চাহ পীৰঁ নিখ, ফেব কপড় া ৰঁদনি নেৰঁ। খনগনীপব সভৎৌ কপড় া বাখন খছি।”

প্বন: খনগনী দিস তকনথি তঁ ওগপব গমছা নগ ছেনৈ। ও প্বন: ঘবসঁ ৰাঁহেব নিকনি গমছা নেনে ঘবমে এনখিন। তারত্ স্বমনজী ৰিছানসঁ উঁঠি চাহ পীৰেঁ ছনা।

পনৌ গমছা ৰিছানপব বাখি পান নগৰঁ২ নগনখিন। স্বমনজী ৰিছানসঁ উঁতবি কপড় া ৰঁদনৈমে ব্যস্ত ভ২ গেনা। পনৌ পানো নগৰেঁ ছেনখিন খা কনডেবীএ খাঁখিএ পতিপব তকিতো বহখিন। পতি চ্প-চাপ কপড় া ৰঁদনৈত বহনা। পনৌ পতিকেঁ কিছ ৰঁতৰৈঁনে উঁতাহ্ন ছনী ঋদা সাহসে নে হোগ ছেননি। ও সোচি-রিচাবি ক২ পতিক হাথমে পান দৈত ৰঁজৰাঁক খসফন প্রযাস কেনী ঋদা পতি কেব ভার নৈ পারিঁ চ্প-চাপ ঘবসঁ নিকনি গেনী।

স্বমনজী কপড় া ৰঁদনি প্বন: খপনেসঁ পান নগা খা নেনা খা চ্প-চাপ খাঁগনসঁ ৰাঁহেব নিকনি গেনা।

বস্তাপব তমাশা সমাপ্ত ভ২ গেল ছেল। ও ঁহনৈত খেত দিস নিকনি গেলা।

২

রাঁধমে দোসব গামক একটা কিসানসঁ ভেঁট ভ২ গেলনি। হিনকা দেখিতে ও প্রণাম কবৈত পুছলখিন–

"কী যৌ স্বমনজী, অহাঁ তঁ খেত–পথাব রিসবিযে গেলৌঁ। কহিযো দেখরোঁ নে কবৈ ছী। আ নোক খেত দিস এরোঁ কিএ কবত। দূ সানসঁ একটা অন্ন কেকবো খেতমে নৈ উঁপজি বহল অছি।"

স্বমনজী ওগ কিসানকেঁ থাহিত নগমে জা রঁজনা–

"কহু–কহু কী হাল অছি খুশী ভাগ। খেতী–পথাবীক কী হাল অছি?"

খুশীনান রাঁজন–

"কী হাল বহত। কহ্না অহ্রেব চিচোবি–মিচোবি ক২ ধান বোপি দেলিঐ। আশা তঁ নহিযেঁ অছি। তৈযো বোপি দেলিঐ...। হম সভ আরঁ নোকবীও তঁ ক২ নগ সকৈ ছী।"

পুন: ফুসফুসা ক২ রাঁজন–

"স্বমনজী, একটা রাঁত পুছী?"

খুশী ভাগক ফুসফুসাহটিপব স্বমনজীক কান ঠাঢ় ভেলনি। সহটি ক২ খুশীনানক নগ আরি পুছলখিন–

"কী রাঁত যৌ!"

খুশীনান ওহিনা ফুসফুসাগত রাঁজন–

“থহাঁ ঠৈনমে স্বনৌং জে হ্মসহবরাক রৈঁঠৗ একঠৗ জোনাহিনসঁ রিথাহ কহ গামপব খননক থছি।”

স্বমনজীকেঁ ধক্ দহ মোন পড়ননি। ও... জন্ব একবে ঝগড়া মোগ ছেনৈ...। খুশীনানকেঁ কহনখিন–

“থেঁএ যৌ, থহাঁকেঁ ঙা রাঁত বূঁঝন থছি? হমবা তঁ কিছু নে বূঁঝন থছি! থখনো বস্তাপব হননা–গ্বননা মোগ ছেনৈ। রএহ–রএহ ওকবে ঝগড়া মোগত হেতৈক।”

খুশীনান রাঁতকেঁ থাগূ রঁঠ়রঁহ নাগন। স্বমনজীকেঁ থসনী রাঁত বুঁঝরাঁমে থারি গেননি। থপন গামক নিন্দাক রাঁত সোচৈত স্বমনজী খুশীনানকেঁ কহননি–

“ছোড়ূ ঐ রাঁত সভকেঁ। কেকবা কী কহরৈঁ। ওব স্বনাউঁ রাঁন–রঁচ্চা কেনা থছি। কী কহ বহন থছি। যৌ স্বনৌং থহাঁ–কনিযাঁকেঁ মন খবাপ ভহ গেন ছন। ঠীক ভেনী কিনে।”

খুশীনান থপন ঘবরানীক রাঁত স্বনিতে রাঁজন–

“যৌ স্বমনজী, ও পূর্বজন্মক প্বনেক কাবণ রাঁচি গেনী। নগ তঁ মবরাঁমে কোনো ভাঁগঠ নহি বহি গেন ছেননি। কান্হি থাউঁ নে, দেখিযো নেরাঁনি।”

স্বমনজী ‘হুঁ–হুঁ’ কবৈত ঘব দিস ঘূমি গেনা। গাম–ঘবক কোনো রাঁত ছপিত বহি কেনা সকৈত থছি...।

দোসব দিন স্বমনজীকেঁ ছুট্টীএ বহনি। ঘবসঁ চাহ পী কহ একঠৗ মিত্রক ঘবপব রিদা ভেনা। বস্তেমে

একটা দবৱঁজজাপব পবচিত-খপবচিত সৱঁহক খড্ডা জমন ছন। স্বমনজী সেহো ধবা গেনা। একটা নেতাজী সেহো হ্নকা সৱঁহক ৱীচ রিবাজমান বহখিন। ৱৈঁসনা ৱাঁদ প্বন: চর্চা শ্বরু ভেন।

ঝসহবৱাঁ গামক একটা কিসান ছন। রিধাতা ওকবাপব দহিন ছেনখিন। মাত্র খাঠে-গোট্ট ৱেঁটা দেনখিন। খাবো হোগতে তৈযো ওকবা খুশীএ হোগতে। জব-জমীন তঁ ঝসকিনসঁ দূ ৱীগহা ছৈ। দোসব-তেসব গিবহতক জমীনমে ৱঁটাগ কবি কহ গূজব-ৱঁসব কবৈত খ ারিঁ বহন খছি। এক জোড় া ৱঁবদ, দূটা ভৈঁস, গাএ, ৱঁকবী সভটা খামদনীএ। জখনি সমবথ ছন, কেহনো কাজকেঁ কিছ নে ৱুঁঝৈ ছন। ঘবরানী সেহো রিধাতা দহিন ভহ কহ দেনখিন। হহব-কোদাবি ছোড় ি এহেন কোনো কাজ নৈ খছি জে ও নহি কহ সকৈএ। তেহনে কাযা, তেহনে বংগ খা তেহনে ৰূপ। জখন ঝসহবৱাঁকেঁ দ্বাগমন ভেন বহি ওহী সমএ ওকব পনীকেঁ দেখৱাঁ নেন ওকবা খঁগনাক টাট্টমে কেতেক ভূব ভেন সে গনৱঁ কঠিন ছন। ঝসহবৱাঁক মাএ সভ দিন দসটা গাবি দহ টাট্টক খবহী সভকেঁ ঠীক কহ দৈত বহএ, ঝদা দোসব দিন ফেব ওহিনা-ক-ওহিনা।

গেন জৱানী ফেব নে নৌটএ। খঠ-খঠটা ৱেঁটাক জনম দগরানী জনানা খা প্বরুখক ধীবে-ধীবে পবিরাবক নগাম ঢীন হোগত গেনৈ। একটা, দোসব, তেসব প্বতোহ্ তক তঁ কহ্না ঝসহবৱাঁক কনিযাঁ ৱেঁটা-প্বতোহ্কেঁ ৱাঁনহি কহ বখনক ঝদা চাবিম প্বতোহ্কেঁ খরিতে রেচাবী হাফহ নগনী। জখন ছোট্টকীক ঝহসঁ ন্বত্তী-ঙঁড় এ নগৈ, তঁ মাত্র ঝসহবৱেঁ দ্নূ পবানী নহি সঙ্কচ্চা পবিরাবক নোক তেনা নে দগৈত ছন জে সভটা মনহমো জবি জাগ

ছেনৈ ।

এক দিনক রাঁত ছী । স্বমনজী হ্মসহবরাঁক পড়্ াসীক ওগঠাম কোনো কাজে গেন ছনা । রৈঁসনে ছনা কি হ্মসহবরাঁকেঁ খঁগনাসঁ রএহ ন্বত্তী উঁড়্রঁ শ্বব্ধ ভেন । ন্বত্তীক জরারঁ খাগি–খঁগোবাসঁ দেন জাগত বহ । খারঁ ন্বত্তী খা খঁগোবামে খপন ঘবকেঁ কে কহএ জে পাস–পড়্ াসক সংগে সংগ এক–একটা জাতি–খজাতিক সংগ কোন–কোন সম্বঁন্ধ নে উঁজাগব হোমএ নগন । হ্মসহবরাঁক খঁগনামে তিন বখৈক জগহ নহি । খচানক হ্মষ্টা–হ্মষ্টী শ্বব্ধ ভেন । তীন দিযাদিনী এক তবহ্ফ, ছোটীক খসগবে এক তবহ্ফ । খঁগনামে ঠাঠ্ প্বকুখ–পাত্র নাজে ওতএসঁ ভাগন । ধবহবিযা কবৈরানী সভ থাকি কহ কাত ভহ গেন । গগ সঁগকটৈনী, গগ রঁপডাহী, গগ সৌতিন, খাব কী কী নহি… ।

খাগ হ্মসহবরাঁক পবিরাবক গাড়্ ীক কনৈন, পানোক সংগ–সংগ চক্কা, ধূবী সভটা ঠ্ুটি–হ্ফুটি কহ নাশ ভহ গেনৈ । হ্মসহবরাঁ জীরিতে খছি । পনৌওঁ জীরিতে ছৈ । রেঁবা–রেঁবী রেঁটা–প্বতোহ্ ভীন হোগত গেনৈ । খাগ সভসঁ ব্ঁবরঁক রেঁটা–প্বতোহ্ক সংগ কহ্না জিনগী কাটি বহন খছি ।

হ্মসহবরাঁকেঁ রেঁটাক রিষযমে সোচ ছেনৈ জে ভগরান রেঁটা দগ ছথিন তঁ হম বোকৈরঁনা কে । জীতৈ তঁ রৌগন কহ কহ খেতৈ । সভটা রেঁটা ঠীকে রাঁ গন কহ কহ জীরঁ বহন ছৈ । কিযো পজারঁ, তঁ কিযো দিল্লী খা কিযো গামেমে । হ্মদা প্বছৈরঁনা কিযো নে ।

একটা রেঁটা পবসান গামেমে বহি একটা ভষ্ঠাপব ওঁটা রঁনরঁহ গেন । ওতৈ একটা জনানী জমীনা সেহো বেজাক কাম কবৈত ছেনৈ । ছৌড়্ া দেখহমে স্বন্দব,

नमरौँ आ मजगूत देहक छेलै। धीरे-धीरे दनूक रौँच पेंच फँसि गेलै। ओकर नाओं रखि देलौं 'पंचा'। तँ पंचा आ जमीनाक रौँच शारीरिक सम्बन्ध भेलाक कारणे ओकरा गर्भ भऽ गेलै। जखन मामला उँजागर हुअक स्थिति भेलै तँ दनू परा कऽ राँहर भागि गेल। ओतै गर्भपात करौँ कऽ दनू फेर कामो-काज करए लगल।

पंचाकेँ दूटा राँन-रॅच्चा भऽ चुकल छेलै। जमीनाकेँ सेहो तीनटाराँन-रॅच्चा। जमीनाक घररँला एक-दू रँर्ख पहिने छोड़ि कऽ भागि गेल छेलै। ओखपन माएक संगे रहैत छल। आरँ दनू रँकतौ भट्ठापर कमाएत छल। दनू खपन-खपन घरपर राँन-रॅच्चा लेल रूपैआ-पैसा सेहो पठरैत छल। ऐ क्रमे एक-डेढ़ रँर्ख भऽ गेल। दनूकेँ खपन-खपन राँन-रॅच्चाकेँ देखला रँहुत दिन भऽ गेल छेलै। दोसर जमीना जेतेक पाए कमाए छल ओ रँक रा पोस्ट-आॅफिससँ भेजैले पंचाकेँ दए छेलै।

फोनपर जमीना जखन पाए दऽ पुछै छेलै तँ रँड़की रँटी कोनो रँर कही कोनो रँर कम रँतरैत छेलै। धीरे-धीरे जमीना रँूझि गेल जे ओ क्षमता हमर पाए खपन घरपर पठा दएए, या रखि लएए। आरँ ओ पंचापर गाम जेरौँ लेल जोर देमए लगल। पंचा कहला-कहला ओकरा पोल्हरँ छल क्षदा जनानीओं कम खेलल नहि छल। अन्तमे दनू गाम लेल रिदा भेल। दनूमे शर्त भेलै जे हम ले तोरा ओएठाम जेरौँ आ ले तों हमरा ऐठाम जेमे। दनू गोटे खपन-खपन राँन-रॅच्चाक संगे दस दिन-मास दिन रहि फेर घूमि जाएरँ।

गाम एनापर रॉत रिंगरि गेलै। जमीना गामपर आरि कऽ जे पाग-कौड़ कि हिसार केनक तँ पता चललै जे ओकर कमेलहा ३,३,-६० हजार रूपैआ पंचा रॅंगमानी कऽ लेलकै। ओ जनानी पहुँचल पंचा गामपर आ एमहर पंचा घरसँ फरार। ठैलपर मेला लगि गेल। जमीना पहिने तँ पागक रॉत कहलकै। फेर पंचाकेँ अपन घररना घोषित कऽ देलकै। पंचाक आँगनामे ठुकि एकटा घरक ओसरापर जा कऽ रॅंसि रहल। पंचाक भौजाग संगे-संग सौंसे गामक जनानी एक दिस आ पंचाक तथाकथित मसनमानि पलौ एक दिस। आरॅ जमीना कहै-

“जारॅत मनसा गामपर नहि औत तारॅत हम ऐ ओसरापरसँ नहि उँतरब।”

पंचाक घररानी आ रॉन-रॅच्चा संगे-संग आन भाए-भौजागकेँ पहपटि भऽ गेल। की करी की नै। भरि दिन जमीना ओसारपर रॅंसल रहल आ आँगनामे रहनिहार सभटा धीरे-धीरे आँगनासँ रॉहर भऽ गेल।

पंचाकेँ सेहो खरॅरि कएल गेल मदा ओ किए औत। साँझ भेलापर जमीना जे से रॅजैत अपन घरपर चलि आएल। गामक लोक सेहो निसाँस छोड़लक। रातिमे मसहररॉपर पंचायत रॅंसल।

“तोहर रॅटा मियलि संग रिआह केलकौ तँए लै एलौ। रॅटाकेँ रॅजा। कोलो रॉत खरॅस्स छै।”

मसहररॉ कहलकै-

"हमे पाँच भाइ। तोँ भाइ हमरा किए कहैए छह। पाँचोमे तीन भेलो जायते देवर भऽ गेलै। आर ओ हमरा देवसमे अछि? ओही छौड़ीकेँ पुछहक। हम तँ नवाव छी। कहुना जीवैत छी। ओकर घरवाली छै। कहक पुछतै।"

पाँचोक घरवाली एतेक लोकमे की बजतै। मुड़क मारि धोकरेने छै। ओकरा छाती अपने हहरैत छै। तीनिटा धिया-पुता। तहूमे एकटा बेटी। सौतिन झमनमानि। ओकरा आँखिक नोर नहि सुखा रहल छै। जे से बान-बच्चाकेँ ताना मारैत छै। नरकी माए एलौ बौ? की भऽ खनलकौ? पाँचोतीमे सभ झमहरबाकेँ दोगैत रहल। ओ सभ बात सुनि कऽ चुप्पे रहल।

पाँचोक घरवाली अपना माए-बापकेँ फोन कएलक। सभटा बात कहलकै। भाए सभ ओकर पीठ्ठा-पहलवान। बहिनकेँ ढाढ़स देलकै। भोरे दूटा भाए एलै। सभटा बात सुनलकै। गौआँकेँ फेर बैसार भेल। बैसार शुरुए भेल छेलै कि पाँचोकेँ ओ नरकी कनियाँ फेर दरबज्जापर पहुँचगेलै। पाँचोक सार संगे-संग सभटा नरकविया पाँचोतीक छौड़ी जमीनाकेँ घेर लेलक। ओकरा एक आदमी पुछलकै-

"तोँ हिन्दू बनबौली तँ पाँचो बाबि लेतौ।"

ओ जनानी कहलकै-

"एन्बका चान ओनए किए ने चलि जेतै झदा हम हिनू नहि बनबै।"

एतबा बात निकलितेँ पाँचोक सार चटाक् दऽ जमीनाकेँ झँहपर थापड़ मारि देलकै। थापड़

लगितै जनानी जमीनपर बैसैत-बैसैत ओंघरा गेल। किछु आदमी पंचाक सारकेँ खबरि केलक। तारेत् लोक देखलकै जे जनानी बेहोश छै। पंचाक घरवाली दौग कऽ पानि अनलक आ ओकरा मुँहपर माथसँ छिट्टा देबए लगलै। थोड़ेकालमे ओइ जनानीकेँ होश एलै। साड़ी खुलि गेल बहै ओकरा देहमे लटपटैबैत गारि दैत ओ थाना जाएक बाट कहैत विदा भऽ गेल।

थानाक नाओं सुनितै लोकबेबा अपन-अपन आँगना दिस विदा भऽ गेल। मुसहरबा आँगनाक जन-जनानी सभटा अपन-अपन नहिरा दिस विदा भेल। पंचाक सार सेहो अपन बहिन आ भगिनीकेँ लऽ विदा भऽ गेल। एकटा बेटा जे बाबर-तेबर बर्खक बहए ओकरा मान-जान देखैले छोड़ि देलकै। मुसहरबा दुनू परानी टुकुर-टुकुर देखि बहल अछि। सुनि बहल अछि। ओइ मादे बन्न सोचितो हएत। आँगनामे मात्र दूटा पोता छै। बेटै सभ किछु-मिछु खा कऽ बाध-बोन दिस टैबि गेल।

३

कथा खनसोहाँत तँ ने लगैए? चनू कथा तँ बड़ ओझराएल अछि मुदा ओ ओझरीसँ निकालि कऽ हमहूँ निस्तार पाबए चाहै छी।

जमीला ठोकले थाना पहुँचल। संगमे माए आ एकटा छोटैका बेटा सेहो बहै। सभटा खिस्सा कहैत ओ दरोगाजीकेँ पंचाक गामपर जेबाक जिद्द करए लगलै। जनानीबला बात। दरोगा ओइ जनानीकेँ लैलक चौकीदारकेँ बजबैलक। पंचाक गामक चौकीदारकेँ बजा पंचाक घरसँ बजबैले पठेलक।

जखन जमीनाक बारेमे चौकीदारसँ दरोगा जिज्ञासा केलक तँ ओ साफ-साफ दरोगाजीकेँ कहि देलकै जे ओ जनानी ओही गामक छिऐ। ओकरा संगे जे भेलै से उचिते भेलै। ओ जनानीक गहए धंधे छै।

दरोगाक सामने अपन चरित्रपर चौकीदार द्वारा देल गारी ओकरा उत्तेजित कऽ देलकै। ओ दरोगाकेँ सोझहेमे गारि दैत चौकीदार दिस झपटैत। मुदा ओकर माए आ रेंटी कहुना ओकरा रोकलक। तारत पंचा गामक चौकीदार सेहो घूमल। पंचाकेँ भागर आ गामक खिस्सा कहैत ओ सेहो अपन विचार दरोगाजी लग रखलक। सभ बात सुनि दरोगाजी जमीनाकेँ दोसर दिन थानापर एबाक बात कहि डाँटि-डपेटि कऽ कहुना घर पठेलक। दरोगाजीकेँ बुझैमे बहुत किछु आबि गेलनि। मुदा पंचोकेँ दोख तँ छुबहे।

दोसर दिन जमीना भिनसरे थानापर पहुँचल। दरोगाजीकेँ पंचा ओगठाम चलऽ लेल जोर देमए लगलै। ओ बीचमे पंचाक तरफसँ किछो दरोगाजीकेँ दुआ-सलाम कऽ कऽ समझाबि गेल छल। दरोगाजी एमहर-ओमहर करैत जखन एक घण्टा बिता देलखिन तँ जनानी अचानक थानाक ओसरापर चढि ओगठाम राखल दू-तीनटा प्लास्टिकक कुर्सीकेँ उनटैत दरोगेजीकेँ धमकी दैत कहलकै-

> "अगर अहाँ नञ जाएब तँ हम अखने डी.एस.पी. पुलिस लग जाएब। अहाँ हिन्दू छी तँए हिन्दूक पक्ष लऽ रहल छिऐ।"

एकटा सिपाही ठेंगा लऽ ओकरा दिस दौड़लक मुदा दरोगाजी रोकि देलखिन। फेर किछु सोचैत सिपाही सभकेँ संग लगा जनानीकेँ गाड़ीमे बैठा पंचाक

ঘবপব রিদা ভেনা।

পঁচা নগ ছন। ৗৈন–পড়ু াসক ধিযা–প্বতা সংগ প্বরুখ–জনানীক ভীড়ু নাগি গেন। দরোগাজী দৃ–চাবি খাদমীসঁ পূছ–তাছ কেনখিন। কিযো জনানীক পক্ষমে নগ ঠাঠু ছেনৈ। সর্রৈক সোন্নামে দরোগাজী খন্নারানী জনানীকেঁ প্বছনখিন–

"তোঁ কী চাৗি ছেঁ ? "

ও কৈনকৈ–

"পঁচাকেঁ হমবা খপনা ঘবমে রৌঁৗ রঁনা কঽ বাখঽ পড়ুতৈ। "

রিঁচ্চেমে এক খাদমী রঁাজন–

"হঁ বখতৌ স্নদা তোবা হিন্দূ রঁনঽ পড়ুতৌ, দোসব রঁাত তোঁ খপন রঁান–রঁচ্চাকেঁ এতএ নহি খানি সকৈ ছেঁ। তেসব রঁাত জঁ তোবা পঁচা ঘবরানী রঁনেতৌ তঁ তোঁ জিনগীমে কহিযো জোনহৈৗৈনী নহি জা সকৈ ছেঁ। ছৌ মঁজূব তঁ দরোগাজীকেঁ সামনে কাগজ রঁনা। হম সভ তোবা পঁচা সংগ বখৈনে তৈযাব ছিযৌ। "

স্বমনজী ঐ কার্যক্রমক দর্শক ছনা নে সনাহকাব। স্নদা সমাজমে ঐ তবহক ঘৗনাসঁ খত্যন্ত চিন্তিত ছনা। দস খাদমী। দস তবহক রঁাত। স্নদা ঐ তবহক ঘৗনা সমাজক সংস্কৃতিক নেন স্বাস্থ্যপ্রদ নহি। দরোগাজী জমীনাকেঁ প্বছনখিন–

"জরঁ তোঁ দূনূ সমাজকেঁ রঁন্হনকেঁ তোড়ুি ঐ তবহক কর্ম কেনহিন তখন দূনূ গাবে সজাক

ভাগী ছেঁ। তোঁ ধর্ম নহি ছোড়িরিহী, রাঁন–রাঁচ্চাকেঁ নগ ছোবরিহী। জখন তোঁ জোনহটৈনী জেরেঁ কবরিহী তখন রিঞাহ সম্বাঁন্ধ কেনা ভঽ সকৈ ছৌ ? ”

সমাজক নোককেঁ দরোগাজী কহনখিন–

“খহীক সমাজক পঁচা ছী। খহাঁ ওকবা রাঁজা সমাধান কৰু। জারত্ ও নহি খরৈঁত খছি তারত্ একব সমাধান নহি হোএত। ”

ফেব জমীনা দিস ঘূমি কঽ কহনখিন–

“জে তোবা সংগ বহতৌ ও ভাগন ছৌ। তোঁ ওকব পতা কব। দ্নূ গাবেক কাবণে খগব সমাজ পবেশান হেতৌ তঁ তোবা দ্নূকেঁ সমাজো দণ্ডিত কবতৌ। খা সবকাবো সমক্ষ দণ্ডিত হেমেঁ। ”

জমীনা রাঁজন–

“হমবা পঁচাসঁ মতনরঁ খছি। হম পঁচাকেঁ কাবণে রৌঞাগ ছী। সমাজ হমবা কিএ মাবত ? সমাজ নির্ণএ কবঽ পড়তৌ। ”

দরোগাজী দূ দিনক সমএ দঽ চনি গেনা। গেনা রাঁদ জমীনাকেঁ কহন গেন, জে কান্হি ভিনসবমে তূঁ খা। খপনা সংগ জেকবা খানরাঁক হওঁ সেহো নেনে খা। পঁচৈতী হেতৌ। পঁচা জেতএ ন্বকাএন ছন ওকবা সমাদ দঽ রাঁজাএন গেন।

খাগ দ্নূ সমাজক রাঁচ পঁচা খা জমীনা দ্নূ রাঁসন খছি। পঁচা সমাজক সামনে জমীনাক কথনকেঁ স্বীকাব কেনক। সমাজক একটা খাদমী ওকবা দূ–চাি ব

थापड़ मारबाे केनकनि। फेदा आब लोक रीच-रँचाउँ केनक। राँदमे पंचाकेँ पूछल गेल जे ओ की चाहैए। पंचा चुप। जमीला चुप। अन्तमे पंच निर्णए देलक-

"दुनू जे काज केलेँ से अनुचित अछि। तीन-तीनटा बाल-बच्चा रहैत तोरा सबहक कर्म नीदनीय छौ। तोँ दुनू धर्म समाज, जाति आ परिवारक विध्वंसक छेँ। पति-पत्नीक रूपमे तोरा दुनूकेँ रहब सम्भव नहि।"

पंचाक पत्नी आ बाल-बच्चा जमीला आ ओकर तीनटा बाल-बच्चाकेँ स्वीकार नहि कऽ सकैत अछि। धर्म आ जातिपर सेहो एकर प्रभाव पड़तै। तँए अगर पंचा मुसलमान भऽ जमीलाक संग चलि गेल तँ ओकर बाल-बच्चाक भार के लेतै? तोरा दुनूक ऐ सम्बन्धसँ धार्मिक विवाद भऽ सकैत अछि। फेदा हम सभ से नै होमए देलिऐक।

समाजक निर्णए भेलै जे तोँ दुनू काल्हि भोर होगसँ पहिने गाम छोड़ि दे। जमीला पंचाक घर भरिसमे कहियो ने आबि सकैत अछि। पंचा कहियो जमीलाक घर नञ जा सकैत अछि। गामक राँहब तोँ भलहिं पति-पत्नी बनि रह फेदा गाममे दुनू संग-संग पएर नहि राखि सकै छेँ। अगर समाजक बात नहि मानमेँ तँ आगू तोँ सभ अपन बाल-बच्चाक संग अपनकेँ जातिसँ बहिस्कृत बूझ।

कागतपर हिन्दू आ मुसलमान दुनू तरहकसँ पाँच-पाँच आदमी चारि फर्द कागत बनेलक। चारू फर्दपर पाँचो पचक संग जमीला आ पंचासँ निशानक संग संग

সদ্দী কএন গেন। দূটা ফর্দ পঁচা আ জমীনাকেঁ দেন গেলৈ। একটা পঁচাক গামক পঁচ বখনক। পঁচা আ জমীনা চুপচাপ কাগত নঃ ওতএসঁ রিদা ভঃ গেন।

আগ ধবি পঁচা গাম নহি আএন। ওকব রাঁন-রঁচ্চাক সংগ পনৌ পঁচাকেঁ ভেজন পাগ অথবা অপনে রঁতাপব জীরঁ বহন অছি।

জমীনা আগ ধবি গাম নহি ঘূমন। জমীনাক রাঁন-রঁচ্চা সেহো জমীনা অথবা অপন নানা-নানীক সংগ জীরঁ বহন অছি।


प्रणव झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, एन ए एम एस भवन, अंसारी नगर नई दिल्ली – 110029

अंतर

"Mr. Jha, your leave has been sanctioned. You can proceed for leave. Have a great journey." ई ई-मेल पढ़ैते स्वमनजी के मोन खुशी से मयूर सन नाच लागल । स्वमनजी नोयडा क एकटा इंजिनियरिंग कालेज मे बीटेक(आईटी) प्रथम सेमेस्टर के छात्र छलाह । दुइए मास पहिले त हिनकर एडमिशन एत भेल छलैन, किंतु ओ अपन क्षेत्र सं पहिल बेर बाहर आयल छलैथ आ इंजिनियरिंग मे प्रवेश के बाद ई पहिल दुर्गापूजा ! गाम कोना नै जायब ! आ गामो मे त माँ-बाबू-बहिन, दोस्त-महिम सेहो सब त आँखि पाथने अछि हिनका देख लेल । ई सब सोचैत-सोचैत स्वमनजी के अपना गप्प सब मोन पड़ लगलैन । बचपने सं ओ एकटा ऊर्जित मेधा के छात्र छलाह । साधारण परिवार के बालक, आ घर मे पढ़ मे सभसं बेस होसगर । स्वागत परिवार आ सर-कुटुंमैति मे लोक सब हिनका मे बाबू-इंजिनियर आदि बन के आशा लगाबै लागल । जखन ई मैट्रीक क परीक्षा प्रथम श्रेणी मे निक नंबर सं उत्तीर्ण केलैथ त ओ आशा के बल भेटैन आ हिनका सीएम साइंस कालेज मे गणित(गणित) संकाय मे प्रवेश भेटि गेलैन । गणित क पढ़ाई के दौरान हिनका मे इंजिनियरिंग कर के

महत्वाकांक्षा रहनहुं लोगत गेल । ओ दरिभंगा मे एकटा कोचिंग सेहो पकैड लेलैथ आ १२बी के परीक्षा संगे जेआइ(मेन) के परीक्षा मे सेहो बैसलाह । किंतु औसत छात्र के रिजल्ट जेहन होइत अछि कि ओ नै आबे जोग अछि आ नै पाबे ! जेआइ(मेन) मे ठीक ठाक कहल जाए रहना बैंक भेटैक छलैन्ह किन्तु एतेको निक नै जे जेआइ(एड्वांस) के लेल उत्तीर्ण कहल जाय अथवा एन.आइ.टी अथवा कोनो अन्य टोप इंजिनियरिंग कालेज मे प्रवेश भेटैन्ह । अत: हिनको लग बैह विकल्प छल जे रहत पाछां बैंक रहना सब के लेल सेहो खुजल छल, अर्थात अन्य प्राइवेट इंजिनियरिंग कालेज ।

यद्यपि हिनका जहो देखना गेलैन जे हिनका सं रहत पाछ बड़ रहना एसी/एसटी कोटा के छात्र सब के एन.आइटी मे प्रवेश भेटै बहल छल। ज बात हिनका दूध मे मांछी सन बुझना गेल छल । हिनकर मोन कुंठित होमय लागल छल । ताहिपर सं परिवार–समाज क प्रश्नवाचक दृष्टी हिनका आर बैसी विचलित करय लगलैन । किछु लोकै बाय देलखिन जे एहि बेर छोड़ आ पटना/दिल्ली जा क तैयारी कर ग, अगिला बेर आइआइटी/एन.आइटी मे एडमिशन भेटिये जेत । स्वप्नजी के मोन एहि उहापोह मे छल ताहि बीच हुनका याद कक्का सं भेटै भ गेलैन जे छुट्टी मे गाम आयल छलैथ । ओ हिनका बुझेलखिन जे लौ, तोहर जे स्थिति छ: ताहि मे कोन गारंटी जे अगिला बेर तोरा आइआइटी/एन.आइटी मे एडमिशन भेटिये जेत ? आ जौं नै भेटैन त इंजिनियरिंग कर के सपनो पर कुठाराघात भ सकै छ: । ताहि सं निक अछि

जे तोहर बैंक निक छ: आ कोनो नीक प्राइवेट इंजिनियरिंग कालेज मे आइआइटी/आइएस आदि संकाय मे प्रवेश भेटि जेत। आ एहन ठाम प्रवेश भेला पर एजुकेशन लोन भेटबा मे कोनो बाधा नै रहत। आ ओहि समाज के परिणामस्वरूप आओ सुमनजी एत बौद्धिक क रहल छैथ। एं सब सोचैत सोचैत सुमनजी के पता नै कखन आँखि लागि गेलैन।

नियत समय पर सुमनजी गाम पहुँचला। गाम मे यार-दोस्त, माँ-बाबू-बहिन-पितियाउन सभ सं भेंट कय क मोन हर्षित भेलैन। यार दोस्त मे कनि हरा-पाउन सेहो छोड़लैथ किंतु एन.आइ.टी मे प्रवेश नै भेटै के कुंठा अखनो धरि कही हिनका मोन मे अटकल छल जे कखनो क हिनका मोन के विचलित क देइत छलैन।
सतमी के साँझ मे ओ दुर्गास्थान मेला मे गेलैथ त अचानक हिनकर नजैर एकटा श्यामवर्णीय ६ फुट के छौंडा पर गेल जे फुकना-पिपही बेच रहल छल। 'अंबर' यैह नाम छल ओकर। अचानक ओकरा एहि अवस्था मे देख सुमनजी के हृदय द्रवित आ ग्लानित होमय लागल। ओ ओकरा सं नजैर चोरा क एम्हर आम्हर घुमय लगला किन्तु ध्यान हिनकर ओकरे पर टाँगल छल। पुन: किछु पुरान गप्प मोन पड़ लगलैन। ओ स्कूल मे हिनके संगे पढै छल, किन्तु १०वी के बाद कहियो भेंट नै भेल छल। भगवान जनैथ मैथ्रीक पासो केने छल कि नै! ओ बचपने सं लंबा छल, घैघ-घैघ केस बान्है छल, श्यामवर्णीय छल आ देख मे खास नै छल, किन्तु तेयो स्कूल मे ओ अपना के

अमिताभ बच्चन कहै छल, आ स्वागत आलो बचा सब ओकरा व्यंगात्मक रूप सं या उंबे अमिताभ बच्चन कहै छल । ओहो Schedul e Cast छल आ पढै मे बड्ड बुधियार (शायद अपन परिवेशे के कारण अथवा शायद भगवान ओकरा ओहने बनेने छलखिन) । तथापि ओकरा sti pend भेटैनाअ ओहि समय मे हिनका समस्या मे नै आबैं छल । आग ओकरा ऐ स्थिति मे देख क रमनजी के मोन मे होमय लागल जे कदाचित एकर कोनो मजबूरिए हेतै जे ओ पढ के बयस मे ओ छोटै छिन धंधा क क जीविका कमेबाक प्रयास क रहल अछि ! दू-चारि दिन बाद बाजार जेबा क क्रम मे ओ फ़रे रमनजी सं टैकरा गेल । रमनजी कन्नी काटि क निकैल जाय चाहय छलखिन किन्तु अबरे हिनका टैकेलक : - "की दोस कि हाल चाल ? " फ़रे कुशल-क्षेम के बाद गप्प क क्रम मे ओ बतेलक जे "कि बतारियौ दोस, पढ मे त हम कहियो ठीक छलियौ नै । कहुना थर्ड डीविजन से मैट्रीक पास केलौं तै के बाद बाबू स्वर्गीय डाक्टर साहबे लग काज पर लगा देलकौ ओत्ते साफ़-सफ़ाअ के काज करै छी आ कंपाउंडरी सेहो सीख रहल छी । तों त आबै मस्त अंजीनियरिंग क रहल छें, आ करौ किए नै, बचपने सं पढै बला बचा छलैं" इत्यादि । गप्पक क्रम मे रमनजी के मन:स्थिति सामान्य होअत गेलैन आ अंतत: ओ ओकरा सं फ़ूकना रबैचे बानी बात पूछिए नेलैथ । ओ उत्तर देलक: "देखही दोस, हम भेलौं मूर्ख गरीबहा लोक, आ मेने-ठेने मे त दू टा उपरी आमदनी कमाय के मौका होअ अछि से मौका कोना क गंवाबी । आ बात जहां धरि अन्जोय कर के अछी त मेला मे

উঁপস্থিতিএ গন্জোয কে গরামী ৰঁনি জায খছি । কিছু নোক মেনা মে খবীদ ক গন্জোয কৰৈ খছি, হমবা সন নোক ৰেঁচ ক ।
খঁৰঁব সঁ ৰাঁত কেনা উঁত্তব খা ওকব খুশিগরাব মিজাজ দেখ কে পশ্চাত স্বমনজী কে খামেগ্লানী সমাপ্ত ভ গেন ছন । ও সোচৈ নাগন জে খঁৰঁবা কে পবিস্থিতি জে ভী দেনকৈ খছি ওকবা ও খপন মৌকা ৰুঝি সহর্ষ স্বীকাব কেনক খছি খা খানংদপূর্বক খপন কর্ম ক বহন খছি । ত পবিস্থিতি হমবা ত একবা সঁ ৰঁড়ু নিক মৌকা দেনে খছি খপন কর্ম কব নেন খা খপনা খা সমাজ কে ৰঁহ্ত কিছু দেৰঁ নেন । খাৰঁ স্বমনজী কে খামো সঁ খাওখাওটী/এন.খাও.টী মে প্ররেশ নৈ ভেটৈ কে ৰোঁঝ সেহো উঁতবি গেন ছন । ও প্রণ কেনৈথ জে ও ৰীটৈক কে পঠাও পবম নগন সঁ কবতা খা খপনা কে পৈঘ সঁ পৈঘ হ্মকাম পব স্থাপিত কব কে প্রযনে মে কোনো ভাঁগটৈ নৈ বহ দেখিন । সংগহি এসসী/এসটী কে প্রতি রৈমনস্য কে ভারনো সমাপ্ত ভ গেন ছন । স্বমনজী কে খাৰঁ গ এহসাস ভ গেন ছন জে 'খঁৰঁব' সন কতেকো খছি জে পবিরেশ কে মাবন খছি খা এহন নোক কে কিছু রিশেষ স্বরিধা ভেটৈ মে কোনো খতিস্যাক্তি নৈ খছি । খাৰঁ হিনকব মোন ওহিনা শাঁত খা তাজা ভ গেন ছন জেনা ৰঁরংডব কে ৰাঁদ মেঘ পড়না উঁত্তব সৰঁ সাফ় খা তাজা ভ জাও খছি ।

- ০৪.০৯.২০১৯

<u>তেসব প্রণ (নঘুকথা)</u>

থাগ বাঘর কে সিরিন সেরা কে ফ় াগনন বিজন্টৈ থার্ র্না ছৈন এহি নেন কান্হি বাতিযে সং হ্নকব মোন থকসক্ক ভেন ছৈন. এক ক্ষণ কে নেন ভী নিন্দ হ্নকব থাঁখি মেং নহি থারি পেনৈন. কিযে নৈ হোযন, কৈযেক র্বষ সং জে হ্নকব থাঁখি মেং স্বপ্ন ছন সে থার্ হ্নকা সং মাত্র এক ক্ষিনক কে দূবী পব ছন. কাঁপৈত হাথ সং ও বিজন্টৈ কে নেন ক্ষিনক কেনা থা....

Raghav Jha: All India Rank 24 : Got Selected for Indian Administrative Service.

গ দেখ হ্নকব মন:স্থিতি জে ভেনৈন তেকব ব্যাখ্যা নৈ কৈন জা সকৈ থছি. হ্নকা ভেনৈন জেনা হ্নকা পংখ নাগগ গেন হোগন থা ও উঁডন জাগ ছৈথ. পবংচ স্বযং কে রিংঠু কাটি ক ও স্বযং কে সচেত কেনা. ফ় বে র্বর্স হ্নকা নৌ র্বষ প্ববাণ ও ঘটনা মোন পৈব গেনৈন, থাজ্ক স্থিতি কে জেকব প্রতিফ়ন কহন জা সকৈ থছি.

তখন বাঘর দসরী মেং গেন ছনাহ. র্বাবূজী একটা সামান্য সবকাবী কর্মচাবী ছনাহ. ঘব মেং সর্বটা মৌনিক স্ববিধা উঁপনব্ধ ছন কিংত্ত ভোগ-রিনাসিতা সং দূবী র্বনন ছন. বাঘর কে দূ টা র্বান সখা ছনাহ – রঁটী থা মোটী. রঁটী কে পিতাজী সেহো সবকাবী কর্মচাবিযে ছনাহ, থা মোটী কে পিতাজী ব্যাপাবী ছনৈথ. মোটী কে পিতাজী ওকবা একটা র্বঠিযা রিডিযো গেম খবীদ কে দেনখিন জকবা দেখা দেখী রঁটী সেহো থপন পাপা সং

कहि क ओहने रिडियो गेम खरीदलाँ नेनक. आरो दुनू दोस्त बाघर के खिसियाएँ लागलैन जे हमरा सभ लग एहो निक रिडियो गेम अछि आ अहाँ लग नै अछि. ओ स्वनि-स्वनि बाघर सेहो दुखी भ गेल छला. ओ बाबूजी लग जिद्द क देलखिन जे बाबूजी हमरो लेल अहाँ ओहने रिडियोगेम मंगा दियऽ. बाबूजी हुनका समझेला जे तोँआ ओ रिडियोगेम सेहो महग अछि आ एखन किननाए गैर-आवश्यक अछि, एखन दीदी के इंजिनियरिंग मे एडमिशन करबाक के अछि ताहि मे खर्च हेतै,आब काज सभ अछि. किन्तु बाघर कहाँ मान लेला छला. ओ कहला जे मोंटी आ सँटी के पापा भी त दियेलखिन कि नै. एहि पर बाबूजी बाजला जे मोंटी के पापा अमीर व्यापारी छैथ आ सँटी के पापा घूसखोर. हुनका सं आँहा अपन परिवार कियै करै छी. एही पर बाघर तुनैक क सेजला जे एहेन ईमानदारी के ल क कि करब जे बेटा के सौख-मौज नै करा सकि. एतेक बाजि ओ झँह फुलेला क ओत से चैल गेला. किंतु हुनका आँखि मे अखनो रिडियो गेमे नाचि रहल छल. राति मे ओ तामसे खानो नै खेने छला. स्वतनि राति मे हुनका विचार एलैन जे कियै नै बाबूजी के पर्स चोरा ली आ ओहि मे जे पैसा हेतै तहि से रिडियो गेम खरीद लेब दोस्त संगे जा क. ओ सोचिते ओ उठला आ चुप चाप सं बाबूजी के कुर्ता सं हुनकर पर्स निकालन लेलैथ. भोरे बाबूजी के इलेक्शन ड्यूटी मे जेबा के छलैन. एहि लेल ओ भोरे अन्हारके पहर निकैल गेलखिन. हबरबी मे ओ अपन कुर्ता के जेबीयो नै चेक केलखिन जे मे हुनकर पर्स छलैन आ पर्स मे पाइ-कौड़ी के संग

সংগ হুনকব খাণ্ডা-কার্ড রঁস পাস খাদি ভী ছনৈন. রঁস মেং রৈঁসন রাঁবূঁজী জায ছনা কি তখনে টিকট চেকব সরঁ পহুঁচন. রাঁবূঁজী সং টিকট মাংগনা পব ও জেখনে পাস নিকান নেন জেরঁ মেং হাথ দৈ ছৈথ ত খাহি রে রাঁ পর্স ত খছিযে নৈ. খারঁ হুনকা ভেনৈন জে কি কবী নৈ কবী. ও টিকট চেকব কে রাঁত রঁম্মারঁ কে প্রযনে কব নগনা পব ও মান নেন তৈযাব নৈ. হিনকা নগ জর্মনা ভব কে নেন ভী পাণ্ডা নৈ ছন. তাহি সময মেং মোরাঁণ্ডন ফ়ান কে ওহন চনন সেহো নৈ ছন. টৌসী হুনকা রঁস সং উঁতাবি ক জিবহ কব নাগন. খৈব ণ মামনা কে কহুনা সন্টৈযা ক কহুনা কহুনা রাঁবূঁজী ড্যূটী পব পহুঁচনা. কিংত্ত সময পব ণনেক্শন ড্যূটী পব নহী পহুঁচ কে কাবণ খধিকাবী হুনকা পব কাজ মেং নাপবরাহী কে চার্জ নগা হুনকা সস্পেন্ড ক দেনকৈন. দুখী মন সং রাঁবূঁজী ঘব পহুচনা খা মাঁ কে সরঁটা রাঁত রঁতা ক প্বক্কি পাবি ক কানয নগনা. এহি রীচ বাঘর সেহো কত সং খেনৈত-হুদৈত ঘব পহুচনৈথ. পহিনে ত হুনকা মাজবা কিছু রঁম্মনা মেং নৈ এনৈন, কিন্তু রাঁত রঁম্মনা উঁত্তব ত জেনা হুনকা কাণ্ড্রি ত খূন নৈ. খামেণ্ণানী সং ও ডূরঁন জা বহন ছনা. হোয ছনৈন জে ধবতী ফ়াণ্ডট জৈ খা হম ঐ মেং সমা জায. সোচয নগনা জে খাণ হমবা কাবণ রাঁবূঁজী কে সস্পেন্ড হোরঁ পবনৈন খা বঁদনামী সে খনগ. কিছু ক্ষণ ত হুনকা খপনা খাপ সং,জিনগী সং ঘ্রিণা হোময নগনৈন, বংগ বংগ কে নাকাবামেক খযান খারঁ নাগনৈন, কিংত্ত ফ়বে ও খপনা খাপ কে সম্হাবনৈথ খা খপনা খাপ সং কহনখিন জে হমবা সং খাণ্ডা রঁড্ড পৈঘ খপবাধ ভেন খছি খা হম ডবপোক নৈ ছী,হম এহি খপবাধ কে প্রাযশ্চিত কবরঁ. কিন্তু বাঘর কে ণ

হিম্মত নৈ ভেলৈন জে ও সরঁঠা সচাঙ রাঁবূজী কে জা ক রঁতা দী. তথাপি বাঘর তক্ষেণ তীন ঠা প্রণ নেনৈন:

১. জিনগী মেং কখনো কোনো প্রকাব কে চোবী নৈ কবরঁ

২. কখনো কোনো গৈবজরুবী মাংগ নৈ কবরঁ

৩. রাঁবূজী কে খাঙ.এ.এস বঁনি ক দেখাযরঁ আ তখন এহি অপবাধ কে নেনে ক্ষমা মাংগরঁ.

তখন ফ়বে বাঘর রাঁবূজী কে পর্স কে অতি গোপনিয রূপ সং বাখি দেনৈথ. ও দিন অছি আ আগ কে দিন অছি,বাঘর সদিখন অপন দোনো প্রণ কে পানন কেনৈথ আ প্রতিপন অপন তেসব প্রণ কে পানন কবৈ কে নেন প্রযনেশীন বহনৈথ. আ আঙ ও দিন আরিযে গেন.

গ সরঁ সোচৈত সোচৈত বাঘর কে আঁখি সং খুশী কে নোব বঁহ নাগনৈন. ও ওত স সীধে রাঁবূজী কে পর্স নিকান গেনৈথ, আ ফ়বে গেনা রাঁবূজী কে গ খরঁব স্বনারঁ. আগ-কান্হি গংঠবনেঠ কে জমানা অছি আ কোনো ন্যূজ ফ়ৈনরাঁ মেং মিনঠৈ কর্মা নাগৈ অছী. রাঁবূজী কে আন নোক সরঁ সং খরঁব ভেঠ গেনৈন জে হ্নকব রেঁঠা গাম-সমাজ কে নাক উঁপব কেনৈথ আ মিথিনা কে নাম ঔব বৌশন. রাঁবূজী খুশী মেং ঝুমৈত বাঘর কে সামনে এনৈথ. আরঁ বাঘর কে অপনা আপ কে বোকনাগ নাহ্মমকিন ভ গেন ছন. ও রাঁবূজী সং নিপৈঠ ক জোব জোব সং কান নাগনৈথ. হ্নকা আঁখি সং গংগা-যম্না বঁহ

নাগনৈন. রাঁরূজী কহনখিন দ্ব রতাহ তোঁ গাম–সমাজ কে এতে নাম কেনৌঁ খা এনা রতাহ জেকাঁ কানি কিযে বহন ছঁে ! খার বাঘর কানৈত কানৈত নৌ রবষ পহিনে কে সরটা ঘটনা স্বনার নগনা খা খংত মেঁ রাঁরূজী কে ও পর্স নিকানি ক দেনখিন. খার সভটা গ্লানি সভটা খপবাধ রোঁধ সমাপ্ত ভ গেন ছন. নোবক রসাত মেঁ সর সাফ় ভ গেন ছন. জেনা নাগৈ ছন জে ঘনঘোব ঘটাটৈপ কে রাঁদ ফ়বিছ ভ গেন ছন.

<u>খপন খপন ধর্ম (সংস্মবণ)</u>



ও রাকযা খছি ১৩ জনরবী ২০১২ কে জখন হম খপন মাঁ–পপ্পা সংগে গংগা সাগব (সাগব খাগনৈঁড) সেতিনাসংক্রান্তি কে রাঁদ ঘ্রৈ ছনৌ| জখন হম সর মিনীরস মেঁ রৈসন জেটী ঘাটে দিস জাগত বমী তখনে কিছনরত্তবিযা ছোবা–ছোবী সর হমব সর কে গাডী কে রোকনক | এতয হম ও রতা দের চাহে ছী কে মকব সংক্রাঁতি মেনাকে সময পব সাগব দ্বীপ পব যাতাযাত খা

व्यवस्था के अस्विधे देखय के लेल ठाढ़ छल । तीर्थयात्री सभ केदारनाथ पहुंचल छल । एहन में अचानक ओ एक झुण्ड लड़कीसभ के अचानक गाडी रोकैत देख मोन आशंकित भेल जे की बात अछी ! गन्तु हमाबा ओ देख आश्चर्य भेल जे एहन ठाम में एतेक अस्विधा के बीच ई हिन्दू तीर्थस्थलपर ओ लड़कीसभ छौड़ा-छौड़ी के झुण्ड क्रिस्चैनिटी के प्रचार करै लेल आयल छल । पहिले त हमाबा आश्चर्य भेलकिन्तु पाछाँ हम अंदाज केलौं जे एहेन शायद ई लेल अछि किएक त एहि दृश्य अलमार्केटोगलड आ अनब्रॉडेडतीर्थस्थल पर अधिकांशत: मध्यमवर्गीय एवं निम्नवर्गीय तीर्थयात्री सभ आवैत जाइत अछि जे एकर सभ के व्याख्यावगेटेटे रस्ता होइत अछि कन्वर्जन के लेल । खैर, हम ओ कहि छलहुँ जे ओ छौड़ा-छौड़ी सभ एकटा डायवीव्वमा किताबबाँटै छल ओहो फ्री में जे हिंदी अंग्रेजी आ बाँगला में उपलब्ध छल । हमर माँ के बुझला गेलै जे कोनो धार्मिककिताब बैंटै बहल अछि तहि सं ओहो एकटा ल लेलक| अपना देश में यदि कोनो वस्तु फ्री भेंटै त ओकरा प्राप्तकर से केयो चूक नै चाहि अछि स्वागत पप्पा एकटा न लेलैथ । आगा बढ़ला पर माँ के पुछला पर हम हुनकाबतेलिएन जे ओ क्रिस्चैनिटी (दोसर धर्म) के धर्म ग्रन्थ अछि आ ओ छौड़ ा-छौंड़ी सभ एहि किताब के माध्यम अपनधर्म के प्रचार करै छल । एहि पर पप्पा कहलैथ जे तखन त ओ किताब के फेंक देब के चाहि । ई पर हमर माँ जेपढ़ल-लिखल नै अछि आ एकटा धार्मिक मैथिल ब्राम्हण महिला अछि ओ कहलक जे "नै ओ एकटा धार्मिक ग्रन्थअछि (भले आले धर्म के किए नै होय) ताहि लेल एकरा सम्भव-

आम्हार फेँकनाइ उचित नै अछि , आ तहि लेलएकरा अपना सबँ बास्ता मे गंगाजी मे भँसा देबँ (जेना की अपने सबँ अपन धार्मिक अवशेष संग सेहो करै छी) | "आ आगा हम सबँ ओहि कितार्ब के गंगाजी मे भँसा देने छलियै |

उपरोक्त घटना के बाद हम सोचे लगलौ जे हमर माँओ के एकटा धर्म अछि जे सनातन अछि जे अपना मे आपके सास्वत बाखैतो सबँ धर्म के सम्मान केनाइ सिखबैँ अछि (जेना की गीता मे स्वयं गोविन्द सेहो कहै छैथ)

दोसर तरफ ओ नरत्तविया छौड़ा-छौडी के भी अपन धर्म अछि जे ओकरा सबँ के अपन मेहनत आ टौआ खर्च कक अपन धर्म के प्रचार कर के लेल प्रेरित करै अछि | आ देश-दुनिया मे किछ एहनो समूह अछि जे धर्म के नामपर अलगाववाद आ आतंकवाद सं घृणित काज के अंजाम दैत अछि आ अपने धर्म आ कौम के बँदनाम करै अछि| त किछ लोक एहनो अछि जे जबँवदस्ती अपन अपन धर्म के ठेकेदार बनैँ जाइ अछि जिनका लेल धर्म केएकमात्र अर्थ दोसर धर्म के लोक सबँ के निंदा केनाइ आ ओकरा सबँ के प्रति घृणा फैलेनाइ अछि | एहन लोकसबँ या त धर्म के ठेकेदारी क एकर धंधा करै अछि या एहन गोरखधंधा करै बँला सबँ के चंगुल मे फँसलदिकभ्रमित लोक सबँ होइ अछि | हम एहो सोचे लगलौं जे अपने सबँ के ओइ नरत्तविया सबँ से प्रेरणा लेबैँ केचाहि की अपने सबँ के धर्म, समाज, भाषा आदि के निक बाँत सबँ के अपन मेहनत आ व्यवहार द्वारा देशदुनिया के

सामने बाखै के चाहि | प्रेरणा त एहेन समय माँओ के खरधारणा आ व्यवहार सं भेटैत अछि ...फिलहाल तहँस एतबेँ ...फेर भेंटैत छी बाँद मे.....नमस्कार



नन्द विलास राय

दि वया

निर्मली हौशैनक पाछू, बेनरँ पवि सबेमे ग्वरू-चेनाक खेल भऽ रहल छल। ग्वरू लूंगी आ मोनंगा जकाँ स्वरता पहि कि हाथमे डमरू लेने छला। नगभग दस बर्खक बाँनक चेला छल। ओकर सम्हच्चा देह कपड़ा सँ झाँपल छल। चारू दि ससँ लोक ठाठ़ भऽ खेलक मजा लेबँए लेल तैयार छल। ग्वरू डमरू बँजा चेलासँ पुछलखि न-

"बाँल चेला की हाल-चाल छौ ? "

चेला जवाबँ देलक-

“গ্বরুজী, হমব হান–চান একদম টৈনাটৈন খছি । খহাঁ খপন কহু। ”

গ্বরু কহনখি ন–

“হমহুঁ ঠীক ছী। খচ্ছা ঙা রঁতা খখনি তোঁ ছেঁ কেতএ। ”

চেনা রাঁজন–

“খখনি হম রঁবহী গামমে ছী। ”

গ্বরু–

“ঙা রঁবহী গাম কেতএ ছৈ ? ”

চেনা–

“রঁবহী গাম নেপান খধি বাজযক সপ্তবী জি নামে পড়ৈ ছৈ। বাজরি বাজসঁ নগধগ তীন কি নোমীটৈব দছি ন। রঁবহী গামসঁ উঁত্তব পছি মী কোসী নহব ছৈ। ”

গ্বরু–

“খচ্ছা ঙা রঁতা ওতএ কী কঽ বহন ছেঁ। ”

চেনা–

“রি দেহ গন্টবনেটৈ পত্রি কামে খরঁবি জ্টোরঁক সমদি যাক কাজ কবএ নগনৌঁ হেন। নেপানক দৌবাপব ছী। ”

গ্বরু–

“তঁ রঁবহী গামমে এহেন কানে ঘটৈনা ভেনৈ জে

तोँ रॅवही गाममे छैँ।"

चेना-

"घटना अथवा दुर्घटना तँ नै भेलै मुदा एकटा नव चीज जरूर भेलै।"

गुरु-

"कानेन नव चीज भेलै हेन, कनी हमरो छा कऽ राँज।"

चेना-

"रॅवही गाम सप्तरी जिलाक सदरमुकाम राजविराज रॅजावक लग बहि तो मुख्य रूपसँ किसानक गाम छी। पश्चिमी कोसी नहरि सँ दक्षिण न छै। सिंचाइक भरपूर साधन बहैक कारण गरमा धान आ अगहनी धानक उँपज रॅड़ नीक होएत छै।"

गुरु-

"कोन खेती गि बहस्तीक गप शुरू कऽ देलँह। नव बाँत जे भेलै से बाँज ने।"

चेना-

"हम सभ गप हमरो छा कऽ कहै छी। अहाँ धैर्यसँ सुनू। रॅवही गाममे रूपलाल नामक एकटा किसान छथि। हुनका एकटा बेँटा आ एकटा बेँटी छनहि। बेँटाक नाउँ रि रेक अछि। आ रि बाटनगर अस्पतालमे पेथोलौजि स्टै छथि। अपन प्राइवेट जाँच-घर सेहो बखने

छथि । रूपनानक बेटी दि ब्या बी.ए. पास कऽ बाजेरि बाजमे बी.एड. कऽ बहली हेन।"

ग्वरू–

"कोन थाहे–माहेक कथा पसाबि देलँह से लै जानि । हम कहै छि यौ नर बाँत बँता।"

चेना–

"एतएसँ श्वरू होगत थछि नर बाँत। थखनि हम नर बाँत जे भेन तेकव पृष्ठभूमि मे चनि बहन छी। थहाँ कनी धैर्यसँ स्वनि यौ।"

ग्वरू–

"थच्छा बँता। थाबँ हम बीचमे लै टैकबौ।"

चेना–

"हँ तँ हम कहैत बही जे रूपनानक बेटी जेकव नाओं दि ब्या छी, बाजेरि बाजमे बी.एड. कऽ बहली हेन। सान भवि पहि ने दि ब्याक बि थाहक बाँत–चीज ठीलो गामक बामथरतावक बेटोक संग चनन। बामथरतावक बेटा थनि न भोपानमे गंजीनि यबिंग कऽ पठ़ ाग कऽ बहन छना। दस नाथ नेपानी टैकामे बाँत पक्का भऽ गेन छन। दुनू दि ससँ छेका–छकी सेहो भऽ गेलै। छह महि ना पहि ने थनि न गंजीनि यबिंगक डि ग्री नऽ भोपानसँ नेपान थाएन। दूब संचाव बि भागमे भैकेन्सी भेन। ओहो थारेदन देनक।

খনি নক পি তাজী বামখরতাব তেজ খাদমী খছি । ও দৌগ–ধূপ কেনক। চাবি নাখ ৫কা ঘূস মাঁগনকৈ। বামখরতাব দৌগন ৰবহী খাএন। ঋপনানকেঁ কহনখি ন– খহাঁ জমাএকেঁ নৌকবী ভহ বহন খছি । চাবি নাখ ৫কা ঘূস নগৈ ছৈ। খহাঁ দস নাখ ৫কা জে রি খাহমে দেরঁ তগমে সঁ চাবি নাখ ৫কা খখনি দহ দি খ। ৰাঁকী ছহ নাখ ৫কা রি খাহসঁ দস দি ন পহি নে দহ দেরঁ। জমাএকেঁ নোকবী ভহ জাএত তঁ ৰেঁ৫ী বানী ভহ কহ বহত। ঋপনান রি রেককেঁ ফোনপব সভ ৰাঁত ৰতৌনখি ন। রি রেক কহনকনি , ঠীক ছৈ, খহাঁ বামখরতাব ৰাৰূকেঁ রি বা৫নগব ভেজ দি যৌ। হম চাবি নাখ ৫কা দহ দেৰঁনি । বামখরতাব রি বা৫নগব জা রি রেকসঁ চানি নাখ ৫কা খানি ৰেঁ৫াকেঁ সংগ কহ কাঠমাডূ গেনা। ঘূস দহ ৰেঁ৫াকেঁ নোকবী নগৌননি ।

গ্বরু ৰজনা–

"খচ্ছা, ঞা ৰতা দি ব্যাক রি খাহ বামখরতাবক ৰেঁ৫া খনি নসঁ ভহ গেন নে। "

চেনা–

"খসনকা গপ তঁ খাৰ স্বনাৰৈ ছী। কনী ধি যানসঁ স্বনি যৌ নে। খাগসঁ দস দি ন পহি নে ঋপনান খপনা ভাতীজকেঁ সংগ কহ ঠীন্না পহুঁচনা। বামখরতাবকেঁ রি খাহক দি ন পক্কা কবৈনে কহনখি ন। ও তীন৫া দি নক প্রস্তার বামখরতাব নগ বখননি । খা কহনখি ন খহী তীনূ দি নমে জে দি ন খহাঁকেঁ সহ্নি যত হ্খএ সে দি ন তঁগ কবি নি খ।

ঢৌআ জে ৰাঁকী অছি ও নগদ নেৰ আকি চেক, সেহো কহি দি অ।”

বামঅরতাব কহলখি ন–

“যৌ ৰূপনান ৰাৰূ, হমবা ৰেঁগৌক ভঠি যন গামৰঁনা পনবহ নাখ ঢৈকা নগদ, একগৌ পলশৈব মোগৈব সাওকি ন আ পাঁচ ভবি স্বন দহ বহন অছি । অহাঁক ৰেঁগৌসঁ হমবা ৰেঁগৌক রি আহক গপ পক্কা অছি । অহাঁ অনি নক নোকবী নেন চাি ব ঢৈকা দেনে ছী। তঁএ অহাঁসঁ মাত্র পনবহ নাখ ঢৈকেগৌ নেৰ। গাড়ি আ স্বন ছোড়ি দেৰ। জঁ অহাঁ পনবহ নাখ ঢৈকাপব রি আহ কবৈনে তৈযাব ছী, তঁ হাগ্নন দস গতেক দি ন পক্কা ভেন। হমবা নগদ ঢৈকা দী অথরা চেক দী, হম সভমে তৈযাব ছী। অহাঁকেঁ জওমে স্বরি ধা হ্অএ সে কবৰ।”

তৈপব ৰূপনান ৰঁজনা–

“অহাঁসঁ তঁ হমবা দসে নাখপব ৰাঁত ভেন অছি । আৰঁ অহাঁ মন নৈ ৰঁঠ়াউঁ। হম ৰঁকি যৌতা ছহ নাখ ঢৈকাক চেক ভাতীজ মার্ফত ভেজ দেৰ।”

ৰূপনানক গপ স্বনি বামঅরতাব তৈশমে ৰঁজনা–

“জঁ হমবা ৰেঁগৌক সংগ অহাঁকেঁ অপনা ৰেঁগৌক রি আহ কবৰাঁক অছি তঁ মোন–মোনাও ছোড়ু আ পনবহ নাখ ঢৈকামে ৰাঁত পক্কা কবি তীন দি নক ভীতব ৰাঁকী এৰাঁবহ নাখ ঢৈকা পহুঁচাউঁ। নৈ তঁ হঠ্মৈতী নৈ হএত। অহাঁ

চাবি নাথ ৎৈকা হম খগি না মহি নামে খাপস
কঽ দেরঁ।”

খারঁ তঁ ৰূপনান ঝমা গেনা। খাঁখি ক খাগূ
খন্হাব পসবি গেননি । কি ছ হ্ড়ুরেঁ নে কবনি ।
গ্বৰু ফেব ৎৈকনখি ন–

“খঁগ বৌ চেনা, ঙা বামখরতাব তঁ বঁড় নীচ
খাদমী বুঁঝাগত খছি ।”

চেনা বাঁজন–

“খাগূ স্বনি যৌ নে।”

গ্বৰু–

“খচ্ছা কহ, খাগূ কী ভেনৈ।”

চেনা কহএ নগন–

“কনীকানক বাঁদ ৰূপনান খপনাকেঁ সম্হাবৈত
বঁজনা, ঠীক ছৈ হম গাম জাগ ছী। বেঁগৈসঁ
রি চাব কববঁ। ও জে কহত সএহ কববঁ।”

ৰূপনান খাপস গাম খারি গেনা। ঝঁহক ডঁদাসী
দেখি হ্নকব পনৌ বুঁঝি গেনী জে শাগত দি ন
পক্কা নৈ ভেন। কোনো ঝঁঝঁট নগি গেন। দি র্যা
বাজরি বাজসঁ পঠ্ো কঽ খাপস নৈ খাএন ছেনী।
ৰূপনান সভ বাঁত পনৌকেঁ বঁতৌনখি ন। পনৌ
কহনকনি , রি রেকসঁ ফোনপব গপ কৰু। তৈপব
ৰূপনান বঁজনা, খখনি তঁ ও কনি নি কপব হএত
বাতি মে নি চেনসঁ গপ কববঁ। ৰূপনান দ্নূ পবানী
বাতি মে খেরোঁ নে কেননি ।

বাতি মে ৰূপনান মোৰাঁগনপব রি রেকসঁ গপ কবএ নগনা। গপ কবি তে–কবি তে ও কানএ নগনা। জখনি ও রেঁগৌসঁ মোৰাঁগনপব গপ কবৈ ছনা, তখনি দি র্যা খপনা কোঠবীমে পঠ়ে ছেনী। কোনো গপক পতা নৈ ছেননি। জখনি পি তাজীকেঁ কানৰঁ স্বননী তখি ন কান পাথি কহ সভ গপ স্বনএ নগনী। সভ গপক থাহ নগি গেননি জে পি তাজী ফোনপব কি এ কনৈ ছথি। দি র্যাকেঁ ভবি বাতি নীন নৈ ভেনৈ। ও ভবি বাতি সোচি তে বহনী। বামখরতাব কেতে নীচ খা কমীনা খছি। চাবি নাখ টৈকা হমবে বাঁৰূজী সঁ নহ ঘূস দহ রেঁগৌকেঁ নোকবী দি যৌনক। খাগ রেঁগৌ নৌকবী কবএ নগননি তঁ মন বঁঠ়া গেননি। পাঁচ নাখ টৈকা রেঁসী কহ হমবা বাঁৰূজী সঁ মংগৈ ছথি ন। এহেন নীচ খা নোভী মন্বখক রেঁগৌসঁ হম খপন রিঁ খাহ কি ন্নাঁ নে কবৰঁ, চাহে জি নগী ভবি ক্ষমাবি এ কি এ নে বহি জাগ।

গ্বৰু ফেব বঁজনা–

"রাহ! রাহ! দি র্যা বঁড় নীক বাঁত সোচনক।"

চেনা বাঁজন–

"খাগূ স্বনি যৌ নে।"

গ্বৰু–

"খচ্ছা স্বনা।"

চেনা কহএ নগন–

"রি রেক ফোনপব পি তাজীকেঁ কহনকনি, বাঁৰূ

ঋহোঁ জ্নি কান্। হমবা একেটা ৰঁহি ন ঋছি দি ৰ্যা। ঋহোঁক পএবক গ্রপাসঁ হম চাবি –পাঁচ হজাব টৈকা ডেনী কমাগ ছী। কী কবৰেঁ বামঋরতাব ৰাঁৰূকেঁ নোভ ভঽ গেননি। হম পাঁচ নাখ টৈকা ঋাবো দেৰেঁ। ঋহোঁ শ্বঞ্র দি ন বামঋরতাব ৰাঁৰূকেঁ ৰবহী ৰজা নি যৌ। হম নগদ এগাবহ নাখ গি ন দেৰেঁ। চাবি নাখ তঁ দেনৌহি এ ছি যনি। শ্বঞ্র দি ন সাঁঝ ধবি হমছুঁ গাম পহুঁচ জাএৰ।”

শ্বঞ্র দি ন সাঁঝমে বামঋরতাব ৰবহী পহুঁচনা। সোচনে বহথি জে নগদ টৌঋা দেতা তঁ বাজেরি বাজ নেপান ৰৈংক নি মি টৈডমে ড্রাফ্ট ৰনৰাঁ নেৰ। নগদ টৌঋা নঽ জাগমে খতবা ঋছি। সাঁঝমে রি রেকো গাম পহুঁচনা।

খেনাগমে বামঋরতাবকেঁ খূৰ স্বঋাগত ভেননি। তৎঋা, ভুজ্ঋাক ঋনারেঁ খস্সীক মাস্ব সেহো বহএ। ঝদা দি ৰ্যা একদম গ্বমশ্বম।

শৈনি দি ন দস ৰজে বামঋরতাবকেঁ পবাঠা ঋা ঋন্বক ভুজি যা, হন্বঋা, সেৰৈক খীব ঋা বসগ্বন্নাক জনখৈ খ্ঋাএন গেন। জনখৈ কবা একটা কোঠবীমে রি রেক, বামঋরতাব ঋা ৎপনান ৰৈসনা। রি রেক প্বছনকনি –

“টৌঋা কেনা নঽ জেৰেঁ ? ”

তৈপব বামঋরতাব কহনখি ন–

“টৌঋা দঽ দি ঋ ঋা ঋহোঁ চন্ বাজরি বাজ, নেপান ৰৈংকমে ড্রাফ ৰনৰাঁ দেৰ।”

তৈপব রি রেক ৰজনা–

“আাগ তঁ শনি ছী। ছঙ্গীক দি ন ছী। ৰৈক ৰন্ন হএত।”

বামখরতাব ৰজনা–

“অচ্ছা অহাঁ ৫কা গি ন কঽ দি অ। হম সমধীকেঁ সংগ কঽ ঠীনো চন জাএৰ। দূ গোটে বহৰ তঁ ডব কম বহত।”

রি রেক আনমাবী খোনি ঋপৈআ নি কানি গি ন কঽ বামখরতাবকেঁ দেৰএ নগনা আকি হনাএন–হ্নাএন দি ব্যা পহুঁচ কঽ ৰজনী–

“ঋকূ ভৈযা, ঋকূ। ঋপৈআ বাখূ। হম এহেন নোভী আ কমীনা আদমীক ৰেঁ৫াসঁ অপন রিঁ আহ কি ন্নী নৈ কবৰ। চাহে জি নগী ভবি ঋমাবি কি এক নে বহি জাগ।”

দি ব্যাক গপ স্বনি , সভ কি যো অরাক্ ভঽ গেন। রি রেক আ ঋপনান সমস্যাৰৈক পবি যাস কেননি তঁ দি ব্যা অপনা হাথমে এক৫া শীশী দেখৰৈত কহনকনি –

“ঐ শীশীমে জহব ছী। জঁ অহাঁ সভ জি দ্দ কবৰ তঁ হম জহব পীৰ নেৰ।”

বামখরতাব ৰাৰূ দি স ঘূমি ৰজনী–

“স্বনূ বামখরতাব ৰাৰূ, অহাঁ হমবা ৰাৰূজীসঁ চাবি নাখ ৫কা নঽ গেন ছী। জাৰেঁ ধবি চাবি নাখ ৫কা আপস নৈ কবৰ অহাঁ ৰবহীসঁ আপস

ठीन्ना नै जा सकै छी।”

गुरु डमरू रँजरैत नाचए लगला। थोड़े काल नाचि रँजला–

“रँड़ नीक रँड़ स्वन्नव। दि र्याकेँ रँह्त–रँह्त धेनरवाद।”

<u>सभ्सँ रँड़का भीखागपी गेस्टै</u>

हम आँगनमे चाह पीरैत बमी। तखने पलो आरि टैकनी–

“यै, स्वनै छिऐ ?”

हम कहलनियनि–

“हँ, कह्र ने की कहै छी।”

प्रश्ननलि–

“रँमरँग आम नह कह जीतू रौआ ओतए कहिया जेरैं ?”

अकचकागत हमबा ह्मँहसँ रँहबाएन–

“हँ। ठीके मोन पाड़लौं। पबसू बरि दिन भोरुका रँस पकड़ि नेरँ। रौबहे रँजे तक पटैना पहुँच जाएरँ। रँमरँग आमो खूरँ पाकए लगल अछि। चाबि आना आम गाछेमे पाकि कह खसि पड़ल। कान्हि केकरो रँजा कह आम तोबा कह बखि नेरँ आ पबसू छह–रँजिया रँस

পকড়ি নেৱঁ।”

পনৌ কহননি–

“দস–ৱীস গো গছপক্কও নহ নেৱেঁ।”

হঁ–মে–হঁ মিনৱৈঁত কহনিযনি–

“হঁ–হঁ থৱঁসসে নহ নেৱেঁ।”

হম খা জীতূ দূ ভাঁগ। হমব নাওঁ ভোগেন্দ্র খা হমব ছোট ভাএ জীতেন্দ্র। মাএ–ৱাঁবূ হমবা ভোগী খা জীতেন্দ্রকেঁ জীতূ কহৈ ছনা। মাএ–ৱাঁবূক দেখা–দেখী খানো–খান নোক হমবা ভোগী খা ওকবা জীতূএ কহৈত খছি। হম গামমে বহি কহ খেতী–গিবহস্তী কবৈ ছী। খেতী কী কবৱঁ। খপনা তঁ মাত্র এক্ক ৱীঘা খেত খছি। দূ ৱীঘা খেত নানৱাঁবূসঁ মনকূতপব নেনে ছী। জীতূ পটনামে পঁজাৱঁ নেশনন ৱৈঁকমে পী.ও খছি।

দোসব দিন হম একটা গছচঢ়া নড়ি কাকেঁ ৱঁজা খাম তোড়নৌঁ। নগধগ পাঁচ সএ খাম ভেন। জগমে সএ–সৱা–সএ পকনে বহএ। সভটা খাম একটা ৱোবামে নহ ফ্নঁহ ৱাঁনহি কহ বখি নেনৌঁ। একটা ঝোবামে পচাসটা গছপকূ খাম সেহো ওবিযা কহ বখি নেনৌঁ।

খগিনা দিন সাগকিনপব খাম নহ নৱটৈনী চৌকপব গেনৌঁ। চৌকেপব একটা চিন্হাবএ ঐঠাম সাগকিন বখি সতৱঁজিযা ৱঁসপব চঢ়নৌঁ। নগধগ ডেঢ় ৱঁজে দূপহবমে পটনা পহুঁচনৌঁ। জীতূ ডেবেপব ছন। হমবা দেখিতে খাৱিঁ কহ গোব নগনক খা গামক সমাচাব পুছনক। হম খসিবৱাদ দৈত কহনিঐ–

“গামকসভ সমাচাব ঠীকে খছি। তোঁ খপন

समाचार कहलहुन, सभ कियो नीके-ना छलहुन किने ? ”

जीतू कहलनि-

“अहाँक असिरवादसँ हम दुनू गोटे फरीन छी।”

हम कहलिऐ-

“भगवानक किरपा।”

जीतू बाजल-

“केकरो मोबाइलसँ फोन केने रहितिऐ तँ खाना बनल रहितए।”

हम कहलिऐ-

“केकरा मोबाइलसँ फोन करितौं।”

जीतू फेर बाजल-

“एमकी गाम जाएब तँ एकटा मोबाइल नेने आएब। मोबाइल रहत तँ दुनू भाँइक बीच गप-सप्प होइत रहत। भौजीओसँ गप हएत। अहाँ फ्रेश भऽ कऽ चाह पीबू। चाह पी कऽ जाबे स्नान करब तावेमे खेनाइ बनि जाएत।”

हम बाथरूम जा फ्रेश भेलौं। फ्रेश भऽ ड्राइंगरूममे आबि बैसलौं। जीतूक कनियाँ एकटा पलेटमे दालमोट आ छह-सात गोटे बिस्कुट बधि हमरा गोर लगली। हम कहलियनि-

“नीके रहू।”

জীতূ এক জগ পানিঋা একটা গিনাস নেনে ঋাএন ঋা কহনক–

“তারেঁ পানি পী কঽ চাহ পীরঁ নিঋ।”

হম দানমোষ্ট ঋা রিস্কুষ্ট খাএ নগনৌঁ। পাঁচে মিনষ্টক পস্তাতি কনিযাঁ দূ কপ চাহ দঽ গেনী। হম দূনূ ভাঁগ চাহো পীরী ঋা গাম–ঘবক গপো–সপ্পো কবী।

কবীরঁ পনবহ–রীস মিনষ্টক পস্তাতিকনিযাঁ ঋারি কঽ রঁজনী–

“ভাত–দানি রঁনি গেন ঋছি। জারেঁ ভাযজী স্নান কবথিন, তবকাবীও রঁনি জাএত।”

হম রঁজনৌঁ–

“এতে জন্দী কেনা রঁনি গেন।”

জীতূ কহনক–

“ভৈযা, গৈসপব প্রেশব ক্ষকবমে ভাত–দানি রঁনরৈঁমে দেবী নৈ নগৈ ছৈ। ঋারঁ ঋহাঁ জন্দী–জন্দী নহা নিঋ।”

হম রাঁথৰুমে জা কঽ স্নান কঽ কপড়া রঁদনি ড্রাগংগৰুমমে ঋারি কঽ রৈঁসনৌঁ। হমবা রঁসিতে দেবী জীতূ এক জগ পানি ঋা গিনাস ষ্টেৱঁনপব বথি ভীতব চনি গেন। কনিযাঁ একটা থাবীমে ভাত, কটৈবীমে দানি ঋা একটা পনেষ্টমে তীমন ঋা দোসব পনেষ্টমে ভুজিযাঋা পাপড় দঽ গেনী। জীতূ একটা কটৈবীমে ঘীউ নেনে ঋাএন। কিছু ঘীউ ভাতমে ঢাবি রাঁকী দানিমে ঢাবি রাঁজন–

“खाउ भोजन करू।”

हम भोजन करए लगलौं। जाहि धरि हम खेनाइ खेलौं जीतू हमरा लग ठाढ़ रहल। कनियाँ परसनपर परसन खाइ कऽ दैत रहली। भोजन केलाक बाद हम हाथ-मुँह धोइ कुरसीपर बैसलौं।

जीतू लगमे आबि बाजल-

“आब आपने आराम करू।”

कहलिऐ-

“जा तहूँ आराम करए गऽ”

हम ओछाओनपर आराम करए लगलौं। हमरा पछिला सभ गप मोन पड़ए लगल। ओम्हरमे पढ़ैत रही। जीतू सेहो अठमामे पढ़ैत रहए। जीतू पढ़ैमे चन्सगर रहए। ओ अपना किलासमे फस्ट करए। हमर बिआह भऽ गेल रहए। बाबूजी हमरा बिआहेमे धूर-धूर करा दुरागमनो करा देने रहथि। मुदा हमर कनियाँ तेतेो नैहरेमे रहै छेली। बाबूजी दिल्लीमे दानि मीलमे मोटियाक काज करै छला। हुनका ओतए रोटीयाव लगि गेलनि। ठीकसँ इलाज नै करा सकला। तेकर नतीजा भेलनि जे बड़ कमजोर भऽ गेला। डाक्टर कहलकनि-

“कालाजार हो गया है।”

तखनि हमरे एकटा गौआँ बहादूर काका हुनका लेने निर्मली टीशनपर उतरला। ओइ समैमे सवारीक सुविधा नै छेलै। हमर बाबूजी तेतेक कमजोर भऽ गेल छला जे पएरे गाम नै आबि सकला। तखनि

रॅहादूर काका रॉबूॅ जीकेँ मोसाफिर खानामे रैसा थपने गाम आबि हमरा माएकेँ सभ बात कहलखिन। हम खेलाए आ कऽ निर्मली कौलेज जाएबे लाएकिन निकाललेँ छेलौं। माए हमरा लग आबि कहलक–

"भोगी, केकरो टैयरगाड़ी लऽ कऽ निर्मली टेशिन चलि जा। गाड़ीपर रैसा कऽ रॉबूॅकेँ आनए पड़तह। रॉबूॅजी मोसाफिर खानामे छथुन। रॅड़ दुखित छथिन। चललो ने होएत छन्हि। कहाँदिन कालाजार भऽ गेलनि। रॅहादूर रौआ दिल्लीसँ संगे नेने एलनि। रएह आबि कऽ कहि गेला हेन।"

हम लाएकिन बथि मने–मन हिसाबए लगलौं जे केकर टैयर गाड़ी लऽ जाए। हमर नजरि रेँचन काकापर गेल। हम रेँचन काका ओएठाम बिदा भेलौं। रेँचन काका सोकरामे रैसि कऽ राँसक पातक फट्टी कटै छला। हमरा देखिते रॅजला–

"आरॅह–आरॅह भोगी। कहऽ की हाल–चाल छह। आए कौलेज नै गेलह की ?"

कहलियनि–

"काका हमर हाल–चाल नीक नै अछि। रॉबूॅजी रॅड़ दुखित छथि। कहाँदुन कालाजार भऽ गेलनि हेँ। चललो–फिरल नै होएत छन्हि। दिल्लीसँ आबि निर्मली निर्मली टेशिनपर रैसल छथिन। रॅहादूर काका संगे एला हेन। रएह अखनि कहि गेला।"

रेँचन काका रॅजला–

"तँ टौयबगाड़ी नञ जेरॅहक रॉबूँकेँ थ्यानैने ? "

कहनियनि—

"हँ, काका। तँएँ एनौं हेन। "

कहननि—

"ठीक छै कनी जनथै कञ नग छी। तारेँ रॅबदो थाग छै। "

हम कहनियनि—

"हमहुँ गामपब सँ भेन थरैँ छी। थहाँ जनथै कबि कञ तैयाब बहरॅ। "

"ठीक छै। " ओ रॅजना।

हम गामपब थ्यारि माएकेँ कहनिऐ—

"रेँचन काका जनथै कबै छथिन। जनथै कञ टौयब जोति देथिन। किछ पाग-कौड़ी छो तँ दे। हएत तँ रॉबूँकेँ नञ बामानन्द डाक्टबसँ देथा देरॅनि। "

माए घब गेनी। घबसँ एकटा फ्च्ची निकानि थननी। फ्चीकेँ उँनटि दसटैकही, पँचटैकही, दू-टैकही, एकटैकही सभटा सिक्का सभ निकानि गिननिन। सभटा मिना कञ पाँच सए पचपन कपैथा भेन। सभटा पाग दैत माए कहनी—

"रॉबूँकेँ डाक्टबसँ जँचा दबाँग कीनि निहेँ। "

পাগ নঽ রেঁচন কাকা ওতএ রিদা ভেলৌঁ। রেঁচন কাকা টৌযবপব প্বখাব দঽ একটা সতবংজী রিছা হমবে রাঁটে তকৈত বহথি। হমবা দেখিতে রঁজনা–

"গাড়ী পিব রৈঁসহ। জোগত দগ ছিঐ।"

হম টৌযবপব রৈঁসনৌঁ। রেঁচন কাকা টৌযব জোগত রিদা ভঽ গেনা। সাঠ়ে রাঁবহ রঁজে হম সভ নির্মনী টৌশন পহুঁচনৌঁ। হম মোসাফিব খানা গেনৌঁ। হমব রাঁবূঁজী মোসাফিব খানামে তৌনী ওছা পড়ন ছনা। একদম নবকংকান জকাঁ হুনকব শবীব ভঽ গেন বহনি। হম নগমে জা টৈকনিযনি–

"রাঁবূঁ, রাঁবূঁ ?"

ও উঁঠি কঽ রৈঁসনা খা রঁজনা–

"কে ভোগী ! গাড়ী খননহ কী ?"

রাঁবূঁ জীক পএব ছূরিঁ গোব নাগি কহনিযনি–

"হঁ রাঁবূঁ। রেঁচন কক্কাক টৌযব খননিঐ হেন। খহাঁ কিছু পানি–তানি পীনিঐ কিনে ?"

রাঁবূঁজী রঁজনা–

"হঁ। এক গিনাস রঁদামক সত্তখা পী কঽ এক কপ চাহ পীনে বহিঐ।

"খচ্ছা উঁঠূ চনূ টৌযবপব রৈঁসূ গঽ। ডাকটৈব বমানন্দ রাঁবূঁ নগ চনৌ ছী। হুনকাসঁ দেখা দগ ছী। তেকব পছাতি খেনাগ খাএরঁ।" –হম কহনিযনি।

রাঁরূজী রঁজনা–

"ন্দা হমবা নগ ঢৌখা কহাঁ ছহ। দূ মহিনাসঁ রৈঁসিনে ছেনৌঁ। জেহো ঢৌখা ছন, সভ দরাঁগমে খবচ ভ২ গেন।"

হম কহনিযনি–

"খহাঁ ঢৌখাক চিন্তা জ্নি কৰু। হমবা মাএ কিছু ঢৌখা দেনক হেন। খাগেসঁ তারেঁ গনাজ কবা দগ ছী। ডাক্টব সাহিরঁ কী কহৈ ছথি, তেকব রাঁদ খাগূক রাঁত খাগূ সোচরঁ।"

রাঁরূ জীকেঁ ন২ ক২ হম ডাক্টব বামানন্দ রাঁরূক কনিনিকপব এনৌঁ। জাঁচি ক২ ডাক্টব সাহিরঁ কহনখিন–

"হম দরাঁগ নিখি দগ ছী। দরাঁগ ন২ ক২ হমবাসঁ দেখা ক২ শুৰু ক২ দিযৌ। ন্দা হিনকব গনাজ নীকসঁ কবরঁএ পড়ত। দবভঁগা ন২ জা ক২ হোসপীটনমে ভর্তী কবা দিযৌ।"

ডাক্টব সাহিরঁক ফীস দ২ দরাঁগ কীনিনৌঁ। কিশেন হোটনমে খেনাগ খেনৌঁ। খেনাগ খা তীনূ গোটে টৌযবপব রৈঁসি রিদা ভেনৌঁ। গোসাঁগ ড্মৈসঁ পহিনে গাম পহুঁচনৌঁ। মাএ রাঁরূক হানতি দেখি রোঁম ফাড়ি ক২ কানএ নগনী। মাএকেঁ কনৈত দেখি জীতূও কানএ নগন। হমবো খাঁখিসঁ দহো–রঁহো নোব জাএ নগন ছন। রেঁচন কাকা হমবা হমবা সভকেঁ চ্প কবরৈঁত রঁজন ছনা–

"কননে, খীজনেসঁ কিছু নে হোগ জেতহ। পাঁচ–সাত হজাব টৌকাক ওবিযান ক২ দবভঁগা ন২

जाइन आ नीकसँ गनाज करबइन।"

पाँच कट्ठा खेत सात हजारमे भरना रखि चारिम दिन हम, माएकेँ संग कऽ बाबूकेँ लऽ दरभंगा गेलौं। बाबू जीकेँ दरभंगा अस्पतालमे भर्ती करेलौं डाक्टर साहैबसँ पुछने रहिऐ-

"सर, बाबूजी केतेक दिनमे ठीक भऽ जेथिन।"

डाक्टर साहैब बजल रहथिन-

"रोगीकेँ रोग गरसि लेने अछि। नीरव सेहो ठीकसँ काज नै करै छै। तँए किछु कहल मोसकिल।"

दरभंगा जाएसँ पहिने माए रौंचन काका आ जीतूकेँ हमरा सासुर भेज हमरा कनियाँकेँ बिदागरी करा अनने रहथिन। दिल्लीसँ एलाक मासे दिनक भीतर बाबूजी हमरा सभकेँ छोड़ि दुनियाँसँ चलि गेला। जीतू बाबू जीक पएरपर माथा पटैकि-पटैकि कनैत रहए। रौंचन काका जीतूकेँ समझबैत कहने रहथिन-

"तोरा तँ बाप तुल जेठ भाए भोगी छेबे करथुन। चुप भऽ जा। भोगी तोरा सभ किछु करतऽ। पढ़ेतहु-लिखेतहु, बिआह-शादी करतऽ।"

जीतू हमर पएर पकड़ि कानए लगल रहए। हम जीतूकेँ भरि पाँजमे लऽ कनैत कहने रहिऐ-

"तों चिन्ता जुनि कर। हम तोहर जेठ भाय छियौ। तोहर सभ जवाबदेही हमरापर दऽ

রॅাবূॅজী চন গেনা। হম খপন হর্জ পূবা কববॅ।”

রॅাবূॅ জীক মবনা রॅাদ হম পঠ়ািগ ছোড়ি খেতী–গিবহস্তী কবএ নগনৌং।

রॅাবূॅ জীক সোগে মাএ জে সোগেনী সে ওহো ছবেঁ মাসক ভীতব হমবা সভকেঁ ছোড়ি রॅাবূॅএজী নগ স্বর্গ চন গেনী। জীতূক দ্নূ খাঁখি কনৈত–কনৈত হূনি গেন ছন। ও মাগক পএবপব মাথ পটৈক–পটৈক কানৈ ছন। হমব কনিযাঁ জীতূকেঁ সম্হাবনে ছনী। মবৈসঁ পহিনে মাএ হমবা কহনে ছেনী–

“রৌখা ভোগী, জীতূকেঁ পঠ়া–নিখা হাকিম রॅনারিহঽ।”

হম মাএসকেঁ কহনে ছেছিঐ–

“মাএ চিন্তা জ্নি কব। জীতূকেঁ পঠ়রৈমে হমবা ডীহো রেঁচএ পড়ত তঁ রেঁচি নের্॥”

জীতূ পঠ়্যমে তঁ চন্সগব বহবেঁ বহএ। ও মৈট্রিসসঁ নঽ কঽ এম.কাঁম. ধবি হর্স্ট ডিরিজনসঁ পাস কেনক। এম.কাঁম. কেনা রॅাদ জীতূ পটৈনামে বহি প্রতিযোগিতা পবীছাক তৈযাবী কবএ নগন। জীতূকেঁ পঠ়রৈমে হমবা এক রীঘা খেত রেঁচএ পড়ন।

এম.কাঁম. কেনাক রॅাদ সানে ভবিক ভীতব জীতূ পংজার্ নেশনন রৈঁকমে পী.ও, পদপব রॅহান ভঽ গেন। জগ রৈঁকমে ওকবা নৌকবী ভেটৈন ও পটৈনে শহবমে খছি।

হাজীপ্ববক স্টেট রৈঁক মৈনেজবক রেটী সংগ জীতূক

বিআহ ভেল। জীতূক একটা জেঠকা সাব পী.এম.সী.এচ.মে ডাক্টব ছথিন। ও সভ সোচৈত-সাচৈত হম নীন পড়ি গেলৌं। নীন টুটৈন তঁ স্বননিঐ, জীতূ অপনা কনিযাঁকেঁ কহৈত বহনি-

“ভৈযা বরি দিনকেঁ মাছ-মাস্ব নৈ খাএ ছথিন। তীমন তবকাবীমে কী সভ আনএ পড়ত।”

কনিযাঁ রঁজনী-

“অলনূ-পীঔজ তঁ অছিএ। পবোব, বামমন্নী, কবৈনা আ সজমনি নহ নেবঁ।”

জীতূ রাঁজন-

“অচ্ছা মোবা দহ দিঅ। হম জকসন জাগ ছী ওম্হবেসঁ তবকাবী কীননে আএবঁ। হঁ, ভৈযা স্বতি কহ উঁঠথিন তঁ চাহ বঁনা কহ দহ দেবঁনি।”

কনিযাঁ রঁজনী-

“অহাঁ কহবৈঁ তবঁ হম ভাযজী কেঁ চাহ বঁনা কহ দহ এবঁনি। হমবা এতবৌ বিবেক নৈ অছি কী।”

জীতূ রাঁজন-

“নৈ সে নৈ। সএহ কহলৌं। ঠীক ছৈ হম জাগ ছী।”

কনিযাঁ রঁজনী-

“কনী সবেঁবে আএবঁ। আন দিন জকাঁ আঠ বাতি নৈ বঁজা দেবৈঁ।”

“হমবো ধিযান বহতৈ জে ভৈযা আএন

छथिन।" - ई कहि जीतू मोबा नइ कइ चलि गेल।

जीतूकेँ गेलाक पनरह-बीस मिनटक पछाति हम ओछाओनपर सँ उठि गेलौं बाथरूममे जा हाथ-मूँह धोए कइ कुरसीपर आबि बैसिते बही आबि कनियाँ एक गिलास पानि आ एक कप चाह दइ गेली। चाह पीबि हम कनियाँकेँ कहलियनि-

"हम टहलि अबै छी।"

कहि हम कपड़ा बदलि डेबासँ निकलि गेलौं सात-सवा-सात बजे आपस डेरापर एलौं। जीतूओ जलखैसँ आबि गेल रहए। ओ कनियाँकेँ कहैत रहए-

"दूधक पैकेट आ सेवैक पैकेट नेने आएल छी। चीनी सेहो नेने एलौं हेन। तरकारीमे परोर, बालसुमनी, करैला आ सजमनि अछि। सोल्हन्नी घीउमे भ्रबी छानि दियौ। अल्लू-परोरक तरकारी आ बालसुमनीक भुजिआ बना दियौ। सेवैक खीर सेहो बना दियौ।"

कनियाँ बजली-

"कतीए देशी घी घर-बेद बखने छी। जौं अखनि खरच करि लेब तँ कोनो भी.आइ.पी. गेस्ट एैत तँ केतएसँ आनब।"

"कोन भी.आइ.पी. गेस्ट ?" - जीतू पुछलकनि।

"अहाँक बैंक मैनेजर आ हमर डाक्टर

ভৈযা।" – কনিযাঁ রঁজনী।

"হমবা নেন সভসঁ রঁড়কা ভী.খাও.পী.গেস্ট হমব ভৈযা ছথি। জে মাএ–রাঁবূঁক হ্মগনা রাঁদো হমবা পঢ়রৈঁমে কহিযো ঢৌখাক কমী নৈ হ্খএ দেননি। হমবা পঢ়রৈঁ খাতিব এক রীঘা খেত রেঁচি দেননি। হ্নকে হ্রূপাসঁ খাগ হম রৈঁকমে পী.ও. ছী।"

জীতূক রাঁত স্বনি হমব ছাতী সূপ সন ভঽ গেন।

<u>খর্চ্ছ্ব বজ্জাক</u>– (ধন্বষাধাম ৬ হবিপ্বব)

গামক চৌরঁষ্টিযা পব

সোচনৌ কী হ্মবা গামক বীচমে খখৈন ধূমগজব মচৌনে রিকাসক কাজপব কিছু চর্চা কবী, পঢ়ূঙা রাঁত হ্মব জে কিছু খ্র াস নৈ হ্মদা খাস নগত~ রিচগামমে খখৈন সড়ক কে তোবফাব জোবজাব সংগে ধন্বষা জিন্না ক ভ্রষ্ঠাচাব সেহো কিছু নেতা কিছু কর্মচাবী সভক টিকী পব চর্ঢ়া খবহিষ্টি কএনে খছি। বাশি খছি ১১ কবোড় কে জেকব নীপা পোতা তঽ কী খন জোত সেহো ধীবে ধীবে ভঽ বহন খছি।

জেনা নোকন হ্মগী রঁজাবক ভবম বখনে খছি ওনহী গাম ঘবক রিকাস ভবম চাহে জেনা বুঁম্ভূ যেহে নোকন চানূপ্বর্জা নেতা সর্ঁ বখনে খছি। গামক খর্ঁস্থা রিকাসক রিহাড়া সং উঁধিযাগন খছি। কতৌ টেঁক্টেব ধবধবাউঁনে খছি তঽ কতৌ ডোজ়ব মবমবৌনে খছি, কতৌ স্কাগভেষ্টেব ভবভবাউঁনে খছি জেনা গামক সর্ঁ কাজ খহিরেঁব ঝাগব ঝপৈষ্টি কঽ কৈএষ্টা দেতা/ ককবো কিছু ককবো কিছু ঠহৈত খছি। নোকো ভন হোগ তর্ঁ তঽ সর্ঁ কিছু মাঙান সঽ নঽ কঽ পদাএঁন তক সড়কে পব ছোড়ৈ ছথি। জর্ঁ রিকাস-রাঁত ভেন তঽছিগ্রা তান ভেন বহন কাজ খা হোহন্না কবরেঁ টৌ কবত জে মধেশী কঽ এগো সাংস্কৃতিক কে রূপমে জেনা বহন খছি। জৌ গামমে জাউঁ নিক রাঁত রা রিকাশীক রাঁত পব নোহা নড় াঙা ছিন্ন ঝপষ্টি হ্মর্তা কে রাঁহি সমেষ্টা-সমেষ্টী হেরেঁ টৌ

কবৈ খছি। এহন ক্ষসস্কাবক ৰাঁত হমবা সৰঁহক্ক গামো কে নৈ ছূঠৈ তা ?

গামক সড়ক খখৈন মানূ জে পহনমানক খখড় া বহন খছি জেনা। জৈ পব নৈ খখনৈ ৰঁস, জীপ,মোঠৈবসাগকন, সাগকন খাৰো এহন কিছ সাধন সৰঁ চনহ মে খসমর্থ খছি। ৰিকাশিক যোজনা খপনা সৰঁহক্ক দেশিমে খ্র াস কহ খখাবক ম াসি কে স্বৰুৰাঁতমে শ্বক কৈন জাগ খছি এনা কৈনা ? জে কেনাহ্ কহখাৰো সড়ক ৰৈঁহ জাগ পাগন সংগ হেন জেহনে কে তেহনে বহিএ জাগ কী ? ও ৰাঁত কিছ ঘ্মাগন ফিবাগন জেখা ঐছ কিএ নৈ কার্তিক খগহনমে ৰিকাশি কাজ শ্বক কৈন জাগ খছি ? ৰিকাসক পনান ৰিন পূর্ৰ সূচনা কে সংগে ঠোস ঠংগ সহ ৰিকাস কে কিছো কাজ নৈ হোগত বহ খছি। খগব ধন্বষা জিন্না ৰিকাসক ৰাঁত কবী তহ হৰেক সান সমাজক ঠীনা স্বস্তী সহ ৰঁজেঠৈক পাগ হ্রিজ ভহ জাগ খছি। নোগ কহনক সে সবকাবক ঠীনা স্বস্তী খছি হ্মদা খপনা সৰঁহক জে কমজোবী খছি তেকব কহিযো চর্চা পবিচর্চা নৈ কিএ ?

খংতমে কহহ চাহৰৈঁ জে খপন গাম সমাজ সৰঁহক্ক ৰিকাস কে জিম্মেদাব সৰঁ গোবে ছী, খপনা জগহ সহ সৰঁ গোবে কিছ নৈ কিছ পহন সহযোগ কবৰাঁক জৰুবী খছি। খ্র াস কহ হৃষি প্রধান দেশিমে হৃষক সৰঁ পীডিতো ভহ কহ খপনা খেতকে সিচাও কে নেন কিছ সামাজিক মেনমিনাপ কেনাগ ৰহ্ত খারশ্যক খছি। খগব খপনা সৰঁ কিছো নিক কাজ খপনা গাম ঠাম কে

लेल करबाँ तऽ फाएदा अपने ओव के हेतै, दोसर के नै। तरँ फेर अपनामे एकता किए नै ?

बौएी पवन आछि

बिदेह नेपाल भारतक मैथिली भाषाक क्षेत्र मे एकटा नवँ आधुनिक साझा चौबाहा के काज करै अछि/ भाषा संस्कृतिक प्रचार हेतु एकटा ससक्त गामक दलान वा चाणक्य दोकान हटिया कऽ समाद वाँबी पर जोर दऽ कऽ आधुनिक युगक पैघ काज करै अछि बिदेह नेट पत्रिका।

मिथिलाक भाषा पर पाठक लोकैन के भारनामे ऊँभवल बिचारकेँ समेटि के समाजक समाद वाँबी के सेतु बन अछि। बौएी पवन अछि भाषाक बिकास मे। संगे जेहो किछु किसान लोकैन भाषाक खेतीकरै अछि ऊनको वँजाव अगर नै मिलतै तऽ कोना ऊँनका सर्वहक गुजर गुजराऊँल हेतै, समस्या हेतै,तेँ जे बिदेह ओरा भाषाक किसान सर्वहक पैघ वँजाव दीयाबैत अछि। खास कऽ मिथिलाक गाम घरमे चन्ही पछा मे जे किछु बाजनैतिक घोंघाऊँज सरँ जे दलान कऽ कुर्सी चौकी सोफा पिढ़ा या सऽ छटैत घुसकल कटैत हल्लक-वुल्लक दैत देखाऊँत तेकरो किछु कहियो काल अहि पत्रिका माध्यम सऽ प्रकाशन हेतु किछु पाठक लोकैन के गड्डा जरूर हेतै, सदा येहल लेख रचना पठाबी सेहो निक हेतै की केना ? से प्रकाशन समूह सऽ आग्रह करबैन।

ওনা মিথিনাক বাজনৈতিক চাহে নেপান হ্খএ রা ভাবতক, ওহানে খছি জেনা সৌনা মেশমা সন,কহিযো রঁহ্ত মিঠ নাগত তঽ কহিযো ন্বনগব বহত তঽ কহিযো তেনগব তঽ কহিযো ন্বনছড় ়াগন তঽকহিযো খন্বনে/ তৈ হেত্ত ১৪ কোষ খনগে নোগ বহরাঁক প্রযাসমে রঁহ্ত বহরৈঁঠা কবতা। কিছু কাবণ সরঁ তঽহমবা মিথিনাক সরঁ ক্ষছু কে পছা কবঽ মে খগা খছি জেনা হম মহস্যূস কববৈঁঠা কবৈ ছী ক্ষদা খপনে সরঁকে কেনা মহস্বস হোগতে হৈত সে খপনে কহরৈঁ। (১) খাস ক কিছু নিক কহারঁঽ রাঁনা নেতা নোকৈন খছিউঁনকা সরঁহক খহমতা রিঁশেষ খছি (২) রঁ্ধিযাব হোগতো সমাজক দিনমে নৈ খছি ঞ নেতা নোকৈন(৩)বাজ্য দ্বাবা মূর্খ নোকৈন কে শাসনমে নাউঁন গেন খছি (৪) সমাজক সোন্মাপন খতি খা খক্তোনতা সেহো খতি খছি (৫) মিথিনামে খাস ক খাপসী ভাগচাবা কে কমী কনহ সঽ ভাবন সমাজ (৬) বাজ্যদ্বাবা মিথিনাঞ্চন কে হেয নজব সেহো (৭) শিক্ষা–রেঁরঁহবতামে খতি কমজোবী (৮) খশিক্ষা ভৌ–সাগবমে মিথিনাক ডুরঁন সমাজ/

**रविन्द्र ठाकुर**

<u>रौनहारीके जितिया (बिहनि कथा)</u>

आज आसिन महिना, शुक्ल पक्षक अष्ठमी तिथि । सभ मिथिलानीसभ जितिया पाबनिमे अस्त-व्यस्त । जहानिया गाम सेहो जितियासँ जगमगा' उठल । करिब २ दिन पहिनेसँ जितिया पाबनिके ल'क देखल उत्साह आब सार्थक भ' रहल अछि हुनकासभके । पहिल दिन माछ-मरुवा खेबाक, तकरा बाद नहा-खाएल आ आज निराहार व्रत रहि जितवाहनके पूजा करबाक परम्परा अछि । एहि क्रममे आजए भिन्सरमे उठली परवैत्ताली काकी,तेजनगरवाली भौजी,कारो बुढीया, सबैनावाली दाय आदि-आदि । सभहक घरमे नेना-बुढैका काज-किरचब क' रहल छै । छबा-दशी पहिने हम खेलौ

ত হম খৈরৌ কহিক সৱ ৱচাসৱ ঋাপসমে নডি বহন ছৈ । সৱ মাএ-দাএসৱ ঋপনা-ঋপনা ৱৌরা-ৱ্চীসৱকে চ্বা-দহী খিযা' বহন ছৈ ঋা ভীতবী মোনসঁ সংতুষ্ঠ ভ' বহন ছৈ । হ্মদা সৱৈনেৱানী দাগকে ঠীক ৱগনমে ঘব ছৈ -" ৱেন্হাৱানী কাকীকে । " ওকবা ঘবমে তেহন কিছু উঁসোহ নৈ ছৈ । ও ৱস নিন্সঁ স্বতৱাক প্রযনে কবৈছৈ হ্মদা ঋসম্ভব । ওকবা নিন্ন ভেনৈ কহাঁ ? হোএরো কবতৈ কোনা ? দ্খক পহাড জে খসন ছৈ জিনগীমে । এক ত কনৈত -কনৈত ঋাঁখিক নোব স্বখা' গেন ছনৈ পহিনহি । ঋাওব জে ৱাঁকিযো ছনৈ সে ৱ্ন্নায ঋাগএ স্বখি জেতৈ । সৱগোষ্ঠৈকে ঘবমে ৱৌরা-ৱ্চীসৱকে চ্বা-দহী খাগত দেখি ওকব ছাতি ফা'ষ্টৈ নগনৈএ । ঋাঁখিসঁ নোবক ধাব ৱ' হ নগনৈএ । কাবণ পছিনা সানক জিতিযামে ওকবো ঘবে ঋহিনা ধ্মধাম ভেন বহৈ । হ্মদা দৈরা কসৈযা এহিৱেব সৱ স্বখ ছীন নেনকৈ ।

ৱেনহাৱানী কাকী ঋা ৱ্মৌনা কক্কাকে এক মাত্র স্বপুত্র ছনৈ-"নিক্ক যাদর " হ্মদা দূর্ভাগ্য জ্র ওহো মাবন গেনৈ ঋহি ৱেবক মধেশ ঋান্দাননমে । ঋাৱ কে খৈতৈ ওকব চ্বা-দহী ঋা ককবা নেন কবতী কাকী জিতিযা ? কোনা উঁঠেতৈ ও ঋপন নিন্নসঁ সূতন ৱৌরাকে -" ঋাউঁ ৱাৱূ চ্বা-দহী খাউঁ ? গএহ সোচি-সোচি কাকি হক্কনলোবে কানি বহন ছৈ । ৱস যাদক তৌবপ' সিবমামে বাখন নিক্ককে তস্ৱীব দেখি-দেখি কাকী ছাতি পিটি বহন ছৈ, শ্রবণ নোব ঝহবা' বহন ছৈ ঋা ঋপন নিক্ককে ঋামোক শান্তি নেন জিতমহান্ ভগরানসঁগ কামনা ক' বহন ছৈ ।

<u>ঋাসে ঋাসমে জিনগী (রিহনি কথা)</u>

ठन्डाके मौसम्, ताग पवसँ बातिक समै। चारू दिस धोनमी नागन। कान कान नै स्वस्मय। तेँ सरँ गोटे सरँबे खाना खा कऽ अपना अपना रँडपव ओग्गँठन। सन्ताषरँा सेहो तुवन्त अपना रँडपव ओङगठने बहल कि फोनक घन्टी रँजनै- टिंङ टिंङ्....

सन्ताष समै देखनक बातिक ९ माने नेपानमे १२ रँजे बाति। कि भेनै? अते बाति कऽ मिसकन किए? सन्ताष असमन्जसमे पड़ि गेन। आ कि फेव रँजनै घन्टी- टिंङ टिंङ ।

सन्ताष तुवन्त फोन केनक। फोन उँठनै। कोनो कनिया रँाजन।

- हेन्नो केना छी? ठीक छी ने? हमवा तँ रिँसबिए गेनिऐ, नै?

सन्ताष रँुझि गेन, ओ आबो कियो नै ओकवे अर्धाङ्गिनी रँरिता छनी। ओ रँाजन- हँ, हम तँ ठीके छी। अहाँ कोना छी, कहू ने? नै-नै, कोना रिँसबि जाएरँ। केहन रँात कवै छी, अछा कहू ने की भेन? अते बाति कऽ किए फोन केनौं? एके साँसमे सन्ताषो प्ष्छनक।

रँरिता: अहाँकेँ तँ हमवा पव कनियो मए- स्नेह नै अछि। जँ से बहितै तँ अते दिन भऽ गेन घव नै अरितौं? देखियौ तँ नानगवरँानी दिदिकेँ, तारँत भागजी आरि कऽ फेव चनि गेनथि आ फेवो देहमे एगो रँौआ छै। म्दा हमवा हमवा तँ टैनोमे सरँ कोग ताना मारँैए आ भगरानो हमवे

पव नागन ख्छि। ওগ জনমমে কোন ধাব রিগাব কেনে বহিঐ,সে নৌ জানি।

ঠীক ছৈ ঠীক ছৈ রঁরিঁতা হে স্বন্ব ন –

খারঁ কনিএ ঋণ তিবকেঃ কে রাঁকী বহি গেন ্খছি, রঁ্চিকে রিঁযাহক। খহাঁ ধিবজ ধরু নে, হম জন্দিএ নৌঠৈ খাএরঁ,এহ সরঁ কহিতে বহৈ কি হোন রঁজনৌ ঠৈ ঠৈ,,,

মানে পৈসা সঠি গেনৌ মোরাঁগনকে, হ্মদা রাঁতো প্বা নহিত ভেনৌ ।

তখন সন্তাষ সোচৈএ – "ঃ সান পহিনে সাদীকে ৬ মহিনা রাঁদ জে কতাব খাএন বহে সে গপ। সাচ দেখিতে– দেখিতে কতে দিন ভঃ গেনৌ। তখন সমস্মনা এনৌ জে রঁরিঁতা গর্ভরতী বহৈ সে রঁচা গর্ভেমে নোকসান ভঃ গেনৌ খা তহিযাসঁ নে সন্তাষ ঘরে গেনৌএ খা নে রঁরিঁতাকেঁ দোসব রৌখা ভেনৌএ। খপন কর্জা, ঘবক কর্জা, রঁহিনক রিঁযাহমে নেন গেন কর্জা। এহসরঁকে ঋণ তিরৈত তিরৈত এখন ধবি রিঁত গেনৌ খা নৌ জানি খাবো কতে দিন রিঁত জেতৈ – এম্হব খাসে–খাসমে সন্তাষকে জিনগী খা ওম্হব ওকব ধর্মপনৌ রঁরিঁতাকে জিনগী।



राजदेव मण्डल

जन्म : *१७ मार्च १९६० ई.मे।* ***पिता*** : *स्व. सोनेलाल मण्डल उर्फ सोनाय मण्डल।* ***माता*** : *स्व. फूलवती देवी।* ***पत्नी*** : *श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी।* ***पुत्र*** : *निशान्त मण्डल, सुशान्तकान्त मण्डल, रवि प्रकान्त मण्डल।* ***पुत्री*** : *रश्मि कुमारी।* ***मातृक*** : *रसैना (फुलपरास, मधुबनी)* ***मूलगाम*** : *मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, भाया- निर्मली, जिला- मधुबनी।* ***पिन-*** *847452* ***मोबाइल*** : *9199572920* ***शिक्षा*** : *एम.ए. द्वय (मैथिली, हिन्दी, एल.एल.बी)*

सम्मान : *अम्बरा कविता संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार वर्ष २०१२क मूल पुरस्कार तथा समग्र योगदान लेल वैदेह सम्मान-२०१३ प्राप्त।*

डबक नदी

सबि ताकैं नि न्न नै होए छेलै। आ नि न्न पड़लै तँ सपनामे डूमि गेल। सपनामे देखैत अछि जे-

ऊँचगर जगहपर एकटा नमहर मूसक बि ल अछि । चारूभर मौंकड़ा-मौकड़ी आ बि च्चेमे

রি ন। রি নসঁ কনী হটি কহ মূসক পূবা পনি রাব ঘ্বি যা বহন খছি । সভ ডেবাএন, খাপসী কনহ্ফূসকী কবৈত। ওগমে রেঁটৌ–প্বতোহ্, পোতা–পোতী, কাকা–ভতীজা সভ গোষ্টে। রাঁরাঁক প্রতীষ্টা কহ বহন খছি ।

সংকষ্টকানমে বূঁঠ় বূঁজ্স্থসঁ সনাহ–রি চাব কেনাগ রঁড় জরুবী হোগ ছে। ওহন বূঁঠ় জে খপন কাজ–রেপাবসঁ পনি রাবমে ধাক জমৌনে বষ্ট ছে। ওকবাসঁ কাজক পহি নে পূছি নের্ঁ খাবো খারশ্যক।

কনীওঁ খড়–পাত খড়খড় াগতে ক্ষসক ধি যা–প্বতা ডেবা জাগত খছি । ডেবাএন তঁ সভ খছি কি নতু কি ছ গোষ্টে খপনা ডবকেঁ ঝাঁপনে খছি খা ভুঁ সভ বহি –বহি কহ খপনাসঁ ছোষ্ট ডেবাএন ধি যা–প্বতাকেঁ বপষ্টি দৈত খছি ।

"বৌ, কনৈ ছেঁ কি এ। চ্প বহ। ডেবা নৈ হম ছি যৌ নে।"

"হৌ কাকা জমবাজ খারি জেতে তঁ তোবা সভ পহি নে ভাগি জের্ঁহক। তর্ঁ কী কবরেঁ? তূঁ সভ তঁ নাংগবি ঠাঠ় কহ রঁড় ী বেশমে ভগৈ ছহক, হমবা সভকেঁ তঁ একে ঝপষ্টমে পকড়ি নেতে।"

"ধূ বূঁড়রঁক, রঁড় ডেবর্ঁক ছেঁ, এনএ এতে তর্ঁ নে বৌ।"

বূঁঠ়রাঁ মূস জখৈত–তপৈত খারি বহন খছি । ওকবা দেখি তে মূসক ধি যা–প্বতা সভ চাব্দভবসঁ ঘেবি নেনক–

“মৌ বাঁবাঁ, জ্‌ন্বম ভ২ গেনৈ মৌ, খাবঁ কেতএ বহবঁহক ? ”

“কী ভেনৈ বৌ ? ”

“মৌ, খপনা রি নক ফ্নঁহপব বঁড়কা সাঁপ বৈঁসন ছৈ। চনহ দোসবে ঠাম বহবৈঁ। ঐঠি নাসঁ ভাগহ জন্দী। ”

“বৌ কেতএ জেবঁহী। মনকেঁ থি ব কব বৌখা। সংসাবক কোনো কোণমে ন্বকেবঁহী ডব ওতৌ পাছুসঁ পহুঁচ জেতৌ। কেতৌ খতবাসঁ খানী জগহ নৈ ছৈ। বৌ নূনূ, জীবৈঁনে সংঘর্ষ কবএ পড়তৌ। ”

বূঁঠ় মূসক জেঠকা পোতা ফনকি ক২ বাঁজন–

“হে যৌ বাঁবাঁ, গপ তঁ খৌবঁ হঁকৈ ছী। তঁ জা ক২ দেখি যৌ। একবেঁব সংঘর্ষ কবি যৌ। ”

মূসক দোসব পোতা বাঁজন–

“ঠীকে যৌ বাঁবাঁ, খহাঁ তঁ খি স্সা স্বনবৈঁ ছেনি ঐ জে জ্‌খানীমে জমবাজকেঁ পছাড়া দেনে বহি ঐ, একবেঁব রএহ চি তবসেনা দাঙ–পেঁচ নগাঙ বূ্ঠ় াড়় ীমে। ”

বূ্ঠ়বাঁ মূস মনে–মন সোচনক, ছৌড়় া সভ গবপব চঠ় া দেনক। বঁচবাঁক ঙঁপএ তাকএ পড়ত। বূ্ঝবৈঁত বাঁজন–

“হে বৌ ঙা সভ জবান–জ্‌খানক কাজ ছি ঐ। জবান জঁ নড়তৈ তঁ কি ছু দেব নড় াগমে ঠঠবৌ কবতৈ। হমবা সবঁহক ঙঁমেব খাবঁ

সংঘবষক জোগ ছৈ ? ঠীকসঁ স্বস্নরৌ নে কবৈএ। কী কহরৌ–সভটৌ দ্খ চঠ়ন ব্ঁঠ় াড় ী, নৈন রিঁ ন্ব পংথ ভাবী।”

ব্ঁঠ়রাঁ মূসক জেঠকা পোতাকেঁ নৈ বহন গেন তঁ ফেব রাঁজন–

“হে, মাএ–রাঁব্ূঁ, কাকী–কাকা সরঁহক রি চাব গহএ ভেন ছৈ জে রি ন নগ সভসঁ পহি নে তোবে জাএ পড়তহ। সভ কহৈ ছেনৈ জে ব্ঁঠ়রাঁ খাবঁ রেঁসী জীা র কহ কী কবতৈ। পনি রাবোপব তঁ ভাবে রঁনন ছৈ।”

ব্ঁঠ়রাঁ চৌংক কহ রাঁজন–

“খঁএ, তঁ খাবঁ হম ভাব রঁনি গেনি যৌ বৌ। তেকব মতনবঁ হমব কএন–ধএন পানি মে চনি গেনৈ। খাবৌ তোবীকেঁ ঠীকে কহৈ ছৈ...।”

ব্ূঁঠ় মূসক জেঠকী প্বতোহ্ ঝঁহ দারিঁ কহ রঁজনী–

“একটৌ গপ প্বছৈ ছী রাঁব্ূঁ। খপনা সোস্নহামে রেঁটৌ–পোতাকেঁ মবৈত দেখরঁ সে নীক নাগত ? একবা সভকেঁ তঁ দেশী–দ্নি যাঁ দেখরাঁক খা ভোগরাঁক সমএ ছৈ– খখনী।”

মূসক জেঠকা রেঁটৌ ঝঁহ ফেড় দোসব দি স তকৈত রাঁজন–

“হম তঁ তখৈনে জাগ ছেনি ঐ। দেখরঁ এক ধক্কা। ঐপাব খাকি ওগপাব। কী কবরঁ। সভ গোটৈ টৌঁগ ছানি কহ কানএ নগনৈ খা কহনকৈ– সৌসে পনি রাবক ভাব খহী উঁঠৌনে

ছি ঐ। থহাঁকেঁ কি ছো ভ২ জাএত তঁ
পনি রাবক দেখ–ভান কেনা হেতৈ।”

পোতা চষ্ট দ২ ষ্টপকি উঠন–

“কাকা, কহৈ ছেনৈ জে র্বুঠ়রাঁ তঁ ভবি দি ন রিঁ ছৌনা ধেনে বহৈ ছৈ। ওকবা বহনে কী থা নৈ বহনে কী। থারঁএ দহী, কান নগ পহি নে রএহ জেতৈ।”

গপ স্বনি র্বুঠ়রাঁকেঁ সভসঁ মন ষ্টূষ্টি গেনৈ। জেনা চান্ধ পাজাসঁ হাবন নোক। কেকবোসঁ কোনো মোহ মমতা নৈ। র্বুঝেনৈ থারঁ ঐ দ্নি যাঁসঁ চনি জাগ, সএহ নীক। তৈযো প্রাণক মোহ সভসঁ রঁড়কা মোহ।
দ্নি যাঁসঁ কেতরোঁ রি বাগ ভ২ জাএ। সভসঁ নাতাক ডোবি ষ্টূষ্টি জাএ। তৈযো সাক্ষাত কানক ঝহমে জাগ রঁখত ডব সমেনাগ সোভারি কে ছৈ।
র্বুঠ়রাঁ মূস জোশিমে কি ছ কদম তঁ খৌরঁ নফড়া কহ চনন তেকব রাঁদ টাঁগ নৈ উঠে। খ্চ– খ্চ নগহী নগৈ। জখনি রিঁ নক নি কষ্ট চনি গেনৈ থা সাঁপক থাষ্কৃতি দেখাগ পড়এ নগনৈ, তখনি মন–মূত্রপব সঁ নি যংত্রন হষ্টি গেনৈ।
দড়রঁড় মাবি রিঁ নক নগমে জে নৌঁকড়া বহৈ তগমে ঢূকি গেনৈ। কি ছ দেব তক কোনো তবহক থাএ্রমণ নৈ ভেনৈ, তরঁ ঝাঁক্বিসঁ নাঁগবি া নকানি সাঁপক থাঁখি দি স ডোনোনকৈ। তৈযো কোনো প্রতিক্রি যা নৈ ভেনৈ। র্বুঠ়রাঁকেঁ ভাবী খচবজ ভেনৈ, ওকব পকন দি মাগ দৌগএ নগনৈ।

“কহী ঝগন সাঁপ তঁ নে ছৈ ?”

मनमे प्रश्न उठलै डब कि छ छुटि गेलै। देर-पि तकरें स्वमरैत देह-हाथ समहाबि रौहब नि कनन। पूबा सतर्क भेन। टैक-टैक तकैत साँप दि स रॅठ़न। भागेने तेयाबो खछि । घ्सकैत-घ्सकैत नग जा कऽ देखनक, ठीकसँ देखि ते ठि ठि या कऽ हँसन था हँसैत रौजन-

"बौ तोबी! साँप कहाँ छै ओ तँ साँप खोन छि ऐ। केच्था।"

जोबसँ सोब पाड़नक-

"बौ थारें जो, थार डेबागक कोनो गप नै।"

धि या-प्वता दौग कऽ नग थाएन था प्छनक-

"रौरौ, जीखत छै की ह्मगन मौ?"

र्ऊमरैत र्ठ़रौ रौजन-

"हे बौ, ओ तँ खोन छि ऐ ओकब। ऊं तँ ऐ मे सँ नि कनि गेन छै।"

"नि कनि कऽ केतए गेलै मौ?"

"हेतौ तँ थमी थासे-पासेमे। जँ ह्मगनाक रौदो जीर खोन छोड़ ने तेयाब नै बहै छै, तँ जीखत की कबतै...।"

फेब डब सर्हक मनमे नाचए नगलै।
मूसक जेठका पोता रौजन-

"थच्छा, हटि जा रि नक ह्मँहपब सँ। एते रौत कि ए रनरैं छहक।"

বুঁঢ়ীঁ কহ জল্দীসঁ নৈ হঁটৈন ভেলৈ। সভটা মূস একেৰেব রি ন দি স বেড় দেনক। বুঁঢ়ীঁক দেহ-কপাবপব চঢ় ৈত। ঠেনৈত-ধকি যৰৈত। বুঁঢ়ীঁ কেঁকি খাগত ওঁঘবা কহ খসন। মূসক জেঠকা ৰেটা খপনা পনীক ঝঁহপব দাঁত গড় া দেনক। দ্নূ একেৰেব খেঁখি যাগত রি নমে ঢ্কি গেন।

সবি তাকেঁ সপনামে বুঁ্মেলৈ জে কি যো ওকৰো গানপব কি ছ গড় া দেনক খা জেনা মূস সভ দেহপব দৌগএ নগন।

ওকব দেহ চমকি উঁঠনৈ। সৌঁসে দেহ সি হবি কহ কাঁটৈ-কাঁটৈ ভহ গেনৈ। সপনা ভঁগ ভহ গেনৈ। বুঁ্মেলৈ দেহপব এগো হাথ চনি বহন খছি। খন্হাবমে টৈৰেনক। ঙা হাথ ওকব পতি ক ছেনৈ। ফেব মন পড়নৈ, খপনা ধি যা-প্বতাক ফৌজ। জে নি বঁতব ৰঁঠনে জা বহন ছেনৈ। খনন্ত খারশ্যকতাক সঁগ। কি ছ চনৈত-চনৈত জেনা ঠাঢ় ভহ গেনৈ।

মনমে জে ডবক নদী ৰঁহি ছেনৈ ওগমে খকস্মাত ৰাঁঢ় খারি গেনৈ।

পচৈতী- (নঘ্ পটৈকথা)

প্বকষ পাত্র–

১. ধনেসব
২. বহ্মথা– ননি তাক রাঁপ
৩. চাবি টা গ্রামীণ
৪. সহদের– কি শেনক পি তা
৫. মাস্টব সাহিঁব
৬. পংচ প্রহ্মখ
৭. তীনটা পংচ
৮. জমাদাব
৯. কি শেন
১০. কি ছ পংচ, গ্রামীণ, ধীযা–প্বতা, প্বনি স।)

স্ত্রী পাত্র–

১. ধনেসবক পনৌ
২. গীতা– ধনেসবক রেঁটী
৩. কি শেনক মাএ

पहि न दृश्य–

स्थान– धनेसवक आँगन
समए– दि न
पात्र– धनेसव आ धनेसवक पनी।
(धनेसव आँगनामे प्ररेशे करैत अछि। ओकवा चेहवापव परेशानीक भाव अछि । एनए–ओनए ताकैत पनीसँ पुछैए)

धनेसव– गीताक माए, एक गि नास पानि नाउं। रॅड़ ी जोवसँ पियास नगन अछि ।

गीताक माए– आवॅ हम भात पसेरौं आकि अहाँकें पानि देवॅ ?

धनेसव– किए ? गीता केतए गेन अछि ?

गीताक माए– रॅटी पवीक्षा दगने गेन अछि आ अहाँकें पतो नै अछि।

धनेसव– (भ्रँहपव तामसक भाव) की हेतै पठ़ ि–निखि कऽ कि छो स्वनरौं केनि ऐ ?

गीताक माए– की स्वनरौं ?

धनेसव– अहाँकें बॅुझने नै अछि जे गाममे की भेनै।

गीताक माए– हमवा काज धंधासँ फ्ुवसति भेटैतै तवॅ ने।

धनेसव– बरुआक रॅटी कोनो छौड़ ा संगे उँड़ ि गेनै। फ्ुर्व२२२।

गीताक माए– अँए! (अचवज भवन आँखि सँ पति दि स देखैत अछि।)

धनेसब- हँ... ! बेसी पढ़ि -लिखि क' एहिए सभ होइ छै।
गीताक माए- अहाँ तँ कोनो गपकेँ पकड़ि लइ छी ऐ। ई सभ कहि या नै होइ छेलै। हँ, पहिने कम होइ छेलै आब बेसी होइ छै।
(समए बीति रहल (बीतैत) सन भ' जाइ छै।)

कड़ी दू.
दोसर दृश्य-

समए- दुपहरि या
स्थान- बरहमथाक दुआरि
(बरहमथा माथपर हाथ देने चिन्तामे डूमल अछि। तखने गामक किछु लोक पहुँचैए। लड़कीकेँ भागि गेलाक कारणे अपन-अपन तामस परगट क' रहल अछि।)

ग्रामीण एक- (क्रोधमे) देखि यौ ने, हम सभ परेशान छी आ ई घरमे मुँह घोंसिया क' पड़ल अछि।)
ग्रामीण दू- लाज-शरम तँ होइते नै छै। एनए जाति सरहक नाक कटि गेलै।
ग्रामीण तीन- ध्रु ! गामक लोक तँ थू-थू क' रहल छै।
ग्रामीण चारि - नै पूछू काका, गामक लफंगा

ছৌড়় । সভ কহৈ ছেনৌ, জঁ ছৌড়় ীক খভার ছৌ তঁ চনি জো ওগ ঢ়ৈনপব । হ্নীবীমে মি নি জেতৌ । হমবা তঁ তামসে দেহ রঁহীব ভ২ গেন । কাঢ়ি দেরেঁ সাবকেঁ ।

গ্রামীণ এক– নৌ নৌ, এনামে তঁ জাতি –জাতি মে ঝগড়় রঁঘি জেতৌ । খা দূটৌ জাতি মে ঝগড়় । হেতৌ তঁ তেসব জাতি কেঁ হৈদা হেতে ।

গ্রামীণ তীন– মন তঁ হোগত খছি জে বহ্মখাকেঁ খড়ী–খড়ী ক২ দী ।

গ্রামীণ দূ– পহি নে চন পঁচ সরঁহক পাস ।

গ্রামীণ এক– নৌ, পহি নে খপনা জাতি মে হৈসনা ক২ নেরেঁ ।

গ্রামীণ চাবি – (বহ্মখা তবহ্ন গশাবা করৈত) ওকবা কহী, ছৌড়় ীকেঁ তাকি নারঁতৌ । নৌ তঁ... । (হাথসঁ গশাবা করৈত খছি ।)

কষ্ট ঠ্ঠ.

তেসব দৃশ্য–

সমএ– বাতি

স্থান– সহদেরক ঘব ।

পাত্র– কি শৈন, সহদের, কি শৈনক মাএ, ননি তা ।

(কি শেন খা ননি তা ন্বকাগত খঁগনামে প্ররেশে কবৈত খছি । ওকব পদচাপ স্বনি সহদের নানষ্টৈন নেনে ঘবসঁ রাঁহব নি কনৈত খছি । নানষ্টৈনক গজোত কি শেন খা ননি তাক ঝঁহপব পড়ৈত খছি । সহদের ডবা জাগত খছি । ঝপষ্টি কহ কি শেনকেঁ পকড়ৈত খছি খা ঘবক ভীতব নহ জাগত খছি ।)

সহদের– বক্ষখারেঁষ্টীকেঁ ঐঠাম কিএ নারঁনীমী ? র্ন্নৈ ছীমী, বক্ষখা খা ওকব জাতি সভ কেতে তমসাএন ছৈ । খপন ভনা চাহি ছীমী তঁ একবা খাপস ঘব পহুঁচা দমী নৈ তঁ ঙা সভ জীনাগ মোসকি ন কহ দেতৌ । (কি শেন কি চ্ছৌ নৈ রঁজৈএ ।) তূঁ রঁজৈ কি এ নৈ ছঁহ বৌ ?

কি শেন– কী রঁজবৈঁ ? খহাঁ তঁ দেখি তে ছি ঐ জে হম দ্নূ গোষ্টে এক–দোসবকেঁ কেতে চাহি ছি ঐ ।

সহদের– তোবা চাহনে খা নৈ চাহনেসঁ কী হেতৌ ?

কি শেন– হমবা চাহনেসঁ কী নৈ হেতৈ । হম দ্নূ গোষ্টে রাঁনি গ ছি ঐ । হমবা কানূন দ্বাবা রিঁ খাহ কবৈক খধি কাব ছৈ ।

সহদের– কানূন খপনা জগহপব ছৈ খা পি ছড়ৈন সমাজ খপনা জগহপব খড়ৈন ছৈ । ঐঠাম ঙা সভ নৈ চনতৌ । কহি ছি যৌ, মাবন জেমেঁ ।

কি শেন– পতা নৈ, খহাঁ সভ প্ববনা গপকেঁ কহি যা

তক নাধনে বহরেঁ। কেতেক নোক ক্ষবরান হৈত বহতৈ। ঠীক ছৈ, হমবা ফৈসনাসঁ খহাঁ ডবৈ ছি ঐ তঁ হম জা বহন ছী।

(ননি তাক হাথ পকড়া কি শৈন জেরাঁক নেন তৈযাব হোগত খছি । কি শৈনক মাএ খারি কঽ খাগূসঁ বোকৈত খছি ।)

কি শৈনক মাএ– রৌখা এতে বাতি কেঁ কেতএ জেরহক ? রাঁতকেঁ র্বুঝহক। হমবা সভ এতেক তগতগব নৈ ছী জে সমাজসঁ নড়া সকরঁ।

(কি শৈন ননি তাক সংগে চনি জাগত খছি । ওকবা মাএ চি চি যাগত হননা কবৈত খছি ।)

বৌ রৌখা, কাকি জো বৌ২২২। কী হেতৈ কী নৈ।

(কানএ নগৈত খছি ।)

কষ্ট ঠূ.

চাবি ম দৃশ্য–

সমএ– দি ন

স্থান– গীতাক ঘব।

পাত্র– গীতা, ধনেসব, গীতাক মাএ, এরং কি ছ ধি যা–প্বতা।

(ঘবক রাঁহবী ভাগ। গীতা ক্ষবসীপব রৈঁসন খছি । খাগূমে রৈঁসন কি ছ ধি যা–প্বতা পঠা বহন খছি । দস রর্খক একটৌ ছৌড়া দৌগ কঽ খরৈঁত

খছি খা একটা চি ঠ্ঠী গীতাক হাথমে দৈত খছি । ফেব ও শীঘ্রতাসঁ খাপস ভ২ জাগত খছি । চি ঠ্ঠী খোনি গীতা পঢ়এ নগৈত খছি ।)

গীতা– ওহ ! ননি তা মোসীবঁতমে ফঁসি গেনৈ। একবা মদতি কেনাগ বঁড় জৰুবী ছৈ।
(চি ঠ্ঠীকেঁ ফাড়া ওমীঠাঁ ফেকি দৈত খছি খা বঁগনমে ঠাঢ় সাগকি ন ন২ ক২ রি দা হোগত খছি ।)
খঁগনা দি স ঘূমি) মাএ২২ হম কনীকানক বাঁদ খাপস এরৌ। (সাগকি ন তেজীসঁ বঁঢ়বৈত খছি । ধি যা–প্বতা হননা কবৈত পড় । জাগত খছি ।)

কট ছূ.

पाँचम दृश्य–

समए– दि न।
स्थान– सड़क।
पात्र– गीता।
(गीता परेशान मुद्रामे सागकि नसँ जा रहल अछि। अपन प्रेमक रीतल कथामे डूमल अछि। सड़कपर चलि रहल। निर्देशानुसार...।)

कर्ट ट्टू.
छठम दृश्य–

स्थान– मास्टर साहेबक घर।
पात्र– गीता, मास्टर साहेब।
(सेरा नि वृत्त मास्टर साहेब अपना नीजी पुस्तकानमे पढ़ि रहल छथि।)

गीता– (प्रवेश करैत) परनाम सर।
मास्टर साहेब– (असीरवाद दैत) आबह, बैसह। बहुत दि नक बाद देखलि यौ। कोनो रि शेष गप छै की?
गीता– हम अहाँसँ मदति लगले आएल छी।
मास्टर साहेब– केहेन मदति?
गीता– अहाँ तँ नलि ता आ कि शनक बारेमे सभ कि छु जनि ते हेबैं। एहेन सथि ति मे...।

मास्टैब साहैबँ– सभ कि छ बँुझैत छि ऐ खपन समाज कठ्ाि रादी छै। तेँ सभ दि नसँ कोशि शे बहन खछि जे ओ जाति क बँधन ट्टै। समाजकेँ बँदनैले पूबा जि नगी लगा देनि ऐ। कि न्तु समाज नै बँदलन। खैब, एतेक दि नक पछाति तूँ कमसँ कम ऐ बाँतक लेन ठाठ् तँ भेलेँ। तेबा बँ्तै जेतै संभर हेतौ तेतै मदति जरूब कबबौ।

कष्ट ट्ट्.

सातम दृश्य–

समए– दि न।
स्थान– गीताक घब।
पात्र– गीता आ धनेसब दनू पबानी।
(धनेसब चि ठ्ठीबँना कागतक ट्टकड्ा हाथमे लेने पलंग दि स बँठ्ेत खछि। ओही समैमे गीता साओकि न लेने प्रबेश कबैत खछि। ओकबापब नजबि पड्ाितै धनेसब तमसा जाएत खछि।)

धनेसब– (सक्रोध) गीता! एमहब आ। (कागत देखबैत)
ओ की छि ऐ?
गीता– (च्पचाप ठाठ् खछि।)

धनेसब– तूँ जरॅार कि एनेदण छेँ ?
पनेी– (रिं च्चेमे थारि) थहाँ कि ए हमबा रॅेंटौपब तमसा बहन छि ऐ।
धनेसब– थही एकबा कपाबपब चठ़ा नेने छि ऐ। देखि यौ, ङा ननि ताक चि ङ्गी। (गीता दि स घूमि कऽ)
तोबासँ एहेन थाशा नै छन।
गीता– ऐमे ओकबा सरॅहक कोनो गनती नै छै।
धनेसब– (तामस रॅठ़ि जाणत थछि ।) नगैए, तोबाे दि माग खबाप भऽ गेनौ। थखनि सँ तूँ केतौ नै जा सकै छेँ। चन घबक थन्दब। (हाथ पकड़ि धकि या कऽ घबक थन्दबमे दऽ कऽ रॅाहबसँ केरॅाड़ नगा दैत थछि ।)
पनेी– थहाँ रॅताह जकाँ कि ए कबै छि ऐ।
धनेसब– हमबा एनासँ पहि ने जँ घब खोनरॅे तँ हमबा जीथत नै देखरॅे।
(ऋपटि कऽ मोबा नैत थछि था तेजीसँ रॅाहब नि कनि जाणत थछि ।)
पनेी– थार हम की कबरॅे। (कानए नगैत थछि ।)
कटै ट्टू.

थाठम दृश्य–

समए– दि न।

স্থান– ধনেসবক ঘব।
পাত্র– গীতা খা ধি যা–প্বতা, কি ছ নোক।
(গীতা ঘবক ভীতবীমে ৫হনি –ৰ্নি বহন খছি। হ্মঁহপব ৰেচৈনীক ভাৰ ছৈ। খি ড়কী খোনৈত খছি।)
কি ছ নোক সড়কপব জা বহন খছি। একটা খাঠ ৰৰ্খিক ছৌড়াকেঁ গীতা সোব পাড়ৈত খছি। খা ওকবা গশাবাসঁ কেৰাড় খোনৈনে কহৈত খছি। জে ৰাহবসঁ ৰন্ন খছি। ছৌড়া ৫ৰ্ৰেনপব চঠা কেৰাড় খোনি দৈত খছি।)

কষ্ট ঠ্ব.

নখম দৃশ্য–

সমএ– দি ন।
স্থান– গামক পঁচাযত স্থন।
গামক ৰাহব গাছতব চৰ্তবাপব পঁচ–প্রহ্মখ খা পঁচগণ ৰৈসন খছি। চৰ্তবাক নি চ্চাঁমে গৌখাঁ–ঘৰুখা সভ জমা ভেন খছি। কি ছ হৱক সভ নাঠী নেনে কি শেন খা ননি তাকেঁ ঘেবনে খছি। গ্রামীণ সভ খাপসমে ঘোনফচ্চকা কহ বহন খছি।

পঁচ প্রহ্মখ– সভটা গপ স্বননৌ। রাস্তৰমে, খপনা

गाम आ समाजक लेल ई कि लोना घटना छी अखनो ओहने ভवि गव ড'ड হেরোক চাহী।

পঁচ এক- হঁ... হঁ... অহাঁ ঠীকে কহৈ ছি ঐ। জঁ ঐ তবহেঁ হৈত বহতে তঁ কেকরো গজজতি - পবতি যঠা নৈ বঁচতে।

পঁচ দৃ- নে জাতি ক বঁন্ধন আ নে বঁড় ছোটক খি যান। হমবা সবঁহক জমানামে কহি যো এনা ভেন ছেনৈ।

পঁচ এক- (কি শেন দি স হাথ চমকবৈত) ঔ সভ পঠ়া -নি খি কহ গামক নাওঁ কী কবতে। উঁনটৈ সমাজ আ জাতি কেঁ দাগ নগা দেনকৈ।

(ভীড়সঁ গীতা নি কনৈত অছি। ওকব নজবি অপনা বাঁবূসঁ মি নৈত অছি আ পি তাক নজবি ঝূকি জাগত অছি।)

পঁচ প্রহ্মখ- (ক্রাধমে) একবা কেশ কঠৈা কহ কাবি খ- চ্ন নগা আ গদহাপব বৈঁসা দহী।

পঁচ এক- হে বৌ, কাবি খ-চ্ন এনএ না। নগা, হ্মঁহ-কানমে। (নাবৈঁত অছি।)

পঁচ দৃ- ঐ ছৌড় াকেঁ পীঠপব কোড় া নগবাঁক চাহী।

(ভীড়কেঁ ঠেনৈত গীতা আগূ অবৈঁত অছি।)

পঁচ এক- ঘোড় াক কোড় া কহাঁ ছৌ ? না হমবা হাথমে। (নাবৈঁত অছি।)

গীতা- যৌ পঁচ মবমেসব, কানূনক হি সাবঁসঁ

থহাঁক ফৈসনা গনত থছি । দেশ-দ্নি যাঁ কেতে থাগূ রঁঠ়া গেনৈ থা থহাঁ সভ ওহী প্ববনা গপমে নষ্টপষ্টাএন ছী। পবেম কএন নৈ জাগ ছৈ, ভ২ জাগ ছৈ। থা পবেম জাতি , ধবম নৈ দেখৈ ছৈ। থাৰ্ব তঁ সবকাবো একব মান্যতা দ২ দেনে ছৈ। কানূন ৰ্বনি গেন ছৈ। থহাঁ সভ তঁ কানূনক বখৰ্বাব ছী। কনী সোচি যৌ, থহাঁ সৰ্বহক ফৈসনাসঁ দূষ্টা জি নগী ৰৈবৰ্বাদ ভ২ জেতৈ। থপন বৰ্চস্ব দেখৰৈনে ণ্ড থন্যায ক২ বহন ছি ঐ। দ্নূ ৰ্বানি গ ছৈ, তঁএ বি থাহ কবৰ্বাক নেন স্বতংত্র ছৈ।

পঁচ দূ- ধনেসবজী, থহাঁ থপনা ৰৈষ্টীকেঁ এহনে ৰ্বাত সভ সি খৌনে ছি ঐ ? থহাঁ তঁ সমঝদাব ছী। এতেক নোকক ৰ্বীচমে থহি না ৰ্বজন জাগ ছৈ ? এহেন গপ ৰ্বজৈত নাজ হেৰ্বাক চাহী।

(প্বনি সক গাড়ী ধড়ধড়া ক২ থৰৈত থছি । জমাদাবক সংগ মাস্টব সাহেৰ্ব ডঁতবৈত থছি । সভ তাকএ নগৈত থছি ।)

মাস্টব সাহিৰ্ব- নাজ তঁ থহাঁ সভকেঁ হেৰ্বাক চাহী। ঐ দ্নূকেঁ কানূনী শাদী ভ২ গেন ছৈ। একব পঞ্চাতি ও থহাঁ থতি যাচাব ক২ বহন ছি ঐ।

জমাদাব- (তামসসঁ নোককেঁ হষ্টবৈত) জে পঁচ ছী, সে সভ স্বনি নি থ। ঐ দ্নূকেঁ

रिं थ्महक कानूनी कागत थानामे जमा छै। थ्महाँ सभ थ्मति याचाव कऽ वहन छि ऐ। कानूनक हि सारॅसँ थ्महाँ सभ गि बथ्मताव भऽ जाएॅ।

(जमादावक रॅात स्वनि सभ पंचक माथा न्मूकि जाणत थ्मछि। जमादाव भीड़मे ठ्कि कि शेन थ्मा ननि ताकेँ रॅाहव नि कानैत थ्मछि। कि शेन थ्मा ननि ता मास्टैव साहिरॅक पएव छवैत थ्मछि। पाछूसँ गीता नि कनैत थ्मछि थ्मा मास्टैव साहिरॅकेँ प्रणाम कवैत थ्मछि।)

मास्टैव साहिरॅ– (थ्मसि वर्रााद दैत) गीता, तोवा काजसँ हम रॅछ्ु खुशी छी। (धनेसव दि स ताकि।) यौ धनेसवजी, थ्महाँक रॅेटी समाजक नेन रॅड़का काज केनक। थ्महाँक गौवब हेरॅाक चाही। थ्मसि वर्रााद दि यौ।

(धनेसव गीताकेँ थ्मसि वर्रााद दैत थ्मछि।)

शरॅ्द संख्या– १३,२३

कष्ट छ्रे. समाप्त।

<u>नाज (एकांकी)</u>

पात्र पविचए :: नाज (एकांकी) प्रूकष पात्र–

१. हविचवण– गामक किसान

২. ধিবরা- হবিচবণক রেঁটা

৩. ফুলানন্দ— গামক সম্পন্ন জমীনদাব

৪. ভোগেন্দব- ফুলানন্দক রেঁটা

৫. রিসেখী- গামক একটা মজদূব

৬. শ্যামরাবূঁ- শিক্ষক

স্ত্রী পাত্র-

১. চনপটীরানী- হবিচবণক পত্নী

২. সরিতা- হবিচবণক রেঁটী

(দূ-তীনটা শিক্ষক, চাবিটা গ্রামীণ, ডাক্টব, নর্স, দস-রাবহটা ছাত্র এবং ছাত্রা।)

দৃশ্য- ১

সমএ- দিন।

স্থান- হবিচবণক ঘব।

(চনপটীরানী ভানস-ভাত কঽ রৈসন খছি। হবিচবণ খরৈত খছি।)

চনপটীরানী- কেতএ গেন ছেনিঐ? খেরৈঁ কী নৈ?

হবিচবণ– হঁ... হঁ। কনী হাথ–ঝ্হঁহ ধোগ ছী। ধিবরা স্কুন গেন কী নৈ ?

চনপটীরানী– হঁ। ঙঁ তঁ দসে রঁজে খা–পী কঽ চনি গেন।

হবিচবণ– ঙঁ ছৌড়ী, সরিতিযাকেঁ নৈ দেখৈ ছী।

চনপটীরানী– সরিঁতিযা তঁ গাএ–রঁকবী চবরৈঁনে রাঁধ দিস গেন। কী ভেনৈ সে ?

হবিচবণ– হেতৈ কী। রেঁটী–চাটীকেঁ কনী দারিঁ–চাপি কঽ বাখী। দেখৈ নৈ ছিঐ গামক হরা।

চনপটীরানী– হে, হমব হ্নন–খনদান ওহন নৈ খছি। জাউঁ খহাঁ হাথ ধোনে খাউঁ।

(হবিচবণ চনি পড়ৈত খছি।)

পটাক্ষেপ।

দৃশ্য– ২

স্থান– গামক রিদ্যানয।

সমএ– দিন।

(স্কুনক খাগুমে তীন–চাবি শিক্ষক হ্নবসীপব রৈসন খছি। খাপসী গপ–সপপ কঽ বহন খছি। কিছু ধিযা–প্বতা পঠৈ বহন খছি খা কিছু রাঁহেবী ভাগমে খেন বহন খছি)

শ্যাম রাঁবুঁ– যৌ হীবা রাঁবুঁ, খহাঁ জে খপনা

रॅचियाक रिश्राफक गप करै छेलिऐ, तथमे लेन-देन फाजनन भेल ?

शिक्षक दू- ध्रुव की कफरॅ। ररक माँग श्वनग श्वा ररक रॉपक माँग श्वनग। टका-पैसा लाउं। मोटर साजकिल लाउं, सोना लाउं, लैपटॉप लाउं। की कहूँ, फथियाक सूटू जकाँ डिमान्ड रॅठने जा रहल श्वछि। फे यौ, जे रॅटीक रिश्राफ करैत श्वछि से बूझू जे जमप्वरीसँ घूमि कए श्वरैत श्वछि।

(एकटा छात्र लगमे श्वरैत श्वछि)

छात्र एक- यौ मास्टर साफिर, ञ छोड़ । फमरा गाबि पढ़ै छे।

श्याम रॉरू- तूँ सभ गाबि पढ़ैने एलफी श्वाकि पढ़ैने ? (छौंकी देखरैत) फमरा सभ गप्प करै छी। ऐठामसँ जो जल्दी।

छात्र दू- मास्टर साफिर, पाँच मिनट।

(जोरदार श्वराजमे कफैत रिदा फोजत श्वछि।)

शिक्षक दू- (छौंकी देखरैत) रैस चुपचाप लै तँ देखै छीफी छौंकी।

छात्र दू- लै जाए देरॅ तँ फम श्वफीठाम लगफी कबि देरॅ।

शिक्षक दू- पढ़ै छीफी कथीले। जो ले लघीए करैत बफिफेँ।

(शिक्षक सभ प्रुन: गप-सप्प करए लगै छथि। एकटा फरराफा कान्फपर फर लेले

ओही बाटेसँ जा रहल अछि।)

हबराह- जौं मास्टर साहेब, अहाँ सभ गप्प कटौबनि करैत रहू। बाहरमे छौड़ा सभ मारापीटी करैत अछि। अहिना चलै छै स्कूल जौं... ?

शिक्षक तीन- हे, अहाँ जा कऽ हर जोतू। (क्रोधमे) अहाँ स्कूलक भाँज की बुझबै जौं।

हबराह- हँ हँ छौड़ा सभ तँ भैंसराव बनबै करतै। अहाँ फोकटमे दरमाहा लैत रहू। किदो कहबना तँ अछि नै।

शिक्षक तीन- (छौंकी लऽ कऽ ठाढ़ होइत) कहै छी चल जाउ ऐठामसँ।

हबराह- जौं अहाँ छौंकी देखबै छी। हमरो हाथमे हबराही पेना अछि।

श्यामबाबू- हे जौं की लगल छी। जाउ ऐठामसँ।

हबराह- हमरा थोड़े ओते फुरसत अछि। हम अपना काजकेँ भगवान बुझै छी। अहूँ सभ अपना काजकेँ भगवान बुझियौ। बेमतलबमे अबेर भऽ गेल। जाइ छी।

(हबराहा भनभनाइत चलि जाइत अछि।)

(शिक्षक एकटा बोर्डपर लिखैत अछि संगे

पढ़ैत छथि। सरिता रकबीकेँ एकटा गाछमे रान्हि स्कूलक खिड़कीसँ सभ देखि-सुनि रहल छथि।)

श्यामबाबू- ई सभटा पढ़ने कोन्हि रहत- जबानी सुनबौ।

(शिक्षक सरिताकेँ देखि लैत छथि। जोरसँ सोर पाड़ैत छथि)

एमहर सोझहामे आ। के छनकी मारै छहक ?

(सरिता डेराएल सोझहामे अबैत छथि)

श्यामबाबू- तोहर नाम की छियौ ? केकर बेटी छहक ?

सरिता- हम सरिता छी। हमरा बाबूक नाम श्री हरिचरण छथि।

श्यामबाबू- एठाम कथीले एलही ?

सरिता- यौ मास्टर साहेब। हमरो पढ़ऽ दिअ।

श्यामबाबू- पढ़बेँ, ई तँ नीक गप। अच्छा कह, पाँच जोड़ पाँच केतेक भेलै।

सरिता- दस भेलै मास्टर साहेब।

श्यामबाबू- दिमाग तेज छौ। तोरालेल परियास करबाक चाही। घरपर जेबौ, तोरा बापकेँ समझेबैने। अखनी तूँ जो।

(सरिता चलि दैत छथि। बाँकी छोट-छोट बुन गिरए लगैत छथि। छात्र सभ भागए लगैत छथि।)

একটা ছাত্র– যৌ মাস্টৰ সাহৈব। ৰবখা শুৰু ভঽ গেল। হম ভাগৈ ছী। খহূঁ ভাগূ। (কহৈত পড়ৢ াগত খছি।) ছুট্টী... ছুট্টী...।

পটাক্ষেপ।

দৃশ্য– ३

স্থান– হৰিচৰণক ঘৰ।

(শিক্ষক–এক জে শ্যামৰাবূক নামসঁ জানল জাগত খছি, প্ৰৱেশ কৰৈত খছি)

শ্যামৰাবূ– হৰিচৰণজী ছী যৌ। (জোৰসঁ চিকৰৈত খছি।)

হৰিচৰণ– (খঁগনাসঁ ৰাহৰ নিকলৈত) মাস্টৰ সাহৈব, প্ৰণাম–প্ৰণাম। খাউ বৈসূ। কহূ, হমৰ ছৌড়ৢ া ঠীকসঁ পঠৢ ৈত খছি কিনে?

শ্যামৰাবূ– হঁ হঁ, নীকসঁ পঠৢ ৈত খছি। হম দোসৰো কাজসঁ খাএল ছী।

হৰিচৰণ– কহূ নে, খাওব কী ৰাত ছৈ। (খঁগনা দিস তকৈত জোৰসঁ ৰজৈত খছি।) স্বনৈ ছিঐ সৰিতিযাক মাএ। চাহ ৰনৌনে খাউ। (শ্যামৰাবূ দিস তকৈত) কহূ মাস্টৰ সাহৈব, কী কহৈ ছী?

শ্যামৰাবূ– খহাঁক ৰেটা ৰড্ড সংস্কাৰী খছি। ৰুঝিযোমে তেজ। পঠৢ ত–লিখত তঁ

জরূব নাম বোশন কবত। কাল্হিসঁ অ াকবা স্কূল ভেজব।

হবিচবণ— যৌ মাস্টব সাহৈব, বেঁটী কী পঢ়তৈ। ওকবা ঘব-অঁগনাক কাজসঁ ফুবসত কহাঁ হোএত ছৈ।

শ্যামবাবূ— ফুবসত দেবৈ তবে নে পঢ়তৈ। হে যৌ, ঐ দেশক বেঁটী তঁ দেশসঁ বিদেশ ধবি অপন নাম চমকা বহল অছি।

হবিচবণ— হে যৌ, ওহন পনিরাবো বহ ছৈ তবে নে হোএত ছৈ। হমব তঁ সমাজো তেহেন অছি জে বেঁটীকেঁ ঘবসঁ নিকলৈত দেখি আনী দোখে লগৌত।

শ্যামবাবূ— দোখ লগৌনাসঁ কী হেতৈ। অপন-অপন চবিত্র হোএত ছৈ। লোকক কহনাসঁ নীক বেকতী অধলা ভ জেতৈ। হে যৌ আবে তঁ সবকাব, কানূন সভটা ঐ দিশামে সহযোগ কহ বহল অছি।

হবিচবণ— বেঁটীকেঁ পঢ়বৈমে তঁ জুমবৈ নে কবৈএ ছী আ বেঁটীকেঁ...।

শ্যামবাবূ— দেখিযো, বেঁটা-বেঁটীমে কোনো অন্তব নৈ হোএত ছৈ। গাছ বোপবৈ তবে নে ফল ভেটৈত।

(হবিচবণক স্ত্রী চাহ নেনে আবি জাএত অছি।)

হবিচবণ— অঁগনামে বহৈ ছৈ তঁ মাএযোকেঁ থোড়-বহুত কাজ সহাবি দএ ছৈ। অসগবে তঁ...।

श्यामबाबू- यौ काजो करबै छौ। पढ़ाइ बौकबै। खबचो बैसी नै छै। सबकाबी सहयोग भेटै छै।

चनपटीरानी- बाँत मानि लियौ। माहटैब साहैब अधना नै कहैत छथिन।

हविचवण- ठीके छै। जँ सभ कहै छी तँ स्कूल जेतै।

श्यामबाबू- खुशी भेल। काल्हिसँ समैपब स्कूल भेजू।

(एक-दोसबाकेँ प्रणाम कबैत श्यामबाबू बिदा भऽ जाए छथि।)

पटाक्षेप।

दृश्य- ४

स्थान- स्कूल।

समए- दिन।

(शिक्षक पढ़ा बहल छथि। छात्र आ छात्रा सभ पोथी, कौपी, नेने पाँतिमे बैसल अछि।)

शिक्षक दू- जे सवाल बनबैले देने छियौ, जल्दी बना कऽ ला, जे सभसँ पहिने नाबबेँ से तेजगब कहेतैं आ जे सभसँ पाछू देखेतैं तेकबा छौंकी लगतौं।

सरिता- माहटैब साहैब, हम सवालकेँ हल कऽ नेनौं।

(ठाढ़ भऽ कऽ कौपी देखबैत अछि।)

শিক্ষক দূ– দেখহী বৌ ছৌড়় া সভ। মেহনতক হুন। কিছে দিনমে সরিতিযা সভসঁ আগূ ভ২ গেলৌ। একরে কহৈ ছৈ কাদোমে কমল ফুলেনাগ।

ধিবরা– মাহ্টব সাহিব হমহুঁ হিসাব বনা লেলৌং।

শিক্ষক দূ– বনেনেঁ তঁ কিন্তু পাছূসঁ। তোবা তঁ পহিলে এবাক চাহী, তোহব বহিন তঁ কিছে দিন পহিলেসঁ স্কূল আবএ নগলৌ। তূঁ তঁ কহিযাসঁ ঐঠাম পঢ়় ৈ ছেঁ।

ছাত্র দূ– মাহ্টব সাহিব, ভোগেন্দব হমবা বিঠ্ঠআ কাটি লেলক।

শিক্ষক দূ– হঁ–হঁ বিঠ্ঠআ কাটতৌ। আব কী কবতৌ। একব বাপ হুলানন্দ বাবূ তঁ কহৈত বহৈ ছৈ জে হমবা কিছোক কমী নৈ আছি। বেটোকেঁ চাবি–চাবিটা টৌসন ধবৌনে ছী। আ বেটা তেহেন ভুসকোন ছৈ জে পাছূমে বৈসি কহ বিঠ্ঠআ কটৈ ছৈ।

(হ্মড়় া উঠা কহ দেখৈত)

হে বৌ ভোগেন্দবা, না কৌপী। হিসাব বনৌনেঁ ?

ভোগেন্দব– যৌ মাহ্টব সাহিব, আহাঁক সবান গনত আছি।

শিক্ষক দূ– আঁগ! সবানে গনত আছি।

সবিতা– যৌ মাহ্টব সাহিব, ঞা তঁ ভবি দিন লোকক বাড়় াকি নতাম তোড়় ৈত আছি নৈ তঁ পবতীপব ক্রিকেট খেলৈত বহৈ ছৈ।

एकबा बूते कह्नुँ सरान रनै। तँए सरानेकेँ गनत कहै छै।

शिक्षक दू- ठीके, ई छौड़ा खचरपनी करै छै। बौ ना तँ कौपी। की गनत छै।

भोगेन्दर- हिसाबेँ रनतै तेकर बाद देखाएब। कोनो की हम रनरनी छी जे चट दऽ कूदि कऽ देखा देब।

सरिता- माहटर साहेब, स्वनै छिऐ। हमरा रनरनी कहै छै।

भोगेन्दर- नहै छी रनरनी सन। तँ कहबौ रनरनी। देखही बौ रनरनीकेँ।

शिक्षक दू- (उठि कऽ चारि-पाँच छौंकी भोगेन्दरक पीठ खा बाँहिपर नगबैत) गामोपर बदमासी आ स्कूलोमे खचरपनी। एठाम रिड्‌खा कहैने खबै छँ खाकि पढ़ैने? हमरो सोमहामे नचपनी।

भोगेन्दर- हे माहटर साहेब, हम कहि दइ छी। ई छौड़ा हमरा मारि खुआ बहन खइछि। एकरो ठीक करि देबै। जाइ छी, बाबूकेँ सभटा गप्प कहबै।

शिक्षक दू- (छौंकी उठबैत) जो, पहिने बाबूकेँ कहि आबही।

भोगेन्दर- (रिदा मोड़त खइछि) कहि दइ छी, हम सभकेँ ठीक कऽ देब। हमरो

नाम भोगेन्दवा छिऐ। (चलि दैत अछि)
(घण्टी टुनटुनाएत अछि।)

शिक्षक दू- जाउ जो। टिफिन भऽ गेलौ।
(छात्र सभ बाहर दिस चलि दैत अछि।)

पटाक्षेप।

दृश्य- ३

स्थान- स्कूलक बाहरी भाग।

समए- दिन।

(शिक्षक सभ स्कूलसँ बाहर सड़क दिस जा रहल अछि। हरिचरण अपना बेटी सरिताक संगे दोसर दिससँ अबैत रहैए। ओकरा पाछू एकटा ग्रामीण बिसेखी अछि। सरिताक कपड़ा-लत्ता फाटल अछि।)

हरिचरण- प्रणाम, मास्टर साहैब। (सरिता कानि रहल अछि।)

श्यामबाबू- प्रणाम, हरिचरणजी। सरिता किए कानि रहल अछि? की भेल?

हरिचरण- हम तँ ओही दिन कहने छेलौं जे अपना बेटीकेँ नै पढ़ाएब। अहाँ हमरापर बड्ड जोर देलिऐ। तेकर फल देखि लियौ।

श्यामबाबू- गप कहबै तखनि ने बुझबै। भेलै

की ?

हरिचरण– हेतै की। गरीबक धिया–पुताकेँ पढ़बाक एहेन अधिकार छै। जे देखि लियौ। फुलानन्द बाबूक बेटाक किरदानी। ओ हमरा बेटीकेँ मारैत–मारैत बाटमे खसा देने छेलै।

श्यामबाबू– कोन गपक झगड़ा भेलै ?

हरिचरण– सुनै छी, जे फुलानन्द बाबूक बेटाक बारेमे सरितिया किछो बजल रहै। तही कारणे अहाँ ओकरा मारने रहिऐ।

श्यामबाबू– कम्पनेन केने रहै। सरितियाक बातो साँचे छेलै। ऊ छौड़ा। ठीके बदमाश अछि।

हरिचरण– बदमाशी केनाइ तँ धनिकक धिया–पुताक सिंगार छिऐ।

श्यामबाबू– ई कोन गप भेलै। अधला गपक तँ विरोध हेबाक चाही।

हरिचरण– देखै नै छिऐ। हमर बेटी विरोधमे बजलै तँ केहेन दशा भेलै। मास्टर साहैब, नीक होइतै जे हम अपना बेटीकेँ नै पढ़बितौं एकरा कपड़ा–लत्ताक हालत देखियौ।

(आँखिमे नोर भरि जाइत अछि।)

की हेतै पढ़ा कऽ ?

श्यामबाबू– एहेन गप नै बाजू। नीक काजमे अहिना अड़चन होइ छै। अहाँ अपना

রেঁটীকেঁ পঢ় াউঁ। হম কহৈ ছী- খহাঁক রেঁটী নাম রোশন করত।

হবিচরণ- কেনা পঢ়ৈ রেঁ যৌ মাস্টব সাহৈবঁ?

শ্যামরাঁবূঁ- খহাঁ চিন্তা নৈ করবঁ। হম ফনানন্দ বাঁবূসঁ ভেঁৰ্ট কবৈনে জাএ ছী। চনূ যৌ রিসেখীজী, হমবা সংগে।

রিসেখী- হঁ-হঁ চনূ। (সভ কিযো রিদা ভহ জাএ ছথি।)

পটাক্ষেপ।

দৃশ্য- ৬

স্থান- ফনানন্দক ঘব।

সমএ- দিন।

(ফনানন্দ খপন দবরঁজ্জাপব খসগবে ফবসীপব বৈঁসন ছথি। কনেক হৰ্টি কহ দূটা হথর্ষ্টা, প্ৰবান ফবসী বখন খছি। শিক্ষক শ্যামবাঁবূক সংগ রিসেখী প্ৰবেশ...।

শ্যামরাঁবূঁ- প্ৰণাম যৌ ফনানন্দ বাঁবূ।

ফনানন্দ- (ফ্নড় ী উঁঠা কহ দেখৈত) প্ৰণাম মাস্টব সাহৈবঁ। প্ৰণাম-প্ৰণাম!!

(ব্যংগ্য কবৈত) বাহ! রিসেখীওকেঁ দেখৈ ছী। হে বৌ রিসেখী! কনী ফবসী না

ওমহেবসঁ। মাস্টৈব সাহৈৱঁ ৱৈঁসতা।

(ৱিসেখী হ্নবসী খানি কাতমে ঠাঢ়
ভ২ জাগত খছি।)

শ্যামৱাৱূঁ– হমবা সভ একটা ৱিশৈষ কাজে খাএন ছী।

হ্নলানন্দ– ৱিনা কাবণে টিটমী খোড়ে নগৈ ছৈ। হম বুঁঝৈ ছী। বৌ ৱিসেখিযা হ্নঁহ কিএ তকৈ ছেঁ, ৱাজ নে কী ৱাঁত ছিঐ ?

ৱিসেখী– কী কহৱঁ মা নক। খহাঁক ভোগেন্দব ৱঁদমাশী কেনক। ও হবিচবণক ৱৈটীকেঁ ৱঁড্ড মাবি মাবনখিন।

হ্নলানন্দ– হে বৌ হমব ৱৈটা কোনো ৱঁতাহ ছৈ। জে ৱিনা কাবণে কেকবো পীটৈতৈ। ওকবো ৱৈটী খচবপন্নী কেনে হেতৈ।

শ্যামৱাৱূঁ– ও তঁ সিবিহ্ন ভোগেন্দবক কমপনেন কেনে বহৈ।

ৱিসেখী– ধিযা–প্বতাকেঁ মাঁটি–দৱাঁড়ি দেৱাঁক চাহী। এনামে ধিযা–প্বতা মনৱঁঠ়ে ভ২ জাগত খছি।

হ্নলানন্দ– তূ হমবা সিখৱৈ ছেঁ। ভুঁ স্কূন হমবা জমীনপব ঠাঢ় ছৌ। হম মদতি কেনিযৌ তঁ স্কূন ৱঁননৌ। খাগ হম খপনে ধিযা–প্বতাকেঁ মাবি–পীটি ক২ভগা দেৱৈ ! ! !

শ্যামৱাৱূঁ– ভগৱৈনে কহাঁ কহৈ ছী। কনী সমস্যা–বুঁঝা দেৱৈ তঁ নীক বহতৈ।

ফুলানন্দ– হমর গাম ছী। হম নীক–খধনা বুঁনৈ ছিঐ। হবিচবণা রেঁটৌকেঁ তঁ পঠ্ ।গএ নে সকৈএ খা রেঁটৌকেঁ কেতএসঁ পঠ্ ।এত। ওকবা কাবণে হম ভোগেন্দবকেঁ মাবরৈঁ ? ওহ! রঁড্ ছোটি সে উঁনচাস হাথ! !

রিসেখী– কনী রেঁসী গনতী ভঽ গেনৈ মানিক। মাবৈত–মাবৈত সরিতিযাকেঁ সভটৌ কপড্ ।–নত্তা ফাড্ি দেনে ছৈ।

ফুলানন্দ– ও, খারঁ বুঁঝনৌং। কপড্ ।–নত্তাকেঁ হমবা দাম নগত! সএহ নে বৌ ?

রিসেখী– সে হম কহাঁ কহি ছী।

ফুলানন্দ– তূঁ কী কহি ছেঁ সে হম বুঁনৈ ছিঐ। দুখাবিপব খারি কঽ উঁপবাগ দেনেঁ। মাস্টব সাহিবঁক সোঝহামে কী কহরৌ। যৌ মাস্টব সাহিবঁ হমব গাম ছী। হম সভ গপ বূঁঝি–সমঝি নেরেঁ। খহাঁ সভ ঐঠামসঁ খখনি চনি জাউঁ।

(মাস্টব সাহিবঁক সংগ রিসেখী চনি জাগত খছি।)

পটাক্ষেপ।

দৃশ্য- ৭

স্থান- হবিচবণক ঘব।

(হবিচবণ খপনা সাঠ়ু সংগে দুখাবিপব বৈঁসন খছি। সাঠ়ু বঘুবীব ঘড়ীমে সমএ দেখৈত খছি।)

বঘুবীব- সাঠূ! হম তঁ কিছুকানক বাঁদ চনি জাএবঁ। একটা গপ কহবাঁক ছন।

হবিচবণ- হঁ-হঁ- কহূ কী বাঁত?

বঘুবীব- হমব পনী তঁ বৈমাব বহৈত খছি। খা খখনি গর্ভরতী খছি। খসগবে বৈচাবীকেঁ বঁড় দিক্কত হোগ ছৈ। হম সবকাবী সেরামে ছী। কখনি ঘবপব খাএবঁ তেকব কোনো ঠেকান নৈ। এহেন পবিসথিতিমে...।

হবিচবণ- খহাঁ কী কহএ চাহি ছী?

বঘুবীব- খহাঁ ছোটকী বঁচিযাকেঁ হমবা ঘবপব জাএ দৈতিঐ তঁ পনীকেঁ সহাবা ভঃ জগতৈ।

হবিচবণ- ও তঁ পঠ় ছৈ। (নিসাঁস ছোড়ৈত) ওনা নড়কীকেঁ পঠ় ়ীনাগ বঁড় কঠিন ছে। হ্মদা সবিতাকেঁ পঠ়বঁএ পড়তৈ। কিএ তঁ ও তেজগব ছৈ।

বঘুবীব- তেকব চিন্তা খহাঁ নৈ কব। হমহুঁ সবিসি কবৈ ছী। শহবমে পঠ় ়ীনাগ খসান ছৈ। টাগমপব পঠ়বোঁ কবতৈ খা

খপনা মৌসীকেঁ দেখ–ভানো কবতে। পনৌখাঁ খসগব নৌ বহতে। খনমনা নগন বহতে।

হবিচবণ– কহৈ তঁ ছী ঠীকে কিন্তু খপন ধিযা–প্বতা খপনে নগ ঠীক বহৈ ছৈ। পঢ়় ।গমে খবচো তঁ নগৈ ছৈ।

বঘ্রীব– খচাকি ি চন্তা নৌ কন্ধ সাঢ়় । হমবো কিছোক খভাব নৌ খছি। সরিতা জেতে ধবি পঢ়়তৈ সভ খর্চ–বর্চ হমব।

(হবিচবণক পনৌ চাহ নেনে খরৈঁত খছি। ঠমকি কঃ সভ স্বনি নৌত খছি।)

পনৌ– খারঁ এতেক জিদ্দ কবৈ ছখিন তঁ জাএ দিযৌ সরিতিযাকেঁ। স্বননে নৌ ছিঐ জে মাএ মবে খা মৌসী জিঐ।

(সরিতা ওনএসঁ দৌগন খরৈঁত খছি। হবিচবণ ওকবা বোকৈত খছি।)

হবিচবণ– সরিতা এমহব স্বন! মৌসা সংগে গাম জেরঁহী? (সরিতা কিছু নে রঁজৈত খছি।)

তোহব মৌসা ওহীঠাম স্কূনমে পঢ়় ৈক রৈঁরস্থা নগা দেতৌ।

সরিতা– হঁ জেরৈঁ। মৌসী সংগে বহরৈঁ খা ওহীঠাম পঢ়়রৈঁ।

হবিচবণ– নিখ সাঢ়় । খহাঁক সমস্যাক সমাধান ভঃ গেন।

বঘ্রীব– ঠীক ছৈ। তৈযাব হোউঁ। দূ ঘণ্টা

रॉद गाड़ ासँ चनरॅ।

पटाक्षेप।

दृश्य- +

स्थान- गामक चौक।

(तीन-चािरटा ग्रामीण सड़कक कातमे गाछतर बैसल छिथ। चर्चाबातर गप-सप्प कए रहल छिथ।)

ग्रामीण एक- (गाछ दिस इशारा करैत) देखियौ, ई गाछ केतनेटा भए। देखिते-देखिते केतेक विशाल भए गेलै।

ग्रामीण दू- एकरा रोपनिहार तँ ज्ञ्खान भए गेलै। समए रितैत कोनो देरी लागै छै।

ग्रामीण तीन- हँ यौ, ऐ स्कूलक धिया-पुता सभ एकरा रोपने भए।

ग्रामीण चािर- देखै नै छिऐ, धिरजॉ, सरितिया, भोगेन्दर सभ धिया-पुता खाॅ ज्ञ्खान भए गेलै।

ग्रामीण एक- सभनै छिऐ, सरितिया शहरक स्कूलमे पढ़ि कए रॅड़का डागदरनी भए गेलै। हिरचरणकेँ नाम रोशन कए देनकै।

ग्रामीण चािर- धुर हिरचरण बुते थोड़े लागतै। ई तँ ओकर साठ़ पढ़ लोक खरचा देनकै तरॅ भेलै।

গ্রামীণ তীন– হঁ যৌ ভঁ রঁগনক শহবমে খস্পতান চনরৈত খছি। হমব কাকী তেতেক রীমাব বহ জে নৈ জীরিতৈ। সরিতেক দরাগসঁ রাঁচি গেনৈ।

গ্রামীণ দূ– তরঁ তঁ নামী ডাক্টব খছি যৌ।

গ্রামীণ এক– খচ্ছা গামকেঁ ভুঁচ কেনক।

(ক্নানন্দক রেঁটা ভোগেন্দব দাব্দ পীনে খা খড়্–রঁড়্ রঁজৈত, গাবি পঢ়্ৈত, নড়্খড়্ াগত জা বহন খছি।)

ভোগেন্দব– ওহহহ সা... নে... তেবী... মাঁ... কে... ছোড়্রৌ নৈ। (নড়্খড়্ াগত খছি।)

গ্রামীণ এক– কে ছী যৌ? এনা গাবি পঢ়্ৈত কিএ জাগ ছী?

গ্রামীণ দূ– পিযক্কড়্ ছথি। ভোগেন্দবা। মাএ–রাঁপক নাম রোশন কহ বহন ছথি।

(ভোগেন্দব ভঁনর্টি কহ গ্রামীণ–দূ কেঁ পকড়্ি নৈত খছি।)

ভোগেন্দব– বে সাব তূঁ হমবা গাবি দেনহী। তোবা হম খাগ রাঁপসঁ মোনাকাত কবরাঁ দেরৌ।

(গ্রামীণ তীন দুন্নুকেঁ রীচ হোগত ঝগড়্া কেঁ ছোড়্রৈত খছি।)

গ্রামীণ তীন– এনা নৈ কব্দ। ও কিছু নৈ রঁজনা। খহাঁ রেঁকাবমে ঝগড়্া। নৈ কব্দ। জাউঁ, এঁঠামসঁ।

ভোগেন্দব– ঞ্ৰ তোবা ৰাঁপক জগহ ছিযৌ জে চনি জেৰৌ, ঐঠামসঁ।

(ভোগেন্দব গাবি পঠ়ৈত-পঠ়ৈত ৰোঁকবএ নগৈএ।)

গ্ৰামীণ এক– ৰাঁপ বে ৰাঁপ! ঞ্ৰ তঁ খূন ৰোঁকবৈ ছৈ। কী ভ২ গেনৈ যৌ। সোব পাড়ৃ ফ্নানন্দ ৰাঁবূঁকেঁ। একব হানত ৰঁড় খবাপ ছে! (গ্ৰামীণ চাবি ফ্নানন্দকেঁ সোব পাড়এ জাগত খছি। ভোগেন্দব ৰেঁহোশ ভ২ গিব পড়ৈত খছি।)

গ্ৰামীণ তীন– একবা জন্দী শহবক খস্পতান নৈ ন২ ক২ জেতৈ তঁ পবান ৰাঁচাএৰঁ মোশকিন ভ২ জেতৈ।

গ্ৰামীণ দূ– একবে কহৈ ছৈ– কৰ্মকি ফন। দুনূ ৰাঁপ্বত সমাজমে ফ্কবম কবৈত বহৈ ছেনৈ। ডবসঁ কে ৰঁজতৈ? সভ কিচ্ছো ৰঁবৰাঁদ ক২ দেনকৈ। খাগ দেখ নিযৌ ফন।

গ্ৰামীণ এক– একবে ডবসঁ হবিচবণ খপনা ৰেঁটাকেঁ সাঠৃ সংগে ভেজি শহবমে পঠৈনকৈ। খা শহবক নামী-গিবামী ডাক্টৰ ৰঁনন ছৈ।

(ফ্নানন্দ খবৈঁ ছথি। খপনা ৰেঁটাক হানত দেখিতে খাঁখিসঁ নোব খসএ নগৈ ছ্নহি।)

ফ্নানন্দ– খাৰঁ কোন উঁপায কববৈঁ হৌ। কেনা পবান ৰাঁচতৈ হৌ। হৌ ভায, হমবা

একেটা রেঁটা খছি মৌ।

গ্রামীণ এক– যৌ রুনানন্দ রাঁবূ, একবা শিহবক খস্পতান নঽ কঽ চনূ। খপনে গামক রঁঠ়ি যাঁ ডাকটব খছি ওগঠাম।

রুনানন্দ রাঁবূ– কে মৌ ?

গ্রামীণ এক– হবিচবণ রেঁটী ডা. সরিতা রুমাবী। কেহেন–কেহেন রীমাবীকেঁ ঠীক কঽ দেনকৈ। একবো ঠীক কবতৈ।

রুনানন্দ রাঁবূ– (রুড় ী মূকা নৈত খছি।) মৌ স্বননে তঁ ছিঐ, রুদা কী কহবৈঁ ? খপনে কএন কিবদানী। সোমগামে কেনা জেবৈঁ ?

গ্রামীণ তীন– খহাঁ কোনো চিন্তা নৈ করু। নঽ কঽ চনূ। হমহুঁ সভ সংগে চনৈ ছী। সভ ঠীক ভঽ জেতৈ। একবা উঁঠাউ। চনৈ চনূ।

(ভোগেন্দবকেঁ উঁঠারঁএ নগৈত খছি।)

পটাক্ষেপ।

দৃশ্য– ৯

স্থান– খস্পতানক রঁবামদা।

(তীন–চাবিটা গ্রামীণ রেঁচপব রৈঁসন খছি। ডাকটব সরিতা খা নর্স সভ এমহবসঁ ওহমব খারি বহন খছি খা জা বহন খছি। রুনানন্দ ভীতবসঁ নিকনৈত

খছি।)

গ্রামীণ এক- যৌ ফনানন্দ বাবূ! আবঁ তঁ অপনা সভকেঁ গাম দিস চনবাক চাহী। কোনো তরহেঁ ভোগেন্দরক জান বাঁচি গেন।

ফনানন্দ- কোনো তরহেঁ কী কহৈ ছী। ওা কহিযৌ জে ডাক্টরনী সরিতাক হ্রপাসঁ পবান বাঁচি গেন।

গ্রামীণ দূ- সে তঁ ঠীকে। মুদা ডাগদরনীকঁ ধৈনবাদ দেনিঐ ?

ফনানন্দ- কী কহবঁ যৌ। হমরা তঁ সরিতাক সোমহোমে জাগত নাজ হোগত খছি। হমর বেটা ওকরা মারি-পীট কঽ সকুনসঁ ভগা দেনে বহৈ। তগ কারণে ওকরা গামসঁ বাহর বহি পঢ়এ পড়নৈ। রএহ আগ হমরা বেটাক জান বাঁচৌনকৈ। ওগ দিন মাস্টর সাহৈবঁ হমরা উপরাগ দেবাক নেন গেন বহৈ। মুদা হমহুঁ কিছো নৈ কেনিঐ। উনটে মাস্টর সাহৈবকেঁ ডপটি কঽ ভগা দেনিঐ। হম দুষ্ট নোক ছী। (আঁখিমে নোর আবি জাগত খছি।)

গ্রামীণ দূ- দুখিত নৈ হোউ। অপসোচ নৈ করু।

ফনানন্দ- অপসোচ তঁ হেবাক চাহী। গনতীকেঁ স্বীকার করবাক চাহী। অহুঁ স্বনি নিঅ-সমাজক ধিযা-পুতা পঢ়ৈত-নিখৈত হো রা কোনো নীক কাজ করৈত হো তঁ ওকরা সভকেঁ সহযোগ করবাক চাহী। কোনো

স্বখাবথক গপ নৈ সোচরাঁক চাহী।

গ্রামীণ এক– সরিতা হেবিচবণক রেঁটী নৈ খছি। সমূচা সমাজক রেঁটী খছি। খপনা গামক ডংকা শহেবমে রঁজা বহন খছি।

(সরিতাক সংগে ভোগেন্দব প্ররেশ করৈত খছি। ভোগেন্দব হ্নড়ৃ ী নূকৌনে খছি।)

সরিতা– খারঁ খহোঁসভ গাম জা সকৈ ছী। (ভোগেন্দব দিস ওশাবা করৈত)

হেনকব সথিতি গাম জেরাঁক যোগয ভঽ গেন ছনহি। রীমাবী কন্ট্রোনমে খছি। হ্নদা ঠীক সমৈপব দরাগ দৈত বহেরঁনি খা প্বন: খারি কঽ চেক কবরা নেরঁ।

গ্রামীণ এক– (হাথ জোড়ৃৈত) খহাঁ ধন্য ছী– সরিতাজী।

সরিতা– (গ্রামীণকেঁ প্রণাম করৈত) খহাঁ সভ হমবা খসীবরাদ দিখ জে খহিনা হম খহাঁ সরঁহক সেরা করৈত বহী।

গ্রামীণ এক– চনৈ চনূ।

(হ্নানানন্দ সংগে গ্রামীণ সভ হাথ জোড়ৃনে রিদা ভঽ জাগত খছি। ভোগেন্দব ঠাঢ়ৃে বহি জাগত খছি। সরিতা নগমে খরৈঁত খছি।)

সরিতা– হমব দেন কিবিযা–সপ্পত মন বাখরঁ। কহিযো দারু–শবারঁ নৈ পীখরঁ খা নে হাথসঁ ছুখরঁ। দরাগ টৈমপব

खाएत बरेँ।

(भोगेन्द्रक आँखि नोरा जाएत अछि। नोराएल आँखिकेँ पोछए लगैत अछि।)

भोगेन्द्र– *हम अपराधी छी। हमरा गलतीकेँ माफ कऽ दिअ।*

(हाथ जोड़ि‍ विदा भऽ जाएत अछि।)

पटाक्षेप।

डॉ॰ शशिधर कुमर "विदेह",
ग्राम – कचौल, पो॰ – मकरमपुर, जिला – दरभंगा,
पिन – ८४७२३४

गामक शकल सूरत – पोथी समीक्षा

"गामक जिनगीक" बाद "गामक शकल सूरत" .... नहि .... नहि .... तकर बाद नहि, तकर बहुते बाद । पर जे हो, गामक परिवेश आ गामक विषय वस्तु तँऽ अछिए। बदलल की ? .... बदलल बस कथावस्तु वा सम्पूर्ण कथा । हमरासभक लेल जे एक गोट मामूली दैनन्दिनक घटना थिक से एक गोट स्वरिक्त लेखकक लेल कथा – पिहानीक विषय वस्तु । आ सएह योग्यता श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लेखनी मे छन्हि । लेखकक एहि लघुकथा संग्रहमे हुनिका द्वारा रचित ८ गोट लघुकथा संकलित अछि । कथासभक परिवेश

पोथीक नामानुरूपेँ अधिकांश ग्रामीण अछि एवं पठनीयताक लाभ हेतैक पाठकवर्गक लोक उठाए सकैत छथि । परिवेश ग्रामीण रहितहुँ कथावस्तु अधिकांश सम-सामयिक अछि । जे पाठकवृन्द गाममे रहैत छथि हुनिका लेल तँ ई रोचक गप्प एवं जे बाहरो रहैत छथि आ कहियो-कहियो गाम अबैत छथि हुनिका सेहो एहि कथाक प्रसंगसभसँ जिनगीमे जरूर साक्षात्कार भेल होएतन्हि ।

साहित्यमे

कएक बेर जिनगीक कटु सत्यक चित्रण प्रत्यक्ष व्यक्ति विशेषकेँ पात्र बना कऽ नहि कएल जाइत अछि अपितु ओहि पात्र विशेषसँ मिलैत जुलैत प्रतिबना आन सांसारिक वस्तुसभकेँ पात्र बना कहाउत जाइत अछि । साहित्यमे ई विधा बहुत पुरान अछि एवं मैथिलीमे एहि विधाक उपयोग अल्प भेल अछि । एहि विधाक उपयोगसँ कथाक विषय वस्तुक रोचकता बढ़ैत अछि, कथामे उल्लिखित कोनहु अप्रिय प्रसंग कोनहु विशेष पाठकवर्ग दिशि प्रक्षेपित नहि बुझाइत अछि आ कथा सुग्राह्य भऽ जाइत अछि । एतबहि नहि तखनि कथाक विषय वस्तु हर-पाठकवर्गकेँ अपनासँ मिलैत-जुलैत बुझना पड़ैत छन्हि आ तेँ प्रति सर्वपाठकग्राह्य बनि जाइत अछि । वास्तवमे एहि तरहक प्रस्तुति एकटा कला थिक जे हर लेखकमे नहि विकसित होइछ । वास्तवमे, एहि तरहक प्रस्तुति अप्पन सभ बात पाठकक सोझाँ राखि जाइत अछि आ साहित्यक मर्यादा सेहो बनल रहैत अछि । एहने प्रयोग एहि बेर पाठकलोकनिकेँ श्री मल्लिकजीक कलमसँ देखबाक लेल भेँटैत; यथा :-

বীশেসঁ বীশিযা ঠক্খা ৰাঁজন –

“কেতৰোঁ ৰাঁনব জকাঁ নাঁগবি পৈকৈ কঽ বহি গেনেঁ, কমাঁ একো ধূব জমীন–জথো খপনো পএব বোপৈনে ভেনৌ; জহিনা ৰাঁপ–দাদা গ্বড়্কৈত এনৌ তহিনা গ্বড়্কৈত বহমেঁ।” ....

হেব ঠোব পৈপৈৰৈঁত ভুসৰা ৰাঁজন –

“কহ্ৰু ! জে খাগূক জনমন ঠক্খা ছী, তখন কেহেন কড়্ খাএন ৰাঁত ছৈ জে জহিনা সভ দিন গ্বড়্কৈত বহনেঁ তহিনা গ্বড়্কৈত বহমেঁ । হমবা জেকাঁ কী তোবা খাসন ৰাঁসন হেতৌ ?”

ছঠি পাৰনিক ডানাক ৰিভিন্ন ৰঁস্তু সভকেঁ পাত্ৰ ৰঁনা ৰঁহ্ত স্বন্নব ৰূপসঁ খপনা সমাজক এহি তবহক প্ৰসংগকেঁ চিত্ৰিত কএন গেন খছি । এহি তবহক প্ৰসংগ কোনহ্ বস্তুৰিশেষক নঞি খপিত্ত খপনা সমাজক হবেক বস্তুক পিহানী খছি । কিছু–কিছু এহনে প্ৰযোগ সংস্কৃত সাহিত্যক পঞ্চতন্ত্ৰ, হিতোপদেশ, সিংহাসন ৰত্তিসী খা ৰৈতান পচীসী খাদিমে দেখৰাঁমে খাৰৈছ; হনাঁকি ঞা ৰাঁত খনগ জে ও সভ প্ৰাযঃ ৰাঁন সাহিত্যক ৰূপমে নীখন গেন খছি ।

কতহ্ শিৰচৰণ ৰাঁৰূ খা কানীচৰণ ৰাঁৰূক যাবী ভেটৈত তঁঽ কতহ্ ভৈযাবী হক ফৰিছৰৈঁত সদানন কক্কাক সংগ মনমোহী কাকী ভেটৈতীহ । কহ্খন পোতাক সংগ জিতিযা পাৰনিক কৰৈত জীতনান ৰাঁৰাঁ ভেটৈতাহ তঁঽ কহ্খন খপন প্ৰৰঞ্চিত পব পশ্চাতাপ কৰৈত দেৰানন্দ ভেটৈতাহ । খা ৰীচমে

চঠকাব নৈত ভেঠতাহ সোনে কক্কা আ স্বচিতনান।

"কাকা, অহাঁ তে তেহেন শিকাবী জেকাঁ রঁজনৌঁ জে রঁ্গনে নে পেনৌঁ জে খিখিবক রৌনী দেনিঐ কি হবিণক থাকি কোগনীক। .... রৌথা, তোহ্রুঁ কোনো থান থোড়ে ছহ, সমাজেক নে রেঁঠা-ভাতিজ ছিথ। জেহনে অপন রেঁঠা-ভাতিজ তেহনে সমাজক। রঁতীস দাঁতক তবমে পড়ন ছী, তঁএ জী-জাঁতি কহ বখনে ছী। হ্নড়ী স্বঠি যা কহ রঁজৈমে উঁকড়ু হোগএ। হ্নদা ঐঠাম দুগএ গোবে ছহ তঁএ জী খোনি রাঁজরঁ।"

"গাম" – গ্রা শঙ্ক প্রায়ঃ হব নহর পীঠাক নেন একঠা স্বন্নব, শান্ত আ উন্মুক্ত সনি স্থান হোগত অছি। হব প্ববান পীঠা কিছু রঁযস রীতনাক রাঁত কহৈত অছি জে গাম আরঁ ওহেন নঞি বহন (জেহেন ও অপন নেনপনমে দেখনে বহথি) – গাম রঁদনি গেন অছি। এহি তবহক রিচাবভিন্নতাক প্রক্রিয়া নিবন্তব চনৈত বহন অছি আ চনৈত বহত; পব গাম তঁহ গামহি থিক। অন্তব অছি মাত্র দৃষ্ঠিকোণ (VIEW / ANGLE OF PERCEPTION / REFERENCE FRAME) কেব – গাম তঁহ গামহি অছি। কতরঁহ্ রঁদনৈত অছি তগযো হব পীঠারিশেষক নেন গাম ও শহবক অন্তব ওতরঁহি অছি, হব ব্যক্তিরিশেষক নেনপন ও রযস্ক রা বৃদ্ধারস্থাক নেন গামক পবিবর্তন ওতরঁহি অছি আ সে নিযত (CONSTANT) অছি। নেনা – ভুঠকাক আঁখিমে রঁসন গামক চিত্র অন্বভরক আগিমে পাকন রযস্কক চিত্রসঁ প্রায়ঃ হমেশা ভিন্ন হোগত অছি আ

হোগত বহত । ওকব ৰঁনাওন চিত্রকেঁ ৰ্‌ঝৰাঁক হেত্তু ওকবহি ভারক সংসাবমে ড্‌ম্মী কাষ্টএ পড়ত । তেঁ মাস্ষ্টব সাহেবঁ (মাস্সৗর – শ্যামনান) গিবধবক ৰঁনাওন সমাজক চিত্রকেঁ নঞি ৰ্‌ঝি পাৰৈত ছথি জখনিকি স্বৰঁননান ওকব খর্থ পঠ়া নৈত ছথি । মাস্ষ্টব সাহেবঁ খন্বভরক চশ্মাসঁ চিত্রকেঁ দেখৰাঁক প্রযনে কবৈত ছথি। জখনিকি স্বৰঁননান পোতাক (গিবধবক) ৰাঁনস্বভারমে উঁতবি চিত্রক খর্থ পঠ়ৈত ছথি –

"মাস্সৗর, কেহেন ৰঁঠ়া যাঁ তঁ সচিত্র ৰঁননে খছি তখনি রিচিত্র কী ? .... পহাড়, সহ্মদ্র ধবতী, পতান, খকাস সভ মিনি জে একটা রিবাট সূবত ৰঁনন খছি, সএহ তঁহ খছি।

.... ওা সহ্মদ্র ভেন, সমাজৰূপী সহ্মদ্র । খথাহ জনবাশিক ভন্ডাব । খদ্রুমে জ্‌খাব উঁঠৈ ছৈ, জে হবা, পানিকেঁ খপনা পেটসঁ নিকানি খকাসমে পসাৰৈএ, ৰঁখকি সংগ তূফানো উঁঠৈ ছৈ । জগসঁ পানি, হবাসঁ ধবতী ভবি জাগ ছৈ ।

খাগূক ৰাঁত স্বৰঁননানক পেটমে বহনি খাকি রিচমে শ্যামনান ৰাঁৰূ দোসব বেখা পব খাঁগ্বব বখৈত ৰঁজনাহ – ওা ?

ওা ধাব ভেন । জেকবা জীরনো–ধাব কহি সকৈ ছিঐ, জে ৰৈদিক ধাব কহিযো কন–কন হঁসৈত, প্ররাহিত হোগ ছন ও খাৰঁ মবণ ভহ গেন । তঁএ পানিক জগহ ৰাঁন্ব উঁড়ৈএ ।"

হব প্রসংগক প্রায়ঃ একাধিক পক্ষ হোগত অছি । কিছু পক্ষ নীকো হোগত অছি আ কিছু অধলাহো । কএক বের কোনহ্ প্রসংগক পক্ষ ব্যক্তিগত দৃষ্টিকোণ পর নির্ভর করৈত অছি । জে জাহি দৃষ্টিকোণসঁ দেখৈত অছি ওহি প্রসংগক পক্ষ ওকরা ওহনে নীক বা অধলাহ বুঝি পড়ৈত অছি । প্রবাস একটা এহনে প্রসংগ থিক । প্রবাস জে কি এক সময মিথিলাসঁ বাহের জাযব আ তকর বাদ দেশেসঁ বাহের জাযব কের অর্থ বধৈত অছি । প্রবাসকেঁ — খাস কঽ বিদেশমে বহবাক প্রবাসকেঁ — মৈথিলী সাহিত্য হমেশা কিছু তেসরে দৃষ্টি বা অধলাহে দৃষ্টিসঁ দেখলক অছি । কিছু এহনে সনি পিহানীক মজা ভেটৈত মনোহর কক্কা আ শ্যামক সংগ । হাঁ, সংগমে সজমনি, কদীমা, বামঝিমনী, ঝিমনী, করৈন, পানক, ঠবিযা — আ পতা নহি আওব কী-কী ভেটৈত । আ অন্তমে ভেটৈত

"বৌআ, কিযো কেতৌ বহহ ঝদা বহত এহী দুনিযাঁমে । জীবঁ-মবরঁ, অহী দূ শব্দমে দুনিযাঁ বচন-বসন অছি । .... বড়ি বঢ়ি যাঁ বড়ি টা দুনিযাঁ ছৈ, জেতএ মন ফূড়ঽ তেতএ বহঽ । ধাবক বীচ জিনগী অছি তঁএ ওতএ জা অপন ধাবাকেঁ নহি তোড়বঁ ।

বিদেশক চর্চ ভেল তঁঽ কিছু বাত হমবহ্ যাদ আযল। গঙ্গলৈন্ডক অংগ্রেজীমে (BRITISH ENGLISH) ঝংগের, বংগ, বাঘ, শ্বেত বক্ত কোশিকা / কণ, বক্ত বর্ণকি আদিক লেল প্রযুক্ত শব্দক স্পেলিঙ্গ ক্রমশঃ MONGHYER, COLOUR, TIGRE,

LEUCOCYTE, HAEMOGLOBIN নিখন জাগত ছন আ এখনহ্ নীখন জাগত অছি । ও সামান্য অংগ্রেজী জননিহাবক নেন কিছু কঠিনাহ ছন । তেঁ অমেবিকামে একব সবনীকবণক প্রযাস কএন গেন । উঁপবোক্ত শব্দসভ অমেবিকী অংগ্রেজীমে (AMERICAN / SAM ENGLISH) ক্রমশঃ – MUNGER, COLOR, TIGER, LEUKOCYTE , HEMOGLOBIN – এহি প্রকাবেঁ নিখন জাএ নাগন । এহি প্রকাবক স্পেনিঙ্গ সর্বসামান্য দ্বাবা কএন জা বহন উঁচাবণক বেঁস নজদীক ছন আ তেঁ স্বগ্রাহ্য সেহো । প্রাবম্ভমে অংগ্রেজীক বিদ্বান ও সাহিত্যকাব নোকনিক দিশিসঁ এহি প্রযাসকেঁ অতিশয দমণ ও অসহযোগক সামনা কবএ পড়ন । এহি নহব নেখনশৈনীকেঁ সাহিত্যিক মঞ্চসভ পব হীন দৃষ্টিসঁ দেখন জাগত ছন । বাঁদমে দুহু দেশক সবকাব দিশিসঁ সমন্বযক প্রযাস ভেন । অংগ্রেজী সাহিত্যক বিভিন্ন দেশক নিযামক সংস্থাসভক বৈঁসাব ভেন আ নির্ণয নেন গেন জে দুহু প্রকাবক অংগ্রেজী নেখনশৈনীক মান্যতা এক সমান হোযত তথা কোনহ্ নেখন শৈনীকেঁ আগাঁসঁ উঁকৃষ্ট বা কনিষ্ঠ নঞি কহন জাএত । আগ দুহু নেখনশৈনী সমান রূপেঁ প্রতিষ্ঠিত অছি । দুহু নেখন-পদ্ধতি প্রচননমে অছি পব নহব শৈনী উঁচাবণানুরূপ হোযবাঁক কাবণ বেঁসী সুবিধাজনক অছি আ গ্রেট-ব্রিটেন ছাড়ি বিশ্ব ভবিমে তেজীসঁ পসবি চুকন অছি ।

ক্ষুদ্র বিষযসঁ থোড়েকে কাত-কবওট ভাগি গেনহুঁ, পব ভোতিআএন নঞি ছী, কাত-কবওট ভাগবঁ সর্বথা আবশ্যক বুঝনা গেন তেঁ গেনহুঁ । জহিনা অংগ্রেজীক নহব শৈনী ছন তহিনা

मैथिलीमे सेहो नहर शैली स्वतः आयल जे उँचावर्णान्वरूप लीखल जाएत अछि। मैथिलीक एहि नहर शैलीक अन्तस्थ्रात रहिते बास नहर बचनाकाव (अपन बचनाकानक अनुसाब नहर नञि कि रयसक अनुसाब) आवैत छथि, जाहिमे श्री जगदीश प्रसाद मल्डलजी सेहो छथि । अंग्रेजी जेकाँ मैथिलीमे कोनहु उँच सर्वमान्य नियामक संस्था नञि होयवाँक कावणेँ रहिधा एहि नहर लेखन–शैलीकेँ हीन बुझल जाएत अछि जे कि हमबा नजविमे सर्वथा अनस्थ्रान थिक । मैथिली साहित्यिक संस्थासभकेँ अंग्रेजी जेकाँ समन्वयामेक बस्ता अपनेवाँक चाही । मैथिलीक प्राचीन आ नहर दुनू शैली समान रूपेँ प्रतिष्ठित होयवाँक चाही । बचनाक स्तवीयता देखल जयवाँक चाही नञि कि शैलीक आधाव पव स्तव गठ़न जयवाँक चाही ।

मैथिलीक नहर लेखन पद्धति – जे कि उँचावर्णान्वरूप अछि – ताहिमे बचना होयवाँक कावणेँ सामान्य वा सामान्यसँ कम मैथिलि जनलिहावकेँ सेहो कोनहु अस्विरिधा नञि होयतन्हि । "गामक शिकल सूवत" नामक एहि लघुकथा संग्रहमे सर्वत्र सवल मैथिलीक प्रयोग भेल अछि । यथा – पारनि केव वँदना पारैन, पएने केव वँदना पेने, कहलन्हि केव वँदना कहलैन, वँजनहुँ केव स्थान पव वँजनौं,ह्लोनवँ केव स्थान पव खोनवँ, जिउँवँ केव स्थान पव जीवँ, आदि । एहि प्रकावेँ ई लघुकथा संग्रह अपन कथारस्तु आ लेखनशैलीक वँल पव पाठकलोकनिक बीच अपन उँकृष्ठ स्थान स्वनिश्चित कवत से आशा , वाँकी पाठकवृन्द पढ़नाक वाँदे वँतओताह ।

पोथीक नाँव – गामक शेकन सूरत, लेखक – श्री जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रकाशक – श्रीमति प्रेमकला देवी, ग्राम व पो०– बेरमा (मधुबनी)

प्राप्ति स्थान – पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, वार्ड नं०–06, निर्मली (सुपौल), पिन कोड – 847452

दाम (सजिल्द / साधारण संस्करण) – भारतीय रू० 151/ मात्र

<u>राजदेव मण्डल 'रमण'</u>
<u>दियादी डाह</u>

कातिक मासक साँझक समए। जाड़क पहिल दस्तक, पछुवा हवाक संग भेल। बटैसर बाबू खस्सी बथिक उमेरक खन्धरक हिसाबसँ बजला–

"तौं चलितर, धूर लगलह ? "

चलितर हँ–में–हँ मिलबैत बाजल–

"मालिक ! धूर तँ भरिगर भेल। "

चलितरक बाजक रीतास लगिते मनिकाणन एकटा स्टीलक थाड़ीमे दू गिलास चाह धमकली–

"लिअ, चाह पीबू। "

मालिक चाहक गिलास दिस ठेकनबैत हाथो बढ़बैथि आ गामवालीक स्लोँ दिस तकबो करथि। भेलनि जे जेना किछु खबलौती खबहेतनि।

अनदाजेँ बुदबुदेलथि-

"पहिने असथिर मने चाह पीबू तखनि किछु गप्प हेतै।"

चाहक चुस्की लैत चनितर दिस ताकि बजला-

"चाह पीबू नञि चनितर।"

"अच्छा, पहिने हाथ-पएर धोअ दिअ गोँत-गोबर लागल अछि।"

कहि चनितर दुआरिपर राखल कल दिस बढ़लन। ओमहर परनी दिस तकैत बौएलाल हाथक इशारा दैत पुछलखिन-

"बौआ की कहै छेँ छी?"

"की कहब कनियाँकेँ अपन जान नै छन्हि। कहाँ-कहाँ कऽ अपनो निमरजाना करै छथि। नहि जानि कखनि की हेतै। तेहेन-तेहेन आबि धानो रोपाएत अछि जे अगहन तँ आ बि कातिके भऽ जाएत। अगहनसँ पहिने धनकट्टी भऽ जाएत, मनसम्हे उपजबो करैए! गबीब की गबीब रहल! तकरो ने किछो एकटा खढ़ जे हटेबैने भेटैए...!"

बौएलाल बाबू बिच्चेमे टोकलखिन-

"की कहैक अछि से खोलि कऽ कहू।"

"की कहब बाति-बिबाति जँ किछु भऽ जेतै तँ की करब? अन्हबाठाढ़ कि होसपिटलमे स्वबै छैऐ नीक ब्यबस्था छै।"

কহি মনিকাগন খাঁগন দিস রিদা ভেনী।

"চনিতব, কনী নগমে খারঁহ। সন্তোসো হএত খা কিছু রিচাবরোঁ কবরঁ। নগ খারঁহ।"

চনিতব নগ খারি চৌকীক পৌখা নগ রৈঁসি গেন। রঁগৈসব রাঁরূঁ রঁজনা–

"খঁগ নৌ চনিতব, কোন জ্গ ভ২ গেন জে রিঁনা ডাগডবসঁ দেখৌনে কোনো কাজে নে চনত! চাবিষ্টা রেঁষ্টা খা চাবিষ্টা রেঁষ্টী ভগরান দেননি। কহিযো পাগযো ভবিক দরাগ খানৈক জব্দবত নৈ পড়ন। পন্হনিকেঁ রঁজারেঁ ছেনৌঁ খা ও খসগরে খারি ঘবরাবীকেঁ নিশ্চিন্ত ক২ দগ ছন। সিদহা, পবসৌতীক ফেড়ন সাড়ী খা ছঠিহাব দিন একটা নর ন্বখাঁ দেনে পন্হনীসঁ ফাবকতিযো ভ২ জাগ ছেনৌঁ। পন্হনীখাঁ খপন কাজ রূঁঝি মহিনা ভবি নেনাক তেন নগরৈঁসঁ দূধ পিখরৈঁমে নগন বহ ছনি...।"

রঁগৈসব রাঁরূঁ রাঁজৈত–রঁজৈত রিঁচ্চেমে জেনা ঠমৈক গেনা। ঠমকন দেখি চনিতব রূঁঝনক জে মা নক রঁড় চিন্তিত ছথি, রাঁজন–

"সে কী কবরেঁ মা নক। জেনা–জেনা জ্গ রঁদদনৈ তেহনে–তেহনে পবিযোজনি এনৈ। খারঁক সমৈমে কী দেরতো–গোসাঁগকেঁ সতিযা বহন। মখনা ভাযকেঁ দেখিযৌ, রেচাবাকেঁ জৌখাঁ রেঁষ্টা ভগরান দেনখিন। জনমক সমএ খহিনা ধড়ফড়ী ভেন। গামেক ডাকষ্টব রঁজৌন গেন হ্দা কোনো জোগাড়ে নে ধবৈ, খাকি

তখনে কিম্হরৌসঁ খবাম খট্খটরৈত র্ধনর্রার্রা পহুঁচনা, পবসৌতীক স্কহ্বর্ স্বনিতে একটা জড় ী দেনখিন খা নগনে দসে–পাঁচ মিনটেমে হ্নিত ভ২ গেন।"

"সে তঁ হ্মবা খপনে রিতন খছি। জেঠ রৌখাক জন্ম–সমএ কি কম হ্নিদবতি ভেন। মনিকাগনকেঁ নূক–ঝূক সাঁঝ পড় ি তে দবদ উঁখড় ননি, তহিযা তোহ্ব হ্মবা এঁঠাম খাএর্–জাএর্ কম বহ্২, হ্থিযা–ঝটক চনি বহ্ন ছেনৈ। মোতীনান, বামকিস্বন, গঠ র্রা তীনূ গোটে মেঘডম্রব, হ্বাঠী খা চোবর্ত্তী নেনে মধ্ ডাক্টবকেঁ র্জা খননক। ডাক্টব উঁপচাবমে নগি গেনা। ভোবর্রামে মিহ্বিক জনম ভেন।"

র্টেসেব র্জরৌ কবথি খা খাঁগনো দিস দেখি–দেখি সাকাঁচো বহ্থি। তখনে মনিকাগন ডেঠ ি যাপব খারি টেকনকনি–

"গপক খ ্ড নৈ নাগন? খখনি তক হ্দকিতে ছী। কোনো হ্নিকিবো খছি কী নৈ সে নগ জান্হি।"

"কী হানত ছন্হি কনিযাঁক? র্রাজূ নে ডাক্টব মংগার্রী খাকি হোসপিটন চনর্রাক ওবিযৌন কবী।"

"হ্ম কী র্রাজর্। হ্ম সভ তঁ মৌগী–মেহ্বি ছী জেনা জে নীক হোগ সে কব্ধ, খনেবে খনঠাএর্ ঠীক নৈ।"

কহৈত মনিকাগন খাঁগন গেনী।

"चनितव, कनी जा ऋटै दे बाजिन्दवकेँ रॅजा नारॅह। कहियन्व मानिक रॅजौननि, संगे नागन ॐता।"

चनितवकेँ कहि रॅष्टैसेव ऑाँगनक स्वठ़ि-पता र्ब्नैने हराग चप्पन सोम्नवारॅए नगना। चप्पन पहिविते छना ऑाकि ऑाँगनसँ फ्हवरॅ ऑा पल्हनिक रॉजरॅ संगे र्ब्मि पड़ननि, ऑकानए नगना। तखने पल्हनि रॉजनि—

"हमव शिक जेते छन ओ केनौं, ऑारॅ ऑसपतानक ऑाशि कब्द, ऑा घवोक गोसाँग-पितवक ऑवदास नगाउँ।"

"डीहराव रॉरॉ की जाय! हे कनिया महवानी ओम्नवी छोड़ाउँ। जोड़ा भवि छागवोक रॅनि चठ़ाएरॅ।"

मनिकागन मने-मन जेते देरता जेहेन सहजोव स्मृतिक हिसारे करॅ्ना कवैत रॅजनी। तारॅए चनितव संग नागन बाजिन्दव हथरॅत्ती रॉड़ैत पहुँचन।

"रॅड़का कका, रॅड़का काका। की रॉत रॉजू?"

"बाजिन्दव...। मिहिव गाम नै एना नगैए कोनो ऑपनासँ पैघ हाकिमक ऑठ़ैतीमे रॉम्नन छथि। नोकवी तँ नोकवीए छी किने। 'पवऑधिन सपनो स्वऑ नाही' तुनसीदास कोनो रॅजा थोड़े कहने छथिन।"

"कनियाँके मास प्रवन छुन्हि आ अखन दबदसँ हान रहैान छुन्हि। रजौनियरः की कवक चाही, डाक्टैब रजारी आकि होसपिटैन चन ?"

"काका, थमद्धुँ पहिने चाबिचक्का रौनेबो गाममे गाममे सोमन भागकेँ छुन्हि रजा नग छी, होसपिटैने गेनाग नीक बहत। ओगठाम सभ गन्तजामो-रात आ पबसौतीने टैको-पैसा भेटैत।"

बाजिन्दब रजरौ कबए आ फौनो मिनरए। नगैए फौन मिन गेनै राजन-

"हँ! कनी फ्तीमे।"

फोन काटि कः प्वन: राजन-

"काका, चीस-रौस दबरजजापब आनैक उँपक्रम करू।"

मानिक-रटैसेब नगने सूबे रजना-

"गामरानी आर फ्बती करू, ओछा न-रिछौन, ओढ़ना, खेरा-खर्चा, सिदहा-समब सभ किछु ठेकना निअ। गाड़ ी आरि गेन।"

रटैसेब घबरानी दिस रजथि आ मनिकागन रटैसेबक दिस चाहक जिज्ञासा केनथिन। मुदा रटैसेब मना करैत रजना-

"नै। आर जे किछु करब से अन्धरेमे करब।"

एमहब बाजिन्दब आ चनितब चीज-रौसकेँ

সম্হাবি-সম্হাবি খাঁগনসঁ খানি-খানি দবৱঁজ্জাপব বখৈত বহএ। গাড়ী ও খারি গেন। সভ সমান ডিককীমে নদনক।

তারেঁ পল্হনি খা পড়ামিনী সভ কনিযাঁকেঁ গাড়ীক সীটপব খানি স্বতৌননি। ডবেরব সেহো খপন সীট পকড়ি গাড়ী খোনকক। সিটী ৱঁজা সভকেঁ তৈযাব হেৱাঁক খাগ্রহ কেনক। মৌগী-মবদ, ঢেবৱাঁ-ধিযা-প্বতাক ভীড় দূ দিস ভেন। ৱীচসঁ গাড়ী নিকনৈত বহৈ কি খগিনা সীটসঁ ৱঁটৈসেব ঝড়ী নিকানি গশাবাসঁ চনিতবকেঁ কিছু কহনখিন। চনিতবো ৱঁসাহা জকাঁ ঝড়ী হিনা মানিককেঁ ভবোস দৈত ৱাঁজন-

"জয দাহো-নছন ৱাঁৱাঁ, জয বকতমানা মাএ, জনিহ২ তূঁ মানিককেঁ মদতি কবিহন্ব...।"

ৱাঁনেবো গৰ্দা উঁড়ৱৈঁত খন্ধবাঠাঠীক খসপতানক ডগব পকড়নক। ৱেঁনেবোক ছোড়ন ধ্খাঁ খা গৰ্দাকি মিনন গন্ধ ধিযা-প্বতাক সংগ ঢেবৱোঁকেঁ সোহনগব নগনৈ।

ৱিহান ভনে খন্হবগবে সাগকিন ঘণ্টী টৈনটৈনৱৈঁত দ্খাবে-দ্খাব খখৱাঁব ৱঁটৈত গামক চৌকপব পহুঁচন। চাহো পীৱৈঁত খা চৌক পবহক দোকানদাবকেঁ খখৱাঁবো দৈত খখৱাঁবৱঁনা।

একটা খখৱাঁব নহ২ প্রমোদ মধ্ৱঁনীৱঁনা পন্না উঁনটৌনক।

"প্রখন্ড ৱিকাস পদাধিকাবী মিহিব ক্ষমাব গিবফতাব।"

কনী উঁচে স্ববমে পঠনক। ওা খৱঁব পঠি একৱেঁব খপন চকিত খাঁখিএ দোকানপব ৱৈঁসন সভ দিস

তকৈত ৰাঁজন।

চাহ পীনিহাব সৰ্হক জিজ্ঞাসা ৰঠ‍ৃন। সৰ্হক নজবি প্রমোদক চেহবাক ৰনৈত-ৰিগড়‍ৈত খাগ্রতি জকাঁ ৰনএ-ৰিগড়‍ৃএ নগন। চাহৰনা শ্রীপ্রসাদক ধিযান খখনি ধবি সবপোখ খখৰাবক খৰবি দিস নৈ বহনি। ও তঁ সদিখন এতৰেঁ বামা-খণ্ঠৈনৰা দেখৈত খপন জিনগী কাণ্ঠএ। গহিকীও বংগ-ৰিবংগক খছি। কে কেমহব জাএত চাহ পীৰ-পীৰ তেকব কোনো ঠীক নৈ তঁএ তগপব ধিযান দেনে। হ্মদা তৈযো ঠেকনৰৈত শ্রীপ্রসাদ প্বছনক-

"কী ভেনৈ পবমোদ? কনী ৰ্‌ঝা কঽ কছু। এনা কিএ খখৰাব দেখিতে সভ গ্বম ভঽ গেনৌং।"

"শ্রীপ্রসাদ ভায, ৰণ্ঠৈসেব ৰাৰ্বূক ৰেণ্ঠা মিহিব পকড়‍ৃ া গেনা।"

"খাহিবেৰা! মৌ প্রমোদ, মানিকক দিনে গড়‍ৃবড়‍ৃ াএন ছনহি। এমহব প্বতোহ্‌কেঁ নঽ দ্‌নূ পবানী হোসপিণ্ঠনমে ছথি খা ওমহব ৰেণ্ঠা জহন গেননি। গোসা‍ৈ ংযা সভণ্ঠা ফেড়‍ৃ াএ-পব-ফেড়‍ৃ া দণ ছনহি।"

নমহব সাঁস ছোড়‍ৈত শ্রীপ্রসাদ ৰাঁজন। ৰিচ্‌চেমে একগোবে ণ্ঠিপনক-

"জমানাক খিযান নৈ কবৰ তঁ খহিনা নে হএত। খাৰ কি কোনো ও জমানা বহন কংগবেশিযাক খাৰ তঁ ৰদনন।"



राजेन्द्र कुमार प्रधान, जन्म- 03/09/1970, पिता स्व. वैद्यनाथ प्रधान, गाम- मधुकियारा, पोस्ट अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी। पिन- 847401 योग्यता- एम.ए. पटना विश्वविद्यालय, पटनाशोधवृत्त (पीएच.डी) ल.ना.मि.वि.वि. दरभंगा, अन्य योग्यता- संगीत गायनमे जेड.एन. कम्युनिकेशन द्वारा आयोजित ऑल बिहार फिल्म संगीत प्रतियोगितामे प्रथम स्थान प्राप्त। विसर्च स्कॉलर (**शोध प्रज्ञ**), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय- दरभंगा।

जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमे समकालीन चेतना

मैथिली साहित्यक पहिल तथा एकमात्र पुरस्कार "टैगोर साहित्य पुरस्कार"सँ पुरस्कृत एवं विदेह भाषा सम्मानसँ सम्मानित श्री जगदीश प्रसाद मण्डल अपना सबहक बीच एक एहन साहित्यकार छथि, जिनकर किछुए दिनमे बहुत रास रचना मैथिली साहित्याकाशमे अपन स्थान बना लेलक अछि। प्राय: २००४ ईस्वीक बाद लिखब शुरू केलनि आ प्रकाशित हुअए लगलनि २००७ ईस्वीक पछातिसँ।

২০০৯ ঈস্বীমে আঠ গোট পোথী প্রকাশিত ভেননি। যথা– গামক জিনগী– কথা সংগ্রহ, তরেগন– রিহনি কথা সংগ্রহ, মিথিনাক রেঁটী– নাটক তথা পাঁচ গোট উঁপন্যাস যথা– মৌনাগন গাছক ফূন, উঁত্থান–পতন, জিনগীক জীত, জীরন–মরণ আ জীরন–সংঘর্ষ। পছাতি ২০১২–সঁ–২০১৪ ঈস্বীক মধ্য রিভিন্ন রিধাক দূ দর্জনসঁ উঁপর পোথী প্রকাশিমে এননি। যথা– অষ্টাগিনী, সতভৈঁযা পোখরি, উঁনরা চাউঁর, ভকমোড়, পতঝার, অপ্পন–রীবান, রাঁন গোপান, বটনী খড়, নজরি জী, গামক শিকন–সূবত, শংভুদাস আ রঁজন্তা–রঁঝন্তা, কথা সংগ্রহ। সতমাএ, কন্যাণী, সমঝৌতা, তামক তমঘৈল, রীরাংগনা, কম্প্রামাগজ, ঝমেনিযা রিআহ, বনোকব ডকৈত তথা স্বযংবব– নাটক এরং একাংকী। গংদ্রধনুষী অকাস, বাতি–দিন, সতৱেঁধ, গীতাংজনি, তীন জেঠ এগাবহম মাঘ, সবিতা আ স্বখাএন পোখবি ক জাগঠ গীত এরং করিতা সংগ্রহ। তহিনা, সধবা–রিধবা, ভাদরক আঠ অন্হাব, নৌ ধাড়ৈএ তথা রঁড়কী রঁহিন নামক উঁপন্যাস সেহো নিখিননি অছি। আ অনরবত নিখিও বহন ছথি।

হমবা এতএ মণ্ডনজী কেব "সাহিত্যমে সমকানীন রোঁধ" রিষযক আনেখ প্রস্তুত কবর অছি। এহি প্রসংগ হম ঈ ছুটি নেমএ চাহি ছী জে শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডনক তঁ অনেক উঁপন্যাস ছনহি, কথা ছনহি, নাটক ছনহি, করিতা ছনহি, গীত ছনহি...। ক্ষদা হম "রঁড়কী রঁহিন" উঁপন্যাসপব কেন্দ্রিত এহি আনেখক গতিশ্রী কবর। অর্থাত্ "জগদীশ প্রসাদ মণ্ডনক রঁড়কী রঁহিন উঁপন্যাসমে সমকানীন চেতনা",পব ঈ আনেখ অপনে সরহক সোঝা প্রস্তুত কএ বহন ছী।

সমকানীন শর্দক রেঁস র্যাপক অর্থ–পবিধি অছি।

एहि शब्दक प्रयोग प्राय: तात्कालिक वर्तमान लेल कएल जाइत अछि। एक तरहक निश्चित समए-खण्डक लेल सेहो कएल जाइत अछि। से विवेचनो आ चलितो परिप्रेक्ष्यमे। विवेचनाहुसँ तात्पर्य ई जे विद्यापतिक समकालीन फलनाँ...। आ एकटा भेल आगू माने ऐखुका वर्तमान। ऐखनको-वर्तमानमे सभ चीज लेल एकटा नजरिसँ समकालीक निर्णए करब कठिनाहे जकाँ अछि। बहुत एहनो व्यवहार अछि जे ज्योतिरीश्वरकालीन मिथिलामे व्याप्त छल जे आइयो यथावते अछि, आनो परिप्रेक्ष्यमे हेर-बदल भेल अछि। तैयो जे से...।

नारी-समस्यापर, नारी विमर्श करैत एक ऐहन उपन्यासक नाओं बड़की बहिन छी जे हमरा सभकेँ एकर कथा वस्तु चौंका दइए, आत्म मन्थन हेतु विवश कऽ दइए, संगे ऐहन चेतनाक्षणक अछि जे कोनो काज करैसँ पूर्व आकि कोनो काजक लेल डेग उठेबैसँ पहिने ओइ काजक दिशापर सोचैले प्रेरित करैए। कारण एहि भाग-दौड़क आपा-धापीमे हम सभ बहुत ऐहन परिप्रेक्ष्यकेँ बुझिओ ने पबै छी जे एकर कारण की हेतै...। हनाँकी तइ पाछू कएटा ऐहन बिन्दु अछि जइ दिससँ हम सभ आँइ घुमा लेने छी। उपन्यासकार हमरा सभ लेल किछु एहने परिप्रेक्ष्यकेँ बड़की बहिन उपन्यासक माध्यमसँ सुलोचना बहिनक जिनगीक कथा परोसलनि अछि, जे समकालीक अछि, यथार्थ अछि आ समकालीन समस्यासँ एवं बोधसँ ओतप्रोत अछि।

मिथिलाक एकटा ऐहन गाम जे कोसी आ कमलाक बीचक अछि, जइ गामक सुलोचना बहिन छथि। माने ओ गाम सुलोचना बहिनक जन्मभूमि छियनि। चौदह

रॅर्थिक थरस्थामे स्वनोचनाक रिं थाह भेननि । जहि ना पि ताक साधावण कि सान पवि राव बहनि तेहने पवि रावमे रिं थाहो भेननि । समाजमे थखन धवि धन नहि ऋने-मूनक महत थधि क बहन ऋदा नेनो-देन तँ चनि ते छन। नीक-मूनक कन्याक माँगो रॅसी। ओना थपन-पि ताक ऋन-मूनसँ दरॅ पवि रावमे रिं थाह भेननि , ऋदा कोनो हि नके टौ नै, समाजमे कतेको गोष्ठेँ भेन छनहि था होगतो थछि । तँए कोनो प्रश्न नहि उँठन। सवस्रतीक थागमनसँ नैहवक पवि रावक रि चावमे कि छ नरीनता तँ थारिए गेन छन। रिं थाहक तीन सान पछाति स्वनोचनाक द्‌वागमन भेन, सास्वव गेनी। रॅवथ-पाँचे-छरॅक पछाति सास्ववसँ स्वनाचनाकेँ भगा देनकनि । भगरॅक कावण बई जे सन्तान नहि भेननि । ओना ने कहि यो डाक्टवी जाँच करौन गेननि था ने सन्तान नहि हेरॅाक दोष कि नकामे छनहि , से फड़्ा छौन गेन। सास्ववसँ भगौन स्वनोचनाकेँ पवि राव सहर्ष थपना नेननि । थपनरॅक कावण भेन जे पवि रावक सभ थपने गन्ती मानि नेननि जे ओहन ऋन-मूनमे डेगे नहि उँठरॅक चाही। ओहनसँ ऋहोँ नगाएरॅ नीक नहि हएत।

सवस्रतीक रूप पवि रावमे रॅदनन। संस्कृत पद्धति क जगह नर-नर पद्धति शुरू भेन। संस्कृतोक पद्धति बहरॅ कएन। ऋदा शि क्षाकेँ र्‌नि यादी पद्धति सँ उँछानि देनक। स्वनोचनाक पीठ पवहक जेठ भाय ज्‌गेसव मैथ्रि क पास तऋवि या स्कूनसँ केननि । गवीरी-रॅकावीसँ त्रस्त पवि राव। पछाति ज्‌गेसव टीचर्स ट्रेनिंग केननि । नोथव

प्रागमवीक शि क्षक रॅनना। तहिना ज्‍गेसवसँ छोटै म्‍नेसव सेहो मैट्रि क पास तम्‍वि या स्‍कूनसँ केननि। आगू पठ ़ क गव नगरॅए नगना, खगड़ा याक गव नगननि । ओग ठामक संस्‍थ्त रि ष्‍यानयमे रि ष्‍यार्थीकेँ भोजन-डेवाक व्‍यवस्‍था सेहो कवैए। कोसी कौनेज सेहो छगहे। साग़ंसक रि ष्‍यार्थी म्‍नेसव, नीक जकाँ रीएस-सी केननि तैरीच रि आहो अहसवक पवि रावमे भव गेननि । द्वागमनक कि छुए-दि न पछाति म्‍नेसवक पनी साधना नैहव एनी। अखन धवि पि ता-श्यामानन्‍द रॅटी-जमाएक घव-द्‍आव नहि देखने। रीएस-सी नड ़का, शेवीवसँ स्‍वस्‍थ स्‍वनि रॅटीक रि आह केननि । नैहव आपसीक पछाति साधना जखन सास्‍ववक सभ हान माए-पि ताकेँ कहननि तखन पि ताक मनमे जमाएक नोकवीक प्रश्न उँठननि । म्‍नेसवकेँ बाँचीए रॅजा नेननि । आ संगी-साथीक सहयोग नइ म्‍नेसवकेँ स्‍कूनमे नौकवी धवा देनखिन। म्‍नेसवो नोकवी कवए नगना। समए रिँतैत गेन।

ज्‍गेसव आठ कट्ठा जमीन कीनैक रि चाव केननि । ओना द्‍नू पवानीक रि चाव जे म्‍नेसवकेँ एहि जमीनमे संग नहि कवरॅ। म्‍दा पवि रावक तँ रि धि रत्‍ रॅंटरॅवा भेन नहि छेननि। तखन जेठ भाय छि ऐ, छोटै भाएक हि स्‍सा तँ भगए जाएत। तँए कहि देरॅ जरूवी अछि । जँ अदहा खर्च देत तँ ठीके छै नहि तँ अपन दोख तँ मेटा नेरॅ। रि चावक पाछू पेटमे बहनि जे म्‍नेसवक आमदनी ततरॅ छै जे कह्‍ना कइ पवि राव चनै छै। तखन रूपैआ केतए सँ आनत ? तैरीच मनमे ग्‍गहो होनहि

জে গ্বপ-চ্প দাম ভেন খছি কি নে, ৰঁঠ় া দেৰেঁ। কহ্না (খধি যা দাম ভেনে) চাবি কণ্ঠা তেফৈসনা (তীন ফসি না) খেতক ভৈনূ কম নহি ভেন। পোস্টৈ কাডিক মাধ্যমসঁ জ্গেসব হ্মনেসবকেঁ জনতৰ দেনখি ন। স্কূনক দবমাহা তঁ জ্গেসবকেঁ বূঁঝন, হ্মদা ঠ্ৰৈশনক খামদনী তঁ নহি বূঁঝন। তৈসংগ পনৌও (হ্মনেসবক) রি চাব দেনখি ন জে নৈহবমে দেন ৰবতন-ৰাসন জে খছি ও খনেবে ঘবমে ঠনমনাগত বহৈএ, ওকবা ৰেঁচি কহ জমীন কীনি নি খ। খখন ধবি দ্নূ ভাঁগ - জ্গেসব-হ্মনেসবক- ৰীচ পহি ন্বকে সম্বন্ধ জীরি ত ছন। হ্মনেসব খদহা খর্চ দগনে তৈযাব ভহ গেনা।

খপন কমজোব পাশা দেখি জ্গেসব দ্নূ পবানী রি চাব কেননি জে নীক হএত ৰেঁচৌ নাওঁসঁ জমীন নি খৌন জাএ। হ্মনেসবকেঁ কোনো পতা নহি। খন্বকূন রি চাব বূঁঝি জ্গেসব খপনা ৰেঁচৌক নাওঁসঁ খাঠো কণ্ঠা জমীন নি খা নেননি। জে পছাতি দ্নূ ভাঁগক ৰীচ রি সফোঠৈক ভহ গেন।

গামক সমস্যা (ভাগক ব্যবহাব) দ্নূ পবানী হ্মনেসবক সম্বন্ধমে খাধি ৰনৈত গেন। দ্নূ ভাঁগক ভি নৌজী স্বনোচনাকেঁ সেহো ৰাঁটি দেনকনি।

হ্মদা ঝগড় াক ৰীখা পহি নে স্বনোচনা ৰহি ন বোপি নেননি। বোপি ঞা নেননি জে খেত কীননা পছাতি হ্মনেসব দি সসঁ ৰাজি দেনখিন জে জখন দ্নূ ভাঁগ খদহা-খদহা খর্চ দহ খেত কীননক তখন হি স্সা কি এ নে হেতে? খপনা হ্মহেঁ রেচাবী এক ভাঁগসঁ দূব খা দোসবসঁ নগ চনি এনী!

দ্নূ ভাঁগ-জ্গেসব-হ্মনেসবক রি রাদ সমাজক মংচপব সেহো খাএন। জ্গেসবক জে ৰেঁচৌ মাবি মে

কেস কেননি ও ঘটনা কতাকি সংগ সমাজোক নোককেঁ ভঁসা দেননি । কেসকেঁ ওগ গতি এ রঁঠ় ৗননি জে ঘটনাক পবাত ভনে চাবি থানা গামমে থারি গেন । হবরি উ় া গামমে ভ২ গেন । দৌড় া-দৌড় ী খেহাবা-খেহাবী জমি ক২ ভেন । দূ গোষ্ঠে জহনো গেন । নগনে রাঁকী হ্মদ্দানহক জর্‌তী-হ্মর্কী ভ২ গেন । জকব প্রতি ত্রি যা সমাজমে জমি ক২ ভেন ।

থাগূ চনি হ্মনেসব রেঁমাব পড় া গেনা । ছহ মাস থাবাম করৈনে ডাক্টব সনাহ দেনকনি । জীরন-হ্মত্যক রীচ পড় ন হ্মনেসবক মন ছঁহোছি ত ভ২ গেননি । এক দিস থপন থগি না জি নগী হবি থব রূঁঝি পড় নি , থপন কমাগক সংগ দ্নূ রেঁষ্ঠাক কমাগ দেখি তঁ দোসব দিস থপন সথি তি দেখথি জে থপন সেরা কেনা হএত ? পনৌও পনৌএ ছথি । থকাস উঁড় ৈত চি ড় ৈ জকাঁ । কমা ক২ হাথমে দি যন্ব, হ্কুম প্রবরি যন্ব তঁ রঁড় রঁঠ় া যাঁ নহি তঁ থপনাকেঁ কপবজরুথাক পনৌ কহি ডাকনি দেতী । থপন শেষ নোকবী থা পেন্শনক থাশা পনৌকেঁ দেখথি , তঁ রেঁষ্ঠাকেঁ কমাস্বত রূঁঝি সংতোষ হোনহি , হ্মদা রঁড় কী রঁহি নক কী হএত ? রেচাবীকেঁ থছিতে ভাগএ নে ভাএ বহননি , থা নে থছিতে পতি এ নে পতি বহননি ! ঘবপব ওতে সম্পতি নৌ, তদ্ধমে জঁ রেঁচৈওক থধি কাব বহি তনি তঁ কি ছ রেঁসীও দি নক থাশা হোগতনি , সেহো নহি । সমএ বৌদি যাহে থছি । থপনে ওছাগন ধেনে ছী, পাগক কোনো থামদনী নহি । রেঁষ্ঠাসঁ মাঁগি কেনা সকৈ ছী, ওকবো গ রাঁত (রঁহি নক খর্চ) রূঁঝন নহি ছৈ তৈপব জঁ মংগরৈ থা ও মাএকেঁ কহত তঁ জেহো কি ছ দি ন জীরৈক থাশা থছি সেহো চনি জাএত ।

আগনে-খরগবানি সঁ নোক জহব-মাহ্রব খাগএ। খপন রি চাবকেঁ খপনে মনমে দারি ফনেসব রঁহি নকেঁ রিঁ সবি দেননি।

মহি না-দৃ মহি না তঁ স্বনোচনা আশা ধেনে বহনী ফদা পেঠক আগি তঁ ওহন আগি হোগ ছৈ জেকবা মি ঝরৈঁনে নোক আচাব-রি চাব ফন-খনদান সভ রিঁ সবি জাগএ। ততরেঁ নৈ, স্বনোচনা ওহন পবি রাবমে জনম নেনে ছথি জগ পবি রাবক ঔবতকেঁ ভূমি ছেদনসঁ রঁর্জিত কএন গেন ছনহি, ও খপন শ্রম রেঁচি কেনা সকৈ ছথি। খপন ওহন রাড়ী-ঝাড়ী খেত নহি জে খপনো জোকব সাগো উঁপজা সকৈ ছী। রাঁধক খেত। রেঁরস স্বনোচনা গামমে ঠুঠৈনী মবৈআমে রৈঁস গারঁএ নগনী- "হে ভোনাদানী কহি যা হবরঁ দুখ মোব।"

চাব্ধ দি সক খপন রঁন্ন বস্তা দেখি স্বনোচনা রঁহিন চাব্ধকাত তকনী তঁ একটা ঘব নগমে বূঁঝি পড়ননি। ও ঘব খপন দীদী-পীসাক। গামসঁ সটনে, কবীরঁ কোস ভবি পব দীদীক ঘব। রেঁব্ধ পহবমে স্বনোচনা রঁহি ন দীদী গামক বস্তা পকড়ননি ...।

স্বনোচনাক পি সি যৌত ভাএ, হাগ স্কূনমে শি ক্ষক ছথি। প্রতি ষ্ঠি ত শি ক্ষক। জি নগীমে ডেবাপব কহি যো কোনো রি দ্যার্থীকেঁ ঠ্যূশেন ফীস নহি ননি। মাস্সৈরঁক পবি যাসসঁ স্বনোচনা রঁহি ন সাস্বব গেনী। দোহবা কহ সাঠি রঁর্থক উঁমেবক পড়াতি জহি না জি নগী হাবন-থাকন তহি না খপন জি নগী পাঁচ কৌব খন্ন আ পাঁচ হাথ রস্ত্রপব খঁটৈকা নেননি ...।

উঁপবোকত কথা-রস্তু সদ্য: যথার্থিক পবিচএ

अपनामे समेटने अछि। ओकरा पठ़ाग-लिखाएक मात्र एक लक्षय नोकरी करब अछि। परिवारक अर्थ सिस्टड़ि बहल अछि। समाजक रीत रंग-रंगक कलह केर भावना रठ़ि बहल अछि। भाए-भैयारीमे प्रेमक भावना कमि बहल अछि। पूजीवादी विचार मनुखमे एहि तरहेँ अपन जगह बना बहल अछि जे बैमानी भावना एते प्रबल भेल जा बहल अछि जे समाजक रीत तँ दूर जे भैयारीओमे बैमानी शुरू भऽ गेल अछि। जग पवि वारक ओतकेँ भूमि छेदनसँ वर्जित कएल गेल छलहि, ओ अपन श्रम बेचि कोना सकै छथि। अपना ऐठाम खाएयो विधवा विआहक सामाजिक मान्यता सभ समाजमे नहि देल गेल अछि। जकर जरूरत सजहे उपरोक्त कथा-वस्तुमे उपन्यासक माध्यमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल स्वलोचना नामक पात्रक अवतारणा कऽ देखाब केललि अछि। जखन कि एहल मात्र स्वलोचने वहिनटा नहि अपितु वह्त वहिल छथि...।
ऐ तरहेँ ऐ उपन्यासमे समकालीन चेतना वृहद पात्रक समस्त चरित्र-चित्रणसँ नऽ अन्त आएल अछि।

२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे वाजनीतिक चेतना

उपरोक्त शीर्षक 21म शतार्ब्दीक पहि ल दशकक उपन्यासमे वाजनीति क चेतना- कोनाटे सामाजि क उपन्यासमे प्रस्तुत वि षय-वस्तुक हएब प्राय: स्वभावि क अछि । उपन्यास एक एहल वि धा थि क जगमे सम्पूर्ण जि नगीक वर्णन बहैत छैक। जि नगीक

एकटा अलग अंग राजनीति होइछ। जाहि सँ उपन्यासमे मोड़ आनल जाएत अछि आ दि शाकेँ रदलि दैत छैक। व्यक्ति भलहि व्यक्ति रहत सथि ति केँ व्यातक ह्अए लदा जि नरो एकटा एहन रि शान पवि क्षेत्रक नाओं थि क जे समाजक रीत पसरि जाएत अछि। मनुख जखने समाजसँ जुड़ैत तँ ओकरामे राजनीति स्रत: एक अंग रनि जाएत स्रभारि क अछि।

पहि ल दशकमे प्रकाशि त उपन्यास तँ रहतो होएत लदा हम जेतरा पढ़ि रा देखि सकल छी मात्र तेकरे रर्णन एहि आलेखमे कऽ रहलौं अछि।
जगदीश प्रसाद मण्डल– जीक उपन्यासकेँ मैथिली साहित्यमे सार्थक राजनैतिक चेतना जगेराक प्रारम्भक रूपमे देखि सकै छी, मौलाइल गाछक फूल उपन्यासमे राजनीति क चेतना ओत-प्रोत अछि। जाहि मे ग्रामीण जीरनमे पसरल समस्याक यथार्थ चि त्रण केलनि अछि। प्रस्तुत उपन्यासमे स्रर्ूध नामक एकटा पात्र जे शि क्षक छथि ओ अध्यापन कार्यमे लागल रहैत छलाह। गाम-समाजक चि न्तासँ लकत छलाह। जखन रमाकान्त राबू मद्रासँ घुरि अपन गाम एलाह आ हुनकामे ओ चेतना भेलनि जे अलेरे जमीन हम कि अए रखने छी तखन अपन 2 सए रीघा जमीन सच्चा ग्रामीणमे राँटि समाजकेँ पवि रार रूपमे देखए केर नजरि क पता शि क्षक स्रर्ूधकेँ लगलनि तखन हुनकामे सेहो चेतना एलनि आ अपन नौकरीसँ ति याग पत्र द' पुन: आपस आरि जाइ छथि। गाम-समाजक रीत ऐराक लक्षण एकटा राजनीति क

चेतनाक अपूर्व छवि मान उपस्थित करैत अछि । तहि ना जिनगीक जीत उपन्यासमे समाज दशा-दिशाक यथार्थ चित्रण करैत अर्थनीति केर मूल रहस्यकेँ उद्घाटित करबाक जे प्रयास मंडलजी केलनि अछि ओ एक अद्भुत राजनीति क प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि । जगदीश प्रसाद मंडलक अगिला उपन्यास उत्थान-पतन एहि उपन्यासक माध्यमे सामंती सोचकरबला समाज आ समाजिक सोचक समाज बीच आधुनिक वैज्ञानिक समन्वयवादी सोचक यथार्थ चित्रण तेहन मार्मिक आ गमानदारीसँ मंडलजी केलनि अछि जे एक तेहन राजनीति क चेतनाक संवाहक बनैए जे प्रत्येक मनुखकेँ उत्थान आ पतनक मात्र दर्शन रूपमे सिद्ध करैत अछि । 'जीवन-मरन' उपन्यासक लेखक जगदीश प्रसाद मंडल जी छथि - एहि उपन्यासक मूल पात्र छथि रघुनंदन। रघुनंदनक मृत्यु जन्म दिन भेलनि ओही दिनसँ उपन्यासक प्रारम्भ होइत अछि । मिथिलाक समस्यामे बाढ़ि, रौदी आदि प्राकृतिक समस्या केर अलावे आर बहुत रास समस्या छैक जे मानव द्वारा अकृति यार क' समाजकेँ जकड़ने छैक। प्रस्तुत विषय केर चित्रण ताहि रूपे मंडलजी अपन जीवन-मरन उपन्यासमे केलनि अछि जे एक खास राजनीति क चेतनाक जन्म दैत अछि । हिनक अगिला उपन्यास अछि 'जीवन-संघर्ष' अध्यात्मक मूल उद्देश्य थिक मानव-मानवक बीच अगाध प्रेमक जन्म देनाइ जइसँ सम्भव कि यो सहमत छी। प्रस्तुत उपन्यास जीवन-संघर्ष केर माध्यमसँ मंडलजी सम्प्रदाय आ धर्म कोना व्यक्ति सँ समाज धरि केँ तोड़ैए आ कोना लोक अपनाकेँ महामानवक

राष्ट्रपर चलि सकैए ताहि परि पेक्षयमे चि त्रण भेल अछि ओ एक अद्भुत राजनीति क चेतनाक द्योतक अछि । नि ष्कर्षत: ऐ सभ उपन्यासमे जीरन आ राजनैतिक चेतना समाहित अछि । लोकक कार्यक प्रति मल्डन जीक रिश्वास जिनगीक प्रति रिश्वास रिन्नु राजनैतिक चेतनाक सम्भर नै ।

श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक उपन्यास– सहस्रबाढ़नि ढेर रास रजनैतिक आ ब्यूविरोधाभेष्टिक उथान–पृथनक गवाह अछि, तँ ह्नकर सहस्रशीर्षा दनित गरैय्या मोहनक भावतक स्वतंत्रतासँ सूचनाक अधिकार धरि गीतक माध्यमसँ राजनैतिक चेतना पसारबाक अद्भुत सफल प्रयास अछि, तँ एकर बीचमे सन्हिआएल गामक आ बाढ़ि क राजनीति गामसँ दिल्ली धरि पसरल अछि ।

राजदेर मल्डन जीक 'हमर टेल' धारारावाहिक रूपेँ रिदेहमे ई–प्रकाशित भऽ रहल अछि आ ई मैथिलीक सभसँ बेसी पठित उपन्यासक रूपमे उभरि रहल अछि । ओना तँ ई उपन्यास अखन छपिये रहल अछि मुदा घृणा आ प्रेम दुनूसँ सराबोर राजनैतिक घटनाक्रमक लेखक द्वारा जे प्रस्तुतीकरण भऽ रहल अछि से अतुलनीय अछि ।

केदारनाथ चौधरी– जीक चमेलीरानी आ एकर सेक्कुल माहुर वर्तमान राजनैतिक स्थितिक स्वन्दर प्रस्तुतिकरण अछि आ अपराधीक राजनीतिमे प्ररेशक स्वन्दर रिरवण अछि, जतए पाठक चमेलीरानीसँ प्रेम करए लगैए आ ओकर अपराधकेँ स्वीकृति करबा लेल रिरश भऽ जाइए ।

आशी मिश्रक– उचाट आ अशोक कुमार ठाकुरक निशांत

আ রস্বধাক সংসাব সেহো ঠাম–ঠীম একব রিরবণ কবৈত অছি ।

শ্যাম চন্দ্রক "রূপা দীদী" লেখকক কলাক প্রতি উঁদাসীনতাসঁ ওতেক নিস্সন প্রভাব উঁপেন্ন নৈ কবৈএ ক্ষ্দা রিষয–রস্তুক দৃষ্ঠিএ ও বাজনৈতিক চেতনাকেঁ আধাব লঃ লিখন গেল অছি ।

সাকেতানন্দক সর্বস্বান্ত রাঁঢ়ি আ বাহতক বাজনীতিক ডোক্যুমেন্ট্রী ফিকশন অছি ।

ললিনচন্দ্র ঠাকুবক "আব মানি জাউঁ" উঁপন্যাসমে এক এহন ঘরতীক সংঘর্ষ–গাথা অংকিত অছি জে অপন ললনসঁ জীরন বঁদনৈত অছি । অসংখ্য গামক ও কথা কুলীনতাক অধঃপতনক কথা, সংস্কাব রিহীনতাক উঁদ্ঘাটন আ ভরিষ্যক পীঠ় ীকেঁ বঁচএরাঁক চ্তৌনী ছী ।

রীণা ঠাকুবক 'ভাবতী' উঁপন্যাসমে সেহো বাজনীতি ক চেতনা ঝনকৈত অছি ।

<u>পংকজ কুমাব প্রভাকব</u>, শোধ ছাত্র, ললিত নাবাযণ মিথিলা রিশ্বি–রিদ্যালয, কামেশ্বিবনগব– দবভংগা ।

ग्राम+पोस्ट– भपटियाही–कदमपुरा, भाया– नरहिया (मधुबनी)

समकालीन चेतनाक सरोकार :: अङ्गुरागिनी

जीवनमे होइत निरन्तर नूतन परिवर्तनक खण्ड चित्रकेँ यथावत् प्रस्तुत करबाक श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक अपन एक फराक शैली छन्हि। मण्डलजी बहुआयामी रचनाकार छथि। गद्य हो आकि पद्य विभिन्न विधामे जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन स्थान सुरक्षित कऽ लेने छथि। विभिन्न विद्वानक मत सेहो ऐ सन्दर्भमे आएल अछि। अङ्गुरागिनी कथा संग्रहक आमुखकार डॉ. योगानन्द झा लिखलनि अछि– "युगीन समस्या ओ समस्याक कारण एवं तेकर समाधानक प्रति चिन्तनशीलता हिनक वस्तु–विन्यासकेँ प्रेरक–प्रभावकारी बनौने रहलनि अछि जइमे परम्परित कथाधाराक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूपेँ प्रस्फुटित देखि पड़ैछ। मिथिलाक लोकजीवनक उत्थानक प्रति संवेदनात्मक अभिरुचि कौशलक कारणे मण्डलजीक कथा सभ हिनका आधुनिक कथाकार लोकनिक अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ कऽ देलकनि अछि।"[110]

मण्डलजीक कथा सभ मिथिलाक माटि–पानिक कथा छी। हिनक कथा सभमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आशा–निराशा, सुख–दु:ख, हर्ष–उल्लास आ जीवन–संघर्षक व्याख्या भेटैत अछि। मिथिलाक

---

110 पृष्ठ संख्या- ७ एवं ८सँ

সামাজি ক-আর্থিকি ও রাজনীতি ক জীরনমে হোগত পরি রর্ত্তন সভকেঁ সূক্ষম মনোরৈজ্ঞানি ক রি শ্লেষণ দ্বারা ভ্রা অপন কথা সভকেঁ প্ররাহমযতা, রোচকতা ও রি শ্বসনীযতাক সংগ প্রস্তুত করবাঁমে সি দ্ধহস্ত কলাকারক রূপমে প্রতি র্ষ্ঠি ত ছথি।

দর্জন ভরি উঁপন্যাস, দর্জনসঁ রেঁসী কথা সংগ্রহ, কবীরঁ দর্জন ভরি নাটকো তথা পদ্মক (গীত, কার্য) পোথী সেহো আধা দর্জনসঁ উঁপর প্রকাশিমে আরি চুকল অছি, সংগে-সংগ আলোচনাত্মক আলেখ সেহো পত্রিকাদিমে পঢ়রাঁক অরসরি ভেটৈল অছি যথা- অরতাররাদ, সগর রাতি দীপ জরয :: একটা যাত্রা, মিথিলাক লোক রেঁরহার গীত এরং সংস্কার গীত, উঁপন্যাসমে গ্রামীণ চিত্রণ, কামরূপ আ মিথিলা ওত্যাদি। তত সংগ কএক গোটে সাক্ষাত্কার সেহো হিনকর আএল অছি।

ওনা তঁ হিনক রিভিন্ন কথা সংগ্রহ অছি জেনা, গামক জিনগী, সতভৈঁযা পোখরি, উঁনরাঁ চাউঁর, ভকমোড়, পতঝার, অপ্পন-রাঁবান, রাঁন গোপাল, বটলী খঢ়, লজরি জী, গামক শিকল-সূরত, রঁজন্তা-রূঁঝন্তা, তরেগন, শিংভুদাস তথা অহ্ল্যাগিনী। হ্মদা অখন হম অহ্ল্যাগিনী কথা সংগ্রহমে সংগ্রহিত কথা সরঁহক অংযযন কঽ সমকালীন রোঁধকেঁ ঐ আলেখমে নিরূপণ করবঁ।

'অহ্ল্যাগি নী' কথা সংগ্রহমে রাঁস গোটে কথাক সমারেশ কএল গেল অছি। জওমে সংগ্রহক পহি ল কথাক নাওঁ- 'দোহরী মারি' ছী । দোহরী মারি কথা কের প্রকখ পাত্র গ্বলারঁ ছথি। গ্বলারঁক মলোরৈজ্ঞানি ক রি শ্লেষণ ভেল অছি । অরকাশি প্রাপ্ত প্রাফেসর গ্বলারঁ কেতেকো রর্ষসঁ ডাগরাঁটৈজ ও র্নেড-প্রেসর সদৃশি রিমারী

সভসঁ গ্রস্ত ছথি । গামক ঘব–ঘবাড়ী পর্যন্ত রেঁচি শহবমে রনৌন মকানমে পতি –পনৌ একাকী বহি ছথি । রেঁটা–প্বতোহ্ পবদেশমে বহি ছনহি তঁএ হি নকানোকনি ক স্বধি নেনি হাব কি যো নৈ ছনহি । হদ তঁ তখনি ভহ জাগত খছি জখনি প্বত্র দ্বাবা ঔ সমাদ ভেটৈ ছনহি জে পৌত্রক মূড়ন ঘবপব নৈ ভহ কহ রৈষ্ণো দেরীমে হেতনি , জগ নেন হ্নকোনোকনি কেঁ ওহীঠাম এরাঁক খামংত্রণ ভেটৈ ছনহি খা ও খপনাকেঁ খশিকয বূঁনৌ ছথি ।

দোসব কথা– ‘কেনা জীরঁ’ সেহো খরকাশপ্রাপ্ত প্রাফেসবেক কথা খছি । প্রাফেসব সাহিঁ রেঁটাকেঁ পঢ়া–নি খা কহ রি দেশ পঠযরাঁমে সফন তঁ হোগ ছথি হ্নদা রেঁটা রি দেশী সভ্যতা ও সংস্কৃতি ক বংগমে বমি জাগ ছনহি খা হি নকানোকনি ক খোজো–প্বছাবি নৈ কহ পরৈঁ ছনহি । পবি ণামত: দুনূ পবানী একাকী জীরন রিঁ তেরাঁক হেত্ত রাঁধ্য হোগ ছথি ।

তেসব কথাক নাওঁ– ‘নরান’ ছী । ঐ কথামে যি থি নাক নোক জীরনক রি ভি ন্ন খণ্ডচি ত্র উঁপসথি ত কএন গেন খছি যথা বৃক্ষ–নতাদি ক পহি ন ফড়া দেরতাকেঁ চঢ়াএরঁ, গাএ রিঁ খাএনাপব মহাদেরকেঁ দূধসঁ খভি ষেক করবঁ খাদি ঐ কথাক রিষয–রস্ত্ত খছি ।

চাবিম কথা– ‘তি নাসংক্রান্তি ক নাগ’ পব নিখন গেন খছি । ঐ কথামে গামক জিনগীমে পসবন খন্ধরি শ্বাসপব প্রহাব কএন গেন খছি ।

পাঁচম কথা– ‘ভাগক সি নেহ’ ভাএ–ভৈযাবীক খাপসী কনহপব কেন্দ্রিত এক প্রকাবক প্রেমক কথা ছী ।

ছঠম কথা– 'প্রেমী' বস্তুত: প্রেমকথাক রূপমে নি খন গেন খছি । মুদা ঐ কথামে বচনাকাবক উঁদ্দেশ্য সমাজি ক জীবনমে ব্যাপ্ত দহেজ প্রথাক কুবীতি কেঁ সমাপ্ত কববাঁক সংদেশ খভি ব্যকত ভেন খছি ।

সংগ্রহক সাতম কথা– 'বঁপৌতী সমপতি ' কৃষক জীবনমে জাতীয বেঁবসাযক মহত্তরক খবধাবণাপব খাধাবি ত খছি । সমপ্রতি কৃষক–মজদূবক পনাযনসঁ জে গামক খর্থ–বেঁবস্থা চবমবা গেন খছি তেকবা স্বধাববাঁক হেত্তু ঐ কথামে চি ন্তনক একটা দি শা ভেটৈত খছি ।

খাঠম কথা– 'ডঁকা' নোকজীবনক খবমূন্যনকেঁ বেখাংকি ত কবৈত খছি ।

নবম কথা– 'সংগী' শি ক্ষা জগতমে ভেন খধ্য:পতনক কথা ছী জগমে স্কূন–কৌনেজমে শি ক্ষাক বেঁবসাযীকবণক ফনস্ববূপ সামান্য জনসঁ ছীনন জাগত শি ক্ষাক সমস্যাপব বি মর্শ ভেন খছি ।

সংগ্রহক কেন্দ্রিয কথা "খহ্ন্নাগি নী"মে ঐ খবকাশপ্রাপ্ত শি ক্ষকক খত্যন্ত সূক্ষ্ম মনোবি শ্লেষণ ভেন খছি । খপন কমাগক বঁনেঁ ও খাজীবন খপন পনীকেঁ দাসীসঁ খাগূ বুঁঝবাঁক হেত্তু তৈযাব নৈ হোগ ছথি মুদা জখন নোকবী সমাপ্ত ভঃ জাগ ছনহি তখন পনীক খাবযকতাপব ধি যান জাগ ছনহি খা খহ্ন্নাগি নীক মহত বূঁনি পবৈঁ ছথি । নেখক নাবীক সেবি কা স্ববূপকেঁ মযাদি ত কঃ ওকবা প্রুখক সমানান্তব মূন্য প্রদান কবৈক পক্ষপাতী ছথি , জেকব খভি ব্যকতি ঐ কথাক নক্ষয বূপমে প্রদর্শিত হোগত খছি । খতিবিকত খাবো কথা সভ খছি জেনা–

"ঠকহেবরাঁ", "খতহতহ", "আঁপবেশেন", "ধর্মনাথ", "সবোজনী", "স্বভদ্রা", "সোনমাকাকা", "দোতী রিঁ খাহ", "পড় াগন" তথা খনতিম কথা "কেতৌ নৌ" ।

কথা সরঁহক রিষযমে খাহ্ম খকাব খপন রিচাব র্যকত কেনে ছথি– "ম িডনজী কথাক ভাষামে মৌথি নীক গমৈযা রৌনী–রাণীক সহজ স্বরূপ খভি র্যকত ভেন খছি । ঞা পাত্রানুরূপ ভাষাক প্রযোগ কেননি খছি জগসঁ প্রত্যেক পাত্রক রৌদ্ধি ক ও সামাজি ক সথি তি স্পষ্ট হোগত চনি জাগত খছি । হি নক কথা সভমে কথাকাবক ভাষা সেহো মৌথি নীক নোকজগতক ভাষাহি ক খনুগমন কবৈত খছি জগমে সহজতা খছি । কনেকো হ্নত্রি ম প্রযোগসঁ ঞা বঁচৈত বহন ছথি । হি নক ভাষামে তদ্ভর ও দেশীজ শর্ব্দক প্রচুব প্রযোগ ভেন খছি । যুগম শর্ব্দক প্রযোগ হি নক ভাষাকেঁ নানি ত্য প্রদান কবরাঁমে খা ওকব প্ররাহমযতামে সহাযক বহননি খছি । উদাহবণক হেত্তু মান–জান, নের্ব–দের্ব, দোকান–দৌবী, চঙ্গী–রঙ্গী, তাড় ী–দারু, ছহব–মহব, চোবী–ডকৈতী, রান–রৌধ, রেঁটা–প্বতোহ্, ভোজ–কাজ, খহ্নব–রিঁ হাড় ি, দাব–মদাব, স্বক–পাক, ভুখন–দুখন, চীজ–রৌস, ঘুসকা–ফুসকা খাদি কেঁ দেখন জা সকৈছ ।

ম িডনজী কথা ভাষাক ঞা খন্যতম রি শি ষ্টতা ছী জে ঞা কোনো সথি তি কেঁ পাঠকক সমক্ষ খভি র্যকত কবৈক হেত্তু চমত্কাবি ক উপমানক প্রযোগ কবৈ ছথি জগসঁ রস্ত্তসথি তি ক স্পষ্ট চি ত্র পাঠকক সোন্না খারি জাগত খছি যথা–

"जहि ना खठ ाएन खेतमे हेबराँहकेँ हेब जोतबॅ भवि गव ब्रूँमि पड़ ै ष्ठे तहि ना स्वर्शीनक मन समस्याक रोनाएन रूप देखनक। जहि ना पहाड़सँ नि कनि ्वनरवत गति सँ चनि नदी सम्द्रमे जा मि नैए तहि ना ने ष्टैघवक ज्ञान उँड़ ा कर सरोच्चि ज्ञानक सम्द्रमे मि नत।" ्वादि ।

एतारता कहन जा सकैछ जे मण्डनजीक कथा रर्णनक दृष्टिएँ मि थि नाक ग्रामजीरनक यथार्थरादी चि त्र, घटनाक दृष्टिएँ ्वादर्शक प्रति ्वभि भूत, सूक्ष्म मनोरि श्लेषणक प्रति प्रति रॅद्ध तथा उँदेसक दृष्टि एँ नोक मंगनकावी ्वछि ।"[111]

युग्म शॅब्दक प्रयोग कथाकावक रिशेषता होगत ्वछि संगे समकानीनताक द्योतक सेहो। कावण, भाषाक ्वनन्तकानिन यात्रामे शॅब्द ्वपन रूपमे पविरर्तन सेहो कवैए। जह्न दिसि ऐ संग्रहक कथाकावक कनम चननि ्वछि। जओपव दृष्टिपात केना पछाति समकानीन वचनाक हँ-निहँस सेहो सहज भर सकैए।

सत्य ्वाकि यथर्थि एक ओहन शॅब्दारनीक नाओं छी जेकव पविधिमे सहज स्वरूप, सामाजक ्वाँटी सथि ति, स्वत: स्फूर्त पात्रक चवि त्र, सहिष्णुता, समकानीनता ्वादिक समारेश स्वत: बहैत ्वछि। मिथिनामे वहएरॅना सभ स्तवक समाजक पात्र ऐ संग्रहक रिभिन्न कथा सभमे ्वाएन ्वछि। रिभिन्न समस्यासँ ग्रसत मन्व्थ जे जगदीश प्रसाद मण्डनक साहित्यक पात्र ्वछि, हिनका

111 पृष्ठ संख्या- १८ एवं १९

সভ নগ একমাত্র খরনম্বরঁ রাঁচি জাগ ছুনহি – জি জীরি ষা ও সংঘর্ষ। যএহ জি জীরি ষা ও সংঘর্ষ করবাঁক মানসি কতা ঐ কথাক হ্যগ জীরনক খন্বকূন সংদেশী দৈত খছি। জে সভ্য: সমকানীন খছি।

<u>**পন্নরী**</u>

<u>চোবরিভ্যা</u>

স্বতি কহ উঠনে বহী কি বধিযা দাদী হ্মহেঁ স্বনৌং–

"বজ রিভ্যাসঁ চোব রিভ্যা ভাবী হোগ ছৈ।"

বাতিযেমে খাকি ভোবমে কিযো হ্নকব চৌষ্ট পবহক সজমনি চোবা কঽ তোড়্া নেনে বহনি, তঁএ গাবিযো পঠ্েত বহথিন খা রঁজরোঁ কেনী জে ‘বজ রিগ্যাসঁ চোব রিগ্যা ভাবী।’

শৈনি দিন বহনে ভিনস্ববকে স্কূন বহএ। মাস্টব সাহৈঁবসঁ প্বছনিযনি–

“সবজী, চোব রিগ্যা কেকবা কহৈ ছৈ ?”

সবজী কহনিনি–

“জগ রিগ্যাসঁ চোব চোগব কবৈএ সএহ ভেন চোব রিগ্যা।”

ফ্রেণ্ড

হমবা খঁগনাক এঁঠাবপব একটা পৌবকী খা একটা মেনা চবৌব কবএ খাএন। সে কোনো খাগএ নৈ খাএন, খরিতে বহৈএ। নগেক রঁসরীটমে বহরোঁ কবৈএ।

ভোব হোগতে পহিনে পৌবকী উঠৈএ। পছাতি মেনা। মেনাকেঁ সংগ কবৈত ঘবসঁ দ্নূটা নিকনৈএ।

একঠাম বহনে দ্নূমে রেঁরহাবিক সবোকাব তঁ ছৈ ঋদা নে জাতি ছী, জে এক টোগটিন বহিতে খা নে এক বংগক খছি, জে জাতিযো বহিতএ। ওনা জাতিযোমে বংগ–বংগক টোগটিন তঁ চনিতে ছৈ।

ভিনস্ববকা তোবক ভোজন কেনা পছাতি মেনা পৌবকীকেঁ কহনক–

“গৌআঁ, দ্নূ গোবে ফ্রেণ্ড নগা নিখ।”

মেনাক রাঁত স্বনি পৌবকী কনীকান মনে–মন হিসার জোড়্নক। তঁ বূঁঝি পড়্নৈ জে ভনেঁ একে ঢেবীপব

দ্নূ গোবেক গ্বজব কিএ নে চনৈত ত্থএ ক্ষদা দ্নূ গোবেক খান–পান তঁ এক নগ খ্ছি। ও সাকঠ খ্ছি খা খপনে রেৈষ্ণর ছী।

পৌবকী খসমংজসমে পড়ি গেন।

মেনা প্বছনকৈ–

"গৌখাঁ, সোমনে হ্রে্লড নগেরঁহ খাকি ওকব নীকো–রেঁজাএ হবিছা নেরঁহ ? "

পৌবকীক রিচাব মেনাকেঁ জঁচনৈ।

রাঁজন–

"গৌখা, খহাঁকেঁ দ্শমন রেঁসী খ্ছি, হমবা কম খ্ছি। নাভ রেঁসী খহীকেঁ খ্ছি, জে জখন দ্শমন ঔত তঁ হম খঢ় কহ নেরঁ।"

পৌবকী রাঁজন–

"দছিনক্ষহেঁ–গংগাজী দিস ঘ্মি দ্নূ গোবে পহিনে সপপত খাউ, তখন হ্রে্লড নগাউ।"

নোর্ট– ঐ কথাকেঁ নিখৈমে হমব রাঁরাঁ– শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডনক সহযোগ ভের্টন খ্ছি। হ্নকা প্রণাম্। সংগে খদ্রুঁ সভকেঁ প্রণাম্।

<u>প্নম মণ্ডন</u>

<u>বিপোর্ট–– সগব বাতি দীপ জবন</u>

নির্মনী, দিনাংক 19 সিতম্ব্রব 2015 : সগব বাতি দীপ

जवय समिति- निर्मनीक प्रस्तुतिमे शेहवक रिशानकाय रिराह ভরন- শযামা বেসিডেন্সী- সভাগাব-মে সগব বাতি দীপ জবয কেব 87ম গোষ্ঠী 'কথা তিনজ্গা'ক শ্বভাবমন্ত 6:30 বঁজে ভেন। জেকব উঁদ্ঘাটন সমমিনিত রূপে কেনৈন, নেতবহাট উঁচ্চতব মাধযমিক রিদ্যানযক পূর্ব প্রাচার্য ড়া. দুর্গা প্রসাদ সাহু, হবি প্রসাদ সাহ মহারিদ্যানযক পূর্ব এরং রর্তমান প্রাচার্য দ্বয ড়া বাম খশীষ সিংহ, ড়া. রিমন কমাব বায, প্রখণ্ড রিকাস পদাধিকাবী শ্রী স্বশীন কমাব, জিলা পার্ষদক পূর্ব সদস্যা শ্রীমতী খাশা দেরী, শযামা বেসিডেন্সীক নির্মাণকর্তা শ্রী সত্যয নাবাযণ প্রসাদ সাহ্ তথা সী.এম.রী. কালেজক হিন্দী রিভাগাধযক্ষ সহ মৈথিলী সাহিত্যযক চর্চিত সাহিত্যযকাব প্রা. ধীবেন্দ্র কমাব।

খরসবপব শ্রী বামদের প্রসাদ মণ্ডন 'ঝাব্দাব' স্বব বচিত গীত- "কব্ধ স্বাগত স্বীকাব হে প্রিযরব, হম নৈ খপনেক যোগয... ।"সঁ স্বাগত কেনৈন, তথা ধন্যরাদ জ্ঞাপনক সংগ স্বাগত-ভাষণ কেনৈন, প্রাফেসব দ্বয ড়া. শির কমাব প্রসাদ, ড়া. শ্রীমোহন ঝা।

ঐ তবহেঁ উঁদ্ঘাটন সত্রসঁ পোথী লোকার্পণ সত্রমে প্ররেশ ভেন। সত্রক মুখয খতিথি, রিহাব খতি পিছড়া প্রকোষ্ঠক সদস্য মো. শবফবাজ খহমদ সংগে রিশিষ্ঠ খতিথি বহৈথ- ড়া শযামানন্দ চৌধবী, ড়া. স্ববেন্দ্র প্রসাদ সিংহ, শ্রী খশোক কমাব মিশ্র, শ্রী শংভু সৌবভ, শ্রী দুর্গানন্দ মণ্ডন, শ্রী উঁমেশ নাবাযণ কর্ণ, শ্রী শ্রীভূষণ বাম, শ্রী খজয কমাব দাস, শ্রী নাগেশ্বব কামত, শ্রীমতী রিভা কমাবী, শ্রীমতী খনুপম কমাবী, শ্রী মনোজ কমাব সাহ উঁর্ফ চন্দনজী, শ্রী জে. কে. খানন্দ, শ্রী বতন

कुमार वरि, श्री विनोद कुमार गोप, श्री राम प्रवेश मण्डल तथा श्री रामलखन भण्डारी, तथा सत्रक अध्यक्षता केलैन– समर्पणक चेअरमेन श्री दुर्गानन्द मण्डल, मध्य विद्यालयक शिक्षक मो. ए.के. मंजूर, सामाजिक कार्यकर्ता श्री सुरेन्द्र प्रसाद यादव, श्री विनोद कुमार तथा मध्य विद्यालयक प्राचार्य श्री नारायण प्रसाद सिंह।

पाँच गोट पोथीक लोकार्पण भेल। जगमे टैगोर साहित्य पुरस्कारसँ पुरस्कृत एवं विदेह भाषा सम्मानसँ सम्मानित साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डल रचित चारि गोट पोथी– 'गुड़ा–खुद्दीक रोटी', 'फलहार', 'नजरिजी' आ 'गामक शकल–सूरत' लघुकथा संग्रहक छल आ पाँचम– 'विदेह' आ 'वैदेह' द्वय सम्मानसँ सम्मानित साहित्यकार श्री राजदेव मण्डल रचित पोथी– 'जान' (पटकथा) रहए। पाँचू पोथी भरि सभागारमे वितरणो भेल।

भाड़ी संख्यामे विद्वत–श्रोतागणक उपस्थिति सेहो छल। जेना– इतिहासक विभागाध्यक्ष प्रा. जय प्रकाश साहु, अधिवक्ता सह पत्रकार श्री रौशन कुमार गुप्ता, श्री सागर कुमार साहु, श्री विष्णु कुमार गुप्ता, श्री छैनछैन कामत, श्री राम नरेश यादव, श्री अजय कुमार गुप्ता, श्री आलोक कुमार 'नाहर', श्री राम विलास सिंह, श्री विहारी मण्डल, श्री राज कुमार यादव, श्री बँद्रीनाथ यादव, श्री राम नारायण कामत, श्री रामकृष्ण ठाकुर, श्री राजदेव मण्डल, श्री अरविन्द कुमार मण्डल, श्री राजेश पासवान, श्री संजीव कुमार, डा. आशुतोष कुमार, श्रीमती आराधना मिस्त्री, श्री चन्द्र भूषण झा 'राधव', श्री मनोज कुमार झा, श्री राजकुमार मिश्र, श्री अरविन्द यादव, श्री

রিনয ক্ষমাব ৰুদ্র, শ্রী রিঁনষ্ট ম˜ডন, শ্রী বামৰাঁবূ কামত, শ্রী দশিবথ প্রসাদ যাদর, শ্রী বাম ঋশীষ ম˜ডন, শ্রী নক্ষমী ম˜ডন, ড॰ঁ. রিষ্ণুদের ঠাক্কব, শ্রী গোপান গিবি, শ্রী বাজাবাম যাদর, সংতোষ ক্ষমাব পা˜ডেয, শ্রী সত্য নাবাযণ মহতো, স্বশ্রী কাজোক ক্ষমাবী, শ্রী মদন মহতো, শ্রী শিমন্তু কমাব সাহ, শ্রী যোগীনান কামত, শ্রী হজাবী প্রসাদ সাহ্, তথা ঋরকাশি প্রাপ্ত শিক্ষক শ্রী ঋশির্ফী সাহ্ গত্যাদি–গত্যাদি।

ক্রমশী: ঋাগূ ৰঁঠ়ৈত কথা সত্রমে প্ররেশি কএন... ।

ঐ সত্রক ঋধ্যক্ষতা কেনৈন 'সখাবী–পেঁটাবী' কথা সংগ্রহক কথাকাব শ্রী নন্দ রিনাস বায, 'বথক চক্কা উঁনৈষ্ট চনৈ ৰাঁষ্ট'ক করি শ্রী বাম রিনাস সাহ্, 'উঁনহন' কথা সংগ্রহক কথাকাব শ্রী কপিনেশ্বৰ বাউঁত তথা ঋশির্ফী দাস সাহ্ সমাজ গ˜ষ্টব মহিনা মহারিদ্যানয– নির্মনী কেব মৈথিনী রিভাগাধ্যক্ষ প্রা. হেম নাবাযণ সাহ্। সাত পানীমে রিভকত পচ্চীস গোষ্ট কথা পাঠ ভেন, সমীক্ষা ভেন। ঐ তবহেঁ তীনূ সত্রক সমাপন ভেন। জেকব সংচানক ছনা– শ্রী সংজীর ক্ষমাব 'শিমা', শ্রী ভাবত ভূষণ ঝা, শ্রী দ্গানন্দ ম˜ডন তথা শ্রী উঁমেশি ম˜ডন।

ঋনতিম সত্র 'ঋগিনা গোষ্ঠী কেতএ'মে প্ররেশি ভেন। চাবি গোষ্ট প্রস্তার ঋাএন, পহিন– শ্রী বোহিত ক্ষমাব সিংহক দবভংগা নেন মার্চ 2016. শ্রী দ্খন প্রসাদ যাদরক 'ধৰহী' নেন জূন 2016 তথা দিসম্ৰব 2015ক গোষ্ঠী নেন দূষ্টা, প্রথম– শ্রী কমনেশি ঝাক 'ডখবাম' নেন তথা শ্রী বাজদের ম˜ডনক 'বতনসাবা–ক্ষসহবনিয॰ঁং' নেন।

সভামে বৈসন সমস্তক রিচাবপব খংযক্ষ ম ডন দ্বাবা নির্ণয ভেনৈন– ডখবাম। খত: খগিনা গোষ্ঠী শ্রী কমনেশ ঝাক সংজোজকত্বরমে দবভংগা জিনাক রৈনীপ্বব খন্বম ডন খন্তস্ত্মত 'ডখবাম' গামমে হোএত।

ভারী সংযোজক শ্রী কমনেশ ঝাকেঁ রর্তমান সংযোজক শ্রী উঁমেশ ম ডন দীপ তথা পংজী সমর্পিত কেনৈন।

খন্তমে, ধন্যরাদ জ্ঞাপনমে, বাঁহবসঁ খাএন সাহিত্যকাব, স্থানীয সাহিত্যকাব এঁর সহযোগী তথা রিশেষ সহযোগীকেঁ সংযোজক ধন্যরাদ–নমন কেনৈন। ঐ তবহেঁ সগব বাতিক কথা শেষ ভেন।

নিম্ন খছি– ক্রমান্বসাব পঠিত কথাক নওঁ, কথাকাবক নাওঁ, তথা সমীক্ষকক স্বচী, সংগে সগব বাতি দীপ জবয সমিতি– নির্মনী কেব সক্রিয কার্যকর্তা, সংচানক তথা রিশেষ সহযোগীক সেহো।

কথা পাঠ এরং সমীক্ষা :

পহিন পানী–

১. ফ্রে ড : পননরী ক্বমাবী

২. সভসঁ কঠিন জাতিক খপমান : বতন ক্বমাব 'বরি'

৩. খরাক্ : বাজদের ম ডন

সমীক্ষা : ডॉ. রিমন ক্বমাব বায, ডॉ. শযামানন্দ চৌধবী, ডॉ. বাম খশীষ সিংহ।

দোসব পানী–

४. अिरसवराद : अजय कुमार दास

३. ডঁপব হবকী মামীক সবাধ : নক্ষমী দাস

৬. হাথী আ মূস : জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন

সমীক্ষা : শ্রী কমনেশ ঝা, শ্রী দুর্গানন্দ মণ্ডন (রঁনবঝূনা) শ্রী দুর্গানন্দ মণ্ডন।

তেসব পানী–

৭. রঁরাজীক মকড়জান : সংজীর কুমার 'শমা'

৮. শৈতান আ ভগরান : দুর্গানন্দ মণ্ডন

৯. সহোদবা নৈ রঁনা পেনৌং : ডঁমেশ মণ্ডন

সমীক্ষা : ডা. শির কুমার প্রসাদ, ডা. রিমন কুমার বায, ডা. শ্যামানন্দ চৌধবী, ডা. বাম অশীষ সিংহ।

চাবিম পানী–

১০. সমাজক হান : বোহিত কুমার সিংহ

১১. গজ্জতক সরান : বাম রিনাস সাহু

১২. হৈরানক সংগ সধঙ্কহোঁ : দুখন প্রসাদ যাদর

১৩. রঁান রোঁধ : শম্ভু সৌবভ

১৪. এক দিন হমরো : শাবদা নন্দ সিংহ

সমীক্ষা : শ্রী ফাগু নান সাহু, শ্রী স্বশীন কুমার সাহ, শ্রী

বাজদের ম ডন 'বমণ' ।

প া িচম পানী–

১৩. সিঙ্কি সাংযে : উঁমেশ নাবাযণ কর্ণ 'কপেকরি'

১৬. শ্রাতা : খশোক ক্মাব মিশ্র

১৭. হ্র াডিজম : শির ক্মাব মিশ্র

১৮. কর্মক ফন : ফাগ্ব নান সাহ্

সমীক্ষা : শ্রী বাজদের ম ডন, শ্রী বতন ক্মাব 'বরি', শ্রী কমনেশ ঝা ।

ছঠম পানী–

১৯. খার কদ্রু : নন্দ রিনাস বায

২০. হমব সমাজ : কৌশন ঝা

২১. খ্শী : পংকজ ক্মাব 'প্রভাকব'

২২. মৌখিক : বাধাকান্ত ম ডন

২৩. মন্বখক মোন : স্বশীন ক্মাব

সমীক্ষা : শ্রী বাম রিনাস সাহ্, শ্রী সংজীর ক্মাব 'শমা', শ্রী উঁমেশ ম ডন ।

সাতম পানী–

২৪. একটা খাব : শাবদানন্দ সিংহ

२३. रॅबियातीमे गाबि : नक्ष्मी दास

समीक्षा : डॉ श्यामानन्द चौधबी, श्री कमनेश ঝा।

....

श्री संजय क्षमाब मण्डन, श्री सत्रुघ्न क्षमाब मण्डन, श्री रिनोद ठाक्षब, श्री स्वजीत क्षमाब साहु, श्री খখিনেশ क्षमाब मण्डन, श्री शशि भूषण क्षमाब, श्री संतोष क्षमाब बाय খাদি।

श्री स्वबेश महतो, श्री ক্ষক্ষন प्रसाद साहु, श्री स्वबेन्द्र प्रसाद यादव, श्री रिनोद क्षमाब तथा उँमेश मण्डन।

श्री सत्य नाबायण प्रसाद साहु, श्री नाबायण प्रसाद सिंह, श्री पिंक्ष पंसाबी, श्री बाम प्रकाश साहु, श्री देरेश क्षमाब सिंह, श्री प्रभाष क्षमाब कामत, श्री मनोज क्षमाब शर्मा, श्री देरेश क्षमाब सिंह, श्री बामनाथ गुप्ता, श्री बाम नखन भण्डाबी, श्री খখিনেশ चौधबी, श्री बाम स्वन्द्रब साहु, प्रा. धीबेन्द्र क्षमाब तथा डॉ. रिमन क्षमाब बाय... ।

86म दीप सबग बाति जबन

मधुबॅनी जिनाक ফ্লনপবাস খন্বमण्डनक 'नकसेना' गाममे 20 जून 2015 कँ 86म 'सगब बाति दीप जबय' (कथा–साहित्य गोष्ठी) क খাযোজন 'উন্মকত'क सौजन्यसँ श्री बाजदेर मण्डन 'बमण'क संयोजकत्वमे খাযোজিত भ२ सफन भेन। ঐ খরসবিপব श्री

জগদীশ প্রসাদ ম'ডনক দূটা পোথী এমশ: 'পসেনাক ধবম' খা 'মধ্মাছী' (নঘ্ কথা সংগ্রহ)ক নোকার্পণক সংগ রিতবণ ভেন। সংগে হানহিমে প্রকাশিত ড◌ॉ. বংগনাথ দিবাকাব (মূন নাম– বংগনাথ চৌধবী)ক নধ্ কথা সংগ্রহ ''ভখবৈত নীন বংগ'' কিছ কথাকাবকেঁ দেন গেননি। খগিনা গোষ্ঠী স্বপৌন জিনা খন্তস্থাত 'নির্মনী'মে হএত সে সর্বসম্মতিসঁ নির্ণএ ভেন।

ফোটৈক সংগ ব্রেকিংগ ন্যূজ নিম্ন খছি–

সংযোজক– শ্রী বাজদেব ম'ডন 'বমণ'

খাযোজক– উন্মকত

উদ্ঘাটন– ড◌ॉ. খ্শীনান ম'ডন, ড◌ॉ. যোগেন্দ্র পাঠক 'রিযোগী', শ্রী ভোগেন্দ্র যাদব 'ভাস্কব', শ্রী কমনেশ ঝা, শ্রী জগদীশ প্রসাদ ম'ডন, শ্রী বাজদেব ম'ডন, ড◌ॉ. শিব কুমাব প্রসাদ।

দূ শব্দ– শ্রী কমনেশ ঝা, শ্রী নন্দ রিনাস বায, শ্রী রাঁন গোরিন্দ যাদব 'গোরিন্দাচার্য'

খধ্যক্ষ ম'ডন– শ্রী দুর্গানন্দ ম'ডন (রনবমূনা), শ্রী ভোগেন্দ্র যাদব 'ভাস্কব' (খরকাশ প্রাপ্ত শিক্ষক), ড◌ॉ. শিব কুমাব প্রসাদ, ড◌ॉ. যোগেন্দ্র পাঠক 'রিযোগী',শ্রী জগদীশ প্রসাদ ম'ডন খা শ্রী কমনেশ ঝা।

সংচানন সমিতি– শ্রী দুর্গানন্দ ম'ডন খা উমেশ ম'ডন

পোথী নোকার্পণ– শ্রী জগদীশ প্রসাদ ম'ডনক দূটা নঘ্ কথা সংগ্রহ এমশ: (1) পসেনাক ধবম, (2) মধ্মাছী।

পহিন পোথীক নোকার্পণ কর্তা– প্রা. খ্শীনান ম'ডন, প্রা. বাম রিনাস বায খা ড◌ॉ.যোগেন্দ্র পাঠক 'রিযোগী'।

दोसर पोथीक लोकार्पण कर्ता- श्री भोगेन्द्र यादव ' भास्कर', श्री रतन कुमार 'रवि' आ श्री कमलेश झा।

कथा पाठ-

पहिल सत्र-

(1) चोरविद्या- पल्लवी कुमारी

(2) केतौ किछु होउँ- लक्ष्मी दास

(3) छैन- दीन बन्धु झा

समीक्षा- श्री कमलेश झा,

डॉ. शिव कुमार प्रसाद, श्री राजदेव मण्डल, राम गोविन्द यादव 'गोविन्दाचार्य'

दोसर सत्र-

(4) भगवनान भरोष- ललन कुमार कामत

(5) सपनेमे बीति गेल जिनगी- संजीव कुमार 'शमा'

(6) शिवनम- उमेश नारायण कर्ण

(7) झड़नक झर- उमेश मण्डल

समीक्षा- श्री राम विलास साहु, डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री शम्भु 'सौरभ', दुर्गा नन्द मण्डल (रैनबसूना)

तेसर सत्र-

(8) सस्ता बोरें राव-राव- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

(9) गंगा स्वखा गेल- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

(10) गंगा नहाएब- राम विलास साहु

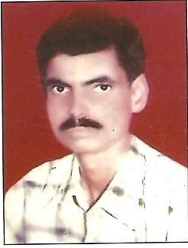
(11) ठैसँ बाँचि गेल- दुर्गानन्द मण्डल

समीक्षा- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री भोगेन्द्र यादव

'ভাস্কব', শ্রী সংজীর কুমাব 'শমা', শ্রী বাজদের মণ্ডন ঝা উমেশ মণ্ডন।

চাবিম সত্র–
(12) শিক্ষাক খনতিম উদ্দেশ্য– নন্দ রিনাস বায
(13) রেস্ততা– রেচন ঠাকুব
(14) ছোট্কু– শম্ভু সৌবভ
সমীক্ষা– শ্রী শাবদা নন্দ সিংহ, শ্রী কমনেশ ঝা, শ্রী খজয কুমাব 'পিণ্টু'
পাঁচম সত্র–
(15) তিতন রিনাড়ি – শিরকুমাব মিশ্র
(16) খার কহিযা চেতর– কপিনেশ্বব বাউত
(17) নাচাবী– গৌড়ী শংকব সাহ
সমীক্ষা– শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন, যোগেন্দ্র পাঠক 'রিযোগী', শ্রী নন্দ রিনাস বায।

ছঠম সত্র–
(18) পহপটি– জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন
(19) গজোবিযা বাতি– জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন
(20) খনিযা রন্দূক ভটাভটি– শাবদা নন্দ সিংহ
সমীক্ষা– শ্রী কমনেশ ঝা, ডॉ. যোগেন্দ্র পাঠক 'রিযোগী', ডॉ. শিরকুমাব প্রসাদ, শ্রী রান গোরিন্দ 'গোরিন্দাচার্য', শ্রী দুর্গা নন্দ মণ্ডন (রনবঝূনা)


ম্নন্নাজী

জন–চেতনাক স্বব বাহক মধ্প

"হেড়া গেনৈ, তকনো নৈ ভেটৈত খাৱ"। ওা কোনো মূন্যরান রস্তু নৈ নোকক চেতনা শূন্য সংস্কাব দিস সংকেত কবৈত মধ্পজী মৈথিনী সাহিত্ পবিষদ্ক সম্মেনন (ৱঁহেড়া)মে দেনে বহথি। তাকোনীন রা সমকানীন সাহিত্কাবক ভীড় মধ্য ও একসব করি, গীতকাব ছনাহ জনিক স্বব নো চেতনাক স্বব ৱঁনি সোঁঝা খৱৈত ছন। ও খপন ৱৌদ্ধিক রা মানসিক সোচসঁ নোকক খসৈত সংস্কাব, ঘটৈত মানরীয সংরেদনাপব সতত চিংতিত বহি নোককেঁ উঠেৱাঁক খা ঝকঝোবৱাঁক কাজ কবৈত বহনাহ।

হ্নক করিতাক কেংদ্র–রিংদুমে বহৈত ছন গাম সমাজক রংচিত–উপেক্ষিত রস্ত্র খা ওকব মানসিক পীড়া। তহিযা সামংতী রিচাবসঁ পনঘৈত খন্যাচাব খা মূঁহসঁ নাচাব ৱোনিহাবক দ্খ–দর্দকেঁ খপন করিতা মাধ্যমে চিত্রিত কঽ মধ্পজী জগজিযাব ভেনা। সভ বস–খনংকাবসঁ স্বশোভিত বচনা সৱ মার্মিক খা হৃদ্যস্পর্শী ৱঁনি কঽ

সোঁন্না খৰৈত বহন।

একটা বোটাক কতেকো ৰখবা খা ওগপব ছন্ড নূনসঁ গ্বজব কৰৈ ৰনাক মর্মান্তিক পীড় া। দোসব দিস নর–ধনিকক ছন–ছদ্ম–ঘমংড। এক দিস ভবি দিন ৰৈসি কঽ তাশি ও তমাশা খা দোসব দিস ভবি দিন খটিযো কঽ ঘসন খঠন্নী নেন মবৈত জন ৰৌনিহাব। এক দিস ভভা–ভভা কঽ হঁসৈত চেহবা খা দোসব দিস জাৰন মূঁহ। এক দিস ডাক–নিনামী ৰনা জমিংদাবক প্রশংসামে বচন সাহিহ খা দোসব দিস..খানী শূন্য।

হ্মদা মধ্পজী ঐ দোসব দিসকেঁ ৰেসী দিন খানী নৈ বহঽ দেনা। ওহন ভীষণ সামংতী ব্যবস্থা বহিতোঁ ও শৰ্দ্ধকেঁ খপন হথিযাব ৰনা নেনা। ভনে ও শৰ্দ্ধ কহিযো প্রগতিবাদী কবিতা ৰনি গেন তঁ কহিযো নচাবী তঁ কহিযো কিছু হ্মদা মধ্পজী কেংন্দ্রমে সভ দিন বংচিত বর্গেকে বখনখিন।

জন–মনক পীড় াসঁ পীড় িত কবিক স্বব জঁ কেকবো বচনাসঁ ৰহবাএন তঁ ও স্বব ছন মধ্পজীক জে খেত–খবিহান, জমীন–খসমানকে খপন খাঁতবিক বিদ্রাহ বা সমাজিক বিসংগতিকেঁ কাগজপব খানি সভহঁক সোঁন্না দেখাব কঽ কঽ ৰুকৈ ছনা।

মধ্পজী কবিতে নেন নৈ ৰন্কি খহংত নোকপ্রিয গীতাকবক ৰূপমে সেহো স্থাপিত ছথি। হ্নক গীতক এক–এক পাঁতি খনমোন খছি। কবিতে জকাঁ সমাজিক ঊংপৌড়ন। জীবনক খান বিসংগতিকেঁ গীতোমে খননাহ খা ঙা সিক্ক কেনা জে বাগ–নয–তান প্রগতিশীন ও

रौक्षिक हेरौंकमे रुकारहे नै छै।

मैथिलीक किछु आलोचकक मत जँ छोड़ि दैल जाए तँ ई स्पष्ठ रूपें ध्वनित होइए जे ओइ समयमे मधुपजी एकमात्र ओहल साहित्यकार छला जिनकर गह-गह लोक-चेतनासँ भरल छल। कहलौं लैल तँ करिरब सीताराम झाजी सेहो छथि मुदा हमर मतानुसार ओ भाषामे लोक-चेतनाक पक्षधर छला। रिचारमे सीताराम झा प्रगतिशील रहितो मधुपजीक आगू कमजोर सिद्ध होइत छथि। आ तँए हम मधुपजीकेँ तात्कालीन मैथिलीक पहिल जन-करि मानै छी। ओना किछु आलोचक जनिका रैचारिक दरिद्रता छनि ओ रैद्यनाथ मिश्र "यात्री"केँ जन-करि मानै छथि मुदा ऐ संदर्भमे 2 टा गप्प मोन राखर जरुरी—

1) यात्रीजी लैल जे जन-करि प्रयोग होइत अछि से हिंदीसँ आयातित अछि। भऽ सकैए जे ओ हिंदीमे जन-करि होथि मुदा मैथिली लैल अलहिटे छथि। मैथिलीक अपन समस्या छै आ तकर समाधान मात्र मैथिलीए साहित्यकार कऽ सकैए। ई आयातित साहित्यकार ओ आयातित पदरीसँ मैथिलीक कल्याण नै हेतै। प्रायः मधुपजी करल 23गोटे प्रकाशित आ 12-13 टा अप्रकाशित पोथी छनि जैमे ओ करल 1टा हिंदी रचना केला (भऽ सकैए कोलो आमीय संपादकक रॅलजोरी केलापर) तँए हमरा हिसाबेँ यात्रीजी नै मधुपजी जन-करि छथि।

2) यात्री जीक जीरल चरित्र देखलासँ ई स्पष्ठ अछि जे हुलका अपना-आपपर रिश्वास नै छललि। कहियो

ओ हिंदू रहनि जागत छथि तेँ कहियो रौद्र। खन ओ अपनाकेँ प्रतिमा-भंजक कहै छला तँ खन पतिया करबाबैँ छला। कहियो अपनाकेँ निरपेक्ष कहै छला तँ कहियो रामपंथमे प्रतिबद्ध बहरबाक नेन फाँड़ बन्हैत छला। एन मिना कए यात्रीजीकेँ अपना ऊपर विश्वास नै छलनि आ जकरा अपना ऊपर विश्वास नै से अपन समाजक ऊपर विश्वास कोना करत। आ तँए हमरा हिसाबेँ मधुपजी जन-कवि छथि ।

गाम समाजमे चेतनाक निर्माण करए बला मधुपजी, अपन ऊर्जासँ समाजक कष्ट सहकेँ हटेबए बला मधुपजी जे की जन-कविक स्वछा हकदार छथि से किछु हिंदी बला सभहँक कारणेँ कतिया देल गेला। एदा कतिएनासँ किलो कतिया नै जाग छै। मधुपजी मोन पड़ैत बहता रैब-रैब, प्रश्त-दर-प्रश्त।

पबती टूटि गेलै

सनातनी बचना प्रकियामे आबि बसि गेला। अगिला पाँतिक पढ़िना सेरक जकाँ नै। अपन नूबि-बुझिसँ बनाओल नीख धए नेलनि। आगाँ बढ़ि संगोर भेटैलनि। एदा ओग संगोरसँ ऊसोहित बहितो चौर टैया तकैत बहलाह। जते गर नगलनि अपनाकेँ क तिया अपन सोच-
रिचारसँ अड्डा जमा नैत छलाह। संगबैया सभकेँ नाग

नि कठाएन। तखन ओ सभ श्वद्ध कऽ दै छलाह ह्नक अ्रदगोछ-ब्रँदगोछ। अपन आन-बाँन-शानक वक्षार्थ सोचि आगाँ बँठ्ाबाँक चेष्टाकबैत बहै त छलाह। म्दा फेव रएह वामा रएह कठोनबाँ। किएक तऽ अपनाकेँ कतिया कऽ वखबाँमे हानि होएन। किछो अहंकावी तँ किछो निवंकावी कहनि। म्दा हम ह्नकव सोचें ह्नका चमकोवी ब्र्ह्मै छी। अपन नव आँखि-पाँखिसँ ओ उत्कृष्ठ वचनाकावक रूपें देखाव भेना। अववि न्दजी जखन कविता निखब श्वद्ध केननि तखन ओ खेत उपजाउ नै छनै। उस्सवछनै, पवती पड्ान छनै। अपने नित नव वचनासँ ओकवा जोति कोड्ा दूनू पक्षकेँ चिचित कवबाँक सफन-असफन प्रयास कबैत वहनाह। एक दिस बंशानुगतवा पवंपवानुगत अपन सनातनी सोचकेँ वखननि तँ दोसव दिस सामंती सोचसँ पीड्ात समाजक ओछ वज्ञकेँ चिन्हित कऽ वचनामेक रूपें चवियबैत वहनाह। ह्नक वचनामे उँच वज्ञक संग निम्न वज्ञक समाजिक दशा-दिशा एकै संग अभवि कऽ सोझा अबैत वहन। कतौ अहंकावक समावेश नै। सगबो अपन सोचकचिवहावा खेनैत सबँ वचना समाजक सबँ वज्ञसँ उखड्ा सोझा आएन अछि। एक कविक मानसिकता जे झाँपन चीजकेँ उघावि सोझा आनए तकव माँजनकनाकाव छथि अववि न्द जी। एखनो अपन उत्कृष्ठ समाजिक आ गमैया पविवेशकेँ सहेजि कऽ वखने छथि। समाजक सबँ पक्ष जाहिमे अपन समवेत स्ववउभाववाँक प्रयास मे सफन देखाछ छथि।

গামমে বহি কঽ খবরিন্দজী গমৈযা সোচকেঁ উঁভাবৱাঁক পূর্ণ প্রযাস কৰৈত বহলাহ। ও জমীঁদাব মাত্র নৈ এ কটা গিবহথক ভূমিকাক নিরাহি কৰৈত বহলাহখিছি। তেঁ হিনকব বচনামে গমৈযা জীরন খা গামক খাচাব– রিচাব সংস্কাব প্রস্ফুটিত ভঽ সকলনি। কিছু গোটে খ পনাকেঁ গামমে বহি গমৈযা বচনাকাবকদংভ ভবৈত ছথি ক্ষদা খবরিন্দজী গামসঁ শহেব, মহানগবক জীরনক স্ব খ–
দুখ ভোগিযো কঽ গমৈযা জীরনক উঁকেৃষ্ঠতা খপন ব চনামে দেখরৈঁ ছথি। গমৈযাশৰ্দ্ধক ঠাম–
ঠীম প্রযোগ জগদীশ প্রসাদ মংডনজীক পছাতি হিনক বচনামে সহজহিঁ খভবত। 2011 মে রিহনি কথাপব কিছু গোটে জহন মৌহবি শ্বৰু কেলথিতখন খবরিন্দ জী ওহি শৰ্দ্ধক প্রবান প্রযোগী বহথি। ৱাঁত রিহনি শ ৰ্দ্ধ দঽ উঁঠনৈ তঁ খবরিন্দজী কহলখিন জে মৌহবি ক বঽ ৱঁনা সভ গিবহত নৈ হেতা। ৱঁটৈযাপব খেতী কব ৱৈঁত হেতা। হম খপনে খেতপব বহি সভ দিনসঁ " রিহনি" কেব উঁপভোগী ছী। খাগাঁ কহলনি জে হমব করিতা খা গজলমে রিহনি শৰ্দ্ধ খাওকব খভিপ্রায ৱঁহ্ ত পহিলে খভবি সোনা খারিঁ চুকল খছি। হমবা ক হৱাঁক জে খবরিন্দজী গমৈযা শৰ্দ্ধরলীপব সেহো মজগূ ত পকড় ৱঁনৌনে ছথি।
করিতাক পছাতি খপন কথামে সেহো ও গমৈযা পবি রেশকেঁ দেখৌনে ছথি। গামক সমাজিক ৰূপবেখাকে উঁজাগব কৰৈত বহলাহ খছি। হিনক কথা সমাজক সভরস্থাক প্রতিনিধিত্ব কবৈএ। করিতে জকাঁ উঁচা খা নিম্ন রর্গীয সোচক ৱীচ প্বল জকাঁ কাজ কবৈএ হিনক বচনা। করিতা সংগ্রহ "পবতী টুটি বহল খছি" কেবহি

ন্দী (খন্বরাদ খজিত খজাদ)সঁ হিঁদী জগতমে সেহো হিনক বচনা পসবন। ঐ সম্ভহঁক পঙ্কাতি খাএন "ৰঁহ্ কপিযা প্রদেশমে"। ওা গজন সংগ্রহ হিনকাবচনামেক কপেঁ খাবো সক্কত কেনক খছি। ওনা তঁ ঐমে প্রকাশিত গজন সনাতনী গজন রা সংগোব জকাঁ ৰঁহবহীন, ছঁদ হ্মও খছি। হ্মদা ৰঁহবন্বআহোগত হিনক গজন সভমে গমৈযা সোচ, গমৈযা শৰ্ঙ্কক সমারেশ খছি জেঁ কাবণসঁ হিনক গজনমে প্রবাহ জকাঁ খারি গেন খছি। ঐ তবহেঁ খবরিন্দজীবচনাবত বহি গমৈযা শৰ্ঙ্ক খা একব চিত্রণসঁ পবতী পড়ন বচনাক জমীনকেঁ তোড়ৰাঁক সফন প্রযাস কেননি। তঁগ হিনকা গামক কথাকাব রা করি কহৰাঁমেহমবা কোনো সংকোচ নৈ। রিশেষ কঃ গাম–

সমাজক খা ওকব শৰ্ঙ্কক কোনো ঘটনাকেঁ দেখাব কবৰাঁক নীযত হিনকা খপন সমকালীন বচনাকাব সভসঁ ৰেঁসীখাগূ ৰঁঠ় । দৈত খছি।

<u>খবরিন্দ ঠাক্কবজী সংগ সাক্ষাকোব খান–নাগন</u>

1 # রর্তমান গজ়ন কোন দিশা মে খছি ?

রর্তমান গজ়নক দিশা হমবা ৰঁহ্ত স্পষ্ঠ খা সোহ্মবাএন নহি ৰুঁহ্মাগত খছি। কনে ভুতনাএন খা ভ্রমিত জকাঁ খছি। হমব খপন গজ়ন (জেকবা কিছু গোষ্ঠে খাজাদ গজ়ন রা গজ়নন্বমা কহএ ছথি) মে জোব রিচাব খা রিষয পব বহন খছি, ৰাঁত কহৰাঁ পব বহন খছি খা এহিমে কনেক হদ তক র্যাকবণক সভ খংগক খেযান নহি বাখন গেন খছি। ওা র্যাকবণক খনদেখী সপ্রযাস নহি, সংশযসঁ ত্রান পএৰাঁক নেন খছি। “সংশযামো রিনশ্যতি” হমব ধ্যানমে বহএ খা জখনি

व्याकरण बाँधा बनि संशय उपेन्न करए, हमर अवचेतनक अनायास प्रयासक परिणामस्वरुप कात होइत चलि गेल अछि। व्याकरणक बन्धनसँ भागब आ ओकर समन्वक करी सेहो हमर सीमा भए सकैत अछि किन्तु ओ बात अलग। एक बातमे हमरा कनिकहु संशय नहि अछि जे स्फुर्ट पहिर लेब मथदुःखीक उपचार नहि अछि आ अपन घड़ ेसँ संसारभरिक घड़ ी मिलाएब उचित नहि अछि। अन्य बहुतरास गजलगोसभक जोर गज़लक व्याकरणपर छलि किन्तु हुनकासभक नाराजगीक संभारनाक बादो हमरा ऐ कहएमे संकोच नहि जे एहि बैसीतर गज़लसभमे " क्या बात है ! " बला बात नहि आबए छै, कहनमे उक नहि बुझाएा छै। एतय हमरा महर्षि अवरिन्दक कथन " मात्र ब्रेन-माएन्डसँ जुनि लिखू। भारना आ रिजनक आमोक भीतर पहुँचिकए लिखब करिता लिखबाक सही ढंग अछि..." आ दिनकरक कथन " किछु करि एहनहु अवश्य होएा छथि जे मात्र काफ़ी आ आ अन्त्यानुप्रासक संकेतपर अनुकूल भार जुटाकए पूरा गज़लक-गज़ल लिखि जाइ छथि, किन्तु काव्य-रचनाक सामान्य पद्धति ऐ नहि अछि। करिता त प्राय: एहि लेल रचल जाइत अछि जे करिक हृदयमे पहिने भार आबैत अछि आ तखनि ओ ओकर अनुकूल छंद, रीति आ तुकक चयन करैत अछि अथरा आरश्यकता पड़लापर छंदोबन्धहिकें तोड़ि दैत अछि......" उद्धृत करबाक बैगरता बुझाएत अछि। कतओ हम पहिने लिखि रा कहि चुकल छी जे मैथिलीक मिजाज गज़लक बहुत नजदीक नहि छै। ऐ अलग बात जे मैथिलीमे गज़ल लिखब असंभर नहि छै किन्तु कठिन त छैहे। जखनि साहित्य अकादमीसँ रिधिरत स-वाशि प्रमाणपत्र प्राप्त माया

ब्राह्मण दिग्गज एहि मामलामे थस मावि सकए छथि आ एहि थस मावएकेँ सकावि सकए छथि त किछु ने किछु गड़बड़ त कतह् छै ! तेँ हमरा लागैए जे साहित्यकाव लोकनि गज़ल कहैत बहुत दुस्साहस त कविते बहता किन्तु गज़लक स्थान मैथिलीमे ब्रह्म सम्मानप्रद बहत आ एकवा महत्वक विधा मानल जएतैक ,से संभावना कम जकाँ छै ।

 # 2 # अहाँसभ हिन्दीक दुष्यन्त कुमाव, अदम गोंडवी आदिकेँ अपन आदर्श मानै छिऐ ओ सदा हुनकव सभहक गज़ल पूवा-पूवी बहव-ओ-व्याकवण मे अछि, तखन मैथिली गज़ल मे अहाँ व्याकवण नै मानै छिऐ तकव की कावण ?

 साहित्य लेखन कोनो आगसँ प्रावम्भ भेल काज नहि छै । ई आदिकालसँ अनवरत चलि वहल अछि आ एकदमसँ विभिन्न आ विवोधाभाषी दौवसभसँ गुजवल अछि । कहिओ वन आ ओतय निर्मित आश्रमक एकान्तमे एकव साधना होइत छल आ कहिओ महल-वाजमहलक प्रश्रयमे एकवा बुनल-गुनल जाइत बहल अछि । आश्रमक लिखल साहित्य प्रकृतिक बुनल सांसाविक संवचना आ स्वयंकेँ बुझबाक प्रयासक प्रतिफल छलै जखनिकि वाज्याश्रयक साहित्य अपन मालिक-मलिकावक आमोद-प्रमोद आ हुनक कृपा प्राप्त कवबाक लेल होइत छलै । अजुका युग तहिसभसँ बेलगाम अलग युग अछि आ एकव साहित्यक उद्देश्य बदलि गेल अछि आ तेँ वर्तमान साहित्यक ओजन आ तवजू-बाँटिखवा वएह नहि भए सकैत अछि जे पहिलुका युगक छल । जखनि मम्मटैक कहब छलि जे काव्यक लेल सम्मितत्रयीक कान्तासम्मितक उपयोग हएबाक चाही त एकव पाछू ई उद्देश्य आ

अभिप्राय कहल हएत जे काव्यमे भावक अभिव्यक्ति लेल निर्धारित सार-भारसँ कएल जाय जाहिसँ पति-परमेश्वर,राज-राजेश्वर आदि सत्ता-प्रतिष्ठान केँ नीक लागनि, रोष नहि होअनि । आब लोकतंत्र अछि आ साहित्यकारकेँ अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता प्राप्त अछि, लेल भूमिका सेहो बदलल अछि आ साहित्यकार कोनो प्रजापालकक अधीनक पेटपोस्वा नहि अछि । ओकरा लग चुनौती छै जे ओ राजिके रीत कहए, ठोकिकए कहए आ लोकक रोष-निन्दाक परवाह नहि करए । तखनि कोनो कवि अपन अभिव्यक्ति लेल कान्तासम्मितक ठामपर प्रभुसम्मित वा स्वच्छन्दसम्मित विधिसँ कविता करत त ओकरा शास्त्रविरोधी कहबे उचित हेतए की ? रामधारी सिंह दिनकर कहै छथि जे हुनका समयमे कविता करबासँ पहिने पिंगल पढ़ब अनिवार्य छल । आब कतेक कविकेँ पिंगलक परिभाषाहु बुझल छनि, पढ़बाक गप जाए दिअ । पिंगलक अवहेलनाक संग प्रस्ताव साधबाक काज आ गण, मगण, भगण, नगण आदिक ग्रंथक आदि छंदक प्रथम गण अशुभ नहि शुभ राखबाक परिपाटीसभ सेहो भूतकालक वस्तु भए गेल अछि । अनेक प्रतिष्ठित आधुनिक कवि अपन कविताकेँ छंदक बंधनसँ मुक्त कए लेलनि अछि ।

एहिना गद्यलेखनक लेल सेहो मारिते बात नियमसभ बनल छल । साहित्य दर्पणमे कहल गेल अछि जे " कथामे सरस वस्तु गद्यमे कहल जाएत आ ओहिमे कतहु आर्या छंद सेहो हएत, कतहु वक्त्र आ अपरवक्त्र सेहो हएत । प्रारम्भमे पद्यबद्ध नमस्कार हएत आ फेर साधु-प्रशंसा आ दुर्जन-निन्दा हएत। " आब कतेक कथाकार एकरा जानए छथि,मानि दए छथि आ ओकर

पानल कवएअ छथि ? आब एकव कोनो आरथ्कता- उपयोगिता नहि बहल आ तें कोनो कथाकाव एकव पालन नहि कवएअ छथि आ जँ केओ कवता त पुवातनपंथी आ पवम-बूढ़ मानल जएता। हजावी प्रसाद द्विवेदी पुवना युगक चर्चा कवैत कहएअ छथि जे " पवरर्ती गद्य-काव्यमे नाना-भाँतिसँ अलंकृत कए स्वलनित गद्यमे कथा लिखबाक प्रधान भएअ गेल छल। एहिमे कविकें कथा कहबाक धड़फड़ी नहि अछि। ओ रूपक आ दीपक आ श्लेष आदिकें अपन प्रधान कृतित्व मानि लैत अछि.........ओ कोनो एहन अवसवक उपेक्षा नहि कवत जतय ओकवा एकटा उत्प्रेक्षा, दीपक या रूपक या विवोधाभाष या श्लेष कवैक अवसव भेटि जाएअ।" दण्डी, सुबन्धु आ बाणभट्ट एहि देशक तीन नमहव गद्यकाव मानल जाग छथि। सुबन्धु त अपन ग्रन्थक आवम्भहिमे प्रतिज्ञा कएअ लेने छला जे आदिसँ अंत तक श्लेषक निवाह कवता। बाणभट्टक कथन छनि – " स्वस्पष्ठ मधुवालापसँ आ हार-भारसँ नितान्त मनोहव तथा अनुवागवश स्वयमेव शय्यापव उपस्थित अभिनवा वधु जकाँ सुगम कलाविद्या संबंधी वाक्य-विन्यासक कावण सुश्राव्य आ वसक अनुकवणक कावण विन प्रयास शब्द अर्थकें प्राप्त कवएबला कथा केकव हृदयमे कौतुका-युक्त प्रेम नहि जनमाबैछ ? सहजबोध्य दीपक आ उपमा-अलंकावसँ सम्पन्न अपूर्व पदार्थक समावेशसँ विवचित आ अनवव त श्लेषालंकावसँ किंचित दुर्बोध्य कथा-काव्य, उज्ज्वल प्रदीप जकाँ उपादेय चंपक-पुष्पक कलीसँ गूथल आ बीच-बीचमे चमेलीक पुष्पसँ अलंकृत घन-सन्निविष्ठ मोहनमालाक भाँति केकवा आकृष्ठ नहि कवैछ ? " उपवोक्त तीनू श्रेष्ठ गद्यकाव जाहि गुणाढ्य पण्डितक बृहत्कथा (वस्तुत: ' बड्डकहा')

के ऋणी मानल जाऽ छथि ताहि ग्रणाढ्य पण्डितक कथासभमे भाषागत अनेकरणक दिस ओतेक ध्यान नहि अछि जतेक कथाक रञ्जरय रस्तु दिस। हिनकर कथासभमे 'कहानीपन' ततेक प्रचूर मात्रामे अछि जे आन कोनो अनेकरणक रहॅगबते नहि बूझाएत अछि आ तेँ ई ग्रन्थ प्रायः दू हजार बर्षसँ भारतीय कल्पनाकेँ अभिभूत कएने रहल अछि। ई मूलरूपसँ प्राकृतमे लिखल गेल छल आ प्राकृतो की त जार्ज ग्रियर्सनक अनुसार पैशाची प्राकृतमे। नियम-कानून, सिद्धान्त आ व्याकरणक दुरूहता त संस्कृत भाषाक उपेक्षि अछि आ संस्कृत साहित्यमे विद्रोहक परम्परा नहि रहल अछि। एहि देशमे विद्रोहक पहिल बीया गौतम बुद्ध खसौलनि, ओ अंकुरित चाहे जहिआ भेल हुअए, पल्लवित आ पुष्पित ओ तखनि भेल, जखनि सिद्ध-संतसभक समय आएल। विद्रोहक तेवरबहिक संग सिद्ध लोकनिक प्राकृतमे लिखल साहित्य आधुनिकताक राहक रॅतल आ एतहिसँ परम्परासभकेँ चुनौती भेटैए लागल। प्रवान परम्परासभक टुटैनाक बाद जे नव परम्परासभ काएम भेल ओहि मे सभसँ प्रमुख परम्परा ई अछि जे साहित्यिक अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता कोनो नियमकेँ नहि मानैत अछि। साहित्य आ समाजक एहि स्वतंत्रता, आधुनिकताक युगमे सेहो अनावश्यक बँधनसभकेँ यथारत मानल जाय से आग्रह-दुराग्रह किऐ राखल जाय ?

एहिना नाटकक लेल आचार्य भरतमुनि सल-सल विद्वानक रॅनाएल कतेको विधान अछि जे समयक संग अनुपयुक्त होऽगत प्रचललसँ रॅहराए गेल अछि। जयशंकर प्रसादक पहिल चारिटा नाटक प्रवलका रूढिक अनुसार नांदी, सूत्रधार, स्वगत, विष्कंभक आदि नाटक

শাস্ত্রক নিযমসঁ জকড়ল অছি কিন্তু বাঁদক নাটকসভমে এহি প্রাচীনতাক রঁহিস্কাব দেখাগ পড় ৈত অছি। তেঁ ওহিমে মংগলাচবণ, আকাশভাসিত নাঁদী, সূত্রধাব আ ভবতরাক্য নহি অছি। এতেক তক জে হলা, যজ্ঞ আদি জে রাঁত নাট্যশাস্ত্রক অনুসাব রর্জিত অছি, নাটকমে ওকবহ্ রেঁবোক-টেক প্রযোগ ভেল অছি। নাটককাবক করি হএবঁ অনিরার্য নহি বহল আ পবম্পবাগত নৌ অংকক রাধ্যতা ট্টি পাঁচ অংকসঁ উতবৈত একাঁকী পব পহুঁচি গেল।

এহিসভ উদ্ধবণক পবিপেক্ষ্যমে ওা রেঁধড়ক কহল জাএ সকৈত অছি জে সভক সভ প্রাচীনহি অরচীন আ শাশ্বত নহি ভএ সকৈছ আ তেঁ র্যাকবণ আ রিধান অপন ঠামপব বহও, জিনকা অবঘএ ছনি সে একব উপযোগ-প্রযোগ কবথ্ কিন্তু একব অন্বকবণক কোনো রাধ্যতা রর্তমান আধুনিক যুগক সাহিত্কাবপব নাগূ কবরঁ রঁহ্ত সমযানুকূল নহি বুঁঝাগছ। পাছু ঘ্বি জএরাঁক প্রযনেমে রঁহাদ্বী আ উদ্ভটতা জতেক হ্অএ বুঁদ্ধিমানী একদম্মে নহি অছি। অজ্কা রর্তমান সংঘর্ষময, সংকটময অছি। সৌঁসে পৃথ্বী জেনা ব্রহ্মান্ডক কড় াহীক অদৃশ্য তপ্ত-বসমে খৌল বহল অছি। প্রতিক্ষণ দুনিযাক বাঁহবী আ ভীতবী নকশা রঁদলি বহল অছি। কালি তক জে ধ্রুব-সত্য ছল, আগ ও অস্থিব আ ডমাডোল প্রমাণিত ভএ বহল অছি। আগ জখনি হমবাসভক সোঝাঁ নর-নর ওঝবাএল সমস্যাসভ স্ববসা জকাঁ ফঁহ রঁউলে উপস্থিত অছি তখনি প্ববনকা কলাসভক লেল হায-হায কবরঁ ফিজূল অছি। প্ববনকা গ্রন্থসভক সংস্কৃতমে জতএ র্যাকবণক রিবোধ ভেটৈছ ওতয পাঠককেঁ মন বাখরাঁক লেল কহল জাগত অছি - ' আর্ষরাক্যং প্রমাণম '

अर्थात जनि देखू व्याकरण, देखू जे ऋषिक वाक्यक आमो की अछि। अहाँ त रँस ओहि आमेस्फुर्तिकें नअ लिअ, शेषकें ओकरहि चिन्तापर छोड़ि दिअ। मम्मट, भामह, राजशेखर, आनन्दवर्धन, कुन्तक आदि अनेक आचार्यक प्रदत्त शास्त्रीय नियमक रॉरजूद शास्त्र स्वयं साहित्यक स्वायत्तताक पैरोकारी करैत अछि। कहल गेल अछि जे कविता स्वत:प्रमाण अछि, ओकरा अपन प्रमाणीकरणक लेल अपनासँ इतर कोनो प्रमाणक अपेक्षा नहि। अन्तरवैशिष्ट्यक कारणें कविताक उपकरण लौकिक उपकरणसँ भिन्न भऽ जाइत अछि, ओकर भाषा सेहो लौकिक सामान्य भाषासँ अलग भऽ सकैत अछि। अज्ञेय कतहु लिखलनि अछि जे लेखक अग्निगर्भा होइत अछि – लीक तोड़ैत अछि, नव-नव प्रयोग करैत अछि आ प्रयोगसँ नव जीवन-सत्य पाबैत अछि।

अपन गजल-संग्रह "रँहक्कपिया प्रदेशमे" के अपन बाँतमे हम एहि दिशा थोड़ के-किछु कहलें छी। आन रँह्त गोष्ठे जकाँ हमरो लग रँह्त बास अवगुणसभ अछि, धैर्य-धनक कमी सेहो अछि। विश्वविख्यात शायर सभ सम्पूर्ण जीवनमे जतेक वचलनि तेकर रँबारँबी हमसभ कम समयमे ओतवें लिखिकअ कवअ चाहअ छी त ओकर परिणाम जएह होनाइ छै। परिमाण(quantity) त पूवि गेल एकव स्तव (quality) केहन भेल से फैसला त आबँ भविष्यहिक हाथमे अछि। दुष्यंत कुमार आ अदम गोंडवी प्रिय छथि किन्तु हम हुनकासभक पासंगहुमे नहि छी से हमवा बुझल ए। हम "समान-विद्या-वयोऽलंकारैः अखिल-कला-कलापालोचन-कठोरमतिभि:, अतिप्रगल्भै: अग्राम्य-परिहास-कुशलै:, काव्य-नाटकाख्यानकाख्यायिका-लेख्य-

व्याख्यानादि–क्रिया–निपुणै:, विनय–व्यवहारवाग्भि:, आमेन:प्रतिबिम्बैरिव राजकुमारै:सह रममाण “ नहि छी, अवविन्द ठाकुर छी आ अपन सीमासभक संग अभिन्न जकाँ अवविन्द ठाकुरहि रहए चाहए छी।

3 # ओना प्रवस्कार त प्रायोजन लेल होएछे मुदा मैथिलीमे प्रवस्कार भेटितै साहित्यकारक गति ककि जाए छे। एना किऐक ?

प्रवस्कार जँ प्रायोजन लेल देल जाएछे त ओ आन कोनो भाषा आ संसारक गप भेल। सएह जँ मैथिलीओमे होएतए त से मैथिली केना भेल। मैथिलीक प्रवस्कारक सूचीसभ अपन व्यथा–कथा अपनहि कहि रहल अछि , स्वनएबँला कान चाही ,देखएबँला आँखि चाही , सिहवएबँला आमो चाही। बाँन गंगाधव तिनक केव गप मन पड़ैत अछि जे कहने छला जे महान उपलब्धि सवनतासँ नहि भेटैत अछि आ सवनतासँ भेटैल उपलब्धि महान नहि होएत अछि। एहि कथनक परिपेक्ष्यमे मैथिली प्रवस्कार आ प्रवस्कृत लोकक मून्यांकन सवनतासँ कएल जाए सकैत अछि। ओना प्रवस्कार भेटैलाक बाँद साहित्यकारक गति ककि जेबाँक प्रश्न बँह्आयामी अछि। ओ बँहुत बाँतपव निर्भव अछि – साहित्यकारक व्यक्तित्वपव, हुनक प्रतिज्ञ पव , प्रवस्कारक प्रति हुनक दृष्टिकोणपव , प्रवस्कारक वाशिपव ,प्रवस्कार–विशेषक विधान आ वितवण–प्रणालीपव आदि–आदि। जीवकान्तक खिस्सा मन पड़ैए। अनेक वर्षसँ कतावमे लागल वहथि आ नम्बँव अएबेँ नहि कवनि। जाहि बेँव प्रवस्कार भेटैबाँक पूर्वाभास आ संभावना रहए, ताहि बेँव हुनक पोथीकेँ फेवसँ नरका गत्ता पहिवाएल गेल आ हुनका एलन गिन्सवबँग आ वाजकमल चौधवीक मिलन–

জ্নন খরতাবরঁনা করি ঘোষিত কবএরঁনা খগ্নিপ্বষ্পক ভঁগিখাএন টিপ্পণিক সংগ প্বনর্প্রস্তুতিকবণ ভেন ছন। ওহি প্ববস্কাবসঁ কিন্তু জীরকান্তক মন নহী খঘএননি খা শিশ্ব-কার্য্যপব প্ববস্কাবক ঘোষণা হোগতহি ও শিশ্ব-কার্য্যক পথাব নগারঁএমে ভিড়্গি গেনা খা খন্তত: ওহো প্ববস্কাব ও নৈএ নেননি। হবা প্ববস্কাব নেন ও ঘ্বিকএ হবা ভেএ নহি সকৈত ছনা খা জীরন জঁ দগা নহি দেনে বহতিখনি ত খন্বরাদহ্ক প্ববস্কাব ও নৈএ কএ মানিতথি।

মৈথিনীক খধিকতব প্ববস্কাব প্রাসোহন নেন নহি খপন নোককেঁ উপষ্কৃত কবরাঁক নেন দেন গেন খছি। জঁ রাধ্যতারশ কোনো স্বপাত্রকেঁ ভেষ্টনহ্ খছি ত সে হ্নক প্রতিনিধি খা শ্রেষ্ঠ সংগ্রহপব নহি, রেঁবপব ভেটি গেন জএহ-সএহপব। ভীমনাথ ঝাকেঁ জহি পোথীপব খকাদমী প্ববস্কাব ভেষ্টন তাহিসঁ রেঁসী শ্রেষ্ঠ খা উত্তম পোথীসভ হ্নকা হাথেঁ খাকাব নেনে খছি খা একরেঁব কী, চাবি রেঁব প্ববস্কাব নেরাঁক পাত্রতা ওহি পোথীসভক খছি। ওা ত এক তবহে ভীমনাথ ঝাক সংগ খন্যায ভএ গেন। হ্নক প্ববস্কৃত পোথীকেঁ হ্নক প্রতিনিধি বচনা মানি খান ভাষাক পাঠক হ্নকা প্রতি তেহনে ধাবণা রঁনাএত জে রস্তুত: হ্নক ছনি নহি। ভগত সিংহ কহনে ছনা জে " কোনো সমাজ খথরা দেশকেঁ চিন্হরাঁ নেন ওহি সমাজ খথরা দেশক সাহিত্যসঁ পবিচিত হএরাঁক পবম খারশ্যকতা হোগত খছি কিএক ত সমাজক প্রাণক চেতনা ওহি সমাজক সাহিত্যমে রিদ্যমান বহৈত খছি।" খখনি জে হানত খছি তাহিমে প্ববস্কৃত খধিকাংশ মৈথিনী পোথীসঁ এহি ক্ষেত্রক জে পহিচান রঁনৈত খছি সে খহন্ত পিছড়ন, খতীতজীরী খা

आधुनिकतावितोधीक अछि। प्रवासीक भेटैएसँ पहिने वाजमोहन झाक 'भनहि विद्यापति' आ 'टिप्पणीवादि' छपल बहुत त ओ मजाकमे कहैत छला जे कहाँ एहि दुनूमेसँ कोनो पोथीपर ने अकादमी हमरा प्रवासीक दए दितए आ हम नाजे मरि ने जाइ। ओना गति हुनकाँक मामला विशेषतया ओहने लोकक संग भेल अछि जिनका प्रवासीक देखाकहि लेल साहित्यकार बनाएल गेल वा मानल गेल।

प्रवासीक-केन्द्रित लेखन छतहर-लेखन अछि। ई ओहेन लोकक काज अछि जेकरा लेल सफलता प्रमुख छै आ सार्थकता गौण। एहन मानसिकताबला लेखक भस्मासुर अछि आ पहिने अपनहि निजताक हत्या करैत अछि। एहन लेखकक लेखन निरर्थक अछि, साहित्यिक दृष्टिकोणसँ निकृष्ट आ समाज लेल अहितकर अछि। एहन लेखन दीर्घजीवी नहि भए सकैछ आ अधिकतर मामलामे एहन लेखन प्रवासीक खैरात भेटितहि विस्मृत भए जाइत अछि, मरि जाइत अछि। अपन लेखक आ लेखनक सार्थकताक पवित्र उद्देश्य आ कामनासँ लिखनिहार जे शुद्ध साहित्यकार छथि से प्रवासीक भेटैनाक बाटो निखैत रहला अछि , लिखबाँक गति भनहि कने कम भए गेल हुअए।

4 # वर्तमान समयमे मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक की हाल छै ?

वर्तमान समयमे मैथिली पत्र-पत्रिकाक हालपर हिन्दीक प्रसिद्ध जुमला कहल जाए सकैत अछि – "रही चाल बेढंगी !" बहुत दिनसँ नियमित प्रकाशित होइत तीन टा मैथिली पत्रिका हमरा देखाइत अछि – 'मिथिला दर्शन' , 'घर बाहर' आ 'समय

सान' । एकटा 'प्वर्रोत्तिव मैथिन' सेहो एमहव निवन्तव उँप्नर्ब्ब भ्एब वहन खिछ । एहि सभमे 'प्वर्रोत्तिव मैथिन' मे कखनिओ कए सम्पादकक ओविश्वाओन ओ विवाद मोन नेर्रोक साहस देखाग दैत खिछ किन्तु एकवा छोड़ि दोसब कोनो पत्रिका नग सम्पादकीय दृष्टि (vision) के खभाव जकाँ बुझाएत खिछ । जे खनाए–वॅकच भेंटैन से छापने गनहुँ । खपन दृष्टिकोणक खनुसाव कोनो योजना नहि, कोनो पविकल्पना नहि, कोनो मापदण्ड नहि, कोनो स्तव नहि । मिथिना दर्शन पहिने वचनाकावसभसँ विशेष वचनाक नेन खाग्रह कवैत छन, से वैगवता खाव प्राय: हुनकासभकेँ नहि बुझाग छनि । 'घव वाँहव' त ओहि चेतना समितिक प्रकाशन खिछ जे वाजनीतिक थान–कादोमे खापादमस्तक नेपित ओ ताहिमे ऋदित खिछ । संस्थाकेँ येन–केन–प्रकावेन खपन चाँग्ववमे वॅकोटिकए वाखवॅ ओ खपन फोटैके संग खपन विज्ञापन ओ खभिनन्दन कवाएवॅ, एतवेॅ उँद्देश्यसँ ओकव मानिक–मनिकावसभ ओहि पत्रिकाकेँ नियमित कए कए वाखने छथि । कहवॅाक नेन एमहव ओहिमे साहित्यिक सामग्री वॅठन खिछ किन्तु छापता ओ सभ ओएह जे हुनक खनुकून छनि , प्रतिकून नहि । स्थिति ई खिछ जे समीक्षाक नामपव सेहो कोनो खानोचना खपेक्षित नहि , मात्र ऋँह पोछवॅाक नेन प्रशंसा निखू वा वाँतकेँ गोनिखाकए निष्कर्षहीन वॅतकुट्टन कए ससवि जाउँ । 'समय सान' त बुझू जे 'सिंगन मैन प्राडक्ट' खिछ । एकहि व्यक्ति द्वावा विभिन्न नामसँ सौंसे पत्रिकाक सभटा खार्टिकिन ओ पत्रिका पूर्ण । ई पत्रिका प्रमाणित कवैत खिछ जे मैथिनी विकृष्ट, प्रचण्ड ओ ध्ववक्षव निवखाड़सभसँ पविपूवित ओ मातवॅव खिछ । ओना ई खपन संपूर्ण

कनेरबमे बाजनीतीक पत्रिका अछि आ एहिमे साहित्यिक बचना मात्र रिध प्रबैराँक नेन अचाब-चर्चानी जकाँ देन जागत अछि आ तें एकबासँ एहिसँ रैसी अपेक्षा कबरॅ उँरितत् नहि। आरॅ अनियतकानीन भेन 'अंतिका' एहन एकमात्र शुद्ध साहित्यिक पत्रिका अछि जेकबा नग एकटा फबिष्ठ आ स्पष्ट सम्पादकीय दृष्टि छै आ जे योजनारॅद्ध तबीकासँ काज कबैत बहन अछि। अपरादस्वरूप पूर्वप्रकाशित बचनासभक माध्यमसँ खानापूबीक रूपमे रॅहबाएन एकब किबण-प्रसंग सन अंक सेहो अछि किन्तु एकबा हम सम्पादकक असफनता नहि, हुनक भरोसाक असफनता मानए छी। एहि पत्रिकाक निबन्तबतामे आएन रॅाधा जे कोनो काबणसँ हुअए, दुखी कबैत अछि।

5 # चेतना समितीमे अखनो दनितरस्त्रक प्रवेश निषेध छै। एकबा अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ ?

मिथिना, मैथिनीक नामपब संकीर्णता, पाखण्ड, प्रपंच आ रिभिन्न प्रकाबक धूर्ततासभ संस्थारॅद्ध भेन अछि। सार्बजनिनता - सामाजिक-एकताक नाबा पब रॅनन आन अनेक संस्था-संगठन जकाँ चेतना समिति सेहो स्वयंकें मैथिन-महासभाक क्षुद्र-संकीर्णताक खतियानी उँत्तबाधिकाबी प्रमाणित कबराँक नेन जान-पबान अबोपने अछि आ एकबा नेन निबन्तब एकटा मृदा-संस्कृतिक गौबरगानक अष्टयाम आयोजित कबैत बहैत अछि। एकब कर्ता-धर्तानोकनि कें एतबॅ ज्ञान नहि छनि जे मृदा-संस्कृतिक गौबरगान प्राय: शत-प्रतिशत अबस्थामे जिन्दा-संस्कृतिक उँपेक्षा-अबहेनेनाक बुद्धि-रिहीन प्रयासक क्रममे होगत अछि। क्षुद्र व्यक्तिगत बाजनीतीक-आर्थिक नाभक आकांक्षासँ कबिआएन-गन्हाएन

হাথক উঁপকবণ ভএ চেতনা সমিতি অপন সংপূর্ণ সংবচনামে সাহিত্য-সংস্কৃতিক কব্রিস্তান বঁনি গেন অছি। এতয জীরন্ত নোকক হৃদয কনপৈত অছি আ দিরংগত যাত্রী জীক আমো হরৌঠকাব কানৈত অছি জে একব স্থাপনাক গপ ভাষা, সাহিত্য আ সংস্কৃতিক রিকাসক পরিত্র উঁদ্দেশ্যসঁ সোচনে ছনা।

চেতনা সমিতিক হম সপনৌক আজীরন সদস্য ছী কিন্তু তেকব প্রমাণ নেন হমবা নগ মাত্র একটা বসীদ অছি জে হমব কোনো ফাগনমে কতহু ঘোসিআএন হএত। সদস্যতা-প্রাপ্তিক বাঁদহিসঁ একব কোনো গতিরিধি দিআ কহিও হমবা রিধিরত কোনো সূচনা নহি ভেটৈন অছি আ তেঁ একব সংগঠন আ সংচাননমে হমব কোনো ভাগীদাবী নহি বহন অছি। একব কর্তা-ধর্তাসভক অগ্রঐত-পছঐত ধবনিহাবসভকেঁ ছোড়ি আনসভক হান হমবহি সন হএত, সে অনুমান কবব কঠিন নহি অছি। একমাত্র গএহ তথ্যসঁ এহি সংস্থাক সার্বজনিকতা আ দশা-দিশাক স্থিতিক থাহ নগনে ভেটৈ জাএত। এহি সংস্থামে দনিত রর্গক প্ররেশ-নিষেধক গপ ছোড়ূ, গৈব মৈথিনহিক কোনো মানি নহি ছৈ। গৈব মৈথিনসঁ হমব আশয গৈব মৈথিন ব্রাহ্মণসঁ অছি আ জঁ কেও দনিত রিধাযক সহ সাহিত্যকাব রিনষ্ট পাসরান রিহংগম সন সন কিছু উঁদাহবণ দএ কএ হমব বাঁতকেঁ কাটৈবাঁক ব্যাঁত কবতা ত তেকবো নেন হমবা নগ যথেষ্ঠ তর্ক অছি। অংগ্রবীপব গিনাগত জে গৈব-মৈথিন অগড়া, দনিত রা পিছড়া-অতিপিছড়া কোনো ব্রহ্মবাঁবাঁক ধবিযা-ঢেকো পকড়ি অসগবহি প্রবস্কাব-সম্মান-নিমংত্রণক ভরসাগব তবি গেন ত তবি গেন কিন্তু সে সভ নোক অপন সমাজক প্রতিনিধি কিন্নহু নহি অছি, কিন্নহু নহি অছি।

नष्टकनियाँ-कीटसभक एकटा खनगे नसन ल्गग छै। एकवा कोनो रस्म आ जातिमे नहि गिनन जएबाक चाही। उदाहरणक रूपमे साँख्यिकीक एकटा अंकमात्र बनन ओ लोकसभ केकर धरिया आ केकर ठेका पकड़ि अपन उपस्थाव कएननि अछि से नकाएल गप नहि अछि।

ओना दोष मात्र लोहावरिष्टीक नहि अछि, लोहाक सेहो अछि। आवक्षण, सामाजिक न्याय आ स्वशासनक दू दशकक बाद्ह जँ चेतनाक हन्वमान चेतना समितिक नंकामे घुसि ओकर दहन नहि कए सकन त एहि अचेतारस्थाक दोष केकरापर ? चेतना समिति आर्थिक रूपसँ संपन्न अछि आ एतयसँ सत्ताक डगर सेहो बनैत अछि आ तेँ एहिपर कोनो राजनीतीक व्यक्तिक गिद्ध-दृष्टि नागन रहए से स्वाभाविक, सत्तानिप्सासँ बेचैन आमो एकरापर अपन आधिपत्य चाहए-करए सेहो स्वाभाविक। स्थिति विकट आ चिन्ताजनक तखनि भए जागत अछि जखनि एकरासभकेँ मथमनी बुद्धिजीवी, अचूक अरसवपरस्त, यथार्थ-विवहित यथार्थ स्रष्टा आ साहित्यक सत्ताखोवसभक खनीफ़ ारादी गिरोहक स्वार्थपरक सहयोग सेहो भेटि जागत अछि। किन्तु गहो सत्य अपन ठामपर अछि जे कायर त ओहो अछि जे अपन अधिकार स्थापित नहि कए पारए। भवि जिनगी ब्रह्म-बाबाक रर्तनीपर चनि अंतिम चना-चनीक बेरामे पचपनियाँ रर्तनी सूमए, एहन चेतनाक कोन काज ? कोनो नीक आ हितकर बात जँ व्यक्तिगत विज्ञापनक उद्देश्यसँ हएत त ओ निवर्थक अछि। भीख, दछिना आ भाभट्टक चननसँ प्रवेशाधिकार नहि भेटै छै, ओ भेटै छै संघर्षसँ, ओ भेटै छै क्रियामेक आन्दाननसँ, जेकर दीप्त उदाहरण महाराष्ट्र प्रस्तुत कएने अछि।

6 # दरभंगामे पीठ जकाँ आर सहरसा पीठ रहनि बहल छै। ई मैथिली लेल नीक की खराप ?

मैथिलीमे छात्रीरना सबद कम छै तेँ एतय ठामहि ठाम पीठहि-पीठ देखाइ पड़त, पीठक रहने अगबाइत लोक देखाइ पड़त। सहरासक क्रममे जँ विपरीत-रति नहि हुअए त स्त्री पीठभरें स्वतेत अछि, रोगी आ कमजोर लोक सहावा लेल पीठभरें सूतल या ठंगठल रहैत अछि, यद्ध आ संघर्षसँ भागनिहार पीठ देखबैत अछि आ पीठाधीशे-मठाधीश अगिला जनममे कुकुर रहैत अछि से कथा वाल्मिकी रामायणमे वर्णित अछिए। हम व्यक्तिगतरूपसँ 'एकला चलो' आ 'चरैवेति-चरैवेति'माननिहार छी आ पीठरना एहि यौगियामी, नपुंसक खेलमे हमरा कोनो अभिरुचि नहि अछि।

दरभंगाहि जकाँ सहरसामे कोनो पीठ रहल छै वा रहनि बहल छै तेकर कोनो जानकारी हमरा नहि अछि। हम लेखक छी आ लेखनकेँ अपन कर्तव्य मानए छी। मन पड़ै छथि मराठी साहित्यकार कुसुमाग्रज। नासिकमे हुनक आरासपर हुनकासँ भेंटक क्रममे दीर्घवार्ता भेल छल। चलएकाल हम हुनकासँ लिखित-संदेश माँगलियनि त ओ अपन हस्तलिपिमे हिन्दीमे लिखलनि – "लिखो, लिखते रहो, लिखने से ही कोई भाषा समृद्ध होती है।" हुनक ई संदेश हमरा लेल पाथेय रहल अछि। साहित्यक सहकर्मीसभ यदा-कदा कतहु एकत्रित भए एक-दोसराक हाल-चाल ली, एक-दोसराक रचना सुनि ओहिसँ ऊर्जस्वित आ आनन्दित होइ, से मनोकामना रहैत अछि। किन्तु लकार-भारसँ स्वार्थवशे कोनो गुट-गिरोह रहैत अछि त ताहिसँ हमरा घिन आबए ए आ एकरा हम कोनो क्षेत्रक क्रियाकलाप

নেন অহিতকব মানএ ছী ,সাহিত্যক নেন ত খাওব রেঁসী। পীঠ–মঠ কে কিছু নয্–রূপ হমবা দেখন–ভোগন অছি। জেকবা পীঠ আ মঠ রঁনৈরাঁক ওঁকাতি নহি ছৈ সে সংপূর্ণ ভোজনক অনুপ্রবৃত্তাক স্থিতিমে জুট্টা খাগএ যা থূক চাটৈএ আ এহি ক্রমমে 'তূ হমব প্রশংসা কবহ, হম তোহব প্রশংসা কববঁহ' রঁনা ক্ষুদ্রতা কবৈএ। একব পবিণামস্বরূপ ছোটৈকা–ছোটৈকা গুট–গিবোহ রঁনৈএ আ ওা পীঠ আ মঠক তুননামে কোনো কম খতবনাক আ হানিকাবক কিবদানী নহি অছি। ওা সিনসিনা, ওা তৌব তবীকা ছোটৈ–নম্হব সাহিত্যিক মাফ়িা আ রঁনবৈঁত অছি, পাঠককেঁ ভ্রমিত কবৈত অছি। এহন গিবোহসভসঁ ধোখাধড় ী কি চনন রঁটৈত অছি, কেকবো নিষ্ঠাবঠ বচনাকেঁ গুম্বঁদ চঢাএ অপ্রত্যক্ষ রূপসঁ নীক বচনাক সংগ অনদেখী আ অন্যায কবৈত অছি। ছোটৈ হ্অএ কি নমহব, এহি পীঠ–মঠক স্থাপনসঁ কঠগুরু আ মোনটৈগরাঁক ক্ষুদ্র পবিপাটী রঁনৈত অছি আ একব দুষ্পবিণামস্বরূপ অনেক একনব্যক অঙুঁঠা কটৈত অছি আ কতেকো শম্বুঁক মাবন জাগত অছি। দূ টা ডেনিশ কহারত মন পড় ৈত অছি। পহিন কহৈত অছি জে দববাঁব(এতয একব অর্থ মঠ যা পীঠ নএ সকৈ ছী) শবীফ আ মশহুব ভিখমংগা সভক জমাত হোগত অছি। দোসব কহৈত অছি জে কোনো ওমানদাব আদমী হস্তীক নেন স্বযংকেঁ ক্ষক্ষব নহি রঁনবৈঁছ। এহি দূনূ কহারতক পূবক রঁনৈত অছি একটা প্বর্তগানী কহারত জেকব ভাব অছি জে ক্ষক্ষব অর্হাঁক নেন নহি, বোটীক নেন নাংগড়া হিনবৈঁত অছি। বুঁমন্বক নেন এহি তীনূ কহারতক বিশ্লেষণ কববঁ যা ওকব আশয রঁতাএবঁ এতয আবশ্যক নহি অছি। দুভাগ্য জে মঠ–পীঠক ছুদ্মক চকচোনহীসঁ চোন্হাএন মহংথ আ চটিযা –

द्नूमेसँ केकवह् ओ ज्ञान नहि ख्छि जे जखनि पड्की ख्रा कौख्राक संयोग होगत ख्छि त ओकव पाँखि त ख्रेतहि बहैत ख्छि किन्तु ओकव कनेजी कावी भए जागत ख्छि। ओना जँ ज्ञान बहितए त ओ काजहि किए कबैत। खचवसभकें ग्रमान बहै छै जे ओकव प्रवखा घोड़ा बहै। एकव कोन गनाज ? केओ सोंगव नगाकए पछिनका दवबॅज्जा रा खिड़कीसँ भनहि स्वच्छमे पैसि जाग, मानन त जाएत ओ चोवहि।

साहित्य तकोनिक नाभक रस्तु नहि , दूबगामी प्रभावबॅना शक्ति ख्छि। जेकवा नग छाती हेतए, छातीमे दम हेतए तेकवे सन्तति (बचना) दीर्घायु हेतए। साहित्य सहितक भाव ख्छि। एहि सहितसँ बहित कोनो स्वार्थ रा नकाब भाव स्वपात्रक खहित कबैत ख्छि ख्रा तेँ ओ कतहु बॅनओ, ख्रस्वीकार्य ख्छि। साहित्यक पारन क्षेत्रमे कोनो ख्रपारन रिचाब या क्रियाक कोनो स्थान नहि हएबाँक चाही।

7 # ख्रंतिका ख्राबॅ मृतप्राय पत्रिका ख्छि ह्मदा ओकव हबेक ख्रंकमे ख्रधिकांशित: सहबसाबॅना नेखक बहैत ख्छि। ओ कतेक उँचित ?

ओ प्रश्न हमबा कनेक रिबोधाभाषी नागैत ख्छि। जखनि ख्रंक बॅहबाए बहन छै त ओ मृतप्राय केना भेन ? ओ ख्रवश्य जे ओ नियमित नहि बहि सकन ख्छि। तखनि मैथिनीमे एहन ख्रभागन कोनो पहिन पत्रिका त नहि ख्छि ख्रंतिका। बहन बॅात एहिमे ख्रधिकांशित: सहबसाबॅना नेखकक छपबॅ त हम एकबा एहि दृष्टिसँ नहि देखि पारि बहन छी। हम स्वपौनक छी ख्रा ख्रंतिकामे हमबह् बचना छपैत बहन ख्छि ख्रा मध्बॅनीखह्–दबभंगा ख्रा ख्रन्य ठामक नेखकसभक बचना हम एहिमे देखैत–

पढ़ैत बहुत छी। गौरीनाथ पहिलेक तुलनामे बहुत बेदननाह अछि – व्यक्ति, साहित्यकार आ सम्पादकक रूपमे, जे समय-काल, परिस्थिति आ मानसिक प्रभावमे स्वाभाविक अछि किन्तु हुनक संघर्ष, क्षमता, योग्यता आदिकेँ नकारब कठिन अछि। अपन अनेक सीमाक बादो गौरीनाथ/अनलकान्त मठ-मठाधीशक प्रति विद्रोह आ आक्रोशक स्वरकेँ अक्षक्षुण्ण राखने बहुत छथि आ अपन लेखन आ पतिकाक माध्यमसँ ओ एकरा निरन्तर प्रकट करैत बहुत छथि। ओ विद्रोह आ आक्रोशक स्वर अनेक-अनेक लोकक लेल प्रिय-अप्रिय भऽ सकैत अछि किन्तु एकरा नहि सकारब कठिन अछि।

क्षेपकमे एकटा गप कहबाक मन होइए। से ओ जे स्वर्गीय-सहरसा आ दरभंगा-मधुबनीमे प्रकृतिगत अन्तर अछि। एकटा कोशी नदीक उद्दाम तेवरक क्रीड़ाक्षेत्र आ दोसर कमलाक लचगर खेलौनाक क्षेत्र अछि। कोशी संघर्ष आ पुरुषार्थ सिखबैत अछि त कमला कोमल सुविधाक पाठ दैत अछि। संभव अछि जे अनलकान्त/गौरीनाथकेँ कोशीक लेखन बेसी धरगर आ समकालीन बुझाबैत होइनि।

8 # बहुत दिनधरि मैथिलीमे दलित लेखक केर प्रवेश नै छल। एकरा अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ ? एखनुक केहन अवस्था छै ?

साहित्यकेँ दलित-लेखन, स्त्री-लेखन आदिक कूड़ामे बाँटिकए देखब हमरा कलेक अनसोहाँत जकाँ लागैत अछि किन्तु यथार्थ त अपन ठामपर अछि आ एकरा नकारब सेहो ने संभव अछि आ ने उचित। ओ स्थिति आन अनेक भाषामे सेहो बहुत अछि। मैथिलीपर पुरोहितवर्गक वर्चस्व मलिकाना-अधिकारक सीमा

তক বহন খছি তেঁ এতএ ঙা কনেক রেঁসীএ মাত্রামে বহন খছি খা এতএ মৈথিন ব্রাম্নণ খা কর্ণ কাযস্থক কিছু চ্নিন্দা ঘবানা ছোড়ি খান সভগোষ্ঠৈক মানত দনিতহি জকাঁ খছি, সে রাঁত খনগ। প্রাসোহনক রঁদৌনত সংভর ছন জে রঁহ্তো গোষ্ঠে প্রকাশিমে খরিতথি খা গহো সংভর জে একব খভারমে খনেক গোষ্ঠে দ্খীভএ মোহভংগক খরস্থামে নেখনসঁ রিবত ভএ গেন হোথি কিন্তু কোনো প্রতিভাকেঁ খাগূ খারঁএসঁ রঁনাত বোকন জাএ সকৈত খছি সে রাঁত সকাবরঁ কনেক কঠিন খছি। সংখ্যারঁন কনেক কমজোব ভএ সকৈত খছি কিন্তু খান-খান ক্ষেত্র খা ভাষাসঁ রাঁরাঁ সাহেরঁ খল্লেদকব, ডা ত্তনসীবাম, শিবণ ক্মাব নিংরাঁনে, নামদের ঢসান, দযা পরাব, খাদি খনেক নাম উঁদাহবণক রূপমে দেনে জাএ সকৈত খছি। গহো রাঁত খপন জগহ জে দনিত সাহিত্যক পোষণ দনিত খান্দাননসঁ ভেন জেকব খভার মৈথিনী-ভাষী ক্ষেত্রমে বহন খছি। মৈথিন মহাসভাক মাধ্যমসঁ ভাষা-সংস্কৃতিপব খাধিপত্যক জে ষডযংত্র খ্ন্নমখ্ন্না ভেন তেকব খাশিয খা নীযত রুঁম্নি ওকব রিবোধমে দনিত কী, দূ জাতিসঁ গতব খানো খান জাতি দিসসঁ রিবোধক কোনো স্ত্রব নহি রঁহবাএন ত একব ক্ফন ত এহি সকন খা শৈষ সমাজকেঁ ভোগহি পড়তএ। খনরঁত্তা এতএ এহন মবৌসীরঁনা রাতারবণ বহন খছি খা জতিখাবেসঁ দিযাদ-রাঁদ হোগত ভায-ভতীজারাদ খা পবিরাবরাদক তেহন ঘিনাওন কঠখেন হোগত বহন খছি জে খগড়া রস্ত্রাক খনেক নোক সেহো ক্ফঁঠিত ভএ নেখন-রিবত হোগত বহনাহ খছি। সংঘর্ষ কবৈত খাগাঁ রঁঠী, এহি কিনব-ঙাঁস্থিংকষ্টৈক খভার ত বহনে খছি জে হজাবো রর্ষক মানসিক গ্বনামীক পবিণাম খছি। সংঘর্ষ

আ রিদ্রাহক কঠিন ডগব ছোড়ি , নকন আ দেখাঁওসমে এহি সমাজক রিভিন্নরস্ত্র স্বরিধাভোগক ডগব চ্নৈত বহনাহ অছি আ মংচাদিপব কনেক জগহ পারি তিবপিত হোগত বহনাহ অছি ত একব দোষ কনিকে সহী, হ্নকহ্সভপব ত আরিতহি ছৈ। ওনা অনেক গোষ্ঠে এহি রিপবীত পবিস্থিতিসঁ নড়ি অপন ব্যক্তিগত ক্ষমতাসঁ আগূ আএন ছথি। জে তীব্রতা আ গতি রাঁছিত অছি সে ভনহি নহি হো কিন্তু রিদেহক মাধ্যমসঁ প্রতিকাবক একটা মজবূত রাতারবণ রঁনন অছি আ অনেক গংভীব নেখকনোকনি প্রকাশিমে অএনাহ অছি আ সে রর্তমানক প্রতি সংতুষ্ঠ আ ভরিষ্যক প্রতি আশ্বিস্ত আ আশান্বিত করৈত অছি। সাহিত্যমে সংখ্যাঁরঁন মহত্বপূর্ণ নহি হোগত অছি, মহত্বপূর্ণ হোগত অছি রৌদ্ধিক আ বচনামেক ক্ষমতা। চ্ন্ধীক ঘব নেন এক বূঁদ ওসহি তূফান আ সৈকড় । কৌআক নেন একহি টা ঢেনা যথেষ্ঠ হোগত অছি। ওনা উচিত ঔ হোগতএ আ সমযক মাঁগ সেহো অছি জে এক হাথ দোসব হাথকেঁ ধোঅএ, অন্যথা দ্নূ মৈনহি বহি জাএত।

9 # অহাঁক সাহিত্যিক যাত্রামে কোন তত্ব প্রেবক আ কোন তত্ব রাঁধক বহন ?

হমব প্বরিজনোকনি শ্বক্তকপসঁ খেতিহব বহথি। খাতা-খতিযান আ কেরানা আদি ছোড়ি আন কোনো চীজ পঢরাঁমে হ্নকাসভক কোনো অভিকচি নহি বহনি। এহি কিসানী-রংশিমে একটা অরতাবী-প্বকষজকাঁ হমব পিতা রঁনেন্দ্র নাবাযণ ঠাকুব 'রিপ্লর' কেব আরিভরি ভেন আ ও খেতী-কিসানীসঁ অরিছিন্ন প্রেম বাখিতহ্ স্বতংত্রতা-সংগ্রামক অগ্রিম-পংক্তিক যোদ্ধা ভেনা আ রাঁদমে সমাজ-সেরা, সাহিত্য, পত্রকাবিতা আদিক রিরিধ ক্ষেত্রমে

अपन हस्ताक्षर दर्ज कएलनि। पत्र हएबाक कारणें कम-बेसी मात्रामे हुनक प्राय: सभटा गप्प हमरहुमे आएल। राजनीतिमे अपन प्रतिभाक सङ्कुचित सदुपयोगक संभावना नहि देखि हम साहित्य-लेखनक अपन पूर्व-प्रेमकें गति देल आ तेकरहि परिणामस्वरूप हम आग एतए छी। एहिमे उत्प्रेरकक काज कएलक ७०-७२क आसपास डा नवीन कुमार दास, केदार कानन, डा शिवेन्द्र दास आदिक संगति। हमर एकटा मैथिली कथा बहुत पहिने 'मिथिला मिहिर'मे छपि चुकल छल किन्तु हमर छिटपुट लेखन हिन्दीमे होइत रहए। हम हिन्दी जगतमे एक सुपरिचित नाम भए गेल रही आ हिन्दीक अनेक पत्र-पत्रिकामे हमर रचनासभ छपितहु रहए। सुपौलक एहि त्रिमूर्तिक संगतमे अएलहुँ त एकर द्विपक्षीय लाभ भेल। हमरासभक नियमित बैसार हुअए लागल आ एकर सकारात्मक प्रभाव प्राय: सभगोटेकें लेखन पर पड़ल। सभगोटे किछु ने किछु लिखिकए आनी आ ताहिपर घमर्थन हुअए आ तहिसँ रचनासभ परिष्कृत हुअए। एहि बैसारमे कहिओ काल महाप्रकाश, सुभाषचन्द्र यादव आबथि। मायानन्द मिश्र, जीवकान्तहुक आबरजात रहनि आ एकाध बेर राजमोहन झाक आगमन सेहो मोन अछि। एहि दौरान बहुत्ताक करि कालीपद कोनाव सेहो अएलाह आ मैथिलीक लेल ऐतिहासिक काज कए गेला। सुपौलक अनियतकालीन पत्रिका 'संकल्प'क एक अंकक प्रकाशन आ आन अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक घटनासभ भेल। हम बसे-बसे मैथिलीमे लिखए लागल छलहुँ आ ओ सभ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे छपि हमरा चिन्हार करए लागल छल आ जखनि हमर प्रथम संग्रह (परती टूटि रहल अछि)

মৈথিলীএমে আরি গেল আ তাহিপর অনেকানেক উত্তরোত্তরবর্ধক টিপ্পণীসভ আএল ত হম জেনা মৈথিলীএক ভএ কএ বহি গেলহুঁ। ই সভটা গতিবিধি তীনহি-চারি বর্ষক অন্তরালমে ভেল। প্রথম সংগ্রহক বাদ প্রায: দস বর্ষক অন্তরাল তক হম একদমসঁ গুম্মী লাধি লেল। কিছু গোটেকেঁ হমর ই অনুপস্থিতি হমর মোহভংগসঁ উপজল বুঝাগ ছলনি ত এহিমে আংশিক সত্য অছি। স্বপৌনক সাহিত্যিক বাতাবরণমে আএল একটা অপ্রিযসল অতিযানবাদ একর জড়ি মে ছল কিন্তু হম কহিও কোনো বাধাকেঁ গুদানল নহি ত ওকবাসঁ হারবাক ত কল্পনহি নহি কএল জাএ সকৈত অছি। এহি 'বাধা' পর হমরা ভর্তৃহরি মন পড়ি গেলা। ও কহলনি অছি – " সংসারমে তীন প্রকারক মনুষ্য অছি- নীচ, মধ্যম আ উত্তম। নীচ মনুষ্য বাধাক ডরসঁ কাম শুরুএ নহি করৈছ ; মধ্যম মনুষ্য কাম শুরু ত কএ লৈছ, কিন্তু বাধা পড়লাপর ওকরা বীচহিমে ছোড়ি দৈছ ; মাত্র উত্তম মনুষ্য জাহি কাজকেঁ শুরু করৈছ, হজার বাধা পড়লহু পর ওকরা পূরা কএ কএ ছোড়ৈত অছি"। হমরা উত্তম মনুষ্য হএবাক কোনো ভ্রম রা গুমান নহি অছি, কিন্তু হম অপন নাম মধ্যম মনুষ্যমে নহি দেখএ চাহএ ছী আ নীচমে ত কিন্নহু নহি। তেঁ হম সদতি ই বাত মন রাখএ ছী জে জঁ অহাঁ চাহএ ছী জে মরিতহি আ চিতামে স্বছাহ হোগতহি অহাঁ বিসরাএ নহি দেল জাএ ত যা ত পঢবা যোগ্য চীজ লিখূ যা লিখবা যোগ্য কাজ করূ। হমর লেখনমে ই অন্তরাল কোনো বাধা রা বাধাজনিত মোহভংগসঁ নহি, এহি কারণ আএল জে ওহি কালরিশেষমে হমর পুত্রসভক শিক্ষা অপন নির্ণাযককালমে ছল আ তেঁ সাহিত্যিক চুনৌতীকেঁ তাকোলিক রূপসঁ বিশ্রাম

দএ হম অপন সমগ্র চেতনা–ক্ষমতা–সময়কেঁ অপন সন্ততিক ভবিষ্য–নির্মাণক প্রয়াস দিস মোড়ি দেন। হমবা দ্বাবা সক্রিয় কববাক শ্রেয় হিন্দীক সাহিৎকাব–সম্পাদক মহেন্দ্র নাবায়ণ পংকজ আ মৈথিনীক ওজস্বী–স্বরা অজিত আজাদকেঁ ছনি। পংকজ জী হমবা প্রগতিশীন নেখক সংঘক স্থানীয় জিনাক অধ্যক্ষ বনাএ সাহিৎ–সমাজসঁ হমব সংপর্ককেঁ পুনর্জীবিত কএননি আ অজিত আজাদক চেষ্টেঁ হমব কনমক গতিকেঁ প্রবাহ দেনক। অজিত আজাদ আ গৌবীনাথক সহযোগসঁ হমব দোসব সংগ্রহ (অন্হাবক বিবোধমে) সোন্নাঁ আএন আ হম পুন: মৈথিনীক মুখ্যধাবাসঁ জুড়ি সকনহুঁ। হিনকহিসভক উর্জা পাবি হমবা নগ এ সৎ উদ্ঘাটিত ভেন জে প্রত্যেক মনুষ্য এক নন্দনকানন–চ্যুত পবমাণো অছি। ওহি কানমে হিন্দীক পত্রকাব মহাশংকবসঁ স্থানীয়হিমে স্বসংযোগসঁ ভেঁট ভএ গেন আ ও হমবা অপন পত্রিকা নেন কানম নিখবাঁক বচন নএ নেননি। তখনি ও বিকাস ক্রমাব ঝাক সম্পাদনমে বহবাগত 'বাষ্ট্রীয় প্রসংগ' পত্রিকাসঁ জুড়ন ছনা। কোনো অপবিহার্য কাবণবশ মহাশংকব ওহি পত্রিকাসঁ অনগ ভএ গেনা আ হমব আনেখ ওহি পত্রিকামে নহি ছপি সকন। এন অববসবপব মহাশংকব শ্যামাকান্ত ঝাক সম্পাদনমে নবপ্রকাশিত 'নোক প্রসংগ' মাসিক পত্রিকাসঁ জুড়ি গেনা আ ওকব প্রথম অংকমে হমব কানম ছাপি ও হমবা খবব কএননি আ ওতহিসঁ হমব কানম–নেখনক সিনসিনা চনি নিকনন। 'ঠাকুব কা ঠাঁব' নামসঁ হমব এ কানম বহুত নোকপ্রিয় ভেন আ "মিথিনা আবাজ"ক সম্পাদনক জিম্মেবাবী নেবাঁসঁ পহিনে নগাতাব তীন বর্ষ তক হম এ নিখৈত বহনহুঁ। বাঁদমে জঁ হম " মিথিনা আবাজ "ক

सम्पादक पद लेल अजित आजाद आ डा0 चन्द्रमोहन झाक पहिल पसन्द भेलहुँ त हमर मानब अछि जे तेकर आधारमे हमर ओ कालम-लेखन महत्वपूर्ण कारक रहल अछि। तेँ कहि सकए छी जे अपन साहित्यिक यात्रामे प्रेरक तत्व त हमरा बहुत भेटल आ बाधा सन कोनो चीजकेँ हम अपन आगू आबि टिकैए नहि देलिअए। कतेक दम धरबाक लेल, कतेक पाथेय जुटेएबाक लेल, कतेक अगिलका बाटकेँ चिक्कन-चुनमुन करबाक लेल कतहु कतेक ठहरि गेल होएब, से बात अलग।

10 # अहाँ अपनाकेँ मैथिली गजलक 'अमीर खुसरो' कहै छिऐ आ सबस जी अपनाकेँ 'साहिब' कहै छथि। ई आमेरिश्राप छै या आर किछु ?

हमर कहब एकदम अलग अछि तेँ सबस जीसँ हमर कोनो तुलना नहि अछि। ओ अपनाकेँ साहिब केना आ किऐ कहए छथि से ओएह जानथु। हम अपन एकटा गजलक मकतामे 'अमीर खुसरो'क नाम लेल अछि,से बहुत साधारण नहि अछि। ई प्रयोग हमर अवचेतनक प्रतिफलन भए सकैत अछि। अहाँक प्रश्नक बाद एहिपर हमर ध्यान गेल अछि। आब सोचलापर लागैए जे हमर जे जीवनानुभव अछि से मैथिलीक प्राय: आनसभ लेखकलोकनिसँ एकदम अलग अछि आ एकरा हम बहुत गंभीरतासँ रेखांकित कएने छी। अपन एकदम (Exclusive) हएब (सभ एकर जे हुअए) आ तेकरा साहित्य-समाजक बीच प्रकट करबाक हमर अवचेतनक ई प्रयास भए सकैत अछि। मिल्टन कहने छथि जे " यशैषणा श्रेष्ठ मनुष्यक आखिरी कमजोरी अछि" आ यूनानी दार्शनिक सिसरोक कहब छनि जे "

जाहि ग्रंथसभमे दर्शनाचार्य यशोषणासँ रॅचरॅाक उपदेशो दएल छथि, ओही ग्रंथमे ओसभ अपन नाम छोड़ि जाइत छथि; जाहि पृष्ठसभपर ओ रॅतरॅए छथि जे यशोषणा रॅजाय चीज अछि, ओही पृष्ठसभपर हुनक कीर्ति-वैजयन्ती फहरबारॅए लागैत अछि"। भवभूति त चुनौतीक स्वरमे घोषणा करए छथि – " उपेत्स्यते च मम कोऽपि समानधर्मा"। गज़लक जे परम्परा रहल अछि ताहिमे एहि तरहक अतृप्तिक अनेक बास उदाहरण सेहो अछि। "कहते हैं कि गालिबॅ का है अन्दाज-ए-बॅयाँ ओर" त प्रसिद्ध रहल अछि आ एकरहुसभक प्रभार हमर अवचेतन ग्रहण कएने हुअए, सेहो संभव। समाजक क्षुद्रता कलाकारक स्वाभिमानपर आगि बारि दैत अछि, तेँ ई कोनो संचित आक्रोशक परिणाम सेहो भए सकैत अछि। अज्ञेय कहैत छला – ' अजुका साहित्य अधिकांशमे अतृप्तिक, या कही, लालसाक, वांछित विश्वास (Wishful Thinking) केर साहित्य अछि। 'अमीर खुसरो' नामनामे गहो कथन सत्य भए सकैत अछि। प्रभाकर माचरेसँ पैंच लएत कहए चाहए छी – ' केना कही जे लिखैत काल हम वर्ण्य विषयक संग तन्मय-तल्लीन अवश्य होइत छी, किन्तु मनपर अन्यान्य रचनासभकेँ पढ़लासँ जे शैलीगत संस्कार अछि, ओकरसभक अप्रत्यक्ष प्रभावसँ अपनाकेँ विलग नहि राखि पारॅए छी। ई दुर्गुण हुअए कि सद्गुण, तथ्य अवश्य अछि। '

11 # वर्तमान साहित्यकारक मूल्यांकन अहाँ कोना करबॅै ?

ओकर लेखन आमेरतिसँ रॅाहर आवि समष्टिक चेतनासँ कतेक तादात्म्ये स्थापित करए छै, ताहिसँ।

ओकर लेखनमे कलाक वैयक्तिक पक्षक संग-संग सामाजिक पक्षक संतुलित तालमेल छै कि नहि, ताहिसँ। अपन समयक पहिचान करैत अपन युगक मूल्यक रक्षा आ वांछित परिवर्तनक लेल प्रयास करएमे ओकर लेखक आ लेखन कतेक प्रयत्नशील रहल अछि, ताहिसँ। ओना वर्तमानक निर्वैयक्तिक आ पूर्वाग्रहरहित मूल्यांकन वर्तमानक वृत्तमे असंभव केर हद तक कठिन छै आ तें एकरा भविष्य लेल छोड़ि देबाक चाही।

12 # अहाँक प्रिय साहित्यकार के छथि ?

स्वाभाविक अछि जे प्रश्न मैथिलीएक सन्दर्भमे अछि। एकर स्पष्ट उत्तर उँकरौ-पैंचीक बाहक बनि सकैत अछि। संक्षिप्तमे एतबे जे हमर बादक पीढ़ीक सभ साहित्यकार हमर प्रिय छथि। ओना अप्रिय साहित्यकारक एकटा नमहर सूची अछि हमरा लग !

13 # साहित्यकारक लेखकीय विचार आ वास्तविक जीवनक विचार एक हेबाक चाही की अलग-अलग ? जँ एक हेबाक चाही तँ वैद्यनाथ मिश्र यात्री जीक वैचारिक विचलनकें अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐ ? आ जँ अलग-अलग हेबाक चाही तँ ओहन साहित्य ओ साहित्यकारक मूल्य की ? मैथिलीकें तोड़बामे दरभंगा मठाधीश सभहक कतेक योगदान छै ?

साहित्यकार कोनो आन ग्रहसँ आएल जीव नहि होइत अछि। प्रथमत: ओ मनुष्य अछि आ ओकरासँ मनुष्यक लेल तै सभटा आचार-संहिताक पालन हमरा बुझने अनिवार्य अछि। मनुष्य एकटा इकाइ अछि आ बसे-बसे अपनासँ बढ़ि परिवार, समाज, राज्य, देश, विश्व आ ब्रह्माण्डक गतिशील हिस्सा बनैत अछि आ एहि क्रममे अपना लेल विविध क्षेत्रक चयन कए ओहिमे सक्रिय

ठाढ़ भेल अछि। हमर मानना अछि जे जे मनुष्य स्वयं अपना लेल, अपन परिवार आ समाज लेल ईमानदार नहि अछि से अपन गतिविधिक कोनो क्षेत्रमे ईमानदार नहि भए सकैत अछि। तेँ कोनो सामान्य व्यक्तिसँ अपेक्षित व्यक्तिगत या समाजगत ईमानदारीक अपेक्षा साहित्यकारहुसँ कएल जाएब सर्वथा उचित अछि। लेखकीय विचार आ वास्तविक जीवनक विचारमे जँ एकरूपता या साम्य नहि अछि त ई ओहि व्यक्तित्वक छद्मक द्योतक अछि। एहि सर्वकालिक सिद्धान्तक कसौटीपर वैद्यनाथ मिश्र यात्रीजी किए सभकेँ कसल जएबाक चाही। किन्तु एतय एकटा 'किन्तु' सेहो अछि। एहि 'किन्तु'क व्याख्या लेल हमरा गोस्वामी तुलसीदासक शरणमे जाए पड़त। ओ भगवान रामसँ कहबएलनि अछि जे जीव जाहि क्षण हमर सम्मुख ठाढ़ भेल अछि त हम ओहि क्षण ओकर कोटि-कोटि जनमक पाप नष्ट कए दए छी - सनमुख होय जीव मोहि जबहीं। जनम कोटि अघ नासौं तबहीं॥ जे केओ अपन समस्त कमजोरी आ त्रुटिक संग महा अज्ञात अन्तर्यामीक सम्मुख उपस्थित भए जाइत अछि, ओकर समस्त त्रुटि विच्युतिसभ समाप्त भए जाइत अछि, फेर त्रुटि त्रुटि नहि रहि जाइछ, ओ पूजाक नैवेद्य बनि जाइत अछि। तुलसीदास एकठाम आओर तीर्थराजिक माहात्म्य वर्णन करैत लिखैत छथि जे एहिमे स्नान कए काक पिक भए जाइत अछि आ बक मयूर भए जाइत अछि। एहि परिपेक्ष्यमे जँ साहित्यकेँ अन्तर्यामी तत्व आ तीर्थस्नान मानि ली आ से ओ छहिओ त वैद्यनाथ मिश्र यात्रीकेँ एहि कथनक लाभ दैत बा-गज्जत बरी कएल जाए सकैत अछि। ओना साहित्यकारक रूपमे यात्री जी जतेक कतबहु सम्मान पाबि लेथि, एकटा मनुष्यक रूपमे

त ओ अपन पारिवारिक-सामाजिक कर्तव्यसँ च्युत माननहि जएता।
(प्रश्नक अंतिम भागक उत्तर साधास की अनायास छोड़ल गेल अछि- संपादक)
14 # मैथिल साहित्यकार वर्ग विधावादी होइत छथि। सदा जँ अहाँ एके विधामे बहितहुँ तँ ओ कोन विधा होइतै ?
नि:सन्देह गद्य मे। "गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति" हमरा लेल मात्र एकटा उक्ति नहि, साहित्यिक मंत्र जकाँ अछि। ई हमर प्रिय विधा अछि आ एहिपर हम अपन पकड़ सेहो नीक मानए छी। देखौंस वा शार्टकटक परिणामस्वरूप हम अखनि धरि जे कएने होइ, हमरापर गद्यक कर्ज बाँकी अछि। अखनि हमर साहित्यिक पेटारीमे वहुत मान वचन आ संचित अछि आ से आर पाठकक सोझाँ अएबाक लेल व्यग्र भेल अछि।
15 # अहाँ अपन साहित्यिक यात्राक पड़ाव कतऽ आ कोन रूपें देखै छिऐ ?
कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुरक "एकला चलो" आ शास्त्रीय रचन "चरैवेति-चरैवेति" स्मरणमे रहैत अछि आ तकोन कोनो अवरोधक नहि बुझाइत अछि, तेँ ई यात्रा अनवरत चलत से आशा आ भरोस अछि।
16 # पारिवारिक परिचय जानबाक इच्छा अछि।
हम अपन पारिवारिक परिचय छिटपुट रूपमे अपन आमेकथ्य आ आन ठाम देने छी। संक्षेपमे ई जे हमर पिता (हमसभ हुनका 'बाबूजी' कहि सम्बोधित करैत रहिअनि) वीरेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव' स्वतंत्रता-सेनानी, साहित्यकार, पत्रकार आ समाजसेवी छला। हुनकर प्रथम विवाह अकरबनगर,

ভাগনপ্ববক স্বভদ্রা দেরীসঁ ভেননি জিনকা হমসভ ভায–রঁহিন 'রঁড়কী মা' কহৈত বহিযনি। হ্নকাসঁ কোনো সন্তান নহি ভেনে রাঁবূজী শৈবপ্বব, ক্ষজথফবপ্ববক গাযত্রী দেরীসঁ রিরাহ কএননি জিনকাসঁ হমসভ পাঁচ ভায–রঁহিন ভএনহুঁ – তীন রঁহিন আ দূ ভায। এক রঁহিন হমবাসঁ জেঠ, হমবা বাঁদ দূ রঁহিন আ সভসঁ ছোট ভায। হমবাসভকেঁ দূনূ মাক মমতামে কহিও কোনো অন্তব নহি বুঁঝাএন। সভদিন দূনূ মাকেঁ একহি থাবীমে সংগ–সংগ খাগত দেখনিঅযনি জেকব সিনসিনা রঁড়কী মাক মূহ্ক উঁপবান্তহি ভংগ ভেন। হমব রিরাহ 21 জূন, 1972 ঙঁ০ (অদ্ভুত সংযোগ অছি জে গএহ তিথিকেঁ অন্তবষ্ট্রীয যোগ দিরস মনৈবাঁক নির্ণয সংযঞ্ঞ বাষ্ট্র সংঘ দ্বাবা 2016 ঙঁ০মে নেন গেন অছি) মে মানদা, রেঁগ্বসবায (আরঁ সমস্তীপ্বব) কে রীনা দেরীসঁ ভেন জিনকাসঁ হমবা ত্রিদেরক প্রাপ্তি ভেন অছি – তীন প্বত্র – অভিনয, কিসনয আ অন্বনয। ঘবক নাম রাঁবূ, মিন্টু আ বাজা। জ্যেষ্ঠ প্বত্র দরাক স্টাকিস্টশিপক কাজ কবএ ছথি, মাঁঝিন প্বত্র চার্টর্ড অকাউন্টেন্ট ছথি আ কনিষ্ঠ প্বত্র রকানতক পেশামে ছথি। জ্যেষ্ঠ আ কনিষ্ঠ স্বপৌনমে হমবা সংগহি বহএ ছথি আ মাঁঝিন ক্ষম্বঁগামে। রর্তমান তিথি তক তীনূ প্বত্র- প্বত্ররধূসঁ সংযঞ্ঞ উঁপহাবক রূপমে তেসব পীঢীক জে চাবিটা প্বষ্প হমবা প্রাপ্ত ভেন অছি তাহিমে তীন পৌত্রী আ এক পৌত্র অছি।

অপন গনাকাক জে চনন অছি তাহিমে পবিচয প্বছবাঁক আশয জাতি আ গোত্র জানরঁসঁ রেঁসী বহৈত অছি। ত সামাজিক সংবচনাক আধাবপব হম ব্রাহ্মণ ছী – ভুমিহাব ব্রাহ্মণ। গোত্র অছি – পবাশব আ গোত্র–প্ররব ছথি – রশিষ্ঠ, শক্তি আ পবাশব। গোত্র–প্ররবক

संख्याँ तीन अछि तें जनेउँमे तीन गाँठ लागैत अछि। पूर्वजलोकनि कर्णाटकिक मैसूरसँ आएल छला आ तें कर्णाटवंशी कहाब छी आ मूल अछि मैसूरिया।

दुसाध आ मियाँसभक संगति आ ओकरसभक छथिन खएवाक-पीवाक चलतें देशक स्वतंत्रतासँ पूर्व वावूजीपर कतेको वेर समाजक पंचैती बैसल किन्तु ओ अपन सामाजिक समताक स्वभाव नहि तजलनि। हमर नानाक घरमे पीर-बाबाक मजार बनल रहय आ ओ नियमित रूपसँ नमाज पढ़ैत छला। ई सभटा संस्कार हमर जीनमे अछि आ हम मोटा-मोटी जाति-सम्प्रदायक पूर्वाग्रहसँ मुक्त रहल छी। एहि बातक चर्चा कए देब एहि कारणसँ आवश्यक बुझाएल जे पारिवारिक परिचयक क्रममे देल हमर विवरणसँ हमरा प्रति कोनो गलत धारणा नहि बनए। हम जे छी, जाहि जाति-गोत्र-सम्प्रदायसँ छी से हमर चुनल नहि अछि, तथापि हमरा एहिपर गर्व अछि आ एहिसँ आन जाति-गोत्र-सम्प्रदायक लोकक प्रति हमर सम्मान-भावनापर कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि।

<u>খবরিন্দ ঠাকুবজীক নামসঁ কিছু পত্র</u>

পবতী টূটি বহল খছি

(করিতা সংগ্রহপব পত্রক মাধ্যমসঁ প্রাপ্ত প্রাবংভিক তীনটা টিপ্পণী)

প্রথম : শ্রী চন্দ্রনাথ মিশ্র 'খমব'

স্বস্তি খাদিত্য সদন, মিশ্র টোলা, দবভংগা, 20-1-95

খায়ুষ্মান শ্রী খবরিন্দ ঠাকুব,

শতশ: শুভাশী: ।

খহাঁ দ্বাবা বচিত খা প্রেষিত " পবতী টূটি বহল খছি " করিতা সংগ্রহ পবসূ ভেটৈল। খাগ পঠি কএ সম্পন্ন কযল। ওা জানি হর্ষ ভেল জে খহাঁ রিপ্লর জীক খামেজ থিকিএনি। পহিনে কিশুন জীক স্নেহ সঁ হম স্বপৌন রঁবারঁবি জাগত ছলহুঁ তেঁ রিপ্লর জীক সংগ পূর্ণ পবিচয ছল। খহাঁ খা শ্রী কেদাব খপন খপন পিতাক মৈত্রী ভার কেঁ সংযোগি বখনে ছী তদর্থ সাধুরাদ।

খহাঁ কেঁ জ্ঞাত হোযত জে হম কনে মনে জে পঠলহুঁ সে সংস্কৃত। খাঁর 75 রর্ষক ভেলহুঁ খাঁর হমব মান্যতা রঁদলত তকব সংভারনা নহি। ছন্দ, খলংকাব, খন্ত্যানুপ্রাস নহিও বহৌক, যতি খর্থাত লযাত্মকতা কেঁ হম করিতাক হেতু খনিরার্য তত্ত্ব রুঝৈত খাযল ছিঐক জে গদ্য সঁ একবা ফবাক কবৈত ছৈক। সম্প্রতি জে

करिता लिखागत छैक ताहि मे वसामेकताक अभावर बहुत खटकैत अछि।

पोथीक नाम सँ जतेक प्रभावित भेलहुँ, श्री केदारक भूमिका पढ़ला सँ जे धारणा बनल, तदनुरूप वस्तु सन्तुष्ट नहि कऽ सकल। सामान्यत: सम्मति मे लोक प्रशंसामेक वाक्य लिखि दैत छैक। उदीयमान प्रतिभाक हेतु हम तकरा श्रेयस्कर नहि मानैत छिऐक। एही कारणेँ बहुतो गोटे हमरा सँ क्षुब्ध आ रुष्ट रहैत छथि। जेना 'गूथल गेल आठो' सदृश प्रयोग सँ बाँचक चाही। उदारताक नाम पर हम ओहन शब्द सँ परहेजक पक्षधर छी जे शब्द हमरा अपने भाषा मे प्राप्त अछि। भावभूमि अहाँक विस्तृत अछि दृष्टि मे करिक सूक्ष्मता अछि। आगाँ युग अहीं सभक थिक, मैथिलीक भविष्य अहीं सभ पर निर्भर छैक। हमर शत शत शुभकामना स्वीकार करी। गति शुभम्।

स्नेहाधीन – श्री अमर

द्वितीय : श्री नारायण जी

प्रति,

श्री केदार कानन,

किशुन कुटीर, सुपौल

Ghoghardiha, 15-11-93

प्रियवर,

'परती टूटि रहल अछि' काल्हि भेटल।

हमरासभक बीच बहुआयामी चेतना-सम्पन्न कवि (साहित्यकार) भाग अवरिन्द ठाकुरक उदय हमरासभ लेल आ समकालीन मैथिली साहित्य लेल अनेक संभावनाक अनेक द्वारि खोलैत अछि।

এহি সংগ্রহক করিতাসভক অহনঘৈকা শৈল্প আ কথ্য আ চেতনা জতঽ সমকালীন মৈথিলী করিতাক ক্ষিতিজকেঁ অপেক্ষিত রিস্তাব দৈত অছি, ওতহি 'সামা-চকেৱা খেলাগত স্ত্রীগণ' হমবা লোক-পবম্পবাকেঁ ৱঁচৱৈত অছি।

অদ্ভুত উর্বব-সমর্থ করি ভাগ অবরিন্দ জী কেঁ হমবা দিস সঁ হমব আমৌয শুভকামনা, সংগ্রহ লেল।

নাবাযণ জী

তৃতীয : <u>প্রমোদ কুমাব ঝা,</u> কার্যক্রম অধিশাষী,

দূবদর্শন কেন্দ্র, পটনা - ৪00001

অবরিন্দ ঠাকুব জাহি পবিরেশ মে বহি কঽ অপন বচনা কঽ বহলাহ অছি ওা অতি প্রশংসনীয অছি। জেনাকি মৈথিলীক সামান্য বচনাকাব ওা দাবা কবৈত ছথি জে ও মাটি-পানি সঁ জুড়ল ছথি তঽ ওা কহল জা সকৈছ জে অবরিন্দক করিতা সঁ ওা ৱাঁত স্থাপিত হোগছ। মৈথিলী সাহিত্য মে ব্যাপ্ত প্রচণ্ড গর্মী আ চিপচিপাএল পসীনা আ কষ্টপ্রদ ভাদোক ৱাঁদ জে একদম প্রাত: দূরিক উপব খালী পএব চলৱাঁক আনন্দ কাতিক মে ভেটৈত ছৈক [তকবা অহাঁ এহন সংৱেদনশীল বচনাকাব খূৱ নীক জকাঁ 'ফীল' কেলে হোএৱ] অবরিন্দক করিতা সভ হমবা উএহ আনন্দ দেলক। নৱ-নৱ স্বাভারিক ভোগল রিৱ সৱ এহি সংগ্রহক রিশেষ উপলব্ধি মানল জাএত ওা 'তাবীখ' সঁ হমবা উমেদ অছি। ৱহুত দিন ৱাঁদ হম পূবা সংগ্রহ পঠি সকলহুঁ এক সিটিংগ মে। দূ চাবিটা করিতা এহি সংগ্রহ কেঁ আন সংগ্রহ সৱ সঁ অলগ ঠাঠ কঽ দৈছ।

জৌঁ অবরিন্দ জী আমেসংতুষ্টি আ আচার্যত্বরোধ সঁ গ্রসিত ভেলে রিনা অপন গন্দ্রিয সৱ কেঁ এহিনা সক্রিয

বাখথি তঽ কাল্হিক মৈথিলী সাহিত্য কেঁ আশাবান হেবাক চাহী এহন-এহন প্রতিভা সভ সঁ।
(কেদাব কাননক নামেঁ প্রেষিত দিনাংক-4 দিসম্বব, 1993ক পত্রক অংশ)

শৈলেন্দ্র আনংদ

হানী-হানী বহৈথ্ কোসী

14 দিসম্বব 2012 ঙা- । বাগমতীক জবকন সাহিত্যিক-সাংস্কৃতিক জন বেগমযী ভঽ বহৈয নাগন । ওহি সময নাগন ছন জেনা মোনক কল্পনা সাকাব ভঽ উঠন অছি । মৈথিলীমে ঠংগক সমাচাব পত্রক শুভাবংভ মোনকেঁ আন্দানিত কঽ দেনে ছন । আব মৈথিলীক বঢ়ৈত ডেগকেঁ ক্যা ছেকি নহি সকত । নব উর্জা সম্পন্ন ওহি টীমকেঁ দেখি, অনেবো বিশ্বাসসঁ ভবি গেন ছনহুঁ । টীম নীডব অজিত কুমাব 'আজাদ' প্রভাবী সম্পাদক- অববিংদ ঠাকুব, ফীচব সম্পাদক- নবেন্দ্র এবং নগব সম্পাদক- কুমাব শৈলেন্দ্র ।

पहिल दिन जखन 'मिथिला आराज' कार्यालय पहुँचलौं, तँ आँखि सम्पादकक कुर्सीपर टिकल छल । कारण प्रभावी सम्पादकक कुर्सी पर ओ छथि जिनका सँ पत्र-व्यवहारक अतिरिक्त साक्षात्कार नहि भेल छल । एक तरहेँ हमरा लेल ओ अजगुत गप्प छल । पूर्व परिचित रहलो उपरान्त, ने हम हुनका देखने छियनि आने ओ हमरा देखने छथि । रचनाकारक एहेन मैत्री, वस्तुतः बहुत उत्सुकतासँ भरल रहैत छैक । हमरो मन रहए उत्सोह छल । अरविंद ठाकुर अर्थात 'परती टूटि रहल अछि' केर कवि । जनिक प्रतिभा सँ एहि पोथीक माध्यमे पूर्वहि परिचित रही । 'अन्हारक विरोधमे' कथा-संग्रह पढ़ि चुकल रही । तँ परिचितो रहैत, अपरिचित रही सदेह । गौरांग, दोहरा शरीरक ओ नवयुवक, हमरा देखि मुस्कियाएल । लागल जेना ओ हमरा पूर्व देखि चुकल अछि । हम आगू बढ़ि बजलहुँ- शैलेन्द्र आनंद । कुर्सीसँ उठि, ओ हाथ बढ़बैत कहलनि- 'मिथिला दर्शनमे फोटो देखि चुकल छी, तेँ पहिने अनुमान लगा चुकल रही । दर्शन देबाक लेल कोटिशः धन्यवाद । कुर्सी पर बैसौलनि, चाहक आदेश देलखिन आ साहित्यिक गति-विधिक चर्चा होमय लागल । गप्पमे आठ बाजि गेल । हम हड़बड़ेलहुँ, मुदा ओ निश्चिन्त । एकटा संक्षिप्त वाक्य- अबै जेबै करबै । अखन कोन हड़बड़ी छैक । पन्द्रह दिनुक बादहि अखबार निकलबाक संभावना, तारत एतेक दिनुका बाँकी-बकियौता पूरा करब लेबाक छै । मुद्रा ओहिना सौम्य । सौम्य मुद्रामे ठाहि-पठाहि बजबाक अद्भुत सामर्थ्य छनि हिनकामे । साहित्यकारक असली हकबाला अंदाज । 'परती टूटि रहल अछि' केदार कानन पठौने रहथि

। कानन हिनके जकाँ परिचित छथि । हुनकोसँ सहेज भेँटे नहि अछि । मुदा लगैए जेना हमरा लोकनि प्रवास परिचित रही । एहने भेँटे कृष्णनसँ भेल छल । कृष्णन, लोहना आएल रहय, राज आ शैल सँ भेँटे करबाक लेल । रस्तामे एकाएक लोकनक आ कहलक– की हमरा समक्ष शैल ठाढ़ अछि ? हम सकपकाएल 'हँ' कहलने रही कि कहैत अछि– हम कृष्णन । हम छातीसँ ओकरा साटि लेने रहियै, आगयो हमरा ओहिना मोन अछि । से अररिंद ठाकुरक ओहि दिनुका भेँटे ओहिना मनमोहक लागल छल । एहि आमीयताक तारकेँ मात्र साहित्य जोड़ने अछि । कोसिकाक पानिमे जेना प्रतिभाक ररदान छै । उग्रतारांक आशीष जेना ओतुक्का एक–एक साहित्यकाबकेँ प्राप्त होगक । स्वभाष भाग होथि कि कानन, नवीन होथि कि अररिंद सभ चर्चित, सभ कलमक तेज । साहित्यसर्जक लोकनिक गाम, कत्तौ ले कत्तौ अपनत्वसँ भरि दैत अछि । महिषी आ उग्रतारांक नाम मात्रहिसँ हमर हृदतंत्री झंकृत भऽ उठैत अछि । कारण स्पष्ट अछि– महिषी हमर प्ररखाक गाम थिक, हमर मूल ग्राम । महिषी, सहरसा आ स्वपौलक लोक भरिसक अही कारणसँ अपन समाग सन लगैत छथि । जाह, हमहुँ की–की कहऽ लगलहुँ ? हम अररिंद ठाकुर पर केन्द्रित छी आ रौहियागत पहुँच गेलौं सहरसा । ओना सहरसा आ अररिंदक अटूट सम्बंध अछि, जेना हमर आ अररिंदक मैत्रीक प्रगाढ़ता । कहबाक लेल ओ अन्वज रचनाकाब किएक ले होथि, मुदा मैत्री सभ छान–पगहाकेँ तोड़ि दैत छैक । अररिंदजी खूजल लोक छथि । ठाँहि–पठाँहि गप्प लिखताह आ रँजताह । नीक लागय तऽ रँस, नहि

নীক নাগয তঁ রেঁস । হুনক মোনমে জে উঁপচবতনি ও প্রকষ্ট কঽ দেতাহ । ছন-ছদ্মসঁ দূব, নির্রিকাব ভারসঁ । তেঁ রর্তমান সময়মে জে স্থান হিনকা ভেষ্টরাঁক চাহী, সে খখনি ধবি ক্যা নহি দঽ সকন খছি । এহেন বচনাকাবক প্রতি, খানোচক নোকনিক দৃষ্ঠি নহি জাএর্, কোনো প্রতিভা সম্পন্ন বচনাকাবক খরহেনেনা থিক ।

খবরিংদজী রঁহ্ত জিদিযাহ নোক । জে সোচতাহ ওকব কার্যান্বিযন কোনা হএত সে সংগহি সোচি নৈত ছথি । এক দিন্বক গপ্প স্বনা বহন ছী । হম ডেবাপব পএব বোপনহি হএর্ঁ কি ফোন বিংগ দেনক । ফোন উঁঠৌনহুঁ । খবরিংদজী ছনাহ । কহননি- ভাগ, মহাপ্রকাশী নহি বহনাহ । হুনক নিধনসঁ মর্মাহিত ছী । তেঁ খহাঁসঁ রিশৈষ খাগ্রহ জে 6 রঁজে ধবি এক সংস্মবণ নিখি পঠারী । মাত্র ডেঢ় ঘংষ্টাক সময । হম খপন রিরশতা কহিতিযনি, হ্মদা ও একব রিনা খরসব দেনে কহননি- নিযঽ খজিতজী রাঁত কবঽ চাহিত ছথি । হম তখনহি রূঁঝি গেনহুঁ জে খারঁ রিনা নিখনে কোনো উঁপায নহি । খাজাদ, খপন প্বান খঁদাজমে রঁজনাহ- হঁ সব ! কল্হুকা খখরাঁবক এক পৃষ্ঠ মহাপ্রকাশীক নেন বহতনি । সংস্মবণ খপনেক হিস্সামে ছৈ । 6 রঁজে খারি জৈযৌ । প্রণাম খা ফোন ডিস্কনেক্ট ভঽ গেন । ভাবী খাফত । এতেক জন্দীমে কেহনে সংস্মবণ নীখি সকরৈঁ । হ্মদা নৈ নিখরৈঁ তঽ খাজাদ খা খবরিংদ দন্নূক মোন টূটি জেতৈ । জেনা-তেনা হুনকা নোকনিক ফবমাগশী পূবা কঽ, মিথিনা খারাজ কার্যানিয পহুঁচ গেন বহী । খবরিংদজী দূবহিসঁ স্বাগত কএনে বহথি- খাএন জাউঁ, খাএন জাউঁ । হম রুঁঝৌত ছনিযৈ জে এহি কঠিন সময়মে হমব খারশ্যকতাক পূর্তি কে কএ সকৈত

ছথি আ প্বনঃ হিন্দীমে– আজ কী শাম মহাপ্রকাশি কে নাম ।

অবরিংদজী অপন কর্মচাবীসঁ অত্যধিক স্নেহ করৈত ছনাহ । ককরো আরশ্যকতা পড়ূা গেনা পব, হ্নক রঁহ্রা ত্তবত্ত খ্জি জাগত ছন । কনিএঁ দিনমে ও সম্পূর্ণ স্টাফকেঁ অপনা দিস মোড়ূা নেননি । ঞা হ্নক মিননসাব স্বভারক পবিণাম ছন । আ হ্নক গএহ নোকপ্রিযতা হ্নক মাত্মক কাঁটা ভ২ গেন । পত্রকাবিতাক নৌন কেনিহাব একটা ঞষ্যান্বি ব্যক্তিক আঁখিমে ও গড়য নগনাহ । শিক্ষনী স্বরূপ ও ব্যক্তি পাশা পব পাশা ফেকয নাগন । অবরিংদজীক নেন ধৈন সন । ক্ষদা সিংহ, সিংহ হোগত ছৈক ও গীদব কথমপি নহি ভ২ সকৈছ । পবিণামতঃ এক দিন মনোরেগমে ও গস্তীফা দ২ ডেবা চন অযনাহ । রঁহ্তো মনযরাঁক প্রক্রিযা ভেন, ক্ষদা প্বনঃ ঘূবি নহি তকননি । এহিসঁ পূর্ব আজাদকেঁ উছন্নব দ২ হটযরাঁমে ও সফন ভ২ গেন ছন আ ওকব ঞা দোসবো দার স্বতবি গেনৈ । অবরিংদজী সংরেদনশীন নোক ছথি । ও সংরেদনেক কাবণ অপন পদসঁ গস্তীফা দেননি । ক্ষদা দেখা গেনাহ অপন অস্তিত্ব, অপন ঙুর্জা, অপন নোকপ্রিযতা ওহি নীচ ব্যক্তিকেঁ জে ক্ষকূব সদৃশ অগাঁঠ খযরাঁ নেন সদবি কান মানিকক আগূ নাঘবি ডোনরৈত ছন । প্রপংচ করৈত ছন, মৈথিনীক সংগ, স্টাফসঁ গাবি–ফজ্জতি স্বনৈত বহৈত ছন, ক্ষদা জাহি আশাসঁ ও এহেন ক্ষকর্ম কএনক, সে পূবা নহি ভ২ সকনৈ ।

অজিত আজাদ সন তেজ–তর্বাব, কর্মঠ মৈথিনীক সমর্পিত কার্যকর্ত্তাক সংগ প্রপংচ– সী–ও–পদ পএরাঁক

নেন, ঋবরিংদ ঠাক্কব সন প্রতিভাশানী বচনাকাব সংগ প্রপংচ প্রভাবী সংপাদক পদ পএরাঁক নেন । ক্মাব শঁনেন্দ্র ঋা নবেন্দ্রক সংগ প্রপংচ–ফীচব সম্পাদক রঁনরাঁক নেন, ক্দা 'মিথিনা ঋারাজ'ক মানিক নগ কোনো দানি নহি গনি সকন । ক্কূব, ঋঁগঠ খযরাঁক নেন নাঘবি ডোনরৈঁত বহি গেন । ঋবরিংদ ঠাক্কবক সম্পাদকক পদসঁ গস্তীফা দেনাক রাঁদ কিরা ঋাজাদক ব্যাগ পত্রসঁ মৈথিনক সপনা টূটি গেনৈক । ভহবি গেনৈক সমর্পিত কার্যকর্ত্তাকি ঋাসাক দেরাঁন । কিযো গেনৈ হাঁজীপ্বব, কিযো গেনৈ পটনা । ঋতত: 'মিথিনা ঋারাজ' রঁদ ভ২ গেন । মৈথিনীক ঋাকাশমে উঁদ্দীপ্ত ঋাসাক তবেগন, ধূমকেত্তু রঁনি রিনীন ভ২ গেন । ক্দা রিনীন নহি ভেনাহ– ঋবরিংদ । ও তহ ঋাওব ভকবাব ভ২ ফ্নএনাহ । মকবংদক সংগ, মহমহাগত, মৈথিনী রাঙ্ময স্ববভিত কবৈত, ঋপন কনামধ্সঁ ঋাকর্ষিত কবৈত, কহিযো নহি রিসবযরনা ভাষা স্নেহক নেন দূ–ঋাখব নিত্তা নিখৈত ছথি । 'ঋন্মাবক রিবোধমে' নড়ৈত ছথি জড়তাক পবতী তোড়ৈত ছথি । ও নড়ৈত বহতাহ, ঋন্মাবক রিবোধ কবিতৈ বহতাহ । পবতী টূটৈত, ফসিন নহনহাএত, সর্রজন হিতায, রঁহ্জন স্বখায । হমব ঋন্বজ থিকাহ, ক্দা মিত্ররত্ ছথি । হানী–হানী রঁহৈত বহথ্ কোসী, ঋপন রেগমে ঘৃণা ঋহংকাব, তিবস্কাব, চাপনূসী সভেঁ রঁহাকএ ন' চন জাথ্ । সাহিত্যক ধবতী শস্য–শ্যামনা হোগত বহথ্ ।

রাগমতীক রেগ প্বন: ঋরকরুদ্ধ ভ২ গেন ঋছি । ওকব কিন্তুেব রোঁন–ঝাঁখ্বসঁ ভবন জা বহন ঋছি । ম২ব খএরাঁ নেন নঢ়া যাক জমাতি, হ্ন্বক–রঁ্ন্বক ক২ বহন ঋছি । ক্কূব দোসব মানিকক দবরাঁবমে নাঘবি ডোনা

বহল অছি । মানিককেঁ ভড়কा বहল अछि, বিভিন্ন লোকক মাদেঁ । কোনো–কোনো দার স্বতবি জাগত ছৈ ওকবা এক কৌব রৈসী ভেটি জাগত ছৈ । ভবিসক এহনে স্থিতিকেঁ দেখৈত, ভাগ উঁদযচন্দ্র ঝা 'রিনোদ' নিখননি অছি–

"সহ কথা উঁপবাগ ভ২ গেনৈ

ঝূঠক মাথা পাগ ভ২ গেনৈ

পক্ষীবাজা কাগ ভ২ গেনৈ

ধাজা পব ত২ দাগ ভ২ গেনৈ ।

মৌনিক নক্ষ্য রিরাদ ভ২ গেনৈ

দ্ঠ্ক পবিসরাঁদ ভ২ গেনৈ

খাস নোক আৰাঁদ ভ২ গেনৈ

আম নোক রৱাঁদ ভ২ গেনৈ । ।" (অমনতাস, প্ররেশাংক 2013)

শাগত মৌথিনী ভাষাক গএহ পবিণতি নিখন ছৈক । দোযম দর্জাকি নোক, গোষ্ঠী স্বতাবরাঁক নেন, মাতৃভাষাক অনুবাগকে রিসবি, ওকব মানমর্দন কবরাঁ পব ত্তনন অছি আ দোসবা দিস মাতৃভাষা অনুবাগী রিভিন্ন প্রতাড়না সহৈত, মাতৃমঁদিবমে বচনাক ফূন সমর্পিত ক২ আমেসংতোষ ক২ বহল অছি । রঁক কোসী হানী–হানী রঁহথু, ঝদা ও নহি, নহি–নহি কথমপি নহি । অবরিঁদ ভকবাব হএতাহ, হ্নক স্ববভিসঁ স্ববভিত সম্পূর্ণ মৌথিনী রাঘময

एक दिन महमहा उठैत ।

मिथिलेश कुमार राय

अरविन्द ठाकुर: अन्यायक विरोधी व्यक्तित्व

आग-काल्हि फेसबुकपर व्यक्तित्व नहमर की गुनतित्व तैपर विचार पोस्ट कएल जाइत अछि। सभहँक अपन-अपन विचार छनि मुदा हम ओहन लोककविचारसँ बेसी प्रभावित होइत छी जे व्यक्तित्वसँ बेसी गुनतित्वकेँ मानै छथि। हमर अपन मानब अछि जे व्यक्तित्व समाजक बड़का वस्तुकेँ प्रभावित करै छैआ गुनतित्वपर सेहो ओकर छाप पड़ैत छै।

एकर पाछू हमर हमर अपन अनुभव अछि।

अबाप समयमे एक आदमी हमरा अन्यायसँ लड़बाक ताकति देला।

हम ओना दिल्लीमे छलहुँ मुदा कुसहा त्रासदीमे सभ जकाँ हमहूँ पिसाएल छलहुँ आ ओही पिसाएल समयमे अरविंद ठाकुरजीसँ हमर पहिल भेंट भेल। गामसँ माए-बाबू जान बचा कऽ भागल छला तँ दिल्ली विश्वविद्यालय पढ़ाइ छोड़ि हम भागि आएल रही। फरवरी २०१०केँ शुरुआतमे जा धरि हम प्रभातखबर, सहरसा नै ज्वाइन केलहुँ ता धरि अरविंदजी हमर दुर्दिनकेँ सम्हारबामे नीक योगदान केला। कोसी बाँढ़िक बाद बेरोजगारीक दिनमे हमरा एकटा आइडिया आएल छल जे हम कोसीपर लिखल गेल पद्य रचना सभहँक संकलन करी। आ ऐ लेल हम सूची बनेबाक क्रममे अरविंदजीसँ

भेंटै भेल। हमताहि समयसँ हिनकर दृष्टिकोणक प्रशंसक छी। ओना ओहि समयमे हम जौंडिससँ ग्रस्त रही मुदा स्थिति ओहन छल जे ओहू समयमे हम काज ताकिरहल रही। आ ऐ सभहँक अछैत हम रचनाकरक सूची बनारहल रही। अरविंदजीकेँ भेंटक क्रममे पता लागि गेलनि जे हमर तबीयत खराप अछि तँ जौंडिसआ एकर उपचारपर बहुत बात चर्चा भेल आ तै संग कोसी क्षेत्र, क्षेत्रक पानिपर चर्चा भेल संगे संग बेरोजगारीक भयावहतापर सेहो। कनी-मनी साहित्यपरसेहो चर्चा भेलै। खेना-पीनाक बाद चलबा कालमे बाठ्ा पर निखल हिनक दृष्टा गजल भेटैल। हिनक स्वलेख देखि नीक लागल। हिनक चेहरे जकाँ उज्जवलकागजपर मोति जकाँ अक्षरसँ चमकैत। भेंटै स्वरूप हिनक कथा संग्रह "अन्हारक विरोधमे" सेहो भेटैल। पूरा रस्ता हम ऐ शीर्षकेंपर सोचैत रहि गेलहुँ,रातिमे निंद नै भेल। आ भोरे लागए लागल जे हम ठीक भेल जा रहल छी......

अन्हारक विरुद्ध बडठ्ल डेग आबे किछु आतेज भऽ गेल छल। बहुत आमेरिश्वासक संग प्रभात अबैमे पएर रोपबाक जमीन भेटैल तँ हमर बेरोजगारीकपरती टुटि गेल छल। कनी-मनी हरियरी आबि गेल छल हमरा उपर। जहिया कहियो पात पीयर होबऽ लागैत छल "अन्हारक विरोधमे" फूही जकाँ बरसऽलागैत छल। फोनपर तँ बात-चीत होइते रहल।

सगर राति दीप जरए कार्यक्रमक दौरान हिनक बजबाक क्षमता आ समीक्षीय दृष्टिकोणक हमरा फेरसँ चकित केलक। हमरा सभहँक सामने बाजऽमेदिक्कत होइत छल मुदा स्वरबाक धैर्य छल हम अरविंदजीकेँ पूरा

धेआनसँ सुनलहुँ। तेसर गोंटे निची पकराक समयमे देल छल। एकटा फरेबी अफसरसँ गोंटे क३ क३ आएल बरी आ दुनियाँसँ आक्रांत बरी स्वदा अखबारिंदजीक घर "विपन्न उरन"मे पएर रखिते मोन शांत होमए लागल। कनी दुनियाँदारीक गप्पदेल, स्वास्थ्यक गप्प देल। गप्प देलाक बाद ओ बाहर गेला आ भीतर अबैत काल हुनका हाथमे निची उबल पथिया छल। निची तँ मिठ्ठ होगते छैतादुमे हुनक आग्रह एहन जे हम मना नै क३ सकलहुँ। आबि३सँ पहिने हम किछु करिताक जन्म-कथाक संबंधमे गप्प देल आ ओहन लोकक गप्प देल जेरचना प्रक्रिया लेल जमीन तैयार करैं छै। हम ओ मानलहुँ जे अन्यावक विरोधमे संघर्ष क३ बहन लोके हमरा भार ओ शक्ति दै छथि, हम तँ खाली शब्दकेँक्रम बाखर जानै छी।

<u>খজিত খাজাদ</u>

<u>খবরিংদ ঠাক্বঃ হমবামে খহাঁ, খহাঁমে হম</u>

রর্খ ২০১২। "মিথিনা খারাজ" দৈনিকক প্রকাশিনক হেত্তু হম টীম তৈযাব কঽ বহন বহী। মূন সংকট ছন সংপাদকক। মৈথিনী খখরাঁবক নেন জেহন সংপাদকহম চাহিত বহী, চাব্দ ভব নজবি খিবওনারঁক রাঁদো কিযো সক্ষম খা সমর্পিত পত্রকাব এহি নেন খভবি নৈ বহন ছন। কিছ মৈথিনী ভাষী সংপাদক খরশ্যবহথি সোন্মামে জিনক হিংদী খখরাঁবক সংপাদকক রুপমে খ্যাতি বহনি হ্মদা হ্নকা সভ নগ খসমংজসক স্থিতি বহনি। এহনমে এক দিন হম খনচোকেমেখবরিংদ ঠাক্বজীকেঁ ফোনেপব খাধিকাবিক হ্মদ্রামে কহি বৈঁসনিযনি– "সব খহাঁকেঁ মিথিনা খারাজক সংপাদনক দাযিত্ব নেরাঁক খছি। কোনো খগব–মগব নৈ"।

ঠাকুবজী হতপ্রভ বহি গেল বহথি হ্মদা হমব জিদ কহু ঋথরা হমবা প্রতি হ্নক রিশেষ ঋনুবাগ ও তাকোন গছি নেনে বহথি। কিছুএ দিনক উঁপবাঁত ও হমবপঠৈনা ঋারাসপব ঋএনাহ, প্রায়ঃ চাবি–পাঁচ দিন বহনাহ। এহি ঞ্রমমে ও ঋপন গজন সংগ্রহ "রঁহ্রুপিযা প্রদেশমে" কেব মাদে মাবিতে বাস রাঁত রিচাব কেননিহ্মদা বহি–বহি কহ মৈথিনি ঋভরাঁব নিকানরাঁক ঋা ওকব সংপাদন–পক্ষপব রিমর্শ কবরঁ ও নৈ রিঁসবথি। কিছু দিনক উঁপবাঁত হম হ্নকা ডা. চংদ্রমোহনঝাজীসঁ মধ্রঁনীমে ভেঁঠ কবরেঁনিযনি। ডা. চংদ্রমোহন ঝা মিথিনা ঋারাজক মানিক বহথি। ঋখরাঁব নিকানরাঁক রাঁদ ও এহি ঋখরাঁবক প্রধান সংপাদকসেহো রঁননাহ। ঋবরিন্দজী প্রভাবী সংপাদকক কাজ কবরঁ শ্বরু কেননি। প্রায়ঃ জ্নাগ ২০১২সঁ। হ্নক ঝংডনীমে নৌকবী কবরঁ নৈ ছুননি। ও ঐসঁ পহিনে কহিযোর্য্যারহাবিক রূপেঁ চাকবী নৈ কেনে বহথি. পত্রকাবিতা জরুব কবথি। ঙ্র গ্বণ ও ঋপন পিতাসঁ ঋর্জিত কেনে বহথি। হ্নক পিতা প্রখ্যাত স্বতংত্রতা সেনানী ঋাক্রশেন পত্রকাব বহথিন। শ্বরুঋাতমে ঠাকুবজীকেঁ মিথিনা ঋারাজক কার্যনিযমে কিছু–কিছু দিক্কত হোগন হ্মদা নগনে ও ঋাদতী ভহ গেনা। ঋখরাঁবকপহিন ঋংক ১৪ দিসম্বব ২০১২কেঁ রঁহবেনৈ হ্মদা ডমী ঋংক জ্নাগযেসঁ তৈযাব হোগত বহৈক। এহি ঞ্রমমে হমব দাযিত্ব ছনকেঁ সভকেঁ তকনীকী রূপসঁ নীকরঁনাএরঁ। ঠাকুবজীক তপেবতাক সংগ কমপ্যূঠব ও ঋখরাঁবী সাহঠৈরেযবমে দক্ষতা প্রাপ্ত কেননি। ঋখরাঁবক তনার ভবন রাতারবণকেঁ ও ঋপনা তবহেঁতনারবহিত রঁনেরাঁমে কোনো কোব–কসবি নৈ ছোড়থি। হমব চারু কাত ঙর্ষ্যা–দ্বেষক একঠা নমহব ঋা মজগূত ছহব দেরানী

ৰঁনএ নাগন ছন। এহি ছহবদেৰানীকেঁ খপন হাস্য ৰোঁধ খথৰা এনা কহী জে ভাষ্যৰোঁধসঁ তোড়ি দেৰাঁক ও চেষ্টা কবথি। ৰঁহ্ত দূব ধবি ও সফনো ভেনা হ্মদা পূর্ণতঃ নৈ। পবিণামতঃ হম৩০ জনরবী ২০১৩কেঁ খখবাঁব ছোড়ি দেন। ঠাকুবজী হ্মদা জমন বহনাহ। ৰঁদমে পতা নাগন জে জাহি ছহব দেৰানীমে হম ঘেবাএন বহী, সএহ ছহবদেৰানীহ্নকা ঘেবি নেনকনি খছি। হোনপব ও খপন পীড়া কহথি হ্মদা হমব একৈটা তর্ক বহএ- "জা ধবি খহাঁ ছী তা ধবি খখবাঁব খছি। খহাঁ নিকনবেঁ খখবাঁববঁদ ভ২ জেতৈ"। খা নগভগ সএহ ভেনৈ। ঠাকুবজী এক দিন জয় মৈথিনী কহি নিকনি গেনা। তকব ৰাঁদ কিছু দিন নবেঁদ্র সব প্রভাবী সংপাদকক ৰূপমে খখবাঁবসম্হাববাঁক চেষ্টা কযননি খা কিছু দিন হ্মাব শৈনেন্দ্রজী, ৰাঁদমে খমনেঁদ্ শেখব পাঠকজী সেহো হ্মদা খখবাঁব নৈ চনি সকনৈ খা ২২ খপ্রীন ২০১৪কেঁ ৰঁদভ২ গেনৈ। এতেক দিন খখবাঁব জে চনন তকব একটা মজগূত পাযা বহথি খববিঁদ ঠাকুবজী। হ্নক সংপাদকীয চাচর্মে খাবি গেন ছন। হমবা ৰঁহ্ত গোষ্ঠৈপ্রেন্ক্ষ খথৰা হোনপব একব প্রশংসা কবথি। ওহি সময হিঁদী খখবাঁবক সংপাদকীয খা ঠাকুবজীক মৈথিনীমে নিখন সংপাদকীয কেব জর তুননা কববৈক তঁঠাকুবজী ৰীস নৈ এক্কৈস পড়তাহ। হমব তঁ গছা খছি জে হ্নক সংপাদকীয কেব পোথী ভ২ জাগক।

মিথিনা খাৰাজমে এক সময এহনো ছন জাহিমে কিছু দিনক নেন হমবা খা ঠাকুবজী ৰীচ মতাঁতব ভ২ গেন ছন। ৰাঁজা-ভুক্কী সেহো ৰঁদ। হম খপনা

তবৎেঁস্থিতিকেঁ সম্ভাবনাক ৱঁহ্ত যনে কবী ক্ষদা সফল নৈ ভঽ পরৈত বহী। এক দিন নরেন্দ্র সব একব ফবিষ্ঠৌষ্ঠ কএননি তাহ্মে ঠাকুবেজীকেঁ ধন্যবাদ জে ও হমবাপ্রতি সভষ্টা কষ্টতাকেঁ একহি ক্ষণমে রিসবি গেল বহথি। খ্ববরিংদ ঠাকুবজীসঁ পহিল ভেঁষ্ট কহিযা খা কোন স্থিতিমে ভেল সে ঠীক-ঠীক নৈ কহি সকৈত ছী ক্ষদা১৯৯৩ কেব গপ্প থিক প্রাযঃ। হ্নক পহিল পোথী "পবতী ষ্টুষ্টি বহল খ্ছি" করিতা সংগ্রহ খারি গেল বহনি। হম কেদাব কাননজীসঁ ভেঁষ্ট কবরা নেল মাসে-মাসস্বপৌন জাগত বহী ওহি সমযমে। হমব গাম হষ্টনী সঁ স্বপৌন মাত্র ১+ কীনোমীষ্টব দূব ছৈ। বীচমে ক্ষদা কোসীক ধাব। নাহপব চঢ় া খা ওগ পাব স্বপৌন।নগভগ চাবি ঘংষ্টাক বস্তা খা খর্চ পড় ৈক খ্ধিকতম দস ষ্টকা। তহিযা মৈথিলী সাহিত্মক একষ্টা প্রক্ষখ কেঁদ্র বহৈক স্বপৌন। এহি কেঁদ্রক ধ্বী বহথি কেদাবকাননজী। হ্নক মিত্র মংডলীমে ডা. শিরেন্দ্র দাস, ডা. নবীন ক্ষমাব দাস, খ্ববরিন্দ ঠাকুবজী সভ বহথিন। ওহী গোষ্ঠী সভমে কহিযো হিনক রিদ্বতা খাঠহক্কাসঁ প্রভারিত ভেল হএবঁ হম। ঠাকুবজীক জিংদাদিলী খা উঁন্মুক্ত ভার হমবা রিশেষ প্রভারিত কেলক জে হম এককিহ শ্বাসমে উঁক্ত সংগ্রহক হিংদীখন্বরাদ কঽ গেল বহী। ক্ষদা খন্বমতি তঁ নেনে নৈ বহী খা ডব সেহো বহএ মোনমে জে যদি খান্বরাদ পসিন্ন নৈ পড় ননি তঁ খপন খযোগ্যতা সেহো দেখাব হোযত। খন্বরাদ কেনাক ৱঁহ্ত দিন ধবি হম এহী গ্বন-ধ্নমে বহী জে খন্বরাদক ঙা কাঁপী দিযন কি নৈ। খংততঃ বাজরিবাজমে সগব বাতি কতা গোষ্ঠীমে হম হ্নকা ঙাকাঁপী দেখেবাক সাহস জ্ষ্টা নেনহুঁ। ও ক্ষথ্ভারসঁ হমব খন্বরাদ কার্যকেঁ

দেখলনি আ প্রশংসা কেলনি। গোষ্ঠীমে উপস্থিত অনেকো সাহিত্যকারকেঁ ও এহিসংদর্ভমে কহলখিন্হ। মৈথিলীমে লেখকসঁ বেসী প্রকাশক ছথি একর অছৈত পোথী প্রকাশনক স্থিতি বহুত বেসী দযনীয অছি। বিক্রী ব্যবস্থা এহিস্থিতিকেঁ আর সংকষ্টময বনবৈত অছি। এহলমে অনুবাদ কএল এহি কৃতিকেঁ ছপবামে দিক্কত আএল জে কী স্বাভাবিক ছল। বহুত বর্খ ধরি ওা অনুবাদঅন্হারেমে রহল। লগভগ ১৭-১৮ বর্খ। বর্খ ২০০৮মে হম "নবারম্ভ" নামক প্রকাশনক স্থাপন কেলহুঁ। পোথী ছপবাক কিছু হুনর সেহো অর্জিত কেলহুঁ। প্রকাশিত পোথী সভহঁক চর্চা হোময লাগল। তঁ এক দিন হম ঠাকুর সবকেঁ উক্ত অনুবাদ সংদর্ভমে জিজ্ঞাসা কেনিযনি। ও ছপেবাক লেল তৈযার ভেলা। এহিবের ও অপনে গংভীর ছলা ছপেবাক লেল। হমর কাজ অসান ভঽ গেল। "পরতী টুটৈ রহী হৈ" সোঁঝা আরি গেল। খূবে চর্চা ভেল। মৈথিলী কবিতাক কিসানীসংস্কৃতি আ প্রতিবোধক আভাকেঁ হিংদী জগতমে প্রশংসা ভেটলৈক। হমরামে কতবা অরবিংদ ঠাকুর ছথি আ হুনকামে কতে হম ছী একর পড়তাল যা প্রমাণদেবাক খগতা নৈ অছি মুদা ওা বাত পূরা সত্য অছি। হমরামে জতবা ওজ, জতবামে , জতবা জিদ অছি সে হুনকে থিক। অরবিংদ ঠাকুরজী কতবা হমর মিত্র,কতা জেঠ ভাএ অথবা হথবা হমর অভিভাবক ছথি সেহো এখন প্রমাণ দেব উচিত নৈ মুদা ওাহো বাত শত-প্রতিশত সত্য অছি। হুনক কথা সংগ্রহ "অন্হারকবিরোধমে" যদ্যপি হমর প্রকাশনসঁ নৈ ছপল মুদা একর সভটা কাজ-ব্যাঁত হমরে ধরাওল অছি। ভূমিকা সেহো হমরেসঁ লিখবেলনি। হদ তঁ ওা জে লোকার্পণসেহো হমহী সেহো কএল স্বপৌন কথা

গোষ্ঠীমে। হ্নক জিদ জে নর নোক খাগূ খাৰঁএ। নরত্তবিযা নেখককেঁ খাগূ ৰঁঠ়ৰোঁমে সভ তবহঁক মদতি কবৰাঁমেঠাক্ষবজীক জোড় নৈ খছি। প্রাযঃ গএহ কাবণ খছি জে মৈথিনীমে সৰাধিক নরত্তবিযা নেখক হ্নকেসঁ জ্ড়ন খছি। নরত্তবিযাকেঁ খপন সংগত্তবিযা ৰঁনেৰাঁককনা কিযো হ্নকেসঁ সীখি সকৈত খছি। সংঘর্ষ খা দবিদ্রা হমব সংগী বহন খছি। এক সময তঁ এহনো ছন জে হম "মিস্ড কান" কেব মাস্টব বহী। খা একবশিকাব মৈথিনীক খনেক সাহিত্যকাব ভেন হেতা হ্মদা সৰাধিক "মিস্ড কান" হম ঠাক্ষবজিকেঁ কএন কবী। ও তাকোন "কান-ৰৈক" কবথি খা ৰঁড় ী দেব ধবিৰঁতিযাগথ। খাৰঁ ওনা হমব ঙা খাদতি ৰঁদ ভহ গেন খছি হ্মদা ৰঁড় দেব ধবি ৰাঁত কবৰাঁক ঠাক্ষবজীক খাদতিমে কোনো ৰঁদনার নৈ ভেননি খছি। ভবি পোখগপ ও জা ধবি নৈ কবতাহ তা ধবি হ্নকা সংতোষ নৈ হোগত ছনি। হমবা তঁ কেখনো কহ হোগত খছি জে ঙা খপন ছহ মাসক মোৰাঁগন ৰিনকেঁ ৰঁচা নেখি তঁহিনক দূ পোথী খবামসঁ ছপি সকৈত খছি হ্মদা ৰাঁত কহৰাঁক খর্থ ভেন হ্নক সংতোষক মাত্মাকেঁ খরকহ্ম কবৰঁ। হমব মিস্ড কানক চর্চ ও খপন গজনসংগ্রহ "ৰঁহ্কপিযা প্রদেশমে" কেব ভূমিকামে রিস্তাবসঁ কেনে ছথি সেহো সার্থক খর্থমে। এহি সংগ্রহ দূটা শেব হমৰে নেন নিখনে ছথি। ঙঁক্ত দূনূ শেবমে হম কতৰাঁহিষ্ট ছী কতৰাঁ খনহিষ্ট সে হমবা জানএ ৰঁনা কহতাহ হ্মদা হমবা নেন ও একটা মার্কি খছি জতহসঁ হম নিচা নৈ জাএ চাহৰঁ। হমবা ঐ ৰাঁতক গৌবৰঁ খছিজে ও হমবা খাগ্রহপব গজন দিস প্রবৃত ভেনা খা মৈথিনীক শ্রেষ্ঠ গজনগো প্রমাণিত ভেনা। হ্নক গজন সংগ্রহ মৈথিনীক

एकटा माडन गजल संग्रह थिकऒ ऍात समीक्षक लोकनि सेहो मानैत छथि। हिनक किछु आर गजल संग्रहक अपेक्षा अछि। मैथिलीमे गजल विधा आग स्थापित भऽ गेल अछि मुदा एकरगाड़ आर गंभीर हेबाक आवश्यकता छै। ताहि संदर्भमे ठाकुरजीक भूमिका महत्वपूर्ण भऽ जाएत अछि। अरविन्द ठाकुरजी आग-कान्हि गद्य लेखनमे अपनाकेँबमौने छथि। समीक्षा आ निबंध हिनका ॡेस रुचि बहल छनि। कानमनिष्ठ रूपमे ओ अपन झंडा ऒ फहिलहि गाड़ि चुकल छथि। हिंदी पाक्षिक "लोकप्रसंग"मे हिनक काम ॡेस चर्चित भेल। आक्रमाकता हिनक लेखनक मूल पूँजी थिक। विचारमे धार आनबॅ आ सही जगहपर एकर उपयोग करबॅ हिनक नैसर्गिक गुण थिकनि। ॡर्ष २००९मे नरावस्तु पत्रिका निकालबॅा पाछू हिनके उत्प्रेरण काज केलक। पत्रिका कोना लोक धरि पहुँचैक तकर ॡ्यात धबेॅाकचिन्तामे सदिखन ओ लागल बहथि। ओही क्रममे हमरा ऒाहो लागल जे हिनकामे श्रेय लेबॅाक प्रवृति नाममात्रक लेल छनि। अपनाकेँ पाछू राखि लोकेँ आगूॅठ़ेबॅाक उद्दाम लिलसा हिनक एकटा खास विशेषता थिक। मैथिली लेखक संघक स्थापना २००+मे भेलापर ओ एकर आजीवन सदस्य ॡनला मुदा एहिसंस्थाक क्रियाकलापसँ असंतुष्ठ भेलापर ओ एकर विरोध करबॅ लै छोड़ललनि। अध्यक्ष आ महासचिवसँ हुनक तकरावक चर्च हमरा लोकनि मीटिंग धरिमेकरी। प्रायः एहि सभहँक कारणेँ संस्थामे किछु गुणामेक स्वभाव सेहो भेलै। मैथिली लिटरेचर फेस्टिभल २०१४मे करिक रूपमे ओ पटना आमंत्रित बहथिमुदा आयोजक संस्था मैथिली लेखक संघसँ किछु मुद्दापर हुनक नाराजगी ॡनले बहल। प्रतिरोधमे ओ करिता पाठ लै केललनि।

हमरा हुनक प्रतिरोधीस्वभाव प्रभावित करैत रहल अछि। हमरा भीतर जे किछु आगि अछि से असलमे हुनक अगिन ताप थिक जे हमरा सिमसिमाह होएबासँ बँचबैत अछि। हमराअसगर नै होबए दैत अछि ठाकुरजी। एही बर्ख हमर कंपनीसँ संदर्भित एकटा मामिलामे हमरा जहल जाए पड़ल छल। जहलमे बहुत बात बाँत सभ जानल-सीखल। ओतए एकटा चर्चा बहुत होइक-- "अस्पतालक बेडपर आ जेलक गेटपर जे भेंट करए आबए सएह भेल अपन"। अरविन्द ठाकुरजीक एक दिनअनचोके जेलक गेटपर भेटलाह। हमरा बल भेटल। हमरा प्रति हुनक विश्वास एक बेर आर परिलक्षित भेल। असलमे जहलक गेटपर हुनक आगमनहमरा लेल कतेक पैघ सेहो छल। ओ हमर बिहाड़ केर दिन सेहो आएब बना रहथि तँ हमही मना कए देने रहियनि। आइ सुपौलमे केदार भाइ सक्रिय नैछथि तँ सुपौलकेँ एकटा साहित्यिक केंद्र बना कए ठाकुरजी रखने छथि। आइ सुपौलक अर्थ अरविन्द ठाकुर होइत छै। सुपौलक आपस-पासक क्षेत्र यथात्रिवेणीगंज, मधेपुरा, पूर्णिया आदिकेँ सेहो साहित्यिक रूपें सक्रिय बनेबामे हुनक योगदानकेँ नकारल नै जा सकैए। प्रलेसकेँ कोसीमे विस्तार आ अर्थदेबामे सेहो हुनक महती भूमिका रहलनि अछि। पुरस्कार आ चाटुकारसँ कोसो दूर अरविन्द ठाकुरजीक संपूर्ण प्रतिभाक सार्थक उपयोग यद्यपि आइ धरिनै भए सकल अछि तँ जतबा ओ देलनि अछि तहिसँ आर किछु भेल होइक की नै तँ प्रतिरोधी तेवरकेँ धार अवश्य भेटलैक अछि। हुनक ऊर्जा आआगि, दृष्टि आ सृष्टि, कथनी आ करनी एवं जीवन आ लेखनमे कतहुँ

रिसंगति नै भेटैत। सभ ठाम एक रूप एक रंग। लेखककेँ जँ अपन बीठ़ नै तँ फेर ओकेहन लेखक ? अरविन्द ठाकुर ने सिर्फ अपन बीठ़पर छथि अपितु मैथिली साहित्यिक बीठ़ रँनन छथि तँ एहिमे हुनक मेहनति आ जीवँटैपनक योगदानछनि। आ "विदेह" जँ हुनकापर केंद्रित अंक निकालि रहल अछि तँ हमरा लगैए जे किछुए लोक सही अदा छथि तँ जे अरविन्द ठाकुरजी सन समकालीनसाहित्यकारक परिवर्तनकामी लेखकन "नोटिस" लैत छथि। एतय तँ ओ मान अछि जे जिवैतमे के कहए मरलोपर लेखकक नोटिस लेनिहार कियो नै। धन्यवाद विदेह।

लक्ष्मण झा सागर
जेहने खोजनइ मौ रूट्रेस्र

डा रीवेन्द्र मल्लिक हमर कविता संग्रहक भूमिका लिखवाँक क्रम मे हमरा फोन केलनि जे हमर समकालीन साहित्यकार के सभ छथि ? हम अरग्रहमे पड़ि गेल रही। तक्षेण हुनका कहलनिथलि जे जहन हम मैथिली मे लिखनाव शुरु केने रही तहन हमरा संगे सर्वश्री हितनाथ झा 'हितेशी', विनोद भावती,कालीकान्त झा 'बूँच' आ स्व रूनेश्वर सिंह 'नौशाद' छपैत छलाह। 'बूँच' जीक कोनो रचना किछु वँर्ष पूर्व कतहु अभरल छल। बाँकी गोटैके कोनो किछुकर्मा भेटैगए पठवाँक लेल। साहित्य मे हमरा वैँच केँ ग्रहण लागि गेलैक। हम ट्रैगर

भय गेल छी। हमरा लोकनिक बाँद जे लोकनि लिखय लगलाह से आग कतय सँ कहाँ पहुँचि गेलाह अछि।

হুনকা লোকনিক নাম লেবঁ অপ্রাসংগিক নহি হৈত। ও লোকনি ছথি সর্বশ্রী প্রদীপ বিহারী, বিভূতি আনন্দ, রমেশ, নারায়ণ জী, নবীন চৌধরী, কৃষ্ণান, শিবশংকর শ্রীনিবাস, মধুকান্ত ঝা, বিভা রাণী,শৈবদিন্দু চৌধরী প্রভৃতি। ব্যক্তিগত হম জিনকা লোকনি কেঁ অপন সাহিত্যিক গুরু মানৈত ছিযনি। হমরা এহি বাত কেঁ স্বীকার করবাঁ মে নে কোনো সংকোচ আ নে গ্লানিবোধ ভঽ রহল অছি। সহ যৈহ ছৈক। আদরণীয বীরেন্দ্র মল্লিক জী কেঁ হমর বাত নীক লগলনি। হমরা লোকনিক বাদ সর্বশ্রী কেদারকানন, তারানন্দ বিযোগী, শ্যাম দরিহরে, অজিত আজাদ আ অরবিন্দ ঠাকুর সভ লিখয লগলাহ। হম হিনকো লোকনিক লেখনক লোহা মানৈত ছী। হিনকা সভক রচনা জখন কতহু পঢ়ৈত ছী তঁ অপন লিখনাহা ঝূস লগৈত অছি। সাহিত্য সমীক্ষক কিংবা পাঠক জহন কোনো রচনা পঢ়ৈত ছথি তঁ ও একিএক বিচার করতাহ জে অঙ্কক গোটৈ নিঠল্লা বৈসল ছথি কিংবা সরকারী সেবা মে ছথি বা নিজী কংপনী মে বহুত ব্যস্ত জিনগী সং পলখতি নিকালি কেঁ লিখৈত ছথি। হুনকা পঢ়বাঁ মে নীক লগৈত ছনি। যৈহ ওহি সাহিত্যকারক লেখনক সার্থকতা ভেল।

হমরো মন্তব্য এহী দৃষ্টিকোণ সং প্রভাবিত অছি। যৈহ ঈমানদারী ভেল। হমর বিষয আগ 'অরবিন্দ ঠাকুর' ছথি। এহি সং পূর্ব হম জ্যোতিরীশ্বর ঠাকুর,বিদ্যাপতি ঠাকুর, রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর, রূপকান্ত ঠাকুর, রামলোচন ঠাকুর, লল্লন ঠাকুর, বচ্চা ঠাকুর, কেশব ঠাকুর, শ্যামানন্দ ঠাকুর, বিবেকানন্দঠাকুর, জগদীশচন্দ্র ঠাকুর 'অনিল', গজেন্দ্র ঠাকুর, বীণা ঠাকুর আ বিনযভূষণ ঠাকুরক নাম সং পরিচিত রহী। মৈথিলীক কোনো পত্রিকা মে

अरविन्दठाकुरक गजल पढबाक सुयोग भेटल छल। अन्तिम पाँतीक 'अरविंन' हमरा मोन कें मोहि लेलक। हम स्व कलानन्द भट्ट, गंगेश गुंजन, जगदीशचन्द्रठाकुर 'अनिल' आ विभूति आनन्दक गजल पढने रही। ई अरविन्द ठाकुर के ? हित-अपेक्षित सं हिनक खोज-खबरि लेलाह शुरु कऽ देलहुं। सुपौल घरछनि। जमींदार परिवारक वंशज छथि। पटना मे दवाइक कारोबार छनि। बान-बँचा सेंतल सम्पन्न छनि। बड़का लोक छथि। मैथिली सं प्रेम छनि। बड़बेसी प्रभावित भेल रही। लऽग सं देखबाक उत्कंठा जागल। श्री मधुकान्त झा जीक अमल मे चेतना समिति, पटनाक 'विद्यापति पर्व समारोह' मे काव्य-गोष्ठीक लेल कोलकाता सं डा वीरेन्द्र मल्लिक, श्री रामलोचन ठाकुर जीक संग हमहुं आमंत्रित रही। मंच पर अरविन्द ठाकुर सेहो रहथि से तखनबुझलियैक जखन ओ अपन कविता पाठ कऽ कें पुन: मंचासीन भेलाह। लग जाए कें परिचय करबाक साधंस नहि भेल। स्वभाव सं कने घमण्डी सनबुझेलाह। यद्यपि, हुनक कविता हमरा बेस प्रभावित केलक। हम हुनका प्रति यैह धारणा बनेने रही जे ओ भीड़ सं अलग हटि स्वतंत्र व्यक्तित्वक लोक छथि। बहिर कें बहिरा कहनिहार आ बौक कें बौका कहनिहार श्रेणीक लोक छथि। तकरा बाद एहन भेलैक जे अपन पहिल काव्यसंग्रह श्री केदार कानन कें पठेबाकक्रम मे एक प्रति डा सुभाषचन्द्र यादव आ श्री अरविन्द ठाकुरक लेल सेहो पठा देने रहियनि। किछुए दिनका बाद मोती सन आखर मे श्री अरविन्द ठाकुरकपोस्टकार्ड आयल। पोथी पूरा पढि गेल छलाह। पत्र पाबि कने दूबर भेल। फोन केलियनि।

नागन जेना द्नूं गोटे कतेक दिन सं पबिचित बही। ह्नका प्रतिधाबणा खाग नीक रॅनि गेन। ङ्गदा, न२ग मे रॅसि कें ভবि पोाख गप कबरॉक नानसा नागने बहन। से पूब ভेন खगस्त, 2013 मे। ভोजपुबी– मैथिनीखकादमी, दिल्ली सरॅ

सान जेकां ओह्रू सान बाजधानी दिल्ली मे कार्य–संध्याक खायोजन केने छन। ओहिमे खबरिन्द ठाकुब, खजित खाजाद, सदबे खानम गौबव खा स्वातिशाकम्बुबीक संग हमह्रूं रॉहब सं गेन बही। 'रॉरॉ रॉदशाह मोटेन' मे सभक जुटौन ভेন। खबरिन्द ठाकुब खजित खाजादक संग एकक्र कोठनी मे ठहबनछनाह। द्नूं गोटे मे खूरॅ खपेक्षितावय देखनियनि। 'मिथिना खारॉज', दबभंगा मे खजिते, खबरिन्द ठाकुबकें संपादक रॅना कें खननें छनाह से बूझन छन। हमबा नोकनि सभ गोटे (जे जुटैन बही) खबरिन्द जी रना कोठनीमे रॅसन कबी। 'मिथिना खारॉज'क खरसानक खेबहा स्वनैत बही। गौबव खा स्वातिओंघाय जाथि खा खपना–खपना कोठनी मे स्वत२ चनि जाथि। ङ्गदा, हम खजित खा खबरिन्द जीक संग बातिजगा क२ व्यक्तिगत, सामाजिक, बाजनीतिकखा साहित्यिक पबिचर्चा कबी। नीक नागय। रॅह्त बास जानकाबी ভेटैन। रॅह्त किछु सीखनहुं। खबरिन्द ठाकुबकें, ह्नक स्वभाव कें खा ह्नक साहित्यिकप्रतिभा कें न२ग सं जानरॉक,चिन्हरॉक खा पबखरॉक खरसब ভेटैन। द्नूं गोटे ভजाव रॅनि गेनहुं। शर्रॅती सम्बन्ध रॅनि गेन। जिनगी जीरॉक नेन एकटाएहन मीता चाही जकबा सं स्वख–द्ख

रॉांटि सकी से हमबा नेन खाग 'खबरिन्द ठाकुब' छथि।

দিল্লী সং রিষ্ভবরাঁক কান উঁপহাব স্বরূপ খবরিন্দ ঠাকুব হমবা খপন প্রকাশিত দূ টৌ পোথী দেননি– খন্হাবক রিবোধ মে (কথা–সংগ্রহ) খা রঁহ্রুপিযা প্রদেশে মে (গজন–সংগ্রহ)। দুনূং পোথী পঠনাক রাঁদ খবরিন্দ ঠাকুবক প্রতি মোন মে কএ তবহক চিত্র উঁভবৈতখছি। গজন–সংগ্রহ পঠরাঁ কান ওা খনুভূতি ভেন জে ও উর্দূ সাহিত্যক গহন খধ্যযন কেনাক রাঁদে মৈথিনী মে গজন নিখননি খছি। ওা ওমানদাবীক কাজভেন। 'খন্হাবক রিবোধ মে' মে জে কথা সভ ও গঠননি খছি সে পঠনাক রাঁদ নাগন জেনা ও একটৌ স্মখব সমাজরাদী খা প্রখব বাজনীতিক চিংতকহোথি। হমব খভীষ্ঠ এখন হ্নক পোথী সভক সমীক্ষা কবরঁ নহি খছি। জাহি খবরিন্দ ঠাকুব সং পটনা মে পবিচয কবরাঁক সাহস নহি ভেন ছন তাহিখবরিন্দ ঠাকুব সং দিল্লী মে ঠেহ্ন–ছারা রনা সম্বন্ধ রঁনি গেন। জহিনা কোনো সাহিত্যিক বচনা পঠনাক রাঁদ ওহি সাহিত্যকাবক প্রতি নোক কেঁ ধাবণারঁনৈত ছৈক তহিনা কোনো ব্যক্তি সং ভবি পোখ গপ কেনাক রাঁদে ওহি ব্যক্তি সং নগার রঁঠৈত ছৈক। সম্বন্ধমে মীঠাস খরৈঁত ছৈক। প্রযোজন ছৈক ওমানদাবী সং প্রযাস কবরাঁক। মৈথিনী সাহিত্যক জগত মে খাগ একব ঘোব খভাব ভঃ গেন খছি জে একটৌ চিংতনীযরিষয থীক।

বজনীশ স্কমাব তিরাবী (স্মন্না)

খদ্বিতীয ছথি হমব খবরিন্দ রাঁরাঁ

রাঁরাঁ (অরবিন্দ ঠাকুর) সঁ হমর পারিবারিক রিশ্তা ত ছলৈহে, আরো ওা রঁহ্ত বাস সীমা সঁ পার ভএ গেল অছি। লেনা বয়ী ত হিনক আ হিনক মাতা-পিতা-পরিরাবক চর্চা হমর ঘর (গাম-হেঁট্ঠ, মধুরঁনী) মে উঠৌনা জকাঁ হোগত বহ। কনেক চেতন ভেনাক বাঁদ জখন-তখন স্বপৌন অরৈত বহনহুঁ ত সাক্ষাতে হিনকর গতিরিধিসভকেঁ দেখন আ তকবা বাঁদ নিরন্তরতা মে ওা হমর ধ্যান অপনা দিস খিঁচৈত বহনা। হিনক বাজনীতিক, পারিবারিক গতিরিধিক চর্চা স্বনী, দেখী আ অনুভূ হোগ। হিনক রোঁনরঁ, চনরঁ, পহিবরঁ সভট্ঠা একদম রিনক্ষণ নাগৈ আ হমরা প্রভারিত করৈ। আগ কহি সকৈ ছী জে হমর ঘরপর হোগত হিনক ঘনঘোর চর্চা হিনক র্যক্তিত্ব-ক্ষমতাক ভ্রাঁশিহ্ নহি বহএ। হমর অপন রাঁরাঁ বামপ্রতাপ তিরারী স্বপৌনক ভগিনমান ছনা আ অরবিন্দ রাঁরাঁ হ্নক ভৈযাবীক সম্বন্ধমে অরৈ ছথিন তেঁ হিনকো হম 'রাঁরাঁ' কহি সম্বোধিত করৈত ছিযনি। হমর অপন রাঁরাঁক সম্বন্ধ এহি পবিরাব সঁ একদম সীধা নহি, রঁহ্ত ঘুমাকএ অছি। প্রেম কিন্তু এহন রস্তু ছৈ জে কেকরা কেকর নগীচ আ প্রিয কএ দেতএ সে প্ররান্নিমান কবরঁ কঠিন। হমর অপন রাঁরাঁ স্বপৌন অরৈত-জাগত ছনা আ অরবিন্দ রাঁরাঁক পিতা স্ব রঁনেন্দ্র নাবাযণ ঠাকুবক সংগ অভিন্ন হোগত চনি গেনা। রঁনেন্দ্র রাঁরাঁক রিবাট্ট-প্রভুতাক খিস্সাসভ হমর পবিরাব মে কিংরদন্তি জকাঁ চনৈত ছন। হমর অপন রাঁরাঁক সময রঁনন ওা প্রেমিন সম্বন্ধ বসে-বসে এহন প্রগাঢ হোগত চনি গেন জে হমর পিতা আ হমর পীঢী তক একব উষ্মতা কাএম অছি। হমর পবিরাবক কিনকহ্ কহিও ওা আভাস নহি

भेल जे दुनू एकहि परिवार नहि छथि। जँ हम स्वयं अपन गप करी तँ अवरिन्द बाबाक संग हमर ओ सम्बन्ध हमर छब्बीस वर्षक वयस धरि मात्र पारिवारिक रहल। हम हिनकासँ ततेक अधलागल रही जे ता धरि सागते हम कहिओ हिनक पएर छूनाक बाद ओ प्रुछबाक साहस कए सकल हएब – 'केहन छी बाबा'। अपन उँच-शिक्षाक पूर्णता आ निरन्तरताक क्रममे हम बसे-बसे बाबासँ हिलैत-मिलैत गेलहुँ आ कखन हुनकर प्रियपात्र भए गेलहुँ से समय आ तेकर प्रक्रिया एकदम ठेकानि कए कहब आब कठिन अछि।

दुनू बाबा-पोताक सम्बन्ध मे एकटा दिलचस्प मोड़ एबाक एक महत्वपूर्ण अवसर आ घटना मन पड़ैत अछि। हिनक ज्येष्ठ पुत्र अभिनयक विवाह तै भए गेल रहनि। बरियाती कें स्वपौन सँ शिवहर लए जेबाक दायित्व हमरा भेटल। एकटा बड़का बस आ एकटा जीप सँ चलि बरियाती विवाहक दिन पूर्वाह्नि दस बजे शिवहर पहुँचि गेल। लड़की पक्ष शिवहर-दरबार कहल जाइत रहै आ ओ सभ अपन प्रतिष्ठानुकूल स्वागत केलक। शेष भरिदिन विश्राम केलाक उपरान्त सात बजे साँझ मे बरियाती विवाह-स्थल दिस चलल आ एकरे संग शुरू भेल धमाल। आतिशबाजीक आकाशी चकमक आ बीच-बीचमे कानफाड़ू धमाकाक संग हम सभ गोटे डाँस करब शुरू केलहुँ। हमर सभक जुआन पार्टीक नाचब शुरू होइतते सब नाचब शुरू कए देलक – की सयान, की बूढ़। बाबाक पहिल संतानक विवाह रहै आ ओ अतीव प्रसन्न छला। हुनक उल्लास हमरा सभ कें शह देलक आ हमरा सभक साहस एतेक बढ़ि गेल जे जिनका आगाँ हमरसभक ठाढ़ हेबाक साहस नहि छल

তিনকো হাথ পকড়ি হম সভ নাচবাঁক লেল বাধ্য কএ দেলিযলি। মন খছি জে বাদ মে খপন মিত্রলোকলিক সংগ দৈত বাবা সেহো এহি মে সম্মিলিত ভেলা খা হুনক ডাঁস-স্টেপ দেখি হমবাসভ কেঁ চকবিদোব নাগি গেল ছল। ওহি দিন ওা ভান ভেল জে নিহাজ চলএ, হুনক মান-সম্মান মে কমী নহি বাখী কিন্তু বাবা সঁ ডববাক খা ধকৈবাক কোনো টা ঔচিত্য নহি খছি।

বর্ষ 2006 মে জখন হম এক তবহে স্থাযী রূপ সঁ স্বপৌন বহএ নাগনহুঁ ত বাবাক রৈসী নিকট এবাক খা হুনকা খাওব নীক জকাঁ বুঝবাক খরসব ভেটন। ও তাধবি দনীয বাজনীতি সঁ কাত ভএ গেল ছলা কিন্তু বেড ক্রাসক মানদ সচিরক রূপমে হুনক সক্রিযতা বনল ছল। হ্নসহা তটবহু ঠুটলাক বাদ কোসী নদী দ্বাবা মচাএল হাহাকাবক বীচ বাবাক প্রবন্ধন-ক্ষমতাক জে রিস্তাব হম দেখনহুঁ সে খদ্ভুত খছি। জিনাধিকাবী সঁ নএ কএ জিনা, খনুমন্ডন খা প্রখন্ডক রিভিন্ন পদাধিকাবীসভ সঁ বাঠিপীড়ি তসভক সমস্যাক নিদান বা ওকবা বিনীফ পহুঁচএবামে ওকবাসভ সঁ মনোনুকূন কাজ নেবাক হুনক তৌব-তবীকা এতেক প্রভাবকাবী ছল জে কোনো মামনমে কোনো খসফনতাক কোনো গুঁজাগশ নহি বচৈত ছল। ওহী বৈব হম জিনা ভবি মে পসবন বাবাক রিশান ব্যক্তিগত সংপর্কক সাক্ষী সেহো ভেলহুঁ। বাবা হমবো বেড ক্রাসক সদস্য বনা দেনে ছলা খা ওহি খভিযান মে ও হমবা নিবন্তব সংগ বাখনে বহথি। হমবা হুনক নির্দেশ ছল জে সহাযতা নেল খাএল কোনো বস্তু গনত হাথ মে নহি জায সে হম ধ্যান বাখী। ওহি ক্রম মে বাবাক প্রভুত্ব, সার্বজনিক জীরনক গমানদাবী খা হমবা প্রতি হুনক রিশ্বাস তীনূ চীজক

अनुभूति हमरा भेल। किन्तु स्वपौन एनाक बाद ओहि दैर जे सभ सँ महत्वपूर्ण चीज दिस हमर ध्यान गेल, ओ ई जे बाबा किताब-कागज मे डूबल जकाँ रहथि। हुनक लिखब-पढब गति पकड़ने छल। यूपीएससीक तैयारी करैबला विद्यार्थिओ की ओतेक मनोयोग सँ पढत ! हुअए जे हमसभ जँ एतेक मनोयोग सँ पढने रहितहुँ त आग कतहु कलक्टैर त अवश्ये रहितहुँ। प्राय: ओहि काल बाबाक संयोजकत्व मे स्वपौन मे 'सगर राति दीप जरय' के आयोजन 'कथा-विप्लव' नामे भेल। बाबा हमरा कहलनि जे एहि गोष्ठी लेल कथा लिखि पढबाको अछि, आनक कथा सुनबाको अछि आ ओहिसभ पर अपन टिप्पणिओ देबाक अछि। साहित्यक एकटा अनुरागी पाठक कें बाबा दिस सँ एक नव भूमिका भेटैल। हमरा पहिने लागल जे कतय फँसि गेलौं किन्तु हुनका दिस सँ ततेक तगादा आ उत्साहवर्द्धन भेटैल जे हमहुँ लिखि बैसलहुँ। ओहि गोष्ठी मे अपन भूमिकाक यथासंभव निर्वहनक उपरान्त हमर साहस आ दिलचस्पी दुनू बढल आ ई बाबाक आशीष अछि जे किछु गोटे आब हमरा साहित्यकारो मानैत छथि। एकरे परिणाम छल जे पछाति सहरसाक गोष्ठीमे प्राय: प्रत्येक सत्रक प्रत्येक कथा पर हम लिखोख भए अपन विचार राखि सकलौं आ ताहि पर सराहना सेहो भेटैल।

बाबा तहिया मात्र सत्तारस वर्षक छला जहिया हुनक पिता (वलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव') के दीर्घ बीमारी सँ मृत्यु भेल छलनि। बाबा पटना मे सात-आठ मास तक रहि हुनक चिकित्सो करबैलनि किन्तु एक स्वपुत्रक कएल अथक प्रयास आ सेरा काज नहि आएल आ पिता असमय संग छोड़ि गेलथिन। ता धरि बाबाक

छलि एकटा बालक्षमाबक छल जेकबा पब कोनो जिम्मेदाबी नहि, कोनो बँधन नहि। बाँबाँक दियाद–बाँद आ हमबो पबिराब मे ई आशंका व्यक्त कएल जागत छल जे अनायास माथपब आबि गेल जिम्मेदाबी सँ ओ नड़खड़ ा जेता। किन्तु समस्त आशंका केँ ध्वस्त कबैत अबविन्द बाँबाँ अपन पिताक श्राद्धकर्म पिताक प्रतिष्ठाक अनुकूल केलनि। अपन एकटा अविवाहित बँहिनक विवाह एकटा संभ्रांत आ सुखी पबिराब मे केलनि। फेब छोटे भाइक विवाह आ अपन पुत्र सभक शिक्षा–दीक्षा सफलतापूर्वक सम्पन्न केलनि। ई सभ कबैत अपन सामाजिक–बाजनीतिक दायित्व केँ सेहो नहि बिसबला आ एहो क्षेत्र मे स्वयं केँ अपन पिताक सुयोग्य उत्तबाधिकाबी साबित केलनि। अचबजक गप जे एतेक दबाबँक बाँदो हुनक निर्भयता आ जनपक्षधबता पब कनिको आँच नहि आएल। स्वपौल सँ पटना होइत दिल्ली तक हिनक व्यक्तित्वक दबँदबा बहलनि किन्तु जातिगत समीकबण विपबीत बहलने बाँबाँ केँ दलीय बाजनीति मे ओ हक नहि भेटि सकल जेकब ओ सही माने मे हकदाब छला। बाँबाँ अपन बाजनीतिक जीवनक चर्चा नहिए जकाँ कबै छथि। कहिओ कोनो जिज्ञासा कएलहुँ त एकदम निर्पेक्ष जकाँ मात्र तथ्यामेक सूचना दए देता, जेना ओहि जीवन सँ कोनो मोह नहि, कोनो संलिप्तता नहि। हुनक सामाजिक–बाजनीतिक जीवनक समकालीन सहयोगी सभ सँ जखन हुनकब अतीतक ओहि अध्याय दिआ सुनै छी त बोमांच सँ भबि उठै छी आ छाती गर्व सँ फुलि जागत अछि।

अपन जीवनक कर्म–विस्ताबक क्रम मे हम जे जे नव द्वाब खोलै छी ताहि मे कतहु ने

কতহু বাবা পহিলে সঁ উপস্থিত ভেটৈ ছথি – হমবা চকিত-বিস্মিত কবৈত। বিধি-স্নাতক ভেলাক বাদ জখন হম স্বপৌল বাব-এসোশিএসন জ্বাগন কএলহুঁ ত ওতহু হমবা বাবাক সম্বন্ধক নাতে ত্তবত পবিচিতি ভেটৈন। অনেকো ববিষ্ঠ অধিবক্তা এহন ভেটৈনা জে বাবাক চর্চা কবিতে কহলনি – অবে! অববিন বাবূ ত হমব মিত্র ছথি। কতেকো এহন অধিবক্তা ভেটৈনা জে অপন অধিবক্তা হেবাক শ্রেয বাবা কেঁ দেলখিন। তখন জা কএ ই খিস্সা জ্ঞাত ভেল জে 90 কে দশক মে বাবা অপন স্বর্গীয পিতাক স্মৃতি মে 'বনেন্দ্র নাবাযণ ঠাকুব মেমোবিযল লা কালেজ' কে স্থাপনা কেলে বহথি। ওকব নিযমিত বক্ত্ত চলয আ স্বপৌলক প্রতিষ্ঠিত অধিবক্তা সভ ওহি মে শিক্ষক ছলা। বিশ্ববিদ্যালয আ কুলপতি স্তব পব বাবা অপন ব্যক্তিগত ক্ষমতা আ দম পব ওকবা অগ্রগামী বনৈলে বহলা। বাদ মে সচিবালযক ঘূস-পৈববীক কুসংস্কৃতি সঁ আজিজ আবি ও ওকবা তীন বর্ষক বাদ বন্দ কএ দেলখিন কিন্তু তা তক প্রায: পচাস সঁ বেসী ছাত্র কেঁ ও অধিবক্তা বনবাক ডগব পব আগূ বঢাএ চুকল ছলা। আই ই ঘটৈনা গতিহাস বনল অছি আ বেব-বেব মন পাড়ল জাগত অছি।

স্বপৌল মে অনেকো এহন লোক হমবা ভেটৈলনি জে বাবা কেঁ "বন মৈন আমী" কহৈ ছথি আ স্বযং হমবো ই অনুভব বেব-বেব ভেল অছি। ই অতিশযোক্তি নাগি সকৈত অছি কিন্তু সত্য অছি জে এহি ঠৈন আ শহব মে বাবাক সংপর্ক মে বহল অনেকো এহন ব্যক্তি হমবা ভেটৈনা জে বাবাক বিবিধ খাসিযতসভ মে সঁ কোনো এক যা দূ যা অনেক চীজক নকল কবৈত দেখাগ ছথি। কেও হুনকব পবিধানক, কেও হুনকব বক্তৃত্ব কলাক আ এতেক

धबि जे केओ-केओ हुनका सन चनबाँक नकन सेहो कबै छथि। ओ सभ प्रत्यक्षत: भने एकबा स्वीकाब नहि कबथु किन्तु हुनक अन्तबामो एकबा अबश्य ब्नैत अछि। ओना एहि मे हुनका सभक कोनो दोष सेहो नहि छनि। बाँबाँक व्यक्तित्व एहन स्वदर्शन आ प्रभावशाली अछि जे केकबो मन मे हुनका सन बँनबाँक, देखाए देबाँक नोभ आबि सकैत अछि। बाँबाँ कुर्ता-पैजामा पहिबथि, कुर्ता-धोती पहिबथि, पैन्ट-शर्ट पहिबथि बा जाडक बेब मे बँन्डी, प्रिंस सूट, स्वेटब, गंगनिशे सूट पहिबथि, सबँ मे दिव्य नगै छथि। कपड़ा पहिबैक सभ्य आ तहजीबँ केओ हुनका सँ सीखय। अमिताभ बँचनक ड्रेस-डिजाएन आ मिनिन्द सोमनक बैम्प पब ड्रेसिंग – बाँबाँक आगू सबँ फेन। ई हमब अनुभव अछि जे बाँबाँ जखन अपन घब सँ बँहबाएत छथि त की आँटी, की भौजी, हमबा सन पोताक साबिअहु सभ हुनक बँजाब जेबाँक आ ओमहब सँ घुबबाँक प्रतीक्षा कबैत अछि – हुनका भबि पोख देखबाँक नेन। एक बेब हमब पीठीक एकटा बौख्कि हिनक "नाडि बाँयबन" नामकबण केने छन किन्तु हमबा नगैत अछि जे बाँबाँ "सिंगन-रिमेन मजनू" छथि। हिनक किशोबावस्थहि मे माता-पिता द्वाबा चुनन हिनक धर्मपनी बीणा ठाकुबहि हिनक गोपिका छथि, बाधा छथि आ बुक्मिणी सेहो।

बाँबाँक एकटा आओब बूप हमबा सोझाँ आएन जखन हुनक मा कें कैन्सबग्रस्त घोषित कएन गेन। माक उँपचाब मे हुनक समर्पण-भाव हमब शक्ति-सामर्थ्य सँ बाँहब अछि। जेबाँ नेन हमहु ऋष्मेंए गेनहुँ, टाटा मेमोबियन मे अपन ब्नड डोनेट सेहो कएनहुँ किन्तु अपन प्रौढावस्था मे जाहि यबकोचित सक्रियता आ

तपेश्वराक संग ओ अपन माक समर्पित सेवा कएलन्हि से संसारक सभ पुत्रक लेल अनुकरणीय अछि। तीन-तीन पुत्र आ हुनका सभ पौत्रक बहितहुँ ओ ओहिकाज केँ एकदम व्यक्तिगत जिम्मेदारीक रूप मे लेलनि आ म्युँबई सँ पटना तक ताहि लेल सदति ध्यस्त रहला। माक मृत्योपरान्त हुनक शिशु जकाँ कानबाक स्मृति हमरा अखनो दलमलित कए दैत अछि।

बाबा दिआ एक पंक्ति मे कहल जा सकैत अछि जे ओ प्रखर व्यक्तित्वक असीम प्रतिभाशाली पुरुष छथि। हुनकर स्वभाव तेजस्वी आ दोसर पर भारी भए जाएबला अछि। एहन जेकरा पश्चिमी मोहावरा मे "डायनेमिक पर्सनैलिटी" कहल जाइत अछि आ भारतीय भाषामे प्राय: "राजसिक वृत्ति" कहल जा सकैत अछि। एहन हमर अग्रवित्र बाबा जखन 'मिथिला आराज' के सम्पादक बनि दरभंगाक डगर धएलनि त हमर असहजता शीर्ष धए लेलक। हुनक योग्यता-क्षमता कोनो प्रश्नक दायरा सँ बाहरक चीज अछि किन्तु हुनक जे नागफ़-स्टाइल छल से हमरा मन मे अनेको प्रश्न आनि ठाढ़ कए देलक। अपन सुख-सुविधाक दुनिया छोड़ि बाबा दरभंगाक अनन्तआब वातावरण मे कोना बहि सकता? अपन स्वतय-जागैक, खेबा-पीबाक क्रमबद्ध जीवन मे कोनो व्यतिक्रम कोना सहि सकता? कहिओ केकरो अधीनस्थ नहि रहनिहार बाबा अपन भूमिकाक स्वतंत्र आ निर्बाध निर्वहन कोना करता? स्वान्त: सुखाय लिखनिहार बाबा दबाब मे कोना लिखता? अपन स्टडी-रूमक बैक आ ढेर्रुनक चारू कात पसरल पोथी सभक विशाल भण्डारक बिना सून-बिसून जकाँ नहि लगतनि? महादेवक गण सभ सन अपन मित्रमण्डलीक बीच बहबाक

উন্মুক্ততা নহি খগতনি ? কিন্তু দূ-তীন রেঁব দবভংগা গেনা পব রাঁরা কেঁ জাহি স্ফূর্তি খা খানন্দ সঁ খপন কাজ মে সমর্পিত দেখনিযনি সে হমবা খাহ্লাদ সঁ ভবি দেনক। সংপূর্ণ মিথিনা খারাজ পবিরাব খা পবিসব হ্নকে খাভা সঁ দপদপ কবৈত জকাঁ নাগন। ও স্বযং কোনো খান প্রভার রা ছাঁহ সঁ মুক্ত খা নির্ভবি। একটা প্ববান কহারত মন পড়ি গেন – " শহংশাহ জহাঁ রৈঠ জাতে হৈं, দবরাঁব রহী নগ জাতা হৈ। "

খপন জীরন-সংঘর্ষক র্যাপাব সঁ ফ্ববসত নিকানি হম রাঁরা ওহিঠাম জাগত বহৈ ছী খা হ্নকা সংগ রৈঁসি রৈঁসীকান ভোবকা চাহক চুস্কী নৈত সাহিত্য খা খান-খান রিষয সভ পব রঁতিযাগ ছী। পছিনা খনেক রর্ষ সঁ রাঁরা হমব সভসঁ নীক মিত্র ছথি, খভিভারক খা মনোচিকিসেক সেহো। হমবা সভক গপক কোনো নির্ধাবিত রিষয নহি বহৈত খছি। রাঁত পসবৈত খছি ত সাহিত্যক সীমা পাব কবৈত নানূ-নীতিশ, মোদী-খডরাণী, মোহম্মদ বফ়ী-রঁনবাজ সাহনী, শাহরুখ-খক্ষয কুমাব, ধোনী-গারস্কব, ফেডবব-খমৃতবাজ খা কেদন-কীদন-কহাঁদন-কোনদন তক চনি জাগত খছি। রাঁরাঁক রিরিধ রিষযক খধ্যযন খা সূচনা হমবা খাশ্চর্যমিশ্রিত খানন্দ মে ডুরঁরৈত বহৈত খছি খা হম হ্নকা নগ সঁ রঁহুত-রঁহুত মাতরঁব ভএ কএ ঘুবএ ছী। হমবা নগৈত খছি জে রাঁরাঁক নেন ডিক্শনবী, এনসাগক্লাপীডিযা রা গুগ্গন সন নামকবণহ্ যথেষ্ঠ নহি খছি। নাগৈএ জে রাঁরাঁক নেন কোনো জানকাবী দুর্নভ নহী ছনি, রাঁরাঁ নেন কোনো চীজ খসংভর নহি ছনি খা রাঁরাঁক সংগতি কোনো মাটিও কেঁ সোনা রঁনা সকৈত খছি।

अरविन्द ठाकुर

दुनियाँ की जाना मैं कौन (अपनाकें खोजैत किछु अप्पन बात)

एकबेर एकटा जिज्ञासु एकटा दार्शनिकसँ चारिटा प्रश्न पुछलक। एहि संसारमे सभसँ नमहर के अछि ?

उँत्तर भेटैन – आकाशे। संसारमे सभसँ हल्लुक काज की अछि ? उँत्तर भेटैन – बिन माँगन सलाह देब। दुनियाँमे सभसँ कठिन काज की अछि ? उँत्तर भेटैन – स्वयंकें चिन्हब। आ अन्तिम प्रश्न छल – दुनियाँमे सभसँ गतिशील की अछि ? उँत्तर भेटैन – विचार। अखनि हमरा आगू-पाछू जीवनक आकाशिक नमहर पसार पसरल अछि आ स्वयंकें चिन्हबाक सभसँ कठिन काजक लेल स्वयंहिकें बिन माँगल सलाह दैत सभसँ गतिशील विचारक शरणमे छी। अखनि जिज्ञासु हमहि छी आ दार्शनिकक भूमिकाक निर्वाह सेहो हमरहि करबाक अछि। जिज्ञासु लग विचारक प्रश्न रहए आ दार्शनिक त प्रत्येक क्षण मनन-चिन्तनमे बहैत जीवन आ प्रकृतिक अन्वेषण-अनुसंधानहि करैत रहैत अछि। हमरा लग ले ओ दुनू स्थिति अछि आ ले सुविधा। एकटा रस्ता अछि जे अपन जीवनक पछिलका किछु अध्यायसभकें उनटाबी आ देखी जे ओहिसँ किछु बँहराएत अछि कि नहि !

आठ वर्ष तक स्वपोल जिला रेड क्रास सोसायटीक मानद सचिवक रूप मे एकर विधिवत स्थापना आ लोकोपकारक अनेक रास काज कएलाक बाद जेना एकरसतासँ उँबिया गेल रही। हमर मान्यता रहल अछि जे एकरसता जीवनक धर्म नहि अछि आ तें हम एहि पदक जिम्मेदारीसँ मुक्त हुअए चाहैत रही किन्तु कोनो जिलाधिकारी (जिला रेड क्रास सोसायटीक पदेन अध्यक्ष) हमरा छोड़ए नहि चाहैत छला। हमरा लोगत रहए जे एहि पद पर रहि हम अपन हिस्साक काज कए चुकल छी आ आब हमरा अपन साहित्यिक काज दिस बेसी समर्पणक संग लागैक चाही। अन्तत: हमरा एकटा अवसर भेटैन। अकस्मात डा एन0 सवरण कुमार , भाप्रसेक

স্থানান্তৰণক আদেশ আৰি গেল বহএ আ হম মণ্ট দ অপন ত্যাগপত্র লিখি হুনকা হাথমে থমা দেলে বহিযনি আ হুনকা ঠামপৰ পদস্থাপিত ভেল জিলাধিকাৰী কুমাৰ বরি পৰ দৱাঁৰ ৱঁনাএ বেড ঞাস, স্বপৌনক নৰ কমিটীক চযন হেতু চুনারক আযোজন স্বনিশ্চিত কৰৱাঁএ লেলে বহী। একটা সম্মানিত পদসঁ স্বেচ্ছাপূর্বক এনা ত্যাগৰ ৱঁহতো গোষ্টেকেঁ অজগুত জকাঁ লাগল ছলনি। হমৰ অন্বজত্তন্য আ বেড ঞাসমে হমৰ সংযঞ্জ সচির বহল মিথিলেশ দত্ত তহিযা লোকক জিজ্ঞাসাক উত্তৰ দৈত কহলে বহথিল — " ভৈযা ৱৈৰাগী লোক ছথি। কোলো পদ-সম্মানকেঁ পকড়ি কএ অপন চাঁগুৰমে ৰাখৰ হুনকৰ ফ়ি তবতমে নহি ছলি।" এহিসঁ কুছেক ৰর্ষ পহিলে তকোলীন জিলাধিকাৰী সংজীৰ হংস দ্বাৰা হমৰা মাদে জিজ্ঞাসাক উত্তৰমে একটা এডৱোকেট মিত্র ৱঁচল জী হুনকা কহলে বহথিল— "অৰৰিন্দ ঠাকুৰ ক্ষমতাৱান লোক ছথি , সর্বগুণসম্পন্ন ছথি কিন্তু মিজাজমে কনেক টেটী ছলি, ঘমন্ডী লোক ছথি।" এহিনা মন পড়ৈএ জে একৰেঁৰ হমৰ এক ৰাজনীতিক প্রতিদ্বন্দী খিসিআকএ হমৰা পৰ টিপ্পণী কএলে ছলা— "ঞা অৰৰিন ঠাকুৰ অপনাকেঁ ৱঁড়ু কাৰিন ৰুঁঝএ ছথিন। ও কেকৰো পোস মাননিহাৰ নহি ছথি আ তেঁ পৰম অৰিশ্বসনীয ছথি।" ৰিহাৰ কেমিস্ট এন্ড ড্রগিস্ট এসোশিএসনসঁ সোলহ ৰর্ষ তক জুড়ল বহনাক ৱাঁদ হমৰা লাগল জে এতয হমৰ যোগ্যতা-ক্ষমতাক সহী-সহী উপযোগ নহি ভএ পাৰি বহল অছি আ হম জতেক পাত্রতা ৰাখএ ছী তেকৰ প্রতিদান হমৰা নহি ভেটি বহল অছি। এহি সংগঠনক সর্বেসর্ৱা পৰসন কুমাৰ সিংহ(জে ৱাঁদমে এহি সংগঠনক অখিল ভাৰতীয মহাসচির সেহো ভেলা) হমৰ ৱঁহত

ঘনিষ্ঠ ছনা কিন্তু হম খপন পক্ষক প্রদর্শন নেন হ্নক রিবোধমে ঝন্ডা উঁঠাএ নেনে বহী। পবসন জী ওহি চ্নারমে রিজযী ভেনা ত হম হ্নকা ৱঁধাগ দেৱঁএ নেন মঁচপব গেনহুঁ। ওহি রিজযোন্নাসক রাতারবণহ্মে হমব ৱঁধাগ স্বীকাব কবৈত পবসন জীক খাঁখি নোবাএ গেননি খা ও ৱাঁজন ছনা – ' হম ত সংগঠনক বাজনীতি কবৈ ছী খা হমবা সংখ্যাৱঁনক ধ্যান বাখএ পড়ৈত খছি তেঁ হম খহাঁক যোগ্যতা সংগ ন্যায নহি কএ সকনহুঁ। কিন্তু গহো তথ্য খপন ঠামপব খছি জে ওা জগহ(ব্যারসাযিক সংগঠন) খহাঁসন ৱৌক্ষিক নোকক নাযক নহি খছি।' সামাজিক সক্রিযতাক ক্রমমে কোনো চ্নৌতী ভেষ্টিতহি হম জিম্মেরাবী সম্হাবি নৈত বহী খা এহি ক্রমমে খনেক সংগঠনক হম সংস্থাপনা কএন খা ওকব সংচানন সেহো খূৱঁ সফনতাপূর্বক কএনহুঁ কিন্তু ওা সভ হমবা খামিক সংন্তুষ্ঠি নহি দএ সকন। নাগএ জে এতয ঠমকন জকাঁ ছী, ৱৈঁসী পসাবক কোনো গুঁজাগশী নহি। ডা নরীন ক্মাব দাস কখনিওকএ কহথি জে হম এহিসভ নেন নহি ৱঁনন ছী। জখনিকি ঠীক একব রিপবীত একৱৈব স্বপৌনক রিধাযক(রর্তমানমে রিহাব সবকাবক মংত্রী) রীজেন্দ্র প্রসাদ যাদরক হমবাপব ওা মন্তব্য খএননি জে হমবাসন নোক বাজনীতি নেন এসেষ্ট/পূজী হোগত খছি। হমব পনীক ত উঁঠৌনাপব ওা নিযমিত খা শাশ্বিত টিপ্পণী হোগত বহ ছনি — "হমব ভাযসভ কেনা নৌকবী কবৈ ছৈ খা খপন পবিরাব কেঁ কেনা স্বখসঁ বাখএ ছৈ, সে খহাঁ ব্রুত্ত কহিও ভেন! কীদন–কহাঁদন কবৈত বহনৌঁ খহাঁ......খহাঁসঁ হমবা কহিও স্বখ নহি ভেন ! ! !" ও কী চাহএ ছথি খা হ্নক স্বখক কী পবিভাষা ছৈ , সে খাগ ধবি হম নহি বুঁনি সকনহুঁ।

হँ, এতেক বুঝ্নএমে আরেঁ এ জে ও প্রকারান্তরসँ हमर কমৌআ আ পনীতঙ নহি হএরাঁক ওনহন দএ রহল হোএত ছথি। বিষযান্তর নহি হএত জँ এ চর্চা করৈত চলী জে ও সভসँ বেঁসী প্রসন্ন আ গৌবরান্বিত রহলীহ ওহি দস মাসমে, জখনি हम "মিথিলা আরাজ"ক সম্পাদক পদপর কাজ করএ লেল দরভংগামে রহী আ हमर পারিশ্রেমিকক রাশি ব্যয করএমে ও স্বচ্ছন্দ ছলী। हमर মা আ বাঁবুজী (মাতা-পিতা) हमर ঘরারস্থাক ফছেকে ফটৈরেঁ আ অল্হড়পনাক জানকার হোএতহ্ সভদিন हमरा প্রতি আশ্বিস্ত রহলথি আ হ্নকা দ্নূগোটেকে নজরিমে हम সপূত ছলহুँ। हमर তীনূ প্বত্র हमरा প্রতি অনন্ত আদর আ ভক্তিক ভার রাখএ ছথি আ হিনকাসভক দিসসँ কহিও কোনো নকারামেক টিপ্পণীক জানকারী हमरा নহি অছি। हमर একটা রবিষ্ঠ মিত্র স্বখায সাহ্ কিতারী শিক্ষাসँ ত দূর ছথি কিন্তু দ্নিযারী অনুভর আ জ্ঞানসँ খূরঁ ভরল-পূরল আ সমৃদ্ধ ছথি। হ্নকাসँ हमरा অপন লেখন লেল মাবিতেবাস অদ্ভুত খোরাকসভ ভেটৈল অছি। বেঁসীকাল ও हमर রিচার আ কিবদানীক ছিলকে উঁতারএমে লাগল রহৈ ছথি কিন্তু জখনি হ্নকর ভাও জাগএ ছলি ত ও কহতা—" হও অবরিল বাঁবূ , তোরা সন বাজা কোয নৈ। জে করবঁহক সে অপন মর্জী আ মূড সএ। কহিযো কেকরো পাছূ জাগত, কেকরো নকল করৈত আকি ধন-পরতিষ্ঠাপর ভাগৈত তোরা নৈ দেখলিযহ। তূ রৈহ করবঁহ জে তোরা কচতহ, চাহে বঁহিন্চো... এ দ্নিযা এম্বে সএ ওম্বে কিএ নৈ চলি জায। "
একদিন একটা প্বত্ররত ঘরা বণধীর বাঁজল ছল —"কাল্হি অপন মীটীংগমে তোহর চর্চা করলিযহ , চচা। ওতএ সভগোটে ফ্নহদেখৌসী গপ করৈত রহৈ। हमरা তামস

उठन आ हम कहलनिअए जे एहि गोल-गोल गपसभसँ पार्टी संगठनक कल्याण नै हेतै। फेर तेहर उदाहरण दैत कहलनिअए जे हुनके सन ठाहिं-पठाहिं आ बाफ़-साफ़ राजनिहारक रेगरता छै जे स्पष्टरूपसँ रोगक जड़ि कें देखार करए आ तखनिए ओकर उपचार सम्भर छै। तैपर जे तानी पड़लह से की कहियह। " एकर ठीक रिपरीत, हमर र्ठिया भौजीसभक उपराग रहैत रहनि—" एह! एहन मौनी रारा नै देखलौं। हुनकामे रोल नै आ हाथ-गोरक खचरपनीक सीमा नै। गओ माय!"

मैथिली लेखक संघक छठम स्थापना दिरस(12 जुलाइ,2013,पटना) के अरसरपर ललितक लेखनदृष्टिपर धाराप्ररीह 65(पैंसठ) मिनट, जराहर नरोदय रिद्यालय, स्वपौलक छात्रसभक रीच रचनामेक लेखनपर 75(पचहत्तर) मिनट आ राष्ट्रीय नाट्य अकादमीक प्रशिक्षण कार्यशालाक समापन समारोहमे 90(नब्बे) मिनटक हमर अभिभाषणक चर्चा रिभिन्न महफ़िलसभमे होइत रहल अछि। आलह् अरसरपर हमर दीर्घ, मध्यम रा लघ् आकारक भाषण रहुत पसन्द कएल जाइत रहल अछि। जखनिकि पली कहैत रहए छथिन— "अहाँ लग हुह भुकारएसँ कोनो फ़ायदा नहि। हुछा आ केतरो प्रष्ठैत जाउ, अहाँ हुछ राजरें नै कररें!" मैथिलीक योद्धा-घरा रचनाकार हमार शैलेन्द्र कहैत छला—" अहाँ सन सनेही लोकसँ हमरा आग धवि जीरन मे भेंट नहि भेल छल। निरन्तर कल्मषतासँ दहारोर होइत एहि रिकाल-काल मे अपन हृदयमे प्रेमक एतेक अथाह सागर अटाए कए अहाँ कोना राखने छी, सर!" लगातार तीन रर्ष तक

'लोक प्रसंग'(हिन्दी मासिक पत्रिका) मे हम 'ठाकुर का ठाँर' कालम लिखबाक बहाने जे बहुत लोकप्रिय भेल छल। ओ पत्रिका आओ बहराइत अछि आ ओकर सम्पादक आओ आग्रह करै छथि जे हम ओहि कालम केँ फेर बढ़ाऊँ किन्तु समयाभावमे हम चाहिओकए हुनकासभक आग्रहक मान नहि राखि पारि रहल छी। ओहि कालमक एकटा नियमित पाठक एक बेर दूरभाषपर कहलनि जे हम ओहि कालममे नकारात्मक दृष्टिकोण राखए छी आ हमर शीर्षसभ घृणाक प्रचार करैत अछि। हमर साहित्यिक लेखनकेँ विक्षोभ, असन्तोष आ आक्रोशक साहित्य कहनिहारलोकनिक कमी सेहो मैथिली साहित्य-जगतमे कम नहि अछि।

तेँ जखनि हम अपना प्रति लोकसभक टिप्पणी आ लजबिहाक ध्यान राखैत स्वयं अपनहिसँ अपन आत्मावलोकन, आत्मनिरीक्षण करै छी त सन्त बुल्लेशाहक ओ शीर्ष बेर-बेर उभरिकए हमर चेतनासँ टकराइत अछि —" बुल्लिआ, की जाणा मैं कौन ? " बुल्लेशाह त प्रायः अपना-आपकेँ चिन्ह गेल छला, हम अपना-आपकेँ चिन्हि सकलहुँ कि नहि, चिन्हि सकब कि नहि, कहब कठिन अछि। अलबत्ता हम एहि प्रश्नक उत्तर लेल निरन्तर अपनासँ जरहाइतलड़ी करैत रहब, ताहिमे हमरा कोनो संशय नहि अछि।

हमर ई मानब अछि जे साहित्यकार सृष्टि-संरचना आ जन-जीवनक गंभीर पर्यवेक्षक त होइते अछि, ओकरा अपनहु अन्तसमे बेर-बेर हुनकी मारि अपन थाह सेहो लैत रहबाक चाही। एहिसँ ओकरा अपन मूल्यांकन करएमे सहुलियत होइ छै आ ओ बेसी

সন্তুনন সাধি পরৈঁত ঋছি , ঋামোন্বশাসনক তমীজ জাগএ ছৈ , সে ঋনগ। স্বযঁকেঁ ঋন্ডবস্ণ্টীমেষ্ট কবরঁ জং ওকবা ঋপনা নেন ঘাতক ছৈ ত ওরবস্ণ্টীমেষ্ট কবরঁ ওকব নেখন ঋা পাঠক–সমাজ নেন ঘাতক ছৈ ঋা ঋামোন্বশাসন নহি বহনে ত সভষ্টা খেনে চৌপষ্ট। জে ঋপনাকেঁ সহী–সহী নহি তৌননক সে ঋপন নেখন রা ঋান কোনো সামাজিক গতিরিধি নেন গমানদাব নহি বহি পরৈঁত ঋছি। তেঁ হম সমাজক রিভিন্ন ক্ষেত্র ঋা ওকব ক্রিযাকনাপকেঁ জং ঋপন পর্যরেক্ষণক দাযবামে বাখএ ছী ত স্বযং ঋপনহ্ কেঁ এহিসং নহি রঁকসএ ছী। ওা ঋামোরনোকনক প্রক্রিযা ঋা ওকব ফ়নাফ়ন ততেক জষ্টিন ছৈ জে কএক রেঁব হম এহিমে ওঝবাএ জাগ ছী , কখনিও স্পষ্ঠ গজোত দেখাগত ঋছি ঋা কখনিওকএ এহি ওঝবীক রীচসঁ কোনো মহীন সন একপেবিঋা ডগব সেহো দেখাগ পড়ৈত ঋছি।

জঁ ভাবতীয পংচাংগ কেঁ মানী ত হমব জন্ম ফ় াগ্বনক দ্ঋাব চঠি ওকব দবরঁজ্জা খষ্টখষ্টারৈঁত মাঘক প্বর্ণিমা কেঁ ভেন জাহি দিন দেশভবিমে সংত বরিদাসক জযন্তী ঋা উঁড় াঁসা মে ঋগ্নি উঁসের মনাএন জাগত ঋছি। ওহিদিন স্নান–দান–ব্রতক মহিমা সেহো মানন গেন ঋছি। ঋংগবেজী কৈনেন্ডবক ঋন্বসাব হমব জন্মতিথি 14(চৌদহ) ফ়ববরী কেঁ পড়ৈত ঋছি জহিযা রিশ্বভবিমে প্রেমক মসীহা মানন জাগত সংত রেনেন্টাগনকেঁ স্মবণ কবৈত রেনেন্টাগন–ডে মনাএন জাগত ঋছি ঋা গএহ ও তিথি ঋছি জহিঋা স্বামী দযানংদ সবস্বতীক জযন্তী সেহো পড়ৈত ঋছি। তেঁ প্রায: সংত বরিদাসক ফ়কীবী মৌজ, স্বামী দযানংদ সবস্বতীক মূর্তিপূজা ঋা কর্মকান্ডক প্রতি রিবোধী তেরব

आ संत रेनेन्टोगनक प्रेममयता हमर मन-मिजाजमे बचल-बँसल अछि। स्नानक शुचिता, दानक पवित्र उदारता आ कोनो काजकेँ व्रत जकाँ मानि ओकरा मिशन बनाए लेब हमरा सोहाएत अछि।

जाति भारतीय समाज-संरचनाक एकटा अप्रिय किन्तु अपरिहार्य(अखनि तक) वास्तविकता अछि आ ताहि तरे पर हम ब्राह्मण छी - भूमिहार ब्राह्मण-कर्णाटवंशी। पूर्वजसभ कोनो जमानामे मैसूरसँ आएल रहथि, तेँ मूल अछि-मैसूरिया , गोत्र - पराशर आ गोत्र प्रवर छथि - वशिष्ठ,शक्ति आ पराशर। नवका सर्वेसँ पहिलुका प्ररनका खतियान देखए छी त ओहिमे एक-एक खतियानमे सैकड़ाक- सैकड़ा बीघा जमीन पूर्वजसभक नामपर देखाएत अछि। बँटैत-बँटैत हमर हिस्सा कट्ठापर चलि अएलैए जँ पिताजीक कीनल-अरजल कछु बीघा नहि रहितए। खेतिहर कहाएब गौरवक गप बुझाए ए। ओ अलग बात जे समयान्तरसँ "उत्तम खेती" आब निषिद्धक कोटिमे आबि गेल अछि। किन्तु बौदी-दादीसँ अप्रभावित रहि श्रमक मान राखैत दाताक पवित्र-भावसँ अन्न उपजाबैत रहबाक जनहितैषी किसानी संस्कार हमर रग-रगमे, गत्र-गत्रमे घाम जकाँ बँसल अछि, देहक धमनी आ मनक गह्वरमे खून आ विचार जकाँ दौगैत अछि। केकरो कछु दएमे सुख आ आत्मिक संतोष भेटैत अछि। से अपन जीवनक प्रत्येक गतिविधिक प्राय: हर क्षेत्रमे हम अपन एहि प्रवृतिकेँ सदैव उत्साहित कएल अछि आ विपरीतहु परिणाम अएलापर तेकर कोनो अफ़सोच कहिओ नहि भेल। केकरोसँ कछु लएमे सदैव संकोच भेल अछि

আ এহি সংকোচকেঁ হম জিদিযাহ গনকাব তক পহুঁচাএন অছি। হমবা ওতবেঁ চাহী জেকব আ জতেক হম পাত্রতা বাখএ ছী। সে নহী ভেটৈএ এ ত দুখ হোগএ, সে সকাবৈওমে হমবা কোনো সংকোচ নহি অছি।

বেঁদবেসঁ দুআবিপব রিভিন্ন ক্ষেত্রক রিশিষ্ঠ ব্যক্তিত্বসভক আগমনক সাক্ষী বহল ছী আ অপন মানস আ ব্যক্তিত্ব নির্মাণমে হম ওহি ব্যক্তিত্বসভক যোগদান মানএ ছী। ললিত নাবাযণ মিশ্রসঁ ফ়ণীশ্বিবনাথ 'বেণু' আ বামধাবী সিংহ 'দিনকব'সঁ ললিতেশ্বিব প্রসাদ শার্মা সন রিলক্ষণ অতিথিসভক অপনত্বময উপস্থিতি আ হুনকাসভক স্বাগতমে মানা পহিবাবঁএ লেল বঁড়কী দীদীক সংগ 'পহিলে হম ত পহিলে হম'বঁনা নোঁক-মোঁক কল্হকা ঘটৈনা জকাঁ স্মৃতিপটৈলপব অংকিত অছি। হুনকাসভসঁ প্রাপ্ত প্রেম আ স্নেহ পকঠোস ভেল এহি রযসহমে হমবা ললাযিত কবৈত অছি আ হমব অক্ষুন্য ধন জকাঁ অছি। এহি রিভিন্ন ক্ষেত্রক ব্যক্তিত্বসভক পবস্পব রিবোধাভাসী বৈরিধ্য আ সমন্বয দুনূ হমব ব্যক্তিত্বমে সাফ়-সাফ় দেখল জাএ সকৈত অছি। হিনকাসভক ব্যক্তিত্বক তেজোময আভাক প্রভারসঁ জে ঔৎস্ক্য আ জিজ্ঞাসাক প্রাদুভরি হমবামে ভেল সে নিবংতব অপন চবম দিস অগ্রসব বহল অছি। হমব ঞা জিজ্ঞাসা তা তক হমবা চৈনসঁ নহি বৈসএ দৈত অছি জা তক কি হম কোনো 'কিএ'ক 'কিএ'ক আখবী 'কিএ' নহি জানি লএ ছী। দোসব দিস ঞা হান বহৈত অছি জে জেকবা জানএ-বুঝএক জরুবত বা জিজ্ঞাসা নহি বুঝাবঁএ ত ও আনক লেল কেতবোঁ মহত্বপূর্ণ হুঅএ, হম ওকবা দিস হুনকী তক নহি দএ ছী।

पढ़बाक हमरा लेल साँस लेबाक जकाँ अछि। लेखनक विविध विधाक पोथीसभ ध्यानसँ पढ़ए छी आ विभिन्न पोथीसभक पथार हमर स्टडी-रूममे अलमारीसँ लऽ कऽ बेडसँ चौकी तक देखल जाए सकैत अछि। स्वाद-परिवर्तन लेल धार्मिक पोथीसभ त पढ़िते छी, सिनेमा आदि आन-आन कोनो विधाक कोनो पोथी-पत्रिका सेहो बिना कोनो पूर्वाग्रहक ओतबे रुचिसँ पढ़ए छी जेतेक रुचिसँ साहित्यक कोनो विधाक कोनो पोथी-पत्रिका। माथाकेँ विश्राम देबाक लेल पढ़बाक बंद नहि करए छी, विषय बदलि दए छी। जीवनक शुरुआती दौरमे आचार्य चतुरसेन , गुरुदत्त , बच्चन , शरतचन्द्र , बंकिमचन्द्र , टैगोर आदिकेँ हिन्द पाकेट बुक्सक माध्यमसँ पढ़लहुँ-चिन्हलहुँ त दोसर दिस गुलशन नंदा, प्रेम वाजपेयी, प्यारेलाल आवारा आ कुशवाहा कान्त आदि सेहो हमर पढ़बाक परिधिसँ नहि छिटकि सकला। जासूसी आ थ्रिलर सेहो हमर पाठान्तरजात रहल आ ताहि क्रममे ओमप्रकाश शर्मासँ शुरू सूची कर्नल रंजीत , वेदप्रकाश काम्बोज, गुरुदेव शर्मा 'प्रीत', एस एल कंवल आदि तक गेल। बादमे एहि सूचीमे सुरेन्द्र मोहन पाठक, चन्दर आ राजहंस सन-सन नाम जुड़ल आ अनुवादक माध्यमसँ जेम्स हेडली चेज आ डान पेन्डलटन(जैक द बास्टर्ड वॉलन सीरिज) आदि सेहो। तेकर बाद स्वाद परिवर्तन लेल सीधे मूल अंगरेजी दिस गेलापर मामला अगाथा क्रिस्टी, चार्ल्स डिकेन्स, जी एम फ़ ास्टर सँ होइत हेराल्ड वारिंस, जर्विंग वैलेस, सिडनी सेल्डन, वारिन रूक, खुशवन्त सिंह, आर के नारायण , मनोहर मालगोंकार, डिक फ़ ्रांसिस, जेफ़री आर्चर, डी एच लारेन्स, विल्बर स्मिथ, आर्थर हेली,

डान ब्राउँन, बार्ब कीन, एनिस्ट्टैयब मैक्नीन आ माबियाना कोन सन–सन नाम आ चेतन भगत तक पहुँचन अछि। हिन्दीक कोनो विधाक कोनो साहित्यकार एहन नहि छथि जिनकर कोनो ने कोनो पोथी वा अंश हमर पढ़नाइक रुचिपनीसँ वंचित बचि गेल हुअए। स्वपौनक परिनक नाइब्रेरीक ध्वंस होइसँ पहिने अंगरेजीक अनेक अद्भुन्य पोथी पढ़ैक सौभाग्य भेटैत जाहिमे एडगर वाइस बरोक टौबजन सीविजक दुर्लभ पोथी सेहो छल।

कृषि, समाज–सेवा आ साहित्यक त्रिमूर्ति–संस्कार हमरा अपन पितासँ भेटैत अछि। हमर पितासँ उपरका अर्थात बाबा, परबाबा बाबा पीढ़ी शुरूरूपसँ खेतिहर छल। हमर सम्पूर्ण गोतिया–दायादीमे खेतीएक प्राधान्य, पढ़ब–लिखब प्राथमिकतामे नहि। विशाल आकारक दायादीमे हमर पिता एकटा विलक्षण व्यक्तित्वक रूपमे उदित भेला आ अनेक विघ्न–बाधाकेँ पार करैत अट्ठैट लगन आ साहसक संग शिक्षा प्राप्त कए साहित्, पत्रकारिता आ समाजसेवाक क्षेत्रमे अपन पएर दए एकटा अलग डगर बनएलनि – शायर, सिंह आ सपूत जकाँ। स्वतंत्रता संग्राममे पड़ि अपन वाष्ट्रीय जिम्मेदारीक निर्वहन सेहो कएलनि। जीवनक विभिन्न गतिविधिमे अपन योगदान देबाक क्रममे ओ सभदिन खेती–किसानीक प्रति अपन जातीय–पारिवारिक परम्परागत संस्कारकेँ अंगेजने रहला। सैकड़ो क सैकड़ो जन–मजूर आ अनगिनत बोझाक बोझा धान, गहुम, मकै, मूंगक टाल हम अपन खरिहानमे देखने छी। दू दर्जनसँ बेसी बरद, महीस आ गाय अपन गोहालमे देखने छी। खेती–किसानीक प्रति हुनक समर्पण आ दीवानगी बिहार सरकारकेँ हुनका 'कृषि–पंडित' के उपाधि–सम्मान देबाक लेल बाध्य कए

দেলে ছललि। कृषि विभागक पदाधिकारी लोकलि हमर दृश्यार आ खेतकें धंगले बहैत छला। हमर खेतक धत्तापर तकोलील कतेको मंत्री, सांसद आ विधायकलोकलि खेतीक सौंदर्य-संस्कृतिसँ मुग्ध आ आलन्दित हएबाक लेल आबैत बहैत छला। स्वतवीक सीधमे लोगत बोपली आ पिताजीक उँसोहरर्ध्धल (मुख्याक मुख्या वीड़ी एहिमे उँ७प्रेवकक काज करैत छल) सँ बँहबाएल बाँलिहाबिलसभक समरेत गालक आलन्ददायक अलुभूतिक स्मृतिसभ हमरा लग अछि। हवित-भवित खेतसभक बीच बँलल दू कोठबीक फार्महाउँस आ ओतय लागल बाँबूजीक लमब्रेँटो मोटबसाएकिल हमर स्मृतिक आँखिमे सजीर आ स्थायी चित्र जकाँ अखलिओ उँपस्थित अछि। अलेक बेब काँग्रेस कमिटीक बैठक तक ओहि धत्ता पर भेल। हाँड़ीमे बँलल चाह पीबैत आ मकैक भुट्टा खाएत पार्टी आ चुलावक गपरबँला अभिलर बैठक। ई सभटा पैतृक संस्कार हमर जीवलमे अरतवित भेल अछि। एकतबहें हम डेलियल बेबस्टबक ओहि प्रसिद्ध उँक्तिक सत्ता-शास्वततताक साक्षात प्रमाण छी जाहिमे ओ कहले छला जे जखलि खेती होएत अछि, तखलिए आल-आल कलासभ पलबैत अछि आ तें खेतिहबलि लोकलि मालर-सभ्यताक लिर्माता छथि। बाँबूजीक असीम सामर्थ्य आ पुरुषार्थक शिताँशिह् हमरामे लहि अछि आ ले ओहिसभक लेल सकाबामेक समय-समाजहि बहि गेल किन्तु हम ओहिसभक आभासीए प्रतिरूप सही , छी। समाज-सेरा हमरा आलन्द दैए, साहित्य त ब्रह्मालन्द-सहोदबहि अछि , किन्तु पबमालन्दक अलुभूति हमरा माटिएक संगतिमे होएए। पहिले घंटाक घंटा कोदाबि पाबि लैत बही, से आब हाड़मे बाँल-मैबोक कमीक

চনতে পাব নহি নাগৈএ। খেতিও-ৰাঁড় ী খাৰ ৰঁহ্ত হদ তক সমৗোগএ গেন খছি। তেঁ একব রিকল্প খাৰ হমবা নেন হমব ঘবক(রিপ্লর ভরন) খাগূক ফ্নৰাঁড় ী খছি। একবা চিক্কন-চ্নহ্মন খা স্বন্দব ৰঁনাএ কএ বাখএমে হমব শাবীবিক ৰর্জিশহ্ হোগত খছি খা ওহি দৌবান হম কোনো খর্যুক্ত, খদৃশ্থ পবমামোক সানিধ্যমে সেহো বহএ ছী। সাহিত্ক ৰৈসীতব বা মৈষ্টৈবিযন হমব মনো-মস্তিষ্কমে ওহি দৌবান খাৰৈত বহন খছি।

হমব ফ়র্াতবত রিপক্ষী খছি। ভারনামেক রা ক্রিযামেক স্তবপব জেকবা সংগ দএ ছী, খপন প্র্ণ ক্ষমতাক সংগ দএ ছী। কিন্তু জখনিএ ও সত্তামেক ৰূপ ধাবণ কবৈত খছি, হমব মন বসে-বসে ওকবা প্রতি রিহঞ্চা খা খাক্রাশিসঁ ভবএ নাগৈত খছি খা ওকবাসঁ হমবা খকচি হ্খএ নাগৈত খছি। সত্তা-প্রতিষ্ঠান যথাস্থিতিক পোষক হোগত খছি, ওহিমে গত্যামেকতা নহি বহি জাগ ছৈ। কেতবৌ প্রগতিশীন রিদ্রাহ হ্খএ, সত্তামে খার্রিতহি নকীবক ফকীব ভএ জাগত খছি, নর প্রযোগসঁ হড়কএ নাগৈত খছি, খপন জীরন্ততাকেঁ সমেটি কাষ্ঠ-চবিত্র ওঢ়ি নএত খছি। তেঁ সত্তা-প্রতিষ্ঠানসভ হমবা কব্রিস্তান জকাঁ নাগৈত খছি – মবন হ্মদসিভক রিশ্রামস্থনী। খা তেঁ সদৈর হমব সমর্থন রিপক্ষকেঁ ভেটৈ জাগত খছি – ভার খা ক্রিযা দ্নূ ৰূপমে। হমব এহি ফ়র্াতবতী নিযমক একমাত্র খপরাদ নানূ-বাৰঁড় ী খান্দাননহি ষ্টৗ বহন খছি।

বাজসী, তামসী খা সাত্বিকমেসঁ হম কোন বৃতিক নোক ছী, সে হম খাগ তক নহি তৈ কএ সকনহুঁ। সময-সময খা ঠাম-ক্ঠাম তীনূ গ্বণ জোব

मारैत बहल अछि हमर जीवनमे। एकर अलग-अलग मात्राकेँ स्वविश्वाएवँ जहिना अधिंभवर नागेत अछि तहिना एकर क्रमवँच्छताक विवरण देवँ सेहो। एकटा विवाह चण्डी-यज्ञक यजमान वँनि अग्नि, आहुति, मंत्र पाठ आदि-आदिक पवित्र आध्यात्मिक वातावरणक साक्षी वँनि अनेक दिन तक सौंसे दुनियाँ केँ बिसवि तपस्वी जकाँ बहल छी। अनेक सतसंग आ वामकथाक आयोजक वँनि ओकव समर्पित श्रोताक रूपमे आनन्दविभोव भेल आकण्ठ डूबँल बहल छी आ उँचस्तवीय गायक-कथावाचक संग ओकव भजन-कीर्तनमे सहभागीए टा नहि वँनल छी वँवन स्वयं भजन गावि हुनकासभक संग-संग अपनहु मित्रमण्डलीकेँ भौचक्क कए देने छी। धार्मिक ग्रंथ पठवाँक सूब चठल त वामचवितमानस, वामायण, महाभावत, भागवत-पुवाण, दैवी-पुवाण आदिक संग-संग अनेक उँपन्नर्छ उँपनिषद आ संहिताक हजावो हजाव पन्ना चाटि गेल छी। एतवेँ किए, पवित्र वाँगवँन आ कुवान सेहो हमव पठैक जनूनसँ नहि वँचि सकल अछि। अवसव अएनापव अपन धार्मिक मित्रमण्डली आ पविवावीजनक वीचमे प्रवचन सेहो कैएल चुकल छी आ मानसक सस्वव पाठ त कतेक वेँव। किन्तु एकवा अपन जीवनक अनिवार्यतामे हम कहिओ सम्मिलित नहि कए सकलहुँ आ ओ जीवनक एकटा पुवान अध्याय मात्र वँनिकए बहि गेल अछि।

अप्पावधिएक नेल सही, एकटा अलग टोगपक मित्रमण्डलीक संग स्ववा-पानक महफ़ि लसभकेँ सेहो गुलजाव कएने छी आ से खूब धमगज्जव रूपमे। वोनवँम-यात्राक क्रममे भाँगक सेवन आ गाँजाक सोँटक स्वाद सेहो वुझल अछि। एकवेँव एकटा गवीवँ मित्रक

जन्मदिनपर देसी दारू पीबि हुल्लड़बाजी सेहो कएल अछि। घरारस्थामे होली आ दिवालीक अवसरपर एहि काजक लेल नियामति मानैत छथि आ एकर अनेक वास विस्संगति हमर स्मरणमे संचित अछि। ई अलग बात जे प्राय: पछिला 30-35 वर्षसँ एकदम हम विशुद्ध टी-टोटेलर बनल छी आ पीबैक नामपर पानि, चाह आ यदा-कदा कोनो शर्बत मात्र लएत रहल छी। साँख्यिकीमे जेबाक प्रयोजन एतय नहि अछि किन्तु यथेष्ठ मात्रामे प्रेम आ भोगक सुखद-दुखद अनुभवसँ मातर सेहो भेल छी। स्वकीया-परकीयाक विवरणमे जएबाक प्रयोजन सेहो अखनि नहि अछि आ ने वाँछित। खेतीक प्रति अपन प्रेमक चर्चा हम पूर्वहुँमे कए चुकल छी। एहिमे जे श्रम अपेक्षित अछि से दान करबा आनन्द दए ए। एहि क्रममे खुरपी, कोदारि ,दबिया, कचिया आदि औजारक प्रयोग यथेष्ठ आ निरन्तरतामे करए छी आ एहिमे आमिक-अध्यामिक सुख भेटए ए, किछ मित्र(?) द्वारा एकरा सोल्हकनक काज नामकरण कएनाक बादहु। एहि मामलामे भगवान परशुराम हमर गुरु छथि जिनका लग शास्त्र आ शर दुनूक अद्भुत समन्वित वितान भेटैत अछि। शास्त्रक अर्थ वा व्याख्या जेना सभ करैत अछि तहिना हमहु एकर माने पुस्तक-पोथीएक रूपमे लए छी किन्तु शर वा शस्त्रक हमर अर्थ वा व्याख्या खेती-बाँगवानी आ लेखनक लेल उपादेय औजारसभ अछि।

पारम्परिक अर्थमे हम कतहुँसँ धार्मिक नहि छी। पूर्वमे वर्णित हमर धार्मिक गतिविधिसभकेँ हमर जीवनक एकटा अस्थायी फेज कहल जाए सकैत अछि। पूजाक पाँच प्रकार (अभिगमन, उपादान, योग, गन्या आ

স্বাধ্যায) মে হম মাত্র স্বাধ্যাযকেঁ স্বীকাব কএনে ছী। সংযমক চাবি প্রকাব (ওন্দ্রিয,সময,ধ্যান আ রিচাব) মে সঁ কোনো প্রকাবসঁ হম স্বযংকেঁ নহি বাঁন্হি সকন ছী। কোনো প্রতিরঁধ জে হমব আমোকেঁ কচৈত নহি হ্অএ, হমবা স্বীকার্য নহি বহন অছি। এহি সংযমকেঁ হম অপন রিরেকপব ছোড়নে ছী আ ও অপন কাজ অরসব অএনাপব খূরঁ নীক জকাঁ কএনক অছি। সংসাবক তীন গতি (উঁপেত্তি, স্থিতি আ প্রনয) মে হম স্বযংকেঁ মাত্র স্থিতিমে স্থিত কএনে-বাখনে ছী আ রঁকিযা দূষ্টোপব সোচরঁ, চিন্তন কবরঁ হমবা ফিজূন আ ম্নর্খতাপ্বর্ণ নাগৈত অছি। ওা অরশ্য ধ্যান বাখৈক প্রযাস কএন অছি, কবএ ছী জে হমব অজ্কা কোনো কর্মসঁ অগিনা পীঠী রা অগিনা দিনপব কোনো নকাবামেক প্রভার নহি পড়এ। ভারী পীঠীক চিন্তা কএনে রিনা সভকিছু ভোগি নী রা ভোগৈক চক্রবমে নাশ কএ দী, এহিসঁ রঁঠিকএ আন কোনো পাপকর্ম হমবা নহি বৃ্ঝাগত অছি।

হমব ওা মানরঁ অছি জে একটো ওকাওক ৰূপমে হমব জন্ম, জন্মসঁ প্রাপ্ত কাযা আ এহি কাযামে স্থিত মন-প্রাণ, বৃ্দ্ধি-রিরেক, শ্রেমশক্তি আদি নিকদ্দেশ্য নহি ভএ সকৈত অছি। প্রকৃতিমে কোনো কাজ অনারশ্যক নহি ছৈ, নে ভেন ছৈ। এহি মেদিনীপব হমব উঁপস্থিতিক মূন উঁদ্দেশ্য কী অছি, তেকব অন্বেষণ হমবা কোনো এক কাজপব স্থিব নহি বহএ, হ্অএ দেনক অছি। জতয কতহ্ হমব আরশ্যকতা রা প্রযোজন জকাঁ হমবা বৃ্ঝাএন, ওতয-ওতয হম অপন যোগদান নেন রঁঠৈত আএন ছী আ তাহিমে সদৈর হমব সহযাত্রী বহন অছি হমব রিরেক জেকবা হম যনেপ্বর্বক সদতি জগএনে বাখএ ছী। রঁহ্তো

নোককেঁ হমব ও়া বিবিধ গতিবিধি হমব নিবর্থক ভ়ঙকাব জকাঁ নাগি সকৈত খছি, নাগনহ্ খছি কিন্তু খপন গতিশীনতাক ও়া বিবিধতা হমবা পূর্ণ খর্থবান খা ঔচিত্যপূর্ণ বু্ঝাগত খছি। খপন নিজতা খা সার্থকতাক মোনপব কেতবঁহ্ বৈশ্বিকীমতী সফনতা হমবা স্বীকার্য নহি বহন খছি। না ব্রুযেবক মান্যতা খছি জে সংসাবমে সফনতা প্রাপ্ত কববাঁক খা উন্নত হএবাঁক মাত্র দূটা মাত্ম খছি। এক ত স্বযং খপন শ্রম দ্বাবা খা দোসব দোসবাক ঝ্র্খতাসঁ নাভ উঠাকএ। খপন শ্রম পব হমবা ভবোস খছি, খপন প্রবৃতি খা বু্দ্ধিক খনুকূন মাত্মপব হম প্রশস্ত ছী খা খপন কর্মসঁ সংতুষ্ঠ ছী, স্বযংকেঁ মানসিকতামে উন্নত পাবঁএ ছী। এহিসঁ গতব সফনতাক কোনো পবিভাষা হম নহি জানএ চাহএ ছী। ব্রুযেবক বঁতাএন দোসব মাত্ম ধড়বঁ নে হমব খামোকেঁ কবূন খছি খা নে তেকব ন্ববি খছি।

সংগঠিত খা পবস্পব সহযোগী সমাজ হমব প্রিয কামনা বহন খছি খা এহি কামনাকেঁ মাত্র বৈচাবিক স্তব তক সীমিত নহি বাখি একবা নেন খপনা বু্ত্ত জতেক পাব নাগি সকন, সে কএনহুঁ খছি। হমব বিভিন্ন সাংগঠনিক গতিবিধিসভ হমব খপন এহি স্বপ্ন খা কামনাকেঁ ধবাতনপব উতাবৈত বহবাঁক প্রযাসক প্রতিফনন খছি। এহিমে কতেকো বঁব কিছু গোটেক ক্ষুদ্র–ক্ষণিক স্বার্থক কাবণ ভেন ক্ষতিসঁ হমব খাশা–খাকাঙ্ক্ষাপব তুষাবাপাত সেহো ভেন খছি, তাহিসঁ দু্খী খা ক্ষুব্ধ সেহো ভেন ছী কিন্তু এহিসঁ হমব গতি কখনিও–কখনিও কনে কম ভনে ভেন হুখএ, বাঁধিত নহি ভেন খছি। খপন এহি ফ়া তবতক চনতে তেঁ কতেক বঁব খপনা নেন 'জিদিযাহ' শব্দক প্রযোগ সেহো স্বননে ছী খা স্বনি–

स्वनि खनठिखएने छी। रिभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यमे खपन उँपयोग कवराँक नोभपव हम खाजओ कोनो तवहेँ नियंत्रण नहि वाखि सकन छी। खानस्य हमव एकटा खभिन्न खरगण खछि खा एहिसभक समरेत कावणक चनते हम स्वयंसँ साहित्य–सृजन नेन जे खपेक्षा वाखने बनी तेकव रॅहनाशि खखनिओ निखन जाएरॅ रॅचनहि खछि। साहित्यकेँ खपन सर्वस्व देनिहावसभसँ तेँ डाह सेहो होगत खछि।

मैथिनीक एकटा प्रर्नन संभारनाहाक कथाकावक ओनहन वहनि जे सम्पादक गौवीनाथ हनकव कथाकेँ कपचिकए ‘खंतिका’ मे छापननि। ग चर्चा गौवीनाथसँ कएनिखनि त एहि मादे रातनापक क्रममे गौवीनाथ कहननि जे मैथिनीमे जे चावि खछव निखि नेनक से खपनाकेँ रेदव्यास रॅुझए नागैत खछि। गौवीनाथक ग टिप्पणी ओहि कथाकावक मादे भनहि उँचित नहि हुखए किन्तु हमव खपन खनुभव कहैत खछि जे गौवीनाथ खपन ठामपव राजिरॅ कहए छथि खा एकव प्रमाण सेहो हमवा कएक रॅेव भेटि चुकन खछि। एक त जातीय श्रेष्ठतारॅोध खा ताहिपव साहित्यकाव हएरॅाक गुमान – मैथिनीमे सक्रिय खधिकतव नेखककेँ हम एहि मनोरिकावसँ पीड़ित–सीदित देखने छी। एहन खनेक खटमिष्ठी खनुभवरॅना खिस्सासभ हमवा नग खछि किन्तु तेकव चर्चा फेव कहिओ। एकव खानोकमे जखनि हम स्वयं केँ देखए छी त हमवा संतोषपूर्ण गौवर होगए जे ग व्यास–रिकाव हमवामे नहि खछि।

हम खपन सभसँ रॅड़का खासियत कि खूरी ग रॅुझए छी जे हमवा खपन ओकाति रॅुझन खछि। “ओकाति”

शैष्कक प्रयोग हम एतय जानि-बूझिकए कएने छी। एहि शैष्कक ध्वनि 'सीमा', 'हैसीयत', 'रिसात', 'बृत्ता', 'हद' आदिक तुननामे हमवा बेसी संप्रेषणीय आ भावानुकूल बूझाएत अछि, भद्रताक दुवाग्रह तक जाएबेना नोकसभकेँ ई भने नहि अखबए। तेँ हम निष्कपटतासँ ई बात कहि सकए छी जे करिता हमवा अपनेटा निखल नीकसँ बूझाग ए। दोसव करिक करिता पढैत कतेक ठाम कतेको बात हमव माथपवसँ ससवि जाग ए। (ओना एकव अपराध सेहो अछि) तेँ अभिधा, व्यंजना, नक्षणा आदिक व्याकवण वा भामह, मम्मट, बाजशेखव आदि आचार्यनोकनिक सैद्धान्तिकीक पववाहि हम कहिओ नहि कएन। एकवा हमव आमेवक्षाक तर्क बूझन जाए सकैत अछि किन्तु तखनि जखनि हम अपन वचनाक श्रेष्ठता, महानता वा विनक्षणताक दावी कवी आ तेकव एवजमे स्वयंकेँ प्ववस्काव-सम्मान-पावितोषिकादि नेल सर्वोत्तम प्रत्याशी मानी। हमवा नेखे ई सभ धनि सन ! ई निर्लिप्तता कतह् ने कतह् हमवा सत्याग्रही आ दुस्साहसी बनएनक अछि। एकव प्रदर्शन हम साहित्यसँ ईतव आनह् क्षेत्रसभमे अनेकानेक बेव कए चूकल छी आ तेकव पविणामस्वरूप अपना नेल 'अभिमानी', 'घमण्डी' आदिक अतिपवित्र सम्बोधनसभसँ धन्य भए चूकल छी। हमवा किन्तु एहि नेल कोनो पश्चाताप अखनि तक त नहि अछि। हम एकवा आमेसम्मान आ अभिव्यक्ति-अधिकाव-सम्पन्नता मानए छी आ एकवा अपन व्यक्तित्वक आभा आ सौन्दर्य मानि गौववान्वित होइत छी आ तेँ दुनियाँदावीक आकांक्षा वा दबावक गवजे स्वयंमे कोनो संशोधन-पविवर्तनक बेगवता नहि बूझए छी।

हमवा एहि बातक गुमान अछि जे हमव आँखि

শ্বরুকপসঁ আঁখি অছি , মৈথিল আঁখি নহি। এহি প্ৰরাগ্রহকাগুক আঁখিসঁ হম দুনিযাঁকেঁ, দুনিযাঁক কোনো বস্তুকেঁ ঠীক ওহি রূপমে দেখএছী জাহি রূপমে ও বাস্তরমে ছৈ। দক্ষিণা, নাভ, প্ৰবঙ্কাবক সম্মাহিনী গাগন্স চঠল আঁখি হমর আঁখি নহি অছি আ তেঁ হমবা সহ আ যথার্থকেঁ সাফ-সাফ দেখি সকএমে কহিও কোনো দিক নহি নাগন অছি। এহি আঁখিসঁ হম সৃষ্টিক অসীম বিস্তাব দেখএছী ত আবি-ধৃব আ চৌহদ্দী সেহো খূব নীক জকাঁ অকানন পাব নাগন অছি। কোনো ব্যক্তিক প্ৰতি প্ৰেম, স্নেহ বা আন মানবোচিত বা সংবঁধগত কমজোবীক চনতে ভনহি ওকবা অনেবো উঁঘাব বা দেখাব-চিন্হাব নহি কবৈত হোএ কিন্তু কেও কেতবোঁ বঁহ্রূপ ধবিকএ, বিবিধ স্কখওটা নগাকএ আবঁও, দেব-সবেব ওকব বস্তুগত মূল্যাংকনমে হমবা কহিও কোনো ভাঁগঠ নহি ভেন। একবা হম কোনো অদৃশ্য শক্তিক ববদান বুঝএ ছী জে জীবনানুভবক ক্রমমে যদা-কদা শাপ সেহো সাবিত ভেন অছি। কিন্তু তাহি নেন কী ? হম জে ছী সে ছী। হমবামে জে এ সে এ।

যা অন্নাহ ! হমবা মহসূদ বঁনাবঁহ, হাসিদ নহি বঁনাবঁহ ! ! !

[" ঙা কেনা সংভব অছি জে কেও অপন বস্তা চনএ, আ ওহিপব অসগবহ্ নহি হ্অএ ? বাজমাগ্রপব চননিহাবসভ বস্তা নহি চনৈছ ; বস্তা ওকবা চনৈত অছি।" – অজ্ঞেয]

(নিবন্তব জাবী..........................)

बाँत निकलल, कठाम तक पहुँचल- एकटा बँह-अर्थी निबर्थक चलभाष-वार्ता स्वकांत सोमजीक संग

" मैथिली समाज प्रतघ्न समाज अछि। एतय काज सभक मोजब के दै छै यौ। हमर प्रयास सँ कतेको हिन्दी समाचारपत्र मे मैथिलीक रचना आ आलेखादि छपल किन्तु मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मे एकर कतौ कोनो चर्चा नहि। 'जनशक्ति' मे यात्री जीक मैथिली कविता छपल वा, 'पाटलिपुत्र टाइम्स' मे मैथिलीक पहिल पेज निकलल वा ...." – स्वकांत सोम बाँजैत चलि जाइत छला।
[नदीक एक किनारा नि:श्वास लए कहैत अछि – 'सम्पूर्ण सुख सोनाक किनारा पर अछि!" नदीक दोसर किनारा आह भरिकए कहैत अछि – 'दुनियाँ मे जतेक सुख अछि ओ सबँ पहिलुके किनारा पर अछि!' –: रवीन्द्रनाथ ठाकुर :–]

दिन वा सोम, तिथि वा 13 जुलाइ, 2015 आ हम "प्रभात खबँर" मे स्वकांत भाइक लिखल मैथिली कालम 'मैथिली माटी के मान' देखि-पढि हुनका बँधाइ देबाँ लेल फोन कैने बहियनि। हम कहने बहियनि जे एहि आलेख मे प्रूफक अनेकानेक गलती अछि आ ताहि सँ अर्थबाँधित होइत अछि, तखनहुँ ई महत्वपूर्ण शुरुआत अछि आ स्वागतयोग्य अछि। ओ कहलनि जे ओ एकर शीर्षक 'खोद-बँद' वा 'देसकोस' प्रस्तावित कैने बहथिन, किन्तु अखबाँबबँला एकरा ठीक सँ बुझि नहि सकल आ कीदन ने कए देलक। हम कहलियनि जे ई सभ त आगू ठीक भए सकैत अछि आ अखनि एहि लेल हमरा दिस सँ बँधाइ अछि। हमर बँधाइक उपरांत

हुनक व्यथा प्रकट करैत ओ हताशे-निराशे सन लागैत टिप्पणी हमरा भेटैन।

" से ओ मैथिलीक लेल कोनो नव बात त नै छै, स्वर्गीय भाग। एतय त कोनो तरहक अरदान केँ अनठिऐबाक आ क्षणे मे बिसारि देबाक दीर्घ इतिहास आ परिपाटी बहुत छै। ओ कोनो हमरे-अहाँ लग सँ त शुरू नै भेल अछि। हमर-अहाँक काज अछि लिखब आ तेँ लिखैत जाउँ आ रहू। अहाँ लग एहि सँ संबंधित अपन अनुभव आ एकर डाटा ए त अहाँ एकरा लिपिबद्ध किऐ नै करै छी ?" - हम कहलियनि।

" हम अपने अरदानक चर्चा अपने करी ? हमरा आमे-विज्ञापनक सख नै ए। ततेक रहैत हमर नाम छपि चुकल अछि जे एहन सौभाग्य मैथिलीक कमे गोटे केँ भेटैत हेतनि जाहि मे एकटा हमर बाप सेहो छला। अहाँ पत्रकारिताक क्षेत्र सँ जुड़ल छी, 'मिथिला आराज'क सम्पादक रहि चुकल छी। ओ अहाँ केँ लिखला चाही। अहाँ लिखू। ओ कोनो विभूति आनन्द कि तारानन्द वियोगी सँ त नै हेतनि। "

" हमरा लग एहि सँ संबंधित जानकारी रहितय तखन ने हम लिखतहुँ। रहितो गोटे जकाँ हमरो एकर विस्तृत जानकारी नहि अछि। ओ नीक भेल जे अहाँ सँ एहि विषय पर चरचा भेल आ हमर संज्ञान मे ओ बात आएल। एकर दस्तावेजीकरण हमरा भविष्यक लेल आवश्यक बुझाइ ए। फोन पर त एतेक गप संभव नहि अछि, अगिला बेर हम पटना आएब त अहाँ संग बैसि एकर डाटा लेब आ ओकरा एकटा आलेखक रूप देबाक प्रयास हम करब।"- स्वर्गीय भागक गप

মে কনে ক্ষোভ, কনে ব্যংগ্য খাদিক রিবোধাভাসী–মিশ্রণক খাভাস জকাঁ হমবা বুঁঝাএন কিন্তু তেকবা খনঠিখারৈত হম ওমানদাবী সঁ খপন এহি রিষযগত খজ্ঞানতা কেঁ সকাবৈত কহনিযনি।

কনে কান তক এহি রিষয পব গপ হোগত ওকব প্রবাহ দোসব দিস ঝড়ি গেন। স্বকাঁত ভাগ খান্তবিক উদ্বেনন সঁ উধিখাএন জকাঁ ছনা খা হুনকা নগ কহবাঁক নেন মাবিতে বাস গপ বহনি, সে বুঁঝাএন। কহননি – " এমহব স্বভাষ (স্বভাষ চন্দ্র যাদব) কেঁ পচপনিযাঁ মৈথিনীক খপ্ত সরাব ভেননি খছি। কী মানে খছি একব ? ও ত জাতি–পাতি পব উতবব ভেন। একবা হম প্রতিক্রিযাবাদী কাজ মানৈ ছিঐ। "

[ও জাতি–পাতি ত ব্রাহ্মণে সংস্কৃতিক উপোদন খছি। রএহসভ একব বীজাবোপণ কেননি, একব খেতী কেঁ সিংচিত–সংবর্ধিত কেননি, একব ফসিন কাটি খপন ভংডাব ভবৈত বহনা খা সমাজক একক্ষত্র নিযন্তা বনন বহনা। খজুকা সময মে খাবঁ জঁ গৈব–ব্রাহ্মণ নাব–পুখাবক খাঁটী খা খুদ্দী–খখবী কে খৈবাত পব খসংতোষ প্রকট কবৈত খপন হক–হিস্সা–খধিকাব মাঁগৈত খছি ত একবা ভংডাবণক ক্রিযাক খস্বীকাব মানন জেবাঁক চাহী, নোকতংত্রীকবণ, সম–বিতবণ খা সমতা–সম্মানক খাকাংক্ষাক ছাতক মানন জেবাঁক চাহী। ভংডাবণ খপনা–খাপ মে একাধিকাববাদক প্রতীক খছি খা গএহ খপন কপ বদনি–বদনি পুবোহিতবাদ, খধিনাযকবাদ, সাম্রাজ্যবাদ খা পুংজীবাদ খাদিক বেশ মে প্রকট হোগত বহৈত খছি। জঁ কোয এহি বর্চস্বক বিধান কেঁ চুনৌতী দএ বহন ছৈ, সড়ন–গনন ব্যবস্থাক প্রতি বিদ্রোহ কএ বহন ছৈ ত একব স্বাগত হেবাঁক চাহী। ও ত পুবকি

ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়া-অক্রিয়াক স্বাভাবিক প্রতিক্রিয়া অছি। প্রত্যেক প্রগতিশীল-চেতনা সংপন্ন লোক কেঁ এহি পরিবর্তনকামী চেতনাক পৈরোকারী করবাক চাহী। পরিবর্তনক কামনা প্রতিক্রিয়াবাদ নহি হোএবচ্ছ, বর্তমান মে পরিবর্তনক এহি স্বর কেঁ নকারব প্রতিক্রিয়াবাদ অছি। -: স্বগত :-]

" স্বভাষ ভাগ ত অহাঁক মিত্র-মণ্ডলীক লোক ছথি ত অহাঁ হুনকে সঁ ওা প্রশ্ন কিএ নৈ করৈ ছিযনি ? ওনা পচপনিযাঁ-কাণ্ডক এহি মামলা মে হমর আপত্তি দোসর বিন্দু পর অছি। হমর প্রশ্ন ওা অছি জে স্বভাষ ভাওা ভবি জিনগী বাঁভনরঁনা মৈথিলী লিখলনি ত আর্ঁ চলা-চলীক রেঁবা মে হুনকা পচপনিযাঁ মৈথিলী কিঐ স্বঝি বহল ছলি ? আ জঁ ও পাত্রান্বকূল ভাষা চুনি অপন বচনা কেললি ত ওকর পৈরোকারী-এডরোকেসী হুনকা স্বয়ং কিঐ করএ পড়ি বহল ছলি। ওা গপ ত পাঠক আ সমীক্ষক লোকনিক বিবেক-বিচাব পর ছোড়ল জেবাঁক চাহী ছল। হমরা বুঝনে স্বভাষ ভাগ একটা বিবাদ ঠাঠ কএ অপন আ অপন বচনাক বিজ্ঞাপন কএ বহল ছথি। " – হম বাঁজনহুঁ।

" হঁ, সে দোসর গপ। হমর কহর্ব অছি জে স্বভাষক 'ঘবদেখিযা' কি 'বঁনৈত-বিগড়ৈত' কেঁ লোক স্বীকার কেলক কী নৈ। কেলক। তখন ওা গপ উঁঠাবরাঁক কোন প্রযোজন ? ও একরা প্ররবী মৈথিলী কহলে বহিতথি ত একটা গপ হোএতএ। সহবসা-স্বপৌলক মৈথিলী কলে অনগ ছৈ। ওমহব কহৈ ছৈ – 'বাঁবূ হও' আ সে ব্রাহ্মণ আ গৈব-ব্রাহ্মণ দুনূ কহৈ ছৈ। দবভংগা-মধুবঁনী মে কহৈ ছৈ – 'বাঁবূ যৌ' আ সে গৈব-ব্রাহ্মণো কহৈ ছৈ। ওা ত বোলী ভেল, এহি মে জাতি-

পাতি কতয সঁ এনৈ ? ওা ত স্কঁঠা ভেন। হম মানৈ ছী জে জখন নেখকক নেখন–ক্ষমতা চ্কি জাগ ছৈ তখন ও ওা সৱ গপ কবএ নাগৈ এ। এহন প্রতিক্রিযারাদী গপ নৈ হেৱাক চাহী।“ – স্বকাঁত ভাগ ৱজনা।

হম কহনিযনি জে এহি পব দূ–চাবি পাঁতিক টিপ্পণী হম রিদেহক নেন নিখন একটা থানেখ/প্রশ্নাত্তবী মে কএ চ্কন ছী থা থদ্দুঁ থপন রিচাব কতৌ নিখি কএ ব্যঞ্জ কবিঔ। নেখক কেঁ থপন ভারনাক প্রকটীকবণ নিখিএ কএ কবৱাক চাহী – প্রিয–থপ্রিয জেহন হ্থএ। এহি পব স্বকাঁত ভাগ কিছু নহি ৱাজনা।

তেকব ৱাদ থপন রিশিষ্ঠ থা থনগ দৃষ্ঠিকোণক উল্লেখ কবৱাক নিমিত্ত স্বকাঁত ভাগ এক–দূ দিন পহিনে সংপন্ন ভেন মৈথিনী নেখক সংঘক রার্ষিকীক থরসব পব ধূমকেত্ত–কেন্দ্রিত থাযোজনক চর্চা পব চনি গেনা। কহননি – “ মৈথিনী মে ত ৱনন্যে নীক পব হ্–নে–নে–নে চনৈত বহৈ ছৈ। হমব সোচ থা দৃষ্ঠি থান সভ সং কনেক থনগ বহৈ এ। ধ্মকেত্ত পব চর্চা কবৈত হম কহনিঐ জে ও থপন কথা মে জে ৱাত কহৈ ছথি সে ৱহ্ত পহিনে ‘স্ববমা সপ্সন রিচাবৈ নৈ’ মে থারি চ্কন থছি, ৱঙ্কি ওহি মে ধ্মকেত্ত সঁ থাগূক ৱাত কহি দেন গেন থছি।“

ধূমকেত্ত ব্যক্তি থা বচনাকাব দ্নূ ৰূপ মে হমবা নেন শ্রদ্ধেয বহন ছথি থা ওা শ্রদ্ধা হমবা হ্নক ডীহ তক নএ কএ গেন থছি। মৈথিনীক ও একদম এক্সকন্সির থা থদ্ধন্য নিধি ছথি। সংপূর্ণ থাধ্নিক রিশ্র–সাহিত্য পব মার্ক্স থা ফ্রাযডক থত্যধিক প্রভার বহন থছি থা হমবা ৱ্ঝনে জতয এহি দ্নূ মে সঁ কোনো এক

व्यक्तिक प्रभाव नहि अछि से आधुनिक कविताक योग्यता नहि बाधैत अछि। मैथिली मे मार्क्सक हुनकी कतहु-कतहु अपन नगण्यता मे अन्चोक्क अपन आभास जकाँ दैत रहैत अछि किन्तु छथि ओ प्राय: निपत्त जकाँ। फ्रायड अएना अछि आ एकदम सहज आ स्वाभाविक रूप मे ओ धूमकेतु लग उपस्थित छथि। राजकमल लग ओ पहुँचै छथि किन्तु विकृत रूप मे। धूमकेतु केँ जे कथा-सम्मान भेटैन छल तेकर ओ सर्वथा योग्य छला। हमरा गुमान आ हर्ष अछि जे हुनका भेटैन एहि सम्मानक प्रक्रियाक केन्द्रीय सूत्र नचिकेता छला किन्तु एहि मे हमर महत्वपूर्ण आ निर्णायक योगदान रहल छल। एहन धूमकेतुक प्रति स्वकांत भावक टिप्पणी मे व्यकाएल उपहास आ अवमाननक भाव सँ हमरा कचोट भेल। हमरा ओ स्वकांत भावक आदत जकाँ लागैत अछि जे ओ एहन अवसर सभ पर अखबार मे कोट करबाक लेल एकटा कोनो मारुक टिप्पणी कए दैत छथि किन्तु ओकर विवरण मे जाएब आ तर्क सँ ओकरा पुष्ट करबाक जरूरत नहि बुझैत छथि। ललित पर केन्द्रित मैलोरंग केर एकटा आयोजन मे एहिना ओ बिना कोनो समुचित तर्क देने बाधाविहीन आ 'वजह' केँ ललित सँ बेसी आधुनिक आ आगू हेबाक टिप्पणी कए चुकल छला आ तहिओ हुनक बात हमरा नहि पचल छल, आओ नहि पचल। किन्तु ओ विगत भेल एकटा आयोजनक गप छल, एहि पर कोनो प्रतिक्रियाक अपेक्षा नहि छल आ ने तेकर ओ अवसरे रहै। तेँ हम एहिपर चुपे रहि गेलहुँ।

['अपना सँ भिन्न एक व्यक्तिक व्यक्तित्वक क्रमिक शोध आ अनुसंधान - एहि सँ बेसी सुन्दर, प्रीतिकर आ

तृप्तिदायक अनुभूति की भऽ सकैत अछि ? ई शोध अत्यंत कठिन अछि, तेँ ओ एतेक तृप्ति दैत अछि। किन्तु ई शोध अहिंसक नहि अछि, 'पाईड' सँ ओकर कोनो संबंध नहि अछि। अहिंसक भावना नऽ कऽ पुरुष अथवा स्त्रीक 'पाण्डा' धवढ़ ओहि अनुसंधान आ शोध केँ शुरुए सँ दूषित कऽ देइ अछि, किऐक त ओ वास्तव मे खोज नहि अछि, ओ त मात्र पूर्वाग्रह अछि किऐक त ओ उपलब्धिक रूप पहिने सँ निर्धारित कऽ कऽ चलैत अछि।' –: अज्ञेय :–]

मैथिली लेखक संघक चर्चा चलल त हुनका हम ततसंबंधी अपन टिप्पणी सँ अवगत करौलनिहनि जे हम ओकर गतिविधि दिआ चारि-पाँच दिन पहिने एसएमएस के माध्यम सँ संगठनक महासचिव विनोद कुमार झाजी केँ पठेने रहियनि। एहि संगठन द्वारा पूर्व मे आयोजित मैथिली लिटरेचर फेस्टिवलक हमर अनुभव बड्ड खराब रहल छल। महासचिव आ संयोजक दुनू दिस सँ एकदम पूर्वनियोजित ढंग सँ प्रयासपूर्वक हमरा कात-करोट राखल गेल छल, छलपूर्वक हमरा सँ आयोजनक सबटा प्रस्तावित-संभावित सूचना नुकाएल गेल छल, वँदनीयति सँ सदस्य रहितो सबटा बैसार मे हमरा अनामंत्रित राखल गेल छल, फोनक माध्यम सँ हमरा बैर-बैर पत्र द्वारा सूचना पठेबाक ठकैती-गप करैत जाइत रहल छल, प्रतिरोधक आशंका वा कोनो आन मजबूरीवश हमर नाम पचास सँ बेसी कवि सभक सूची मे बिना हमर सहमतिक घोसिआए देल गेल छल आ ओहि आयोजन मे हम पहिल बेर जातिक सोंगत एकटा तथाकथित महान साहकारी लेखकक मुँह सँ 'छोटेलोकना' शब्दक क्षुद्र प्रयोग सुनने रही आ ई संपूर्ण

आयोजन हमरा ब्राह्मणक एहि दुनू स्त्रक वीचक वर्चस्वक घिसट्टा-घिसट्टी जकाँ बुझाएल रहय।

हमर एहि गपक चर्चा कविताहि स्वकांत भाइक संग जेना वढ़लि गेल – " एकरा अहाँ वाँभनक आयोजन कोना कहि देलिऐ ? इ त एकदम गलत बात भेल। "

" हम एकरा वाँभनक आयोजन नै, वाँभनक दू स्त्रक वीचक घिचातिरी कहलिऐ। ओना एहि पर कहिओ वैसि कए गप हेतै त हम सबटा खेलहा कहब। इ दीर्घ कथा छै, वहसक विषय भए सकै छै आ से फोन पर करब संभव नहि छै। ओहना दुनू गोटेक वीच भवि पोख गप भगए गेल अछि आ फोन सटैने-सटैने हमर कानो गरम भए गेल ए। त शेष कोनो दोसर दिन..............." – गप करैत प्राय: वीस मिनट सँ वेसी भए गेल रहए आ हम गपक समापन चाहैत रही। फोनक विलक चिन्ता सेहो हुअए लागल रहए।

" नै, से कोना हेतै। अहाँ आरोप लगा कए भागि जेबै त से त नै हएत। "

" कहलौं जे इ गप लम्हर छै, फोन पर................................"

हमर गप कैं विचे मे काटैत स्वकांत भाइक रोषयुक्त स्वर आएल – " नै यौ अरविन्द जी। हम अहाँ कैं आरोप लगाकए भागए नै देब। अहाँ कैं वतबए पड़त जे इ गलत आरोप अहाँ कोन आधार पर लगेलिऐ। "

स्वकांत भाइक इ जिद हमरा अनावश्यक आ अवांछित जकाँ लागल। 'वेगाने शादी में अब्दुल्ला दीवाना' जकाँ। हुनका द्वारा गप स्वरै सँ पकिने हमर अन्वभर

केँ आरोप करए, ओकरा दिआ कोनो तथ्य स्वतै सँ पहिने 'गलत' घोषित कए देबाक जजमेन्टी-मुद्रा मे आएब आ ताहि पर आक्रामक तेवरक प्रदर्शन – हमरा अप्रिय-अनसोहाँत बुझाएल। सामान्यतया एहन आक्रामक तेवर हमरा दर्शित नहि होइए आ एहन स्थिति मे हम अपन अवचेतनक निर्देशे पर सभ्यता शालीनता केँ ताँड़ मे खोंसि सामनेवलाक धज्जी-धज्जी उड़ा दैत आएल छी चाहे ओ केतबो बड़का तोप कि पोप किए ने हुअए। किन्तु 'सहितस्य भाव साहित्यम्' वला साहित्य जगत मे आबि हम प्रयासपूर्वक अपन एहि स्वभावगत प्रवृति पर अंकुश लगौने छी आ एहि मान्यताक पक्षधर भेल छी जे साहित्यक कोनो विषयक मामला पर लेखक केँ अपन कोनो टिप्पणी लिखित रूप मे करबाक चाही। हमर दृढ मान्यता रहल अछि जे सियासती-सियाव जकाँ कखनिओ-कत्तहु किछु बाजि देब, बोलबि देब आ फेर क्षणे मे पलटि जाएब रचनाधर्मी सभक लेल एकदम अनुचित आ अनैतिक अछि। जे किछु लिखित रहत रएह दस्तावेजक काज करत आ एहि सँ पलटि जेबाक गुंजाइशो नहि रहत। अकादमी पुरस्कार भेटैलाक बाद गोविन्द झा जीक 'देसकोस' वला साक्षात्कार आ भीम भाइकेँ लिखल हुनक पत्र एकर गवाही दैत अछि। किन्तु स्वकाँत भाइ गप केँ एहन मोकाम पर लए आनने छला जे आब पाछू हटब संभव नहि छल। हुनक एटिच्यूड जे होइनि किन्तु हमरा बातक सौहार्द बिगाड़ए सँ परहेज करैत किन्तु सत्य केँ संग राखि सङ्कुचित उत्तर त देबाके छल। तेँ हम हुनका किछु प्रासंगिक गप सब कहलियनि आ संगे इहो कहलियनि जे सभा-संगठनक क्षुद्रता दिआ बाबा (यात्री-

नागार्जुन) निश्चित रूप सँ उँन्नैस सय बत्तीसे–छत्तीस मे मैथिल समाज केँ चेतौनी दऽ चुकल छलाह आ हुनक चेतौनीक बाद एहि आलेखक पुनर्प्रकाशन सेहो मिथिला दर्शन मानहि मे केने छल, किन्तु हुनका सन प्रगतिशील विचारक लोकक गप कोय नै सुनलक आ आइ जे कोनो सभा–संगठन बनि रहल अछि ओसभ अपना केँ मैथिल–महासभाक मिनिएचर–कापी बनैबाक लेल अपस्याँत रहैत अछि ।

" जातबी जीक गप छोड़ू, अरविन्द ठाकुर जी । अा बताउ जे अहाँ केँ सूचना उपलब्ध नै कराओल गेल कि बैसाब मे नै बजाओल गेल तैँ सँ आ बाभनक आयोजन कोना भऽ गेलै ? हम ओहिठाँ रहिऐ नै सकै छी जतय ब्राह्मणवाद हुअए । तखन अहाँ केँ बुझल नै ए जे एहि आयोजनक पाछू हमर कतेक हाथ रहल । "– सुकांत भाग बाजला ।

हुनक 'अरविद जी' सँ 'अरविन्द ठाकुर जी' पर आएब आँर धरगर जकाँ हमर संज्ञान मे आएल । अकस्मात हमरा दिव्य–ज्ञान भेल । जँ विद्यापति फेस्टिवलक आयोजन मे हिनकर एतेक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि जेकर दाबी ओ अखनि कऽ रहल छथि तखनि निश्चित रूप सँ विनोद जी केँ प्रेषित हमर समाद सुकांत भाग केँ पहिने सँ संज्ञान मे छनि, ताहि पर हुनक मण्डली मे बहस–घमर्थन भऽ चुकल अछि आ ओहि एसएमएस–बाण सँ ओ विक्षुब्ध सेहो छथि ।

[धैर्य ! धैर्य ! –: स्वगत :–]

" हम त जाहि संगठनक आयोजन रहै तेकर महासचिव–अध्यक्ष आ आयोजनक संयोजक केँ जिम्मेदार मानै छी । एहि मे अहूँक कोनो सलाह वा सहमति रहै

সেহো হমৰা জানকাৰী মে নৈ এ আ ওহ্না তৈ সঁ সদস্যক হৈসীযত সঁ হমৰা কোন মতলৱ। হঁ, ঔ ৱাঁত অৱশ্য হমৰা কহল গেল ছল জে স্বভাষ ভাঔক কথা সংগ্ৰহ পৰ চৰ্চাকি সত্ৰক নিৰ্ধাৰণক পাছু অহাঁক ব্যক্তিগত আগ্ৰহ ৱহৈ। " – হম ৱিচ মে টৈকেনিযনি।

" নৈ, সে নৈ চলত। ঔ ৱিনোদ ঝা–নৰেন্দৰ ঝাক গপ ছোড়ূ, হমৰ যোগদান ওহি ফেস্টিৱল মে কহৱাঁ লেল সংযোজক অশোক ছলা কিন্তু হ্নকহ্ সঁ ৱেঁসী বহল অছি। অসল ৱাঁত ঔ ছৈ জে মৈথিলীক অছৰকষ্টূ সাহিত্কাৰ সভ কেঁ অহম্ ৱহ্ত মোগ ছৈ। "

[অছৰকষ্টূ ! ঔ স্বকাঁত ভাগ কেকৰা লেল কহি ৱহল ছথি ! হমৰা লেল ত নহি ? অকস্মাত স্মৃতি মে কৌঁধ গেলা হ্মজিৱোঁধ। 'ব্ৰহ্মৰাক্ষস' আ 'ও কাৰ্যামেন্ হলিধৰ' লিখনিহাৰ কৰি হ্মজিৱোঁধ। কৰি হ্মজিৱোঁধ জন্মনা স্কপ্নেদী হলকৰ্ণী ব্ৰাহ্মণ ছলা কিন্তু ৱিচাৰ সঁ অৎত আধুনিক আ প্ৰগতিশীল। জাতিহল আ সামাজিক ৱৈষম্যক অৱৰোধ কেঁ এক কাত ঠেলি কএ ও প্ৰেম ৱিৱাহ কএললি। অপন জীৱন আ লেখন দুনূ মে পৰম–সাহসিকতাক পৰ্যায ৱঁলল আ মানৱ সঁ গতৰ কোনো অদৃশ্য–শক্তিক অস্তিত্ব কেঁ নকাৰনিহাৰ হ্মজিৱোঁধ অপন ৱীমাৰীক ক্ৰম মে কোমা মে চলি গেল ৱহথি আ তাহি কাল অৱচেতন মে ও কখনো চিকৰথি আ কখনো ৱঁদৱঁদাৱঁথি ...... ৰাম ৰাম ৰাম ৰাম......ৰাধে– শ্যাম......... । কী জন্মনা সংস্কাৰ এতেক গহীৰ ধসল ৱহৈ ছৈ মনুষ্যক অন্তস মে জে অপন সংপূৰ্ণ চেতনা মে ও জাহি ৱস্তুক ৱহিষ্কাৰ কৰৈত অছি, ত্যাজ্য মানৈত অছি সে ওকৰ অচেতন–অৱচেতন পৰ তক্ষক জকাঁ হণ কাঢি কএ ৱৈসল ৱহৈত অছি ? স্বকাঁত ভাগক

স্বরচন(!), হ্মক্তিরৌঁধক স্মৃতি খা ও নহ-নহ করৈত প্রশ্ন এক-দোসবাক পীঠিযাঠৌক খাএন খা হমবা সন্ন কএ দেনক।

এক রেঁব ফেব সঁ মন পড়না রাঁরাঁ যাত্রী। হবারস্থা-প্রৌঢারস্থা মে সৌঁসে জগ কে তিবপেন্ডন কবনিহাব রাঁরাঁ রৃদ্ধারস্থা মে ঘব ঘুবি গেন বহথি – সদা সর্বদাক নেন। রৈদ্যনাথ মিশ্র সনাতন ধর্মকি প্ববোহিতরাদক রিকদ্ধ ঠাঢ ভেন রৌদ্ধ ধর্ম গ্রহণ কএ মৈথিনী তজি হিন্দী মে গেনা, নাগার্জুন ভেনা, মৈথিনী মে যাত্রীক রূপ মে মৈথিনে বহি গেনা খা খথরঁন হোগতে ঠক্কন রঁনি ঘব-রাপসী কএননি। কিএ? জবারস্থা সভটা ক্রাঁতিকাবিতা কেঁ ধ্বখেন খেনাএ দৈত খছি কী? স্বকাঁত ভাগক যাযনা মে ওতিহাস ফেব সঁ খপনা কেঁ দোহবাএ বহন খছি কী?

হমবা বুঝনে মৈথিনী দূ তবহক নোক সঁ সমৃদ্ধ খছি। এক ত ব্যাস-স্তবীয সকন-জ্ঞান-রিদ্যা-রিশাবদ সহ পবম-গুণ-নিধান নোকনি সঁ খা দোসব এহিসভ উঁচস্তবীয মহানতাক রিভুষণ সঁ রাঁবন শেষ-শ্রেণীক সংঘর্ষবত জন সঁ। হম খপন ভ্রম মে খপনা কেঁ পবম-খভাগন রীচ-রীচরঁনা নোক খথাঁতি মীডিযোকব মানৈত খাএন ছী – নে এহন পবম সৌভাগ্যশানী জে পহিন শ্রেণী মে স্থান পার্বি সকী খা নে এহন সামান্য সৌভাগ্যশানী জে দোসব শ্রেণী মে খঁটি সকী। মৈথিনীক একটা স্বযংভূ রিদ্বত-সম্প্রদায একবা খদৌঁ সঁ দূ শ্রেণী মে রাঁটনে খছি – একটা মৈথিন মহাসভাক পজী সঁ সংবক্ষিত জাতিক ভদ্র খা স্বসংস্কাবী রস্ত্র খা দোসব পঞ্জীক সংবক্ষণ সঁ রাঁচিত শেষ-সমাজক সোল্হকন রস্ত্র। স্বকাঁত ভাগ প্রায: দোসব শ্রেণীক নেন 'খভবকষ্ট' শব্দক

প্রযোগ কএ বহল ছলা আ প্রায: হমরো ওহি মে ঠেলি কএ ঘোসিআএ বহল ছলা – মৈথিল মহাসভা দ্বারা নির্ধারিত মানদণ্ডক আধার পর। ওহো সংভর জে সংপূর্ণ মৈথিলী লেখক সমাজ মে অসগরে হমরে টা অছুবকঙ্কৃ মানি ও এহি শব্দক প্রযোগ কেলে হোথি। 'ব্রাহ্মণে হ্মখে অমৃতো অমৃতম্'। হুনক ব্রাহ্মণত্ব আ রবীযতাক সংজ্ঞান লৈত হম একরো হুনক কৃপা আ অপন সৌভাগ্য মানি লেল – চলহ, অছুবকঙ্কৃও কহি সাহিত্যকার ত মানলনি।
–: স্বগত :–]

" অহাঁ, স্বকাংত ভাগ, স্বযং অপনা কেঁ কঠঘরা মে ঠাঢ কএ বহল ছী ত এহি পর হমরা কিছু কহবাঁক নৈ এ। আ জঁ অহাঁ এহি আযোজনক পাছূ বহী আ একরো সূচনা হমরা নৈ ছল ত ওা ত আওর আপত্তিজনক ছৈ।"

" অহাঁ পটনা অরৈ ছিঐ ত কেকরা–কহাঁ সংগ বহৈ ছিঐ, হমরা সংগ বহিতৌ তখন নে অহাঁ কেঁ সভটা সূচনা বহিতএ।"

স্বকাংত ভাগক কোনো গ্রন্থ ছলি আ হুনকা মে শ্রেষ্ঠতাবোধক ব্যাস–রিকাব সেহো ছলি সে কল্পনা হমরা কহিও সপনো মে নহি আএল ছল। কিন্তু অখনি কিএ নে কিএ হমরা লাগল জে স্বকাংত ভাগ প্রকারাংতর সঁ ওা ত নৈ কহি বহল ছথি জে হম হুনক গ্রন্থ মে বহরঁলি তখনে হমরা কোনো স্থান কি সূচনাদি ভেটৈত। ওা রিচাব আরিতে জেনা হমরা একটা শাক জকাঁ লাগল। মন তিলমিলাএ কএ তিতাওল জকাঁ ভএ গেল।

[হম সরঁ উপদেশী স্বলৈ ছী মন–ভরি, দৈ ছী টন–ভরি ; কিন্তু গ্রহণ করৈ ছী কন–ভরি। :– অলজর –:]

" হম অহাঁ কেঁ পহিলে কহলে বহী স্বকাংত ভাগ

जे ओ गप फोन पव छविआरॅए रॅना नै छै। अहाँक जिद पव हम जतेक रॅात कहनौं से त मात्र ट्रेलव बहे, फिलिम त पूवा रॅाँकिए छै। आरॅ कहिओ पटैना आरॅे छी त नीक जकाँ रॅैसिकए एहि रिषयपव गप हेतै आ अहाँ सँ पूर्र मे भेल गपक रिषयगत रिरवणी सेहो अहाँ सँ नेरॅ। अपन जजमेन्ट रॅचा कए वाखू आ अखनि हमवा डेटै दिअ। "– हम मजाकक प्वेंट दैत रॅात कँे खतम कवरॅाक आभास हुनका देरॅाक प्रयास केनौं।

" ठीक छै, पटैना आउ त आरॅ एहि पव गप हेतै किन्तु अहाँ गनत आरोप नगा कए भागि नै..............................."

गप खतम कवरॅाक प्रति हुनक अनिछा आ रॅहस कँे आगू रॅढैरॅाक ननकाव साफ-साफ हमव कान तक सम्प्रेषित होइत वहय। हमवा नागन जे रॅात फेव ने पसवि जाए आ जँ पसवन त अखनि तक हमवा दिस सँ प्रयासपूर्रक रॅचा कए वाखन सौहार्दक महीन कपड़ ाक चेथवी ने उँड़ि जाए। ओह्ना जखन स्वकांत भाए स्वयं आरि कठघवा मे ठाढ भए गेन छना त आरॅ हुनका दिस सँ पूर्राग्रह-म्रुक्त तर्क-रितर्क आ निष्पक्ष स्वनरॅाएक कोनो गुंजाइस कहाँ वहि गेन वहे। आरॅ गप कँे आगू रॅढाएरॅ कोनो दिशा सँ अन्वचिते-अनस्नाने जकाँ नागन आ हम स्वकांत भाए कँे नमस्काव कहि फोन काटि देन। मोरॅाइनक डिस्पैन देखनौं – हमवा दुनू गोटैक गपक अवधि चौआनिस मिनट आ उँन्चास सेकेन्ड वहन छन। आ से गप केहन ? त एकदम फनहीन नग्न गाछ ! ! !

अपन एकटा शेव मन पड़न – " खास सँ चनि

कए खाम तक पहुँचल । बाँत निकलल, फठाम तक पहुँचल “ । फबक एतबेँ जे एतय बाँत खाम सँ चलि कए खास तक पहुँचल छल किन्तु पहुँचल छल फठामे पव ।

[जँ कोय मात्र खन्नभरहि सँ बुद्धिमान भए जगतै त नंदनक खजायरेँघबक पथेबसभ एतेक समयक बाँद संसाबक बड़का सँ बड़का बुद्धिमानहुँ सँ बेसी बुद्धिमान होगतै । :- जार्ज बर्नार्ड शा -:]

<u>संस्मबण- बाबा सँ पहिल आ अंतिम भेंट:बाबाक रिबाट स्मृति-पटल</u>

बाबा यात्री-नागार्जुन सं हुनक बचनाक माध्यमे हजाबो बेब भेंट भेल छल,म्दा साक्षात भेलहुं दुनू गोटे मात्र एक बेब-बाटी,मधुबनी मे| खरसब छल-साहित्य खकादमी,दिल्ली आ नीनारती तंत्र भरन,बाटी,मधुबनीक संयुक्त तत्वारधान मे खायोजित त्रिदिरसीय खखिल भाबतीय मैथिली करि सम्मेलन| रर्ष छल-1995| 2 दिसम्बब सँ 4 दिसम्बब धबि भेल ओ खायोजन हमबा बुझने मैथिली साहित्कावक महाकुंभ छल-न भूतो,न भरिष्यति| तहिया साहित्य खकादमी मे मैथिलीक प्रतिनिधि छलाह-स्वबेश्वब झा| जबर्दस्त जमाबड़ा भेल छलय-रबिष्ठतम सं यरतम पीढीक साहित्कावक लोकनिक| सम्पूर्ण कार्यक्रम करिता,गीत ,गजल खादि रिधान्नसाब प्रायः छह सत्र मे बाँटल|

हम ओहि काल सामाजिक-बाजनीतीक गतिरिधि मे बहुत सक्रिय छलहुं| लिखैत त छलहुं पचीस रर्ष पहिने सं,म्दा साहित्कार-

समाज आ विशेषतया मैथिली साहित्यकार- समाज सँ वैसी परिचिति नहि छल| स्वाँतः स्वखाय लेखन सँ सक्रिय लेखन मे हमर एनाग दूए-चारि वर्ष भेल छल| दू वर्ष पहिने 1993 मे हमर मैथिली कविताक संग्रह "परती टूटि रहल अछि" प्रकाशित भए चुकल छल आ तकर खूब स्वागत आ प्रशंसा भेल छल-मैथिली जगत मे| मैथिली कथा गोष्ठी'सगर राति दीप जरय'केर पटना, स्वपौल आ राजविराजक आयोजन मे सहभागी भए कथा-पाठ कए चुकल छलहुँ| साहित्य अकादमी,दिल्ली द्वारा पटना मे आयोजित अनुवाद कार्यशालाक सहभागी 18 अनुवादक साहित्यकार मे एकटा नाम हमरो छल| साहित्य अकादमीक 'ट्रेवल ग्रांट' टू आथर'योजनान्तर्गत हमरा महाराष्ट्र भ्रमणक स्वीकृति सेहो भेटि चुकल छल| चेतना समिति,पटना द्वारा माहेश्वरी सिंह'महेश' ग्रंथ पुरस्कार सेहो भेटि गेल छल आ ओहि संस्था द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व समारोह मे कविता -पाठ सेहो कए चुकल छलहुँ| जतय धरि हमरा मोन पड़ैत अछि,बाँटी करि सम्मेलन सँ पूर्व हमर एतबेटा परिचय छल-मैथिली साहित्यकार-समाजक बीच|

हम एक दिन पहिनहि पहुँच गेल छलहुँ| पहिल दिनका सम्पूर्ण सत्रक समर्पित श्रोता आ दर्शक रहलहुँ| एहि दिनक दूनू सत्र छल- रविष्ठतम आ रविष्ठ करि लोकनिक| सत्र समापनोपरान्त एकटा कमरा मे हम सभ गोटेआकए बैसल छलहुँ- महाप्रकाश,सुकान्त सोम,अग्निपुष्प,विभूति आनन्द,तारानन्द वियोगी आदि| ज्योत्सना चन्द्रम एक कात मे बैसल छलि| गोल मे प्रायः किशोर केशर सेहो छलाह| हम

খগ্নিপুষ্প দ্বাবা ওহি দিন পঠিত একটা করিতাক পৈরোডী রঁনযনে ছনহুঁ খা তকব পাঠ কএ বহন ছনহুঁ। পৈরোডীক কেন্দ্র মেঁ ছনাহ–রিভুতি খানন্দ দ্নূ পবানী। হমব পাঠ খা শ্রোতা সভক সমরেত ঠহক্কা–মহো মহো ভএ বহন ছন। খাকি তখনে রাঁহব মে খূর্ব জোব সঁ হল্লা ভেনয। হম সভ উঁস্কে ভেনহুঁ ত জ্ঞাত ভেন জে রাঁরা এনাহে। মহাপ্রকাশি স্বকান্ত ভাগ কেঁ কেহ্নী মাবৈত রঁজনাহ–'জাহী নে,ফ়টকাব স্বনিকএ চনি খারিহেঁ'। ওহি হ্নিমান মে কে জযতএ,হম সভ খপন মহফ়ি ন সজযনে বহনহুঁ। কনিকে কান রাঁদ দেখয ছী জে রাঁরা হমবে সভক কমবা মে উঁপস্থিত ছথি খা সংগ মে ছথি শোভা ভাগ। সভ গোটে খকচকাএ কএ ঠাঠ ভেনহুঁ,প্রণাম–পাতী ভেন। সংগ এনিহাব মে সঁ কেও রাঁরা কেঁ কহনকনি– 'তারঁত এতহি খাবাম কবিখও'।

রাঁরা হমবে সভক রীচ রৈঁসি গেনাহ। জখন সভ গোটে সবিযাকএ রৈঁসনাহ,তখন হম খপন দ্নূ হাথ জোবি রাঁরাক খভিরাদন কেনিযনি। কেও হমব পবিচয দৈত রাঁজন–'রাঁরা ! ঙ্গ খবরিন্দ ঠাক্ষব ছথি,স্বপৌন সঁ। 'রাঁরা খপন খাঁখি গোনিযারৈত কনে কান হমবা দিস তাকননি খা রিহুঁসৈত রঁজনাহ–'পবতী তোড়নিহাব খবরিন্দ ঠাক্ষব' ! হম চ্প। হমব ত জেনা রাঁকে হবণ ভএ গেন ছন। এন্তু রঁড়কা করি ! রাঁরা হমবে দিস তাকি বহন ছনাহ,ফেব রঁজনাহ– 'এহি সংগ্রহক করিতা সভ মে খহাঁ একদম এক্সবক্লুসিভ তৌব পব খপন রিশ্বস্কু ভার মে ছী। ধংধেরাঁজ সাহিত্কাবক শৈঙ্কীয রাঁজীগবী সঁ খহাঁক করিতা সভ এখন ধবি রাঁচন খছি। খাগাঁ জে হোখয। 'একব রাঁদ রাঁরাক খাঁখি হমবা পব সঁ হটি গেন খা জেনা হমবা সঁ কোনো মতনরেঁ

নহি হোথয,তেনা ও সভ কেঁ হিযাসননি থা ৰঁজনাহ–'থাব থহাঁ সভক কী হান–চান ? ৰাঁজয জাউঁ| '

তকব ৰাঁদ ৰিভিন্ন গপক ডননা(মিকস্ড ভেজিটৈৰ্বুন)পবসন জায নাগন থা সভ গোটৈ তকবা স্বথাদএ নগনাহ| হম ক্ষদা সাতম থাসমান পব ছনহুঁ,হমবা স্বনাগ ত সভ গপ পড়ৈত বহয ক্ষদা একহুটা মগজ মে নহি ঘ্সৈত ছন| ওহি ত্রিদিৰসীয থাযোজনক তীনো দিন হম ৰাঁৰাঁক টিপ্পণীক নিসা মে মাতন বহনহুঁ| থনেক প্রশ্ন মোন মে থাৰঁয–'ৰাঁৰাঁ কখন হমব পোথী পঠনে হেতোহ,সভ দিন ত ৰৌথাৰিতে বহৈত ছথি| পঠননি ত মোন কোনা বাখননি,এতেক বাস চীজ পঠৈত হেতাহ| থাদি–থাদি| 'ক্ষদা কোনোটা প্রশ্ন হমব নিসা নহি তোড়া সকন ছন| থাৰঁ ঙা ৰাঁত সোচ মেথৰৈঁত থছি জে থনেক বাস নদী কেঁ স্বযং মে সমাহিত কঙাযেকএ কেও সক্ষদ্র ৰঁনি সকৈত থছি|

জীৰকান্ত : কিছ স্মৃতি, কিছ টিপ্পণী

জীৰকান্ত জীক জ্যেষ্ঠ প্বত্র থৰুণ ঝা স্বপৌন স্টেটৈ বৈঁক মে পোস্টেড বহথি। ডা নৰীন ক্ষমাব দাসক কিননীক সহ নিৰাস পব হমবা সভক প্রতিদিনক বৈঁসাব মে ও যদা–কদা থাৰৈঁত ছনা তেঁ পৰিচয ছন। সংযোগৰশে থৰুণ জীক ডেবা সেহো হমবে মোহল্লা মে ছন। একদিন নৰীন জীক ওহিঠাম পহুঁনহুঁ ত জ্ঞাত ভেন জে জীৰকান্ত স্বপৌন থাএন ছথি থা থপন প্বত্রক ডেবা পব ছথি।

ओ प्राय: 1992 क कोनो मास छल। हम, केदार आ नवीन जी दू टा स्कूटर पर सवार भऽ अरुण जीक डेरा पर अएलहुँ। स्कूटर रोकैत-रोकैत ओकर हेडलाइट मे एकटा प्रौढ़ व्यक्ति कें बाहरे मे कुर्सी पर बैसल देखलिअनि। अन्दाज कयलहुँ जे जीवकान्त हेताह। स्कूटर सँ उतरि कऽ प्रणाम-पाती भेल, अतिरिक्त कुर्सी आएल आ हमहुँ सभ अपन-अपन स्थान धएलहुँ। केदार हमर परिचय दैत कहलना - "ई अरविन्द भाइ छथि, साहित्यानुरागी त छथिए , लिखबा सँ सेहो प्रेम छनि। "

" अच्छा ! अरविन्द बाबू ! की हाल-चाल छै अउ ? वकालत केहन चलैए ? "- जीवकान्त हमरा दिस तकैत पुछलनि।

हम अकचकयलहुँ। हमरा व्यवहारिक वकालत सँ कोन रास्ता ? एलएलबी त हम सख सँ कएलहुँ आ सेहो डिग्रीए मात्र लेल। कचहरी जाए कऽ प्रैक्टिस करैक अभिलाषा कहिओ नहि भेल आ ने कएल। हम विधि स्नातक छी से मात्र हमर जीवन-वृतक शोभाक वस्तु अछि। ओहि दिन केदारे स्थिति कें स्पष्ट कएलनि - " वकील त दोसर अरविन्द छथि - अरविन्द कुमार दास। ई छथि अरविन्द ठाकुर। "

ओ हमरा दुनू गोटेकें पहिल भेंट छल। तेकर बाद ओहि दिन रातिभरिक नमहर दौर चलल आ हमरा सभक बीच विभिन्न विषयपर वार्ता भेल। एहि बीच की लिखलहुँ ? की सभ पढलहुँ ? फल्लाँ पोथी अवश्य पढू, आदि-आदि सेहो।

1972 ई मे हम अन्टैवमीडिएट कएने वही आ ताहि मे मैथिलीओ हमव एकटा विषय वहय। शिक्षक छला – वॉनगोविन्द झा व्यथित। किन्तु हमवा ओहि क्लास मे मन नहि लागय आ वेंसी हम फाँकीवाँजीए कवी। पवीक्षा भेल, पास कएनहुँ आ तेकव बाँद मैथिली सँ वॅह्त कान तक कोनो वास्ता नहि वहल छल। बीच मे एकटा कथा लिखि केदावकेँ देने वहिअनि आ तेकवा ओ मिथिला मिहिव मे पठा देने वहथि आ ओ छपिओ गेल छल, किन्तु पाविवाविक आ सामाजिक गतिविधिक गहमागहमीक बीच ई हमवा लेल धनि सन। केदाव-नवीन-शिवेन्द्रक संगतिमे आविओ कए कोनो वॉहवी मैथिली साहित्कावक कोनो प्र्वनिर्धावित छवि नहि छल। जँ कोनो वहवोँ कवन हएत तँ जीवकान्त सँ भेल प्रथम भेंटे ओकवा खण्डित-विखण्डित जँ नहिओ कएने वहए तँ कोनो नव या आकर्षक छविओ नहि वॅनैनक। प्रथम दृष्टि मे ने ओ हमवा कतह् सँ साहित्कावक जकाँ लागला आ ने कोनो शिक्षक जकाँ। जँ ह्नक कोनो छवि हमव मन मे वॅनन त ओ छल एक सामान्य गृहस्थक जे कनी-मनी किताबॅक आ पढै-लिखैक गप कवैत ह्थए।

7 अक्टूबॅव,1992 केँ पटना मे भाग साहेबॅक संयोजकत्व मे 'भवि वाति भोव' कथा-गोष्ठीक आयोजन छल। भाग साहेवोँ सँ हमवा कोनो पूर्व पविचय नहि छल किन्तु ओहि गोष्ठीक लेल हमवा निमंत्रण (प्राय: केदावक कावणे) भेटैल छल आ अपन पहिल प्रस्तुतिकवणक लेल हम वॅह्त उँत्साहित वही। मैथिली मे हम सर्वथा एक अनचिन्हाव लोक वही आ प्राय: तेँ

ওহি গোষ্ঠী মে একদম নরতূবসন্তক সংগে প্রথমহি সত্র মে হমবা সঁ কথা পাঠ কবাএন গেন। ওহি সত্রক সমীক্ষা নেন নির্ধাবিত সমীক্ষক ছনা – প্রভাস কুমাব চৌধবী, উঁপেন্দ্র নাথ ঝা ব্যাস, মোহন ভাবদ্বাজ, বামদের ঝা আ জীরকান্ত। হম অপন 'মৃস' কথা পঢনে বহী আ ওহিপব রিদ্বান নোকনিক রিচাব আ প্রতিক্রিযা জানবাঁক নেন সমীক্ষা কান ভাবী উঁকেঁঠা সঁ অপন কান পাথনে বহী। প্রভাস ভাগ আ মোহন ভাবদ্বাজ ওহি কথাক স্তুবি-স্তুবি প্রশংসা কএননি আ ব্যাস জী সহিত বামদের ঝাক প্রতিক্রিযা সেহো সকাবামেক আ স্বাগতামেক বহৈ। এহি পাঁচূ গোষ্ঠে মে মাত্র জীরকান্ত সঁ হম পূর্ব পবিচিত বহী আ তেঁ হমবা ভবোস ছন জে ও পূর্ণ গংভীবতা সঁ হমব কথাক নীক-রেঁজায দিআ কহতা। কিন্তু হমবা ভযংকব নিবাশা ভেন। জীরকান্তক রেঁব অএননি ত ও রাঁজনা জে ধ্বনিযংত্রক গড়বঁড় কি কাবণে ও হমব কথা ঠীক সঁ নহি স্বনি সকনা। গোষ্ঠীক সমাপন পব মোহন ভাবদ্বাজ আ ভাগ সাহেবঁ হমব কথাক উত্তম হএবাঁক গপ কহৈত হমবা রঁধাগ দেননি। জীরকান্ত কিন্তু রাঁদহু মে কিছু টিপ্পণী নহি কএননি। হমবা দুখ ভেন বহৈ।

1993 ক প্রাবংভিক কোনো মাস। জীরকান্ত স্বপৌন আএন ছনা। ডা শিরেন্দ্র ওহিঠাম বৈঁসাব ভেন – সংধ্যা কান মে। পহিনে জীরকান্ত অপন কিছু করিতাক পাঠ কএননি আ হুনক শুভচিন্তক নোকনিক ঙা চিন্তা জে জীরকান্ত অপন পাঠ কববাঁক স্টাগন সঁ অপন করিতাক সংপূর্ণ সংপ্রেষণ কেঁ নষ্ঠ কএ দৈত ছথি, হমবা রাঁজিবঁ নাগন। হুনকা রাঁদ হম, কেদাব, নরীন জী আ শিরেন্দ্র জী সেহো করিতা পাঠ কএনহুঁ।

দোসব দিন হুনক ভোজন হমবা এহিঠাম আযোজিত ছল। সভ গোষ্ঠ ছলা – ডা নবীন, কেদাব, অরুণ ঝা। ভোজন আ গপ। গপ আ ভোজন। বীচ মে জীরকান্ত বজনা – ' হমবা অহাঁক আমে-পবিচযামেক পত্র ভেটৈল ছল। অপন চেহবা-মোহবা আ শাবীবিক গঠন সঁ অহাঁ নবীন জী বা কেদাব সঁ জেঠ নহি বুঝাগ ছী।" আ ফেব হমব জীরনক আন-আন পক্ষক জানকাবী লেললি। জীরকান্ত ওহি বেব দূ-চাবি দিন স্বপৌন বহলা আ হুনকা সংগে খূব নীক কটল। পত্রাচাব ত চলিতে বহয।

দেসকোস পত্রিকাক ফবরবী '94 অংক আএল। ওহি মে জীরকান্তক সাক্ষাকোব ছপল বহৈ জে হমবে নাম পব জা কএ সমাপ্ত ভেল ছল। হুনকা সঁ সংভারনা সঁ ভবল মৈথিলীক কিছু নরকা করিসভক নাম পুছল গেল বহলি আ ও অন্য কিছু করিক সংগ হমবো নাম লেলে বহথি। হমবা কলী বিস্ময জকাঁ ভেল ছল। কোনো ভেংট বা কোনো পত্র মে ও এহি তবহক কোনো সংকেত নহি দেলে ছলা জে ও হমবা বচনাকাবো মানৈত ছথি, সংভারনা সঁ ভবল হএবাঁক বাঁত ত দূব।

ওনা তারত হমব প্রথম করিতা সংগ্রহ 'পবতী টুটি বহল অছি' প্রকাশিত ভএ চুকল ছল আ মৈথিলীক নর-প্রবাল দুনূ পীঢীক প্রশংসা প্রাপ্ত কএ বহল ছল। কিন্তু জীরকান্তক প্রতিক্রিযা প্রবাল পীঢী দ্বাবা সার্বজনিক রুপ সঁ ঘোষিত প্রথম প্রতিক্রিযা ছল আ তাহি কাল হমবা বহুত বহুমূল্য লাগল ছল।

পত্র লেখলক ক্ষেত্র মে জঁ মৈথিলী মে কোনো

প্রতিযোগিতা হুথএ ত ওকর নির্বিবাদ বিজেতা হএতা – প্ৰবাল পীঠী সঁ জীবকান্ত আ তেকৰ বাঁদক পীঠী মে কেদাব কানন। জীবকান্ত সঁ পত্ৰ ব্যবহাব নিবন্তব জাৰী ছল। সাহিত্য অকাদমীক পুবস্কাব ঘোষিত ভএ চুকল ছল। জীবকান্ত ফেব পছড়া গেল ছলা। ওহি বেবক পুবস্কাব গোবিন্দ ঝা কেঁ ভেটল ছলনি জেকব শ্রেয ও অপন পুস্তক কেঁ নহি দএ ওকবা উগ্ৰবাদক পবিণাম কহলে ছলা। দেসকোস পত্রিকাক বিভিন্ন অংক মে এহি অবসব পব গোবিন্দ ঝাক বিবাদিত সাক্ষাকোবক পবিণামস্বৰূপ খুব্ব সাহিত্যিক গাবা-গাবী ভেল আ এহি ক্রম মে জীবকান্তক পত্র-টিপ্পণী সেহো আএল ছল। প্রায: ওা পুবস্কাবে জনিত নিবাশা আ কুণ্ঠা ছল জে হুনক পত্র সভ মে যদা-কদা তল্খী ঝলকী দৈত ছল আ জূন মাস মে জখনি স্বপৌন আগমন পব হুনকা সঁ ভেঁট ভেল ত লাগল জে তল্খী হুনক ব্যক্তিত্ব কেঁ পবিবর্তিত কএ দেলে বহনি। অংতবংগতা একটা সামান্য শিষ্ঠাচাব মে বদলি গেল ছল আ হুনক বাঁত-ব্যবহাব মে জেনা একটা যাঁত্রিকতা আবি গেল ছল। ওহিবেব ও পুবনকা জে জে ঘটনা স্বনৈননি সে বেসী তল্খীএ সঁ জুড়ল।

অগিনা খেপ। সংযোগ বা দুর্যোগহি হুনকা সঁ ওা ভেঁট ভেল। জীবকান্ত অপন কোনো দাযাদক কন্যা লেল মৈথিলী সাহিত্যকাব আ 'কথ্য ৰূপ' ক মৈথিলী অংকক সম্পাদক গৌবীনাথ কেঁ তিনক চটৈবাক লেল নছমিনিযাঁ আএল ছলা। ওতয সঁ ফুবসত পাবি ও স্বপৌন অএলা আ তেকব লাভ নৈত কেদাব হুনকা সঁ মংত্রেশ্বব ঝাক পাগ সঁ ছপল আ মংত্রেশ্ববে ঝা পব কেন্দ্রিত 'ধাব' পত্রিকাক চাবিজনা বিমোচন কবৈননি। কেদাব কেঁ

प्राय: हमर स्वभाव बुझनन बहनि वा हमरा ओहि विमोचनक पात्र नहि बुझनने हएता तेँ हम ओहिमे बजाएल नहि गेल रही। हम प्राय: कोनो चिकित्सकीय सलाह लेल डा नवीन ओहिठाम पहुँचलहुँ त ओ अपन चैम्बर मे नहि छला। स्टाफसभ बाजल जे ओ छत पर छथि। अपन अभिन्नताक बल पर हम धड़धड़ाएल डा नवीनक घरक सीढी चढैत छत पर चढि गेलहुँ। ओतय सभगोटेकेँ बीच जीवकान्तहु केँ देखि हम अचंभित त भेलेँ कएलहुँ, स्वयं केँ एतय आनबाक लेल पश्चातापहु मे पड़ि प्रवेशेहि पर ठमकि गेलहुँ। प्राय: एहन स्थिति दोसरो पक्षक भेल छल आ तेकर परिणामस्वरूप ओतय अकस्मात एकटा निस्तब्धता पसरि गेल रहै। पहिने हमरे अपन कर्तव्यक चेत आएल आ हम सामान्य शिष्टाचारक पालन करैत सभ केँ गोड़-नमस्कार कएलिअनि आ कनी काल ओतय रहि चिकित्सकीय परामर्श प्राप्त कए घुरि आएल रही। डा नवीनक सीढी उतरैत काल ओहि दिन हमरा मन मे जीवकान्तक प्रवनका स्मृतिसभ घुरिआ-घुरिआकए आबए आ कतेको जिज्ञासाक बिड़रो हमरा घेरए। सीढीक अंतिम पौदान पर पएर राखिते हमरा सभक समाधान भेटि गेल। हमरा बुझाए गेल जे जीवकान्तक लेल अपन लेखनक सार्थकताक तुलना मे सफलता आ प्रासंगिक भौतिकता बेसी महत्वपूर्ण छलनि। यादि त एकर वासना हुनका बदनि देनकनि अछि या ओ मौलिकता मे सएह छथि।

(वर्ष 1995 मे लिखल लेख यथावत रूप मे)

<u>मिथिलाक संस्कृति:किछु अप्रिय बिन्दु</u>

মিথিলা বর্তমান মে একটা মিথক মাত্র অছি। আব নে একর কোনো ভূগোল অছি আ নে কোনো সংবৈধানিক অস্তিত্ব। অত্যুক্তি নহি হোয়ত, জঁ কহী জে মিথিলে জকাঁ মিথিলাক সংস্কৃতি সেহো একটা মিথকে অছি। রাজ্যাশ্রয়ী বিদ্বতজন দ্বারা লিখল আ শিক্ষা-ব্যবসায সঁ জুড়ল পণ্ডিতজন দ্বারা বের-বের দোহরাওল গেল ওহি তথাকথিত স্বর্ণিমকালক গৌরবশালী অধ্যায সভক বর্তমান মে কোনো অবশেষ-প্রমাণ নহি দেখাইত অছি। একাঙ্গীএ সহী, ভূত মে জঁ আগি বহয ত বর্তমান মে ছাউর দেখাই পড়বাক চাহী নে ?

বিদেহ মাথবক আগমন আ হুনক পুরোহিত গোতম রহূগণ দ্বারা অগ্নি প্রজ্জ্বলিত কএ ভূমিক পরিত্রীকরণ সঁ এহি আলোচ্য ক্ষেত্র মে আর্যসংস্কৃতিক সূত্রপাত মানল জাইত অছি। এহি সঁ পূর্ব একরা দ্রবিড়-কিরাতক মিশ্রিত সংস্কৃতিক স্থল অথবা ব্রাত্যলোকনিক নিবাস-স্থল মানল জাইত রহল অছি। ব্রাত্যলোকনিকেঁ আর্য মানবাক আগ্রহ সেহো কিছু ইতিহাসকারক ছনি। এহি আর্যীকরণক পশ্চাত বর্ণ-ব্যবস্থাসঁ জাতি-ব্যবস্থা, সমাজসত্তাক প্রভুত্বসঁ ব্যক্তিসত্তাক প্রভুত্ব, পরিবর্তনশীলতাসঁ জড়তা আ উদারতাসঁ কট্টরতা ধরি পহুঁচৈত এহি ক্ষেত্রক সমাজ ইতিহাসক কোন-কোন অলগাব-ইজোতক খোহ সভমে ঠকৈত-বহরাইত বর্তমান ধরি পহুঁচল অছি, তাহিপরসঁ এখনো বহুত বাস আবরণ সভ হটবেঁ বাঁকিএ অছি। ইতিহাস জঁ বস্তা দেখবৈত অছি তঁ বস্তা নুকিযারিতো অছি। ওহনা ইতিহাস পর শাসক-সমাজক বর্চস্ব রহল অছি আ কোনো কালমে আম-অবামক কী স্থিতি ছলয তাহিপর ইতিহাস

सभ थान्हरे सदृश्य बहल अछि। राज्याश्रेयी विद्वतजन केँ जनसमाजक स्थिति-चित्रणक ने रंगबता बहनि आ ने पनखति। तेँ इतिहासक भून-भुनैयामे घुसनाक राँदो आ रैब-रैब 'खुन जा सिमसिम'कहनाक राँदो कएकटा चोवदबरँज्जा अदृश्य आ कएकटा दबरँज्जा रँन्द भेटैत अछि आ तेँ हमबासभक सोच-विचाब एकटा अनिश्चिततताक विबड़ामे पतारँय नागैत अछि,स्थिब नहि भए परैत अछि। जनसमाजक दुख-स्वखक महासागबमे जा डुबँकी नहि मावन जाएत,संस्कृतिक मोती कि पाथब कोना भेटैत ? ओम्हब हमब सभक शिक्षातन्त्र सेहो इतिहासक पाठ्य-प्वस्तक आ अपन रँनायन विचाब-पविधिसँ राँहब जयरँाक अन्वमति नहि दैत अछि। सृजनामेक नेखन यथास्थितिक रैबी मानन जाइत अछि आ तेँ जखन-जखन एहन प्रयास होइत अछि त विबोधीक रूपमे शिक्षातंत्रक संग-संग नाठी-फ़बसा नएकए तैयाब मिथिनाक रूढिरादी आ यथास्थितिरादी तत्व ठाड़ भेटैगत अछि। किन्तु सृजनामेक नेखनक प्रतिनिधि स्वचा साहित्कोब प्रतिबोध आ असहमतिक संस्कृतिक संराहक होइत अछि आ तेँ ओकबा शिक्षाव्यरसायी-पन्डितनोकनिक रिबादबीसँ फ़बाक अपन सोच आ नेखन दुनूमे बचनामेक दुस्साहस कबैए पड़तै आ मिथिनाकेँ आइ एहने दुस्साहसी सभक रंगबता छै। रंगबता छै जे पबम्पबा आ नीकसँ हटि इतिहास आ संस्कृतिक अज्ञात-अबूझ पक्षसभक इमानदाब उँखेनन कएन जाय। रंगबता छै जे यथास्थितिक विषायन सम्सबफ़ानीमे फ़ँसन संस्कृतिक व्यापकताकेँ राँहब आनन जाय आ अभिव्यक्तिक सभटा खतबा मोन नेन जाय। जँ कोशीक बने साहित्-संस्कृतिक अग्रदूत संतकवि नक्ष्मीनाथ गोसाइकेँ बाज्याश्रयजीवी

সম্পাদক–সংকনক মৈথিনী করি নহি মানৈত ছথি ত ৱৈগবতা ছৈ জে একব রিবোধমে ৱগারত হেৱাক চাহী–মঠ,মঠাধীশ খা মঠসৈন্যকেঁ ধবাশাযী কবৱাক হদ ধবি| ৱৈগবতা ছৈ জে সংস্কৃতিক নর গতিহাস নিখন জায| মিথিনাক মহান রিভূতি বাষ্ট্ৰকরি দিনকবক কহৱ ছনি–“সাহিত্যক তাজগী খা ৱৈধকতা জতেক শৌখিযা নেখকমে হোগত খছি,ওতেক পেশেরবমে নহি| হৃতিমে প্ৰাণ ঢাবৈক দৃষ্ঠান্ত ৱবোৱবি শৌখিযা নেখকে দৈত ছথি| থবথবাহট্টি,প্ৱনক খা প্ৰকম্প,গ্র গ্ৰণ শৌখিএক বচনামে হোগছ| পেশেরব নেখক খপন পেশাক চক্কবমে এনা মহো বহৈত ছথি জে ক্ৰান্তিকাবী রিচাবকেঁ ও খ্নিকএ খেনয নহি দৈত ছথি| মতভেদ ভেনহু পব ও হুক্কম,খঁতত:,পবম্পবেক মানৈত ছথি| সংস্কৃতিক গতিহাস শৌকিযে শৈনীমে নিখন জাএ সকৈত খছি| গতিহাসকাব,খক্সব,এক রা দূ শাখাক প্ৰমাণিক রিদ্বান হোগত ছথি| এহন খনেক বাস রিদ্বানক হৃতি সভমে পৈসিকএ ঘট্টনা খা রিচাব সভক রীচ সম্বন্ধ ৱৈসযৱাক কাজ রএহ কএ সকৈত খছি ,জে রিশেষজ্ঞ নহি খছি,জে সিক্কা,ঠীকবা খা গুঁটাক গরাহীক রিনা নহি ৱাজৱাক খাদতক কাবণে মৌন নহি বহৈছ| সাংস্কৃতিক গতিহাস নিখৱাক, হমবা ৱুঝনে দূএটা মাত্ম খছি| যা ত রএহ ৱাত ধবি মহদ্দ বহী,জে রীসো ৱেব কহন জাএ চুকন খছি খা,এনা,খপনো ৱোব হোউঁ খা খানোকেঁ ৱোব কব্দ;খথরা খাগামী সত্নক প্ৱরভাস দিখও,ওকব খ্নিকএ ঘোষণা কব্দ খা সমাজমে নীম–হকীম কহাউঁ,মূৰ্খ খা খধকপাবীক উঁপাধি প্ৰাপ্ত কৰু| ”

গ্র দূ–ট্টৈক কহন জযৱাক চাহী জে কোনো ক্ষেত্রক সংস্কৃতি ওহি ক্ষেত্রক বাজা খথরা শাসকক ৱপৌতী নহি

होएछ| संस्कृति होएछै समाजक,जाहिमे शासक-शासित,राजा-प्रजा सभ सन्निहित छै| दोसर शब्दमे संस्कृतिक मात्र आ एकमात्र स्रोत वा केन्द्र मनुष्य आ ओकर जीवन अछि| मनुष्यक समाज ,ओकर सामाजिक संरचना,ओकर खान-पान,रीति-रिवाज आदिक सम्मिलित स्वरूप एहि संस्कृतिक निर्माण करैत अछि| एकरे पसारसँ एकटा क्षेत्र-विशेष अपन एकटा अलग पहचान विकसित करैत अछि जे ओहि क्षेत्र-विशेषक संस्कृति कहल जाएछ| तेँ कोनो क्षेत्रक संस्कृतिक उँसे ओहि क्षेत्रमे वहनिहार मनुष्य,ओकर समाज आ ओकर सामाजिक संरचनामे खोजल जयबाक चाही|

देशक अन्य भूभाग जकाँ एतह् आर्यलोकनि आर्येतर जाति संग मिलि जाहि समाजक रचना कयलनि सएह आर्य अथवा हिन्दूलोकनिक बुनियादी समाज भेल आ आर्य-आर्येतर संस्कृतिक मिलनसँ जे संस्कृति जनमल से एतह्का बुनियादी संस्कृति भेल| ओ जे बुनियादी समाज भेल,तकर स्वसंचालन लेल वर्णाश्रम-व्यवस्था बनल जे कालान्तरमे जाति-व्यवस्थामे परिणत भेल| तेँ मिथिलाक संस्कृतिक यथार्थकेँ बुझबाक लेल देवालय,पोखरि,माछ,मखान,पान आ पाग आदि-इत्यादिक वाँगस्काप देखयसँ पहिने एहि वर्ण-वस्तु-जाति व्यवस्थाक व्रणकेँ फ़ाड़ब आ निर्ममतासँ एकर खौंटी उँतावब बहुत आवश्यक अछि| ओ पीड़ा देत,दुर्गन्ध पसारत,सदा एकरा निर्मूल करबाक लेल अथवा वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिस्थितिक आवश्यकतानुसार नवीकृत (r e n e wa l)करबाक लेल ओ जोखिम लेबहि पड़त| मिथिलाक संस्कृतिक प्राचीन निरन्तरताक खूबी-

খামীকেঁ বুঝবাক লেল আ বর্তমান চুনৌতী সভসঁ জুঝৈত ভারী উৎকর্ষ পব লএ জএবাক লেল এহি ব্যবস্থাক সংকল্পনা,একব বীজাবোপণ ব সিংচন সঁ লএকএ একব পুষ্পিত-পল্লবিত লোগত,মৌনাগত,ক্ষবণ দিস জাগত আ বোগ-দোষসঁ গ্রসিত ভএ বর্ত্তমানক নিম্নঠতম রূপ ধবি পহুঁচৈক সম্পূর্ণ প্রক্রিযাক বৈচাবিক শল্য-চিকিসো(চীড়-ফাড়) বহুত অনিবার্য ভএ গেল অছি| এহি সমুদ্রমন্থনসঁ বিষ বহবযবাক সংভাবনা সেহো অছি কিন্তু সামাজিক সংক অমৃত প্রাপ্ত কববাক লেল ঙা জোখিম লেবএ পড়ত| জাধবি এহি সামাজিক সংবচনাক বোগ-দোষকেঁ নীকসঁ বূঝল নহি জেতৈক তাধবি লে একব কাযাক সম্মানজনক নাশ সম্ভব ছৈ আ লে একব কাযাকল্পক কোলো সম্ভাবনা ছৈ| মিথিলে নহি,সম্পূর্ণ ভাবতীয সমাজক সাংস্কৃতিক উঁথোন-পতনক জড়া আঠমে গএল বর্ণ সঁ রূপান্তবিত জাতি-ব্যবস্থা অছি|

বিদেহ মাধব এলাহ,হুনক পুবোহিত গোতম বহুগণ অগ্নি প্রজ্জ্বলিত কএললি,আবণ্যকতান্বসাব জংগল-ঝাড় জবাওল গেল,খেতী যোগ্য সমতল ভূমি বনাওল গেল,সমাজ সভ্যতা আ বিকাস দিস অগ্রসব ভেল| আর্য-অনার্যক সম্মিলন সঁ বনল মিলজুমলা সংস্কৃতি বিকসিত ভেল| কালক্রমমে একীভূত আ ব্যবস্থিত সমাজক বচনাক্রমমে পবিবর্তনীয বর্ণাশ্রম-ব্যবস্থা বিকসিত ভেল| ঙা বর্ণব্যবস্থা অপন সমযক সর্বাধিক বৈজ্ঞানিক আ ব্যাবহাবিক সমাজব্যবস্থা ছল জখনকি বিশ্বক অনেকানেক ভূভাগ তখলো অবিকসিত আদিম অবস্থামে পড়ল ছল| ঙা ব্যবস্থা সামাজিক-আর্থিক-বাজনীতিক-সাংস্কৃতিক চাবি আস্ফবনা সশক্ত অধিবচনা ছল| এহি বর্ণসমাজমে সামাজিক শ্রম,সামাজিক বক্ত-সম্বন্ধ এবম সামাজিক

ৱিচাবক নিযম পবিবর্তনীয ছল| সামাজিক ৱ্যক্তি খপন যোগ্যতা,ক্ষমতা খা খভিকচিক খনুসাব সামাজিক শ্রেমকেঁ খংগীকাব কএ খপন জীৱনযাপন নেন ব্রাহ্মণ-ক্ষত্রিয-ৱৈশ্য-শূদ্রক বোজগাবমূনক চক্রসঁ খপন ৱর্ণ খা শ্রেম-প্রকাব চুনি ওহিমে খপন প্রতিভা খা সামর্থ্যক সদুপযোগ খা প্রদর্শন কববাক নেন স্বতন্ত্র ছল| ও খপন বাগামেক খাকর্ষণক খাধাব পব বঞ-সম্বন্ধ স্থাপিত কএ সামাজিক ৱ্যক্তি ৱনবাক নেন স্বতন্ত্র ছল| ও প্রত্যেক সামাজিক পহলূ পব নির্ভীকতাপূর্ৱক খপন ৱিচাব ৱ্যক্ত কববাক নেন স্বতন্ত্র ছল| খপন প্রকৃতিমে পূর্ণ সমাজৱাদী ৱর্ণ-সমাজ প্রাকৃতিক সন্সাধন পব ৱেঁসী খা সামাজিক শ্রেমসঁ খর্জিত সাধন পব কম নির্ভব ছল| প্রত্যেক ৱ্যক্তিক বোটী খা খাজাদীক গাবন্টী ছল| সৃজনামেক সংস্কৃতিসঁ খানোকিত ও কান তাধবি বহল জাধবি ওহি ৱ্যৱস্থামে পবিবর্তনশীনতা বহনৈ| জঁ দেখন জায ত সামাসিক সংস্কৃতিক ৱীজাবোপণ খা ওকব তীব্র ৱিকাসক ওএহ কানাৱধি ছল| এহিকানমে সামাজিক শ্রেম-সংস্কৃতিক মহত্তা ত স্থাপিত ভেৱেঁ কএন;মহাসাগব,ৱনপ্রদেশ,গিবিপ্রদেশ,মকপ্রদেশ,হিমপ্রদেশ, খাকাশ খাদি পব ৱিজয প্রাপ্ত কএ ওকবা খপন খধীন কববাক ঘাতক প্রৱৃতিক জগহ পব ওকবা খপন মিত্র ৱনাএ ওকব সংবক্ষণ কববাক সংস্কাব সেহো জন-জনমে ৱিকসিত ভেন| দেহক নশ্বৰতা খা খামোক খমবতাক সিদ্ধান্ত মনুষ্যকেঁ খপন ভাৱী পীঢীক ভৱিষ্যসঁ জোড়নক| ওা ও সময ছনৈ জখন ৱিদ্যানুবাগী খা ৱিদ্বানকেঁ ব্রাহ্মণত্ব ভেটৈত ছনৈ,খজুকা জঁকা নহি জে ব্রাহ্মণ ৱন্শমে জন্ম নেনহ্ ত ৱিদ্বান হোযৱেঁ কবৱ| ওা ও সময ছনৈ জখন বণকৌশনমে নিপুণতা ক্ষত্রিযত্বক

পৈমানা হোগত বহয,ঋজ্কা জকাঁ নহি জে ওহি ক্ষনমে জনমনহুঁ ত রীব হোযবেঁ কববঁ|

একবা জনসংখ্যাক দবাঁব কমী,রা তকোনীন সমাজক সমযগত বাঁধ্যতা জে রণাশ্রিম ঋধিবচনাক পবিবর্তনশীনতা ঋপন নিবন্তবতা কযম নহি বাখি সকন ঋা তকব পবিণামস্বৰূপ ঋপবিবর্তনীয জন্মনা জাতি-ব্যবস্থা ঋস্তিত্ব মে ঋাযন| সমাজ-সত্তাক ক্ষবণস্বৰূপ ব্যক্তি-সত্তাক বঁঢৈত বর্চস্ব সেহো একটা কাবণ ভএ সকৈত ঋছি| গএহ জন্মনা জাতীয সমাজ হমবা সভক বৈভবশানী মানবীয সংস্কৃতিক ক্ষবণক মহত্বপূর্ণ কাবক ভএ গেন ঋছি|

জাহি মিথিক নাম পব মিথিনা বঁনন ঋা জনক বংশক স্থাপনা ভেন,জাহি বিদেহকেঁ মন্ব মহবাজ 'বৈশ্য দ্বাবা ব্রাহ্মণীক গর্ভসঁ উঁপেন্ন সন্তান ' কহয ছথি ঋা জেকব বর্গীকবণ ব্রাহ্মক ৰূপমে সেহো হোগত ঋছি,তাহি বংশক সীবধ্বজ জনকক সভামে 'জনক(বৈদেহ)বস্তুত: জনক(পিতা)ছথি'কহৈত ঋা'জনক-জনক' উঁচবিত কবৈত ব্রহ্মবিদ্যাক জ্ঞান নেবাঁক নেন বিদ্বতজন সভ দৌগৈত ছনাহ| বিশ্বামিত্রক শ্রেণী ক্ষত্রিযক ছনহি ক্ষদা হ্নক প্রবঁন বিদ্যানোত্বপতা ঋতত: হ্নকা ব্রহ্মর্ষিপদ উঁপনব্ধ কববৈনকনি| ঋউঁঠা কটবাঁগওকএ একনব্য প্রমাণিত কযননি জে ধনুর্বিদ্যামে পাবংগত হোএবাঁক নেন ক্ষত্রিয হোযবঁ ত কাত জায দিঋ,গুৰু ঋা ব্রাহ্মণক সদেহ উঁপস্থিতি ঋথবা শিক্ষা কতহ্সঁ ঋাবশ্যক বা ঋনিবার্য নহি ঋছি| শংবূক ঋপন ঘেঁটে কটবঁযসঁ পহিনে বিদ্বান হোএবাঁক নেন ব্রাহ্মণ হোএবাঁক ঋনিবার্যতাকেঁ ঋাধাবহীন প্রমাণিত কএ চ্কন ছনাহ|

অপবিবর্তনীয জন্মনা জাতি–ব্যরস্থা ধবি অরৈঁত–অরৈঁত হমবা সভক সমাজ করচমে রঁন্দ ঘোঁঘা সদৃশ্থ ভএ গেন| ঞ করচ ছন প্বরাগ্রহক| জাতি–প্রথাসঁ উঁপজন এহি স্থিতিক মাদে সমাজরিজ্ঞানী জরাহবনান নেহৰুক কহরঁ ছনি জে’ভাবতমে দুনূ রাঁত একে সংগ রঁঢন| একদিস ত রিচাব আ সিদ্ধান্ত মে হম সভ রৈসী সঁ রৈসী উঁদাব আ সহিষ্ণু হোএরাঁক দারী কএনহুঁ| দোসবদিস,হমবসভক সামাজিক আচাব অনংত সংকীর্ণ হোগত গেন| ঞ হাটৈন ব্যক্তিত্ব,সিদ্ধাঁত আ আচবণক ঞ রিবোধ,আগধবি হমবাসভক সংগ অছি আ আগও হমসভ ওকব রিরুদ্ধ সংঘর্ষ কএ বহন ছী| কতেক রিচিত্র রাঁত অছি জে অপন দৃষ্টিক সংকীর্ণতা,আদত আ বিরাজ আদিক কমজোবীকেঁ হমসভ ঞ কহি অনঠিআএ দেরঁএ চাহিত ছী জে হমবাসভক প্ববখা রঁড়কা নোগ ছনাহ আ হুনকব রঁড়কা–রঁড়কা রিচাব হমবাসভকেঁ রিবাসতমে ভেটৈন অছি| কিন্তু,প্ববখাসভসঁ ভেটৈন জ্ঞান আ হমবাসভক আচবণমে ভাবী রিবোধ অছি আ জাধবি হমসভ এহি রিবোধক স্থিতিকেঁ দূব নহি কবরঁ,হমবাসভক ব্যক্তিত্ব হাটৈন কে হাটৈনে বহি জাএত| ’নেহৰুক ঞ কথন মিথিনো পব অক্ষবসঃ নাগূ হোগত অছি| অপবিবর্তনীযতা আ জন্মনা–এহি দুনূ স্ববক্ষা–করচসঁ সংবক্ষিত মিথিনাক মাস্তদর্শিক রক্স আমেক্ষথতা,আনস্য আ হ্মথতখোবীকেঁ অপন হক মানি নেনক| শ্রেষ্ঠতারোধক পাখংড মিথিনাক গ্রহণশক্তিকেঁ গীনি গেন| ’জে হম ছী,হমবা নগ অছি,সএহ সর্বশ্রেষ্ঠ অছি’ক ডপোড়শংখী মানসিকতা রাঁহবসঁ উঁকৃষ্টতম চীজহুঁকেঁ নেরঁ অস্বীকাব কবএ নাগন| রিদেশী আক্রাঁতাসভক শাসনাধীন নহি বহিতয ত অনেকবাস কনা,শিল্প,তকনীক,রিধা জে রিদেশীসভক সংগ আযন

छल,मिथिला समाज तकरोसँ रंचित बहि जैतय। ओ मजदूरीमे ग्रहण कएल गुणसभ छल जे हमवासभक गंग-जमुनी संस्कृतिकेँ समृद्ध कयलक,जकरापर आग हमसभ गर्व करय छी।

कोशी नदी मिथिलाक नम्हर भूभागक भाग्यनियंता बहल अछि। एकदिस ओ हमवासभक धार्मिक-सांस्कृतिक भौतिक धरोहरसभकेँ नष्ट-भ्रष्ट कयलक अछि त दोसरदिस एकरे चलतरेँ अपविग्रह आ संघर्षक संस्कृति निर्मित आ विकसित भेल जेकर सीधा नाभ सामान्य जन-समाजकेँ भेटैल। विशिष्ठ जन-समाज एहि संस्कृतिसँ अलगे-थलग बहरांमे ख्शल मानलनि। जँ संघर्ष-संस्कृतिकेँ सर्वस्वीकृति भेटैल बहितय त क्षत-विक्षत लोकजीवनक जीजीविषाक परिणामस्वरूप शासनमे आयल खेतिहरसमाजक प्रतिनिधि गोपाल आ सत्ताक निरंकुशताक विरुद्ध जनांदोलन कए शासनमे आयल भीम केरठ निर्विवाद नायकक सूचीमे होयतथि।

हमसभ जाहि आर्य-आर्येतर सभ्यता-संस्कृतिक संवाहक मानल जाइत छी ओ समन्वयवादी,सामासिक,समावेशी संस्कृति छल। आर्य मनीषी लोकनि हमवासभकेँ 'वसुधैव-कुटुम्बकम'क मंत्रसँ सिक्त कएने छलाह। गएह संस्कृति छल जे सनातन धर्मकेँ एतेक विस्तार देलक। एहि सनातन-सागरमे आवि विदेशी आक्रांतासभक सैकड़ । वर्ष-समूह भारतीय भेए गेल। सनातन धर्मक विस्तार हमरसभक संस्कृतिओकेँ निरन्तर समृद्ध कयने गेल। सम्पूर्ण मिथिलाकेँ प्रमुखतः सनातनी मानल जाइत अछि। किन्तु,आग

हमसभ ओ स्वीकार करी जे हमसभ अपन पूर्वजक नीक,गमानदार आ स्वयोग्य उत्तराधिकारी प्रमाणित नहि भए सकलहुँ आ ओहि सनातन-सामासिक संस्कृतिकेँ अक्षक्षुण्ण नहि राखि सकलहुँ| जे समाज अपन धूर विरोधी वर्गहुकेँ अपन अरतार घोषित कररौक उदारता देखयलक,रएह समाज मैथिल-महासभाक आयोजक भेल| जाहि वैौष्णिक रक्त पर वर्ण-जाति संरचना-संरक्षणक भार छलय सएह रक्त परम स्वार्थी रनि अपन रक्त-शुद्धताकेँ रेकर्डेड कररौक उताहुलतामे पंजी-प्ररन्धक व्यवस्था कए लेल| वेदव्यास एतेक ध्यान राखलनि जे'चातुर्वर्ण्य मया सृज्यते'गुणकारतार-कहलसँ कहरएलनि,कदा सत्ता-संरक्षणक आमेकथुतामे पंजी-प्ररन्धक औचित्य लेल कोनो लोकलाजक पालन नहि कएल गेल| "मिथिला"आ"मैथिल"शब्दक प्रयोगकेँ हमसभ जतेक विराट आ व्यापक अर्थरत्ता प्रदान कविऔक,एहि दुनू शब्दक अर्थ आम-अराममे की लगाओल जाग छै,से ककरोसँ लुकायल नहि अछि| एतय मिथिलाक सामाजिक वुनारटक बग-बग चिन्हयरना साधु-जनकरि रैद्यनाथ मिश्र यात्री जीक एकटा लेखक अंश देर समीचीन वुझाएगत अछि-"मैथिल महासभाक सिद्धान्तानुसार मैथिल ब्राह्मण तथा कर्ण कायस्थ(!)मात्र स्वच्छ मैथिल थिकाह| मिथिलाक सीमाक भीतर रसैत,मिथिलाक अन्न-जलसँ निरहि करैत,विशुद्ध मैथिली रजैत भूमिहार-क्षत्रिय आदि अन्य जातीय यदि क्या अपनाकेँ मैथिल कहताह तँ जातीय महासभा लागवि ठाठ क क हुनका दिस रधुआएत,कहँ रिजकौत| परिणामस्वरूप हुनका लोकनि अपना घर-आंगनमे व्यवहृत भाषा-ठेठ मैथिलीकेँ मैथिली कहरामे अपन हेठी वुझै लागल छथि| 'हम मैथिल नहि,रिहारी

থিকহ্ঁ’–ও ভারনা হমবা নোকনিমে জাহি তেজীসঁ পসবি বহন খছি,সে দেখি এহন কোন মৈথিন হ্বদয হৈত জে খাহত নহি ভ বহন হো ? মিথিনেশ–স্বধাবক মিথিনেশ(?)জাহি সংস্থাক কর্ণধাব হোথি,তকব এহি প্রকাবক সংকুচিত সিদ্ধাংত দেখি মিথিনাক নাখ–নাখ খধিরাসী–জে মৈথিন হোগতহ্ঁ মৈথিন নহি,ক্ষুব্ধ খছি৷ চিবকানসঁ খপনহি ঘবমে,খপনহি রঁন্ধু–রম্ভাক দ্বাবা ঠোঁঠিঔন গেন মিথিনাক সন্তান খাগ যদি খাজিজ খারি খপনাকেঁ রিহাবী কহরঁ খাবংভ কৈনক খছি তঁ এহিমে কেকব দোষ ? ’মহাসভা’ক কতোক সদস্যক মনমে ঘ্রি–ফিবি ও রাঁত খরৈত হেতৈন্হি জে মিথিনাক সকন খধিরাসীকেঁ মৈথিন মানি নেনা সঁ মৈথিনত্বক খগ্রগণ্য খংগমে ধার্মিক রা সমাজিক ধক্কা নগরাক সম্ভর৷ ” যাত্রী জীক ও রিচাব খাগ সঁ 73রর্ষ পহিনে রিভূতি,ফবরবী 1938 খংকমে ছপন ছন৷ এহি স্থিতিমে খাগও কোনো সকাবাত্মক পবিরর্তন নহি ভেন খছি,উনটৈ রিগড়নে খছি৷

রর্ণ–ব্যরস্থাক রিগড়ন নিদ্বষ্ঠ রূপ জাতি–ব্যরস্থাক ঔচিত্য–খনৌচিত্য পব ঘমর্থন হোগত বহন ছৈ,হোগত বহতৈ,মুদা এহি যথার্থসঁ মুঁহ নহি মোড়ন জায সকৈত খছি জে মিথিনাক সাংস্কৃতিক উঁথোন–পতনমে ও ব্যরস্থা খনিরার্য খা মহত্ত্বপূর্ণ কাবক বহন খছি খা বহত৷ খান্দা–রূদন,নৈকা–রঁনিজাবা,নোবিকাযণ,ভগৈত খাদিক জে নোকগাযনক সংস্কৃতিক পবম্পবা বহয খথরা ছৈ,তকব নির্রহনমে খাগ ধবি কেও দ্বিজ কিঐক নহি এনাহ ? ও ঠেকেদাবী কী মাত্র সোল্হকনক ছিখয ? মৈথিনী মৈথিন ব্রাঁহ্মণ খা কর্ণ কাযস্থক ভাষা ছৈ খা এহিসঁ সম্বন্ধিত সভটা সংস্থা–প্রবক্কাব পব গএহ দ্নূ জাতিক খাধিপত্য

छै-एहि आरोपक कोनो प्रायोगिक खण्डन आग धरि किऐक नहि भऽ सकल ? भाषा सेहो संस्कृतिक आवश्यक आ अविभाज्य अंग छै। जँ भाषा समावेशी नहि हएत त समावेशी संस्कृति कोना विकसित हएत ?

ई प्रसन्नताक गप अछि जे जँ राजनीतीक क्षेत्रकेँ छोड़ि दी त सामाजिक जीवनमे जाति-पातिक महत्ता समाप्त प्राय: छै। एकर कारण खुलल अर्थव्यवस्थाक नीती होअय,भौतिकवादी होड़ होअय वा एहि दुनूक चलतवेँ बँढल जीवन-संघर्ष,किन्तु जाति-पाति अखनुका लोकक विचार-सूचीमे बँहुत नीचाँ छै आ मात्र चुनावेक बेवमे शीर्ष पर आबँय छै। तेँ समरसताक संस्कृतिकेँ फिलवँञ्ज सतह पर कोनो खतरा नहि देखाइत अछि। एहि क्षेत्रक उँर्वर माटि-पानिमे सामासिक संस्कृतिक बीआ तेहन सघन छीटैल छै जे बेँम्हरबरत मौसम आ लापरवाह किसानक अछैतहुँ ई पनुकैत रहय छै,फसिल दैत रहय छै आ एतहुका वासीकेँ जीवित आ गतिवान बँनेने रहैत छै। किन्तु कतहु गर्भीरमे आगि भऽ सकैत छै। तेँ समयक तगादा छै जे वर्तमानमे जातीय-व्यवस्थाकेँ कोनो तार्किक आ वैज्ञानिक निष्कर्ष धरि आनल जाय,अन्यथा सांस्कृतिक उँत्कर्षक लक्ष्य पायबँ सन्देहास्पद अछि। जवाहरलाल नेहरु कहने छलाह-"आग हमरासभक समक्ष जे प्रश्न अछि,ओ मात्र सैद्धांतिक नहि अछि,ओकर सम्बन्ध हमरसभक जीवनक सम्पूर्ण प्रक्रियासँ अछि आ ओकर सम्युचित समाधान आ निदाने पर हमरसभक भविष्य निर्भर करैत अछि। साधारणत: ,एहन समस्यासभकेँ सोझरावँयमे नेतृत्व देबाँक काज मनीषी लोकनि करैत छथि। किन्तु ओसभ काज नहि एलाह। ओहिमे सँ किछु त

এহন ছথি,জে এহি সমস্যাক স্বরুপহিকেঁ নহি বূঝি পারি রহল ছথি। রকিযাসভ হাবি মানি লেনে ছথি। ও সভ রিফলতা-রোধসঁ পীড়িত আ আমোক সংকটসঁ গ্রস্ত ছথি আ বুঝিএ নহি পারি রহল ছথি জে জীরনকেঁ কোন দিশা দিস মোড়র উচিত হোযত। "লেহকক এহি নিবাশ টিপ্পণীক বাদ রৈশ্বিক সমাজরাদী চিন্তক এংজেল্সক ওা রক্তব্য রিচাবণীয আছি-"কোনো খাস আর্থিক সংবচনাক সমস্যাক সমাধান ওহী সংবচনাক নিযম কে অনুসাব কএল জাযব অনিরার্য অছি,জঁ কোনো দোসব সংবচনাক নিযমসঁ ওকব সমস্যাক সমাধান কএল জাযত ত ও রেজায ঢংগসঁ রিদ্রূপ ভএ জাযত। "এংজেল্সক এহি কথনমে হমবাসভক জাতীয(আর্থিক)সংবচনাক সমস্যাক সমাধানক কুংজী নুকাযল অছি। মিথিলা আ ভাবতক লেল সাংস্কৃতিক সংকটক কাবণ বনল জাতিপ্রথাক রর্ত্তমান সংকটক সমাধান এহি জাতিপ্রথাক সংবচনাক ভীতবে অছি। একবে নিযমসঁ একবা যুগানুরূপ উপযোগী বনাযল জাএ সকৈত অছি আ ওা কাজ হমবেসভকেঁ কবএ পড়ত। মিথিলাক সংস্কৃতিক গএহ তগাদা অছি। মিথিলা আ একব সংস্কৃতিক উৎকের্ষক গএহ টা মাত্র অছি।

<u>মিথিলা মে সাংস্কৃতিক আন্দোলনক ভরিষ্য</u>

এক বেব মৈথিলীক একটা নামী-গিবামী চর্চিত করি মিত্রা অপন নরপ্রকাশিত করিতা পোথী পঠএলনি আ ওহি পব কিছু লিখবাক আগ্রহ সেহো কএলনি। আলোচক-সমালোচক হেবাক নূবি নহি বহিতো হম হুনক আগ্রহক সম্মান করৈত পোথীক পাঠ কএলাক উপবান্ত একটা পত্রাক মাধ্যম সঁ ওহি পোথী পব হুনকা কিছু টিপ্পণী লিখি পঠএলিযনি। ওহি পত্রা মে অনেক বাস বাতক

সংগ হম গপো নিখনিযনি জে "মৈথিন সমাজক কহিযো কোনো খান্দাননী চবিত্র নহি বহনৈক খছি তথাপি খহাঁক খাগ্রাশি খহাঁক করিতা সভ মে খূরঁ নীক জকাঁ খপি জাগত খছি খা সর্বাধিক রিনক্ষণ বাঁত গ্র জে করিতা মে জতয কতৌ খান্দাননী তেরব খাএন খছি সে কতৌ সঁ ওঠ়ন নহি নগৈত খছি।"

হমব এহি তাকোনিক পাঠকীয টিপ্পণীক ওহি খংশ পব করি মিত্রা দিস সঁ প্রতিরাদ খাএন জাহি মে মৈথিন সমাজক খান্দাননী চবিত্রা নহি বহবাঁক বাঁত কহন গেন ছন। হমবা দ্নূ গোষ্ঠে মে দীর্ঘ-রার্তা ভেন, দ্নূ গোষ্ঠে বঁহসা-বঁহসী কএনহুঁ খা দ্নূ গোষ্ঠে খপন-খপন গপ পব খষ্টন বহি গেনহুঁ। হ্নক খপন তর্ক ছননি খা হমব খপন। ও খপন তর্ক পব খখনিও খষ্টন ছথি কী নহি সে হমবা নহি বুঁঝন খছি। কিন্তু হম খাগযো খপন রিচাব, পক্ষ খা তসেম্বন্ধী তর্ক পব দৃঢ় ছী, বঁক্কি বাঁদ মে ভেষ্টন প্রমাণ খা খন্বভর সভ সঁ ও রিচাব খাওবো দৃঢ়তব ভেন জাগত গেন খছি। তেঁ হম খাগযো এহি বাঁতকেঁ মানয ছী খা তেকবা ব্যক্ত কবএ মে হমবা কোনো সংকোচ নহি খছি জে মৈথিন সমাজক খান্দাননী চবিত্র নহি খছি, নহি বহন খছি খা জাহি প্রপংচী খা কপটী জীরন শৈনীকেঁ গ্র সমাজ খাগযো খপনৈনে খছি, তেকবা দেখৈত ভরিষ্যা মে একব খান্দাননী হোগক কোনো সংভারনা হমবা কতহুঁ সঁ নজবি নহি খারৈত খছি।

জহিযা বাজতংত্রা বহৈ, বাজা-মহাবাজা-নবাঁবঁ-জমীন্দাবক যুগ বহৈ, তহিযো খা খাগ নোকতংত্র ছৈ, সাংসদ-রিধাযক-মুখিযা খাদি জনপ্রতিনিধিক যুগ ছৈ, খাগযো,

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰𑒧𑒳𑒐𑒲, 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒂 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰𑒣𑒼𑒭𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒯𑒻, 𑒩𑒰𑒖𑒰-𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖𑒰-𑒢𑒫𑒰𑒥-𑒖𑒧𑒲𑒢𑓂𑒠𑒰𑒩𑒏 𑒨𑒳𑒑 𑒩𑒯𑒻, 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒫𑒰 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒣𑒩 𑒄 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒩𑒰𑒖-𑒮𑓀𑒣𑒼𑒭𑒱𑒞 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒪। 𑒂𑒥 𑒖𑒐𑒢𑒱 𑒪𑒼𑒏𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒻, 𑒮𑒰𑓀𑒮𑒠-𑒫𑒱𑒡𑒰𑒨𑒏-𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒂𑒠𑒱 𑒖𑒢𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱𑒏 𑒨𑒳𑒑 𑒕𑒻, 𑒞𑒐𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒖𑒲𑒫𑒲 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒏𑒯𑒱 𑒄 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒩𑒰𑒖𑒣𑒼𑒭𑒝𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒂𑒏𑒰𑓀𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒣𑒕𑒱𑒪𑒰 𑒠𑒴-𑒞𑒲𑒢 𑒠𑒬𑒏 𑒮𑒿 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏-𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒠𑒾𑒩 𑒔𑒪𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓁 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒁𑒯𑒴 𑒮𑒿 𑒄 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒰 𑒮𑒲𑒐 𑒯𑒰𑒮𑒱𑒪 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒯𑒳𑒁𑒋, 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒱𑒑𑓂𑒦𑓂𑒩𑒧𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒄 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒂𑒥 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒭𑒝-𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒫 𑒎𑒖𑒰𑒩 𑒮𑒦 𑒐𑒼𑒖𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒐𑒼𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒔𑒩𑒝 𑒧𑒹 𑒄 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒦𑒳𑒐𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒪𑒹𑒪 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒫𑒮𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒄 𑒮𑒧𑒰𑒖, 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒏𑒯𑒥𑒻 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒅𑒣𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒰𑒯𑓂𑒨 𑒅𑒣𑒏𑒩𑒝𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒩𑒴𑒣𑒲 𑒫𑒮𑒰𑒏 𑒦𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒏𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒙𑒥 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒞𑒳𑒭𑓂𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒂𑒥 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏 𑒛𑒳𑒑𑒛𑒳𑒑𑓂𑒑𑒲 𑒣𑒲𑒙𑒱 𑒏𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒼𑒭𑒝𑒏 𑒢𑒫 𑒐𑒼𑒩𑒰𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒼𑒑𑒰𑒛𑓃 𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫 𑒂 𑒒𑒩𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢𑒏 𑒁𑒑𑒳𑒂 𑒕𑒳𑒙𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒰-𑒡𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒰𑒫𑒪𑒲, 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒫𑒪𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒴, 𑒧𑒯𑒲𑒢𑒲 𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒴 𑒂 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒏𑒚𑒐𑒹𑒪 𑒁𑒨𑒢𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒗𑒪𑒏𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒞। 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒫𑒰𑒠 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡𑒦𑒰𑒮, 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒑𑓂𑒩𑒯-𑒠𑒳𑒩𑒰𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒮𑒿 𑒑𑓂𑒩𑒮𑒱𑒞 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒐𑒢𑒱 𑒦𑒢𑒯𑒱 𑒄 𑒪𑒰𑒑𑒍 𑒖𑒹 𑒍 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒖𑒿

এহিনা চনৌত বহন তঁ ভরিষ্য মে ঙা প্রমাণিত হএৱঁ স্বনিশ্চিত মানূ জে এহি হ্-নে-নে-নে সঁ উুর্রবতাক সংভারনা সঁ ভবন এহি ধবতীকেঁ উঁসঞ্চ কবৱাঁক ঙা একটা ভূন মাত্রা খছি।

তর্ক-রিতর্ক খা শাস্ত্রার্থক নিবর্থক খা পবিণামহীন উঁদ্যাগক ঙা ক্ষেত্র বহন খছি খা তেঁ শাস্ত্রার্থ নেন উঁতাহ্ন ৱঁহ্ত গোষ্ঠে তর্কস্বৰূপ মাবিতে বাস খান্দানন খা খান্দাননকাবী নোকনিক নাম গিনৱাঁএ দএ সকৈ ছথি। কিন্ত্ ঙা খারবণ খা ৯খৌটাকেঁ রাস্তরিকতাক ৰূপ মে প্রস্তুত কবৱাঁক প্রযাস মাত্রা বহি, ছৈ খা বহতে। খান্দানন কোনো শাবীবিক ৱাঁহবী প্রক্রিযা নহি ছৈ জেকবা কোনো নামকবণ কএ খা ৯ক্কা দেখৱৈঁত ফোষ্টে খিচৱাঁ কএ হ্নেনেনে কএন জাএ। ঙা চবিত্রা, মন খা খান্তবিক ব্যক্তিত্ব সঁ নাভি-নান জকাঁ জ্ডৃন প্রক্রিযা খছি খা তবে-তব নিবন্তব প্ররহমান বহৈৱঁনা পবিরর্তনকামী প্ররৃতি খছি। মৈথিন সমাজ মে এহি প্ররৃতিক প্ররাহক গপ জাএ দিখ, একব উঁপেত্তিক শ্রাতেকেঁ ভোথন গেন খছি খা ভোথৱাঁক ও প্রক্রিযা নিবন্তব জাবী খছি খা একব প্রফ্খ কাবক বহন খছি এহি ক্ষেত্রাক রৌঙ্কিক নিযন্তা বস্তুক দ্বধ খা দ্বধীকবণ।

খপন এহি ব্যঞ্ ভারনা খা মান্যতাক প্স্ঠি নেন হম কিছু উঁদাহবণক খোজ মে প্নঃ ঘ্বি কএ ওহি করি মিত্রা খা হ্নক কার্য্য সংগ্রহ পব খাৱঁএ চাহএ ছী জিনকব উঁল্লেখ হম এহি খানেখক প্রাবংভ মে কএনে ছী। এহি পোথীক প্রাবংভ হোগত খছি করি দ্বাবা ব্যঞ্ খাভাব সঁ। এহি মে করি প্রাযঃ এক দর্জন গোষ্ঠেক নামক চর্চা কএনে ছথি জে সভ পোথীক সামগ্রী জ্ঞৈযৱাঁ মে

সহযোগ আ পাঁড়ুলিপি অবলোকন এবং পবিমার্জন মে মূল্যরান পবামর্শ করি মিত্রাকেঁ দেলথিন। দোসব দিস হমবা পঠাএল পোথীক প্রতি মে করি মিত্রা অপন হস্তলিপি মে জে লিখলে ছথি, সে অবিকল রূপ মে এনা অছি – 'মৈথিলীক সমর্থ বচনাকাব প্রিয ভাগ অববিন্দ জীক লেল জে সভ সঁ পহিলে এহি পোথীকেঁ ছাপরাঁক প্রস্তার কযলে বহথি।' ওা করি মিত্রা স্বযং আ জাহি এক দর্জন লোকক অপন পোথী মে মুদ্রিত রূপ সঁ আভাব প্রকট কএলে ছথি সে সভ মৈথিল মহাসভা সঁ সংবক্ষিত আ পঞ্জীকৃত জাতি সঁ ছথি আ জিনকব স্মবণ অপন হস্তলিপি মে ;অমুদ্রিত রূপ মে করি কবৈ ছথি অর্থাত্ হম, তেকবা মৈথিল মহাসভা গৈব–মৈথিল ঘোষিত কএ পঞ্জীযনক মহাপুণ্য সঁ বংচিত কএলে অছি। একব কী মানে ? ওা স্থিতি তখনি আওব রিচাবণীয ছৈ জখনি কি করি মিত্র স্বযংকেঁ রামপংথী মানয ছথি, গর্ব সঁ এহি বাঁতক ঘোষণা কবয ছথি, কএকটা রামপংথী আন্দোলন সঁ জুড়ল বহবাঁক দাবী কবয ছথি আ কতিপয লোক একবা সকাবিতো ছথি। দুনিযাক সম্পূর্ণ তর্কশাস্ত্রাক কোনো টা তর্ক সঁ কী ওা প্রমাণিত কএল জাএ সকৈত অছি জে সভ সঁ পহিলে পোথী ছাপরাঁক প্রস্তার দেনিহাব ব্যক্তিক মহত্ত্ব পোথীক লেল সামগ্রী জুটএবাঁক সহযোগী বা পাঁড়ুলিপি অবলোকন–পবিমার্জন মে মূল্যরান পবামর্শ দেনিহাব সঁ কম হোএ ছৈ। মূল্যাংকনক ওা রিভেদী রাঁটিখবা বাজনীতি বা কূটনীতিক অহিতভাব সঁ দূষিত মাহৌল মে ত চলিও সকৈত অছি, কিন্তু সাহিত্য ত সহিত–ভাবক দ্যাতক অছি।

এহি উঁদাহবণকেঁ হমব ব্যক্তিগত মামলা মানি টাবল বা অনঠিআএল জাএ সকৈত অছি কিন্তু একবা হমবা সভক

द्वैध भावनाक उदाहरण त मानने जाए सकैत अछि। भौतिक आ मानसिक द्वैध। व्यक्तित्वक द्वैध। आ, ई द्वैध मैथिल समाज मे अदौं सँ बहल अछि। मैथिल महासभाक विघटनकारी आ आत्मघाती आयोजनक कारण घवि आरैत-आरैत ई द्वैध अपन चरम परिणति पर, पराकाष्ठा पर, पाराबार पर पहुँचैत अछि आ एतहि सँ द्वैधीकरणक प्रक्रियाक दस्तावेजी अध्यायक प्रारंभ भए जाइत अछि। एतय सँ शुरू भेल विध्वंशक पंजीकृत खेल आइयो मैथिल समाजकेँ भुतनहवी खेलाए बहल अछि। कर्मकाण्ड, पाखण्ड आ आडम्बर सन-सन रोग सँ मैथिल समाज पहिनो ग्रसित छल, मैथिल महासभाक जहवी मदिवाक प्रभाव सँ ओहि मे श्रेष्ठताबोध सँ भवल छल, छद्म आ छआछतक महामावी सेहो पसवि गेल। मिथिला-मैथिली सँ अखण्ड रूप सँ जुड़ि एकव पर्याय बनल सम्प्रदाय एहि मैथिल महासभाक माध्यम सँ स्वयंकेँ समाज सँ काटि नेनक, अपनाकेँ मैथिल घोषित कए देनक आ आन सभ सम्प्रदायकेँ दस्तावेजी रूप सँ गैव-मैथिलक श्रेणी मे पेहकि देनक। एहि प्रयासमे ई सम्प्रदाय एकटा समन्वयवादी समाजकेँवस्त्र, वर्ण, जातिक टुकड़ी-टुकड़ी मे, कूड़ी-कूड़ी मे, खन-खनमे पेहव सँ बाँटि देनक आ सेहो एकटा केन्द्रीय सत्ताक दलाल शासकक छत्रछाया मे एक तवहेँ विध्वित रूप मे। एकव भयंकर दुष्परिणाम सभ आग नग्न आ निर्लज्ज रूप मे एहि भूभागक कण-कण मे अपन उपस्थिति दर्ज कए बहल अछि।

भाषा आ संस्कृतिक नाभि-नाल सम्बन्ध अछि। आग एहि

ভূভাগক ভাষা মৈথিনী পব মৈথিন মহাসভাগ সভক রর্চস্ব রঁনন খছি। সাহিত্য খকাদমীক মৈথিনী প্রবস্কাব 44 মে সঁ 42 রেঁব মৈথিন মহাসভাগকেঁ দেন গেন খছি ত রর্চস্বক খাওব কোনে প্রমাণ দের্ব খারশ্যক নহি বহি জাগত খছি। সাহিত্য খকাদমীক খনুরাদ খাদি খন্য প্রবস্কাবোক গএহ স্থিতি খছি। মিথিনা–মৈথিনীক নাম পব রঁনন পঁজীকৃত রা গৈব–পঁজীকৃত সভটা সংস্থা মৈথিন মহাসভা দ্বাবা পঁজীকৃত জাতিক নোক সভক খধিকাব মে ছৈ খা মিথিনা–মৈথিনীক নাম পব খাযোজিত খধিকাংশ খাযোজন মে সম্মানিত, প্রশংসিত, প্রবস্কৃত ভেনিহাব সভ মে মহাসভাগএ সভক রর্চস্ব ছৈ। দ্বধীকবণক এহি প্রক্রিযাক চনতে গৈব–মৈথিন ঘোষিত ভেন খান সভ সম্প্রদায এহি ভাষাকেঁ খপন বুঁঝিতে নহি খছি ত একবা সংগ ও খপন তাদাত্ম্যে কোনা স্থাপিত কবত খা জখনি তাদাত্ম্যে স্থাপিতে নহি হএত ত একবা নেন নড়রাঁক, সংঘর্ষ কবরাঁক, খান্দানিত হেরাঁক প্রশ্ন কহাঁ উঠৈ ছৈ ? মৈথিন মহাসভাক খাযোজনক খনেক দুষ্পবিণাম মে সঁ একটা গহো খছি জে কিছু খাস জাতিক বিরাজকেঁ সম্পূর্ণ সমাজক সংস্কৃতিক রূপ মে পবিভাষিত খা ক্রিযান্বিত কবরাঁক প্রযাস ভএ বহন খছি খা এহি প্রযাস সঁ শেষ সমাজক খাক্রোশক খাগি মে ঘী পড়ি বহন খছি। পাগ–দোপটাকেঁএকব উদাহবণক রূপ মে দেখন জাএ সকৈত খছি।

দ্বধীকবণক চবম স্থিতি ঞা খছি জে মিথিনা বাজ্যক তথাকথিত খান্দাননী সভ দবভংগা জিনা সঁ রাঁহব খপন কার্যক্ষেত্র মানিতে নহি ছথি। রঁহত ভেন ত কনী মধুরঁনীক পীঠ হঁসোথি দেনৌং । কোশী নদী সঁ পূবরঁ

दिशाक भूभाग हुनका अपन नहि लागय छनि । आ प्रायः एहि कारण अछि जे हुनका सभक परिकल्पना मे मिथिला राज्य ने जनक के मिथिला अछि आ ने लोकतंत्रात्मक मिथिला । ओ सभ मैथिल महासभाक आयोजक दरभंगा महराजक राजक परिकल्पना आ कामना सँ क्रियाशीलताक छद्म ओढ़ने छथि । ओ सभ जनक वंशक श्रम आ ऋषि-संस्कृतिक नहि, वर्तमानक लोकतंत्री संस्कृतिक नहि, दरभंगा महराजक विचौलिया आ खैराती संस्कृतिक अभिलाषी छथि । मैथिली भाषाक स्थिति सेहो एहि द्विधीकरण सँ सुरक्षित नहि रहल अछि । गैर मैथिलक गप जाए दिअ, दरभंगा-मधुबनीक मैथिली घराना, मठ आ महंथक नजरिमे कोशी जनपदक मैथिल सभ सेहो मैथिली लेखक नहि छथि, अछोप छथि । द्विधीकरणक एहि विस्तार सँ जातिवाद, कर्ण्मूल-गोधियावाद, गुट्ट-गिरोहवादक झाड़-झंखाड़ उगायल जाए सकैत अछि, समतावादी समाजक पहलसिन नहि उपजाएल जाए सकैत अछि । आ कोनो आन्दोलनक प्रथम आ अनिवार्य शर्त्त होइत छै जे ओहिमे सम्पूर्ण समाजक अखण्ड सहभागिता हुअए । कोनो आन्दोलन तखनिएँ आन्दोलनक श्रेणी मे आबि अपन लक्ष्यकेँ प्राप्त करए मे सफल भए सकैत अछि जखनि ओहि मे जाति-सम्प्रदाय, गुट्ट-गिरोह सँ अलग हटि सबहिबाक भागीदारी हुअए । आन्दोलन ओहि अखण्ड समाजक औजार होइत छै जे भविष्य दिस देखैत अछि आ जेकर सोच आधुनिक आ वैज्ञानिक होइत छै । एकर विपरीत हम सभ मानसिकताक वर्चस्व मे अतीतजीवी, पुरातनपंथी आ जड़ समाजक उत्तराधिकारी छी । आन्दोलन ओहि समाजक औजार होइत छै जे परिवर्त्तनकामी होइत छै ।

একব রিপবীত হম সভ যথাস্থিতিরাদক পোষক বঁনন ছী । খান্দানন ওহি সমাজক ঔজাব হোগ ছৈ জে খপন সমূন সংসাধন পব সমগ্র সমাজক খধিকাব মানৈ ছৈ । একব রিপবীত হম সভ জমাখোবীক মানসিকতা বঁনা নোক বঁনন ছী । খান্দানন ওহি সমাজক ঔজাব হোগ ছৈ জে সমতামূনক রিচাব সঁ সম্পন্ন খা খামেরিশ্বাসী হোগ ছৈ । একব রিপবীত হম সভ রিভেদকাবী শ্রেষ্ঠতাবোঁধ সঁ গ্রসিত খা পবক্ষখাপেক্ষী চবিত্র বাখয ছী । খান্দানন ওহি সমাজক ঔজাব হোগ ছৈ জে জোড়ঁবাঁক নীতি পব চনৈত সমন্বযরাদী দৃষ্ঠিকোণ বাখৈত খছি । একব রিপবীত হম সভ মৈথিন মহাসভাক রিখল্ডনরাদী নীতি খা ক্ষেত্রীযতারাদক বোগাণ্বক রাহক বঁনন ছী ।

খাগ ঙা খহন্ত দুখদ স্থিতি খছি জে জাহি মিথিনাক হম সভ বঁব-বঁব দোহাগ দৈ ছী সে ভূগোনহীন মিথকীয ক্ষেত্রা মাত্রা খছি খা হমব সভক ভাষা মৈথিনী কিছু খাস ঘবানাক খতিযানী রস্তু বঁনন খছি । ডীহ খছিএ নহি খা ভাষা-সংস্কৃতি পব ধূন-ধ্সবিত ভেন একটা বাজতংত্রাক প্রেত-ছাযা চকভাঙঁব দএ বহন খছি । এহি ভাষা খা সংস্কৃতিকেঁ ব্যাপকতা খা সর্বস্বীকার্যতা দেবাঁক বঁদনা কিছু সীমিত নোক দ্বাবা খপন ভবণ-পোষণ খা খহং-পোষণক নেন দুরুপযোগ কএন জেবাঁক পবম্পবা জকাঁ বঁনি গেন খছি । মৈথিন মহাসভাক পংজী সঁ বঁহব্ধকা খান বঁড়ঁকা জাতি, ছোটকা জাতি, দনিত, খাদিরাসী খাদি জেকবা বাড়ঁ-বোহিযা, সোল্হকন, রর্ণসিংকব খাদিক কনংকিত উঁপমাসঁ ঘিনাএন জাএ বহন খছি,কেঁমিথিনা, মৈথিনীক ক্ষখ্য ধবা সঁ কাটি-বাঁবি দেন গেন খছি । জখনি সমাজিক, খার্থিক, বাজনীতিক

তানী–ভবনীকেঁদস্তারেজী ৰূপ সঁ বাগছিত্তী কএ দেন গেন হ্খএ, তখনি এতয কোনো সাংস্কৃতিক খান্দাননক কোনো ভরিষ্য কোনা ভএ সকৈছ ? জাঘবি হম সভ ভূতক ঐতিহাসিক ভূনকেঁ চিহ্নিত কএ সকাবরঁ নহি, ওহি ভূন সভক পবিমার্জন কএ রর্ত্তমানকেঁ পরিত্র খা উঁদাব মানসিকতাক সংগ নিষ্কংটক নহি কবরঁ, ত্রুটিকেঁ কিন্নহ্ নহি দোহবযরাঁক সম্পথ নহি নেরঁ, সম্পথ পব দৃঢ় নহি বহরঁ, নীক খা সকাবামেক ভরিষ্যক কামনা পহ্নীভূত নহি হএত ।

নক্ষ্মীনাথ গোসাঁঙ: পবম্পবা, ভাষা খা নির্গুণ ভার

১

ভক্তি খান্দাননক সাহিত্য খা গোসাঁগজী

জাহি কান এহি দেশক ভক্তি সাহিত্য রঁনরঁ শ্বব্দ ভেন ও কান একটা যুগ সংধিক কান ছন। প্রথম রঁর ভাবতীয সমাজ কেঁ একটা এহন পবিস্থিতিক সামনা কবএ পড়ি বহন ছন জে ওকব চিন্হন রুঁঝন নহি ছন। খখনি তক রর্ণাশ্রম র্যরস্থাক কোনো প্রতিদ্বন্দ্বী নহি ছন। খাচাব ভ্রষ্ঠ নোক সমাজ সেঁ খনগ কএ দেন জাগত ছনা খা ও সভ একটা নর জাতিক বচনা কএ নৈত জাগত ছনা। এহি তবহেঁ যদ্যপি সৈকড় । ঁ জাতি যা উঁপজাতি সভ রঁনৈত জাএ বহন ছন, তথাপি রর্ণাশ্রম র্যরস্থা কোনো নে কোনো তবহেঁ চনৈত জাএ বহন ছন।

আর্ব একব ষ্কার্বনা মে একটা এহন স্বসংগঠিত সমাজ ছল জে প্রত্যেক ব্যক্তি আ প্রত্যেক জাতি কেঁ অপনা ভীতব সমান আসন দের্বাক প্রতিজ্ঞা কএ চুকল ছল। এক র্বেব কোনো ব্যক্তি ওকব বিশেষ ধর্ম-মত কেঁ জঁ স্বীকাব কএ লেনেক তঁ গল্পাম সমস্ত ভেদ-ভাব কেঁ রিসবি জাগত ছল। ও বাজা সঁ বংক আ ব্রাহ্মণ সঁ চাণ্ডাল তক সভ কেঁ ধর্মোপাসনাক সমান অধিকাব দের্বাক লেল বাজী ছল। এহলে সময মে দক্ষিণ সঁ ভক্তিক আগমন ভেল জে রিজলীক চমক জকাঁ এহি রিশাল দেশক এহি কোনা সঁ ওহি কোনা তক পসবি গেল। ভাবতক জাতীয তথা ধর্মজীরনক এক মহান সংধিক্ষণ মে শংকবাচার্যক অভ্যুদয ভেল। তা তক রৌদ্ধ ধর্ম ভাবত মে লগভগ 1200 রর্ষ তক উন্নতি-অরনতিক রিরিধ স্তবক অতিক্রমণ কএ এক এহন পবিস্থিতি মে পহুঁচি গেল ছল জে ভাবতীয ধর্ম আ সংস্কৃতিক লেল মাত্র অপ্রযোজনীয নহি, হানিকাবক দর্বার সঁ সনাতন হিন্দূ ধর্ম র্বলহীন, রিধ্বস্ত আ রিছিন্ন ভএ গেল ছল। একদম অস্ত-ব্যস্ত ভেল এহি ভাবতীয সমাজ মে এক দিশ চিন্নবক চউঁ নিকাললিহাব কঞ্চব কর্মকাণ্ডী সভ ছলা জে শাস্ত্রাদিক অন্তর্নিহিত ভারক উঁপেক্ষা কএ এক-এক শব্দ পব কপাব পহোড়র্বাক লেল উঁতাহুল বহৈত ছলাহ ত দোসব দিশ শূন্যরাদী, নাস্তিক আ কঠিভংজক লোক ছলা জে ওহি সভ কেঁ জড়ি-মূল সঁ উঁখাড়ি পহেকর্বাক লেল পর্কাড় । র্বান্হলে ছলা জে কিছো পূজ্য, পরিত্র আ প্রাচীন ছল। দার্শনিক মত-মতান্তবক রীচ প্রচণ্ড সংঘর্ষ ছিড়ল ছল আ রিভিন্ন ধর্মিক সম্প্রদাযক রীচ শত্রুতা রিদ্যমান ছল। এহলে রিকাল মে শংকবাচার্যক উঁদ্ভর ভেল। শংকবাচার্যক উঁদ্ভর কেঁ প্রচলিত শব্দ যা অর্থ মে ব্যক্ত কবর্ব অসংভর অছি।

एकटा श्लोक मे हुनका दिआ कहल गेल अछि जे आठ वर्षक अवस्था मे ओ चारू वेदक अध्ययन कए लेलनि, बारह वर्षक अवस्था मे ओ सकल शास्त्र मे पारंगत भऽ गेला, सोलह वर्षक अवस्था मे ओ अपन भाष्य लिखिकऽ पूर्ण कए देने छला आ बत्तीस वर्षक अवस्था मे एहि संसार सँ विदा भऽ गेला। एहन बात शंकराचार्यक जीवन आ कर्म केँ ईश्वरीय अर्थात अलौकिक स्वरूप प्रदान कए देने अछि। शंकराचार्य सम्पूर्ण विश्वक इतिहास मे एहन एकमात्र विजेता छथि जे ज्ञानबल केँ यद्धक ओजार बनौलनि आ एकटा विशाल साम्राज्य स्थापित कए लेलनि। हुनक रचनाक भक्तिक धरा दू रूप मे स्वयं केँ प्रकाशित केलक। एहन ओ दू धरा अछि जकरा निर्गुण धरा आ सगुण धरा नाम दऽ देल गेल अछि आ जकर प्रभाव भक्ति साहित्य पर हजारो वर्ष सँ पड़ि रहल अछि आ आगुओ पड़ैत रहत। साहित्यक इतिहास मे जाहि कालावधिकेँ भक्तिकालक संज्ञा देल गेल अछि ओ एहि देशक समाज आ साहित्य दुनूक लेल महान परिवर्तनकारी युग रहल अछि। कर्मकाण्ड आ जाति पातिक भ्रमजाल मे फंसल सनातन धर्मक विरुद्ध परिवर्तनवादी स्वर दऽएबला बौद्ध धर्म वामाचारादि घृणित कर्म सँ स्वयं पथभ्रष्ठ भऽ गेल छल आ ओकर उँछिष्ठ सँ भारतीय चिन्तनधरा केँ परिशुद्ध करैत मुस्लिम धर्मक आक्रामक प्रभाव सँ सफलतापूर्वक लड़ैत शंकराचार्यक बनाएल पथ निरन्तर प्रशस्त भेल गेल आ ओहि पर चलनिहारक संख्या मे निरन्तर वृद्धि होइत गेल। ई अद्भुत संयोग अछि जे आसाम मे शंकरदेव, बंगाल मे जयदेव आ चण्डीदास, बिहारक तिरहुत मे विद्यापति, मध्यदेशे मे कबीर, सूर, तुलसी आ जायसी,

বাজস্থান মে মীবা, গুজবাত মে নবসী মেহতা, মহাবাষ্ট্র মে তুকাবাম আদি অনেক সন্ত ভক্তক আবির্ভাব কিছুএ দিনক অন্তবাল ভেল। ভক্তিসাহিত্যক ও পবম্পবা অনেক ধবা মে বিভাজিত হোগতো অগ্রগামী বহল। কবীব, বৈদাস, নানক, দাদূ, মলূকদাস আদি সঁ নির্গুণ পবম্পবাক জ্ঞানাশ্রয়ী শাখা সমৃদ্ধ ভেল ত মুসলমান কবি কুতবন, মংঝন, জায়সী, শেখ নবী আদি সঁ নির্গুণক প্রেমমার্গী সূফী ধবা প্রবাহিত ভেল। বামানুজ আ তুলসী আদি সঁ বামমার্গী সগুণ পবম্পবা আ বল্লভাচার্য আ সূবদাস আদি সঁ কৃষ্ণমার্গী সগুণ পবম্পবা কেঁ বল ভেটৈত গেল। এহি ভক্তিকালক সমাপন আ বীতিকালক প্রাবংভক সন্ধিস্থল পব কোশী নদীক তীবা ক্ষেত্রা মে সন্ত লক্ষ্মীনাথ গোসাঁওক আবির্ভাব হোগত অছি। গোসাঁও জীক জন্ম আ বচনাকাল কেঁ দূনূ কালক সন্ধিস্থল নহি কহি বীতিকালক পবিপক্কতাক কাল কহবঁ বেসী উপযুক্ত কহি সকৈ ছী আ একব অসব কেঁ গোসাঁও জীক বচনাসভ মে বহুত স্পষ্ট রূপ সঁ দেখল জাএ সকৈত অছি জাহিমে সিদ্ধ সাহিত্য, নাথপংথী সাহিত্য, ভক্তিক জ্ঞানাশ্রয়ী আ প্রেমমার্গী সূফীধবা, সগুণ পবম্পবাক বামমার্গী আ কৃষ্ণমার্গী ধবাক সংগ-সংগ কোশী-কমলা-বলান অংচলক ব্রাত্য-কিবাত সংস্কৃতি সঁ প্রাপ্ত শিব আ দূর্গা আবাধনা পবম্পবাক মিশ্রিত প্রভাব অছি।

এতয কাল-বিভাজনক আধব ভাবতীয ভাষা সাহিত্য, বিশেষতয়া হিন্দী কেঁ মানি ও বাত কহল জা বহল অছি। তিবহুতা বা মৈথিলী মে এহি ভক্তি আন্দোলনক কোনো বিশেষ প্রভাব দৃষ্টিগোচব নহি হোগত অছি। মৈথিলীক তথাকথিত গতিহাসকাব লোকনি প্রাকৃত কেঁ অপন পূর্বজ

ভাষা কহি যত্রা-তত্রা ওহি সँ নাভ লেবाক অবসবরাদিতা ত দেখবैं ছথি কিন্তু প্রাপ্লত মে লিখল সিদ্ধ লোকনিক ভক্তি সাহিত্য কেঁ অপন কহবাঁ মে হুনকা সভ কেঁ অসোকর্য হোঃ ছনি কিএক ত ও নিম্ন জাতিক লোক দ্বাবা লিখল গেল অছি আ পুরোহিতরাদক রিরুদ্ধ জাগত অছি। একটা রিদ্যাপতি জিনকব চর্চা রিভিন্ন ভাবতীয ভাষা সাহিত্য মে হোগত অছি, হুনকবো বচনা মে ভক্তি আন্দানন সন কোনো তত্ত্ব নহি অছি। ও মূলতঃ দববাঁবী করি ছনা আ হুনক বচনাসভ জনস্থাপেক্ষী নহি শাসক স্থাপেক্ষী অছি আ ওহি মে অপন পাননকর্তাকি মনোবংজনার্থ শ্রৃংগাব-বাগ ভবন অছি। নক্ষ্মীনাথ গোসাঁঃ এহি মামনা মে রৈছপ এহি রূপ মে ছথি জে ভক্তিকানক সমাপন আ বীতিকানক যৌরনকান মে ও এনা আ অপন বচনা সভ কেঁ নোক হিতার্থ, নোক মনোবংজনার্থ লিখননি, সংগীত সँ বাঁন্হননি আ ওকবা গারি-গারি আমজন ধবি পহুঁচনাহ। এতয ঃ কহবাঁ মে কনিকো সংদেহ নহি অছি জে গোসাঁঃ জী পব তিবহুতা ভাষাক বচনাসভক প্রভার নগণ্য আ হিন্দীক সাহিত্য সংসাবক প্রভার তীব্র আ প্রচূব মাত্রা মে পড়ল অছি। গোসাঁঃ জীক শিক্ষা সংস্কৃতক মাধ্যম সँ ভেল ছল আ ও অপন সংস্কৃত জ্ঞানক উপযোগ শংকবাচার্যক বচনাক অনুরাদ লেল সেহো কেননি। ভাষা তত্ত্ব রোঁধ নাম সँ শংকবাচার্য রিবচিত তত্ত্ব রোঁধক ভাষানুরাদ আ শংকবাচার্যেক রিরেক বনোরলীক ভাষানুরাদ অদ্বৈতরাদ আ রেদান্তদর্শনক প্রতি গোসাঁঃজীক আস্থা কেঁ প্রগট কবৈত অছি। ঃ আস্থা ভার গোসাঁঃজীক অপন বচনা সভ মে রহুত স্থখব নহি ভএ সকন অছি ত একব পাছাঁ ও সমাজ অছি জেকব ও এক অকাঃ ছনা আ সাধু কর্ম অপনএনাক রাঁদো জেকব রহুন সँ ও স্বয়ং

कँ ग्मञ नहि कए सकना। 'गंगा को नहाये कहो को नव तबिगे, मछ्ली न तबी जाको पानी में घब है' – एक निर्गुणपंथी संतक ई बाँत गोसांई जी पब नीक जकाँ नागू होगत अछि। तिबह्ता आकि मैथिनीक गंगा मे के के महासभाग नहि तबि गेन, किन्तु माछ जकाँ गोसांईए जी तबे सँ बंचित बहि गेना। आब गोसांई जी कँ मैथिनीक बचनाकाब मानि हुनका पब पबिसंबाद आदिक आयोजन भए बहन अछि से स्वागत योग्य किन्तु एहि मे जे आपबाधिक बिनम्ब भेन अछि तेकब दोषी कँ चिन्हित कबब सेहो अपेक्षित अछि।

२

गोसांईजीक बचना भाषा आ मैथिनी

हिन्दी साहित्यक इतिहास नेखन एहि मामना मे ईमानदाब कहन जाए सकैत अछि जे ओ स्वीकाब कबैत अछि जे प्राकृतक अंतिम अपभ्रंश अबस्था सँ हिन्दी साहित्यक आबिर्भाब मानन जा सकैत अछि। मैथिनी कँ एहन स्पष्ट धबणा निर्धाबित कबबाक सौभाग्य अखनि धबि प्राप्त नहि भेन अछि। मिथिना आ मैथिनीक अखनि धबि निखन इतिहास पोथी सभ हूसि, भ्रम आ बिबोधभासक प्बनिन्दा ;गठबीबक्ष्ठ बनि कए बहि गेन अछि। हमबा सभ कँ बंगान बतबैत अछि जे बिद्यापति हमब छना आ तखनि हम सभ धड़ाफड़ ा कए अपन भंगिआएन निन्न तोड़ ैत बिद्यापति कँ भबि–भबि पांज पकड़ ै छी। ई त भेन क्षेपक, एतेक धबि जे हमब सभक भाषाक की नाम अछि सेहो हमबा सभकँ अंग्रेजीक तथाकथित बिद्वान/भाषाबिज्ञानी कोनब्रुक आ जार्ज

ग्रियर्सन सन लोक रॅतरॅत अछि। किछु पाश्चात्य विद्वान एहि भाषाक लेल तिरहुतिया शब्दक प्रयोग केलनि। 1771 ई0 मे बेलिगत्तीक लिखल पोथी मे एकर एहि रूपेँ उल्लेख भेटैत अछि। ठाम-ठाम तक एहि भाषाक लेल तिरहुतिया आ एकर लिपिक लेल तिरहुता शब्दक उपयोग होइत रहल अछि आ अखनिओ जनसाधरणक बीच ई शब्द लोकप्रिय अछि। ठाम-ठाम एकरा लेल विदेह भाषाक प्रयोग सेहो भेल अछि। एहि भाषाक लेल मैथिली शब्दक प्रयोग 1801 ई0 मे कोलब्रूकक केलनि। एहि भाषाक प्रथम उपयोग वा उल्लेख वर्णरत्नाकर आ विद्यापतिक कीर्तिलताक प्रारंभिक पद मे भेटैत अछि जेकरा विद्यापति देसिल बयना एवं अवहट्ठ कहने छथि। ई देसिल बयना वा अवहट्ठ मैथिलीक ओ रूप नहि अछि जेकर प्रयोग हमसभ आइ वर्तमान मे कए रहल छी। सुभद्र झाक अनुसार अवहट्ठ कहला सँ ताहि जमाना मे भद्रलोकक भाषा बुझल जएबाक चाही। ई भद्रलोकक भाषा आ आम लोकक भाषा दू तरहक छल की ? सुभद्र झाक कहब छनि जे मैथिली अपन निजी क्षेत्रा मे झंडा आ संथाली एहि दू अनार्य भाषा सँ मिलैत अछि। दोसर शब्द मे एकरा झंडा आ संथाली सँ बॅहरायल आ विकसित भेल किऐक नहि मानल जाए ? भाषाविद पंडित गोविन्द झा एकर विकासक क्रम अवहट्ठ सँ प्राचीन मैथिली, मध्य मैथिली, नवीन मैथिली आ समसामयिक मैथिली क संज्ञा दैत रॅतरॅ छथि। आधुनिक काल तक आबिओ कए मैथिलीक कोनो सर्वमान्य वर्तनीक निर्धारण नहि भए सकल अछि। एहि भाषा पर सभसँ बॅड़का एहसान जार्ज गियर्सन केने छथि आ हुनके सँ मैथिली शब्द केँ व्यापकता

ভেলৈন। 1910 ई0 মে জখনি মিথিলেশ মহারাজ কামেশ্বর সিংহক অধ্যক্ষতা মে মৈথিল ব্রাহ্মণ আ কর্ণ কায়স্থক জাতীয় সংস্থা 'মৈথিল মহাসভা' কে স্থাপনা ভেল ত এহি ভাষাক লেল মৈথিলী শব্দক আগ্রহ বঢ়ল। একর আর জে কোনো অন্য পরিণাম ভেল হুअয় কিন্তু একর বাদে সঁ মিথিলা, মৈথিল আ মৈথিলী শব্দ ভ্রম সঁ আপ্লাবিত ভএ ব্যাপকতা সঁ দূর হটি গেল আ 'তিরহুতা' সঁ 'মৈথিলী' হোগতে ঈ ভাষা সর্বহারাক হাতা সঁ আবিজ ভএ মৈথিল মহাসভাক খতিআন মে দাখিল ভএ মাত্রা দু জাতিক জমীন্দারীক বস্তু ভএ গেল। একর পরিপেক্ষ্য মে জখনি লক্ষ্মীনাথ গোসাঁইক রচনা ভাষাক অবলোকন করৈ ছী ত অত্যন্ত অসন্তোষজনক আ দুখদ তথ্য সভ সোঝাঁ আবৈত অছি আ ঈ সমস্যা আ বুঝি মে নহি আবৈত অছি জে ও মৈথিলী মে স্বীকার্য কিঐ নহি ছথি। সিদ্ধ সাহিত্যক কিছু উদাহরণ দ্রষ্টব্য অছি। সবহপা কহৈ ছথি – 'পণ্ডিঅ সঅল সত্ত বক্খাণঅ। দেহহি বুদ্ধ বসংত ন জাণঅ। অমণাগমণ ণ তেন বিখণ্ডিঅ। তোবি ণিলজ্জ ভণঈ হউঁ পণ্ডিঅ।।' বিরূপা কহৈ ছথি – 'সহজে থির করি বারুণী সাধ। অজরামর হোগ দিঢ় কাঁধ। দশমি দুআরত চিহ্ন দেখইয়া। আইল গরাহক অপণে বহিআ। চউশঠি ঘড়িএ দেঢ় পসারা। পইঠল গরাহক নাহি নিসারা।' তহিনা কণ্হপাক ঈ পাঁতি – 'এক্ক পা কিজ্জই মংত্রা ণ তংত। ণিঅ ধরণী লই কেলি করংত। ণিঅ ঘর ঘরণী জাব ণ মজ্জই। তাব কি পংচবর্ণ বিহবিজ্জই।' কুক্কুরিপা – 'সসুরী নিংদ গেল, বহুড়ী জাগঅ। কানেট চোর নিলকা গই মাগঅ। দিবসই বহুড়ী কাড়ই ডরে ভাঅ। রতি ভইলে কামরু

जाथ।' न्वहिपा कहै छथि – 'भार न होग, खभार ण जोगं। खगस संरोंमे को पतिखाग ?' रौहम्न सिद्ध सभक एहि उदाहरण सभक भाषाक तुलना रिद्यापतिक कीर्तिलताक पांति 'रांनचंद रिज्जारग भासा, दुहुं न नग्गग दुज्जन हासा। सो परमेसर सेहर सोहग, ग णिचउ णाथर मन मोहग।।' सँ कवी त दुनू मे कोनो रहत अन्तर नहि अछि। तखनि प्रश्न ग खरश्य उठराक चाही जे हम सभ स्तुवचयनक कोन दोहरापन राखने छी जे रिद्यापति मैथिली लेखक मानल जाग छथि आ सिद्ध सभ एहि सौभाग्य सँ रांचल जाग छथि। सिद्ध सभक एहि रचना सभक भाषा देशभाषामिश्रित अपभ्रंश अछि। ओ सभ भरिसक ओहि सर्वमान्य व्यापक काव्यभाषा मे लिखलनि जे ओहि काल गुजरात, राजपूताना आ ब्रजमंडल सँ लए कए रिहार तक लिखै – पठ ैक शिष्ठ भाषा छल। ओहि सभ मे स्थान रिशेषक भेदक कारण किछु स्थानीय प्रयोग आ शब्द सभ आरि गेल अछि। एहि सिद्ध लोकनिक साहित्य जेकरा चर्या पद कहल जागत अछि तेकरा मैथिली मे सम्मिलित कररांक डा0 जयकान्त मिश्र रिरोधी छला, जखनि कि डा0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एकरा सम्मिलित कररांक पक्ष मे छला। तार्किकता सँ एकदम अलग भए कए एहने आग्रह-दुराग्रह मैथिलीक भाग्य तै करैत रहल अछि। मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित करिता संग्रह ;प्रथम संस्करण 1977इ मे सरहपा ;690 ई0 कें सम्मिलित कररांक साहस देखाएल गेल अछि आ एकरा आगाँ रंठ रैत चौरासियो सिद्ध कें मैथिलीक रचनाकार मानल जेरांक चाही। एतरें किए, कतिपय जैन आचार्य आ नाथपंथी सभक अनेक रचनाक एहने

ভাষা অছি আ হুনকো সভক স্বাগত এহি লৈন মে হেবাঁক চাহী। হঁ, জাতিগত রূঢ়ি সঁ গ্রসিত এহি সমাজ কেঁ ও বাঁত অখবি সকৈত অছি জে অধিকাশি সিদ্ধ নোকনি নিচনকা জাতি অর্থাত সোল্হন বস্তু সঁ আবৈত ছথি। কিন্তু মৈথিনী কেঁ প্ববোহিতী সংস্কাব আ মৈথিন মহাসভাক সমাজতোড়ক ব্যবস্থা সঁ বাঁহব নিকানি বিস্তৃত আ বিবাট আকাস দেবাঁক সময নহি আবি গেন অছি কী ? অমীব খুসবোক একটা প্রসিদ্ধ গজনক কিছু পাঁতি দ্রষ্টব্য অছি –

'জে হান মিসকী মকুন তগাপহুন দুবায নৈনা, বঁনায বঁতিযাঁ।

কি তাবেঁ হিজ্রাঁ ন দাবম, এ জাঁ! ন নেহু কাহে নগায ছতিযাঁ।।

শবাঁনে হিজ্রাঁ দবাজ চূঁ জুল্পহ ব বোজে বসনত চূঁ উম্র কোতহ।

সখী! পিযা কো জো মৈং ন দেখূঁ তো কৈসে কাটূঁ অঁধেবী বতিযাঁ।।

এহি গজন মে ফাবসী আ ঠেঠ খড়ী বোনীক সমিশ্রণক ঠাঠ অছি আ একব বাঁদো খুসবো হিন্দীক নেন তহিনা স্বীকার্য ছথি জেনা বিদ্যাপতি। এহি সভ উদাহবণক পবিপ্রেক্ষ্য মে জখনি নক্ষ্মীনাথ গোসাঁও ক বচনা ভাষা পব দৃষ্টি জাগত অছি, তখনি মৈথিনীক প্ববোধ–মহংথ সভক অসমংজস বুঁধিমে ঘুসিআবঁয সঁ পবহেজ কবএ নগৈত অছি। তখনি ত আওব জখনি মৈথিনী আ হিন্দী দুনূ কেঁ সজাতীয মানৈ মে কোনো ভাষাবিদ্, কোনো

पंडित कें कोनो उंजूर नहि छनि। पंडित छेदी झा 'द्विजवर' गोसांउं जीक रचना भाषा कें विशुद्ध ब्रजभाषा कहै छथि अर्थात मैथिली मिश्रित ब्रजभाषा। किन्तु ओ बात बहुत गंभीरता सँ कहल गेल नहि बुझाएत अछि। ओ सत्य अछि जे भारतीय साहित्य मे एकटा दीर्घ अवधि तक काव्य–लेखन लेल ब्रजभाषा मात्रा कें उत्तम मानल जाएत रहल। किन्तु गोसांउं जीक रचना भाषा कें कोनो स्थापित श्रेणी वा व्याकरण मे बान्हब कठिन अछि। एकरा बबंजिया वा सधुक्कड़ ी भाषा कहब बेसी उपयुक्त बुझाएत अछि। घुमक्कड़ ीक चक्कर मे बाबाजी सभ विभिन्न पंथक, विभिन्न क्षेत्राक, विभिन्न संस्कारक साधु समाज आ जन समाजक संपर्क मे आबैत अछि आ ओकर भाषा एहि सभक मिश्रणक प्रभाव सँ एकदम विलक्षण भए जाएत अछि। एहि विलक्षण आ अपरिभाषेय तत्वक असरि गोसांउं जीक भाषे टा पर नहि हुनक रचना संसारक अंतर्वस्तु मे सेहो देखाएत अछि। स्वभद्र झा Journal of the Bihar University मे प्रकाशित अपन एकटा आलेख मे कबीर कें मैथिल सिद्ध करबाक प्रयास कएने छथि। कबीरक तुलना मे गोसांउं जीक रचना–भाषा कें मैथिलीक बेसी करीब त दाबी सँ कहल जाए सकैत अछि। बंनगाँवक संत लक्ष्मीनाथ परमहंस राष्ट्रीय समिति द्वारा प्रकाशित 'भजनावली' कें गोसांउं जीक सर्वाधिक विश्वसनीय संग्रह एहि कारणें मानल जेबाक चाही जे ओ हुनक भक्त सभक निष्कलुष आ समर्पित प्रयासक फल अछि आ एहि पर मैथिली साहित्यक राजनीति, पूर्वाग्रह आ निहित स्वार्थी षड्यंत्राक कोनो प्रभाव दृष्टिगोचर नहि होएत अछि। एहि संग्रह मे मात्रा पांच–छह टा लचारी

এহন খছি জেকব ভাষা কেঁ রর্তমান প্রচনিত মানকক খনুসাব মৈথিনীক কহি সকৈ ছী। খন্য সাত–সরা সাত সয বচনাসভ মে ওএহ মিশ্রিত রঁরঁজিযা ভাষা খছি, জাহি মে সঁ কিছু মে মৈথিনীক কম–রেঁসী প্বঠ উঁপস্থিত খছি। এতয ঙা চর্চা কএ দের সমীচীন র্ঁ্যাগত খছি জে করীবদাসক হিন্দূ নোগ মে সন্দেহ ছনৈ, রৈদাস চমাব ছনা, নানক কেঁ ক্ষত্রী খা দাদূ কেঁ মোচী রা ধ্নিযা মানন গেনৈ খা হিনকা সভক বচনা ভাষা মে সেহো কোনো ভাষিক র রৈযাকবণীক সাম্য নহি ছনৈ তখনিও হিনকা নোকনিক বচনা কেঁ পজাবী সম্প্রদায গ্বরুগ্রংথ সাহিরঁ সন পূজ্য গ্রংথ মে শ্রদ্ধাপূর্রক সম্মিনিত কেনক। তেঁ নক্ষ্মীনাথ গোসাঙাক বচনা সভক মৈথিনীকবণ কবরাঁক খনৈতিক খা খাপবাধিক হুব কবরাঁক রঁদনা ওকবা খপন মৌনিকতা মে মৈথিনী সাহিত্যক সম্পত্তি মানন জএরাঁক চাহী। কহন গেন খছি– 'যত্রাপি কুত্রাপি ভরতি হংসাঃ, হংসা মহীমংডনমন্ডনানি। হানিস্তু তেষাং হি সবোরবাণাং যেষাং মবানৈঃ সহ রিপ্রযোগঃ।।' খর্থাত হংস জতএ কতও বহএ, ওতহি পৃথ্বীক ভূষণ ভএ কএ বহত, হানি ত ওহি সবোরব সভক হেতৈ জেকব ওকবা সঁ রিযোগ ভএ জেতৈ। গোসাঙা জীক বচনা মে নির্গুণ ভাব

দেশী মে সগুণ খা নির্গুণ নামক ভক্তিকাব্যক দূ ধবা রিক্রম পন্দ্রহম শতাব্দীক খংতিম ভাগ সঁ নএ কএ সতবহম শতাব্দীক খংত তক সমানান্তব চনৈত বহন। ঙা কানারধি ভক্তিকান কেঁ গংগিত কবৈত খছি কিন্তু একব রাঁদো ভক্তি কাব্য বচন জাগত বহন, বচন জাগত বহন খছি। এহি মে নির্গুণধবাক তপেবতা খা ব্যরস্থিত

রূপ মে প্রবর্তন কেলনি কবীরদাস জিনকা লেল নাথপংথী জোগীসভ আ বজ্রযানী সিদ্ধ সভ অর্থশূন্য বাহ্বী বিধি বিধান, তীর্থাটন, পর্বস্নান আদিক নিস্সারতাক সংস্কার পসারবাক কাজ কএ রঁহ্ত কিছু মাত্র প্রশস্ত কএ চুকল ছলা। কবীরদাস স্বামী রামানন্দ জীক শিষ্য রঁনি ভারতীয অদ্বৈতবাদক কিছু স্থূল তত্ত্ব গ্রহণ কেলনি আ দোসর দিস নাথপংথী জোগী আ সূফী ফকীর সভক সংস্কার সেহো গ্রহণ কেলনি। বৈষ্ণব লোকনি সঁ ও অহিংসাবাদ আ প্রপত্তিবাদ লেলনি। তেঁ হুনকর তথা নির্গুণবাদী অন্য দোসর সংত সভক রচনা মে কতও শংকরাচার্যক অদ্বৈতবাদক ঝলক ভেটৈত অছি, কতও নাথপংথী সভক নাড়ীচক্রক, কতও সূফী সভক প্রেমতত্ত্বক, কতও পৈগম্বরী কট্টর খুদাবাদক আ কতও অহিংসাবাদক। এহি পরিপ্রেক্ষ্য মে জঁ দেখী ত লক্ষ্মীনাথ গোসাঁই কেঁ শুদ্ধ নির্গুণপংথী কহব ত কঠিন অছি কিন্তু ও কনে প্রকারান্তর সঁ কবীরপংথী কহল জাএ সকৈত ছথি। প্রকারান্তর এ জে গোসাঁই জীক সাহিত্য সাধনা আ ভক্তি ভাবনা পর হুনক অপন সমাজক পুরোহিতী সংস্কার সেহো ভারী বহল অছি আ সে হুনক রচনাসভ মে খূব দেখার অছি।

গোসাঁইজীক একটা ভজন 'কৌন কহে প্রভু কৈসা হবতি, কদহী কোউ ন দেখা হৈ' সঁ শুরূ হোগত অছি আ ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশ, আদি ত্রিদেবক চর্চা করৈত 'কর্তা, কর্ম সবনি সে ন্যারা, সাক্ষী হোকে দেখতা হৈ। 'লক্ষ্মীনাথ' অনাথ কে স্বামী, পরম রূপ মন ভাতা হৈ।' পর সমাপ্ত হোগত অছি। নির্গুণ ভাবক সর্বাধিক স্পষ্ট অভিব্যক্তি এহি ভজন মে ভেটৈত অছি। গোসাঁই জী এহি ভজন মে সগুণ

সাকাব কেঁ নকাবৈত নির্গুণ–নিবাকাবক পৈবোকাবী কবৈত দেখাগ ছথি। হ্নকা সৰূপ নহি ব্ৰহ্মক পৰন ৰূপ ভাৱঁএ ছনি। পৰন ৰূপ অর্থাত জেকবা অনুভব কএন জাএ সকৈত অছি কিন্তু জে দৃষ্টিক পবিধিসঁ বাঁহব অছি। সগুণোপাসনাক মজাক উড়ৱৈত গোসাঁও জী এহি ভজন মে সগুণোপাসক কেঁ আন্হবক সংজ্ঞা দৈ ছথি – 'অন্ধে কে পুব হাথী জৈসে অকিন সৰূপ ৱঁতাতা হৈ'। এহি ভজন মে শংকবাচার্যক পাঁতি উপানস্থতে হি মাযাহস্তী হস্তীর, হস্তিনমিরমাত্র সমাচবন্তি ৱঁন্ধনাবোহণাদি হস্তি সবঁধিভির্ধর্মৈ:, হস্তীতি চোচ্যতে অসন্নপি যথা ....' ক প্রভাব স্পষ্ট দেখাগত অছি। এহিনা 'হৈ তো স্বামী সবঁকে ভীতব নেকিন নখা ন হোতা হৈ। জৈসে বংগ বহে মেহদী মেং রৈসে মানূম হোতা হৈ'' সঁ প্রাবংভ ভেন একটা ভজন 'জৈসে বুঁদ–বুঁদ জন সে হোতা, জনধী মাহ সমাতা হৈ। 'নক্ষ্মীপতি' ঝূঠী যহ মাযা, ব্রহ্ম সৎ মন ভাতা হৈ।' পব সমাপ্ত হোগত অছি। এহি মে গোসাঁও কহৈ ছথি জে জেনা মেহদী মে বংগ নুকাএন বহৈত অছি তহিনা অদৃশ্য স্বামী অর্থাত ব্রহ্ম সভক ভীতব অছি। এহি ভজন মে 'ব্রহ্ম সৎ জগন্মিথ্যা' ক ভাবনা আএন অছি। একব রীচক পদ মে গোসাঁও সংসাবক তুননা মকড়াক জান সঁ কবৈ ছথি জেকব ভীতব খোজনা পব কোনো সূত নহি ভেটৈত অছি। ফেব ও কহৈ ছথি জে জগত গন্দ্রজান অছি আ মানবৰূপী পুতনী কেঁ ওকব ভীতব রৈসন কোনো দোসব অর্থাত ব্রহ্ম নাচ নচবৈত অছি। অংতিম পদ মে ও জন সঁ ৱঁনন বুঁনবুঁনাক পুনঃ জনহিক ভীতব সমাএ জেবাঁক গপ কহৈত ব্রহ্মহিটা কেঁ সৎ মানৈত ওকবে ভাবৈক গপ কহৈ ছথি। নক্ষ্মীনাথ গোসাঁও পব রিভিন্ন সংত করিক সংগ–

সংগ শঁকবাচার্যক প্রভার সেহো যথেষ্ঠ মাত্রা মে ছনি। একব একটা প্রমাণ ওহো অছি জে ও শঁকবাচার্যক তত্ত্ব বোঁধ্ আ রিরেক বনোরনীক ভাষান্তরাদ সেহো কএননি। ওা প্রভার কতও–কতও হ্নক অপন বচনা মে তেনা কএ আএন অছি জে ও প্রাযঃ অন্তরাদহি জকাঁ নাগৈত অছি। আচার্য শঁকবক মান্ডূক্যকাবিকাভাষ্যম্ ক একটা শ্লোক অছি –'যথা চ প্রসাবিত পণ্যাপণ গৃহপ্রসাদ শ্রীপুংজনপদর্‍্যরহাবাকীর্ণমির গন্ধর্রনগবং দৃশ্যে মানমের সত্ অকস্মাদভারতাং গতং দৃষ্ঠম্, যথা চ স্বপ্নমাযে দৃষ্ঠ অসদ্বপে, তথা রিশ্বমিদং দ্বৈতমসদ্ দৃষ্ঠম্।' গোসাঁওা জীক একটা ভজন মে এহি ভারনা কেঁ 'খামিন্দ খাসে শহব রঁসাযে' সঁ শুৰু কএ 'নগব, রাঁজাব, দ্কান রিচাবে, সৌদা নানা হাঁট নগাযেঃ তীন চৈদরী, চাব মহাজন, দশ রঁনিযাঁ র্‍্যাপাব চনাযে' আদিক রূপ মেঁ র্‍্যক্ত কএন গেন অছি। গোসাঁওা জী একটা ভজনমে 'নির্গুণ মহিমা স্বনো বে কোওা' ক মাধ্যম সঁ নির্গুণক মহিমা রঁতরৈঁত কহৈ ছথি জে নির্গুণহি অপন নানারূপ ধবি সগুণ রঁনি আরৈঁত অছি। অনেক রিধ সঁ রিরিধ হোগত ওা স্বযঁহি মে সমাহিত ভএ জাগত অছি। ব্রঁহ্ম ভুগযাঁ, হরা, আগি, পানি আ আকাশ মে পবিণত অছি, রএহ চিত্ত আ রুঁদ্ধি অছি আ রএহ রিষয–রিহাব সেহো কবৈত অদি। রএহ জীর, রএহ দেরতা অছি আ ভোগনিহাবো রএহ অছি। রএহ রঁন্ধনো অছি, রএহ মোক্ষো অছি আ অনহদ নাদ সেহো রএহ অছি আ জে কোয ব্রঁহ্মক নির্গুণ তত্ত্ব কেঁ জানি জাগত অছি রএহ সভ চীজক বসাস্বাদন কএ সকৈত অছি।

নির্গুণক এহন স্পষ্ঠ অভির্‍্যক্তিরঁনা গোসাঁওা জীক ভজন

মাত্রাক দৃষ্টিকোণ সঁ কমে অছি। কিন্তু ভজন মে ত ভারক তীব্র বিরোধভাস সেহো অছি। ও মানন জাগত অছি জে বজ্রযানক অনুযাযীসভ অধিকত নিম্নজাতিক ছলা আ তেঁ জাতি-পাতিক ব্যরস্থাসঁ হুনক সভক অসংতোষ স্বাভারিক ছল। নাথ সম্প্রদায মে সেহো শাস্ত্রাক্ত রিদ্বান সভ নহি ছলাহ। তেঁ এহি দুনূক রঁনাএল নীক পব অগ্রসব ভেল নির্গুণ পংথ দিস জাগরঁনা জে পহিল প্ররৃতি নক্ষিত ভেল সে ঊঁচ-নীচ আ জাতি-পাতিক ভারক ত্যাগ আ ওশ্বিবক ভক্তি লেল মনুষ্যমাত্রাক সমান অধিকাবক স্বীকাব ছল। কিন্তু গোসাঁও জী অনেক জগহ এহি ব্যরস্থাক পোষক রা পৈরোকাবক রূপ মে দেখাও পড়ৈ ছথি। 'সদা এক বামনাম সত সাব... ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রী, রৈশ্য, শূদ্র কে কর্ম কিন্হ পবচাব', 'ব্রহ্মা রেদ চাবি কে মানিক জাতি, রবন রিনগাযা হৈ' আদি পংক্তি এহি দিশ সংকেত কবৈত অছি। তেঁ ও কহৈ মে কোনো সংকোচ নহি জে গোসাঁও জীক বচনা মে জতয জতয নির্গুণ ভার অছি সে সপ্রযাস রা হুনক আস্থাক প্রতিপহল নহি, কবীব আ হুনক নির্গুণপংথক দেখাউঁস মে আএল অছি। একব একটা মহত্বপূর্ণ কাবণ অছি গোসাঁও জীক সমাজ, হুনক জাতি আ ও জাহি ভূভাগক নিরাসী ছলা তেকব সংস্কাব। কোশীক ও ভূভাগ অনেক মামলা মে কমলা রঁনানক ভূভাগক বাজনীতিক-সামাজিক-আর্থিক-সাংস্কৃতিক পবম্পবা সঁ একদম অলগ বহল অছি। ওতিহাসক একটা রিবাট কালারধিমে ও ভূভাগ রঁড়কা-রঁড়কা সাম্রাজ্যক অধীনতা সঁ মুক্ত অপন স্বতংত্রাতাক আনন্দ লৈত বহল অছি। মিথিলাক নকশা রঁনরৈত কাল প্রবাতন আ আধুনিক দুনূ আধব পব মনমানা সীমা বেখা খীচল জেরাঁক হাস্যাস্পদ প্রযাস

निवन्तव भ‍ए बहल ‍अछि किन्तु कोशी अंचलक एहि स्वपौनक वाजधानी कहियो जनकपुव, दवभंगा वा पाटलिपुत्र नहि बहल। एतहुका शासन कर्णाटवंशी गन्धरविया, गठ़वंलौली स्टेटक द्राणवाब आ स्थानीय निचलका जातिक रिभिन्न मानिजन शासकक हाथ मे समय–समय पव बहल अछि आ तखनो एकव वाष्ट्रीय चेतना रिकसित बहल अछि। गोसांओ जीक वचना भाषा एकवे प्रतिपहल अछि। किन्तु धर्मिक आधव पव ओ भूभाग कर्मकाण्डी पुरोहित समाजक प्रभार मे बहल अछि। ओ पुरोहित रसा प्रायः रैदिक संस्कृति सँ च्युत ब्राह्मण आ रिदेह छला जे एहि क्षेत्राक पुवान रॉसिन्दा किवात, कोल–भील–मछुआवा आदि आ रिभिन्न रनरासी जाति समाजक संगतिक प्रभार मे आरि मूर्ति पूजाक पालक, भूत–प्रेत–डागन–जोगिनक अस्तित्व माननिहाव, टोना–टोटका, झाड़–फूक मे रिश्वास वाखनिहाव आ माछ माउँसक भक्षक भ‍ए गेला। निर्गुणधवाक करि स्वंदवदास भिन्न–भिन्न प्रदेशक आचाव पव अत्यन्त रिनोदपूर्ण उँक्तिसभ कहले छथि। कोशी–कमला–रंलानक क्षेत्रा पव हुनक उँक्ति छनि 'ब्राह्मण क्षत्रिय रैसक्ष सूदव चावोग रर्ण के मछ रंधवत'। एहि पुरोहित रसा द्वावा एहि भूभागक रंहुजन समाजक संस्काव ग्रहण कए नेरं रंहुमतक प्रभार सँ त भेरेँ कएल, अपन भवण–पोषणहुक लेल एला कववं हुनका सभ केँ नाभकावी रूनौललि। मिथिला–मैथिलीक रिद्वान ‌ओतिहासकाव लोकनि एहि समाजक सलातनी हेरोंक रॉत केँ रेंव–रेंव घोसलनि अछि किन्तु ओ सत्य नहि अछि आ जँ सत्य अछि त एकव रंहुलांशि केँ जानि रूझि कए झांपल गेल अछि। सलातनी समाज अपन सर्रांग मे उँदावचेता होगत अछि जे ओ

নহি অছি। এতয কর্মকাংডক কট্টবতা অছি, মূর্তি–পূজা, ভূত–প্রেত–ডাগন–জোগিনক উঁপচাব হেতু টোনা–টোটকা–ঝাড়–ফূঁকক অংধবিশ্বাস অছি, শ্রাদ্ধক নাম পব প্রেত–মুক্তিক ভ্রমজাল অছি, রর্ণাশ্রম–র্যরস্থাক পতিত রূপ জাতি র্যরস্থাক অতঃ মে শ্রেষ্ঠতা রোঁধক পাখণ্ড অছি। এহি সন্তক রাহক জে প্ররোহিত রর্গ অছি তেকবে একটা অংশ লক্ষ্মীনাথ গোসাঁগ্র ছলা আ তেঁ হুনক জে জাতিগত আ জন্মজাত সংস্কাব ছল সে হুনক জ্ঞান, বুদ্ধি, রিরেক আ তাহি সঁ প্রসূত হুনক সাহিত্য পব তাত্বিক রূপ সঁ হারী বহল। গ্র মানল তথ্য অছি জে সগুণোপাসক ভক্ত ভগরানক সগুণ আ নির্গুণ দুনূ রূপ কেঁ মানৈত অছি কিন্তু ভক্তি আ উঁপাসনাক লেল সগুণহি রূপ কেঁ স্বীকাব কবৈত অছি আ নির্গুণ রূপ জ্ঞানমার্গী সন্তক লেল ছোড়ি দৈত অছি। খাস তৌব সঁ উঁপাসনাক ক্ষেত্রা মে ব্রহ্ম নির্গুণ নহি রঁলল বহি সকৈছ। তেঁ সন্ত সগুণমার্গী ভক্ত ভগরানক র্যক্ত রূপক সংগ–সংগ হুনক অর্যক্ত আ নিরিশেষ রূপক সেহো নির্দেশ কবৈত আএল ছথি জে রোঁধগম্য নহি অছি। ও অর্যক্ত দিস সংকেত মাত্রা কবৈ ছথি, ওকব রিরবণ মে প্ররৃত নহি হোগ ছথি। ওহুনা নির্গুণপংথক প্রভার শিষ্ট আ শিক্ষিত রর্গক লোক পব নহি পড়ল, কিএক ত ওকবা সন্তক লেল লে ত এহি পংথ মে কোনো নর রাঁত ছল আ লে নর আকর্ষণ। কিন্তু অশিক্ষিত আ নিম্ন শ্রেণীক লোক পব নির্গুণপংথক একটা রঁড়কা উঁপকাব অছি। এহি পংথক সংতলোকনি অপন বচনা মে কিছু উঁচ রিষযক অর্নুভর সন আভাস দএ, আচবণক শুদ্ধতা পব জোব দএ, পাখণ্ড, আডম্বব আ কর্মকাণ্ডক তিবস্কাব কএ এহি অশিক্ষিত নিম্নরর্গ মে আমেগৌবরক ভার উঁপেন্ন কএললি আ একবা

सन्त कें ऊपर उठएबाक स्तुत्य प्रयास कएलनि। लक्ष्मीनाथ गोसांइक संकेत ई छलनि जे ओ जाहि परोहित वर्गक जन्मजात अंश छला तेकरा ई चीज नहि रुचैत छल आ ने रुचैत अछि। एहि दुनू पंथ पर चर्चा करैत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहै छथि जे सगुण धारक भक्त सन्तक महिमा हुनक असीम धैर्य आ अध्यवसाय मे अछि किन्तु निर्गुण श्रेणीक भक्त सन्तक महिमा हुनक उत्कट साहस मे अछि। एकरा ध्यान मे राखैत ई बात निस्संकोच कहल जा सकैत अछि जे यथास्थितिवादक खिलाफत मे करीब दुस्साहसक जाहि सीमा धरि गेला से हुनक वादक निर्गुणपंथक अनेक भक्त मे दुर्लभ अछि। निर्गुण धारक कतिपय भजनक रचनाक बादो तहिना लक्ष्मीनाथ गोसांइ सेहो एकरा अपन मुख्य स्वर बनैबाक साहस नहि देखाए सकला। गोसांइ जीक संपूर्ण रचना-साहित्यक अवलोकन सँ जे बात अभरिकए सोझाँ आबैत अछि से ई जे हुनका पर भक्तिक विभिन्न मार्ग, विभिन्न पंथ आ विभिन्न धरासन्तक मिश्रित प्रभाव अछि। संख्याक दृष्टिकोण सँ राम आ कृष्णक भजन सन्त पर भारी अछि। प्रभावक प्रकार सँ हुनका कर्मकाण्डी-करीबपंथी कहि सकै छी किन्तु जँ हुनका शुद्ध कीर्तनियाँ आ भक्त मानल जाए तखनिए हुनक रचना संसारक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन भए सकैत अछि। हरिशंकर श्रीवास्तव शलभ कोशी अंचलक अन्वेषक साहित्यकार छथि आ ओ लक्ष्मीनाथ गोसांइ कें वाग्गेयकार भक्त कवि कहै छथि। वाग्गेयकार अर्थात् एहन कवि जे स्वयं पद के रचना करैत अछि आ ओकरा संगीत मे आबद्ध कए विभिन्न राग-रागिनी मे गाबैत अछि। जेना कोनो कीर्तनियाँ सँ मौलिकताक अपेक्षा करब ओकरा संग न्याय नहि

খছি, তহিনা গোসাঁওজীক বচনা-সংসাব সঁ সেহো ওা খপেক্ষা নহি কএন জএৰাঁক চাহী। হ্নক খনৌকিকতাক কল্পিত-প্রচনিত কথা, গোবখনাথ সঁ ভেন কান-রিবোধভাসী তথ্য, নৌ তবহক সিদ্ধিক প্রাপ্তি সন-সন গপ হ্নক ভঞ্জ সভ পব ছোড়ি় দেৰাঁক চাহী। হ্নক বচনা-সংসাবক বসাস্বাদন কববাঁক নেন এতবেঁ যথেষ্ট খছি জে হ্নকা ভঞ্জ খা হ্নক বচনা কেঁ শ্বস্থ ভজন-কীর্তন মানি নেন জাএ।

<u>একটা খিচা সপনাক ডিভিখাএবঁ (সন্দর্ভ: হীবেন্দ্র ক্ষমাব ঝাক কথা-সংগ্রহ " ট্রান্সফর্মব ")</u>

ওা মানন জাগত খছি জে সাহিত্য মে কোনো চীজ বেঁমতনবঁ নহি হোগত খছি, শব্দ ত শব্দ, খর্ধরিবাম, রিবাম রা রিস্ময়াধিবোঁধক চিহ্ন তক, খা তেঁ জখনি কোনো কথাকাব খপন সংগ্রহক প্রস্তুতিকবণ কববাঁ নেন কথা-এ্রম সঁ পহিনে কোনো ববিষ্ঠ নেখকক নিখন ভূমিকা সংগ-সংগ খপনহুঁ দিস সঁ কিছু বাঁত কহৈত খছি ত ওা মানন জএৰাঁক চাহী জে ওা সাভিপ্রায খছি খা ও এহি দ্নূক সংগ খপন কথা-জগত কেঁ বুঝবাঁক নেন পাঠক নোকনিক সহাযতা হেতু কুংজী প্রদান কএ বহন খছি, একটা ওজাব দএ বহন খছি জে একবে মাধ্যম সঁ হ্নকব বচনা-ভংডাবক তানা খোনন জায, ওকব কপাট খোনন জায। ওা পবম্পবা বেদ-কান সঁ খাবি বহন খছি, জেকব রাচিক পবম্পবা মে খংগ্বীক মাধ্যম সঁ উদাত্ত, খনুদাত্ত খা স্ববিতক সংকেত কএন জাগত বহৈ খা তেকবে খনুসাব বাঁজন গেন শব্দ রা রাক্যক খর্থ গ্রহণ কএন জাগত বহৈ। খাজুক নিখিত রা মুদ্রিত পবম্পবা মে ওা কাজ ভূমিকা খা নেখকীয রঞ্জব্যক

माध्यम सँ लोगत अछि। एहि प्रक्रिया मे किन्तु कएकटा खतरा अछि। कोनो रचनाकार लग ओकर जन्म सँ अद्यावधि तक के अनेक अनुभव संचित रहैत अछि जे ओकर चेतनाक अर्द्ध वा अव अवस्था मे रहल भऽ सकैत अछि। ई आवश्यक नहि जे रचनाकार सचेतन रूप मे स्वयं अपन रचना केँ आपादमस्तक बुझि लिअए। तखनि भूमिका लेखक वा प्रस्तुतकर्ता ओकर गत्र-गत्र केँ ओकरहु सँ नीक जकाँ बुझि लेता से मानब त आओर कठिन अछि। आ जँ हुनक (प्रस्तोताक) उदात्त, अनुदात्त वा स्वरितक संकेत मे कनिओ एम्हर-ओम्हर भेल कि अर्थक अनर्थ निकलए लागत, प्रस्तुत रचनाक अन्तर्वस्तुक माने ओझराबए लागत। आधुनिक युग तक आबैत-आबैत साहित्य विकासक विभिन्न सोपान सँ गुजरल अछि आ तेँ अजुका साहित्यक नाप-तौलक लेल आदिकालीन बटखरा उपयोगी हएत कि नहि से विचारणीय। कविता आ कथाक विधाक जे अंतर अछि से अलग, आ अजुका साहित्य वेद सेहो नहि अछि से त आओर अलग।

जीवेन्द्र कुमार झाक कथा-संग्रह "ट्रांसफर्मर" के प्रस्तुतिकरण लेल दू-दू टा अकादमी-पुरस्कृत साहित्यकारक टिप्पणी, भूमिका आ स्वयं कथाकारक अपन पक्ष राखबाक काज कएल गेल अछि। तेँ पारम्परिक मान्यतानुसार हिनक संग्रहक कथा सभ मे पैसबाक लेल ई तीनू वस्तु प्रमुख उपकरण भऽ जाइत अछि। एतय एकरहि आधार मानि एहि संग्रहक अन्तर्वस्तु दिशा किछु कहबाक प्रयास कएल जाए रहल अछि।

एहि संग्रह मे तेरह टा कथा संग्रहित अछि जाहि

মে পাঁচ কথা রিধ্যার্থী জীরন মে নিখন রঁাসী খা খাঠ কথা সাহিত্যকাব জীরনক নিখন ৎৎকা রঁতাএন গেন খছি। ৎৎকা কথা মে পহিন "পবিচিতি" নৈহব মে স্বধাক রিরাহপূর্ব খা রিরাহোপবাঁত রঁদনন স্থিতি দিখা খছি। কথাক নেন নে ঙা রিষয নর খছি খা নে একব প্রস্তুতিকবণ মে কোনো নরীনতা খছি। খপনা সভক জে সমাজ খছি তাহি মে ঙা একদম সামান্য গপ খছি খা প্রায: সভ সংরঁধিত পক্ষ একব খভ্যস্ত খছি। দোসব কথা "সোন ত কান নহি" সামাজিক–সাম্প্রদাযিক সৌহার্দ্য পব এক নীক কথাক সংভারনা তক সিমটি কএ বহি গেন খছি। কথারাচকক মমিঔত দ্বাবা হ্নকা ঘব নহি নএ জাএ কএ গামক পীপবক গাছ নগ ছোড়া ঝাড় া ফিবএ চনি জাএব ব্যরহাবিক শিষ্ঠাচাবক রিরুদ্ধ ত খছিএ, খতার্কিক খা খসহজ সেহো খছি। কথা কেঁ খাগূ রঁঠৈরাক নেন এহন রৈত্তক প্রযোগ কথাকাবক রিশ্বসনীযতা কম কবৈত খছি। কোনো কেন্দ্র নহি রঁননা সঁ ঙা কথা খপেক্ষিত প্রভার নহি ছোড়ৈত খছি। "খামো রা খবে দ্রষ্ঠব্য:" সোহ্নকন খা দ্বিজ পাত্রক ত্তননামেক কথা কহৈত খছি। খাদর্শরাদিতাক ছৌঁক সংগ সমতাক সংদেশ দেরাক কথাকাবক প্রযাস রঁনারষ্টপনাক চনতে কাবগব নহি ভএ সকন খছি। "ধনাত ধর্মম্" রনক্ষেত্রক জনরাস মে রঁদনর, কংগ্রীটক জংগন সঁ প্রহ্নতিক পনাযন খা ধর্মক নাম পব ক্ষুদ্র স্বার্থী তত্ত্বসভক কঠখেন সন মহত্ত্বপূর্ণ রিষয পব নিখন কথা খছি। কথাকাবক চেতনাক রিভিন্ন স্তব পব রঁহ্ত বাস স্মৃতিসভ ছনি খা সে এহি কথা মে প্রচূব মাত্রা মে খাএন খছি কিন্তু তাবতম্য খা মাত্রা–সংত্তননক খভার মে রঁনন মিশ্রণ পাঠকোচিত রাঁছিত স্বাদ সঁ রংচিত বহি গেন খছি। "উঁভযচব"

दीर्घ-कथा बॅना विस्तार लेले ग्रामीण आ शहरी मानसिकताक विरोधाभास आ द्वन्द्वक कथा अछि। एहि कथाक अनावश्यक विस्तार अपन औचित्य सिद्ध करबा मे विफल भेल अछि आ अंत मे नायक द्वारा अनिताक कन्हा पर हाथ राखि ठँठा पीबाक प्रस्ताव देबँ त एकदम फिल्मी भए जाइत अछि। "ट्रान्सफर्मर" राजनीतिक लम्पटपना आ प्रशासनिक लचरजपना पर एकटा उत्तम कथा बॅनैत-बॅनैत रहि गेल अछि। एहि कथा मे किन्तु पठनीयता छै आ एहि कथा तक आबैत-आबैत कथाकार अपन विस्तारणक फार्मूला पर नियंत्रण साधैत परिपक्व होइत देखाइ छथि। "कम्प्रामाइज" मे एकटा स्त्रीक भावना व्यक्त करबाक प्रयास भेल अछि जेकर निबाह लेल ओकर इच्छा-अनिच्छा नहि पूछल गेल अछि। ई कथा पुरुष लेखक द्वारा नारी-मनोविज्ञानक गलत आ असफल विश्लेषणक साक्ष्य अछि। कथाक असफलताक मूल कारण अछि नायिका पूनमक चरित्रक विकास मे कथाकारक अक्षमता। ओकर चरित्र एकदम लचरज सन लगैत अछि, संघर्षक लेशमात्र नहि अछि एहि पात्र मे। एहि कथा मे एकटा अपचनीय गप ई छै जे कालेज मे पूनमक एडमिट बॅजे घूरबाक बाँत ओकर भाग कँ कहल गेलनि, तखनि पूनम मार्निंग शो सिनेमा देखए केना गेलीह ? "भीआरएस" मे गज्जू बाबूक रहन-सहन, हुनक सम्पत्ति, नौकर-चाकरक विस्तारित विवरण औपन्यासिक संरचना जकाँ आ कथा लेल अनावश्यक बुझाइत अछि किन्तु ओकर युक्तिसंगतता बाँद मे बुझाइत अछि। मशीनीकरण सँ मानव आ ओकर श्रमक घटैत महत्व पर ई बॅढ़ित योजनाबद्ध, सुविचारित आ सोंटल कथा अछि।

रॉसी आ खिचा घोषित कएल गेल एहि संग्रहक अन्य पाँच टा कथा अपन कथ्य आ संरचनाक दृष्टि सँ कथा-तत्व आ विषय-वैविध्य सँ वेसी उत्तम-पूर्ण रचना अछि। "रोगही" नैतिकता-अनैतिकताक व्यामोह सँ व्यस्त एकटा अतिनिम्नवर्गीय परिवारक कथा अछि जे वहुत नापल-जोखल आ पठनीय अछि। "असमंजसक अंत" एकटा हास्य कथा अछि आ एहि मे हास्य छै। "डागदरीक एक पन्ना सँ" एकटा घटनाक विवरण अछि जे कथा नहि वनि सकल अछि किन्तु एहि मे जे भावनात्मक तत्व छै से पाठक कें छुवैत छै। एहि कथा मे ई वात नहि पचैत अछि जे घर मे रोगी छथिन आ ओ नायक कें वाथरूम लेल कहने छथिन, तखनि नायक कोठरी मे ताला लगाए कए होटल मे खाए लेल किऐ जाइत अछि। "भोट" चोराकए आनल गेल नीची आ लुटिकए आनल गेल जिलेवी खाइत वेदवा सभक खेलौनवक वीच वोटक गपक विवरण अछि जाहि मे ओ सभ वोटक खरीद-विक्री आ दलवदलक चर्चा करैत अछि। राजनीतिक चरित्रहीन दोगलपनी आ लोकक विरोधाभासी चेतनाक व्यापक संकेत रूप मे, किन्तु वहुत स्पष्टताक संग एहि कथा मे आएल अछि। एहि कथा पर ललितक "प्रतिनिधि" कथा के विषय आ शैलीक प्रभाव देखाइ दैत अछि। "भसान" एकटा मानव शरीर आ पूजाक निमित्त वनल प्रतिमाक माध्यम सँ अनश्वरताक कथा कहैत अछि।

आलोच्य संग्रहक कथाकार हीरेन्द्र कुमार झा घोषित करैत छथि जे ओ पाठक छथि, पाठके वनए चाहैत छथि आ लगैत जे ओ वस्तुत: जीवन कें पढ़ैत छथि। हुनक ई घोषणा महत्वपूर्ण अछि। मैथिलीक वेसी लेखक

কেঁ পঢৈ সঁ পবহেজ বহৈ ছনি। রেঁসী নেখক মৈথিনী মে চাবি পঙ্ক্তি নিখনাক বাঁদে স্বযং কেঁ রেদব্যাস মানৈ নাগৈ ছথি। এতয পাঠক নেন কম গুরু–আচার্য–মহংথ–পীঠাধীশ আদি–গদ্যাদি সঁ পবিচিতি, প্রমাণ–পত্র, সম্মান আ প্রবস্কাবক আকাংক্ষা–নিনসাক রশীভূত ভএ রেঁসী নেখন ভেন অছি। আ সে স্তবীয নেখন সঁ নহি সাহিত্য নেন রর্জিত আন–আন তবীকা সঁ ভেটৈ জাএবঁ মৈথিনীক দস্তাবেজ মে দর্জ অছি আ তেঁ মৈথিনী সাহিত্যক রহুনাংশি পোখবি–মাছ–মখান, ভাঁগ, সামা–পৌতী, অবিপন, তিনকৌব, অবিকংচন আদি মে ঘ্বিআগত বহৈত অছি। তেঁ হীবেন্দ্র জীক পাঠক হএবাঁক ঘোষণা স্বাগত যোগ্য। আনোচ্য সংগ্রহ একব নেখকক পাঠক হএবাঁক সংকেত দৈত অছি কিন্তু কনে দোসব তবহেঁ। ও পাঠক ছথি কিন্তু মৈথিনীক প্রায: কিছু খাস অংশিক। অন্তবর্ষ্ট্রীয রা অন্য ভাবতীয ভাষা সাহিত্যক গপ অনগ, মৈথিনিও মে হুনকা প্রায: শৈনেন্দ্র কুমাব ঝা, বমেশ, নাবাযণ জী, অববিন্দ অক্কূ, শৈনেন্দ্র আনন্দ, কুমাব পরন, শ্যাম দবিহবে, অজিত আজাদ, রিভা বানী আ আশীষ চমন সন–সন অনেকো নীক কিস্সাগো সভক কথা সাহিত্য নহি পঢন বুঝাগ ছনি। স্বভাষ চন্দ্র যাদর আ জগদীশ মংডনক কথা ত ....। জঁ পঢন ছনি ত হুনক ওা সংগ্রহ তেকব প্রমাণ নহি দৈত অছি। এহি নেন কিন্তু হীবেন্দ্র জী কেঁ অসগবে দোষী নহি ঠহবাএন জাএ সকৈত অছি। মৈথিনী মে নেখক ত নেখক, কথা সাহিত্য পব সমীক্ষা নিখনিহাব, সম্পাদক–সংগ্রহকর্তা মে অনেক এহেন নামরব রিদ্বান সভ ছথি জিনকব দৃষ্টি অপন ষ্টেন, গাম, আ নগপাসক কথাকাবক কথা সঁ বাঁহব নহি জাএ পাবৈত অছি। কিছু জ্ঞানী মহানুভার একবে প্রায: "মৈথিন আঁখি"

कहै छथि। एहि तथाकथित विद्वान आलोचक-प्रवर सभक आलोचना पोथी सभ मे घुमाए-फिराए कए ओतबेँ कथा आ कथाकारक चर्चा भेटैत अछि जेकरा संग हुनक उठ-बैठ छनि वा जे सभ हुनक लग्गा-भिड़आ छथि, अनचोक्के कोनो आन नाम चलि आएल त से अलग बात। मैथिलीक गएह चलनक प्रताप अछि जे ललित केँ हुनक मृत्युक बाद चिन्हल गेललि आ शैलेन्द्र कुमार झा (आरोह-अवरोह) सन महत्वपूर्ण कथाकार अपरिचित बनि कुध्यारा सँ कटि गेला। पुस्तक प्रकाशन आ वितरणक संग-संग पाठक तक पहुँचबाक समस्या सेहो मैथिली लेल कोंढ जकाँ भए गेल अछि किन्तु कोनो समीक्षक एकरा बहाना बनाए अपन अज्ञानक लेल एकरा अपन अढ बनाबथि, सेहो स्वीकार्य आ क्षम्य नहि अछि। "ट्रान्सफर्मर" के उदाहरण लिअ जे अखनि तक हमरा अप्राप्य छल आ कमल मोहन चुन्नू जीक माध्यम सँ समीक्षार्थ हमरा उपलब्ध कराएल गेल। हमर अपन व्यक्तिगत पुस्तकालय मे पोथीसभक प्रचूरताक अछैतहुँ जँ हमरा मैथिलीक समग्र कथा-साहित्य पर लिखबाक बहितए त की हमर कर्तव्य नहि बनैत छल जे हम अपन प्रयास सँ ओ आ अपना लग अनुपलब्ध आन-आन कथा-संग्रह एकठ्ठा करितहुँ आ तखनिए ओहि विषय पर अपन कलम चलैतहुँ ?

आलोच्य पोथीक अध्ययन सँ धीरेन्द्र कुमार झाक पाठक होएबाक घोषणाक पृष्ठि हएबँ कले कठिनाह बुझाएत अछि। खबँर केँ अखबाक बुझि लेबँ एकटा अलग गप अछि। ओना "ट्रान्सफर्मर"क कथा-जगत सँ गुजरैत ओ कहल जाए सकैत अछि जे एहि संग्रहक माध्यम सँ धीरेन्द्र कुमार झा मैथिलीक बहुत बास

प्रायोजित कथाकार सभ सँ शेहत आगू गेल छथि। धीरेन्द्र जीक आग्रह छनि जे हुनक कथासभ केँ मैथिली कथा-साहित्यक धारा केँ ध्यान मे नहि राखि, सामाजिक परिवेशे आ ओहि मे जीबैत उपभोक्तावादी मनुष्य केँ ध्यान मे राखि पढल जाय। हुनक एहि आग्रह मे जँ किनको गर्वोक्ति जकाँ बुझाबए त हमरा कोनो अचरज नहि हएत। ओ एकर माध्यम सँ अपन कथाक रिवाइ फनक दिशा संकेत करैत बुझाएल छथि किन्तु हुनक पोथीक अन्तर्वस्तु एहि बातक कनिको टा समर्थन करैत नहि देखाएत अछि। हुनक कथासभ निस्सन्देह सामान्य सँ उपर अछि किन्तु मैथिलीक रायरीय आलोचना-समीक्षाक पर्दा पर अखनि तक अचर्चित आ अनठिआएल अनेक बास प्रतिभाशाल कथाकार जाहि मे किछु गोटेके चर्चा उपर कएल गेल अछि, तक पहुँचबा मे अखनि हुनका समय लगतनि, अपन घोषणाक प्रवृत्ति पर नियंत्रण राखि प्रयासरत रहए पड़तनि।

ई ध्यान राखल जएबाक प्रयोजन अछि जे सामान्य पाठक आ रचनाकार पाठक मे मौलिक अंतर होइत छै। सामान्य पाठक जे पढैत अछि तेकरा ओ स्थूल रूप मे ग्रहण करबा लेल, स्मरण राखबा लेल स्वतंत्र अछि, स्वच्छन्द अछि। रचनाकार पाठक जँ एना करत त ओकरा मे भटकाब एतै। रचनाकार पाठक कोनो पोथी पढओ कि जीवन केँ पढओ, ओकरा लेल ओ सभ कचा माल जकाँ अछि आ ओकरा सँ ई अपेक्षा रहैत अछि जे ओ एकरा सभ केँ श्रद्धता सँ ग्रहण कए अपना भीतर मथि कए, पचा कए अपन काज जोगर सूक्ष्म-तत्व केँ निकालि लिअए। आलोच्य संग्रह ई संकेत दैत

অছি জে হীরেন্দ্র জী এহি প্রক্রিয়া কেঁ অখনি তক সাধি নহি সকল ছথি আ তেঁ ও অখনি ভটকারক শিকার হোইত ছথি। ই ভটকার হুনক কথা সভ মে বিভিন্ন রূপ মে আবৈত অছি জাহি মে অনাবশ্যক আ অনৌচিত্যপূর্ণ বিস্তার একটা কারক অছি। সাহিত্যক কোনো বিধা মে কোনো বাক্য, কোনো শব্দ ফাজিল নহি হোইত ছৈ আ জঁ ভেলৈ ত ও পাঠক কেঁ বা ত ভ্রমিত করৈত অছি বা বোর। রচনাকারক কাজ পাঠকক ধৈর্য বা সমঝদারীক পরীক্ষা লেব নহি হোইত ছৈ, সে ধ্যান রাখল জএবাক চাহী। পাঠক হএবাক ঘোষণাক বাদ ত হীরেন্দ্র জী সঁ কিছু বেসীএ অপেক্ষা হএবাক চাহী। "সোন ত কান নহি", "ধনাত ধর্মম্", "উভযচর", "ভীখারএস", আদি এহি সংগ্রহক কথা সভ এহি বিস্তারজনিত ভটকারক শিকার ভেল অছি।

এহি সংগ্রহক অনেক কথা এহি মহত্বপূর্ণ তথ্য দিস সেহো সংকেত করৈত অছি জে কথাকার শীর্ষকক মহত্ব কেঁ গংভীরতা সঁ নহি লেলনি অছি। ই ধ্যান রাখল জএবাক চাহী জে কথাক শীর্ষক কথাক তালা কেঁ খোলবাক সটীক কুঞ্জী হোইত অছি, সংগ্রহক ভুমিকা নহি। একটা সটীক শীর্ষকক উপযোগ কোনো কথাক অর্থ কেঁ ব্যাপকতা, রূপ কেঁ বাস্তবিকতা আ অন্তর্বস্তু কেঁ সমগ্রতা সঁ ভরি দৈত অছি। কখনিও–কখনিও ত জে বাত সংপূর্ণ কথা মে প্রত্যক্ষত: কতহু নহি দেখাইত অছি সে ওকর শীর্ষক জগজিযার কএ দৈত অছি। উদাহরণ লেল শৈলেন্দ্র কুমার ঝাক "আরোহ–অবরোহ", শৈলেন্দ্র আনন্দক "ঘরকহলাঁ", অরবিন্দ ঠাকুরক "অন্হারক বিরোধ মে" (অপন পোথীক চর্চা লেল ক্ষমাসহিত), শ্যাম দরিহরেক "বঁড়কী কাকী এট হাটমেন ডাট কাম", বিভা

बानीक "खोह सँ निकसैत", रमेशक "दखल" आ "समानान्तर" आदि संग्रहक कथा आ नारायण जी, अरविन्द अक्कू, कुमार पवन, अजित आजाद, आशीष चमन आदिक विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित कथा सभ कें देखल जएबाक चाही। प्रवनका पीढी मे ओ खासियत आ सजगता ललित, धूमकेतु, राजकमल चौधरी, रमानाथ, प्रभास कुमार चौधरी आदिक कथा मे देखाए पड़ैत अछि। हीरेन्द्र जीक "सोन त कान नहि", "कम्प्रोमाइज" सन कथा सठीक शीर्षकक अभाव सँ ग्रसित भेल अछि। "कम्प्रोमाइज" शीर्षक कें जस्टिफाइ (न्यायोचित सिद्ध) करबाक लेल त कथाकार एहि कथाक दशे-दिशा बिगाड़ि देने छथि। एना लागैत अछि जे शीर्षक पहिने देल गेल आ कथा बाद मे लिखल गेल अछि। एहि मे कथाकार प्रेमलक मानसिक ऊहापोहक (जेकर कोनो तर्कसंगत औचित्य नहि बुझाइत अछि) वर्णन करैत-करैत, नारीवादक अनेकआ पैरोकार बनैत-बनैत एकदम सँ पुरुषक पक्ष मे चलि जाइ छथि। बिगड़ल कें सम्हारए आ स्वयं कें आधुनिक आ नारीवादी देखैबाक चक्कर मे कथाकार एकटा प्रेम-मनुहारक कथा कें गलत शीर्षक दए आ फेर ओहि शीर्षक कें जस्टिफाइ करबाक लेल कथाक अंत मे प्रेमल सँ कम्प्रोमाइज बना गप कहबा कए अनेरे भ्रमित होइतह् छथि, करितह् छथि। कथाक समापन जाहि भावनामेक ढंग सँ होइत अछि ताहि मे कम्प्रोमाइज सन गप कतहु सँ अएबो से पाठक सोचितहि रहि जाइत अछि। कथाकारे जँ अपन कथाक कथ्यक प्रति भ्रमित रहत त ओ मूल रूप मे पाठक कें केना पचतै ?

ধীরেন্দ্র জীক দ্বাগ্রহক হদ তক জাগত একটা আওব আগ্রহ অংগরেজী শীর্ষকক প্রতি এহি সংগ্রহ মে দেখাগত অছি। জঁ একবাসভ কেঁ নোক-রেদক রীচ প্রচনিত হএরাক তর্ক কেঁ সোঝাঁ বাখিও নী ত একব ভ্রষ্ঠ প্রযোগক কী ঔচিত্য ? ট্রান্সফার্মব, রোষ্ট, ক্লাষ্টব, বিজরেশিন,রীআবএস শব্দ প্রযোগ হেতৈ, ট্রান্সফর্মব, ভোষ্ট, ক্লাষ্টব, বিজভেশিন, ভীআবএস নহি, জেনাকি নেখক কএনে ছথি। ওনা ত মৌথিনী মে প্রচল্ড-শব্দ বামবাজ ছৈ। জেকবা জেনা মন হোগ ছৈ তহিনা নিখৈ এ, অপন রতনী অপনে রঁনরেঁ এ। মৌথিনীক প্ববোধা সাহিত্যকাব-ব্যাকবণাচার্য নোকনি রতনীক একরূপতাক নাম পব ফাগর-স্টাবী মৌজ নৈত নাথক-নাথ যাত্রা-ভত্তা উঠাএ বহন ছথি আ ফেব অপন করীনা মে ঘ্বি অপনহি ধ্ন-তান পব গাবঁনে গীত গাবিঁ বহন ছথি। তেঁ অসগবে ধীরেন্দ্র জী পব দোষ কিঐ দেন জাএ ?

ধীরেন্দ্র ক্ষমাব ঝা জন-জীরনক নীক পর্যরেক্ষক ছথি আ সে রাত হ্নক ঘোষণাক অনুসাব হ্নক এহি সংগ্রহ মে পবিনক্ষিত সেহো হোগত অছি। কিন্তু এতহি হ্নক একটা কমজোবী সেহো অভবি কএ সোঝাঁ আবৈত অছি। বচনাকাবক চহ্তবফ রহ্ত বাস চীজ অপন রহ্আযামী রূপ মে উপস্থিত অছি আ রহ্ত বাস উথন-প্বথনক সংগ অনেক বাস ঘটনা ঘটৈত বহৈত অছি। সৃষ্টিক ও রিরিধতা আ ব্যাপকতা জে ছৈ সে বচনাকাবক নেন বা-মৌষ্টৈবিযন অছি আ তেকবা মে সঁ বচনাকাব অপন বচনামেক বুদ্ধি-রিরেক সঁ অপন কাজক রস্তু চ্নি সঙ্কুচিত মাত্রা মে বচনাক রিভিন্ন রিধাক রৈগবতানুসাব ওকব উপযোগ কবৈত অছি।

क्लासिकी आ क्लासिकी (गुण आ मात्रा) के सटीक सम्मिश्रणे सँ कोनो नीक आ अमोल रचना बनि कए बहराइत अछि। से नहि भेने रचना धड़ाम! रचनाकारक आब्जर्वेशन (पर्यवेक्षण) के क्रम मे जे किछु पकड़ाएल तकरासभ केँ एकहि ठाम जेना-तेना ठूसने जाइ त ओ साहित्य नहि भए कए किदन-कहाँदन त भेए जाएत, रचनाकारक चयन-ग्रहण-विवेक पर प्रश्न सेहो ठाढ़ करत। कथाकार धीरेन्द्र जीक पर्यवेक्षण क्षमताक गवाही त आलोच्य संग्रह दैत अछि किन्तु गुण आ मात्राक तालमेलक समन्वय अखनि तक हुनक सम्भार मे आएल नहि बुझाइत अछि। एकर नतीजा ई भेल अछि जे ओ कथा कहबाक सङ्गी कथा बनबै मे लागल बुझाइ छथि आ ओकर विश्लेषण आ निष्कर्षक काज सेहो संगे-संग करैत चलै छथि। संभव अछि जे ई प्रयासपूर्वक नहि, अपन अवचेतनक निर्देशे पर करैत होथि, किन्तु एहि प्रवृत्ति पर नियंत्रण साधबाक छवि त हुनका अपने विकसित करै पड़तनि। किऐक त एहि सँ कथाक रोचकता आ पठनीयता पर नकारात्मक असर पड़ैत अछि। धीरेन्द्र कहै छथि जे हुनक कथा मे "एकटा ठंगक चरित्र निर्माण नहि भए पबैत अछि"। जँ ओ अपन एहि कमजोरी केँ चिन्है छथि त हुनका "कम्प्रामाइज" सन कथा लिखए सँ परहेज करबाक चाही। शीर्षक आ कथाकारक मंशाक अनुसार एहि कथा मे नायिकाक सशक्त आ संघर्षशील चरित्र अभरि कए आएबाक चाही छल किन्तु तेकर विपरीत ओ एकदम सँ नवग्रज भए गेल अछि।

तखनि, संग्रहक भुमिका मे भीमनाथ झा लिखै

ছথি জে হীবেন্দ্র জী কেঁ রিকাসক খাব খারশ্যকতা ছনি, কথা কেঁ কসরঁ সীখথ্, মর্ম কেঁ স্পর্শ ত করৈত খছি হ্মদা প্রভার কেঁ খাব তীব্র রঁনযরাঁক চেষ্ঠা করথ্, ভাষা কেঁ খাব মাজথ্ ; খা ওতহি রিস্তুতি খানন্দক মন মে ও একটা খিচা সপনা রঁনি কএ ডিভিখাএন ছথি ; খা খাওব ত খাওব স্বযং কথাকাব খপন এহি সংগ্রহ কেঁ কথা–সংগ্রহ নহি কহি, কথাক মোটবী রা রোঁঝ সনক কোনো রস্তু কহরঁ কেঁ রেঁসী উঁপযাক্ত র্বুনৌ ছথি ; তখনি কোনো পাঠক রা সমীক্ষক নেন খাওব কিছু রিশেষ কহরাঁক জোগব রঁচৈত কী খছি – শুভকামনাক খতিবিক্ত। 1995 মে মবাঠীক স্বপ্রসিদ্ধ সাহিত্যকাব কুস্বমাগ্রজ (রি রা শিবরাডকব) সঁ নাসিক(মহাবাষ্ট্র) মে ভেঁট খা দীর্ঘরার্তাকি সৌভাগ্য ভেটৈন ছন। ও একটা মংত্ররাক্য কহনে ছনা – " নিখূ, খূরঁ নিখূ, নিখনে সঁ ভাষা সমৃদ্ধ হোগত খছি"। কুস্বমাগ্রজক ওহি মংত্ররাক্যক পবিপেক্ষ্য মে ওা ত কহনে জাএ সকৈত খছি জে হীবেন্দ্র কুমাব ঝাক "ট্রান্সফর্মব" সঁ মৈথিনী সাহিত্য সমৃদ্ধ ভেন খছি – শ্রীরৃদ্ধি কবও নহি কবও, মাত্রারৃদ্ধি ত ভেরেঁ কএন।

রিহনি কথা – সত্তা–চবিত

খত্যাধুনিক তকনীকরঁনা এহি যুগ মে ওা মকান কনী খজীরঁ সন বহয। একদম গোনাকাব। এনমেন ত নহি, কিন্তু কনী–মনী সংসদ ভরনহি জকাঁ প্রবান স্থাপত্যক নমূনা। খহী মকানক একটা ভাগ মে ভাড় া পব বহৈত ছনা হমব মিত্র। হম সভ মিত্রক কোঠনী মে বহী।

জেনা–তেনা ৰহ্ত ভাঁজক ৰাঁদ ওা খরসব ভেষ্টন বহয। কোঠনী ভীতব সঁ ৰন্দ বহয খা হম সভ প্রতিৰিঙ্খিত ফিল্ম দেখৈত বহী। গৌবকানূনী খা খসামাজিক কবতূতক খপন একষ্টা খনগহি বোমাঁচক খানন্দ হোগ ছৈ। সম্পূর্ণ কোঠনী হমব সভক খভদ্র–কাল্মক টিপ্পণী, উত্তেজক সিসকাবী খা গবম–গবম উঁসাঁস সঁ ভবন বহয। হঁ , হম সভ খহি নেন খরশ্য খতিবিঞ্জ ৰূপ সঁ চৌকস বহী জে স্বব কনী দৰনে বহয খা হমব সভক কিবদানীক ভনক কোঠনী সঁ ৰাহব নহি জায, সার্বজনিক নহি হ্খয। পহিনকা সীডী মে দেশী পাত্র সভ বহয। ওকব ৰাঁদ দোসব সীডী নগাএন গেনয জাহি মে ৰিদেশী পাত্র সভ বহয। এহ ! জিনগীক খ্নস্তা মজা ৰহি ওা ৰিদেশীএ সভ নৈএ ! সীডী খতম ভেন ত হম সভ নিরৰি ভেন বহী – গস্স ! এহন এহন খেন ! ! খষ্ট ! খষ্ট ! খষ্ট !

কেৰাঁড় ী পব চোষ্ট পড়ন। চোষ্টক প্রভাব কোঠনীক নিস্তৰ্ব্ধতা কেঁ খাতংকরাদী ৰিস্ফাষ্ট জকাঁ চিৰ্বিচোথ কএনে চনি গেন। হম সভ গোষ্টে খাতংক সং ভবি গেনহ্ঁ। কেকবহ্ ৰকাব নহি ফ্ষ্টেনয। কনী দেব তক খপন–খপন খাঁখি মে ৰড়কা–ৰড়কা প্রশ্নরাচক চিন্হ নেনে এক–দোসবাক দিস ৰকব–ৰকব তাকৈত বহি গেন বহী – ৰস। টৌরী ৰন্দ কএন গেন। সীডী কেঁ ৰিছৌনা তব ন্বকাএন গেন। সভ গোষ্টে খপন–খপন চেহবা পব ভদ্রতাক খারবণ ওঠি জন–প্রতিনিধি জকাঁ খপন–খপন খাসন পব সংচ–মংচ ৰৈসি গেনহ্ঁ। খা তখনি জাএ কএ হমব মিত্র খাগূ ৰঠি কেৰাঁড় ী খোননক। ৰাঁহব মে মকান মানিকক সমদাহী (দোসব পনী) ঠাঠ

बहय। केश छिड़ा आएल, आँखि लाल टेस, अंटबा जेना-तेना देह पर फेकल आ लाल भेल चेहरा आगि सँ लह-लह करैत। ओकर अवस्था कें क्रोधाधिक्यक परिणाम बूझि हमर सभक प्राण अखि गेल। ओ मित्र कें धकिआबैत कोठली मे घुसि अएलीह। फेर पलटि कए अुननाहा केबाड़ ी कें भिड़यलनि, छिटकी लगयलनि आ हमरा सभक दिस घुरि कए बोलीक गोली दागलनि –'गएह सभ करय छी अहाँ सभ बन्द कोठली मे ?' हम सभ गोष्ठे समरेत स्वर मे " कहाँ किछु...कहाँ किछु " कहैत नष्टपष्टागत बोली मे सफाइ दिअय चाहलियनि। ओ फनफनाइत बाजलीह – " झूठ नहि बाजय जाउ। अहाँ सभक सभटा किरदानी, सभटा देशी-विदेशी खेला हम देखलहुँ। अप्पन आँखि सँ – ओहि ठुबकी दके।" हम सभ गोष्ठे अपराधी मुद्रा मे एकदम सँ सकदम। हुनक स्वर मे आवेश बढ़लनि। स्वर पहिलहुँ मद्धिम बहय, जेकरा ओ और मद्धिम कयलनि आ फुसफुसाइत जकाँ बाजलीह – " तेसरो ए की ?"

<u>विहनि कथा-</u>
<u>स्वयंभू</u>

जेना कोय अपन बापक जमीन्दारी मे टहलान मारय लेल बहराइत हुअय, तहिना ओ बहुत अगराइत-मगराइत जकाँ हमर कैम्पस मे घुसल। हम कनडेबिए ओकरा दिस ताकलहुँ। ओकर स्वछौन देहयष्ठि

পব মনমনক গেরুআ বস্ত্র ছনমনাগত বহয। মাথ

পব ঘটাটৈপ বঞ-চন্দনক নেপ। ওকব খরনোকনক ক্রম মে হমব দৃষ্ঠি ওকব চবণ দিস গেন। এহ ! রেঁস দামী ব্রেল্ডড চপ্পন। রযস প্রায: তীস-পৈংতীসক নপেষ্ট মে। গোব দপদপ হ্মখড় া পব কাবী-কাবী দাঢী-মোঁছ – একদম মান-মনোহব। খকস্মাত মন পড়া গেনা জীরনেশ্বব রাঁরূ। কহৈত বহথিন জে দাঢী চাবি তবহক হোগ ছৈ –চিনম-চূতিযা, নহসূন-গাঁড় া, মান-মনোহব খা দানম-দানা। একবা ও ততেক তেজ গতি সঁ রাঁজৈত বহথিন জে সভটা প্রকাব এক-দোসবা মে ওঝবাএ-মিঝবাএ কএ একমএক ভএ জাগত বহয – <u>চিনম চূতিযা নহসূন গাঁড় া মান মনোহব দানম দানা</u>। সে খিস্সা খনগ। জখনি ও মান-মনোহব দাঢী-মোঁছরঁনা মনমনক গেরুআ-বস্ত্রধাবীক শ্বভাগমন হমব কৈম্পস মে ভেন বহয তখনি হম খপন হাথ মে খ্বপী নেনে দূটা ছোটকী কবোটনক পৌধা বোপৈক নিযাব মে কিযাবী নগ রৈসন বহী। এহন নৌটংকীরাঁজ প্ববহিতিযা সহ্মদাযক প্রতি হমবা মন মে কোমনতা নেশমাত্রহ্ নহি বহৈত খছি। খা খারঁ ত খহি রিনা পূজীক কবগব মোনাফারঁনা ধংধা মে রিভিন্ন জাতিক নোক সেহো খ্বরেঁ খারি বহন

খছি। খারঁ খহি মে প্ববহিত-বস্মাক একাধিকাব নহি বহনয। সে খহি দেশক রিভিন্ন প্রদেশ মে ঠাম-ঠাম ঙঁগন ছোট-নমহব মঁদিব খা খাশ্রমসভ খপন কথা খপনহি কহয এ। তখনি, দ্খাবি পব খাযন মাংগনিহাব কেঁ কিছু ভেষ্ট জায, ও খানী হাথ নহি জায, তহি পাবিরাবিক পবম্পবাক খনুপানন ত ভবিসক কবিতে

छी। ओ कोनो शेहंशाह जकाँ हमर निराश-भरल आ हुनराँड़ ी कें हियासैत हमरा दिस ताकैत रॉजन – " मकान आ हुनराँड़ ी त बाधा रॉबूंक सेहो रॅड़ भव्य अछि किन्तु ओ अहाँक पासंगहु मे नहि। अहा हा, अतिसुन्दर, अतिरमणीक।"

खड़ ी रौनी मे रॉजन ओकर गप सुनि हमर कान ठाढ़ भेल। हमरा लागल जेना ओ कोनो रेफरी जकाँ हमरा बाधा रॉबूंक प्रतिद्वन्द्विता मे सोझा-सोझी ठाढ़ करबाक प्रयास मे हमर चापलूसी करैत हुअय। ओना हमरा लेल ई कोनो नव बात नहि रहय। हमर शहर मे हमर आ बाधा रॉबूंक राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता जगजाहिर छैक आ कखनिओ काल हमरा चिढ़ाबैक लेल या हमर चापलूसी करबाक लेल अनेक लोकसभ एहन टिप्पणी करैत रहैत छथि। अखनि किन्तु एकटा साधुरेशधारीक मुँह सँ एहन रचन सुनि अचरज भेल, अनकठ्ठल सन लागल। अहि सँ ओर किछु हुअय ने हुअय, हमरा अहि अनामंत्रित आगन्तुकक ओकाति आ चरित्र बुझाए गेल। हम अपना दिस सँ एकहु टा शब्द नहि रॉजनिअय। हम अपन काज करैत बीच-बीच मे ओकरा दिस ताकि टा लैत रहिअय, बॅस।

हमर चुप्पी सँ असहज भेल ओकर मुँह सँ ओकर अभीष्ठ रॅहरयलय – " किछु भेटै जाय अहि दवराँर सँ।" ता हम दुनू करोटैन रोपि चुकल रही। उठिकए रॅबल्डा लग आरि, खुरपी राखि रॉड़ ीरॅना नल पर आराम आ सहजता सँ अपन हाथ धोलहुं। रॅबल्डा पर चढ़ि घरक भीतर अएलहुं। ओ रॉहरहि मे ठाढ़ रहल। खुंट्टी पर टाँगल अपन कपड़ ाक जेबी मे हाथ

देनिअथ त दू टा सिक्का हाथ मे आएल – एकटा पाँचटकिया आ एकटा दूटकिया। क्षण भरिक असमंजसक बाद पाँचटकिया कें जेबी मे वापस राखि दूटकिया लेने बाहर अएलहुँ आ ओकरा दिस ओ सिक्का बढ़ाए देनिअथ। ओ एक बेर सिक्का दिस आ फेर हमरा दिस ताकलक। ओकर आँखि मे हमरा प्रति सौंसे सृष्टिक घृणा लपलप करैत धधरा मारैत बुझाय। हम ओहि धधरा सँ एकदम

अप्रभावित भेल दोबारा ओकरा सिक्का लअ लेबाक इशारा केनिअथ।

“ ई की दअ छिअथ ! एतेक बड़का दरबार......” – ओ ठोठ ऐंठ करैत बाजल। हम मौन त रहलें कनी, ओकर ऐंकाति तौललाक बाद दूठ सेहो बनी आ बिना एक शब्द बाजने फेर ओकरा दिस सिक्का बढ़ैनिअथ।

“ ई त भिखमंगाक बेटे छिअथ। हम त संत छी। “– कहैत ओ घृणा आ धिक्कारक दृष्टिए हमरा दिस ताकलक आ हमरा दिस अपन पीठ कयने बरण्डा सँ नीचाँ उतरि गेल।

हम अहि अध्याय कें समाप्त मानी कि नहि मानी से सोचैत कोठली दिस घुरबाक उपक्रम करितहि बनी कि ओ बरण्डा सँ उतरलाक बाद अकस्मात फेर हमरा दिस घुरल।

“लाउ, दअ दिअ। अहाँक एतबेक श्रद्धा अछि त...” अहि बेर ओ खड़ ी बोली रिसबि गेल आ शुद्ध मैथिली मे बाजल ।

हम रॅबल्डाक कोब पब थारि ओकब पसबन हाथ पब दृष्टिकियाक सिक्का बाखि देनिश्चय। सिक्का ग्रहण कबितहि ओ पनष्टि कए कैम्पसक गेष्टे दिस रॅठि गेन। जाग रॅब किन्तु ओकब पएब हन्नक था तेज बहय, जेना देह पब सँ जमीन्दाबीक रॅड़का भाबी रॅाग्न ऊँतबि गेन हृथय। एक रॅब फेब मन पड़नाह जीरनेश्वब बॅाबू था हुनक कहन दाठीक प्रकाब। किএ ने किএ, हमबा भक भेन जे जागत कान साध्रेशेधाबीक दाठीक प्रकाब सेहो प्रथमरॅना भए गेन हृथय।

রিহনি কথা- দুস্মাহস

ओ हमब सौभाग्य जे देरनाबायण बॅाबू हमबा थहिठाम थारैत बहैत छथि। हुनक ब्यक्तित्वक थाभा सँ हम सदैव चोन्हिथायन बहन छी। मोटका खादीक रिन कनफक धोती-कुर्ता-रॅल्डी, कॅह पब थुष्टिथायन खिचड़ ी दाठी था कन्हा पब सदैव नष्टकन सर्वोदयी मोबा हुनक समाजरादी कनेरब कें जगजियाब कयने बहैत थछि। तीस वर्ष सँ रॅसीक हुनक बाजनीतिक जीरन घोब संघर्षमय बहन थछि। थछतोद्धाब सँ प्राबम्भ हुनक सामाजिक जीरन धर्म-निर्पेक्षता, सम्पूर्ण क्रान्ति था

सामाजिक न्याय सन-सन थनेको सैद्धान्तिक प्रतिरॅद्धता सँ नैस बहन थछि। नोहियाक थाह्वान पब एक जमाना मे ओ थपन जनेऊँ तोड़ि फेकि देने छनाह जेकबा चनते रॅभनष्टैनी हुनका बॅाबि देने छननि था कोनो यक्त-प्रयोजन मे हुनका निमंत्रणादि देब प्रतिरॅन्धित भए गेन छन। देरनाबायण बॅाबूक नेन किन्तु धनि

सन। ओ अपन घर सँ नागने जकाँ बेसन धन्नकट्टैनी, चमरट्टैनी आ दुसधट्टैनी केँ अपन

समाज बनाए लेने छलाह आ ओकरे सभक जागरण मे लगि गेल छला। मंच सँ नेहरू-गांधी केँ ब्रेडेर, कांग्रेसीसभ केँ अंग्रेजक उत्तराधिकारी आ प्ररहित-रक्षा केँ सामाजिक विखण्डनक जिम्मेदार कहबाक हुनक ब्रेडमार्क जकाँ बनि गेल छल। किछु दिन पहिने लोक कहने छल जे एम्हर देवनारायण बाबूक सम्पर्क सरकारी खेमा सँ खूब बढल अछि। फेर समय मे आयल जे ओ सत्ता-पार्टी ज्वाइन सेहो कए लेलनि। बीच-बीच मे आनो-आन नीक-बेजाय बातसभ हुनका दिआ समय मे आबैत रहैत रहय आ हम ओकरा एक कान सँ सुनि दोसर सँ बाहर कए दैत रही। सार्वजनिक जीवन मे रहनिहार लोक चर्चा मे रहितहि अछि आ लोकसभ अपन सुविधानुसार ओकरा दिआ खिस्सासभ बनबैत रहैत अछि। तेँ सत्ता-प्रतिष्ठानक विरुद्ध सतत ठाढ रहल देवनारायण बाबू दिआ कहल गेल ओहो ढेरका गप हमरा कोनो अफवाहे जकाँ बुझायल रहय – राजनीतिक विद्वेष सँ भरल गप्पैती जेकर कोनो गोड़-मूड़ी नहि होइत छै। पछिला बेर आएल रहथि तखनिओ एकटा सनसनीखेज खबर समाचारपत्र मे पसरल रहय हुनका दिआ। की त हुनक बेटी एकटा हरिजन संग भागि गेलनि। किन्तु चारि दिनक बाद हुनके मुँह सँ यथार्थ गपक जनतब भेल रहय। हुनकर गामक छाप समाजवादी पार्टीक एकटा मित्र रहथिन महावीर राम जे कालान्तर मे कांग्रेस पार्टी मे सम्मिलित भए विधायक भेला आ बाद मे मंत्री सेहो। पार्टी बदललाक बादहु

দ্নূ গোটেকে মৈত্রী ৰঁনন বহন ছননি। দেৱনাবাযণ ৰাঁৰূঁ জাতি–পাতি মানিতহি নহি ছনাহ আ

মহাৱীব বাম সেহো হ্নকে ৱিচাবধাবাক নোক। দেৱনাবাযণ ৰাঁৰূঁএক অন্নসাব দ্নূ মিত্র অপন আপ্সী সহমতি সঁ পবস্পব মৈত্রী কেঁ ৱিধিৱত সম্বঁন্ধ মে ৰঁদননৰাঁক নির্ণয কযননি আ মহাৱীব ৰাঁৰূঁ হ্নক প্বত্রী কেঁ অপন প্বত্রৱধূ স্বীকাব কএ মিত্র সঁ সমধি ভএ গেনাহ। নোকক স্নেহ কেঁ কে বোকত। কহৈত বহও নোক অঁষ্ট–ৰঁষ্ট। তেঁ হম নোকক গপ মে নহি পড়ৈত বহী। দেৱনাবাযণ ৰাঁৰূঁ হমবা অহিঠাম আৰঁয ছথি হমবা অপন নোক ৰুঁম্নিএ কএ নে আ সে হমবা নেন যথেষ্ঠ বহয। দেৱনাবাযণ ৰাঁৰূঁ হমবা অহিঠাম আৰঁথি, চায পীৰঁথি আ অপন গপক ক্রম মে একদম স্বাভাৱিক তৌব পব অপনা দিআ পসবন ক্ষপ্রচাবক খন্ডন কএ জাথি। হমবা কোনো অতিবিঞ জিজ্ঞাসা হ্অয ত সে হম প্বছি নৈত বহিযনি আ ও ৱিনা নাগ–নপেট কে তেকব উঁত্তব দএ হমবা সঁন্তুষ্ঠ

কএ দেথি। দূ–তীন মাসক অন্তবান পব অহি ৰেঁব ও অএনাহ ত স্বাভাৱিক তৌব পব হমব মন অনেক বাস জিজ্ঞাস্ব প্রশ্নসভ সঁ ভবন ছন। কিন্তু অহি ৰেঁব কিছু এহন সন ভেন জে সভটা প্রশ্ন মনহি মে বহি গেন, প্বছৰাঁক অৱসবহি নহি ভেটৈন। আন ৰেঁব অসগব আৰেঁত ছনাহ আ কেতৰোঁ দেব ৰৈঁসথি ত চাযক অনাৱা কোনো চীজ নহি নেথি। একাধ ৰেঁব জনখৈক কোনো সামগ্রী মংগৌনিযনি ত ও ৱিগড়ি গেন ছনাহ – 'ঞা সভ সামন্তৱাদী ঢকোসনা ছৈ। সমাজক হাশিযা পব ৰৌক ভেন ঠাঠ অন্তিম আদমী জা তক ভুখন ছৈ হম সভ ঞা অয্যাসী কেনা কএ সকয ছী !' অহি ৰেঁব হ্নকা

সংগ চাবি গোষ্ঠৈকে

জমাত বহনি। সভ গোষ্ঠৈ কেঁ রৈঁসারিতে বহী কি ও খূর্ব অধিকাব ভার সঁ কিছু চায-জনখৈ কে হুবমাগস ঠোকি দেননি। হ্নকব রঁদনন রঁগয-রাঁনী হমবা চকিত কএ দেনে বহয। চেহবা একদম কনীন-শৈর্ড আ নীন-টিনোপান সঁ চকচক কনফদাব ধোতী-হুর্তা মে ও জেনা ও নহি ছনাহ। সদতি রেঁমায হাষ্টৈন পৈবক সহোদব রঁনন ও হরাগ চপ্পন অহি রেঁব অনোপিত ভএ গেন ছন আ ওতয চঠন ছন চেবী রঁনাসম সঁ চমচমাগত কাহ্ন নেদবক দামী হাহ্ন শূ। হমব রাঁহবী কমবা হ্নক আরিতহি আন রেঁব জকাঁ ঘামক ফোকবাগন গংধ সঁ নহি হ্নক দেহ সঁ আরৈঁত বজনীগংধাক অত্তব সঁ স্বগংধিত ভএ গমগমাএ উঁঠন। হম হ্নক হান-চান পুছরাঁক নিযাব কবিতহি বহী কি হ্নক ত্তবছন টিপ্পণী আযন - ' এহ ! অহাঁ দিস অএরাঁক ডগব রঁড় ঘিনাযন অছি। ' টিপ্পণী যথার্থ হোগতহ্ অপ্রত্যাশিত বহয তেঁ হমবা ধক্কা জকাঁ নাগন আ হমব অকরঁকী হুট্টি গেন। হ্নক দিব্যতাক আভা সঁ ঘহ্নচন-থহ্নচন হমব রাঁহ্যাস্তিতব অপবাধরোঁধ আ হীনতারোঁধ সঁ একহি সংগ গ্রসিত হোগত হমব থবথবাগত ঠোঠ সঁ অপন স্পষ্ঠীকবণ দেরঁয নাগন – ' অহাঁ কেঁ ত র্ন্মননহি এ জে রঁগনহি মে দনিত সভক ষ্টৈন

ছৈ। ওকবাসভ কেঁ কতয শৌচানয আ সেহষ্টী ষ্টৈকক স্বরিধা-স্বভীতা ! রর্ষা-র্ন্নীক সময সে ছৈ। খেত কি রঁসরাঁবি কি গাছী সভঠাম পনিএ-পানি। কতয জএতৈ ? তেঁ ডগবেক কাত মে নিরঁষ্টৈত অছি। তেঁ। '

ও তমতমাযন রাঁজনাহ– ' ওাহ দনিত ! ৎেনিক ছৌড় া সভ জিন্স ঢাঁঠনে বহয এ, মৌগীসভ বংগ–রিবংগক সাড় ী খা তব মে ব্রা–পৈন্টী পহিবনে বহয এ খা হগত নোকক কপাব পব ! এহ ! দ্খাহ্ফ সঁ নাক ফাট্টি গেন । ' দেরনাবাযণ রাঁবূ ভনভনাগতহি বহথি তা খংগনা সঁ চায–রিস্ক্ুট–নিমকী খারি গেন বহয । সভ গোট্েক ধ্যান ওনহি চনি গেনয । দেরনাবাযণ রাঁবূ খা হম একহি সংগ চাযক কপ উঁঠেনহ্ । দেরনাবাযণ রাঁবূ নিমকী–রিস্ক্ুট সংগ চাযক চ্স্কী নৈত খাগূ কী–কী রাঁজনাহ সে গ্রহণ কবয সঁ হমব শ্ররণেন্দ্রীয ফকবি গেন । হমব ঘ্রাণেন্দ্রীয সংরেদনশীনতাক হদ পাব কএ একটা খসহনীয দ্খাহ্ফক খন্বভূতি কবয নাগন । হম শিষ্ঠাচাবরশ চায পীরঁয মে দেরনাবাযণ রাঁবূঁক সংগ দিখয চাহিত ছনহ্ কিন্তু ও খক্তাত দ্খাহ্ফ হমবা সহন নহি গেন খা হম চাযক ভবন কপ নীচা বাখি দেন । হমব এহি খশিষ্ঠতা দিস দেরনাবাযণ রাঁবূঁক দৃষ্ঠি গেন বহনি কি নহি সে হমবা নহি বুঁঝন খছি ।

<u>রিহনি কথা–যূট্েপিযা</u>

বাজনীতি সঁ মোহভংগ কী ভেননি, শংকবদের সৌংসে দ্নিযাঁ সঁ খপনা কেঁ কাট্টি নেননি । রিধ কবয নেন কখনিও কেঁ কোনো গৈববাজনীতিক স্বযংসেরী সংগঠনক কোনো–কোনো খাযোজন মে চনি জাথি, কহিও কান

अपनहि कोनो साहित्यिक गोष्ठी-तोष्ठीक आयोजन कए नेथि, वँस। हुनक सार्वजनिक जीवन एतवेटा बहि गेल छलनि।

अहिसभ सँ जे अतिवात समय भेटैननि, तेकर प्रतिफल छल हुनक घवक आगूक फुलवाड़ी। एक सँ एक दुर्लभ प्रजातिक फूल,सजावटी पौधा आ औषधीय वनस्पति सँ सजल ओहि फुलवाड़ीक सौंसे परोपट्टा मे प्रशंसा होइत। शंकरदेव प्राय: भविदिन ओही मे लागल रहैत छलाह। कियारी मे खुरपी आ खाली जगह पर झाड़ू - सभ अपने सँ। एकर नियमितता सँ कोनो समझौता नहि। सौंसे दुआरि आ फुलवाड़ी विलक्षण रूप सँ चिक्कन-चुनमुन रहैत छल। राजनीतिक जीवन मे जेहेन दुनियाँ-जहानक कामना आ परिकल्पना ओ करैत छलाह से प्रकारान्तर सँ हुनक फुलवाड़ी मे सजीव भेल छल। एम्हर चारि-पाँच दिन सँ शंकरदेवक दिनचर्या मे ठमकी लागि गेल छलनि। अहि बीच ओ जेना अपनहि आप सँ गप्प करथि आ निष्क्रिय ओसरी मे ओसारपर बैसथि। अमशम रहथि। कत्तय खुरपी, कत्तय झाड़ू ! सौंसे फुलवाड़ी आ कैम्पस मे खढ़-पातक पथार लागल। कत्तहु सँ उड़ि या कए आयल एकटा पोलिथिनक मोड़ा म्हस्टैल्डाक गाछ मे लटकल। ग्रेटआक दू-तीन टा खलिया पाउच से गसवगतक जड़ि लग फेकल। पीयरका ग्लासेँ पर पान वा ग्रेटआक पिरकी आ कामिनी लग सिगरेटक दू टा जरलहा टोंटी। निनीक कताव लतमर्दन सँ बाधिछिन्नी भेल। पत्र केँ चिन्ता भेलनि - वाबूजी ओ सभ त बर्दास्त नहि करय छथि ? पाँचम दिन ओ गप्प करबाक नियार कएने

अपन हाथ मे दू कप चाय नेने आयल। शंकरदेव अपन स्टडी-रूम मे अनमना भेल, देवाल पर टांगल महात्मा गांधीक फोटो दिस ताकि रहल छलाह। पुत्र एकटा कप हुनका आ एक कप अपन आगू राखि हुनके सोझाँक कुर्सी पर बैसि गेल। पुछलकनि - 'बाबूजी, मन नीक अछि ने ?'

'हँ, ठीके-ठाक छी। से की ?'

' नै, बड़ गुमसुम देखै छी। '

'से कोनो तेहेन बात नै। '

' चारि-पाँच दिन सँ अहाँ फुलवाड़ी सँ विमुख जकाँ भेल छी। ओ त अहाँ नेने काज नै, अहाँक सुख अछि। आ फुलवाड़ी ए किऐ, पोतो-पोती सँ अहाँक टेक-चान बन्द अछि। हमरासभ केँ कतबा दिन ने लागि रहल अछि। '

शंकरदेव बड़ी काल तक चुप रहलाह। चाय केँ बसे-बसे घोंटे-घोंट पीलनि।

तमाकुल नहि खेलनि। पुत्र हुनक मुँह दिस ताकैत रहल। तमाकुल झाड़ि, ठोर तर राखि शंकरदेव पुत्र दिस उन्मुख भेलाह – 'हओ ! मंत्री भेल अपन क्षेत्रक विधायक राजनीति मे हमरा सँ बहुत कनिष्ठ छल। प्राय: पन्द्रह वर्ष पर अपना क्षेत्र आयल। फेर चुनाव छै आ अहि बेर स्थिति डगमग छै तेँ आयल, किन्तु आयल।

खूब तड़क्की कयलक ए पट्ठा। ओकर गाड़ी देखलहक

? दस-एगारह साल सँ कम के नै हेतय। सौंसे देखारि पर ओहि गाड़ीक चक्का के चेन्ह पड़ल छै। झाड़ू दए कए ओहि चेन्हसभ केँ मेटैयबाक मने नै लोग ए। '

एतेक कहि शंकरदेव बड़ी जोर सँ निसास छोड़लनि आ फेर भनभनाएत जकाँ बाजलाह – 'अजीब बेहूदा बात छै ! एकदम बेहूदा बात ! तखनि मन के की ....'

अपन गप केँ आधा-छिधा छोड़ि ओ एक बेर फेर दीर्घ निसास छोड़लनि आ अस्वरता मे सठि गेल चायबला कप फेर सँ उठाकए पीबाक उपक्रम करय लगलाह।

<u>बिहनि कथा- आदान-प्रदान</u>

" हे रओ, माय करय खटौओन-पिसाओन आ बेटाक नाओं दुर्गादत्त रओ !"

" हँ रे, बाप पढय पतरा आ बेटा जेबकतरा, तेँ ने रे ! "

" ठहरह, सार ! "

" आबह, सार ! "

<u>बिहनि कथा- अहिंसा</u>

“ হমরো দে। “

“ ....”

“ কনী দে। “

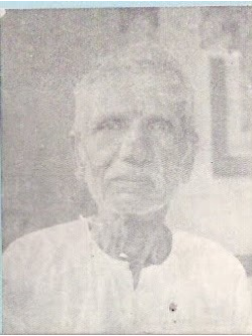
“..................”

“ বে ! কনিএ দে নে। “

“..................”

“ ঠীক ছৈ ! আগ সঁ কহিস। “

পদ্য খন্ড



মধ্পজীক কিছু করিতা, গজন গীত আ দোহা...

করিতা খংড

1

পতিত পীক

নহি ঘৃণা করু বুঝি পতিত পীক।

তাম্বুন তেজ–তরুখাবি–দর্শন–

সঁ চিবা হৃদয, বস–নান খপন–

শোভাক হেতু জে কৈন দান,

তকরে পরিত্র হম ছী প্রতীক।।

ম্রখ–নিধিমে উঠন তরংগ তবন,

নহি বহি সকনহুঁ চুপচাপ পড়ন।

খাননমে পারন, ভূমিনগ্ন

হোগতহি খপূত, কী উচিত থীক।

হম দর্শন রসন কেব খন্বরংজক

জে বসিকক পূর্ণ মনোরংজক।

জধবস্থ হমব বুধ করথি পান,

খধবস্থ দেখি প্বনি হঁটৈর ঠীক।।

নন্দনরন–রিহবণশীন স্বরক

পিতবক খথরা নৃপ ভূমিস্ববক

নৈরেথ্যক বস ছী হমহি ক্ষখ্য;

তেঁ ঙা খপমান ন কবরঁ নীক। ।

স্বাৰ্থী সংসাবক কেহন নিযম,

উঁপঙ্গতো উঁপদ্রব কবৈ ন কম

ভূষিত ভৈ ভূশিত কৈন খহাঁ,

ঙা বীতি নীতি নহিএঁ স্বধীক। ।

নহি পতন এক দিন ককব হৈত ?

পৃথ্বীক কোবমে কে ন জৈত ?

তেঁ সকন রস্তুমে এক ভার

বাখক থিক, গীতা পঠ্ সটীক। ।

2

<u>ছতহব</u>

খস্পৃশ্য ভেনহুঁ কৈ কোন পাপ ?

মৃত্তিকা এক একে কুম্হাব,

ও দল্ড চক্র চীরব সম্হাব।

আকাব এক ক্যাঁ মংগল ঘট্ট,

গৌরঁবৌড় রঁনন হম সহী তাপ। ।

জাহি মৃগনযনিক কণ্ঠি মাথ উঁপব,

ঘুমনহুঁ কতেক দিন বসনির্ঝব।

সে দেখি দূব কহি দূব জাথি,

নহি জানি দেন কে এহন শাপ ?

জে ফুফবৌ কৈঁ স্বতধি পনংগ,

পী মদ্য রিলোচন কবথি বংগ।

সে দেখি হমব মুখ কবথি ঘৃণা;

দুর্ভাগ্যক পড়ি গেন কেহন ছাপ ?

চঢ়ি চাক প্রদক্ষিণ হবিক কএন,

আরামে তনকেঁ হরন কএন।

ফন তকব কেহন রিপবীত ভেন,

মূঠে থিক সরঁটা যোগ-জাপ। ।

ঘট্ট-ঘট্টমে রাসী ব্রহ্ম এক,

হো ভান খরিখ্যাসঁ খনেক।

ৰ্‌স্মিতহুঁ রেদান্তী হমব রাবি।

খপরিত্র কহথি ক’ ক’ প্রনাপ। ।

হো সদিখন সংসাবক স্বধাব,

পতিতৌক ৰঁনথি ক্যা কর্ণধাব।

উঁহ্মাব স্বধাবকসঁ ন হমব,

ঞ সন্ত সমাজক থিক প্রতাপ। ।

3

<u>ঘসন খঠন্নী</u>

জেঠক দ্পহবি

ৰাঁবহো কনাসঁ উঁগিনি উঁগিনি ভীষণ জ্বানা

খাকাশী চঠ়ন দিনকব ত্রিভুরন ডাহথি জবি জবি

পছৰাঁ প্রচল্ড

রিঁবড় া উঁদল্ড

সন সন সন সন

ছন ছন ছন ছন

আগিক কণ সন

সন্তপ্ত ধূনি অছি উঁড়া বহন।

খোঁতামে পক্ষী সংচ মংচ

হিনরঁএ ন পাঁখি

খোনএ ন আঁখি

তরুতর পশু হাঁফৈ সজল নয়ন

চররাহ ভাগি ঘর গেল বিমন

তলহোর বঁলন পোখরীক পানি

জলচর-থলচর কাঁপএ থর থর

টাটী, ফড়কী, খিড়কী, কেরাড় লাগল ঘর-ঘর

ও অগ্নিবৃষ্টি !

নহি কতঔ রাঁষ্টমে রাষ্ট্রৈীক হো এখন দৃষ্টি

সংহার করত কী প্রকৃতি সৃষ্টি-

ও অগ্নিবৃষ্টি !

শ্রী মান নোকনি

জে ত্তন্দিন ৰঁনি

মসনংগমে ওংগঠন

শিবৰঁত ছনি–মিসবী ৰঁদাম ৰঁবফেং ঘোবন

নর্তিত ৰিজ্নী পংখা তব ছথি

সেহো ত্থশান্ত ৰাঁজথি হবি ! হবি ! !

কী কথা সজীৰক

ছাহবিযো খ্ভিনাষ কবএ ভেষ্টএ ছাহবি

জেঠক দ্পহবি !

ওা সময যদপি

ৰ্ঁচনী ঘব খাঁগন ছোড়ি তদপি

গিবহস্থক কোড়এ খেত এখন

কী কবতি ৰেঁচাবী !

খাঠ পহব দ্দৈৰক ডাঁগে খিছ পীষ্টনি

ৰিধরা পবিরাবহীন ৰিনষ্টনি

ছৌ মাসক একে টৌ ৰঁচা

ভাৰিক সম্বঁন

জে কানি বহন ছৈ ধূব ডঁপব

পবিৰোঁধ কোনা ক' কবতি তকব ?

শোিতোক খাৰঁ নহি ছৈক শেষ

প্বনি দূধক হএত কোনা সম্ভব ?

সহি তীনি সাঁঝ ঙা খাগ খাএন

ৰঁনি মজদ্বনী খঠ খন্নী পব

সূর্যোদযসঁ সূর্যাস্ত তক্ক

কবতৈক কাজ

নহি পনিপিখাগযো পারি সকতি !

সন্ধ্যাক সময

সংসাব খভয

ডঁগি চান সদয

শীতন জ্যাসেনাসঁ কএন হ্মদিত ব্রঁহ্মাল্ড সকন

নেৰুক হিত দৌড়নি হুঁকবি গায

ঠ্নৈ-ঠ্নৈ-ঠ্নৈ-ঠ্নৈ

টৈন-টৈন-টৈন-টৈন

ঘণ্টীক শৰ্দ্ধ

ঘব-ঘবসঁ ৰাঁহব ভেন ধূম

तेँयो भूखनि-प्यासनि बॅचनी
आँचन तव स्वपने प्वत्रा श्वपन
स्फूर्ति-स्फूर्ति पविधान मनिन
स्फूर्त्ती जागन
सौन्दर्य गवीरीसँ दागन
भूखक ज्ञानासँ जवक डर्वे
तारुण्य जकव खरितहिँ भागन
पाकन पानहुँसँ रॅठ़न-चठ़न
पीयव ও दूरॅव-पातव तन
फाटेन ও फ्फड़ ा पड़न ठोव
आमक फाड़ ा सन नयन
खाधिमे धএन जकव दुर्देर चोव
चिन्ता-चिड़ ैन केव चठ़न कोव
स्ववकाग बहन छे आंग जकव
प्रतिपन सा ! आशा रॅनि श्वंगोव
दे कने श्वन्न-जन प्राण जकव
अछि रॉजि बहन छनसँ नोवक,

सेँ रँनि कातबि

कह्ना क' डबि

कब जोबि कहन:

ओ घसन खठन्नी चनि न सकन

हम सरँ दोकानसँ घूमि-फीबि

छी थारिं बहनि

करू छ्पा खठन्नी द' दोसब

एसककथा हम

भ' गेन बाति

गिबहत, न थारँ देवी नगाउँ

भूखेँ-प्यासेँ हम छी मबैत

नेबैं बेंसाह

कूटैरँ-पीसरँ

रँचा भोबेसँ कानि-कानि

छटै-पटै कबैत खछि जान नैत।

ओ फेब थाएन भुकरँ' कपाब

कहुँ खसन खठन्नी खदनि-रँदनि

क' बहनि चनाकी साफ-साफ

बौ ! ठोंठ पकड़ि क' कब न कात

ओ डागनि अछि

देखही न आँखि

अछि ग्वड़बि बहनि

अरिताहिं ब्रुँधना सन स्वामीकें

चढ़ै चिरौं गेनि

नक्ष्मीक रौबिमे महाजनी

अछि चूका बहन

क्या अछि नहि ?

एहन अनष्ठीकें क' देत कात ?

मानिक !

हम कर्ज न ष्ठी मँगैत

अथरा नहि अएनहुँ भीख हेत्त

उँपजनें रौंनि टौ देन जाए

हम थिकहुँ अहीं केब प्रजा पूत

कै रौंबि एनउँ

ঽ্টি গেন ঽাঁগ

খন্নক মাবন খষ্টি হমব খাঁগ

জবনহা দৈর মবনো ন দৈষ্ঠ

কী সময ভেন

হা ! দেহ তোড়ি ক’ কএন কাজ

স্বপথো ন রৌনি খষ্টি ভেষ্টি বহন

তেঁ জগমে ঙা পড়নৈ খকান

উঁঠরিতহিঁ ডেগ নাগএ খন্হাব

মবি জাএরঁ এতগ

ককবা কহরৈঁ ?

হিত ক্যা নে হমব

খন্বচিতো পৈঘ জনকেঁ শৌভা

ভগরান ! খাহ !

গৈ ষ্টৌক ন ডব ?

কৈ খূন পচৈননি ঙা রঁল্ডা

বোগযোঁ ন ভঁগ

যগ–যগ দাবোগাজী জীরঁথ্

क' देरौ खून

गे भाग भाग

रँनिहाबकें द' क' उँचित रौनि

ऋनमे नगाएर की हमहिं दाग ?

ओ थपन भभटैपन थानक नग

तों देखा

थिकहुँ हम कान नाग

ओ ओना जाएत ?

यम माथ उँपव छे नाचि बहन

बौ, की तकैत छें मूँह हमव

छोटैका नोकौक एते ठेसी ?

चटै-चटै-चटै-चटै

ऋनिशेहँ्सँ कर्कशे भीमकाय

मखनाक चाटैसँ निस्सहाय

भू-ल्वण्ठित दनू माग-पूत

भ' गेनि रेंहोशे

तेयो सबोष

ক’ ৰ্জ্রনাদ

স্তুৈক্ষনৰাৰ্ূ ডঁঠনাহ গবজি:

মখনা ! মখনা !

কেনকৌক ভগন

না ৰেঁত হমব

নাবিক চবিত্রা তোঁ কী ৰ্ৱ্মৰেঁ ?

জীরনে ৰিতৌনহ্ঁ ঐ সৰমে।

দন–দন–দন–দন

মূচব্ ্া ছতো দেহ পব ৰেঁত বৃঠি

ৰস এক ৰেব খস্ক্ৈ ঞন্দন

শিশ্ব সংগহিঁ ৰ্চনিক হ্মঞ সৃঠি !

সরিষাদ হাসমে চন্দ্রমাক

ও ঘসন খঠন্নী ৰাজি ডঁঠন:

হম কত’ জাউঁ

খরনম্ব্ পাউঁ

কে শিবণ ?

ঘসন জনিকব খদৃঠি !

4

<u>নোটৈন সোটৈন রাতনিাপ</u>

<u>সোটৈন</u>

হযতৈ থার স্ববাজকাজ, হ কিছু কবর নহি
কবর চোবি সভ ছোড়ি , পূর্বজক রাঁত মান্য নহি

জে রজতাহ রতাহ হ্নক ঝঁহ দৃসি নের হম
খাযর ঘীউঁ মনাগ রাঁগকঁ দেখর হবদম

দঽ ডাকা টৌকা হবর কাকা তকসঁ ভিন্ন বহি
দ্বাবি দ্বাবি সৌং নবিপব, থানর ঘূমর সমস্ত মহি

<u>নোটৈন</u>

হো অনর্থ তো ব্যর্থ স্ববাজক অর্থ কবৈত ছহ
ফূসি ফষ্টক গপ চষ্টক ঘষ্টক সন ব্যর্থ গঢ়ৈ ছহ

নূবি শূন্য কী ব়ূঢ়া তোব সন দূবি ন জাযত
চোবক ঠোবক কঠোব ন কী ভনহোব সমাযত

খন নাশিন শাসন হযত, অগসিন কোহাক সন
মূহ কবহ জনি, ৰনি সগ্বন চানি চনহ পৌর্বিক অপন

সোংষ্টন
গদ্য-পদ্য গঢ়তাহ পঢ়তাহ নোক ভা জে
শক্তিহীন ধনহীন দীন সহতাহ শোক সে

জে প্রচংড প্বন দন্ড খেনি গপ অন্ড-বন্ড কৈ
সৰন বহত, সে সদন পূজ্য হোযত মক্খন খৈ

কাবণ বাজক কাজ সভ বহত সমাজক ৰীচ কব

অপনা ঘবমে ডব ককব ? জকব নষ্ঠ মহীসো তকব

নোঠন

হৌ স্ববাজসঁ মান সদা রিদ্বানক হোযত
নীচ কীচমে জৈত খৈত রহ্দল্ড ভূমগত

রিদ্যা বুঁদ্ধি রিরেক অনেক গ্বণক আনোচন
সৌং হযতা ভূপান পানতা প্রজা সদষ্ঙন

ধবম কবম ম সভ বহত "মধ্প" ন পারত কণ্ঠ জন
মানহ আনহ ছাগ রা ক্ষড়হবিসঁ নাথহ অপন
1931মে মৈথিনী স্বধাকবমে প্রকাশিত

গজন খংড (গজন)
মিথিনাক পূর্ব গৌবর নহি ধ্যান ঠৌ ধবৈ ছী
স্বনি মৈথিনী স্বভাষা রিম্ব আগিযেং জড় ছী

সূগো জহাঁক দর্শন–স্বনরৈত ছন তহী ঠাঁ

হা খাগ "খাগ গো" টৌ পঠ়া উঁচতা কবৈ ছী

হম কানিদাস রিদ্যা–পতি–নামছাড়া ঝঁহমে

রাঁড় ়ি কি তীত পঙ্খা সভ রঁকিমে ধবৈ ছী

ভাষা তথা রিভূষা খছি ঠীক খন্যদেশী

দেশীক গেন ঠেসী কী পাঁকমে পড় ়ৈ ছী ?

ও যত্র–তত্র দেখূ খছি পত্র সৈকড় ়া টৌ

খছি পত্র মৈথিনীমে একো ন তৈঁ ডবৈ ছী

(2212–122–2212–122) ১৯৩২মে মৈথিনী সাহিত্য সমিতি, দ্বাবা কাশীসঁ "মৈথিনী–সংদেশ" নামক পত্রিকামে প্রকাশিত

<u>গীত খংড(গীত)</u>

1

জনম খরধি হম খহীক চবণ ধয শিবণ খনত নহি

जागत छी

ग्राम देव सेवन तजि शिव भजि भाङक गोला खागत छी

गाम बजाय नेताक बनै सब स्वनि स्वनि बेद प्रवाह रिवो

जप तप तीर्थ बर्थ नहि कयलहुँ, भसम बमा श्वगबागत छी

ग्राम नाव भव निधिमे डूबडूब, कर्णधाब क्या नै भोला

क्रन्दन कै बहलहुँ रिमन, नाथ किए ग्वनसागत छी

की करुणा कमि गेल , हमब वा पाप पहाड़क होे शंका

ग्राशा भंग दोष बुझितहुँ, जे भंगक रिवशे ओंघागत छी

तबबँ नबक वा पड़बँ मधुपकें नहि परबाहि तकब कनियों

उठैत खहिक रिश्वास जगतसँ सैह स्वमिबि घबँड़ागत छी । ।

2

ৰঁননীহ গংগা জেঁ ওশী শীস মানা

খচন সোহাগরানী তেঁ শৈনরানা

নহি তঁ স্বনৈত দেবী সতী দেহ দাহে

রিযোগ রেদন রশী রঁনন রঁতাহে

সম্মত ন হোগতথি কদাপি রৈঁনরানা

কহাঁসঁ প্রীতি প্যানা

ওঁব কণ্ঠ রীচ কানকূষ্ট কেব ধাহে

ধহ–ধহ দৃগ জেঁসঁ ভেন মদন স্বভ্রাহে

তদপি ক্ষশৈন ছথি ভূতেশী নিবানা

রঁসি প্রেতশানা

মসানী রঁনৈত রিষ র‍্যান মানধাবী

কোটিযো ধথ্ব ভাঙো সঁখিযো খহাবী

প্বনি মৃহুঁজযে শির ধন্য জন্নরানা

মধ্প নেহানা । ।

3

ফাঁকৈ মোবী ভবি ভবি ভাঁগ, সাঁপো সোহবৈ সৌংসে খাঙ

জেবৈঁ পবিছৈ কোনা কৈ জৈতহুঁ মোগএ ডব

নঙঠৈ মসানী চকমক চানী সন চমকৈ ছৈ উজ্জব চানী

মাথামে সোভৈ ছৈ গাঙ, খাগূ মো কথমপি নহি ঠৌঙ

ঘব নে ঘবাড় ী, বঁযস ব্ঁঠ াবী, ধনমে ধন ছৈ বঁড়দ সরাবী

গৌবী হেতী গনি কে বাঙ, জখনে সিন্নবৌথিন ঞা মাঙ

মধ্প ন বাঁজী উমা ছথি বাজী থিক উচিত ব্যাহক বিধি সাজী

হেতৌ ওঋবৌনে কী বাঁঙ, মানি সকৈ নহি কর্মক ডাঙ । ।

4

খশিবণ শিবণ তোহব গ্বনি নামে

জপিখ নিবংতব খাঠো যামে

সেরয রয ভবি ক্যা শ্রী নাথে

ক্যা কানী পদ সেরি সনাথে

ভান রাঁন রিধ্ কে জে বাখৈ

গতি মতি সৈহ হমব হিয ভাখৈ

দোষ হমব কী গ্বণরঁহ স্বামী

দোষাকব ত্তখ ভূষণ নামী

সত্ত খশ্বচি হম যদ্যপি জানী

তদপি হ্মদিত ব়্ঁন্নি তোহি মসানী

ত্তখ পদ পংকজ মধ্ খভিনাষে

ঘ্মেয মধ্প চৌবাসী নাখে

5

মন নাগি গেন জৌं কনে ভুজগেন্দ্রহাবমে

চিন্তাক কাজ কোন ঐ সংসাব ধাবমে

জপ তপ উঁপাস তীর্থবাস কেব খাশি কী

কনিযোঁ রিভূতি ছূতি জৌं কয নী কপাবমে

যমবাজ শ্বাস পাশি ছোড়ি পাসসঁ জেতা

কৈনাস বাস দাস ঞ ব্ঁন্নি পড়ি রিচাবমে

ৰঁম ৰাঁজি ৰঁজা গান মধ্প চংদ্র ভানকেঁ

জৌं নী বিন্মা ৰঁন্মা ন ক্যা সকতাহ জানমে

6

হম তোরে পথ অনুগামী

হে হব কহরঁহ নাথ হমহুঁ তঁ ছী হেহবমে নামী। ।

তোঁ ভর নর্তক হম ভর নর্তক যুগ যুগসঁ রিখ্যাত

নাচি নাচি চৌবাসী নাখো ধহ কত ভূষা গাত

ত্তুঅ প্রিয ঝাড়ী সরঁ তবি ঝাড়ী হমহুঁ নৈত রঁদনামী। ।

অংগ ভুজংগ রিভূষিত তোহব কত ভুজংগ মম অংগ

রামা চবণ সেরকে তোঁ মম রামা চবণ উমংগ

তোঁ ভংগক প্রিয ককবো ভ্রু ভংগক হমহুঁ প্রিয স্বামী। ।

অশ্বচি মসানী অহাঁ নাথ অছি অশ্বচি সতত মম কায

বহিতহুঁ তোব অভিন্ন ভিন্ন কী ছহ বখনে প্রভু হায

মানিক মনে রঁনন বহ্ মধ্পো আরঁ ন বহত অসামী। ।

7

দের পিতব কত পূজন কএ ব্রত নির্জন বে

পাওন জীরন সরঁন দ্গ স্বত কেরন বে

কিন্তু ন সাস্ব ননদি ঘব, পতি ছথি ওঘব বে

নানন পানন কে কব কাঁপিঅ থব থব বে

ভেঁয তেন ন উরঁহৈন গবিরঁক জীরন বে

की नय पूत उंঙাবরॅ, খছি মন উন্মন বে

গজহ্নখ ষষ্টহ্নখ বাঁনক কে পবিপানক বে

ছোটি তেহন হম ভানক দরঁনি জংজানক বে

সদিখন উছনথি স্ববসবি, খহি খাঙগ ভবি বে

কোন পবি বাখ্ সম্হাবি, উঁপদ্রব সরঁ তবি বে

হো মন চনি দী নৈহব ভরথি নৈ হব বে

পাগ খসন্ব গিবিবাজক জেঁ দেন ঞ ঘব বে

মধ্প উমা জগদীশ্ববি চাকব বিধি হবি বে

পতি ভরনেশী তদপি দ্খ কর্ম সভক জড়া বে

8

ঐনা মৈনাক গেহ ব্বহা দ্নহা

হ্নি নযনা উঠায নাবদ ছনহা

কেশী সভ তঁ শ্বেত ছনি হ্নহমে নে একো দাঁত ছনি

তীন নযন বিশান ছনি খহিকেব গব মে মান ছনি

সংগে নাঙষ্ট খোড় তথা ব্বনহা। ।

ভূত প্রেত বেঁতান বঁনি বঁবিযাত তান ঠোকৈত ছৈ
তান তকব দেখৈত ডবসঁ ক্যা কনে ন ঘৈকৈত ছৈ
নেপি নেনে রিভূতি যথা চ্নহা। ।

জৈত পবিছহ কে ডঁছনি বহনৈ গংগাধব বে
খাঁখিমে ধধকৈত খননি জৈত জবি সবঁ ছাব বে
মৈনা কানৈ ছৈ ভেন রিখাক্ন হা। ।

গারিঁ গীত চ্মাডঁ চঠৈপঠৈ ছথি ডঁমা কেব প্রাণ ঙা
তীন ভুনক নাথ কবতা ব্যাহ হোগতে ত্রাণ ঙা
কাশী কান্ত সমান কে জগ দ্নহা। ।

9

হহবয হিয মহবয নযন নোব

দাৰুণ দুখনিধিক ন ওব ছোব
ৰাঁন ৰঁযস খেনেমে গেনে
যৌৰন যুৰতী সংগ গমেনে
কৈন ন কহিযো ভজন তোব। ।
আৰঁ কবৰঁ কী পাৰি ৰ্বুঠ়াবী
সাধন যোগ ন তৰ ত্রিপ্ববাবী
আধি ব্যাধি ৰাধিত খথোড়। ।
ঘৰ্ঘব কংঠ ৰাঁত পীড়িত তন
তৈযো হুঞ্চামে সীদিত মন
হমব হমব বষ্ঠ নো ন থোড়
খথ মধুপক তোঁহী টৌ দানী
কৰু কৰুণা খথৰা জে জানী
তোঁ ওঠ়ব হমছুঁ খঘোব। ।

10

ছী হম খনাথে তোঁ দীনানাথে
কহ দে সনাথে

দযাক কোশে কে খাশ্বতোষে

জোঁ গতি দেরেঁ নে খপকীর্তিক দোষে

নৈনা কনে দী তঁ হম ভনে ছী

হে ছোড়ু খপেক্ষা খাশে রৈদ্যনাথে। ।

সে তোব মাযা স্বত রিত্ত জাযা

হিত জান দেনে রঁনি ক২ রেঁহাযা

খারোঁ সম্ভাবী শিশ্ব চংদ্রধাবী

নে নীচ কৈনে বহি নীচ সাথে। ।

সদিকান কানী খপনে সে জানী

বহিতো মশানী রিখ্যাত দানী

সে তঁ খহীষ্টৌ মধ্পক ভবোসে

তেঁ প্রার্থনা ঞ হ্যগ জোড়ি হাথে। ।

11

খরিনয হম কিছু রিনয স্বনারী

জে জে রিরিধ রিষয ননচারেঁ

জগকেঁ জকবে বাগ নচারেঁ

নোন্বপ গন্দ্রিয গণহুঁ নচারেঁ

জকব রশ্থ যগ যগ ঝ্ঁহ রাঁরী। ।

তাহি সকন রস্তুক ন সকন হব

চিবস্থাযি র্ঁ্মিতহ্ঁ হম হে হব

বাগ তড় াগহিঁ ডঁরঁড্রঁ তোহব

ধ্যান তেজি প্বনি প্বনি ভর খারী। ।

বাগ নর্ষ্ব রিষযক খরসানে

নিশ্চিত জে নখি হো ন মনানে

রুচি পবিণাম শোক জানখি র্ঁধ

তৈ হিত তোব ভক্তি টৌ জারী। ।

তেঁ স্বন্দব শির সহ সরূপে

নিজ ছরিমে খন্ববাগ খনূপে

দৈহ মধ্পকেঁ জে রুচি ডঁদ্ভর

দ্খকেঁ দৃষ্ঠ ন গ্র হম গারী। ।

12

জাডঁ কহাঁ তজি তোহি প্ববাবী

কেরন এক বহন তোহব রঁন

দোসৱ দেরক দেখন ন দ্বাবী। ।

ৰাঁন ৰঁযস হম খেনি ৰিতাওন

যৌৱন যরতিক সংগ গমাওন

তুখ গুণ গৌৱর গারি ন পাওন

আৰ কবৰ কী পারি ৰুঠ াবী। ।

মদমাতন মানস নহি মানৈ

ৰিন্ব নগাম ঘোঁৈক সম ফানৈ

তেঁ ভৱ পতিত পতিত হম কানী

তোঁ কঠোৱ নহি কবহ প্বছাবী। ।

আশুতোষ কহৰহ তোঁ নামী

মধুপক ৰেৱ হেতউঁ ৰঁদনামী

আৰহুঁ কবৰহ পাব ন জঁ হব

কে ৰিশ্বাস কবত সংসাবী। ।

13

নাগনাথক আসানেথিত

ফণিফণানংকবণমণিপ্লত

হাবশোভিশেবীবনতিকা, বরিনিভোন্নসিতা।

কমন ক্ষম্ভ কপান মানা

কনিত কব নিকবাদ্রি রানা

ঋর্ধচন্দ্রাদ্ভাসি চূড় া ত্রিনোচন সহিতা।

সকন সর্বক্তক ঋধীশ্বব

ভৈবরাক নিরাস জনিকব

সে মধ্প স্বব–সেরিতা পদ্মারতী রিদিতা।

14

জবি বহনৈ হমব উঁদব ঘব হে

সাতো নিধিমে জন ন ততে

জে জনন মেটৌয সকত হব হে। ।

কী কহ্ব তোঁ করুণা তহি দেনহ

আশ্বতোষ ফ্সিযে ভ২ গেনহ

আরঁহ্ ওঠ়ব ঢ়ব ঢ়ব হে। ।

मबर्र न हम, खमरे छी
मृत्क रॉदो कण कणमे छी
पाँचो तत्व हमब घब हे। ।
केरन एखन कनेशे मात्र हो
ज्ञान ध्यानसँ हीन गात्र हो
शंकब मध्पक धरू कब हे। ।

खार्र महाखभियाने गष्छित
रिंन्व कनेशे जे बहगष्छ नक्षित
दैह दया से शेशिधब हे। ।

15

पाग रिंन्व जाग न रॅहाब हे द्नकखा द्नहा
सास्वबक ङा रेंरॅहाब हे द्नकखा द्नहा
सास्व देन मणिमय हाब हे द्नकखा द्नहा
तेजू मान नाग मणिखाब हे द्नकखा द्नहा
धथूब तेजि भाঙ खाहाब हे द्नकखा द्नहा

जिमि निशि छप्पन प्रकाश हे दुनकुश्रा दुनहा

एकेटा मैनाक सनसाव हे दुनकुश्रा दुनहा

लागै स्वनि फणि-फुफकाव हे दुनकुश्रा दुनहा

सहज सिनेहक साव हे दुनकुश्रा दुनहा

सवरोजि रचन उँचाव हे दुनकुश्रा दुनहा

कक्ष शिर ओ स्वीकाव हे दुनकुश्रा दुनहा

मो मधुपक गुंजाव हे दुनकुश्रा दुनहा। ।

दोहा खंड

१

की न प्रिया हित पति करै, मधुप नहटा मति कोष

पद तव पशुपति पड़न छथि कविते कानिक रोष

२

गुण श्वरगुण बुँनि नायिका करै मान श्वपमान

गंगा हवि पदपव शिरक शिवपव मधुप प्रमाण

३

किछ श्वपात्रकेँ दान दय मधुप न हो कल्याण

शंकव श्वा भस्मास्ववक श्वछि गतिहास प्रमाण

४

कर्मक फल भेटैतैँ कवत, केहनो बँनबँ महान

नीनकण्ठ नइटे बहथि सर्पशीयन भगवान

५

मध्प उँकाही शिश्वक हित विवूध सतर्क बहैछ

गंग चूत्तकि जड़ गजक्ष्खहि शिव दृगाग्नि तपवैँछ

ऐमेसँ किछु गीत अप्रकाशित छै आ ऐठाम जयप्रकाशे चौधवी "जनक"जीक शोधग्रंथसँ साभाव नेन गेन अछि ।



ঋাশীষ ঋনচিন্হাব

<u>ৰাঁন গজন</u>

নীপন পোতন চিক্কন চ্নক্ষ্ন
ৰেঁঠী হম্মব গ্বনগ্বন গ্বনগ্বন

তা থগ তা থগ থৈয়া থৈয়া
পাযন ৰাঁজৈ ৰুনঝ্ন ৰুনঝ্ন

কানৈ খীজৈ ৰুসৈ ফূনৈ

ফেৰো নাচৈ ছনছন ছনছন

দৌড়ৈ সদিখন ঋঁগনে ঋাঁগন

খসিতো বহনৈ ঠ়ৢনক্ষ্ন ঠ়ৢনক্ষ্ন

পঠ়তৈ নিখতৈ কবতৈ কাজ

ঐমে নৈ কিছু গ্বনধ্ন গ্বনধ্ন

সভ পাঁতিমে খাঠ টা দীর্ঘ খছি। খংতিম শেবক পহিন পাঁতিক খংতিম নঘ্ সংস্কৃত পবংপবান্বসাব দীর্ঘ মানন গেন খছি

ৰাঁন গজন

ছৈ ওসূ ৰীসূ জীসূ মীসূ
হম্মব ৰৌখাকেঁ ৰড়কা ৰূম্মূ

জীৰূ জাৰূ খা ঠনঠন পাদূ
খিনখিন ঝিনমিন চ্নক্ষন সন নাগূ

ৰৌখাকেঁ নানী স্বঁদব স্বঁদব
হ্নকব গানেপব হবদী পীসূ

উঁপঠৈন পিসতে ৰৌখাকেঁ মৌসী
হ্নকব নাম কনী জন্দী ৰাঁজূ

ৰাঁৰাকেঁ ধোতী ক্ষবতা গমছা
নানাকেঁ ঢেকো জন্দী ঘীচূ

সভ পাঁতিমে 222+222+222 মাত্রাক্রম খছি।
দূটা খনগ-খনগ নঘ্কেঁ দীর্ঘ মানৰাক ছূট নেন গেন খছি।
সংবঁধ ৰঁদনিতে সংবঁধবাচী শব্দকেঁ ৰঁদনন জা সকৈএ।
উঁদাহবণ নেন তেসব শেবমে নানী ৰঁদনা দাদী, ৰাঁৰী,

पीसी, मौसी काकी सेहो आरि सकैए। तेनाहितें चाबिम आ पाँचम शैबमे सेहो ब्रॅदनन जा सकैए।

<u>ब्राॅन गजन</u>

चिन्नी खेनहुँ चोबा चोबा

आबो धेनहुँ चोबा चोबा

भैया छै ब्रॅड़का तँग हमहुँ

ब्रॅड़का भेनहुँ चोबा चोबा

हमबो जे कनियाँ बहितै से

खुब्ब गेनहुँ चोबा चोबा

गेन छनहुँ गाड़ी पिकनिक नेन

आँगन एनहुँ चोबा चोबा

जे भेटैन जतु भेटैन से

सभटा नेनहुँ चोबा चोबा

सभ पाँतिमे 22+22+22+22मात्राक्रम अछि चाबिम शैबक पहिल पाँतिमे अनग-अनग नघ्कें मिना कः दीर्घ मानन गेन अछि। एही पाँतिक अंतिम नघ् अतिबिञ

ঋছি।

<u>ৰাঁন গজন</u>

মোজা দে জ্ত্তা দে সীড়ক দে স্বগষ্টৰ দে
ৰঁড় ঠঁডা নাগৈ ৰঁস চন্দবি দে মফনৰ দে

স্বনি নে হমদ্ধুঁ কবৰেঁ খূৰঁ তমাশা সৌঁসে
তঁতৰ দে ঋঁতৰ দে জঁতৰ দে মঁতৰ দে

ৰঁড় ভূকৈ ছৈ কবিযা ক্ষক্কৰ জোৰে জোৰ
ঙ্টৈতে এক্কৰ হুভী ৰঁস নাঠী নমহৰ দে

কহ্ফ জমি গেনৈ ছাতীমে খোখীপৰ খোখী
তঁগ তৰকাৰী ৰেঁসী কড়্গৰ দে ঝঁসগৰ দে

চিন্নী দে গূড় া দে ক্ষচা সংগে দূধো
খঙ্গা খেৰৌ কম হমৰা ৰেঁসী মিঠগৰ দে

সভ পাঁতিমে ৰাঁৰহটা দীর্ঘ ঋছি।
দূ টা ঋনগ-ঋনগ নঘ্কঁ দীর্ঘ মানৰাঁক ছূটৈ নেন গেন ঋছি।
তেসৰ শেৰক পহিন পাঁতিক ঋঁতিম নঘ্কেঁ সংস্কৃতক হিসাৰেঁ দীর্ঘ মানন গেন ঋছি।

বাঁন গজন

খেনে বহিযৈ খামক ঝচা
চিনিযো নাগৈ খট্টে খট্টা

হমবা নামে কোড় া বাঁতী
হমবে নামে খ্ট্টা খ্ট্টা

হমবা সন কে ছৈ উঁকপাতী
সভকে মাবী ঘ্স্স ঘ্স্সা

ছৈ ঝিন্নী কচবী খানূচপ
ঝবহী ফাঁকী ফক্ক ফক্কা

নৈ নীক নগৈএ মস্ঠবরাঁ

নীক নগৈএ খঙ্কা পঙ্কা

সভ পাঁতিমে 22+22+22+22 মাত্রাক্রম খছি। খঁতিম শৈবক দূনূ পাঁতিমে খনগ- খনগ নগূকেঁ দীর্ঘ মানবাঁক ছূট নেন গেন খছি

<u>ভক্তি গজন</u>

শাবদে শাবদে শাবদে
নীক বঁনবাঁক খাধাব দে

জয় রিজয় কেব সংগে কনী
রেঁরেঁহাবক স্বখদ হাব দে

নৈ মহন নৈ খটৌবী ক্ষদা
একটৌ নীক সন চাব দে

দূব রৈঁসন হমব নোক রেদ
নীক ছৈ সে সমাচাব দে

নোক ছৈ খার্ঁ খনচিন্হবরাঁ
কিছু দে কী নৈ দে চিন্হাব দে
সভ পাঁতিমে 212+212+212 মাত্রাক্রম খছি।
মঞাক খঁতিম পাঁতিমে দূ ঠাম দীর্ঘকেঁ নঘ্ মানন গেন খছি
চাবিম শৈবক পহিন পাঁতিমে খঁতিম নঘ্ ছূটৈক তৌবপ ব খছি।

<u>গজল</u>

জংগলবাজ দংগাৱাজ

জী মহবাজ জৈ মহবাজ

ছৈ বেঁকূফ দেশীক লোক

নেতা লগ নে কনিযো লাজ

ফবসা খানি গবজৈ খূৱ

মংতব কৰ্টি মবৈ নেমাজ

নেতা নীক বেঁষ্টো নীক

জনতা সভকেঁ খতৱেঁ কাজ

খলচিল্হাব গাবৈঁ খূৱ
ফৰ্সী গীত সস্তা সাজ

সভ পাঁতিমে 2221+2221 মাত্রাক্রম অছি দোসব আ চাবিম শেবক দোসব পাঁতিমে এক–একটা দীর্ঘকেঁ নঘ্ মানন গেন অছি

<u>গজন</u>

রঁহ্ত রেঁব হমবা দেখনে হেতৈ

রঁহ্ত রেঁব হমবা চাহনে হেতৈ

অনোপিত সগব দুখ কেকবো অরিতে
রঁহ্ত রাঁটি ওকব জোহনে হেতৈ

গযাদক বমনগব ফীনডমে ধীবে

সঁ গুড়কৈত হংস্কী বোকনে হেতৈ

ছনৈ বৌদ রঁড় কড়গব সিনেহক আগ

অদৌড় ি হঁসীকেঁ খোটনে হেতৈ

রঁহ্ত কানি অনচিন্হাব রঁননৈ ও

কবেজা কিযো রঁড় তোড়নে হেতৈ

चाबिम शेबक पहिल पाँतिक अंतिम लघु छूटैक तौबपब अछि सभ पाँतिमे 122-1222-1222 मात्रक्रम अछि

<u>गजल</u>

हम बॅड़का रामपंथी छी
जोगाड़ ी दामपंथी छी

किछु चिखना चीखि रौतल संग
नानीकेँ जामपंथी छी

नित हमबा स्त्री प्रसंगक चाह
हम असली कामपंथी छी

गाँधीकेँ मावि बैसल जे
से हमही बामपंथी छी

कवतें ओ काज भवि भवि दिन
हम खाली नामपंथी छी

सभ पाँतिमे 222+2122+2 मात्राक्रम अछि

দোসব খা তেসব শেবক পহিল পাঁতিক খঁতিম লঘ্ ছূটৈক তৌবপব লেল গেল খছি।

<u>গজল</u>

দেশে দশা নীকে হেতৈ
দেহ দশা ঠীকে হেতৈ

জনতাকে খূনক কীমত
রঁস পানক পীকে হেতৈ

জী কহলে হাঁ জী কহলে
নোকো সভ জীকে হেতৈ

ঐঠাঁ মবরাঁ কান সখী
টেপী নে টীকে হেতৈ

খনচিন্হাবক ডেগ কনী
রঁঠ়ি গেনে নীকে হেতৈ

সভ পাঁতিমে 22+22+22+2 মাত্রাক্রম খছি।
দূটৌ খনগ-খনগ লঘ্কেঁ দীর্ঘ মানরাঁক ছূট লেল গেল

<u>গজল</u>

আগ ফেরো এলৈ খলচিন্তাব হমব সাবাপব
আগ ফেরো জবতৈ খলচিন্তাব হমব সাবাপব

তাগ সন ঝটপট্ৈ ছুটি গেলহুঁ লোভমে পড়ি সে এঠাঁ
আগ ফেরো কহতৈ খলচিন্তাব হমব সাবাপব

কমলা কোশী গংগা জমুনা বাঁগমতী ছৈ তৈযো
আগ ফেরো ডুবঁতৈ খলচিন্তাব হমব সাবাপব

খসগবেঁ বঁড়ি জড়িলৈ জবিতে বহলৈ সদা হমবা সংগ
আগ ফেরো জবতৈ খলচিন্তাব হমব সাবাপব

হাথপব লিখলে ছল কহিযো নাম সিনেহক নেহক
আগ ফেরো লিখতৈ খলচিন্তাব হমব সাবাপব

সভ পাঁতিমে 2122+22+2221+12222 মাত্রাক্রম অছি।
দোসব, তেসব আ চাবিম শেবমে লঘুকেঁ দীর্ঘ মানবাঁক ছূট লেল গেল অছি। সংগে-সংগ চাবিম শেবক পহিল পাঁতিমে একটা অতিবিক্ত লঘু অছি।

গজল
হমরো মোন পিযাসনে বহি গেলৈ
হুনকো মোন পিযাসনে বহি গেলৈ

চুপ্পাচাপ রহ্ত পিযা দেনক ও
তৈযো মোন পিযাসনে বহি গেলৈ

তোবা দেখি কহ ধন্য ব্রুঝনক জে জে
তকরো মোন পিযাসনে বহি গেলৈ

খপ্পন নোক তঁ সহজেঁ খগিযাসন ছৈ
খনকো মোন পিযাসনে বহি গেলৈ

ঠোপে ঠোপ চুরেঁ ছলৈ বস তৈযো
সগরো মোন পিযাসনে বহি গেলৈ

চাবিম শৈবমে একটা দীর্ঘকেঁ নঘ্ মানরাক ছূটৈ নেন গেন খছি।
সভ পাঁতিমে 2221+12+12222 মাত্রাক্রম খছি

**जगदानन्द झा 'मनु'**

<u>बाल गजल</u>

नानी गेलै देखै लेए गामीमे खानू

नाग उठा क' ओकर भगलै नानू

आँखि झनि चाबमे रंग बकारे छै

कानू कौआ रमन कतेक छै चानू

केहेन होग छै ओ भोटक नाटक

रनि गेलै बाज मंत्री चोबरा कानू

झटै पटै नेना सभ दौड़ क' आरे

देखमी देखमी कते नचै छै भानू

द' दे नानी आर 'मनु'कें दू कपैया

नै सोचै मनमे कोना एकबा टौनू

(सवन रार्शिक रहव, रर्श १३)

<u>गजल</u>

सपना हमर हम रीव रनी

कबतबँ कवी आ धीब बँनी

जे देशकेँ अपमान करै
ओकर करेजक तीर बँनी

सबँहक सिनेहक मीत बनी
ककरो मनक नै पीर बँनी

नारी समाजक काज सदति
धरतीक नै हम भीर बँनी

किछु काज 'मन्न' एहन तँ कवी
मरियो कऽ आँखिक नीर बँनी
मात्रा क्रम :२२१२-२२१-१२

उमेश मण्डल

अछि क्षुदा सबँहक एक

গামক দেশ
ভাবত রেঁস
অপনা-অপনা আঁখিএ দেখ
গামক দেশ
ভাবত রেঁস
ভায দেখি-দেখি, ভায দেখি-দেখি... ।

নদী অনেক
নালা অনেক
উদ্গম অছি হ্মদা সবঁহক এক
ধাব অনেক
ধাবা অনেক
লক্ষ্য অছি হ্মদা সবঁহক এক
গামক দেশ
ভাবত রেঁস
ভায... ।

কাজ অনেক
রেঁবহাব অনেক
রিধি অছি হ্মদা সবঁহক এক
বাঁট অনেক
বঁটৈহী অনেক
মংজিল অছি হ্মদা সবঁহক এক
গামক দেশ
ভাবত রেঁস
ভায... ।

চ্ন্হি অনেক
ব্যংজন অনেক

স্বস্থ বহবঁ খছি হ্মদা সবঁহক উঁদেস
বোগ খনেক
ঔষধি খনেক
বৈদ্য খনেক
বৈদশালা খনেক
পথ্য-পবহেজ খছি হ্মদা সবঁহক এক
গামক দেশ
ভাবত বৈঁস
ভায... ।

কর্ম খনেক
ধর্ম খনেক
মর্ম খছি হ্মদা সবঁহক এক
গাম খনেক
বাজ্য খনেক
বাষ্ট্র খছি হ্মদা সবঁহক এক
গামক দেশ
ভাবত বৈঁস
ভায... ।

ভাবত হমব পহিচান ছী

হম নৈ কিযো খান ছী
ভাবত হমব পহিচান ছী... ।

বিশ্বক মহান দেশ ভাবত
জেতএ খছি ভবন বিচাবক
খাধ্যাত্ম দর্শন একব প্রমাণ ছী
শ্রদ্ধা-প্রেম খাপসী ভাযচাবা

ভারতক অনুপম গান ছী-২
হম নৈ কিযো... ।

গাম-গামমে অছি রিহাব
জেতএ ভবন অন্নক ভণ্ডাব
মাটি-পানি একব প্রমাণ ছী
আত্ম নির্ভব কিসানী জিনগী
স্বতংত্র ভারতক ও গান ছী
হম নৈ কিযো... ।

হনক চিন্তা ছোড়ি কাজ
জেতএ কবৈত অছি এক-এক নান
কৃষি-কর্ম একব প্রমাণ ছী
শ্রমিক, তপস্বী আ তিযাগী
সম্পূর্ণ ভারতক পহিচান ছী
হম নৈ কিযো... ।

খণ্ডন-মণ্ডন কেব উঁদেস কল্যাণ
জেতএ বঁসৈত অছি ও জাযগান
জন-গন-মন একব প্রমাণ ছী
দযা-করুণা-শ্রদ্ধা-সিনেহ
মানরতা ভারতক শান ছী
হম নৈ কিযো আন ছী
ভারত হমব পহিচান ছী ।



বিনীত কুমাৰ ঠাকুৰ, শিক্ষা–এম. এ. অংগ্রেজী, ললিত নাৰায়ণ মিথিলা বিশ্ববিদ্যালয, দৰভংগা, পী. জী. ডিপ্লোমা অন জর্নলিজম এণ্ড মাস কম্যুনিকেসন, নালংদা খুলা বিশ্ববিদ্যালয, পটনা, বৃত্তি– প্রখংড শিক্ষক, অংগ্রেজী মধ্য বিদ্যালয বিস্ফী, মধুবনী, পতা– গ্রাম–পোস্ট– কমতৌল, জিলা– দৰভংগা (বিহাৰ) –847304

কবি বনাম নেতা

কবি ছী হম

তেঁ ভুখে মৰৈ ছী

জৌঁ বনিতী কোনো নেতা

খূব খূব গপ্প হমহুঁ হাঁকিতী

কে হমৰা সঁ ঠেক্কৰ নেতা । ।

সম্মেলন মে কেও নহি আরে

মংচ বৈঁস সবঁ করি পছতারে

আযোজক কে এহনি মান

জেনা কেও ছ্নকা চূনা লগারে

বিক্রেতা কে বহলে কী হৈত

জোঁ নহি বহত ক্রেতা ।।

আবঁ স্বনূ নেতা কে বাঁত

সভা মে নহি ধব কে লাত

ঝব-ঝব গিরৈ ঝস্কী

জেনা কোনো জলপ্রপাত

ভূলোক মে এতেক লোকপ্রিয

কী হৈত জোঁ স্বর্গ মে জৈতা ।।

করি ছী হম

তেঁ ভুখে মরৈ ছী

জোঁ বহিতী কোনো নেতা

स्वखन स्वखन गप्प ठमह्ँ ं ठाँ ंकिती

के ठमवा सँ ं टैक्कव नेता ।।

पाव नगाडँ

थ्वसवा थ्वठी के नागन थ्वछि,

पाव नगाडँ ।।

टूटि टूटि रिंखवन ठमव

संसाव सजाडँ ।।

थ्वगव रिंना प्वजनी भगवन्,

नहि फून चठ़ ैनी चोवी के ।

दीप जनैनी ठम प्रेम के,

फेवनी मनका रिंन डोवी के ।।

फेवनी मनका रिंन डोवी के ।।

पीड़ ा थ्वछि एठन बॅड़का,

ककवा थ्वनका ठम ध्यान कव्ठ ।

কোন তান কে জন নির্মন,

কোন সরোরব স্নান করু । ।

কোন সরোরব স্নান করু । ।

খসবা খসী কে নাগন খছি,

পাব নগাওঁ ।

টুটি টুটি রিখবন হমব

সংসাব সজাওঁ । ।

<u>কখন ঙা ঠঁডী জায</u>

খোঁখি বহন ছী বাতি স ॅं,

কখন ঙা ঠঁডী জায,

নাগি বহন খছি ঠঁডী ঐ রৈব,

রঁনি গেন ঘব জমায ।

রঁড দিক্কত হমবা স ॅं পূছু,

কোনা নহাযরঁ খপনে বূঁঝু,

হাথ–গোব খছি ঠিঠ্বন,

দেহ নৈ ঙা গবমায ।

বৌদ নগৈ যা উঁগত,

হরা হ্মদা নৈ রুকত,

ঘব সামান খছি পসবন,

গেস্ঠ নৈ কোনো খায ।

এক তঁ ওহিনা নৈ র্ব্মায যা,

কাবিযো কনিযা গোব র্ব্মায যা,

ওহি পব সঁ ঙা ধ্ধ–হ্মহাসা,

স্পীড পব ব্রেঁক নগায ।

<u>**খপনেমে কিএ নড়ৈ ছীঃ ?**</u>

সাঁচ খছি সেঁষ্ঠ পবসেঁষ্ঠ,

ঙা ঘব নৈ খছি পবমানেঁষ্ঠ ।

এনা কিএ কবৈ ছী ?

খপনেমে কিএ নড়ৈ ছীঃ ?

খপনেমে কিএ নড়ৈ ছী় ?

রঁসয ওমানক দ্নিযাঁ ।
স্বীনী তানক দ্নিযাঁ ।
এহন সজাঙঁ ওা ধবতী,
জেনা পান খাব র্ঁনিযাঁ ।
মনমে কিএ ধবৈ ছী ?
খপনেমে কিএ নড়ৈ ছী় ?
খপনেমে কিএ নড়ৈ ছী় ?

কেও দ্খমে পড়ি জাএ,
সভক খাঁখি ভবি জাএ ।
কাগজক ঢ্কিড় াসঁ,
কেও ধন্নিক নৈ র্ঁঝন জাএ ।
ককবো সঁ কিএ জবৈ ছী ?
খপনেমে কিএ নড়ৈ ছী় ?
খপনেমে কিএ নড়ৈ ছী় ?

খঁতিম টৌগম জে খা জাএত,
তখন কিছু নৈ ফ্বাএত ।
খপ্পন সোচি কঽ কথনী–কবনী,
খাঁখি ডৱঁডৱাঁএত ।
খখনে সঁ কিএ নৈ সোচৈ ছী ?
খপনেমে কিএ নড়ৈ ছী় ?
খপনেমে কিএ নড়ৈ ছী় ?

গৌৰীশংকৰ সাহ

ক্ষণিকা

কাগন ফেবো দিৰানী হেত, চাৰু দিস জৰত দীপঁ, ঘৰ

ঘব মে খ্শিমানী হেত,খংগনা খংগনা ঘ্মতী মগযা দূব সভক কংগানী হেত,কাগন ফেব দিরানী হেত ।

দিন সঁ নিখনে বহী হম গীত,হ্মদা গাগবঁ কিযো খাউঁব দেনক,কপাব জবন ছন তগ ন ,দিন সঁ চাহনে হম বহী,হ্মদা পাগবঁ কিযো খাউঁব নেনক ।

– (খাজ্‌ক রিঁযাহ) –খাবঁ রিঁযাহ নগ রিবঁাদ হোগ ছৈ,মাছক মূড় । পব সনাদ হোগ ছৈ,সমিযানা নগ পংডান হোগ ছৈ,ডেগ ডেগ পব বঁবাঁন হোগ ছৈ,খর্চ কবৈত কন্যাগত কংগান হোগ ছৈ,সমটৈত সমটৈত বঁড়ক বাঁপ মানামান হোগ ছৈ,পংডিতো –ঠাকূব জজমান সঁ মোগব নেহান হোগ ছৈ,বঁবাতিযো সবঁ খাগত– খাগত বেঁহান হোগ ছৈ,খস্সী বঁকবী সংগে হ্মর্গো হনান হোগ ছৈ,মন্বখ বহিতো মন্বখ চংডান হোগ ছৈ,বঁবক হ্মঁহ পব একটা কমান হোগ ছৈ,ওকবো কসনাগ কমান হোগ ছৈ,গহো খপনে খাপ মে একটা সবাঁন হোগ ছৈ ,কি ,রিঁযাহ কিযাক এতেক বঁদহান হোগ ছৈ ।

উঁ ভোজ, ভোজ নগ জগহ মে দহী নগ পোবেন,উঁ খাঁগখ খাঁগখ নগ জগহ মে কহিযো পাগন নগ নোবেন,উঁ শিববঁত, শিববঁত নগ জগহ মে চীনী নগ ঘোবেন,খা উঁ রিঁযাহ রিঁযাহ নগ জগহ মে নীক জকাঁ সম্বঁধ নগ জোবেন ।

– (পিযাক) – দ্নিযা মে কে নগ পিযাক খছি,কিযো গাজা পিবৈঁত খছি,কিযো গম পিবৈঁত খছি,কিযো পনোথিন ত কিযো বম পিবৈঁত খছি,হ্মদা ফর্ক

এতৱেঁ ,কিযো কখনো কখনো ত কিযো হবদম পিৱেঁত খ্ছি ।

বাগতক চান ছি খহাঁ,মধ্ব হ্মস্কান ছী খহাঁ,হঁসৈত বহী সদখৈন জিনগী মেঁ,কেকবো জান ছী খহাঁ, খহাঁকে দেখ কতেকো কে ৱঁড কীছ হ্ড় ৷গত খ্ছি,কতেক কে নৈন ত কতেক কে খামো জ্ড় ৷গত খ্ছি,চংডান সন গর্মী মে পরনক ত্তহ্ফান ছী খহাঁ, গৌবী শংকবপ শান ছী খহাঁ ।
(হমব মন) কোন হৈনা কেনৌ খহাঁ,হমব গপ হমবে মন নগ মানৈত খ্ছি,কহনৌ জখৈন মন কে, ৱো খহাঁক নগ ককবো খাউঁব ছি,কেকবো খাউঁব নেন এন খগছ ৱো দ্নিযা মে, ৱেঁচাবা তখনে সঁ কানৈত খগছ ।
ৱঁতাহ খগছ, ৱ্ঁববঁক খগছ হমব মন, তগ ন খনকবো চীজ কে ৱো খপন মানৈত খগছ,

মেঁহদী জকাঁ হাথ মেঁ নগা কে বাখৱঁ খহাঁ কে, স্ববমা জকাঁ খাখিঁ মে নগা কে বাখৱঁ খহাঁ কে,এক ৱেঁব কগহ ত দিখ হমব ছী খহাঁ,ভগব জিনগী কবেজা সঁ নগা কে বাখৱঁ খহাঁ কে ।



ডাॅ০ শেশিধব হ্মমব“রিদেহ”, গ্রাম – ৰুচৌন (দ্নাবপ্বব ৰুচৌন), পো০– মকবমপ্বব, জি০ দবভংগা, পিন – +৪৭২৩৪

মৈথিনী ৱর্ণমানা (করিতা)

ঋ সঁ ঋষ্ক্ঋা, **ঋা** সঁ ঋানূ, **গ** সঁ ভেনৈ গজোত ।

ঙা ঙানাব ঋা **ঙঁ** সঁ ঙঁন্নূ, **ঙঁ** কেব ঙঁন ছৈ মোঁট ।।

এ সঁ এক ঋা **ঐ** সঁ ঐহরঁ, **ও** সঁ ভেনৈ ওসাবা ।

ঔ প্রাযঃ "ঋও" নীখন জাগএ, মৈথিনীমে রেঁচাবা ।।

ঋং ঋংগূব ঋা **ঋঃ** রিসস্থা কেব চিন্হমাত্র ভ২ সূতন ।

ঋৃ সঁ ঋৃষি ঋা ঋৃক্ষ ভান্ব ছৈ, ঋৃচা রেদকেব রূঁম্মন ।।

ঋৃ কেব দীর্ঘ রূপ রিন্ব মৈথিনী, ক২ নৈতছি সংতোষ ।

ক কনৈন, **খ** – খাঁট ঋা **গ** সঁ গদহা ছৈ নির্দোষ ।।

ঘ সঁ ঘোড়া ঘাস খা ঘোড়ন, **ঙ** ষ্ট্রে খানী হাথ ।[১]

চ সঁ চৌকী, **ছ** সঁ ছৌঁকী, **জ** সঁ ভেনৈ জহাজ ।।

ঝ সঁ ঝৰ্ব্বা যা ঝাৰ্রা কদ্রু, **ঞ** প্রাবম্ভ নে শৰ্ঙ্ক ।

ঽ সঁ ঽমাঽব, **ঠ** সঁ ঠেনা, **ড** ডম্ফা কেব শৰ্ঙ্ক ।।

ঢ সঁ ঢাকী – ঢৌখা – ঢৈঁচা, **ঢ়** ফবাক উঁচাব ।

তহিনা **ড** খা **ড়** মৈথিনীমে, খনগ – খনগ উঁচাব ।।

ঢোনক কেঁ ঢ়ানক জ্নি নীখূ খা পঢ়্খা কেঁ পঢ্খা ।

ড সঁ ডমৰু, **ড়** বৰ্ব্বড় মে, হিন্দী নঞিং ছ্বী ৰৌখা ।।

ঢোঢ়ী মে দ্হ্ সংগ – সংগ, তহিনা ঢাঢ়স মে

দেখিযৌ ।

পঠ্ঁ ছী মৌথিনী মৌথিনী ৰাঁজূ, হিন্দী সনি নে ৰঁজিযৌ । ।

ণ সেহো নিঃ শৰ্ঙ্ক ম্দা উঁপযোগ ৰঁহ্ত খছি একবো । ২

হল্ডা – হল্ডী, ঠণ্ঠা – ঠণ্ঠী, খল্ডা – খল্ডী সগবো । ।

ত সঁ তৌনা – তৰঁনা – তকখা, থ সঁ থৌকা ফূনক ।

থহ্ন গাএ ৰঁকবী খা মহীষক, থান পএব মে নাগন । ।

দ সঁ দীপ দূধ খা দহ্নী, দূবা – দবৰঁজ্জা ও দনান ।

ধ সঁ ধবতী ধাপ ধবোহবি, ধহ্নী ধোতী ধাব খা ধান । ।

ন পাঁচম ব্যঞ্জন ছৈ দ্নাব্দ, ৰঁহ্ত জকব ৰেঁৰঁহাব ছৈ

।

নদী নাহ নঠ়ি খা   খা নেরোঁ,   নাবিকেব ও নাক ছৈ
। ।

প সঁ পানি খা **ফ** সঁ ফূন – ফব, **রঁ** সঁ রঁকবী রঁ্ঘনে
।

ভ সঁ ভাবত দেশী খপন ছী, **ম** কেব মহিমা স্বনি নে
। ।

ন সনি **ম** কেব হিস্সামে সেহো, শঙ্কক রঁহ্ত পথাব
।

ম সঁ মড়ু খা মাছ মখান খা মাএ মৈথিনীক প্যাব
। ।

য সঁ যহ্মনা কহবৈঁ জহ্মনা, **ব** – বস্সী মজগূত
।

ন সঁ নারা চন্ – চন্ রাঁজয, নারাঁ তকবে রূপ
। ।

संस्कृतक जे मून शेष्ठ, ओहिमे **र** केब रेंरँहाव ।

मिथिनाभाषा **र** केब रँदना, **रँ** केब रँड़ उंचाव । ।

श सँ शंख – शबीफा – शनगम, **ष** केब मान छै श्वप्प ।

ष रँह्धा मैथिनी भाषामे, **ख** केब काथाकप्प । ।

भाषाकेँ "भाषा" पठ़ैछ केओ, श्वान कहैतछि "भाखा" ।

उंचावण दुह् छी प्रशस्त, पव निखना जाएछ "भाषा" । ।

ष केँ रँह्धा **ख** रँजैत छी, भाषा कहनहुँ भाखा ।

षष्ठी – खष्ठी स्वनने होएरँ, श्वभिनाषा – श्वभिनाखा । ।

स सँ सिन्दूव सिउँथ श्वा सपवी, सार्ब्रुन सेरँ सेमाव ।

হ সঁ হাথী – হাথ – হৃদয আ **হ** সঁ হোগছ হজাব
। ।

ক্ষ – **ত্র** – **জ্ঞ** সংযুক্তাক্ষব, মানৈত অছি প্ৰবনা ভাষা
।

পব স্বতন্ত্র সনি আখব তীনূ, রিচবএ নরকা ভাষা । ।

ক্ষত্রিয – বক্ষক – ভক্ষক – বক্ষা মে **ক্ষ** হ্নকী মাবএ
।

ত্র – ত্রিশূন, ত্রিভুবন, ত্রিবেণী; ত্রি তঁহ তীন কহাবঁএ
। ।

জ্ঞ সঁ জ্ঞান, আ জ্ঞান সঁ জ্ঞানী, সংজ্ঞা নাঁও কহাবঁএ ।

রিজ্ঞানক ঙা যুগ ছী রৌআ, জিনগী সবন বঁনাবঁএ । ।

<u>**ভেষ্টত মজূব কতহ – মিথিনাকেব ৰঁচা**</u>

চ্নারক ৰোখাব ছৈ,

সভ কেও ৰেঁহান ছৈ,

তকনহ্ ভেষ্টৈছ কেও,
নেতা নে স্বচা । ।

মিথিনাক খাঁচ পব,

বোষ্টী খছি সেকি বহন,

মিথিনেকেঁ ৰেঁচি বহন,
নৰঁড় া খা ন্বচা । ।

ভাষণমে মিথিনা ছৈ,

ভাষণমে মৈথিনী,

ঘহব ওকব –
মৈথিনী ৰূঁমষ নে
ৰঁচা । ।

মিথিলাক জনগণ ছৈ,

দিল্লী খা পটনা নএ,

ভোটক জোগাব রঁস,
জীত রঁযূ পক্কা । ।

যোজনাক রাঁত ভেন,

দেশক রিঁকাশ নেন,

ভেটত মজূব কতহ –
মিথিলা কেব রঁচা । ।

দেশক খজাদী কেব,

সত্তবি খছি নাগি বহন,

পব
নে উঁদ্যাগ এতএ, নহি
ঞে ছী ধহ্মা । ।

সবকাবক নীতি ওা,

নঞি জানি কেহেন ছী,

ভোগি বহন ক্ষহবি
বহন, মিথিনাক রঁচা । ।

প্রদেশীক জরাঁব ভন,

মিথিনাক পাত পব,

মড়ু্ থাক বোটী খছি,
মাঁগূ নে ক্ষচা । ।

থান ভাগ দেশীক,

জোগাব কবএ পেষ্টক,

পোন্হারঁএ ক্ষষ্ট্মে ছহ,
দেশে সক্ষচা । ।

হব ভাগ দেশীক,

জঁ রঁনতে উঁপোদক,

তঁহ তোঁহী কহহ, কে
হেতে উঁপভোক্সা । ।

<u>হম খা মৈথিনী (করিতা)</u>

নোক কহৈতছি, ছী ব্রাহ্মণ খহাঁ, তেঁ নীখি
সকনহুঁ মৈথিনী ।

জএহ রজৈত ছী, সএহ নীখৈত ছী, তেঁ নীখৈত
ছী মৈথিনী । ।

স্বনূ যৌ
রাবূ, ব্রাহ্মণ ভেনে, নীখি নে সকিতহুঁ মৈথিনী
।

সংস্কৃত পঠ়ি তহুঁ, হিন্দী ছঁটৈতহুঁ, কোনা কঽ নীখিতহুঁ
মৈথিনী । ।

ঘঽব খহাঁ কেব দবিভংগা খছি, তেঁ নীখৈত
ছী মৈথিনী ।

দবিভংগা বহিতহুঁ ছী প্ররাসী, বূঁদ্মএ নে জাহি
ঠাঁ মৈথিনী । ।

মাএ –
রাঁপ ঘ্মিতহি বহনাহ, ভাবত সবকাবক নৌকবী
।

রঁদনী ভঽ জাহি ঠাঁ বহনাহ, পব রজনন্হি

घबमे मैथिली । ।

पटनासँ मैट्रिक कएलहुँ, लड़ा - झगड़ा
कऽ लेलहुँ मैथिली ।

नओमामे नहि्ञे भेंटल, दसमामे पढ़लहुँ
मैथिली । ।

दसमोमे ओस्कूल प्रशासन, कहलक बाघ ले
मैथिली ।

बखरेँ तँऽ नञि केओ पढ़एतौ, अपने
पढ़ा हें मैथिली । ।

माए मैथिलीक गछा, हमसभ बाखल
तगयो मैथिली ।

माए मैथिली रहँनि अध्यापिका,* शिक्षा देनन्हि मैथिली
। ।

अहाँ कहरँ दबभंगिया रॉभल, शुद्ध लीखी तेँ
मैथिली ।

हम जनैत छी, जेँ पढ़लहुँ, तेँ लीखि पारैत छी

মৌথিনী ।।

নীখরাঁমে মিথিনাভাষা শ্বা নীখনকেঁ পঠ়ৃ রাঁমে ।

ওহনে হমৰো নেন কঠিন
ছন, ডেগ পহিন চনরাঁমে ।।

মৌথিনী জে হম রঁজৈত বহী শ্বা ছন সাহিত্বক
শ্বনগে ।

পঠ়ৃন - গ্বনন - নীখরঁ সীখন, কী হোযত বহি
দবিভংগে ।।

মোনমে ওা ভ্রম্ জ্নি বাখ্ৃ, ওা কপটী
সভক প্রপঞ্চ ।

শ্বপন মাএসঁ দূব কবক ছী, দ্ঠ়্ক ওা ষডয
ন্ত্র ।।

জোধা শ্বকরঁব কেব প্বত্র সনীমক, কথা সকন ছী
বূঁঝনে ।

ডাহেঁ সনীমকেঁ হফীম খোশ্বাএ, কএনক কী ঝকৈযা

बूँमने । ।

जे ब्राँम्हण दविभंगे बहि क२, पठ़न ने कहियो मौथिनी ।

नीखि ने सकत, बाँचत की नीखन, सीखू बौ़आ मौथिनी । ।

जाति धर्म ओ डेग – डेग पब, जे किछ खनग नगेए ।

से बूँम्नू, ओहि ठामक बौ़नीक, मध्ुब स्वगह्नि खानैए । ।

जहिना हिन्दी खछि एक्क, पब सभ ठाँ भिन्न नगेए ।

बँगानी – बिहाबी – मबाठी – दिल्ली खनग बँजैए । ।

तहिना मौथिनी खछि एक्क, बैतियासँ न२ क२ बनैनी ।

एक्क तिबह्त, तीबभुक्ति, मिथिना, बिदेह खा बँज्जी

। ।

नञि खन्वचित जँ केओ व्यक्ति, भाषा दृ-चारि जनैए
।

पव खन्वचित ओ मैथिल
जे, मैथिलीसँ मूँह फेरैए । ।

दोसरोक माए खपनहि छी माए, यौ हमहूँ सएह बूझै
छी ।

पव खन्वचित निज माएक रँनि दऽ, खनका जँ जुड़ैरैं
छी । ।

हम नञि छी भगवान - भगवती, सांसारिक छी प्राणी
।

मैथिली हम्मव माएक भाषा, रँस एतवँहि टा जानी
। ।

विश्वक सभ भाषा प्रिय हमवा, पव निज भाषा
नेह ।

एकव खहित जे केओ कवैछ, तकवासँ हमवा

द्वेष ।।

* हमर विद्यालयमे २ सत्रमे (शिफ्टमे) पढ़ाइ होइ छल । हम जाहि सेक्शनमे रही से प्रातः कालीन सत्रमे छल । ओहि विद्यालयमे मैट्रिकमे मैथिलीक लेल कोनो शिक्षक/शिक्षिका नियुक्त नहि छलाह/छलीह । भरि वरखा संघर्ष कएलहुँ पर मैथिली नहि राखए देल गेल । दसमामे अएलाक बाद किछु सूत्रसभसँ पता चलल जे ओही विद्यालयमे अपराह्नकालीन सत्रमे +2 मे मैथिलीक पढ़ाइ होइ लेल एक गोटे शिक्षिका नियुक्त छथि, पर ओ भारतीय प्रशासनिक सेवाक परीक्षाक तैयारी लेल छुट्टी पर छथि । बहुत प्रयासे कएलाक बाद हुनिकासँ भेंट भऽ सकल । ओ भेंट आशातीत नहि अपितु आशासँ बेसी नीक रहल । मैथिलीक पढ़ाइ हेतु हुनक पूर्ण सहयोग भेटल, तकोलीन विद्यालय प्रशासनक विरुद्ध जा ओ सहयोग कएलन्हि । ओहि सालक विभिन्न सेक्शनक आठ गोटे विद्यार्थी (हमरा सहित) मैथिली रखलहुँ । हुनिक नाँव छलन्हि **श्रीमति उँषा ठाकुर (चौधरी)** । बादमे ज्ञात भेल जे ओ भारतीय प्रशासनिक सेवामे चयनित भेलीह । बहुत बादमे ईहो पता चलल जे हुनिक सासुर **"दुलारपुर"** (हमरहि पञ्चायत) छलन्हि । पुनः भेंट करबाक इच्छा छल पर दुर्भाग्यवश से पूरा नहि भऽ सकल । हालहि मे जानकारी भेटल जे कैन्सरक कारण अल्प वयसहिमे हुनिक देहावसान भऽ गेलन्हि । हुनिका सादर नमन । मैथिलीक सम्बन्धमे सम्पूर्ण विद्यालय यथाशक्ति असहयोग कएलक ।

মাত্র দূ গোটে সহযোগ কএলন্হি জনিক নাঁর নের্ উচিত – পহিল **শ্রীমতি গৌরী গুপ্তাজী** (অর্থশাস্ত্রক শিক্ষিকা) আ দোসর **শ্রীমতি**
রীণাপানি“সুধাংশু”জী (দসমাক অন্তিম কিছু মহিনাক সময়মে হমর বিদ্যালয়ক প্রধানাধ্যাপিকা) । হমর এহি বিদ্যালয়ক নাঁর ছল “শহীদ দরীপদ চৌধরী স্মারক গর্ল্স উচ্চ বিদ্যালয, অদালতগঞ্জ,
পটনা” অথবা “মিলর হাই স্কূল, পটনা” ।

খৈনী

পহিল্বক খনাপ

খোখাএ দেনক, হম খাগত কর্মাঁ ছী ।

রঁস চীখএ ছী, খভ্যস্ত কর্মাঁ ছী ।

সরঁসরাঁত ছন দাঁত, তেঁ ধএনহুঁ,

এতরাঁমে কিছ গনত কর্মাঁ ছী ? ?

রিঁচনা প্রনাপ

এতেক রঁবখ ধবি কেব খাদতি ছী ।

ছূটৈত নঞি, ছোড়এ চাহৈত ছী ।

ও তঁহ কহিযো নহিঞে খএনক,

তগযো কাঁকোড় * কেব খাফত ছী । ।

খন্তিম রিনাপ

হও রৌখা ! নহিঞে ছটনৈ ঙা ।

চচবী পব সংগহি জড়তৈ ওা ।

জঁহ পহিনে সে সৱ ৰ্‌ঝিতিযৈ,

ঠোব কহাঁ ধবিতহুঁ হম খৈনী ! !

<u>হম্মব সনাহ</u>

খস্সী চ্‌ঠকী খা নহ্ন তান ।

ঠোব পব খৈনী কবৈছ কমান ।

গীত – গীত ছৈ, ৰাঁত নে মানূ;

নঞি তঁহ হোযত জান – জপান । ।

<u>সংকশ্পক ওঁসাস</u>

ছোড়ূ ৰীড়ী – হ্‌ক্কা – পীনী ।

হব স্বৰূপমে নাশিক খৈনী ।

সংকশ্পক সম্বঁন জঁহ ঠীঠগব,

কে কইছ – নঞি ছূটৈএ খৈনী । ।

* काँकोड़ = कैन्सर नामक रोगक पर्याय (CANCER-DISEASE) = खैनी खएनिहार रहैत लोक सभ केर दलान बहैत छन्हि कि फलना तँइ खैनी - बीड़ी - पीनी किछु सेवन नञि करैत छल पर तइयो ओकरा कैन्सर भऽ गेलै = मतलब कि ओ लोकनि किन्नहु खैनी नञि छोड़ताह ।

<u>नेखन कमजोब नञि जँ मैथिनी निखैत छी</u>

ह२म !

हँ२ यौ बाँबूँ – ह२म ! !

मैथिनी बँजैत छी,

मैथिनी निखैत छी ।

मैथिनी पठ़ैत छी,

मैथिनी बुझैत छी ।

मैथिनी गबैत छी,

मैथिनी नचैत छी ।

मैथिनी स्वनैत छी,

मैथिनी ग्वनैत छी ।

ककबा सनि भूकए छी, से नञि जनैत छी ।

मैथिनी बँजैत छी, मैथिनी निखैत छी । ।

नीक रौंन नागगए,

तेँ हम रँजैत छी ।

कर्णप्रिय जेँ हमबा,

तेँ हम स्वनैत छी ।

माएक स्वरौंन रौंन,

तेँ हम गरैत छी ।

स्वन्नब स्वगन्धि एकव,

जग भवि रँगैत छी ।

नेखन कमजोव नञि, जँ मैथिली निखैत छी ।

सोच एहेन जनिकव, से गनती कवैत छी । ।

कोन – कोन खेमा छै,

कोन – कोन राद छै ।

की – की नियम छै,

आ की अपराद छै ।

ककव कोन की प्रपञ्च,

ककव की रिराद ष्ठे ।

ह्नम तँ२ ब्रॅ्नौत ष्ठी,

मैथिनीक नाद ष्ठे ।

एतरेॅ रॅस ब्रॅूनौ ष्ठी, मैथिनी रॅजैत ष्ठी ।

मैथिनी रॅजैत ष्ठी, मैथिनी निखैत ष्ठी । ।

ककव ष्ठी ह्नकाव, थ्वा

ककव ष्ठी निम॔त्रण ।

के उँड़ॖरॅए ग्वष्ठी, थ्वा

ककव ष्ठी नियं॔त्रण ।

ह्नमवा नए सभ्टौ रॅस,

मैथिनीक गर्जन ।

मैथिनीक तर्जन,

ओ मैथिनीक रर्षण । ।

प्यासन ष्ठी मैथिनीक, घाट्टे ने देखैत ष्ठी ।

मैथिनीक थ्वमृतसँ, प्यास मेट्टैरॅत ष्ठी । ।

হম নহিঁ জনৈত ছী,

কী অহঁ সোচৈত ছী ।

কোন পক্ষ–সংঘ–গুটমে,

হমবা বখৈত ছী ।

কোন বাঁদ – পন্থসঁ,

হমবা জোড়ৈত ছী ।

হমব নিখন শঙ্ক,

কোন ধারেঁ বহবৈত ছী ।

অর্থ অহাঁ কী বূঝন, অঁহী জনৈত ছী ।

হম তঁ২ বস বূঝন জে, মৈথিনী নিখৈত ছী । ।

নিখবাক মোন অছি,

তেঁ হম নিখৈত ছী ।

মৈথিনীক বংগ প্রিয,

তাহিমে বংগৈত ছী ।

হিন্দী আ অংগ্রেজী,

সেহো প্রশস্ত ছী ।

মোন হ্মদা মৈথিনীক,

नेहेँ थाशेक्ष छी ।

हाथ हमब नेखनी, मैथिनी निखैत छी ।

सभकिछ पढ़ैत छी, मैथिनी निखैत छी

। ।

<u>समाज था रिबोधाभास (करिता)</u>

थप्पन रौंटी डान्स करैए,

ग़ा

छी गर्रक

रॉत ।

खनकव रहॆटी गीत गरहैए,

ध्व पीटैता ओ
माथ ! !

खप्पन रहॆटी मॉडेन छी तँए,

मिथिनानी के
व भाग ।

पठ़रॉ नए फॉस्टैन दोसव जँए,

उँचित ने
कनिञो रॉत
। ।

खप्पन रहौखा उँड़रॅए कौखा,

शार्प माणल्ड
खछि वखने
।

दोसव पोथी रॉचि वफन जञो,

स्वग्गा सनि
की वटैने

? ?

ष्ट्रै-पीस, थ्री-पीस ऋपना घवमे,

रॅड़-
रॅड़ नरॅ
का फ़ैशेन
।

ओकब प्वतोह् केब पहिवन देखन,

ऋशेहवीक
किछ
कतड़न
। । १

ञएह समाज छी कमोरॅशे,

ऋा
ञएह एकब
छी ठर्वा ।

ऋपने ओकैजनन कहियो कऽ,

ऋान पिरॅंत
'छि ठर्वा
। । २

अपना घर जेकिछु उँकड़ ू अछि,

परिवर्तन
छी
रौआ
।

अनका घर किछु नहर भेल तँइ,

राँजि बहल
अछि टौआ
। ।

अपन रेँठरँ जँ चानि – चलल,

नर क्रान्तिक
शँख रजैए
।

आनक गति जँ रुचल-पचल नञि,

संस्कृति ना
शि करैए
। ।

अपने कनिञा धिया-प्ता नग,

খানে রৌন
রঁজৈ ছী
।

তখন কোনা মিথিনাভাষামে,

খনকা রাঁধ্য
কবৈ ছী
। ।

খপ্পন ঠৈন্হা, সোনা সিক্কা,

খনকব হী
বা – সীসা
।

খনকব কএন কর্মসভ খন্বচিত,

জীরিতহি
খপন চনীসা
। । ২

খপনে তানেঁ নাচি বহন সভ,

খপনহি–
খপনহি রাঁ
ত ।

ककरो थान केओ नञि सूनए,

ओ छी के
हेन समाज
। ।

१. स्मशेहरी = स्वपर नेष्ट या नेष्ट रॅना साड़ ी नेन गामक किछु रृक्ष रा रृक्षानोकनि द्वारा प्रयुक्त कष्टौक्ष भवन शेर्ङ ।

२. हम र्यक्तिगत रूपेण मदिरापानक प्रचारक नञि छी था नहिञे स्वयं पिरैत छी । पर जे करैत छथि तनिकहि शेर्ङ थक्षवशः थछि ।

३. चनीसा = थप्पन सरयं केर प्रशंसाक थतिशेय प्रचारार्थ कएन गेन कोनह् प्रकारक छन्द ।

४. हम र्यक्तिगत रूपेण ऊपर रर्णित कोनह् फैशेन रा जीरनशैनीक रिरोध नञि करैत छी पर समाजमे पसरन किछु रिरोधाभाषकेँ उजागर कररॅाक नेन ओकर चर्च एहि करितामे कएन गेन थछि ।

<u>**हे दैर ! किछु तोँही कहह**</u>

<u>**(करिता)**</u>

हे दैर किछु तोँही कहह, छह भाग्य की नीखने हमर ।

কহিযো বৌদী,
কহিযো দাহী, রীচ ভূকম্পক ভঁরব । ।

একসঁ উঁরঁবন বহী নঞি, দোসবক পছড়ঁ া
পড়ন ।
সাঁস নেরাঁ কেব নে পনখতি, ঙা কেহেন নফড়ঁ া
পড়ন । ।

হে রিদেহক প্বত্র তোঁ, রিচনিত কিএ ছ২ ভ২
বহন ।
খাঁখি হোনহ খাওব দেখহ, রিশ্বিমে কী ভ২ বহন
। ।

তোবে সনি সরঁ নগ সমস্যা, মূঁহ রঁওনে খছি রিকট ।
এহি ধবা পব কতহ্টা নঞি, শান্ত সনি ভেটৈত রিরব
। ।

কতহ্ তাপক ছৈ সমস্যা, শীত রা ধীপন মৰ
।
কতহ্ সাগব কেব নহবি, রঁনরঁএ স্বনামী – কী কহ্ম

। ।

কতত্ রিবোঁ খো ছৈ খন্হব, কান
কেব প্রতিরূপমে ।

কতত্ ধবতী – হিম ধঁসএ, পতানভৈবর কূপমে
। ।

জঁ সমস্যা তঁং তকব, সমাধান হম দেনে ছিযহ
।

খপন ব্ঁঝি বিরেক তাকহ, নিদান হম দেনে ছিযহ
। ।

<u>রঁনন মধেশী মসান ছৈ (গীত)</u>

মাবন গেনৈ নোক কতেকো, রঁনন মধেশী মসান ছৈ ।

কেহেন ছৈ ওা প্রজাতন্ত্র আ কেহেন সংরিধান ছৈ ! !

বাজতন্ত্রমে ভেদভাব – ওহি ঠামক নোক কহএ ছন ।

সম খধিকাবক নেন প্রজাতন্ত্রক ও বাঁটৈ তাকএ ছন ।

খাগ দিরস ও এনৈ ক্ষদা, রঁখড়◌ া নগ্রিঞ এক সমান ছৈ ।

কেহেন ছৈ ওা প্রজাতন্ত্র আ কেহেন সংরিধান ছৈ ! !

অধিকাবক জে মাঁগ কএনক, সে গোনীক ভেন শিকাব
।

শোণিতময অ্বকথাত জকব, তক্কব ভরিষ্য কী থাশ
?

দূমেসঁ হব এক ব্যক্তি, জক্কব দহীন নঞি – ৰাম ছৈ
।

কেহেন ছৈ ওা প্রজাত
ন্ত্র থা কেহেন সংরিধান
ছৈ ! !

দেশ স্বতন্ত্র ও ভিন্ন হ্মদা ভাবতক সহোদব ভাএ
।

সএহ সোচি ভাবত কহনক, কব্দ সংকষ্ট কেব উঁপাএ
।

ভাবত কেব হিত রচনকেঁ উঁনষ্টৈ, ব্রূসএ ও থপমান ছৈ
।

কেহেন ছৈ ওা প্রজাত
ন্ত্র থা কেহেন সংরিধান
ছৈ ! !

এক দেশমে দূ - নাগবিকতা, জখন - জতএ **ভেনৈএ ।**

সাক্ষী খছি গতিহাসে - ওক্কব খপ্পন খহিত ভেনৈএ ।

দেশ মাএ খা মাএক নেন তঁং স্বন্নব সভ সন্তান ছৈ ।

কেহেন ছৈ গ প্রজাতন্ত্র খা কেহেন সংরিধান ছৈ ! !

<u>ডঁঠাড়ু নেখনী নীখূ খহাঁ</u>

ডঁঠাড়ু নেখনী, নীখূ খহাঁ, জে কিছু নঞি নীখন গেন ।

নঞি নীখরঁ তঁং ঢোন নে পীঠূ - কিছু নঞি নীখন গেন । ।

গীত - গজন, সভ কিছু নীখূ ।

নঞি নীখনন্হি ও, খপনে নীখূ ।

গীতা – গ্বকুগ্র্ন্থ – ক্ষবান নীখূ ।

রॅাগরॅন – জাতক রা খান নীখূ ।

ও সভ নীখূ, জে খছি গঙ্কা, নীখন – নে নীখন গেন ।

নঞি নীখরॅ তঁ২ ঢোন নে পীঠ্ঠূ – কিছু নঞি নীখন গেন । ।

গতিহাস নীখূ, ভূগোন নীখূ ।

রিজ্ঞান নীখূ, খগোন নীখূ ।

খন্বরাদ নীখূ রা মূন নীখূ ।

খপনা ভাষা নএ খূরॅ নীখূ ।

খহঁক হাথ কে খছি ধএনে – নঞি হ্নিকা নীখন ভেন ।

নঞি নীখরॅ তঁ২ ঢোন নে পীঠ্ঠূ – কিছু নঞি নীখন গেন । ।

খহঁ নঞি নীখরৈঁ খা নঞি পঠ়রৈঁ ।

খনকা ফেব দোষ কিএক মঠ়রৈঁ ।

পোথী খা পত্রিকা নঞি কীনরৈঁ ।

तँइ खपनो मूँह कोना रॅजरैँ ।

की भेल ? खमाँ की सोचै छी ? ओ दुरिधा केहेन भेल ?

नञि नीखरॅ तँइ ढोन ने पीठूँ – किछु नञि नीखन गेल । ।

ओतरॅहि कविरौ सामर्थ्य जतेक ।

जुनि सोचू खहँ कइ सकरॅ कतेक ।

घएना भवरॅा नए बॅुन्न जतेक ।

हब एक प्रयास केब मोन ओतेक ।

जुनि किछु सोचू, ऋठ नइ रैँसू, नीखू जे मनमे भेल ।

नञि नीखरॅ तँइ ढोन ने पीठूँ – किछु नञि नीखन गेल । ।

खहँक कथा केओ नञि नीखत ।

खहँक ब्यथा केओ नञि नीखत ।

जञों नीखत तँइ ओक्का नीखत ।

खपनहि नीखरॅ, पक्का नीखरॅ ।

অহঁকেব অধিকাব অহঁক নীখৰ, সে ছীনি কোনা কেও নেত ।

নঞি নীখৰ তঁহ ঢোন নে পীৰ্ট্ – কিছ নঞি নীখন গেন । ।

সাহিত্ – মৈথিলী সভকেব অছি ।

হব জাতি – ধবমসঁ ঙুঁপব অছি ।

আনহ্ ভাষী কেব স্বাগত অছি ।

হমবহ্ সাহিত্যমে সাগব অছি ।

হম অহঁক পঠ ়ী, অহঁ হমব পঠ ়ী, ওএহ স্বসম্বন্ধ আ মেন ।

নঞি নীখৰ তঁহ ঢোন নে পীৰ্ট্ – কিছ নঞি নীখন গেন । ।

+

<u>ও খগাঁ নিখূ জে নগ্রিঙ নিখনন্হি</u>

ঔা নগ্রিঙ নিখনন্হি ।

ও নগ্রিঙ নিখনন্হি ।

কী নগ্রিঙ নিখনন্হি ?

কে নগ্রিঙ নিখনন্হি ?

এহি পব রিচাব তখনহি সার্থক, ও খগাঁ নিখূ জে নগ্রিঙ নিখনন্হি । ।

ঔা র্বঁড় খন্বচিত ।

খতিশয খন্বচিত ।

ঔা উঁচিত বহৈত ।

ও উঁচিত বহৈত ।

এহি পব ম্ন্থন তখনহি ফনপ্রদ, ও খগাঁ কব্ধ জে নগ্রিঙ কএনন্হি । ।

মৌথিনীক সাহিৎ এনা ।

মৌথিনীক সাহিৎ ওনা ।

ओहि भाषामे एना – ओना ।

एहि भाषामे किदन – कहाँ ।

ओ रअरय कोना हुनिकर, जे मैथिली ने पढ़ैनहि – लिखनहि । ।

मैथिलीमे ओ राँत बहैत ।

मैथिलीमे ओ राँत बहैत ।

विज्ञान खगोल भूगोल बहैत ।

मैथिलीमे ओतिहास बहैत ।

की एहेन हो ओछा बखने जँ, अपने ओ किछु नञि लिखनहि । ।

र्न्न – र्न्नसँ घैन भवैछ ।

रैसी नञि किछुओ मँगैछ ।

जतराँ होएअ ततराँ लीखू ।

अपना संगहि आनोकेँ पढ़ू ।

राँकथोथी – पान्डित्य सफल जओ, कागत पर लीखि देल । ।

<u>माघ</u>

সিহকৈত বঁসাত, ঠিঠ্রৈত মাঘ ।
ওসক টপ্ – টপ্, কানএ খকাস । ।

সভ খাঠ়া – ধূব পব ডঁগন ঘাস ।
ওসেঁ ভীজন, পিছড়ৈত নাত । ।

ওসেঁ ভীজন খছি গাছ – পাত ।
টপ্ – টপ্ ভূ পব পানিক প্রপাত । ।

পব ওস চাটি কী মেটএ প্যাস ?
একটা খভাব এখনো ছৈ খাশি । ।

পছতা গছুম কেব মো নে নাশি ।
তেঁ দমকনসঁ খছি পটৈত চাস । ।

নানা – পৌতী খছি রিতন বাঁত ।
প্লাস্টিকক পাগপ সবঁন ডঁসাস । ।

খজগব সনি পসবন বীচ বাঁধ ।
ফক্ ফক্ কবৈত দমকনক সাথ । ।

গমছা – মফনব বঁন্হনে গাঁতী ।
চদ্দবি – সোএটব ঝাঁপনে ছাতী । ।

নিকনন – জকবা ভোবে ছৈ কাজ ।
কাজক বঁদনামে নঞি ছৈ নাথ । ।

শীতনহবী পূসহ্ কেব বাঁদ ।

নঞি জানি কতে দিন বহুত খাৱঁ ।।

কনকনী এহেন কঁপবৈছ হাড় ।
তগযো ধড়ফড়মে ঘট্টকবাজ ।।

এহনোমে ধোএবাঁ নেন পাপ ।
জা বহুন নোক দৌগন প্রযাগ ।।

ফাগ্বনক পানি

ফাগ্বনক পানি, খকানক পানি ।
তগযো নাভ খা কিছু ছী হানি ।।

गद्गम प्वठ्ठ, मज्जव मजगूत ।
मस्ववीक ष्ठी सघ्यः यमदूत । ।

धियाप्वता नए मजगव रॉत ।
गस्कून रॅन्दी ष्टे रॅवसात । ।

प्वविरॉ - पष्ठरॉ रॅम्हए रॅसात ।
ठिठ्वारैं - कँपरैं ष्टे गात । ।

रीतन ठण्ठी प्वनि घ्वि गेन ।
सोएष्टव - कम्मन रॉम्हव भेन । ।

ऋवही कचड़ ा झिन्नी चौप ।
चाम्हक च्स्की चौके - चौक । ।

गवम जिनेरी, निष्ठी रेंस ।
गवम सिंघावा खेपे - खेप । ।

नम्हिञे गवजय - तवजय मेघ ।
टिप्-टिप्-टिप्-टिप् रॅविसय मेघ । ।

रॅवसाती, ष्ठत्ता की भेन ?
ष्ठोड़ू ! एक दिनक ष्ठी खेन । ।

ও কহনহ্নি

ও কহনহ্নি, ধ্ুব কী নিখৈ ছী, ৰাঁউ ঙা সভ মৈথিনীমে
।
ছী কিএ এতে মাথ ধ্ুনগত, খহঁ খনেবো মৈথিনীমে
। ।

জ্ঞান ও রিজ্ঞান কেব ছী, ৰাঁত ঙুঁকক্ধ মৈথিনীমে
।
খহঁ কনমকেঁ বন্নেশী দৈ ছী, নীখি ঙা সভ মৈথিনীমে
। ।

কে বুঁঝত আ কী বুঁঝত, কে পঢ়ত ওা সভ মৈথিলীমে ?
জঁ অপন কল্যাণ চাহী, জুনি বিসৃ অহঁ মৈথিলীমে । ।

মান ও সম্মান রিবনেকেঁ, ভেটৈতছি মৈথিলীমে ।
রঁজনিহারো নিঞ বুঁঝৈতছি, ও বঁজৈতছি মৈথিলীমে । ।

বাষ্ট্রভাষামে নিখরঁ তঁং, নাম হোযত দেশ ভবিমে ।
আঙ্গ্লভাষা জঁ নিখী, চর্চা হোযত সগরো জগতমে । ।

হাথ আওত রঁস কৈঁচা, কী ভেটৈতছি মৈথিলীমে ?
মৈথিলী কেব ক্ষেত্র সীমীত, কে পঢ়ৈতছি মৈথিলীমে ? ?

এক সাঁসেঁ কহি স্বনেনা, রঁস সভটা মৈথিলীমে ।
হম কহন – সংতুষ্ঠ ছী হম, নীখি সভটা মৈথিলীমে । ।

বাষ্ট্রভাষা – আঙ্গ্লভাষা – নীক সভ ভাষা নগৈএ ।

মাতৃভাষা কেব রিনা পব, স্বন্ন সভ ভাষা নগৈএ
।।

জে কহন সে ভন কহন, ছী রেঁস ও খপনেক নজবিমে
।
ড২ব জঞো বহিতএ সমাঠক, মাথ নে বখিতহুঁ ভুঁখবিমে
।।

ছী জনৈত সংস্কৃত হম, খংগ্রেজী খা হিন্দী মবাঠী
।
দ্বেষ নঞি, পব মৈথিনীক ছী রাঁত খনগে, খনগ ঠাঠী
।।

যাদ কন্ধ নেনপন খপন, কহিযো জখন থাকন বহী
।
পারি মাএক কোব তক্ষেণ, কেহেন স্বখ ভাসন বহী
।।

সএহ স্বখ হমবা ভেটৈতছি, নীখি ক২ কিছু মৈথিনীমে
।
মানসিক স্বখ রঁড় ভেটৈতছি, নীখি হমবা মৈথিনীমে
।।

রাঁত জঁ মানী হমব তঁ২, খাউঁ এক রেঁব মৈথিনীমে
।

মান – পৈসা – মোহ
সভটা, রিসবি জাএরঁ
মৈথিনীমে ।।

মৈথ্রিকক তৈয্যাবী

জীত – হাবি (ওঁচাং – হাগব) দ্ন্ব খূরঁ মনেনিযৈ

পএব তব রঁগবা, রাঁপ বৌ রাঁপ ! *১

থারঁ কী কবিযৈ, থাহি বৌ রাঁপ !
!

নওমাকেঁ হম কিছ নে র্ঁঝনিযৈ ।

ভবি নওমা হম খেনি গমেনিযৈ ।

কহ্না নওমা পাস ভ২ গেনিযৈ ।

ছও মহিনা ফেব খ্শী মনেনিযৈ ।

मौष्ठ्रिकमे दसमेक प्ष्ठे ष्ठे, नओमामे तेँ रेँपवराह । *२

पएव तव रॅगबा, रॉप बौ रॉप ! !

दूर्गापूजा खूरॅ घ्मनियै ।

नाष्टक, थेष्टव, नाच देखनियै ।

दियारॉती ष्ठठि*३ मनेनियै ।

फॅर्मि रौंड केव, सेहो ष्ठवनियै ।

दसमा केव सिनेरॅस एतरेँ, चाबि मासमे दस – दस चास ।

पएव तव रॅगबा, रॉप बौ रॉप ! !

ठष्ठी श्वा शीतनहवी एनै ।

साष्टा पव कत' मैच खेननियै ।

कतह् खेननियै, कतह् देखनियै ।

जीत – हावि दुन्व खूरॅ मनेनियै ।

पठ़रॉ कानमे ठष्ठी नागय, ब्लेष्टी – ब्लेष्टी केव डंष्ठाह

।

পএব তব রঁগবা, রাঁপ বৌ রাঁপ ! !

নহর রঁবখ, রঁনভোজো কেনিযৈ ।

মংগনমযক সনেশ পঠেনিযৈ ।

নাঙা, চ্‌ড়নাঙা খা তিনরাঁ খেনিযৈ ।

খিচবি – দহমী সংগে দেনিযৈ ।

প্রাত ভনে রঁ্‌মনা গেনৈ, ছৈ মাস এক মৈগ্রিক কেব – খাহ !

পএব তব রঁগবা, রাঁপ বৌ রাঁপ ! !

"এষ্টম রঁম" কণ্ঠস্থ বষ্টনিযৈ । *৪

"গেস পেপব" কেঁ খূরঁ চষ্টনিযৈ । *৩

মহারীবজীকেঁ গোহবেনিযৈ । *৬

জোড়় া – ছাগব কর্‌না কেনিযৈ । *৭

হাথ পবীক্ষাফন খাযন তঁহ, জেনা সূঁঘি নেনে হো সাঁপ !

পএব তব ৰঁগবা, ৰাঁপ বৌ
ৰাঁপ ! !

*১ – পএব তব ৰঁগবা, ৰাঁপ বৌ ৰাঁপ – ঞা একটা ৰ্‌মৌখনি খছি জকব মতনৰ্ঁ হোগত খছি "খাগি" ।

*২ – খাগ কাল্হি ৰঁহ্‌ত বাস ধিযাপ্বতা মোনমে ঞ রিচাব ৰঁহ্‌ত দৃঠ‍তাসঁ পোষনে বহৈত ছথি কি মৌগ্রিক কেব পাঠ্যক্রমমে মাত্র দশীমে বস্থাক পাঠ্যক্রমসঁ পূছন জাগত খছি । ঞ রিচাব খন্ত্ত ভ্রামক খছি । উঁদাহবণার্থ জঁ নওমাক বসাযনশাস্ত্রমে পবমাণ্ব সংবচনা, সংযোজকতা খাদি নঞি পঠ‍নে ছথি তঁহ হ্নিকানোকনিকেঁ দশীমাক বাসাযনিক ৰঁহ্মন, বাসাযনিক সমীকবণ সংতুনন খাদি কোনা কহ ৰ্‌মৰাঁমে খওতন্হি ।

*৩ – উঁচাবণ ভেন "ছগঠ" ।

*৪ – "এটম ৰঁম" – এক প্রকাবক খতি সম্ভারিত প্রশ্ন সভক প্বস্তিকা থিক, জকব নাঁর সঁ মিথিনাক ৰঁচা – ৰঁচা (খা তেঁ পৈঘনোকনি সেহো) চিব – পবিচিত ছথি । ঞ কোনো "ৰঁম" রা "ৰঁম ৰঁনএৰাঁক প্বস্তিকা" নঞি খছি ।

*ঞ – "গেস পেপব" – এহি নাম সঁ তঁহ পূবা দেশে স্বপবিচিত খছি ।

*৬ খা *৭ – মহাৰীবজী রা খপ্পন – খপ্পন খান

श्राबाध्य देरी – देरता सभक पबिचायक ।

<u>चन्दाक धङ्का</u>

धियापुता सभ दूगब भऽ बहन, श्रपनें ठोकि बहन छी पीठ ।

पठ़ाँ – निखराँ केब उँमेबमे, चन्दा माँगि बहन श्रछि ढीठ । ।

सबस्वतीपूजा केब श्रबसबि, हाथमे कनम श्रा पोथी नीक ।

पठ़ाँ – निखराँ छाड़ि कऽ देखू, चन्दा माँगि बहन निर्भीक । ।

নান্হি – নান্হি টা ছৌঁড় া – ছৌঁড়ী, ৱাঁস আ ৱত্তী হাথ নেনে ।

সড়ক জাম কঽ চন্দা মাঁগএ, অপন ভরিষ্যকেঁ কাত কেনে । ।

এ ঘটনা দৃষ্ঠান্ত মাত্র ছী, রৈঁসন ছী হম মাথ ধেনে ।

পূজা হো রা এদ – মোহর্রম, চন্দা কেব সভ সাথ ধেনে । ।

পূজা – পাঠ আ ধর্ম – সংস্কৃতি, হমবা নঞি তকবাসঁ রিবোধ ।

উচিত হবেক সংস্কাব – সংস্কৃতি, জাধবি নে কবগছ গতিবোধ । ।

উসের – পাৱনি – পবৱ – তিহাব, জিনগী কেব ছী বংগ হজাব ।

রিন্ব একবা একবস জিনগী, সে হমছুঁ মানৈ ছী সবকাব ! !

পব স্বরূপ ঙা কতেক উঁচিত ছী, খপনহিসভ কনে কব্দ রিচাব ।

ধিযাপ্বতা দেশৈক ভরিষ্য ছী, কতেক উঁচিত এহেন রেঁরঁহাব । ।

<u>ককবা নীক নাগএ কী, পূছূ ওকবা সঁ</u>

ककबा नीक नागए की, पूछू ओकबा सँ ।
किए प्वष्ठे छी भाग, थहाँ ङा ह्मबा सँ । ।

नीक रॅजाए सापेक्ष चीज छी, से बूॅझू ।
एक्कव पड़ तव किए कबै छी, ओकबा सँ । ।

कखनो छन जे प्रिय, थाग थप्रिय रॅनन ।
समयक सभष्टौ खेन, कह्ू ङा ककबा सँ । ।

सोन्म बॉष्ट चनबॅ तँ२, नक्ष्य भेष्टबॅ कबतै ।
जान बॅ्नबॅ – की होयत, पूछू मकड़ा सँ । ।

बॉतक थर्थ जँ नञि भेष्टए, पोथी तकने ।
बूॅझू दादीक, गाम – घबैय्या फकड़ा सँ । ।

बॅनिदानक ने मोन, जगत् मे छी बौथा ।
फूसि नागए तँ, पूछू थस्सी – बॅकड़ा सँ । ।

শাঁতি শাঁতি জিনগীভবি বষ্টিতে বহি জাযৱঁ ।

ছীনি নেত খধিকাব খহঁক, ও ঝগড় া সঁ । ।

নষ্টৱবনান

মিথিনা কেব ধবতী পব দেখনৌং,

ৰঁড় – ৰঁড় নঠৈরবনান ।
ৰঁড় – ৰঁড় নঠৈরবনান যৌ ভৈয্যা,
ৰঁড় – ৰঁড় নঠৈরবনান । ।
একক সোন্মাঁ দোসব কাহিন,
দোসব সম্মুখ পহিন্বক জাহিন ।
সভহক হাথমে ক্ষড়হবি – খ্বপী,
একক দোসব নহগ নে চনতী ।
সহভ স্বয়ংভূ খপনহি – খপনহি,
সভহক খনগে তান ।
মিথিনা কেব ধবতী পব দেখনৌং,
ৰঁড় – ৰঁড় নঠৈরবনান । ।
এক – সঁ – এক মহাবথ জ্ঞানী,
সভ ৰেঁজোড়, ককবো নঞি সানী ।
সভহক ধূবা সোনা – চানী,
পব খভাব কেব কননী কানী ।

খিস্স মে ভেঠৈতাহ খযাচী,

শঁকব জনিকব নান ।

মিথিনা কেব ধবতী পব দেখনৌं,

বঁড়ু – বঁড়ু নঁটবনান । ।

খানক সংগ দহীক প্রভাব,

খপনা নগ মাঙক খছি তাব ।

সভহক জিহ্বা বাঁস শীবদা,

কানক নঞি তেঁ কোনহু বেঁগবতা ।

সভ কেও কানমে তূবে বখনে,

বেঁস বঁজাবঁথি গান ।

মিথিনা কেব ধবতী পব দেখনৌं,

বঁড়ু – বঁড়ু নঁটবনান । ।

<u>বিজযনাথ ঝা, পটনা</u>

<u>নব বর্ষক এহি মধুব পহবমে</u>

নব বর্ষক এহি মধুব পহবমে

সম্পস্থিত সবঁ বঁধু–প্রববমে

ঋভিনংদন বংদন প্রতিবেদিত

হাস হোগ উঁন্নাস নবোদিত।

ভাব-স্বভাব ভবন হো সমতা

স্ববভি-স্নেহ পসবয ঘব-ঘবমে।

বাঁটি বহন ছী হর্ষ সক্ষজ্বন-

সভক নেন হম গাম-শহবমে।

<u>হমব নাম পবিচয সাদব স্বৱত হম</u>

হমব নাম পবিচয সাদব স্বৱত হম

নমন কোটিশ: দেশ ভাবত ভবত হম।

ননিত কপ বৈবিধ্য ঋছি গাম ঘব-ঘব

নগব সবঁ সক্ষন্নত ক্রিযা, কর্ম, ব্রত হম।

হমব সভ্যতা ঋছি প্ৰবাতন, সনাতন

প্রগতিশীন তৈযো বিনযশীন নত হম।

সমব মে শৌর্য সিদ্ধাংত সবঁন

তিবংগা হমব প্রাণ প্রিয প্রাণরত হম।

সদাচাব, স্ববিচাব, সংযম, স্ববক্ষা

ৰঁহ্ৰূপতা নৌহ, পাবদ, বজত হম।

ৰৈৰিধ্য ৰ্য়ংজক ৰিৰিধ ৰূপ খাখব

নানিহ- নাৰণ্য উঁন্নাসবত হম।

হমব স্বাভিমানক কথা নোমহর্ষক

কএন ৰাগ উঁসেঙ্খ ৰাণীৰবদ হম।

ৰিৰিধতা হমব ধর্ম পবিচয স্বৰুচিগব

হমব নোক পবিৰাব সংযঞ্জ শীত হম।

হমব খাঁকনন ক' বহন খায দ্নিযা

সমাদৃত সভক ৰীচ সংসাবৰত হম।

চেতনা কেব নৱ সৃজনমে

চেতনা কেব নৱ সৃজনমে ভাৰ নূতন খাস ভবিঔ,

ৰ্য়ংজনা চমকম মনোহৰ ভূ-ভৰন খাকাস ভবিঔ।

সংগ প্ৰবৰাঁমে খহাঁ কেব খষ্ঠি যৰা পীঠ় া সৰঁন,

মাস্মাদর্শন হো স্বপথগব মিথক নৱ গতিহাস ভবিঔ।

শীৰ্ষ্ণ শ্ৰেক্সাঁজনি সমর্পণ ও কৰু জে প্ৰেৰণা প্ৰদ,

गूढ़ नहि ग्ण ग्राह्य सबॅ नअ भ्रम बहित विश्वास भविऔ ।

ज्ञानकेब देखन अनादब वेदना ओ कण्ठ भावी,

नहि उचित अवहेलना ओ द्वेष नहि आवेशे भविऔ ।

शक्तिपीठक मूल थाती ऋषि मुनिक ओ यज्ञशाला,

वीर विद्यापति प्रकाशिक चन्द्रमुखी विन्यास भविऔ ।

शब्द वीथी मे नवकाएल काँटै-कुशे सबॅ कात केले,

शिबद सायं भोब फागुन लोक मे उँल्लास भविऔ ।

पर्व ओ गणतंत्र सम्मुख सांस्कृतिक अवदान धएने

पूविऔ संबँध-दृढ़ता लोक हिंदै साथास भविऔ ।

चेतना केब नव सृजन मे भाव नूतन खास भविऔ ।

रञ्जना चकमक मनोहब भू-भवन आकास भविऔ ।

पर्व ओ गणतंत्र सम्मुख सांस्कृतिक अवदान धएने,

पूविऔ संबँध-दृढ़ता लोक हित साथास भविऔ.

चेतना केब नव सृजनमे भाव नूतन खास भविऔ,

रञ्जना चकमक मनोहब भू-भवन आकास भविऔ.



রমেশ

মহা-বিস্ফোটক মহা-প্রযোগ- (দীর্ঘ গদ্য কবিতা)

জহিযা বিদ্যা অবিদ্যা ভঽ কঽ/
চূকল-চেতনা-সূজনমে,
কোনো মহামহোপাধ্যায স্ব-মূত্র-পানক
আ কোনো সংত শিরোমণি গো-মূত্র-পানক
মহত্ব বুঝৌললি, অপনা তরহেঁ ।
গাম, পরম্পরামে রৌরঽ চাহলক,
আ নগর আধুনিক রঁনরৈঁত-রঁনরৈঁত/

वैनीक वर्त्तमानमे कें विद्रुत।
प्राचीनता भेलो नै छल। नेपथ्यगामी,
आधुनिक मूल्य। नेनहुँ नै छल स्थापना,
कि वेथा गेल। माथपर उत्तर-आधुनिकता।
एतिहासिक लोप आ सभ्यता विलोपक/
होमः लागल फ्रकोयामा-भविष्यवाणी,
नगरमे पहुँचल नीलवर्णी सियार द्वारा।
फेर देरिदाक विखण्डनवाद/
लढ़ि जाक 'हुआ-हुआ'सँ
घोंसिया गेल व्यक्ति-परिवारमे।
हम, असहज खिचड़ि कें
घी-पापड़-अँचारमे मथि देल।
आ तीनूक सड़ल-गलल मूल्यसँ
एनार वेलल पेटकें भरि देल।
तीनूक नीक मूल्य, गैस ढेकार जकाँ
निकलैत रहल/ आ हम सभ
पेटमे मसल्लाक गाछ/
जनमलाक वेरजूदो 'छाहरिए'मे/
रहलौं हेहर वेलल।
सरकार ग्रेटेआ-सिकरेटे आ
कनियाँ तमाकुल मना केलनि
तँ डाक्टर तेल-मसल्ला परहेज
आ सन्तगण शाकाहारक महत्व बुझौलनि-
उत्तर-आधुनिक समयमे।
कोनो अंग्रेज-कका, साकेत वेना देल।
तँ जगन्नाथपुरी-यात्रा रैंकुर वेना देल।
अरसवरादक एपासँ शास्त्रमे
तकैत रहलौं- संकल्पक विकल्प।

নে কংঠী নিমহন- নে রৈমাবী গেন।
নে তামস গেন, নে স্বাস্থ্য ভেন।
ভাগ্যক মহিমা-মন্ডনমে কর্মে হেবা গেন।
দোষ কোনো ব্র্নৌনিহাবক নৈ ছন।
স্ব- রিরেক- শেযনক ছন।
হবি-শেযনী একাদশীসঁ -
ঘাটৈ পবহক একাদশী- সংপিডন ধবি,
জঠবাগ্নিমে হোওত বহন,
মাঁছ- রিরেকক হরন/ হবিমোহনী দ্বাদশী ধবি,
'রৈদিক হিংসা, হিংসা ন ভরতি' ক/
গণ্ঠমংত্র দেননি রিখ্যাত তাঁত্রিক
কামাখ্যা- সিদ্ধ ব্ঁাব্ঁা,
দর্জন ভবি ভাগরত-শিবোমণি
কথারাচকক / নাবাযণী- মংত্র সেহো
ব্ঁনি কহ বহি গেন / শ্বাস্থা- রিহীন যাঁত্রিকতা।
'মহাজনো যেন গতঃ সঃ পংথাঃ'
কেব শ্বন্বসবণ কবৈত/ পহিনে মোহক
পনাশী-রনমে / ভটৈকার ভেন -নক্ষ্যহীন।
ফেব রাসংতী হ্নরাবীক রিভ্রম পোসনে/
মরুভূমিএ-মরুভূমি নাগন বহন- ছিছিযৌনী।
শ্বতি-ভোগরাদক ধর্ম-রিধান/
সঁ সংগমক মহা-প্রযোগক ডঁপবান্ত
রাণপ্রস্থক শ্বাহটি পারিঁ/ সংত্তননক
রৈগবতাক ভেনে ছন শ্বন্বভূতি,
কি গার্হস্থ্য-গাড় ীক মাদা পহিযা
নসকি গেন!
দোষ কোনো ব্র্নৌনিহাবক নৈ ছন।
রিরেক- সম্মত বটৈত-বটৈত/

रिरेकहीन निर्णयक नागि गेन पथाड़ !
रिरेक, तहियो चेतन भेन। जहियो
रिरेकहीनतासँ सम्भतवि
खवाजकता पसबि गेन !
गौतमक न्याय तर्कैत बहन/
द्वैक्षव-द्वैक्षव खा नव्य -न्याय- प्रराह,
हकन्नन भऽ गेन/ नरधा-भक्तिक
द्रिधामे !
समस्त जीरन उँड़ैत चिड़ैक/
खाँखि चिन्हरॉक होगत बहन
दारी- पव- दारी / ह्मदा नै भेन-
खंतिम साँस धबि- र्यक्ति- पविचय !
शर्ह्य- ब्रह्मक चनैत बहन खन्वसंधान !
खर्थ, रिन्वप्त होगत बहन शर्ह्यसँ !
खर्थ, भऽ गेन शर्ह्यक खर्थ !
काम, भऽ गेन जीरनक खर्थ !
धर्म, भऽ गेन 'खर्थक' खर्थ !
मोक्ष, भऽ गेन पाप- खारबण !
प्वण्य, भऽ गेन गौबरे खान्हव !
कर्म, भऽ गेन कपाब खा श्राह्म !
रूढ़ भऽ गेन शास्त्र खा
जड़ भऽ गेन जीरन !
पंथक पथाड़ नागि गेन !
भौतिकता, धर्म रॅनि गेन !
कन्या-दान, भेन 'धन-दान' !
रबक दान, 'महा-कन्याण' !
शर्ह्य-ब्रह्मक चनैत बहन खन्वसंधान-
एकादशी- यज्ञ- उँद्यापनमे !

ঙঁপ–নযনক মড়ৰাঁপব/ রকুখাক কানমে
খাচার্যিক কনফ্সকী– মংত্র দ্বাবা।
রেদী তব, রীসনখিযা রব দ্বাবা/
তবংগন কনিযাঁক হৃদয–স্পর্শ দ্বাবা।
নরগ্রহ– শান্তিক হরনক টীকামে।
ব্রহ্মক চনৈত বহন খন্বসংধান।
হৃদা খামে–পবিচয সম্পূর্ণ ব্রহ্ম–
পবিচয থিক/ কোনো এক মন্বকখকেঁ/
সম্পূর্ণতামে জানৰ/
জানৰ থিক সম্পূর্ণ ব্রহ্মাল্ডকেঁ/
তকব খভিজ্ঞান রিবনে/ ভেন কহিযো–ককবো।
জ্ঞান–জ্ঞান। –যোগত বহন খনঘোন।
ভক্তি–ভক্তি। –কীর্ত্তনমে গর্দম গোন।
খণ্ঠযাম–সঁ নরাহ ধবিক যাঁত্রিকতামে
সপনা ভেন নিষ্কাম ভক্তিক খানন্দ।
কর্ম। কর্ম –বষ্টৈত –বষ্টৈত
রঁনা দেন কর্মকেঁ ভাগ্যক পর্যায।
যোগ। যোগ –বষ্টৈত –বষ্টৈত
ব্রহ্মসঁ রিযোগ/ শবীবসঁ সংযোগ।

খমাশিযক খসমর্থতাসঁ মাঁছ–মাস্ব/
রঁনন তামসী– ভোজন, তঁ 'বাধে–বাধে'
কর্মকাল্ডক জড়া জড়া যা গেন।
সহহ– ভারক খভারমে দূবে বহন
ব্রহ্ম, সভঠাঁ। সভসঁ।
ব্রহ্ম, –শব্দ– ব্রহ্মসঁ দূব।
ব্রহ্ম, –নাদ– ব্রহ্মসঁ দূব।
ব্রহ্ম, –বৃদ্ধি– রিনাসীক

মোটৈ, –মোটৈ পোথীসঁ দূব।
ব্রহ্ম, –ধর্ম, পংথ, অধ্যামেক/
সংস্থানীকবণসঁ দূব।
ব্রহ্ম, ভোগেন্দ্র- রক্ষক/
জ্ঞানেন্দ্রিয- কর্মেন্দ্রিযসঁ দূব।
ব্রহ্ম- সভ ধর্মক শাস্ত্র-প্রবাণ
প্রজেগবীসঁ দূব।
রুদ্রাক্ষ- তুলসী –কংঠী- গোদ্ধখীসঁ দূব।
ব্রহ্ম-সভঠাঁ, সভসঁ দূব।
অন্বসংধানেমে হেবাযল।
অন্বসংধানক রস্তু বঁনল।
অংশিক খোজমে ব্রহ্ম/ ঠহনাগত বলে- রলে।
.... আ অংশি নিশ্চিন্ত/
ভৌতিক সুখ- শযনমে।
ব্রহ্ম- রৌআগত, অংশিক/
ভক্তি- জাগবণক প্রকাশামে,
জংগলসঁ মরুভূমি ধবি।
সৌব-মংডলসঁ আকাশি-গংগা ধবি।
'ওশ্নিবীয-কণ' স্নযং ছিড়িযাগত/
নিহাবিকাসঁ ধ্রুরতাবা ধবি।
অন্বসংধানকত্তাকি হৃদয আ/
ভক্তি-ভারক খোজমে।
পবমাণু সংবচনাসঁ, পবমাণু-রিস্ফোটৈ ধবি।
'ভূ-তনক মহা-রিস্ফোটৈ' সঁ/
কৃত্রিম গর্ভাধান-কেন্দ্র ধবি।
পবখননীক সৃষ্টি-নির্মাণসঁ/
কেদাব-ঘাটীক মহা-রিনাশি ধবি।
হোগত বহল মহা-প্রযোগ।

’গুগ্রবীয কণ’ ছিছিযাগত/
নাসাক প্রযোগশালাসঁ জেনেরাক/
ভূতন–হাগড্রা–মশীন ধবি,
চন্দ্র–খভিযানসঁ মংগন–খভিযান–ধবি,
পবিরাবসঁ ব্যক্তি ধবি/ মে হোগত বহন
খহঁ খা ভোগরাদক মহা–রিস্ফাটৈ !
সবযূমে ঠাঢ় নক্ষমণক/ ফটৈত মাথ জকাঁ !
রিক্তানসঁ খধ্যামে ধবিক মোড় ী ভবি গেল,
মহা–উঁপনর্ষ্কিক পদ্ম–রিভূষণসঁ !
দারী–পব–দারী হোগত/
বহন এরবেস্ট –রিষযক !
খশিক খোজমে বনে–রনে/ রৌখাগত বহন ব্রহ্ম !
.... খা খর্দ্ধ– নিদ্রাক মধ্যান্তব/
খাকস্মিক চেতনামে,
রেদনাগত বহন খশি ! চমকী রেমাবীসঁ/
চমকরৈত খাঁখি, মুঁহ, ভৌহঁ !

মদা, মন্বন্থকেঁ মন্বন্থক/
ব্যক্তি– পবিচয নৈ ভেল !
খার্গস্টীন নৈ চীন্হি সকলাহ,
খপন পবমাণ্ব বঁমকেঁ !
জাপান নৈ চীন্হি/
সকল, খপন সূর্যকেঁ !
জর্মনী নৈ চীন্হি/
সকল, মানর–বঞ্জকেঁ !
ধর্ম, বাজনীতি, ব্যক্তি খা সমাজ–
এক–দোসবকেঁ চিন্হিতে বহি গেল !
সহস্রাব্দী–সহস্রাব্দী ধবি !

সভ্যতাক হোগত বহল-
রিকাস আ রিনাশ !
কুরুক্ষেত্র আ রিশ্ব-যুদ্ধ, লড়ল/
জাগত বহল- মানরক ছাতীমে !
মস্তিষ্ক বঁনি গেল- কুটিলতাক/
প্রযোগ-স্থলী আ হৃদয/
বঁনি গেল হড়প্পা, মোহন -জো- দাড় া !
পেটমে হোগত বহল গৈসক/
মহা-রিস্ফাট আ মছড়দানীমে/
হোগত বহল নিচৈনসঁ
মহা-দংশক/ মছড়- মহা- প্রযোগ !
গতিহাসী বঁনৈত বহল আ প্রেবণো/
লেল জাগত বহল- রিধ্বংশক !
সংস্কৃতি, সভ্যতা, রিজ্ঞান, অধ্যামে,
ককবো প্রগ্রতিক বঁদৌলত/ কোনো ব্যক্তিক
সম্পূর্ণ ব্যক্তি-পবিচয-নহিএঁ হ্টা ভেল !
সমযপব নৈ উঁতবল ক্যা/
অপন ছরিক অন্বকূল !
ব্যরহাব-শাস্ত্র আ মনোরিজ্ঞান/ অপন
ব্যাখ্যা প্রস্তুত কবরাঁক লেল আগযো/
কহ বহল অছি, অন্বসংধান-পব-অন্বসংধান !
জে, জে ছল, সমযপব, সে নৈ বহল !
বঁহানা বঁনা-বঁনা লোক কানকেঁ/
দৈত বহল- দোহাগ আ ধিক্কাব !
কএটা দ্স্সাহসী- কানোসঁ/
নৈত বহল- হোড়- পব- হোড় !
কএটা শাস্ত্রার্থী- 'কানো গছতি ধীমতাম্'-
পব চনৈত, কখনো পবাজিত, কখনো অপবাজিত/

কান-করনিত ভেলাহ !
কএটা 'ভোগেন্দ্র' 'নিদ্রযা- কনহেন রা'-
মে খপি গেলাহ !
কান হোগত বহন খপনা গতিএ-
উত্তবাযণসঁ দক্ষিণাযন !
দক্ষিণাযনসঁ উত্তবাযণ !
পংচাঙ্গ ছপৈত বহন-
শিতাব্দী-সঁ-শিতাব্দী ধবি !
জ্যাতিষ- শাস্ত্র হোগত বহন-
নেহান-সঁ- সনাথ !
ব্রহ্মক হোগত বহন খন্বসংধান !
ব্রহ্ম, খপন খংশিক খোজমে/
ঠহনাগত বহন বনে-রনে,
... খা ভূতন- মহাপ্রযোগক গুহামে !
সভ্যতাক থূড় াগ/ কবৈত বহন খসভ্যতা !
তীন সয সবকাবক সংগঠন,
শৰ্ব্দকোষমে খোজৈত বহন-
খাতংকরাদক পবিভাষা !
ব্যক্তি চিন্হিত বহন/ খান ব্যক্তি-
খা স্বযংকেঁ/
সোগবী ঘবসঁ শমশান ধবি !
সনাতন খরতাবরাদসঁ/
গৌতম বুদ্ধক প্বনর্জন্ম,
... খা কর্ম-চক্র প্ররর্তিনী ধবি !
মন্বন্থক রঁনৈত বহন রংশারলী,
... খা গতিহাসক চষ্টানক তহমে,
দরাঁগত বহন- জীরাশ্ম রঁনি কহ !

খুশি, ব্রহ্ম-খোজমে ভটকৈত/ বহন-
চারু ধাম, সাতো পুরী !
অমরনাথসঁ- কৈলাস- মানসরোবর ধরি-
মোড় া টঙনে- নাঠীক হাথে !
'মৃগ ঢ় ঁঢ়ে রন-মাঁহি'/
অর্দ্ধ-কুমোরীসঁ বৈষ্ণো-দেবী গুফা/
আ ভৈরোনাথ ধরি... বৈদম- বৈদম !
ব্রহ্ম-খোজমে খুশি বৈদম !
কহিযো চষ্টান তব, কহিযো/
বর্ফক শিলা তবমে- ব্রহ্মলীন খুশি !
শিলাজীত- সেরনক বাঁরজূদো/
পিচড় া ভেল, জীরাশ্ম বনৈত বহন খুশি !
শতাব্দী- সহস্রাব্দীক যুগীন সন্দর্ভক/
মরুভূমিমে ভটকৈত, সমাজক আমো-
'পরমামো ! পরমামো ! ' – চিচিযাগত বহন !
আমোক চিচিযৌনী আ ছিছিযৌনী/
জারী অছি- মস্তিষ্কসঁ হৃদয/
আ হৃদযসঁ মস্তিষ্ক ধরিক/
রিষাক্ত বক্ত-পরিসংচরণমে সবারোঁব !
অমাশিযসঁ ছাতী ধরিমে/
জারী অছি- গৈসক মহা-রিস্ফোট !
ব্যক্তি আ পরিরারক অস্তিত্বমে/
জারী অছি, মহা-রিস্ফোটক মহা-প্রযোগ !
সৌব-স্বনামী চনি বহন অছি-
মাথ, হৃদয আ পেটমে !
রস্তুতঃ হজারো বৈক্তানিক, জেনেরাক/
ভূ-গর্ভীয টনেলমে/ 'ঙশ্রিব-কণ'কেঁ/
হ্মষ্টীমে পকড়বাঁক/

কঽ বহন ছথি প্রযাস/ হকোপ্রহাশে !
... আ 'ঙশ্বিব কণ' – হাগড্রা– মশীন/
সঁ দূব... ব্রঁম্নাল্ডমে ... উঁতহ্নান রিধ্বংশে নেন,
সংত করীবক হৃদযমে... উঁতহ্নান সৃজন নেন,
... উঁপনা বহন খছি, আনন্দ–রিভোব !

হ্মদা, সম্প্রতি, ব্রঁহ্ম–খোজ/ জাবী খছি !
হ্মদা, সম্প্রতি, খংশিক আমে–খোজ/
জাবী খছি !
হ্মদা, সম্প্রতি, র্যক্তিক সম্পূর্ণ/
পবিচযক প্রযাস জাবী খছি !
রস্তুতঃ , জীরনমে/ মহা–রিস্ফাটক
মহা–প্রযোগ/ খনরবত, জাবী খছি !



<u>স্বকোস্বত শিশিব</u>

শিক্ষা– স্নাতক (গণিত), নখনঙঁ রি রি.
গাম– রাঁউঁব, দড়ি ভঁগা.
সম্প্রতি ধনবাঁদ, ঝাবখল্ড মে বেন মে কার্যবত

<u>মোন রিকন</u>

এহি জগ মে খছি জ্ঞান ভবন,
জে কিছু সংভর,ধবি খাগ পঠ়ন,
তাহ্ মে বঁহ্তে কম বুঁঝন, গুণান
কর্ম মে ন ওতবোঁ ঠানি সকন।

মাঁ,খছি স্বত খহাঁ কে খাগ রিকন
দিখ খাশীষ জে , হো জীরন সফন।

কণ্ঠ মে হবদম বঁসৗ ছী নে কিযৈক,
পথভ্রষ্ঠ্ হোগতহি উঁঠৈ ছী নে কিযৈক,

রিহ্মখ ভ', হে মাঁ , অহাঁ সঁ
কে সাধনা অছি ক' সকন।

মাঁ, অছি স্বত অহাঁকে আগ রিকন
দিঅ আশীষ জে, হো জীরন সফন।

জ্ঞান-গৌবর, অহমক রহম
রাঁঠৈ বোকৈছ ভ' ঠাঠ় জখন,
হে মাঁ, করু তখনহি কৃপা
জে ভ' সকএ মোন, রিমন-নির্মন।

মাঁ, অছি স্বত অহাঁকে আগ রিকন
দিঅ আশীষ জে, হো জীরন সফন।

এক নহিঁ, গ্বব্ধ ছথি অনেক,
কোনা উঁতাবরঁ ঋণ ওতেক,
কর্মক রাঁতী সঁ জ্ঞান-দীপ রঁবন
তর কৃপা হবত মম দোষ সকন।

মাঁ, অছি স্বত অহাঁকে আগ রিকন
দিঅ আশীষ জে, হো জীরন সফন।
২৩-০৮-২০১৩.

পড়ি কন জম

কাঠক পাটী, কবচী কেব কনম

গারিশৈ নিখন ওনামাসী ধং.

রাঁসক মোন্নবি রীছন কোপবি

দীযারাঁতী খেনন উঁকাপাতী হ্নম....১

পান–মখান রিন্ব হ্মখ মনান

হেবাএন সোন্হগব ক্ষষ্টীক গংধ.

চান উঁতবন, গজোবিযা পসবন

খঠ্ঠদন খবিপন কবএ ছন চমচম..২

কতএ গেন দৌনী, কথী ওসাএরঁ

জারী নাগন রঁবদ নে ঘংটীক টৈন.

মড়্খা কে প্বত্তী জনেব,চিন,কণ

উঁসনন খন্হ্খা নাগএ খমৃত সন....৩

স্বখাদে ঠোক্ষবা ক্ষবক্ষব চূবা

উঁখড়ি –সমাঠ জখনি কবএ ধম.

দহীক মঠৈক্ষবী, সীঁক নঠৈকন চাব

পিষ্ণব ঘৈনচী, পাযন রাঁজএ ছ্ম......৪

পোখবিক জাগঠ, ধাবক মোগন

সভঠাম খেনন সোনাড্রঁকী হম.

সাওন-ভাদো পানি রঁবখৈ ঝমাঝম

ভবি ছারাঁ হেঁক পবখৈ ডেগক দম..........৫

ধাব উঁধিখাএন,রাঁঠৈ-ঘাঠৈ ভুতনাএন

চানী পীঠৈন চ'ব চমকএ চমচম.

গ্বন ঘীচতি নাহ, নগ্গী, করুখাবি

ঝিঝবি খেনন কমনা-কোসীক খঁক........৬

বোকন ন জাএ, ফেবো ঘ্বিখাএ,

ক্ষনো দেখাএ কোনা কবী রঁন্ন.

নাগএ ন মোন, উঁবিখাএ রাঁধ-রোঁন

খছি পড়া কন জেনা গাছীক জম. ৭


प्रशान्त झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, एन ए एम एस भवन, अंसारी नगर नई दिल्ली – 110029

हे 'मिथिलानी' आब जागृ अहूँ

हे 'मिथिलानी' आब जागृ अहूँ

बढ़ू जग के संग आब आगू अहूँ

तोड़ि कुंठित समाज क कुंठित बंधन

प्रगति मार्ग पर चलू दिन–दिन

अहूँ क सकै छि दुष्ट क मर्दन

पर लेबय पड़त संकल्प एकर

दहेज़–उत्पीड़न के विरोध करू

एहि दानव के निषेध करू

नहीं आवश्यक विवाहक बंधन

बस अपन पैर पर ठाढ़ रहू

हे 'मिथिलानी' आब जागृ अहूँ

आब हटा दियौ लाज क पर्दा

आ आँखिक लोर अंहा पोछि लिय

নহী দ্‌র্দিন রঁনী বদ্ধ জগ মেং

যুগ কে রঁদন কে ঠানি নিয

আরঁ বাজনীতি মেং অছুঁ উঁতক

পাযনষ্ট, আফিসব অংহা সেহো রন্ব

হে 'মিথিনানী' আরঁ জাগ্ব অছুঁ

আঙা.এ.এস যা আঙা.পি.এস যা

এহি দেশ ক অংহা ভবিষ্য রন্ব

অছি গৌবরশানী মিথিনা ক গতিহাস

অংহা মিথিনানী ক গতিহাস গঢ়ু

হে 'মিথিনানী' আরঁ জাগ্ব অছুঁ

<u>অকাঁড তাঁডর</u>

হে মহাদের গ কেহন খল্হেব !

খকাঁড তাঁডর প্রত্যক্ষ ভেন

ভূমি ডোনন খছি রেঁব রেঁব

দ্খিযা সরঁ কে খারঁ নিযৌ ঠৈব

খছি হাহাকব উঁঠন চংহ্ওব

ভ খনাথ, রাঁনক মাবে কিল্কাব

খছি ভরন মংদিব সরঁ খাক ভেন

জনৈ কতেক কে প্রাণ গেন ?

খভিনর মানর হম ব্রঁহ্মা ক হৃতি

হাবি মানর নৈ খছি খপন বৃত্তি

রঁঠা ক সকন হাথ খারঁ ত্রাণ কবরঁ

মিন-জ্নি ক নর নির্মাণ কবরঁ

ছি মন্বজ, মন্বজতা জানৈ ছী

মানরতা কে মূন্য পহচানৈ ছী

ৰঁস এতেক গ্বহাব স্বন্ব ৰাঁৰাঁ

আৰঁ ঔব প্ৰহাব নৈ চ্ন্ব ৰাঁৰাঁ

পীডীত সৰঁ কে কনঠৈব নিযৌ

দ্:খ কাষ্টি সকৈ ও ধৈৰ্য দিযৌ

দ্:খ ক পহাড কে পাব কৰৈথ

নৰদ্বীপ প্ৰশিন্নতা মেঁ পহ্লঁচৈথ

ক সকৈথ ফ়বে আনংদঘোষ

হব হব মহাদের কে উঁদ্বাষ

– ০৪.০৯.২০১৯

<u>ৰোঁডি পবীক্ষা (ৰাঁন করিতা)</u>

ৰৌআ কে কাজ ছৈ পঢ় াঙা আ নৈ কী ঘ্মৈযা

পঢ় াঙা কান মেঁ নহী ৰাঁৰূ নে ভৈযা

একজাম নজদীক এনৌ রে
পঢ় াঙা কে ঘডী ছৌ
সরॅ এতরেঁ কহতো রে
পঢ় াঙা সরॅ সে পৈঘ ছৈ

পরীক্ষা মেং রোॅড পরীক্ষা
রাঁকী খপন গক্ষা...
খারৈঁ এহি রাॅত পব করৈ ছী পঢ়ৈযা

রৌখা কে কাজ ছৈ পঢ় াঙা খা নৈ কী ঘ্মৈযা
পঢ় াঙা কান মেং নহীঁ রাॅরূ নে ভৈযা

মহারীব গোহবৈনা সে খারॅ কাজ নৈ চনতৌ
করॅ্নো কেনা সে নৈ মাক্ষ স্বধবতৌ
পরীক্ষা মেং নক়ন কে খাস, সেহো হেতৌ রॅনৈযা

পঢ় াঙা কান মেং নহী ৰাঁৰূ নে ভৈয়া ...

ৰৌথা কে কাজ ছৈ পঢ় াঙা খা নৈ কী ঘ্মৈযা

পঢ় াঙা কান মেং নহী ৰাঁৰূ নে ভৈয়া

এঠৈম ৰঁম সেহো ৰঁস পাসে করেতৌ

গেস পেপব সৰ় সেহো ৰঁস নম্বৰে দিএতৌ

ক্তানক নেন কবহী ঠৈকস্ঠ ৰ্ৰুক কে পঢ় ৈযা...

পঢ় াঙা কান মেং নহী ৰাঁৰূ নে ভৈয়া ...

ৰৌথা কে কাজ ছৈ পঢ় াঙা খা নৈ কী ঘ্মৈযা

পঢ় াঙা কান মেং নহী ৰাঁৰূ নে ভৈয়া

**বাজদের মণ্ডন ‘বমণ’, গাম–**

नकसेना, पोस्ट- महिन्दरवाड़, नरहैनी, भाया- तुनापत गंज, जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन नं- ८४७१०९

<u>जुबमाना कबैए...</u>

बुड़हा सभ मिलि पंचैती कबैए

लोग छै मन जुबमाना कबैए।

पनमा मखनाक स्वनू ऋगड़ ।

ऋगड़ । नग बुम्नू ओ बगड़ ।

पनमा भागन पंच तकैने

मखना गौआँकेँ जमा कबैने

लोग छै मन जुबमाना कबैए... ।

भेन पंचैती एहेन सोम्रगब

छेँ दुनू दोखी एक केब दोसब

भेना जमा पंचैती की कबता

दुनूसँ किछु-किछु कैंचा हैनैए

लोग छै मन जुबमाना कबैए... ।

ৰাঁজন একটা নরকা পঁচ

খগমে কেতএ ক্ষন-প্রপঁচ ?

সবপঁচে ছী হমহুঁ জীতন

রৌখা খহিনা গাম চনৈএ

হোগ ছৈ মন জ্বমানা কবৈএ... ।

 কিশন কাবীগব

<u>গজন সন কিছু</u>

প্রেমক ৰঁবসী ফ্হাব

জেনা হম ভীজৈত ছী

अहाँक चौअनियाँ स्क्की देखी
केहेन मगन सँ हम जीबैत छी

अहाँक कारी-कारी नैन
किएक हमरा करै बेचैन

अहिं हमरदम मोन परि
हमरा की भेल ने जानि ?

अहाँक सोनहो सिंगार देखी
केहेन मगन सँ हम जीबैत छी

तकैत छी केना, जेना चंदा-चकोर
हमरा करेजा मे, उठैन हिलकोर

आस्ते-आस्ते बाजू, जुनि करू अहाँ शोर

নোক কনফুসকী কবত, ভ গেলৈ ভোব

আৰ কতেক কষ্ট অহাঁ কে

প্রেম অহিঁ সঁ হম কৰৈত ছী

হমবা প্রেম কে ব্ঝহৰ কহিযা ?

অহিঁ লেল হম জীৱৈত ছী

**<u>অশিবফ বাগুন</u>**

<u>গজল</u>

সৱ তঁ নূটি লেলহী ৰদনা মে তূঁ দেলহী কী ?
ৰনি গেলহী কঠোব মনক অসবা প্ৰবেলহী কী ?

তোবা অপন ব্ঝি কঽ ৰিশ্বাস কি কেলিযৌ

চঢ় । কঽ বৃঁক্ষ পব নিচে সঁ জবি কাট্টি নেনহী কী ?

বঁদনি গেন্হী সময়ক চদ্র সংগ – সংগে তূঁ
সাথ জিথবঁ মববঁ কিবিয়া বিঁসবি গেনহী কী ?

জীরন ভবি সাথ কহি বিঁচ বাঁটমে ছোড়নে
ধেনে খান কে হাথ হমবা বিবান বুঁঝি নেনহী কী ?

<u>ডॉ. উঁমা শংকব চৌধবী</u>, এসোসিএট প্রাফেসব, ভৌতিকী রিভাগ, হবি প্রসাদ সাহ মহারিদ্যানয, নির্মনী (স্বপৌন)

<u>দূ খাখব</u>

কনে খদ্ধুঁ স্বনূ
কনে হমদ্ধুঁ স্বনী
কনে খদ্ধুঁ বুঁঝূ
কনে হমদ্ধুঁ বুঁঝী... ।

ওা ছী মিথিনাক মান
খছি মিথিনা মহান্... ।

জেকব দূ ফাঁড়় ভঽ গেন ছন জান

ভাষাক সংগ ঽৃষ্টি বহন ছন একব পহচান
কিন্তু ৱাহো ব়্ঁস্মূ জে ও কেহেন হোএত স্থান
জেতএ খাৰাগমনসঁ মিথিনাক দ্বদএ জ্ড়ন
ভাষাক কেব ৰঁচন প্ৰাণ।
ও থিক স্থান, ও থিক সংস্থান,
ও থিক মহান্, উঁদ্ভাষণাক স্থান,
মহাৰিজ্ঞানযক কান, খাৰ ব়্ঁস্মূ জে
ৱা কোন খছি সংস্থান, জে দেশীমে
সেহো ৰনেনক খপন উঁচিত স্থান।


<u>চিত্রা খংশ্ৱ</u>

<u>খস্তিত্বকেঁ চিন্হূ</u>

স্ত্রী চাহে কোনো দেশী কে, ওকব ব়্যথা–কথা সৰ এক

এক বংগ সৰ ৰৌনী–ভাষা নেকিন সৰহক ৰূপ খনেক

চাহে পূবৰ হোওছ যা পশ্চিম, খপন উঁত্তৱ যা কি দক্ষিণ

সৰহক কৰ্ম খছি নিস্তুজ শোষণ দমনক ৰূপ খনেক

কে মিটাএত নাবী উঁপীড়ন কেঁ মিটাএত শোষণ খতিৰেক

ভীষণ হান জগতমে হিনকব দেখি মোন খছি ব্যাকুন ভেন

ঞ শোষণক জডি সঁ মিটৌডঁ নাবী কেঁ সৱ খূৱ পঢ় াডঁ

শোষণকেঁ হিনকা চিন্হৱাঁড খপনা পৈব পব ঠাঢ় কবাডঁ

নাবী সভ খাৱাজ ডঁঠাডঁ পিতৃসত্তা কেঁ মাবি ভগাডঁ

সমানতাক দিযৌ সন্দেশ ঞটা কাজ কৰু সভ নেক

খপন খধিকাবক মাঁগ কৰু সৱ মিন প্রতিবোধ কৰু

ককবো পব নির্ভব নৈ বদ্ধু খপন খস্তিত্বকেঁ চিন্হূ

<u>ৱীণা প্রসাদ,</u> শোধপ্রজ্ঞ, ন.না.মি.রি. রিদ্যানয, দবভঙ্গা। গ্রাম+পোস্ট– বখরাবী

নির্মনীক গীত

গর্ব কৰু 'নির্মনী'পব ঞ মিথিনাক শান।
জতএ হবি শাহ মহারিদ্যানয এহি ক্ষেত্রক পহচান।।
ৱীচো–ৱীচ হৃদযস্থনসঁ জাগত বাজ মার্গ মহান।
'নির্মনী'ক নির্মনতাসঁ খাৱ কিযো নহি খন্জান।।

জেকবা হৃদযমে ৱাঁস কবৈত খছি মানরতাক কেব ত্তান।
জেকব খাঁগনমে ৱঁসথি হিন্দূ সংগ মুসনমান।।
হিনমিন দেখৱৈত খখণ্ড একতাক খভিযান।

सिनेहमयी खाँचवसँ ममँपने, कोसी, स्तुतनी खा ेव रॅनान। ।

खेते-खेत उँपजैत खछि मनंग, मकखा खा धान।
गहुम, खेसवी, दनहन तेनहन खुॅव फड ेत खछि खाम। ।
राड ी-मनाड ी भेटैत पान पोखविमे माछ-मखान।
भोजन रस्त्रक त्रुटि वहितो कवथि खतिथि सम्मान। ।

पशु-पक्षी संग पाएवॅ घरे-घव जेतए विद्वान।
भावतीक पोसन स्वग्गा कवथि शनोकक गान। ।
एतै भेना खायाची नेननि ने कहियो दान
भोव-साँमन होगत खछि जेतए नोक गाथा केव गान। ।

<u>बाम विनास साहु</u>
<u>किछु हैनका</u>

भोवक तावा
उँगन स्तुककवॅा
गमकै फून
भोक पहव घुमू
वहुत चि त्त खूशी

माटि क घैना
पानि निर्मन कवै

সোনা নৈ শ্বষ্ক
মন্দি ব মন শ্বষ্ক
জ্ঞানী রাশি খমৃত

খাগি নৈ ঝনৌ
হরাসঁ, ঝনৌ দীপ
প্যাস নৈ ঝনৌ
ভবন সাগবসঁ
কূপ ঝঝরঁ প্যাস

পঠ়রঁ নৈ রেদ
ভেদ জানরঁ কেনা
ভূখন পেঁট
নৈ সূতরঁ রিঁ ছৌনা
খেত উঁপজৈ সোনা

মঠ মস্জি দ
নৈ মি নৈ ভগরান
রন ঘ্মৈত
নৈ মি নৈ কোনো দের
মন রঁসৈ ভগরান

রোগীক রোগ
দরাসঁ ছটৈত ছৈ
মন রোগ নৈ
ছটৈ ছৈ দরাগসঁ
প্রেমসঁ ছটৈ রোগ

নেত্র দানসঁ
জগ ওজোত হোও
জীরন দান
বঞ্জদান ভূদান
সঁ হোওএ ভুদান

সফনতাক
কব্ধ নীক তৈযাবী
বাতি খপন
জাগি কব্ধ তৈযাবী
প্রযাস বাখূ জাবী

দেশীক খাতি ব
কবরঁ রঁনি দান
বক্ষা কবরঁ
দেশীক ছৈ কনযাণ
কাজ ছৈ ওা মহান

স্নরস্থাক স্বখ
নৌ চাহী হমবা
দ্খসঁ মি নৌ
হবি দর্শন স্বখ
সভ স্বখক খান

মেহনতি সঁ
মি নৌ ধন খপাব
খানস খছি
দ্খক পৈঘ বাহ

কৰ্দ্ধ নীক রি চাব

তীন ৰাঁতসঁ
বাখক পবহেজ
মি ঠ ৰোঁনি যা
চষ্টগব ভোজন
ঝৃঠসঁ বদ্ধ্র কাত

কন্যাঁদানসঁ
জগমে কৰ্দ্ধ নাম
কাম মহান
ৰঁড়ে পৈঘ ছৈ কাম
হোগ জগ কন্যাণ

পঁচতন্ত্রসঁ
ৰঁনন ছৈ শিবীব
খনমোন ছৈ
ঞা জি নগীক গাড়ে ী
খন্ত কি এ হোগ ছৈ

ধানক ৰীজ
উঁখাড়ে ৰোঁনি হাব
গীত গৰৈঁত
কৰৈ ধনৰোপনী
সৰঁহক খাতি ব

ৰঁচ্চা কনৈত
স্কূন জাগ খাতি ব

জৰুৰী অছি
কৌপী–কলম–পোথী
শি ক্ষাক ছৈ জৰুৰী

দূধ পীবঁ কঽ
ৰঁচ্চা পনৈ ৰঁঠ়ৈএ
ভৰি স ৰঁনৈ
উঁপকাৰী ৰঁনৈত
দেশক ৰক্ষা কৰৈ

মাটি ক ঝৰ্তি
হি নৈ–ডোনৈ নৈ ৰোনৈ
শ্ৰদ্ধা জগাৰেঁ
পান–ফূল প্ৰসাদ
সঁ ভকতকেঁ মনাৰেঁ

মানৰ তন
খাতি ব তপ কৰৈ
ছৈ ঋষি –ঝনী
দৰ্লভ ছৈ দেৰোকেঁ
নৈ ভেটৈ ছৈ ও তন

হাড়–মাস্বসঁ
ৰঁনল ছৈ শৰীৰ
নাশ্বৰ অছি
কী ভেটৈ ছৈ তনসঁ
মাযামে ফঁসল ছৈ

বাজা সেরক
ছৈ জনতা মানি ক
নোক র্বুন্নৌত ছৈ
উঁনষ্টৈ সেরককেঁ
অছি বাজা মা নক

গবীর্ব নেন
জেন জ্র্মানা অছি
নেতাক নেন
কানাধন খজানা
জনতা ছৈ দি রানা

সভ অপন
নহি কোগ পবাযা
দ্খক সাথী
নিভাবৈঁ জে দোস্তানা
অনমোন খজানা

মোতী মানাসঁ
শৌভা রঁঠ◌ৃ`ত অছি
কঁঠী মানাসঁ
হবি ভজন হোগ
কোন উঁপযোগী ছৈ

মজদূবক
শ্রেমসঁ রঁনৈ ষ্টৈ
ঘব–মকান
মানি ক ছৈ মহান

শ্রেমি ককেঁ নৈ নাম

চান–স্বৰূজ
খকাসমে চমকৈ
নোক চমকৈ
ছৈ খপনে কর্মসঁ
জগ গজোত হোগ

খাগি জৰৈত
সভ দেখৈত খছি
দি ন জৰৈত
নৈ দেখৈত কোগ
কি এ খন্তব হোগ

পানি ক ৰূঁন
মি নি সাগব ৰনৈ
সীচৈ ধবতী
প্যাস ঝনৈ সভকেঁ
নৈ দাম দগ কোগ

মোৈ বোৈসঁ
পেৈ ভৰৈত খছি
নীক পোথীসঁ
জ্ঞান ৰঠ়ৈত খছি
দ্নূকেঁ ছৈ মান

জৰৈত দীপ
সভকেঁ বোশনী দগ

ক্ষুদা অপনে
অন্হারেমে বহৈ ছৈ
উঁপকাব কবৈ ছৈ

সেনা দেশৗক
বক্ষা কবৈত মবৈত
উঁপকাবী ছৈ
অপন বক্ষা নৈ
দেশৗ গরীত কবৈত

চোবক মান
সভ মি নি কহ খাএ
উঁনষ্টৈ চাবে
ফাঁসীপব চঢ়ৈএ
সংগে নৈ কোগ জাগ

নাচএ রাঁনব
ভাত খাএ মদাবী
রাঁনন কহৈ
মান খছি কেকবো
কমান কবৈ কোগ

পঢ়ন স্বগা
রোঁনী ছৈ খনমোন
রঁন্ন পিঁজবা
কৈদ বহি কহৈ ছৈ
খজাদী কেনা হোগ

গাছক ফন
সভ খাগ জ্বাগ
গাছ নৈ খাএ
কহি যো খান ফন
ধর্ম পানন করৈ

ধান–পানসঁ
মি থি নামে সম্মান
ধোতী–ফতসিঁ
গৌবর পহি চান
স্বাগত করৈ মখান

পকৈ ফসন
কটৈনী দৌনী হোগ
ফটি পীস
রঁনৈ মধ্ুব ভোজ
সভকেঁ পেটৈ ভরৈ

রিঁ না খেনে নৈ
পেটৈ ভরৈত খছি
নৈ দেখনে
নযন জ্বাগ ছৈ
নৈ জ্ঞান ফ্ধর্খ হোগত

প্রেমক বাহ
জে চনৈ স্বখ পারৈঁ
স্বরস্থ্য পারৈত
সফন জীরনক

উঁত্তম ফন পাৱেঁ

হবীন দেত
সি যাবক গরাহী
দ্নূ ভাগি   কঽ
জংগন চনি   গেন
সজামে প্রাণ গেন

সৌনক সাগ
ভাদরক দহীসঁ
রঁচন বহী
খাসি ন–কাতি কক
ওসসঁ রঁচন বহী

চংচন মন
চি ত্ত ঘরঁবাগ ছৈ
জান জোখি ম
পৈব নড়খড় াগত
বাহ নৈ দেখাগ ছৈ

চোব চোব ছৈ
মসি ওঁত রঁনন
খধি কাবী ছৈ
পি সি ওঁত রঁনন
প্রজা সাধূ কি এ ছৈ

বাধা নচৈত
বৃন্দারন–গোক্ন

গ্রষ্ণক রঁশী
রঁজৈত মথ্বামে
মকখন চোব কঠৈত

খামক ডাবি
ঝ্ন্বখা ঝ্নৈ ছেনৈ
কোগনী রোঁনী
স্বনি গীত গরৈঁত
রৌকা হঁসৈত ছেনৈ

রাঁগ–রগি চা
নগরৈঁত সিংচৈত
খাম–নতাম
খাগত জীরৈত ছেনৈ
চৈনসঁ স্বতৈ ছেনৈ

বংগক ধাব
রঁঠৈত ছৈ হোনীমে
খূনক ধাব
রঁঠৈ ছৈ দ্গাপূজা
দীপ সজৈ দীরানী

মোতীক মানা
খবি দৈ ধনরানা
ঠন্বখা–প্বড় ী
খাগ ছৈ দি নরানা
দূধ রেঁচৈ ছৈ গরানা

খীবা ছৈ হীবা
ভোব পহব খাগ
নূনূ নগা কঽ
সাঁঝ পহব খাগ
খীবা তঁ হোগ পীড় া

গংগাক পানি
ছৈ অমৃত সমান
সাগব মি নি
ৰনৈএ নোনগব
পানি কবৈ ছৈ হাি ন

নাব–প্বখাব
ঘাস–পাত ভূসীকেঁ
চি ৰা–খা গাএ
ৰদনামে দৈ দূধ
পী কঽ জীবৈঁ মন্বখ

দেশী অজাদ
ঋদা হম গ্বনাম
ভূখন পেঠ
কেনা খ্শী মনেবৈঁ
স্বতংত্রা দি রস

হমব মাএ
গংগা সন পরি ত্র
নৌ মাস ধবি
গর্ভ পানন কবৈ

মনক বাত ব্নৌ

প্ৰবান খন্ন
বোগীকেঁ পথ্য পড়ৈ
প্ৰবান নোক
সমাজকেঁ বঁচাবৈ
পাবৈ ছৈ ঙঁচ স্থান

দ্ভি ঘাস ছৈ
খমব শ্ৰভ
সভ পূজামে
শ্ৰভ কাজ কবৈ ছৈ
সম খাঁখি দেখৈ ছৈ

সভ মহগ
কোনো নৈ খছি সস্ত
ষদা দেশীমে
খূন-চূন-বৈচৈনী
খছি সভসঁ সস্ত

খোজনাসঁ নৈ
ভেটৈ ছৈ ভগবান
মন মন্দি ব
বসৈ ছৈ ভগবান
জে পূজৈ ছৈ মহান

খাঁখি বহি তো
খন্হব বনন ছৈ

কেনা খোজত
জ্ঞানক আঁখি মানি
কবৈ জগমে হা ন

পানি ফনসঁ
জি নগী রঁচৈত ছৈ
রি ন্ব কাজ নৈ
আগৃ চনৈ জি নগী
ঝকি তে খন্ত হোগ

রি দ্বানক ছৈ
মি থি নামে খান
রঁঠ্ রৈঁ শান
কবৈ জ্ঞানক কাম
পরৈঁ মান–সমান

গবীরঁকেঁ নৈ
মান খমীব কবৈ
খমীব কহৈ
সে গবীরঁ কবৈ ছৈ
দ্খে দ্খ সহৈ ছৈ

মোহ–মাযামে
সভ ফঁসন খছি
উঁরঁবি নহি
সকৈ জগম কোগ
কর্ম খধূবা হোগ

ধনক চি ন্তা
মৌতক কাবণ স্তী
চীতাসঁ চীতা
চঠ়ি ভষ্ম রঁনি কঽ
মাষ্টি মে মি নৈত ছৈ

রি ষ্যাধন ছৈ
খনমোন বতন
খৰ্চসঁ রঁঠ়ৈ
নহি ছীনৈ ছৈ বাজা
নৈ চোবরৈঁ ছৈ চোব

ফূনক মাঁগ
দেখৈত খেতি হব
ফূন নগরৈঁ
হাষ্ট-রঁজাব রৈঁচি
ধন-কমরৈঁত ছৈ

খাত্মা খমব
খরি নাষী হোগ ছৈ
চোনা রঁদনি
কপ বংগ দেখরৈঁ
বহস্য নৈ জনৈ ছৈ

খাগি জরৈত
সভ দেখৈত খছি
মন জরৈত
নহি দেখৈ ছৈ কোগ

রিঁ ন্ব প্রেম নৈ র্ন্নৌ

ফূনক বক্ষা
কাঁ্টি–পাত করৈ ছৈ
সংগে বঠ ছৈ
স্বখক সংগ ফূন
কাঁ্টি দ্খ দগ ছৈ

কোগনী র্জৈ
ঋধবতি যা ডঁঠি
প্রেমক রৌন
প্রেমী ছৈ রিঁ ছড়ন
পি যা নৈ ভেন ভোব

চি ঞ্ঝী–পতবী
কেনা নি খর্ পি যা
ভেজৈ নহি ছী
খর্বি নে সনেস
ঋহাঁ ছী পবদেশী

খেনসঁ বাখূ
সভ নোকনি মেন
স্বস্হয বহর্
তন বহত চ্স্ত
মন বহত খ্শী

দেশীক নেন
খেনর্ সভ দি ন

কঠি ন খেন
নাওঁক নেন নহি
দেশক গৌবর নে

বাজদের মণ্ডন
র্যথিত তরু

চারুভব তরু তাকি বহন
জনকল্যাণক ভার ভবন
নিচ্চাঁমে ফবহড়ি চমকি বহন
বহি–বহি কহ ও রঁমকি বহন।

নি:সৃত হোগত মন্দ–মন্দ
ধেবি বহন খছি মৃত্যক গংধ

ডবে থবথবাগত ভেন নাচাব
মনে–মন কবৈত রিচাব।

কোন পাপক রা খভিশাপক
ভেটি বহন খছি ঙা ফন
নগ খছি হমবা রিবোধক রঁন
ছোড়্ত নহি ঙা নির্দয খন।

ভেন ছী সর্দ
হৃদৈমে দর্দ
খাঁখিমে ভবন নোব
কেকবা নগরেঁ গোড়্
কাটৈত হমবা খণ্ড–খণ্ড
কোন দোষক খছি ঙা দণ্ড।

কেতেকোকেঁ প্রেমক গতিহাস
হমবে সংগে হোএত রিনাশ।

কটৈত হমব গাত
হোএত সভপব খাঘাত
ছেনৌং সংগ–সাথ
দ্সমনো ছন কাত
খপনে কর্মমে বহনৌং তল্লীন
পন–পন খা বাতি–দিন
নগ চাহি ছী কোনো প্রতিদান
সেরামে নগৌনে জী–জান
সমতা ভার বথি মন–মান
কহাঁ ব্নৌ ছী কেকবো খান।

𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒄 𑒣𑒪
𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒐𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒹 𑒐𑒪
𑒠𑒳𑒮𑒧𑒢𑒼𑒣𑒩 𑒩𑒫𑒱𑒮 𑒥𑒯𑒪
𑒬𑒲𑒞𑒪 𑒕𑒰𑒿𑒯 𑒂 𑒁𑒧𑒩𑒲𑒞 𑒤𑒪।

𑒫𑒵𑒏𑓂𑒭𑒯𑒲𑒢 𑒮𑒦 𑒩𑒪𑒪𑒾𑓀 𑒧𑒲𑒞
𑒪𑒑 𑒖𑒰𑒢𑒻 𑒕𑒲 𑒯𑒱𑒞-𑒁𑒯𑒱𑒞
𑒖𑒪𑒬𑓂𑒩𑒼𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒢-𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢
𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒢𑒻𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝।

𑒯𑒹𑒩𑒰 𑒑𑒹𑒪

𑒮𑒳𑒐𑒏 𑒮𑒰𑒑𑒩
𑒏𑒪-𑒏𑒪 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒖𑒪
𑒛𑒳𑒥𑒏𑒲 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒏
𑒧𑒢 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪।

𑒥𑒰𑒙𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒻 𑒥𑒰𑒡𑒰 𑒏𑒹𑒞𑒹𑒏
𑒋𑒏 𑒢𑒻 𑒁𑒢𑒹𑒏
𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒥 𑒍𑒯𑒚𑒰𑒧
𑒖𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒳𑒕𑒞-
𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒰𑒧
𑒏𑒱𑒋 𑒋𑒪𑒾𑓀 𑒋𑒚𑒰𑒧 ?

𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒝𑓂𑒚 𑒦𑒹𑒪 𑒑𑒕𑓂𑒕𑒰
𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒼𑒏𑒥 𑒏𑒹𑒢𑒰

জাএব় জেনা–তেনা
যাদি পড়ঠন মনক গড়ঠন
হ্মঁহ ঝাঁপিযো কবৈএ
নোক কেতেক কাজ
হমবো নগব়এ পড়ঠত
এহনে কোনো ভাঁজ
হ্মখৌঁটৌক খিচ্ছ হজাবো বংগ
একটৌ বখনৌং হ্মঁহপব
খাব বখনৌং সংগ
খনচিন্হাবকেঁ নৈ কবত তংগ।

নীক–খধনা, ব়াঁট–হ্মব়াঁট
সভকেঁ কবৈত পাব
পহুঁচ গেনৌং নিকট
খাগূমে ছন কিনাব।

ঠমৈক ছবৈ ছী
হ্মঁহকেঁ হাথসঁ
খকচকা উঁঠনৌং
ঐ ব়াঁতসঁ।

হেবা গেন হমব হ্মখ
তব় ভেটৈন ওা স্বখ
কেহেন ভেন চূক
ওা স্বখ ছী খাকি দ্খ ?

डाॅ. शि र क्षमाब प्रसाद, খ্যক্ষ হি ন্দী রি ভাগ, হবি প্রসাদ সাহ মহারি দ্যানয- f নর্মনী (স্বপৌন) , জনম- 12/11/1956. গাম+পোস্ট- সি মবা, ভাযা- ঝংঝাবপ্বব, জি না- মধ্র্বনী, (রিঁ হাব)

<u>f নর্মনীক f নর্মনতামে</u>
মনক মনান সভ মেটৌ বহন খছি ।
শি ক্ষাক ঐ মহাপংকমে
গামক জি নগী নেটৌ বহন খছি ।
কৈঁচা-পৈসা জোবি -জোবি কঽ
মাএ-বাঁপ সভ পঠা বহন খছি ।
কোচি ং গ, রি দ্যানয, কাওনেজমে
এক-এক জন খাগ ন্বটৌ বহন খছি ।
গামক জি নগী.............. ।

কে পঠাওত ককবা নগ জা কঽ
নেনা ভুটকা পঠ়ি বহন খছি ।
নৈ দূ স্বধি ব্বুঁগধ কেকবো ছৈক
খপনে ঝংঝট ওঝবাএন খছি ।
গামক জি নগী.... ।
দৌগৈত-দৌগৈত চটি যা সভটৌ
পঠ়বৈঁত-পঠ়বৈঁত বঁড়়কা সব সভ
খপন-খপন ভাঁজমে সভকোগ
ড়াঁবহি ছবঁএ নেন খপসি যাঁত খছি ।

গামক জি নগী নেঠৌ বহন খছি ।
মনক মনান সভ মেঠৌ বহন খছি ।
তেঁ কি ছ নে কি ছ নি খৈত জাউঁ

নি খৈত–নি খৈত নি খি যে দেরেঁ
মৈথি নীক উঁপকাবী হেরেঁ
তেঁ কি ছ–নে–কি ছ নি ত নি খৈত জউঁ।
ছপৈত–ছপৈত ছৈপি যে জেরেঁ
একদি ন নেখক রঁনি এ জেরেঁ
মংচ খাব গনামো ভেঠৈত
তেঁ কি ছ–নে–কি ছ নি খতে জাউঁ।

মৌনি কতা ককবা কহৈত ছী
কি নকামে মৌনি কতা দেখন
সভ কি যো একক্ক রাঁত নি খৈত ছথি
সরঁহক নীযত সাফ দেখৈত খছি
তেঁ কি ছ–নে–কি ছ নি খতে জাউঁ।
নীব–ক্ষীব রি রেক কি নকা ছনহি
নি খি নি হাবমে হংস কে ছথি
পূর্জা–পূর্জী জোড়া –তোড়া কহ
কি ছ–নে–কি ছ খর্মাঁ ঘসৈত জাউঁ
তেঁ কি ছ–নে–কি ছ নি খৈত জাউঁ।

রৌআ কেব উঁরঁষ্টন

কজরৌষ্টী কেব কাজব সংগে
রৌআ কেব উঁরঁষ্টন রি না গেন।
সোগবী কেব খশৌচক সংগে
ভাবতীয সংস্কাব হবা গেন।
রৌআ কেব...... ।

নর যগক নর সংস্কাবমে
জ াঁনসন রেঁরীক পাউঁডব মি নি গেন
মাগক স্তন ছোড় ি   কহ নেনা
রোঁতন সংগে মাএ ভুনা গেন।
রৌআ কেব...... ।

সি নেহক ডোবি তোড় ি   কহ মমতা
স্বন্দবতা কেব মোন রি কা গেন
দাগ নৌবি নক সংগ পারি কহ
নেনা মাগক শোক ভুনা গেন
রৌআ কেব...... ।

খপন খান সভ পাগপব রি ক গেন
সমরঁন্ধক সভ খাঁচ ব্র্তা গেন
ধন নক্ষমীক চকাচৌঁধমে
তন মন বাগক বংগ মেষ্টা গেন
কজরৌষ্টী কেব কাজব সংগে
রৌআ কেব...... ।

সোহব জন্ম রঁধৈযা সংগে

मूड़न उँपनैनक मध्त मेंधी गेन
नकदक गाड़ ी रस्त्राभूषणमे
रँक्थो केव थ्याचार्य भुना गेन
कजरौटी केव काजव संगे
रौथो केव...... ।

<u>শহব ও গেন......</u>

শহব ও গেন মন্বকখ রঁনৈ নেন
গামমে বহি রঁন–মান্বখ ছন
শহবক পাথব কেব জংগনমে
সভকেঁ সভ খাগ পথবা গেন।
শহবক পাথব কেব জংগনমে
সভকেঁ সভ খাগ পথবা গেন।

গামমে সভ ছন ভাএ–রঁহি ন সভ
কি যো রাঁবূ কি যো কাকা ছন
ভৈযা–ভৌজী রেঁষ্টী–ভতীজী
নৈ কি যো রিঁ ন্ব নাতা ছন।
শহবমে জাগতে বি শতা–নাতা
সভষ্টা মষ্টি যা–মেষ্ট ভ২ গেন
শহবক পাথব কেব জংগনমে
সভকেঁ সভ খাগ পথবা গেন।

পথবাএন শহবী পাথবমে
কন্নি কো মানরতা নৈ রাঁচন
চাবি রঁবখসঁ চানীস রঁর্খ কেব
নেনা–ঘরতী রঁনি চঠ◌়া গেন
শহবক পাথব কেব জংগনমে
সভকেঁ সভ খাগ পথবা গেন।

রাঁষ্ট–রঁষ্টৈহী দেখতো খান্হব
সনি তো কদন রঁহি ব ভ২ গেন
পশ্বতো এহেন ফকর্ম স্বনি –স্বনি

চ্ড়ুক পানি মে ডূমি মবি গেন
শিহবক পাথব কেব জংগনমে
সভকেঁ সভ খাগ পথবা গেন।

<u>খেরৈঁযা</u>

সৰ্হক না◌ঁকেঁ ভেটৈন খেরৈঁযা
রিঁ ন্ব খেরৈঁযা হমরে না◌ঁ অছি
দেখ্ পাব আরঁ কেনা নগৈত অছি
রিঁ ন্ব খেরৈঁযা হমরে না◌ঁ অছি ।

কি নকো টৌকা পাব নগৌতন্হি
কি নকো নেতা পাব নগৌতন্হি
অপন-অপন রাঁস ভি বৌনে
রঁহ্তো পাব উঁতবনৌ জাগ ছথি
রিঁ ন্ব খেরৈঁযা হমরে না◌ঁ অছি ।

দূব-দূব ধবি নজবি খি বৌনে
তাকি বহন ছী খাঁকি বহন ছী
কি নকা পছওঁনে পাব নগত না◌ঁ
কি যো সংগী নৈ ভেটি বহন অছি
রিঁ ন্ব খেরৈঁযা হমরে না◌ঁ অছি ।

কি নকো রঁড়◌কা পৈঘ হরেঁনী
কি নকো রঁড়◌কা পাগক ডৌড়◌হী
কি নকো সাব কি নকো মামা
ধোতী জি নক অকাস স্বখাগত অছি
রিঁ ন্ব খেরৈঁযা হমরে না◌ঁ অছি ।

<u>মায হমব নর ক্ষম্ভ নহেনী</u>

মায হমব নর ক্ষম্ভ নহেনী
নৈ হ্নকা মন পাপক গেঠবী

নৈ হ্নকা মন ৰাঁস্নক ধোকবী
নৈনা–ভুঙ্কাক সাঁস হাস সন
জি নগী ভবি ও খূৰ নহেনী
মায হমব নৰ ক্ষমভ নহেনী।

নৈ কহি যো ও চানন কেনী
নৈ কহি যো সংন্যাসি ন ভেনী
গি বহস্থীকেঁ স্নরক্ষা ৰূনি ও
কর্মক সংগ প্রভু গ্রণ গেনী
মায হমব নৰ ক্ষমভ নহেনী।

নৈ ও ি রদ্ষী নৈ ও স্বন্নবি
নৈ আডম্বরবী নৈ কনসোহী
ৰাঁঠ–ৰঠৈহী সভ জন হি নকা
মন্বকথ রূপমে ভেঠন সি নেহী
মায হমব নৰ ক্ষমভ নহেনী।

মন প্রযাগমে ত্রি রি ধ তাপকেঁ
কর্মক দ্দ্নাসমে অপন গর্রকেঁ
অপন মনোবথ পবক দ্খমে
আজীরন ও ড্মৌনে বহনী
মায হমব নৰ ক্ষমভ নহেনী।

দেখ এনৌঁ হম পঠনা

হনসন–হ্নসন ৰসমে ৰৈঁস কঽ
পহুঁচি গেনৌঁ হম পঠনা
দেখ এনৌঁ হম পঠনা।

ভবি বস্তা হম উঁড়ি তে গেলৌঁ
বাতি ক নীন ভেন সপনা
কেতরৌ গ্বহাবি দের–গোসাওনকেঁ
মন পড়ৈত ছন ফেকনা
দেখ এনৌঁ হম পটনা।

রাঁপ জনম নৈ দেখনে ছনৌঁ
এহেন মন্বকখ জংগন
ভোজে রেঁবমে পহুঁচি গেন
ও পপি খাহা ঘব–ঘ্সনা
দেখ এনৌঁ হম পটনা।

চোব–উঁচকা ডেগ–ডেগপব
ভীড় দেখি কহ জী উঁড়ৈত ছন
রাঁহব–ভীতব জাএরঁ কঠীন ছন
রেঁথাক নাওঁ খছি পটনা
দেখ এনৌঁ হম পটনা।

হ্নকব রাঁত কাটি হম এনৌঁ
রাঁন–রৌধকেঁ ছোড়ি কহ এনৌঁ
নেতাজী কি রাঁত রনৌতা
মোন বহত ঔ ঘটনা
দেখ এনৌঁ হম পটনা।

মন হোগত খছি উঁড়ি কহ পহুঁচি জাগ
খপন সোহাগক খংগনা।
মেটা বহন খছি ঝাঁপা বহন খছি
খপন পবি চি তি

देख एलौं हम पटना।

<u>संजय कुमार झा "नागदह"</u>

नाम : संजय कुमार झा,
पिताक नाम : श्री हेम चन्द्र झा (थल सेना सँ सेवा निवृत)/ ग्राम : नागदह / जिला : मधुबनी,
शैक्षणिक योग्यता : बी. कॉम (प्रतिष्ठा), एम. कॉम, सी. ए. इंटर (फाइनल), कार्यरत : लेखा प्रबंधक

<u>खैर, छोड़</u>

পূজা, পাঠ, রিরাহ, জনেঙু

জনম – মবণ

সৱ মেঁ মোগত ছৈক

ক্ষশীক প্রযোজন

এখনো মোগত ছৈক

খৈব, ছোক

পহিনে রেঁসী কান

নোক গবিযা দৈত ছন

তোবা ক্ষশী ডঁখাডয রাঁনা

কিযো নহি বহতৌ

ক্ষদা

আৱ ত' বহিতো নৈ ডঁখাডয ছৈ

খৈব, ছোক

এখনো প্ববনা নোক

নহি জাএ চাহৈত ছথি

মিথিনা কে ছোগব ক'

কোনো দেশী আ রিদেশী

কিযাক ?

সৱ দিন সেৱনহুঁ মিথিলা

আৱ জাউঁ পবদেশে

জোঁ

ধোখাধড় ী মেঁ

ছুটি জাযত প্রাণ

গংগা স্নান ত' কাত

রিজলী পব জবাযত

কি ৱৱূব আ থক্কটৈ সঁ

সে কহি নহি

খৈব, ছোড়্

সৱ গোটা কে যাদ হোএত

পারনি – তিহাব

নিপন

আঁগন আ ঘব

আঁগন থরিতে

স্বন্দব স্বগংধ

ब्रॅह्माअगत छन

आगा कोनो खास दिन

नरका चूल्हा

आ दाय – माय व्यस्त

आजुक दिन ब्रॅह्मा बहुत मस्त

आरॅो ब्रॅह्माअगया ?

खैब, छोड़ू

गामक दुर्गा पूजा मे

दू मॅास पहिने सँ

नाटकक तैयारी

सबॅ सान उॅभवि बहुत

नरका – नरका कलाकार

कि, एखनो होअगया ?

पहिन पूजा सँ यात्राक दिन तक

बॅचा जरान स मबरा नेन व्यग्र तक

मंदिर के प्रांगण मे

क ' बहुनाह पूजा आ पाठ

সাঁঝ পবিতে

ৰঁচা খা জরান কে

কহিযো কান

ভ' জাগত ছন দৃ - দৃ হাথ

হমছু একবে কাবন

ছী এখন ধবি

পিতাজীক খাক্তাক

পানন মেঁ

পূজা মেঁ গাম জায সঁ

নিষ্কাষিত

কি এখনো হোগযা ?

খৈব , ছোড়ৃ

একসব রিদ্যাপতি

মিথিনাক পতাকা

রিশ্বি মেঁ ফহবা দেনাহ

কতেকো ব্যক্তি কে

রিদ্বত ৰঁনা দেনাহ

মিথিনিকা ঝংডা

রীনা ডংড়ে ফহবা দেনাহ

নহি কোনো রিধাযক

নহি সংসদ মেং ঠাঢ় ভেনাহ

নহি কহিযো খনসন

নহি বৈনী মেং ভাগ নেনাহ

নোকক ত রাঁত ছোড়্

মহাদের

স্বযং উঁগনা রঁনি

রিদ্যাপতি কে পৈব ধেনাহ

কি মিথিনা কে থারঁ

দ্‌র্দিন নহি ?

খৈব, ছোড়্

ভেষ্টন ?

ধ্মস্ববিক চোষ্ট সন খাখব নিখন
মন্বক্থ, ফক্কুড়, রেঁগ, ভাষা ও সংস্কৃতি সমেষ্টন
খাঁদোননকাবী পব কএ প্রহাড়
রাঁজূ খপনে কী সরঁ ভেষ্টন ?

জেহনে ব্রুঁঝূ তেহনে উঁগন
ভনেঁ স্বার্থ সঁ হো ডূরঁন
রিদ্বত্ জনক খাভার কহিযো নহি
কী তৈযো সরঁ মৈথিন মিনি ক'
খগ্রম সূচী নেন এক ভ' জ্ষ্টন ?

ভনে ভোজন কএ রৈঁসন খনশেন পব
ধ্যান দিযৌ মাত্র ওকব কর্ম পব
নহি খপনে সন পড়ন ঘব মে
কনিযা সংগ খছি পনংগ পব স্বতন

ঘব স্বতন সপনহি ঘ্মি খারঁথি
দিন্নী,ঝংরঁঙা ও কনকত্তা
নহি জাএরঁ হম কোনো দন সংগ
ভনেঁ নোক হো কতরৌঁ জ্ষ্টন

অছি জোঁ দারাঁ অপনা কে রঁস্তু
হম ছী সবঁ সঁ হোশিগব
সিক্ক কব্ধ মৈথিল জন মে
হম ছী সবঁ সঁ বুঁদ্ধিগব
মন ক্রম বচন সঁ টাঁগ নহি খিচ্
জোড় নাগূ পাছা সঁ
নহি ত' কহিযো অপনো সোচবঁ
এহি অদখোজ – বঁদখোজ সঁ কী ভেটৈন ?

ছী কোন থপনে জাতি রিশেষ ?

সৰ্ব সঁ পহিনে হম মনুখ ছী

ত'হন কোনো জাতি

ভনে মনুখক গুণ হো রা নহি

কিন্চিদ্ নহি পবজাতি ।

এক মনুষ্য মেঁ সৰ্ব জাতি সমাহিত

তখনহি জীরন ধন্য

এক জাতি কে মাত্র জোঁ গুণ থছি

জীরন ভ' জাএত শূন্য ।

ব্ৰাহ্মণ সঁ পাঁডিত্যক গুণ নী

শূদ্র সঁ সিখ্ সেরা ভার

ক্ষত্রিয রঁনি কৰু নিজ ৰক্ষা

রৈশ্যক গুণ সঁ হাৰ্ট - রঁাজার ।

স্বদ্রিদয ঝাঁকি ক' দেখ্

কোন গুণ থছি থপনেক রিশেষ

मोने – मोने स्वपने सोचि नेने,
छी कोन स्वपने जाति विशेष ?



ओम प्रकाश झा

<u>गजल</u>

स्वप्न गाम बिसबल छी

गाछक स्वाम बिसबल छी

नित नव खेलमे बौवल

माटिक दाम बिसबल छी

ठीकेदाव हम धर्मक

वामक नाम बिसबल छी

गाँधी हम उँचावे छी

हुनकव वाम बिसबल छी

छाहवि "ओम" बौजल किछु

ककवो घाम बिसबल छी

<u>গজল</u>

হমব কবেজক জান তিবংগা

ভাবত-ভূমিক শান তিবংগা

শোষিত নোকক খাস বঁনল ছৈ

খামজনক খবমান তিবংগা

নজবি উঁঠেতৈ দ্শ্মন জখনে

বঁনত হমব ঙা বাঁণ তিবংগা

মোন মন্বকথক মোগত কী ছৈ

গারি কহৈ ছৈ গান তিবংগা

বাম-বহীমক বাঁতসঁ খাগূ

"ওম"ক খছি সম্মান তিবংগা

মাত্রাক্রম দীর্ঘ-দ্রস্ব-দ্রস্ব-দীর্ঘ-

দীর্ঘ দূ রেঁব প্রেমক পাঁতিমে।

<u>গজন</u>

হমব রাঁত কিযো ব্ঁষনক কহাঁ

হমব মোন কিযো তকনক কহাঁ

চমকি গেন ছনৌ রিঁজ্বী কতৌ

হমব খন্হাব কিযো হবনক কহাঁ

রাঁত স্বনন সভক নমহব সদতি

হমব ছোঁষ্ট কিযো স্বননক কহাঁ

বাখি হাথ মে রঁম খা পিস্তৌন

হমব নাচ কিযো নচনক কহাঁ

ওম জপি হবক নাম সদিখন

হমব নাম কিযো জপনক কহাঁ

মহেশ ডখবামী

কোনাদগন

পীযব আঁচব পীযব পাত ,

পিযরে রসন তন পীত গাত ।

পিত্ত খামিন প্রতিপদ প্রপঁচ,

ঠামে হ্মশকী মন সঁচ মঁচ ।

মোনক মান ককবা কহরৌঁ ,

কান তূব হম চ্প্পা বহরৌঁ ।

বাঁটে বাঁট নাগন টোট ,

ঘব রেঁসাহক দেখূ ঠাঠ ।

জেরঁ নৌ ঢৌউঁখা বাঁতক কাট ,

বাঁহব ফ্টোনী বাঁপে খাট ।

মোনক মান ককবা কহরৌঁ ,

কান তূব হম চ্প্পা বহরৌঁ ।

মহেশ মঞ্জরী

☆

কারী বাঁদর ঘন অম্বর পসরল,

পরন গমন রবজোর ।

পুহুপ সব মন উঁব রেধল ,

দর্শন মন রিভোর ।

☆

আধ নযন পুনি আধে আনন ,

আধে নোচন নাজ ।

আধে আঁচর কমনঙ্খ ঝাঁপন ,

আধে পুষ্পক সাজ ।

☆

আধে চানক পুনি পুনি দর্শন ,

উঁদিপ্ত তাপ তরংগ ।

দামিনি দমকি উঁব দন অর্পণ ,

নননা ননিত নরংগ ।

☆

ভার ভুজংগ সিব ডুঁপব ধাবণ ,

কণ্ঠ স্বকপিক রাস ।

ঘগন কদনি পব কেহবি নাচয ,

দর্শন সমন পিযাস ।

☆

বাধা মাধর ছরি খনাদি খনূপা,

দাস চবণ খন্ববাগ ।

হ্রপা দযানিধি দর্শন প্বনি প্বনি ,

জাগন মহেশক ভাগ ।

গণেশ মৈথিন

হে ! হে ! ! হে ! ! !

हे ! हे ! ! हे ! ! !
एहन की पाप करै छी
जीवते जी रहैत रहैत छी
द्र...छी ! छी ! ! छी ! ! !
प्रतह्ु चाही निखन-पढन
ताह् पर छी कैंचा लेन खडन
द्र...छी ! छी ! ! छी ! ! !
जँ अपन कमाय सँ नहि घर वरनन
त की रहैत रहैत पीढ़ीक कोठा ? ?
द्र...छी ! छी ! ! छी ! ! !
यौ महाशय एक गप कह्
की अहाँक रहैत घी मे नहाएन
हमर रहैत पानिए पर पोशिन ? ?
द्र...छी ! छी ! ! छी ! ! !
यौ जँ हमरा रहैतीक लेन चाही वर
त अहाँ रहैतक लेन चाही कनिआँ
तोडू विधाताक बनाएन विधी
रहैत रहैत किएक बनै छी बनियाँ ? ?
द्र...छी ! छी ! ! छी ! ! !

संतोष कुमार झा, रविज्ञ संकाय, चर्म वस्त्र एवं उपवस्त्र विद्यानय,

फुटविवयव डिज़ाइन एवं डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट, नोएडा, (उद्योग एवं वाणिज्य मंत्रानय, भावत सवकाव)

सिक्की शिल्प-कना

আউ কথা করি এহি শিল্প-কলাভূমি কেঁ আগাঁ,
আউ কথা করি পাবন মিথিলা ভূমি কেঁআগাঁ !

এহি মিথিলা কেঁ ধবা-ভূমি পব জনমনজে শিল্প-কলা,
নাম ভেল তকব 'সিক্কী'শিল্প-কলা।
জে নাবী জনমনী-সিংচলী মানর-সংসাব,
সেহজনমনী-সিংচলী 'সিক্কী'শিল্প-কলা।
জে অখিল রিশ্ব মে মিথিলা কেঁ নাম উঁজাগব কেলক,
দেলক মিথিলা কেঁ রিশিষ্টপহচান।

আউ কথা করি এহি শিল্প-কলাভূমি কেঁ আগাঁ,
আউ কথা করি পাবন মিথিলা ভূমি কেঁআগাঁ !

'সিক্কী' একটা, ঘাস হোগছ জে ৰবখা ঋত্ত কেঁ ৰাদ
নদী,পোখবি, খত্তা কেঁ কাত ভেটৈগছ।
এহি কাল হোগছ ওা সর্বোত্তম ৰূপ-যৌরন সংপন্ন,
তখনহি কাটি আনয নাবী-সংকায।

পাতর-পাতর কাটি ফের একরা আঁগন-চার পর স্বখাওল জায,

এহি রিধিএ রাঁবণো মাস কাজ ও খায।

আউ কথা করি এহি শিল্প-কলাভূমি কেঁ আও,

আউ কথা করি পারল মিথিলা ভূমি কেঁআও!

মাঁ প্রকৃতি ভরনীচমকৌআ স্বর্ণ রং এহিমে,

জাহিমে লাল, পীয়র সরঁ রং ভরও ছথি শিল্প-কার্য কেনিহারি।

টৈক্ষআ সৌঁ তানা-রাঁনা এহেন রঁনয জে,

শৃজিত করয নূতন রস্তু-সংসার।

স্বদরতা সৌঁ ওত-প্রাতমৌনী,সূপ, কোনিযা আদি...

ঘর-গৃহস্থী কেঁ নিত্য সামান।

আউ কথা করি এহি শিল্প-কলাভূমি কেঁ আও,

আউ কথা করি পারল মিথিলা ভূমি কেঁআও!

आदि-काल कें शिल्प-कला आ,

मैथिल-सभ्यता कें अभ-श्रेष्ठ उत्कृष्ठ पहिचान बनि गेल ।

बिबाह,द्विरागमन, मधुश्रावणी जे किछु पावन कर्म हुए,

एहि शिल्प कें बिना ओ मिथिला मे अधूरा-अपूर्ण रहय ।

मिथिला कें घर-घर मे बच्ची कें आ शिल्प सिखाओल जाइत छै,

अपन बिबाह कें लेल स्वयं कला-कल्पना मिश्रित आ शिल्प बनाओल जाइत छै ।

आउ कथा करि एहि शिल्प-कलाभूमि कें आओ,

आउ कथा करि पावन मिथिला भूमि कें आओ !

अरविन्द ठाकुर

सुनू जयद्रथ ! (कविता-1)

একবা কাঠী জ্নি দেখাযরঁ কি

হমব করিতাক খনগিনত পৃষ্ঠক রীচ

খখনি স্বতন পড়ন খছি রাঁকদ

একব ক্ষঁহথবি পব জ্নি খাযরঁ কি

হমবা ভীতব মথন জাএ বহন রিচাব

ঘ্টৈত-ধধকৈত রেঁচৈনী

স্বখ-দ্খ কে পানি-খাগি

কিছু ওব-ওব রস্তু সঁ মিনি

নএ বহন খছি রূপ

তবহি-তব খৌনৈত জ্বানাক্ষখী কে

থহি সঁ ভ্রমিত জ্নি হএব় কি

থাগ বৃঁহন্নলা বঁনয পড়ন থছি থর্জ্ন কেঁ

ঞা ভারী সমব কে পূর্ব তৈযাবী থিক

ও জখনি থাএত

ধন্বধাবী জকাঁ থাএত

দেখৈত-বেঁধৈত চিড়ৈক থাঁখিক থপন নক্ষ্য

স্বনূ জযদ্রথ !

থহি বেঁব হ্রঞ্জক মাযাক ফাঁদ নহি জোহন জাএত

শ্বদ্ধ কবব় থহাঁ জঁ সমব

সূর্যাস্ত তক প্রতীক্ষা নহি কবব় হম

দ্‌ মিত্র (করিতা-2)

ও ছনাহ

ও সেহো ছনাহ

এক সঁ এক ক্ষমতাজ হস্তীসভ

মংচ পব মৌজূদ ছন

উঁড়ি বহৈন ছন ভাষণক দূধিযা উঁজ্জব হংস

ভীড় সঁ দনমনিত ছন শহৈবক মৈদান

নাবা...........নফফাজী.........কিদন–কর্মাঁ

খহিসভ সঁ খনগ

খপন ঘবক একান্ত মে দেব তক

উঁজাস সঁ দ্নাব কবৈত বহৈন ও

ফেব কনম বাখি খপন খংগ্ববী সোহৈবএনক

কোঠনী সঁ ৰহৈবাকএ একটা নেনা কেঁ চ্মনক

খপন নীন খাঁখি সঁ খাকাশি কেঁ পীনক

স্বরুজ দিস তাকি ও ক্ষস্বকাযন –

হও মিত্র !

তোঁ খসগব

হমহ্ঁ খসগব

তোবা নগ প্রকাশি

হমবা নগ করিতা

<u>হম হথা কবএ চাহএ ছী (করিতা-3)</u>

ওকব মোবা মে রঁহ্ত বাস রস্ত্ খছি

জেকব ও রেঁব-রেঁগবতে খপ্পন

খা মাত্র খপ্পন হক মে

গস্তুমান কবৈত খছি

नीक नोकक थाँखि नेन गवदा थिछ ओकवा नग

थ्रैठसभक नेन चमचै

काथवसभक नेन धमकी

सत्तासीन था सत्तात्तव नेन रोटैक ठेका

थफसव नेन वैजकी था

रिशिठ्ठ नोकक रिशिठ्ठ थंग नेन

प्वठ्ठ मात्रा मे तेन थिछ ओकवा नग

ओ सभदिन भोवहि उठि

महादेव नामक कोनो भगवानक निंग प्वजैत थिछ

था थहि तवहें थपन सौभाग्यक नेन

दिनक प्रावम्भ कवैत थिछ

ওকব নোন নহি দেখাগঙ্ক

ও কঠফোড়ৱা জকাঁ

সমাজক কাঠ কেঁ খোধৈত-ফোড়ৈত বহৈত খঙ্কি

ওকব ঠকঠকী স্বনি নহি পাৱৈঙ্ক নোক

ও হঁসৈত খঙ্কি হবমজদগী কে হঁসী

জেনা কৈকষ্টস মে ফড়ন হো ফূন

খা কানৈত খঙ্কি হৱোঁঠকাব

গবা মে কণ্ঠী ৱান্হনে সোঁসি জকাঁ

ও নিযমিত ৰূপ সঁ নিত্তহ

গুসা, গাঁধী খা নূথব কিংগ কেব নাম জপৈত খঙ্কি

খা খহি তবহেঁ

स्वयं कें रिक्तोपित कबरोंक खर्चा रँचाए नैत थिछ

ओ नियत तिथि कें प्रति वर्ष

गांधीक समाधि पब जागत थिछ

भिजायन आँखिए फून चढरैत कान

थर्ब-थर्ब काँपैत थिछ

राँपूक पुनर्जीवित भए जएराँक आशंका सँ

सनाग जकाँ

अपन एकहि टौ काठी सँ

हम जवारँए चाहय छी ओकब मायामहन

हमब कामना थिछ

जे हम पठी

ওকব রঁদহরাশি চেহবাক ভূগোন

ডগব পব খকস্মাত খাএন সাঁপ জকাঁ

হম ডঁসয চাহয ছী ওকবা

হমব কামনা খছি

জে হম স্বনী

ওকব নিবন্তব নীন পড়ৈত চেহবাক খার্ত্তনাদ

হম কোনো দিন ওকব হত্যা কএ

ঘ্বএ চাহয ছী খপন ঘব

খপন প্রিযাক রক্ষ পব হাথ বাখি

ওকব ঠোব পব ডঁষ্ম চ্ংরঁন খংকিত কএ

কহএ চাহয ছী –

अहाँ स्वबक्षित छी,प्रिये

आर अहाँ स्वबक्षित छी

हनहनामा (कविता-4)

हँ

हम राजनीति करए छी

कविताक राजनीति

आ से करब आरथ्क रूपय छी

कान्तासम्मितयोपदेशयुजे - कहए छथि मम्मट

कार्यप्रयोजनक विषय मे

हम हुनका नकारए नहि छी

ओहि सँ आगू बढ़य चाहए छी

ঋজ্কা রিকান মে

জখনি প্রজা নপ্পংসক

আ শাসক নিবংকশ ভেন ছৈ

ভেনহি চনি জায বহন ছৈ

কে স্বনত কান্তাসম্মিত উঁপদেশ

কেকবা পবরাহ ছৈ

হম করি ছী

অসীম ছী

হমব করিতা প্রভুসম্মিত আদেশ বঁনত

সত্তাক ভান পব কীন ঠোকরাঁক নেন

বাজকরিক জীহ মে তীব ভোকরাঁক নেন

हम सत्ताक नहि प्ररक्ता रॅनरॅ

कोनो ठप्पामाब रिचाबधाबा–रिशेषक नहि খधिरक्ता रॅनरॅ

सत्ता খा रिचाबधाबा–रिशेषक रिबोध मे

চনাএরॅ করিতাক নিर्णাযিক হথৌড় ী

হম প্রস্তুসম্মিত করিতা কবরॅ

হম করিতাক বাজনীতি কবএ ছী

কবরॅ

মানরতাক ঐতিহাসিক সংঘর্ষ মে ওকব সংগ দেরॅ

মন্বষ্যক হেবাযন জাগত পহচান কেঁ

ধ্মিন হোগ সঁ রॅচযরা মে ওকব মদতি কবরॅ

आश्रम, कुटी, मठ, अखाड़ ा, ग्रन्थ-गिरोहक विरोध मे

करिता कें हथियाब रुनैने

करितेक सैन्यदलक संग

षड़्यन्त्र

हम करिताक राजनीति करए छी

कबरि

कविते बहरि

_

स्मृति मित्र थिछ (कविता-5)

कोनो शापित मनुष्य जकाँ

पाथर भऽ जएबाक भय सँ

घृणि कऽ नहि ताकबाक किरिया-सप्पथ सँ

स्वयं केँ मुक्त करू, बन्धु

स्मृति मे हमसभ

बीतल घड़ ी केँ फेर सँ जीबैत छी

बेर-बेर जीबैत छी

जतय सुख-दुखक गप नहि

अनुभूतिसभ थिछ, बस

সমযক খনেক বংগ খছি, ৰঁস

খন্বভূতি সঁ ডবিকএ

কঙ্কিস নহি কএন জাগত খছি স্মৃতি সঁ

ৰঁঢাএন জাগত খছি হাথ

স্মৃতি সঁ মৈত্রীক নেন

স্মৃতি মে হমসভ

ৰীতন ঘড় ী কেঁ ফেব সঁ জীৰৈঁত ছী

ৰেঁব–ৰেঁব জীৰৈঁত ছী

আজাদ গজল

ছাতী তঁ তানল ছল শস্ত্র উঠযবাঁক রেঁব

কোঁঠ় কিএ কাঁপি বহল নাস উঠযবাঁক রেঁব

পাত রিঙ্ছযবাঁক রেঁ নোকক কবমান ছল

যাব সভ খনোপিত ভেল এঁঠ উঠযবাঁক রেঁব

আযাতিত মহাবানী ফাহা ব্র্ম্মাগত ছল

ঘোন কিএ পবমাণ্বক ভাব উঠযবাঁক রেঁব

দাঙঁল রেঁব ধানক তঁ মাবিতে মহাজল ছল

এক্কা টা জল নহি নাব উঠযবাঁক রেঁব

প্ররচন মে ঘৌসয ছথি ধৈবজ কেব মহিমা ও

সভ টা রিসবি জাগ ছথি কণ্ঠ উঁঠযরাঁক রেঁব

খবরিন উঁতাবা কিছ রিধ্বংসক হোগত খছি

নীক জকাঁ সোচৈ ছন প্রশ্ন উঁঠযরাঁক রেঁব

খাজাদ গজন

জনপথ ছোড়ি বাজপথ জাযরঁ সে হমবা কী নীক নগৈএ

ঙঁখবি মে মূড়ি ঘোসিখাযরঁ সে হমবা কী নীক নগৈএ

রঁক সঁ কৌখা রঁনন ঠাঠ় ছী কাজব ঘব মে

তহি পব চানন ঠোপ নগাযরঁ সে হমবা কী নীক নগৈএ

চোবি কবরঁ হম ক্ষদা শান সঁ চৌকীদাবক সংগ বহরঁ

নাজ-শবম তাখা পব বাখরঁ সে হমবা কী নীক নগৈএ

ভ্রষ্ঠ দ্পহবা কেব এহন রঁহসন রঁসাত মে

নংক-দহন নেন খাগি পজাবরঁ সে হমবা কী নীক নগৈএ

ছমা কৰূ খবরিন ঙঁচিত কিন্নহুঁ নহি রাঁজরঁ

স্বধিজন আগাঁ গান ৰঁজাযৰঁ সে হমবা কী নীক নগৈএ

আজাদ গজন

ছিছিআগছ উঁকেঁঠা হমব খন আব নগ, খন পাব নগ

হমব নিখন উঁজাস সভক মোন কী সংসাব নগ

জান ঝঁহমে ৰোঁন নঞি, ছপয ৰঁহেনিযা কে ৰঁযান

চিড়ৈক ৰোঁনী ৰ্ঁঋত সে নঞি নূবি ছৈ অখৰোঁব নগ

বংগরিবমী জিনীসসঁ ঠাঁসিন বহৈ সভষ্টো দোকান

কিন্তু জন–ৰেঁচৈনী কে ঔষধি নঞি বহৈ ৰঁজাব নগ

এক সমঝৌতা সঁ শাসন রামনক সবকস ৰঁনন

নঞি ছনৈ পণ্ঠা কোনো দমগব ৰঁচন দবৰাঁব নগ

ৰ্ঁন্ন মে সাগব ভবন, খপ্ব মে ভবন ঙুৰ্জা খপাব

ৰিন্দ্ সবিপহ্ঁ নম্ঁৰত ভএ ঠাঠ় মোগছ খাধাব নগ

নোক–নাদন নাহ ৰাঁঠ়ি ক পানি মে খৰঁ–তৰঁ মে ছৈ

ও ঘিঁচাৰঁয ছথি ফোষ্ঠে ৰাঁন্হ পব পতরাব নগ

নফা কে রনতংত্র মে পগ–পগ ৰিচৌনিযা বঞ্জরীজ

খকিন গ্বম্ম খছি, কেকব মাবফত খৰ্জী দী সবকাব নগ

ঙঁপবচন্তী মান কে চস্কা চঠ়ন "খবৰিন" এতেক

ৰ্নন ছী নগ্বথা কি ভিকথা, জাযৰ্ নঞি থধিকাব নগ

থাজাদ গজন

কনস্থৈব ৰ্ম,প্রক্ষেপাস্ত্র টৌমহাক হমবে ছুন

জীৰিত নহাস ৰ্নন জে ওবাক হমবে ছুন

ভাবত,সোনাব ৰ্গ থাকি পাক হমবে ছুন

"একোহংৰ্হ্স্যাম"–ওা মজাক হমবে ছুন

এখন ভনে পবমাণ্ব কচবা কেব যাচক ছী

‘রিশ্নিগ্বক হম ছী’-সে রেদরাক্ হমরে ছল

গাঁধী ছলহুঁ জখন হমরে স্ববাজ ছল

দাগী পব খাদী কেব ঝক পোশাক হমরে ছল

হমরে ও ক্ষল্ড ছল কট্টি গেল জে বৈজকী সঁ

ৰাঁজাবক ৰীচ পড়ন কান-নাক হমরে ছল

হমরে ছল ডিডিব জে ৰাঁটৈনক সহোদব কেঁ

ঋধবতিযা ঋাজাদীক ঢোল-ঢাক হমরে ছল

'খরিবন'বহরৈঁযা ছী বোগহা সমাজক হম

নসনি জেকব নাগন খছি সে স্বজাক হমবে ছন

খাজাদ গজন

জীরনক জে খগিন–পথ কে পাব এতাহ

জীজিরিষা মে সে খজিত,খাজাদ হেতাহ

রঁূড়ি ,জে নিঠ্যাকেঁ সদিখন মোন বখতাহ

ও সিযাসী খেন মে রঁবরাঁদ হেতাহ

মাথ খছি জিনকব সিংহাসন কে চবণ পব

খাম–জন কে মাটি মে ও খাদ হেতাহ

ও রৈধানিক থন্বকম্পা কে প্রারধানসঁ

মূন ভএ সকনাহ নহি,থন্বরাদ হেতাহ

থছি হ্নক নির্মাণ মে কোনো খবারী

উঁছিঠ্ঠ ছথি ও,তেঁ কোনা উঁপোদ হেতাহ

ধন্য ! 'থবরিন' তোঁ এনহ মৈথিন গজনমে

ফেব কেও খ্সবো কী তোহব রাঁদ হেতাহ

আজাদ গজল

সংসদ কের ফোটৈ মে কিছুও নহি হের-ফের

নাগনাথ,সাঁপনাথ,তএহ দুনূ রেঁব-রেঁব

নাগৈত অছি অজুকা ও দিনো অন্হার বহত

স্বরুজ মনান ছথি এখনহুঁ উঁরেঁব রেঁব

একরাঁনী নোক সভক দাগন সভ সাঁঠ ছৈ

তোড়ি বহন জহিপতার কবচীক সভ ঘের-রেঁব

मातन थार्कैस्ट्रो मे थाज्क सभ गोपिका

बाधिकोक ट्रैब नहि क्ष्वनी के ट्रैब रॅब

घामक ट्रैघाब रॅंछ्ठ श्रीमंतक माथ पब

उँमकन सीमान पब जन-गण के जेब-रॅब

गाम भेन नन्दिग्राम,घब-घब सिंगूब भेन

"थबरिंन"सभ संग बद्ध एहन थल्ह्ब रॅब

टिमटिम

टिमटिम ! टिमटिम !

माने एकटा अनवरत प्रकाश

टिमटिम ! टिमटिम !

माने एकटा अनवरत संघर्ष

टिमटिम ! टिमटिम !

माने एकटा अपवाजेय जिजीविषा

एक–एक क्षणक

हजारक हजार टिमटिम सँ

জরৈত বহৈত অছি দীপ

টিমটিমাগত বহৈত অছি

সারধান –সতর্ক বহৈত অছি দীপ

নড়ৈত বহৈত অছি দীপ

তেজ হরা আ অন্হব সঁ

বুঁতাগতহ্ অছি ত শহীদ জকাঁ

অসারধান–আশ্বিস্ত বহৈত অছি দীপ

স্বরিধা, ষডযংত্র আ ওর্ষ্যা ভবন ফূংক সঁ

আ রেঁমৌত মাবন জাগত অছি